# आसान हिन्दी तरज़ुमा

हाफ़िज़ नज़र अहमद

## 13 Lines Hindi Word To Word Translation

Written in Hindi by
a team of
www.understandquran.com

UNDERSTAND QUR'AN ACADEMY
Tel: 0091-6456-4829 / 0091-9908787858
Hyderabad, India

# आसान तरजुमा कुरआने मजीद

तस्वीद व तरतीब ः हाफ़िज़ नज़र अहमद
प्रिन्सिपल तालीमुल कुरआन ख़त व किताबत स्कूल, लाहौर-5

नज़र सानी
★ मौलाना अज़ीज़ ज़ुबैदी
मुदीर मुजल्ला "अहले हदीस", लाहौर
★ मौलाना प्रोफ़ेसर मुज़म्मिल अहसन शेख़, एम॰ ए॰
(अरबी - इसलामियात - तारीख़)
★ मौलाना मुफ़ती मुहम्मद हुसैन नईमी
मुहतमिम जामिआ नईमिया, लाहौर
★ मौलाना मुहम्मद सरफ़राज़ नईमी अल-अज़हरी, एम॰ ए॰
फ़ाज़िल दरस-ए-निज़ामी, (अरबी - इसलामियात)
★ मौलाना अब्दुर्रऊफ़ मलिक
ख़तीब जामअ़ आस्ट्रेलिया, लाहौर
★ मौलाना सईदुर्रहमान अलवी
ख़तीब जामअ़ मस्जिदुश शिफ़ा, शाह जमाल, लाहौर

## अल्हम्दुलिल्लाह

"आसान तरजुमा कुरआन मजीद" कई एतिबार से मुन्फ़रिद हैः

- हर लफ़्ज़ का जुदा जुदा तर्जुमा और पूरी आयत का आसान तर्जुमा एक्सा है।
- यह तरजुमा तीनों मसलक के उलमा-ए-किराम (अहले सुन्नत व अल जमाअ़त, देव बन्दी, बरेलवी और अहले हदीस) का नज़र सानी शुदा और उन का मुत्ताफ़िकुन अलैह है।

इंशा अल्लाह

अरबी से ना वाक़िफ़ भी चन्द पारे पढ़ कर इस की मदद से पूरे कलामुल्लाह का तर्जुमा बख़ूबी समझ सकेंगे।

ऐ अललाह करीम! इस ख़िदमत को बा बरकत और बाइस-ए-ख़ैर बनादे। ख़ुसुसन तलबह के लिऐ कुरआन फ़हमी और अ़मल बिल कुरआन का ज़रिया और बन्दा के लिऐ फ़लाह-ए-दारैन का वसीला बनादे (आमीन).

हाफ़िज़ नज़र अहमद
10 रबी उस्सानी 1408 हिजरी
3 दिसमबर 1987

बैतुल्लाह अलहराम, मक्का मुकर्रमह

آيَاتُهَا ٧ ۞ (١) سُوْرَةُ الْفَاتِحَةِ ۞ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1 - (1) सूरतुल फ़ातिहा - आयात 7

المنزل ١

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है। (1)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ﴿١﴾

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1 | रहम करने वाला | बहुत मेहरबान | अल्लाह | नाम से |

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है, (2)

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿٢﴾ الرَّحۡمٰنِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जो बहुत मेहरबान | 2 | तमाम जहान | रब | अल्लाह के लिए | तमाम तारीफ़ें |

बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है। (3)

बदले के दिन का मालिक है, (4)

الرَّحِيۡمِ ﴿٣﴾ مٰلِكِ يَوۡمِ الدِّيۡنِ ﴿٤﴾ اِيَّاكَ نَعۡبُدُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इबादत करते हैं | सिर्फ़ तेरी ही | 4 | बदला | दिन | मालिक | 3 | रहम करने वाला |

हम सिर्फ़ तेरी ही इबादत करते हैं और सिर्फ़ तुझ ही से मदद चाहते हैं। (5)

وَاِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ ﴿٥﴾ اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| रास्ता | हमें हिदायत दे | 5 | हम मदद चाहते हैं | और सिर्फ़ तुझ ही से |

हमें सीधे रास्ते की हिदायत दे, (6)

الۡمُسۡتَقِيۡمَ ﴿٦﴾ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | तू ने इनआम किया | उन लोगों का | रास्ता | 6 | सीधा |

उन लोगों का रास्ता जिन पर तू ने इनआम किया न उन का जिन पर ग़ज़ब किया गया, और न उन का जो गुमराह हुए। (7)

غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ وَلَا الضَّآلِّيۡنَ ﴿٧﴾ ع

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 7 | जो गुमराह हुए | और न | उन पर | ग़ज़ब किया गया | न |

آيَاتُهَا ٢٨٦ ❀ (٢) سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٤٠

रुकूआत 40 - (2) सूरतुल बकरः - आयात 286

الجزء ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

| | | | |
|---|---|---|---|
| रह्म करने वाला | बहुत मेहरबान | अल्लाह | नाम से |

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है।

معانقة ١
عند المتأخرين ١٢

الٓمّٓ ﴿١﴾ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَارَيْبَ فِيْهِ هُدًى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हिदायत | इस में | नहीं शक | किताब | यह | 1 | अलिफ़-लाम-मीम |

अलिफ़-लाम-मीम, (1)

لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٢﴾ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ग़ैब पर | ईमान लाते हैं | जो लोग | 2 | परहेज़गारों के लिए |

यह किताब है इस में कोई शक नहीं, परहेज़गारों के लिए हिदायत है, (2)

وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 3 | वह ख़र्च करते हैं | हम ने उन्हें दिया | और उस से जो | नमाज़ | और क़ाइम करते हैं |

जो ग़ैब पर ईमान लाते हैं, और क़ाइम करते हैं नमाज़, और जो कुछ हम ने उन्हें दिया उस में से ख़र्च करते हैं, (3)

وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और जो | आप की तरफ़ | नाज़िल किया गया | उस पर जो | ईमान रखते हैं | और जो लोग |

اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | यक़ीन रखते हैं | वह | और आख़िरत पर | आप से पहले | से | नाज़िल किया गया |

और जो लोग उस पर ईमान रखते हैं जो आप पर नाज़िल किया गया, और जो आप से पहले नाज़िल किया गया और वह आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं। (4)

वही लोग अपने रब की तरफ़ से हिदायत पर हैं, और वही लोग कामयाब हैं। (5)

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया, उन पर बराबर है आप उन्हें डराएं या न डराएं वह ईमान नहीं लाएंगे। (6)

अल्लाह ने उन के दिलों पर और उन के कानों पर मुह्र लगा दी। और उन की आँखों पर पर्दा है। और उन के लिए बड़ा अ़ज़ाब है। (7)

और कुछ लोग हैं जो कहते है हम ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर और वह ईमान वाले नहीं॥ (8)

वह धोका देते हैं अल्लाह को और ईमान वालों को, हालांकि वह नहीं धोका देते मगर अपने आप को, और वह नहीं समझते॥ (9)

उन के दिलों में बीमारी है, सो अल्लाह ने उन की बीमारी बढ़ा दी, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। क्योंकि वह झूट बोलते हैं॥ (10)

और जब उन्हें कहा जाता है कि ज़मीन में फ़साद न फैलाओ, तो कहते है, हम सिर्फ़ इस्लाह करने वाले हैं। (11)

सुन रखो बेशक वही लोग फ़साद करने वाले हैं और लेकिन नहीं समझते। (12)

और जब उन्हें कहा जाता है तुम ईमान लाओ जैसे लोग ईमान लाए, तो वह कहते हैं क्या हम ईमान लाएं जैसे बेवकूफ़ ईमान लाए? सुन रखो खुद वही बेवकूफ़ है लेकिन वह जानते नहीं (13)

और जब उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान लाए तो कहते हैं हम ईमान लाए और जब अपने शैतानों के पास अकेले होते हैं तो कहते हैं हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो महज़ मज़ाक़ करते हैं। (14)

अल्लाह उन से मज़ाक़ करता है और उन को उन की सरकशी में बढ़ाता है, वह अन्धे हो रहे हैं। (15)

أُولَٰٓئِكَ عَلٰی هُدًی مِّنْ رَّبِّهِمْ ۚ وَأُولَٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | कामयाब | वह | और वही लोग | अपना रब | से | हिदायत | पर | वही लोग |

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| डराएं उन्हें | न | या | ख़्वाह आप उन्हें डराएं | उन पर | बराबर | कुफ़्र किया | जिन लोगों ने | बेशक |

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦﴾ خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰی قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰی سَمْعِهِمْ ۚ وَعَلٰٓی

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और पर | उन के कान | और पर | उन के दिल | पर | अल्लाह | मुह्र लगा दी | 6 | ईमान लाएंगे | नही |

اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ز وَّلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٧﴾ وَمِنَ النَّاسِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लोग | और से | 7 | बड़ा | अ़ज़ाब | और उन के लिए | पर्दा | उन की आँखें |

ع ١

مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨﴾

وقف لازم

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | ईमाने वाले | वह | और नहीं | आखि़रत | और दिन पर | अल्लाह पर | हम ईमान लाए | कहते है | जो |

يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ وَمَا يَخْدَعُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने आप | मगर | धोका देते | और नही | ईमान लाए | और जो लोग | अल्लाह | वह धोका देते है |

وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩﴾ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ ۙ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًا ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बीमारी | अल्लाह | सो बढ़ा दी उन की | बीमारी | उन के दिल (जमा) | में | 9 | समझते है | और नही |

وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ بِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ﴿١٠﴾ وَاِذَا قِيْلَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कहा जाता है | और जब | 10 | वह झूट बोलते हैं | क्योंकि | दर्दनाक | अ़ज़ाब | और उन के लिए |

لَهُمْ لَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ ۙ قَالُوْٓا اِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ ﴿١١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | इस्लाह करने वाले | हम | सिर्फ़ | वह कहते है | ज़मीन में | न फ़साद फैलाओ | उन्हें |

اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَلٰكِنْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٢﴾ وَاِذَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जब | 12 | वह नही समझते | और लेकिन | फ़साद करने वाले | वही | बेशक वह | सुन रखो |

قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَآ اٰمَنَ النَّاسُ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ كَمَآ اٰمَنَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान लाए | जैसे | क्या हम ईमान लाएं | वह कहते है | लोग | ईमान लाए | जैसे | तुम ईमान लाओ | उन्हें | कहा जाता है |

السُّفَهَآءُ ؕ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ وَلٰكِنْ لَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 13 | वह जानते | नही | और लेकिन | बेवकूफ़ | वही | खुद वह | सुन रखो | बेवकूफ़ |

وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚ وَاِذَا خَلَوْا اِلٰی

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पास | अकेले होते है | और जब | हम ईमान लाए | कहते है | ईमान लाए | जो लोग | और जब मिलते है |

شَيٰطِيْنِهِمْ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ ۙ اِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 14 | मज़ाक़ करते हैं | हम | महज़ | तम्हारे साथ | हम | कहते हैं | अपने शैतान |

اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١٥﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 15 | अन्धे हो रहे हैं | उन की सरकशी में | और बढ़ाता है उन को | उन से | मज़ाक़ करता है | अल्लाह |

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى فَمَا رَبِحَتْ تِّجَارَتُهُمْ

यही लोग | जिन्हों ने | मोल ली | गुमराही | हिदायत के बदले | तो न फ़ाइदा दिया | उन की तिजारत

وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿١٦﴾ مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِى اسْتَوْقَدَ نَارًا

और न थे | वह हिदायत पाने वाले | 16 | उन की मिसाल | जैसे मिसाल | वह जिस ने | आग भड़काई | आग

فَلَمَّآ اَضَآءَتْ مَا حَوْلَهٗ ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُوْرِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِىْ

फिर जब | रौशन कर दिया | उस का इर्द गिर्द | छीन ली | अल्लाह | उन की रौशनी | और उन्हें छोड़ दिया | में

ظُلُمٰتٍ لَّا يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧﴾ صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿١٨﴾

अन्धेरे | वह नहीं देखते | 17 | बहरे | गूँगे | अन्धे | सो वह | नहीं लौटेंगे | 18

اَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيْهِ ظُلُمٰتٌ وَّرَعْدٌ وَّبَرْقٌ يَجْعَلُوْنَ

या | जैसे बारिश | से | आस्मान | उस में | अन्धेरे | और गरज | और बिजली की चमक | वह ठोंस लेते है

اَصَابِعَهُمْ فِىْٓ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ وَاللّٰهُ مُحِيْطٌۢ

अपनी उनगलियां | में | अपने कान | सबब | कड़क (बिजली) | डर | मौत | और अल्लाह | घेरे हुए

بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩﴾ يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ كُلَّمَآ اَضَآءَ لَهُمْ

काफ़िरों को | 19 | क़रीब है | बिजली | उचक ले | उन की निगाहें | जब भी | वह चमकी | उन पर

مَّشَوْا فِيْهِ وَاِذَآ اَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ

चल पड़े | उस में | और जब | अन्धेरा हुआ | उन पर | वह खड़े हुए | और अगर | चाहता अल्लाह | छीन लेता

٢ ع ١٣ ٢ بِسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٠﴾

उन की शुनवाई | और उन की आँखें | बेशक | अल्लाह | पर | हर चीज़ | क़ादिर | 20

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ

ऐ | लोगो | तुम इबादत करो | अपने रब | जिस ने | तुम्हें पैदा किया | और वह लोग जो | से | तुम से पहले

لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿٢١﴾ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً

ताकि तुम | परहेज़गार हो जाओ | 21 | जिस ने | बनाया | तुम्हारे लिए | ज़मीन | फ़र्श | और आस्मान | छत

وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ

और उस ने उतारा | से | आस्मान | पानी | फिर निकाला | उस के ज़रीए | से | फल (जमा) | रिज़्क़ | तुम्हारे लिए

فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَاِنْ كُنْتُمْ فِىْ رَيْبٍ

सो न | ठहराओ | अल्लाह के लिए | कोई शरीक | और तुम | जानते हो | 22 | और अगर | तुम हो | में | शक

مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا

से जो | हम ने उतारा | पर | अपना बन्दा | तो ले आओ | एक सूरत | से | इस जैसी | और बुला लो

شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٣﴾

अपने मददगार | से | सिवा | अल्लाह | अगर | तुम हो | सच्चे | 23

यही लोग है जिन्हों ने हिदायत के बदले गुमराही मोल ली, तो उन की तिजारत ने कोई फ़ाइदा न दिया, और न वह हिदायत पाने वाले थे। (16)

उन की मिसाल उस शख़्स जैसी है जिस ने आग भड़काई, फिर आग ने उस का इर्द गिर्द रौशन कर दिया तो अल्लाह ने छीन ली उन की रौशनी और उन्हें अन्धेरों में छोड़ दिया वह नहीं देखते। (17)

वह बहरे गूँगे और अन्धे हैं सो वह नहीं लौटेंगे। (18)

या जैसे आस्मान से बारिश हो, उस में अन्धेरे हों और गरज और बिजली की चमक, वह अपने कानों में अपनी उनगलियां ठोंस लेते हैं कड़क के सबब मौत के डर से, और अल्लाह काफ़िरों को घेरे हुऐ है। (19)

क़रीब है कि बिजली उन की निगाहें उचक ले, जब भी वह उन पर चमकी वह उस में चल पड़े और जब उन पर अन्धेरा हुआ वह खड़े हो गए और अगर अल्लाह चाहता तो छीन लेता उन की शुनवाई और उन की आँखें, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। (20)

ऐ लोगो! तुम अपने रब की इबादत करो जिस ने तुम्हें पैदा किया और उन लोगों को जो तुम से पहले हुए ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ। (21)

जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया और आस्मान को छत, और आस्मान से पानी उतारा, फिर उस के ज़रीए फल निकाले तुम्हारे लिए रिज़्क़, सो अल्लाह के लिए कोई शरीक न ठहराओ और तुम जानते हो। (22)

और अगर तुम्हें इस (क्लाम) में शक हो जो हम ने अपने बन्दे पर उतारा तो इस जैसी एक सूरत ले आओ, और बुला लो अपने मददगार अल्लाह के सिवा अगर तुम सच्चे हो। (23)

फिर अगर तुम न कर सको और हरगिज़ न कर सकोगे तो उस आग से डरो जिस का ईंधन इन्सान और पत्थर हैं, काफ़िरों के लिए तैयार की गई है। (24)

और उन लोगों को ख़ुशख़बरी दो जो ईमान लाए, और उन्हों ने नेक अ़मल किए कि उन के लिए बाग़ात हैं जिन के नीचे नहरें बहती हैं, जब भी उन्हें उस से कोई फल खाने को दिया जाएगा, वह कहेंगे यह वही है जो हमें इस से पहले खाने को दिया गया हालांकि उन्हें उस से मिलता जुलता दिया गया, और उन के लिए उस में बीवियां हैं पाकीज़ा, और वह उस में हमेशा रहेंगे। (25)

बेशक अल्लाह नहीं शर्माता कि कोई मिसाल बयान करे जो मच्छर जैसी हो ख़्वाह उस के ऊपर (बढ़ कर) सो जो लोग ईमान लाए वह तो जानते हैं कि वह उन के रब की तरफ़ से हक़ है, और जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह कहते हैं अल्लाह ने इस मिसाल से क्या इरादा किया, वह इस से बहुत लोगों को गुमराह करता है, और इस से बहुत लोगों को हिदायत देता है, और उस से नाफ़रमानों के सिवा किसी को गुमराह नहीं करता, (26)

जो लोग अल्लाह का अ़हद तोड़ते हैं उस से पुख़्ता इक़रार करने के बाद, और उस को काटते हैं जिस का अल्लाह ने हुक्म दिया था कि वह उसे जोड़े रखें, और वह ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं, वही लोग नुक़्सान उठाने वाले हैं। (27)

तुम किस तरह अल्लाह का कुफ़्र करते हो, और तुम बेजान थे सो उस ने तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शी, फिर वह तुम्हें मारेगा फिर तुम्हें जिलाएगा, फिर उस की तरफ़ लौटाए जाओगे। (28)

वही है जिस ने तुम्हारे लिए पैदा किया जो ज़मीन में है सब का सब, फिर उस ने आस्मान की तरफ़ क़सद किया, फिर उन को ठीक बना दिया सात आस्मान, और वह हर चीज़ का जानने वाला है। (29)

فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِىْ وَقُوْدُهَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस का ईंधन | जिस का | आग | तो डरो | और हरगिज़ न कर सकोगे | तुम न कर सको | फिर अगर |

النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۚ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान लाए | जो लोग | और ख़ुशख़बरी दो | 24 | काफ़िरों के लिए | तैयार की गई | और पत्थर | इन्सान |

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ كُلَّمَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब भी | नहरें | उन के नीचे | से | बहती हैं | बाग़ात | उन के लिए | कि | नेक | और उन्हों ने अ़मल किए |

رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِىْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पहले | से | हमें खाने को दिया गया | वह जो कि | यह | वह कहेंगे | रिज़्क़ | कोई फल | से | उस से | खाने को दिया जाएगा |

وَاُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ؕ وَلَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙ وَّهُمْ فِيْهَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | और वह | पाकीज़ा | बीवियां | उस में | और उन के लिए | मिलता जुलता | उस से | हालांकि उन्हें दिया गया |

خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَسْتَحْىٖٓ اَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً فَمَا

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़्वाह जो | मच्छर | जो | कोई मिसाल | वह बयान करे | कि | नहीं शर्माता | अल्लाह | बेशक | 25 | हमेशा रहेंगे |

فَوْقَهَا ؕ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन का रब | से | हक़ | कि वह | वह जानते हैं | ईमान लाए | सो जो लोग | उस से ऊपर |

وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ يُضِلُّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह गुमराह करता है | मिसाल | इस से | अल्लाह | इरादा किया | क्या | वह कहते हैं | कुफ़्र किया | और जिन लोगों ने |

وقف لازم

بِهٖ كَثِيْرًا وَّيَهْدِىْ بِهٖ كَثِيْرًا ؕ وَمَا يُضِلُّ بِهٖٓ اِلَّا الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 26 | नाफ़रमान | मगर | इस से | और नहीं गुमराह करता | बहुत लोग | इस से | और हिदायत देता है | बहुत लोग | इस से |

الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ ۪ وَيَقْطَعُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और काटते हैं | पुख़्ता इक़रार | से बाद | अल्लाह | वादा | तोड़ते हैं | जो लोग |

مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ ؕ اُولٰٓئِكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वही लोग | ज़मीन | में | और वह फ़साद फैलाते हैं | वह जोड़े रखें | कि | उस से | अल्लाह | जिस का हुक्म दिया |

هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٢٧﴾ كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَكُنْتُمْ اَمْوَاتًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेजान | और तुम थे | अल्लाह का | तुम कुफ़्र करते हो | किस तरह | 27 | नुक़्सान उठाने वाले | वह |

فَاَحْيَاكُمْ ۚ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 28 | तुम लौटाए जाओगे | उस की तरफ़ | फिर | तुम्हें जिलाएगा | फिर | तुम्हें मारेगा | फिर | तो उस ने तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शी |

هُوَ الَّذِىْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۗ ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ | क़सद किया | फिर | सब | ज़मीन | में | जो | तुम्हारे लिए | पैदा किया | जिस ने | वह |

السَّمَآءِ فَسَوّٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٩﴾ ع ٣ ٣

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 29 | जानने वाला | चीज़ | हर | और वह | आस्मान | सात | फिर उन को ठीक बना दिया | आस्मान |

وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّىْ جَاعِلٌ فِى الْاَرْضِ خَلِيْفَةً ؕ قَالُوْٓا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने कहा | एक नाइब | ज़मीन | में | बनाने वाला | कि मैं | फ़रिश्तों से | तुम्हारा रब | कहा | और जब |

اَتَجْعَلُ فِيْهَا مَنْ يُّفْسِدُ فِيْهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَآءَ ۚ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बे ऐब कहते हैं | और हम | ख़ून | और बहाएगा | उस में | फ़साद करेगा | जो | उस में | क्या तू बनाएगा |

بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ؕ قَالَ اِنِّىْٓ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَعَلَّمَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और सिखाए | 30 | तुम नहीं जानते | जो | जानता हूँ | बेशक मैं | उस ने कहा | तेरी | और पाकीज़गी बयान करते हैं | तेरी तारीफ़ के साथ |

اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِىْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुझ को बतलाओ | फिर कहा | फ़रिश्ते | पर | उन्हें सामने किया | फिर | सब चीज़ें | नाम | आदम (अ) |

بِاَسْمَآءِ هٰٓؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۳۱﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमें | इल्म नहीं | तू पाक है | उन्हों ने कहा | 31 | सच्चे | तुम हो | अगर | उन | नाम |

اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿۳۲﴾ قَالَ يٰٓاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हें बता दे | ऐ आदम | उस ने फ़र्माया | 32 | हिक्मत वाला | जानने वाला | तू | बेशक तू | तू ने हमें सिखाया | जो | मगर |

بِاَسْمَآئِهِمْ ۚ فَلَمَّآ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ ۙ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّىْٓ اَعْلَمُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जानता हूँ | कि मैं | तुम्हें | मैं ने कहा | क्या नहीं | उस ने फ़र्माया | उन के नाम | उस ने उन्हें बतलाए | सो जब | उन के नाम |

غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۙ وَاَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿۳۳﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 33 | छुपाते हो | तुम | और जो | तुम ज़ाहिर करते हो | जो | और मैं जानता हूँ | और ज़मीन | आस्मान (जमा) | छुपी हुई बातें |

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने इन्कार किया | इब्लीस | सिवाए | तो उन्हों ने सिज्दः किया | आदम को | तुम सिज्दः करो | फ़रिश्तों को | हम ने कहा | और जब |

وَاسْتَكْبَرَ ۫ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۳۴﴾ وَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम | तुम रहो | ऐ आदम | और हम ने कहा | 34 | काफ़िर | से | और हो गया | और तकब्बुर किया |

وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا ۠ وَلَا تَقْرَبَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क़रीब जाना | और न | तुम चाहो | जहां | इत्मिनान से | उस से | और तुम दोनों खाओ | जन्नत | और तुम्हारी बीवी |

هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۳۵﴾ فَاَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शैतान | फिर उन दोनों को फुसलाया | 35 | ज़ालिम (जमा) | से | फिर तुम हो जाओगे | दरख़्त | इस |

عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيْهِ ۠ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे बाज़ | तुम उतर जाओ | और हम ने कहा | उस में | वह थे | से जो | फिर उन्हें निकलवा दिया | उस से |

لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِى الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿۳۶﴾ فَتَلَقّٰٓى

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर हासिल कर लिए | 36 | वक़्त | तक | और सामान | ठिकाना | ज़मीन | में | और तुम्हारे लिए | दुश्मन | बाज़ के |

اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۳۷﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 37 | रहम करने वाला | तौबा क़ुबूल करने वाला | वह | बेशक वह | उस की | फिर उस ने तौबा क़ुबूल की | कुछ कलिमात | अपना रब | से | आदम |

और जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं ज़मीन में एक नाइब बनाने वाला हूँ, उन्हों ने कहा क्या तू उस में बनाएगा जो उस में फ़साद करेगा और ख़ून बहाएगा? और हम तेरी तारीफ़ के साथ तुझ को बे ऐब कहते हैं और तेरी पाकीज़गी बयान करते हैं, उस ने कहा बेशक मैं जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (30)

और उस ने आदम (अ) को सब चीज़ों के नाम सिखाए, फिर उन्हें फ़रिश्तों के सामने किया, फिर कहा मुझ को उन के नाम बतलाओ, अगर तुम सच्चे हो। (31)

उन्हों ने कहा, तू पाक है, हमें कोई इल्म नहीं मगर (सिर्फ़ वह) जो तू ने हमें सिखा दिया, बेशक तू ही जानने वाला हिक्मत वाला है। (32)

उस ने फ़र्माया ऐ आदम! उन्हें उन के नाम बतला दे, सो जब उस ने उन के नाम बतलाए उस ने फ़र्माया क्या मैं ने नहीं कहा था कि मैं जानता हूँ छुपी हुई बातें आस्मानों और ज़मीन की, और मैं जानता हूँ जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। (33)

और जब हम ने फ़रिश्तों को कहा तुम आदम को सिज्दः करो तो इब्लीस के सिवाए उन्हों ने सिज्दः किया, उस ने इन्कार किया, और तकब्बुर किया और वह काफ़िरों में से हो गया। (34)

और हम ने कहा ऐ आदम! तुम रहो और तुम्हारी बीवी जन्नत में, और तुम दोनों उस में से खाओ जहां से चाहो इत्मिनान से, और न क़रीब जाना उस दरख़्त के (वरना) तुम हो जाओगे ज़ालिमों में से। (35)

फिर शैतान ने उन दोनों को फुसलाया उस से। फिर उन्हें निकलवा दिया उस जगह से जहां वह थे, और हम ने कहा तुम उतर जाओ, तुम्हारे बाज़, बाज़ के लिए दुश्मन हैं, और तुम्हारे लिए ज़मीन में ठिकाना है, और एक वक़्त तक सामान (ज़िन्दगी) है। (36)

फिर आदम (अ) ने हासिल कर लिए अपने रब से कुछ कलिमात, फिर उस ने उस (आदम) की तौबा क़ुबूल की, बेशक वह तौबा क़ुबूल करने वाला रहम करने वाला है। (37)

हम ने कहा तुम सब यहां से उतर जाओ, पस जब तुम्हें मेरी तरफ़ से कोई हिदायत पहुँचे, सो जो चला मेरी हिदायत पर, न उन पर कोई ख़ौफ़ होगा, न वह ग़मगीन होंगे। (38)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और झुटलाया हमारी आयतों को, वही दोज़ख़ वाले हैं, वह हमेशा उस में रहेंगे। (39)

ऐ बनी इस्राईल (औलादे याक़ूब)! मेरी नेमत याद करो, जो मैं ने तुम्हें बख़्शी, और पूरा करो मेरे साथ किया गया अ़हद, मैं तुमहारे साथ किया गया अ़हद पूरा करूँगा, और मुझ ही से डरो। (40)

और उस पर ईमान लाओ जो मैं ने नाज़िल किया, उस की तसदीक़ करने वाला जो तुम्हारे पास है, और सब से पहले उस के काफ़िर न हो जाओ और मेरी आयात के इवज़ थोड़ी क़ीमत न लो, और मुझ ही से डरो। (41)

और न मिलाओ हक़ को बातिल से, और हक़ को न छुपाओ जब कि तुम जानते हो। (42)

और तुम क़ाइम करो नमाज़, और अदा करो ज़कात, और रुकूअ़ करो रुकूअ़ करने वालों के साथ. (43)

क्या तुम लोगों को नेकी का हुक्म देते हो और अपने आप को भूल जाते हो? हालांकि तुम पढ़ते हो किताब, क्या फिर तुम समझते नहीं? (44)

और तुम मदद हासिल करो सब्र और नमाज़ से, और वह बड़ी (दुशवार) है मगर आ़जिज़ी करने वालों पर (नहीं) (45)

वह जो समझते हैं कि वह अपने रब के रूबरू होने वाले हैं और यह कि वह उस की तरफ़ लौटने वाले हैं। (46)

ऐ बनी इस्राईल (औलादे याक़ूब)! तुम मेरी नेमत याद करो जो मैं ने तुम्हें बख़्शी, और यह कि मैं ने तुम्हें फ़ज़ीलत दी ज़माने वालों पर। (47)

और उस दिन से डरो जिस दिन कोई शख़्स किसी का कुछ बदला न बनेगा, और न उस से कोई सिफ़ारिश क़ुबूल की जाएगी, और न उस से कोई मुआवज़ा लिया जाएगा, और न उन की मदद की जाएगी। (48)

قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّىْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चला | सो जो | कोई हिदायत | मेरी तरफ़ से | तुम्हें पहुँचे | पस जब | सब | यहां से | तुम उतर जाओ | हम ने कहा |

هُدَاىَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुफ़्र किया | और जिन लोगों ने | 38 | ग़मगीन होंगे | वह | और न | उन पर | कोई ख़ौफ़ | तो न | मेरी हिदायत |

وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 39 | हमेशा रहेंगे | उस में | वह | दोज़ख़ वाले | वही | हमारी आयात | और झुटलाया |

يٰبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِىَ الَّتِىْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَوْفُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और पूरा करो | तुम्हें | मैं ने बख़्शी | जो | मेरी नेमत | तुम याद करो | याक़ूब | ऐ औलाद |

بِعَهْدِىْٓ اُوْفِ بِعَهْدِكُمْ ۚ وَاِيَّاىَ فَارْهَبُوْنِ ﴿٤٠﴾ وَاٰمِنُوْا بِمَآ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस पर जो | और तुम ईमान लाओ | 40 | डरो | और मुझ ही से | तुम्हारा अ़हद | मैं पूरा करूँगा | मेरा अ़हद |

اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْٓا اَوَّلَ كَافِرٍۢ بِهٖ ۠ وَلَا تَشْتَرُوْا

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इवज़ लो | और न | उस के | काफ़िर | पहले | हो जाओ | और न | तुम्हारे पास | उस की जो | तस्दीक़ करने वाला | मैं ने नाज़िल किया |

بِاٰيٰتِىْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۡ وَّاِيَّاىَ فَاتَّقُوْنِ ﴿٤١﴾ وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बातिल से | हक़ | मिलाओ | और न | 41 | डरो | और मुझ ही से | थोड़ी | क़ीमत | मेरी आयात |

وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़कात | और अदा करो | नमाज़ | और क़ाइम करो | 42 | जानते हो | जब कि तुम | हक़ | और न छुपाओ |

وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾ اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम भूल जाते हो | नेकी का | लोग | क्या तुम हुक्म देते हो | 43 | रुकूअ़ करने वाले | साथ | और रुकूअ़ करो |

اَنْفُسَكُمْ وَاَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सब्र से | और तुम मदद हासिल करो | 44 | तुम समझते | क्या फिर नहीं | किताब | पढ़ते हो | हालांकि तुम | अपने आप |

وَالصَّلٰوةِ ؕ وَاِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ ﴿٤٥﴾ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| समझते हैं | वह जो | 45 | आ़जिज़ी करने वाले | पर | मगर | बड़ी (दुशवार) | और वह | और नमाज़ |

اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَاَنَّهُمْ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿٤٦﴾ يٰبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| याक़ूब | ऐ औलादे | 46 | लौटने वाले | उस की तरफ़ | और यह कि वह | अपना रब | रूबरू होने वाले | कि वह |

اذْكُرُوْا نِعْمَتِىَ الَّتِىْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّىْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٧﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 47 | ज़माने वाले | पर | तुम्हें फ़ज़ीलत दी | और यह कि मैं ने | तुम पर | मैं ने बख़्शी | जो | मेरी नेमत | तुम याद करो |

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِىْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْئًا وَّلَا يُقْبَلُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क़ुबूल की जाएगी | और न | कुछ | किसी | से | कोई शख़्स | न बदला बनेगा | उस दिन | और डरो |

مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٤٨﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 48 | मदद की जाएगी | उन | और न | कोई मुआवज़ा | उस से | लिया जाएगा | और न | कोई सिफ़ारिश | उस से |

وَاِذْ نَجَّيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अज़ाब | बुरा | वह तुम्हें दुख देते थे | फ़िरऔन | आले | से | हम नें तुम्हें रिहाई दी | और जब |

يُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِىْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | आज़माइश | उस | और में | तुम्हारी औ़रतें | और ज़िन्दा छोड़ देते थे | तुम्हारे बेटे | वह ज़ुब्ह करते थे |

رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿٤٩﴾ وَاِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ وَاَغْرَقْنَآ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम ने डुबो दिया | फिर तुम्हें बचा लिया | दर्या | तुम्हारे लिए | हम ने फाड़ दिया | और जब | 49 | बड़ी | तुम्हारा रब |

اٰلَ فِرْعَوْنَ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿٥٠﴾ وَاِذْ وٰعَدْنَا مُوْسٰٓى اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रात | चालीस | मूसा (अ) | हम ने वादा किया | और जब | 50 | देख रहे थे | और तुम | आले फ़िरऔ़न |

ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿٥١﴾ ثُمَّ عَفَوْنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने मुआ़फ़ कर दिया | फिर | 51 | ज़ालिम (जमा) | और तुम | उन के बाद | बछड़ा | तुम ने बना लिया | फिर |

عَنْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَاِذْ اٰتَيْنَا مُوْسَى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मूसा (अ) | हम ने दी | और जब | 52 | एहसान मानो | ताकि तुम | यह | उस के बाद | तुम से |

الْكِتٰبَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿٥٣﴾ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी क़ौम से | मूसा | कहा | और जब | 53 | हिदायत पा लो | ताकि तुम | और कसौटी | किताब |

يٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوْبُوْٓا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सो तुम रुजूअ़ करो | बछड़ा | तुम ने बना लिया | अपने ऊपर | तुम ने ज़ुल्म किया | बेशक तुम | ऐ क़ौम |

اِلٰى بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नज़दीक | तुम्हारे लिए | बेहतर | यह | अपनी जानें | सो तुम हलाक करो | पैदा करने वाला | तरफ़ |

بَارِئِكُمْ ؕ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿٥٤﴾ وَاِذْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जब | 54 | रह्म करने वाला | तौबा कुबूल करने वाला | वह | बेशक | तुम्हारी | उस ने तौबा कुबूल की | तुम्हारा पैदा करने वाला |

قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर तुम्हें आ लिया | खुल्लम खुल्ला | अल्लाह | हम देख लें | जब तक | तुझे | हम हरगिज़ न मानेंगे | ऐ मूसा | तुम ने कहा |

الصّٰعِقَةُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿٥٥﴾ ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारी मौत | बाद | से | हम ने तुम्हें ज़िन्दा किया | फिर | 55 | तुम देख रहे थे | और तुम | बिजली की कड़क |

لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٥٦﴾ وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम ने उतारा | बादल | तुम पर | और हम ने साया किया | 56 | एहसान मानो | ताकि तुम |

عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने तुम्हें दी | जो | पाक चीज़ें | से | तुम खाओ | और सलवा | मन्न | तुम पर |

وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٥٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 57 | वह ज़ुल्म करते थे | अपनी जानें | थे | और लेकिन | उन्हों ने ज़ुल्म किया हम पर | और नहीं |

और जब हम नें तुम्हें आले फ़िरऔ़न से रिहाई दी, वह तुम्हें दुख देते थे बुरा अ़ज़ाब। और वह तुम्हारे बेटों को ज़ुब्ह करते थे और तुम्हारी औ़रतों को ज़िन्दा छोड़ देते थे और उस में तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ी आज़माइश थी। (49)

और जब हम नें तुम्हारे लिए फाड़ दिया दर्या, फिर हम ने तुम्हें बचा लिया, और आले फ़िरऔ़न को डुबो दिया, और तुम देख रहे थे। (50)

और जब हम ने मूसा (अ) से चालीस रातों का वादा किया, फिर तुम ने बछड़े को उन के बाद (माबूद) बना लिया, और तुम ज़ालिम हुए। (51)

फिर हम ने तुम्हें उस के बाद मुआ़फ़ कर दिया ताकि तुम एहसान मानो। (52)

और जब हम ने मूसा को किताब दी और कसौटी (हक़ और बातिल मे फरक़ करने वाला) ताकि तुम हिदायत पा लो। (53)

और जब मूसा (अ) ने अपनी क़ौम से कहा, ऐ क़ौम! बेशक तुम ने अपने ऊपर ज़ुल्म किया बछड़े को (माबूद) बना कर, सो तुम अपने पैदा करने वाले की तरफ़ रुजूअ़ करो, अपनों को हलाक करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक, सो उस ने तुम्हारी तौबा कुबूल कर ली, बेशक वह तौबा कुबूल करने वाला, रह्म करने वाला है (54)

और जब तुम ने कहा ऐ मूसा! हम तुझे हरगिज़ न मानेंगे, जब तक अल्लाह को हम खुल्लम खुल्ला न देख लें, फिर तुम्हें बिजली की कड़क ने आ लिया, और तुम देख रहे थे। (55)

फिर हम ने तुम्हें तुम्हारी मौत के बाद ज़िन्दा किया, ताकि तुम एहसान मानो। (56)

और हम ने तुम पर बादल का साया किया और हम ने तुम पर मन्न और सलवा उतारा, वह पाक चीज़ें खाओ जो हम ने तुम्हें दीं। और उन्हों ने हम पर ज़ुल्म नहीं किया और लेकिन वह अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। (57)

| شِئْتُمْ | حَيْثُ | مِنْهَا | فَكُلُوْا | الْقَرْيَةَ | هٰذِهِ | ادْخُلُوْا | قُلْنَا | وَاِذْ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम चाहो | जहां | उस से | फिर खाओ | बस्ती | उस | तुम दाख़िल हो | हम ने कहा | और जब |

| لَكُمْ | نَغْفِرْ | حِطَّةٌ | وَّقُوْلُوْا | سُجَّدًا | الْبَابَ | وَّادْخُلُوا | رَغَدًا |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हें | हम बख़्श देंगे | बख़्शदे | और कहो | सिज्दः करते हुए | दरवाज़ा | और तुम दाख़िल हो | बाफ़राग़त |

| قَوْلًا | الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا | فَبَدَّلَ | ۵۸ | الْمُحْسِنِيْنَ | وَسَنَزِيْدُ | خَطٰيٰكُمْ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बात | जिन लोगों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम) | फिर बदल डाला | 58 | नेकी करने वाले | और अनक़रीब ज़ियादा देंगे | तुम्हारी ख़ताएं |

| رِجْزًا | الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا | عَلَى | فَاَنْزَلْنَا | لَهُمْ | قِيْلَ | الَّذِيْ | غَيْرَ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ़ज़ाब | जिन लोगों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम) | पर | फिर हम ने उतारा | उन्हें | कही गई | वह जो कि | दूसरी |

| لِقَوْمِهٖ | مُوْسٰى | اسْتَسْقٰى | وَاِذِ | ۵۹ | كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ | بِمَا | السَّمَآءِ | مِّنَ | ع ١٣ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी क़ौम के लिए | मूसा (अ) | पानी मांगा | और जब | 59 | वह नाफ़रमानी करते थे | क्योंकि | आस्मान | से | |

| عَيْنًا | اثْنَتَا عَشْرَةَ | مِنْهُ | فَانْفَجَرَتْ | الْحَجَرَ | بِّعَصَاكَ | اضْرِبْ | فَقُلْنَا |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चश्मे | बारा | उस से | तो फूट पड़े | पत्थर | अपना असा | मारो | फिर हम ने कहा |

| اللّٰهِ | رِّزْقِ | مِنْ | وَاشْرَبُوْا | كُلُوْا | مَّشْرَبَهُمْ | كُلُّ اُنَاسٍ | قَدْ عَلِمَ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | रिज़्क़ | से | और पियो | तुम खाओ | अपना घाट | हर क़ौम | जान लिया |

| يٰمُوْسٰى | قُلْتُمْ | وَاِذْ | ۶۰ | مُفْسِدِيْنَ | الْاَرْضِ | فِى | وَلَا تَعْثَوْا |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ मूसा | तुम ने कहा | और जब | 60 | फ़साद मचाते | ज़मीन | में | और न फिरो |

| مِمَّا | يُخْرِجْ لَنَا | رَبَّكَ | لَنَا | فَادْعُ | وَّاحِدٍ | طَعَامٍ | عَلٰى | لَنْ نَّصْبِرَ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से जो | निकाले हमारे लिए | अपना रब | हमारे लिए | दुआ करें | एक | खाना | पर | हरगिज़ न सब्र करेंगे |

| وَعَدَسِهَا | وَفُوْمِهَا | وَقِثَّآئِهَا | بَقْلِهَا | مِنْ | الْاَرْضُ | تُنْۢبِتُ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और मसूर | और गन्दुम | और ककड़ी | तरकारी | से (कुछ) | ज़मीन | उगाती है |

| خَيْرٌ | هُوَ | بِالَّذِيْ | هُوَ اَدْنٰى | الَّذِيْ | اَتَسْتَبْدِلُوْنَ | قَالَ | وَبَصَلِهَا |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेहतर | वह | उस से जो | वह अदना | जो कि | क्या तुम बदलना चाहते हो | उस ने कहा | और प्याज़ |

| الذِّلَّةُ | عَلَيْهِمُ | وَضُرِبَتْ | مَّا سَاَلْتُمْ | لَكُمْ | فَاِنَّ | مِصْرًا | اهْبِطُوْا |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़िल्लत | उन पर | और डालदी गई | जो तुम मांगते हो | तुम्हारे लिए | पस बेशक | शहर | तुम उतरो |

| بِاَنَّهُمْ | ذٰلِكَ | اللّٰهِ | مِّنَ | بِغَضَبٍ | وَبَآءُوْ | وَالْمَسْكَنَةُ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| इस लिए कि वह | यह | अल्लाह | से | ग़ज़ब के साथ | और वह लौटे | और मोहताजी |

| النَّبِيّٖنَ | وَيَقْتُلُوْنَ | اللّٰهِ | بِاٰيٰتِ | يَكْفُرُوْنَ | كَانُوْا |
|---|---|---|---|---|---|
| नबियों को | और क़त्ल करते थे | अल्लाह | आयतों का | वह इन्कार करते | वह थे |

| ۶۱ | يَعْتَدُوْنَ | وَّكَانُوْا | عَصَوْا | بِمَا | ذٰلِكَ | بِغَيْرِ الْحَقِّ | ع ٢ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 61 | हद से बढ़ते | और थे | उन्हों ने नाफ़रमानी की | इस लिए कि | यह | नाहक़ | |

और जब हम ने कहा तुम दाख़िल होजाओ उस बस्ती में, फिर उस में जहां से चाहो बाफ़राग़त खाओ और दरवाज़े से दाख़िल हो सिज्दः करते हुए, और कहो बख़्शदे, हम तुम्हें तुम्हारी ख़ताएं बख़्श देंगे, और अनक़रीब ज़ियादा देंगे नेकी करने वालों को। (58)

फिर ज़ालिमों ने दूसरी बात से उस बात को बदल डाला जो कही गई थी उन्हें, फिर हम ने ज़ालिमों पर आस्मान से अज़ाब उतारा, क्योंकि वह नाफ़रमानी करते थे। (59)

और जब मूसा (अ) ने अपनी क़ौम के लिए पानी मांगा फिर हम ने कहा अपना अ़सा पत्थर पर मारो, तो फूट पड़े उस से बारा चश्मे, हर क़ौम ने अपना घाट जान लिया, तुम खाओ और पियो अल्लाह के रिज़्क़ से, और ज़मीन में न फिरो फ़साद मचाते। (60)

और जब तुम ने कहा ऐ मूसा! हम एक खाने पर हरगिज़ सब्र न करेंगे, आप हमारे लिए अपने रब से दुआ करें हमारे लिए निकाले जो ज़मीन उगाती है, कुछ तरकारी और ककड़ी, और गन्दुम, और मसूर, और प्याज़। उस ने कहा क्या तुम बदलना चाहते हो? वह जो अदना है उस से जो बेहतर है, तुम शहर में उतरो बेशक तुम्हारे लिए होगा जो तुम मांगते हो, और उन पर ज़िल्लत और मोहताजी डाल दी गई, और वह लौटे अल्लाह के ग़ज़ब के साथ, यह इस लिए हुआ कि वह अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे, और नाहक़ नबियों को क़त्ल करते थे, यह इस लिए हुआ कि उन्हों ने नाफ़रमानी की और वह हद से बढ़ते थे। (61)

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالنَّصٰرٰى وَالصّٰبِـِٕيْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और साबी | और नसारा | यहूदी हुए | और जो लोग | ईमान लाए | बेशक जो लोग |

مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन का अजर | तो उन के लिए | नेक | और अमल करे | आख़िरत | और रोज़े | अल्लाह पर | ईमान लाए | जो |

عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾ وَاِذْ اَخَذْنَا

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने लिया | और जब | 62 | ग़मगीन होंगे | वह | और न | उन पर | कोई ख़ौफ़ | और न | उन का रब | पास |

مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ۗ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मज़बूती से | जो हम ने तुम्हें दिया | पकड़ो | कोहे तूर | तुम्हारे ऊपर | और हम ने उठाया | तुम से इक़रार |

وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस | बाद | तुम फिर गए | फिर | 63 | परहेज़गार हो जाओ | ताकि तुम | उस में | जो | और याद रखो |

فَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَكُنْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 64 | नुक़्सान उठाने वाले | से | तो तुम थे | और उस की रह्मत | तुम पर | अल्लाह | फ़ज़्ल | पस अगर न |

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِيْنَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِى السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन से | तब हम ने कहा | हफ़्ते के दिन में | तुम से | ज़ियादती की | जिन्हों ने | तुम ने जान लिया | और अलबत्ता |

كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ﴿٦٥﴾ فَجَعَلْنٰهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सामने वालों के लिए | इब्रत | फिर हम ने उसे बनाया | 65 | ज़लील | बन्दर | तुम हो जाओ |

وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖٓ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी कौम से | मूसा (अ) | कहा | और जब | 66 | परहेज़गारों के लिए | और नसीहत | उस के पीछे | और जो |

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تَذْبَحُوْا بَقَرَةً ۗ قَالُوْٓا اَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ۗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मज़ाक | क्या तुम करते हो हम से | वह कहने लगे | एक गाय | तुम ज़ुब्ह करो | कि | तुम्हें हुक्म देता है | अल्लाह | बेशक |

قَالَ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारे लिए | दुआ करें | उन्हों ने कहा | 67 | जाहिलों से | कि हो जाऊँ | अल्लाह की | मैं पनाह लेता हूँ | उस ने कहा |

رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ۗ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गाय | कि वह | फ़र्माता है | बेशक वह | उस ने कहा | कैसी है वह | हमें | बतलाए | अपना रब |

لَّا فَارِضٌ وَّلَا بِكْرٌ ۗ عَوَانٌۢ بَيْنَ ذٰلِكَ ۗ فَافْعَلُوْا مَا تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 68 | जो तुम्हें हुक्म दिया जाता है | पस करो | उस | दरमियान | जवान | छोटी उम्र | और न | न बूढ़ी |

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا لَوْنُهَا ۗ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़र्माता है | बेशक वह | उस ने कहा | कैसा उस का रंग | हमें | वह बतलादे | अपना रब | हमारे लिए | दुआ करें | उन्हों ने कहा |

اِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَآءُ ۙ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النّٰظِرِيْنَ ﴿٦٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 69 | देखने वाले | अच्छी लगती | उस का रंग | गहरा | जर्द रंग | एक गाय | कि वह |

बेशक जो लोग ईमान लाए और जो यहूदी हुए और नसरानी और साबी, जो ईमान लाए अल्लाह पर और रोज़े आख़िरत पर और नेक अमल करे तो उन के लिए उन के रब के पास उन का अजर है, और उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे। (62)

और जब हम ने तुम से इक़रार लिया, और हम ने तुम्हारे ऊपर कोहे तूर उठाया, जो हम ने तुम्हें दिया है वह मज़बूती से पकड़ो, और जो उस में है उसे याद रखो ताकि तुम परहेजगार हो जाओ। (63)

फिर उस के बाद तुम फिर गए, पस अगर अल्लाह का फ़ज़्ल न होता तुम पर, और उस की रह्मत तो तुम नुक़्सान उठाने वालों में से थे (64)

और अलबत्ता तुम ने (उन लोगों को) जान लिया जिन्हों ने तुम में से हफ़्ते के दिन में ज़ियादती की तब हम ने उन से कहा तुम ज़लील बन्दर हो जाओ। (65)

फिर हम ने उसे सामने वालों के लिए और पीछे आने वालों के लिए इब्रत बनाया, और नसीहत परहेजगारों के लिए। (66)

और जब मूसा (अ) ने अपनी कौम से कहा बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि तुम एक गाय ज़ुब्ह करो, वह कहने लगे क्या तुम हम से मज़ाक़ करते हो? उस ने कहा मैं अल्लाह की पनाह लेता हूँ (इस से) कि मैं जाहिलों से हो जाऊँ। (67)

उन्हों ने कहा अपने रब से हमारे लिए दुआ करें कि वह हमें बतलाए वह कैसी है? उस ने कहा बेशक वह फ़र्माता है कि वह गाय न बूढ़ी है और न छोटी उम्र की, उस के दरमियान जवान है, पस तुम्हें जो हुक्म दिया जाता है करो। (68)

उन्हों ने कहा हमारे लिए दुआ करें अपने रब से कि वह हमें बतला दे उस का रंग कैसा है? उस ने कहा बेशक वह फ़र्माता है कि वह एक गाय है जर्द रंग की, उस का रंग खूब गहरा है, देखने वालों को अच्छी लगती है। (69)

उन्हों ने कहा हमारे लिए अपने रब से दुआ करें वह हमें बतला दे वह कैसी है? क्योंकि गाय में हम पर इश्तिबाह हो गया, और अगर अल्लाह ने चाहा तो बेशक हम ज़रूर हिदायत पा लेंगे। (70)

उस ने कहा बेशक वह फ़र्माता है कि वह एक गाए है न सधी हो, न ज़मीन जोतती न खेती को पानी देती, वे ऐब है, उस में कोई दाग़ नहीं, वह बोले अब तुम ठीक बात लाए, फिर उन्हों ने उसे ज़ुब्ह किया, और वह लगते न थे कि वह (ज़ुब्ह) करें। (71)

और जब तुम ने एक आदमी को क़त्ल किया फिर तुम उस में झगड़ने लगे और अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था जो तुम छुपाते थे। (72)

फिर हम ने कहा तुम उस (मक़्तूल) को गाय का एक टुकड़ा मारो, इस तरह अल्लाह मुर्दों को ज़िन्दा करेगा, वह तुम्हें दिखाता है अपने निशान, ताकि तुम ग़ौर करो। (73)

फिर उस के बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गए, सो वह पत्थर जैसे हो गए, या उस से ज़ियादा सख़्त, और बेशक बाज़ पत्थरों से नहरें फूट निकलती हैं, और बेशक उन में से बाज़ फट जाते हैं तो निकलता है उन से पानी, और उन में से बाज अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं, और अल्लाह उस से बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (74)

फिर क्या तुम तवक़्क़ो रखते हो? कि वह मान लेंगे तुम्हारी ख़ातिर, और उन में से एक फ़रीक़ अल्लाह का कलाम सुनता है फिर वह उस को बदल डालते हैं उस को समझ लेने के बाद, और वह जानते हैं। (75)

और जब वह उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान लाए तो कहते हैं हम ईमान लाए, और जब उन के बाज़ दूसरों के पास अकेले होते हैं, तो कहते हैं क्या तुम उन्हें वह बतलाते हो जो अल्लाह ने तुम पर ज़ाहिर किया ताकि वह उस के ज़रीए तुम्हारे रब के सामने हुज्जत लाएं तुम पर, तो क्या तुम नहीं समझते? (76)

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ۙ اِنَّ الْبَقَرَ تَشٰبَهَ عَلَيْنَا ۗ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम पर | इश्तिबाह हो गया | गाय | क्योंकि | वह कैसी | हमें | वह बतला दे | अपना रब | हमारे लिए | दुआ करें | उन्हों ने कहा |

وَاِنَّـآ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُوْنَ ﴿٧٠﴾ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक गाए | कि वह | फ़र्माता है | बेशक वह | उस ने कहा | 70 | ज़रूर हिदायत पा लेंगे | अल्लाह | चाहा | अगर | और बेशक हम |

لَّا ذَلُوْلٌ تُثِيْرُ الْاَرْضَ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ ۚ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيْهَا ۗ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | कोई दाग़ | नहीं | बे ऐब | खेती | पानी देती | और न | ज़मीन | जोतती | न सधी हुई |

قَالُوا الْـٰٔنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ۚ فَذَبَحُوْهَا وَمَا كَادُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧١﴾ ع ٨

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 71 | वह करें | और वह लगते न थे | फिर उन्हों ने ज़ुब्ह किया उस को | ठीक बात | तुम लाए | अब | वह बोले |

وَاِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَءْتُمْ فِيْهَا ۗ وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो तुम थे | ज़ाहिर करने वाला | और अल्लाह | उस में | फिर तुम झगड़ने लगे | एक आदमी | तुम ने क़त्ल किया | और जब |

تَكْتُمُوْنَ ﴿٧٢﴾ فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا ۗ كَذٰلِكَ يُحْيِ اللّٰهُ الْمَوْتٰى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुर्दे | अल्लाह | ज़िन्दा करेगा | इस तरह | उस का टुकड़ा | उसे मारो | फिर हम ने कहा | 72 | छुपाते |

وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٣﴾ ثُمَّ قَسَتْ قُلُوْبُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बाद | तुम्हारे दिल | सख़्त हो गए | फिर | 73 | ग़ौर करो | ताकि तुम | अपने निशान | और तुम्हें दिखाता है |

ذٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ قَسْوَةً ۗ وَاِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पत्थर | से | और बेशक | सख़्त | उस से ज़ियादा | या | पत्थर जैसे | सो वह | उस |

لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُ ۗ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से | तो निकलता है | फट जाते हैं | अलबत्ता जो | उस में (बाज़) | और बेशक | नहरें | उस से | फूट निकलती हैं | अलबत्ता |

الْمَآءُ ۗ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेख़बर | और नहीं अल्लाह | अल्लाह | डर | से | अलबत्ता गिरता है | उस से | और बेशक | पानी |

عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٧٤﴾ اَفَتَطْمَعُوْنَ اَنْ يُّؤْمِنُوْا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और था | तुम्हारे लिए | मान लेंगे | कि | क्या फिर तुम तवक़्क़ो रखते हो | 74 | तुम करते हो | से जो |

فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ يُحَرِّفُوْنَهٗ مِنْۢ بَعْدِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बाद | वह बदल डालते हैं उस को | फिर | अल्लाह का कलाम | वह सुनते हैं | उन से | एक फ़रीक़ |

مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह कहते हैं | ईमान लाए | जो लोग | वह मिलते हैं | और जब | 75 | जानते हैं | और वह | जो उन्हों ने समझ लिया |

اٰمَنَّا ۚ وَاِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ قَالُوْٓا اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ بِمَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | क्या बतलाते हो उन्हें | कहते हैं | बाज़ | पास | उन के बाज़ | अकेले होते हैं | और जब | हम ईमान लाए |

فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَآجُّوْكُمْ بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۗ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 76 | तो क्या तुम नहीं समझते | तुम्हारा रब | सामने | उस के ज़रीए | ताकि वह हुज्जत लाएं तुम पर | तुम पर | अल्लाह | ज़ाहिर किया |

اَوَلَا يَعۡلَمُوۡنَ اَنَّ اللّٰهَ يَعۡلَمُ مَا يُسِرُّوۡنَ وَمَا يُعۡلِنُوۡنَ ﴿٧٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 77 | वह ज़ाहिर करते हैं | और जो | जो वह छुपाते हैं | जानता है | अल्लाह | कि | वह जानते | क्या नहीं |

وَمِنۡهُمۡ اُمِّيُّوۡنَ لَا يَعۡلَمُوۡنَ الۡكِتٰبَ اِلَّاۤ اَمَانِىَّ وَاِنۡ هُمۡ اِلَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर | वह | और नहीं | आर्ज़ूएं | सिवाए | किताब | वह नहीं जानते | अनपढ़ | और उन में |

النصف يَظُنُّوۡنَ ﴿٧٨﴾ فَوَيۡلٌ لِّلَّذِيۡنَ يَكۡتُبُوۡنَ الۡكِتٰبَ بِاَيۡدِيۡهِمۡ ثُمَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर | अपने हाथों से | किताब | लिखते हैं | उन के लिए जो | सो ख़राबी | 78 | गुमान से काम लेते हैं |

يَقُوۡلُوۡنَ هٰذَا مِنۡ عِنۡدِ اللّٰهِ لِيَشۡتَرُوۡا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيۡلًا ؕ فَوَيۡلٌ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सा ख़राबी | थोड़ी | क़ीमत | उस से | ताकि वह हासिल करें | अल्लाह | पास | से | यह | वह कहते हैं |

لَّهُمۡ مِّمَّا كَتَبَتۡ اَيۡدِيۡهِمۡ وَوَيۡلٌ لَّهُمۡ مِّمَّا يَكۡسِبُوۡنَ ﴿٧٩﴾ وَقَالُوۡا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने कहा | 79 | वह कमाते हैं | उस से जो | उन के लिए | और ख़राबी | उन के हाथ | लिखा | उस से जो | उन के लिए |

لَنۡ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّاۤ اَيَّامًا مَّعۡدُوۡدَةً ؕ قُلۡ اَتَّخَذۡتُمۡ عِنۡدَ اللّٰهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | पास | क्या तुम ने लिया | कह दो | चन्द | दिन | सिवाए | आग | हरगिज़ नहीं छुएगी |

عَهۡدًا فَلَنۡ يُّخۡلِفَ اللّٰهُ عَهۡدَهٗۤ اَمۡ تَقُوۡلُوۡنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो नहीं | अल्लाह | पर | तुम कहते हो | क्या | अपना वादा | अल्लाह | ख़िलाफ़ करेगा | कि हरगिज़ न | कोई वादा |

تَعۡلَمُوۡنَ ﴿٨٠﴾ بَلٰى مَنۡ كَسَبَ سَيِّئَةً وَّاَحَاطَتۡ بِهٖ خَطِيۡٓــَٔتُهٗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की खताएं | उस को | और घेर लिया | कोई बुराई | कमाई | जिस ने | क्यों नहीं | 80 | तुम जानते |

فَاُولٰٓئِكَ اَصۡحٰبُ النَّارِ ۚ هُمۡ فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ﴿٨١﴾ وَالَّذِيۡنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो लोग | 81 | हमेशा रहेंगे | उस में | वह | आग वाले (दोज़ख़ी) | पस यही लोग |

اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِكَ اَصۡحٰبُ الۡجَنَّةِ ۚ هُمۡ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह | जन्नत वाले | यही लोग | अच्छे अ़मल | और उन्हों ने किए | ईमान लाए |

ع ٩ ١١ ٩ فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ﴿٨٢﴾ وَاِذۡ اَخَذۡنَا مِيۡثَاقَ بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बनी इस्राईल | पुख़्ता अ़हद | हम ने लिया | और जब | 82 | हमेशा रहेंगे | उस में |

لَا تَعۡبُدُوۡنَ اِلَّا اللّٰهَ وَبِالۡوَالِدَيۡنِ اِحۡسَانًا وَّذِى الۡقُرۡبٰى

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और क़राबतदार | हुस्ने सुलूक | और माँ बाप से | सिवाए अल्लाह | तुम इबादत न करना |

وَالۡيَتٰمٰى وَالۡمَسٰكِيۡنِ وَقُوۡلُوۡا لِلنَّاسِ حُسۡنًا

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अच्छी बात | लोगों से | और तुम कहना | और मिस्कीन (जमा) | और यतीम (जमा) |

وَّاَقِيۡمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ ثُمَّ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| फिर | ज़कात | और देना | नमाज़ | और तुम क़ाइम करना |

تَوَلَّيۡتُمۡ اِلَّا قَلِيۡلًا مِّنۡكُمۡ وَاَنۡتُمۡ مُّعۡرِضُوۡنَ ﴿٨٣﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 83 | फिर जाने वाले | और तुम | तुम में से | चन्द एक | सिवाए | तुम फिर गए |

क्या वह नहीं जानते कि अल्लाह जानता है जो वह छुपाते हैं और जो वह ज़ाहिर करते हैं। (77)

और उन में कुछ अनपढ़ हैं जो किताब नहीं जानते सिवाए चन्द आर्ज़ूओं के, और वह सिर्फ़ गुमान से काम लेते हैं। (78)

सो उन के लिए ख़राबी है जो वह किताब लिखते हैं अपने हाथों से, फिर कहते हैं यह अल्लाह के पास से है ताकि उस के ज़रीए हासिल कर लें थोड़ी सी क़ीमत, सो उन के लिए ख़राबी है उस से जो उन के हाथों ने लिखा, और उन के लिए खराबी है उस से जो वह कमाते हैं। (79)

और उन्हों ने कहा कि हमें आग हरगिज न छुएगी सिवाए गिनती के चन्द दिन, कह दो, क्या तुम ने अल्लाह के पास से कोई वादा लिया है कि अल्लाह हरगिज़ अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करेगा, क्या तुम अल्लाह पर वह कहते हो जो तुम नहीं जानते? (80)

क्यों नहीं! जिस ने कमाई कोई बुराई और उस को उस की खताओं ने घेर लिया पस यही लोग दोज़ख़ी हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (81)

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए यही लोग जन्नत वाले हैं वह उस में हमेशा रहेंगे। (82)

और जब हम ने लिया बनी इस्राईल से पुख़्ता अ़हद कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करना, और माँ बाप से हुस्ने सुलूक करना, और क़राबतदारों, यतीमों और मिस्कीनों से। और तुम कहना लोगों से अच्छी बात, और नमाज़ क़ाइम करना, और ज़कात देना, फिर तुम फिर गए तुम में से चन्द एक के सिवा, और तुम फिर जाने वाले हो। (83)

और फिर जब हम ने तुम से पुख़्ता अहद लिया कि तुम अपनों के ख़ून न बहाओगे, और न तुम अपनों को अपनी बस्तियों से निकालोगे, फिर तुम ने इक़रार किया और तुम गवाह हो। (84)

फिर तुम वह लोग हो जो क़त्ल करते हो अपनों को, और अपने एक फ़रीक़ को उन के वतन से निकालते हो, तुम चढ़ाई करते हो उन पर गुनाह और सरकशी से, और अगर वह तुम्हारे पास क़ैदी आएं तो बदला दे कर उन्हें छुड़ाते हो, हालांकि उन का निकालना तुम पर हराम किया गया था, तो क्या तुम किताब के बाज़ हिस्से पर ईमान लाते हो? और बाज हिस्से का इन्कार करते हो? सो तुम में जो ऐसा करे उस की क्या सज़ा है? सिवाए उस के कि दुन्या की ज़िन्दगी में रुसवाई, और वह क़ियामत के दिन सख़्त अ़ज़ाब की तरफ़ लौटाए जाएंगे, और जो तुम करते हो अल्लाह उस से बेख़बर नहीं। (85)

यही लोग हैं जिन्हों ने ख़रीद ली आख़िरत के बदले दुन्या की ज़िन्दगी, सो उन से अ़ज़ाब हलका न किया जाएगा, और न वह मदद किए जाएंगे। (86)

और अलबत्ता हम ने मूसा (अ) को किताब दी, और हम ने उस के बाद पै दर पै भेजे रसूल, और हम ने मरयम के बेटे ईसा (अ) को खुली निशानियां दीं और उस की मदद की जिब्राईल के ज़रीए, क्या फिर जब तुम्हारे पास कोई रसूल उस के साथ आया जो तुम्हारे नफ़्स न चाहते थे तो तुम ने तकब्बुर किया, सो एक गिरोह को तुम ने झुटलाया और एक गिरोह को तुम क़त्ल करने लगे। (87)

और उन्हों ने कहा हमारे दिल पर्दे में हैं, बल्कि उन पर उन के कुफ़्र के सबब अल्लाह की लानत है, सो थोड़े हैं जो ईमान लाते हैं। (88)

| تُخْرِجُوْنَ | وَلَا | دِمَآءَكُمْ | لَا تَسْفِكُوْنَ | مِيْثَاقَكُمْ | اَخَذْنَا | وَاِذْ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम निकालोगे | और न | अपनों के ख़ून | न तुम बहाओगे | तुम से पुख़्ता अहद | हम ने लिया | और जब |

| ٨٤ | تَشْهَدُوْنَ | وَاَنْتُمْ | اَقْرَرْتُمْ | ثُمَّ | دِيَارِكُمْ | مِّنْ | اَنْفُسَكُمْ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 84 | गवाह हो | और तुम | तुम ने इक़रार किया | फिर | अपनी बस्तियां | से | अपनों |

| مِّنْكُمْ | فَرِيْقًا | وَتُخْرِجُوْنَ | اَنْفُسَكُمْ | تَقْتُلُوْنَ | هٰٓؤُلَآءِ | اَنْتُمْ | ثُمَّ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने से | एक फ़रीक़ | और तुम निकालते हो | अपनों को | क़त्ल करते हो | वह लोग | तुम | फिर |

| وَاِنْ | وَالْعُدْوَانِ | بِالْاِثْمِ | عَلَيْهِمْ | تَظٰهَرُوْنَ | دِيَارِهِمْ | مِّنْ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और अगर | और सरकशी | गुनाह से | उन पर | तुम चढ़ाई करते हो | उन के वतन | से |

| اِخْرَاجُهُمْ | عَلَيْكُمْ | مُحَرَّمٌ | وَهُوَ | تُفٰدُوْهُمْ | اُسٰرٰى | يَّاْتُوْكُمْ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| निकालना उन का | तुम पर | हराम किया गया | हालांकि वह | तुम बदला दे कर छुड़ाते हो उन्हें | क़ैदी | वह आएं तुम्हारे पास |

| جَزَآءُ | فَمَا | بِبَعْضٍ | وَتَكْفُرُوْنَ | الْكِتٰبِ | بِبَعْضِ | اَفَتُؤْمِنُوْنَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सजा | सो क्या | बाज हिस्से | और इन्कार करते हो | किताब | बाज़ हिस्से | तो क्या तुम ईमान लाते हो |

| الدُّنْيَا | الْحَيٰوةِ | فِى | خِزْىٌ | اِلَّا | مِنْكُمْ | ذٰلِكَ | يَّفْعَلُ | مَنْ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दुन्या | जिन्दगी | में | रुसवाई | सिवाए | तुम में से | यह | करे | जो |

| عَمَّا | بِغَافِلٍ | اللّٰهُ | وَمَا | اَشَدِّ الْعَذَابِ | اِلٰٓى | يُرَدُّوْنَ | وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से जो | बेख़बर | अल्लाह | और नहीं | सख़्त अ़ज़ाब | तरफ़ | वह लौटाए जाएंगे | और क़ियामत के दिन |

| بِالْاٰخِرَةِ | الدُّنْيَا | الْحَيٰوةَ | اشْتَرَوُا | الَّذِيْنَ | اُولٰٓئِكَ | ٨٥ | تَعْمَلُوْنَ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आख़िरत के बदले | दुन्या | ज़िन्दगी | ख़रीद ली | वह जिन्हों ने | यही लोग | 85 | तुम करते हो |

| ٨٦ | يُنْصَرُوْنَ | هُمْ | وَلَا | الْعَذَابُ | عَنْهُمُ | فَلَا يُخَفَّفُ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 86 | मदद किए जाएंगे | वह | और न | अ़ज़ाब | उन से | सो हलका न किया जाएगा |

١٠ ع ١٠

| بِالرُّسُلِ | مِنْۢ بَعْدِهٖ | وَقَفَّيْنَا | الْكِتٰبَ | مُوْسَى | وَلَقَدْ اٰتَيْنَا |
|---|---|---|---|---|---|
| रसूल | उस के बाद | और हम ने पै दर पै भेजे | किताब | मूसा | और अलबत्ता हम ने दी |

| بِرُوْحِ الْقُدُسِ | وَاَيَّدْنٰهُ | الْبَيِّنٰتِ | ابْنَ مَرْيَمَ | عِيْسَى | وَاٰتَيْنَا |
|---|---|---|---|---|---|
| जिब्राईल के ज़रीए | और उस की मदद की | खुली निशानियां | मरयम का बेटा | ईसा (अ) | और हम ने दी |

| اسْتَكْبَرْتُمْ | اَنْفُسُكُمُ | لَا تَهْوٰٓى | بِمَا | رَسُوْلٌۢ | جَآءَكُمْ | اَفَكُلَّمَا |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम ने तकब्बुर किया | तुम्हारे नफ़्स | न चाहते | उस के साथ जो | कोई रसूल | आया तुम्हारे पास | क्या फिर जब |

| غُلْفٌ | قُلُوْبُنَا | وَقَالُوْا | ٨٧ | تَقْتُلُوْنَ | وَفَرِيْقًا | كَذَّبْتُمْ | فَفَرِيْقًا |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर्दे में | हमारे दिल | और उन्हों ने कहा | 87 | तुम क़त्ल करने लगे | और एक गिरोह | तुम ने झुटलाया | सो एक गिरोह |

| ٨٨ | مَّا يُؤْمِنُوْنَ | فَقَلِيْلًا | بِكُفْرِهِمْ | اللّٰهُ | لَّعَنَهُمُ | بَلْ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 88 | जो ईमान लाते हैं | सो थोड़े | उन के कुफ़्र के सबब | अल्लाह | उन पर लानत | बल्कि |

وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۙ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जब | उन के पास आई | किताब | से | पास | अल्लाह | तस्दीक़ करने वाली | उस की जो | उन के पास |

وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَلَمَّا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और वह थे | उस से पहले | फ़तह मांगते | पर | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | सो जब |

جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ ۡ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आया उन के पास | जो | वह पहचानते थे | उस के मुन्किर हो गए | सो लानत | अल्लाह | पर | काफ़िर (जमा) | 89 |

بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ اَنْ يَّكْفُرُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बुरा है जो | बेच डाला उन्हों ने | उस के बदले | अपने आप | कि | वह मुन्किर हुए | उस से जो | नाज़िल किया | अल्लाह | ज़िद |

اَنْ يُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | नाज़िल करता है | अल्लाह | से | अपना फ़ज़्ल | पर | जो वह चाहता है | से | अपने बन्दे |

فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ ۭ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सो वह कमा लाए | ग़ज़ब | पर | ग़ज़ब | और काफ़िरों के लिए | अ़ज़ाब |

مُّهِيْنٌ ﴿٩٠﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रुसवा करने वाला | 90 | और जब कहा जाता है | उन्हें | तुम ईमान लाओ | उस पर जो | नाज़िल किया अल्लाह ने | वह कहते हैं |

نُؤْمِنُ بِمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۤ وَهُوَ الْحَقُّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ईमान लाते हैं | उस पर जो | नाज़िल किया गया | हम पर | और इन्कार करते हैं | उस से जो | उस के अ़लावा | हालांकि वह | हक़ |

مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ۭ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُوْنَ اَنْۢبِيَآءَ اللّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तस्दीक़ करने वाला | उस की जो | उन के पास | कह दें | सो क्यों | तुम क़त्ल करते रहे | अल्लाह के नबी (जमा) |

مِنْ قَبْلُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩١﴾ وَلَقَدْ جَآءَكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से पहले | अगर | तुम हो | मोमिन (जमा) | 91 | और अलबत्ता | तुम्हारे पास आए |

مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मूसा | खुली निशानियों के साथ | फिर | तुम ने बना लिया | बछड़ा | उस के बाद | और तुम |

ظٰلِمُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़ालिम (जमा) | 92 | और जब | हम ने लिया | तुम से पुख़्ता अ़हद | और हम ने बुलन्द किया | तुम्हारे ऊपर | कोहे तूर |

خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاسْمَعُوْا ۭ قَالُوْا سَمِعْنَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पकड़ो | जो हम ने दिया तुम्हें | मज़बूती से | और सुनो | वह बोले | हम ने सुना |

وَعَصَيْنَا ۤ وَاُشْرِبُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ۭ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और नाफ़रमानी की | और रचा दिया गया | में | उन के दिल | बछड़ा | बसबब उन के कुफ़्र |

قُلْ بِئْسَمَا يَاْمُرُكُمْ بِهٖٓ اِيْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कह दें | क्या ही बुरा जो | तुम्हें हुक्म देता है | उस का | ईमान तुम्हारा | अगर तुम हो | मोमिन | 93 |

और जब उन के पास अल्लाह के पास से किताब आई, उस की तस्दीक़ करने वाली, जो उन के पास है और वह उस से पहले काफ़िरों पर फ़त्ह मांगते थे, सो जब उन के पास वह आया जो वह पहचानते थे वह उस के मुन्किर हो गए, सो काफ़िरों पर अल्लाह की लानत है। (89)

बुरा है जो उन्हों ने बेच डाला अपने आप को उस के बदले कि वह उस के मुन्किर हो गए जो अल्लाह ने नाज़िल किया, इस ज़िद से कि अल्लाह नाज़िल करता है अपने फ़ज़्ल से, अपने जिस बन्दे पर वह चाहता है, सो कमा लाए ग़ज़ब पर ग़ज़ब, और काफ़िरों के लिए रुसवा करने वाला अ़ज़ाब है। (90)

और जब उन से कहा जाता है कि तुम ईमान लाओ उस पर जो अल्लाह ने नाज़िल किया तो कहते हैं हम उस पर ईमान लाते हैं जो हम पर नाज़िल किया गया और इन्कार करते हैं उस का जो उस के अ़लावा है, हालांकि वह हक़ है, उस की तस्दीक़ करने वाला जो उन के पास है, आप कह दें सो क्यों तुम अल्लाह के नबियों को उस से पहले क़त्ल करते रहे हो? अगर तुम मोमिन हो। (91)

और अलबत्ता मूसा (अ) तुम्हारे पास खुली निशानियों के साथ आए, फिर तुम ने उस के बाद बछड़े को (माबूद) बना लिया और तुम ज़ालिम हो। (92)

और जब हम ने तुम से पुख़्ता अ़हद लिया और तुम्हारे ऊपर कोहे तूर बुलन्द किया (और कहा) जो हम ने तुम्हें दिया है मज़बूती से पकड़ो और सुनो, तो वह बोले हम ने सुना और नाफ़रमानी की, और उन के दिलों में बछड़ा रचा दिया गया उन के कुफ़्र के सबब, कह दें क्या ही बुरा है जिस का तुम्हें हुक्म देता है तुम्हारा ईमान, अगर तुम मोमिन हो। (93)

कह दें अगर तुम्हारे लिए है आख़िरत का घर अल्लाह के पास ख़ास तौर पर दूसरे लोगों के सिवा, तो तुम मौत की आर्ज़ू करो, अगर तुम सच्चे हो। (94)

और वह हरगिज़ कभी मौत की आर्ज़ू न करेंगे उस के सबब जो उन के हाथों ने आगे भेजा, और अल्लाह ज़ालिमों को जानने वाला है। (95)

और अलबत्ता तुम उन्हें दूसरे लोगों से ज़ियादा ज़िन्दगी पर हरीस पाओगे, और मुश्रिकों से (भी ज़ियादा), उन में से हर एक चाहता है काश वह हज़ार साल की उम्र पाए, और इतनी उम्र दिया जाना उसे अ़ज़ाब से दूर करने वाला नहीं, और अल्लाह देखने वाला है जो वह करते हैं। (96)

कह दें जो जिब्राईल का दुश्मन हो तो बेशक उस ने यह आप के दिल पर नाज़िल किया है अल्लाह के हुक्म से उस की तस्दीक़ करने वाला जो उस से पहले है, और हिदायत और ख़ुशख़बरी ईमान वालों के लिए। (97)

जो दुश्मन हो अल्लाह का, और उस के फ़रिश्तों और उस के रसूलों का, और जिब्राईल और मिकाईल का, तो बेशक अल्लाह काफ़िरों का दुश्मन है। (98)

और अलबत्ता हम ने आप की तरफ़ वाज़ेह निशानियाँ उतारीं और उन का इन्कार सिर्फ़ नाफ़रमान करते हैं। (99)

क्या (ऐसा नहीं) जब भी उन्हों ने कोई अ़हद किया तो उस को तोड़ दिया उन में से एक फ़रीक़ ने, बल्कि उन के अक्सर ईमान नहीं रखते। (100)

और जब उन के पास एक रसूल आया अल्लाह की तरफ़ से, उस की तस्दीक़ करने वाला जो उन के पास है, तो फैंक दिया एक फ़रीक़ ने अहले किताब के, अल्लाह की किताब को अपनी पीठ पीछे, गोया कि वह जानते ही नहीं। (101)

قُلْ اِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ عِنْدَ اللّٰهِ خَالِصَةً
ख़ास तौर पर | अल्लाह | पास | आख़िरत का घर | तुम्हारे लिए | अगर है | कह दें

مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٩٤﴾
94 | सच्चे | तुम हो | अगर | मौत | तो तुम आर्ज़ू करो | लोग | सिवाए

وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ
जानने वाला | और अल्लाह | उन के हाथ | बसबब जो आगे भेजा | कभी | और वह हरगिज़ उस की आर्ज़ू न करेंगे

بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٥﴾ وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى حَيٰوةٍ ۚ
ज़िन्दगी पर | लोग | ज़ियादा हरीस | और अलबत्ता तुम पाओगे उन्हें | 95 | ज़ालिमों को

وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ اَلْفَ سَنَةٍ ۚ
साल | हज़ार | काश वह उम्र पाए | उन का हर एक | चाहता है | जिन लोगों ने शिर्क किया (मुश्रिक) | और से

وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ مِنَ الْعَذَابِ اَنْ يُّعَمَّرَ ۗ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا
जो | देखने वाला | और अल्लाह | कि वह उम्र दिया जाए | अ़ज़ाब | से | उसे दूर करने वाला | और वह नहीं

ع ١١

يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ
यह नाज़िल किया | तो बेशक उस ने | जिब्राईल का | दुश्मन | हो | जो | कह दें | 96 | वह करते हैं

عَلٰى قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى
और हिदायत | उस से पहले | उस की जो | तस्दीक़ करने वाला | अल्लाह | हुक्म से | तर दिल पर

وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٧﴾ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ
और उस के फ़रिश्ते | अल्लाह का | दुश्मन | हो | जो | 97 | ईमान वालों के लिए | और ख़ुशख़बरी

وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٩٨﴾
98 | काफ़िरों का | दुश्मन | तो बेशक अल्लाह | और मिकाईल | और जिब्राईल | और उस के रसूल

وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۚ وَمَا يَكْفُرُ بِهَآ
उस का | और नहीं इन्कार करते | निशानियाँ वाज़ेह | आप की तरफ़ | हम ने उतारी | और अलबत्ता

اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ﴿٩٩﴾ اَوَ كُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ ۗ
उन से | एक फ़रीक़ | तोड़ दिया उस को | कोई अ़हद | उन्हों ने अ़हद किया | क्या जब भी | 99 | नाफ़रमान | मगर

بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٠﴾ وَلَمَّا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ
अल्लाह | तरफ़ | से | एक रसूल | आया उन के पास | और जब | 100 | ईमान नहीं रखते | अक्सर उन के | बल्कि

مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيْقٌ مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ ۙ
किताब दी गई (अहले किताब) | जिन्हें | से | एक फ़रीक़ | फैंक दिया | उन के पास | उस की जो | तस्दीक़ करने वाला

كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠١﴾
101 | जानते नहीं | गोया कि वह | अपनी पीठ | पीछे | अल्लाह की किताब

معانقة ٢ عند المتأخرين

| وَاتَّبَعُوْا | مَا | تَتْلُوا | الشَّيٰطِيْنُ | عَلٰى | مُلْكِ | سُلَيْمٰنَ | وَمَا كَفَرَ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने पैरवी की | जो | पढ़ते थे | शैतान | में | बादशाहत | सुलेमान (अ) | और कुफ़्र न किया |

| سُلَيْمٰنُ | وَلٰكِنَّ | الشَّيٰطِيْنَ | كَفَرُوْا | يُعَلِّمُوْنَ | النَّاسَ | السِّحْرَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सुलेमान (अ) | लेकिन | शैतान (जमा) | कुफ़्र किया | वह सिखाते | लोग | जादू |

| وَمَآ اُنْزِلَ | عَلَى | الْمَلَكَيْنِ | بِبَابِلَ | هَارُوْتَ | وَمَارُوْتَ |
|---|---|---|---|---|---|
| और जो नाज़िल किया गया | पर | दो फ़रिश्ते | बाबिल में | हारुत | और मारुत |

| وَمَا يُعَلِّمٰنِ | مِنْ اَحَدٍ | حَتّٰى | يَقُوْلَآ | اِنَّمَا | نَحْنُ | فِتْنَةٌ | فَلَا تَكْفُرْ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह न सिखाते | किसी को | यहां तक | वह कह देते | सिर्फ़ | हम | आज़माइश | पस तू कुफ़्र न कर |

| فَيَتَعَلَّمُوْنَ | مِنْهُمَا | مَا يُفَرِّقُوْنَ | بِهٖ | بَيْنَ | الْمَرْءِ | وَزَوْجِهٖ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सो वह सीखते | उन दोनों से | जिस से जुदाई डालते | उस से | दरमियान | ख़ाविन्द | और उस की बीवी |

| وَمَا هُمْ | بِضَآرِّيْنَ | بِهٖ | مِنْ اَحَدٍ | اِلَّا | بِاِذْنِ | اللّٰهِ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह नहीं | नुक़्सान पहुँचाने वाले | उस से | किसी को | मगर | हुक्म से | अल्लाह |

| وَيَتَعَلَّمُوْنَ | مَا يَضُرُّهُمْ | وَلَا | يَنْفَعُهُمْ | وَلَقَدْ عَلِمُوْا |
|---|---|---|---|---|
| और वह सीखते है | जो उन्हें नुक़्सान पहुँचाए | और न | उन्हें नफ़ा दे | और वह जान चुके |

| لَمَنِ | اشْتَرٰىهُ | مَا لَهٗ | فِى الْاٰخِرَةِ | مِنْ خَلَاقٍ | وَلَبِئْسَ |
|---|---|---|---|---|---|
| जिस ने | यह ख़रीदा | नहीं उस के लिए | आख़िरत में | कोई हिस्सा | और अलबत्ता बुरा |

| مَا شَرَوْا | بِهٖٓ | اَنْفُسَهُمْ | لَوْ | كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ | ١٠٢ | وَلَوْ | اَنَّهُمْ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो उन्हों ने बेच दिया | उस से | अपने आप को | काश | वह जानते होते | 102 | और अगर | वह |

और उन्हों ने उस की पैरवी की जो शैतान सुलेमान (अ) की बादशाहत में पढ़ते थे। और कुफ़्र नहीं किया सुलेमान (अ) ने, लेकिन शैतानों ने कुफ़्र किया, वह लोगों को जादू सिखाते, और जो बाबिल में हारुत और मारुत दो फ़रिश्तों पर नाजिल किया गया, और वह न सिखाते किसी को, यहां तक कि कह देते कि हम तो सिर्फ़ आज़माइश हैं पस तू कुफ़्र न कर, सो वह सीखते उन दोनों से वह कुछ जिस से ख़ाविन्द और उस की बीवी के दरमियान जुदाई डालते, और वह नुक़्सान पहुँचाने वाले नहीं उस से किसी को, मगर अल्लाह के हुक्म से, और वह सीखते जो उन्हें नुक़्सान पहुँचाए और उन्हें नफ़ा न दे और अलबत्ता वह जान चुके हैं जिस ने यह खरीदा, उस के लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं, और अलबत्ता बुरा है जिस के बदले उन्हों ने अपने आप को बेच दिया। काश वह जानते होते। (102)

| اٰمَنُوْا | وَاتَّقَوْا | لَمَثُوْبَةٌ | مِّنْ | عِنْدِ | اللّٰهِ | خَيْرٌ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह ईमान लाते | और परहेज़गार बन जाते | तो ठिकाना पाते | से | पास | अल्लाह | बेहतर |

ع ١٢ ١٢

| لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ | ١٠٣ | يٰٓاَيُّهَا | الَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا | لَا تَقُوْلُوْا | رَاعِنَا |
|---|---|---|---|---|---|---|
| काश वह जानते होते | 103 | ऐ | वह लोग जो | ईमान लाए | न कहो | राइना |

और अगर वह ईमान ले आते और परहेज़गार बन जाते तो अल्लाह के पास अच्छा बदला पाते, काश वह जानते होते। (103)

| وَقُوْلُوا | انْظُرْنَا | وَاسْمَعُوْا | وَلِلْكٰفِرِيْنَ | عَذَابٌ | اَلِيْمٌ | ١٠٤ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और कहो | उनज़ुरना | और सुनो | और काफ़िरों के लिए | अज़ाब | दर्दनाक | 104 |

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो (मोमिनों)! राइना न कहो और उनज़ुरना कहो और सुनो और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (104)

| مَا يَوَدُّ | الَّذِيْنَ | كَفَرُوْا | مِنْ | اَهْلِ الْكِتٰبِ | وَلَا | الْمُشْرِكِيْنَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं चाहते | जिन लोगों ने | कुफ़्र किया | से | अहले किताब | और न | मुश्रिक (जमा) |

| اَنْ | يُّنَزَّلَ | عَلَيْكُمْ | مِّنْ | خَيْرٍ | مِّنْ | رَّبِّكُمْ | وَاللّٰهُ | يَخْتَصُّ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | नाज़िल की जाए | तुम पर | से | भलाई | से | तुम्हारा रब | और अल्लाह | ख़ास कर लेता है |

| بِرَحْمَتِهٖ | مَنْ يَّشَآءُ | وَاللّٰهُ | ذُو الْفَضْلِ | الْعَظِيْمِ | ١٠٥ |
|---|---|---|---|---|---|
| अपनी रह्मत से | जिसे चाहता है | और अल्लाह | फ़ज़्ल वाला | बड़ा | 105 |

अहले किताब में से जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह नहीं चाहते और न मुश्रिक कि तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से कोई भलाई नाज़िल की जाए और अललाह जिसे चाहता है अपनी रह्मत से ख़ास कर लेता है और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (105)

कोई आयत जिसे हम मनसूख करते हैं या उसे हम भुला देते हैं उस से बेहतर या उस जैसी ले आते हैं, क्या तू नहीं जानता? कि अल्लाह हर शै पर क़ादिर है। (106)

क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह के लिए है आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत, और तुम्हारे लिए नहीं अल्लाह के सिवा कोई हामी और न मददगार। (107)

क्या तुम चाहते हो कि अपने रसूल से सवाल करो जैसे सवाल किए गए उस से पहले मूसा से, और जो ईमान के बदले कुफ़्र इख़्तियार कर ले सो वह भटक गया सीधे रास्ते से। (108)

बहुत से अहले किताब ने चाहा कि वह काश तुम्हें लौटा दें तुम्हारे ईमान के बाद कुफ़्र में, अपने दिल के हसद की वजह से, उस के बाद जब कि उन पर हक़ वाज़ेह हो गया, पस तुम मुआ़फ़ कर दो और दरगुज़र करो, यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म लाए, बेशक अल्लाह हर चीज पर क़ादिर है (109)

और नमाज क़ाइम करो और देते रहो जकात, और अपने लिए जो भलाई आगे भेजोगे तुम उसे पा लोगे अल्लाह के पास, बेशक तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे देखने वाला है। (110)

और उन्हों ने कहा हरगिज़ दाखिल न होगा जन्नत में, सिवाए उस के जो यहूदी हो या नसरानी, यह उन की झूटी आर्ज़ूएं हैं, कह दीजिए तुम लाओ अपनी दलील, अगर तुम सच्चे हो। (111)

क्यों नहीं? जिस ने अपना चहरा अल्लाह के लिए झुका दिया, और वह नेकोकार हो तो उस के लिए उस का अजर उस के रब के पास है, और उन पर कोई खौफ़ नहीं और न वह ग़मगीन होंगे। (112)

مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَآ اَوْ مِثْلِهَا ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो हम मनसूख करते हैं | कोई आयत | या उसे भुला देते हैं | ले आते हैं | बेहतर | उस से | या उस जैसा |

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۰۶﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या नहीं | तू जानता | कि अल्लाह | पर | हर शै | क़ादिर | 106 | क्या तू नहीं जानता | कि | अल्लाह | उस के लिए |

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बादशाहत | आस्मानों | और ज़मीन | और नहीं | तुम्हारे लिए | से | अल्लाह के सिवा | कोई |

وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۱۰۷﴾ اَمْ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَسْـَٔلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हामी | और न मददगार | 107 | क्या तुम चाहते हो | कि | सवाल करो | अपना रसूल | जैसे |

سُئِلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ؕ وَمَنْ يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सवाल किए गए | मूसा | उस से पहले | और जो | इख़्तियार कर ले | कुफ़्र | ईमान के बदले |

فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿۱۰۸﴾ وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सा वह भटक गया | सीधा | रास्ता | 108 | चाहा | बहुत | से | अहले किताब |

لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۚۖ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| काश तुम्हें लौटा दें | से | बाद | तुम्हारे ईमान | कुफ़्र में | हसद | वजह से |

اَنْفُسِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने दिल | बाद | जब कि | वाज़ेह हो गया | उन पर | हक़ | पस तुम मुआ़फ़ कर दो |

وَاصْفَحُوْا حَتّٰى يَاْتِیَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और दरगुज़र करो | यहां तक | लाए | अल्लाह | अपना हुक्म | बेशक | अल्लाह | पर | हर | चीज़ |

قَدِيْرٌ ﴿۱۰۹﴾ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ وَمَا تُقَدِّمُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क़ादिर | 109 | और तुम क़ाइम करो | नमाज़ | और देते रहो | ज़कात | और जो | आगे भेजोगे |

لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने लिए | भलाई | तुम पा लोगे उसे | अल्लाह के पास | बेशक | अल्लाह | जो कुछ तुम करते हो |

بَصِيْرٌ ﴿۱۱۰﴾ وَقَالُوْا لَنْ يَّدْخُلَ الْجَنَّةَ اِلَّا مَنْ كَانَ هُوْدًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| देखने वाला | 110 | और उन्हों ने कहा | हरगिज़ दाख़िल न होगा | जन्नत | सिवाए | जो | हो | यहूदी |

اَوْ نَصٰرٰى ؕ تِلْكَ اَمَانِيُّهُمْ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| या नसरानी | यह | झूटी आर्ज़ूएं | कह दीजिए | तुम लाओ | अपनी दलील | अगर तुम हो |

صٰدِقِيْنَ ﴿۱۱۱﴾ بَلٰى ۚ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهٗۤ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सच्चे | 111 | क्यों नहीं | जिस | झुका दिया | अपना चहरा | अल्लाह के लिए | और वह | नेकोकार | तो उस के लिए |

اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۪ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۱۱۲﴾ ع ۱۳ ۹ ۱۲

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस का अजर | पास | उस का रब | और न | कोई ख़ौफ़ | उन पर | और न | वह | ग़मगीन होंगे | 112 |

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى عَلٰى شَيْءٍ ۖ وَّقَالَتِ النَّصٰرٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नसारा | और कहा | किसी चीज़ | पर | नसारा | नहीं | यहूद | और कहा |

لَيْسَتِ الْيَهُوْدُ عَلٰى شَيْءٍ ۙ وَّهُمْ يَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ۗ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो लोग | कहा | इसी तरह | किताब | पढ़ते हैं | हालांकि वह | किसी चीज़ पर | यहूद | नहीं |

لَا يَعْلَمُوْنَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क़ियामत के दिन | फ़ैसला करेगा उन के दरमियान | सो अल्लाह | उन की बात | जैसी | इल्म नहीं रखते |

فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١١٣﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रोका | से-जो | बड़ा ज़ालिम | और कौन | 113 | इख़्तिलाफ़ करते | उस में | वह थे | जिस में |

مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِيْ خَرَابِهَا ۗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की वीरानी | में | और कोशिश की | उस का नाम | उस में | ज़िक्र किया जाए | कि | अल्लाह की मसजिदें |

اُولٰٓئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ اَنْ يَّدْخُلُوْهَآ اِلَّا خَآئِفِيْنَ ۬ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दुन्या में | उन के लिए | डरते हुए | मगर | वहां दाख़िल होते | कि | उन के लिए | न था | यह लोग |

خِزْيٌ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١١٤﴾ وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और मग़्रिब | मश्रिक़ | और अल्लाह के लिए | 114 | बड़ा | अज़ाब | आख़िरत में | और उन के लिए | रुसवाई |

فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿١١٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 115 | जानने वाला है | वुस्अ़त वाला | अल्लाह | बेशक | अल्लाह का सामना | तो उस तरफ़ | तुम मुंह करो | सो जिस तरफ़ |

وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۙ سُبْحٰنَهٗ ۗ بَلْ لَّهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मानों में | जो | बल्कि उस के लिए | वह पाक है | बेटा | अल्लाह | बना लिया | और उन्हों ने कहा |

وَالْاَرْضِ ۗ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿١١٦﴾ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और ज़मीन | आस्मानों | पैदा करने वाला | 116 | ग़ैर फ़र्मान | उस के लिए | सब | और ज़मीन |

وَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿١١٧﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो लोग | और कहा | 117 | तो वह हो जाता है | "हो जा" | उसे | कहता है | तो यही | कोई काम | वह फ़ैसला करता है | और जब |

لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ اَوْ تَاْتِيْنَآ اٰيَةٌ ۗ كَذٰلِكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इसी तरह | कोई निशानी | हमारे पास आती | या | अल्लाह | हम से कलाम करता | क्यों नहीं | इल्म नहीं रखते |

قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ۗ تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ ۗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के दिल | एक जैसे हो गए | उन की बात | जैसी | उन से पहले | जो लोग | कहा |

قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿١١٨﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हक़ के साथ | आप को भेजा | बेशक हम | 118 | यक़ीन रखते हैं | लोगों के लिए | निशानियां | हम ने वाज़ेह कर दीं |

بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۙ وَّلَا تُسْـَٔلُ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ ﴿١١٩﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 119 | दोज़ख़ वाले | से | और न आप से पूछा जाएगा | और डराने वाला | ख़ुशख़बरी देने वाला |

और यहूद ने कहा नसारा किसी चीज़ पर नहीं, और नसारा ने कहा यहूदी किसी चीज़ पर नहीं हालांकि वह पढ़ते हैं किताब। इसी तरह उन लोगों ने उन जैसी बात कही जो इल्म नहीं रखते, सो अल्लाह उन के दरमियान क़ियामत के दिन फ़ैसला करेगा जिस (बात) में वह इख़तिलाफ़ करते थे। (113)

और उस से बड़ा ज़ालिम कौन? जिस ने अल्लाह की मसजिदों से रोका कि उन में अल्लाह का नाम लिया जाए, और उस की वीरानी की कोशिश की, उन लोगों के लिए (हक़) न था कि वहां दाख़िल होते, मगर डरते हुए, उन के लिए दुन्या में रुसवाई है और उन के लिए आख़िरत में बड़ा अ़ज़ाब है। (114)

और अल्लाह के लिए है मश्रिक़ और मग़्रिब, सो जिस तरफ़ तुम मुँह करो उसी तरफ़ अल्लाह का सामना है, बेशक अल्लाह वुस्अ़त वाला, जानने वाला है। (115)

और उन्हों ने कहा अल्लाह ने बेटा बना लिया है, वह पाक है, बल्कि उसी के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है, सब उसी के ज़ेरे फ़र्मान हैं। (116)

वह पैदा करने वाला है आस्मानों का और ज़मीन का, और जब वह किसी काम का फ़ैसला करता है तो उसे यही कहता है "हो जा" तो वह हो जाता है। (117)

और जो लोग इल्म नहीं रखते, उन्हों ने कहा अल्लाह हम से कलाम क्यों नहीं करता? या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती? इसी तरह उन से पहले लोगों ने उन जैसी बात कही उन के दिल एक जैसे हैं। हम ने यक़ीन रखने वाले लोगों के लिए निशानियां वाज़ेह कर दी हैं। (118)

बेशक हम ने आप को भेजा हक़ के साथ, ख़ुशख़बरी देने वाला, डराने वाला, और आप से न पूछा जाएगा दोज़ख़ वालों के बारे में। (119)

और आप से हरगिज़ राज़ी न होंगे यहूदी और न नसारा जब तक आप उन के दीन की पैरवी न करें, कह दें! बेशक अल्लाह की हिदायत वही हिदायत है, और अगर आप ने उन की ख़ाहिशात की पैरवी की उस के बाद जब कि आप के पास इल्म आ गया, आप के लिए अल्लाह से कोई हिमायत करने वाला नहीं, और न मददगार (120)
हम ने जिन्हें किताब दी वह उस की तिलावत करते हैं जैसे तिलावत का हक़ है, वही उस पर ईमान रखते हैं, और जो उस का इन्कार करें वही ख़सारह पाने वाले हैं। (121)
ऐ बनी इस्राईल! मेरी नेमत याद करो जो मैं ने तुम पर की और यह कि मैं ने तुम्हें ज़माने वालों पर फ़ज़ीलत दी। (122)
और उस दिन से डरो (जिस दिन) कोई शख़्स बदला न हो सकेगा किसी शख़्स का कुछ भी, और न उस से कोई मुआवजा कुबूल किया जाएगा, और न उसे कोई सिफ़ारिश नफ़ा देगी, और न उन की मदद की जाएगी। (123)
और जब इब्राहीम (अ) को उन के रब ने चन्द बातों से आजमाया तो उन्हों नें वह पूरी कर दीं, उस ने फ़र्माया बेशक मैं तुम्हें लोगों का इमाम बनाने वाला हूँ, उस ने कहा और मेरी औलाद को (भी)? उस ने फ़र्माया मेरा अह्द ज़ालिमों को नहीं पहुँचता। (124)
और जब मैं नें ख़ाने काअ़बा को बनाया लोगों के लिए (बार बार) लौटने (इज्तिमाअ) की जगह और अम्न की जगह, और "मुक़ामे इब्राहीम" को नमाज की जगह बनाओ, और हम ने हुक्म दिया इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) को कि वह मेरा घर पाक रखें तवाफ़ करने वालों और एतिकाफ करने वालों के लिए, और रुकूअ सिज्दः करने वालों के लिए, (125)
और जब इब्राहीम (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! इस शह्र को बना अम्न वाला, और इस शह्र के रहने वालों को फलों की रोजी दे जो उन में से ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर, उस ने फ़र्माया जिस ने कुफ़्र किया उस को थोड़ा सा नफ़ा दूँगा फिर उस को मजबूर करूँगा दोज़ख के अजाब की तरफ़, और वह लौटने की बुरी जगह है। (126)

وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन का दीन | आप पैरवी करें | जब तक | नसारा | और न | यहूदी | आप से | और हरगिज़ राज़ी न होंगे |

قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ الَّـذِىْ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जो कि (जबकि) | बाद | उन की ख़ाहिशात | आप ने पैरवी की | और अगर | हिदायत | वही | अल्लाह | हिदायत | बेशक | कह दें |

جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١٢٠﴾ وقفٌ منزل

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 120 | मददगार | और न | हिमायत करने वाला | कोई | अल्लाह से | नहीं आप के लिए | इल्म | से | आप के पास आगया |

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान रखते हैं उस पर | वही लोग | उस की तिलावत | हक़ | उस की तिलावत करते हैं | किताब | हम ने दी | जिन्हें |

ع ٩ ١٣ ١٤
وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٢١﴾ يٰبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम याद करो | ऐ बनी इस्राईल | 121 | ख़सारह पाने वाले | वह | वही | इन्कार करें उस का | और जो |

نِعْمَتِىَ الَّتِىْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّىْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 122 | ज़माने वाले | पर | तुम्हें फ़ज़ीलत दी | और यह कि मैं ने | तुम पर | मैं ने इन्आम की | जो कि | मेरी नेमत |

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِىْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْئًا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से | और न कुबूल किया जाएगा | कुछ | किसी शख़्स से | कोई शख़्स | बदला न होगा | वह दिन | और डरो |

عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿١٢٣﴾ وَاِذِ ابْتَلٰٓى

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आजमाया | और जब | 123 | मदद की जाएगी | उन | और न | कोई सिफ़ारिश | उसे नफ़ा देगी | और न | कोई मुआवजा |

اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّ ؕ قَالَ اِنِّىْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ؕ قَالَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने कहा | इमाम | लोगों का | तुम्हें बनाने वाला हूँ | बेशक मैं | उस ने फ़र्माया | तो वह पूरी कर दीं | चन्द बातों से | उन का रब | इब्राहीम (अ) |

وَمِنْ ذُرِّيَّتِىْ ؕ قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٢٤﴾ وَاِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़ाने काअ़बा | बनाया हम ने | और जब | 124 | ज़ालिम (जमा) | मेरा अ़हद | नहीं पहुँचता | उस ने फ़र्माया | मेरी औलाद | और से |

مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا ؕ وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ؕ وَعَهِدْنَآ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम ने हुक्म दिया | नमाज़ की जगह | "मुक़ाम इब्राहीम" | से | और तुम बनाओ | और अम्न की जगह | लोगों के लिए | इज्तिमाअ़ की जगह |

اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ اَنْ طَهِّرَا بَيْتِىَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْعٰكِفِيْنَ وَالرُّكَّعِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और रुकूअ़ करने वाले | और एतिकाफ़ करने वाले | तवाफ़ करने वालों के लिए | मेरा घर | पाक रखें | कि वह | और इस्माईल (अ) को | इब्राहीम (अ) का |

السُّجُوْدِ ﴿١٢٥﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّارْزُقْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और रोज़ी दे | अम्न वाला | यह शह्र | बना | ऐ मेरे रब | इब्राहीम (अ) | कहा | और जब | 125 | सिज्दः करने वाले |

اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ قَالَ وَمَنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | उस ने फ़र्माया | और आख़िरत का दिन | अल्लाह पर | उन से | ईमान लाए | जो | फल (जमा) | से | इस के रहने वाले |

كَفَرَ فَاُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗٓ اِلٰى عَذَابِ النَّارِ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٢٦﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 126 | लौटने की जगह | और बुरी | दोज़ख़ का अ़ज़ाब | तरफ़ | मजबूर करूँगा उस को | फिर | थोड़ा | उस नफ़ा दूँगा | उस ने कुफ़्र किया |

وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ ۭ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ۭ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जब | उठाते थे | इब्राहीम (अ) | बुन्यादें | से | ख़ाने काअ़बा | और इस्माईल (अ) | ऐ हमारे रब | कुबूल फ़र्मा ले हम से |

اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٢٧﴾ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक तू | तू | सुनने वाला | जानने वाला | 127 | ऐ हमारे रब | और हमें बना ले | फ़र्मांबरदार | अपना |

وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَآ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۠ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और से | हमारी औलाद | उम्मत | फ़र्मांबरदार | अपनी | और हमें दिखा | हज के तरीक़े | और हमारी तौबा कुबूल फ़र्मा |

اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٨﴾ رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | तू | तौबा कुबूल करने वाला | रह्म करने वाला | 128 | ऐ हमारे रब | और भेज | उन में | एक रसूल |

مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन में | वह पढ़े | उन पर | तेरी आयतें | और उन्हें तालीम दे | "किताब" | और हिक्मत (दानाई) |

ع ١٥ ٨ ١٥ وَيُزَكِّيْهِمْ ۭ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٢٩﴾ وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हें पाक करे | बेशक | तू | ग़ालिब | हिक्मत वाला | 129 | और कौन | मुँह मोड़े | से | दीन |

اِبْرٰهٖمَ اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ۭ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इब्राहीम (अ) | सिवाए | जिस ने | बेवकूफ़ बनाया | अपने आप | और बेशक | हम ने उसे चुन लिया | दुन्या में |

وَاِنَّـهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٣٠﴾ اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗٓ اَسْلِمْ ۙ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बेशक वह | आख़िरत में | से | नेकोकार (जमा) | 130 | जब कहा | उस का | उस का रब | सर झुका दे |

قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٣١﴾ وَوَصّٰى بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने कहा | मैं ने सर झुका दिया | रब के लिए | तमाम जहान | 131 | और वसीयत की | उस की | इब्राहीम (अ) | अपने बेटे |

وَيَعْقُوْبُ ۭ يٰبَنِيَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और याकूब (अ) | मेरे बेटो | बेशक अल्लाह | चुन लिया | तुम्हारे लिए | दीन | पस तुम हरगिज़ न मरना | मगर |

وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٣٢﴾ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاۗءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम | मुसलमान (जमा) | 132 | क्या तुम थे | मौजूद | जब | आई | याकूब (अ) | मौत |

اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ بَعْدِيْ ۭ قَالُوْا نَعْبُدُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जब उस ने कहा | अपने बेटों को | किस की तुम इबादत करोगे? | मेरे बाद | उन्हों ने कहा | हम इबादत करेंगे |

اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَاۗىِٕكَ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ښ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तेरा माबूद | और माबूद | तेरे बाप दादा | इब्राहीम (अ) | और इस्माईल (अ) | और इस्हाक़ (अ) | माबूद | वाहिद |

وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٣﴾ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम | उसी के | फ़र्मांबरदार | 133 | यह | एक उम्मत | गुज़र गई | उस के लिए | जो उस ने कमाया |

وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔــلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٤﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और तुम्हारे लिए | जो तुम ने कमाया | और तुम से न पूछा जाएगा | उस के बारे में | जो वह करते थे | 134 |

और जब उठाते थे इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) ख़ाने काअ़बा की बुन्यादें (यह दुआ करते थे) ऐ हमारे परवरदिगार! हम से कुबूल फ़र्मा ले, बेशक तू सुनने वाला, जानने वाला है। (127)

ऐ हमारे रब! और हमें अपना फ़र्मांबरदार बना ले और हमारी औलाद में से एक अपनी फ़र्मांबरदार उम्मत बना और हमें हज के तरीक़े दिखा, और हमारी तौबा कुबूल फ़र्मा, बेशक तू ही तौबा कुबूल करने वाला, रह्म करने वाला है। (128)

ऐ हमारे रब! और उन में एक रसूल भेज उन में से, वह उन पर तेरी आयतें पढ़े और उन्हें "किताब" और "हिक्मत" (दानाई) की तालीम दे, और उन्हें पाक करे, बेशक तू ही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (129)

और कौन है जो मुँह मोड़े इब्राहीम (अ) के दीन से? सिवाए उस के जिस ने अपने आप को बेवकूफ़ बनाया, और बेशक हम ने उसे दुन्या में चुन लिया। और बेशक वह आख़िरत में नेकोकारों में से है। (130)

जब उस को उस के रब ने कहा तू सर झुका दे, उस ने कहा मैं ने तमाम जहानों के रब के लिए सर झुका दिया। (131)

और इब्राहीम (अ) ने अपने बेटों को और याकूब (अ) ने (भी) उसी की वसीयत की, ऐ मेरे बेटो! अल्लाह ने बेशक चुन लिया है तुम्हारे लिए दीन, पस तुम हरगिज़ न मरना मगर मुसलमान। (132)

क्या तुम थे मौजूद? जब याकूब (अ) को मौत आई, जब उस ने अपने बेटों को कहा मेरे बाद तुम किस की इबादत करोगे? उन्हों ने कहा हम इबादत करेंगे तेरे माबूद की, और तेरे बाप दादा इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) और इस्हाक़ (अ) के माबूदे वाहिद की, और हम उसी के फ़र्मांबरदार हैं। (133)

यह एक उम्मत थी जो गुज़र गई, उस के लिए जो उस ने कमाया और तुम्हारे लिए है जो तुम ने कमाया, और तुम से उस के बारे में न पूछा जाएगा जो वह करते थे। (134)

और उन्होंने कहा तुम यहूदी या नसरानी हो जाओ हिदायत पा लोगे, कह दीजिए बल्कि (हम पैरवी करते हैं) एक अल्लाह के हो जाने वाले इब्राहीम (अ) के दीन की और वह मुशरिकों में से न थे। **(135)** कह दो हम ईमान लाए अल्लाह पर और जो हमारी तरफ़ नाज़िल किया गया और जो नाज़िल किया गया इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) और इस्हाक़ (अ) और याकूब (अ) और औलादे याकूब (अ) की तरफ़, और जो दिया गया मूसा (अ) और ईसा (अ) को और जो दिया गया नबियों को, उन के रब की तरफ़ से, हम उन में से किसी एक के दरमियान फ़र्क़ नहीं करते, और हम उसी के फ़र्मांबरदार हैं। **(136)** पस अगर वह ईमान ले आएं जैसे तुम उस पर ईमान लाए हो, तो वह हिदायत पा गए, और अगर उन्होंने मुँह फेरा तो बेशक वही ज़िद में हैं, पस अनक़रीब उन के मुक़ाबिले में आप के लिए अल्लाह काफ़ी होगा, और वह सुनने वाला, जानने वाला है। **(137)** (हम ने लिया) रंग अल्लाह का, और किस का अच्छा है रंग अल्लाह से? और हम उसी की इबादत करने वाले हैं। **(138)** कह दीजिए, क्या तुम हम से झगड़ते हो अल्लाह के बारे में, हालांकि वही है हमारा रब और तुम्हारा रब, और हमारे लिए हमारे अमल और तम्हारे लिए तुम्हारे अमल, और हम ख़ालिस उसी के हैं, **(139)** क्या तुम कहते हो? कि इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ), और इस्हाक़ (अ), और याकूब (अ) और औलादे याकूब (अ) यहूदी थे या नसरानी। कह दीजिए क्या तुम ज़ियादा जानने वाले हो या अल्लाह? और कौन है बड़ा ज़ालिम उस से जिस ने वह गवाही छुपाई जो अल्लाह की तरफ़ से उस के पास थी, और अल्लाह बेख़बर नहीं उस से जो तुम करते हो। **(140)** यह एक उम्मत थी जो गुज़र चुकी, उस के लिए है जो उस ने कमाया और तुम्हारे लिए है जो तुम ने कमाया, और तुम से उस के बारे में न पूछा जाएगा जो वह करते थे। **(141)**

وَقَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ۗ قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इब्राहीम (अ) | बल्कि दीन | कह दीजिए | तुम हिदायत पा लोगे | नसरानी | या | यहूदी | हो जाओ | और उन्होंने कहा |

حَنِيْفًا ۗ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٣٥﴾ قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नाज़िल किया गया | और जो | अल्लाह पर | हम ईमान लाए | कह दो | 135 | मुशरिकीन | से | और न थे | एक अल्लाह के हो जाने वाले |

اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और याकूब (अ) | और इस्हाक़ (अ) | और इस्माईल (अ) | इब्राहीम (अ) | तरफ़ | नाज़िल किया गया | और जो | हमारी तरफ़ |

وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَمَآ اُوْتِيَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के रब से | नबियों | दिया गया | और जो | और ईसा (अ) | मूसा (अ) | दिया गया | और जो | और औलादे याकूब (अ) |

لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۖ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٦﴾ فَاِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस अगर | 136 | फ़र्मांबरदार | उसी के | और हम | उन से | किसी एक | दरमियान | हम फ़र्क नहीं करते |

اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَآ اٰمَنْتُمْ بِهٖ فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो बेशक वही | उन्होंने मुँह फेरा | और अगर | तो वह हिदायत पा गए | उस पर | तुम ईमान लाए | जैसे | वह ईमान लाएं |

هُمْ فِيْ شِقَاقٍ ۚ فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٣٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 137 | जानने वाला | सुनने वाला | और वह | अल्लाह | पस अनक़रीब आप के लिए उन के मुक़ाबिले में काफ़ी होगा | ज़िद | में | वह |

صِبْغَةَ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۫ وَّنَحْنُ لَهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उसी की | और हम | रंग | अल्लाह | से | अच्छा | और किस | रंग अल्लाह का |

عٰبِدُوْنَ ﴿١٣٨﴾ قُلْ اَتُحَآجُّوْنَنَا فِي اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ وَلَنَآ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हमारे लिए | और तुम्हारा रब | हमारा रब | हालांकि वही | अल्लाह के बारे में | क्या तुम हम से झगड़ा करते हो? | कह दीजिए | 138 | इबादत करने वाले |

اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهٗ مُخْلِصُوْنَ ﴿١٣٩﴾ اَمْ تَقُوْلُوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम कहते हो | क्या | 139 | ख़ालिस | उसी के | और हम | तुम्हारे अमल | और तुम्हारे लिए | हमारे अमल |

اِنَّ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطَ كَانُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| थे | और औलादे याकूब (अ) | और याकूब (अ) | और इस्हाक़ (अ) | और इस्माईल (अ) | इब्राहीम (अ) | कि |

هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ۗ قُلْ ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُ ۗ وَمَنْ اَظْلَمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बड़ा ज़ालिम | और कौन | या अल्लाह | ज़ियादा जानने वाले | क्या तुम | कह दीजिए | या नसरानी | यहूदी |

مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेख़बर | और नहीं अल्लाह | अल्लाह से | उस के पास | गवाही | छुपाई | से-जिस |

عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٠﴾ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने कमाया | जो | उस के लिए | गुज़र चुकी | एक उम्मत | यह | 140 | तुम करते हो | उस से जो |

وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤١﴾ ع ١٦

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 141 | वह करते थे | उस से जो | और तुम से न पूछा जाएगा | जो तुम ने कमाया | और तुम्हारे लिए |

الجزء ٢

سَيَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰىهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अब कहेंगे | बेवकूफ़ | से | लोग | किस | उन्हें (मुसलमानों को) फेर दिया | से | उन का क़िबला |

الَّتِىْ كَانُوْا عَلَيْهَا ؕ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ؕ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जिस | वह थे | उस पर | आप कह दें | अल्लाह के लिए | मशरिक़ | और मग़रिब | वह हिदायत देता है | जिस को चाहता है |

اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٤٢﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ | रास्ता | सीधा | 142 | और उसी तरह | हम ने तुम्हें बनाया | उम्मत | मोअतदिल | ताकि तुम हो | गवाह |

عَلَى النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِىْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | लोग | और हो | रसूल | तुम पर | गवाह | और नहीं मुक़र्रर किया हम ने | क़िबला | वह जिस |

كُنْتَ عَلَيْهَآ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰى عَقِبَيْهِ ؕ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप (स) थे | उस पर | मगर | ताकि हम मालूम कर लें कौन | पैरवी करता है | रसूल (स) | उस से जो | फिर जाता है | पर | अपनी एड़ियां |

وَاِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَى الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बेशक | यह थी | भारी बात | मगर | पर | जिन्हें | हिदायत दी | अल्लाह | और नहीं | अल्लाह |

لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤٣﴾ قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि वह जाया करे | तुम्हारा ईमान | बेशक | अल्लाह | लोगों के साथ | बड़ा शफ़ीक़ | रह्म करने वाला | 143 | हम देखते हैं | बार बार फिरना |

وَجْهِكَ فِى السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰىهَا ۠ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप (स) का मुँह | में (तरफ़) | आस्मान | तो ज़रूर हम फेर देंगे आप को | क़िबला | उसे आप (स) पसन्द करते हैं | पस आप (स) फेर लें | अपना मुँह | तरफ़ |

الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मस्जिदे हराम (ख़ाने काअ़बा) | और जहां कहीं | तुम हो | सो फेर लिया करो | अपने मुँह | उस की तरफ़ | और बेशक | जिन्हें |

اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दी गई किताब (अहले किताब) | वह ज़रूर जानते हैं | कि यह | हक़ | से | उन का रब | और नहीं | अल्लाह | बेख़बर | उस से जो |

يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٤﴾ وَلَئِنْ اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह करते हैं | 144 | और अगर | आप (स) लाएं | जिन्हें | दी गई किताब (अहले किताब) | तमाम | निशानियां | वह पैरवी न करेंगे |

قِبْلَتَكَ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ؕ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप (स) का क़िबला | और न | आप (स) | पैरवी करने वाले | उन का क़िबला | और नहीं | उन से कोई | पैरवी करने वाला | क़िबला | किसी |

وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ مِّنْ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ اِنَّكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और अगर | आप ने पैरवी की | उन की ख़ाहिशात | उस के बाद | कि आ चुका आप के पास | इल्म | बेशक आप |

وقف لازم

اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٤٥﴾ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अब | से | वे इन्साफ़ | 145 | और जिन्हें | हम ने दी | किताब | वह उसे पहचानते हैं | जैसे | वह पहचानते हैं |

وقف منزل

اَبْنَآءَهُمْ ؕ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٤٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने बेटे | और बेशक | एक गिरोह | उन से | वह छुपाते हैं | हक़ | हालांकि वह | वह जानते हैं | 146 |

अब बेवकूफ़ कहेंगे कि मुसलमानों को किस चीज़ ने उस क़िबले से फेर दिया वह जिस पर थे? आप कह दें कि मशरिक़ और मग़रिब अल्लाह (ही) का है, वह जिस को चाहता है हिदायत देता है सीधे रास्ते की तरफ़। (142)

और उसी तरह हम ने तुम्हें मोअतदिल उम्मत बनाया ताकि तुम हो लोगों पर गवाह, और रसूल (स) तुम पर गवाह हों, और हम ने मुक़र्रर नहीं किया था वह क़िबला जिस पर आप (स) थे, मगर (इस लिए) ताकि हम मालूम कर लें कौन रसूल (स) की पैरवी करता है और कौन फिर जाता है अपनी एड़ियों पर (उलटे पावँ) और बेशक यह भारी बात थी मगर उन पर (नहीं) जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी और अल्लाह (ऐसा) नहीं कि तुम्हारा ईमान ज़ाया कर दे, बेशक अल्लाह लोगों के साथ बड़ा शफ़ीक़, रह्म करने वाला है। (143)

हम देखते हैं बार बार आप (स) का मुँह आस्मान की तरफ़ फिरना, तो ज़रूर हम आप को उस क़िबले की तरफ़ फेर देंगे जिसे आप (स) पसन्द करते हैं, पस आप (स) अपना मुँह मस्जिदे हराम (ख़ाने काअ़बा) की तरफ़ फेर लें, और जहां कहीं तुम हो फेर लिया करो अपने मुँह उस की तरफ़, और बेशक अहले किताब ज़रूर जानते हैं कि यह हक़ है उन के रब की तरफ़ से, और अल्लाह उस से बेख़बर नहीं जो वह करते हैं। (144)

और अगर आप (स) लाएं अहले किताब के पास तमाम निशानियां वह (फिर भी) आप (स) के क़िबले की पैरवी न करेंगे, और न आप (स) उन के क़िबले की पैरवी करने वाले हैं और उन में से कोई किसी (दूसरे) के क़िबले की पैरवी करने वाला नहीं, और अगर आप ने उन की ख़ाहिशात की पैरवी की उस के बाद कि आप के पास इल्म आ चुका तो अब बेशक आप बे इन्साफ़ों में से होंगे। (145)

और जिन्हें हम ने किताब दी वह उसे पहचानते हैं जैसे वह अपने बेटों को पहचानते हैं, और बेशक उन में से एक गिरोह हक़ को छुपाता है हालांकि वह जानते हैं (146)

(यह) हक़ है आप के रब की तरफ़ से पस आप न हो जाएं शक करने वालों में से। (147)

और हर एक के लिए एक सिम्त है जिस तरफ़ वह रुख़ करता है पस तुम नेकियों में सबक़त ले जाओ, जहां कहीं तुम होगे अल्लाह तुम्हें इकटठा कर लेगा, बेशक अललाह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है। (148)

और जहां से आप (स) निकलें, पस अपना रुख़ मस्जिदे हराम की तरफ़ कर लें, और बेशक आप के रब (की तरफ़) से यही हक़ है और अल्लाह उस से बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (149)

और जहां कहीं से आप निकलें, अपना रुख़ मस्जिदे हराम की तरफ़ कर लें, और तुम जहां कहीं हो सो कर लो अपने रुख़ उस की तरफ़, ताकि लोगों के लिए तुम पर कोई हुज्जत न रहे, सिवाए उन के लिए जो उन में से बे इन्साफ़ हैं, सो तुम उन से न डरो, और मुझ से डरो ताकि मैं अपनी नेमत तुम पर पूरी कर दूँ, और ताकि तुम हिदायत पाओ। (150)

जैसा कि हम ने तुम में एक रसूल तुम में से भेजा, वह तुम पर हमारे हुक्म पढ़ते हैं, और वह तुम्हें पाक करते हैं, और तुम्हें किताब ओ हिक्मत (दानाई) सिखाते हैं, और तुम्हें वह सिखाते हैं जो तुम न थे जानते। (151)

सो मुझे याद करो मैं तम्हें याद रखूँगा, और तुम मेरा शुक्र करो और मेरी नाशुक्री न करो। (152)

ऐ ईमान वालो! तुम सब्र और नमाज़ से मदद मांगो, बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। (153)

और जो अल्लाह की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा न कहो, बल्कि वह जिन्दा हैं, लेकिन तुम (उस का) शऊर नहीं रखते। (154)

और हम तुम्हें जरूर आजमाएंगे कुछ ख़ौफ़ से, और भूक से, और माल ओ जान और फलों के नुक्सान से, और आप (स) ख़ुशख़बरी दें सब्र करने वालों को. (155)

वह जिन्हें जब कोई मुसीबत पहुँचे तो वह कहें, हम अल्लाह के लिए हैं और हम उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं। (156)

ع ١٧ / ٦ / ١

الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١٤٧﴾ وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह | एक सिम्त | और हर एक के लिए | 147 | शक करने वाले | से | पस आप न हो जाएं | आप का रब | से | हक़ |

وقف النبي ﷺ

مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۗ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يَاْتِ بِكُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا ۗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इकट्ठा | अल्लाह | ले आएगा तुम्हें | तुम होगे | जहां कहीं | नेकियां | पस तुम सबक़त ले जाओ | उस तरफ़ रुख़ करता है |

اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٤٨﴾ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना रुख़ | पस कर लें | आप (स) निकलें | जहां | और से | 148 | कुदरत रखने वाला | चीज़ | हर | पर | बेशक अल्लाह |

شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَاِنَّهٗ لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से जो | बेख़बर | अल्लाह | और नहीं | आप के रब से | हक़ | और बेशक यही | मस्जिदे हराम | तरफ़ |

تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٩﴾ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मस्जिदे हराम | तरफ़ | अपना रुख़ | पस कर लें | आप निकलें | और जहां से | 149 | तुम करते हो |

وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۙ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम पर | लोगों के लिए | रहे | ताकि न | उस की तरफ़ | अपने रुख़ | सो कर लो | तुम हो | और जहां कहीं |

حُجَّةٌ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ ۙ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِيْ ۙ وَلِاُتِمَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि मैं पूरी कर दूं | और डरो मुझ से | सो तुम न डरो उन से | उन से | बे इन्साफ़ | वह जो कि | सिवाए | कोई हुज्जत |

نِعْمَتِیْ عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥٠﴾ كَمَاۤ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम में से | एक रसूल | तुम में | हम ने भेजा | जैसा कि | 150 | हिदायत पाओ | और ताकि तुम | तुम पर | अपनी नेमत |

يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَيُزَكِّيْكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | और सिखाते हैं तुम्हें | और हिक्मत | किताब | और सिखाते हैं तुम को | और पाक करते हैं तुम्हें | हमारे हुक्म | तुम पर | वह पढ़ते हैं |

ع ١٨ / ٥ / ٢ — معانقة ٣ عند المتأخرين ١٢

لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٥١﴾ فَاذْكُرُوْنِیْۤ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِیْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ ﴿١٥٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 152 | नाशुक्री करो मेरी | और न | और तुम शुक्र करो मेरा | मैं याद रखूँगा तम्हें | सो याद करो मुझे | 151 | जानते | तुम न थे |

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٥٣﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 153 | सब्र करने वाले | साथ | अल्लाह | बेशक | और नमाज़ | सब्र से | तुम मदद मांगो | ईमान लाए | जो कि | ऐ |

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ۗ بَلْ اَحْيَآءٌ وَّلٰكِنْ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और लेकिन | ज़िन्दा | बल्कि | मुर्दा | अल्लाह | रास्ता | में | मारे जाएं | उसे जो | कहो | और न |

لَّا تَشْعُرُوْنَ ﴿١٥٤﴾ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَیْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और नुक़्सान | और भूक | ख़ौफ़ | से | कुछ | और जरूर हम आजमाएंगे तुम्हें | 154 | तुम शऊर नहीं रखते |

مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ۗ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٥٥﴾ الَّذِيْنَ اِذَاۤ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब | वह जो | 155 | सब्र करने वाले | और ख़ुशख़बरी दें | और फल (जमा) | और जान (जमा) | माल (जमा) | से |

اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ قَالُوْۤا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿١٥٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 156 | लौटने वाले | उस की तरफ़ | और हम | हम अल्लाह के लिए | वह कहें | कोई मुसीबत | पहुँचे उन्हें |

أُولَٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَٰتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ ۖ وَأُولَٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ﴿١٥٧﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 157 | हिदायत याफ़्ता | वह | और यही लोग | और रहमत | उन का रब | से | इनायतें | उन पर | यही लोग |

إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِن شَعَآئِرِ اللَّهِ ۖ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اعْتَمَرَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उमरा करे | या | ख़ाने काअ़्बा | हज करे | पस जो | अल्लाह | निशानात | से | और मरवा | सफ़ा | बेशक |

فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَن يَطَّوَّفَ بِهِمَا ۚ وَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ اللَّهَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | तो बेशक | कोई नेकी | ख़ुशी से करे | और जो | उन दोनों | वह तवाफ़ करे | कि | उस पर | तो नहीं कोई हर्ज |

شَاكِرٌ عَلِيمٌ ﴿١٥٨﴾ إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَآ أَنزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَٰتِ وَالْهُدَىٰ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हिदायत | खुली निशानियां | से | जो नाज़िल किया हम ने | छुपाते है | जो लोग | बेशक | 158 | जानने वाला | क़द्रदान |

مِن بَعْدِ مَا بَيَّنَّٰهُ لِلنَّاسِ فِى الْكِتَٰبِ ۙ أُولَٰٓئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | लानत करता है उन पर | यही लोग | किताब में | लोगों के लिए | हम ने वाज़ेह कर दिया | उस के बाद |

وَيَلْعَنُهُمُ اللَّٰعِنُونَ ﴿١٥٩﴾ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنُوا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वाज़ेह किया | और इस्लाह की | उन्हों ने तौबा की | वह लोग जो | सिवाए | 159 | लानत करने वाले | और लानत करते हैं उन पर |

فَأُولَٰٓئِكَ أَتُوبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١٦٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो लोग | बेशक | 160 | रहम करने वाला | मुआफ़ करने वाला | और मैं | उन्हें | मैं मुआफ़ करता हूं | पस यही लोग हैं |

كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ أُولَٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَٰٓئِكَةِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और फ़रिश्ते | अल्लाह | लानत | उन पर | यही लोग | काफ़िर | और वह | और वह मर गए | काफ़िर हुए |

وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١٦١﴾ خَٰلِدِينَ فِيهَا ۖ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ़ज़ाब | उन से | न हलका होगा | उस में | हमेशा रहेंगे | 161 | तमाम | और लोग |

وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿١٦٢﴾ وَإِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَٰحِدٌ ۖ لَّآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَٰنُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| निहायत मेहरबान | सिवाए उस के | नहीं इबादत के लाइक़ | (एक) यकता | माबूद | और माबूद तुम्हारा | 162 | मोहलत दी जाएगी | और न उन्हें |

ع ١٩ ٣ الرَّحِيمُ ﴿١٦٣﴾ إِنَّ فِى خَلْقِ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَٰفِ الَّيْلِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रात | और बदलते रहना | और ज़मीन | आस्मानों | पैदाइश | में | बेशक | 163 | रहम करने वाला |

وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِى تَجْرِى فِى الْبَحْرِ بِمَا يَنفَعُ النَّاسَ وَمَآ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो कि | लोग | नफ़ा देती है | साथ जो | समन्दर | में | बहती है | जो कि | और कश्ती | और दिन |

أَنزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَآءِ مِن مَّآءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के मरने के बाद | ज़मीन | उस से | फिर ज़िन्दा किया | पानी | से | आस्मानों से | अल्लाह | उतारा |

وَبَثَّ فِيهَا مِن كُلِّ دَآبَّةٍ وَتَصْرِيفِ الرِّيَٰحِ وَالسَّحَابِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बादल | हवाएं | और बदलना | जानवर | हर (क़िस्म) | से | उस में | और फैलाए |

الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ لَءَايَٰتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٦٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 164 | अ़क्ल वाले | लोगों के लिए | निशानियां | और ज़मीन | आस्मान | दरमियान | ताबे |

यही लोग हैं जिन पर उन के रब की तरफ़ से इनायतें हैं, और रहमत है, और यही लोग हिदायत याफ़्ता हैं। (157)

बेशक सफ़ा और मरवा अल्लाह के निशानात में से हैं, पस जो कोई ख़ाने काअ़्बा का हज करे या उमरा तो उस पर कोई हर्ज नहीं कि उन दोनों का तवाफ़ करे, और जो ख़ुशी से कोई नेकी करे तो बेशक अल्लाह क़द्रदान, जानने वाला है। (158)

बेशक जो लोग छुपाते हैं जो अल्लाह ने खुली निशानियां और हिदायत नाज़िल की, उस के बाद कि हम ने उसे किताब में लोगों के लिए वाज़ेह कर दिया, यही लोग हैं जिन पर अल्लाह लानत करता है, और उन पर लानत करते है लानत करने वाले। (159)

सिवाए उन लोगों के जिन्हों ने तौबा की और इस्लाह की और वाज़ेह किया। पस यही लोग हैं जिन्हें मैं मुआफ़ करता हूं, और मैं मुआफ़ करने वाला, रहम करने वाला हूं। (160)

बेशक जो लोग काफ़िर हुए और वह (काफ़िर) ही मर गए, यही लोग हैं जिन पर लानत है अल्लाह की, और फ़रिश्तों की, और तमाम लोगों की। (161)

वह उस में हमेशा रहेंगे, उन से अ़ज़ाब हलका न होगा, और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। (162)

और तुम्हारा माबूद यकता माबूद है, उस के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, निहायत मेहरबान, रहम करने वाला। (163)

बेशक ज़मीन और आस्मानों की पैदाइश में, और रात और दिन के बदलते रहने में, और कश्ती में जो समन्दर में बहती है (उन चीज़ों के) साथ जो लोगों को नफ़ा देती है, और जो अल्लाह ने आस्मानों से पानी उतारा, फिर उस से ज़मीन को ज़िन्दा किया उस के मरने के बाद, और उस में हर क़िस्म के जानवर फैलाए, और हवाओं के बदलने में, और आस्मान ओ ज़मीन के दरमियान ताबे बादलों में निशानियां हैं (उन) लोगों के लिए (जो) अ़क्ल वाले हैं। (164)

और जो लोग अल्लाह से हट कर शरीक अपनाते हैं वह उन से मुहब्बत करते हैं जैसे अल्लाह से मुहब्बत, और जो लोग ईमान लाए (उन्हें) अल्लाह की मुहब्बत सब से ज़ियादा है, और अगर देख लें जिन्हों ने ज़ुल्म किया (उस वक़्त को) जब वह अज़ाब देखेंगे कि तमाम कुव्वत अल्लाह के लिए है और यह कि अल्लाह का अज़ाब सख़्त है। (165)

जब बेज़ार हो जाएंगे वह जिन की पैरवी की गई उन से जिन्हों ने पैरवी की थी और वह अज़ाब देख लेंगे, और उन से तमाम वसाइल कट जाएंगे (166)

और वह कहेंगे जिन्हों ने पैरवी की थी काश हमारे लिए दोबारा (दुनिया में लौट जाना होता) तो हम उन से बेज़ारी करते जैसे उन्हों ने हम से बेज़ारी की, उसी तरह अल्लाह उन के अमल उन्हें हसरतें बना कर दिखाएगा, और वह आग से निकलने वाले नहीं। (167)

ऐ लोगो! खाओ उस में से जो ज़मीन में है हलाल और पाक, और पैरवी न करो शैतान के क़दमों की, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (168)

वह तुम्हें हुक्म देता है सिर्फ़ बुराई और बेहयाई का और यह कि तुम अल्लाह (के बारे में) कहो जो तुम नहीं जानते। (169)

और जब उन्हें कहा जाता है उस की पैरवी करो जो अल्लाह ने उतारा तो वह कहते हैं बल्कि हम उस की पैरवी करेंगे जिस पर हम ने पाया अपने बाप दादा को, भला अगरचे उन के बाप दादा कुछ न समझते हों और हिदायत याफ़्ता न हों (170)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन की मिसाल उस शख़्स की हालत के मानिंद है जो उस को पुकारता है जो नहीं सुनता सिवाए पुकारने और चिल्लाने (की आवाज़ के) वह बहरे, गूँगे, अंधे हैं, पस वह नहीं समझते। (171)

ऐ वह लोग जो ईमान लाए हो, तुम पाकीज़ा चीज़ों में से खाओ जो हम ने तुम्हें दी हैं और तुम अल्लाह का शुक्र करो अगर तुम सिर्फ़ उस की बन्दगी करते हो। (172)

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ
और से | लोग | जो | अपनाते हैं | से | हट कर | अल्लाह | शरीक | मुहब्बत करते हैं उन से

كَحُبِّ اللّٰهِ ۭ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ۭ وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا
जैसे मुहब्बत | अल्लाह | और जो लोग | ईमान लाए | सब से ज़ियादा | मुहब्बत | अल्लाह के लिए | और अगर | देख लें | वह जिन्हों ने | ज़ुल्म किया

اِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ ۙ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعَذَابِ ﴿١٦٥﴾
जब देखेंगे | अज़ाब | कि | कुव्वत | अल्लाह के लिए | तमाम | और यह कि | अल्लाह | सख़्त | अज़ाब | 165

اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا وَرَاَوُا الْعَذَابَ
जब बेज़ार हो जाएंगे | वह लोग जो | पैरवी की गई | से | जिन्हों ने | पैरवी की | और वह देखेंगे | अज़ाब

وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ ﴿١٦٦﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً
और कट जाएंगे | उन से | वसाइल | 166 | और कहेंगे वह | वह जिन्हों ने | पैरवी की | काश कि | हमारे लिए | दोबारा

فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا ۭ كَذٰلِكَ يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ
तो हम बेज़ारी करते | उन से | जैसे | उन्हों ने बेज़ारी की | हम से | उसी तरह | उन्हें दिखाएगा | अल्लाह | उन के अमल

حَسَرٰتٍ عَلَيْهِمْ ۭ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ النَّارِ ﴿١٦٧﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ كُلُوْا ع ٢٠ ٢
हसरतें | उन पर | और नहीं वह | निकलने वाले | आग से | 167 | ऐ | लोग | तुम खाओ

مِمَّا فِى الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ڮ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ
उस से जो | ज़मीन में | हलाल | पाक | और न | पैरवी करो | क़दमों | शैतान

اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٦٨﴾ اِنَّمَا يَاْمُرُكُمْ بِالسُّوْۗءِ وَالْفَحْشَاۗءِ وَاَنْ
बेशक वह | तुम्हारा | दुश्मन | खुला | 168 | सिर्फ़ | तुम्हें हुक्म देता है | बुराई | और बेहयाई | और यह कि

تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٦٩﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا
तुम कहो | अल्लाह पर | जो नहीं | तुम जानते | 169 | और जब | कहा जाता है | उन्हें | पैरवी करो

مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَآ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ اٰبَاۗءَنَا ۭ اَوَلَوْ كَانَ
जो उतारा | अल्लाह | वह कहते हैं | बल्कि हम पैरवी करेंगे | जो हम ने पाया | उस पर | अपने बाप दादा | भला अगरचे | हों

اٰبَاۗؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْــــًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿١٧٠﴾ وَمَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
उन के बाप दादा | न समझते हों | कुछ | और न हिदायत याफ़्ता हों | 170 | और मिसाल | जिन लोगों ने कुफ़्र किया

كَمَثَلِ الَّذِيْ يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ اِلَّا دُعَاۗءً وَّنِدَاۗءً ۭ صُمٌّۢ بُكْمٌ
मानिंद हालत | वह जो | पुकारता है | उस का जो | नहीं सुनता | सिवाए | पुकारना | और आवाज़ | बहरे | गूँगे

عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٧١﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ
अंधे | पस वह | नहीं समझते | 171 | ऐ | जो लोग | ईमान लाए | तुम खाओ | से | पाक

مَا رَزَقْنٰكُمْ وَاشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١٧٢﴾
जो हम ने तुम्हें दिया | और शुक्र करो | अल्लाह का | अगर तुम हो | सिर्फ़ उस की | बन्दगी करते हो | 172

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ أُهِلَّ بِهٖ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दर हक़ीक़त | हराम किया | तुम पर | मुर्दार | और ख़ून | और गोश्त | सुव्वर | और जो | पुकारा गया | उस पर |

لِغَيْرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के सिवा | पस जो | लाचार हो जाए | न सरकशी करने वाला | और न | हद से बढ़ने वाला | तो नहीं | गुनाह | उस पर | बेशक | अल्लाह |

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٧٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बख़्शने वाला | रहम करने वाला | 173 | बेशक | जो लोग | छुपाते हैं | जो उतारा | अल्लाह | से | किताब |

وَيَشْتَرُوْنَ بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۙ اُولٰٓئِكَ مَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वसूल करते हैं | उस से | क़ीमत | थोड़ी | यही लोग | नहीं खाते | में | अपने पेटों |

اِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर (सिर्फ़) | आग | और न | बात करेगा | अल्लाह | क़ियामत के दिन | और न | पाक करेगा उन्हें | और उन के लिए | अज़ाब |

اَلِيْمٌ ﴿١٧٤﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى وَالْعَذَابَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दर्दनाक | 174 | यही लोग | जिन्हों ने | मोल ली | गुमराही | हिदायत के बदले | और अज़ाब |

بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَآ اَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ﴿١٧٥﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मग़्फ़िरत के बदले | सो किस क़द्र | बहुत सब्र करने वाले वह | पर | आग | 175 | यह | इस लिए कि | अल्लाह | नाज़िल की |

الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ ۗ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِي الْكِتٰبِ لَفِيْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किताब | हक़ के साथ | और बेशक | जो लोग | इख़्तिलाफ़ किया | में | किताब | में |

ع ٢١ ٦ ٥ شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ﴿١٧٦﴾ لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़िद | दूर | 176 | नहीं | नेकी | कि | तुम कर लो | अपने मुँह | तरफ़ | मश्रिक़ |

وَالْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और मग़रिब | और लेकिन | नेकी | जो | ईमान लाए | अल्लाह पर | और दिन | आख़िरत | और फ़रिश्ते |

وَالْكِتٰبِ وَالنَّبِيّٖنَ ۚ وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِي الْقُرْبٰى

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और किताब | और नबियों | और दे | माल | उस की मुहब्बत पर | रिशतेदार |

وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۙ وَالسَّآئِلِيْنَ وَفِي الرِّقَابِ ۚ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और यतीम (जमा) | और मिस्कीन (जमा) | और मुसाफ़िर | और सवाल करने वाले | और गर्दनों में |

وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और क़ाइम करे | नमाज़ | और अदा करे | ज़कात | और पूरा करने वाले | अपने अ़हद |

اِذَا عٰهَدُوْا ۚ وَالصّٰبِرِيْنَ فِي الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ ۗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब | वह अ़हद करें | और सब्र करने वाले | में | सख़्ती | और तक्लीफ़ | और वक़्त | जंग |

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿١٧٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| यही लोग | वह जो कि | उन्हों ने सच कहा | और यही लोग | वह | परहेज़गार | 177 |

दर हक़ीक़त (हम ने) तुम पर हराम किया है मुर्दार, और ख़ून, और सुव्वर का गोश्त, और जिस पर अल्लाह के सिवा (किसी और का नाम) पुकारा गया, पस जो लाचार हो जाए मगर न सरकशी करने वाला हो, न हद से बढ़ने वाला तो उस पर कोई गुनाह नहीं, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला रह्म करने वाला है। (173)

बेशक जो लोग छुपाते हैं जो अल्लाह ने (बसूरत) किताब नाज़िल किया और उस से वसूल करते हैं थोड़ी क़ीमत, यही लोग हैं जो अपने पेटों में सिर्फ़ आग भरते हैं और उन से बात नहीं करेगा अल्लाह क़ियामत के दिन, और न उन्हें पाक करेगा, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (174)

यही लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले गुमराही मोल ली, और मग़्फ़िरत के बदले अ़ज़ाब, सो किस क़द्र ज़यादा वह आग पर सब्र करने वाले हैं। (175)

यह इस लिए कि अल्लाह ने हक़ के साथ किताब नाजिल की, और बेशक जिन लोगों ने किताब में इख़्तिलाफ़ किया वह ज़िद में दूर (जा पड़े हैं)। (176)

नेकी यह नहीं कि तुम अपने मुँह मश्रिक़ या मग़रिब की तरफ़ कर लो, मगर नेकी यह है जो ईमान लाए अल्लाह पर, और यौमे आख़िरत पर, और फ़रिश्तों, और किताबों पर, और नबियों पर, और उस (अल्लाह) की मुहब्बत पर माल दे रिशतेदारों को, और यतीमों, और मिस्कीनों को, और मुसाफ़िरों को, और सवाल करने वालों को, और गर्दनों के आज़ाद कराने में, और नमाज़ क़ाइम करे, और ज़कात अदा करे, और जब वह अ़हद करें तो उसे पूरा करें, और सब्र करने वाले सख़्ती में, और तक्लीफ़ में, और जंग के वक़्त, यही लोग सच्चे हैं, और यही लोग परहेज़गार हैं। (177)

ऐ ईमान वालो! तुम पर फ़र्ज किया गया क़िसास मक़्तूलों (के बारे) में, आज़ाद के बदले आज़ाद, और ग़ुलाम के बदले ग़ुलाम, और औरत के बदले औरत, पस जिसे उस के भाई की तरफ़ से कुछ मुआफ़ किया जाए तो दस्तूर के मुताबिक पैरवी करे, और उसे अच्छे तरीक़े से अदा करे, यह तुम्हारे रब की तरफ से आसानी और रह्मत है, पस जिस ने उस के बाद जियादती की तो उस के लिए दर्दनाक अजाब है (178)

और तुम्हारे लिए क़िसास में ज़िन्दगी है, ऐ अक्ल वालो! ताकि तुम परहेजगार हो जाओ। (179)

तुम पर फ़र्ज़ किया गया है कि जब तुम में से किसी को मौत आए अगर वह माल छोड़े तो वसीयत करे माँ बाप के लिए और रिशतेदारों के लिए दस्तूर के मुताबिक, यह लाजिम है परहेज़गारों पर। (180)

फिर जो कोई उसे बदल दे उस के बाद कि उस ने उस को सुना तो उस का गुनाह सिर्फ उन लोगों पर है जिन्होंने उसे बदला, बेशक अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है (181)

पस जो कोई वसीयत करने वाले से तरफ़दारी या गुनाह का ख़ौफ़ करे फिर सुलह करा दे उन के दरमियान तो उस में कोई गुनाह नहीं, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला रह्म करने वाला है। (182)

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो (मोमिनो)! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किए गए हैं जैसे तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थे ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ। (183)

गिनती के चन्द दिन हैं, पस तुम में से जो कोई बीमार हो या सफ़र पर हो तो गिनती पूरी करे बाद के दिनों में, और उन पर है जो ताक़त रखते हैं एक नादार को खाना खिलाना, पस जो ख़ुशी से कोई नेकी करे वह उस के लिए बेहतर है, और अगर तुम रोजा रखो तो तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। (184)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِى الْقَتْلٰى

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मक़्तूलों में | क़िसास | फ़र्ज़ किया गया तुम पर | ईमान लाए | वह लोग जो | ऐ |

اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْاُنْثٰى بِالْاُنْثٰى فَمَنْ عُفِىَ لَهٗ مِنْ اَخِيْهِ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस का भाई | से | उस के लिए | मुआफ़ किया जाए | पस जिसे | औरत के बदले | और औरत | ग़ुलाम के बदले | और ग़ुलाम | आजाद के बदले | आज़ाद |

شَىْءٌ فَاتِّبَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَآءٌ اِلَيْهِ بِاِحْسَانٍ ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आसानी | यह | अच्छा तरीका | उसे | और अदा करना | मुताबिक दस्तूर | तो पैरवी करना | कुछ |

مِّنْ رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۷۸﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 178 | दर्दनाक | अज़ाब | तो उस के लिए | उस | बाद | ज़ियादती की | पस जो | और रह्मत | तुम्हारा रब | से |

وَلَكُمْ فِى الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يّٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۷۹﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 179 | परहेज़गार हो जाओ | ताकि तुम | ऐ अक़्ल वालो | ज़िन्दगी | क़िसास | में | और तुम्हारे लिए |

كُتِبَ عَلَيْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَيْرَا ۖۚ الْوَصِيَّةُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वसीयत | माल | छोड़ा | अगर | मौत | तुम्हारा कोई | आए | जब | फ़र्ज़ किया गया तुम पर |

لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۸۰﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 180 | परहेज़गार | पर | लाज़िम | दस्तूर के मुताबिक़ | और रिशतेदारों | माँ बाप के लिए |

فَمَنْۢ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَآ اِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَهٗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उसे बदला | जो लोग | पर | उस का गुनाह | तो सिर्फ़ | उस को सुना | बाद जो | बदल दे उसे | फिर जो |

اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۸۱﴾ فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ اِثْمًا

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| या गुनाह | तरफ़दारी | वसीयत करने वाला | से | ख़ौफ़ करे | पस जो | 181 | जानने वाला | सुनने वाला | अल्लाह | बेशक |

فَاَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۸۲﴾ ع ٢٣ ٦

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 182 | रह्म करने वाला | बख़्शने वाला | अल्लाह | बेशक | उस पर | तो नहीं गुनाह | उन के दरमियान | फिर सुलह करा दे |

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो लोग | पर | फ़र्ज़ किए गए | जैसे | रोज़े | तुम पर | फ़र्ज़ किए गए | ईमान लाए | वह लोग जो | ऐ |

مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۸۳﴾ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ۚ فَمَنْ كَانَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हो | पस जो | गिनती के | चन्द दिन | 183 | परहेज़गार बन जाओ | ताकि तुम | तुम से पहले |

مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ۚ وَعَلَى الَّذِيْنَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो लोग | और पर | दूसरे (बाद) के दिन | से | तो गिनती | सफ़र | पर | या | बीमार | तुम में से |

يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ ۚ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई नेकी | ख़ुशी से करे | पस जो | नादार | खाना | बदला | ताक़त रखते हों |

فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ۚ وَاَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۴﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 184 | जानते हो | तुम हो | अगर | बेहतर तुम्हारे लिए | तुम रोज़ा रखो | और अगर | बेहतर उस के लिए | तो वह |

| شَهْرُ | رَمَضَانَ | الَّذِيْٓ | اُنْزِلَ | فِيْهِ | الْقُرْاٰنُ | هُدًى | لِّلنَّاسِ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| महीना | रमज़ान | जिस | नाज़िल किया गया | उस में | कुरआन | हिदायत | लोगों के लिए |

| وَبَيِّنٰتٍ | مِّنَ | الْهُدٰى | وَالْفُرْقَانِ ۚ | فَمَنْ | شَهِدَ | مِنْكُمُ | الشَّهْرَ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और रौशन दलीलें | से | हिदायत | और फुरकान | पस जो | पाए | तुम में से | महीना |

| فَلْيَصُمْهُ ۭ | وَمَنْ | كَانَ | مَرِيْضًا | اَوْ | عَلٰى | سَفَرٍ | فَعِدَّةٌ | مِّنْ | اَيَّامٍ اُخَرَ ۭ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चाहिए कि रोज़े रखे | और जो | हो | बीमार | या | पर | सफ़र | तो गिनती पूरी करले | से | बाद के दिन |

| يُرِيْدُ | اللّٰهُ | بِكُمُ | الْيُسْرَ | وَلَا يُرِيْدُ | بِكُمُ | الْعُسْرَ ۡ | وَلِتُكْمِلُوا | الْعِدَّةَ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चाहता है | अल्लाह | तुम्हारे लिए | आसानी | और नहीं चाहता | तुम्हारे लिए | दुश्वारी | और ताकि तुम पूरी करो | गिनती |

| وَلِتُكَبِّرُوا | اللّٰهَ | عَلٰى | مَا هَدٰىكُمْ | وَلَعَلَّكُمْ | تَشْكُرُوْنَ | ١٨٥ | وَاِذَا | سَاَلَكَ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और ताकि तुम बड़ाई करो | अल्लाह | पर | जो तुम्हें हिदायत दी | और ताकि तुम | शुक्र अदा करो | 185 | और जब | आप से पूछें |

| عِبَادِيْ | عَنِّيْ | فَاِنِّيْ | قَرِيْبٌ ۭ | اُجِيْبُ | دَعْوَةَ | الدَّاعِ | اِذَا | دَعَانِ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरे बन्दे | मेरे मुतअल्लिक | तो मैं | क़रीब | मैं कुबूल करता हूँ | दुआ | पुकारने वाला | जब | मुझ से मांगे |

| فَلْيَسْتَجِيْبُوْا | لِيْ | وَلْيُؤْمِنُوْا | بِيْ | لَعَلَّهُمْ | يَرْشُدُوْنَ | ١٨٦ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पस चाहिए हुक्म मानें | मेरा | और ईमान लाएं | मुझ पर | ताकि वह | वह हिदायत पाएं | 186 |

| اُحِلَّ | لَكُمْ | لَيْلَةَ | الصِّيَامِ | الرَّفَثُ | اِلٰى | نِسَاۗىِٕكُمْ ۭ | هُنَّ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जाइज़ कर दिया गया | तुम्हारे लिए | रात | रोज़ा | बेपर्दा होना | तरफ़ (से) | अपनी औरतें | वह |

| لِبَاسٌ | لَّكُمْ | وَاَنْتُمْ | لِبَاسٌ | لَّهُنَّ ۭ | عَلِمَ | اللّٰهُ | اَنَّكُمْ | كُنْتُمْ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लिबास | तुम्हारे लिए | और तुम | लिबास | उन के लिए | जान लिया | अल्लाह | कि तुम | तुम थे |

| تَخْتَانُوْنَ | اَنْفُسَكُمْ | فَتَابَ | عَلَيْكُمْ | وَعَفَا | عَنْكُمْ ۚ | فَالْـٰٔنَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़ियानत करते | अपने तईं | सो मुआफ कर दिया | तुम को | और दरगुज़र की | तुम से | पस अब |

| بَاشِرُوْهُنَّ | وَابْتَغُوْا | مَا | كَتَبَ | اللّٰهُ | لَكُمْ ۠ | وَكُلُوْا | وَاشْرَبُوْا | حَتّٰى |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन से मिलो | और तलब करो | जो | लिख दिया | अल्लाह | तुम्हारे लिए | और खाओ | और पियो | यहां तक कि |

| يَتَبَيَّنَ | لَكُمُ | الْخَيْطُ | الْاَبْيَضُ | مِنَ | الْخَيْطِ | الْاَسْوَدِ | مِنَ | الْفَجْرِ ۠ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वाज़ेह हो जाए | तुम्हारे लिए | धारी | सफ़ेद | से | धारी | सियाह | से | फ़ज्र |

| ثُمَّ | اَتِمُّوا | الصِّيَامَ | اِلَى | الَّيْلِ ۚ | وَلَا | تُبَاشِرُوْهُنَّ | وَاَنْتُمْ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर | तुम पूरा करो | रोज़ा | तक | रात | और न | उन से मिलो | जबकि तुम |

| عٰكِفُوْنَ | فِي الْمَسٰجِدِ ۭ | تِلْكَ | حُدُوْدُ | اللّٰهِ | فَلَا | تَقْرَبُوْهَا ۭ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐतिकाफ़ करने वाले | मस्जिदों में | यह | हदें | अल्लाह | पस न | उन के करीब जाओ |

| كَذٰلِكَ | يُبَيِّنُ | اللّٰهُ | اٰيٰتِهٖ | لِلنَّاسِ | لَعَلَّهُمْ | يَتَّقُوْنَ | ١٨٧ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इसी तरह | वाज़ेह करता है | अल्लाह | अपने हुक्म | लोगों के लिए | ताकि वह | परहेज़गार हो जाएं | 187 |

रमज़ान का महीना है जिस में कुरआन नाज़िल किया गया, कुरआन लोगों के लिए हिदायत है, और हिदायत की रौशन दलीलें, और फुरकान (हक़ को बातिल से जुदा करने वाला), पस जो तुम में से यह महीना पाए उसे चाहिए कि रोज़े रखे और जो बीमार हो या सफ़र पर हो वह बाद के दिनों में गिनती पूरी कर ले, अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है और दुश्वारी नहीं चाहता, और ताकि तुम गिनती पूरी करो और ताकि तुम अल्लाह की बड़ाई बयान करो उस पर कि उस ने तुम्हें हिदायत दी, और ताकि तुम शुक्र अदा करो। (185)

और जब मेरे बन्दे आप से मेरे मुतअल्लिक पूछें तो मैं क़रीब हूँ, मैं कुबूल करता हूँ पुकारने वाले की दुआ जब वह मुझ से मांगे पस चाहिए कि वह मेरा हुक्म मानें, और मुझ पर ईमान लाएं ताकि वह हिदायत पाएं। (186)

तुम्हारे लिए जाइज़ कर दिया गया रोज़े की रात में अपनी औरतों से बेपर्दा होना, वह तुम्हारे लिए लिबास हैं, और तुम उन के लिए लिबास हो, अल्लाह ने जान लिया कि तुम अपने तईं ख़ियानत करते थे सो उस ने तुम को मुआफ़ कर दिया और तुम से दरगुज़र की, पस अब उन से मिलो और जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है तलब करो, और खाओ और पियो यहां तक कि वाज़ेह हो जाए तुम्हारे लिए फ़ज्र की सफ़ेद धारी सियाह धारी से, फिर तुम रात तक रोज़ा पूरा करो, और उन से न मिलो जब तुम ऐतिकाफ़ करने वाले हो मस्जिदों में (हालते ऐतिकाफ़ में) यह अल्लाह की हदें हैं, पस उन के क़रीब न जाओ, इसी तरह वाज़ेह करता है अल्लाह लोगों के लिए, अपने हुक्म, ताकि वह परहेज़गार हो जाएं। (187)

और अपने माल आपस में न खाओ नाहक़, और उस से हाकिमों तक (रिश्वत) न पहुँचाओ ताकि तुम लोगों के माल से कोई हिस्सा खाओ गुनाह से (नाजाइज़ तौर पर) और तुम जानते हो। (188)

और आप से नए चाँद के बारे में पूछते हैं। आप कह दें यह (पैमाना-ए-) औक़ात लोगों और हज के लिए हैं, और नेकी यह नहीं कि तुम घरों में आओ उन की पुश्त से, बल्कि नेक वह है जो परहेज़गारी करे, और घरों में उन के दरवाज़ों से आओ, और अल्लाह से डरो ताकि तुम कामयाबी हासिल करो। (189)

और तुम अल्लाह के रास्ते में उन से लड़ो जो तुम से लड़ते हैं और ज़ियादती न करो, बेशक अल्लाह ज़ियादती करने वालों को दोस्त नहीं रखता। (190)

और उन्हें मार डालो जहां उन्हें पाओ और उन्हें निकाल दो जहां से उन्हों ने तुम्हें निकाला, और फ़ित्ना क़त्ल से ज़ियादा संगीन है, और उन से मस्जिदे हराम (ख़ानाए काअ़बा) के पास न लड़ो यहां तक कि वह यहां तुम से लड़ें, पस अगर वह तुम से लड़ें तो तुम उन से लड़ो, इसी तरह सज़ा है काफ़िरों की। (191)

फिर अगर वह बाज़ आ जाएं तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (192)

और तुम उन से लड़ो यहां तक कि कोई फ़ित्ना न रहे और दीन अल्लाह के लिए हो जाए, पस अगर वह बाज़ आ जाएं तो नहीं (किसी पर) ज़ियादती सिवाए ज़ालिमों के। (193)

| بِهَآ | وَتُدْلُوْا | بِالْبَاطِلِ | بَيْنَكُمْ | اَمْوَالَكُمْ | تَاْكُلُوْٓا | وَلَا |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से | और (न) पहुँचाओ | नाहक़ | आपस में | अपने माल | खाओ | और न |

| النَّاسِ | اَمْوَالِ | مِّنْ | فَرِيْقًا | لِتَاْكُلُوْا | اِلَى الْحُكَّامِ |
|---|---|---|---|---|---|
| लोग | माल | से | कोई हिस्सा | ताकि तुम खाओ | हाकिमों तक |

ع ٢٣

| الْاَهِلَّةِ | عَنِ | يَسْـَٔلُوْنَكَ | ١٨٨ | تَعْلَمُوْنَ | وَاَنْتُمْ | بِالْاِثْمِ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नए चाँद | से | वह आप से पूछते हैं | 188 | जानते हो | और तुम | गुनाह से |

| بِاَنْ | الْبِرُّ | وَلَيْسَ | وَالْحَجِّ | لِلنَّاسِ | مَوَاقِيْتُ | هِيَ | قُلْ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह कि | नेकी | और नहीं | और हज | लोगों के लिए | औक़ात | यह | आप कह दें |

| اتَّقٰى | مَنِ | الْبِرَّ | وَلٰكِنَّ | ظُهُوْرِهَا | مِنْ | الْبُيُوْتَ | تَاْتُوا |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| परहेज़गारी करे | जो | नेकी | और लेकिन | उन की पुश्त | से | घर (जमा) | तुम आओ |

| لَعَلَّكُمْ | اللّٰهَ | وَاتَّقُوا | اَبْوَابِهَا | مِنْ | الْبُيُوْتَ | وَاْتُوا |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि तुम | अल्लाह | और तुम डरो | दरवाजे | से | घर (जमा) | और तुम आओ |

| الَّذِيْنَ | اللّٰهِ | سَبِيْلِ | فِيْ | وَقَاتِلُوْا | ١٨٩ | تُفْلِحُوْنَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जो कि | अल्लाह | रास्ता | में | और तुम लड़ो | 189 | कामयाबी हासिल करो |

| ١٩٠ | الْمُعْتَدِيْنَ | لَا يُحِبُّ | اللّٰهَ | اِنَّ | وَلَا تَعْتَدُوْا | يُقَاتِلُوْنَكُمْ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 190 | ज़ियादती करने वाले | नही पसन्द करता | अल्लाह | बेशक | और ज़ियादती न करो | तुम से लड़ते हैं |

| مِّنْ | وَاَخْرِجُوْهُمْ | ثَقِفْتُمُوْهُمْ | حَيْثُ | وَاقْتُلُوْهُمْ |
|---|---|---|---|---|
| से | और उन्हें निकाल दो | तुम उन्हें पाओ | जहां | और उन्हें मार डालो |

| الْقَتْلِ | مِنَ | اَشَدُّ | وَالْفِتْنَةُ | اَخْرَجُوْكُمْ | حَيْثُ |
|---|---|---|---|---|---|
| क़त्ल | से | ज़ियादा संगीन | और फ़ित्ना | उन्हों ने तुम्हें निकाला | जहां |

| يُقٰتِلُوْكُمْ | حَتّٰى | الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ | عِنْدَ | تُقٰتِلُوْهُمْ | وَلَا |
|---|---|---|---|---|---|
| वह तुम से लड़ें | यहां तक कि | मस्जिदे हराम (ख़ानाए काअ़बा) | पास | उन से लड़ो | और न |

| جَزَآءُ | كَذٰلِكَ | فَاقْتُلُوْهُمْ | قٰتَلُوْكُمْ | فَاِنْ | فِيْهِ |
|---|---|---|---|---|---|
| बदला | इसी तरह | तो तुम उन से लड़ो | वह तुम से लड़ें | पस अगर | उस में |

| ١٩٢ | رَّحِيْمٌ | غَفُوْرٌ | اللّٰهَ | فَاِنَّ | انْتَهَوْا | فَاِنِ | ١٩١ | الْكٰفِرِيْنَ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 192 | रहम करने वाला | बख़्शने वाला | अल्लाह | तो बेशक | वह बाज़ आ जाएं | फिर अगर | 191 | काफ़िरों |

| الدِّيْنُ | وَّيَكُوْنَ | فِتْنَةٌ | لَا تَكُوْنَ | حَتّٰى | وَقٰتِلُوْهُمْ |
|---|---|---|---|---|---|
| दीन | और हो जाए | कोई फ़ित्ना | न रहे | यहां तक कि | और तुम उन से लड़ो |

| ١٩٣ | الظّٰلِمِيْنَ | عَلَى | اِلَّا | عُدْوَانَ | فَلَا | انْتَهَوْا | فَاِنِ | لِلّٰهِ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 193 | ज़ालिम (जमा) | पर | सिवाए | जियादती | तो नही | वह बाज़ आ जाएं | पस अगर | अल्लाह के लिए |

الشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ۚ فَمَنِ اعْتَدٰى

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ज़ियादती की | पस जिस | बदला | और हुर्मतें | बदला हुर्मत वाला महीना | हुर्मत वाला महीना |

عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ ۪

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम पर | उस ने ज़ियादती की | जो | जैसी | उन पर | तो तुम ज़ियादती करो | तुम पर |

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩٤﴾ وَاَنْفِقُوْا فِيْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | और तुम खर्च करो | 194 | परहेज़गारों | साथ | अल्लाह | कि | और जान लो | अल्लाह | और तुम डरो |

हुर्मत वाला महीना बदला है हुर्मत वाले महीने का, और हुर्मतों का बदला है, पस जिस ने तुम पर ज़ियादती की तो तुम उस पर ज़ियादती करो जैसी उस ने तुम पर ज़ियादती की, और अल्लाह से डरो, और जान लो कि अल्लाह साथ है परहेज़गारों के। (194)

عند المتقدمين ١٢

سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛ وَاَحْسِنُوْا ۛ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और नेकी करो | हलाकत | तरफ़ | अपने हाथ | डालो | और न | अल्लाह | रास्ता |

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٩٥﴾ وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ۭ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के लिए | और उमरा | हज | और पूरा करो | 195 | नेकी करने वाले | दोस्त रखता है | अल्लाह | बेशक |

और अल्लाह की राह में खर्च करो और (अपने आप को) अपने हाथों न डालो हलाकत में, और नेकी करो, बेशक अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता है। (195)

فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ وَلَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰى

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यहां तक | अपने सर | मुंडवाओ | और न | कुरबानी | से | मयस्सर आए | तो जो | तुम रोक दिए जाओ | फिर अगर |

يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهٗ ۭ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ بِهٖٓ اَذًى

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तकलीफ़ | उस के | या | बीमार | तुम में से | हो | पस जो | अपनी जगह | कुरबानी | पहुँच जाए |

مِّنْ رَّاْسِهٖ فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ اَوْ صَدَقَةٍ اَوْ نُسُكٍ ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ ۪

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम अमन में हो | फिर जब | कुरबानी | या | सदक़ा | या | रोज़ा | से | तो बदला | उस का सर | से |

فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ اِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से - कुरबानी | मयस्सर आए | तो जो | हज | तक | उमरा का | फ़ाइदा उठाए | तो जो |

فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ اِذَا رَجَعْتُمْ ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब तुम वापस आजाओ | और सात | हज में | दिन | तीन | तो रोज़ा रखे | न पाए | फिर जो |

تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ۭ ذٰلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ اَهْلُهٗ حَاضِرِي

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मौजूद | उस के घर वाले | न हों | लिए - जो | यह | पूरे | दस | यह |

ع ٢٤ ٨

الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿١٩٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 196 | अज़ाब | सख़्त | अल्लाह | कि | और जान लो | अल्लाह | और तुम डरो | मस्जिदे हराम |

और पूरा करो हज और उमरा अल्लाह के लिए, फिर अगर तुम रोक दिए जाओ तो जो कुरबानी मयस्सर आए (पेश करो) और अपने सर न मुंडवाओ यहां तक कि कुरबानी अपनी जगह पहुँच जाए, फिर जो कोई तुम में से बीमार हो या उस के सर में तकलीफ़ हो तो वह बदला दे रोज़े से या सदक़े से या कुरबानी से, फिर जब तुम अमन में हो तो जो फ़ाइदा उठाए हज के साथ उमरा (मिला कर) तो उसे जो कुरबानी मयस्सर आए (दे दे), फिर जो न पाए तो वह रोज़े रख ले तीन दिन हज के अय्याम में और सात जब तुम वापस आजाओ, यह दस पूरे हुए, यह उस के लिए है जिस के घर वाले मस्जिदे हराम में मौजूद न हों (न रहते हों) और तुम अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है। (196)

اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوْقَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न गाली दे | बेपर्दा हो | तो न | हज | उन में | लाज़िम कर लिया | पस जिस ने | मालूम (मुक़र्रर) | महीने | हज |

وقف النبي ﷺ

وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ۭ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ۭ وَتَزَوَّدُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम ज़ादेराह ले लिया करो | अल्लाह | उसे जानता है | नेकी से | तुम करोगे | और जो | हज में | और न झगड़ा |

فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى ۡ وَاتَّقُوْنِ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿١٩٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 197 | ऐ अक़्ल वालो | और मुझ से डरो | तक़्वा | ज़ादे राह | बेहतर | पस बेशक |

हज के महीने मुक़र्रर हैं, पस जिस ने उन में हज लाज़िम कर लिया तो वह न बेपर्दा हो, न गाली दे, न झगड़ा करे हज में और तुम जो नेकी करोगे अल्लाह उसे जानता है, और तुम ज़ादेराह ले लिया करो, पस बेशक बेहतर ज़ादे राह तक़्वा है, और ऐ अक़्ल वालो! मुझ से डरते रहो। (197)

तुम पर कोई गुनाह नही अगर तुम अपने रब का फ़ज़्ल तलाश करो (तिजारत करो), फिर जब तुम अ़रफ़ात से लौटो तो अल्लाह को याद करो मशअरे हराम के नज़दीक (मुज़दलिफ़ा में), और अल्लाह को याद करो जैसे उस ने तुम्हें हिदायत दी और बेशक उस से पहले तुम नावाक़िफ़ों में से थे। (198)

फिर तुम लौटो जहां से लोग लौटें, और अल्लाह से मग़फ़िरत चाहो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है (199)

फिर जब तुम हज के मरासिम अदा कर चुको तो अल्लाह को याद करो जैसा कि तुम अपने बाप दादा को याद करते थे या उस से भी ज़ियादा याद करो, पस कोई आदमी कहता है ऐ हमारे रब! हमें दुन्या में (भलाई) दे और उस के लिए नहीं है आख़िरत में कुछ हिस्सा। (200)

और उन में से जो कोई कहता है ऐ हमारे रब! हमें दे दुन्या में भलाई और आख़िरत में भलाई, और दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले। (201)

यही लोग है उन के लिए हिस्सा है उस में से जो उन्हों ने कमाया, और अललाह तेज़ हिसाब लेने वाला है। (202)

और तुम अल्लाह को याद करो गिनती के चन्द (मुक़र्रर) दिनों में, पस जो दो दिन में जल्दी चला गया तो उस पर कोई गुनाह नहीं और जिस ने ताख़ीर की उस पर कोई गुनाह नहीं (यह उस के लिए है) जो डरता रहा, और तुम अल्लाह से डरो, और जान लो कि तुम उस की तरफ़ जमा किए जाओगे। (203)

| لَيۡسَ | عَلَيۡكُمۡ | جُنَاحٌ | اَنۡ | تَبۡتَغُوۡا | فَضۡلًا | مِّنۡ | رَّبِّكُمۡ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं | तुम पर | कोई गुनाह | अगर तुम | तलाश करो | फ़ज़्ल | से | अपना रब |

| فَاِذَآ | اَفَضۡتُمۡ | مِّنۡ | عَرَفٰتٍ | فَاذۡكُرُوا | اللّٰهَ | عِنۡدَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर जब | तुम लौटो | से | अ़रफ़ात | तो याद करो | अल्लाह | नज़दीक |

| الۡمَشۡعَرِ الۡحَرَامِ | وَاذۡكُرُوۡهُ | كَمَا | هَدٰىكُمۡ | وَاِنۡ | كُنۡتُمۡ |
|---|---|---|---|---|---|
| मशअरे हराम | और उसे याद करो | जैसे | उस ने तुम्हें हिदायत दी | और बेशक | तुम थे |

| مِّنۡ قَبۡلِهٖ | لَمِنَ | الضَّآلِّيۡنَ | ١٩٨ | ثُمَّ | اَفِيۡضُوۡا | مِنۡ حَيۡثُ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से पहले | जरुर से | नावाक़िफ़ | 198 | फिर | तुम लौटो | से - जहां |

| اَفَاضَ | النَّاسُ | وَاسۡتَغۡفِرُوا | اللّٰهَ | اِنَّ | اللّٰهَ |
|---|---|---|---|---|---|
| लौटें | लोग | और मग़फ़िरत चाहो | अल्लाह | बेशक | अल्लाह |

| غَفُوۡرٌ | رَّحِيۡمٌ | ١٩٩ | فَاِذَا | قَضَيۡتُمۡ | مَّنَاسِكَكُمۡ |
|---|---|---|---|---|---|
| बख़्शने वाला | रहम करने वाला | 199 | फिर जब | तुम अदा कर चुको | हज के मरासिम |

| فَاذۡكُرُوا | اللّٰهَ | كَذِكۡرِكُمۡ | اٰبَآءَكُمۡ | اَوۡ | اَشَدَّ | ذِكۡرًا |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो याद करो | अल्लाह | जैसी तुम्हारी याद | अपने बाप दादा | या | ज़ियादा | याद |

| فَمِنَ النَّاسِ | مَنۡ | يَّقُوۡلُ | رَبَّنَآ | اٰتِنَا | فِى | الدُّنۡيَا |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पस-से-आदमी | जो | कहता है | ऐ हमारे रब | हमें दे | में | दुन्या |

| وَمَا | لَهٗ | فِى | الۡاٰخِرَةِ | مِنۡ خَلَاقٍ | ٢٠٠ | وَمِنۡهُمۡ | مَّنۡ | يَّقُوۡلُ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं | उस के लिए | में | आख़िरत | कुछ हिस्सा | 200 | और उन से | जो | कहता है |

| رَبَّنَآ | اٰتِنَا | فِى الدُّنۡيَا | حَسَنَةً | وَّفِى الۡاٰخِرَةِ | حَسَنَةً |
|---|---|---|---|---|---|
| ऐ हमारे रब | हमें दे | दुन्या में | भलाई | और आख़िरत में | भलाई |

| وَّقِنَا | عَذَابَ | النَّارِ | ٢٠١ | اُولٰٓئِكَ | لَهُمۡ | نَصِيۡبٌ | مِّمَّا | كَسَبُوۡا |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हमें बचा | अ़ज़ाब | आग (दोज़ख़) | 201 | यही लोग | उन के लिए | हिस्सा | उस से जो | उन्हों ने कमाया |

| وَاللّٰهُ | سَرِيۡعُ | الۡحِسَابِ | ٢٠٢ | وَاذۡكُرُوا | اللّٰهَ | فِىۡۤ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और अल्लाह | तेज़ | हिसाब लेने वाला | 202 | और तुम याद करो | अल्लाह | में |

| اَيَّامٍ مَّعۡدُوۡدٰتٍ | فَمَنۡ | تَعَجَّلَ | فِىۡ | يَوۡمَيۡنِ | فَلَاۤ | اِثۡمَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन गिनती के | पस जो | जल्द चला गया | में | दो दिन | तो नहीं | गुनाह |

| عَلَيۡهِ | وَمَنۡ | تَاَخَّرَ | فَلَاۤ | اِثۡمَ | عَلَيۡهِ | لِمَنِ | اتَّقٰى |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस पर | और जिस | ताख़ीर की | तो नहीं | गुनाह | उस पर | लिए - जो | डरता रहा |

| وَاتَّقُوا | اللّٰهَ | وَاعۡلَمُوۡۤا | اَنَّكُمۡ | اِلَيۡهِ | تُحۡشَرُوۡنَ | ٢٠٣ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम डरो | अल्लाह | और जान लो | कि तुम | उस की तरफ़ | जमा किए जाओगे | 203 |

| اللّٰهَ | وَيُشْهِدُ | الدُّنْيَا | الْحَيٰوةِ | فِي | قَوْلُهٗ | يُّعْجِبُكَ | مَنْ | النَّاسِ | وَمِنَ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | और वह गवाह बनाता है | दुन्या | ज़िन्दगी | में | उस की बात | तुम्हें भली मालूम होती है | जो | लोग | और से |

| سَعٰى | تَوَلّٰى | وَاِذَا | ٢٠٤ | الْخِصَامِ | اَلَدُّ | وَهُوَ | فِيْ قَلْبِهٖ | مَا | عَلٰى |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दौड़ता फिरे | वह लौटे | और जब | 204 | झगड़ालू | सख़्त | हालांकि वह | उस के दिल में | जो | पर |

| وَالنَّسْلَ | الْحَرْثَ | وَيُهْلِكَ | فِيْهَا | لِيُفْسِدَ | الْاَرْضِ | فِي |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और नस्ल | खेती | और तबाह करे | उस में | ताकि फ़साद करे | ज़मीन | में |

| اللّٰهَ | اتَّقِ | لَهُ | قِيْلَ | وَاِذَا | ٢٠٥ | الْفَسَادَ | لَا يُحِبُّ | وَاللّٰهُ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | डर | उस को | कहा जाए | और जब | 205 | फ़साद | न पसन्द करता है | और अल्लाह |

| ٢٠٦ | الْمِهَادُ | وَلَبِئْسَ | جَهَنَّمُ | فَحَسْبُهٗ | بِالْاِثْمِ | الْعِزَّةُ | اَخَذَتْهُ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 206 | ठिकाना | और अलबत्ता बुरा | जहन्नम | तो काफ़ी है उस को | गुनाह पर | इज़्ज़त (ग़ुरूर) | उसे आमादा करे |

| مَرْضَاتِ اللّٰهِ | ابْتِغَاۗءَ | نَفْسَهُ | يَّشْرِيْ | مَنْ | النَّاسِ | وَمِنَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की रज़ा | हासिल करना | अपनी जान | बेच डालता है | जो | लोग | और से |

| ادْخُلُوْا | الَّذِيْنَ اٰمَنُوا | يٰٓاَيُّهَا | ٢٠٧ | بِالْعِبَادِ | رَءُوْفٌۢ | وَاللّٰهُ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम दाख़िल हो जाओ | जो लोग ईमान लाए | ऐ | 207 | बन्दों पर | मेहरबान | और अल्लाह |

| الشَّيْطٰنِ | خُطُوٰتِ | تَتَّبِعُوْا | وَلَا | كَاۗفَّةً | السِّلْمِ | فِي |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शैतान | क़दम | पैरवी करो | और न | पूरे पूरे | इस्लाम | में |

| مِّنْۢ بَعْدِ | زَلَلْتُمْ | فَاِنْ | ٢٠٨ | مُّبِيْنٌ | عَدُوٌّ | لَكُمْ | اِنَّهٗ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के बाद | तुम डगमगा गए | फिर अगर | 208 | खुला | दुश्मन | तुम्हारा | बेशक वह |

| ٢٠٩ | حَكِيْمٌ | عَزِيْزٌ | اللّٰهَ | اَنَّ | فَاعْلَمُوْٓا | الْبَيِّنٰتُ | جَاۗءَتْكُمُ | مَا |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 209 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | अल्लाह | कि | तो जान लो | वाज़ेह एहकाम | तुम्हारे पास आए | जो |

| فِيْ ظُلَلٍ | اللّٰهُ | يَّاْتِيَهُمُ | اَنْ | اِلَّآ | يَنْظُرُوْنَ | هَلْ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सायबानों में | अल्लाह | आए उन के पास | कि | सिवाए (यही) | वह इन्तिज़ार करते हैं | क्या |

| الْاَمْرُ | وَقُضِيَ | وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ | الْغَمَامِ | مِّنَ |
|---|---|---|---|---|
| मुआमला | और चुका दिया जाए | और फ़रिश्ते | बादल | से |

٢٥ ع ١٣ ٩

| بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ | سَلْ | ٢١٠ | الْاُمُوْرُ | تُرْجَعُ | اللّٰهِ | وَاِلَى |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बनी इस्राईल | पूछो | 210 | तमाम मुआमलात | लौटेंगे | अल्लाह | और तरफ़ |

| اللّٰهِ | نِعْمَةَ | يُّبَدِّلْ | وَمَنْ | بَيِّنَةٍ | اٰيَةٍۢ | مِّنْ | اٰتَيْنٰهُمْ | كَمْ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | नेमत | बदल डाले | और जो | खुली | निशानियां | से | हम ने उन्हें दीं | किस क़द्र |

| ٢١١ | الْعِقَابِ | شَدِيْدُ | اللّٰهَ | فَاِنَّ | جَاۗءَتْهُ | مَا | مِنْۢ بَعْدِ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 211 | अज़ाब | सख़्त | अल्लाह | तो बेशक | आई उस के पास | जो | उस के बाद |

और लोगों में (कोई ऐसा भी है) कि उस की बात तुम्हें भली मालूम होती है दुनयवी ज़िन्दगी (के अमूर) में और वह अल्लाह को गवाह बनाता है अपने दिल की बात पर, हालांकि वह सख़्त झगड़ालू है। (204)

और जब वह लौटे तो ज़मीन (मुल्क) में दौड़ता फिरे ताकि उस में फ़साद करे, और तबाह करे खेती और नस्ल, और अल्लाह फ़साद को न पसन्द करता है। (205)

और जब उस को कहा जाए कि अल्लाह से डर, तो उसे उस की इज़्ज़त (ग़ुरूर) गुनाह पर आमादा करे, तो उस के लिए जहन्नम काफ़ी है, और अलबत्ता वह बुरा ठिकाना है। (206)

और लोगों में (एक वह है) जो अपनी जान बेच डालता है अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए, और अल्लाह बन्दों पर मेहरबान है। (207)

ऐ ईमान वालो! तुम इस्लाम में पूरे पूरे दाख़िल हो जाओ, और शैतान के क़दमों की पैरवी न करो, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (208)

फिर अगर तुम उस के बाद डगमगा गए जबकि तुम्हारे पास वाज़ेह एहकाम आ गए, तो जान लो कि अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (209)

क्या वह सिर्फ़ (यह) इन्तिज़ार करते हैं कि अल्लाह उन के पास आए सायबानों में बादल के, और फ़रिश्ते, और मुआमला चुका दिया जाए, और तमाम मुआमलात अल्लाह की तरफ़ लौटेंगे। (210)

पूछो बनी इस्राईल से हम ने उन्हें कितनी खुली निशानियां दीं? और जो अल्लाह की नेमत बदल डाले उस के बाद कि वह उस के पास आ गई, तो बेशक अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है। (211)

आरास्ता की गई काफ़िरों के लिए दुन्या की ज़िन्दगी, और वह हँसते हैं उन पर जो ईमान लाए, और जो परहेज़गार हुए वह क़यामत के दिन उन से बालातर होंगे, और अल्लाह जिसे चाहता है रिज़्क़ देता है बेशुमार। (212)

लोग एक उम्मत थे फिर अल्लाह ने नबी भेजे ख़ुशख़बरी देने वाले और डराने वाले, और उन के साथ बरहक़ किताब नाज़िल की ताकि फ़ैसला करे लोगों के दरमियान जिस में उन्हों ने इख़तिलाफ़ किया, और जिन्हें (किताब) दी गई थी उन्हों ने इख़तिलाफ़ नहीं किया मगर उस के बाद जब कि उन के पास वाज़ेह एहकाम आ गए आपस की ज़िद कि वजह से, पस अल्लाह ने उन लोगों को हिदायत दी जो ईमान लाए उस सच्ची बात पर जिस में उन्हों ने इख़तिलाफ़ किया था अपने इज़्न से, और अल्लाह हिदायत देता है जिसे वह चाहता है सीधे रास्ते की तरफ़। (213)

क्या तुम ख़याल करते हो कि जन्नत में दाख़िल हो जाओगे और जबकि (अभी) तुम पर (ऐसी हालत) नहीं आई जैसे तुम से पहले लोगों पर गुज़री, उन्हें पहुँची सख़्ती और तक्लीफ़, और वह हिला दिए गए यहां तक कि रसूल और वह जो उन के साथ ईमान लाए कहने लगे अल्लाह की मदद कब आएगी? आगाह रहो बेशक अल्लाह की मदद क़रीब है। (214)

वह आप (स) से पूछते हैं क्या कुछ ख़र्च करें? आप कह दें जो माल तुम ख़र्च करो, सो माँ बाप के लिए, और क़राबतदारों के लिए, और यतीमों और मोहताजों, और मुसाफ़िरों के लिए, और तुम जो नेकी करोगे तो बेशक अल्लाह उसे जानने वाला है। (215)

زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो लोग | से | और वह हँसते हैं | दुन्या | ज़िन्दगी | वह लोग जो कुफ़्र किया | आरास्ता की गई |

اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ

وقف لازم

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रिज़्क़ देता है | और अल्लाह | क़ियामत के दिन | उन से बालातर | परहेज़गार हुए | और जो लोग | ईमान लाए |

مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢١٢﴾ كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक | उम्मत | लोग | थे | 212 | शुमार | बे | वह चाहता है | जिसे |

فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ وَاَنْزَلَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और नाज़िल की | और डराने वाले | ख़ुशख़बरी देने वाले | नबी | अल्लाह | फिर भेजे |

مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने इख़तिलाफ़ किया | जिस में | लोग | दरमियान | ताकि फ़ैसला करे | बरहक़ | किताब | उन के साथ |

فِيْهِ ۗ وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बाद | दी गई | जिन्हें | मगर | उस में | इख़तिलाफ़ किया | और नहीं | उस में |

مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान लाए | जो लोग | अल्लाह | पस हिदायत दी | उन के दरमियान (आपस की) | जिद | वाज़ेह एहकाम | आए उन के पास | जो - जब |

لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ۗ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह चाहता है | जिसे | हिदायत देता है | और अल्लाह | अपने इज़्न से | सच | से (पर) | उस में | उन्हों ने इख़तिलाफ़ किया | लिए जो |

اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢١٣﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जन्नत | तुम दाख़िल हो जाओगे | कि | तुम ख़याल करते हो | क्या | 213 | सीधा | रास्ता | तरफ़ |

وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम से पहले | से | गुज़रे | जो | जैसे | आई तुम पर | और जब कि नहीं |

مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ وَالضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रसूल | कहने लगे | यहां तक | और वह हिला दिए गए | और तक्लीफ़ | सख़्ती | पहुँची उन्हें |

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ۭ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | मदद | बेशक | आगाह रहो | अल्लाह की मदद | कब | उन के साथ | ईमान लाए | और वह जो |

قَرِيْبٌ ﴿٢١٤﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ۭ قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | तुम ख़र्च करो | जो | आप कह दें | ख़र्च करें | क्या कुछ | वह आप से पूछते हैं | 214 | क़रीब |

خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और मोहताज (जमा) | और यतीम (जमा) | और क़राबतदार (जमा) | सो माँ बाप के लिए | माल |

وَابْنِ السَّبِيْلِ ۭ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٢١٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 215 | जानने वाला | उसे | अल्लाह | तो बेशक | कोई नेकी | तुम करोगे | और जो | और मुसाफ़िर |

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْئًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक चीज़ | तुम नापसन्द करो | कि | और मुमकिन है | तुम्हारे लिए | नागवार | और वह | जंग | तुम पर फ़र्ज़ की गई |

وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْئًا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे लिए | बुरी | और वह | एक चीज़ | तुम पसन्द करो | कि | और मुमकिन है | तुम्हारे लिए | बेहतर | और वह |

ع ٢٦ ١٠ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢١٦﴾ يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| महीना हुर्मत वाला | से | वह आप से सवाल करते हैं | 216 | नहीं जानते | और तुम | जानता है | और अल्लाह |

قِتَالٍ فِيْهِ ؕ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ؕ وَصَدٌّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | रास्ता | से | और रोकना | बड़ा | उस में | जंग | आप कह दें | उस में | जंग |

وَكُفْرٌ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَاِخْرَاجُ اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | नज़दीक | बहुत बड़ा | उस से | उस के लोग | और निकाल देना | और मस्जिदे हराम | उस का | और न मानना |

وَالْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ؕ وَلَا يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह तुम से लड़ेंगे | और वह हमेशा रहेंगे | क़त्ल | से | बहुत बड़ा | और फ़ित्ना |

حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوْا ؕ وَمَنْ يَّرْتَدِدْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर जाए | और जो | वह कर सकें | अगर | तुम्हारा दीन | से | तम्हें फेर दें | यहां तक कि |

مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़ाया हो गए | ता यही लोग | काफ़िर | और वह | फिर मर जाए | अपना दीन | से | तुम में से |

اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दोज़ख़ | वाले | और यही लोग | और आख़िरत | दुन्या | में | उन के अमल |

هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢١٧﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने हिज्रत की | और वह लोग जो | ईमान लाए | जो लोग | बेशक | 217 | हमेशा रहेंगे | उस में | वह |

وَجٰهَدُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ؕ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की रह्मत | उम्मीद रखते हैं | यही लोग | अल्लाह का रास्ता | में | और उन्हों ने जिहाद किया |

وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢١٨﴾ يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जुआ | शराब | से (बारे में) | वह पूछते हैं आप से | 218 | रह्म करने वाला | बख़्शने वाला | और अल्लाह |

قُلْ فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۫ وَاِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बहुत बड़ा | और उन दोनों का गुनाह | लोगों के लिए | ओर फ़ाइदे | बड़ा | गुनाह | उन दोनो में | आप कह दें |

مِنْ نَّفْعِهِمَا ؕ وَيَسْئَلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ۬ قُلِ الْعَفْوَ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़ाइद अज़ ज़रूरत | आप कह दें | वह ख़र्च करें | क्या कुछ | वह पूछते हैं आप से | उन का फ़ाइदा | से |

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 219 | ग़ौर ओ फ़िक्र करो | ताकि तुम | अहकाम | तुम्हारे लिए | अल्लाह | वाज़ेह करता है | इसी तरह |

तुम पर जंग फ़र्ज की गई और वह तुम्हें नागवार है, और मुमकिन है कि तुम एक चीज़ नापसन्द करो और वह तुम्हारे लिए बेहतर हो, और मुमकिन है कि तुम एक चीज पसन्द करो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो, और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। (216)

वह आप से सवाल करते हैं हुर्मत वाले महीने में जंग (के बारे) में, आप कह दें उस में जंग करना बड़ा (गुनाह) है, और अल्लाह के रास्ते से रोकना और उस (अल्लाह) को न मानना और मस्जिदे हराम (से रोकना) और उस के लोगों को वहां से निकालना अल्लाह के नजदीक बहुत बड़ा गुनाह है और फ़ित्ना क़त्ल से (भी) बड़ा गुनाह है, और वह हमेशा तुम से लड़ते रहेंगे यहां तक कि अगर वह कर सकें तो तम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें, और तुम में से जो फिर जाए अपने दीन से और वह मर जाए (उस हाल में कि) वह काफ़िर हो तो यही लोग हैं जिन के अ़मल ज़ाया हो गए दुन्या में और आखिरत में और यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (217)

बेशक जो ईमान लाए, और जिन लोगों ने हिज्रत की, और अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया यही लोग अल्लाह की रह्मत की उम्मीद रखते हैं, और अल्लाह बख़्शने वाला, रह्म करने वाला है। (218)

वह आप से पूछते हैं शराब और जुए के बारे में, आप कह दें कि उन दोनों में बड़ा गुनाह है। और लोगों के लिए फ़ाइदे (भी) हैं (लेकिन) उन का गुनाह उन के फ़ाइदे से बहुत बड़ा है, और वह आप (स) से पूछते हैं कि वह क्या कुछ खर्च करें? आप कह दें ज़ाइद अज़ जरूरत, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम वाज़ेह करता है ताकि तुम गौर ओ फ़िक्र करो (219)

दुन्या में और आखिरत में, और वह आप (स) से यतीमों के बारे में पूछते हैं, आप कह दें उन की इस्लाह बेहतर है, और अगर उन को मिला लो तो वह तुम्हारे भाई हैं, और अल्लाह खराबी करने वाले और इस्लाह करने वाले को खूब जानता है, और अगर अल्लाह चाहता तो तुम को ज़रूर मुशक्कत में डाल देता, बेशक अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है, (220)

और मुश्रिक औरतों से निकाह न करो यहां तक कि वह ईमान लाएं, और अलबत्ता मुसलमान लौंडी बेहतर है मुश्रिक औरत से अगरचे तुम्हें वह भली लगे,
और मुश्रिकों से निकाह न करो यहां तक कि वह ईमान लाएं, और अलबत्ता मुसलमान गुलाम बेहतर है मुश्रिक से, अगरचे वह तुम्हें भला लगे, वही लोग दोजख की तरफ़ बुलाते हैं, और अल्लाह बुलाता है अपने हुक्म से जन्नत और बखशिश की तरफ़, और लोगों के लिए अपने एहकाम वाज़ेह करता है ताकि वह नसीहत पकड़ें। (221)

वह आप (स) से हालते हैज के बारे में पूछते हैं, आप कह दें कि वह गन्दगी है, पस तुम औरतों से अलग रहो हालते हैज में, और उन के क़रीब न जाओ यहां तक कि वह पाक हो जाएं, पस जब वह पाक हो जाएं तो तुम उन के पास आओ जहां से अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है, बेशक अल्लाह दोस्त रखता है तौबा करने वालों को और दोस्त रखता है पाक रहने वालों को। (222)

तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेती हैं, पस तुम अपनी खेती में आओ जहां से चाहो और अपने लिए आगे भेजो (आगे की तदबीर करो) और अल्लाह से डरो, और तुम जान लो कि तुम अल्लाह से मिलने वाले हो, और खुशखबरी दें ईमान वालों को। (223)

और अपनी क़स्मों के लिए अल्लाह (के नाम) को निशाना न बनाओ कि तुम हुस्ने सुलूक और परहेज़गारी और लोगों के दरमियान सुलह कराने (से बाज रहो) और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है (224)

| فِی الدُّنْيَا | وَالْاٰخِرَةِ ؕ | وَيَسْـَٔلُوْنَكَ | عَنِ | الْيَتٰمٰی ؕ | قُلْ | اِصْلَاحٌ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दुन्या में | और आख़िरत | और वह आप से पूछते हैं | से (बारे में) | यतीम (जमा) | आप कह दें | इस्लाह |

| لَّهُمْ | خَيْرٌ ؕ | وَاِنْ | تُخَالِطُوْهُمْ | فَاِخْوَانُكُمْ ؕ | وَاللّٰهُ | يَعْلَمُ | الْمُفْسِدَ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की | बेहतर | और अगर | मिला लो उन को | तो भाई तुम्हारे | और अल्लाह | जानता है | खराबी करने वाला |

| مِنَ | الْمُصْلِحِ ؕ | وَلَوْ | شَآءَ اللّٰهُ | لَاَعْنَتَكُمْ ؕ | اِنَّ | اللّٰهَ | عَزِيْزٌ | حَكِيْمٌ | ﴿۲۲۰﴾ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से (का) | इस्लाह करने वाला | और अगर | चाहता अल्लाह | ज़रूर मुशक्कत में डालता तुम को | बेशक | अल्लाह | ग़ालिब | हिक्मत वाला | 220 |

| وَلَا | تَنْكِحُوا | الْمُشْرِكٰتِ | حَتّٰی | يُؤْمِنَّ ؕ | وَلَاَمَةٌ | مُّؤْمِنَةٌ | خَيْرٌ | مِّنْ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न | निकाह करो | मुश्रिक औरतें | यहां तक कि | वह ईमान लाएं | और अलबत्ता लौंडी | मुसलमान | बेहतर | से |

| مُّشْرِكَةٍ | وَّلَوْ | اَعْجَبَتْكُمْ ۚ | وَلَا | تُنْكِحُوا | الْمُشْرِكِيْنَ | حَتّٰی | يُؤْمِنُوْا ؕ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुश्रिक औरत | अगरचे | वह भली लगे तुम्हें | और न | निकाह करो | मुश्रिकों | यहां तक कि | वह ईमान लाएं |

| وَلَعَبْدٌ | مُّؤْمِنٌ | خَيْرٌ | مِّنْ | مُّشْرِكٍ | وَّلَوْ | اَعْجَبَكُمْ ؕ | اُولٰٓئِكَ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अलबत्ता गुलाम | मुसलमान | बेहतर | से | मुश्रिक | अगरचे | वह भला लगे तुम्हें | वही लोग |

| يَدْعُوْنَ | اِلَی النَّارِ ۖ | وَاللّٰهُ | يَدْعُوْٓا | اِلَی الْجَنَّةِ | وَالْمَغْفِرَةِ |
|---|---|---|---|---|---|
| बुलाते हैं | दोज़ख़ की तरफ़ | और अल्लाह | बुलाता है | जन्नत की तरफ़ | और बखशिश |

| بِاِذْنِهٖ ۚ | وَيُبَيِّنُ | اٰيٰتِهٖ | لِلنَّاسِ | لَعَلَّهُمْ | يَتَذَكَّرُوْنَ | ﴿۲۲۱﴾ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने हुक्म से | और वाज़ेह करता है | अपने एहकाम | लोगों के लिए | ताकि वह | नसीहत पकड़ें | 221 |

ع ٢٧ ١١

| وَيَسْـَٔلُوْنَكَ | عَنِ | الْمَحِيْضِ ؕ | قُلْ | هُوَ | اَذًی ۙ | فَاعْتَزِلُوا | النِّسَآءَ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह पूछते हैं आप से | से (बारे में) | हालते हैज | आप कह दें | वह | गन्दगी | पस तुम अलग रहो | औरतें |

| فِی | الْمَحِيْضِ ۙ | وَلَا | تَقْرَبُوْهُنَّ | حَتّٰی | يَطْهُرْنَ ۚ | فَاِذَا | تَطَهَّرْنَ | فَاْتُوْهُنَّ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | हालते हैज़ | और न | क़रीब जाओ उन के | यहां तक कि | वह पाक हो जाएं | पस जब | वह पाक हो जाएं | तो आओ उन के पास |

| مِنْ حَيْثُ | اَمَرَكُمُ | اللّٰهُ ؕ | اِنَّ | اللّٰهَ | يُحِبُّ | التَّوَّابِيْنَ | وَيُحِبُّ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जहां से | हुक्म दिया तुम्हें | अल्लाह | बेशक | अल्लाह | दोस्त रखता है | तौबा करने वाले | और दोस्त रखता है |

| الْمُتَطَهِّرِيْنَ | ﴿۲۲۲﴾ | نِسَآؤُكُمْ | حَرْثٌ | لَّكُمْ ۪ | فَاْتُوْا | حَرْثَكُمْ | اَنّٰی | شِئْتُمْ ۫ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पाक रहने वाले | 222 | औरतें तुम्हारी | खेती | तुम्हारी | सो तुम आओ | अपनी खेती | जहां से | तुम चाहो |

| وَقَدِّمُوْا | لِاَنْفُسِكُمْ ؕ | وَاتَّقُوا | اللّٰهَ | وَاعْلَمُوْٓا | اَنَّكُمْ | مُّلٰقُوْهُ ؕ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और आगे भेजो | अपने लिए | और डरो | अल्लाह | और तुम जान लो | कि तुम | मिलने वाले उस से |

| وَبَشِّرِ | الْمُؤْمِنِيْنَ | ﴿۲۲۳﴾ | وَلَا | تَجْعَلُوا | اللّٰهَ | عُرْضَةً | لِّاَيْمَانِكُمْ | اَنْ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और खुशखबरी दें | ईमान वाले | 223 | और न | बनाओ | अल्लाह | निशाना | अपनी क़स्मों के लिए | कि |

| تَبَرُّوْا | وَتَتَّقُوْا | وَتُصْلِحُوْا | بَيْنَ | النَّاسِ ؕ | وَاللّٰهُ | سَمِيْعٌ | عَلِيْمٌ | ﴿۲۲۴﴾ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम हुस्ने सुलूक करो | और परहेज़गारी करो | और सुलाह कराओ | दरमियान | लोग | और अल्लाह | सुनने वाला | जानने वाला | 224 |

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰـكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नही पकड़ता तुम्हें | अल्लाह | लगू (बेहूदा) | में | क़स्मों तुम्हारी | और लेकिन | पकड़ता है तुम्हें |

بِمَا كَسَبَتْ قُلُوْبُكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٢٥﴾ لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर-जो | कमाया | दिल तुम्हारे | और अल्लाह | बख़्शने वाला | बुर्दबार | 225 | उन लोगों के लिए जो | क़स्म खाते हैं |

مِنْ نِّسَآئِهِمْ تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ۚ فَاِنْ فَـآءُوْ فَاِنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | औ़रतें अपनी | इन्तिज़ार | चार | महीने | फिर अगर | रुजूअ़ करलें | तो बेशक | अल्लाह |

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٢٦﴾ وَاِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَاِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बख़्शने वाला | रह्म करने वाला | 226 | और अगर | उन्होंने इरादा किया | तलाक़ | तो बेशक | अल्लाह | सुनने वाला |

عَلِيْمٌ ﴿٢٢٧﴾ وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जानने वाला | 227 | और तलाक़ याफ़्ता औ़रतें | इन्तिज़ार करें | अपने तईं | तीन | मुद्दते हैज़ |

وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ اِنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जाइज़ नहीं | उन के लिए | कि | वह छुपाएं | जो | पैदा किया | अल्लाह | में | उन के रह्म (जमा) | अगर |

كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ईमान रखती हैं | अल्लाह पर | और आख़िरत का दिन | और ख़ाविन्द उन के | ज़ियादा हक़दार | वापसी उन की |

فِيْ ذٰلِكَ اِنْ اَرَادُوْٓا اِصْلَاحًا ؕ وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِىْ عَلَيْهِنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | अगर | वह चाहें | बेहतरी (हुस्ने सुलूक) | और औरतों के लिए | जैसे | जो | औरतों पर (फ़र्ज़) |

بِالْمَعْرُوْفِ ۠ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दस्तूर के मुताबिक़ | और मर्दों के लिए | उन पर | एक दर्जा | और अल्लाह | ग़ालिब |

٢٨ ع ٧ ١٢ حَكِيْمٌ ﴿٢٢٨﴾ اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۠ فَاِمْسَاكٌ ۢ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हिक्मत वाला | 228 | तलाक़ | दो बार | फिर रोक लेना | दस्तूर के मुताबिक़ | या |

تَسْرِيْحٌ ۢ بِاِحْسَانٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّآ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रुख़सत करना | हुस्ने सुलूक से | और नहीं | जाइज़ | तुम्हारे लिए | कि | तुम ले लो | उस से जो |

اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْئًا اِلَّآ اَنْ يَّخَافَآ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम ने दिया उन को | कुछ | सिवाए | कि | दोनों अन्देशा करें | कि न | क़ाइम रख सकेंगे | अल्लाह कि हुदूद |

فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۙ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| फिर अगर | तुम डरो | कि वह क़ाइम न रख सकेंगे | अल्लाह की हुदूद | तो गुनाह नहीं | उन दोनों पर |

فِيْمَا افْتَدَتْ بِهٖ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْهَا ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में जो | औ़रत बदला दे | उस का | यह | अल्लाह की हुदूद | पस न | आगे बढ़ो उस से |

وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٢٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | आगे बढ़ता है | अल्लाह की हुदूद | पस वही लोग | वह | ज़ालिम | 229 |

तुम्हें नहीं पकड़ता अल्लाह तुम्हारी बेहूदा क़स्मों पर, लेकिन तुम्हें पकड़ता है उस पर जो तुम्हारे दिलों ने कमाया (इरादे से किया) और अल्लाह बख़्शने वाला, बुर्दबार है। (225)

उन लोगों के लिए जो अपनी औ़रतों के (पास न जाने की) क़स्म खाते हैं इन्तिज़ार करना है चार माह, फिर अगर वह रुजूअ़ कर लें तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रह्म करने वाला है। (226)

और अगर उन्हों ने तलाक़ का इरादा कर लिया तो बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (227)

और तलाक़ याफ़्ता औ़रतें अपने तईं इन्तिजार करें तीन हैज तक, और उन के लिए जाइज नहीं कि वह छुपाएं जो अल्लाह ने उन के रह्मों में पैदा किया, अगर वह अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान रखती हैं, और उन के खाविन्द उन की वापसी के जियादा हक़दार हैं उस (मुद्दत) में अगर वह बेहतरी (हुस्ने सुलूक) करना चाहें, और औरतों के लिए (हक़) है जैसे औरतों पर (मर्दों का) हक़ है दस्तूर के मुताबिक़, और मर्दों का उन पर एक दर्जा (बरतरी) है और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (228)

तलाक़ दो बार है, फिर रोक लेना है दस्तूर के मुताबिक़, या रुख़सत कर देना हुस्ने सुलूक से, और नहीं तुम्हारे लिए जाइज कि जो तुम ने उन्हें दिया है उस से कुछ वापस ले लो, सिवाए उस के कि दोनों अन्देशा करें कि अल्लाह की हुदूद क़ाइम न रख सकेंगे, फिर अगर तुम डरो कि वह दोनों अल्लाह की हुदूद क़ाइम न रख सकेंगे तो गुनाह नहीं उन दोनों पर कि औ़रत उस का बदला (फ़िदया) देदे, यह अल्लाह की हुदूद हैं, पस उन के आगे न बढ़ो, और जो अल्लाह की हुदूद से आगे बढ़ता है पस वही लोग ज़ालिम हैं। (229)

पस अगर उस को तलाक़ दे दी तो जाइज़ नहीं उस के लिए उस के बाद यहां तक कि वह उस के अलावा किसी (दूसरे) ख़ाविन्द से निकाह कर ले, फिर अगर वह उसे तलाक़ देदे तो गुनाह नहीं उन दोनों पर अगर वह रुजूअ़ कर लें, बशर्त यह कि वह ख़याल करें कि वह अल्लाह की हुदूद क़ाइम रखेंगे, और यह अल्लाह की हुदूद हैं, वह उन्हें जानने वालों के लिए वाज़ेह करता है (230)

فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنۢ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह निकाह कर ले | यहां तक कि | उस के बाद | उस के लिए | तो जाइज़ नही | तलाक़ दी उस को | फिर अगर |

زَوْجًا غَيْرَهٗ ؕ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर | उन दोनों पर | तो गुनाह नही | तलाक़ देदे उस को | फिर अगर | उस के अलावा | ख़ाविन्द |

يَّتَرَاجَعَآ اِنْ ظَنَّآ اَنْ يُّقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और यह | अल्लाह की हुदूद | वह क़ाइम रखेंगे | कि | वह ख़याल करें | बशर्ते यह कि | वह रुजूअ़ कर लें |

حُدُوْدُ اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٠﴾ وَاِذَا طَلَّقْتُمُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तुम तलाक़ दो | और जब | 230 | जानने वालों के लिए | उन्हें वाज़ेह करता है | अल्लाह की हुदूद |

और जब तुम औ़रतों को तलाक़ दे दो फिर वह अपनी इद्दत पूरी कर लें तो उन को दस्तूर के मुताबिक़ रोको या दस्तूर के मुताबिक़ रुख़सत कर दो और तुम उन्हें नुक़्सान पहुँचाने के लिए न रोको ताकि तुम ज़ियादती करो, और जो यह करेगा बेशक उस ने अपने ऊपर ज़ुल्म किया, और अल्लाह के एहकाम को मज़ाक़ न ठहराओ, और तुम पर जो अल्लाह की नेमत है उसे याद करो. और जो उस ने तुम पर किताब और हिक्मत उतारी, वह उस से तुम्हें नसीहत करता है, और तुम अल्लाह से डरो, और जान लो कि अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (231)

النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| दस्तूर के मुताबिक़ | तो रोको उन को | अपनी इद्दत | फिर वह पूरी कर लें | औ़रतें |

اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ۠ وَلَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| नुक़्सान | और तुम न रोको उन्हें | दस्तूर के मुताबिक़ | रुख़सत कर दो | या |

لِّتَعْتَدُوْا ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपनी जान | तो बेशक उस ने ज़ुल्म किया | यह | करेगा | और जो | ताकि तुम ज़ियादती करो |

وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا ۡ وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की नेमत | और याद करो | मज़ाक़ | एहकाम अल्लाह | ठहराओ | और न |

عَلَيْكُمْ وَمَآ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَالْحِكْمَةِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और हिक्मत | किताब | से | तुम पर | उस ने उतारा | और जो | तुम पर |

يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चीज़ | हर | अल्लाह | कि | और जान लो | अल्लाह | और तुम डरो | उस से | वह नसीहत करता है तुम्हें |

عَلِيْمٌ ﴿٢٣١﴾ وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ ع ٢٩ ١٣

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी इद्दत | फिर वह पूरी कर लें | औ़रतें | तुम तलाक़ दो | और जब | 231 | जानने वाला |

और जब तुम औ़रतों को तलाक़ देदो फिर वह पूरी कर लें अपनी इद्दत तो उन्हें अपने ख़ाविन्दों से निकाह करने से न रोको, जब वह राज़ी हों आपस में दस्तूर के मुताबिक़, यह उस को नसीहत की जाती है जो तुम में से ईमान रखता है अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर, यही तुम्हारे लिए ज़ियादा सुथरा और ज़ियादा पाकीज़ा है, और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। (232)

فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ يَّنْكِحْنَ اَزْوَاجَهُنَّ اِذَا تَرَاضَوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह राज़ी हों | जब | ख़ाविन्द अपने | वह निकाह करें | कि | रोको उन्हें | तो न |

بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ ذٰلِكَ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हो | जो | उस से | नसीहत की जाती है | यह | दस्तूर के मुताबिक़ | आपस में |

مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكُمْ اَزْكٰى

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ज़ियादा सुथरा | यही | और यौमे आख़िरत | अल्लाह पर | ईमान रखना | तुम में से |

لَكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 232 | जानते | नही | और तुम | जानता है | और अल्लाह | और ज़ियादा पाकीज़ा | तुम्हारे लिए |

وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ

चाहे | जो कोई | पूरे | दो साल | अपनी औलाद | दूध पिलाएं | और माएँ

اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ؕ وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ

दस्तूर के मुताबिक़ | और उन का लिबास | उन का खाना | जिस का बच्चा (बाप) | और पर | दूध पिलाने कि मुद्दत | कि वह पूरी करे

لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌۢ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ

जिस का बच्चा (बाप) | और न | उस के बच्चे के सबब | माँ | न नुक़्सान पहुँचाया जाए | उस की वुस्अ़त | मगर | कोई शख़्स | नही तक्लीफ़ दी जाती

بِوَلَدِهٖ ۗ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ

आपस की रज़ामन्दी से | दूध छुड़ाना | दोनों चाहें | फिर अगर | यह-उस | ऐसा | वारिस | और पर | उस के बच्चे के सबब

مِّنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ؕ وَاِنْ اَرَدْتُّمْ اَنْ

कि | तुम चाहो | और अगर | उन दानों पर | गुनाह | तो नही | और बाहम मशवरा | दोनों से

تَسْتَرْضِعُوْٓا اَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِذَا سَلَّمْتُمْ مَّآ اٰتَيْتُمْ

तुम ने दिया था | जो | तुम हवाले कर दो | जब | तुम पर | तो गुनाह नही | अपनी औलाद | तुम दूध पिलाओ

بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٣﴾

233 | देखने वाला | तुम करते हो | से-जो | अल्लाह | कि | और जान लो | अल्लाह | और डरो | दस्तूर के मुताबिक़

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ

अपने आप को | वह इन्तिज़ार में रखें | बीवियां | और छोड़ जाएं | तुम से | वफ़ात पा जाएं | और जो लोग

اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ

तुम पर | तो नहीं गुनाह | अपनी मुद्दत (इद्दत) | वह पहुँच जाएं | फिर जब | और दस (दिन) | महीने | चार

فِيْمَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٣٤﴾

234 | बाख़बर | जो तुम करते हो उस से | और अल्लाह | दस्तूर के मुताबिक़ | अपनी जानें (अपने हक़) | में | वह करें | में-जो

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا عَرَّضْتُمْ بِهٖ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَآءِ اَوْ اَكْنَنْتُمْ

तुम छुपाओ | या | औरतों को | पैग़ामे निकाह | उस से | इशारे में | में-जो | तुम पर | और नहीं गुनाह

فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ وَلٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ

न वादा करो उन से | और लेकिन | जल्द ज़िक्र करोगे उन से | कि तुम | जानता है अल्लाह | अपने दिलों में

سِرًّا اِلَّآ اَنْ تَقُوْلُوْا قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ؕ وَلَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ النِّكَاحِ

निकाह | गिरह | इरादा करो | और न | दस्तूर के मुताबिक़ | बात | तुम कहो | मगर यह कि | छुप कर

حَتّٰى يَبْلُغَ الْكِتٰبُ اَجَلَهٗ ؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِيْٓ

में | जो | जानता है | अल्लाह | कि | और जान लो | उस की मुद्दत | इद्दत | पहुँच जाए | यहां तक

٣٠ ع ٤ ١٣ اَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٣٥﴾

235 | तहम्मुल वाला | बख़्शने वाला | अल्लाह | कि | और जान लो | सो डरो उस से | अपने दिल

और माएँ अपनी औलाद को पूरे दो साल दूध पिलाएं, जो कोई दूध पिलाने की मुद्दत पूरी करना चाहे, और उन (माओं) का खाना और उन का लिबास बाप पर (वाजिब है) दस्तूर के मुताबिक़, और किसी को तक्लीफ़ नहीं दी जाती मगर उस की वुस्अ़त (बरदाश्त) के मुताबिक़, माँ को नुक़्सान न पहुँचाया जाए उस के बच्चे के सबब, और न बाप को उस के बच्चे के सबब, और वारिस पर भी ऐसा ही (वाजिब) है, फिर अगर वह दोनों दूध छुड़ाना चाहें आपस की रज़ामन्दी और मशवरे से, तो दोनों पर कोई गुनाह नहीं, और अगर तुम चाहो कि अपनी औलाद को दूध पिलाओ तो तुम पर कोई गुनाह नहीं, जब तुम दस्तूर के मुताबिक़ (उन के) हवाले कर दो जो तुम ने देना ठहराया था, और अल्लाह से डरो और जान लो कि अललाह जो कुछ तुम करते हो उसे देखने वाला है। (233)

और तुम में से जो लोग वफ़ात पा जाएं, और छोड़ जाएं बीवियां, वह (बेवाएँ) अपने आप को इन्तिज़ार में रखें चार माह दस दिन, फिर जब वह अपनी मुद्दत को पहुँच जाएं (इद्दत पूरी कर लें) तो उस में तुम पर कोई गुनाह नहीं जो वह अपने हक़ में करें दस्तूर के मुताबिक़, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (234)

और तुम पर उस में कोई गुनाह नहीं कि तुम औरतों को इशारे कनाए में निकाह का पैग़ाम दो, या अपने दिलों में छुपाओ, अल्लाह जानता है तुम जल्द उन से ज़िक्र कर दोगे, लेकिन उन से छुप कर (निकाह का) वादा न करो, मगर यह कि तुम दस्तूर के मुताबिक़ बात करो, और निकाह की गिरह बाँधने का इरादा न करो यहां तक इद्दत अपनी मुद्दत तक पहुँच जाए, और जान लो कि जो कुछ तुम्हारे दिलों में है अल्लाह जानता है, सो तुम उस से डरो और जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला, तहम्मुल वाला है। (235)

तुम पर कोई गुनाह नहीं अगर तुम औरतों को तलाक़ दो जब कि तुम ने उन्हें हाथ न लगाया हो, या उन के लिए मेह्र मुक़र्रर न किया हो, और उन्हें ख़र्च दो, ख़ुशहाल पर उस की हैसियत के मुताबिक़ और तंगदस्त पर उस की हैसियत के मुताबिक़, ख़र्च दस्तूर के मुताबिक़ (देना) नेकोकारों पर लाज़िम है। (236)

और अगर तुम उन्हें तलाक़ दो इस से पहले कि तुम ने उन्हें हाथ लगाया हो और उन के लिए तुम मेह्र मुक़र्रर कर चुके हो तो उस का निस्फ़ (दे दो) जो तुम ने मुक़र्रर किया सिवाए उस के कि वह मुआ़फ़ कर दें या वह मुआफ कर दे जिस के हाथ में अ़क्दे निकाह है, और अगर तुम मुआ़फ़ कर दो तो यह परहेज़गारी के क़रीब तर है, और बाहम एहसान करना न भूलो, बेशक जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देखने वाला है। (237)

तुम नमाज़ों की हिफ़ाजत करो (ख़ुसूसन) दरमियानी नमाज़ की और अल्लाह के लिए फर्मांबरदार (बन कर) खड़े रहो। (238)

फिर अगर तुम्हें डर हो तो प्यादापा या सवार (अदा करो) फिर जब अम्न पाओ तो अल्लाह को याद करो जैसा कि उस ने तुम्हें सिखाया है जो तुम न थे जानते। (239)

और जो लोग तुम में से वफ़ात पा जाएं और बीवियां छोड़ जाएं तो अपनी बीवियों के लिए एक साल तक नान नफ़क़ा की वसीयत करें निकाले बग़ैर, फिर अगर वह ख़ुद निकल जाएं तो तुम पर कोई गुनाह नहीं जो वह अपने तईं दस्तूर के मुताबिक़ करें, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (240)

और मुतल्लक़ा औरतों के लिए दस्तूर के मुताबिक़ नान नफ़क़ा लाज़िम है परहेज़गारों पर। (241)

इसी तरह तुम्हारे लिए अल्लाह अपने एहकाम वाज़ेह करता है, ताकि तुम समझो। (242)

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ اَوْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| या | तुम ने उन्हें हाथ लगाया | जो न | औरतें | तुम तलाक़ दो | अगर | तुम पर | नही गुनाह |

تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِيْضَةً ۚ وَّمَتِّعُوْهُنَّ ۚ عَلَى الْمُوْسِعِ قَدَرُهٗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की हैसियत | ख़ुशहाल | पर | और उन्हें ख़र्च दो | मेह्र | उन के लिए | मुक़र्रर किया |

وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًا ۢ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٣٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 236 | नेकोकार | पर | लाज़िम | दस्तूर के मुताबिक़ | ख़र्च | उस की हैसियत | तंगदस्त | और पर |

وَاِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और तुम मुक़र्रर कर चुके हो | उन्हें हाथ लगाओ | कि | पहले | तुम उन्हें तलाक़ दो | और अगर |

لَهُنَّ فَرِيْضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ اِلَّآ اَنْ يَّعْفُوْنَ اَوْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| या | वह मुआ़फ़ कर दें | यह कि | सिवाए | तुम ने मुक़र्रर किया | जो | तो निस्फ़ | मेह्र | उन के लिए |

يَعْفُوَا الَّذِىْ بِيَدِهٖ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ۚ وَاَنْ تَعْفُوْٓا اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| परहेज़गारी के | ज़ियादा क़रीब | तुम मुआ़फ़ कर दो | और अगर | निकाह की गिरह | उस के हाथ में | वह जो | मुआ़फ़ कर दे |

وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۚ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 237 | देखने वाला | तुम करते हो | उस से जो | अल्लाह | बेशक | बाहम | एहसान करना | और न भूलो |

حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۗ وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के लिए | और खड़े रहो | दरमियानी | और नमाज़ | नमाज़ों की | तुम हिफ़ाज़त करो |

قٰنِتِيْنَ ﴿٢٣٨﴾ فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | तो याद करो | तुम अम्न पाओ | फिर जब | सवार | या | तो प्यादापा | तुम्हें डर हो | फिर अगर | 238 | फर्मांबरदार (जमा) |

كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٩﴾ وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वफ़ात पा जाएं | और जो लोग | 239 | जानते | तुम न थे | जो | उस ने तुम्हें सिखाया | जैसा कि |

مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا ۚ وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नान नफ़क़ा | अपनी बीवियों के लिए | वसीयत | बीवियां | और छोड़ जाएं | तुम में से |

اِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِىْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | तुम पर | गुनाह | तो नहीं | वह निकल जाएं | फिर अगर | निकाले | बग़ैर | एक साल | तक |

مَا فَعَلْنَ فِىْٓ اَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٤٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 240 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | और अल्लाह | दस्तूर | में | अपने तईं | में | जो वह करें |

وَلِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌ ۢ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٤١﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 241 | परहेज़गारों | पर | लाज़िम | दस्तूर के मुताबिक़ | नान नफ़क़ा | और मुतल्लक़ा औरतों के लिए |

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٤٢﴾ ع ٣١ ١٥

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 242 | समझो | ताकि तुम | अपने एहकाम | तुम्हारे लिए | अल्लाह | वाज़ेह करता है | इसी तरह |

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ

क्या तुम ने नहीं देखा | तरफ़ | वह लोग जो | निकले | से | अपने घर (जमा) | और वह | हज़ारों | डर | मौत

فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ثُمَّ اَحْيَاهُمْ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ

सो कहा | उन्हें | अल्लाह | तुम मर जाओ | फिर | उन्हें ज़िन्दा किया | बेशक | अल्लाह | फ़ज़्ल वाला

عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٢٤٣﴾ وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

लोगों पर | और लेकिन | अक्सर | लोग | शुक्र अदा नहीं करते | 243 | और तुम लड़ो | में | रास्ता | अल्लाह

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٤٤﴾ مَنْ ذَا الَّذِىْ يُقْرِضُ اللّٰهَ

और जान लो | कि | अल्लाह | सुनने वाला | जानने वाला | 244 | कौन | वह | जो कि | क़र्ज़ दे अल्लाह

قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗٓ اَضْعَافًا كَثِيْرَةً وَاللّٰهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ

क़र्ज़ अच्छा | पस वह उसे बढ़ा दे | उस के लिए | कई गुना ज़ियादा | और अल्लाह | तंगी करता है | और फ़राख़ी करता है

وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٤٥﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْ بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنْ بَعْدِ

और उस की तरफ़ | तुम लौटाए जाओगे | 245 | क्या तुम ने नहीं देखा | तरफ़ | सरदारों | से | बनी इस्राईल | से | बाद

مُوْسٰى اِذْ قَالُوْا لِنَبِىٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

मूसा (अ) | जब | उन्हों ने कहा | अपने नबी से | मुक़र्रर कर दें | हमारे लिए | एक बादशाह | हम लड़ें | में | अल्लाह का रास्ता

وقف لازم

قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْا

उस ने कहा | क्या | हो सकता है तुम | अगर | तुम पर फ़र्ज़ की जाए | जंग | कि तुम न लड़ो

قَالُوْا وَمَا لَنَآ اَلَّا نُقَاتِلَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ

वह कहने लगे | और हमें क्या | कि न | हम लड़ेंगे | में | अल्लाह की राह | और अलबत्ता | हम निकाले गए | से

دِيَارِنَا وَاَبْنَآئِنَا فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا اِلَّا قَلِيْلًا

अपने घर | और अपनी आल औलाद | फिर जब | उन पर फ़र्ज़ की गई | जंग | वह फिर गए | सिवाए | चन्द

مِّنْهُمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٤٦﴾ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اللّٰهَ

उन में से | और अल्लाह | जानने वाला | ज़ालिमों को | 246 | और कहा | उन्हें | उन का नबी | बेशक | अल्लाह

قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوْتَ مَلِكًا قَالُوْٓا اَنّٰى يَكُوْنُ لَهُ الْمُلْكُ

मुक़र्रर कर दिया है | तुम्हारे लिए | तालूत | बादशाह | वह बोले | कैसे | हो सकती है | उस के लिए | बादशाहत

عَلَيْنَا وَنَحْنُ اَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ

हम पर | और हम | ज़ियादा हक़दार | बादशाहत के | उस से | और नहीं दी गई | वुसअत | से | माल

قَالَ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهٗ بَسْطَةً فِى الْعِلْمِ

उस ने कहा | बेशक | अल्लाह | उसे चुन लिया | तुम पर | और उसे ज़ियादा दी | वुसअत | में | इल्म

وَالْجِسْمِ وَاللّٰهُ يُؤْتِىْ مُلْكَهٗ مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٤٧﴾

और जिस्म | और अल्लाह | देता है | अपना मुल्क | जिसे | चाहता है | और अल्लाह | वुसअत वाला | जानने वाला है | 247

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने घरों से निकले मौत के डर से? और वह हज़ारों थे, सो अल्लाह ने उन्हें कहा तुम मर जाओ, फिर उन्हें ज़िन्दा किया, बेशक अल्लाह फ़ज़्ल वाला है लोगों पर, लेकिन अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते। (243)

और तुम अल्लाह के रास्ते में लड़ो और जान लो कि अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (244)

कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे अच्छा क़र्ज़, फिर वह उसे कई गुना ज़ियादा बढ़ा दे, अल्लाह तंगी (भी) देता है और फ़राख़ी (भी) देता है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (245)

क्या तुम ने बनी इस्राईल के सरदारों की तरफ़ नहीं देखा मूसा के बाद? जब उन्हों ने अपने नबी से कहा हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्रर कर दें, ताकि हम लड़ें अल्लाह के रास्ते में, उस ने कहा हो सकता है कि अगर तुम पर जंग फ़र्ज़ की जाए तो तुम न लड़ो, वह कहने लगे और हमें क्या हुआ कि हम अल्लाह की राह में न लड़ेंगे, और अलबत्ता हम अपने घरों से और अपनी आल औलाद से निकाले गए हैं, फिर जब उन पर जंग फ़र्ज़ की गई तो उन में से चन्द एक के सिवा (सब) फिर गए, और अल्लाह ज़ालिमों को जानने वाला है। (246)

और कहा उन्हें उन के नबी ने बेशक अल्लाह ने तुम्हारे लिए तालूत को बादशाह मुक़र्रर कर दिया है, वह बोले कैसे हम पर उस की बादशाहत हो सकती है? हम उस से ज़ियादा बादशाहत के हक़दार हैं, और उसे वुसअत नहीं दी गई माल से, उस ने कहा बेशक अल्लाह ने उसे तुम पर चुन लिया है और उसे ज़ियादा वुसअत दी है इल्म और जिस्म में, और अल्लाह जिसे चाहता है अपना मुल्क देता है, और अल्लाह वुसअत वाला जानने वाला है। (247)

और उन्हें उन के नबी ने कहा बेशक उस की हुकूमत की निशानी यह है कि तुम्हारे पास तावूत आएगा उस में तुम्हारे रब की तरफ़ से सामाने तसकीन होगा और बची हुई चीज़ें जो आले मूसा और आले हारुन ने छोड़ी थीं उसे फ़रिश्ते उठा लाएंगे, बेशक उस में तुम्हारे लिए निशानी है, अगर तुम ईमान वाले हो। (248)

फिर जब तालूत लश्कर के साथ बाहर निकला, उस ने कहा बेशक अल्लाह एक नहर से तुम्हारी आज़माइश करने वाला है, पस जिस ने उस से (पानी) पी लिया वह मुझ से नहीं, और जिस ने उसे न चखा वह बेशक मुझ से है सिवाए उस के जो अपने हाथ से एक चुल्लू भर ले, फिर चन्द एक के सिवाए उन्हों ने उसे पी लिया, पस जब वह (तालूत) और जो उस के साथ ईमान लाए वे उस के पार हुए, उन्हों ने कहा आज हमें ताक़त नहीं जालूत और उस के लश्कर के साथ (मुक़ाबिले की), जो लोग यक़ीन रखते थे कि वह अल्लाह से मिलने वाले हैं उन्हों ने कहा, बारहा छोटी जमाअतें ग़ालिब हुई हैं अल्लाह के हुक्म से बड़ी जमाअतों पर, और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। (249)

और जब जालूत और उस के लश्कर आमने सामने हुए तो उन्हों ने कहा ऐ हमारे रब! हमारे (दिलों में) सब्र डाल दे, और हमारे क़दम जमादे, और हमारी मदद कर काफ़िर क़ौम पर। (250)

फिर उन्हों ने अल्लाह के हुक्म से उन्हें शिकस्त दी और दाऊद (अ) ने जालूत को क़त्ल किया, और अल्लाह ने उसे मुल्क और हिक्मत अता की, और उसे सिखाया जो चाहा, और अगर अल्लाह न हटाता बाज़ लोगों को बाज़ लोगों के ज़रीए, तो ज़मीन ज़रूर ख़राब हो जाती और लेकिन अल्लाह तमाम जहानों पर फ़ज़्ल वाला है। (251)

यह अल्लाह के अहकाम हैं हम वह आप को ठीक ठीक सुनाते हैं और बेशक आप ज़रूर रसूलों में से हैं। (252)

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهٖٓ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ التَّابُوْتُ فِيْهِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और कहा | उन्हें | उन का नबी | बेशक | निशानी | उस की हुकूमत | कि | आएगा तुम्हारे पास | तावूत | उस में |

سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى وَاٰلُ هٰرُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सामाने तसकीन | से | तुम्हारा रब | और बची हुई | उस से जो | छोड़ा | आले मूसा | और आले हारुन |

تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۲۴۸﴾ ع ٣٢ ١٦

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उठाएंगे उसे | फ़रिश्ते | बेशक | उस में | निशानी | तुम्हारे लिए | अगर | तुम हो | ईमान वाले | 248 |

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوْتُ بِالْجُنُوْدِ ۙ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ مُبْتَلِيْكُمْ بِنَهَرٍ ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर जब | बाहर निकला | तालूत | लश्कर के साथ | उस ने कहा | बेशक | अल्लाह | तुम्हारि आज़माइश करने वाला | एक नहर से |

فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّىْ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَطْعَمْهُ فَاِنَّهٗ مِنِّىْٓ اِلَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस जिस | पी लिया | उस से | तो नहीं | मुझ से | और जिस | उसे न चखा | तो बेशक वह | मुझ से | सिवाए |

مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةًۢ بِيَدِهٖ ۚ فَشَرِبُوْا مِنْهُ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ فَلَمَّا جَاوَزَهٗ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | चुल्लू भर ले | एक चुल्लू | अपने हाथ से | फिर उन्हों ने पी लिया | उस से | सिवाए | चन्द एक | उन से | पस जब | उस के पार हुए |

هُوَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۙ قَالُوْا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह | और वह जो | ईमान लाए | उस के साथ | उन्हों ने कहा | नही ताक़त | हमारे लिए | आज | जालूत के साथ | और उस का लश्कर |

قَالَ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوا اللّٰهِ ۙ كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कहा | जो लोग | यक़ीन रखते थे | कि वह | मिलने वाले | अल्लाह | बारहा | से | जमाअतें | छोटी |

غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةًۢ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۲۴۹﴾ وَلَمَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग़ालिब हुई | जमाअतें | बड़ी | अल्लाह के हुक्म से | और अल्लाह | साथ | सब्र करने वाले | 249 | और जब |

بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आमने सामने हुए | जालूत के | और उस का लश्कर | उन्हों ने कहा | ऐ हमारे रब | डाल दे | हम पर | सब्र | और जमादे |

اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۵۰﴾ فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۟

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारे क़दम | और हमारी मदद कर | पर | क़ौम | काफ़िर (जमा) | 250 | फिर उन्हों ने शिकस्त दी उन्हें | अल्लाह के हुक्म से |

وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और क़त्ल किया | दाऊद (अ) | जालूत | और उसे दिया | अल्लाह | मुल्क | और हिक्मत | और उसे सिखाया |

مِمَّا يَشَآءُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | चाहा | और अगर न | हटाता | अल्लाह | लोग | बाज़ लोग | बाज़ के ज़रीए |

لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۵۱﴾ تِلْكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़रूर ख़राब हो जाती | ज़मीन | और लेकिन | अल्लाह | फ़ज़्ल वाला | पर | तमाम जहान | 251 | यह |

اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۲۵۲﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के अहकाम | हम सुनाते हैं उन को | आप पर | ठीक ठीक | और बेशक आप | ज़रूर-से | रसूल (जमा) | 252 |

الجزء ٣

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन से | बाज़ | पर | उन के बाज़ | हम ने फ़ज़ीलत दी | यह रसूल (जमा) |

مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ۭ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मरयम (अ) का बेटा | ईसा (अ) | और हम ने दी | दरजे | उन के बाज़ | और बुलन्द किए | अल्लाह | कलाम किया |

الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۭ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जो | बाहम लड़ते | न | चाहता अल्लाह | और अगर | रुहुल कुदुस (जिब्राईल) से | और उस की ताईद की हम ने | खुली निशानियां |

مِنْۢ بَعْدِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ اخْتَلَفُوْا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया | और लेकिन | खुली निशानियां | जो (जब) आ गई उन के पास | बाद से | उन के बाद |

فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ۭ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلُوْا ۣ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह बाहम न लड़ते | चाहता अल्लाह | और अगर | कुफ़्र किया | कोई - बाज | और उन से | ईमान लाया | जो - कोई | फिर उन से |

٣٣ ع ٥ ١

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿٢٥٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम ख़र्च करो | जो ईमान लाए (ईमान वाले) | ऐ | 253 | जो वह चाहता है | करता है | अल्लाह | और लेकिन |

مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न दोस्ती | उस में | न खरीद ओ फ़रोख़्त | वह दिन | आजाए | कि | से पहले | हम ने दिया तुम्हें | से जो |

وَّلَا شَفَاعَةٌ ۭ وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٥٤﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सिवाए उस के | नही माबूद | अल्लाह | 254 | ज़ालिम (जमा) | वही | और काफ़िर (जमा) | और न सिफ़ारिश |

اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ڬ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ۭ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | आस्मानों में | जो | उसी का है | नीन्द | और न | ऊन्घ | न उसे आती है | थामने वाला | ज़िन्दा |

فِي الْاَرْضِ ۭ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۭ يَعْلَمُ مَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | वह जानता है | उस की इजाज़त से | मगर (बग़ैर) | उस के पास | सिफ़ारिश करे | वह जो | कौन जो | ज़मीन में |

بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर | उस का इल्म | से | किसी चीज़ का | वह अहाता करते है | और नहीं | उन के पीछे | और जो | उन के सामने |

بِمَا شَاۗءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـــُٔـوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की हिफ़ाज़त | थकाती उस को | और नहीं | और ज़मीन | आस्मान (जमा) | उस की कुर्सी | समा लिया | जितना वह चाहे |

وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿٢٥٥﴾ لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ ڐ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हिदायत | बेशक जुदा हो गई | दीन | में | नहीं ज़बरदस्ती | 255 | अज़मत वाला | बुलन्द मरतबा | और वह |

مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने थाम लिया | पस तहक़ीक़ | अल्लाह पर | और ईमान लाए | गुमराह करने वाले को | न माने | पस जो | गुमराही | से |

بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۤ لَا انْفِصَامَ لَهَا ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٥٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 256 | जानने वाला | सुनने वाला | और अल्लाह | उस को | टूटना नहीं | मज़बूती | हलके को |

यह रसूल हैं! हम ने उन में से बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी। उन में (बाज़) से अल्लाह ने कलाम किया और उन में से बाज के दर्जे बुलन्द किए, और हम ने मरयम के बेटे ईसा (अ) को खुली निशानियां दी, और हम ने रुहुल कुदुस (अ) से उस की ताईद की, और अगर अल्लाह चाहता तो वह बाहम न लड़ते जो उन के बाद हुए, उस के बाद जबकि उन के पास खुली निशानियां आगईं, लेकिन उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया, फिर उन में से कोई ईमान लाया, और उन में से किसी ने कुफ़्र किया, और अगर अल्लाह चाहता तो वह बाहम न लड़ते, लेकिन अल्लाह जो चाहता है करता है। (253)

ऐ ईमान वालो! जो हम ने तुम्हें दिया उस में से ख़र्च करो, इस से पहले कि वह दिन आजाए जिस में न ख़रीद ओ फ़रोख़्त होगी, न दोस्ती और न सिफ़ारिश, और काफ़िर वही जालिम हैं। (254)

अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नही, जिन्दा, सब को थामने वाला, न उसे ऊन्घ आती है और न नीन्द, उसी का है जो आस्मानों और ज़मीन में है, कौन है जो सिफ़ारिश करे? उस के पास उस की इजाजत के बगैर, वह जानता है जो उन के सामने है, और जो उन के पीछे है, और वह नहीं अहाता कर सकते उस के इल्म में से किसी चीज का मगर जितना वह चाहे, उस की कुर्सी समाए हुए है आस्मानों और ज़मीन को, उस को उन की हिफ़ाज़त नहीं थकाती, और वह बुलन्द मरतबा, अज़मत वाला है। (255)

जबरदस्ती नहीं दीन में, बेशक हिदायत से गुमराही जुदा हो गई है, पस जो गुमराह करने वाले को न माने, और अल्लाह पर ईमान लाए, पस तहक़ीक़ उस ने हलक़े को मज़बूती से थाम लिया, टूटना नहीं उस को, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (256)

जो लोग ईमान लाए अल्लाह उन का मददगार है, वह उन्हें निकालता है अन्धेरों से रौशनी की तरफ़, और जो लोग काफ़िर हुए उन के साथी गुमराह करने वाले हैं, वह उन्हें निकालते हैं रौशनी से अन्धेरों की तरफ़, यही लोग दोज़ख़ी हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (257)

क्या आप ने उस शख़्स की तरफ़ नहीं देखा जिस ने इब्राहीम (अ) से उन के रब के बारे में झगड़ा किया कि अल्लाह ने उसे बादशाहत दी थी, जब इब्राहीम (अ) ने कहा मेरा रब वह है जो ज़िन्दा करता है और मारता है। उस ने कहा मैं ज़िन्दा करता हूँ और मारता हूँ, इब्राहीम (अ) ने कहा बेशक अल्लाह सूरज को मशरिक़ से निकालता है, पस तू उसे ले आ मग़रिब से, तो वह काफ़िर हैरान रह गया, और अल्लाह नाइन्साफ़ लोगों को हिदायत नहीं देता। (258)

या उस शख़्स के मानिंद जो एक बस्ती से गुज़रा, और वह अपनी छतों पर गिरी पड़ी थी, उस ने कहा अल्लाह उस के मरने के बाद उसे क्योंकर ज़िन्दा करेगा? तो अल्लाह ने उसे एक सौ साल मुर्दा रखा, फिर उसे उठाया (ज़िन्दा किया), अल्लाह ने पूछा तू कितनी देर रहा? उस ने कहा मैं एक दिन या दिन से कुछ कम रहा, उस ने कहा बल्कि तू एक सौ साल रहा है, पस तू अपने खाने पीने की तरफ़ देख, वह सड़ नहीं गया, और अपने गधे की तरफ़ देख, और हम तुझे लोगों के लिए एक निशानी बनाएंगे, और हड्डियों की तरफ़ देख हम उन्हें किस तरह जोड़ते हैं, फिर उन्हें गोश्त पहनाते हैं, फिर जब उस पर वाज़ेह हो गया तो उस ने कहा मैं जान गया कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत वाला है। (259)

اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۬

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रौशनी | तरफ़ | अन्धेरों | से | वह उन्हें निकालता है | जो लोग ईमान लाए | मददगार | अल्लाह |

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْلِيٰٓـــُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रौशनी | से | और उन्हें निकालते हैं | शैतान | उन के साथी | और जो लोग काफ़िर हुए |

اِلَى الظُّلُمٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥٧﴾ ع ۳۴ ۲

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 257 | हमेशा रहेंगे | उस में | वह | दोज़ख़ी | यही लोग | अन्धेरे (जमा) | तरफ़ |

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْ حَآجَّ اِبْرٰهٖمَ فِيْ رَبِّهٖٓ اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | उसे दी | कि | उस का रब | बारे (में) | इब्राहीम | झगड़ा किया | वह शख़्स जो | तरफ़ | क्या नहीं देखा आप ने |

اَلْمُلْكَ ۘ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّيَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۙ قَالَ اَنَا وقف لازم

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मैं | उस ने कहा | और मारता है | ज़िन्दा करता है | जो कि | मेरा रब | इब्राहीम | कहा | जब | बादशाहत |

اُحْيٖ وَاُمِيْتُ ؕ قَالَ اِبْرٰهٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ يَاْتِيْ بِالشَّمْسِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूरज को | लाता है | अल्लाह | बेशक | इब्राहीम | कहा | और मैं मारता हूँ | ज़िन्दा करता हूँ |

مِنَ الْمَشْرِقِ فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِيْ كَفَرَ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जिस ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | तो वह हैरान रह गया | मग़रिब | से | पस तू उसे ले आ | मशरिक़ | से |

وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٥٨﴾ اَوْ كَالَّذِيْ مَرَّ عَلٰى قَرْيَةٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक बस्ती | पर से | गुज़रा | उस शख़्स के मानिंद जो | या | 258 | नाइन्साफ़ लोग | नहीं हिदायत देता | और अल्लाह |

وَّهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا ۚ قَالَ اَنّٰى يُحْيٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बाद | अल्लाह | इस | ज़िन्दा करेगा | क्योंकर | उस ने कहा | अपनी छतों पर | गिर पड़ी थी | और वह |

مَوْتِهَا ۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهٗ ؕ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कितनी देर रहा | उस ने पूछा | उसे उठाया | फिर | साल | एक सौ | अल्लाह | तो उस को मुर्दा रखा | इस का मरना |

قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तू रहा | बल्कि | उस ने कहा | दिन से कुछ कम | या | एक दिन | मैं रहा | उस ने कहा |

مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ اِلٰى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۚ وَانْظُرْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और देख | वह नहीं सड़ गया | और अपना पीना | अपना खाना | तरफ़ | पस तू देख | एक सौ साल |

اِلٰى حِمَارِكَ ۫ وَلِنَجْعَلَكَ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ اِلَى الْعِظَامِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हड्डियां | तरफ़ | और देख | लोगों के लिए | एक निशानी | और हम तुझे बनाएंगे | अपना गधा | तरफ़ |

كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا ؕ فَلَمَّا تَبَيَّنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वाज़ेह हो गया | फिर जब | गोश्त | हम उसे पहनाते हैं | फिर | हम उन्हें जोड़ते हैं | किस तरह |

لَهٗ ۙ قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٥٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 259 | क़ुदरत वाला | हर चीज़ | पर | अल्लाह | कि | मैं जान गया | उस ने कहा | उस पर |

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِىْ كَيْفَ تُحْىِ الْمَوْتٰى ؕ قَالَ اَوَلَمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या नहीं | उस ने कहा | मुर्दा | तू ज़िन्दा करता है | क्योंकर | मुझे दिखा | मेरे रब | इब्राहीम | कहा | और जब |

تُؤْمِنْ ؕ قَالَ بَلٰى وَلٰـكِنْ لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِىْ ؕ قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चार | पस पकड़ ले | उस ने कहा | मेरा दिल | ताकि इत्मिनान हो जाए | बल्कि | क्यों नहीं | उस ने कहा | यक़ीन किया |

مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ اِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰى كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन से (उन के) | पहाड़ | हर | पर | रख दे | फिर | अपने साथ | फिर उन को हिला | परिन्दे | से |

جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَاْتِيْنَكَ سَعْيًا ؕ وَاعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग़ालिब | अल्लाह | कि | और जान ले | दौड़ते हुए | वह तेरे पास आएंगे | उन्हें बुला | फिर | टुकड़े |

٣٥ ع ٣ ٢ حَكِيْمٌ ﴿٢٦٠﴾ مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह का रास्ता | में | अपने माल | ख़र्च करते हैं | जो लोग | मिसाल | 260 | हिक्मत वाला |

كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِىْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दाने | सौ | हर बाल | में | बालें | सात | उगें | एक दाना | मानिंद |

وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٦١﴾ اَلَّذِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो लोग | 261 | जानने वाला | वुसअत वाला | और अल्लाह | चाहता है | जिस के लिए | बढ़ाता है | और अल्लाह |

يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो उन्हों ने ख़र्च किया | बाद में नहीं रखते | फिर | अल्लाह का रास्ता | में | अपने माल | ख़र्च करते हैं |

مَنًّا وَّلَآ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | कोई ख़ौफ़ | और न | उन का रब | पास | उन का अजर | उन के लिए | कोई तक्लीफ़ | और न | कोई एहसान |

وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٦٢﴾ قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़ैरात | से | बेहतर | और दरगुज़र | अच्छी | बात | 262 | ग़मगीन होंगे | वह | और न |

يَّتْبَعُهَآ اَذًى ؕ وَاللّٰهُ غَنِىٌّ حَلِيْمٌ ﴿٢٦٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान वालो | ऐ | 263 | बुर्दबार | बेनियाज़ | और अल्लाह | ईज़ा देना (सताना) | उस के बाद हो |

لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ۙ كَالَّذِىْ يُنْفِقُ مَالَهٗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना माल | ख़र्च करता | उस शख़्स की तरह जो | और सताना | एहसान जतला कर | अपने ख़ैरात | न ज़ाया करो |

رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जैसी मिसाल | पस उस की मिसाल | और आख़िरत का दिन | अल्लाह पर | और ईमान नहीं रखता | लोग | दिखलावा |

صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह कुदरत नहीं रखते | साफ़ | तो उसे छोड़ दे | तेज़ बारिश | फिर उस पर बरसे | मिट्टी | उस पर | चिकना पत्थर |

عَلٰى شَىْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٦٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 264 | काफ़िरों की क़ौम | राह नहीं दिखाता | और अल्लाह | उन्हों ने कमाया | उस से जो | कोई चीज़ | पर |

और जब इब्राहीम (अ) ने कहा मेरे रब! मुझे दिखा दे तू क्योंकर मुर्दा को ज़िन्दा करता है, अल्लाह ने कहा क्या तू ने यक़ीन नहीं किया? उस ने कहा क्यों नहीं? बल्कि (चाहता हूँ) ताकि मेरे दिल को इत्मिनान हो जाए, उस ने कहा पस तू चार परिन्दे पकड़ ले, फिर उन को अपने साथ हिला ले, फिर रख दे हर पहाड़ पर उन के टुकड़े, फिर उन्हें बुला वह तेरे पास दौड़ते हुए आएंगे, और जान ले कि अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (260)

उन लोगों की मिसाल जो ख़र्च करते हैं अपने माल अल्लाह के रास्ते में, एक दाने के मानिंद है जिस से सात बालें उगें, हर बाल में सौ दाने हों, और अल्लाह जिस के लिए चाहता है बढ़ाता है, और अल्लाह वुसअत वाला जानने वाला है। (261)

जो लोग अपने माल अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करते हैं, फिर नहीं रखते ख़र्च करने के बाद कोई एहसान, न कोई तक्लीफ़ (पहुँचाते हैं) उन के लिए उन के रब के पास अजर है, न कोई ख़ौफ़ उन पर, और न वह ग़मगीन होंगे। (262)

अच्छी बात करना और दरगुजर करना बेहतर है उस ख़ैरात से जिस के बाद ईज़ा देना हो, और अल्लाह बेनियाज बुर्दबार है (263)

ऐ ईमान वालो! अपने ख़ैरात एहसान जतला कर और सता कर जाया न करो, उस शख़्स की तरह जो अपना माल लोगों के दिखलावे को ख़र्च करता है, और अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान नहीं रखता, पस उस की मिसाल उस साफ़ पत्थर जैसी है जिस पर मिट्टी हो, फिर उस पर तेज़ बारिश बरसे तो उसे छोड़ दे बिलकुल साफ़, वह उस पर कुछ कुदरत नहीं रखते जो उन्हों ने कमाया, और अल्लाह राह नहीं दिखाता काफ़िरों को। (264)

और (उन की) मिसाल जो अपने माल ख़र्च करते हैं ख़ुशनूदी हासिल करने अल्लाह की, और अपने दिलों के पूरे सबात ओ क़रार के साथ, (ऐसी है) जैसे बुलन्दी पर एक बाग़ है, उस पर तेज़ बारिश पड़ी तो उस ने दुगना फल दिया, फिर अगर तेज़ बारिश न पड़ी तो फूवार (ही काफी है), और अल्लाह जो तुम करते हो देखने वाला है। (265)

क्या तुम में से कोई पसन्द करता है? कि उस का एक बाग़ हो खजूर और अंगूरों का, उस के नीचे नहरें बहती हों, उस के लिए उस में हर क़िस्म के फल हों, और उस पर बुढ़ापा आ गया हो, और उस के बच्चे बहुत कमजोर हों, तब उस पर एक बगोला आ पड़ा, उस में आग थी तो वह (बाग़) जल गया, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए निशानियां वाजेह करता है ताकि तुम ग़ौर ओ फ़िक्र करो। (266)

ऐ ईमान वालो! ख़र्च करो। उस में से पाकीज़ा चीजें जो तुम कमाओ, और उस में से जो हम ने निकाला तुम्हारे लिए ज़मीन से, और उस में से गन्दी चीज ख़र्च करने का इरादा न करो, जबकि तुम खुद उस को लेने वाले नहीं, मगर यह कि तुम चश्म पोशी कर जाओ, और जान लो कि अल्लाह बेनियाज, ख़ूबियों वाला है। (267)

शैतान तुम को तंगदस्ती से डराता है, और तुम्हें बेहयाई का हुक्म देता है, और अल्लाह तुम से अपनी बख़शिश और फज़्ल का वादा करता है, और अल्लाह वुसअ़त वाला जानने वाला है। (268)

वह जिसे चाहता है हिक्मत (दानाई) अ़ता करता है, और जिसे हिक्मत दी गई तहक़ीक़ उसे दी गई बहुत भलाई, और अक़्ल वालों के सिवा कोई नसीहत क़ुबूल नहीं करता (269)

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | ख़ुशनूदी | हासिल करना | अपने माल | ख़र्च करते हैं | जो लोग | और मिसाल |

وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۢ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तेज़ बारिश | उस पर पड़ी | बुलन्दी पर | एक बाग़ | जैसे | अपने दिल (जमा) | से | और सबात ओ यक़ीन |

فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّؕ وَاللّٰهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अल्लाह | तो फूवार | तेज़ बारिश | न पड़ी | फिर अगर | दुगना | फल | तो उस ने दिया |

بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٦٥﴾ اَيَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ جَنَّةٌ مِّنْ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से (का) | एक बाग़ | उस का | हो | कि | तुम में से कोई | क्या पसन्द करता है | 265 | देखने वाला | तुम करते हो | जो |

نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُۙ لَهٗ فِيْهَا مِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | उस में | उस के लिए | नहरें | उस के नीचे | से | बहती हो | और अंगूर | खजूर |

كُلِّ الثَّمَرٰتِۙ وَاَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهٗ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَآءُۖۚ فَاَصَابَهَآ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तब उस पर पड़ा | बहुत कमज़ोर | बच्चे | और उस के | बुढ़ापा | और उस पर आ गया | हर क़िस्म के फल |

اِعْصَارٌ فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| निशानियां | तुम्हारे लिए | अल्लाह | वाज़ेह करता है | इसी तरह | तो वह जल गया | आग | उस में | एक बगोला |

لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٦٦﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِنْ ع ٣٦ ٤

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| से | तुम ख़र्च करो | जो ईमान लाए (ईमान वालो) | ऐ | 266 | ग़ौर ओ फ़िक्र करो | ताकि तुम |

طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّآ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन | से | तुम्हारे लिए | हम ने निकाला | और से-जो | तुम कमाओ | जो | पाकीज़ा |

وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَلَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस को लेने वाले | जबकि तुम नही हो | तुम ख़र्च करते हो | से-जो | गन्दी चीज़ | इरादा करो | और न |

اِلَّآ اَنْ تُغْمِضُوْا فِيْهِؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَنِىٌّ حَمِيْدٌ ﴿٢٦٧﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 267 | ख़ूबियों वाला | बेनियाज | अल्लाह | कि | और तुम जान लो | उस में | चश्म पोशी करो | यह कि | मगर |

اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِۚ وَاللّٰهُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और अल्लाह | बेहयाई का | और तुम्हें हुक्म देता है | तंगदस्ती | तुम को डराता है | शैतान |

يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًاؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٦٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 268 | जानने वाला | वुसअ़त वाला | और अल्लाह | और फज़्ल | उस से (अपनी) | बख़शिश | तुम से वादा करता है |

يُؤْتِى الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُۚ وَمَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हिक्मत | दी गई | और जिसे | वह चाहता है | जिसे | हिक्मत, दानाई | वह अ़ता करता है |

فَقَدْ اُوْتِىَ خَيْرًا كَثِيْرًاؕ وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٢٦٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 269 | अक़्ल वाले | सिवाए | नसीहत कुबूल करता | और नही | बहुत | भलाई | तहक़ीक़ दी गई |

وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ اَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई नज़र | तुम नज़र मानो | या | कोई ख़ैरात | से | तुम ख़र्च करोगे | और जो |

فَاِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُهٗ ۭ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ٢٧٠

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 270 | कोई मददगार | ज़ालिमों के लिए | और नहीं | उसे जानता है | अल्लाह | तो बेशक |

اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَاِنْ تُخْفُوْهَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस को छुपाओ तुम | और अगर | यह | तो अच्छी बात | ख़ैरात | ज़ाहिर (अ़लानिया) दो | अगर |

وَتُؤْتُوْهَا الْفُقَرَاۗءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۭ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम से | और दूर कर देगा | तुम्हारे लिए | बेहतर | तो वह | तंगदस्त (जमा) | और वह पहुँचाओ |

مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ٢٧١ لَيْسَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं | 271 | बाख़बर | जो कुछ तुम करते हो | और अल्लाह | तुम्हारी बुराइयाँ | से, कुछ |

عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | वह चाहता है | जिसे | हिदायत देता है | अल्लाह | और लेकिन | उन की हिदायत | आप पर (आप का ज़िम्मा) |

تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ۭ وَمَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَاۗءَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हासिल करना | मगर | ख़र्च करो | और न | तो अपने वास्ते | माल से | तुम ख़र्च करोगे |

وَجْهِ اللّٰهِ ۭ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हें | पूरा मिलेगा | माल से | तुम ख़र्च करोगे | और जो | अल्लाह की रज़ा |

وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ٢٧٢ لِلْفُقَرَاۗءِ الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रुके हुए | जो | तंगदस्तों के लिए | 272 | न ज़ियादती की जाएगी तुम पर | और तुम |

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا فِي الْاَرْضِ ۡ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ज़मीन (मुल्क) में | चलना फिरना | नहीं ताक़त रखते | अल्लाह का रास्ता | में |

يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِيَاۗءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ۚ تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۚ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन के चहरे से | तू पहचानता है उन्हें | सवाल से बचने से | मालदार | नावाक़िफ़ | उन्हें समझे |

لَا يَسْــَٔـلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا ۭ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| माल से | तुम ख़र्च करोगे | और जो | लिपट कर | लोग | वह सवाल नहीं करते |

ع ٣٨ الربع ٥ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ٢٧٣ اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने माल | ख़र्च करते हैं | जो लोग | 273 | जानने वाला | उस को | अल्लाह | तो बेशक |

بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन का अजर | पस उन के लिए है | और ज़ाहिर | पोशीदा | और दिन | रात में |

وقف منزل عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ٢٧٤

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 274 | ग़मगीन होंगे | वह | और न | उन पर | कोई ख़ौफ़ | और न | उन का रब | पास |

और जो तुम ख़र्च करोगे कोई ख़ैरात या तुम कोई नज़र मानोगे, तो बेशक अल्लाह उसे जानता है और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं। (270)

अगर तुम ख़ैरात ज़ाहिर (अ़लानिया) दो तो यह अच्छी बात है, और अगर तुम उस को छुपाओ, और तंगदस्तों को पहुँचाओ तो वह तुम्हारे लिए (जियादा) बेहतर है, और वह दूर करेगा तुम्हारी कुछ बुराइयाँ, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (271)

उन की हिदायत आप का ज़िम्मा नहीं, लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है, और तुम जो माल खर्च करोगे तो अपने (ही) वासते, और खर्च न करो मगर अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए, और तुम जो माल ख़र्च करोगे तुम्हें पूरा पूरा मिलेगा, और तुम पर ज़ियादती न की जाएगी। (272)

तंगदस्तों के लिए जो रुके हुए हैं अल्लाह की राह में, वह मुल्क में चलने फिरने की ताक़त नहीं रखते, उन्हें समझे नावाक़िफ़ उन के सवाल न करने की वजह से मालदार, तुम उन्हें उन के चहरे से पहचान सकते हो, वह सवाल नहीं करते लोगों से लिपट लिपट कर, और तुम जो माल ख़र्च करोगे तो बेशक अल्लाह उस को जानने वाला है। (273)

जो लोग अपने माल ख़र्च करते हैं रात में और दिन को, पोशीदा और ज़ाहिर, पस उन के लिए है उन का अजर, उन के रब के पास, न उन पर कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे। (274)

जो लोग सूद खाते हैं वह न खड़े होंगे मगर जैसे वह शख़्स खड़ा होता है जिस को पागल बना दिया हो शैतान ने छू कर, यह इस लिए कि उन्हों ने कहा तिजारत दर हक़ीक़त सूद के मानिंद है। हालांकि अल्लाह ने तिजारत को हलाल किया, और सूद को हराम किया, पस जिस को नसीहत पहुँची उस के रब की तरफ़ से फिर वह बाज़ आ गया तो उस के लिए है जो हो चुका, और उस का मुआमला अल्लाह के सुपुर्द है और जो फिर (सूद की तरफ़) लौटे तो वही दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (275)

अल्लाह सूद को मिटाता है और ख़ैरात को बढ़ाता है, और अल्लाह हर एक (किसी) नाशुक्रे गुनाहगार को पसन्द नहीं करता। (276)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अमल किए, और नमाज़ क़ाइम की और ज़कात अदा की, उन के लिए उन का अजर है उन के रब के पास, और न उन पर कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे। (277)

ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह से डरो, और जो सूद बाक़ी रह गया वह छोड़ दो। अगर तुम ईमान वाले हो। (278)

फिर अगर तुम न छोड़ोगे तो अल्लाह और उस के रसूल से जंग के लिए ख़बरदार हो जाओ, और अगर तुम ने तौबा कर ली तो तुम्हारा असल ज़र तुम्हारे लिए है, न तुम ज़ुल्म करो न तुम पर ज़ुल्म किया जाएगा। (279)

और अगर वह तंगदस्त हो तो कुशादगी होने तक मोहलत दे दो, और अगर (क़र्ज़) बख़्श दो तो तुम्हारे लिए ज़ियादा बेहतर है अगर तुम जानते हो। (280)

और उस दिन से डरो (जस दिन) तुम अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाओगे, फिर हर शख़्स को पूरा पूरा दिया जाएगा जो उस ने कमाया और उन पर ज़ुल्म न होगा। (281)

اَلَّـذِيْـنَ يَـاْكُـلُـوْنَ الـرِّبٰـوا لَا يَـقُـوْمُـوْنَ اِلَّا كَمَا يَـقُـوْمُ الَّـذِىْ

जो लोग | खाते हैं | सूद | न खड़े होंगे | मगर | जैसे | खड़ा होता है | वह शख़्स जो

يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْٓا اِنَّمَا الْبَيْعُ

उस को पागल बना दिया | शैतान | छूने से | यह | इस लिए कि वह | उन्हों ने कहा | दर हक़ीक़त | तिजारत

وقف لازم

مِثْلُ الـرِّبٰـوا ۘ وَاَحَـلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَـرَّمَ الـرِّبٰـوا ؕ فَمَنْ جَآءَهٗ

मानिंद | सूद | हालांकि हलाल किया | अल्लाह | तिजारत | और हराम किया | सूद | पस जिस | पहुँचे उस को

مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَ ؕ وَاَمْـرُهٗٓ اِلَـى اللّٰهِ ؕ

नसीहत | से | उस का रब | फिर वह बाज़ आ गया | तो उस के लिए | जो हो चुका | और उस का मुआमला | तरफ़ | अल्लाह

وَمَـنْ عَـادَ فَـاُولٰٓـئِكَ اَصْحٰبُ الـنَّـارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٧٥﴾

और जो | फिर करे | तो वही | दोज़ख़ वाले | वह | उस में | हमेशा रहेंगे | 275

يَـمْـحَـقُ اللّٰهُ الـرِّبٰـوا وَيُـرْبِـى الـصَّـدَقٰـتِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ

मिटाता है | अल्लाह | सूद | और बढ़ाता है | ख़ैरात | और अल्लाह | पसन्द नहीं करता

كُـلَّ كَـفَّـارٍ اَثِـيْـمٍ ﴿٢٧٦﴾ اِنَّ الَّـذِيْـنَ اٰمَـنُـوْا وَعَـمِـلُـوا الصّٰلِحٰتِ

हर एक नाशुक्रा | गुनाहगार | 276 | बेशक | जो लोग ईमान लाए | और उन्हों ने अमल किए | नेक

وَاَقَـامُـوا الـصَّـلٰـوةَ وَاٰتَـوُا الـزَّكٰـوةَ لَـهُـمْ اَجْـرُهُـمْ عِـنْـدَ رَبِّـهِـمْ ۚ

और उन्हों ने क़ाइम की | नमाज़ | और अदा की | ज़कात | उन के लिए | उन का अजर | पास | उन का रब

وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٧٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّـقُوا

और न | कोई ख़ौफ़ | उन पर | और न वह | ग़मगीन होंगे | 277 | ऐ | जो ईमान लाए (ईमान वाले) | तुम डरो

اللّٰهَ وَذَرُوْا مَـا بَـقِـىَ مِـنَ الـرِّبٰٓـوا اِنْ كُـنْـتُـمْ مُّـؤْمِـنِـيْـنَ ﴿٢٧٨﴾

अल्लाह | और छोड़ दो | जो बाक़ी रह गया | से | सूद | अगर | तुम हो | ईमान वाले | 278

فَـاِنْ لَّـمْ تَفْعَلُوْا فَـاْذَنُـوْا بِحَرْبٍ مِّـنَ اللّٰهِ وَرَسُـوْلِهٖ ۚ وَاِنْ تُـبْـتُـمْ

फिर अगर | तुम न छोड़ोगे | तो ख़बरदार हो जाओ | जंग के लिए | से | अल्लाह | और उस का रसूल | और अगर | तुमने तौबा कर ली

فَـلَـكُـمْ رُءُوْسُ اَمْـوَالِـكُـمْ ۚ لَا تَـظْـلِـمُـوْنَ وَلَا تُـظْـلَـمُـوْنَ ﴿٢٧٩﴾

तो तुम्हारे लिए | तुम्हारे अस्ल ज़र | न तुम ज़ुल्म करो | और न तुम पर ज़ुल्म किया जाएगा | 279

وَاِنْ كَـانَ ذُوْ عُـسْـرَةٍ فَـنَـظِـرَةٌ اِلٰـى مَـيْـسَـرَةٍ ؕ وَاَنْ تَـصَـدَّقُـوْا

और अगर | हो | तंगदस्त | मुहलत | तक | कुशादगी | और अगर | तुम बख़्शदो

خَيْرٌ لَّـكُـمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨٠﴾ وَاتَّـقُـوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ

बेहतर | तुम्हारे लिए | अगर | तुम हो | जानते | 280 | और तुम डरो | वह दिन | तुम लौटाए जाओगे | उस में

اِلَى اللّٰهِ ۖ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٨١﴾ ع ٣٨ ٨ ٦

अल्लाह की तरफ़ | फिर | पूरा दिया जाएगा | हर शख़्स | जो | उस ने कमाया | और वह | ज़ुल्म न किये जाएंगे | 281

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुक़र्ररा | एक मुद्दत | तक | उधार का | तुम मुआमला करो | जब | ईमान लाए | वह जो कि | ऐ |

فَاكْتُبُوْهُ ۭ وَلْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌۢ بِالْعَدْلِ ۠ وَلَا يَاْبَ كَاتِبٌ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कातिब | और न इन्कार करे | इन्साफ़ से | कातिब | तुम्हारे दरमियान | और चाहिए कि लिख दे | तो उस लिख लिया करो |

اَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلْيَكْتُبْ ۚ وَلْيُمْلِلِ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस पर हक़ | वह जो | और लिखाता जाए | चाहिए कि लिख दे | अल्लाह | उस को सिखाया | जैसे | कि वह लिखे |

وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَـيْـــًٔا ۭ فَاِنْ كَانَ الَّذِيْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जो | है | फिर अगर | कुछ | उस से | कम करे | और न | अपना रब | अल्लाह | और डरे |

عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيْهًا اَوْ ضَعِيْفًا اَوْ لَا يَسْتَطِيْعُ اَنْ يُّمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो चाहिए कि लिखाए | लिखाए वह | कि | न कर सकता हो | या | कमज़ोर | या | बेअक़्ल | उस पर हक़ |

وَلِيُّهٗ بِالْعَدْلِ ۭ وَاسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ مِنْ رِّجَالِكُمْ ۚ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपने मर्द | से | दो गवाह | और गवाह कर लो | इन्साफ़ से | उस का सरपरस्त |

فَاِنْ لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَّامْرَاَتٰنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम पसन्द करो | से - जो | और दो औरतें | तो एक मर्द | दो मर्द | न हों | फिर अगर |

مِنَ الشُّهَدَاۗءِ اَنْ تَضِلَّ اِحْدٰىهُمَا فَتُذَكِّرَ اِحْدٰىهُمَا الْاُخْرٰى ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दूसरी | उन में से एक | ता याद दिला दे | उन में से एक | भूल जाए | अगर | गवाह (जमा) | से |

وَلَا يَاْبَ الشُّهَدَاۗءُ اِذَا مَا دُعُوْا ۭ وَلَا تَسْـــَٔـمُوْٓا اَنْ تَكْتُبُوْهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम लिखो | की | सुस्ती करो | और न | वह बुलाए जाएं | जब | गवाह | और न इन्कार करें |

صَغِيْرًا اَوْ كَبِيْرًا اِلٰٓى اَجَلِهٖ ۭ ذٰلِكُمْ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ وَاَقْوَمُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और ज़ियादा मज़बूत | अल्लाह के नज़दीक | ज़ियादा इन्साफ़ | यह | एक मीआद | तक | बड़ा | या | छोटा |

لِلشَّهَادَةِ وَاَدْنٰٓى اَلَّا تَرْتَابُوْٓا اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً حَاضِرَةً

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हाज़िर (हाथों हाथ) | सौदा | हो | सिवाए कि | शुबा में पड़ो | कि न | और ज़ियादा क़रीब | गवाही के लिए |

تُدِيْرُوْنَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَلَّا تَكْتُبُوْهَا ۭ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| कि तुम वह न लिखो | तुम पर कोई गुनाह | तो नहीं | आपस में | जिसे तुम लेते रहते हो |

وَاَشْهِدُوْٓا اِذَا تَبَايَعْتُمْ ۠ وَلَا يُضَاۗرَّ كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ ڛ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गवाह | और न | लिखने वाला | और न नुक़सान पहुँचाया जाये | जब तुम सौदा करो | और तुम गवाह कर लो |

وَاِنْ تَفْعَلُوْا فَاِنَّهٗ فُسُوْقٌۢ بِكُمْ ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | और तुम डरो | तुम पर | गुनाह | तो बेशक यह | तुम करोगे | और अगर |

وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۲۸۲

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 282 | जानने वाला | हर चीज़ | और अल्लाह | अल्लाह | और सिखाता है तुम्हें |

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो (मोमिनो!) जब तुम एक मुक़र्ररा मुद्दत तक (के लिए) उधार का मुआमला करो तो उसे लिख लिया करो और चाहिए कि लिख दे लिखने वाला तुम्हारे दरमियान इन्साफ़ से, और कातिब लिखने से इन्कार न करे, जैसे उस को सिखाया है अल्लाह ने, उसे चाहिए कि लिख दे, और जिस पर हक़ (क़र्ज़) है वह लिखाता जाए, और अपने रब अल्लाह से डरे, और न उस से कुछ कम करे, फिर अगर वह जिस पर हक़ (क़र्ज़) है वह बेअक़्ल या कमज़ोर है या न लिखा सकता हो ख़ुद, तो चाहिए कि उस का सरपरस्त इन्साफ़ से लिखा दे और अपने मर्दों में से दो गवाह कर लो, फिर अगर दो मर्द न हों तो एक मर्द और दो औरतें जिन को तुम गवाह पसन्द करो (ताकि) अगर उन में से एक भूल जाए तो उन में से एक (दूसरी) याद दिला दे, और गवाह इन्कार न करें जब बुलाए जाएं और तुम लिखने में सुस्ती न करो (ख़्वाह मुआमला) छोटा हो या बड़ा, एक मिआद तक, यह ज़ियादा इन्साफ़ है और गवाही के लिए ज़ियादा मज़बूत है अल्लाह के नज़दीक, और ज़ियादा क़रीब है कि तुम शुबा में न पड़ो, उस के सिवाए कि सौदा हाथों हाथ का हो जिसे तुम आपस में लेते रहते हो, तो कोई गुनाह नहीं कि तुम वह न लिखो और जब तुम सौदा करो तो गवाह कर लिया करो, और न नुक़सान पहुँचाया जाये कातिब को और न गवाह को, और अगर तुम ऐसा करोगे तो यह बेशक तुम पर गुनाह है, और तुम अल्लाह से डरो, और अल्लाह तुम्हें सिखाता है, और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (282)

और अगर तुम सफ़र पर हो और कोई लिखने वाला न पाओ तो गिरवी रखना चाहिए क़ब्ज़े में, फिर अगर तुम में कोई किसी का एतिबार करे तो जिस शख़्स को अमीन बनाया गया है उसे चाहिए कि लौटा दे उस की अमानत, और अपने रब अल्लाह से डरे, और तुम गवाही न छुपाओ, और जो शख़्स उसे छुपाएगा तो बेशक उस का दिल गुनहगार है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे जानने वाला है। (283)

अल्लाह के लिए है जो आस्मानों और ज़मीन में है, और अगर तुम ज़ाहिर करो जो तुम्हारे दिलों में है या तुम उसे छुपाओ, अल्लाह तुम से उस का हिसाब लेगा, फिर जिस को वह चाहे बख़्श दे और जिसको वह चाहे अज़ाब दे, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। (284)

रसूल ने मान लिया जो कुछ उस की तरफ़ उतरा उस के रब की तरफ़ से और मोमिनो ने (भी), सब ईमान लाए अल्लाह पर, और उस के फ़रिश्तों पर, और उस की किताबों पर, और उस के रसूलों पर, हम उस के रसूलों में से किसी एक के दरमियान फ़र्क़ नहीं करते, और उन्हों ने कहा हम ने सुना और हम ने इताअ़त की, तेरी बख़्शिश चाहिए ऐ हमारे रब! और तेरी तरफ़ लौट कर जाना है। (285)

अल्लाह किसी को तक्लीफ़ नहीं देता मगर उस की गुनजाइश (के मुताबिक़) उस के लिए (अजर) है जो उस ने कमाया, और उस पर (अ़ज़ाब) है जो उस ने कमाया, ऐ हमारे रब! हमें न पकड़ अगर हम भूल जाएं या हम चूकें,
ऐ हमारे रब! हम पर बोझ न डाल जैसे तू ने डाला हम से पहले लोगों पर, ऐ हमारे रब! हम से न उठवा जिस की हम को ताक़त नहीं, और दरगुजर फ़रमा हम से, और हमें बख़्श दे, और हम पर रह्म कर, तू हमारा आक़ा है, पस हमारी मदद कर काफ़िरों की क़ौम पर। (286)

وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ وَّلَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अगर | तुम हो | पर | सफ़र | और न | तुम पाओ | कोई लिखने वाला | तो गिरवी रखना | क़ब्ज़े में |

فَاِنْ اَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِى اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर अगर | एतिबार करे | तुम्हारा कोई | किसी का | तो चाहिए कि लौटा दे | जो शख़्स | अमीन बनाया गया | उस की अमानत | और डरे | अल्लाह |

رَبَّهٗ ؕ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ؕ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗۤ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना रब | और तुम न छुपाओ | गवाही | और जो | उसे छुपाएगा | तो बेशक | गुनहगार | उस का दिल |

ع ٣٩ ٧ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٢٨٣﴾ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अल्लाह | उसे जो | तुम करते हो | जानने वाला | 283 | अल्लाह के लिए | जो | में | आस्मानों | और जो | ज़मीन में |

وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِىْۤ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अगर | तुम ज़ाहिर करो | जो | में | तुम्हारे दिल | या | तुम उसे छुपाओ | तुम्हारे हिसाब लेगा | उस का | अल्लाह |

فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर बख़्श देगा | जिस को | वह चाहे | वह अ़ज़ाब देगा | जिस को | वह चाहे | और अल्लाह | पर |

كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٨٤﴾ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हर चीज़ | क़ुदरत रखने वाला | 284 | मान लिया | रसूल | जो कुछ | उतरा | उस की तरफ़ | से | उस का रब |

وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۟

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और मोमिन (जमा) | सब | ईमान लाए | अल्लाह पर | और उस के फ़रिश्ते | और उस की किताबें | और उस के रसूल |

لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۟ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं हम फ़र्क़ करते | दरमियान | किसी एक | उस के रसूल के | और उन्हों ने कहा | हम ने सुना | और हम ने इताअ़त की |

غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨٥﴾ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तेरी बख़शिश | हमारे रब | और तेरी तरफ़ | लौट कर जाना | 285 | नहीं तक्लीफ़ देता | अल्लाह | किसी को | मगर |

وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की गुनजाइश | उस के लिए | जो | उस ने कमाया | और उस पर | जो उस ने कमाया | ऐ हमारे रब |

لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो न पकड़ हमें | अगर | हम भूल जाएं | या | हम चूकें | ऐ हमारे रब | और न | डाल | हम पर |

اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बोझ | जैसे | तू ने डाला | पर | जो लोग | हम से पहले | ऐ हमारे रब | और न | हम से उठवा |

مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۗ وَاغْفِرْ لَنَا ۗ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जो | न ताक़त | हम को | उस की | और दरगुज़र कर तू हम से | और बख़्श दे हमें |

ع ٤٠ ٨ وَارْحَمْنَا ۗ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٨٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम पर रह्म कर | तू | हमारा आक़ा | पस मदद कर हमारी | पर | क़ौम | काफ़िर (जमा) | 286 |

آيَاتُهَا ٢٠٠ (٣) سُوْرَةُ اٰلِ عِمْرَانَ رُكُوعَاتُهَا ٢٠

आयात 200 (3) सूरह आले इमरान रुकुआत 20

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम से | अल्लाह | बहुत मेहरबान | रहम करने वाला |

الٓمّٓ ① اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ② نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अलिफ़-लाम-मीम | 1 | अल्लाह | नहीं | माबूद | उस के सिवा | हमेशा ज़िन्दा | संभालने वाला | 2 | उस ने उतारी | आप पर | किताब |

بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ③

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हक़ के साथ | तस्दीक़ करती | उस के लिए जो | उस से पहली | और उस ने उतारी | तौरेत | और इन्जील | 3 |

مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ۗ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से पहले | हिदायत | लोगों के लिए | और उतारा | फ़ुरक़ान | बेशक | जिन्हों ने | इन्कार किया |

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ④

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आयतों से | अल्लाह | उन के लिए | अज़ाब | सख्त | और अल्लाह | ज़बरदस्त | बदला | लेने वाला | 4 |

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَخْفٰى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ⑤

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | अल्लाह | नहीं छुपी हुई | उस पर | कोई चीज़ | जमीन में | और न | आस्मान में | 5 |

هُوَ الَّذِىْ يُصَوِّرُكُمْ فِى الْاَرْحَامِ كَيْفَ يَشَآءُ ۗ لَآ اِلٰهَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वही है | जो कि | सूरत बनाता है तुम्हारी | में | रहम (जमा) | जैसे | वह चाहे | नहीं माबूद |

اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ⑥ هُوَ الَّذِىْٓ اَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के सिवा | ज़बरदस्त | हिक्मत वाला | 6 | वही | जिस | नाज़िल की | आप पर | किताब | उस से (में) |

اٰيٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ الْكِتٰبِ وَاُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ ۗ فَاَمَّا الَّذِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आयतें | मुहक्कम (पुख़्ता) | वह | किताब की अस्ल | और दूसरी | मुताशाबेह | पस जो | जो लोग |

فِىْ قُلُوْبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَآءَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| में | उन के दिल | कजी | सो वह पैरवी करते हैं | मुताशाबेहात | उस से | चाहना (ग़र्ज़) |

الْفِتْنَةِ وَابْتِغَآءَ تَاْوِيْلِهٖ ۚ وَمَا يَعْلَمُ تَاْوِيْلَهٗٓ اِلَّا اللّٰهُ ۘ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़साद - गुमराही | ढूंडना | उस का मतलब | और नही | जानता है | उस का मतलब | सिवाए | अल्लाह |

وقف النبی ﷺ وقف لازم وقف منزل

وَالرّٰسِخُوْنَ فِى الْعِلْمِ يَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ ۙ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और मज़बूत | इल्म में | कहते हैं | हम ईमान लाए | उस पर | सब | से - पास (तरफ़) | हमारा रब |

وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ ⑦ رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और नही | समझते | मगर | अक़्ल वाले | 7 | ऐ हमारे रब | न | फेर | हमारे दिल | बाद |

اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ⑧

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब | तू ने हमें हिदायत दी | और इनायत फ़र्मा | हमें | से | अपने पास | रहमत | बेशक तू | तू | सब से बड़ा देने वाला | 8 |

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-मीम (1)

अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, हमेशा ज़िन्दा, (सब का) संभालने वाला। (2)

उस ने आप (स) पर किताब उतारी हक़ के साथ जो उस से पहली (किताबों की) तस्दीक़ करती है, और उस ने तौरेत और इन्जील उतारी, (3)

उस से पहले लोगों की हिदायत के लिए, और उस ने फ़ुरक़ान (हक़ को बातिल से जुदा करने वाला) उतारा, बेशक जिन्हों ने अल्लाह की आयतों से इन्कार किया, उन के लिए सख्त अज़ाब है, और अल्लाह ज़बरदस्त है, बदला लेने वाला। (4)

बेशक अल्लाह पर छुपी हुई नहीं कोई चीज़, ज़मीन में और न आस्मान में, (5)

वही तो है जो तुम्हारी सूरत बनाता है (माँ के) रह्म में जैसे वह चाहे, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, जबरदस्त हिक्मत वाला (6)

वही तो है जिस ने आप (स) पर किताब नाजिल की, उस में मुहक्कम (पुख़्ता) आयतें हैं वह किताब की अस्ल है, और दूसरी मुताशाबेह (कई मानी देने वाली), पस जिन लोगों के दिलों में कजी है सो वह उस से मुताशाबेहात की पैरवी करते हैं, फ़साद (गुमराही) की ग़र्ज से और उस का (ग़लत) मतलब ढून्डने की गर्ज से, और उस का मतलब अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता, और मज़बूत (पुख़्ता) इल्म वाले कहते हैं हम उस पर ईमान लाए सब हमारे रब की तरफ़ से है। और नहीं समझते मगर अक़्ल वाले (सिर्फ़ अक़्ल वाले समझते हैं) (7)

ऐ हमारे रब। हमारे दिल न फेर इस के बाद जब कि तू ने हमें हिदायत दी, और हमें इनायत फ़र्मा अपने पास से रह्मत, बेशक तू सब से बड़ा देने वाला है। (8)

ऐ हमारे रब! बेशक तू लोगों को उस दिन जमा करने वाला है कोई शक नहीं उस में, बेशक अल्लाह वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता। (9)

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया, हरगिज़ न उन के माल उन के काम आएंगे, और न उन की औलाद, अल्लाह के सामने कुछ भी, और वही वह दोज़ख़ का ईंधन हैं। (10)

जैसे फ़िरऔन वालों का मामला हुआ, और वह जो उन से पहले थे, उन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया तो अल्लाह ने उन्हें उन के गुनाहों पर पकड़ा, और अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है। (11)

जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन्हें कह दें तुम अनक़रीब मग़लूब होगे और जहन्नम की तरफ़ हांके जाओगे, और वह बुरा ठिकाना है। (12)

अलबत्ता तुम्हारे लिए उन दो गिरोहों में निशानी है जो बाहम मुक़ाबिल हुए, एक गिरोह लड़ता था अल्लाह की राह में, और दूसरा काफ़िर था, वह उन्हें खुली आँखों से अपने से दो चन्द दिखाई देते थे, और अल्लाह अपनी मदद से जिसे चाहता है ताईद करता है, बेशक उस में देखने वालों (अक़्लमन्दों) के लिए एक इब्रत है। (13)

लोगों के लिए मरग़ूब चीज़ों की मुहब्बत ख़ुशनुमा कर दी गई, मसलन औरतें और बेटे, और ढेर जमा किए हुए सोने और चाँदी के, और निशान ज़दा घोड़े, और मवेशी, और खेती, यह दुन्या की ज़िन्दगी का साज़ ओ सामान है, और अल्लाह के पास अच्छा ठिकाना है। (14)

कह दें, क्या मैं तुम्हें इस से बेहतर बताऊँ? उन लोगों के लिए जो परहेज़गार हैं, उन के रब के पास बाग़ात हैं, जिन के नीचे नहरें जारी (रवां) हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, और पाक बीबियां और अल्लाह की ख़ुशनूदी, और अल्लाह बन्दों को देखने वाला है। (15)

رَبَّنَآ اِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ हमारे रब | बेशक तू | जमा करने वाला | लोगों | उस दिन | नही शक | उस में | बेशक | अल्लाह | नही ख़िलाफ़ करता |

الْمِيْعَادَ ۝٩ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِىَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ ع

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वादा | 9 | बेशक | वह लोग जो | उन्हों ने कुफ़्र किया | हरगिज़ न | काम आएंगे | उन के | उन के माल |

وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـــًٔا ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمْ وَقُوْدُ النَّارِ ۝١٠

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न | उन की औलाद | से | अल्लाह | कुछ | और वही | वह | ईंधन | आग (दोज़ख़) | 10 |

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاَخَذَهُمُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जैसे - मामला | फ़िरऔन वाले | और वह जो कि | से - उन से पहले | उन्हों ने झुटलाया | हमारी आयतें | सो उन्हें पकड़ा |

اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ۭ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝١١ قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | उन के गुनाहों पर | और अल्लाह | सख़्त | अज़ाब | 11 | कह दें | वह जो कि | उन्हों ने कुफ़्र किया |

سَتُغْلَبُوْنَ وَتُحْشَرُوْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ ۭ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝١٢ قَدْ كَانَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अनक़रीब तुम मग़लूब होगे | और तुम हांके जाओगे | तरफ़ | जहन्नम | और बुरा | ठिकाना | 12 | अलबत्ता | है |

لَكُمْ اٰيَةٌ فِيْ فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ۭ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاُخْرٰى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे लिए | एक निशानी | में | दो गिरोह | वह बाहम मुक़ाबिल हुए | एक गिरोह | लड़ता था | में | अल्लाह की राह | और दूसरा |

كَافِرَةٌ يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَاْيَ الْعَيْنِ ۭ وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| काफ़िर | वह उन्हें दिखाई देते | उन के दो चन्द | खुली आँखें | और अल्लाह | ताईद करता है | अपनी मदद |

مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ۝١٣

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिसे | वह चाहता है | बेशक | में | उस | एक इब्रत | देखने वालों के लिए | 13 |

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَاۗءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़ुशनुमा कर दी गई | लोगों के लिए | मुहब्बत | मरग़ूब चीज़ें | से (मसलन) | औरतें | और बेटे | और ढेर |

الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जमा किए हुए | से | सोना | और चाँदी | और घोड़े | निशान ज़दा | और मवेशी |

وَالْحَرْثِ ۭ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और खेती | यह | साज़ ओ सामान | ज़िन्दगी | दुन्या | और अल्लाह | उस के पास |

حُسْنُ الْمَاٰبِ ۝١٤ قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ۭ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अच्छा | ठिकाना | 14 | कह दें | क्या मैं तुम्हें बताऊँ | बेहतर | से | उस | उन लोगों के लिए जो | परहेज़गार है |

عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَاَزْوَاجٌ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पास | उन का रब | बाग़ात | जारी है | से | उन के नीचे | नहरें | हमेशा रहेंगे | उस में | और बीबियां |

مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ۝١٥

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पाक | और ख़ुशनूदी | से | अल्लाह | और अल्लाह | देखने वाला | बन्दों को | 15 |

الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا إِنَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَقِنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हमें बचा | हमारे गुनाह | सो बख़्शदे हमें | ईमान लाए | बेशक हम | ऐ हमारे रब | कहते हैं | जो लोग |

عَذَابَ النَّارِ ﴿١٦﴾ الصَّابِرِينَ وَالصَّادِقِينَ وَالْقَانِتِينَ وَالْمُنْفِقِينَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और ख़र्च करने वाले | और हुक्म बजा लाने वाले | और सच्चे | सब्र करने वाले | 16 | दोज़ख़ | अज़ाब |

وَالْمُسْتَغْفِرِينَ بِالْأَسْحَارِ ﴿١٧﴾ شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं माबूद | कि वह | अल्लाह | गवाही दी | 17 | पिछली रात में | और बख़्शिश मांगने वाले |

إِلَّا هُوَ وَالْمَلَائِكَةُ وَأُولُو الْعِلْمِ قَائِمًا بِالْقِسْطِ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| इन्साफ़ के साथ | क़ाइम (हाकिम) | और इल्म वाले | और फ़रिश्ते | सिवाए - उस |

لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٨﴾ إِنَّ الدِّينَ النصف

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दीन | बेशक | 18 | हिक्मत वाला | ज़बरदस्त | सिवाए उस | नहीं माबूद |

عِنْدَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ ۗ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर | किताब दी गई | वह जिन्हें | इख़्तिलाफ़ किया | और नहीं | इस्लाम | अल्लाह के नज़दीक |

مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۗ وَمَنْ يَكْفُرْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| इन्कार करे | और जो | आपस में | ज़िद | इल्म | जब आ गया उन के पास | बाद से |

بِآيَاتِ اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿١٩﴾ فَإِنْ حَاجُّوكَ فَقُلْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो कह दें | वह आप से झगड़ें | फिर अगर | 19 | हिसाब | जल्द | अल्लाह | तो बेशक | अल्लाह | हुक्म (जमा) |

أَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلَّهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ۗ وَقُلْ لِلَّذِينَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जो कि | और कह दें | मेरी पैरवी की | और जो - जिस | अल्लाह के लिए | अपना मुँह | मैं ने झुका दिया |

أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْأُمِّيِّينَ أَأَسْلَمْتُمْ ۚ فَإِنْ أَسْلَمُوا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۖ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तो उन्हों ने राह पा ली | वह इस्लाम लाए | पस अगर | क्या तुम इस्लाम लाए | और अनपढ़ | किताब दिए गए (अहले किताब) |

ع ۲ ۱۰ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاغُ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | बन्दों को | देखने वाला | और अल्लाह | पहुँचा देना | आप पर | तो सिर्फ़ | वह मुँह फेरें | अगर और |

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नबियों को | और क़त्ल करते हैं | अल्लाह | आयतों का | इन्कार करते हैं | वह जो | बेशक |

بِغَيْرِ حَقٍّ وَيَقْتُلُونَ الَّذِينَ يَأْمُرُونَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| लोगों से | इन्साफ़ का | हुक्म करते हैं | जो लोग | और क़त्ल करते हैं | नाहक़ |

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢١﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَبِطَتْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़ाया हो गए | वह जो कि | यही | 21 | दर्दनाक | अज़ाब | सो उन्हें ख़ुशख़बरी |

أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ﴿٢٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 22 | मददगार | कोई | उन का | और नहीं | और आख़िरत | दुनिया में | उन के अमल |

जो लोग कहते हैं ऐ हमारे रब! बेशक हम ईमान लाए, सो हमें हमारे गुनाह बख़्शदे, और हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा। (16)

सब्र करने वाले सच्चे, हुक्म बजा लाने वाले, ख़र्च करने वाले और बख़्शिश मांगने वाले पिछली रात में। (17)

अल्लाह ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई माबूद नहीं, और फ़रिश्तों और इल्म वालों ने (भी), (वही) हाकिम है इन्साफ़ के साथ, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, ज़बरदस्त हिक्मत वाला है। (18)

बेशक दीन अल्लाह के नज़दीक इस्लाम है, और जिन्हें किताब दी गई (अहले किताब) ने इख़्तिलाफ़ नहीं किया, मगर उस के बाद जब कि उन के पास आ गया इल्म, आपस की ज़िद से, और जो अल्लाह की आयात (हुक्मों) का इन्कार करे तो बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (19)

फिर अगर वह आप (स) से झगड़ें तो कह दें मैं ने अपना मुँह अल्लाह के लिए झुका दिया और जिस ने मेरी पैरवी की, और आप (स) अहले किताब और अनपढ़ों से कह दें क्या तुम इस्लाम लाए? पस अगर वह इस्लाम ले आए तो उन्हों ने राह पा ली, और अगर वह मुँह फेर लें तो आप पर सिर्फ़ पहुँचा देना है, और अल्लाह देखने वाला है (अपने) बन्दों को। (20)

बेशक जो लोग अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं, और नबियों को क़त्ल करते हैं नाहक़, और उन्हें क़त्ल करते हैं जो लोग इन्साफ़ का हुक्म करते हैं, सो उन्हें दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दें। (21)

यही वह लोग हैं जिन के अमल ज़ाया हो गए दुनिया में और आख़िरत में, और उन का कोई मददगार नहीं। (22)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा? जिन्हें दिया गया किताब का एक हिस्सा, वह अल्लाह की किताब की तरफ़ बुलाए जाते हैं ता कि वह उन के दरमियान फ़ैसला करे, फिर उन का एक फ़रीक़ फिर जाता है, और वह मुँह फेरने वाले हैं। (23)

यह इस लिए है कि वह कहते हैं हमें (दोज़ख़) की आग हरगिज़ न छूएगी मगर गिनती के चन्द दिन, और उन्हें उन के दीन (के बारे) में धोके में डाल दिया उस ने जो वह घड़ते थे। (24)

सो क्या (हाल होगा) जब हम उन्हें उस दिन जमा करेंगे जिस में कोई शक नहीं, और हर शख़्स पूरा पूरा पाएगा जो उस ने कमाया, और उन की हक़ तलफ़ी न होगी। (25)

आप कहें ऐ अल्लाह! मालिके मुल्क तू जिसे चाहे मुल्क दे, तू मुल्क छीन ले जिस से तू चाहे, और तू जिसे चाहे इज़्ज़त दे, और जिसे चाहे ज़लील कर दे, तेरे हाथ में तमाम भलाई है, बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है। (26)

तू रात को दिन में दाख़िल करता है, और दाख़िल करता है दिन को रात में, और तू बेजान से जानदार निकालता है, और जानदार से बेजान निकालता है, और जिसे चाहे बेहिसाब रिज़्क़ देता है। (27)

मोमिन न बनाएं मोमिनों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त, और जो ऐसा करे तो उस का अल्लाह से कोई तअल्लुक़ नहीं, सिवाए इस के कि तुम उन से बचाव करो, और अल्लाह तुम्हें डराता है अपनी ज़ात से, और अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाना है। (28)

कह दें जो कुछ तुम्हारे दिलों में है अगर तुम छुपाओ या उसे ज़ाहिर करो अल्लाह उसे जानता है, और वह जानता है जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। (29)

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُدْعَوْنَ اِلٰى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ | बुलाए जाते हैं | किताब | से | एक हिस्सा | दिया गया | वह लोग जो | तरफ़ (को) | क्या नहीं देखा |

كِتٰبِ اللّٰهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٣﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 23 | मुँह फेरने वाले | और वह | उन से | एक फ़रीक़ | फिर जाता है | फिर | उन के दरमियान | ता कि वह फ़ैसला करे | अल्लाह की किताब |

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गिनती के | चन्द दिन | मगर | आग | हमें हरगिज़ न छूएगी | कहते हैं | इस लिए कि वह | यह |

وَّغَرَّهُمْ فِيْ دِيْنِهِمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ فَكَيْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस दिन | उन्हें हम जमा करेंगे | जब | सो क्या | 24 | वह घड़ते थे | जो | उन का दीन | में | और उन्हें धोके में डाल दिया |

لَّا رَيْبَ فِيْهِ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٥﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 25 | हक़ तलफ़ी न होगी | और वह | उस ने कमाया | जो | शख़्स | हर | और पूरा पाएगा | उस में | शक नहीं |

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِى الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुल्क | और छीन ले | तू चाहे | जिसे | मुल्क | तू दे | मुल्क | मालिक | ऐ अल्लाह | आप कहें |

مِمَّنْ تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तमाम भलाई | तेरे हाथ में | तू चाहे | जिसे | और ज़लील कर दे | तू चाहे | जिसे | और इज़्ज़त दे | तू चाहे | जिस से |

اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٦﴾ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | और दाख़िल करता है तू | दिन में | रात | तू दाख़िल करता है | 26 | क़ादिर | चीज़ | हर | पर | बेशक तू |

فِى الَّيْلِ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जानदार | से | बेजान | और तू निकालता है | बेजान | से | जानदार | और तू निकालता है | रात में |

وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾ لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मोमिन (जमा) | न बनाएं | 27 | बेहिसाब | तू चाहे | जिसे | और तू रिज़्क़ देता है |

الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐसा | कर | और जो | मोमिन (जमा) | अलावा (छोड़ कर) | दोस्त (जमा) | काफ़िर (जमा) |

فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِيْ شَيْءٍ اِلَّآ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ تُقٰىةً

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बचाव | उन से | बचाव करो | कि | सिवाए | कोई तअल्लुक़ | अल्लाह | से | तो नहीं |

وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨﴾ قُلْ اِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर तुम | कह दें | 28 | लौट जाना | अल्लाह | और तरफ़ | अपनी ज़ात | अल्लाह | और डराता है तुम्हें |

تُخْفُوْا مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ اَوْ تُبْدُوْهُ يَعْلَمْهُ اللّٰهُ وَيَعْلَمُ مَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | और वह जानता है | अल्लाह | उसे जानता है | तुम ज़ाहिर करो | या | तुम्हारे सीने (दिल) | में | जो | छुपाओ |

فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٩﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 29 | क़ादिर | चीज़ | हर | पर | और अल्लाह | ज़मीन में | और जो | आस्मानों | में |

معانقة ٣ عند المتاخرين ١٢

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۚ وَّمَا عَمِلَتْ مِنْ

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से - कोई | उस ने की | और जो | मौजूद | नेकी | से (कोई) | उस ने की | जो | शख़्स | हर | पाएगा | दिन |

سُوْٓءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهٗٓ اَمَدًاۢ بَعِيْدًا ۭ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | और तुम्हें डराता है | दूर | फ़ासला | और उस के दरमियान | उस के दरमियान | काश कि | आरज़ू करेगा | बुराई |

ع ٣ ١١

نَفْسَهٗ ۭ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٣٠﴾ قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो मेरी पैरवी करो | अल्लाह | मुहब्बत रखते | अगर तुम हो | आप कह दें | 30 | बन्दों पर | शफ़क़त करने वाला | और अल्लाह | अपनी ज़ात |

يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 31 | रहम करने वाला | बख़्शने वाला | और अल्लाह | गुनाह तुम्हारे | और तुम्हें बख़्शदेगा | अल्लाह | तुम से मुहब्बत करेगा |

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٢﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 32 | काफ़िर (जमा) | नहीं दोस्त रखता | अल्लाह | तो बेशक | वह फिर जाएं | फिर अगर | और रसूल | अल्लाह | तुम इताअत करो | आप कह दें |

اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰٓى اٰدَمَ وَنُوْحًا وَّاٰلَ اِبْرٰهِيْمَ وَاٰلَ عِمْرٰنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और इमरान का घराना | और इब्राहीम (अ) का घराना | और नूह (अ) | आदम (अ) | चुन लिया | अल्लाह | बेशक |

عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٣﴾ ذُرِّيَّةًۢ بَعْضُهَا مِنْۢ بَعْضٍ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 34 | जानने वाला | सुनने वाला | और अल्लाह | दूसरे | से | वह एक | औलाद | 33 | सारे जहान | पर |

اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّىْ نَذَرْتُ لَكَ مَا فِيْ بَطْنِيْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरे पेट में | जो | तेरे लिए | मैं ने नज़र किया | बेशक मैं | ऐ मेरे रब | इमरान की बीवी | कहा | जब |

مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّىْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا وَضَعَتْهَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने उस का जन्म दिया | सो जब | 35 | जानने वाला | सुनने वाला | तू | बेशक तू | मुझ से | सो तू क़ुबूल कर ले | आज़ाद किया हुआ |

قَالَتْ رَبِّ اِنِّىْ وَضَعْتُهَآ اُنْثٰى ۭ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ ۭ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने जना | जो | ख़ूब जानता है | और अल्लाह | लड़की | जन्म दी | मैं ने | ऐ मेरे रब | उस ने कहा |

وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى ۚ وَاِنِّىْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَاِنِّىْٓ اُعِيْذُهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पनाह में देती हूँ उस को | और मैं | मरयम | उस का नाम रखा | और मैं | मानिंद लड़की | लड़का | और नहीं |

بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٣٦﴾ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क़ुबूल | उस का रब | तो क़ुबूल किया उस को | 36 | मरदूद | शैतान | से | और उस की औलाद | तेरी |

حَسَنٍ وَّاَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۙ وَّكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ۭ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के पास | दाख़िल होता | जिस वक़्त | ज़करिया (अ) | और सुपुर्द किया उस को | अच्छा | बढ़ाना | और परवान चढ़ाया उस को | अच्छा |

زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَا ۭ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह | तेरे लिए | कहां | ऐ मरयम | उस ने कहा | खाना | उस के पास | पाया | महराब (हुजरा) | ज़करिया (अ) |

قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَاۗءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٧﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 37 | बेहिसाब | चाहे | जिसे | रिज़्क़ देता है | अल्लाह | बेशक | पास अल्लाह | से | यह | उस ने कहा |

जिस दिन हर शख़्स (मौजूद) पाएगा जो उस ने की कोई नेकी, और जो उस ने कोई बुराई की। वह आरज़ू करेगा काश उस के दरमियान और उस (बुराई) के दरमियान दूर का फ़ासला होता, और अल्लाह तुम्हें अपनी ज़ात से डराता है, और अल्लाह शफ़क़त करने वाला है बन्दों पर, (30)

आप कह दें अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तुम से मुहब्बत करेगा, और तुम्हारे गुनाह बख़्शदेगा, और अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (31)

आप कह दें तुम इताअत करो अल्लाह की, और रसूल की, फिर अगर वह फिर जाएं तो बेशक अल्लाह काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता। (32)

बेशक अल्लाह ने चुन लिया आदम (अ) और नूह (अ) को, और इब्राहीम (अ) ओ इमरान के घराने को, सारे जहान पर। (33)

वह औलाद थे एक दूसरे की, और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (34)

जब इमरान की बीवी ने कहा ऐ मेरे रब! जो मेरे पेट में है, मैं ने तेरी नजर किया (सब से) आजाद रख कर, सो तू मुझ से क़ुबूल कर ले बेशक तू सुनने वाला, जानने वाला है। (35)

सो जब उस ने उस (मरयम) को जन्म दिया तो वह बोली ऐ मेरे रब! मैं ने जन्म दी है लड़की, और अल्लाह ख़ूब जानता है जो उस ने जन्म दिया, और लड़का लड़की के मानिंद नहीं होता और मैं ने उस का नाम मरयम रखा, और मैं उस को और उस की औलाद को तेरी पनाह में देती हूँ शैतान मरदूद से। (36)

तो उस को उस के रब ने अच्छी तरह क़ुबूल किया और उस को अच्छी तरह परवान चढ़ाया और जकरिया (अ) को उस का कफ़ील बनाया। जब भी जकरिया (अ) उस के पास हुजरे में दाख़िल होते उस के पास खाना पाते,
उस (ज़करिया (अ) ने कहा ऐ मरयम! यह तेरे पास कहां से आया? उस ने कहा यह अल्लाह के पास से है, बेशक अल्लाह जिसे चाहे बेहिसाब रिज़्क़ देता है। (37)

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ ۚ قَالَ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| औलाद | अपने पास | से | अता कर मुझे | ऐ मेरे रब | उस ने कहा | अपना रब | जकरिया | दुआ की | वहीं |

طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ﴿٣٨﴾ فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| खड़े हुए | और वह | फ़रिश्ता (जमा) | तो आवाज़ दी उस को | 38 | दुआ | सुनने वाला | बेशक तू | पाक |

يُّصَلِّيْ فِي الْمِحْرَابِ ۙ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيٰى مُصَدِّقًاۢ بِكَلِمَةٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कलिमा | तस्दीक़ करने वाला | यहया (अ) | तुम्हें खुशखबरी देता है | कि अल्लाह | महराब (हुजरा) | में | नमाज पढ़ने |

مِّنَ اللّٰهِ وَسَيِّدًا وَّحَصُوْرًا وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٣٩﴾ قَالَ رَبِّ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ मेरे रब | उस ने कहा | 39 | नेकोकार (जमा) | से | और नबी | और नफ़्स को क़ाबू में रखने वाला | और सरदार | अल्लाह | से |

اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِيْ عَاقِرٌ ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बांझ | और मेरी औरत | बुढ़ापा | जब कि मुझे पहुँच गया | लड़का | मेरे लिए | होगा | कहां |

قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ﴿٤٠﴾ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۭ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई निशानी | मेरे लिए | मुक़र्रर फ़र्मा दे | ऐ मेरे रब | उस ने कहा | 40 | जो वह चाहता है | करता है | अल्लाह | इसी तरह | उस ने कहा |

قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ۭ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना रब | और तू याद कर | इशारा | मगर | तीन दिन | लोग | कि न बात करेगा | तेरी निशानी | उस ने कहा |

كَثِيْرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ﴿٤١﴾ وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ ع ٤ ١٢

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़रिश्ता (जमा) | कहा | और जब | 41 | और सुबह | शाम | और तस्बीह कर | बहुत |

يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفٰىكِ عَلٰى

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पर | और बरगुजीदा किया तुझ को | और पाक किया तुझ को | चुन लिया तुझ को | बेशक अल्लाह | ऐ मरयम |

نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٢﴾ يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ لِرَبِّكِ وَاسْجُدِيْ وَارْكَعِيْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और रुकूअ कर | और सिजदा कर | अपने रब की | तू फ़र्मांबरदारी कर | ऐ मरयम | 42 | तमाम जहान | औरतें |

مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तेरी तरफ़ | हम यह वही करते है | ग़ैब | खबरें | से | यह | 43 | रुकूअ करने वाले | साथ |

وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۠

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मरयम | पर्वरिश करे | कौन-उन | अपने क़लम | वह डालते थे | जब | उन के पास | और तू न था |

وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٤﴾ اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ मरयम | फ़रिश्ते | जब कहा | 44 | जब वह झगड़ते थे | उन के पास | तू न था | और न |

اِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۖ اسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इब्ने मरयम | ईसा | मसीह (अ) | उस का नाम | अपने | एक कलमा की | तुझे बशारत देता है | अल्लाह | बेशक |

وَجِيْهًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٥﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 45 | मुक़र्रिब (जमा) | और से | और आख़िरत | दुन्या | में | बाआबरु |

वहीं जकरिया (अ) ने अपने रब से दुआ की। ऐ मेरे रब! मुझे अपने पास से पाक औलाद अता कर, तू बेशक दुआ सुनने वाला है। (38)

तो उन्हें आवाज़ दी फ़रिश्तों ने जब वह हुजरे में खड़े हुए नमाज़ पढ़ रहे थे, कि अल्लाह तुम्हें यहया (अ) की खुशखबरी देता है अल्लाह के कलिमे की तस्दीक़ करने वाला, सरदार, और नफ़्स को क़ाबू रखने वाला, और नबी (होगा) नेकोकारों में से। (39)

उस ने कहा ऐ मेरे रब! मेरे लड़का कहां से होगा? जब कि मुझे बुढ़ापा पहुँच चुका है, और मेरी औरत बांझ है, उस ने कहा इसी तरह अल्लाह जो चाहता है करता है (40)

उस ने कहा ऐ मेरे रब! मुक़र्रर फ़र्मा दे मेरे लिए कोई निशानी? उस ने कहा तेरी निशानी यह है कि तू लोगों से तीन दिन बात न करेगा, मगर इशारे से, तू अपने रब को बहुत याद कर, और सुब्ह ओ शाम तस्बीह कर। (41)

और जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरयम! बेशक अल्लाह ने तुझ को चुन लिया, और तुझ को पाक किया,और तुझ को बरगुजीदा किया औरतों पर तमाम जहान की। (42)

ऐ मरयम! तू अपने रब की फ़र्मांबरदारी कर, और सिज्दा कर, और रुकूअ़ कर, रुकूअ़ करने वालों के साथ। (43)

यह ग़ैब की खबरें हैं, हम आप की तरफ़ वही करते हैं, और आप उन के पास न थे जब वह (कुरआ के लिए) अपने क़लम डाल रहे थे कि उन में से कौन मरयम की पर्वरिश करेगा? और आप (स) उन के पास न थे जब वह झगड़ते थे। (44)

जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरयम! बेशक अल्लाह तुझे अपने एक कलमे की बशारत देता है उस का नाम मसीह (अ) ईसा (अ) इब्ने मरयम है, दुन्या और आख़िरत में बाआबरु, और मुक़र्रिबों से होगा, (45)

وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِى الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَتْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह बाली | 46 | नेकोकार | और से | और पुख़्ता उम्र | गहवारे में | लोग | और बातें करेगा |

رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ وَلَدٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِىْ بَشَرٌ ۭ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | इसी तरह | उस ने कहा | कोई मर्द | हाथ लगाया मुझे | और नहीं | बेटा | होगा मेरे हां | कैसे | ऐ मेरे रब |

يَخْلُقُ مَا يَشَاۗءُ ۭ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٤٧﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 47 | सो वह हो जाता है | हो जा | उस को | वह कहता है | तो | कोई काम | वह इरादा करता है | जब | जो वह चाहता है | पैदा करता है |

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ﴿٤٨﴾ وَرَسُوْلًا اِلٰى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ | और एक रसूल | 48 | और इन्जील | और तौरेत | और दानाई | और वह सिखाएगा उस को किताब |

بَنِىْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ ڏ اَنِّىْ قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ اَنِّىْٓ اَخْلُقُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बनाता हूँ | कि मैं | तुम्हारा रब | से | एक निशानी के साथ | आया हूँ तुम्हारी तरफ़ | कि मैं | बनी इस्राईल |

لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْــــَٔــةِ الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًۢا بِاِذْنِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हुक्म से | परिन्दा | तो वह हो जाता है | उस में | फिर फूंक मारता हूँ | परिन्दा | मानिंद - शक्ल | गारा | से | तुम्हारे लिए |

اللّٰهِ ۚ وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْىِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | हुक्म से | मुर्दे | और मैं ज़िन्दा करता हूँ | और कोढ़ी को | मादरज़ाद अन्धा | और मैं अच्छा करता हूँ | अल्लाह |

وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ ۙ فِىْ بُيُوْتِكُمْ ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस | में | बेशक | घरों अपने | में | तुम ज़ख़ीरा करते हो | और जो | तुम खाते हो | जो | और तुम्हें बताता हूँ |

لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٤٩﴾ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَىَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने से पहली | जो | और तस्दीक़ करने वाला | 49 | ईमान वाले | तुम हो | अगर | तुम्हारे लिए | एक निशानी |

مِنَ التَّوْرٰىةِ وَلِاُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِىْ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और आया हूँ तुम्हारे पास | तुम पर | हराम की गई | वह जो कि | बाज़ | तुम्हारे लिए | और ता कि हलाल कर दूँ | तौरेत | से |

بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۣ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿٥٠﴾ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّىْ وَرَبُّكُمْ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम्हारा रब | मेरा रब | अल्लाह | बेशक | 50 | और मेरा कहा मानो | अल्लाह | सो तुम डरो | तुम्हारा रब | से | एक निशानी |

فَاعْبُدُوْهُ ۭ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٥١﴾ فَلَمَّآ اَحَسَّ عِيْسٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ईसा (अ) | महसूस किया | फिर जब | 51 | सीधा | रास्ता | यह | सो तुम इबादत करो उस की |

مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ اَنْصَارِىْٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हवारी (जमा) | कहा | अल्लाह | तरफ़ | मेरी मदद करने वाला | कौन | उस ने कहा | कुफ़्र | उन से |

نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ ۚ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ ۚ وَاشْهَدْ بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿٥٢﴾ رَبَّنَآ اٰمَنَّا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ईमान लाए | ऐ हमारे रब | 52 | फ़र्मांबरदार | कि हम | तू गवाह रह | अल्लाह पर | हम ईमान लाए | अल्लाह | मदद करने वाले | हम |

بِمَآ اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 53 | गवाही देने वाले | साथ | सो तू हमें लिख ले | रसूल | और हम ने पैरवी की | तू ने नाज़िल किया | जो |

और लोगों से गहवारे में और पुख़्ता उम्र में बातें करेगा और नेकोकारों में से होगा। (46)

वह बोली ऐ मेरे रब! मेरे हां बेटा कैसे होगा? और किसी मर्द ने मुझे हाथ नहीं लगाया, उस ने कहा इसी तरह अल्लाह जो चाहे पैदा करता है, जब वह किसी काम का इरादा करता है तो वह कहता है उस को "हो जा" सो वह हो जाता है। (47)

और वह उस को सिखाएगा किताब, और दानाई,और तौरेत, और इन्जील। (48)

और बनी इस्राईल की तरफ़ एक रसूल, (वह कहेगा) कि मैं तुमहारी तरफ एक निशानी के साथ आया हूँ तुम्हारे रब की तरफ़ से, मैं तुम्हारे लिए गारे से परिन्दे जैसी शक्ल बनाता हूँ, फिर उस में फूंक मारता हूँ तो वह अल्लाह के हुक्म से परिन्दा हो जाता है, और मैं अच्छा करता हूँ मादरजाद अन्धे और कोढ़ी को, और मैं अल्लाह के हुक्म से मुर्दे जिन्दा करता हूँ, और मैं तुम्हें बताता हूँ जो तुम खाते हो और जो तुम अपने घरों में ज़ख़ीरा करते हो, बेशक उस में तुम्हारे लिए एक निशानी है, अगर तुम हो ईमान वाले। (49)

और मैं अपने से पहली (किताब) तौरेत की तस्दीक़ करने वाला हूँ और ता कि तुम्हारे लिए बाज़ वह चीज़ें हलाल कर दूँ जो तुम पर हराम की गई थीं, और तुम्हारे पास एक निशानी के साथ आया हूँ तुम्हारे रब से, सो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो। (50)

बेशक अल्लाह (ही) मेरा और तुम्हारा रब है सो तुम उस की इबादत करो, यह सीधा रास्ता है, (51)

फिर जब ईसा (अ) ने महसूस किया उन से कुफ़्र (तो) कहा कौन है अल्लाह की तरफ़ मेरी मदद करने वाला? हवारियों ने कहा हम अल्लाह की मदद करने वाले हैं, हम अल्लाह पर ईमान लाए, और गवाह रह कि हम फ़र्मांबरदार हैं, (52)

ऐ हमारे रब! हम उस पर ईमान लाए जो तू ने नाज़िल किया और हम ने रसूल की पैरवी की, सो तू हमें गवाही देने वालों के साथ लिख ले (53)

और उन्होंने मक्र किया और अल्लाह ने ख़ुफ़िया तदबीर की, और अल्लाह (सब) तदबीर करने वालों से बेहतर है। (54)

जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा (अ) मैं तुझे क़ब्ज़ कर लूँगा, और तुझे अपनी तरफ़ उठा लूँगा, और तुझे पाक कर दूँगा उन लोगों से जिन्हों ने कुफ़्र किया, और जिन्हों ने तेरी पैरवी की उन्हें उन के ऊपर (ग़ालिब) रखूँगा, जिन्हों ने कुफ़्र किया क़ियामत के दिन तक। फिर तुम्हें मेरी तरफ़ लौट कर आना है, फिर मैं तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करूँगा जिस (बारे) में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे। (55)

पस जिन लोगों ने कुफ़्र किया, सो उन्हें सख़्त अ़ज़ाब दूँगा दुन्या और आख़िरत में, और उन का कोई मददगार न होगा। (56)

और जो लोग ईमान लाए, और उन्हों ने नेक काम किए तो (अल्लाह) उन के अजर उन्हें पूरे देगा, और अल्लाह दोस्त नहीं रखता ज़ालिमों को। (57)

हम आप (स) पर यह आयतें और हिक्मत वाली नसीहत पढ़ते हैं। (58)

बेशक अल्लाह के नज़दीक ईसा (अ) की मिसाल आदम (अ) जैसी है, उसे मिट्टी से पैदा किया, फिर कहा उस को "हो जा" तो वह हो गया। (59)

हक़ आप के रब की तरफ़ से है, पस शक करने वालों में से न होना। (60)

जो आप (स) से इस बारे में झगड़े उस के बाद जब कि आप के पास इल्म आगया तो आप (स) कह दें! आओ हम बुलाएं अपने बेटे और तुम्हारे बेटे, और अपनी औरतें और तुम्हारी औरतें, और हम ख़ुद और तुम ख़ुद (भी) फिर हम सब इल्तिजा करें, फिर झूटों पर अल्लाह की लानत भेजें। (61)

बेशक यही सच्चा बयान है, और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, और बेशक अल्लाह ही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (62)

ع ٥ ١٣ ١٣ الثلثة

وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿٥٤﴾ اِذْ قَالَ اللّٰهُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | कहा | जब | 54 | तदबीर करने वाले हैं | बेहतर | और अल्लाह | अल्लाह | और ख़ुफ़िया तदबीर की | और उन्हों ने मक्र किया |

يٰعِيْسٰٓى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَىَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो | से | और पाक कर दूँगा तुझे | अपनी तरफ़ | और उठा लूँगा तुझे | क़ब्ज़ कर लूँगा तुझे | मैं | ऐ ईसा (अ) |

كَفَرُوْا وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तक | कुफ़्र किया | जिन्हों ने | ऊपर | तेरी पैरवी की | वह जिन्हों ने | और रखूँगा | उन्हों ने कुफ़्र किया |

يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ اِلَىَّ مَرْجِعُكُمْ فَاَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيْمَا كُنْتُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम थे | जिस में | तुम्हारे दरमियान | फिर मैं फ़ैसला करूँगा | तुम्हें लौट कर आना है | मेरी तरफ़ | फिर | क़ियामत का दिन |

فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٥٥﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَاُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ़ज़ाब | सो उन्हें अ़ज़ाब दूँगा | कुफ़्र किया | जिन लोगों ने | पस | 55 | इख़्तिलाफ़ करते | में |

شَدِيْدًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۡ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٥٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 56 | मददगार | से | उन का | और नहीं | और आख़िरत | दुन्या में | सख़्त |

وَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ۭ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के अजर | तो पूरा देगा | नेक | और उन्हों ने काम किए | ईमान लाए | जो लोग | और जो |

وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٧﴾ ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَيْكَ مِنَ الْاٰيٰتِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आयतें | से | आप (स) पर | हम पढ़ते हैं | यह | 57 | ज़ालिम (जमा) | दोस्त नहीं रखता | और अल्लाह |

وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ ﴿٥٨﴾ اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ۭ خَلَقَهٗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस को पैदा किया | आदम | मिसाल जैसी | अल्लाह के नज़दीक | ईसा | मिसाल | बेशक | 58 | हिक्मत वाली | और नसीहत |

مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٥٩﴾ اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस न | आप का रब | से | हक़ | 59 | सो वह हो गया | हो जा | उस को | कहा | फिर | मिट्टी | से |

تَكُنْ مِّنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿٦٠﴾ فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब आगया | बाद | से | उस में | आप से झगड़े | सो जो | 60 | शक करने वाले | से | हो |

مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَاَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अपनी औ़रतें | और तुम्हारे बेटे | अपने बेटे | हम बुलाएं | तुम आओ | तो कह दें | इल्म | से |

وَنِسَآءَكُمْ وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ ۣ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | लानत | फिर करें (डालें) | हम इल्तिजा करें | फिर | और तुम ख़ुद | और हम ख़ुद | और तुम्हारी औ़रतें |

عَلَى الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦١﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं | सच्चा | बयान | यही | यह | बेशक | 61 | झूटे | पर |

مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 62 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | वही | अल्लाह | और बेशक | अल्लाह के सिवा | कोई माबूद |

ع ٦ ٩ ١٣

فَـاِنْ تَـوَلَّـوْا فَـاِنَّ اللّٰهَ عَـلِـيْـمٌۢ بِـالْـمُـفْـسِـدِيْـنَ ﴿٦٣﴾ قُـلْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप कह दें | 63 | फ़साद करने वालों को | जानने वाला | अल्लाह | तो बेशक | वह फिर जाएं | फिर अगर |

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اَلَّا نَعْبُدَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि न हम इबादत करें | और तुम्हारे दरमियान | हमारे दरमियान | बराबर | एक बात | तरफ़ (पर) | आओ | ऐ अहले किताब |

اِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْـًٔا وَّلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रब (जमा) | किसी का | हम में से कोई | और न बनाए | कुछ | उस के साथ | और न हम शरीक करें | अल्लाह | सिवाए |

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُوْلُوا اشْهَدُوْا بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 64 | मुस्लिम (फ़र्मांबरदार) | कि हम | तुम गवाह रहो | तो कह दो तुम | वह फिर जाएं | फिर अगर | अल्लाह | सिवाए |

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تُحَآجُّوْنَ فِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمَآ اُنْزِلَتِ التَّوْرٰىةُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तौरेत | नाज़िल की गई | और नहीं | इब्राहीम (अ) | में | तुम झगड़ते हो | क्यों | ऐ अहले किताब |

وَالْاِنْـجِـيْـلُ اِلَّا مِـنْۢ بَـعْـدِهٖ ۭ اَفَـلَا تَـعْـقِـلُـوْنَ ﴿٦٥﴾ هٰٓاَنْـتُـمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हां तुम | 65 | तो क्या तुम अक्ल नही रखते | उस के बाद | मगर | और इन्जील |

هٰٓـــؤُلَآءِ حَـاجَـجْـتُـمْ فِـيْـمَـا لَـكُـمْ بِـهٖ عِـلْـمٌ فَـلِـمَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अब क्यों | इल्म | उस का | तुम्हें | जिस में | तुम ने झगड़ा किया | वह लोग |

تُـحَآجُّوْنَ فِـيْـمَا لَـيْـسَ لَـكُـمْ بِـهٖ عِـلْـمٌ ۭ وَاللّٰهُ يَـعْـلَـمُ وَاَنْـتُـمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम | जानता है | और अल्लाह | कुछ इल्म | उस का | तुम्हें | नहीं | उस में | तुम झगड़ते हो |

لَا تَـعْـلَـمُـوْنَ ﴿٦٦﴾ مَـا كَـانَ اِبْـرٰهِـيْـمُ يَـهُـوْدِيًّـا وَّلَا نَصْرَانِيًّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नसरानी | और न | यहूदी | इब्राहीम (अ) | न थे | 66 | जानते | नही |

وَّلٰـكِـنْ كَـانَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا ۭ وَمَـا كَـانَ مِـنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٦٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 67 | मुश्‌रिक (जमा) | से | थे | और न | मुस्लिम (फ़र्मांबरदार) | एक रुख़ | वह थे | और लेकिन |

اِنَّ اَوْلَـــى الــنَّـــاسِ بِـاِبْـرٰهِـيْـمَ لَـلَّـذِيْـنَ اتَّـبَـعُـوْهُ وَهٰـــذَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और इस | उन्हों ने पैरवी की उन की | उन लोग | इब्राहीम (अ) | लोग | सब में ज़ियादा मुनासिबत | बेशक |

الـنَّـبِـيُّ وَالَّـــذِيْـــنَ اٰمَـــنُـــوْا ۭ وَاللّٰهُ وَلِــيُّ الْـمُـؤْمِـنِـيْـنَ ﴿٦٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 68 | मोमिन (जमा) | कारसाज | और अल्लाह | ईमान लाए | और वह लोग जो | नबी |

وَدَّتْ طَّآئِـفَـةٌ مِّـنْ اَهْـــلِ الْـكِـتٰـبِ لَـوْ يُـضِـلُّـوْنَـكُـمْ ۭ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह गुमराह कर दें तुम्हें | काश | अहले किताब | से (की) | एक जमाअत | चाहती है |

وَمَـــا يُـضِـلُّــوْنَ اِلَّآ اَنْـفُـسَـهُـمْ وَمَـــا يَـشْـعُـرُوْنَ ﴿٦٩﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 69 | वह समझते | और नहीं | अपने आप | मगर | और नहीं वह गुमराह करते |

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاَنْـتُـمْ تَـشْـهَـدُوْنَ ﴿٧٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 70 | गवाह हो | हालांकि तुम | अल्लाह | आयतों का | तुम इन्कार करते हो | क्यों | ऐ अहले किताब |

फिर अगर वह फिर जाएं तो बेशक अल्लाह फ़साद करने वालों को खूब जानता है। (63)

आप (स) कह दें ऐ अहले किताब! उस एक बात पर आओ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान बराबर (मुशतरिक) है कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें, और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराएं, और हम में से कोई किसी को न बनाए रब अल्लाह के सिवा, फिर अगर वह फिर जाएं तुम कह दो कि तुम गवाह रहो कि हम तो मुस्लिम (फ़र्मांबरदार) हैं। (64)

ऐ अहले किताब! तुम इब्राहीम (अ) के बारे में क्यों झगड़ते हो? और नहीं नाजिल की गई तौरेत और इन्जील मगर उन के बाद, तो क्या तुम अक़्ल नहीं रखते? (65)

हां! तुम वही लोग हो तुम ने उस (बारे) में झगड़ा किया जिस का तुम्हें इल्म था तो अब क्यों झगड़ते हो उस (बारे) में जिस का तुम्हें कुछ इल्म नहीं, और अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते। (66)

इब्राहीम (अ) न यहूदी थे, न नसरानी, (बल्कि) वह हनीफ़ (सब से रुख मोड़ कर अल्लाह के हो जाने वाले) मुस्लिम (फ़र्मांबरदार) थे, और वह मुश्‌रिकों में से न थे. (67)

बेशक सब लोगों से जियादा मुनासिबत है इब्राहीम (अ) से उन लोगों को जिन्हों ने उन की पैरवी की, और इस नबी को और वह लोग जो ईमान लाए, और अल्लाह मोमिनों का कारसाज है। (68)

अहले किताब की एक जमाअ़त चाहती है काश! वह तुम्हें गुमराह कर दें, और वह अपने सिवा किसी को गुमराह नहीं करते. और वह समझते नही. (69)

ऐ अहले किताब! तुम क्यों इन्कार करते हो अल्लाह की आयतों का? हालांकि तुम गवाह हो। (70)

ऐ अहले किताब! तुम क्यों मिलाते हो सच को झूट के साथ, और तुम हक़ को छुपाते हो, हालांकि तुम जानते हो। (71)

और एक जमाअत ने कहा अहले किताब की कि जो कुछ मुसलमानों पर नाज़िल किया गया है, उसे दिन के अव्वल हिस्से में मान लो और मुन्किर हो जाओ उस के आख़िर हिस्से में (शाम को) शायद कि वह फिर जाएं। (72)

और तुम (किसी की बात) न मानो सिवाए उस के जो पैरवी करे तुम्हारे दीन की, आप (स) कह दें बेशक हिदायत अल्लाह ही की हिदायत है, कि किसी को दिया गया जैसा कि तुम्हें दिया गया, या वह तुम से तुम्हारे रब के सामने हुज्जत करें, आप (स) कह दें, बेशक फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ में है, वह देता है जिस को वह चाहता है, और अल्लाह वुस्अत वाला, जानने वाला है। (73)

वह जिस को चाहता है अपनी रहमत से ख़ास कर लेता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (74)

और अहले किताब में कोई (ऐसा है) कि अगर आप (स) उस के पास अमानत रखें ढेरों माल तो वह आप (स) को अदा करदे, और उन में से कोई (ऐसा है) अगर आप उस के पास एक दीनार अमानत रखें तो वह अदा न करे मगर जब तक आप (स) उस के सर पर खड़े रहें, यह इस लिए है कि उन्हों ने कहा हम पर उम्मियों के (बारे) में (इल्ज़ाम की) कोई राह नहीं, और वह अल्लाह पर झूट बोलते हैं, और वह जानते हैं। (75)

क्यों नहीं? जो कोई अपना इक़रार पूरा करे, और परहेज़गार रहे, तो बेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है। (76)

बेशक जो लोग अल्लाह के इक़रार और अपनी क़स्मों से हासिल करते हैं थोड़ी क़ीमत, यही लोग है जिन के लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं, और न अल्लाह उन से कलाम करेगा, और न उन की तरफ़ नज़र करेगा क़ियामत के दिन, और न उन्हें पाक करेगा, और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (77)

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हक़ | और तुम छुपाते हो | झूट के साथ | सच | तुम मिलाते हो | क्यों | ऐ अहले किताब |

وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٧١﴾ وَقَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا بِالَّذِىٓ ع ٨ ١٥

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो कुछ | तुम मान लो | अहले किताब | से (की) | एक जमाअत | और कहा | 71 | तुम जानते हो | हालांकि |

اُنْزِلَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوْٓا اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शायद | उस का आख़िर (शाम) | और मुन्किर हो जाओ | अव्वल हिस्सा दिन | जो लोग ईमान लाए (मुसलमान) | पर | नाज़िल किया गया |

يَرْجِعُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَلَا تُؤْمِنُوْٓا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِيْنَكُمْ ۭ قُلْ اِنَّ الْهُدٰى

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हिदायत | बेशक | कह दें | तुम्हारा दीन | पैरवी करे | उस की जो | सिवाए | माना तुम | और न | 72 | वह फिर जाएं |

هُدَى اللّٰهِ ۙ اَنْ يُّؤْتٰٓى اَحَدٌ مِّثْلَ مَآ اُوْتِيْتُمْ اَوْ يُحَآجُّوْكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह हुज्जत करें तुम से | या | कुछ तुम्हें दिया गया | जैसा | किसी को | दिया गया | कि | अल्लाह | हिदायत |

عِنْدَ رَبِّكُمْ ۭ قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ ۚ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۭ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह चाहता है | जिसे | वह देता है | अल्लाह के हाथ में | फ़ज़्ल | बेशक | कह दें | तुम्हारा रब | सामने |

وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾ يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह चाहता है | जिसे | अपनी रहमत से | वह ख़ास कर लेता है | 73 | जानने वाला | वुस्अत वाला | और अल्लाह |

وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٤﴾ وَمِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ اِنْ تَاْمَنْهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर अमानत रखें उस को | जो | अहले किताब | और से | 74 | बड़ा - बड़े | फ़ज़्ल वाला | और अल्लाह |

بِقِنْطَارٍ يُّؤَدِّهٖٓ اِلَيْكَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِدِيْنَارٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| एक दीनार | आप अमानत रखें उस को | अगर | और उन से जो | आप को | अदा करे | ढेर माल |

لَّا يُؤَدِّهٖٓ اِلَيْكَ اِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَآئِمًا ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने कहा | इस लिए कि | यह | खड़े | उस पर | तक रहें | मगर जब | आप को | वह अदा न करे |

لَيْسَ عَلَيْنَا فِى الْاُمِّيّٖنَ سَبِيْلٌ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| झूट | अल्लाह | पर | और वह बोलते हैं | कोई राह | उम्मी (जमा) | में | हम पर | नहीं |

وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾ بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | तो बेशक | और परहेज़गार रहे | अपना इक़रार | पूरा करे | जो | क्यों नहीं? | 75 | जानते हैं | और वह |

يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٧٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَاَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क़ीमत | और अपनी क़स्में | अल्लाह का इक़रार | ख़रीदते (हासिल करते) हैं | जो लोग | बेशक | 76 | परहेज़गार (जमा) | दोस्त रखता है |

قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَلَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न | अल्लाह | उन से कलाम करेगा | और न | आख़िरत में | उन के लिए | हिस्सा | नहीं | यही लोग | थोड़ी |

يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۠ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 77 | दर्दनाक | अज़ाब | और उन के लिए | उन्हें पाक करेगा | और न | क़ियामत के दिन | उन की तरफ़ | नज़र करेगा |

وَاِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ता कि तुम समझो | किताब में | अपनी ज़ुबानें | मरोड़ते हैं | एक फ़रीक़ | उन से (उन में) | और बेशक |

مِنَ الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ مِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | वह | और वह कहते हैं | किताब | से | वह | और नहीं | किताब | से |

عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| झूट | अल्लाह | पर | और वह बोलते हैं | अल्लाह | तरफ़ | से | वह | हालांकि नहीं | अल्लाह | तरफ़ |

وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٨﴾ مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّؤْتِيَهُ اللّٰهُ الْكِتٰبَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किताब | अल्लाह | उसे अता करे | कि | किसी आदमी के लिए | नहीं | 78 | वह जानते हैं | और वह |

وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوْلَ لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّيْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरे | बन्दे | तुम हो जाओ | लोगों को | वह कहे | फिर | और नबूव्वत | और हिक्मत |

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किताब | तुम सिखाते हो | इस लिए कि | अल्लाह वाले | तुम हो जाओ | और लेकिन | अल्लाह | सिवा (बजाए) |

وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَلَا يَاْمُرَكُمْ اَنْ تَتَّخِذُوا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम ठहराओ | कि | हुक्म देगा तुम्हें | और न | 79 | तुम पढ़ते हो | और इस लिए कि |

الْمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ اَرْبَابًا ۗ اَيَاْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बाद | कुफ़्र का | क्या वह तुम्हें हुक्म देगा? | परवरदिगार | और नबी | फ़रिश्ते |

ع ٨ ١٦ اِذْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो कुछ | नबी (जमा) | अ़हद | अल्लाह | लिया | और जब | 80 | मुसलमान | तुम | जब |

اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ وَّحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तस्दीक़ करता हुआ | रसूल | आए तुम्हारे पास | फिर | और हिक्मत | किताब | से | मैं तुम्हें दूँ |

لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ۗ قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَاَخَذْتُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम ने कुबूल किया | क्या तुम ने इक़रार किया | उस ने फ़रमाया | और तुम ज़रूर मदद करोगे उस की | उस पर | तुम ज़रूर ईमान लाओगे | तुम्हारे पास | जो |

عَلٰى ذٰلِكُمْ اِصْرِيْ ۗ قَالُوْٓا اَقْرَرْنَا ۗ قَالَ فَاشْهَدُوْا وَاَنَا مَعَكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे साथ | और मैं | पस तुम गवाह रहो | उस ने फ़रमाया | हम ने इक़रार किया | उन्हों ने कहा | मेरा अ़हद | उस | पर |

مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٨١﴾ فَمَنْ تَوَلّٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह | तो वही | उस | बाद | फिर जाए | फिर जो | 81 | गवाह (जमा) | में |

الْفٰسِقُوْنَ ﴿٨٢﴾ اَفَغَيْرَ دِيْنِ اللّٰهِ يَبْغُوْنَ وَلَهٗٓ اَسْلَمَ مَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | फ़र्मांबरदार है | और उस के लिए | वह ढून्डते हैं | अल्लाह | दीन | क्या? सिवा | 82 | नाफ़रमान |

فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّاِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 83 | वह लौटाए जाएंगे | और उस की तरफ़ | और नाखुशी से | खुशी से | और ज़मीन | आस्मानों | में |

और बेशक उन में एक फ़रीक़ है जो किताब (पढ़ते वक़्त) अपनी ज़ुबानें मरोड़ते हैं, ताकि तुम समझो कि वह किताब से है, हालांकि वह किताब से नहीं (होता), और वह कहते हैं कि वह अल्लाह की तरफ़ से है, हालांकि वह नहीं अल्लाह की तरफ़ से, और अल्लाह पर झूट बोलते हैं, और वह जानते हैं। (78)

किसी आदमी के लिए (यह शायान) नहीं कि अल्लाह उसे किताब, और हिक्मत, और नबूव्वत अ़ता करे, फिर वह लोगों को कहे कि तुम अल्लाह के बजाए मेरे बन्दे हो जाओ, लेकिन (वह यही कहेगा कि) तुम अल्लाह वाले हो जाओ, इस लिए कि तुम किताब सिखाते हो और तुम खुद (भी) पढ़ते हो। (79)

और न वह तुम्हें हुक्म देगा कि तुम फ़रिश्तों और नबियों को परवरदिगार ठहराओ, क्या वह तुम्हें हुक्म देगा कुफ़्र का? इस के बाद कि तुम मुसलमान (फ़र्मांबरदार) हो चुके। (80)

और जब अल्लाह ने अ़हद लिया नबियों से कि जो कुछ मैं तुम्हें किताब और हिक्मत दूँ, फिर तुम्हारे पास रसूल आए, उस की तस्दीक़ करता हुआ जो तुम्हारे पास है तो तुम उस पर ज़रूर ईमान लाओगे, और ज़रूर उस की मदद करोगे, उस ने फ़रमाया क्या तुम ने इक़रार किया? और तुम ने उस पर मेरा अ़हद कुबूल क्या? उन्हों ने कहा कि हम ने इक़रार किया, उस ने फ़रमाया पस तुम गवाह रहो, और मैं तुम्हारे साथ गवाहों में से हूँ। (81)

फिर जो उस के बाद फिर जाए तो वही नाफ़रमान हैं। (82)

क्या वह अल्लाह के दीन के सिवा (कोई और दीन) चाहते हैं? और उसी का फ़र्मांबरदार है जो आस्मानों और ज़मीन में है, चार ओ नाचार, और उसी की तरफ़ वह लौटाए जाएंगे। (83)

कह दें हम ईमान लाए अल्लाह पर, और जो हम पर नाज़िल किया गया, और जो नाज़िल किया गया इब्राहीम (अ), इस्माईल (अ), इस्हाक़ (अ), याक़ूब (अ), और उन की औलाद पर, और जो दिया गया मूसा (अ) और ईसा (अ) और नबियों को, उन के रब की तरफ़ से, हम फ़र्क़ नहीं करते उन में से किसी एक के दरमियान, और हम उसी के फ़र्मांबरदार हैं। (84)

और जो कोई चाहेगा इस्लाम के सिवा कोई और दीन, तो उस से हरगिज़ क़ुबूल न किया जाएगा, और वह आख़िरत में नुक़्सान उठाने वालों में से होगा। (85)

अल्लाह ऐसे लोगों को क्योंकर हिदायत देगा जो काफ़िर हो गए अपने ईमान के बाद, और गवाही दे चुके हैं कि यह रसूल सच्चे हैं, और उन के पास खुली निशानियां आ गईं, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (86)

ऐसे लोगों की सज़ा है कि उन पर लानत है अल्लाह की और फ़रिश्तों की और तमाम लोगों की, (87)

वह उस में हमेशा रहेंगे। न उन से अज़ाब हलका किया जाएगा, और न उन्हें मुहलत दी जाएगी। (88)

मगर जिन लोगों ने उस के बाद तौबा की, और इस्लाह की, तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (89)

बेशक जो लोग काफ़िर हो गए अपने ईमान के बाद, फिर बढ़ते गए कुफ़्र में, उन की तौबा हरगिज़ न क़ुबूल की जाएगी, और वही लोग गुमराह हैं। (90)

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया, और वह मर गए हालते कुफ़्र में, तो हरगिज़ न क़ुबूल किया जाएगा उन में से किसी से ज़मीन भर सोना भी, अगरचे वह उस को बदले में दे, यही लोग हैं उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है, और उन के लिए कोई मददगार नहीं। (91)

قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इब्राहीम (अ) | पर | नाज़िल किया गया | और जो | हम पर | नाज़िल किया गया | और जो | अल्लाह पर | हम ईमान लाए | कह दें |

وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मूसा (अ) | दिया गया | और जो | और औलाद | और याक़ूब (अ) | और इस्हाक़ (अ) | और इस्माईल (अ) |

وَعِيْسٰى وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۪ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۫ وَنَحْنُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम | उन से | कोई एक | दरमियान | फ़र्क़ करते | नहीं | उन का रब | से | और नबी (जमा) | और ईसा (अ) |

لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से | क़ुबूल किया जाएगा | तो हरगिज़ न | कोई दीन | इस्लाम | सिवा | चाहेगा | और जो | 84 | फ़र्मांबरदार | उसी के |

وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٨٥﴾ كَيْفَ يَهْدِي اللّٰهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | हिदायत देगा | क्योंकर | 85 | नुक़्सान उठाने वाले | से | आख़िरत | में | और वह |

قَوْمًا كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّجَآءَهُمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और आएं उन के पास | सच्चे | रसूल | कि | और उन्हों ने गवाही दी | उन का (अपना) ईमान | बाद | ऐसे लोग जो काफ़िर हो गए |

الْبَيِّنٰتُ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٦﴾ اُولٰۗىِٕكَ جَزَاۗؤُهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की सज़ा | ऐसे लोग | 86 | ज़ालिम (जमा) | लोग | हिदायत देता | नहीं | और अल्लाह | खुली निशानियां |

اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰۗىِٕكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 87 | तमाम | और लोग | और फ़रिश्ते | अल्लाह | लानत | उन पर | कि |

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 88 | मुहलत दी जाएगी | उन्हें | और न | अज़ाब | उन से | हलका किया जाएगा | न | उस में | हमेशा रहेंगे |

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۣ فَاِنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | तो बेशक | और इस्लाह की | उस | बाद | तौबा की | जो लोग | मगर |

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٨٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर | अपने ईमान | बाद | काफ़िर हो गए | जो लोग | बेशक | 89 | रहम करने वाला | बख़्शने वाला |

ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الضَّاۗلُّوْنَ ﴿٩٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 90 | गुमराह | वह | और वही लोग | उन की तौबा | क़ुबूल की जाएगी | हरगिज़ न | कुफ़्र में | बढ़ते गए |

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क़ुबूल किया जाएगा | तो हरगिज़ न | हालते कुफ़्र | और वह | और वह मर गए | कुफ़्र किया | जो लोग | बेशक |

مِنْ اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى بِهٖ ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस को | बदला दे | अगरचे | सोना | ज़मीन | भरा हुआ | उन में कोई | से |

اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٩١﴾ ع ١١ ١٧

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 91 | मददगार | कोई | उन के लिए | और नहीं | दर्दनाक | अज़ाब | उन के लिए | यही लोग |

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۬ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम ख़र्च करोगे | और जो | तुम मुहब्बत रखते हो | उस से जो | तुम ख़र्च करो | जब तक | नेकी | तुम हरगिज़ न पहुँचोगे |

مِنْ شَیْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِیْمٌ ﴿٩٢﴾ كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हलाल | थे | खाने | तमाम | 92 | जानने वाला | उस को | अल्लाह | तो बेशक | से (कोई) चीज़ |

لِّبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسْرَآءِیْلُ عَلٰی نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | क़ब्ल | से | अपनी जान | पर | इस्राईल (याकूब अ) | जो हराम कर लिया | मगर | बनी इस्राईल के लिए |

تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम हो | अगर | फिर उस को पढ़ो | तौरेत | सो तुम लाओ | आप कह दें | तौरेत | नाज़िल की जाए (उतरे) |

صٰدِقِیْنَ ﴿٩٣﴾ فَمَنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस | से - बाद | झूट | अल्लाह | पर | झूट बाँधे | फिर जो | 93 | सच्चे |

فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٩٤﴾ قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۫ فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِیْمَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इब्राहीम (अ) | दीन | अब पैरवी करो | अल्लाह | सच फ़रमाया | आप कह दें | 94 | ज़ालिम (जमा) | वह | तो वही लोग |

حَنِیْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿٩٥﴾ اِنَّ اَوَّلَ بَیْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लोगों के लिए | मुक़र्रर किया गया | घर | पहला | बेशक | 95 | मुश्रिक (जमा) | से | थे | और न | हनीफ़ |

لَلَّذِیْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًی لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿٩٦﴾ فِیْهِ اٰیٰتٌۢ بَیِّنٰتٌ مَّقَامُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुक़ामे | खुली | निशानियां | उस में | 96 | तमाम जहानों के लिए | और हिदायत | बरकत वाला | मक्का में | जो |

اِبْرٰهِیْمَ ۬ۚ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ وَلِلّٰهِ عَلَی النَّاسِ حِجُّ الْبَیْتِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़ानाए काअबा का हज करना | लोग | पर | और अल्लाह के लिए | अमन में | हो गया | दाख़िल हुआ उस में | और जो | इब्राहीम |

مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَیْهِ سَبِیْلًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِیٌّ عَنِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | बेनियाज़ | अल्लाह | तो बेशक | कुफ़्र किया | और जो - जिस | राह | उस की तरफ़ | इस्तिताअत रखता हो | जो |

الْعٰلَمِیْنَ ﴿٩٧﴾ قُلْ یٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ ۖۗ وَاللّٰهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अल्लाह | अल्लाह | आयतें | तुम इन्कार करते हो | क्यों | ऐ अहले किताब | कह दें | 97 | जहान वाले |

شَهِیْدٌ عَلٰی مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٨﴾ قُلْ یٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | क्यों रोकते हो? | ऐ अहले किताब | कह दें | 98 | तुम करते हो | पर | गवाह |

سَبِیْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ شُهَدَآءُ ؕ وَمَا اللّٰهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | और नहीं | गवाह (जमा) | और तुम ख़ुद | कजी | तुम ढूंडते हो उस में | ईमान लाए | जो | अल्लाह का रास्ता |

بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٩﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِیْعُوْا فَرِیْقًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक गिरोह | तुम कहा मानोगे | अगर | ईमान लाए | वह जो कि | ऐ | 99 | तुम करते हो | से - जो | बेख़बर |

مِّنَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ یَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِیْمَانِكُمْ كٰفِرِیْنَ ﴿١٠٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 100 | हालते कुफ़्र | तुम्हारे ईमान | बाद | वह फेर देंगे तुम्हें | दी गई किताब | वह लोग जो | से |

وقف جبريل عليه السلام

तुम हरगिज़ नेकी को न पहुँचोगे, जब तक उस में से ख़र्च न करो जिस से तुम मुहब्बत रखते हो, और जो तुम ख़र्च करोगे कोई चीज़, तो बेशक अल्लाह उस को जानने वाला है। (92)

तमाम खाने हलाल थे बनी इस्राईल के लिए, मगर जो याकूब (अ) ने अपने आप पर हराम कर लिया था उस से क़ब्ल कि तौरेत उतरे, आप कह दें कि तुम तौरेत लाओ, फिर उस को पढ़ो अगर तुम सच्चे हो। (93)

फिर जो कोई अल्लाह पर उस के बाद झूट बाँधे, तो वही लोग ज़ालिम हैं। (94)

आप कह दें अल्लाह ने सच फ़र्माया, अब तुम इब्राहीम हनीफ़ (एक के हो जाने वाले) के दीन की पैरवी करो और वह मुश्रिकों में से न थे। (95)

बेशक सब से पहले जो घर मुक़र्रर किया गया लोगों के लिए वह जो मक्का में है बरकत वाला और सारे जहानों के लिए हिदायत। (96)

उस में निशानियां है खुली (जैसे) मुक़ामे इब्राहीम (अ), और जो उस में दाख़िल हुआ वह अम्न में हो गया, और अल्लाह के लिए (अल्लाह का हक़ है) लोगों पर ख़ानाए काअबा का हज करना, जो उस की तरफ़ राह (चलने की) इस्तिताअत रखता हो, और जिस ने कुफ़्र किया, तो बेशक अल्लाह जहान वालों से बेनियाज़ है। (97)

आप (स) कह दें, ऐ अहले किताब! क्यों तुम अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हो? और अल्लाह उस पर गवाह है (बाख़बर है) जो तुम करते हो। (98)

आप (स) कह दें, ऐ अहले किताब! तुम अल्लाह के रास्ते से क्यों रोकते हो (उस को)? जो अल्लाह पर ईमान लाए तुम उस में कजी ढूंडते हो, और तुम ख़ुद गवाह हो, और अल्लाह उस से बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (99)

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो (ऐ ईमान वालो!) अगर कहा मानोगे उन लोगों के एक फ़रीक़ का जिन्हें किताब दी गई (अहले किताब) वह तुम्हारे ईमान लाने के बाद तुम्हें (हालते) कुफ़्र में फेर देंगे। (100)

और तुम कैसे कुफ़्र करते हो? जबकि तुम पर अल्लाह की आयतें पढ़ी जाती हैं, और तुम्हारे दरमियान उस का रसूल (स) मौजूद है, और जो कोई मज़बूती से पकड़ेगा अल्लाह (की रस्सी) को तो उसे सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत दी गई। (101)

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो (ऐ ईमान वालो)! अल्लाह से डरो जैसा कि उस से डरने का हक़ है, और तुम हरगिज़ न मरना मगर (उस हाल में) कि तुम मुसलमान हो। (102)

और मज़बूती से पकड़ लो अल्लाह की रस्सी को सब मिल कर और आपस में फूट न डालो, और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो, जब तुम (एक दूसरे के) दुश्मन थे तो उस ने तुम्हारे दिलों में उल्फ़त डाल दी, तो तुम उस के फ़ज़्ल से भाई भाई हो गए, और तुम आग के गढ़े के किनारे पर थे तो उस ने तुम्हें उस से बचा लिया, इसी तरह वह तुम्हारे लिए अपनी आयात वाज़ेह करता है ताकि तुम हिदायत पाओ। (103)

और चाहिए कि तुम में से एक जमाअ़त रहे, वह भलाई की तरफ़ बुलाए और अच्छे कामों का हुक्म दे, और बुराई से रोके, और यही लोग कामयाब होने वाले हैं। (104)

और उन लोगों की तरह न हो जाओ जो मुतफ़र्रिक़ हो गए और वाहम इख़्तिलाफ़ करने लगे उस के बाद कि उन के पास वाज़ेह हुक्म आगए, और यही लोग हैं उन के लिए है अज़ाब बहुत बड़ा। (105)

जिस दिन बाज़ चहरे सफ़ेद होंगे, और बाज़ चहरे सियाह होंगे, पस जिन लोगों के सियाह हुए चहरे (उन से कहा जाएगा) क्या तुम ने अपने ईमान के बाद कुफ़्र किया? तो अब अ़ज़ाब चखो, क्यों कि तुम कुफ़्र करते थे। (106)

और अलबत्ता जिन लोगों के चहरे सफ़ेद होंगे, वह अल्लाह की रहमत में होंगे, वह उस में हमेशा रहेंगे। (107)

यह अल्लाह की आयात हैं, हम आप पर ठीक ठीक पढ़ते हैं, और अल्लाह जहान वालों पर कोई ज़ुल्म नहीं चाहता। (108)

وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस का रसूल | और तुम्हारे दरमियान | अल्लाह | आयतें | तुम पर | पढ़ी जाती हैं | जबकि तुम | तुम कुफ़्र करते हो | और कैसे |

وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝١٠١ ع ۱۰ / ۱

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 101 | सीधा रास्ता | तरफ़ | तो उसे हिदायत दी गई | अल्लाह को | मज़बूत पकड़ेगा | और जो |

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम | मगर | और तुम हरगिज न मरना | उस से डरना | हक़ | अल्लाह | तुम डरो | ईमान लाए | वह जो कि | ऐ |

مُّسْلِمُوْنَ ۝١٠٢ وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا وَاذْكُرُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और याद करो | आपस में फूट डालो | और न | सब मिल कर | अल्लाह | रस्सी को | और मज़बूती से पकड़ लो | 102 | मुसलमान (जमा) |

نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो तुम हो गए | तुम्हारे दिलों में | तो उल्फ़त डाल दी | दुश्मन (जमा) | जब तुम थे | तुम पर | अल्लाह | नेमत |

بِنِعْمَتِهٖٓ اِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो तुम्हें बचा लिया | आग | से (के) | गढ़ा | किनारा | पर | और तुम थे | भाई भाई | उस के फ़ज़्ल से |

مِّنْهَا ۗ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝١٠٣ وَلْتَكُنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और चाहिए रहे | 103 | हिदायत पाओ | ताकि तुम | अपनी आयात | तुम्हारे लिए | अल्लाह | वाज़ेह करता है | इसी तरह | उस से |

مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह रोके | अच्छे कामों का | और वह हुक्म दे | भलाई | तरफ़ | वह बुलाए | एक जमाअ़त | तुम से (में) |

عَنِ الْمُنْكَرِ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝١٠٤ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की तरह जो | और न हो जाओ | 104 | कामयाब होने वाले | वह | और यही लोग | बुराई से |

تَفَرَّقُوْا وَاخْتَلَفُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ۗ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | और यही लोग | वाज़ेह हुक्म | उन के पास आगए | कि | उस के बाद | और बाहम इख़्तिलाफ़ करने लगे | मुतफ़र्रिक़ हो गए |

عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝١٠٥ يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बाज़ चहरे | और सियाह होंगे | बाज़ चहरे | सफ़ेद होंगे | दिन | 105 | बड़ा | अ़ज़ाब |

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۚ اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने ईमान | बाद | क्या तुम ने कुफ़्र किया | उन के चहरे | सियाह हुए | लोग | पस जो |

فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝١٠٦ وَاَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के चहरे | सफ़ेद होंगे | वह लोग जो | और अलबत्ता | 106 | कुफ़्र करते | तुम थे | क्यों कि | अज़ाब | तो चखो |

فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ۗ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝١٠٧ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की आयात | यह | 107 | हमेशा रहेंगे | उस में | वह | अल्लाह की रहमत | सो - में |

نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۗ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝١٠٨

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 108 | जहान वालों के लिए | कोई ज़ुल्म | चाहता | अल्लाह | और नहीं | ठीक ठीक | आप पर | हम पढ़ते हैं वह |

ع ١١ ٨ ٢

وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۱۰۹ ع

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अल्लाह के लिए जो | आस्मानों में | और जो | ज़मीन में | और अल्लाह की तरफ़ | लौटाए जाएंगे | तमाम काम | 109 |

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम हो | बेहतरीन | उम्मत | भेजी गई | लोगों के लिए | तुम हुक्म करते हो | अच्छे कामों का |

وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ وَلَوْ اٰمَنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और मना करते हो | से | बुरे काम | और ईमान लाते हो | अल्लाह पर | और अगर | ईमान ले आते |

اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अहले किताब | तो था | बेहतर | उन के लिए | उन से | ईमान वाले | और उन के अक्सर |

الْفٰسِقُوْنَ ۱۱۰ لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّاۤ اَذًى ؕ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ الْاَدْبَارَ ۟

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नाफ़रमान | 110 | हरगिज़ न | बिगाड़ सकेंगे तुम्हारा | सिवाए | सताना | और अगर | वह तुम से लड़ेंगे | वह तुम्हें पीठ दिखाएंगे | पीठ (जमा) |

ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ۱۱۱ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर | उन की मदद न होगी | 111 | चस्पां कर दी गई | उन पर | ज़िल्लत | जहां कहीं |

ثُقِفُوْۤا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह पाए जाएं | सिवाए | उस (अ़हद) | अल्लाह से | और उस (अ़हद) | लोगों से | वह लौटे | ग़ज़ब के साथ |

مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह से (के) | और चस्पां कर दी गई | उन पर | मोहताजी | यह | इस लिए कि वह | थे |

يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ؕ ذٰلِكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| इन्कार करते | आयतें | अल्लाह | और क़त्ल करते थे | नबी (जमा) | नाहक़ | यह |

بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۱۱۲ ق لَيْسُوْا سَوَآءً ؕ مِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस लिए | उन्हों ने नाफ़रमानी की | और थे | हद से बढ़ जाते | 112 | नहीं | बराबर | से (में) |

اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّيْلِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अहले किताब | एक जमाअ़त | क़ाइम | वह पढ़ते हैं | अल्लाह की आयात | औक़ात - रात |

وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ ۱۱۳ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह | सिज्दा करते हैं | 113 | ईमान रखते हैं | अल्लाह पर | और दिन | आख़िरत |

وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और हुक्म करते हैं | अच्छी बात का | और मना करते हैं | से | बुरे काम | और वह दौड़ते हैं |

فِى الْخَيْرٰتِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۱۱۴ وَمَا يَفْعَلُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | नेक काम | और यही लोग | से | नेकोकार (जमा) | 114 | और जो | वह करेंगे |

مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ۱۱۵

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| से (कोई) | नेकी | तो हरगिज़ नाक़द्री न होगी उस की | और अल्लाह | जानने वाला | परहेज़गारों को | 115 |

और अल्लाह के लिए है जो आस्मानों और ज़मीन में है, और तमाम काम अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाएंगे। (109)

तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिए भेजी गई (पैदा की गई) तुम अच्छे कामों का हुक्म करते हो और बुरे कामों से मना करते हो और अल्लाह पर ईमान लाते हो, और अगर अहले किताब ईमान ले आते तो उन के लिए बेहतर था, उन में (कुछ) ईमान वाले हैं और उन में से अक्सर नाफ़रमान हैं। (110)

वह सताने के सिवा तुम्हारा हरगिज कुछ न बिगाड़ सकेंगे, और अगर वह तुम से लड़ेंगे तो वह तुम्हें पीठ दिखाएंगे, फिर उन की मदद न होगी, (111)

उन पर जिल्लत चस्पां कर दी गई, जहां कहीं वह पाए जाएं, सिवाए उस के कि अल्लाह के अ़हद में आ जाएं और लोगों के अहद में, वह लौटे अल्लाह के ग़ज़ब के साथ और उन पर चस्पां कर दी गई मोहताजी, यह इस लिए कि वह अल्लाह की आयात का इन्कार करते थे, और नबियों को नाहक़ क़त्ल करते थे, यह इस लिए (था) कि उन्हों ने नाफ़रमानी की और वह हद से बढ़ जाते थे। (112)

अहले किताब में सब बराबर नहीं, एक जमाअ़त (सीधी राह पर) क़ाइम है, और रात के औक़ात में, अल्लाह की आयात पढ़ते हैं, और वह सिज्दा करते हैं। (113)

वह ईमान रखते हैं अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर, और वह अच्छी बात का हुक्म करते हैं और बुरे काम से रोकते हैं और वह नेक कामों में दौड़ते हैं, और यही लोग नेकोकारों में से हैं। (114)

और वह जो करेंगे कोई नेकी तो हरगिज उस की नाक़द्री न होगी, और अल्लाह परहेज़गारों को जानने वाला है। (115)

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया, हरगिज़ अल्लाह के आगे उन के माल और न उन की औलाद कुछ भी काम आएंगे, और यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (116)

उन की मिसाल जो ख़र्च करते हैं इस दुन्या में ऐसी है जैसे हवा हो, उस में पाला हो, वह जा लगे खेती को उस क़ौम की जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया, फिर उस को तबाह कर दे, अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वह अपनी जानों पर खुद ज़ुल्म करते हैं। (117)

ऐ ईमान वालो! अपनों के सिवा किसी को राजदार न बनाओ वह तुम्हारी ख़राबी में कमी नहीं करते, वह चाहते हैं कि तुम तक्लीफ़ पाओ, (उन की) दुश्मनी ज़ाहिर हो चुकी है उन के मुंह से, और जो उन के सीनों में छुपा हुआ है वह (उस से भी) बड़ा है, हम ने तुम्हारे लिए आयात खोल कर बयान कर दी हैं अगर तुम अक़्ल रखते हो। (118)

सुन लो! तुम वह लोग हो जो उन को दोस्त रखते हो और वह तुम्हें दोस्त नहीं रखते और तुम सब किताबों पर ईमान रखते हो, और जब तुम से मिलते हैं तो कहते हैं हम ईमान लाए, और जब अकेले होते हैं तो वह तुम पर गुस्से से उंगलियां चबाते हैं, कह दीजिए! तुम अपने गु़स्से में मर जाओ, बेशक अल्लाह दिल की बातों को (खूब) जानने वाला है। (119)

अगर तुम्हें कोई भलाई पहुँचे तो उन्हें बुरी लगती है, और अगर तुम्हें कोई बुराई पहुँचे तो वह उस से खुश होते हैं, और अगर तुम सब्र करो, और परहेज़गारी करो, तुम्हारा न बिगाड़ सकेगा उन का फ़रेब कुछ भी, बेशक जो कुछ वह करते हैं अल्लाह उसे घेरे हुए है,) (120)

और जब आप सुब्ह सवेरे निकले अपने घर से, मोमिनों को जंग के मोर्चों पर बिठाने लगे, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है, (121)

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की औलाद | और न | उन के माल | उन से (के) | हरगिज़ काम न आएगा | कुफ़्र किया | वह लोग जो | बेशक |

مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١١٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 116 | हमेशा रहेंगे | उस में | वह | आग (दोज़ख़) वाले | और यही लोग | कुछ | अल्लाह से (आगे) |

مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيْحٍ فِيْهَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | हवा | ऐसी - जैसे | दुन्या | जिन्दगी | इस | में | ख़र्च करते है | जो | मिसाल |

صِرٌّ اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَاَهْلَكَتْهُ ۭ وَمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और नही | फिर उस को हलाक कर दे | जानें अपनी | उन्हों ने ज़ुल्म किया | क़ौम | खेती | वह जा लगे | पाला |

ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो ईमान लाए (ईमान वालो) | ऐ | 117 | वह ज़ुल्म करते है | अपनी जानें | बल्कि | अल्लाह | ज़ुल्म किया उन पर |

لَا تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًا ۭ وَدُّوْا مَا عَنِتُّمْ ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम तक्लीफ़ पाओ | कि | वह चाहते है | ख़राबी | वह कमी नही करते | सिवाए - अपने | से | दोस्त (राजदार) | न बनाओ |

قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاۗءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ښ وَمَا تُخْفِيْ صُدُوْرُھُمْ اَكْبَرُ ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बड़ा | उन के सीने | छुपा हुआ | और जो | उन के मुँह | से | दुश्मनी | अलबत्ता ज़ाहिर हो चुकी |

قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿١١٨﴾ ھٰٓاَنْتُمْ اُولَاۗءِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग | सुन लो - तुम | 118 | अक़्ल रखते | तुम हो | अगर | आयात | तुम्हारे लिए | हम ने खोल कर बयान कर दिया |

تُحِبُّوْنَھُمْ وَلَا يُحِبُّوْنَكُمْ وَتُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ كُلِّهٖ ۚ وَاِذَا لَقُوْكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह तुम से मिलते हैं | और जब | सब | किताब पर | और तुम ईमान रखते हो | वह दोस्त रखते है तुमहें | और नही | तुम दोस्त रखते हो उन को |

قَالُوْٓا اٰمَنَّا ٻ وَاِذَا خَلَوْا عَضُّوْا عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ۭ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गुस्से | से | उंगलियाँ | तुम पर | वह काटते है | अकेले होते है | और जब | हम ईमान लाए | कहते है |

قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١١٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 119 | सीने वाली (दिल की बातें) | जानने वाला | बेशक अल्लाह | अपने गुस्से में | तुम मर जाओ | कह दीजिए |

اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْھُمْ ۡ وَاِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَّفْرَحُوْا بِهَا ۭ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से | वह खुश होते है | कोई बुराई | तुम्हें पहुँचे | और अगर | उन्हें बुरी लगती है | कोई भलाई | पहुँचे तुम्हें | अगर |

وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُھُمْ شَـيْـــًٔا ۭ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कुछ | उन का फ़रेब | न बिगाड़ सकेगा तुम्हारा | और परहेज़गारी करो | तुम सब्र करो | और अगर |

اِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿١٢٠﴾ ۧ وَاِذْ غَدَوْتَ مِنْ اَھْلِكَ ١٢ ع ١١ ٣

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने घर | से | आप सुब्ह सवेरे निकले | और जब | 120 | घेरे हुए है | वह करते है | जो कुछ | अल्लाह | बेशक |

تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِيْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٢١﴾ ۙ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 121 | जानने वाला | सुनने वाला | और अल्लाह | जंग के | ठिकाने | मोमिन (जमा) | बिठाने लगे |

اِذْ هَمَّتْ طَّآىِٕفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَا ۙ وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ۗ وَعَلَى اللّٰهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अल्लाह पर | उनका मददगार | और अल्लाह | हिम्मत हार दें | कि | तुम से | दो गिरोह | इरादा किया | जब |

فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٢﴾ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कमज़ोर | जबकि तुम | बद्र में | अल्लाह | मदद कर चुका तुम्हारी | और अलबत्ता | 122 | मोमिन | चाहिए भरोसा करें |

فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢٣﴾ اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मोमिनों को | कहने लगे | जब आप | 123 | शुक्रगुज़ार हो | ताकि तुम | अल्लाह | तो डरो |

اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓىِٕكَةِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़रिश्ते | से | तीन हज़ार से | तुम्हारा रब | मदद करे तुम्हारी | कि | क्या काफ़ी नहीं तुम्हारे लिए |

مُنْزَلِيْنَ ﴿١٢٤﴾ بَلٰٓى ۙ اِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़ौरन - वह | से | और तुम पर आएं | और परहेज़गारी करो | तुम सब्र करो | अगर | क्यों नहीं | 124 | उतारे हुए |

الربع

هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓىِٕكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ﴿١٢٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 125 | निशान ज़दा | फ़रिश्ते | से | पाँच हज़ार | तुम्हारा रब | मदद करेगा तुम्हारी | यह |

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ وَلِتَطْمَىِٕنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ۗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से | तुम्हारे दिल | और इस लिए कि इत्मीनान हो | तुम्हारे लिए | ख़ुशख़बरी | मगर (सिर्फ़) | अल्लाह | किया - यह | और नहीं |

وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿١٢٦﴾ لِيَقْطَعَ طَرَفًا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गिरोह | ताकि काट डाले | 126 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | अल्लाह के पास | से | मगर (सिवाए) | मदद | और नहीं |

مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَآىِٕبِيْنَ ﴿١٢٧﴾ لَيْسَ لَكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं - आप (स) के लिए | 127 | नामुराद | तो वह लौट जाएं | उन्हें ज़लील करे | या | उन्हों ने कुफ़्र किया | वह लोग जो | से |

مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ اَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١٢٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 128 | ज़ालिम (जमा) | क्यों कि वह | उन्हें अज़ाब दे | या | उन की | ख़्वाह तौबा कुबूल कर ले | कुछ | काम (दख़्ल) | से |

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| चाहे | जिस को | वह बख़्श दे | ज़मीन में | और जो | आस्मानों में | और अल्लाह के लिए जो |

١٣ ع ٩ ٤

وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢٩﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | ऐ | 129 | मेहरबान | बख़्शने वाला | और अल्लाह | चाहे | जिस | और अज़ाब दे |

اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰٓوا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۠ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | और डरो | दुगना हुआ (चौगना) | दुगना | सूद | न खाओ | ईमान लाए (ईमान वाले) |

لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٣٠﴾ وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْٓ اُعِدَّتْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तैयार की गई | जो कि | आग | और - डरो | 130 | फ़लाह पाओ | ताकि तुम |

لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿١٣١﴾ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿١٣٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 132 | रह्म किया जाए | ताकि तुम पर | और रसूल | अल्लाह | और हुक्म मानो तुम | 131 | काफ़िरों के लिए |

जब तुम में से दो गिरोहों ने इरादा किया कि हिम्मत हार दें, और अल्लाह उन का मददगार था, और अल्लाह पर चाहिए कि मोमिन भरोसा करें। (122)

और अलबत्ता अल्लाह तुम्हारी बद्र में मदद कर चुका है, जबकि तुम कमज़ोर (समझे जाते) थे, तो अल्लाह से डरो ताकि तुम शुक्रगुज़ार हो। (123)

जब आप मोमिनों को कहते थे क्या तुम्हारे लिए यह काफ़ी नहीं? कि तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करे तीन हज़ार फ़रिश्तों से उतारे हुए। (124)

क्यों नहीं अगर तुम सब्र करो, और परहेज़गारी करो, और वह तुम पर फ़ौरन चढ़ आएं तो तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करेगा पाँच हज़ार निशान ज़दा फ़रिश्तों से। (125)

और यह अल्लाह ने सिर्फ़ तुम्हारी ख़ुशख़बरी के लिए किया और इस लिए कि उस से तुम्हारे दिलों को इत्मीनान हो, और नहीं मदद मगर (सिर्फ़) अल्लाह के पास से है जो ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (126)

ताकि वह उन लोगों में से एक गिरोह को काट डाले जिन्हों ने कुफ़्र किया, या उन्हें ज़लील कर दे तो वह नामुराद लौट जाएं। (127)

आप (स) का उस में दख़्ल नहीं कुछ भी, ख़्वाह (अल्लाह) उन की तौबा कुबूल करे या उन्हें अज़ाब दे, क्यों कि वह ज़ालिम हैं। (128)

और अल्लाह ही के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और जिस को चाहे बख़्श दे और अज़ाब दे जिस को चाहे, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (129)

ईमान वालो! न खाओ सूद, दुगना, चौगना, और अल्लाह से डरो, ताकि तुम फ़लाह पाओ। (130)

और डरो उस आग से जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है। (131)

और तुम अल्लाह और रसूल (स) का हुक्म मानो ताकि तुम पर रह्म किया जाए। (132)

और दौड़ो अपने रब की बख़्शिश और जन्नत की तरफ़, जिस का अर्ज़ आस्मानों और ज़मीन (के बराबर) है, तैयार की गई है परहेज़गारों के लिए। (133)

जो ख़र्च करते हैं ख़ुशी (ख़ुशहाली) और तक्लीफ़ में, और पी जाते हैं गुस्सा, और मुआफ़ कर देते हैं लोगों को, और अल्लाह दोस्त रखता है एहसान करने वालों को। (134)

और वह लोग जो बेहयाई करें या अपने तईं कोई ज़ुल्म कर बैठें, तो वह अल्लाह को याद करें, फिर अपने गुनाहों के लिए बख़्शिश मांगें, और कौन गुनाह बख़्शता है अल्लाह के सिवा? और जो उन्हों ने किया उस पर न अड़ें, और वह जानते हैं। (135)

ऐसे ही लोगों की जज़ा उन के रब की तरफ़ से बख़्शिश और बाग़ात हैं जिन के नीचे बहती हैं नहरें, वह उन में हमेशा रहेंगे, और कैसा अच्छा बदला है काम करने वालों का! (136)

गुज़र चुके हैं तुम से पहले तरीक़े (वाक़िआत) तो ज़मीन में चलो फिरो, फिर देखो कैसा अन्जाम हुआ झुटलाने वालों का! (137)

यह बयान है लोगों के लिए और हिदायत और नसीहत परहेज़गारों के लिए। (138)

और तुम सुस्त न पड़ो और ग़म न खाओ, और तुम ही ग़ालिब रहोगे अगर तुम ईमान वाले हो। (139)

अगर तुम को ज़ख़्म पहुँचा तो अलबत्ता पहुँचा है उस क़ौम को (भी) उस जैसा ही ज़ख़्म, और यह दिन हैं हम लोगों के दरमियान बारी बारी बदलते रहते हैं, और ताकि अल्लाह मालूम कर ले उन लोगों को जो ईमान लाए, और तुम में से (बाज़ को) शहीद बनाए (दरजाए शहादत दे), और अल्लाह ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता। (140)

وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मान (जमा) | उस का अर्ज़ | और जन्नत | अपना रब | से | बख़्शिश | तरफ़ | और दौड़ो |

وَالْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٣﴾ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़ुशी में | ख़र्च करते हैं | जो लोग | 133 | परहेज़गारों के लिए | तैयार की गई | और ज़मीन |

وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ۭ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| लोग | से | और मुआफ़ करते हैं | गुस्सा | और पी जाते हैं | और तक्लीफ़ |

وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣٤﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़ुल्म करें | या | कोई बेहयाई | वह करें | जब | और वह लोग जो | 134 | एहसान करने वाले | दोस्त रखता है | और अल्लाह |

اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۠ وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| गुनाह | बख़्शता है | और कौन | अपने गुनाहों के लिए | फिर बख़्शिश मांगें | वह अल्लाह को याद करें | अपने तईं |

اِلَّا اللّٰهُ ڞ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰي مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 135 | जानते हैं | और वह | उन्हों ने किया | जो | पर | वह अड़ें | और न | अल्लाह के सिवा |

اُولٰۗىِٕكَ جَزَاۗؤُھُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّھِمْ وَجَنّٰتٌ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और बाग़ात | उन का रब | से | बख़्शिश | उन की जज़ा | यही लोग |

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَنِعْمَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और कैसा अच्छा | उस में | हमेशा रहेंगे | नहरें | उस के नीचे | से | बहती हैं |

اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿١٣٦﴾ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो चलो फिरो | वाक़िआत | तुम से पहले | गुज़र चुकी | 136 | काम करने वाले | बदला |

فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٣٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 137 | झुटलाने वाले | अन्जाम | हुआ | कैसा | फिर देखो | ज़मीन में |

ھٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَھُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 138 | परहेज़गारों के लिए | और नसीहत | और हिदायत | लोगों के लिए | बयान | यह |

وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 139 | ईमान वाले | अगर तुम हो | ग़ालिब | और तुम | और ग़म न खाओ | और सुस्त न पड़ो |

اِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ۭ وَتِلْكَ الْاَيَّامُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अय्याम | और यह | उस जैसा | ज़ख़्म | क़ौम | पहुँचा | तो अलबत्ता | ज़ख़्म | तुम्हें पहुँचा | अगर |

نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ईमान लाए | जो लोग | अल्लाह | और ताकि मालूम कर ले | लोगों के दरमियान | हम बारी बारी बदलते हैं इस को |

وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَاۗءَ ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٤٠﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 140 | ज़ालिम (जमा) | दोस्त नहीं रखता | और अल्लाह | शहीद (जमा) | तुम से | और बनाए |

وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٤١﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 141 | काफ़िर (जमा) | और मिटा दे | ईमान लाए | जो लोग | अल्लाह | और ताकि पाक साफ़ कर दे |

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिहाद करने वाले | जो लोग | अल्लाह ने मालूम किया | और अभी नहीं | जन्नत | तुम दाखिल होगे | कि | क्या तुम समझते हो? |

مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٢﴾ وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | मौत | तुम तमन्ना करते थे | और अलबत्ता | 142 | सब्र करने वाले | और मालूम किया | तुम में से |

ع ١٣ ١٤ ٥ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۠ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿١٤٣﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 143 | देखते हो | और तुम | तो अब तुम ने उसे देख लिया | तुम उस से मिलो | कि | क़ब्ल |

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۭ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रसूल (जमा) | उन से पहले | अलबत्ता गुज़रे | एक रसूल | मगर (तो) | मुहम्मद (स) | और नहीं |

اَفَا۟ىِٕنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ۭ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर जाए | और जो | अपनी एड़ियों पर | तुम फिर जाओगे | क़त्ल हो जाएं | या | वह वफ़ात पा लें | क्या फिर अगर |

عَلٰي عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْــــًٔا ۭ وَسَيَجْزِي اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 144 | शुक्र करने वाले | अल्लाह | और जल्द जज़ा देगा | कुछ भी | अल्लाह | तो हरगिज़ न बिगाड़ेगा | अपनी एड़ियों पर |

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ۭ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुक़र्ररा वक़्त | लिखा हुआ | अल्लाह | हुक्म से | बग़ैर | वह मरे | कि | किसी शख़्स के लिए | और नहीं |

وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ وَمَنْ يُّرِدْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चाहेगा | और जो | उस से | हम देंगे उस को | दुन्या | इन्आम | चाहेगा | और जो |

ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۭ وَسَنَجْزِي الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٥﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 145 | शुक्र करने वाले | और हम जल्द जज़ा देंगे | उस से | हम देंगे उस को | आख़िरत | बदला |

وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सुस्त पड़े | पस न | बहुत | अल्लाह वाले | उन के साथ | लड़े | नबी | और बहुत से |

لِمَآ اَصَابَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا ۭ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और न दब गए | उन्हों ने कमज़ोरी की | और न | अल्लाह की राह | में | उन्हें पहुँचे | ब सबब - जो |

وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٦﴾ وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّآ اَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | सिवाए | उन का कहना | और न था | 146 | सब्र करने वाले | दोस्त रखता है | और अल्लाह |

قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْلَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْٓ اَمْرِنَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हमारे काम में | और हमारी ज़ियादती | हमारे गुनाह | बख़्शदे हम को | ऐ हमारे रब | उन्हों ने दुआ की |

وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَي الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٤٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 147 | काफ़िर (जमा) | क़ौम | पर | और हमारी मदद फ़रमा | हमारे क़दम | और साबित रख |

और ताकि अल्लाह पाक साफ़ कर दे उन लोगों को जो ईमान लाए, और मिटा दे काफ़िरों को। (141)

क्या तुम यह समझते हो? कि तुम जन्नत में दाखिल होगे और अभी अल्लाह ने मालूम नहीं किया (इम्तिहान लिया) जो तुम में से जिहाद करने वाले हैं और सब्र करने वाले हैं। (142)

और अलबत्ता तुम उस से मिलने से क़ब्ल मौत की तमन्ना करते थे, तो अब तुम ने उसे (मौत को) देख लिया और तुम उसे (अपनी आँखों से) देख रहे हो। (143)

और मुहम्मद (स) तो एक रसूल हैं, अलबत्ता गुजर चुके हैं उन से पहले बहुत से रसूल, फिर अगर वह वफ़ात पा लें या क़त्ल हो जाएं तो क्या तुम अपनी एड़ियों पर (उलटे पाऊँ) लौट जाओगे? और जो अपनी एड़ियों पर (उलटे पाऊँ) फिर जाए तो वह हरगिज़ अल्लाह का कुछ न बिगाड़ेगा, और अल्लाह जल्द जजा देगा शुक्र करने वालों को। (144)

और किसी शख़्स के लिए (मुमकिन) नहीं कि वह अल्लाह के हुक्म के बग़ैर मर जाए, लिखा हुआ है एक मुक़र्ररा वक़्त, और जो दुन्या का इन्आम चाहेगा हम उसे उस में से दे देंगे, और जो चाहेगा आख़िरत का बदला हम उसे उस में से देंगे, और हम शुक्र करने वालों को जल्द जज़ा देंगे। (145)

और बहुत से नबी (हुए हैं) उन के साथ (मिल कर) बहुत से अल्लाह वाले लड़े, पस वह सुस्त न पड़े (उन मुसीबतों) के सबब जो उन्हें अल्लाह की राह में पहुँची और न उन्हों ने कमज़ोरी (ज़ाहिर) की, और न दब गए, और अल्लाह सब्र करने वालों को दोस्त रखता है। (146)

और उन का कहना न था उस के सिवाए कि उन्हों ने दुआ की, ऐ हमारे रब! हमें बख्शदे हमारे गुनाह, और हमारी जियादती हमारे काम में, और साबित रख हमारे कदम, और काफ़िरों की कौम पर हमारी मदद फ़रमा। (147)

तो अल्लाह ने उन्हें इन्आम दिया दुन्या का और आख़िरत का अच्छा इन्आम, और अल्लाह एहसान करने वालों को दोस्त रखता है। (148)

ऐ ईमान वालो! अगर तुम काफ़िरों का कहा मानोगे तो वह तुम्हें एड़ियों पर (उलटे पाऊँ) फेर देंगे फिर तुम घाटे में पलट जाओगे। (149)

बल्कि अल्लाह तुम्हारा मददगार है और वह सब से बेहतर मददगार है। (150)

हम अन्क़रीब काफ़िरों के दिलों में रुअब डाल देंगे इस लिए कि उन्हों ने अल्लाह का शरीक किया जिस की उस ने कोई सनद नहीं उतारी, और उन का ठिकाना दोज़ख़ है, और बुरा ठिकाना है ज़ालिमों का। (151)

और अलबत्ता अल्लाह ने तुम से अपना वादा सच्चा कर दिखाया जब तुम उन्हें उस के हुक्म से क़त्ल करने लगे यहां तक कि जब तुम ने बुज़दिली की और काम में झगड़ा किया और उस के बाद नाफ़रमानी की, जबकि तुम्हें दिखाया जो तुम चाहते थे, तुम में से कोई दुन्या चाहता था, और तुम में से कोई आख़िरत चाहता था, फिर उस ने तुम्हें उन से फेर दिया ताकि तुम्हें आज़माए, और तहक़ीक़ उस ने तुम्हें मुआफ़ कर दिया, और अल्लाह मोमिनों पर फ़ज़्ल करने वाला है। (152)

जब तुम (मुँह उठा कर) चढ़ते जाते थे और किसी को पीछे मुड़ कर न देखते थे और रसूल (स) तुम्हारे पीछे से तुम्हें पुकारते थे, फिर तुम्हें ग़म पर ग़म पहुँचा, ताकि तुम रंज न करो उस पर जो (तुम्हारे हाथ से) निकल गया और न (उस पर) जो तुम्हें पेश आए, और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (153)

فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ؕ

तो उन्हें दिया | अल्लाह | इन्आम | दुन्या | और अच्छा | इन्आम-ए-आख़िरत

وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٤٨﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ ع ١٥ ٥ ٦

और अल्लाह | दोस्त रखता है | एहसान करने वाले | 148 | ऐ | लोग जो | ईमान लाए | अगर

تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا

तुम कहा मानोगे | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | वह तुम्हें फेर देंगे | पर | तुम्हारी एड़ियां | फिर तुम पलट जाओगे

خٰسِرِيْنَ ﴿١٤٩﴾ بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ﴿١٥٠﴾

घाटे में | 149 | बल्कि | अल्लाह | तुम्हारा मददगार | और वह | बेहतर | मददगार (जमा) | 150

سَنُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَاۤ اَشْرَكُوْا

अन्क़रीब हम डाल देंगे | में | दिल (जमा) | जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | रुअब | इस लिए कि उन्हों ने शरीक किया

بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ

अल्लाह का | जिस | नहीं उतारी | उस की | कोई सनद | और उन का ठिकाना | दोज़ख़

وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٥١﴾ وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗۤ

और बुरा | ठिकाना | ज़ालिम (जमा) | 151 | और अलबत्ता सच्चा कर दिया तुम से | अल्लाह | अपना वादा

اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰۤى اِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ

जब | तुम क़त्ल करने लगे उन्हें | उस के हुक्म से | यहां तक कि | जब | तुम ने बुज़दिली की | और झगड़ा किया

فِى الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ؕ

काम में | और तुम ने नाफ़रमानी की | उस के बाद | जब तुम्हें दिखाया | जो | तुम चाहते थे

مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ

तुम से | जो चाहता था | दुन्या | और तुम से | जो चाहता था | आख़िरत

ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ؕ

फिर | तुम्हें फेर दिया | उन से | ताकि तुम्हें आज़माए | और तहक़ीक़ | मुआफ़ किया | तुम से (तुम्हें)

وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥٢﴾ اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا

और अल्लाह | फ़ज़्ल करने वाला | पर | मोमिन (जमा) | 152 | जब | तुम चढ़ते थे | और न

تَلْوٗنَ عَلٰۤى اَحَدٍ وَّالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ فِيْۤ اُخْرٰىكُمْ

मुड़ कर देखते थे | किसी को | और रसूल (स) | तुम्हें पुकारते थे | तुम्हारे पीछे से

فَاَثَابَكُمْ غَمًّاۢ بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ

फिर तुम्हें पहुँचाया | ग़म पर ग़म | ताकि न | तुम रंज करो | पर | जो तुम से निकल गया

وَلَا مَاۤ اَصَابَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٥٣﴾

और न | जो | तुम्हें पेश आए | और अल्लाह | बाख़बर | उस से जो तुम करते हो | 153

ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ ۙ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम में से | एक जमाअ़त | ढांक लिया | ऊंघ | अम्न | ग़म | बाद | तुम पर | उस ने उतारा | फिर |

وَطَآئِفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| थे हक़ीक़त | अल्लाह के बारे में | वह गुमान करते थे | अपनी जानें | उन्हें फ़िक्र पड़ी थी | और एक जमाअ़त |

ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ۭ يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ۭ قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| काम | कि | आप कह दें | कुछ | काम | से | हमारे लिए | क्या | वह कहते थे | जाहिलियत | गुमान |

كُلَّهٗ لِلّٰهِ ۭ يُخْفُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ ۭ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर होता | वह कहते हैं | आप के लिए (पर) | ज़ाहिर नहीं करते | जो | अपने दिल | में | वह छुपाते हैं | तमाम - अल्लाह के लिए |

لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ۭ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِيْ بُيُوْتِكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने घर (जमा) | में | अगर तुम होते | आप कह दें | यहां | हम न मारे जाते | कुछ | से - काम | हमारे लिए |

لَبَرَزَ الَّذِيْنَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ۚ وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | और ताकि आज़माए | अपनी क़त्लगाह (जमा) | तरफ़ | मारा जाना | उन पर | लिखा था | ज़रूर निकल खड़े होते वह लोग |

مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जानने वाला | और अल्लाह | तुम्हारे दिल | में | जो | और ताकि साफ़ कर दे | तुम्हारे सीनों में | जो |

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١٥٤﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۙ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आमने सामने हुईं दो जमाअ़तें | दिन | तुम में से | पीठ फेरेंगे | जो लोग | बेशक | 154 | सीनों वाले (दिलों के भेद) |

اِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ۚ وَلَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ۭ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन से | अल्लाह | और अलबत्ता मुआफ़ कर दिया | जो उन्हों ने कमाया (आमाल) | बाज़ की वजह से | शैतान | दरहक़ीक़त उन को फुसलादिया |

ع ١٦ ٧ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٥٥﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| न हो जाओ | ईमान वालो (ईमान लाए) | जो लोग | ऐ | 155 | हिल्म वाला | बख़्शने वाला | अल्लाह | बेशक |

كَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ اِذَا ضَرَبُوْا فِي الْاَرْضِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह सफ़र करें + ज़मीन (राह) में | जब | अपने भाईयों को | और वह कहते हैं | काफ़िर | उन लोगों की तरह |

اَوْ كَانُوْا غُزًّى لَّوْ كَانُوْا عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا وَمَا قُتِلُوْا ۚ لِيَجْعَلَ اللّٰهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | ताकि बना दे | और न मारे जाते | वह मरते | न | हमारे पास | अगर वह होते | जिहाद में हों | या |

ذٰلِكَ حَسْرَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۭ وَاللّٰهُ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۭ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और मारता है | ज़िन्दा करता है | और अल्लाह | उन के दिल | में | हस्रत | यह - उस |

وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١٥٦﴾ وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की राह | में | तुम मारे जाओ | और अलबत्ता अगर | 156 | देखने वाला | तुम करते हो | जो कुछ | और अल्लाह |

اَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿١٥٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 157 | वह जमा करते हैं | उस से जो | बेहतर | और रह्मत | अल्लाह | से | यक़ीनन बख़्शिश | या तुम मर जाओ |

फिर उस ने तुम पर ग़म के बाद अम्न ऊंघ (की सूरत में) उतारी, एक जमाअ़त को ढांक लिया तुम में से, और एक जमाअ़त को अपनी जान की फ़िक्र पड़ी थी, वह अल्लाह के बारे में बेहक़ीक़त गुमान करते थे जाहिलियत के गुमान, वह कहते थे क्या कोई काम कुछ हमारे लिए (हमारे इख़्तियार में) है? आप (स) कह दें, कि तमाम काम अल्लाह के लिए (अल्लाह के इख़्तियार में) हैं, वह अपने दिलों में छुपाते हैं जो आप के लिए (आप पर) ज़ाहिर नहीं करते, वह कहते हैं अगर कुछ काम हमारे लिए (हमारे इख़्तियार में) होता तो हम यहां न मारे जाते, आप कह दें अगर तुम अपने घरों में होते तो जिन पर (जिन की क़िस्मत में) मारा जाना लिखा था वह ज़रूर निकल खड़े होते अपनी क़त्लगाहों की तरफ़, ताकि अल्लाह आज़माए जो तुम्हारे सीनों में है, और ताकि साफ़ कर दे जो तुम्हारे दिलों में है, और अल्लाह दिलों के भेद खूब जानने वाला है। (154)

बेशक जो लोग तुम में से पीठ फेर गए, जिस दिन दो जमाअ़तें आमने सामने हुईं, दरहक़ीक़त उन्हें शैतान ने फुसलाया उन के बाज़ आमाल की वजह से, और अलबत्ता अल्लाह ने उन्हें मुआफ़ कर दिया, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला बुर्दबार। (155)

ऐ ईमान वालो! तुम उन लोगों की तरह न हो जाओ जो काफ़िर हुए और वह कहते हैं अपने भाईयों को जब वह सफ़र करें ज़मीन में या जिहाद में हों, अगर वह होते हमारे पास तो वह न मरते और न मारे जाते, ताकि अल्लाह उस को हस्रत बना दे उन के दिलों में, और अल्लाह (ही) ज़िन्दा करता है और मारता है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह देखने वाला है। (156)

और अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ या तुम मर जाओ तो यक़ीनन बख़्शिश और रह्मत है अल्लाह की तरफ़ से (यह) उस से बेहतर है जो वह (दौलत) जमा करते हैं। (157)

और अगर तुम मर गए या मार दिए गए तो यक़ीनन अल्लाह की तरफ़ इकटठे किए जाओगे। (158)

पस अल्लाह की रहमत (ही) से है कि आप (स) उन के लिए नरम दिल हैं, और अगर तुन्दख़ू सख़्त दिल होते तो वह आप (स) के पास से मुन्तशिर हो जाते, पस आप (स) मुआफ़ कर दें उन्हें और उन के लिए बख़्शिश मांगें, और काम में उन से मशवरा कर लिया करें, फिर जब आप (स) (पुख़्ता) इरादा कर लें तो अल्लाह पर भरोसा करें, बेशक अल्लाह भरोसा करने वालों को दोस्त रखता है। (159)

अगर अल्लाह तुम्हारी मदद करे तो तुम पर कोई ग़ालिब आने वाला नहीं, और अगर वह तुम्हें छोड़ दे तो कौन है जो तुम्हारी मदद करे उस के बाद, और चाहिए कि ईमान वाले अल्लाह पर भरोसा करें। (160)

और नबी के लिए (शायान) नहीं कि वह छुपाए, और जो छुपाएगा वह अपनी छुपाई हुई चीज़ क़ियामत के दिन लाएगा, फिर पूरा पूरा पाएगा हर शख़्स जो उस ने कमाया (अ़मल किया) और वह ज़ुल्म नही किए जाएंगे। (161)

तो क्या जिस ने पैरवी की रज़ाए इलाही (अल्लाह की ख़ुशनूदी की) उस के मानिन्द है जो अल्लाह के ग़ुस्से के साथ लौटा? और उस का ठिकाना जहन्नम है, और (बहुत) बुरा ठिकाना है। (162)

उन के (मुख़तलिफ़) दर्जे हैं अल्लाह के पास, और वह जो कुछ करते हैं अल्लाह देखने वाला है। (163)

बेशक अल्लाह ने ईमान वालों (मोमिनों) पर एहसान किया जब उन में एक रसूल (स) भेजा, उन में से, वह उन पर उस की आयतें पढ़ता है, और उन्हें पाक करता है, और उन्हें किताब ओ हिक्मत सिखाता है, और बेशक वह उस से क़ब्ल अलबत्ता खुली गुमराही में थे। (164)

क्या जब तुम्हें पहुँची कोई मुसीबत, अलबत्ता तुम उस से दो चंद पहुँचा चुके थे, तुम कहते हो यह कहां से आई? आप कह दें वह तुम्हारे अपने (ही) पास से, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। (165)

وَلَىِٕنْ مُّتُّمْ اَوْ قُتِلْتُمْ لَاِالَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿١٥٨﴾ فَبِمَا رَحْمَةٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अगर | तुम मर गए | या | तुम मार दिए गए | यक़ीनन अल्लाह की तरफ़ | तुम इकटठे किए जाओगे | 158 | पस - से | रहमत |

مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ۠

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | अल्लाह | नरम दिल | उन के लिए | और अगर आप (स) होते | तुन्दख़ू | सख़्त दिल | तो वह मुन्तशिर हो जाते | से | आप (स) के पास |

فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِى الْاَمْرِ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आप (स) मुआफ़ कर दें | उन से (उन्हें) | और बख़्शिश मांगें | उन के लिए | और मशवरा करें उन से | में | काम |

فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ﴿١٥٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर जब | आप (स) इरादा कर लें | तो भरोसा करें | अल्लाह पर | बेशक | अल्लाह | दोस्त रखता है | भरोसा करने वाले | 159 |

اِنْ يَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِىْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर | वह मदद करे तुम्हारी | अल्लाह | तो नही ग़ालिब आने वाला | तुम पर | और अगर | वह तुम्हें छोड़ दे | तो कौन? | वह | जो कि |

يَنْصُرُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٦٠﴾ وَمَا كَانَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह तुम्हारी मदद करे | उस के बाद | और अल्लाह पर | चाहिए कि भरोसा करें | ईमान वाले | 160 | और नही | था - है |

لِنَبِىٍّ اَنْ يَّغُلَّ ؕ وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नबी के लिए | कि छुपाए | और जो | छुपाएगा | लाएगा | जो उस ने छुपाया | क़ियामत के दिन |

ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٦١﴾ اَفَمَنِ اتَّبَعَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर | पूरा पाएगा | हर शख़्स | जो | उस ने कमाया | और वह | ज़ुल्म न किए जाएंगे | 161 | तो क्या जिस | पैरवी की |

رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْۢ بَآءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रज़ा (ख़ुशनूदी) | अल्लाह | मानिन्द - जो | लौटा | ग़ुस्से के साथ | अल्लाह के | और उस का ठिकाना | जहन्नम |

وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦٢﴾ هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बुरा | ठिकाना | 162 | वह - उन | दर्जे | पास | अल्लाह | और अल्लाह | देखने वाला | जो |

يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٣﴾ لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह करते हैं | 163 | अलबत्ता बेशक | एहसान किया | अल्लाह | पर | ईमान वाले (मोमिन) | जब भेजा | उन में | एक रसूल |

مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | उन की जानें (उन के दरमियान) | वह पढ़ता है | उन पर | उस की आयतें | और उन्हें पाक करता है | और उन्हें सिखाता है | किताब |

وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٦٤﴾ النصف

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और हिक्मत | और बेशक | वह थे | उस से क़ब्ल | अलबत्ता - में | गुमराही | खुली | 164 |

اَوَلَمَّآ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَدْ اَصَبْتُمْ مِّثْلَيْهَا ۙ قُلْتُمْ اَنّٰى هٰذَا ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या जब | तुम्हें पहुँची | कोई मुसीबत | अलबत्ता तुम ने पहुँचाई | उस से दो चंद | तुम कहते हो | कहां से यह? |

قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٦٥﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप कह दें | वह | से | पास | तुम्हारी जानें (अपने पास) | बेशक | अल्लाह | पर | हर | शै | क़ादिर | 165 |

وَمَا اَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٦٦﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 166 | ईमान वाले | और ताकि वह मालूम कर ले | अल्लाह | तो हुक्म से | दो जमाअतें | मुडभेड़ हुई | दिन | तुम्हें पहुँचा | और जो |

وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ۚ وَقِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| लड़ो | आओ | उन्हें | और कहा गया | मुनाफ़िक़ हुए | वह जो कि | और ताकि जान ले |

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوِ ادْفَعُوْا ۗ قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّاتَّبَعْنٰكُمْ ۗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़रूर तुम्हारा साथ देते | जंग | अगर हम जानते | वह बोले | दिफ़ाअ करो | या | अल्लाह की राह | में |

هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ اَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने मुँह से | वह कहते है | ब निसबत ईमान | उन से | ज़ियादा क़रीब | उस दिन | कुफ़्र के लिए (कुफ़्र से) | वह |

مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۗ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ﴿١٦٧﴾ اَلَّذِيْنَ قَالُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने कहा | वह लोग जो | 167 | वह छुपाते है | जो | ख़ूब जानने वाला | और अल्लाह | उन के दिलों में | जो नहीं |

لِاِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوْا لَوْ اَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا ۗ قُلْ فَادْرَءُوْا عَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | तुम हटा दो | कह दीजिए | वह न मारे जाते | वह हमारी मानते | अगर | और वह बैठे रहे | अपने भाईयों के बारे में |

اَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٦٨﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मारे गए | जो लोग | हरगिज़ ख़याल करो | और न | 168 | सच्चे | तुम हो | अगर | मौत | अपनी जानें |

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ۗ بَلْ اَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ﴿١٦٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 169 | वह रिज़्क़ दिए जाते हैं | अपना रब | पास | जिन्दा (जमा) | बल्कि | मुर्दा (जमा) | अल्लाह | रास्ता | में |

فَرِحِيْنَ بِمَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۙ وَيَسْتَبْشِرُوْنَ بِالَّذِيْنَ لَمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं | उन की तरफ़ से जो | और खुश वक़्त हैं | अपने फ़ज़्ल से | अल्लाह | उन्हें दिया | से - जो | ख़ुश |

وقف لازم

يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۙ اَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿١٧٠﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 170 | ग़मगीन होंगे | वह | और न | उन पर | कोई ख़ौफ़ | यह कि नहीं | उन के पीछे | से | उन से | मिले |

يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़ाया नही करता | अल्लाह | और यह कि | और फ़ज़्ल | अल्लाह | से | नेमत से | वह खुशियां मना रहे हैं |

ع ١٦ ١٧ ٨

اَجْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ ﴿١٧١﴾ اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ مِنْۢ بَعْدِ مَآ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | बाद | और रसूल | अल्लाह का | क़ुबूल किया | जिन लोगों ने | 171 | ईमान वाले | अजर |

نصف الثلثين ١٢ ع ٢

اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۛ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 172 | बड़ा | अजर | और परहेजगारी की | उन में से | उन्हों ने नेकी की | उन के लिए जो | ज़ख़्म | पहुँचा उन्हें |

اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस उन से डरो | तुम्हारे लिए | जमा किया है | लोग | कि | लोग | उन के लिए | कहा | वह लोग जो |

فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا ۖ وَّقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ﴿١٧٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 173 | कारसाज | और कैसा अच्छा | अल्लाह | हमारे लिए काफ़ी | और उन्हों ने कहा | ईमान | तो ज़ियादा हुआ उन का |

और तुम्हें जो (तक्लीफ़) पहुँची जिस दिन दो जमाअतों में मुडभेड़ हुई तो अल्लाह के हुक्म से (पहुँची) ताकि वह मालूम कर ले ईमान वालों को। (166)

और ताकि जान ले उन लोगों को जो मुनाफ़िक़ हुए, और उन्हें कहा गया आओ! अल्लाह की राह में लड़ो, या दिफ़ाअ़ करो, तो वह बोले अगर हम जंग जानते तो जरूर तुम्हारा साथ देते, वह उस दिन कुफ़्र से ज़ियादा क़रीब थे ब निसबत ईमान के, वह अपने मुँह से कहते हैं जो उन के दिलों में नहीं, और अल्लाह ख़ूब जानने वाला है जो वह छुपाते हैं। (167)

वह लोग जिन्हों ने अपने भाईयों के बारे में कहा और ख़ुद बैठे रहे अगर वह हमारी बात मानते तो वह न मारे जाते, कह दीजिए! तुम अपनी जानों से मौत को हटा दो, अगर तुम सच्चे हो। (168)

जो लोग अल्लाह की राह में मारे गए उन्हें हरगिज़ ख़याल न करो मुर्दा, बल्कि वह ज़िन्दा हैं अपने रब के पास से वह रिज़्क़ पाते हैं। (169)

ख़ुश हैं उस से जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया, और वह उन लोगों की तरफ़ से ख़ुश वक़्त हैं जो नही मिले उन से उन के पीछे, उन पर न कोई ख़ौफ़ है और न वह गमगीन होंगे। (170)

वह ख़ुशियां मना रहे हैं अल्लाह की नेमत और फ़ज़्ल से, और यह कि अल्लाह ज़ाया नही करता कि ईमान वालों का अजर। (171)

जिन लोगों ने अल्लाह और उस के रसूल का (हुक्म) क़ुबूल किया उस के बाद उन्हें ज़ख़्म पहुँचा उन में से जिन लोगों ने नेकी और परहेज़गारी की उन के लिए बड़ा अजर है। (172)

जिन्हें लोगों ने कहा कि लोगों ने तुम्हारे (मुक़ाबले के लिए सामान) जमा कर लिया है पस उन से डरो तो उन का ईमान जियादा हुआ, और उन्हों ने कहा हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है और वह कैसा अच्छा कारसाज़ है। (173)

फिर वह लौटें अल्लाह की नेमत और फ़ज़्ल के साथ, उन्हें कोई बुराई न पहुँची, और उन्हों ने पैरवी की रज़ाए इलाही की, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (174)

इस के सिवा नहीं कि शैतान तुम्हें डराता है अपने दोस्तों से, सो तुम उन से न डरो और मुझ से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। (175)

और आप को ग़मगीन न करें वह लोग जो कुफ़्र में दौड़ धूप करते हैं, यक़ीनन वह हरगिज अल्लाह का न बिगाड़ सकेंगे कुछ, अल्लाह चाहता है कि उन को आख़िरत में कोई हिस्सा न दे। और उन के लिए अजाब है बड़ा। (176)

बेशक जिन लोगों ने ईमान के बदले कुफ़्र मोल लिया वह हरगिज नहीं बिगाड़ सकते अल्लाह का कुछ, और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (177)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह हरगिज गुमान न करें कि हम जो उन्हें ढील दे रहे हैं यह उन के लिए बेहतर है, दरहक़ीक़त हम उन्हें ढील देते हैं ताकि वह गुनाह में बढ़ जाएं, और उन के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है। (178)

अल्लाह (ऐसा) नहीं है कि ईमान वालों को (इस हाल पर) छोड़ दे जिस पर तुम हो, यहां तक कि नापाक को पाक से जुदा कर दे, और अल्लाह (ऐसा) नहीं है कि तुम्हें ग़ैब की खबर दे, लेकिन अल्लाह अपने रसूलों में से जिस को चाहे चुन लेता है, तो तुम अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाओ, और अगर तुम ईमान लाओ और परहेज़गारी करो तो तुम्हारे लिए बड़ा अजर है। (179)

और वह लोग हरगिज़ यह ख़याल न करें, जो उस (माल) में बुख्ल करते हैं जो अल्लाह ने अपने फज़्ल से उन्हें दिया कि वह बेहतर है उन के लिए बल्कि वह उन के लिए बुरा है, जिस (माल) में उन्हों ने बुख्ल किया अ़न्क़रीब क़ियामत के दिन तौक़ (बना कर) पहनाया जाएगा, और अल्लाह ही वारिस है आस्मानों का और जमीन का, और जो तुम करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (180)

فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ سُوْٓءٌ ۙ وَّاتَّبَعُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने पैरवी की | कोई बुराई | उन्हें नही पहुँची | और फ़ज़्ल | अल्लाह | से | नेमत के साथ | फिर वह लौटे |

رِضْوَانَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ ﴿١٧٤﴾ اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शैतान | यह तुम्हें | इस के सिवा नही | 174 | बड़ा | फ़ज़्ल वाला | और अल्लाह | अल्लाह की रज़ा |

يُخَوِّفُ اَوْلِيَآءَهٗ ۠ فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 175 | ईमान वाले | तुम हो | अगर | और डरो मुझ से | उन से डरो | सो न | अपने दोस्त | डराता है |

وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْكُفْرِ ۚ اِنَّهُمْ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـــًٔا ۭ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुछ | अल्लाह | हरगिज़ न बिगाड़ सकेंगे | यक़ीनन वह | कुफ़्र में | दौड़ धूप करते हैं | जो लोग | आप को ग़मगीन करें | और न |

يُرِيْدُ اللّٰهُ اَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِى الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٦﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 176 | बड़ा | अ़ज़ाब | और उन के लिए | आख़िरत | में | कोई हिस्सा | उन को | दे | कि न | अल्लाह | चाहता है |

اِنَّ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـــًٔا ۚ وَلَهُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन के लिए | कुछ | अल्लाह | बिगाड़ सकते | हरगिज़ नही | ईमान के बदले | कुफ़्र | उन्हों ने मोल लिया | वह लोग जो | बेशक |

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٧﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّمَا نُمْلِىْ لَهُمْ خَيْرٌ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेहतर | उन्हें | हम ढील देते हैं | यह कि | जिन लोगों ने कुफ़्र किया | हरगिज़ गुमान करें | और न | 177 | दर्दनाक | अ़ज़ाब |

لِّاَنْفُسِهِمْ ۭ اِنَّمَا نُمْلِىْ لَهُمْ لِيَزْدَادُوْٓا اِثْمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٧٨﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 178 | ज़लील करने वाला | अ़ज़ाब | और उन के लिए | गुनाह | ताकि वह बढ़ जाएं | उन्हें | हम ढील देते हैं | दरहक़ीक़त | उन के लिए |

مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यहां तक कि | उस पर | तुम | जो | पर | ईमान वाले | कि छोड़े | अल्लाह | नहीं है |

يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ۭ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग़ैब | पर | कि तुम्हें ख़बर दे | अल्लाह | और नही है | पाक | से | नापाक | जुदा कर दे |

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِىْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۠ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उस के रसूल | अल्लाह पर | तो तुम ईमान लाओ | वह चाहे | जिस को | अपने रसूल | से | चुन लेता है | अल्लाह | और लेकिन |

وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٩﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हरगिज़ ख़याल करें | और न | 179 | बड़ा | अजर | तो तुम्हारे लिए | और परहेज़गारी करो | तुम ईमान लाओ | और अगर |

الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ۭ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | बेहतर | वह | अपने फ़ज़्ल से | अल्लाह | उन्हें दिया | में-जो | बुख्ल करते हैं | जो लोग |

بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ۭ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क़ियामत | दिन | उस में | उन्हों ने बुख्ल किया | जो | अन्क़रीब तौक़ पहनाया जाएगा | उन के लिए | बुरा | वह | बल्कि |

وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١٨٠﴾ ع ١٨ ٩

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 180 | बाख़बर | करते हो | जो तुम | और अल्लाह | और ज़मीन | आस्मानों | और अल्लाह के लिए मीरास |

وقف لازم

لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِيَآءُ ۘ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मालदार | और हम | फ़क़ीर | कि अल्लाह | कहा | जिन लोगों ने | क़ौल (बात) | अल्लाह | अलबत्ता सुन लिया |

سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| नाहक | नबी (जमा) | और उन का क़त्ल करना | जो उन्हों ने कहा | अब हम लिख रखेंगे |

وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿١٨١﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आगे भेजा | बदला - जो | यह | 181 | जलाने वाला | अज़ाब | तुम चखो | और हम कहेंगे |

اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٨٢﴾ ۚ اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कहा | जिन लोगों ने | 182 | बन्दों पर | ज़ुल्म करने वाला | नहीं | अल्लाह | और यह कि | तुम्हारे हाथ |

اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लाए हमारे पास | यहां तक कि | किसी रसूल पर | हम ईमान लाएंगे | कि न | हम से | अ़हद किया | अल्लाह | कि |

بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ؕ قُلْ قَدْ جَآءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِيْ بِالْبَيِّنٰتِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| निशानियों के साथ | मुझ से पहले | बहुत से रसूल | अलबत्ता तुम्हारे पास आए | आप कह दें | आग | जिसे खा ले | क़ुरबानी |

وَبِالَّذِيْ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٨٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 183 | सच्चे | तुम हो | अगर | तुम ने उन्हें क़त्ल किया | फिर क्यों | तुम कहते हो | और उस के साथ जो |

فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ جَآءُوْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह आए | आप से पहले | बहुत से रसूल | झुटलाए गए | तो अलबत्ता | वह झुटलाएं आप को | फिर अगर |

بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿١٨٤﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मौत | चखना | जान | हर | 184 | रौशन | और किताब | और सहीफ़े | खुली निशानियों के साथ |

وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ فَمَنْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| फिर जो | क़ियामत के दिन | तुम्हारे अजर | पूरे पूरे मिलेंगे | और बेशक |

زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दुन्या | ज़िन्दगी | और नही | पस मुराद को पहुँचा | जन्नत | और दाख़िल किया गया | दोज़ख़ | से | दूर किया गया |

اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿١٨٥﴾ لَتُبْلَوُنَّ فِيْٓ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۟

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अपनी जानें | अपने माल | में | तुम ज़रूर आज़माए जाओगे | 185 | धोका | सौदा | सिवाए |

وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तुम से पहले | किताब दी गई | वह लोग जिन्हें | से | और ज़रूर सुनोगे |

وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَذًى كَثِيْرًا ؕ

| | | | |
|---|---|---|---|
| बहुत | दुख देने वाली | जिन लोगों ने शिर्क किया (मुशरिक) | और - से |

وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿١٨٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 186 | काम (जमा) | हिम्मत | से | यह | तो बेशक | और परहेज़गारी करो | तुम सब्र करो | और अगर |

अलबत्ता अल्लाह ने उन की बात सुन ली जिन लोगों ने कहा कि अल्लाह फ़क़ीर है और हम मालदार हैं। अब हम लिख रखेंगे जो उन्हों ने कहा और उन का नबियों को नाहक़ क़त्ल करना, और कहेंगे चखो जलाने वाला अ़ज़ाब। (181)

यह उस का बदला है जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा और यह कि अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं। (182)

जिन लोगों ने कहा कि अल्लाह ने हम से अ़हद कर रखा है कि हम किसी रसूल पर ईमान न लाएंगे, यहां तक कि वह हमारे पास क़ुरबानी लाए जिसे आग खा ले, आप (स) कह दें अलबत्ता तुम्हारे पास मुझ से पहले बहुत से रसूल आए निशानियों के साथ, और उस के साथ भी जो तुम कहते हो, फिर क्यों तुम ने उन्हें क़त्ल किया? अगर तुम सच्चे हो, (183)

फिर अगर वह आप को झुटलाएं तो अलबत्ता झुटलाए गए हैं आप (स) से पहले बहुत से रसूल, जो आए खुली निशानियों के साथ, और सहीफ़े और रौशन किताब (ले कर)। (184)

हर जान को मौत (का ज़ाइक़ा) चखना है, और क़ियामत के दिन तुम्हारे अजर पूरे पूरे मिलेंगे, फिर जो कोई दोज़ख़ से दूर किया गया, और जन्नत में दाख़िल किया गया पस वह मुराद को पहुँचा, और दुन्या की ज़िन्दगी (कुछ) नहीं एक धोके के सौदे के सिवा। (185)

तुम अपने मालों और अपनी जानों में ज़रूर आज़माए जाओगे, और तुम ज़रूर सुनोगे उन लोगों से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई, और मुश्रिकों से (भी) दुख देने वाली (बातें) बहुत सी, और अगर तुम सब्र करो, और परहेज़गारी करो, तो बेशक यह बड़े हिम्मत के कामों में से है। (186)

और (याद करो) जब अल्लाह ने अहले किताब से अ़हद लिया कि तुम उसे लोगों के लिए ज़रूर बयान करना और न उसे छुपाना, उन्होंने उसे अपनी पीठ पीछे फेंक दिया, और उस के बदले थोड़ी क़ीमत हासिल की, तो कितना बुरा है जो वह खरीदते हैं! (187)

आप हरगिज़ न समझें जो लोग खुश होते हैं जो उन्होंने किया (अपने किए पर) और चाहते हैं कि उस पर उन की तारीफ़ की जाए जो उन्होंने नहीं किया, पस आप (स) उन्हें रिहा शुदा न समझें अ़ज़ाब से, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (188)

और अल्लाह के लिए है बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की, और अल्लाह हर शै पर क़ादिर है। (189)

बेशक पैदाइश में आस्मानों की और ज़मीन की, और रात दिन के आने जाने में अ़क़्ल वालों के लिए निशानियां हैं। (190)

जो लोग अल्लाह को खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर याद करते हैं, और ग़ौर करते हैं आस्मानों की और ज़मीन की पैदाइश में, ऐ हमारे रब! तू ने यह बेमक़सद पैदा नहीं किया, तू पाक है, तू बचा ले हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से। (191)

ऐ हमारे रब! तू ने जिस को दोज़ख़ में दाखिल किया तो ज़रूर तू ने उस को रुसवा किया, और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। (192)

ऐ हमारे रब! बेशक हम ने एक पुकारने वाले को सुना वह ईमान की तरफ़ पुकारता है कि अपने रब पर ईमान ले आओ, तो हम ईमान लाए, ऐ हमारे रब! तो हमें बख़्श दे हमारे गुनाह, और हम से हमारी बुराईयां दूर कर दे, और हमें नेकों के साथ मौत दे। (193)

وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उसे ज़रूर बयान कर देना | किताब दी गई | वह लोग जिन्हें | अ़हद | अल्लाह | लिया | और जब |

لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُوْنَهٗ ۚ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهٖ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हासिल की उस के बदले | अपनी पीठ (जमा) | पीछे | तो उन्होंने ने उसे फेंक दिया | छुपाना उसे | और न | लोगों के लिए |

ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ ﴿۱۸۷﴾ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जो लोग | आप हरगिज न समझें | 187 | वह खरीदते हैं | तो कितना बुरा है जो | थोड़ी | क़ीमत |

يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اَتَوْا وَّيُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस पर जो | उन की तारीफ़ की जाए | कि | और वह चाहते है | उन्होंने ने किया | उस पर जो | खुश होते हैं |

لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ وَلَهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और उन के लिए | अ़ज़ाब | से | रिहा शुदा | समझें आप उन्हें | पस न | उन्होंने ने नहीं किया |

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۸۸﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और अल्लाह | और ज़मीन | आस्मानों | बादशाहत | और अल्लाह के लिए | 188 | दर्दनाक | अ़ज़ाब |

ع ١٩ / ١٠ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۸۹﴾ اِنَّ فِىْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और ज़मीन | आस्मान (जमा) | पैदाइश | में | बेशक | 189 | क़ादिर | हर शै | पर |

وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِى الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۰﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 190 | अ़क़्ल वालों के लिए | निशानियां हैं | और दिन | रात | और आना जाना |

الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी करवटें | और पर | और बैठे | खड़े | अल्लाह | याद करते है | जो लोग |

وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِىْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नहीं | ऐ हमारे रब | और ज़मीन | आस्मानों | पैदाइश में | और वह ग़ौर करते हैं |

خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۱۹۱﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 191 | आग (दोज़ख़) | अ़ज़ाब | तू हमें बचा ले | तू पाक है | बे मक़सद | यह | तू ने पैदा किया |

رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़ालिमों के लिए | और नहीं | तू ने उस को रुसवा किया | तो ज़रूर | आग (दोज़ख़) | दाखिल किया | जो - जिस | बेशक तू | ऐ हमारे रब |

مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۱۹۲﴾ رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِىْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पुकारता है | पुकारने वाला | सुना | बेशक हम ने | ऐ हमारे रब | 192 | मददगार | कोई |

لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हमें | तो बख़्श दे | ऐ हमारे रब | सो हम ईमान लाए | अपने रब पर | कि ईमान ले आओ | ईमान के लिए |

ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ﴿۱۹۳﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 193 | नेकों के साथ | और हमें मौत दे | हमारी बुराईयां | और दूर कर दे हम से | हमारे गुनाह |

رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क़ियामत के दिन | और न रुसवा कर हमें | अपने रसूल (जमा) | पर (ज़रीआ) | तू ने हम से वादा किया | जो | और हमें दे | ऐ हमारे रब |

اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ١٩٤ فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّىْ لَاۤ اُضِيْعُ عَمَلَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेहनत | ज़ाया नहीं करता | कि मैं | उन का रब | उन के लिए | पस क़ुबूल की | 194 | वादा | नहीं खिलाफ़ करता | बेशक तू |

عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| से - बाज़ (आपस में) | तुम में से | या औरत | मर्द से | तुम में से | कोई मेहनत करने वाला |

فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاُوْذُوْا فِىْ سَبِيْلِىْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरी राह में | और सताए गए | अपने शहरों | से | और निकाले गए | उन्हों ने हिज्रत की | सो लोग |

وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और ज़रूर उन्हें दाखिल करूँगा | उन की बुराईयां | उन से | मैं ज़रूर दूर करूँगा | और मारे गए | और लड़े |

جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के पास (तरफ़) | से | सवाब | नहरें | उन के नीचे | से | बहती हैं | बाग़ात |

وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ١٩٥ لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | चलना फिरना | न धोका दे आप (स) को | 195 | सवाब | अच्छा | उस के पास | और अल्लाह |

فِى الْبِلَادِ ١٩٦ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۟ ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दोज़ख | उन का ठिकाना | फिर | थोड़ा | फ़ाइदा | 196 | शहर (जमा) | में |

وَبِئْسَ الْمِهَادُ ١٩٧ لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِىْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बहती है | बाग़ात | उन के लिए | अपना रब | डरते रहे | जो लोग | लेकिन | 197 | बिछौना (आराम गाह) | और कितना बुरा |

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | अल्लाह के पास | से | मेहमानी | उस में | हमेशा रहेंगे | नहरें | उन के नीचे | से |

عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ١٩٨ وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बाज़ वह जो | अहले किताब | से | और बेशक | 198 | नेक लोगों के लिए | बेहतर | अल्लाह के पास |

يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ ۙ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के आगे | आजिज़ी करते हैं | उन की तरफ़ | नाज़िल किया गया | और जो | तुम्हारी तरफ़ | नाज़िल किया गया | और जो | अल्लाह पर | ईमान लाते हैं |

لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन का अजर | उन के लिए | यही लोग | थोड़ा | मोल | अल्लाह | आयतों का | मोल नहीं लेते |

عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ١٩٩ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम सब्र करो | ईमान वालो | ऐ | 199 | हिसाब | जल्द | अल्लाह | बेशक | उन का रब | पास |

ع ٢٠ ١١ وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا ۟ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ٢٠٠

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 200 | मुराद को पहुँचो | ताकि तुम | अल्लाह | और डरो | और जंग की तैयारी करो | और मुक़ाबले में मज़बूत रहो |

ऐ हमारे रब! और हमें दे जो तू ने अपने रसूलों के जरीए हम से वादा किया और हमें क़ियामत के दिन रुसवा न करना, बेशक तू नहीं खिलाफ़ करता (अपना) वादा। (194)

पस उन के रब ने (उन की दुआ) क़ुबूल की कि मैं किसी मेहनत करने वाले की मेहनत ज़ाया नहीं करता तुम में से मर्द हो या औरत, तुम आपस में (एक हो) सो जिन लोगों ने हिज्रत की, और अपने शहरों से निकाले गए, और मेरी राह में सताए गए, और लड़े, और मारे गए, मैं उन की बुराईयां उन से ज़रूर दूर करदूँगा, और उन्हें बाग़ात में दाखिल करूँगा, बहती हैं जिन के नीचे नहरें, (यह) अल्लाह की तरफ़ से सवाब है, और अल्लाह के पास अच्छा सवाब है। (195)

शहरों में काफ़िरों का चलना फिरना आप (स) को धोका न दे। (196)

(यह) थोड़ा सा फ़ाइदा है, फिर उन का ठिकाना दोज़ख है, और वह कितनी बुरी आरामगाह है? (197)

जो लोग अपने रब से डरते रहे उन के लिए बाग़ात हैं जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे, मेहमानी है अल्लाह के पास से, और जो अल्लाह के पास है नेक लोगों के लिए बेहतर है। (198)

और बेशक अहले किताब में से बाज़ वह हैं जो ईमान लाए हैं अल्लाह पर, और जो तुम्हारी तरफ़ नाज़िल किया गया, और जो उन की तरफ़ नाज़िल किया गया, अल्लाह के आगे आजिज़ी करते हैं, अल्लाह की आयतों के बदले थोड़ा मोल नहीं लेते, यही लोग हैं उन के लिए उन के रब के पास अजर है, बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है. (199)

ऐ ईमान वालो! तुम सब्र करो, और मुक़ाबले में मज़बूत रहो, और जंग की तैयारी करो, और अल्लाह से डरो, ताकि तुम मुराद को पहुँचो। (200)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

ऐ लोगो! अपने रब से डरो, जिस ने तुम्हें एक जान (आदम अ़) से पैदा किया, और उसी से उस का जोड़ा पैदा किया, और उन दोनों से फैलाए बहुत से मर्द और औरतें, और अल्लाह से डरो जिस के नाम पर तुम आपस में मांगते हो और (खयाल रखो) रिश्तों का, बेशक अल्लाह है तुम पर निगहबान। (1)

और यतीमों को उन के माल दो और न बदलो नापाक (हराम) को पाक (हलाल) से, और उन के माल न खाओ अपने मालों के साथ (मिला कर), बेशक यह बड़ा गुनाह है। (2)

और अगर तुम को डर हो कि यतीम (के हक़) में इन्साफ़ न कर सकोगे तो निकाह कर लो जो औरतें तुम्हें भली लगें, दो दो और तीन तीन और चार चार, फिर अगर तुम्हें अन्देशा हो कि इन्साफ़ न कर सकोगे तो एक ही, या जिस लौंडी के तुम मालिक हो, यह उस के क़रीब है कि न झुक पड़ो। (3)

और औरतों को उन के मेहर खुशी से दे दो, फिर अगर वह खुशी से तुम्हें छोड़ दें उस में से कुछ तो उसे मज़ेदार खुशगवार समझ कर खाओ। (4)

और न दो बेअ़क्लों को अपने माल जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए सहारा (गुज़रान का ज़रीआ़) बनाया है और उन्हें उस से खिलाते और पहनाते रहो, और कहो उन से मअ़रूफ़ बात। (5)

ايَاتُهَا ١٧٦ (٤) سُوْرَةُ النِّسَآء رُكُوعَاتُهَا ٢٤

आयात 176 (4) सूरतुन निसा रुकुआत 24

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

| | | | |
|---|---|---|---|
| रह्म करने वाला | बहुत मेहरबान | अल्लाह | नाम से |

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जान | से | तुम्हें पैदा किया | वह जिस ने | अपना रब | डरो | लोग | ऐ |

وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बहुत | मर्द (जमा) | दोनों से | और फैलाए | जोड़ा उस का | उस से | और पैदा किया | एक |

وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِىْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ۗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और रिश्ते | उस से (उस के नाम पर) | आपस में मांगते हो | वह जो | अल्लाह | और डरो | और औरतें |

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ۝١ وَاٰتُوا الْيَتٰمٰٓى اَمْوَالَهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के माल | यतीम (जमा) | और दो | 1 | निगहबान | तुम पर | है | अल्लाह | बेशक |

وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ ۪ وَلَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के माल | खाओ | और न | पाक से | नापाक | बदलो | और न |

اِلٰۤى اَمْوَالِكُمْ ۭ اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا ۝٢ وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि न | तुम डरो | और अगर | 2 | बड़ा | गुनाह | है | बेशक | अपने माल | तरफ़ (साथ) |

تُقْسِطُوْا فِى الْيَتٰمٰى فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हें | पसन्द हो | जो | तो निकाह कर लो | यतीमों | में | इन्साफ़ कर सकोगे |

مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इन्साफ़ कर सकोगे | कि न | तुम्हें अन्देशा हो | फिर अगर | और चार, चार | और तीन तीन | दो, दो | औरतें | से |

فَوَاحِدَةً اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۭ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَلَّا تَعُوْلُوْا ۝٣

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | झुक पड़ो | कि न | क़रीब तर | यह | लौंडी जिस के तुम मालिक हो | जो | या | तो एक ही |

وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ۭ فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम को | खुशी से छोड़ दें | फिर अगर | खुशी से | उन के मेहर | औरतें | और दे दो |

عَنْ شَىْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِيْۤـًٔا مَّرِيْۤـًٔا ۝٤ وَلَا تُؤْتُوا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दो | और न | 4 | मज़ेदार, खुशगवार | तो उसे खाओ | दिल से | उस से | कुछ |

السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِىْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِيٰمًا وَّارْزُقُوْهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हें खिलाते रहो | सहारा | तुम्हारे लिए | अल्लाह | बनाया | जो | अपने माल | बेअ़क्ल (जमा) |

فِيْهَا وَاكْسُوْهُمْ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝٥

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | मअ़रूफ़ | बात | उन से | और कहो | और उन्हें पहनाते रहो | उस में |

وَابْتَلُوا الْيَتٰمٰى حَتّٰٓى اِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ فَاِنْ اٰنَسْتُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम पाओ | फिर अगर | निकाह | वह पहुँचें | जब | यहां तक कि | यतीम (जमा) | और आज़माते रहो |

مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْٓا اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا تَاْكُلُوْهَآ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह खाओ | और न | उन के माल | उन के | तो हवाले कर दो | सलाहियत | उन में |

اِسْرَافًا وَّبِدَارًا اَنْ يَّكْبَرُوْا ۭ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ग़नी | हो | और जो | वह बड़े हो जाएंगे | कि | और जल्दी जल्दी | ज़रूरत से ज़ियादा |

فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَاْكُلْ بِالْمَعْرُوْفِ ۭ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दस्तूर के मुताबिक़ | तो खाए | हाजत मन्द | हो | और जो | बचता रहे |

فَاِذَا دَفَعْتُمْ اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ فَاَشْهِدُوْا عَلَيْهِمْ ۭ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | तो गवाह कर लो | उन के माल | उन के | हवाले करो | फिर जब |

وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ﴿٦﴾ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| छोड़ा | उस से जो | हिस्सा | मर्दों के लिए | 6 | हिसाब लेने वाला | अल्लाह | और काफ़ी |

الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۠ وَلِلنِّسَاۗءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| उस से जो | हिस्सा | और औरतों के लिए | और क़राबतदार | माँ बाप |

تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ اَوْ كَثُرَ ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़ियादा | या | उस से | थोड़ा | उस में से | और क़राबतदार | माँ बाप | छोड़ा |

نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ﴿٧﴾ وَاِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तक़सीम के वक़्त | हाज़िर हों | और जब | 7 | मुक़र्रर किया हुआ | हिस्सा |

اُولُوا الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنُ فَارْزُقُوْهُمْ مِّنْهُ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| उस से | तो उन्हें खिला दो (दे दो) | और मिस्कीन | और यतीम | रिश्तेदार |

وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿٨﴾ وَلْيَخْشَ الَّذِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग | और चाहिए कि डरें | 8 | अच्छी | बात | उन से | और कहो |

لَوْ تَرَكُوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا خَافُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हें फ़िक्र हो | नातवां | औलाद | अपने पीछे | से | छोड़ जाएं | अगर |

عَلَيْهِمْ ۠ فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلْيَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ﴿٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | सीधी | बात | और चाहिए कि कहें | अल्लाह | पस चाहिए कि वह डरें | उन का |

اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के सिवा कुछ नहीं | ज़ुल्म से | यतीमों | माल | खाते हैं | जो लोग | बेशक |

يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ۭ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا ﴿١٠﴾ ع ١/١٠ ١٢

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | आग (दोज़ख) | और अनक़रीब दाख़िल होंगे | आग | अपने पेट | में | वह भर रहे हैं |

और यतीमों को आज़माते रहो यहां तक कि वह निकाह की उम्र को पहुँच जाएं, फिर अगर उन में सलाहियत (हुस्ने तदबीर) पाओ तो उन के माल उन के हवाले कर दो, और उन का माल न खाओ ज़रूरत से ज़ियादा, और जल्दी (इस ख़याल से) कि वह बड़े हो जाएंगे, और जो ग़नी हो वह (माले यतीम से) बचता रहे, और जो हाजत मन्द हो वह दस्तूर के मुताबिक़ खाए, फिर जब उन के माल उन के हवाले करो तो उन पर गवाह कर लो, और अल्लाह काफ़ी है हिसाब लेने वाला। (6)

मर्दों के लिए हिस्सा है उस में से जो माँ बाप ने और क़राबतदारों ने छोड़ा, और औरतों के लिए हिस्सा है उस में से जो छोड़ा माँ बाप ने और क़राबतदारों ने, ख़्वाह थोड़ा हो या ज़ियादा, हिस्सा मुक़र्रर किया हुआ है। (7)

और जब हाज़िर हों तक़सीम के वक़्त रिश्तेदार और यतीम और मिस्कीन, तो उस में से उन्हें भी (कुछ) दे दो और कहो उन से अच्छी बात। (8)

और चाहिए कि वह लोग डरें कि अगर वह छोड़ जाएं अपने पीछे नातवां औलाद हो तो उन्हें उन की फ़िक्र हो, पस चाहिए कि वह अल्लाह से डरें, और चाहिए कि बात कहें सीधी। (9)

बेशक जो लोग ज़ुल्म से यतीमों का माल खाते हैं, और कुछ नहीं बस वह अपने पेटों में आग भर रहे हैं, और अनक़रीब दोज़ख में दाख़िल होंगे। (10)

अल्लाह तुम्हें वसीयत करता है तुम्हारी औलाद (के बारे) में, मर्द का हिस्सा दो औरतों के बराबर है, फिर अगर औरतें हों दो से ज़ियादा तो उन के लिए (उस में से) दो तिहाई है जो (वारिस ने) छोड़ा, और अगर एक ही हो तो उस के लिए निस्फ़ है, और उस के माँ बाप के लिए दोनों में से हर एक का छटा हिस्सा है उस में से जो (मय्यत ने) छोड़ा, अगर उन की औलाद हो फिर अगर उस की औलाद न हो और माँ बाप ही उस के वारिस हों तो उस की माँ का तिहाई स्सा है, फिर अगर उस (मय्यत) के कई भाई बहन हों तो उस की माँ का छटा हिस्सा है उस वसीयत के बाद जो वह कर गया या (बाद अदाए) क़र्ज, तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे तो तुम को नहीं मालूम उन में से कौन तुम्हारे लिए नफ़ा (पहुँचाने में) नज़दीक तर है यह अल्लाह का मुक़र्रर किया हुआ हिस्सा है, बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (11)

और तुम्हारे लिए आधा है जो छोड़ मरें तुम्हारी बीवियां अगर उन की कोई औलाद न हो, फिर अगर उन की औलाद हो तो तुम्हारे लिए उस में से जो वह छोड़ें वसीयत के बाद चौथाई हिस्सा है, जिस की वह वसीयत कर जाएं या (बाद अदाए) क़र्ज, और उस में से उन के लिए चौथाई हिस्सा है जो तुम छोड़ जाओ अगर न हो तुम्हारी औलाद, फिर अगर तुम्हारी औलाद हो तो जो तुम छोड़ जाओ उस में से उन का आठवां (1/8) हिस्सा है उस वसीयत (के निकालने) के बाद जो तुम वसीयत कर जाओ या (अदाए) क़र्ज़, और अगर ऐसे मर्द की मीरास है या ऐसी औरत की जो "कलाला" है (उस का बाप बेटा नहीं) और उस के भाई बहन हों तो उन दोनों में से हर एक का छटा हिस्सा है, फिर अगर वह एक से ज़ियादा हों तो वह सब शरीक हैं एक तिहाई में उस वसीयत के बाद जो वसीयत कर दी जाए या (बाद अदाए) क़र्ज (बशर्त यह कि किसी को) नुक़्सान न पहुँचाया हो, यह अल्लाह का हुक्म है, और अल्लाह जानने वाला, हिल्म वाला है। (12)

يُوْصِيْكُمُ اللّٰهُ فِيْٓ اَوْلَادِكُمْ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ فَاِنْ كُنَّ

तुम्हें वसीयत करता है | अल्लाह | में | तुम्हारी औलाद | मर्द को | मानिंद (बराबर) | हिस्सा | दो औरतें | फिर अगर | हों

نِسَآءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ وَاِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا

औरतें | ज़ियादा | दो | तो उन के लिए | दो तिहाई | जो छोड़ा (तरका) | और अगर | हो | एक | तो उस के लिए

النِّصْفُ وَلِاَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ اِنْ كَانَ

निस्फ़ | और माँ बाप के लिए | हर एक के लिए | उन दोनों में से | छटा हिस्सा (1/6) | उस से जो | छोड़ा (तरका) | अगर हो

لَهٗ وَلَدٌ فَاِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلَدٌ وَّوَرِثَهٗٓ اَبَوٰهُ فَلِاُمِّهِ الثُّلُثُ

उस की औलाद | फिर अगर | न हो | उस की औलाद | और उस के वारिस हों | माँ बाप | तो उस की माँ का | तिहाई (1/3)

فَاِنْ كَانَ لَهٗٓ اِخْوَةٌ فَلِاُمِّهِ السُّدُسُ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ

फिर अगर | उस के हों | कई भाई बहन | तो उस की माँ का | छटा (1/6) | से | बाद | वसीयत

يُّوْصِيْ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ لَا تَدْرُوْنَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ لَكُمْ

उस की वसीयत की हो | या क़र्ज़ | तुम्हारे बाप | और तुम्हारे बेटे | तुम को नही मालूम | उन में से कौन | नज़दीक तर तुम्हारे लिए

نَفْعًا فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١١﴾

नफ़ा | हिस्सा मुक़र्रर किया हुआ है | अल्लाह का | बेशक अल्लाह | है | जानने वाला | हिक्मत वाला | 11

وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ اَزْوَاجُكُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ وَلَدٌ فَاِنْ كَانَ

और तुम्हारे लिए | आधा | जो छोड़ मरें | तुम्हारी बीवियां | अगर | न हो | उन की कोई औलाद | फिर अगर | हो

لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْنَ بِهَآ

उन की औलाद | तो तुम्हारे लिए | चौथाई (1/4) | उस में से जो वह छोड़ें | बाद | वसीयत | वह वसीयत कर जाएं | उस की

اَوْ دَيْنٍ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّكُمْ وَلَدٌ فَاِنْ

या क़र्ज़ | और उन के लिए | चौथाई | उस में से जो | तुम छोड़ जाओ | अगर | न हो | तुम्हारी औलाद | फिर अगर

كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ

हो तुम्हारी | औलाद | तो उन के लिए | आठवां (1/8) | उस से जो तुम छोड़ जाओ | से | बाद | वसीयत

تُوْصُوْنَ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ وَاِنْ كَانَ رَجُلٌ يُّوْرَثُ كَلٰلَةً اَوِ امْرَاَةٌ

तुम वसीयत करो | उस की | या क़र्ज़ | और अगर | हो | ऐसा मर्द | मीरास हो | जिस का बाप बेटा न हो | या औरत

وَّلَهٗٓ اَخٌ اَوْ اُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ فَاِنْ كَانُوْٓا اَكْثَرَ

और उस | भाई | या बहन | तो तमाम के लिए | उन में से हर एक | छटा (1/6) | फिर अगर | हों | ज़ियादा

مِنْ ذٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَآءُ فِي الثُّلُثِ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى بِهَآ

उस से (एक से) | तो वह सब | शरीक | तिहाई (1/3) | उस के बाद | वसीयत | जिस की वसीयत की जाए

اَوْ دَيْنٍ غَيْرَ مُضَآرٍّ وَصِيَّةً مِّنَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿١٢﴾

या क़र्ज़ | नुक़्सान दह न हो | हुक्म | अल्लाह से | और अल्लाह | जानने वाला | हिल्म वाला | 12

تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बाग़ात | वह उसे दाख़िल करेगा | और उस का रसूल | अल्लाह की इताअ़त करे | और जो | अल्लाह | हदें | यह |

تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कामयाबी | और यह | उन में | हमेशा रहेंगे | नहरें | उन के नीचे | बहती हैं |

الْعَظِيْمُ ﴿١٣﴾ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की हदें | और बढ़ जाए | और उस का रसूल | अल्लाह | नाफ़रमानी | और जो | 13 | बड़ी |

ع ٢ ١٣ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا ۠ وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٤﴾ وَالّٰتِىْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो औरतें | 14 | ज़लील करने वाला | अ़ज़ाब | और उस के लिए | उस में | हमेशा रहेगा | आग | वह उसे दाख़िल करेगा |

يَاْتِيْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَآئِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوْا عَلَيْهِنَّ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | तो गवाह लाओ | तुम्हारी औरतें | से | बदकारी | मुर्तकिब हों |

اَرْبَعَةً مِّنْكُمْ ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَاَمْسِكُوْهُنَّ فِى الْبُيُوْتِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| घरों में | उन्हें बन्द रखो | वह गवाही दें | फिर अगर | अपनों में से | चार |

حَتّٰى يَتَوَفّٰهُنَّ الْمَوْتُ اَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ سَبِيْلًا ﴿١٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15 | कोई सबील | उन के लिए | अल्लाह | कर दे | या | मौत | उन्हें उठा ले | यहां तक कि |

وَالَّذٰنِ يَاْتِيٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْهُمَا ۚ فَاِنْ تَابَا وَاَصْلَحَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और इस्लाह कर लें | फिर अगर वह तौबा करें | तो उन्हें ईज़ा दो | तुम में से | मुर्तकिब हों | और जो दो |

فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿١٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 16 | निहायत मेहरबान | तौबा क़ुबूल करने वाला | है | अल्लाह | बेशक | उन का | तो पीछा छोड़ दो |

اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नादानी से | बुराई | वह करते हैं | उन लोगों के लिए | अल्लाह पर (अल्लाह के ज़िम्मे) | तौबा क़ुबूल करना | उस के सिवा नहीं |

ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِيْبٍ فَاُولٰٓئِكَ يَتُوْبُ اللّٰهُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | तौबा क़ुबूल करता है | पस यही लोग हैं | जल्दी से | तौबा करते हैं | फिर |

عَلَيْهِمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٧﴾ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तौबा | और नहीं | 17 | हिक्मत वाला | जानने वाला | अल्लाह | और है | उन की |

لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰٓى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन में से किसी को | सामने आ जाए | जब | यहां तक | बुराईयां | वह करते हैं | उन के लिए (उन की) |

الْمَوْتُ قَالَ اِنِّىْ تُبْتُ الْـٰٔنَ وَلَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मर जाते हैं | वह लोग जो | और न | अब | तौबा करता हूं | कि मैं | कहे | मौत |

وَهُمْ كُفَّارٌ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | दर्दनाक | अ़ज़ाब | उन के लिए | हम ने तैयार किया | यही लोग | काफ़िर | और वह |

यह अल्लाह की (मुक़र्रर करदा) हदें हैं, और जो अल्लाह और उस के रसूल की इताअ़त करेगा वह उसे बाग़ात में दाख़िल करेगा, जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, और यह बड़ी कामयाबी है। (13)

और जो अल्लाह और उस के रसूल की नाफ़रमानी करेगा, और बढ़ जाएगा उस की हदों से तो वह उसे आग में दाख़िल करेगा, वह उस में हमेशा रहेगा, और उस के लिए ज़लील करने वाला अ़ज़ाब है। (14)

और तुम्हारी औरतों में से जो बदकारी की मुर्तकिब हों उन पर गवाह लाओ चार अपनों में से, फिर अगर वह गवाही दें तो उन औरतों को घरों में बन्द रखो यहां तक कि मौत उन्हें उठा ले, या अल्लाह उन के लिए कोई सबील कर दे (कोई राह निकाले)। (15)

और जो दो मुर्तकिब हों तुम में से तो उन्हें ईज़ा दो, फिर अगर वह तौबा कर लें, और अपनी इस्लाह कर लें तो उन का पीछा छोड़ दो, बेशक अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला निहायत मेहरबान है। (16)

इस के सिवा नहीं कि तौबा क़ुबूल करना अल्लाह के ज़िम्मे उन ही लोगों के लिए है जो करते हैं बुराई नादानी से, फिर जल्दी से तौबा कर लेते हैं, पस यही लोग हैं अल्लाह तौबा क़ुबूल करता है उन की, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (17)

और उन लोगों के लिए तौबा नहीं जो बुराईयां (गुनाह) करते रहते हैं यहां तक कि जब मौत उन में से किसी के सामने आ जाए तो कहे कि मैं अब तौबा करता हूँ, और न उन लोगों की जो मर जाते हैं हालते कुफ़्र में, यही लोग हैं हम ने तैयार किया है उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब। (18)

ऐ ईमान वालो! तुम्हारे लिए हलाल नहीं कि तुम वारिस बन जाओ औ़रतों के ज़बरदस्ती, और न उन्हें रोके रखो कि उन से अपना दिया हुआ कुछ (वापस) ले लो, मगर यह कि वह खुली बेहयाई की मुर्तकिब हों, और उन औ़रतों के साथ दस्तूर के मुताबिक़ गुज़रान करो, फिर अगर वह तुम्हें नापसन्द हों तो अ़ज्न मुमकिन है कि तुम्हें एक चीज़ नापसन्द हो और अल्लाह रखे उस में बहुत भलाई। (19)

और अगर बदल लेना चाहो एक बीवी की जगह दूसरी बीवी, और तुम ने उन में से किसी एक को ख़ज़ाना दिया है तो उस से कुछ वापस न लो, क्या तुम वह लेते हो बुहतान (लगा कर) और सरीह (खुले) गुनाह से? (20)

और तुम वह कैसे वापस लोगे? और अलबत्ता तुम में से एक दूसरे तक पहुँच चुका (सुहबत कर चुका), और उन्हों ने तुम से पुख़्ता अ़हद लिया। (21)

और उन औ़रतों से निकाह न करो जिन से तुम्हारे बाप ने निकाह किया हो, मगर जो (पहले) गुज़र चुका, बेशक यह बेहयाई और ग़ज़ब की बात थी और बुरा रास्ता (ग़लत तरीक़ा) था (22)

तुम पर हराम की गईं तुम्हारी माएँ, और तुम्हारी बेटियां, और तुम्हारी बहनें, और तुम्हारी फूफियां, और तुम्हारी ख़ालाएं, और भतीजियां, और बेटियां बहन की (भांजियां), और तुम्हारी रज़ाई माएँ जिन्हों ने तुम्हें दूध पिलाया और तुम्हारी दूध शरीक बहनें, और तुम्हारी औ़रतों की माएँ (सास), और तुम्हारी वह बेटियां जो तुम्हारी पर्वरिश में हैं तुम्हारी उन बीवियों से जिन से तुम ने सुहबत की, पस अगर तुम ने उन से सुहबत नहीं की तो कुछ गुनाह नहीं है तुम पर, और तुम्हारे उन बेटों की बीवियां जो तुम्हारी पुश्त से हैं, और यह कि तुम दो बहनों को जमा करो मगर जो पहले गुज़र चुका, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है। (23)

يَـٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَرِثُوا النِّسَآءَ كَرْهًا ۭ وَلَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न | ज़बरदस्ती | औ़रतें | कि वारिस बन जाओ | तुम्हारे लिए | हलाल नहीं | जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले) | ऐ |

تَعْضُلُوْهُنَّ لِتَذْهَبُوْا بِبَعْضِ مَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुर्तकिब हों | यह कि | मगर | उन को दिया हो | जो | कुछ | कि ले लो | उन्हें रोक रखो |

بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ فَاِنْ كَرِهْتُمُوْهُنَّ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह नापसन्द हों | फिर अगर | दस्तूर के मुताबिक़ | और उन से गुज़रान करो | खुली हुई | बेहयाई |

فَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّيَجْعَلَ اللّٰهُ فِيْهِ خَيْرًا كَثِيْرًا ﴿١٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 19 | बहुत | भलाई | उस में | अल्लाह | और रखे | एक चीज़ | कि तुम को नापसन्द हो | तो मुमकिन है |

وَاِنْ اَرَدْتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ زَوْجٍ ۙ وَّاٰتَيْتُمْ اِحْدٰىهُنَّ قِنْطَارًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़ज़ाना | उन में से एक का | और तुम ने दिया है | दूसरी बीवी | जगह (बदले) | एक बीवी | बदल लेना | तुम चाहो | और अगर |

فَلَا تَاْخُذُوْا مِنْهُ شَيْـًٔا ۭ اَتَاْخُذُوْنَهٗ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٢٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | सरीह (खुला) | और गुनाह | बुहतान | क्या तुम वह लेते हो | कुछ | उस से | तो न (वापस) लो |

وَكَيْفَ تَاْخُذُوْنَهٗ وَقَدْ اَفْضٰى بَعْضُكُمْ اِلٰى بَعْضٍ وَّاَخَذْنَ مِنْكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम से | और उन्हों ने लिया | दूसरे तक | तुम में एक | पहुँच चुका | और अलबत्ता | तुम उसे लोगे | और कैसे |

مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿٢١﴾ وَلَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ اِلَّا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर | औ़रतें | से | तुम्हारे बाप | जिस से निकाह किया | निकाह करो | और न | 21 | पुख़्ता | अ़हद |

مَا قَدْ سَلَفَ ۭ اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّمَقْتًا ۭ وَسَآءَ سَبِيْلًا ﴿٢٢﴾ حُرِّمَتْ ع ٣ ٨ ١٣

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हराम की गई | 22 | रास्ता (तरीक़ा) | और बुरा | और ग़ज़ब की बात | बेहयाई | था | बेशक वह | जो गुज़र चुका |

عَلَيْكُمْ اُمَّهٰتُكُمْ وَبَنٰتُكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ وَعَمّٰتُكُمْ وَخٰلٰتُكُمْ وَبَنٰتُ الْاَخِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और भतीजियां | और तुम्हारी ख़ालाएं | और तुम्हारी फूफियां | और तुम्हारी बहनें | और तुम्हारी बेटियां | तुम्हारी माएँ | तुम पर |

وَبَنٰتُ الْاُخْتِ وَاُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِيْٓ اَرْضَعْنَكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दूध शरीक | से | और तुम्हारी बहनें | तुम्हें दूध पिलाया | वह जिन्हों ने | और तुम्हारी माएँ | और बहन कि बेटियां |

وَاُمَّهٰتُ نِسَآىِٕكُمْ وَرَبَآىِٕبُكُمُ الّٰتِيْ فِيْ حُجُوْرِكُمْ مِّنْ نِّسَآىِٕكُمُ الّٰتِيْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिन से | तुम्हारी बीवियां | से | तुम्हारी पर्वरिश | में | जो कि | और तुम्हारी बेटियां | और तुम्हारी औ़रतों की माएँ |

دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ۡ فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ۡ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम पर | तो नहीं गुनाह | उन से | तुम ने नहीं की सुहबत | पस अगर | उन से | तुम ने सुहबत की |

وَحَلَآىِٕلُ اَبْنَآىِٕكُمُ الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ ۙ وَاَنْ تَجْمَعُوْا بَيْنَ الْاُخْتَيْنِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दो बहनों को | तुम जमा करो | और यह कि | तुम्हारी पुश्त | से | जो | तुम्हारे बेटे | और बीवियां |

اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٢٣﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 23 | मेहरबान | बख़्शने वाला | है | अल्लाह | बेशक | पहले गुज़र चुका | मगर जो |

وَّالۡمُحۡصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتۡ اَيۡمَانُكُمۡ‌ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे दाहने हाथ | मालिक हो जाएं | जो-जिस | मगर | औरतें | से | और खावन्द वाली औरतें |

كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَيۡكُمۡ‌ۚ وَاُحِلَّ لَكُمۡ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمۡ اَنۡ تَبۡتَغُوۡا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम चाहो | कि | उन के | सिवा | तुम्हारे लिए | और हलाल की गई | तुम पर | अल्लाह का हुक्म |

بِاَمۡوَالِكُمۡ مُّحۡصِنِيۡنَ غَيۡرَ مُسٰفِحِيۡنَ‌ ؕ فَمَا اسۡتَمۡتَعۡتُمۡ بِهٖ مِنۡهُنَّ فَاٰتُوۡهُنَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो उन को दो | उन में से | उस से | तुम नफ़ा (लज़्ज़त) हासिल करो | पस जो | हवसरानी को | न | क़ैद (निकाह) में लाने को | अपने मालों से |

اُجُوۡرَهُنَّ فَرِيۡضَةً‌ ؕ وَلَا جُنَاحَ عَلَيۡكُمۡ فِيۡمَا تَرٰضَيۡتُمۡ بِهٖ مِنۡۢ بَعۡدِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के बाद | उस से | तुम बाहम रज़ामन्द हो जाओ | उस में जो | तुम पर | गुनाह | और नहीं | उन के मेहर मुक़र्रर किए हुए |

الۡفَرِيۡضَةِ‌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيۡمًا حَكِيۡمًا ﴿٢٤﴾ وَمَنۡ لَّمۡ يَسۡتَطِعۡ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताक़त रखे | न | और जो | 24 | हिक्मत वाला | जानने वाला | है | बेशक अल्लाह | मुक़र्रर किया हुआ |

مِنۡكُمۡ طَوۡلًا اَنۡ يَّنۡكِحَ الۡمُحۡصَنٰتِ الۡمُؤۡمِنٰتِ فَمِنۡ مَّا مَلَكَتۡ اَيۡمَانُكُمۡ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे हाथ मालिक हो जाएं | जो | तो-से | मोमिन (जमा) | बीवियां | कि निकाह करे | तुम में से मक़्दूर |

مِّنۡ فَتَيٰتِكُمُ الۡمُؤۡمِنٰتِ‌ ؕ وَاللّٰهُ اَعۡلَمُ بِاِيۡمَانِكُمۡ‌ ؕ بَعۡضُكُمۡ مِّنۡۢ بَعۡضٍ‌ ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बाज़ (एक दूसरे से) | से | तुम्हारे बाज | तुम्हारे ईमान को | खूब जानता है | और अल्लाह | मोमिन मुसलमान | तुम्हारी कनीज़ें | से |

فَانۡكِحُوۡهُنَّ بِاِذۡنِ اَهۡلِهِنَّ وَاٰتُوۡهُنَّ اُجُوۡرَهُنَّ بِالۡمَعۡرُوۡفِ مُحۡصَنٰتٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| क़ैदे (निकाह) में आने वालियां | दस्तूर के मुताबिक़ | उन के मेहर | और उन को दो | उन के मालिक | इजाज़त से | सो उन से निकाह करो |

غَيۡرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخۡدَانٍ‌ ۚ فَاِذَآ اُحۡصِنَّ فَاِنۡ اَتَيۡنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह करें | फिर अगर | निकाह में आजाएं | पस जब | चोरी छुपे | आशनाई करने वालियां | और न | मस्ती निकालने वालियां | न कि |

بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيۡهِنَّ نِصۡفُ مَا عَلَى الۡمُحۡصَنٰتِ مِنَ الۡعَذَابِ‌ ؕ ذٰلِكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह | (सज़ा) अज़ाब | से | आज़ाद औरतें | पर | जो | निस्फ़ | तो उन पर | बेहयाई |

لِمَنۡ خَشِىَ الۡعَنَتَ مِنۡكُمۡ‌ ؕ وَاَنۡ تَصۡبِرُوۡا خَيۡرٌ لَّكُمۡ‌ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوۡرٌ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बख़्शने वाला | और अल्लाह | तुम्हारे लिए | बेहतर | तुम सब्र करो | और अगर | तुम में से | तक्लीफ़ (ज़िना) | डरा | उस के लिए जो |

ع ٣ رَّحِيۡمٌ ﴿٢٥﴾ يُرِيۡدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمۡ وَيَهۡدِيَكُمۡ سُنَنَ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِكُمۡ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम से पहले | वह जो कि | तरीक़े | और तुम्हें हिदायत दे | तुम्हारे लिए | ताकि बयान कर दे | चाहता है अल्लाह | 25 | रहम करने वाला |

وَيَتُوۡبَ عَلَيۡكُمۡ‌ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌ حَكِيۡمٌ ﴿٢٦﴾ وَاللّٰهُ يُرِيۡدُ اَنۡ يَّتُوۡبَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तवज्जुह करे | कि | चाहता है | और अल्लाह | 26 | हिक्मत वाला | जानने वाला | और अल्लाह | तुम पर | और तवज्जुह करे |

عَلَيۡكُمۡ وَيُرِيۡدُ الَّذِيۡنَ يَتَّبِعُوۡنَ الشَّهَوٰتِ اَنۡ تَمِيۡلُوۡا مَيۡلًا عَظِيۡمًا ﴿٢٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 27 | बहुत जियादा | फिर जाना | फिर जाओ | कि | ख़ाहिशात | जो लोग पैरवी करते हैं | और चाहते हैं | तुम पर |

يُرِيۡدُ اللّٰهُ اَنۡ يُّخَفِّفَ عَنۡكُمۡ‌ ۚ وَخُلِقَ الۡاِنۡسَانُ ضَعِيۡفًا ﴿٢٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 28 | कमज़ोर | इन्सान | और पैदा किया गया | तुम से | हलका कर दे | कि | चाहता है अल्लाह |

और खावन्द वाली औरतें (हराम हैं) मगर (काफ़िरों की औरतें) जिन के मालिक तुम्हारे दाहने हाथ हो जाएं (तुम मालिक हो जाओ), यह तुम पर अल्लाह का हुक्म है, और उन के सिवा सब औरतें तुम्हारे लिए हलाल की गई हैं बशर्त यह कि तुम चाहो अपने मालों से क़ैदे (निकाह) में लाने को, न कि हवसरानी को, पस तुम में से जो उन से नफ़ा (लज़्ज़त) हासिल करें तो उन को उन के मुक़र्रर किए हुए मेहर देदें और तुम पर उस में कुछ गुनाह नहीं जिस पर तुम बाहम रज़ामन्द हो जाओ उस के मुक़र्रर कर लेने के बाद, बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (24)

और जिस को तुम में से मक़्दूर न हो कि वह (आजाद) मुसलमान बीवियों से निकाह करे तो जो मुसलमान कनीज़ें तुम्हारे हाथ की मिल्क हों (क़ब्ज़े में हों), और अल्लाह तुम्हारे ईमान को खूब जानता है, तुम एक दूसरे के (हम जिन्स हो), सो उन के मालिक की इजाजत से उन से निकाह कर लो, और उन को दे दो उन के मेहर दस्तूर के मुताबिक़, क़ैदे निकाह में आने वालियां न कि मस्ती निकालने वालियां न आशनाई करने वालियां चोरी छुपे, पस जब निकाह में आजाएं फिर अगर वह बेहयाई का काम करें तो उन पर निस्फ़ सज़ा है जो आजाद औरतों पर है, यह उन के लिए जो तुम में से डरे (बदकारी की) तक्लीफ़ में पड़ने से, और अगर तुम सब्र करो तो तुम्हारे लिए बेहतर है, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (25)

अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे लिए बयान कर दे और तुम्हें हिदायत दे तुम से पहले लोगों के तरीक़ों की, और तुम पर तवज्जुह करे (तौबा क़ुबूल करे) और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (26)

और अल्लाह चाहता है कि वह तवज्जुह करे तुम पर, और जो लोग ख़ाहिशात की पैरवी करते हैं वह चाहते हैं कि तुम (राहे हिदायत से) फिर जाओ बहुत ज़ियादा। (27)

अल्लाह चाहता है कि तुम से (बोझ) हलका कर दे, और इन्सान पैदा किया गया है कमज़ोर। (28)

ऐ मोमिनों! अपने माल आपस में न खाओ नाहक़ (तौर पर) मगर यह कि तुम्हारी आपस की ख़ुशी से कोई तिजारत हो, और क़त्ल न करो एक दूसरे को, बेशक अल्लाह तुम पर बहुत मेहरबान है। (29) और जो शख़्स यह करेगा सरकशी (ज़ोर) और ज़ुल्म से, पस अनक़रीब हम उस को आग में डाल देंगे, और यह अल्लाह पर आसान है। (30) अगर तुम बड़े गुनाहों से बचते रहो जो तुम्हें मना किए गए हैं तो हम तुम से दूर कर देंगे तुम्हारे छोटे गुनाह और हम तुम्हें इज़्ज़त के मुक़ाम में दाख़िल कर देंगे। (31) और आर्ज़ू न करो (उस की) जो बड़ाई दी अल्लाह ने तुम में से बाज़ को बाज़ पर, मर्दों के लिए हिस्सा है उस से जो उन्हों ने कमाया, और औरतों के लिए हिस्सा है उस से जो उन्हों ने कमाया, और अल्लाह से उस का फ़ज़्ल मांगो, बेशक अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानने वाला है। (32) और हम ने हर एक के लिए वारिस मुक़र्रर कर दिए हैं उस (माल) के लिए जो छोड़ मरें वालिदैन और क़राबतदार, और जिन लोगों से तुम्हारा अहद ओ पैमान बन्ध चुका तो उन को उन का हिस्सा दे दो, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर गवाह (मुत्तला) है। (33) मर्द औरतों पर हाकिम (निगरान) हैं इस लिए कि अल्लाह ने एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी और इस लिए कि उन्हों ने अपने माल ख़र्च किए, पस जो नेकोकार हैं (मर्द की) तावे फ़रमान हैं, पीठ पीछे (अदम मौजूदगी में) हिफ़ाज़त करने वाली हैं अल्लाह की हिफ़ाज़त से और तुम्हें डर हो जिन औरतों की बद ख़ूई का पस उन को समझाओ और ख़्वाबगाहों में उन को तन्हा छोड़ दो और उन को मारो, फिर अगर वह तुम्हारा कहा मानें तो उन पर (इल्ज़ाम की) कोई राह तलाश न करो। बेशक अल्लाह सब से आला (बुलन्द) सब से बड़ा है। (34)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नाहक़ | आपस में | अपने माल | न खाओ | जो लोग ईमान लाए (मोमिन) | ऐ |

اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۟ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۟

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने नस्फ़ (एक दूसरे) | और न क़त्ल करो | तुम से | आपस की ख़ुशी से | कोई तिजारत | यह कि हो | मगर |

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿٢٩﴾ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّظُلْمًا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और ज़ुल्म से | सरकशी (ज़ोर) | यह | करेगा | और जो | 29 | बहुत मेहरबान | तुम पर | है | बेशक अल्लाह |

فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًا ۟ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿٣٠﴾ اِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर | 30 | आसान | अल्लाह पर | यह | और है | आग | उस को डालेंगे | पस अनक़रीब |

تَجْتَنِبُوْا كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम तुम्हें दाख़िल कर देंगे | तुम्हारे छोटे गुनाह | तुम से | हम दूर कर देंगे | उस से | जो मना किए गए | बड़े गुनाह | तुम बचते रहो |

مُّدْخَلًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾ وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۟

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बाज़ | पर | तुम में से बाज़ | उस से | जो बड़ाई दी अल्लाह | आर्ज़ू करो | और न | 31 | इज़्ज़त | मुक़ाम |

لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوْا ۟ وَلِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ۟

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने कमाया | उस से जो | हिस्सा | और औरतों के लिए | उन्हों ने कमाया | उस से जो | हिस्सा | मर्दों के लिए |

وَسْـَٔلُوا اللّٰهَ مِنْ فَضْلِهٖ ۟ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿٣٢﴾ وَلِكُلٍّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हर एक के लिए | 32 | जानने वाला | चीज़ | हर | है | बेशक अल्लाह | उस के फ़ज़्ल से | और अल्लाह से सवाल करो (मांगो) |

جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۟ وَالَّذِيْنَ عَقَدَتْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बन्ध चुका | और वह जो कि | और क़राबतदार | वालिदैन | छोड़ मरें | उस से जो | वारिस | हम ने मुक़र्रर किए |

اَيْمَانُكُمْ فَاٰتُوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ ۟ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ﴿٣٣﴾ ع ٥ ٨ ٢

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 33 | गवाह (मुत्तला) | हर चीज़ | ऊपर | है | बेशक अल्लाह | उन का हिस्सा | तो उन का दे दो | तुम्हारा अहद |

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन में से बाज़ पर | अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी | इस लिए कि | औरतें | पर | हाकिम (निगरान) | मर्द |

بَعْضٍ وَّبِمَآ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ۟ فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| निगहबानी करने वालियां | तावे फ़रमान | पस नेकोकार औरतें | अपने माल | से | उन्हों ने ख़र्च किए | और इस लिए कि | बाज़ |

لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ۟ وَالّٰتِيْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ فَعِظُوْهُنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस उन को समझाओ | उन की बद ख़ूई | तुम डरते हो | और वह जो | अल्लाह | हिफ़ाज़त की | उस से जो | पीठ पिछे |

وَاهْجُرُوْهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوْهُنَّ ۟ فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वह तुम्हारा कहा मानें | फिर अगर | और उन को मारो | ख़्वाबगाहों में | और उन को तन्हा छोड़ दो |

فَلَا تَبْغُوْا عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ۟ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا ﴿٣٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 34 | सब से बड़ा | सब से आला | है | बेशक अल्लाह | कोई राह | उन पर | तो न तलाश करो |

وَاِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهٖ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मर्द का खानदान | से | एक मुन्सिफ़ | तो मुक़र्रर करदो | उन के दरमियान | ज़िद (कशमकश) | तुम डरो | और अगर |

وَحَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ يُّرِيْدَآ اِصْلَاحًا يُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَيْنَهُمَا ۗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन दोनों में | अल्लाह | मुवाफ़कत कर देगा | सुलह कराना | दोनों चाहेंगे | अगर | औरत का खानदान | से | और एक मुन्सिफ़ |

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا خَبِيْرًا ﴿٣٥﴾ وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और न शरीक करो उस के साथ | और तुम अल्लाह की इबादत करो | 35 | बहुत बाख़बर | बड़ा जानने वाला | है | बेशक अल्लाह |

شَيْئًا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और यतीम (जमा) | और क़राबतदारों से | अच्छा सुलूक | और माँ बाप से | कुछ-किसी को |

وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِى الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अजनबी | और हमसाया | क़राबत वाले | और हमसाया | और मोहताज (जमा) |

وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बेशक अल्लाह | तुम्हारी मिल्क (कनीज़-गुलाम) | और जो | और मुसाफ़िर | और पास बैठने वाले (हम मजलिस) से |

لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَا ﴿٣٦﴾ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हुक्म करते (सिखाते) हैं | बुख्ल करते हैं | जो लोग | 36 | बड़ मारने वाला | इतराने वाला | हो | जो | दोस्त नही रखता |

النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना फ़ज़्ल | से | अल्लाह ने उन्हें दिया | जो | और छुपाते हैं | बुख़्ल | लोग |

وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿٣٧﴾ وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़र्च करते हैं | और जो लोग | 37 | ज़िल्लत वाला | अ़ज़ाब | काफ़िरों के लिए | और हम ने तैयार कर रखा है |

اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आख़िरत के दिन पर | और न | अल्लाह पर | ईमान लाते | और नहीं | लोग | दिखावे को | अपने माल |

وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا فَسَآءَ قَرِيْنًا ﴿٣٨﴾ وَمَاذَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और क्या | 38 | साथी | तो बुरा | साथी | उस का | शैतान | हो | और जो-जिस |

عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ۗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | उन्हें दिया | उस से जो | और वह ख़र्च करते | और यौमे आख़िरत पर | अल्लाह पर | अगर वह ईमान लाते | उन पर |

وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ﴿٣٩﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ وَاِنْ تَكُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हो | और अगर | ज़र्रा | बराबर | ज़ुल्म नही करता | बेशक अल्लाह | 39 | ख़ूब जानने वाला | उन को | अल्लाह | और है |

حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٤٠﴾ فَكَيْفَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर कैसा-क्या | 40 | बड़ा | सवाब | अपने पास से | और देता है | उस को कई गुना करता है | कोई नेकी |

اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۢ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا ﴿٤١﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 41 | गवाह | इन के | पर | आप को | और बुलाएंगे | एक गवाह | हर उम्मत | से | हम बुलाएंगे | जब |

وقف النبي ﷺ

और अगर तुम डरो उन दोनों के दरमियान ज़िद (कशमकश) से तो मुक़र्रर कर दो एक मुन्सिफ़ मर्द के ख़ानदान से और एक मुन्सिफ़ औरत के ख़ानदान से, अगर वह दोनों सुलह कराना चाहेंगे तो अल्लाह उन दोनों के दरमियान मुवाफ़क़त कर देगा, बेशक अल्लाह बड़ा जानने वाला बहुत बाख़बर है। (35)

और अल्लाह की इबादत करो और उस के साथ शरीक न करो किसी को और अच्छा सुलूक करो माँ बाप से और क़राबतदारों से और यतीमों और मोहताजों से और क़राबत वाले हमसाया से और अजनबी हमसाया से और पास बैठने वाले (हम मजलिस) से और मुसाफ़िर से और जो तुम्हारी मिल्क हों (कनीज़ गुलाम), बेशक अल्लाह उसें दोस्त नहीं रखता जो इतराने वाला, बड़ मारने वाला हो, (36)

और जो बुख़्ल करते हैं और लोगों को बुख़्ल सिखाते हैं और वह छुपाते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया, और हम ने काफ़िरों के लिए तैयार कर रखा है ज़िल्लत वाला अ़ज़ाब। (37)

और जो लोग अपने माल लोगों के दिखावे को ख़र्च करते हैं और ईमान नहीं लाते अल्लाह पर और न आख़िरत के दिन पर, और जिस का शैतान साथी हो तो वह बुरा साथी है। (38)

और उन का क्या (नुक़्सान) होता अगर वह ईमान ले आते अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर और उस से ख़र्च करते जो अल्लाह ने उन्हें दिया, और अल्लाह उन को ख़ूब जानने वाला है। (39)

बेशक अल्लाह ज़र्रा बराबर ज़ुल्म नहीं करता, और अगर कोई नेकी हो तो उसे कई गुना कर देता है और देता है अपने पास से बड़ा सवाब। (40)

फिर क्या (कैफ़ियत होगी) जब हम हर उम्मत से एक गवाह बुलाएंगे और आप (स) को इन पर गवाह बना कर बुलाएंगे। (41)

उस दिन आर्ज़ू करेंगे वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया और रसूल की नाफ़रमानी की, काश! (उन्हें मिट्टी में दबा कर) ज़मीन बराबर कर दी जाए, और वह अल्लाह से न छुपा सकेंगे कोई बात। (42)

ऐ ईमान वालो! तुम नमाज़ के नज़दीक न जाओ जब तुम नशे (की हालत में) हो, यहां तक कि समझने लगो जो (ज़बान से) कहते हो, और न (उस वक़्त जब कि) गुस्ल की हाजत हो सिवाए हालते सफ़र के, यहां तक कि तुम गुस्ल कर लो, और अगर तुम मरीज़ हो या सफ़र में या तुम में से कोई जाए ज़रूर (बैतुलख़ला) से आए या तुम औरतों के पास गए (हम सुहबत हुए) फिर तुम ने पानी न पाया तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो, मसह कर लो अपने मुँह और हाथों का, बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है। (43)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया, वह मोल लेते हैं (इख़्तियार करते हैं) गुमराही, और चाहते हैं कि तुम रास्ते से भटक जाओ। (44)

और अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को खूब जानता है और अल्लाह काफ़ी है हिमायती, और अल्लाह काफी है मददगार। (45)

बाज़ यहूदी लोग कलिमात ओ अलफ़ाज को उन की जगह से बदल देते हैं (तहरीफ़ करते हैं) और कहते हैं "हम ने सुना" और "नाफ़रमानी की" (कहते हैं हमारी) सुनो (तुम्हें) न सुनवाया जाए। और राइना (कहते हैं) अपनी जबानों को मोड़ कर दीन में ताने की नीय्यत से, और अगर वह कहते "हम ने सुना और इताअ़त की" (और कहते) "सुनिए और हम पर नज़र कीजिए" तो यह उन के लिए बेहतर होता और ज़ियादा दुरुस्त होता, लेकिन अल्लाह ने उन के कुफ़्र के सबब उन पर लानत की, पस वह ईमान नहीं लाते मगर थोड़े। (46)

يَوْمَئِذٍ يَّوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| काश बराबर कर दी जाए | रसूल | और नाफ़रमानी की | वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया | आर्ज़ू करेंगे | उस दिन |

بِهِمُ الْاَرْضُ ؕ وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا ﴿٤٢﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ ع ٦ ٣

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो | ऐ | 42 | कोई बात | अल्लाह | छुपाएँगे | और न | ज़मीन | उन पर |

اٰمَنُوْا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| समझने लगो | यहां तक कि | नशे | जब कि तुम | नमाज़ | न नज़दीक जाओ | ईमान लाए |

مَا تَقُوْلُوْنَ وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِيْ سَبِيْلٍ حَتّٰى تَغْتَسِلُوْا ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम गुस्ल कर लो | यहां तक कि | हालते सफ़र | सिवाए | गुस्ल की हाजत में | और न | तुम कहते हो | जो |

وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | तुम में | कोई | या आए | सफ़र | पर-में | या | मरीज़ | तुम हो | और अगर |

الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो तयम्मुम करो | पानी | फ़िर तुम ने न पाया | औरतें | तुम पास गए | या | जाए ज़रूर |

صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| है | बेशक अल्लाह | और अपने हाथ | अपने मुँह | मसह कर लो | पाक | मिट्टी |

عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿٤٣﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किताब | से | एक हिस्सा | दिया गया | वह लोग जो | तरफ़ | क्या तुम ने नहीं देखा | 43 | बख़्शने वाला | माफ़ करने वाला |

يَشْتَرُوْنَ الضَّلٰلَةَ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ تَضِلُّوا السَّبِيْلَ ﴿٤٤﴾ وَاللّٰهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अल्लाह | 44 | रास्ता | भटक जाओ | कि | और वह चाहते हैं | गुमराही | मोल लेते हैं |

اَعْلَمُ بِاَعْدَآئِكُمْ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا ۙ وَّكَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيْرًا ﴿٤٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 45 | मददगार | अल्लाह | और काफ़ी | हिमायती | अल्लाह | और काफी | तुम्हारे दुश्मनों को | खूब जानता है |

مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की जगह | से | कलिमात | तहरीफ़ करते हैं (बदल देते हैं) | यहूदी हो गए | वह लोग जो | से (बाज़) |

وَيَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّرَاعِنَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और राइना | सुनवाया जाए | न | और सुनो | और हम ने नाफ़रमानी की | हम ने सुना | और कहते हैं |

لَيًّا بِاَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِى الدِّيْنِ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ قَالُوْا سَمِعْنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने सुना | कहते | वह | और अगर | दीन में | ताने की नीयत से | अपनी ज़बानों को | मोड़ कर |

وَاَطَعْنَا وَاسْمَعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَقْوَمَ ۙ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और ज़ियादा दुरुस्त | उन के लिए | बेहतर | तो होता | और हम पर नजर कीजिए | और सुनिए | और हम ने इताअत की |

وَلٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٤٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 46 | थोड़े | मगर | पस ईमान नहीं लाते | उन के कुफ़्र के सबब | अल्लाह | उन पर लानत की | और लेकिन |

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | तस्दीक़ करने वाला | हम ने नाज़िल किया | उस पर जो | ईमान लाओ | किताब दिए गए (अहले किताब) | वह लोग जो | ऐ |

مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّطْمِسَ وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰۤى اَدْبَارِهَاۤ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की पीठ | पर | फिर उलट दें | चेहरे | हम मिटा दें | कि | इस से पहले | तुम्हारे पास |

اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّاۤ اَصْحٰبَ السَّبْتِ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿٤٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 47 | होकर (रहने वाला) | अल्लाह का हुक्म | और है | हफ्ते वाले | हम ने लानत की | जैसे | हम उन पर लानत करें | या |

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिस को | उस के सिवा | जो | और बख़्शता है | शरीक ठहराए उस का | कि | नहीं बख़्शता | बेशक अल्लाह |

يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰۤى اِثْمًا عَظِيْمًا ﴿٤٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 48 | बड़ा | गुनाह | पस उस ने बान्धा | अल्लाह का | शरीक ठहराया | और जो-जिस | वह चाहे |

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّىْ مَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिसे | पाक करता है | बल्कि अल्लाह | अपने आप को | पाक मुक़द्दस कहते हैं | वह जो कि | तरफ़ (को) | क्या तुम ने नहीं देखा |

يَّشَآءُ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٤٩﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह पर | बान्धते हैं | कैसा | देखो | 49 | धागे के बराबर | और उन पर ज़ुल्म न होगा | वह चाहता है |

ع٨ ٢ الْكَذِبَ ؕ وَكَفٰى بِهٖۤ اِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٥٠﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो | तरफ़ (को) | क्या तुम ने नहीं देखा | 50 | सरीह | गुनाह | यही | और काफी है | झूट |

اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और सरकश (शैतान) | बुत (जमा) | वह मानते हैं | किताब | से | एक हिस्सा | दिया गया |

وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا هٰۤؤُلَآءِ اَهْدٰى مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जो लोग ईमान लाए (मोमिन) | से | राहे रास्त पर | यह लोग | जिन लोगों ने कुफ़्र क्या (काफ़िर) | और कहते हैं |

سَبِيْلًا ﴿٥١﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يَّلْعَنِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| लानत करे | और जिस पर | उन पर अल्लाह ने लानत की | वह लोग जो | यही लोग | 51 | राह |

اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ﴿٥٢﴾ اَمْ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّنَ الْمُلْكِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सलतनत | से | कोई हिस्सा | उन का | क्या | 52 | कोई मददगार | तू पाएगा उस का | तो हरगिज़ नहीं | अल्लाह |

فَاِذًا لَّا يُؤْتُوْنَ النَّاسَ نَقِيْرًا ﴿٥٣﴾ اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लोग | वह हसद करते हैं | या | 53 | तिल बराबर | लोग | न दें | फिर उस वक़्त |

عَلٰى مَاۤ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَقَدْ اٰتَيْنَاۤ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| सो हम ने दिया | अपना फ़ज़्ल | से | जो अल्लाह ने उन्हें दिया | पर |

اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰهُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا ﴿٥٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 54 | बड़ा | मुल्क | और उन्हें दिया | और हिक्मत | किताब | आले इब्राहीम (अ) |

ऐ अहले किताब! ईमान लाओ उस पर जो हम ने नाज़िल किया उस की तस्दीक़ करने वाला जो तुम्हारे पास है उस से पहले कि हम चहरे मिटा डालें (मस्ख़ करदें) फिर उन (चहरों) को उलट दें उन की पीठ की तरफ़ या हम उन पर लानत करें जैसे "हफ़्ते वालों" पर लानत की, और अल्लाह का हुक्म (पूरा) हो कर रहने वाला है। (47)

बेशक अल्लाह (उस को) नहीं बख़्शता जो उस का शरीक ठहराए, और उस के सिवा जिस को चाहे बख़्श दे, और जिस ने अल्लाह का शरीक ठहराया पस उस ने बड़ा गुनाह (बुहतान) बान्धा। (48)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा? वह जो अपने आप को मुक़द्दस कहते हैं, बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है मुक़द्दस बनाता है और उन पर खजूर की गुठली के रेशे (धागे) के बराबर भी ज़ुल्म न होगा। (49)

देखो! अल्लाह पर कैसा झूट (बुहतान) बान्धते है, और यही सरीह गुनाह काफ़ी है। (50)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया, वह मानते हैं बुतों को और शैतान को, और काफ़िरों को कहते हैं कि यह मोमिनों से ज़ियादा राह (रास्त) पर हैं। (51)

यही लोग है जिन पर अल्लाह ने लानत की, और जिस पर अल्लाह लानत करे तो हरगिज़ तू उस का कोई मददगार नहीं पाऐगा। (52)

क्या उन के पास सलतनत का कोई हिस्सा है? फिर उस वक्त यह न दें लोगों को तिल बराबर भी। (53)

या लोगों से उस पर हसद करतें हैं जो अल्लाह ने उन्हें दिया अपने फ़ज़्ल से, सो हम ने दी है आले इब्राहीम (अ) को किताब और हिक्मत और उन्हें दिया है बड़ा मुल्क। (54)

फिर उन में से कोई उस पर ईमान लाया और उन में से कोई रुका (ठटका) रहा, और जहन्नम काफ़ी है भड़कती हुई आग। (55) जिन लोगों ने हमारी आयतों का कुफ़्र किया बेशक उन्हें हम अ़नक़रीब आग में डाल देंगे, जिस वक्त उन की खालें पक (गल) जाएंगी हम उस के अलावा (दूसरी) बदल देंगे ताकि वह अ़ज़ाब चखें, बेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (56) और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अमल किए, हम अ़नक़रीब उन्हें बाग़ात में दाख़िल करेंगे जिन के नीचे नहरें बहती हैं और उस में रहेंगे हमेशा हमेशा, उन के लिए उस में पाक सुथरी बीवियां हैं, और हम उन्हें घनी छाऊँ (साया) में दाख़िल करेंगे। (57) बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें अमानत वालों को पहुँचा दो, और जब तुम लोगों के दरमियान फ़ैसला करने लगो तो इन्साफ़ से फ़ैसला करो, बेशक अल्लाह तुम्हें अच्छी नसीहत करता है, बेशक अल्लाह सुनने वाला देखने वाला है। (58) ऐ ईमान वालो! इताअ़त करो अल्लाह की और इताअ़त करो रसूल (स) की और उन की जो तुम में से साहिबे हुकूमत हैं, फिर अगर तुम झगड़ पड़ो किसी बात में तो उस को अल्लाह और रसूल (स) की तरफ़ रुजूअ़ करो अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर, यह बेहतर है और उस का अन्जाम बहुत अच्छा है। (59) क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो दावा करते हैं कि वह उस पर ईमान ले आए जो आप (स) पर नाज़िल किया गया और जो आप (स) से पहले नाज़िल किया गया वह चाहते हैं कि (अपना) मुक़दमा तागूत (सरकश) शैतान के पास ले जाएं हालांकि उन्हें हुक्म हो चुका है कि वह उस को न मानें और शैतान चाहता है कि उन्हें बहका कर दूर गुमराही (में डाल दे)। (60)

فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ ؕ وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जहन्नम | और काफ़ी | उस से | रुका रहा | कोई | और उन में से | उस पर | कोई ईमान लाया | फिर उन में से |

سَعِيْرًا ﴿٥٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ نَارًا ؕ كُلَّمَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिस वक्त | आग | हम उन्हें डालेंगे | अ़नक़रीब | हमारी आयतों का | कुफ़्र किया | जो लोग | बेशक | 55 | भड़कती हुई आग |

نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अ़ज़ाब | ताकि वह चखें | उस के अलावा | खालें | हम बदल देंगे | उन की खालें | पक जाएंगी |

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿٥٦﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नेक | और उन्हों ने अमल किए | ईमान लाए | और वह लोग जो | 56 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | है | बेशक अल्लाह |

سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हमेशा | उस में | हमेशा रहेंगे | नहरें | उन के नीचे | बहती हैं | बाग़ात | अ़नक़रीब हम उन्हें दाख़िल करेंगे |

لَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۡ وَّنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيْلًا ﴿٥٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक अल्लाह | 57 | घनी | छाऊँ | और हम उन्हें दाख़िल करेंगे | पाक सुथरी | बीवियां | उस में | उन के लिए |

يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰٓى اَهْلِهَا ۙ وَاِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लोग | दरमियान | तुम फ़ैसला करने लगो | और जब | अमानत वाले | तरफ़ (को) | अमानतें | पहुँचा दो | कि | तुम्हें हुक्म देता है |

اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| है | बेशक अल्लाह | इस से | नसीहत करता है तुम्हें | अच्छी | बेशक अल्लाह | इन्साफ़ से | तुम फ़ैसला करो | तो |

سَمِيْعًا ۢ بَصِيْرًا ﴿٥٨﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और इताअ़त करो | इताअ़त करो अल्लाह की | वह लोग जो ईमान लाए (ईमान वाले) | ऐ | 58 | देखने वाला | सुनने वाला |

الرَّسُوْلَ وَاُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ فَرُدُّوْهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो उस को रुजूअ़ करो | किसी बात में | तुम झगड़ पड़ो | फिर अगर | तुम में से | और साहिबे हुकूमत | रसूल |

اِلَى اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और रोज़े आख़िरत | अल्लाह पर | तुम ईमान रखते हो | अगर | और रसूल (स) | अल्लाह की तरफ़ |

ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿٥٩﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يَزْعُمُوْنَ ع ٨ ٩ ٥

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दावा करते हैं | वह लोग जो | तरफ़ (को) | क्या तुम ने नहीं देखा | 59 | अन्जाम | और बहुत अच्छा | बेहतर | यह |

اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيْدُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह चाहते हैं | आप (स) से पहले | और जो नाज़िल किया गया | आप (स) की तरफ़ | उस पर जो नाज़िल किया गया | ईमान लाए | कि वह |

اَنْ يَّتَحَاكَمُوْٓا اِلَى الطَّاغُوْتِ وَقَدْ اُمِرُوْٓا اَنْ يَّكْفُرُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह न मानें | कि | हालांकि उन्हें हुक्म हो चुका | तागूत (सरकश) | तरफ़ (पास) | मुक़दमा ले जाएं | कि |

بِهٖ ؕ وَيُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًا ۢ بَعِيْدًا ﴿٦٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 60 | दूर | गुमराही | उन्हें बहका दे | कि | शैतान | और चाहता है | उस को |

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रसूल (स) | और तरफ़ | जो अल्लाह ने नाज़िल किया | तरफ़ | आओ | उन्हें | कहा जाता है | और जब |

رَأَيْتَ الْمُنَافِقِينَ يَصُدُّونَ عَنكَ صُدُودًا ﴿٦١﴾ فَكَيْفَ إِذَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब | फिर कैसी | 61 | रुक कर | आप से | हटते हैं | मुनाफ़िक़ीन | आप देखेंगे |

أَصَابَتْهُم مُّصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ثُمَّ جَاءُوكَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| फिर वह आएं आप (स) के पास | उन के हाथ | आगे भेजा | उस के सबब जो | कोई मुसीबत | उन्हें पहुँचे |

يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا إِحْسَانًا وَتَوْفِيقًا ﴿٦٢﴾ أُولَٰئِكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह लोग | 62 | और मुवाफ़क़त | भलाई | सिवाए (सिर्फ़) | हम ने चाहा | कि | अल्लाह की | क़सम खाते हुए |

الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन को नसीहत करें | उन से | तो आप (स) तग़ाफ़ुल करें | उन के दिलों में | जो | अल्लाह जानता है | वह जो कि |

وَقُل لَّهُمْ فِي أَنفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيغًا ﴿٦٣﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا مِن رَّسُولٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई रसूल | हम ने भेजा | और नहीं | 63 | असर कर जाने वाली बात | उन के हक़ में | उन से | और कहें |

إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذ ظَّلَمُوا أَنفُسَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी जानों पर | जब उन्हों ने ज़ुल्म किया | यह लोग | और अगर | अल्लाह के हुक्म से | ताकि इताअ़त की जाए | मगर |

جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| रसूल | उन के लिए | और मग़फ़िरत चाहता | फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहते वह | वह आते आप (स) के पास |

لَوَجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَّحِيمًا ﴿٦٤﴾ فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह मोमिन न होंगे | पस क़सम है आप के रब की | 64 | मेहरबान | तौबा क़ुबूल करने वाला | तो वह ज़रूर पाते अल्लाह को |

حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنفُسِهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने दिलों में | वह न पाएं | फिर | उन के दरमियान | झगड़ा उठे | उस में जो | आप का मुन्सिफ़ बनाएं | जब तक |

حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴿٦٥﴾ وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम लिख देते (हुक्म करते) | और अगर | 65 | ख़ुशी से | और तसलीम कर लें | आप (स) फ़ैसला करें | उस से जो | कोई तंगी |

عَلَيْهِمْ أَنِ اقْتُلُوا أَنفُسَكُمْ أَوِ اخْرُجُوا مِن دِيَارِكُم

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने घर | से | या निकल जाओ | अपने आप | क़त्ल करो तुम | कि | उन पर |

مَّا فَعَلُوهُ إِلَّا قَلِيلٌ مِّنْهُمْ ۖ وَلَوْ أَنَّهُمْ فَعَلُوا مَا يُوعَظُونَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नसीहत की जाती है | जो | करते | यह लोग | और अगर | उन से | सिवाए चन्द एक | वह यह न करते |

بِهِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَشَدَّ تَثْبِيتًا ﴿٦٦﴾ وَإِذًا لَّآتَيْنَاهُم

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम उन्हें देते | और उस सूरत में | 66 | साबित रखने वाला | और ज़ियादा | उन के लिए | बेहतर | अलबत्ता होता | उस की |

مِّن لَّدُنَّا أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٦٧﴾ وَلَهَدَيْنَاهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿٦٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 68 | सीधा | रास्ता | और हम उन्हें हिदायत देते | 67 | बड़ा (अज़ीम) | अजर | अपने पास से |

और जब उन्हें कहा जाता है कि जो अल्लाह ने नाज़िल किया उस की तरफ़ आओ और रसूल (स) की तरफ़ तो आप (स) मुनाफ़िक़ों को देखेंगे कि वह रुक कर आप (स) से हटते हैं (पहलू तही करते हैं)। (61) फिर कैसी (नदामत होगी) जब उन्हें कोई मुसीबत पहुँचे उस के सबब जो उन के हाथों ने आगे भेजा फिर वह आप (स) के पास अल्लाह की क़सम खाते हुए आएं कि हम ने सिर्फ़ भलाई चाही थी और मुवाफ़क़त। (62) यह लोग हैं कि अल्लाह जानता है जो उन के दिलों में है, तो आप (स) तग़ाफ़ुल करें उन से। और आप (स) उन को नसीहत करें और उन से उन के हक़ में असर कर जाने वाली बात कहें। (63) और हम ने नहीं भेजा कोई रसूल मगर इस लिए कि अल्लाह के हुक्म से उस की इताअ़त की जाए, और यह लोग जब उन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया था अगर वह आप (स) के पास आते, फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहते और उन के लिए रसूल (स) अल्लाह से मग़फ़िरत चाहते तो वह ज़रूर पाते अल्लाह को तौबा क़ुबूल करने वाला मेहरबान। (64) पस क़सम है आप (स) के रब की वह मोमिन न होंगे जब तक आप (स) को मुन्सिफ़ न बनाएं उस झगड़े में जो उन के दरमियान उठे, फिर वह अपने दिलों में आप (स) के फ़ैसले से कोई तंगी न पाएं और उस को ख़ुशी से (पूरी तरह) तसलीम करलें। (65) और अगर हम उन पर लिख देते (फ़र्ज़ कर देते) कि अपने आप को क़त्ल कर डालो या अपने घर बार (छोड़ कर) निकल जाओ तो उन में से चन्द एक के सिवा वह (कभी ऐसा) न करते, और अगर यह लोग वह करें जिस की उन्हें नसीहत की जाती है तो यह उन के लिए बेहतर होता और (दीन में) ज़ियादा साबित रखने वाला होता। (66) और उस सूरत में हम उन्हें अपने पास से बड़ा अजर देते। (67) और उन्हें सीधे रास्ते की हिदायत देते। (68)

और जो इताअ़त करे अल्लाह और रसूल (स) की तो यही लोग हैं उन लोगों के साथ जिन पर अल्लाह तआ़ला ने इन्आ़म किया (यानी) अंबिया और सिद्दीक़ीन और शुहदा और सालिहीन (नेक बन्दे), और यह अच्छे साथी हैं। (69)

यह अल्लाह की तरफ़ से फ़ज़्ल है, और अल्लाह काफ़ी है जानने वाला। (70)

ऐ ईमान वालो! अपने बचाओ (का सामान, हथियार) ले लो, फिर जुदा जुदा (दस्तों की सूरत में) या सब इकट्ठे हो कर कूच करो। (71)

बेशक तुम में (कोई ऐसा भी है) जो ज़रूर देर लगादेगा, फिर अगर तुम्हें पहुँचे कोई मुसीबत तो कहे कि अल्लाह ने मुझ पर इन्आ़म किया कि मैं उन के साथ न था। (72)

और तुम्हें अल्लाह की तरफ़ से कोई फ़ज़्ल (नेमत) पहुँचे तो ज़रूर कहेगा, गोया (जैसे) कि न थी तुम्हारे और उस के दरमियान कोई दोस्ती, "ऐ काश! मैं उन के साथ होता तो बड़ी मुराद पाता"। (73)

सो चाहिए कि अल्लाह के रास्ते में लड़ें वह लोग जो दुनिया की ज़िन्दगी बेचते (क़ुरबान करते) हैं आख़िरत के बदले, और जो अल्लाह के रास्ते में लड़े फिर मारा जाए या ग़ालिब आए हम अ़नक़रीब उसे बड़ा अजर देंगे। (74)

और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के रास्ते में नहीं लड़ते कमज़ोर (बेबस) मर्दों और औ़रतों और बच्चों (की ख़ातिर) जो दुआ़ कर रहे हैं: ऐ हमारे रब! हमें इस बस्ती से निकाल जिस के रहने वाले ज़ालिम हैं और बनादे हमारे लिए अपने पास से हिमायती और बनादे हमारे लिए अपने पास से मददगार। (75)

وَمَــنْ يُّـطِـعِ اللّٰهَ وَالـــرَّسُـــوْلَ فَـاُولٰٓـــئِكَ مَـــعَ الَّـــذِيْـــنَ اَنْـــعَـــمَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| इन्आ़म किया | उन लोगों के साथ | तो यही लोग | और रसूल | अल्लाह | इताअ़त करे | और जो |

اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّــنَ الـنَّـبِيّٖنَ وَالـصِّـدِّيْـقِيْـنَ وَالـشُّـهَـدَآءِ وَالـصّٰـلِـحِيْـنَ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और सालिहीन | और शुहदा | और सिद्दीक़ीन | अंबिया | से (यानी) | उन पर | अल्लाह |

وَحَـسُــنَ اُولٰٓـــئِكَ رَفِـيْـقًـا ﴿٦٩﴾ ذٰلِـــكَ الْـفَـضْـلُ مِـــنَ اللّٰهِ ۗ وَكَـفٰـى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और काफ़ी | अल्लाह से | फ़ज़्ल | यह | 69 | साथी | यह लोग | और अच्छे |

بِـاللّٰهِ عَلِيْمًا ﴿٧٠﴾ يٰٓاَيُّـهَا الَّـذِيْـنَ اٰمَـنُـوْا خُـذُوْا حِـذْرَكُـمْ فَـانْـفِـرُوْا ع ۹ ۶

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर निकलो | अपने बचाओ (हथियार) | ले लो | वह लोग जो ईमान लाए (ईमान वालो) | ऐ | 70 | जानने वाला | अल्लाह |

ثُـبَـاتٍ اَوِانْــفِـرُوْا جَمِيْعًا ﴿٧١﴾ وَاِنَّ مِـنْـكُمْ لَـمَنْ لَّـيُـبَـطِّـئَنَّ ۚ فَـاِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर अगर | ज़रूर देर लगादेगा | वह है जो | तुम में | और बेशक | 71 | सब | या निकलो (कूच करो) | जुदा जुदा |

اَصَابَـتْـكُـمْ مُّـصِـيْـبَـةٌ قَـالَ قَـدْ اَنْـعَـمَ اللّٰهُ عَـلَـيَّ اِذْ لَـمْ اَكُـنْ مَّعَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के साथ | मैं न था | जब | मुझ पर | बेशक अल्लाह ने इन्आ़म किया | कहे | कोई मुसीबत | तुम्हें पहुँचे |

شَهِيْدًا ﴿٧٢﴾ وَلَـئِنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ لَيَقُوْلَنَّ كَاَنْ لَّمْ تَكُنْۢ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| न थी | गोया | तो ज़रूर कहेगा | अल्लाह से | कोई फ़ज़्ल | तुम्हें पहुँचे | और अगर | 72 | हाज़िर मौजूद |

بَـيْـنَـكُـمْ وَبَـيْـنَـهٗ مَـــوَدَّةٌ يّٰـلَـيْـتَـنِـيْ كُـنْـتُ مَـعَـهُـمْ فَـاَفُـوْزَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो मुराद पाता | उन के साथ | मैं होता | ऐ काश मैं | कोई दोस्ती | और उस के दरमियान | तुम्हारे दरमियान |

فَــوْزًا عَـظِـيْـمًـا ﴿٧٣﴾ فَـلْـيُـقَـاتِـلْ فِـيْ سَـبِـيْـلِ اللّٰهِ الَّـذِيْـنَ يَـشْـرُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेचते हैं | वह जो कि | अल्लाह का रास्ता | में | सो चाहिए कि लड़ें | 73 | बड़ी | मुराद |

الْـحَـيٰـوةَ الـدُّنْـيَـا بِـالْاٰخِـرَةِ ۗ وَمَـــنْ يُّـقَـاتِـلْ فِـيْ سَـبِـيْـلِ اللّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह का रास्ता | में | लड़े | और जो | आख़िरत के बदले | दुनिया | जिन्दगी |

فَيُقْتَلْ اَوْ يَـغْـلِـبْ فَـسَـوْفَ نُـؤْتِـيْـهِ اَجْـرًا عَظِيْمًا ﴿٧٤﴾ وَمَـا لَـكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हें | और क्या | 74 | बड़ा अजर | हम उसे देंगे | अ़नक़रीब | ग़ालिब आए | या | फिर मारा जाए |

لَا تُـقَـاتِـلُـوْنَ فِـيْ سَـبِـيْـلِ اللّٰهِ وَالْـمُـسْـتَـضْـعَـفِـيْـنَ مِـنَ الـرِّجَـالِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मर्द (जमा) | से | और कमज़ोर (बेबस) | अल्लाह का रास्ता | में | तुम नही लड़ते |

وَالـنِّـسَـآءِ وَالْـوِلْـدَانِ الَّـذِيْـنَ يَـقُـوْلُـوْنَ رَبَّـنَـآ اَخْـرِجْـنَـا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हमें निकाल | ऐ हमारे रब | कहते हैं (दुआ़) | जो | और बच्चे | और औ़रतें |

مِـنْ هٰـذِهِ الْـقَـرْيَـةِ الـظَّـالِـمِ اَهْـلُـهَـا ۚ وَاجْـعَـلْ لَّـنَـا مِـنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | हमारे लिए | और बनादे | उस के रहने वाले | ज़ालिम | बस्ती | इस | से |

لَّـدُنْـكَ وَلِـيًّـا ۙۚ وَّاجْـعَـلْ لَّـنَـا مِـنْ لَّـدُنْـكَ نَـصِـيْـرًا ﴿٧٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 75 | मददगार | अपने पास | से | हमारे लिए | और बनादे | (हिमायती) दोस्त | अपने पास |

اَلَّـذِيْـنَ اٰمَـنُـوْا يُـقَـاتِـلُـوْنَ فِـىْ سَـبِـيْـلِ اللّٰهِ ۚ وَالَّـذِيْـنَ كَـفَـرُوْا

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वह लोग जिन्हों ने कुफ़ किया (काफ़िर) | अल्लाह का रास्ता | में | वह लड़ते हैं | जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले) |

يُـقَـاتِـلُـوْنَ فِـىْ سَـبِـيْـلِ الـطَّـاغُـوْتِ فَـقَـاتِـلُـوْٓا اَوْلِـيَـآءَ الـشَّـيْـطٰـنِ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शैतान | दोस्त (साथी) | सो तुम लड़ो | तागूत (सरकश) | रास्ता | में | वह लड़ते हैं |

ع ١٠ ٦ اِنَّ كَـيْـدَ الشَّـيْـطٰـنِ كَانَ ضَعِيْفًا ﴿٧٦﴾ اَلَـمْ تَـرَ اِلَـى الَّـذِيْـنَ قِيْلَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कहा गया | वह लोग जो | तरफ़ | क्या तुम ने नहीं देखा | 76 | कमज़ोर (बोदा) | है | शैतान | चाल | बेशक |

لَـهُـمْ كُـفُّـوْٓا اَيْـدِيَـكُـمْ وَاَقِـيْـمُـوا الـصَّـلٰـوةَ وَاٰتُـوا الـزَّكٰـوةَ ۚ فَلَمَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर जब | ज़कात | और अदा करो | नमाज़ | और क़ाइम करो | अपने हाथ | रोक लो | उन को |

كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जैसे अल्लाह का डर | लोग | डरते हैं | उन में से | एक फ़रीक़ | जब | लड़ना (जिहाद) | उन पर फ़र्ज़ हुआ |

اَوْ اَشَـدَّ خَـشْـيَـةً ۚ وَقَـالُـوْا رَبَّـنَـا لِـمَ كَـتَـبْـتَ عَـلَـيْـنَـا الْـقِـتَـالَ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लड़ना (जिहाद) | हम पर | तू ने क्यों लिखा | ऐ हमारे रब | और वह कहते हैं | डर | ज़ियादा | या |

لَـوْ لَآ اَخَّـرْتَـنَآ اِلٰٓى اَجَـلٍ قَـرِيْـبٍ ؕ قُـلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِـرَةُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और आख़िरत | थोड़ा | दुनिया | फ़ाइदा | कह दें | थोड़ी | मुद्दत | तक | हमें ढील दी | क्यों न |

خَـيْـرٌ لِّـمَـنِ اتَّـقٰـى ۟ وَلَا تُـظْـلَـمُـوْنَ فَـتِـيْـلًا ﴿٧٧﴾ اَيْـنَ مَـا تَـكُـوْنُـوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम होगे | जहां कहीं | 77 | धागे बराबर | और न तुम पर ज़ुल्म होगा | परहेज़गार के लिए | बेहतर |

يُـدْرِكْـكُّـمُ الْـمَـوْتُ وَلَـوْ كُـنْـتُـمْ فِـىْ بُـرُوْجٍ مُّـشَـيَّـدَةٍ ؕ وَاِنْ تُـصِبْهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हें पहुँचे | और अगर | मज़बूत | बुर्जों में | अगरचे तुम हो | मौत | तुम्हें पा लेगी |

حَـسَـنَـةٌ يَّـقُـوْلُـوْا هٰـذِهٖ مِـنْ عِـنْـدِ اللّٰهِ ۚ وَاِنْ تُـصِـبْـهُـمْ سَـيِّـئَـةٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुछ बुराई | उन्हें पहुँचे | और अगर | अल्लाह के पास (तरफ़) | से | यह | वह कहते हैं | कोई भलाई |

يَّـقُـوْلُـوْا هٰـذِهٖ مِـنْ عِـنْـدِكَ ؕ قُـلْ كُلٌّ مِّـنْ عِـنْـدِ اللّٰهِ ؕ فَـمَـالِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो क्या हुआ | अल्लाह के पास (तरफ़) | से | सब | कह दें | आप (स) की तरफ़ से | से | यह | वह कहते हैं |

هٰٓؤُلَآءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ حَدِيْثًا ﴿٧٨﴾ مَآ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई भलाई | तुझे पहुँचे | जो | 78 | बात | कि समझें | नहीं लगते | क़ौम | इस |

فَـمِـنَ اللّٰهِ وَمَـآ اَصَـابَـكَ مِـنْ سَـيِّـئَـةٍ فَـمِـنْ نَّـفْـسِـكَ ؕ وَاَرْسَـلْـنٰـكَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और हम ने तुम्हें भेजा | तो तेरे नफ़्स से | कोई बुराई | तुझे पहुँचे | और जो | सा अल्लाह से |

لِـلـنَّـاسِ رَسُـوْلًا ؕ وَكَـفٰـى بِـاللّٰهِ شَـهِـيْـدًا ﴿٧٩﴾ مَـنْ يُّـطِـعِ الـرَّسُـوْلَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रसूल (स) | इताअत की | जा-जिस | 79 | गवाह | अल्लाह | और काफ़ी है | रसूल | लोगों के लिए |

فَـقَـدْ اَطَـاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَـنْ تَـوَلّٰى فَـمَآ اَرْسَـلْـنٰـكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ﴿٨٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 80 | निगहबान | उन पर | हम ने आप (स) को भेजा | तो नहीं | रू गर्दानी की | और जो-जिस | अल्लाह | पस तहक़ीक़ इताअत की |

ईमान लाने वाले अल्लाह के रास्ते में लड़ते हैं और काफ़िर लड़ते हैं तागूत (सरकश मुफ़्सिद) के रास्ते में, सो तुम शैतान के साथियों से लड़ो, बेशक शैतान की चाल कमज़ोर (बोदा) है। (76)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें कहा गया अपने हाथ रोक लो और क़ाइम करो नमाज़ और ज़कात अदा करो, फिर जब उन पर जिहाद फ़र्ज़ हुआ तो उन में से एक फ़रीक़ लोगों से डरता है जैसे अल्लाह का डर हो या उस से भी ज़ियादा डर, और वह कहते हैं ऐ हमारे रब! तू ने हम पर जिहाद क्यों फ़र्ज़ कर दिया, हमें और थोड़ी मुद्दत क्यों न मुहलत दी? कह दें, दुनिया का फ़ाइदा थोड़ा है और आख़िरत बेहतर है परहेज़गार के लिए, और तुम पर ज़ुल्म न होगा धागे बराबर (भी)। (77)

तुम जहां कहीं होगे तुम्हें मौत पा लेगी अगरचे तुम होगे बुर्जों में मज़बूत, और अगर उन्हें कोई भलाई पहुँचे तो वह कहते हैं कि यह अल्लाह की तरफ़ से है, और अगर उन्हें कुछ बुराई पहुँचे तो कहते हैं कि यह आप (स) की तरफ़ से है। आप (स) कह दें सब कुछ अल्लाह की तरफ़ से है, उस क़ौम (उन लोगों) को क्या हो गया है कि यह बात समझते नहीं लगते (बात समझते मअलूम नहीं होते) (78)

जो तुम्हें कोई भलाई पहुँचे सो वह अल्लाह की तरफ़ से है, और जो तुम्हें कोई बुराई पहुँचे तो वह तुम्हारे नफ़्स से है, और हम ने तुम्हें लोगों के लिए रसूल बना कर भेजा है, और अल्लाह काफ़ी है गवाह। (79)

जिस ने रसूल की इताअत की पस तहक़ीक़ उस ने अल्लाह की इताअत की, और जिस ने रु गर्दानी की तो हम ने आप (स) को उन पर निगहबान नहीं भेजा। (80)

वह (मुँह से तो) यह कहते हैं कि हम ने माना, फिर जब बाहर जाते हैं आप (स) के पास से तो उन में से एक गिरोह रात को उस के ख़िलाफ़ मशवरा करता है जो वह कह चुके, और अल्लाह लिख लेता है जो वह रात को मशवरे करते हैं, आप (स) उन से मुँह फेर लें और अल्लाह पर भरोसा करें, और अल्लाह काफ़ी है कारसाज़। (81)

फिर क्या वह क़ुरआन पर ग़ौर नहीं करते? और अगर अल्लाह के सिवा किसी और के पास से होता तो उस में ज़रूर बहुत इख़्तिलाफ़ पाते। (82)

और जब उन के पास कोई अम्न की ख़बर आती है या ख़ौफ़ की तो उसे मशहूर कर देते हैं और अगर उसे पहुँचाते रसूल की तरफ़ और अपने हाकिमों की तरफ़ तो जो लोग उन में से तहक़ीक़ कर लिया करते हैं उस को जान लेते। और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल न होता तुम पर और उस की रहमत (न होती) तो चन्द एक के सिवा तुम शैतान के पीछे लग जाते। (83)

पस आप (स) अल्लाह की राह में लड़ें, आप (स) मुकल्लफ़ नहीं मगर अपनी जान के, और मोमिनों को आमादा करें, क़रीब है कि अल्लाह रोक दे काफ़िरों की जंग (का ज़ोर) और अल्लाह की जंग सख़्त तरीन है और उस की सज़ा सब से सख़्त है। (84)

जो कोई नेक बात में सिफ़ारिश करे उस के लिए उस से हिस्सा होगा, और जो कोई सिफ़ारिश करे बुरी बात में उस को उस का बोझ (हिस्सा) मिलेगा, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। (85)

और जब तुम्हें कोई दुआ दे (सलाम करे) तो तुम उस से बेहतर दुआ दो या वही कह दो, बेशक अल्लाह हर चीज़ का हिसाब करने वाला है। (86)

अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह ज़रूर तुम्हें क़ियामत के दिन इकट्ठा करेगा जिस में कोई शक नहीं, और कौन जियादा सच्चा है बात में अल्लाह से। (87)

وَيَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ۫ فَاِذَا بَرَزُوْا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَآىِٕفَةٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक गिरोह | रात को मशवरा करता है | आप (स) के पास | से | बाहर जाते हैं | फिर जब | (हम ने) हुक्म माना | और वह कहते हैं |

مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِىْ تَقُوْلُ ؕ وَاللّٰهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मुँह फेरलें | जो वह रात को मशवरे करते हैं | लिख लेता है | और अल्लाह | कहते हैं | उस के ख़िलाफ़ जो | उन से |

عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿٨١﴾ اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर क्या वह ग़ौर नहीं करते? | 81 | कारसाज़ | अल्लाह | और काफ़ी है | अल्लाह पर | और भरोसा करें | उन से |

الْقُرْاٰنَ ؕ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इख़्तिलाफ़ | उस में | ज़रूर पाते | अल्लाह के सिवा | पास | से | और अगर होता | क़ुरआन |

كَثِيْرًا ﴿٨٢﴾ وَاِذَا جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ ؕ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उसे | मशहूर कर देते हैं | ख़ौफ़ | या | अम्न | से (की) | कोई ख़बर | उन के पास आती है | और जब | 82 | बहुत |

وَلَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ وَاِلٰٓى اُولِى الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो लोग | तो उस को जान लेते | अपने में से | हाकिम | और तरफ़ | रसूल की तरफ़ | उसे पहुँचाते | और अगर |

يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ؕ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम पीछे लग जाते | और उस की रहमत | तुम पर | अल्लाह का फ़ज़्ल | और अगर न | उन से | सही नतीजा निकाल लिया करते हैं |

الشَّيْطٰنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٣﴾ فَقَاتِلْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ لَا تُكَلَّفُ اِلَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर | मुकल्लफ़ नहीं | अल्लाह की राह | में | पस लड़ें | 83 | चन्द एक | सिवाए | शैतान |

نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّكُفَّ بَاْسَ الَّذِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जिन लोगों ने | जंग | रोक दे | कि | क़रीब है कि अल्लाह | मोमिन (जमा) | और आमादा करें | अपनी जात |

كَفَرُوْا ؕ وَاللّٰهُ اَشَدُّ بَاْسًا وَّاَشَدُّ تَنْكِيْلًا ﴿٨٤﴾ مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सिफ़ारिश | सिफ़ारिश करे | जो | 84 | सज़ा देना | और सब से सख़्त | जंग | सख़्त तरीन | और अल्लाह | कुफ़्र किया (काफ़िर) |

حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ لَّهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| होगा - उस के लिए | बुरी बात | सिफ़ारिश | सिफ़ारिश करे | और जो | उस में से | हिस्सा | होगा उस के लिए | नेक बात |

كِفْلٌ مِّنْهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ مُّقِيْتًا ﴿٨٥﴾ وَاِذَا حُيِّيْتُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हें दुआ दे | और जब | 85 | क़ुदरत रखने वाला | हर चीज़ | पर | अल्लाह | और है | उस से | बोझ (हिस्सा) |

بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَآ اَوْ رُدُّوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर (का) | है | बेशक अल्लाह | या वही लौटा दो (कह दो) | उस से | बेहतर | तो तुम दुआ दो | किसी दुआ (सलाम) से |

كُلِّ شَىْءٍ حَسِيْبًا ﴿٨٦﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ | वह तुम्हें ज़रूर इकट्ठा करेगा | उस के सिवा | नहीं इबादत के लाइक़ | अल्लाह | 86 | हिसाब करने वाला | हर चीज |

النصف

يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيْثًا ﴿٨٧﴾ ع ١١ ٨

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 87 | बात में | अल्लाह से | जियादा सच्चा | और कौन? | इस में | नहीं शक | रोजे क़ियामत |

فَمَا لَكُمْ فِى الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ وَاللّٰهُ اَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا ؕ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उस के सबब जो उन्हों ने कमाया (किया) | उन्हें उलट दिया (औन्धा कर दिया) | और अल्लाह | दो फ़रीक़ | मुनाफ़िक़ीन के बारे में | सो क्या हुआ तुम्हें? |

اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गुमराह करे अल्लाह | और जो-जिस | अल्लाह ने गुमराह किया | जो जिस | कि राह पर लाओ | क्या तुम चाहते हो? |

فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿۸۸﴾ وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह काफ़िर हुए | जैसे | काश तुम काफ़िर हो जाओ | वह चाहते हैं | 88 | कोई राह | उस के लिए | पस तुम हरगिज़ न पाओगे |

فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ اَوْلِيَآءَ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह हिज्रत करें | यहां तक कि | दोस्त | उन से | पस तुम न बनाओ | बराबर | तो तुम हो जाओ |

فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जहां कहीं | और उन्हें क़त्ल करो | तो उन को पकड़ो | मुंह मोड़ें | फिर अगर | अल्लाह की राह | में |

وَجَدْتُّمُوْهُمْ ۪ وَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۸۹﴾ اِلَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर | 89 | मददगार | और न | दोस्त | उन से | बनाओ | और न | तुम उन्हें पाओ |

الَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ اِلٰى قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ اَوْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| या | अहद (मुआहदा) | और उन के दरमियान | तुम्हारे दरमियान | क़ौम | तरफ़ (से) | मिल गए हैं (तअ़ल्लुक़ रखते हैं) | जो लोग |

جَآءُوْكُمْ حَصِرَتْ صُدُوْرُهُمْ اَنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ اَوْ يُقَاتِلُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| लड़ें | या | वह तुम से लड़ें | कि | उन के सीने (दिल) | तंग हो गए | वह तुम्हारे पास आएं |

قَوْمَهُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقٰتَلُوْكُمْ ۚ فَاِنِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर अगर | तो वह तुम से ज़रूर लड़ते | तुम पर | उन्हें मुसल्लत कर देता | चाहता अल्लाह | और अगर | अपनी क़ौम से |

اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ وَاَلْقَوْا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ ۙ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सुलह | तुम्हारी तरफ़ | और डालें | वह तुम से लड़ें | फिर न | तुम से किनारा कश हों |

فَمَا جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيْلًا ﴿۹۰﴾ سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और लोग | अब तुम पाओगे | 90 | कोई राह | उन पर | तुम्हारे लिए | अल्लाह | तो नहीं दी |

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّاْمَنُوْكُمْ وَيَاْمَنُوْا قَوْمَهُمْ ؕ كُلَّمَا رُدُّوْٓا اِلَى الْفِتْنَةِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| फ़ित्ने की तरफ़ | जब कभी लौटाए (बुलाए जाते हैं) | अपनी क़ौम | और अम्न में रहें | कि तुम से अम्न में रहें | वह चाहते हैं |

اُرْكِسُوْا فِيْهَا ۚ فَاِنْ لَّمْ يَعْتَزِلُوْكُمْ وَيُلْقُوْٓا اِلَيْكُمُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारी तरफ़ | और (न) डालें वह | तुम से किनारा कशी न करें | पस अगर | उस में | पलट जाते हैं |

السَّلَمَ وَيَكُفُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जहां कहीं | और उन्हें क़त्ल करो | तो उन्हें पकड़ो | अपने हाथ | और रोकें | सुलह |

ع ١٢ ٢ ٩ ثَقِفْتُمُوْهُمْ ؕ وَاُولٰٓئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿۹۱﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 91 | खुली | सनद (हुज्जत) | उन पर | तुम्हारे लिए | हम ने दी | और यही लोग | तुम उन्हें पाओ |

सो तुम्हें क्या हो गया है? मुनाफ़िक़ीन के बारे में दो गिरोह (हो रहे हो) और अल्लाह ने उन्हें औन्धा कर दिया उस के सबब जो उन्हों ने किया, क्या तुम चाहते हो कि उसे राह पर लाओ जिस को अल्लाह ने गुमराह किया? और जिस को अल्लाह गुमराह करे तुम हरगिज उस के लिए कोई राह न पाओगे। (88)

वह चाहते हैं काश तुम (भी) काफ़िर हो जाओ जैसे वह काफ़िर हुए तो तुम बराबर हो जाओ। पस तुम उन में से (किसी को) दोस्त न बनाओ यहां तक कि वह हिज्रत करें अल्लाह की राह में, फिर अगर वह मुंह मोड़ें तो तुम जहां कहीं उन्हें पाओ पकड़ो और क़त्ल करो, और उन में से (किसी को) न दोस्त बनाओ न मददगार, (89)

मगर जो लोग तअ़ल्लुक़ रखते हैं (ऐसी) क़ौम से कि तुम्हारे और उन के दरमियान मुआ़हदा है, या तुम्हारे पास आएं (उस हाल में) कि तंग हो गए हैं उन के दिल (उस बात से) कि तुम से लड़ें या अपनी क़ौम से लड़ें, और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें तुम पर मुसल्लत कर देता तो वह तुम से जरूर लड़ते, फिर अगर वह तुम से किनारा कश रहें फिर तुम से न लड़ें और तुम्हारी तरफ़ सुलह (का पयाम) डालें, तो अल्लाह ने तुम्हारे लिए उन पर (सताने की) कोई राह नहीं रखी। (90)

अब तुम और लोग पाओगे जो चाहते हैं कि वह तुम से (भी) अम्न में रहें और अपनी क़ौम से (भी) अम्न में रहें, जब कभी फित्ना (फ़साद) की तरफ़ बुलाए जाते है तो उस में पलट जातें हैं, पस अगर तुम से किनारा कशी न करें और वह न डालें तुम्हारी तरफ़ (पैग़ामे) सुलह, और (न) रोकें अपने हाथ, तो उन्हें पकड़ो और क़त्ल करो जहां कहीं तुम उन्हें पाओ, और यही लोग है जिन पर हम ने तुम्हें खुली सनद (हुज्जत) दी। (91)

और नहीं किसी मुसलमान के (शायां) कि वह किसी मुसलमान को क़त्ल कर दे मगर गलती से और जो किसी मुसलमान को क़त्ल करे गलती से तो वह एक ग़ुलाम आज़ाद करे और ख़ून बहा उस के वारिसों के हवाले कर दे मगर यह कि वह माफ़ कर दें। फिर अगर वह तुम्हारी दुश्मन क़ौम से हो और वह ख़ुद मुसलमान हो तो आज़ाद करे एक मुसलमान ग़ुलाम। और अगर ऐसी क़ौम से हो कि उन के और तुम्हारे दरमियान मुआहदा है तो ख़ून बहा उस के वारिसों के हवाले कर दे और एक मुसलमान ग़ुलाम को आज़ाद कर दे। सो जो न पाए (मयस्सर न हो) तो दो माह लगातार रोज़े रखे, यह तौबा है अल्लाह की तरफ़ से, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (92)

और जो कोई किसी मुसलमान को दानिस्ता क़त्ल कर दे तो उस की सज़ा जहन्नम है, वह हमेशा रहेगा उस में, और उस पर अल्लाह का ग़ज़ब होगा और उस की लानत, और उस के लिए (अल्लाह ने) बड़ा अज़ाब तैयार कर रखा है (93)

ऐ ईमान वालो! जब तुम अल्लाह की राह में (जिहाद के लिए) सफ़र करो तो तहक़ीक़ कर लिया करो, और जो तुम्हें सलाम करे उसे न कहो कि तू मुसलमान नही है, तुम चाहते हो दुनिया की ज़िन्दगी का सामान, फिर अल्लाह के पास बहुत ग़नीमतें हैं, तुम उसी तरह थे इस से पहले तो अल्लाह ने तुम पर एहसान किया, सो तहक़ीक़ कर लिया करो, बेशक जो तुम करते हो उस से अल्लाह ख़ूब बाख़बर है। (94)

बग़ैर उज़्र बैठ रहने वाले मोमिनीन और वह बराबर नहीं जो अल्लाह की राह में अपने मालों से और अपनी जानों से जिहाद करने वाले हैं, अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी दरजे में अपने मालों से और अपनी जानों से जिहाद करने वालों को बैठ रहने वालों पर, और हर एक को अल्लाह ने अच्छा वादा दिया है, और अल्लाह ने मुजाहिदों को बैठ रहने वालों पर फ़जीलत दी है अजरे अज़ीम (के एतिबार से)। (95)

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا اِلَّا خَطَأً ۚ وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَأً

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गलती से | किसी मुसलमान | क़त्ल करे | और जो | मगर ग़लती से | किसी मुसलमान | कि वह क़त्ल करे | किसी मुसलमान के लिए | है | और नहीं |

فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَّدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّصَّدَّقُوْا ۚ فَاِنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर अगर | वह माफ़ कर दें | यह कि | मगर | उस के वारिसों को | हवाले करना | और ख़ून बहा | मुसलमान | एक गर्दन (ग़ुलाम) | तो आज़ाद करे |

كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۚ وَاِنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अगर | मुसलमान | एक गर्दन (ग़ुलाम) | तो आज़ाद कर दे | मुसलमान | और वह | तुम्हारी | दुश्मन क़ौम | से | हो |

كَانَ مِنْ قَوْمٍ ۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के वारिसों को | हवाले करना | ख़ून बहा | अ़हद (मुआहदा) | और उन के दरमियान | तुम्हारे दरमियान | ऐसी क़ौम से | हो |

وَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लगातार | दो माह | तो रोज़े रखे | न पाए | सो जो | मुसलमान | एक गर्दन (ग़ुलाम) | और आजाद करना |

تَوْبَةً مِّنَ اللّٰهِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٩٢﴾ وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दानिस्ता (क़स्दन) | किसी मुसलमान को | क़त्ल कर दे | और जो कोई | 92 | हिक्मत वाला | जानने वाला | अल्लाह | और है | अल्लाह से | तौबा |

فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के लिए तैयार कर रखा है | और उस की लानत | उस पर | और अल्लाह का ग़ज़ब | उस में | हमेशा रहेगा | जहन्नम | तो उस की सज़ा |

عَذَابًا عَظِيْمًا ﴿٩٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا ضَرَبْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की राह | में | तुम सफ़र करो | जब | ईमान लाए | जो लोग | ऐ | 93 | बड़ा | अज़ाब |

فَتَبَيَّنُوْا وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰٓى اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ۚ تَبْتَغُوْنَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम चाहते हो | मुसलमान | तू नही है | सलाम | तुम्हारी तरफ़ | डाले (करे) | जो कोई | तुम कहो | और न | तो तहक़ीक़ कर लो |

عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ ۗ كَذٰلِكَ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस से पहले | तुम थे | उसी तरह | बहुत | ग़नीमतें | फिर अल्लाह के पास | दुनिया की ज़िन्दगी | असबाब (सामान) |

فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿٩٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 94 | ख़ूब बाख़बर | तुम करते हो | उस से जो | है | बेशक अल्लाह | सो तहक़ीक़ कर लो | तुम पर | तो एहसान किया अल्लाह |

لَا يَسْتَوِى الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِى الضَّرَرِ وَالْمُجٰهِدُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और मुजाहिद (जमा) | उज़्र वाले (मअ़ज़ूर) | बग़ैर | मोमिनीन | से | बैठ रहने वाले | बराबर नहीं |

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۚ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जिहाद करने वाले | अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी | और अपनी जानें | अपने मालों से | अल्लाह की राह | में |

بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ دَرَجَةً ۚ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह ने वादा दिया | और हर एक | दरजे | बैठ रहने वाले | पर | और अपनी जानें | अपने मालों से |

الْحُسْنٰى ۚ وَفَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٩٥﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 95 | अजरे अज़ीम | बैठ रहने वाले | पर | मुजाहिदीन | और अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी | अच्छा |

دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बख़्शने वाला | अल्लाह | और है | और रहमत | और बख़्शिश | उस की तरफ़ से | दरजे |

١٣ ع ١٠ رَّحِيْمًا ﴿٩٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰۗىِٕكَةُ ظَالِمِيْٓ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़ुल्म करते थे | फ़रिश्ते | उन की जान निकालते हैं | वह लोग जो | बेशक | 96 | मेहरबान |

اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ ۭ قَالُوْا كُنَّا مُسْتَضْعَفِيْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बेबस | वह कहते हैं हम थे | तुम थे | किस (हाल) में | वह कहते हैं | अपनी जानें |

فِي الْاَرْضِ ۭ قَالُوْٓا اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वसीअ़ | अल्लाह की ज़मीन | क्या न थी | वह कहते हैं | ज़मीन (मुल्क) | में |

فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا ۭ فَاُولٰۗىِٕكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۭ وَسَاۗءَتْ مَصِيْرًا ﴿٩٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 97 | पहुँचने की जगह | और बुरा है | जहन्नम | उन का ठिकाना | सो यह लोग | पस तुम हिज्रत कर जाते उस में |

اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاۗءِ وَالْوِلْدَانِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और बच्चे | और औरतें | मर्द (जमा) | से | बेबस | मगर |

لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ حِيْلَةً وَّلَا يَهْتَدُوْنَ سَبِيْلًا ﴿٩٨﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 98 | कोई रास्ता | पाते हैं | और न | कोई तदबीर | नहीं कर सकते |

فَاُولٰۗىِٕكَ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّعْفُوَ عَنْهُمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और है अल्लाह | उन से (उन को) | कि माफ़ फ़रमाए | उम्मीद है कि अल्लाह | सो ऐसे लोग हैं |

عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿٩٩﴾ وَمَنْ يُّهَاجِرْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يَجِدْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह पाएगा | अल्लाह का रास्ता | में | हिज्रत करे | और जो | 99 | बख़्शने वाला | माफ़ करने वाला |

فِي الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيْرًا وَّسَعَةً ۭ وَمَنْ يَّخْرُجْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| निकले | और जो | और कुशादगी | बहुत (वाफ़िर) जगह | ज़मीन | में |

مِنْۢ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आ पकड़े उस को | फिर | और उस का रसूल | अल्लाह की तरफ़ | हिज्रत कर के | अपना घर | से |

الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ عَلَي اللّٰهِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बख़्शने वाला | अल्लाह | और है | अल्लाह पर | उस का अजर | तो साबित हो गया | मौत |

١٤ ع ١١ رَّحِيْمًا ﴿١٠٠﴾ وَاِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْاَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम पर | पस नहीं | ज़मीन में | तुम सफ़र करो | और जब | 100 | मेहरबान |

جُنَاحٌ اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلٰوةِ ڰ اِنْ خِفْتُمْ اَنْ يَّفْتِنَكُمُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हें सताएंगे | कि | तुम को डर हो | अगर | नमाज़ | से | क़सर करो | कि | कोई गुनाह |

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ اِنَّ الْكٰفِرِيْنَ كَانُوْا لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿١٠١﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 101 | दुश्मन खुले | तुम्हारे | हैं | काफ़िर (जमा) | बेशक | वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) |

उस की तरफ़ से दरजे हैं और बख़्शिश और रहमत है, और अल्लाह है बख़्शने वाला मेहरबान। **(96)**

बेशक वह लोग जिन की फ़रिश्ते जान निकालते हैं (उस हाल में कि वह) ज़ुल्म करते थे अपनी जानों पर, वह (फ़रिश्ते) कहते हैं तुम किस हाल में थे? वह कहते हैं कि हम बेबस थे इस मुल्क में, (फ़रिश्ते) कहते हैं क्या अल्लाह की ज़मीन वसीअ़ न थी? पस तुम उस में हिज्रत कर जाते, सो यही लोग हैं उन का ठिकाना जहन्नम है और वह पहुँचने (पलटने) की बुरी जगह है। **(97)**

मगर जो बेबस हैं मर्द और औरतें और बच्चे कि कोई तदबीर नहीं कर सकते और न कोई रास्ता पाते हैं, **(98)**

सो उम्मीद है कि ऐसे लोगों को अल्लाह माफ़ फ़रमाए, और अल्लाह माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला। **(99)**

और जो अल्लाह के रास्ते में हिज्रत करे वह पाएगा ज़मीन में बहुत (वाफ़िर) जगह और कुशादगी, और जो अपने घर से हिज्रत कर के निकले अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़, फिर उस को मौत आ पकड़े तो उस का अजर अल्लाह पर साबित हो गया, और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है। **(100)**

और जब तुम मुल्क में सफ़र करो, पस नहीं तुम पर कोई गुनाह कि तुम नमाज़ क़सर करो (कम कर लो) अगर तुम को डर हो कि तुम्हें सताएंगे काफ़िर, बेशक काफ़िर तुम्हारे खुले दुश्मन हैं। **(101)**

وَإِذَا كُنْتَ فِيهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ فَلْتَقُمْ طَآئِفَةٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक जमाअत | तो चाहिए कि खड़ी हो | नमाज़ | उन के लिए | फिर क़ाइम करें | उन में | आप हों | और जब |

مِّنْهُمْ مَّعَكَ وَلْيَأْخُذُوٓا أَسْلِحَتَهُمْ فَإِذَا سَجَدُوا فَلْيَكُونُوا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो हो जाएं | वह सिज्दा कर लें | फिर जब | अपने हथियार | और चाहिए कि वह ले लें | आप (स) के साथ | उन में से |

مِنْ وَّرَآئِكُمْ ۪ وَلْتَأْتِ طَآئِفَةٌ أُخْرٰى لَمْ يُصَلُّوا فَلْيُصَلُّوا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पस वह नमाज़ पढ़ें | नमाज़ नहीं पढ़ी | दूसरी | जमाअत | और चाहिए कि आए | तुम्हारे पीछे |

مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ ۚ وَدَّ الَّذِينَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| चाहते हैं जिन लोगों ने | और अपना अस्लिहा | अपना बचाओ | और चाहिए कि लें | आप (स) के साथ |

كَفَرُوا لَوْ تَغْفُلُونَ عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ وَأَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيلُونَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तो वह झुक पड़ें (हमला करें) | और अपने सामान | अपने हथियार (जमा) | से | कहीं तुम ग़ाफ़िल हो | कुफ़्र किया (काफ़िर) |

عَلَيْكُمْ مَّيْلَةً وَّاحِدَةً ۚ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ كَانَ بِكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हें | हो | अगर | तुम पर | गुनाह | और नहीं | एक बार (यकबारगी) | झुकना | तुम पर |

أَذًى مِّنْ مَّطَرٍ أَوْ كُنْتُمْ مَّرْضٰى أَنْ تَضَعُوٓا أَسْلِحَتَكُمْ ۚ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपना अस्लिहा | कि उतार रखो | बीमार | या तुम हो | बारिश से | तकलीफ़ |

وَخُذُوا حِذْرَكُمْ ۗ إِنَّ اللّٰهَ أَعَدَّ لِلْكٰفِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿١٠٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 102 | ज़िल्लत वाला | अज़ाब | काफ़िरों के लिए | तैयार किया | बेशक अल्लाह | अपना बचाओ | और ले लो |

فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُودًا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और बैठे | खड़े | तो अल्लाह को याद करो | नमाज़ | तुम अदा कर चुको | फिर जब |

وَّعَلٰى جُنُوبِكُمْ ۚ فَإِذَا اطْمَأْنَنْتُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلٰوةَ ۚ إِنَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | नमाज़ | तो क़ाइम करो | तुम मुत्मइन हो जाओ | फिर जब | अपनी करवटें | और पर |

الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتٰبًا مَّوْقُوتًا ﴿١٠٣﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 103 | मुक़र्ररा औक़ात में | फ़र्ज़ | मोमिनीन | पर | है | नमाज़ |

وَلَا تَهِنُوا فِي ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ ۗ إِنْ تَكُونُوا تَأْلَمُونَ فَإِنَّهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो बेशक उन्हें | तुम्हें तकलीफ़ पहुँचती है | अगर | क़ौम (कुफ़्फ़ार) | पीछा करने | में | और हिम्मत न हारो |

يَأْلَمُونَ كَمَا تَأْلَمُونَ ۚ وَتَرْجُونَ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا يَرْجُونَ ۗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह उम्मीद रखते | जो नहीं | अल्लाह | से | और तुम उम्मीद रखते हो | जैसे तुम्हें तकलीफ़ पहुँचती है | तकलीफ़ पहुँचती है |

وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٠٤﴾ إِنَّآ أَنْزَلْنَآ إِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ ١٥ ع ١٢

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि आप फ़ैसला करें | हक़ के साथ (सच्ची) | किताब | आप (स) की तरफ़ | हम ने नाज़िल किया | बेशक हम | 104 | हिक्मत वाला | जानने वाला | और है अल्लाह |

بَيْنَ النَّاسِ بِمَآ أَرٰىكَ اللّٰهُ ۗ وَلَا تَكُنْ لِّلْخَآئِنِينَ خَصِيمًا ﴿١٠٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 105 | झगड़ने वाला (तरफ़दार) | ख़ियानत करने वालों (दग़ाबाज़ों) के लिए | हों | और न | अल्लाह | जो दिखाए आप को | लोग | दरमियान |

और जब आप (स) उन में मौजूद हों, फिर उन के लिए नमाज़ क़ाइम करें (नमाज़ पढ़ाने लगें) तो चाहिए कि उन में से एक जमाअत आप के साथ खड़ी हो और चाहिए कि वह अपने हथियार ले लें, फिर जब वह सिज्दा कर लें तो तुम्हारे पीछे हो जाएं, और (अब) आए दूसरी जमाअत (जिस ने) नमाज़ नहीं पढ़ी, पस वह आप (स) के साथ नमाज़ पढ़ें, और चाहिए कि वह लिए रहें अपना बचाओ और अपना अस्लिहा, काफ़िर चाहते हैं कि कहीं तुम अपने हथियारों और अपने सामान से ग़ाफ़िल हो तो तुम पर यकबारगी झुक पड़ें (हमला कर दें), और तुम पर गुनाह नहीं अगर तुम्हें बारिश के सबब तकलीफ़ हो या तुम बीमार हो कि तुम अपना अस्लिहा उतार रखो, और अपना बचाओ ले लो, बेशक अल्लाह ने काफ़िरों के लिए ज़िल्लत वाला अज़ाब तैयार कर रखा है। **(102)**

फिर जब तुम नमाज़ अदा कर चुको तो अल्लाह को याद करो खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर लेटे हुए, फिर जब तुम मुत्मइन (ख़ातिर जमा) हो जाओ तो (हस्बे दस्तूर) नमाज़ क़ाइम करो, बेशक नमाज़ मोमिनों पर (मुक़ैद बवक़्त) मुक़र्ररा औक़ात में फ़र्ज़ है। **(103)**

और कुफ़्फ़ार का पीछा (तआक़ुब) करने में हिम्मत न हारो, अगर तुम्हें दुख पहुँचता है तो बेशक उन्हें (भी) दुख पहुँचता है जैसे तुम्हें दुख पहुँचता है, और तुम अल्लाह से उम्मीद रखते हो जो वह उम्मीद नहीं रखते, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। **(104)**

बेशक हम ने आप (स) की तरफ़ किताब नाज़िल की सच्ची ताकि आप लोगों के दरमियान फ़ैसला कर दें जो आप को अल्लाह दिखा दे (सुझा दे) और आप न हों दग़ाबाज़ों के तरफ़दार। **(105)**

وَّاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٠٦﴾ وَلَا تُجَادِلْ عَنِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | और न झगड़ें | 106 | मेह्रबान | बख़्शने वाला | है | बेशक अल्लाह | और अल्लाह से बख़्शिश मांगें |

الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जो हो | दोस्त नहीं रखता | बेशक अल्लाह | अपने तईं | ख़ियानत करते हैं | जो लोग |

خَوَّانًا اَثِيْمًا ﴿١٠٧﴾ يَّسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं छुपते (शर्माते) | लोग | से | वह छुपते (शर्माते) हैं | 107 | गुनाहगार | ख़ाइन (दग़ाबाज) |

مِنَ اللّٰهِ وَهُوَ مَعَهُمْ اِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पसन्द करता | जो नहीं | जब रातों को मशवरा करते हैं | उन के साथ | हालांकि वह | अल्लाह से |

مِنَ الْقَوْلِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا ﴿١٠٨﴾ هٰٓاَنْتُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हाँ तुम | 108 | अहाता किए (घेरे) हुए | वह करते हैं | उसे जो | अल्लाह | और है | बात | से |

هٰٓؤُلَآءِ جٰدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ فَمَنْ يُّجَادِلُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| झगड़ेगा | सो-कौन | दुनियवी ज़िन्दगी | में | उन (की तरफ़) से | तुम ने झगड़ा किया | वह |

اللّٰهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿١٠٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 109 | वकील | उन पर (उन का) | होगा | कौन? | या | रोज़े क़ियामत | उन (की तरफ़) से | अल्लाह |

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह पाएगा | फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहे | अपनी जान | या जुल्म करे | बुरा काम | काम करे | और जो |

اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١١٠﴾ وَمَنْ يَّكْسِبْ اِثْمًا فَاِنَّمَا يَكْسِبُهٗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह कमाता है | तो फ़क़त | गुनाह | कमाए | और जो | 110 | मेह्रबान | बख़्शने वाला | अल्लाह |

عَلٰى نَفْسِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١١١﴾ وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْٓئَةً

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़ता | कमाए | और जो | 111 | हिक्मत वाला | जानने वाला | अल्लाह | और है | अपनी जान पर |

ع ١٦ ٨ ١٣ اَوْ اِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْٓـًٔا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿١١٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 112 | सरीह (खुला) | और गुनाह | भारी बुहतान | तो उस ने लादा | किसी बेगुनाह | उस की तुह्मत लगा दे | फिर | या गुनाह |

وَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ لَهَمَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन में से | एक जमाअ़त | तो क़स्द किया ही था | और उस की रहमत | आप पर | अल्लाह का फ़ज़्ल | और अगर न |

اَنْ يُّضِلُّوْكَ ؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّوْنَكَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं बिगाड़ सकते आप (स) का | अपने आप | मगर | बहका रहे हैं | और नहीं | कि आप को बहका दें |

مِنْ شَىْءٍ ؕ وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और आप को सिखाया | और हिक्मत | किताब | आप (स) पर | और अल्लाह ने नाज़िल की | कुछ भी |

الربع مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿١١٣﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 113 | बड़ा | आप (स) पर | अल्लाह का फ़ज्ल | और है | तुम जानते | जो नहीं थे |

और अल्लाह से बख़्शिश मांगें, बेशक अल्लाह है बख़्शने वाला मेह्रबान। **(106)**

आप उन लोगों की तरफ़ से न झगड़ें जो अपने तईं ख़ियानत करते हैं, बेशक अल्लाह उसे दोस्त नहीं रखता जो ख़ाइन (दग़ाबाज) गुनाहगार हो। **(107)**

वह लोगों से छुपते (शर्माते) हैं और अल्लाह से नहीं छुपते (शर्माते) हालांकि वह उन के साथ है जब कि वह रातों को मशवरा करते हैं जो बात (अल्लाह को) पसन्द नहीं, और जो वह करते हैं अल्लाह उसे अहाता किए (घेरे हुए) है। **(108)**

हाँ (सुनो) तुम वह लोग हो तुम ने उन (की तरफ़) से दुनियवी ज़िन्दगी में झगड़ा किया, सो कौन अल्लाह से झगड़ेगा रोज़े क़ियामत उन की तरफ़ से, या कौन उन का वकील होगा? **(109)**

और जो कोई करे बुरा काम या अपनी जान पर ज़ुल्म करे, फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहे तो वह अल्लाह को बख़्शने वाला मेह्रबान पाएगा। **(110)**

और जो कोई गुनाह कमाए तो वह फ़क़त अपनी जान पर (अपने हक़ में) कमाता है। और अल्लाह है जानने वाला, हिक्मत वाला। **(111)**

और जो कोई ख़ता या गुनाह कमाए, फिर उस की तुह्मत लगा दे किसी बेगुनाह पर तो उस ने भारी बुहतान और सरीह (खुला) गुनाह लादा। **(112)**

और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की रहमत आप (स) पर न होती तो उन की एक जमाअत ने क़स्द कर ही लिया था कि आप को बहका दें, और वह नहीं बहका रहे हैं मगर अपने आप को, और आप (स) का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते, और अल्लाह ने आप (स) पर नाज़िल की किताब और हिक्मत, और आप (स) को सिखाया जो आप (स) न जानते थे, और है आप (स) पर अल्लाह का बड़ा फ़ज़्ल। **(113)**

उन के अक्सर मशवरों (सरगोशियों) में कोई भलाई नहीं मगर यह कि जो हुक्म दे ख़ैरात का या अच्छी बात का या लोगों के दरमियान इस्लाह कराने का, और जो यह करे अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए, सो अनक़रीब हम उसे बड़ा सवाब देंगे। **(114)**

और जो कोई उस के बाद रसूल (स) की मुख़ालिफ़त करे जब कि उस पर हिदायत ज़ाहिर हो चुकी है, और चले मोमिनों के रास्ते के ख़िलाफ़ चले हम उस के हवाले कर देंगे जो उस ने इख़्तियार किया और हम उसे जहन्नम में दाख़िल करेंगे, और यह पलटने की बुरी जगह है। **(115)**

बेशक अल्लाह उस को नहीं बख़्शता कि उस का शरीक ठहराया जाए और बख़्श देगा उस के सिवा जिस जिस को चाहे, और जिस ने अल्लाह का शरीक ठहराया, सो वह गुमराह हुआ, गुमराही में बहुत दूर निकल गया। **(116)**

वह उस (अल्लाह) के सिवा नहीं पुकारते (परस्तिश करते) मगर औरतों को, और नहीं पुकारते मगर सरकश शैतान को, **(117)**

अल्लाह ने उस पर लानत की। उस (शैतान) ने कहा मैं तेरे बन्दों से अपना हिस्सा ज़रूर लूंगा मुक़र्ररा। **(118)**

और मैं उन्हें ज़रूर बहकाऊँगा, और ज़रूर उम्मीदें दिलाऊँगा, और उन्हें ज़रूर सिखाऊँगा तो वह ज़रूर चीरेंगे (बुतों की ख़ातिर) जानवरों के कान, और मैं उन्हें सिखाऊँगा तो वह अल्लाह की (बनाई हुई) सूरतें बदलेंगे, और जो बनाए अल्लाह के सिवा शैतान को दोस्त तो वह सरीह नुक़्सान में पड़ गया। **(119)**

वह उन को वादे करता है और उम्मीदें दिलाता है और शैतान उन्हें वादे नहीं करता मगर सिर्फ़ फ़रेब (निरा धोका) **(120)**

यही लोग हैं जिन का ठिकाना जहन्नम है और वह उस से भागने की जगह न पाएंगे। **(121)**

لَا خَيْرَ فِىْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं कोई भलाई | में | अक्सर | से | उन की सरगोशियों | मगर | हुक्म दे | ख़ैरात का | या |

مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍۢ بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अच्छी बात का | या इस्लाह कराना | लोगों के दरमियान | और जो | करे | यह |

ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١١٤﴾ وَمَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हासिल करना | अल्लाह की रज़ा | सो अनक़रीब | हम उसे देंगे | सवाब | बड़ा | 114 | और जो |

يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मुख़ालिफ़त करे | रसूल | उस के बाद | जब | ज़ाहिर हो चुकी | उस के लिए | हिदायत |

وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और चले | ख़िलाफ़ | मोमिनों का रास्ता | हम हवाले कर देंगे | जो उस ने इख़्तियार किया | और हम उसे दाख़िल करेंगे |

ع ١٦
١٢
جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿١١٥﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जहन्नम | और बुरी जगह | पहुँचने (पलटने) की जगह | 115 | बेशक अल्लाह | नहीं बख़्शता | कि शरीक ठहराया जाए |

بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस का | और बख़्शेगा | जो | सिवा | उस | जिस को | वह चाहे | और जिस | शरीक ठहराया | अल्लाह का |

فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ﴿١١٦﴾ اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सो गुमराह हुआ | गुमराही | दूर | 116 | वह नही पुकारते | उस के सिवा |

وقف لازم
اِلَّاۤ اِنٰثًا ۚ وَاِنْ يَّدْعُوْنَ اِلَّا شَيْطٰنًا مَّرِيْدًا ﴿١١٧﴾ لَّعَنَهُ اللّٰهُ ۘ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर औरतें | और नहीं | पुकारते हैं | मगर | शैतान | सरकश | 117 | अल्लाह ने उस पर लानत की |

وَقَالَ لَاَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ﴿١١٨﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और उस ने कहा | मैं ज़रूर लूँगा | से | तेरे बन्दे | हिस्सा | मुक़र्ररा | 118 |

وَّلَاُضِلَّنَّهُمْ وَلَاُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ اٰذَانَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और उन्हें ज़रूर बहकाऊंगा | और उन्हें ज़रूर उम्मीदें दिलाऊंगा | और उन्हें हुकम दुँगा | तो वह ज़रूर चीरेंगे | कान |

الْاَنْعَامِ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّتَّخِذِ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| जानवर (जमा) | और उन्हें हुकम दुँगा | तो वह ज़रूर बदलेंगे | अल्लाह की (बनाई हुई) सूरतें | और जो | पकड़े (बनाए) |

الشَّيْطٰنَ وَلِيًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِيْنًا ﴿١١٩﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| शैतान | दोस्त | अल्लाह के सिवा | तो वह पड़ा नुक़्सान में | नुक़्सान | सरीह | 119 |

يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيْهِمْ ؕ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿١٢٠﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह उन को वादा देता है | और उन्हें उम्मीद दिलाता है | और उन्हें वादे नहीं देता | शैतान | मगर | सिर्फ़ फ़रेब | 120 |

اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ وَلَا يَجِدُوْنَ عَنْهَا مَحِيْصًا ﴿١٢١﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यही लोग | जिन का ठिकाना | जहन्नम | और वह न पाएंगे | उस से | भागने की जगह | 121 |

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बाग़ात | हम अनक़रीब उन्हें दाखिल करेंगे | अच्छे | और उन्हों ने अमल किए | ईमान लाए | और जो लोग |

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह का वादा | हमेशा हमेशा | उस में | हमेशा रहेंगे | नहरें | उन के नीचे | से | बहती है |

حَقًّا ؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا ﴿١٢٢﴾ لَيْسَ بِاَمَانِيِّكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारी आर्ज़ूओं पर | न | 122 | बात में | अल्लाह | से | सच्चा | और कौन | सच्चा |

وَلَآ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ ؕ مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उस की सजा पाएगा | बुराई | जो करेगा | अहले किताब | आर्ज़ूएं | और न |

وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٢٣﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| करेगा | और जो | 123 | और न मददगार | कोई दोस्त | अल्लाह के सिवा | अपने लिए | और न पाएगा |

مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो ऐसे लोग | मोमिन | बशर्त यह कि वह | या औरत | मर्द | से | अच्छे काम | से |

يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿١٢٤﴾ وَمَنْ اَحْسَنُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़ियादा बेहतर | और कौन | 124 | तिल बराबर | उन पर ज़ुल्म होगा | और न | जन्नत | दाखिल होंगे |

دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दीन | और उस ने पैरवी की | नेकोकार | और वह | अल्लाह के लिए | अपना मुँह | झुका दिया | से- जिस | दीन |

اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ﴿١٢٥﴾ وَلِلّٰهِ مَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और अल्लाह के लिए जो | 125 | दोस्त | इब्राहीम (अ) | और अल्लाह ने बनाया | एक का हो कर रहने वाला | इब्राहीम (अ) |

١٨ ع ١١ ١٥ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا ﴿١٢٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 126 | अहाता किए हुए | चीज़ | हर | और है अल्लाह | ज़मीन | में | और जो | आस्मानों में |

وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِي النِّسَآءِ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ ۙ وَمَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | उन के बारे में | तुम्हें हुक्म देता है | अल्लाह | आप कहदें | औरतों के बारे में | और वह आप से हुक्म दरयाफ़्त करते हैं |

يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ فِيْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِيْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जिन्हें | औरतें | यतीम | (बारे) में | किताब (कुरआन) में | तुम्हें | सुनाया जाता है |

لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन को निकाह में ले लो | कि | और नहीं चाहते हो | उन के लिए | जो लिखा गया (मुक़र्रर) | तुम उन्हें नहीं देते |

وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَاَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यतीमों के बारे में | क़ाइम रहो | और यह कि | बच्चे | से (बारे में) | और बेबस |

بِالْقِسْطِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا ﴿١٢٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 127 | उस को जानने वाला | है | तो बेशक अल्लाह | कोई भलाई | और जो तुम करोगे | इन्साफ़ पर |

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अमल किए हम अनक़रीब उन्हें बाग़ात में दाखिल करेंगे जिन के नीचे नहरें बहती है वह उस में हमेशा हमेशा रहेंगे, अल्लाह का वादा सच्चा है, और कौन है अल्लाह से जियादा सच्चा बात में? (122)

(अ़ज़ाब ओ सवाब) न तुम्हारी आर्ज़ूओं पर है और न अहले किताब की आर्ज़ूओं पर, जो कोई बुराई करेगा उस की सज़ा पाएगा और अपने लिए नहीं पाएगा अल्लाह के सिवा कोई दोस्त और न मददगार। (123)

और जो अच्छे काम करेगा, मर्द हो या औरत, बशर्त यह कि वह मोमिन हो तो ऐसे लोग जन्नत में दाखिल होंगे, और उन पर तिल बराबर ज़ुल्म न होगा। (124)

और किस का दीन उस से बेहतर? जिस ने अपना मुँह अल्लाह के लिए झुका दिया और वह नेकोकार भी है, और उस ने एक के हो रहने वाले इब्राहीम (अ) के दीन की पैरवी की, और अल्लाह ने इब्राहीम (अ) को दोस्त बनाया। (125)

और अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में है और जो ज़मीन में है, और अल्लाह हर चीज़ को अहाता किए हुए है। (126)

आप (स) से औरतों के बारे में हुक्म दर्याफ़्त करते हैं, आप (स) कह दें अल्लाह तुम्हें उन के बारे में हुक्म (इजाज़त) देता है, और जो तुम्हें कुरआन मजीद में सुनाया जाता है यतीम औरतों के बारे में, जिन्हें तुम नहीं देते उन का मुक़र्रर किया हुआ (मेहर) और नहीं चाहते कि उन को निकाह में ले लो, और बेबस बच्चों के बारे में, और यह कि तुम यतीमों के बारे में इन्साफ़ पर क़ाइम रहो, और तुम जो भलाई करोगे तो बेशक अल्लाह उस को जानने वाला है। (127)

और अगर कोई औरत डरे (अन्देशा करे) अपने खावन्द (की तरफ़) से ज़ियादती या बेरग़बती तो उन दोनों पर गुनाह नहीं कि वह सुलह कर लें आपस में, और सुलह बेहतर है, और तबीअ़तों में बुख्ल हाज़िर किया गया है (मौजूद होता ही है), और अगर तुम नेकी करो और परहेज़गारी इख्तियार करो तो बेशक तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस से बाखबर है। (128)

और हरगिज न कर सकोगे अगरचे तुम बोहतेरा चाहो कि औरतों के दरमियान बराबरी रखो, पस न झुक पड़ो बिलकुल (एक ही तरफ़) कि एक को (आध में) लटकती हुई डाल रखो, और अगर तुम इस्लाह करते रहो और परहेज़गारी करो तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेह्रबान है। (129)

और अगर दोनों (मियां बीवी) जुदा हो जाएं तो अल्लाह हर एक को बेनियाज कर देगा अपनी कशाइश से, और अल्लाह कशाइश वाला हिक्मत वाला है। (130)

और अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और हम ने ताकीद कर दी है उन लोगों को जिन्हें किताब दी गई तुम से पहले और तुम्हें (भी) कि अल्लाह से डरते रहो, और अगर तुम कुफ़्र करोगे तो बेशक अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में और जो जमीन में है, और अल्लाह बेनियाज़ है, सब खूबियों वाला। (131)

और अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और काफ़ी है अल्लाह कारसाज़। (132)

अगर (अल्लाह) चाहे कि तुम्हें ले जाए (फ़ना कर दे) ऐ लोगो। और दूसरों को ले आए (ला बसाए), और अल्लाह उस पर क़ादिर है। (133)

जो कोई दुनिया का सवाब चाहता है तो अल्लाह के पास दुनिया और आख़िरत का सवाब है, और अल्लाह सुनने वाला, और देखने वाला है। (134)

وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْۢ بَعْلِهَا نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बे रग़बती | या | ज़ियादती | अपने ख़ावन्द से | डरे | कोई औरत | और अगर |

فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يُّصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ؕ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेहतर | और सुलह | सुलह | आपस में | कि वह सुलह कर लें | उन दोनों पर | तो नहीं गुनाह |

وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ ؕ وَاِنْ تُحْسِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो बेशक अल्लाह | और परहेज़गारी करो | तुम नेकी करो | और अगर | बुख्ल | तबीअ़तें | और हाज़िर किया गया (मौजूद है) |

كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿١٢٨﴾ وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْٓا اَنْ تَعْدِلُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बराबरी रखो | कि | कर सकोगे | और हरगिज न | 128 | बाख़बर | जो तुम करते हो | है |

بَيْنَ النِّسَآءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कि एक को डाल रखो | बिलकुल झुक जाना | पस न झुक पड़ो | बोहतेरा चाहो | अगरचे | औरतों के दरमियान |

كَالْمُعَلَّقَةِ ؕ وَاِنْ تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बख़्शने वाला | है | तो बेशक अल्लाह | और परहेजगारी करो | इस्लाह करते रहो | और अगर | जैसे लटकती हुई |

رَّحِيْمًا ﴿١٢٩﴾ وَاِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَكَانَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और है | अपनी कशाइश से | से | हर एक को | अल्लाह बेनियाज़ कर देगा | दोनों जुदा हो जाएं | और अगर | 129 | मेह्रबान |

اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا ﴿١٣٠﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन में | और जो | आस्मानों | में | और अल्लाह के लिए जो | 130 | हिक्मत वाला | कशाइश वाला | अल्लाह |

وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और तुम्हें | तुम से पहले | से | जिन्हें किताब दी गई | वह लोग | और हम ने ताकीद कर दी है |

اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | आस्मानों में | जो | तो बेशक अल्लाह के लिए | तुम कुफ़्र करोगे | और अगर | कि डरते रहो अल्लाह से |

فِى الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَنِيًّا حَمِيْدًا ﴿١٣١﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मानों | में | और अल्लाह के लिए जो | 131 | सब खूबियों वाला | बेनियाज़ | अल्लाह | और है | ज़मीन में |

وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿١٣٢﴾ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हें ले जाए | अगर वह चाहे | 132 | कारसाज़ | अल्लाह | और काफ़ी | ज़मीन में | और जो |

اَيُّهَا النَّاسُ وَيَاْتِ بِاٰخَرِيْنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى ذٰلِكَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| उस पर | और है अल्लाह | दूसरों को | और ले आए | ऐ लोगो |

قَدِيْرًا ﴿١٣٣﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तो अल्लाह के पास | दुनिया का सवाब | चाहता है | जो | 133 | क़ादिर |

ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا ۢ بَصِيْرًا ﴿١٣٤﴾ ع ١٩ ٨ ١٦

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 134 | देखने वाला | सुनने वाला | और है अल्लाह | और आखिरत | दुनिया | सवाब |

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गवाही देने वाले अल्लाह के लिए | इन्साफ़ पर | क़ाइम रहने वाले | हो जाओ | जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले) | ऐ |

وَلَوْ عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई मालदार | अगर (चाहे) हो | और क़राबतदार | माँ बाप | या | खुद तुम्हारे ऊपर (खिलाफ़) | अगरचे |

اَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۫ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰۤى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| की इन्साफ़ करो | ख़्वाहिश | पैरवी करो | सो-न | उन का | ख़ैर ख़्वाह | पस अल्लाह | या मोहताज |

وَاِنْ تَلْوٗۤا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿١٣٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 135 | बाखबर | तुम करते हो | जो | है | तो बेशक अल्लाह | या पहलूनही करोगे | और अगर तुम ज़बान दबाओगे |

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो उस ने नाज़िल की | और किताब | और उस का रसूल | अल्लाह पर | ईमान लाओ | जो लोग ईमान लाए (ईमान वालो) | ऐ |

عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ۫ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह का | इन्कार करे | और जो | इस से क़ब्ल | जो उस ने नाज़िल की | और किताब | अपने रसूल पर |

وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا ۢ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गुमराही | तो वह भटक गया | और रोज़े आख़िरत | और उस के रसूलों | और उस की किताबों | और उस के फ़रिश्तों |

بَعِيْدًا ﴿١٣٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर | फिर काफिर हुए | ईमान लाए | फिर | फिर काफिर हुए | जो लोग ईमान लाए | बेशक | 136 | दूर |

ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيْلًا ﴿١٣٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 137 | राह | और न दिखाएगा | उन्हें | कि बख़्शदे | अल्लाह | नहीं है | बढ़ते रहे कुफ़्र में |

بَشِّرِ الْمُنٰفِقِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٣٨﴾ ۙ الَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पकड़ते है (बनाते हैं) | जो लोग | 138 | दर्दनाक अ़ज़ाब | उन के लिए | कि | मुनाफ़िक़ (जमा) | खुशख़बरी दें |

الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ اَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन के पास | क्या ढून्डते है? | मोमिनीन | सिवाए (छोड़ कर) | दोस्त | काफ़िर (जमा) |

الْعِزَّةَ فَاِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ﴿١٣٩﴾ وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किताब में | तुम पर | उतार चुका | और तहक़ीक़ | 139 | सारी | अल्लाह के लिए | इ़ज़्ज़त | बेशक | इ़ज़्ज़त |

اَنْ اِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَاُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो न बैठो | उस का | मज़ाक़ उड़ाया जाता है | उस का | इन्कार किया जाता है | अल्लाह की आयतें | जब तुम सुनो | यह कि |

مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖۤ ۖ اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन जैसे | उस सूरत में | यक़ीनन तुम | उस के सिवा | बात | में | वह मशग़ूल हों | यहां तक कि | उन के साथ |

اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ جَمِيْعَا ﴿١٤٠﴾ ۙ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 140 | तमाम | जहन्नम में | और काफ़िर (जमा) | मुनाफ़िक़ (जमा) | जमा करने वाला | बेशक अल्लाह |

ऐ ईमान वालो! हो जाओ इन्साफ़ पर क़ाइम रहने वाले अल्लाह के लिए गवाही देने वाले अगरचे खुद तुम्हारे खिलाफ़ या माँ बाप और क़राबतदारों (के खिलाफ़) हो, चाहे कोई मालदार हो या मोहताज (बहर हाल) अल्लाह उन का (सब से बढ़ कर) ख़ैर खाह है, सो तुम ख़ाहिश (नफ़्स) की पैरवी न करो इन्साफ़ करने में, और अगर तुम (गवाही में) ज़बान दबाओगे या पहलूतही करोगे तो बेशक अल्लाह उस से बाखबर है जो तुम करते हो। (135)

ऐ ईमान वालो! तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के रसूल (स) पर और उस किताब पर जो उस ने अपने रसूल (स) पर नाज़िल की (कुरआन) और उन किताबों पर जो उस से क़ब्ल नाज़िल कीं, और जो इन्कार करे अल्लाह का, और उस के फरिश्तों, उस की किताबों, उस के रसूलों और रोजे आखिरत का तो भटक गया दूर की गुमराही में। (136)

बेशक जो लोग ईमान लाए, फिर काफ़िर हुए, फिर ईमान लाए, फिर काफिर हुए, फिर कुफ़्र में बढ़ते रहे, अल्लाह उन्हें हरगिज न बख़्शेगा और न उन्हें (सीधी) राह दिखाएगा। (137)

मुनाफ़िक़ों को ख़ुशखबरी दें कि उन के लिए दर्दनाक अजाब है। (138)

जो लोग मोमिनों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं, क्या वह उन के पास इ़ज़्ज़त ढून्डते हैं? बेशक सारी इज्जत अल्लाह ही के लिए है। (139)

और तहक़ीक़ (अल्लाह) किताब (कुरआन) में तुम पर (यह हुक्म) उतार चुका है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों का इन्कार किया जाता है और उन का मज़ाक़ उड़ाया जाता है तो उन के साथ न बैठो यहां तक कि वह मशग़ूल हों उस के सिवा (किसी और) बात में, यक़ीनन उस सूरत में तुम उन जैसे होगे, बेशक अल्लाह जमा करने वाला है तमाम मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों को जहन्नम में (एक जगह) (140)

जो लोग तकते (इन्तिज़ार करते) रहते हैं तुम्हारा, फिर अगर तुम को अल्लाह की तरफ़ से फ़तह हो तो कहते हैं क्या हम तुम्हारे साथ न थे? और अगर काफ़िरों के लिए हिस्सा हो (फ़तह हो) तो कहते हैं क्या हम तुम पर ग़ालिब नहीं आए थे? और हम ने तुम्हें बचाया था मुसलमानों से। सो अल्लाह क़ियामत के दिन तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करेगा, और हरगिज़ न देगा अल्लाह काफ़िरों को मुसलमानों पर राह (ग़लबा)। **(141)**

बेशक मुनाफ़िक़ धोका देते हैं अल्लाह को, और वह उन को धोके (का जवाब) देगा, और जब नमाज़ को खड़े हों तो सुस्ती से खड़े हों, वह दिखाते हैं लोगों को और अल्लाह को याद नहीं करते मगर बहुत कम। **(142)**

उस के दरमियान अधर में लटके हुए हैं न इन की तरफ़ न उन की तरफ़, और जिस को अल्लाह गुमराह करे तू हरगिज़ उस के लिए न पाएगा कोई राह **(143)**

ऐ ईमान वालो! काफ़िरों को दोस्त न बनाओ मुसलमानों को छोड़ कर, क्या तुम चाहते हो कि तुम अपने ऊपर अल्लाह का सरीह इल्ज़ाम लो? **(144)**

बेशक मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सब से निचले दरजे में होंगे, और तू हरगिज़ उन का कोई मददगार न पाएगा। **(145)**

मगर जिन लोगों ने तौबा की और (अपनी) इस्लाह कर ली और मज़बूती से अल्लाह (की रस्सी) को पकड़ लिया और अपना दीन अल्लाह के लिए ख़ालिस कर लिया तो ऐसे लोग मोमिनों के साथ होंगे, और अल्लाह जल्द मोमिनों को बड़ा सवाब देगा। **(146)**

अगर तुम शुक्र करोगे और ईमान लाओगे तो अल्लाह तुम्हें अज़ाब दे कर क्या करेगा? और अल्लाह क़द्रदान, ख़ूब जानने वाला है। **(147)**

الَّذِيْنَ يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ ۚ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوْٓا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कहते हैं | अल्लाह (की तरफ़) से | फ़तह | तुम को | फिर अगर हो | तुम्हें | तकते रहते हैं | जो लोग |

اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۖ وَاِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِيْنَ نَصِيْبٌ ۙ قَالُوْٓا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कहते हैं | हिस्सा | काफ़िरों के लिए | हो | और अगर | तुम्हारे साथ | क्या हम न थे? |

اَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे दरमियान | फ़ैसला करेगा | सो अल्लाह | मोमिनीन | से | और हम ने मना किया था (बचाया था) तुम्हें | तुम पर | क्या हम ग़ालिब नहीं आए थे |

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا ﴿١٤١﴾ ٣٠ ع ١٧

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 141 | राह | मोमिनों पर | काफ़िरों को | अल्लाह | और हरगिज़ न देगा | क़ियामत के दिन |

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ۚ وَاِذَا قَامُوْٓا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| खड़े हों | और जब | उन्हें धोका देगा | और वह | धोका देते हैं अल्लाह को | बेशक मुनाफ़िक़ |

اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى ۙ يُرَآءُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| याद करते | और नहीं | लोग | वह दिखाते हैं | खड़े हों सुस्ती से | नमाज़ | तरफ़ (को) |

اللّٰهَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٤٢﴾ مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ ۖ لَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ وَلَآ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न | इन की तरफ़ | न | उस | दरमियान | अधर में लटके हुए | 142 | मगर बहुत कम | अल्लाह |

اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ ۭ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿١٤٣﴾ يٰٓاَيُّهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ | 143 | कोई राह | उस के लिए | तू हरगिज़ न पाएगा | गुमराह करे अल्लाह | और जो जिस | उन की तरफ़ |

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| सिवाए | दोस्त | काफ़िर (जमा) | न पकड़ो (न बनाओ) | जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले) |

الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٤٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 144 | सरीह | इल्ज़ाम | तुम पर (अपने ऊपर) | अल्लाह का | कि तुम करो (लो) | क्या तुम चाहते हो | मोमिनीन |

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِى الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और हरगिज़ न पाएगा | दोज़ख़ | से | सब से नीचे का दरजा | में | मुनाफ़िक़ (जमा) | बेशक |

لَهُمْ نَصِيْرًا ﴿١٤٥﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَاعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह को | और मज़बूती से पकड़ा | और इस्लाह की | जिन्हों ने तौबा की | मगर | 145 | कोई मददगार | उन के लिए |

وَاَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ وَسَوْفَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और जल्द | मोमिनों के साथ | तो ऐसे लोग | अल्लाह के लिए | अपना दीन | और ख़ालिस कर लिया |

يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١٤٦﴾ مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे अज़ाब से | अल्लाह | क्या करेगा | 146 | बड़ा सवाब | मोमिन (जमा) | देगा अल्लाह |

اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ﴿١٤٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 147 | ख़ूब जानने वाला | क़द्रदान | अल्लाह | और है | और ईमान लाओगे | अगर तुम शुक्र करोगे |

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ

ज़ुल्म हुआ हो | जो-जिस | मगर | बात | बुरी | ज़ाहिर करना | अल्लाह | पसन्द नहीं करता

وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ﴿١٤٨﴾ اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا

या माफ़ कर दो | या उसे छुपाओ | कोई भलाई | अगर तुम खुल्लम खुल्ला करो | 148 | जानने वाला | सुनने वाला | अल्लाह | और है

عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ﴿١٤٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ

इन्कार करते हैं | जो लोग | बेशक | 149 | कुदरत वाला | माफ़ करने वाला | है | अल्लाह | तो बेशक | बुराई | से

بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ

और उस के रसूल | अल्लाह | दरमियान | फ़र्क निकालें | कि | और चाहते हैं | और उस के रसूलों | अल्लाह का

وَيَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ

कि | और वह चाहते हैं | बाज़ को | और नहीं मानते | बाज़ को | हम मानते हैं | और कहते हैं

يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿١٥٠﴾ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ

असल | काफ़िर (जमा) | वह | यही लोग | 150 | एक राह | उस के दरमियान | पकड़ें (निकालें)

وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿١٥١﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ

अल्लाह पर | और जो लोग ईमान लाए | 151 | ज़िल्लत का | अ़ज़ाब | काफ़िरों के लिए | और हम ने तैयार किया है

وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ۭ

उन के अजर | उन्हें देगा | अनक़रीब | यही लोग | उन में से | किसी के | और फ़र्क नहीं करते दरमियान | और उस के रसूलों पर

٢١ ع ١ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٥٢﴾ يَسْــَٔلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ

उतार लाए | कि | अहले किताब | आप (स) से सवाल करते हैं | 152 | निहायत मेहरबान | बख़्शने वाला | अल्लाह | और है

عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَاۗءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ

उस से | बड़ा | मूसा (अ) | सो वह सवाल कर चुके हैं | आस्मान | से | किताब | उन पर

فَقَالُوْٓا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ

फिर | उन के ज़ुल्म के बाइस | बिजली | सो उन्हें आ पकड़ा | अलानिया | अल्लाह | हमें दिखा दे | उन्हों ने कहा

اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا

सो हम ने दरगुज़र किया | निशानियाँ | उन के पास आई | कि | उस के बाद | बछड़ा (गौसाला) | उन्हों ने बना लिया

عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٥٣﴾ وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ

उन के ऊपर | और हम ने बुलन्द किया | 153 | ज़ाहिर (सरीह) | ग़लबा | मूसा (अ) | और हम ने दिया | उस से (उस को)

الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا

और हम ने कहा | सिज्दा करते | दरवाज़ा | तुम दाखिल हो | उन के लिए (उन से) | और हम ने कहा | उन से अ़हद लेने की ग़र्ज़ से | तूर

لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِي السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿١٥٤﴾

154 | मज़बूत | अ़हद | उन से | और हम ने लिया | हफ़्ते का दिन | में | न ज़ियादती करो | उन से

अल्लाह (किसी की) बुरी बात का ज़ाहिर करना पसन्द नहीं करता मगर जिस पर ज़ुल्म हुआ हो, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (148)

अगर तुम कोई भलाई खुल्लम खुल्ला करो या उसे छुपाओ या माफ़ कर दो कोई बुराई तो बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, कुदरत वाला है। (149)

बेशक जो लोग इन्कार करते हैं अल्लाह का और उस के रसूलों का और चाहते हैं कि अल्लाह और उस के रसूलों के दरमियान फ़र्क निकालें, और कहते हैं कि हम बाज़ को मानते हैं और बाज़ को नहीं मानते, और वह चाहते हैं कि कुफ़्र और ईमान के दरमियान निकालें एक राह। (150)

यही लोग असल काफ़िर हैं, और हम ने काफ़िरों के लिए ज़िल्लत का अ़ज़ाब तैयार कर रखा है (151)

और जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाए, और उन में से किसी के दरमियान फ़र्क नहीं करते यही वह लोग हैं अनक़रीब उन्हें (अल्लाह) उन के अजर देगा, और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (152)

अहले किताब आप (स) से सवाल करते हैं कि उन पर आस्मान से किताब उतार लाएं, सो वह सवाल कर चुके हैं मूसा (अ) से उस से भी बड़ा, उन्हों ने कहा हमें अल्लाह को अलानिया (खुल्लम खुल्ला) दिखादे, सो उन्हें बिजली ने आ पकड़ा उन के ज़ुल्म के बाइस, फिर उन्हों ने बछड़े (गौसाला) को (माबूद) बना लिया उस के बाद कि उन के पास निशानियाँ आगईं, उस पर भी हम ने उन से दरगुज़र किया, और हम ने मूसा (अ) को सरीह ग़लबा दिया। (153)

और हम ने उन के ऊपर बुलन्द किया "तूर" पहाड़ उन से अ़हद लेने की ग़र्ज़ से, और हम ने उन से कहा दरवाज़े में सिज्दा करते हुए दाखिल हो, और हम ने उन से कहा हफ़्ते के दिन में ज़ियादती न करो, और हम ने उन से मज़बूत अ़हद लिया। (154)

(उन को सज़ा मिली) बसबब उन के अहद ओ पैमान तोड़ने, और उन के अल्लाह की आयतों का इन्कार करने, और उन के नबियों को नाहक़ क़त्ल करने, और उन के यह कहने (के सबब) कि हमारे दिल पर्दे में (महफ़ूज़) हैं, बल्कि अल्लाह ने उन पर उन के कुफ़्र के सबब मोहर कर दी, सो ईमान नहीं लाते मगर कम। (155)

(और उन को सज़ा मिली) उन के कुफ़्र और मरयम (अ) पर बड़ा बुहतान बान्धने के सबब। (156)

और उन के यह कहने (के सबब) कि हम ने क़त्ल किया अल्लाह के रसूल ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) को, और उन्हों ने उस को क़त्ल नहीं किया और उन्हों ने उस को सूली नहीं दी बल्कि उन के लिए (उन जैसी) सूरत बना दी गई और बेशक जो लोग उस (बारे) में इख़्तिलाफ़ करते हैं वह अलबत्ता उस बारे में शक में हैं, अटकल की पैरवी के सिवा उन्हें उस का कोई इल्म नहीं, और उस (अ) को उन्हों ने यक़ीनन क़त्ल नहीं किया, (157)

बल्कि अल्लाह ने उस (अ) को अपनी तरफ़ उठा लिया, और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (158)

और कोई अहले किताब से न रहेगा मगर उस (अ) पर अपनी मौत से पहले ज़रूर ईमान लाएगा, और क़ियामत के दिन वह (अ) उन पर गवाह होंगे। (159)

सो हम ने यहूदियों पर (बहुत सी) पाक चीज़ें जो उन के लिए हलाल थीं हराम कर दीं उन के ज़ुल्म की वजह से और उन के अल्लाह के रास्ते से बहुत रोकने की वजह से, (160)

और उन के सूद लेने (की वजह से) हालांकि वह उस से रोक दिए गए थे और (इस वजह से) कि वह खाते थे लोगों के माल नाहक़, और हम ने उन में से काफ़िरों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है। (161)

लेकिन उन में से जो इल्म में पुख़्ता हैं, और जो मोमिन हैं वह उस को मानते हैं जो नाज़िल किया गया आप (स) की तरफ़ और जो आप (स) से पहले नाज़िल किया गया, और नमाज क़ाइम रखने वाले हैं और अदा करने वाले हैं ज़कात और अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाने वाले हैं, ऐसे लोगों को हम ज़रूर बड़ा अजर देंगे। (162)

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बसबब | उन का तोड़ना | अपना अहद ओ पैमान | और उन का इन्कार करना | अल्लाह की आयात | और उन का क़त्ल करना | नबियों (जमा) |

بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नाहक़ | और उन का कहना | हमारे दिल (जमा) | पर्दे में | बल्कि | मोहर कर दी अल्लाह ने | उन पर | उन के कुफ़्र के सबब |

فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۠﴿۱۵۵﴾ وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सो वह ईमान नहीं लाते | मगर | कम | 155 | और उन के कुफ़्र के सबब | और उन का कहना (बान्धना) | पर | मरयम (अ) |

بُهْتَانًا عَظِيْمًا ۙ﴿۱۵۶﴾ وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बुहतान | बड़ा | 156 | और उन का कहना | हम | हम ने क़त्ल किया | मसीह (अ) | ईसा (अ) | इब्ने मरयम (अ) | रसूल |

اللّٰهِ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | और नहीं क़त्ल किया उस को | और नहीं सूली दी उस को | और बल्कि | सूरत बना दी गई | उन के लिए | और बेशक | जो लोग इख़्तिलाफ़ करते हैं |

فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ ؕ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِلَّا اتِّبَاعَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | अलबत्ता शक में | उस से | नहीं उन को | उस का | कोई इल्म | मगर | पैरवी |

الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا ۙ﴿۱۵۷﴾ بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अटकल | और उस को क़त्ल नहीं किया | यक़ीनन | 157 | बल्कि | उस को उठा लिया | अल्लाह | अपनी तरफ़ | और है | अल्लाह | ग़ालिब |

حَكِيْمًا ﴿۱۵۸﴾ وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ ۚ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हिक्मत वाला | 158 | और नहीं | से | अहले किताब | मगर | ज़रूर ईमान लाएगा | उस पर | पहले | अपनी मौत |

وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا ۚ﴿۱۵۹﴾ فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और क़ियामत के दिन | होगा | उन पर | गवाह | 159 | सो ज़ुल्म के सबब | से | जो यहूदी हुए (यहूदी) |

حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने हराम कर दिया | उन पर | पाक चीज़ें | हलाल थी | उन के लिए | और उन के रोकने की वजह से | से | अल्लाह का रास्ता |

كَثِيْرًا ۙ﴿۱۶۰﴾ وَّاَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَقَدْ نُهُوْا عَنْهُ وَاَكْلِهِمْ اَمْوَالَ النَّاسِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बहुत | 160 | और उन का लेना | सूद | हालांकि वह रोक दिए गए थे | उस से | और उन का खाना | माल (जमा) | लोग |

بِالْبَاطِلِ ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۶۱﴾ لٰكِنِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नाहक़ | और हम ने तैयार किया | काफ़िरों के लिए | उन में से | अ़ज़ाब | दर्दनाक | 161 | लेकिन |

الرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पुख़्ता (जमा) | इल्म में | उन में से | और मोमिनीन | वह मानते हैं | जो | नाज़िल किया गया | आप की तरफ़ |

وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | नाज़िल किया गया | से | आप (स) से पहले | और क़ाइम रखने वाले | नमाज | और अदा करने वाले | ज़कात |

وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۱۶۲﴾ ع ۲۲ ۲

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और ईमान लाने वाले | अल्लाह पर | और आख़िरत का दिन | यही लोग | हम ज़रूर देंगे उन्हें | अजर | बड़ा | 162 |

إِنَّآ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ كَمَآ أَوْحَيْنَآ إِلَىٰ نُوحٍ وَٱلنَّبِيِّـۧنَ مِنۢ بَعْدِهِۦۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के बाद | और नबियों | नूह (अ) | तरफ़ | हम ने वही भेजी | जैसे | आप (स) की तरफ़ | हम ने वही भेजी | बेशक हम |

وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰٓ إِبْرَٰهِيمَ وَإِسْمَٰعِيلَ وَإِسْحَٰقَ وَيَعْقُوبَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और याक़ूब (अ) | और इसहाक़ (अ) | और इस्माईल (अ) | इब्राहीम (अ) | तरफ़ | और हम ने वही भेजी |

وَٱلْأَسْبَاطِ وَعِيسَىٰ وَأَيُّوبَ وَيُونُسَ وَهَٰرُونَ وَسُلَيْمَٰنَۚ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और सुलैमान (अ) | और हारून (अ) | और यूनुस (अ) | और अय्यूब (अ) | और ईसा (अ) | और औलादे याक़ूब |

وَءَاتَيْنَا دَاوُۥدَ زَبُورًا ﴿١٦٣﴾ وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنَٰهُمْ عَلَيْكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आप (स) पर (आप से) | हम ने उन का अहवाल सुनाया | और ऐसे रसूल (जमा) | 163 | ज़बूर | दाऊद (अ) | और हम ने दी |

مِن قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَۚ وَكَلَّمَ ٱللَّهُ مُوسَىٰ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मूसा (अ) | अल्लाह | और कलाम किया | आप पर (आप को) | हम ने हाल बयान किया | नहीं | और ऐसे रसूल | इस से क़ब्ल |

تَكْلِيمًا ﴿١٦٤﴾ رُّسُلًا مُّبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| लोगों के लिए | ताकि न रहे | और डराने वाले | ख़ुशख़बरी सुनाने वाले | रसूल (जमा) | 164 | कलाम करना (ख़ूब) |

عَلَى ٱللَّهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ ٱلرُّسُلِۚ وَكَانَ ٱللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٦٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 165 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | और है अल्लाह | रसूलों के बाद | हुज्जत | अल्लाह | पर |

لَّٰكِنِ ٱللَّهُ يَشْهَدُ بِمَآ أَنزَلَ إِلَيْكَۖ أَنزَلَهُۥ بِعِلْمِهِۦۖ وَٱلْمَلَٰٓئِكَةُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और फ़रिश्ते | अपने इल्म के साथ | वह नाज़िल किया | आप (स) की तरफ़ | उस ने नाज़िल किया | उस पर जो | गवाही देता है | अल्लाह | लेकिन |

يَشْهَدُونَۚ وَكَفَىٰ بِٱللَّهِ شَهِيدًا ﴿١٦٦﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने कुफ़्र किया | वह लोग जो | बेशक | 166 | गवाह | अल्लाह | और काफ़ी है | गवाही देते हैं |

وَصَدُّوا۟ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ قَدْ ضَلُّوا۟ ضَلَٰلًۢا بَعِيدًا ﴿١٦٧﴾ إِنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | 167 | दूर | गुमराही | तहक़ीक़ वह गुमराही में पड़े | अल्लाह का रास्ता | से | और उन्हों ने रोका |

ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ وَظَلَمُوا۟ لَمْ يَكُنِ ٱللَّهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हें हिदायत दे | और न | उन्हें | कि बख़्शदे | अल्लाह | नहीं है | और ज़ुल्म किया | उन्हों ने कुफ़्र किया | वह लोग जो |

طَرِيقًا ﴿١٦٨﴾ إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خَٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدًاۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह | और है | हमेशा | उस में | रहेंगे | जहन्नम | रास्ता | मगर | 168 | रास्ता (सीधा) |

عَلَى ٱللَّهِ يَسِيرًا ﴿١٦٩﴾ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ ٱلرَّسُولُ بِٱلْحَقِّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हक़ के साथ | रसूल | तुम्हारे पास आया | लोग | ऐ | 169 | आसान | अल्लाह पर |

مِن رَّبِّكُمْ فَـَٔامِنُوا۟ خَيْرًا لَّكُمْۚ وَإِن تَكْفُرُوا۟ فَإِنَّ لِلَّهِ مَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | अल्लाह के लिए | तो बेशक | तुम न मानोगे | और अगर | तुम्हारे लिए | बेहतर | सो ईमान लाओ | तुम्हारा रब | से |

فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِۚ وَكَانَ ٱللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٧٠﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 170 | हिक्मत वाला | जानने वाला | अल्लाह | और है | और ज़मीन | आस्मानों में |

बेशक हम ने आप (स) की तरफ़ वही भेजी है जैसे हम ने वही भेजी थी नूह (अ) की तरफ़ और उस के बाद नबियों की तरफ़ और हम ने वही भेजी इब्राहीम (अ), इस्माईल (अ), इसहाक़ (अ), याक़ूब (अ) और औलादे याक़ूब (अ) की तरफ़ और ईसा (अ) अय्यूब (अ) यूनुस (अ) हारून (अ) और सुलैमान (अ) (की तरफ़ वही भेजी) और हम ने दाऊद (अ) को दी ज़बूर। **(163)**

और ऐसे रसूल (भेजे) हैं जिन के अहवाल हम ने उस से क़ब्ल आप (स) से बयान किए और ऐसे रसूल (भी भेजे) जिनके अहवाल हम ने आप (स) से बयान नहीं किए, और अल्लाह ने मूसा (अ) से (ख़ूब) कलाम किया **(164)**

(हम ने भेजे) रसूल ख़ुशख़बरी सुनाने वाले और डराने वाले ताकि रसूलों के बाद लोगों को अल्लाह पर कोई हुज्जत न रहे, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। **(165)**

लेकिन अल्लाह उस पर गवाही देता है जो उस ने आप (स) की तरफ़ नाज़िल किया, वह अपने इल्म से नाज़िल किया और फ़रिश्ते (भी) गवाही देते हैं, और गवाह (तो) अल्लाह ही काफ़ी है। **(166)**

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, तहक़ीक़ वह गुमराही में दूर जा पड़े। **(167)**

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और ज़ुल्म किया, अल्लाह उन्हें नहीं बख़्शेगा और न उन्हें हिदायत देगा (सीधे) रास्ते की, **(168)**

मगर जहन्नम का रास्ता, उस में हमेशा रहेंगे, और यह अल्लाह पर आसान है। **(169)**

ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ के साथ रसूल (स) आगया है, सो ईमान ले आओ तुम्हारे लिए बेहतर है, और अगर तुम न मानोगे तो बेशक जो कुछ आस्मानों में और जमीन में है अल्लाह के लिए है, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। **(170)**

ऐ अहले किताब! अपने दीन में ग़ुलू न करो (हद से न बढ़ो) और न कहो अल्लाह के बारे में हक़ के सिवा, इस के सिवा नहीं कि मसीह (अ) ईसा (अ) इब्ने मरयम अल्लाह के रसूल हैं और उस का कलिमा, जिस को मरयम की तरफ़ डाला और उस (की तरफ) से आत्मा हैं, सो तुम अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाओ और न कहो (खुदा) तीन हैं, (उस से) बाज रहो, तुम्हारे लिए बेहतर है, इस के सिवा नहीं (बेशक) कि अल्लाह माबूदे वाहिद है और उस से पाक है कि उस की औलाद हो। जो कुछ आस्मानों और जमीन में है उस का है, और अल्लाह कारसाज़ काफ़ी है। **(171)**

मसीह (अ) को हरगिज आर (शर्म) नहीं कि वह अल्लाह का बन्दा हो, और न मुक़र्रिब फ़रिश्तों को (आर है) और जो कोई उस (अल्लाह) की बन्दगी से आर और तकब्बुर करे तो वह अनक़रीब उन्हें अपने पास जमा करेगा सब को। **(172)**

फिर जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अमल किए वह उन्हें उन के अजर पूरे पूरे देगा और उन्हें ज़ियादा देगा अपने फ़ज़्ल से, और जिन लोगों ने (बन्दगी को) आर समझा और तकब्बुर किया तो वह उन्हें अज़ाब देगा, दर्दनाक अज़ाब। और वह अपने लिए अल्लाह के सिवा न पाएंगे कोई दोस्त और न मदद्गार। **(173)**

ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से रौशन दलील आ चुकी और हम ने तुम्हारी तरफ़ नाजिल की है वाज़ेह रौशनी। **(174)**

पस जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और उन्हों ने उस को मज़बूती से पकड़ा, वह उन्हें अनक़रीब दाख़िल करेगा अपनी रहमत और फ़ज़्ल में, और उन्हें अपनी तरफ़ सीधे रास्ते की हिदायत देगा। **(175)**

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِیْ دِیْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| पर (बारे में) अल्लाह | और न कहो | अपने दीन में | ग़ुलू न करो | ऐ अहले किताब |

اِلَّا الْحَقَّ اِنَّمَا الْمَسِیْحُ عِیْسَى ابْنُ مَرْیَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ وَكَلِمَتُهٗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उस का कलिमा | अल्लाह | रसूल | इब्ने मरयम (अ) | ईसा | मसीह | इस के सिवा नहीं | हक़ | सिवाए |

اَلْقٰىهَاۤ اِلٰى مَرْیَمَ وَرُوْحٌ مِّنْهُ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न | और उस के रसूल | अल्लाह पर | सो ईमान लाओ | उस से | और रूह | मरयम (अ) | तरफ़ | उस को डाला |

تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ اِنْتَهُوْا خَیْرًا لَّكُمْ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| माबूदे वाहिद | अल्लाह | इसके सिवा नहीं | तुम्हारे लिए | बेहतर | बाज़ रहो | तीन | कहो |

سُبْحٰنَهٗۤ اَنْ یَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا وقف لازم

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | आस्मानों में | जो | उस का | औलाद | उस की | हो | कि | वह पाक है |

فِی الْاَرْضِ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِیْلًا ﴿١٧١﴾ لَنْ یَّسْتَنْكِفَ الْمَسِیْحُ اَنْ ع ٢٣ / ٢

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | मसीह (अ) | हरगिज़ आर नही | 171 | कारसाज | अल्लाह | और काफी है | ज़मीन में |

یَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓىِٕكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ وَمَنْ یَّسْتَنْكِفْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आर करे | और जो | मुक़र्रब (जमा) | फ़रिश्ते | और न | अल्लाह का | बन्दा | हो |

عَنْ عِبَادَتِهٖ وَیَسْتَكْبِرْ فَسَیَحْشُرُهُمْ اِلَیْهِ جَمِیْعًا ﴿١٧٢﴾ فَاَمَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर जो | 172 | सब | अपने पास | तो अनक़रीब उन्हें जमा करेगा | और तकब्बुर करे | उस की इबादत | से |

الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَیُوَفِّیْهِمْ اُجُوْرَهُمْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| उन के अजर | उन्हें पूरा देगा | नेक | ईमान लाए और उन्हों ने अमल किए | लोग |

وَیَزِیْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ وَاَمَّا الَّذِیْنَ اسْتَنْكَفُوْا وَاسْتَكْبَرُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने तकब्बुर किया | उन्हों ने आर समझा | वह लोग जो | और फिर | अपना फ़ज़्ल | से | और उन्हें जियादा देगा |

فَیُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا اَلِیْمًا وَّلَا یَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के सिवा | से (के) | अपने लिए | और वह न पाएंगे | दर्दनाक | अज़ाब | तो उन्हें अज़ाब देगा |

وَلِیًّا وَّلَا نَصِیْرًا ﴿١٧٣﴾ یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रौशन दलील | तुम्हारे पास आ चुकी | ऐ लोगों! | 173 | मदद्गार | और न | दोस्त |

مِّنْ رَّبِّكُمْ وَاَنْزَلْنَاۤ اِلَیْكُمْ نُوْرًا مُّبِیْنًا ﴿١٧٤﴾ فَاَمَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो लोग ईमान लाए | पस | 174 | वाज़ेह | रौशनी | तुम्हारी तरफ़ | और हम ने नाजिल किया | तुम्हारा रब | से |

بِاللّٰهِ وَاعْتَصَمُوْا بِهٖ فَسَیُدْخِلُهُمْ فِیْ رَحْمَةٍ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| रहमत में | वह उन्हें अनक़रीब दाखिल करेगा | उस को | और मज़बूत पकड़ा | अल्लाह पर |

مِّنْهُ وَفَضْلٍ وَّیَهْدِیْهِمْ اِلَیْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِیْمًا ﴿١٧٥﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 175 | सीधा | रास्ता | अपनी तरफ़ | और उन्हें हिदायत देगा | और फ़ज़्ल | उस से (अपनी) |

يَسْتَفْتُوْنَكَ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِى الْكَلٰلَةِ ؕ اِنِ امْرُؤٌا هَلَكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मर जाए | कोई मर्द | अगर | कलाला (के बारे) में | तुम्हें हुक्म बताता है | अल्लाह | कह दें | आप से हुक्म दरयाफ़्त करते हैं |

لَيْسَ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَهٗۤ اُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَاۤ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस का वारिस होगा | और वह | जो उस ने छोड़ा (तर्का) | निस्फ़ (1/2) | तो उस के लिए | एक बहन | और उस की हो | उस की कोई औलाद | न हो |

اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهَا وَلَدٌ ؕ فَاِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثٰنِ مِمَّا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से जो | दो तिहाई (2/3) | तो उन के लिए | दो बहनें | हों | फिर अगर | कोई औलाद | उस की | न हो | अगर |

تَرَكَ ؕ وَاِنْ كَانُوْۤا اِخْوَةً رِّجَالًا وَّنِسَآءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हिस्सा | बराबर | तो मर्द के लिए | और कुछ औरतें | कुछ मर्द | भाई बहन | हों | और अगर | उस ने छोड़ा (तर्का) |

ع ٢٤ / ٥ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اَنْ تَضِلُّوْا ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٧٦﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 176 | जानने वाला | चीज़ | हर | और अल्लाह | ताकि भटक न जाओ | तुम्हारे लिए | अल्लाह | खोल कर बयान करता है | दो औरत |

آيَاتُهَا ١٢٠ ❀ (٥) سُوْرَةُ الْمَآئِدَةِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٦

रुकूआत 16 — (5) सूरतुल माइदा — आयात 120

ख़ान

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الحزب الثاني ٣ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ؕ اُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيْمَةُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| चौपाए | हलाल किए गए तुम्हारे लिए | अ़हद-क़ौल | पूरा करो | जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले) | ऐ |

الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّى الصَّيْدِ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक अल्लाह | एहराम में हो | जब कि तुम | हलाल जाने हुए शिकार | मगर | पढ़े जाएंगे (सुनाए जाएंगे) तुम्हें | जो | सिवाए | मवेशी |

يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ ﴿١﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآئِرَ اللّٰهِ وَلَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न | अल्लाह की निशानियां | हलाल न समझो | जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले) | ऐ | 1 | जो चाहे | हुक्म करता है |

الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَآئِدَ وَلَاۤ اٰمِّيْنَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एहतराम वाला घर (खाने कअ़बा) | क़स्द करने वाले (आने वाले) | और न | गले में पट्टा डाले हुए | और न | नियाज़े कअ़बा | और न | महीने अदब वाले |

يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ؕ وَاِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो शिकार कर लो | एहराम खोल दो | और जब | और खुशनूदी | अपने रब से | फ़ज़्ल | वह चाहते हैं |

وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मस्जिद हराम (खाने कअ़बा) | से | तुम को रोकती थी | जो | क़ौम | दुश्मनी | तुम्हारे लिए बाइस हो | और न |

وقف لازم اَنْ تَعْتَدُوْا ۘ وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۪ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| गुनाह | पर (में) | और एक दूसरे की मदद न करो | और तक़्वा (परहेज़गारी) | नेकी पर (में) | और एक दूसरे की मदद करो | कि तुम ज़ियादती करो |

الربع وَالْعُدْوَانِ ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 2 | अ़ज़ाब | सख़्त | बेशक अल्लाह | और डरो अल्लाह से | और ज़ियादती (सरकशी) |

आप (स) से हुक्म दरयाफ़्त करते हैं, आप (स) कह दें अल्लाह तुम्हें कलाला के बारे में हुक्म बताता है। अगर कोई (ऐसा) मर्द मर जाए जिस की कोई औलाद न हो और उस की एक बहन हो तो उस (बहन) को उस के तरके का निस्फ़ मिलेगा, और वह उस का वारिस होगा अगर उस (बहन) की कोई औलाद न हो, फिर अगर (मरने वाले की) दो बहनें हों तो उन के लिए दो तिहाई है उस (भाई) के तरके में से, और अगर भाई बहन कुछ मर्द और कुछ औरतें हों तो एक मर्द के लिऐ दो औ़रतों के बराबर हिस्सा है। अल्लाह तुम्हारे लिए खोल कर बयान करता है ताकि तुम भटक न जाओ और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है। (176)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

ऐ ईमान वालो! अपने अ़हद पूरे करो, तुम्हारे लिए चौपाए मवेशी हलाल किए गए सिवाए उन के जो तुम्हें सुनाए जाएंगे, मगर शिकार को हलाल न जानो जबकि तुम (हालते) एहराम में हो, बेशक अल्लाह जो चाहे हुक्म करता है। (1)

ऐ ईमान वालो! शआएर अल्लाह (अल्लाह की निशानियां) हलाल न समझो और न अदब वाले महीने (ज़ुलक़अदह, ज़ुलहिज्जह, मोहर्रम, रज्जब) और न नियाज़े कअ़बा (के जानवर) और न गले में (क़ुरबानी के) पट्टा डाले हुए, और न आने वाले खाने कअ़बा को जो अपने रब का फ़ज़्ल और खुशनूदी चाहते हैं। और जब एहराम खोलदो (चाहो) तो शिकार करलो, और (उस) क़ौम की दुश्मनी जो तुम को रोकती थी मस्जिदे हराम (खाने कअ़बा) से (उस का) बाइस न बने कि तुम ज़ियादती करो। और एक दूसरे की मदद करो नेकी और परहेज़गारी में, और एक दूसरे की मदद न करो गुनाह और सरकशी में, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है। (2)

हराम कर दिया गया तुम पर मुर्दार और खून और सुव्वर का गोश्त और जिस पर पुकारा गया अल्लाह के सिवा (किसी और का नाम), और गला घोंटने से मरा हुआ और चोट खाकर मरा हुआ और गिर कर मरा हुआ और सींग मारा हुआ, और जिस को दरिन्दे ने खाया हो मगर जो तुम ने ज़ुब्ह कर लिया, और (हराम किया गया) जो आसथाने (परस्तिश गाहों) पर ज़ुबह किया गया, और यह कि तुम तीरों से (पांसे डाल कर) तक्सीम करो, यह गुनाह हैं। आज काफ़िर तुम्हारे दीन से मायूस हो गए, सो तुम उन से न डरो और मुझ से डरो, आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी, और मैं ने तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन की हेसियत से पसन्द किया। फिर जो भूक में लाचार हो जाए (लेकिन) माइल न हो गुनाह की तरफ़ (उस के लिए गुंजाइश है) बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (3)

आप (स) से पूछते हैं उन के लिए क्या हलाल किया गया है? कह दें तुम्हारे लिए पाक चीजें हलाल की गई हैं और जो तुम शिकारी जानवर सधाओ शिकार पर दौड़ाने को कि तुम उन्हें सिखाते हो उस से जो अल्लाह ने तुम्हें सिखाया है, पस उस में से खाओ जो वह तुम्हारे लिए पकड़ रखें, और उस पर अल्लाह का नाम लो (ज़ुब्ह कर लो) और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (4)

आज तुम्हारे लिए पाक चीज़ें हलाल की गईं, और अहले किताब का खाना तुम्हारे लिए हलाल है, और तुम्हारा खाना उन के लिए हलाल है, और पाक दामन मोमिन औरतें और पाक दामन औरतें उन में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई (हलाल हैं), जब तुम उन्हें उन के मेहर दे दो (क़ैदे निकाह) में लाने को, न कि मस्ती निकालने को और न चोरी छुपे आश्नाई करने को, और जो ईमान का मुन्किर हुआ उस का अमल ज़ाया हुआ, और वह आखिरत में नुक्सान उठाने वालों में से है। (5)

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पुकारा गया | और जो-जिस | और सुव्वर का गोश्त | और खून | मुर्दार | तुम पर | हराम कर दिया गया |

لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوْذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيْحَةُ وَمَآ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो-जिस | और सींग मारा हुआ | और गिर कर मरा हुआ | और चोट खाकर मरा हुआ | और गला घोंटने से मरा हुआ | उस पर | अल्लाह के सिवा |

اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम तक्सीम करो | और यह कि | थानों पर | ज़ुबह किया गया | और जो | तुम ने ज़ुब्ह कर लिया | मगर जो | दरिन्दा | खाया |

بِالْاَزْلَامِ ذٰلِكُمْ فِسْقٌ اَلْيَوْمَ يَئِسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे दीन से | जिन लोगो ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | मायूस हो गए | आज | गुनाह | यह | तीरों से |

فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और पूरी कर दी | तुम्हारा दीन | तुम्हारे लिए | मैं ने मुकम्मल कर दिया | आज | और मुझ से डरो | सो तुम उन से न डरो |

عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا فَمَنِ اضْطُرَّ فِيْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | लाचार हो जाए | फिर जो | दीन | इस्लाम | तुम्हारे लिए | और मैं ने पसन्द किया | अपनी नेमत | तुम पर |

مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِّاِثْمٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप (स) से पूछते हैं | 3 | मेह्रबान | बख़्शने वाला | तो बेशक अल्लाह | गुनाह की तरफ़ | माइल हो | न | भूक |

مَاذَآ اُحِلَّ لَهُمْ قُلْ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِّنَ الْجَوَارِحِ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शिकारी जानवर | से | तुम सुधाओ | और जो | पाक चीज़ें | तुम्हारे लिए | हलाल की गई | कह दें | उन के लिए | हलाल किया गया | क्या |

مُكَلِّبِيْنَ تُعَلِّمُوْنَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ فَكُلُوْا مِمَّآ اَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे लिए | वह पकड़ रखें | उस से जो | पस तुम खाओ | अल्लाह | तुम्हें सिखाया | उस से जो | तुम उन्हें सिखाते हो | शिकार पर दौड़ाए हुए |

وَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | तेज हिसाब लेने वाला | बेशक अल्लाह | अल्लाह | और डरो | उस पर | अल्लाह | नाम | और याद करो (लो) |

اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ وَطَعَامُ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हलाल | किताब दिए गए (अहले किताब) | वह लोग जो | और खाना | पाक चीज़ें | तुम्हारे लिए | हलाल की गईं | आज |

لَّكُمْ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और पाक दामन | मोमिन औरतें | से | और पाक दामन औरतें | उन के लिए | हलाल | और तुम्हारा खाना | तुम्हारे लिए |

مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के मेह्र | तुम उन्हें देदो | जब | तुम से पहले | किताब दी गई | वह लोग जो | से |

مُحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْٓ اَخْدَانٍ وَمَنْ يَّكْفُرْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मुन्किर हुआ | और जो | छुपी आश्नाई | और न बनाने को | न कि मस्ती निकालने का | कैद में लाने को |

بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٥﴾ ع ٥

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | नुक्सान उठाने वाले | से | आख़िरत में | और वह | उस का अमल | तो ज़ाया हुआ | ईमान से |

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا

ऐ | वह जो ईमान लाए (ईमान वाले) | जब | तुम उठो | नमाज़ के लिए | तो धोलो

وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ

अपने मुँह | और अपने हाथ | तक | कुहनियां | और मसह करो | अपने सरों का | और अपने पाऊँ

اِلَى الْكَعْبَيْنِ ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ

तक | टख़नों | और अगर | तुम हो | नापाक | तो खूब पाक हो जाओ | और अगर | तुम हो

مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ

बीमार | या | पर (में) | सफ़र | और | आए | कोई | तुम में से | बैतुलख़ला से

اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا

या तुम मिलो (सुहबत की) | औ़रतों से | फिर न पाओ | पानी | तो तयम्मुम कर लो | मिट्टी

طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ؕ مَا يُرِيْدُ اللّٰهُ

पाक | तो मसह करो | अपने मुँह | और अपने हाथ | उस से | नहीं चाहता | अल्लाह

لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ وَّلٰكِنْ يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ

कि करे | तुम पर | कोई | तंगी | और लेकिन | चाहता है | कि तुम्हें पाक करे

وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٦﴾ وَاذْكُرُوْا

और यह कि पूरी करे | अपनी नेमत | तुम पर | ताकि तुम | एहसान मानो | 6 | और याद करो

نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ الَّذِيْ وَاثَقَكُمْ بِهٖٓ ۙ

अल्लाह की नेमत | तुम पर (अपने ऊपर) | और उस का अ़हद | जो | तुम ने बान्धा | उस से

اِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۫ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ

जब तुम ने कहा | हम ने सुना | और हम ने माना | और अल्लाह से डरो | बेशक अल्लाह | जानने वाला | बात

الصُّدُوْرِ ﴿٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ

दिलों की | 7 | ऐ | जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले) | हो जाओ | खड़े होने वाले | अल्लाह के लिए

شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ۫ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓى

गवाह | इन्साफ़ के साथ | और तुम्हें न उभारे | दुश्मनी | किसी क़ौम | पर

اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ اِعْدِلُوْا ۫ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى وَاتَّقُوا

कि इन्साफ़ न करो | तुम इन्साफ़ करो | वह (यह) | ज़ियादा क़रीब | तक़्वा के | और डरो

اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٨﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

अल्लाह | बेशक अल्लाह | खूब बाख़बर | जो तुम करते हो | 8 | वादा किया | अल्लाह | जो लोग ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٩﴾

और उन्हों ने अमल किए | अच्छे | उन के लिए | बख़्शिश | और अजर | बड़ा | 9

ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो धो लो अपने मुँह और अपने हाथ कुहनियों तक और अपने सरों का मसह करो और अपने पाऊँ (धो) टख़नों तक, और अगर तुम नापाक हो (ग़ुस्ल की हाजत हो) तो खूब पाक हो जाओ (ग़ुस्ल कर लो) और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुम में से कोई बैतुलख़ला से आए या तुम ने औ़रतों से सुहबत की, फिर न पाओ पानी तो पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लो (यानी) उस से अपने मुँह और हाथों का मसह करो, अल्लाह नहीं चाहता कि तुम पर कोई तंगी करे लेकिन चाहता है कि तुम्हें पाक करे और यह कि अपनी नेमत पूरी करे तुम पर ताकि तुम एहसान मानो। (6)

और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत याद करो और उस का अ़हद जो तुम ने उस से बान्धा जब तुम ने कहा हम ने सुना और हम ने माना, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह दिलों की बात जानने वाला है। (7)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह के लिए खड़े होने वाले हो जाओ इन्साफ़ की गवाही देने को, और किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें (उस पर) न उभारे कि इन्साफ़ न करो, तुम इन्साफ़ करो यह तक़्वा के ज़ियादा क़रीब है, और अल्लाह से डरो, बेशक तुम जो करते हो अल्लाह उस से खूब बाख़बर है। (8)

जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए अल्लाह ने वादा किया कि उन के लिए बख़्शिश और बड़ा अजर है। (9)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया यही जहन्नम वाले हैं। (10)

ऐ ईमान वालो! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत (एहसान) याद करो जब एक गिरोह ने इरादा किया कि वह बढ़ाएं तुम्हारी तरफ़ अपने हाथ (दस्त दराज़ी करने को) तो उस ने तुम से उन के हाथ रोक दिए, और अल्लाह से डरो, और चाहिए कि अल्लाह पर भरोसा करें ईमान वाले। (11)

और अलबत्ता अल्लाह ने बनी इस्राईल से अ़हद लिया, और हम ने उन में से मुक़र्रर किए बारह (12) सरदार, और अल्लाह ने कहा मैं तुम्हारे साथ हूँ अगर तुम नमाज़ क़ाइम रखोगे और देते रहोगे ज़कात और मेरे रसूलों पर ईमान लाओगे और उन की मदद करोगे और अल्लाह को क़र्ज़े हसना (अच्छा क़र्ज़) दोगे, मैं तुम्हारे गुनाह ज़रूर दूर करदूंगा और तुम्हें (उन) बाग़ात में ज़रूर दाख़िल करूंगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, फिर उस के बाद तुम में से जिस ने कुफ़्र किया बेशक वह सीधे रास्ते से गुमराह हुआ। (12)

सो उन के अ़हद तोड़ने पर हम ने उन पर लानत की और उन के दिलों को सख़्त कर दिया, वह कलाम को उस के मवाक़े से फेर देते हैं (बदल देते) हैं और वह भूल गए (फ़रामोश कर बैठे) उस का बड़ा हिस्सा जिस की उन्हें नसीहत की गई थी, और आप (स) उन में से थोड़ों के सिवा हमेशा उनकी ख़ियानत पर ख़बर पाते रहते हैं, सो उन को माफ़ करदें और दरगुज़र करें, बेशक अल्लाह एहसान करने वालों को दोस्त रखता है। (13)

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓـئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿۱۰﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 10 | जहन्नम वाले | यही | हमारी आयतें | और झुटलाया | और जिन लोगों ने कुफ़्र किया |

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपने ऊपर | अल्लाह | नेमत | तुम याद करो | जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले) | ऐ |

اِذْ هَمَّ قَوْمٌ اَنْ يَّبْسُطُوْۤا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पस रोक दिए | अपने हाथ | तुम्हारी तरफ़ | बढ़ाएं | कि | एक गिरोह | जब इरादा किया |

اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۗ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| चाहिए भरोसा करें | अल्लाह | और पर | अल्लाह | और डरो | तुम से | उन के हाथ |

الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۚ ع ۲ ٦

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बनी इस्राईल | अ़हद | अल्लाह ने लिया | और अलबत्ता | 11 | ईमान वाले |

وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيْبًا ۗ وَقَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مَعَكُمْ ۗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक मैं तुम्हारे साथ | अल्लाह | और कहा | सरदार | बारह (12) | उन से | और हम ने मुक़र्रर किए |

لَئِنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَاٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और ईमान लाओगे | ज़कात | और देते रहोगे | नमाज़ | क़ाइम रखोगे | अगर |

بِرُسُلِيْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हसना | क़र्ज़ | अल्लाह | और क़र्ज़ दोगे | और उन की मदद करोगे | मेरे रसूलों पर |

لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बहती हैं | बाग़ात | और ज़रूर दाख़िल कर दूंगा तुम्हें | तुम्हारे गुनाह | तुम से | मैं ज़रूर दूर करदूंगा |

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम में से | उस के बाद | कुफ़्र किया | फिर जो-जिस | नहरें | उन के नीचे | से |

فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿۱۲﴾ فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन का अ़हद | उनका तोड़ना | सो बसबब (पर) | 12 | रास्ता | सीधा | बेशक गुमराह हुआ |

لَعَنّٰهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| से | कलाम | वह फेर देते हैं | सख़्त | उन के दिल (जमा) | और हम ने कर दिया | हम ने उन पर लानत की |

مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ وَلَا تَزَالُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और हमेशा | उन्हें जिस की नसीहत की गई | उस से जो | एक बड़ा हिस्सा | और वह भूल गए | उस के मवाक़े |

تَطَّلِعُ عَلٰى خَآئِنَةٍ مِّنْهُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन से | थोड़े | सिवाए | उन से | ख़ियानत | पर | आप ख़बर पाते रहते हैं |

فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۳﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 13 | एहसान करने वाले | दोस्त रखता है | बेशक अल्लाह | और दरगुज़र कर | उन को | सो माफ़ कर |

وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰٓى اَخَذْنَا مِيْثَاقَهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन का अ़हद | हम ने लिया | नसारा | हम | जिन लोगो ने कहा | और से |

فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۠ فَاَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन के दरमियान | तो हम ने लगा दी | जिस की नसीहत की गई थी | उस से जो | एक बड़ा हिस्सा | फिर वह भूल गए |

الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۭ وَسَوْفَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और जल्द | रोज़े क़ियामत | तक | और बुग़ज़ | अ़दावत |

يُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿١٤﴾ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ऐ अहले किताब | 14 | करते थे | जो वह | अल्लाह | उन्हें जता देगा |

قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيْرًا مِّمَّا

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बहुत सी बातें जो | तुम्हारे लिए | वह ज़ाहिर करते हैं | हमारे रसूल | यक़ीनन तुम्हारे पास आगए |

كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ۬

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बहुत उमूर से | और वह दरगुज़र करता है | किताब से | छुपाते | तुम थे |

قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّكِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 15 | रौशन | और किताब | नूर | अल्लाह से | तहक़ीक़ तुम्हारे पास आगया |

يَّهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सलामती | राहें | उस की रज़ा | जो ताबे हुआ | अल्लाह | उस से | हिदायत देता है |

وَيُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अपने हुक्म से | नूर की तरफ़ | अन्धेरे | से | और वह उन्हें निकालता है |

وَيَهْدِيْهِمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٦﴾ لَقَدْ كَفَرَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तहक़ीक़ काफ़िर हो गए | 16 | सीधा | रास्ता | तरफ़ | और उन्हें हिदायत देता है |

الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۭ

| | | | |
|---|---|---|---|
| इब्ने मरयम | वही मसीह (अ) | बेशक अल्लाह | जिन लोगो ने कहा |

قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ اَنْ يُّهْلِكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हलाक कर दे | अगर वह चाहे कि | कुछ भी | अल्लाह के आगे | बस चलता है | तो किस | कह दीजिए |

الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۭ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सब | ज़मीन | में | और जो | और उस की माँ | इब्ने मरयम | मसीह (अ) |

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ يَخْلُقُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह पैदा करता है | उन दोनों के दरमियान | और जो | और ज़मीन | आस्मानों | और अल्लाह के लिए सल्तनत |

مَا يَشَآءُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 17 | क़ादिर | हर शै | पर | और अल्लाह | जो वह चाहता है |

और उन लोगों से जिन्हों ने कहा हम नसारा हैं, हम ने उन का अ़हद लिया, फिर वह उस का बड़ा हिस्सा भूल गए जिस की उन्हें नसीहत की गई थी तो हम ने उन के दरमियान लगा दिया (डाल दिया) रोज़े क़ियामत तक अ़दावत और बुग़ज़, और अल्लाह जल्द उन्हें जता देगा जो वह करते थे। **(14)**

ऐ अहले किताब! यक़ीनन तुम्हारे पास हमारे रसूल (मुहम्मद (स) आगए, वह तुम्हारे लिए (तुम पर) बहुत सी बातें ज़ाहिर करते हैं जो तुम किताब में से छुपाते थे और वह बहुत उमूर से दरगुज़र करते हैं, तहक़ीक़ तुम्हारे पास आगया अल्लाह की तरफ़ से नूर और रौशन किताब। **(15)**

उस से अल्लाह सलामती की राहों की उसे हिदायत देता है जो उस की रज़ा के ताबे हुआ और वह उन्हें निकालता है अन्धेरों से नूर की तरफ़ अपने हुक्म से और उन्हें सीधे रास्ते की हिदायत देता है। **(16)**

तहक़ीक़ काफ़िर हो गए वह जिन लोगों ने कहा अल्लाह वही मसीह (अ) इब्ने मरयम (अ) है। कह दीजिएः तो किस का बस चलता है अल्लाह के आगे कुछ भी। अगर वह चाहे कि मसीह (अ) इब्ने मरयम (अ) को और उस की माँ को हलाक कर दे और जो ज़मीन में है सब को। और अल्लाह के लिए है सल्तनत आस्मानों की और ज़मीन की और जो कुछ उन के दरमियान है, वह पैदा करता है जो वह चाहता है, और अल्लाह हर शै पर क़ादिर है। **(17)**

और यहूद ओ नसारा ने कहा हम अल्लाह के बेटे और उस के प्यारे हैं, कह दीजिए फिर वह तुम्हारे गुनाहों पर तुम्हें सजा क्यों देता है? (नहीं) बल्कि तुम भी एक बशर हो उस की मखलूक़ में से, वह जिस को चाहता है बख़्श देता है और जिस को चाहता है अ़ज़ाब देता है। और अल्लाह के लिए है सल्तनत आस्मानों की और जमीन की और जो कुछ उन के दरमियान है, और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। (18)

ऐ अहले किताब। तुम्हारे पास हमारे रसूल (मुहम्मद (स) आ गए वह नबियों का सिलसिला टूट जाने के बाद तुम पर खोल कर बयान करते हैं कि कहीं तुम यह कहो हमारे पास कोई ख़ुशख़बरी सुनाने वाला नहीं आया और न डराने वाला, तहक़ीक़ तुम्हारे पास (मुहम्मद (स) ख़ुशख़बरी सुनाने वाले और डराने वाले आगए, और अल्लाह हर शै पर क़ादिर है। (19)

और जब मूसा (अ) ने अपनी क़ौम को कहाः ऐ मेरी क़ौम! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत याद करो जब उस ने तुम में नबी बनाए और तुम्हें बादशाह बनाया और तुम्हें दिया जो जहानों में किसी को नहीं दिया। (20)

ऐ मेरी क़ौम! अर्ज़े मुक़द्दस में दाख़िल हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है और अपनी पीठ फेरते हुए न लौटो वरना तुम नुक़्सान में जा पड़ोगे। (21)

उन्हों ने कहा ऐ मूसा (अ)! बेशक उस में एक जबरदस्त क़ौम है, और हम वहां हरगिज दाखिल न होंगे यहां तक कि वह उस में से निकल जाएं, फिर अगर वह उस में से निकले तो हम जरूर उस में दाखिल होंगे। (22)

डरने वालों में से दो आदमियों ने कहा, उन दोनों पर अल्लाह ने इन्आम किया थाः कि तुम उन पर दरवाज़े से (हमला कर के) दाखिल हो जाओ, जब तुम उस में दाख़िल होगे तो तुम ही ग़ालिब होगे, और अल्लाह पर भरोसा रखो अगर तुम ईमान वाले हो। (23)

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ ؕ قُلْ فَلِمَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर क्यों | कह दीजिए | और उस के प्यारे | अल्लाह | बेटे | हम | और नसारा | यहूद | और कहा |

يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह चाहता है | जिस को | वह बख़्श देता है | उस ने पैदा किया (मख़लूक़) | उन में से | बशर | तुम | बल्कि | तुम्हारे गुनाहों पर | तुम्हें अ़ज़ाब देता है |

وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | और ज़मीन | आस्मानों | सल्तनत | और अल्लाह के लिए | जिस को वह चाहता है | और अ़ज़ाब देता है |

بَيْنَهُمَا ۫ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿١٨﴾ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारे रसूल | तहक़ीक़ तुम्हारे पास आए | ऐ अहल किताब | 18 | लौट कर जाना है | और उसी की तरफ़ | उन दोनों के दरमियान |

يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَآءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़ुशख़बरी देने वाला | कोई | हमारे पास नहीं आया | तुम कहो | कि कहीं | रसूल (जमा) | से (के) | सिलसिला टूट जाना | पर (बाद) | तुम्हारे लिए | वह खोल कर बयान करते हैं |

وَّلَا نَذِيْرٍ ؗ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّنَذِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हर शै | पर | और अल्लाह | और डराने वाले | ख़ुशख़बरी सुनाने वाले | तहक़ीक़ तुम्हारे पास आगए | डराने वाला | और न |

قَدِيْرٌ ﴿١٩﴾ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ ع ٣ ٨

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की नेमत | तुम याद करो | ऐ मेरी क़ौम | अपनी क़ौम को | मूसा | कहा | और जब | 19 | क़ादिर |

عَلَيْكُمْ اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَآءَ وَجَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ۖۗ وَّاٰتٰىكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम्हें दिया | बादशाह | और तुम्हें बनाया | नबी (जमा) | तुम में | उस ने बनाया | जब | अपने ऊपर |

مَّا لَمْ يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٠﴾ يٰقَوْمِ ادْخُلُوا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दाख़िल हो जाओ | ऐ मेरी क़ौम | 20 | जहानों में | से | किसी को | दिया | जो नहीं |

الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِيْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी पीठ | पर | लौटो | और न | तुम्हारे लिए | अल्लाह ने लिख दी | जो | अर्ज़े मुक़द्दस (उस पाक सर ज़मीन) |

فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٢١﴾ قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّ فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ ۖۗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जबरदस्त | एक क़ौम | बेशक उस में | ऐ मूसा (अ) | उन्हों ने कहा | 21 | नुक़्सान में | वरना तुम जा पड़ोगे |

وَاِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا حَتّٰى يَخْرُجُوْا مِنْهَا ۚ فَاِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से | वह निकले | फिर अगर | उस से | वह निकल जाएं | यहां तक कि | हरगिज़ दाख़िल न होंगे | और हम बेशक |

فَاِنَّا دٰخِلُوْنَ ﴿٢٢﴾ قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह ने इन्आ़म किया था | डरने वाले | उन लोगों से जो | दो आदमी | कहा | 22 | दाख़िल होंगे | तो हम जरूर |

عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ فَاِذَا دَخَلْتُمُوْهُ فَاِنَّكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तो तुम | तुम दाख़िल होगे उस में | पस जब | दरवाजा | तुम दाख़िल हो उन पर (हमला कर दो) | उन दोनो पर |

غٰلِبُوْنَ ۚ۬ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٣﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 23 | ईमान वाले | अगर तुम हो | भरोसा रखो | और अल्लाह पर | ग़ालिब आओगे |

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَآ اَبَدًا مَّا دَامُوْا فِيْهَا فَاذْهَبْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सो जा | उस में | जब तक वह है | कभी भी | हरगिज़ वहां दाख़िल न होंगे | बेशक हम | ऐ मूसा | उन्हों ने कहा |

اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَآ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ ﴿٢٤﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّىْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मैं बेशक | ऐ मेरे रब | मूसा (अ) ने कहा | 24 | बैठे है | यहीं | हम | तुम दोनों लड़ो | और तेरा रब | तू |

لَآ اَمْلِكُ اِلَّا نَفْسِىْ وَاَخِىْ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| क़ौम | और दरमियान | हमारे दरमियान | पस जुदाई कर दे | और अपना भाई | अपनी जान के सिवा | इख़्तियार नही रखता |

الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٥﴾ قَالَ فَاِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| साल | चालीस | उन पर | हराम करदी गई | पस यह | उस ने कहा | 25 | नाफ़रमान |

يَتِيْهُوْنَ فِى الْاَرْضِ ۗ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾ ع ٨

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 26 | नाफ़रमान | क़ौम | पर | तू अफ़सोस न कर | ज़मीन में | भटकते फिरेंगे |

وقف لازم

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَىْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ ۘ اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो क़ुबूल कर ली गई | कुछ नियाज | जब दोनों ने पेश की | अहवाल-ए-वाक़ई | आदम के दो बेटे | ख़बर | उन्हें | और सुना |

مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ ۗ قَالَ لَاَقْتُلَنَّكَ ۗ قَالَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने कहा | मैं तुझे ज़रूर मार डालूंगा | उस ने कहा | दूसरे से | और न क़ुबूल की गई | उन में से एक | से |

النصف

اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٧﴾ لَئِنْۢ بَسَطْتَّ اِلَىَّ يَدَكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना हाथ | मेरी तरफ़ | अलबत्ता अगर तू बढ़ाएगा | 27 | परहेज़गार (जमा) | से | अल्लाह | क़ुबूल करता है | बेशक सिर्फ़ |

لِتَقْتُلَنِىْ مَآ اَنَا بِبَاسِطٍ يَّدِىَ اِلَيْكَ لِاَقْتُلَكَ ۚ اِنِّىْٓ اَخَافُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| डरता हूँ | बेशक मैं | कि तुझे क़त्ल करूँ | तेरी तरफ़ | अपना हाथ | बढ़ाने वाला | मैं नहीं | कि मुझे क़त्ल करे |

اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٨﴾ اِنِّىْٓ اُرِيْدُ اَنْ تَبُوْٓاَ بِاِثْمِىْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरे गुनाह | कि तू हासिल करे | चाहता हूँ | बेशक मैं | 28 | परवरदिगार सारे जहान का | अल्लाह |

وَاِثْمِكَ فَتَكُوْنَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۚ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 29 | ज़ालिम (जमा) | सज़ा | और यह | जहन्नम वाले | से | फिर तू हो जाए | और अपने गुनाह |

فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ قَتْلَ اَخِيْهِ فَقَتَلَهٗ فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٣٠﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | नुक़्सान उठाने वाले | से | तो वह हो गया | सो उस ने उस को क़त्ल कर दिया | अपना भाई | क़त्ल | उस का नफ़्स | उस को | फिर राज़ी किया |

فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا يَّبْحَثُ فِى الْاَرْضِ لِيُرِيَهٗ كَيْفَ يُوَارِىْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह छुपाए | कैसे | ताकि उसे दिखाए | ज़मीन में | कुरेदता था | एक कव्वा | अल्लाह | फिर भेजा |

سَوْءَةَ اَخِيْهِ ۗ قَالَ يٰوَيْلَتٰٓى اَعَجَزْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِثْلَ هٰذَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस-यह | जैसा | कि मैं हो जाऊँ | मुझ से न हो सका | हाए अफ़सोस मुझ पर | उस ने कहा | अपना भाई | लाश |

الْغُرَابِ فَاُوَارِىَ سَوْءَةَ اَخِىْ ۚ فَاَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِيْنَ ﴿٣١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 31 | नादिम होने वाले | से | पस वह हो गया | अपना भाई | लाश | फिर छुपाऊँ | कव्वा |

उन्हों ने कहा ऐ मूसा (अ)! जब तक वह उस में हैं हम वहां कभी भी हर्रागज़ दाख़िल न होगें, सो तू जा और तेरा रब, तुम दोनों लड़ो, हम तो यहीं बैठे हैं। (24)

मूसा (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक मैं इख़्तियार नहीं रखता सिवाए अपनी जान के और अपने भाई के, पस हमारे और हमारी नाफ़रमान क़ौम के दरमियान जुदाई डाल दे (फ़ैसला कर दे)। (25)

अल्लाह ने कहा पस यह सरजमीन हराम कर दी गई उन पर चालीस साल, वह जमीन में भटकते फिरेगें, तू नाफ़रमान क़ौम पर अफ़सोस न कर। (26)

उन्हें आदम (अ) के दो बेटों का हाले वाक़ई सुनाओ, जब दोनों ने कुछ नियाज़ पेश की तो उन में से एक की क़ुबूल कर ली गई और दूसरे से क़ुबूल न की गई, उस ने (भाई को) कहा मैं तुझे ज़रूर मार डालूंगा, उस ने कहा अल्लाह सिर्फ़ क़ुबूल करता है परहेज़गारों से। (27)

अलबत्ता अगर तू मेरी तरफ़ अपना हाथ मुझे क़त्ल करने के लिए बढ़ाएगा, मैं (फिर भी) अपना हाथ तेरी तरफ बढ़ाने वाला नहीं कि तुझे क़त्ल करूँ, बेशक मैं सारे जहान के परवरदिगार अल्लाह से डरता हूँ। (28)

बेशक मैं चाहता हूँ कि तू हासिल करे (ज़िम्मेदार हो जाए) मेरे गुनाह का और अपने गुनाह का, फिर तू जहन्नम वालों में से होजाए और जालिमों की यही सजा है। (29)

फिर उस को उस के नफ़्स ने अपने भाई के क़त्ल पर आमादा कर लिया, उस ने उस को क़त्ल कर दिया तो नुक़्सान उठाने वालों में से हो गया। (30)

फिर अल्लाह ने भेजा एक कव्वा जमीन कुरेदता ताकि वह उसे दिखाए कि वह अपने भाई की लाश कैसे छुपाए। उस ने कहा हाए अफ़सोस! मुझ से इतना न हो सका कि उस कव्वे जैसा हो जाऊँ कि अपने भाई की लाश को छुपाऊँ, पस वह नादिम (पशेमां) होने वालों में से होगया। (31)

उस वजह से हम ने बनी इस्राईल पर लिख दिया कि जिस ने किसी एक जान को किसी जान के (बदले के) बग़ैर या मुल्क में फ़साद करने के बग़ैर क़त्ल किया तो गोया उस ने क़त्ल किया तमाम लोगों को, और जिस ने (किसी एक को) ज़िन्दा रखा (बचाया) तो गोया उस ने तमाम लोगों को ज़िन्दा रखा (बचा लिया), और उन के पास आ चुके हमारे रसूल रौशन दलाइल के साथ, फिर उस के बाद उन में से अक्सर ज़मीन में हद से बढ़ जाने वाले हैं। **(32)**

यही सज़ा है (उन की) जो लोग अल्लाह और उस के रसूल से जंग करते हैं और सई करते हैं मुल्क में फ़साद करने की कि वह क़त्ल किए जाएं या सूली दिए जाएं या उन के हाथ और पाऊँ काटे जाएं मुख़ालिफ़ जानिब से (एक तरफ़ का हाथ दूसरी तरफ़ का पाऊँ), या मुल्क बदर कर दिए जाएं, यह उन के लिए दुनिया में रुसवाई है और उन के लिए आख़िरत में बड़ा अज़ाब है। **(33)**

मगर वह लोग जिन्हों ने उस से पहले तौबा कर ली कि तुम क़ाबू पाओ उन पर, तो जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। **(34)**

ऐ ईमान वालो! डरो अल्लाह से और उस की तरफ़ (उस का) क़ुर्ब तलाश करो और उस के रास्ते में जिहाद करो ताकि तुम फ़लाह पाओ। **(35)**

जिन लोगों ने कुफ़्र किया जो कुछ ज़मीन में है अगर सब का सब और उस के साथ और इतना ही उन के पास हो कि वह उस की क़ियामत के दिन अज़ाब के फ़िदये (बदला) में दें तो वह उन से क़ुबूल न किया जाएगा, और उन के लिए अज़ाब है दर्दनाक। **(36)**

مِنْ اَجْلِ ذٰلِكَ ۛ كَتَبْنَا عَلٰى بَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ اَنَّهٗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कि जो-जिस | बनी इस्राईल | पर | हम ने लिख दिया | उस | वजह | से |

مَنْ قَتَلَ نَفْسًاۢ بِغَیْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِی الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने क़त्ल किया | तो गोया | ज़मीन (मुल्क) में | या फ़साद करना | किसी जान के बग़ैर | कोई जान | कोई क़त्ल करे |

النَّاسَ جَمِیْعًا ؕ وَمَنْ اَحْیَاهَا فَكَاَنَّمَآ اَحْیَا النَّاسَ جَمِیْعًا ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तमाम | लोग | उस ने ज़िन्दा रखा | तो गोया | उस को ज़िन्दा रखा | और जो-जिस | तमाम | लोग |

وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَیِّنٰتِ ثُمَّ اِنَّ كَثِیْرًا مِّنْهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन में से | अक्सर | बेशक | फिर | रौशन दलाइल के साथ | हमारे रसूल | और उन के पास आ चुके |

بَعْدَ ذٰلِكَ فِی الْاَرْضِ لَمُسْرِفُوْنَ ﴿٣٢﴾ اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِیْنَ یُحَارِبُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जंग करते हैं | जो लोग | सज़ा | यही | 32 | हद से बढ़ने वाले | ज़मीन (मुल्क) में | उस के बाद |

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَیَسْعَوْنَ فِی الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ یُّقَتَّلُوْٓا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कि वह क़त्ल किए जाएं | फ़साद करने | जमीन (मुल्क) में | और कोशिश करते हैं | और उस का रसूल (स) | अल्लाह |

اَوْ یُصَلَّبُوْٓا اَوْ تُقَطَّعَ اَیْدِیْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक दूसरे के मुख़ालिफ़ से | से | और उन के पाऊँ | उन के हाथ | काटे जाएं | या | वह सूली दिए जाएं | या |

اَوْ یُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ؕ ذٰلِكَ لَهُمْ خِزْیٌ فِی الدُّنْیَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दुनिया में | रुसवाई | उन के लिए | यह | मुल्क से | या मुल्क बदर कर दिए जाएं |

وَلَهُمْ فِی الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِیْمٌ ﴿٣٣﴾ اِلَّا الَّذِیْنَ تَابُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जिन्हों ने तौबा कर ली | मगर | 33 | बड़ा | अज़ाब | आख़िरत में | और उन के लिए |

مِنْ قَبْلِ اَنْ تَقْدِرُوْا عَلَیْهِمْ ۚ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बख़्शने वाला | अल्लाह | कि | तो जान लो | उन पर | तुम क़ाबू पाओ | कि | उस से पहले |

رَّحِیْمٌ ﴿٣٤﴾ یٰٓاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और तलाश करो | अल्लाह | डरो | जो लोग ईमान लाए | ऐ | 34 | मेहरबान |

اِلَیْهِ الْوَسِیْلَةَ وَجَاهِدُوْا فِیْ سَبِیْلِهٖ لَعَلَّكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ताकि तुम | उस का रास्ता | में | और जिहाद करो | क़ुर्ब | उस की तरफ़ |

تُفْلِحُوْنَ ﴿٣٥﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | उन के लिए | यह कि | अगर | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | बेशक | 35 | फ़लाह पाओ |

فِی الْاَرْضِ جَمِیْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لِیَفْتَدُوْا بِهٖ مِنْ عَذَابِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अज़ाब | से | उस के साथ | कि फ़िदया (बदले में) दें | उस के साथ | और इतना | सब का सब | ज़मीन में |

یَوْمِ الْقِیٰمَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿٣٦﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 36 | दर्दनाक | अज़ाब | और उन के लिए | उन से | क़ुबूल किया जाएगा | न | क़ियामत का दिन |

معانقة ٥ عند المتأخرين ١٢
وقف النبي ﷺ
ع ٥
٨
٩

يُـرِيْـدُوْنَ اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| निकलने वाले | हालांकि नहीं वह | आग | से | वह निकल जाएं | कि | वह चाहेंगे |

مِنْهَا ۡ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٣٧﴾ وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْٓا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| काट दो | और चोर औरत | और चोर मर्द | 37 | हमेशा रहने वाला | अज़ाब | और उन के लिए | उस से |

اَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ग़ालिब | और अल्लाह | अल्लाह | से | इब्रत | उस की जो उन्हों ने किया | सज़ा | उन दोनों के हाथ |

حَكِيْمٌ ﴿٣٨﴾ فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَاَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो बेशक अल्लाह | और इस्लाह की | अपना ज़ुल्म | बाद | से | पस जो-जिस तौबा की | 38 | हिक्मत वाला |

يَتُوْبُ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٩﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उसी की | अल्लाह | कि | क्या तू नहीं जानता | 39 | मेहरबान | बख़्शने वाला | बेशक अल्लाह | उस की तौबा क़ुबूल करता है |

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَغْفِرُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और बख़्शदे | जिसे चाहे | अज़ाब दे | और ज़मीन | आस्मानों | सल्तनत |

لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤٠﴾ يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रसूल (स) | ऐ | 40 | क़ादिर | हर शै | पर | और अल्लाह | जिस को चाहे |

لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने कहा | जो लोग | से | कुफ़्र | में | भाग दौड़ करते हैं | जो लोग | आप को ग़मगीन न करें |

ع ٣ / عند المتقدمين ١٢

اٰمَنَّا بِاَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ قُلُوْبُهُمْ ۛۚ وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۛۚ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो यहूदी हुए | और से | उन के दिल | और मोमिन नहीं | अपने मुँह से (जमा) | हम ईमान लाए |

سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمّٰعُوْنَ لِقَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۙ لَمْ يَاْتُوْكَ ؕ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह आप (स) तक नहीं आए | दूसरी | क़ौम के लिए | वह जासूस है | झूट के लिए | जासूसी करते हैं |

يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ مِنْۢ بَعْدِ مَوَاضِعِهٖ ۚ يَقُوْلُوْنَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| कहते हैं | उस का ठिकाना | बाद | कलाम | वह फेर देते हैं |

اِنْ اُوْتِيْتُمْ هٰذَا فَخُذُوْهُ وَاِنْ لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوْا ؕ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तो उस से बचो | यह तुम्हें न दिया जाए | और अगर | उस को क़ुबूल कर लो | यह | अगर तुम्हें दिया जाए |

وَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुछ | अल्लाह | से | उस के लिए | तू हरगिज़ न आ सकेगा | गुमराह करना | अल्लाह चाहे | और जो-जिस |

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ اَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوْبَهُمْ ؕ لَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | उन के दिल | पाक करे | कि | अल्लाह | नहीं चाहा | वह लोग जो | यही लोग |

فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۚۖ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٤١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 41 | बड़ा | अज़ाब | आख़िरत | में | और उन के लिए | रुसवाई | दुनिया में |

वह चाहेंगे कि वह आग से निकल जाएं हालांकि वह उस से निकलने वाले नहीं, और उन के लिए हमेशा रहने वाला (दाइमी) अज़ाब है। (37)

चोर मर्द और चोर औरत दोनों के हाथ काट दो यह सज़ा है उस की जो उन्हों ने किया, इब्रत है अल्लाह की तरफ़ से, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (38)

पस जिस ने तौबा की अपने ज़ुल्म के बाद और इस्लाह कर ली तो बेशक अल्लाह उस की तौबा क़ुबूल करता है, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (39)

क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह ही की है सल्तनत आस्मानों की और ज़मीन की? वह जिसे चाहे अज़ाब दे और जिस को चाहे बख़्शदे, और अल्लाह हर शै पर क़ादिर है। (40)

ऐ रसूल (स)! आप (स) को वह लोग ग़मगीन न करें जो कुफ़्र में भाग दौड़ करते हैं, वह लोग जो अपने मुँह से कहते हैं हम ईमान लाए हालांकि उन के दिल मोमिन नहीं, और वह जो यहूदी हुए वह झूट के लिए जासूसी करते हैं, वह जासूस है एक दूसरी जमाअत के जो आप (स) तक नहीं आए, कलाम को फेर देते हैं (बदल डालते) हैं उस के ठिकाने के बाद (ठिकाना छोड़ कर), कहते हैं अगर तुम्हें यह दिया जाए तो उस को क़ुबूल कर लो और अगर तुम्हें न दिया जाए तो उस से बचो, और जिस को अल्लाह गुमराह करना चाहे तो उस के लिए तू अल्लाह के हाँ कुछ न कर सकेगा, यही लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने नहीं चाहा कि उन के दिल पाक करे, उन के लिए दुनिया में रुसवाई है और उन के लिए आख़िरत में बड़ा अज़ाब है। (41)

झूट के लिए जासूसी करने वाले, हराम खाने वाले, पस अगर वह आप (स) के पास आएं तो आप (स) उन के दरमियान फ़ैसला कर दें या उन से मुँह फेर लें, और अगर आप (स) उन से मुँह फेर लें तो हरगिज़ आप (स) का कुछ न बिगाड़ सकेंगे, और अगर आप (स) फ़ैसला करें तो उन के दरमियान इन्साफ़ से फ़ैसला करें, बेशक अल्लाह दोस्त रखता है इन्साफ़ करने वालों को। **(42)**

और वह आप (स) को कैसे मुन्सिफ़ बनाते हैं जबकि उन के पास तौरात है जिस में अल्लाह का हुक्म है, फिर उस के बाद वह फिर जाते हैं, और वह मानने वाले नहीं। **(43)**

बेशक हम ने नाज़िल की तौरात। उस में हिदायत और नूर है, उस के ज़रीआ हमारे नबी जो फ़रमांबरदार थे हुक्म देते थे यहूद को, और दर्वेश और उलमा (भी) इस लिए कि वह अल्लाह की किताब के निगहबान मुक़र्रर किए गए थे और उस पर निगरान थे, पस तुम लोगों से न डरो और मुझ (ही) से डरो और न हासिल करो मेरी आयतों के बदले थोड़ी क़ीमत, और जो उस के मुताबिक़ फ़ैसला न करे जो अल्लाह ने नाज़िल किया है सो यही लोग काफ़िर हैं। **(44)**

और हम ने उस (किताब) में उन पर फ़र्ज़ कर दिया कि जान के बदले जान, आँख के बदले आँख, और नाक के बदले नाक, और कान के बदले कान, और दाँत के बदले दाँत है, और ज़ख्मों का क़िसास (बदला) है, फिर जिस ने उस (क़िसास) को माफ़ कर दिया तो वह उस के लिए कफ़्फ़ारा है, और जो उस के मुताबिक़ फ़ैसला नहीं करते जो अल्लाह ने नाज़िल किया तो यही लोग ज़ालिम हैं। **(45)**

سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ؕ فَاِنْ جَآءُوْكَ فَاحْكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो फ़ैसला कर दें आप (स) | आप (स) के पास आएं | पस अगर | हराम | बड़े खाने वाले | झूट के लिए | जासूसी करने वाले |

بَيْنَهُمْ اَوْ اَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَاِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَّضُرُّوْكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप (स) का बिगाड़ सकेंगे | तो हरगिज़ न | उन से | आप (स) मुँह फेर लें | और अगर | उन से | मुँह फेर लें | या | उन के दरमियान |

شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दोस्त रखता है | बेशक अल्लाह | इन्साफ़ से | उन के दरमियान | तो फ़ैसला करें | आप फ़ैसला करें | और अगर | कुछ |

الْمُقْسِطِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَكَيْفَ يُحَكِّمُوْنَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِيْهَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | तौरात | जबकि उन के पास | वह आप (स) को मुन्सिफ़ बनाएंगे | और कैसे | 42 | इन्साफ़ करने वाले |

حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَمَآ اُولٰٓئِكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग | और नहीं | उस | बाद | फिर जाते हैं | फिर | अल्लाह का हुक्म |

بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٣﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى وَّنُوْرٌ ۚ ع ٦ ١٠

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और नूर | हिदायत | उस में | तौरात | हम ने नाज़िल की | बेशक हम | 43 | मानने वाले |

يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّوْنَ الَّذِيْنَ اَسْلَمُوْا لِلَّذِيْنَ هَادُوْا

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| उन लोगों के लिए जो यहूदी हुए (यहूद को) | जो फ़रमांबरदार थे | नबी (जमा) | उस के ज़रीआ | हुक्म देते थे |

وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की किताब | से (की) | वह निगहबान किए गए | इस लिए कि | और उलमा | अल्लाह वाले (दर्वेश) |

وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और डरो मुझ से | लोग | पस न डरो | निगरान (मुहाफ़िज़) | उस पर | और थे |

وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के मुताबिक़ जो | फ़ैसला न करे | और जो | थोड़ी | क़ीमत | मेरी आयतों के बदले | और न ख़रीदो (न हासिल करो) |

اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | और हम ने लिखा (फ़र्ज़ किया) | 44 | काफ़िर (जमा) | वह | सो यही लोग | अल्लाह ने नाज़िल किया |

فِيْهَآ اَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ ۙ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْاَنْفَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और नाक | आँख के बदले | और आँख | जान के बदले | जान | कि | उस में |

بِالْاَنْفِ وَالْاُذُنَ بِالْاُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ ۙ وَالْجُرُوْحَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और ज़ख्मों | दाँत के बदले | और दाँत | कान के बदले | और कान | नाक के बदले |

قِصَاصٌ ؕ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ ؕ وَمَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | उस के लिए | कफ़्फ़ारा | तो वह | उस को | माफ़ कर दिया | फिर जो-जिस | बदला |

لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 45 | ज़ालिम (जमा) | वह | तो यही लोग | अल्लाह | नाज़िल किया | उस के मुताबिक़ जो | फ़ैसला नहीं करता |

وَقَفَّيْنَا عَلٰۤى اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की जो | तस्दीक़ करने वाला | इब्ने मरयम | ईसा (अ) | उन के निशाने क़दम | पर | और हम ने पीछे भेजा |

بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ ۪ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ ۙ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और नूर | हिदायत | उस में | इंजील | और हम ने उसे दी | तौरात | से | उस से पहले |

وَّمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةً

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और नसीहत | और हिदायत | तौरात | से | उस से पहले | उस की जो | और तस्दीक़ करने वाली |

لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْهِ ۗ وَمَنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | उस में | अल्लाह | नाज़िल किया | उस के साथ जो | इंजील वाले | और फ़ैसला करें | 46 | परहेज़गारों के लिए |

لَّمْ يَحْكُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَاَنْزَلْنَاۤ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम ने नाज़िल की | 47 | फ़ासिक़ (नाफ़रमान) | वह | तो यही लोग | अल्लाह | नाज़िल किया | उस के मुताबिक़ जो | फ़ैसला नहीं करता |

اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किताब | से | उस से पहले | उस की जो | तस्दीक़ करने वाली | सच्चाई के साथ | किताब | आप की तरफ़ |

وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न पैरवी करें | अल्लाह | नाज़िल किया | उस से जो | उन के दरमियान | सो फ़ैसला करें | उस पर | और निगहबान ओ मुहाफ़िज़ |

اَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ مِنَ الْحَقِّ ؕ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दस्तूर | तुम में से | हम ने मुक़र्रर किया है | हर एक के लिए | हक़ | से | तुम्हारे पास आगया | उस से | उन की ख़ाहिशात |

وَّمِنْهَاجًا ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि तुम्हें आज़माए | और लेकिन | वाहिदा (एक) | उम्मत | तो तुम्हें कर देता | अल्लाह चाहता | और अगर | और रास्ता |

فِيْ مَاۤ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह तुम्हें बतलादेगा | सब को | तुम्हें लौटना | अल्लाह | तरफ़ | नेकियाँ | पस सबक़त करो | उस ने तुम्हें दिया | जो | में |

بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | नाज़िल किया | उस से जो | उन के दरमियान | और फ़ैसला करें | 48 | इख़्तिलाफ़ करते | उस में | तुम थे | जो |

وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْۢ بَعْضِ مَاۤ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | बाज़ (किसी) | से | बहका न दें | कि | और उन से बचते रहो | उन की ख़ाहिशों | और न चलें |

اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّصِيْبَهُمْ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हें पहुँचादे | कि | अल्लाह | चाहता है | सिर्फ़ यही | तो जान लो | वह मुँह फेर लें | फिर अगर | आप की तरफ़ | अल्लाह | नाज़िल किया |

بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ﴿٤٩﴾ اَفَحُكْمَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या हुक्म | 49 | नाफ़रमान | लोग | से | अक्सर | और बेशक | उन के गुनाह | बसबब बाज़ |

الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ؕ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٥٠﴾ ع ١١

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 50 | यक़ीन रखते हैं | लोगों के लिए | हुक्म | अल्लाह | से | बेहतर | और किस | वह चाहते हैं | जाहिलियत |

और हम ने ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) को उन के निशाने क़दम पर भेजा, उस की तस्दीक़ करने वाला जो उस (ईसा (अ)) से पहले तौरात से थी, और हम ने उसे इंजील दी, उस में हिदायत और नूर है और उस की तस्दीक़ करने वाली जो उस से पहले तौरात से थी और परहेज़गारों के लिए हिदायत ओ नसीहत थी। **(46)**

और इंजील वाले उस के साथ फ़ैसला करें जो अल्लाह ने उस में नाज़िल किया, और जो उस के मुताबिक़ फ़ैसला नहीं करते जो अल्लाह ने नाज़िल किया है तो यही लोग फ़ासिक़ (नाफ़रमान) हैं। **(47)**

और हम ने आप (स) की तरफ़ किताब सच्चाई के साथ नाज़िल की अपने से पहली किताबों की तस्दीक़ करने वाली और उस पर निगहबान ओ मुहाफ़िज़, सो उन के दरमियान फ़ैसला करें उस से जो अल्लाह ने नाज़िल किया और उन की ख़ाहिशात की पैरवी न करें उस के बाद (जबकि) तुम्हारे पास हक़ आगया, हम ने मुक़र्रर किया है तुम में से हर एक के लिए (अलग) दस्तूर और (जुदा) रास्ते, और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हें उम्मते वाहिदा (एक उम्मत) कर देता, लेकिन (वह चाहता है) ताकि वह तुम्हें उस में आज़माए जो उस ने तुम्हें दिया है, पस नेकियों में सबक़त करो, तुम सब को अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाना है वह तुम्हें बतला देगा जिस बात में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे। **(48)**

और उन के दरमियान फ़ैसला करें उस से जो नाज़िल किया अल्लाह ने, और उन की ख़ाहिशों पर न चलो और उन से बचते रहो कि तुम्हें बहका न दें किसी ऐसे (हुक्म) से जो नाज़िल किया है अल्लाह ने आप (स) की तरफ़, फिर अगर वह मुँह फेर लें तो जान लो कि अल्लाह सिर्फ़ यही चाहता है कि उन्हें (सज़ा) पहुँचादे उन के बाज़ गुनाहों के सबब, और उन में से अक्सर लोग नाफ़रमान हैं। **(49)**

क्या वह (फिर) जाहिलियत का हुक्म (रस्म ओ रिवाज) चाहते हैं? और अल्लाह से बेहतर हुक्म किस का है उन लोगों के लिए जो यक़ीन रखते हैं? **(50)**

ऐ ईमान वालो! यहूद और नसारा को दोस्त न बनाओ, उन में से बाज़ दोस्त हैं बाज़ के (एक दूसरे के दोस्त हैं) और तुम में से जो कोई उन से दोस्ती रखेगा तो बेशक वह उन में से होगा, बेशक अल्लाह हिदायत नहीं देता ज़ालिम लोगों को। **(51)**

पस तू देखेगा जिन लोगों के दिलों में रोग है वह उन (यहूद ओ नसारा) की तरफ़ दौड़ते हैं, वह कहते हैं हमें डर है कि हम पर गर्दिशे (ज़माना) न आजाए, सो क़रीब है कि अल्लाह फ़तह ले आए या अपने पास से कोई हुक्म (लाए) तो वह अपने दिलों में जो छुपाते थे उस पर पछताते रह जाएं। **(52)**

और मोमिन कहेंगे क्या यह वही लोग हैं जो अल्लाह की पक्की क़स्में खाते थे कि वह तुम्हारे साथ हैं। उन के अ़मल अकारत गए, पस वह नुक़सान उठाने वाले (हो कर) रह गए। **(53)**

ऐ ईमान वालो! तुम में से जो कोई अपने दीन से फिरेगा तो अ़नक़रीब अल्लाह ऐसी क़ौम लाएगा जिन्हें वह महबूब रखता है और वह उसे महबूब रखते हैं, वह मोमिनों पर नरम दिल हैं काफ़िरों पर ज़बरदस्त हैं, अल्लाह की राह में जिहाद करते हैं और किसी मलामत करने वाले की मलामत से नहीं डरते, यह अल्लाह का फ़ज़्ल है वह जिस को चाहता है देता है, और अल्लाह वुस्अ़त वाला, इल्म वाला है। **(54)**

तुम्हारे रफ़ीक़ तो सिर्फ़ अल्लाह और उस का रसूल और ईमान वाले हैं, और वह जो नमाज़ क़ाइम करते हैं और ज़कात देते हैं और (अल्लाह के हुज़ूर) झुकने वाले हैं। **(55)**

जो दोस्त रखें अल्लाह और उस के रसूल (स) को और ईमान वालों को, तो बेशक अल्लाह की जमाअ़त ही (सब पर) ग़ालिब होगी। **(56)**

---

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰۤى اَوْلِيَآءَ ؕۘ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दोस्त | और नसारा | यहूद | न बनाओ | ईमान लाए | जो लोग | ऐ |

بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन से | तो बेशक वह | तुम में से | उन से दोस्ती रखेगा | और जो | बाज़ (दूसरे) | दोस्त | उन में से बाज़ |

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۱﴾ فَتَرَى الَّذِيْنَ فِيْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | वह लोग जो | पस तू देखेगा | 51 | ज़ालिम | लोग | हिदायत नहीं देता | बेशक अल्लाह |

قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يُّسَارِعُوْنَ فِيْهِمْ يَقُوْلُوْنَ نَخْشٰۤى اَنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | हमें डर है | कहते हैं | उन में (उन की तरफ़) | दौड़ते हैं | रोग | उन के दिल |

تُصِيْبَنَا دَآئِرَةٌ ؕ فَعَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَ بِالْفَتْحِ اَوْ اَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهٖ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने पास | से | या कोई हुक्म | लाए फ़तह | कि | अल्लाह | सो क़रीब है | गर्दिश | हम पर (न) आजाए |

فَيُصْبِحُوْا عَلٰى مَاۤ اَسَرُّوْا فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ نٰدِمِيْنَ ﴿۵۲﴾ وَيَقُوْلُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और कहते हैं | 52 | पछताने वाले | अपने दिल (जमा) | में | वह छुपाते थे | जो | पर | तो रह जाएं |

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَهٰۤؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ اِنَّهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि वह | अपनी क़स्में | पक्की | अल्लाह की | क़स्में खाते थे | जो लोग | क्या यह वही हैं | जो लोग ईमान लाए (मोमिन) |

لَمَعَكُمْ ؕ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَاَصْبَحُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۵۳﴾ يٰۤاَيُّهَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ | 53 | नुक़सान उठाने वाले | पस रह गए | उन के अ़मल | अकारत गए | तुम्हारे साथ |

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐसी क़ौम | लाएगा अल्लाह | तो अ़नक़रीब | अपना दीन | से | तुम से | फिरेगा | जो | जो लोग ईमान लाए (ईमान वालो) |

يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗۤ ۙ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ؗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| काफ़िर (जमा) | पर | ज़बरदस्त | मोमिनीन | पर | नर्म दिल | और वह उसे महबूब रखते हैं | वह उन्हें महबूब रखता है |

يُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ ؕ ذٰلِكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| यह | कोई मलामत करने वाला | मलामत | और नहीं डरते | अल्लाह | में रास्ता | जिहाद करते हैं |

فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۵۴﴾ اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारा रफ़ीक़ | उस के सिवा नहीं (सिर्फ़) | 54 | इल्म वाला | वुस्अ़त वाला | और अल्लाह | जिसे चाहता है | वह देता है | अल्लाह | फ़ज़्ल |

اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नमाज़ | क़ाइम करते हैं | जो लोग | और जो लोग ईमान लाए | और उस का रसूल | अल्लाह |

وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ ﴿۵۵﴾ وَمَنْ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | दोस्त रखते हैं | और जो | 55 | रुकूअ़ करने वाले | और वह | ज़कात | और देते हैं |

وَرَسُوْلَهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿۵۶﴾ ع ٨ ١٢

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 56 | ग़ालिब (जमा) | वह | अल्लाह की जमाअ़त | तो बेशक | और जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले) | और उस का रसूल |

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَّخِذُوا۟ ٱلَّذِينَ ٱتَّخَذُوا۟ دِينَكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारा दीन | जो लोग ठहराते हैं | न बनाओ | ईमान लाए (ईमान वाले) | जो लोग | ऐ |

هُزُوًا وَلَعِبًا مِّنَ ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْكِتَٰبَ مِن قَبْلِكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तुम से क़ब्ल | किताब दिए गए | वह लोग-जो | से | और खेल | एक मज़ाक़ |

وَٱلْكُفَّارَ أَوْلِيَآءَ ۚ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٥٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 57 | ईमान वाले | अगर तुम हो | अल्लाह | और डरो | दोस्त | और काफ़िर |

وَإِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى ٱلصَّلَوٰةِ ٱتَّخَذُوهَا هُزُوًا وَلَعِبًا ۚ ذَٰلِكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह | और खेल | एक मज़ाक़ | वह उसे ठहराते हैं | नमाज़ | तरफ़ (लिए) | तुम पुकारते हो | और जब |

بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُونَ ﴿٥٨﴾ قُلْ يَٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ هَلْ تَنقِمُونَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या ज़िद रखते हो | ऐ अहले किताब | आप (स) कह दें | 58 | अक़्ल नहीं रखते हैं (बेअक़्ल) | लोग | इस लिए कि वह |

مِنَّآ إِلَّآ أَنْ ءَامَنَّا بِٱللَّهِ وَمَآ أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَآ أُنزِلَ مِن قَبْلُ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से क़ब्ल | नाज़िल किया गया | और जो | हमारी तरफ़ | नाज़िल किया गया | और जो | अल्लाह पर | हम ईमान लाए | यह कि | मगर | हम से |

وَأَنَّ أَكْثَرَكُمْ فَٰسِقُونَ ﴿٥٩﴾ قُلْ هَلْ أُنَبِّئُكُم بِشَرٍّ مِّن ذَٰلِكَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस | से | बद तर | तुम्हें बतलाऊँ | क्या | आप कह दें | 59 | नाफ़रमान | तुम में अक्सर | और यह कि |

مَثُوبَةً عِندَ ٱللَّهِ ۚ مَن لَّعَنَهُ ٱللَّهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बना दिया | उस पर | और ग़ज़ब किया | अल्लाह | उस पर लानत की | जो-जिस | अल्लाह | हाँ | ठिकाना (जज़ा) |

مِنْهُمُ ٱلْقِرَدَةَ وَٱلْخَنَازِيرَ وَعَبَدَ ٱلطَّٰغُوتَ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ شَرٌّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बद तरीन | वही लोग | तागूत | और गुलामी | और ख़िन्ज़ीर (जमा) | बन्दर (जमा) | उन से |

مَّكَانًا وَأَضَلُّ عَن سَوَآءِ ٱلسَّبِيلِ ﴿٦٠﴾ وَإِذَا جَآءُوكُمْ قَالُوٓا۟

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कहते हैं | तुम्हारे पास आएं | और जब | 60 | रास्ता | सीधा | से | बहुत बहके हुए | दरजे में |

ءَامَنَّا وَقَد دَّخَلُوا۟ بِٱلْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا۟ بِهِۦ ۚ وَٱللَّهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और अल्लाह | उस (कुफ़्र) के साथ | निकले चले गए | और वह | कुफ़्र की हालत में | हालांकि वह दाख़िल हुए (आए) | हम ईमान लाए |

أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا۟ يَكْتُمُونَ ﴿٦١﴾ وَتَرَىٰ كَثِيرًا مِّنْهُمْ يُسَٰرِعُونَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह भाग दौड़ करते हैं | उन से | बहुत | और तू देखेगा | 61 | छुपाते | थे | वह जो | ख़ूब जानता है |

فِى ٱلْإِثْمِ وَٱلْعُدْوَٰنِ وَأَكْلِهِمُ ٱلسُّحْتَ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوا۟

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो वह | बुरा है | हराम | और उन का खाना | और ज़ियादती | गुनाह | में |

يَعْمَلُونَ ﴿٦٢﴾ لَوْلَا يَنْهَىٰهُمُ ٱلرَّبَّٰنِيُّونَ وَٱلْأَحْبَارُ عَنْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| से | और उलमा | अल्लाह वाले (दर्वेश) | क्यों उन्हें मना नहीं करते | 62 | कर रहे हैं |

قَوْلِهِمُ ٱلْإِثْمَ وَأَكْلِهِمُ ٱلسُّحْتَ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوا۟ يَصْنَعُونَ ﴿٦٣﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 63 | वह कर रहे हैं | जो | बुरा है | हराम | और उन का खाना | उन की बातें गुनाह की |

ऐ ईमान वालो! उन लोगों को जो तुम्हारे दीन को एक मज़ाक़ और खेल ठहराते हैं (यानी वह) जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई और काफ़िरों को दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। (57)

और जब तुम नमाज़ के लिए पुकारते हो (अज़ान देते हो) तो वह उसे एक मज़ाक़ और खेल ठहराते हैं, यह इस लिए है कि वह लोग अक़्ल नहीं रखते। (58)

आप (स) कह दें ऐ अहले किताब! क्या तुम हम से यही ज़िद रखते हो (इन्तिक़ाम लेते हो) कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस पर जो हमारी तरफ़ नाज़िल किया गया और जो उस से क़ब्ल नाज़िल किया गया, और यह कि तुम में से अक्सर नाफ़रमान हैं। (59)

आप (स) कह दें क्या मैं तुम्हें बतलाऊँ उस से बदतर जज़ा (किस की है) अल्लाह के हां (वही) जिस पर अल्लाह ने लानत की और उस पर ग़ज़ब किया और उन में से बना दिए बन्दर और ख़िन्ज़ीर, और (उन्हों ने) तागूत (सरकश - शैतान) की गुलामी की। वही लोग बदतरीन दरजे में हैं, और सीधे रास्ते से सब से ज़ियादा बहके हुए हैं। (60)

और जब तुम्हारे पास आएं तो कहते हैं हम ईमान लाए हालांकि आए थे कुफ़्र की हालत में और निकले तो कुफ़्र के साथ, और अल्लाह ख़ूब जानता है जो वह छुपाते हैं। (61)

और तू देखेगा उन में से बहुत से भाग दौड़ करते हैं गुनाह और ज़ियादती में और हराम खाने में, बुरा है जो वह कर रहे हैं। (62)

उन्हें क्यों मना नहीं करते दर्वेश और उलमा गुनाह (की बात) कहने से और उन के हराम खाने से, बुरा है जो वह कर रहे हैं। (63)

और यहूद कहते हैं अल्लाह का हाथ बन्धा हुआ है (अल्लाह बखील है), बाँध दिए जाएं उन के हाथ, और जो उन्हों ने कहा उस से उन पर लानत की गई। बल्कि अल्लाह के हाथ कुशादा हैं, वह खर्च करता है जैसे वह चाहता है, और जो आप (स) पर आप (स) के रब की तरफ से नाजिल किया गया उस से उन में से बहुतों की सरकशी ज़रूर बढ़ेगी और कुफ़्र, और हम ने उन के अन्दर क़ियामत के दिन तक के लिए दुश्मनी और बैर डाल दिया है, वह जब कभी लड़ाई की आग भड़काते हैं अल्लाह उसे बुझा देता है, और वह मुल्क में फसाद करते हुए दौड़ते हैं (फसाद बर्पा करते हैं), और अल्लाह फ़साद करने वालों को पसन्द नहीं करता। (64)

और अगर अहले किताब ईमान लाते और परहेज़गारी करते तो हम अलबत्ता उन से उन की बुराइयां दूर कर देते और नेमत के बागात में जरूर दाखिल करते। (65)

और अगर वह तौरेत और इंजील काइम रखते और जो उन के रब की तरफ से उन पर नाजिल किया गया तो वह खाते अपने ऊपर से और अपने पाऊँ के नीचे से, उन में से एक जमाअत मियाना रो है, और उन में से अक्सर बुरे काम करते हैं। (66)

ऐ रसूल (स) पहुँचादो जो आप (स) के रब की तरफ से आप (स) पर नाज़िल किया गया है, और अगर यह न किया तो (गोया) आप (स) ने उस का पैग़ाम नहीं पहुँचाया, और अल्लाह आप (स) को लोगों से बचा लेगा, बेशक अल्लाह क़ौमे कुफ़्फ़ार को हिदायत नहीं देता। (67)

आप (स) कह दें: ऐ अहले किताब! तुम कुछ भी नहीं हो जब तक तुम (न) क़ाइम करो तौरात और इंजील और जो तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर नाज़िल किया गया है, और जरूर बढ़ जाएगी उन में से अक्सर की सरकशी और कुफ़्र उस की वजह से जो आप (स) पर आप (स) के रब की तरफ़ से नाज़िल किया गया है तो आप (स) अफ़सोस न करें (ग़म न खाएं) क़ौमे कुफ़्फ़ार पर। (68)

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ ۭ غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से जो | और उन पर लानत की गई | उन के हाथ | बाँध दिए जाएं | बन्धा हुआ | अल्लाह का हाथ | यहूद | और कहा (कहते हैं) |

قَالُوْا ۘ بَلْ يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَاۗءُ ۭ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا وقف لازم

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बहुत से | और ज़रूर बढ़ेगी | वह चाहता है | जैसे | वह ख़र्च करता है | कुशादा हैं | उस (अल्लाह) के हाथ | बल्कि | उन्हों ने कहा |

مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۭ وَاَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के अन्दर | और हम ने डाल दिया | और कुफ़्र | सरकशी | आप का रब | से | आप की तरफ़ | जो नाजिल किया गया | उन से |

الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاۗءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۭ كُلَّمَآ اَوْقَدُوْا نَارًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आग | भड़काते हैं | जब कभी | क़ियामत का दिन | तक | और बुग़ज़ (बैर) | दुश्मनी |

لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ وَيَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا ۭ وَاللّٰهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और अल्लाह | फसाद करते | जमीन (मुल्क) में | और वह दौड़ते हैं | अल्लाह | उसे बुझा देता है | लड़ाई की |

لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ۝ ٦٤ وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता हम दूर कर देते | और परहेजगारी करते | ईमान लाते | अहले किताब | यह कि | और अगर | 64 | फ़साद करने वाले | पसन्द नहीं करता |

عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝ ٦٥ وَلَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क़ाइम रखते | वह | और अगर | 65 | नेमत के बागात | और ज़रूर हम उन्हें दाखिल करते | उन की बुराइयां | उन से |

التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا مِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | तो वह खाते | उन का रब | से | उन की तरफ (उन पर) | नाजिल किया गया | और जो | और इंजील | तौरात |

فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ۭ مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ۭ وَكَثِيْرٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अक्सर | सीधी राह पर (मियाना रो) | एक जमाअत | उन से | अपने पाऊँ | नीचे | और से | अपने ऊपर |

مِّنْهُمْ سَاۗءَ مَا يَعْمَلُوْنَ ۝ ٦٦ يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ ع ١٠ ١٢

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारी तरफ (तुम पर) | जो नाजिल किया गया | पहुँचा दो | रसूल (स) | ऐ | 66 | जो वह करते हैं | बुरा | उन में |

مِنْ رَّبِّكَ ۭ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ۭ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप (स) को बचाले गा | और अल्लाह | उस का पैगाम | आप (स) ने पहुँचाया | तो नहीं | यह न किया | और अगर | तुम्हारा रब | से |

مِنَ النَّاسِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ ٦٧ قُلْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आप कह दें | 67 | क़ौमे कुफ़्फ़ार | हिदायत नही देता | बेशक अल्लाह | लोग | से |

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰي شَيْءٍ حَتّٰي تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | और इंजील | तौरात | तुम क़ाइम करो | जब तक | किसी चीज़ पर (कुछ भी) | तुम नही हो | ऐ अहले किताब |

اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۭ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप की तरफ़ (आप पर) | जो नाज़िल किया गया | उन से | अक्सर | और ज़रूर बढ़ जाएगी | तुम्हारा रब | से | तुम्हारी तरफ़ (तुम पर) | नाजिल किया गया |

مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ فَلَا تَاْسَ عَلَي الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ ٦٨

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 68 | क़ौमे कुफ़्फ़ार | पर | तो अफ़सोस न करें | और कुफ़्र | सरकशी | आप का रब की तरफ़ से |

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِئُوْنَ وَالنَّصٰرٰى

बेशक | जो लोग ईमान लाए | और जो लोग | यहूदी हुए | और साबी | और नसारा

مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

जो | ईमान लाए | अल्लाह पर | और आख़िरत के दिन | और उस ने अमल किए | अच्छे | तो कोई ख़ौफ़ नही | उन पर | और न वह

يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٩﴾ لَقَدْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ

ग़मगीन होंगे | 69 | बेशक | हम ने लिया | पुख़्ता अहद | बनी इस्राईल | और हम ने भेजे | उन की तरफ़

رُسُلًا ۭ كُلَّمَا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُهُمْ ۙ فَرِيْقًا كَذَّبُوْا

रसूल (जमा) | जब भी | आया उन के पास | कोई रसूल | उस के साथ जो | न चाहते थे | उन के दिल | एक फ़रीक़ | झुटलाया

وَفَرِيْقًا يَّقْتُلُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَحَسِبُوْٓا اَلَّا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ فَعَمُوْا وَصَمُّوْا ثُمَّ

और एक फ़रीक़ | क़त्ल कर डालते | 70 | और उन्हों ने गुमान किया | कि न होगी | कोई ख़राबी | सो वह अन्धे हुए | और बहरे हो गए | तो

تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوْا وَصَمُّوْا كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ ۭ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا

तौबा क़ुबूल की | अल्लाह | उन की | फिर | अँधे होगए | और बहरे होगए | अक्सर | उन से | और अल्लाह | देख रहा है | जो

يَعْمَلُوْنَ ﴿٧١﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۭ

वह करते हैं | 71 | बेशक काफ़िर हुए | वह जिन्हों ने कहा | तहक़ीक़ | अल्लाह | वही | मसीह (अ) | इब्ने मरयम

وَقَالَ الْمَسِيْحُ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ۭ اِنَّهٗ

और कहा | मसीह (अ) | ऐ बनी इस्राईल | इबादत करो | अल्लाह | मेरा रब | और तुम्हारा रब | बेशक वह

مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَاْوٰىهُ النَّارُ ۭ

जो | शरीक ठहराए | अल्लाह का | तो तहक़ीक़ | अल्लाह ने हराम कर दी | उस पर | जन्नत | और उस का ठिकाना | दोज़ख़

وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿٧٢﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ

और नहीं | ज़ालिमों के लिए | कोई | मददगार | 72 | अलबत्ता काफ़िर हुए | वह लोग जिन्हों ने कहा | बेशक अल्लाह | तीन का

ثَلٰثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّآ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۭ وَاِنْ لَّمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ

وقف لازم

तीसरा (एक) | और नहीं | कोई | माबूद | सिवाए | माबूद | वाहिद | और अगर | वह बाज़ न आएं | उस से जो | वह कहते हैं

لَيَمَسَّنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾ اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ

ज़रूर पहुँचेगा | जिन्हों ने कुफ़्र किया | उन से | अ़ज़ाब | दर्दनाक | 73 | पस वह क्यों तौबा नही करते

اِلَى اللّٰهِ وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧٤﴾ مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ

अल्लाह की तरफ़ (आगे) | और उस से बख़्शिश मांगते | और अल्लाह | बख़्शने वाला | मेहरबान | 74 | नही | मसीह (अ) | इब्ने मरयम

اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۭ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ۭ كَانَا يَاْكُلٰنِ

मगर | रसूल | गुज़र चुके | उस से पहले | रसूल | और उस की माँ | सिद्दीक़ा (सच्ची-वली) | वह दोनों | खाते थे

الطَّعَامَ ۭ اُنْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٧٥﴾

खाना | देखो | कैसे | हम बयान करते हैं | उन के लिए | आयात (दलाइल) | फिर | देखो | कहाँ (कैसे) | औन्धे जा रहे हैं | 75

बेशक जो लोग ईमान लाए और जो यहूदी हुए और साबी (सितारा परस्त) और नसारा, जो भी ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर और अच्छे अ़मल करे तो कोई ख़ौफ़ नहीं उन पर और न वह गमगीन होंगे। (69)

बेशक हम ने बनी इस्राईल से पुख़्ता अहद लिया और हम ने उन की तरफ़ रसूल भेजे, जब भी उन के पास कोई रसूल आया उस (हुक्म) के साथ जो उन के दिल न चाहते थे तो एक फ़रीक़ को झुटलाया और एक फ़रीक़ को क़त्ल कर डाला, (70)

और उन्हों ने गुमान किया कि कोई ख़राबी न होगी, सो वह अन्धे हो गए और बहरे हो गए, फिर अल्लाह ने उन्हें माफ़ किया, फिर उन में से अक्सर अन्धे और बहरे हो गए, सो अल्लाह देख रहा है जो वह करते हैं। (71)

बेशक वह काफ़िर हुए जिन्हों ने कहा तहक़ीक़ अल्लाह वही है मसीह (अ) इब्ने मरयम, और मसीह (अ) ने कहा ऐ बनी इस्राईल! अल्लाह की इबादत करो जो मेरा (भी) रब है और तुम्हारा (भी) रब है, बेशक जो अल्लाह का शरीक ठहराए तो तहक़ीक़ अल्लाह ने उस पर जन्नत हराम कर दी है और उस का ठिकाना दोज़ख़ है और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं। (72)

अलबत्ता वह लोग काफ़िर हुए जिन्हों ने कहा बेशक अल्लाह तीन में का एक है। और माबूद वाहिद के सिवा कोई माबूद नहीं, और अगर वह उस से बाज़ न आए जो वह कहते हैं तो उन में से जिन्हों ने कुफ़्र किया उन्हें ज़रूर दर्दनाक अ़ज़ाब पहुँचेगा। (73)

और वह तौबा क्यों नहीं करते अल्लाह के आगे और उस से गुनाहों की बख़्शिश क्यों नहीं मांगते? और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (74)

मसीह (अ) इब्ने मरयम (अ) नहीं मगर रसूल (वह सिर्फ़ एक रसूल है) उस से पहले रसूल गुज़र चुके हैं, और उस की माँ सिद्दीक़ा (सच्ची - वली) हैं, वह दोनों खाना खाते थे, देखो! हम उन के लिए कैसे दलाइल बयान करते हैं, फिर देखो ये कैसे औन्धे जा रहे हैं? (75)

कह दें: क्या तुम अल्लाह के सिवा उसे पूजते हो जो तुम्हारे लिए मालिक नहीं किसी नुक़्सान का और न नफ़ा का, और अल्लाह ही सुनने वाला जानने वाला है। (76)

कह दें: ऐ अहले किताब! अपने दीन में नाहक़ मुबालिग़ा न करो और उन लोगों की ख़ाहिशात की पैरवी न करो जो उस से क़ब्ल गुमराह हो चुके हैं और उन्हों ने बहुत सों को गुमराह किया और (ख़ुद भी) बहक गए सीधे रास्ते से। (77)

बनी इस्राईल में से जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह मलऊन हुए दाऊद (अ) और ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) की ज़बानी, यह इस लिए कि उन्हों ने नाफ़रमानी की और वह हद से बढ़ते थे। (78)

वह एक दूसरे को बुरे काम से जो वह कर रहे थे न रोकते थे, अलबत्ता बुरा है जो वह करते थे (79)

आप (स) देखेंगे उन में से अक्सर काफ़िरों से दोस्ती करते हैं। अलबत्ता बुरा है जो आगे भेजा ख़ुद उन्हों ने अपने लिए कि उन पर अल्लाह ग़ज़बनाक हुआ और वह हमेशा अज़ाब में रहने वाले हैं। (80)

और अगर (काश) वह अल्लाह और रसूल पर ईमान ले आते और उस पर जो उस की तरफ़ नाज़िल किया गया तो उन्हें दोस्त न बनाते लेकिन उन में से अक्सर नाफ़रमान हैं। (81)

तुम सब लोगों से ज़ियादा दुश्मन पाओगे अहले ईमान (मुस्लमानों) का यहूद को और मुशरिकों को, और अलबत्ता तुम मुसलमानों के लिए दोस्ती में सब से क़रीब पाओगे (उन लोगों को) जिन लोगों ने कहा हम नसारा हैं, यह इस लिए कि उन में आलिम और दर्वेश हैं, और यह कि वह तकब्बुर नहीं करते। (82)

قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न नफ़ा | नुक़्सान | तुम्हारे लिए | मालिक | जो नहीं | अल्लाह के सिवा | से | क्या तुम पूजते हो | कह दें |

وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٧٦﴾ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | ग़ुलू (मुबालिग़ा) न करो | ऐ अहले किताब | कह दें | 76 | जानने वाला | सुनने वाला | वही | और अल्लाह |

دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوْۤا اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस से क़ब्ल | गुमराह हो चुके | वह लोग | ख़ाहिशात | पैरवी करो | और न | नाहक़ | अपना दीन |

وَاَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَّضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿٧٧﴾ لُعِنَ ع ١٠ ١٢

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लानत किए गए (मलऊन हुए) | 77 | रास्ता | सीधा | से | और भटक गए | बहुत से | और उन्हों ने गुमराह किया |

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और ईसा (अ) | दाऊद (अ) | ज़बान | पर | बनी इस्राईल | से | जिन लोगों ने कुफ़्र किया |

ابْنِ مَرْيَمَ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٧٨﴾ كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक दूसरे को न रोकते थे | 78 | हद से बढ़ते | और वह थे | उन्हों ने नाफ़रमानी की | इस लिए कि | यह | इब्ने मरयम |

عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 79 | करते | जो वह थे | अलबत्ता बुरा है | वह करते थे | बुरे काम | से |

تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो आगे भेजा | अलबत्ता बुरा है | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | दोस्ती करते हैं | उन से | अक्सर | आप (स) देखेंगे |

لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह | और अज़ाब में | उन पर | ग़ज़बनाक हुआ अल्लाह | कि | उन की जानें | अपने लिए |

خٰلِدُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَاۤ اُنْزِلَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नाज़िल किया गया | और जो | और रसूल | अल्लाह | वह ईमान लाए | और अगर | 80 | हमेशा रहने वाले |

اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन से | अक्सर | और लेकिन | दोस्त | उन्हें बनाते | न | उस की तरफ़ |

فٰسِقُوْنَ ﴿٨١﴾ لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अहले ईमान (मुसलमानों) के लिए | दुश्मनी | लोग | सब से ज़ियादा | तुम ज़रूर पाओगे | 81 | नाफ़रमान |

الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| दोस्ती | सब से ज़ियादा क़रीब | और अलबत्ता ज़रूर पाओगे | और जिन लोगों ने शिर्क किया | यहूद |

لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّا نَصٰرٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| इस लिए कि | यह | नसारा | हम | जिन लोगों ने कहा | ईमान लाए (मुसलमान) | उन के लिए जो |

مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٨٢﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 82 | तकब्बुर नहीं करते | और यह कि वह | और दर्वेश | आलिम | उन से |

الحزب ٧

وَاِذَا سَمِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰٓى اَعْيُنَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की आँखें | तू देखे | रसूल | तरफ़ | जो नाज़िल किया गया | सुनते हैं | और जब |

تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ ۚ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ईमान लाए | ऐ हमारे रब | वह कहते हैं | हक़ | से-को | उन्हों ने पहचान लिया | इस (वजह से) | आँसू | से | वह पड़ती है |

فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَا جَآءَنَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारे पास आया | और जो | अल्लाह पर | हम ईमान न लाएं | हम को | और क्या | 83 | गवाह (जमा) | साथ | पस हमें लिख ले |

مِنَ الْحَقِّ ۙ وَنَطْمَعُ اَنْ يُّدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٤﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 84 | नेक लोग | क़ौम | साथ | हमारा रब | हमें दाख़िल करे | कि | और हम तमअ रखते हैं | हक़ | से पर |

فَاَثَابَهُمُ اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमेशा रहेंगे | नहरें | उस के नीचे | से | बहती है | बाग़ात | उस के बदले जो उन्हों ने कहा | अल्लाह | पस दिए उन को |

فِيْهَا ۚ وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٥﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और झुटलाया | उन्हों ने कुफ़्र किया | और जो लोग | 85 | नेकोकार (जमा) | जज़ा | और यह | उस (उन) में |

ع ١١

بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٨٦﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान लाए | वह लोग जो | ऐ | 86 | दोज़ख़ | साथी (वाले) | यही लोग | हमारी आयात |

لَا تُحَرِّمُوْا طَيِّبٰتِ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक अल्लाह | और हद से न बढ़ो | तुम्हारे लिए | हलाल की अल्लाह ने | जो | पाकीज़ा चीज़ें | न हराम ठहराओ |

لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۪

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पाकीज़ा | हलाल | तुम्हें दिया अल्लाह ने | उस से जो | और खाओ | 87 | हद से बढ़ने वाले | नहीं पसन्द करता |

وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारा मुआख़ज़ा करता अल्लाह | नही | 88 | मानते हो | उस को | तुम | वह जिस | और डरो अल्लाह से |

بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क़सम | मज़बूत बांधा | उस पर जो | मुआख़ज़ा करता है तुम्हारा | और लेकिन | तुम्हारी क़समें | में पर | बेहूदा |

فَكَفَّارَتُهٗٓ اِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम खिलाते हो | जो | औसत | से-का | मोहताज (जमा) | दस | खाना खिलाना | सो उस का कफ़्फ़ारा |

اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ۭ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो रोज़ा रखे | न पाए | पस जो | एक गर्दन | या आज़ाद करना | या उन्हें कपड़े पहनाना | अपने घर वाले |

ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ۭ ذٰلِكَ كَفَّارَةُ اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ۭ وَاحْفَظُوْٓا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और हिफ़ाज़त करो | तुम क़सम खाओ | जब | तुम्हारी क़समें | कफ़्फ़ारा | यह | तीन दिन |

اَيْمَانَكُمْ ۭ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٨٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 89 | शुक्र करो | ताकि तुम | अपने अहकाम | तुम्हारे लिए | बयान करता है अल्लाह | इसी तरह | अपनी क़समें |

और जब वह सुनते हैं जो रसूल (स) की तरफ़ नाज़िल किया गया, तू देखे कि उन की आँखें आँसूओं से बह पड़ती हैं (उबल पड़ती हैं) इस वजह से कि उन्हों ने हक़ को पहचान लिया, वह कहते हैं कि ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए, पस हमें गवाहों (ईमान लाने वालों) के साथ लिख ले। (83)

और हम को क्या हुआ कि हम ईमान न लाएं अल्लाह पर और उस हक़ पर जो हमारे पास आया, और हम तमअ रखते हैं कि हमें दाख़िल करे हमारा रब नेक लोगों के साथ। (84)

पस उन्हें अल्लाह ने उस के बदले जो उन्हों ने कहा उन्हें बाग़ात दिए जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, और यह नेकोकारों की जज़ा है। (85)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयात को झुटलाया, यही लोग दोज़ख़ वाले हैं। (86)

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए! पाकीज़ा चीज़ें जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल कीं वह हराम न ठहराओ, और हद से न बढ़ो, बेशक अल्लाह नहीं पसन्द करता हद से बढ़ने वालों को। (87)

और जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से हलाल और पाकीज़ा खाओ और अल्लाह से डरो वह जिस को तुम मानते हो। (88)

अल्लाह तुम्हारा मुआख़ज़ा नहीं करता (नहीं पकड़ता) तुम्हारी बेहूदा क़समों पर लेकिन तुम्हारा मुआख़ज़ा करता है (पकड़ता है) जिस क़सम को तुम ने मज़बूत बान्धा (पुख़्ता क़सम पर), सो उस का कफ़्फ़ारा दस मोहताजों को खाना खिलाना है औसत (दरजे) का जो तुम अपने घर वालों को खिलाते हो या उन्हें कपड़े पहनाना या एक गर्दन (गुलाम) आज़ाद करना, पस जो यह न पाए वह तीन दिन के रोज़े रखे, यह तुम्हारी क़समों का कफ़्फ़ारा है जब तुम क़सम खाओ, और अपनी क़समों की हिफ़ाज़त करो, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने अहकाम बयान करता है ताकि तुम शुक्र करो। (89)

ऐ ईमान वालो! इस के सिवा नहीं कि शराब, जुआ और बुत और पांसे (फ़ाल के तीर) नापाक हैं, शैतानी काम हैं, सो उन से बचो ताकि तुम फ़लाह (कामयाबी और नजात) पाओ। (90)

इस के सिवा नहीं कि शैतान चाहता है कि तुम्हारे दरमियान शराब और जुए से दुश्मनी डाले और तुम्हें रोके अल्लाह की याद से और नमाज़ से, पस क्या तुम बाज़ आओगे? (91)

और तुम इताअ़त करो अल्लाह की और रसूल (स) की, और बचते रहो, फिर अगर तुम फिर जाओगे तो जान लो कि हमारे रसूल (स) के ज़िम्मे सिर्फ़ खोल कर (वाज़ेह तौर पर) पहुँचा देना है। (92)

जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए उन पर उस में कोई गुनाह नहीं जो वह खा चुके जबकि (आइन्दाह) उन्हों ने परहेज़ किया और ईमान लाए और नेक अ़मल किए, फिर वह डरे और ईमान लाए, फिर वह डरे और उन्हों ने नेकोकारी की, और अल्लाह नेकोकारों को दोस्त रखता है। (93)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तुम्हें जरूर आज़माएगा किसी क़द्र (उस) शिकार से जिस तक तुम्हारे हाथ और तुम्हारे नेज़े पहुँचते हैं ताकि अल्लाह मालूम कर ले कौन उस से बिन देखे डरता है, सो इस के बाद जिस ने जियादती की उस के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (94)

ऐ ईमान वालो! न मारो शिकार जब कि तुम हालते एहराम में हो, और तुम में से जो उस को जान बूझ कर मारे तो जो वह मारे उस के बराबर बदला है मवेशियों में से, जिस का तुम में से दो मोतबर फ़ैसला करें, खाने कअ़बा नियाज़ पहुँचाए या (इस का) कफ़्फ़ारा है खाना चन्द मोहताजों का, या उस के बराबर रोज़े रखना ताकि वह अपने किए की सज़ा चखे, अल्लाह ने माफ़ किया जो पहले हो चुका और जो फिर करे तो अल्लाह उस से बदला लेगा, और अल्लाह ग़ालिब बदला लेने वाला है। (95)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और पांसे | और बुत | और जुआ | इस के सिवा नही कि शराब | ईमान वालो | ऐ |

رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٩٠﴾ اِنَّمَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस के सिवा नही | 90 | फ़लाह पाओ | ताकि तुम | सो उन से बचो | शैतान | काम | से | नापाक |

يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शराब | में-से | और बैर | दुश्मनी | तुम्हारे दरमियान | कि डाले | शैतान | चाहता है |

وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿٩١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 91 | बाज़ आओगे | तुम | पस क्या | और नमाज़ से | अल्लाह की याद | से | और तुम्हें रोके | और जुआ |

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सिर्फ़ | तो जान लो | तुम फिर जाओगे | फिर अगर | और बचते रहो | रसूल | और इताअ़त करो | अल्लाह | और इताअ़त करो |

عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٩٢﴾ لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने अमल किए नेक | जो लोग ईमान लाए | पर | नही | 92 | खोल कर | पहुँचा देना | हमारा रसूल (स) | पर (जिम्मा) |

جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने अ़मल किए नेक | और वह ईमान लाए | उन्हों ने परहेज़ किया | जब | वह खा चुके | में-जो | कोई गुनाह |

ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٣﴾ ع ١٢ ٢

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 93 | नेकोकार (जमा) | दोस्त रखता है | और अल्लाह | और उन्हों ने नेकोकारी की | वह डरे | फिर | और ईमान लाए | फिर वह डरे |

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗٓ اَيْدِيْكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे हाथ | उस तक पहुँचते हैं | शिकार | से | कुछ (किसी क़द्र) | ज़रूर तुम्हें आज़माएगा अल्लाह | ईमान वालो | ऐ |

وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस के बाद | ज़ियादती की | सो जो-जिस | बिन देखे | उस से डरता है | कौन | ताकि अल्लाह मालूम करले | और तुम्हारे नेज़े |

فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٤﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जब कि तुम | शिकार | न मारो | ईमान वालो | ऐ | 94 | दर्दनाक | अज़ाब | सो उसके लिए |

حُرُمٌ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मवेशी से | जो वह मारे | बराबर | तो बदला | जान बूझ कर | तुम में से | उस को मारे | और जो | हालते एहराम में |

يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًا بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| खाना | या कफ़्फ़ारा | कअ़बा | पहुँचाए | नियाज़ | तुम से | दो मोतबर | उस का | फ़ैसला करें |

مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पहले हो चुका | उस से जो | अल्लाह ने माफ़ किया | अपने काम (किए) की सज़ा | ताकि चखे | रोज़े | उस | या बराबर | मोहताज (जमा) |

وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٩٥﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 95 | बदला लेने वाला | ग़ालिब | और अल्लाह | उस से | तो अल्लाह बदला लेगा | फिर करे | और जो |

أُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهٗ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ وَحُرِّمَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हराम किया गया | और मुसाफिरों के लिए | तुम्हारे लिए | फाइदा | और उस का खाना | दर्या का शिकार | तुम्हारे लिए | हलाल किया गया |

عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की तरफ़ | वह जो | अल्लाह | और डरो | हालते एहराम में | जब तक तुम हो | खुश्की का शिकार | तुम पर |

تُحْشَرُوْنَ ﴿٩٦﴾ جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيٰمًا لِّلنَّاسِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लोगों के लिए | कि़याम का बाइस | एहतिराम वाला घर | कअ़बा | अल्लाह | बनाया | 96 | तुम जमा किए जाओगे |

وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَآئِدَ ۗ ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कि अल्लाह | ताकि तुम जान लो | यह | और पट्टे पड़े हुए जानवर | और कुर्बानी | और हुर्मत वाले महीने |

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चीज़ | हर | और यह कि अल्लाह | ज़मीन में | और जो | आस्मानों में | जो | उसे मालूम है |

عَلِيْمٌ ﴿٩٧﴾ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ وَاَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बख़्शने वाला | और यह कि अल्लाह | अ़ज़ाब | सख़्त | अल्लाह | कि | जान लो | 97 | जानने वाला |

رَّحِيْمٌ ﴿٩٨﴾ مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो तुम जाहिर करते हो | जानता है | और अल्लाह | मगर पहुँचा देना | रसूल (स) पर- रसूल के जिम्मे | नहीं | 98 | मेहरबान |

وَمَا تَكْتُمُوْنَ ﴿٩٩﴾ قُلْ لَّا يَسْتَوِي الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़ाह | और पाक | नापाक | बराबर नहीं | कह दीजिए | 99 | तुम छुपाते हो | और जो |

اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ताकि तुम | ऐ अ़क़्ल वालो | सो डरो अल्लाह से | नापाक | कस्रत | तुम्हें अच्छी लगे |

ع ١٣ ٧ ٢ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٠﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْئَلُوْا عَنْ اَشْيَآءَ اِنْ تُبْدَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो ज़ाहिर की जाएं | चीज़ें | से- मुतअ़ल्लिक़ | न पूछो | ईमान वाले | ऐ | 100 | फ़लाह पाओ |

لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ۚ وَاِنْ تَسْئَلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ تُبْدَ لَكُمْ ۗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़ाहिर कर दी जाएंगी तुम्हारे लिए | नाज़िल किया जा रहा है कुरआन | जब | उनके मुतअ़ल्लिक़ | तुम पूछोगे | और अगर | तुम्हें बुरी लगें | तुम्हारे लिए |

عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٠١﴾ قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक कौम | उस के मुतअ़ल्लिक़ पूछा | 101 | बुर्दबार | बख़्शने वाला | और अल्लाह | उस से | अल्लाह ने दरगुज़र की |

مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾ مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْۢ بَحِيْرَةٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बहीरा | अल्लाह | नहीं बनाया | 102 | इन्कार करने वाले (मुन्किर) | उस से | वह हो गए | फिर | तुम से कब्ल |

وَّلَا سَآئِبَةٍ وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| जिन लोगों ने कुफ़्र किया | और लेकिन | और न हाम | और न वसीला | और न साइबा |

يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۗ وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٣﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 103 | नहीं रखते अ़क़्ल | और उन के अक्सर | झूटे | अल्लाह पर | वह बुहतान बान्धते हैं |

तुम्हारे लिए हलाल किया गया दर्या का शिकार और उस का खाना तुम्हारे फ़ाइदे के लिए है और मूसाफ़िरों के लिए, और तुम पर खुश्की (जंगल) का शिकार हराम किया गया जब तक तुम हालते एहराम में हो, और अल्लाह से डरो जिस की तरफ़ तुम जमा किए जाओगे। (96)

अल्लाह ने बनाया कअ़बा एहतिराम वाला घर, लोगों के लिए कि़याम का बाइस, और हुर्मत वाले महीने और कुर्बानी और गले में पट्टा (कुर्बानी की अ़लामत) पड़े हुए जानवर। यह इस लिए है ताकि तुम जान लो कि अल्लाह को मालूम है जो कुछ आस्मानों में और जो जमीन में है, और यह कि अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है। (97)

जान लो कि अल्लाह सख़्त अ़जाब देने वाला है और यह कि अल्लाह बख़्शने वाला मेह्रबान है। (98)

रसूल (स) के जिम्मे सिर्फ़ (पैग़ाम) पहुँचा देना है, और अल्लाह जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। (99)

कह दीजिए! बराबर नहीं नापाक और पाक, ख़ाह तुम्हें नापाक की कस्रत अच्छी लगे, सो ऐ अ़क़्ल वालो! अल्लाह से डरो ताकि तुम फ़लाह (कामयाबी और नजात) पाओ। (100)

ऐ ईमान वालो! न पूछो उन चीज़ों के मुतअ़ल्लिक़ जो तुम्हारे लिए जाहिर की जाएं तो तुम्हें बुरी लगें, और अगर उन के मुतअ़ल्लिक़ (ऐसे वक्त) पूछोगे जब कुरआन नाज़िल किया जा रहा है तो तुम्हारे लिए जाहिर कर दी जाएगी, अल्लाह ने उस से दरगुज़र की, और अल्लाह बख़्शने वाला बुर्दबार है। (101)

इसी कि़स्म के सवालात तुम से कब्ल एक कौम ने पूछा, फिर वह उस से मुन्किर हो गए। (102)

अल्लाह ने नहीं बनाया बहीरा और न साइबा, और न वसीला और न हाम, लेकिन जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह अल्लाह पर झूट बान्धते है, और उन के अक्सर अ़क़्ल नहीं रखते। (103)

और जब उन से कहा जाए आओ उस की तरफ़ जो अल्लाह ने नाज़िल किया और रसूल (स) की तरफ़ (तो) वह कहते हैं हमारे लिए वह काफ़ी है जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया, तो क्या (उस सूरत में भी कि) उन के बाप दादा कुछ न जानते हों और न हिदायत याफ़्ता हों। (104)

ऐ ईमान वालो! तुम पर अपनी जानों (की फ़िक्र लाजिम) है, जब तुम हिदायत पर हो तो जो गुमराह हुआ तुम्हें नुक़्सान न पहुँचा सकेगा। तुम सब को अल्लाह की तरफ़ लौटना है, फिर वह तुम्हें जतला देगा जो तुम करते थे। (105)

ऐ ईमान वालो! तुम्हारे दरमियान गवाही (का तरीक़ा यह है) कि जब तुम में से किसी को मौत आए वसीयत के वक़्त तुम में से दो मोतबर शख़्स हों या तुम्हारे सिवा दो और, अगर तुम ज़मीन में सफ़र कर रहे हो, फिर तुम्हें मौत की मुसीबत पहुँचे, उन दोनो को रोक लो नमाज़ के बाद, अगर तुम्हें शक हो तो दोनों अल्लाह की क़सम खाएं कि हम उस के इवज़ कोई क़ीमत मोल नहीं लेते ख़ाह रिशतेदार हों, और हम अल्लाह की गवाही नहीं छुपाते (वरना) हम बेशक गुनाहगारों में से हैं। (106)

फिर अगर उस की ख़बर हो जाए कि वह दोनों गुनाह के सज़ावार हुए हैं तो उन की जगह उन में से दो और खड़े हों जिन का हक़ मारना चाहा जो सब से ज़ियादा (मय्यत के) क़रीब हों, फिर वह अल्लाह की क़सम खाएं कि हमारी गवाही उन दोनों की गवाही से ज़ियादा सही है और हम ने ज़ियादती नहीं की (वरना) उस सूरत में हम बेशक जालिमों में से होंगे। (107)

यह क़रीब तर है कि वह गवाही उस के सही तरीक़े पर अदा करें या वह डरें कि (हमारी) क़सम उन की क़सम के बाद रद् कर दी जाएगी, और अल्लाह से डरो और सुनो और अल्लाह नहीं हिदायत देता नाफ़रमान क़ौम को। (108)

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ قَالُوْا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह कहते हैं | रसूल | और तरफ़ | अल्लाह ने नाज़िल किया | जो | तरफ़ | आओ तुम | उन से | कहा जाए | और जब |

حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जानते | न | उन के बाप दादा | क्या ख़ाह हों | अपने बाप दादा | उस पर | जो हम ने पाया | हमारे लिए काफ़ी |

شَيْئًا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿١٠٤﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी जानें | तुम पर | ईमान वाले | ऐ | 104 | और न हिदायत याफ़्ता हों | कुछ |

لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर वह तुम्हें जतला देगा | सब | तुम्हें लौटना है | अल्लाह की तरफ़ | हिदायत पर हो | जब | गुमराह हुआ | जो | न नुक़्सान पहुँचाएगा |

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٥﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ اِذَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब | तुम्हारे दरमियान | गवाही | ईमान वाले | ऐ | 105 | तुम करते थे | जो |

حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम से | इन्साफ़ वाले (मोतबर) | दो | वसीयत | वक़्त | मौत | तुम में से किसी को | आए |

اَوْ اٰخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ اِنْ اَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ فَاَصَابَتْكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर तुम्हें पहुँचे | ज़मीन में | सफ़र कर रहे हो | तुम | अगर | तुम्हारे सिवा | से | और दो | या |

مُّصِيْبَةُ الْمَوْتِ ؕ تَحْبِسُوْنَهُمَا مِنْۢ بَعْدِ الصَّلٰوةِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की | दोनों क़सम खाएं | नमाज़ | बाद | उन दोनो को रोक लो | मौत | मुसीबत |

اِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِىْ بِهٖ ثَمَنًا وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۙ وَلَا نَكْتُمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम नही छुपाते | रिशतेदार | ख़ाह हों | काई कीमत | इस के इवज़ | हम मोल नहीं लेते | तुम्हें शक हो | अगर |

شَهَادَةَ ۙ اللّٰهِ اِنَّآ اِذًا لَّمِنَ الْاٰثِمِيْنَ ﴿١٠٦﴾ فَاِنْ عُثِرَ عَلٰٓى اَنَّهُمَا اسْتَحَقَّآ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दोनों सज़ावार हुए | कि वह दोनों | उस पर | ख़बर हो जाए | फिर अगर | 106 | गुनाहगारों | से | उस वक़्त | बेशक हम | अल्लाह | गवाही |

اِثْمًا فَاٰخَرٰنِ يَقُوْمٰنِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِيْنَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | मुसतहिक़ (जिन का हक़ मारना चाहा) | वह लोग | से | उन की जगह | खड़े हों | तो दो और | गुनाह |

الْاَوْلَيٰنِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ لَشَهَادَتُنَآ اَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन दोनों की गवाही | से | ज़ियादा सही | कि हमारी गवाही | अल्लाह की | फिर वह क़सम खाएं | सब से ज़ियादा क़रीब |

وَمَا اعْتَدَيْنَآ ۖ اِنَّآ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٧﴾ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | ज़ियादा क़रीब | यह | 107 | ज़ालिम (जमा) | अलबत्ता-से | उस सूरत में | बेशक हम | हम ने ज़ियादती की | और नही |

يَّاْتُوْا بِالشَّهَادَةِ عَلٰى وَجْهِهَآ اَوْ يَخَافُوْٓا اَنْ تُرَدَّ اَيْمَانٌۢ بَعْدَ اَيْمَانِهِمْ ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की क़सम | बाद | क़सम | कि रद् कर दीजाएगी | वह डरें | या | उस का रुख़ (सही तरीक़ा) | पर | वह लाएं (अदा करें) गवाही |

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاسْمَعُوْا ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿١٠٨﴾ ع ١٣ ٨ ٢

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 108 | नाफ़रमान (जमा) | क़ौम | नहीं हिदायत देता | और अल्लाह | और सुनो | और डरो अल्लाह से |

يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اُجِبْتُمْ ۗ قَالُوْا لَا عِلْمَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नही खबर | वह कहेंगे | तुम्हें जवाब मिला | क्या | फिर कहेगा | रसूल (जमा) | जमा करेगा अल्लाह | दिन |

لَنَا ۗ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿١٠٩﴾ اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इब्ने मरयम (अ) | ऐ ईसा (अ) | अल्लाह ने कहा | जब | 109 | छुपी बातें | जानने वाला | तू | बेशक तू | हमें |

وقف لازم

اذْكُرْ نِعْمَتِيْ عَلَيْكَ وَعَلٰى وَالِدَتِكَ ۘ اِذْ اَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रूहे पाक से | जब मैं ने तेरी मदद की | तेरी (अपनी) वालिदा | और पर | तुझ (आप) पर | मेरी नेमत | याद कर |

تُكَلِّمُ النَّاسَ فِى الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۚ وَاِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| किताब | तुझे सिखाई | और जब | और बड़ी उमर | पन्घोड़े में | लोग | तू बातें करता था |

وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۚ وَاِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّيْنِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मिट्टी | से | तू बनाता था | और जब | और इन्जील | और तौरात | और हिक्मत |

كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ بِاِذْنِيْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ طَيْرًا ۢ بِاِذْنِيْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मेरे हुक्म से | उड़ने वाला | तो वह हो जाता | फिर फूंक मारता था उस में | मेरे हुक्म से | परिन्दे की सूरत |

وَتُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى بِاِذْنِيْ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरे हुक्म से | मुर्दा | निकाल खड़ा करता | और जब | मेरे हुक्म से | और कोढ़ी | मादरज़ाद अन्धा | और शिफ़ा देता |

وَاِذْ كَفَفْتُ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ اِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| निशानियों के साथ | जब तू उन के पास आया | तुझ से | बनी इस्राईल | मैं ने रोका | और जब |

فَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١١٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 110 | खुला | जादू | मगर (सिर्फ़) | यह | नहीं | उन से | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | तो कहा |

وَاِذْ اَوْحَيْتُ اِلَى الْحَوَارِيّٖنَ اَنْ اٰمِنُوْا بِيْ وَبِرَسُوْلِيْ ۚ قَالُوْٓا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने कहा | और मेरे रसूल (अ) पर | ईमान लाओ मुझ पर | कि | हवारी (जमा) | तरफ़ | मैं ने दिल में डाल दिया | और जब |

اٰمَنَّا وَاشْهَدْ بِاَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ ﴿١١١﴾ اِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हवारी (जमा) | जब कहा | 111 | फ़रमांबरदार | कि बेशक हम | और आप गवाह रहें | हम ईमान लाए |

يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبُّكَ اَنْ يُّنَزِّلَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उतारे | कि वह | तुम्हारा रब | कर सकता है | क्या | इब्ने मरयम (अ) | ऐ ईसा (अ) |

عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ ۗ قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम हो | अगर | अल्लाह से डरो | उस ने कहा | आस्मान | से | ख़्वान | हम पर |

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١١٢﴾ قَالُوْا نُرِيْدُ اَنْ نَّاْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारे दिल | और मुत्मईन हों | उस से | हम खाएं | कि | हम चाहते हैं | उन्हों ने कहा | 112 | मोमिन (जमा) |

الربع

وَنَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُوْنَ عَلَيْهَا مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿١١٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 113 | गवाह (जमा) | से | उस पर | और हम रहें | तुम ने हम से सच कहा | कि | और हम जान लें |

अल्लाह जिस दिन रसूलों को जमा करेगा, फिर कहेगा तुम्हें क्या जवाब मिला था? वह कहेंगे हमें ख़बर नहीं, बेशक तू छुपी बातों को जानने वाला है। (109)

जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ)! मेरी नेमत अपने ऊपर और अपनी वालिदा पर याद करो जब मैं ने रूहे पाक (जिब्राईल) से तुम्हारी मदद की, तुम लोगों से पन्घोड़े में और बुढ़ापे में बातें करते थे, और जब मैं ने तुम्हें सिखाई किताब और हिक्मत और तौरात और इन्जील, और जब तुम मेरे हुक्म से मिट्टी से परिन्दे की सूरत बनाते थे, फिर उस में फूंक मारते थे तो वह हो जाता मेरे हुक्म से उड़ने वाला, और तुम मादरज़ाद अन्धे और कोढ़ी को मेरे हुक्म से शिफ़ा देते थे, और जब तुम मुर्दे को मेरे हुक्म से निकाल खड़ा करते थे, और जब मैं ने बनी इस्राईल को तुम से रोका जब तुम खुली निशानियों के साथ उन के पास आए तो काफ़िरों ने उन में से कहा यह सिर्फ़ खुला जादू है। (110)

और जब मैं ने हवारियों के दिल में डाल दिया कि मुझ पर और मेरे रसूल (अ) पर ईमान लाओ, उन्हों ने कहा हम ईमान लाए और आप गवाह रहें बेशक हम फ़रमांबरदार हैं। (111)

जब हवारियों ने कहा ऐ ईसा इब्ने मरयम (अ)! क्या तेरा रब यह कर सकता है कि हम पर आस्मान से ख़्वान उतारे? उस ने कहा अल्लाह से डरो अगर तुम मोमिन हो। (112)

उन्हों ने कहा हम चाहते हैं कि उस में से खाएं और हमारे दिल मुत्मईन हों और हम जान लें कि तुम ने हम से सच कहा और हम उस पर गवाह रहें। (113)

ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) ने कहा ऐ अल्लाह! हमारे रब! हम पर आस्मान से ख़ान उतार कि हमारे पहलों और पिछलों के लिए ईद हो और तेरी तरफ़ से निशानी हो, और हमें रोज़ी दे, तू सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है। **(114)**

अल्लाह ने कहा बेशक मैं वह तुम पर उतारूंगा। फिर उस के बाद तुम में से जो नाशुक्री करेगा तो मैं उस को ऐसा अज़ाब दूंगा जो न अज़ाब दूंगा जहान वालों में से किसी को। **(115)**

और जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ)! क्या तू ने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी माँ को अल्लाह के सिवा दो माबूद ठहरा लो, उस ने कहा तू पाक है, मेरे लिए (रवा) नहीं कि मैं (ऐसी बात) कहूँ जिस का मुझे हक़ नहीं। अगर मैं ने यह कहा होता तो तुझे ज़रूर उस का इल्म होता, तू जानता है जो मेरे दिल में है और मैं नहीं जानता जो तेरे दिल में है। बेशक तू छुपी बातों को जानने वाला है। **(116)**

मैं ने उन्हें नहीं कहा मगर सिर्फ़ वह जिस का तू ने मुझे हुक्म दिया कि तुम अल्लाह की इबादत करो जो मेरा और तुम्हारा रब है, और मैं जब तक उन में रहा उन पर ख़बरदार (बाख़बर) था। फिर जब तू ने मुझे उठा लिया तो तू उन पर तू निगरान था और तू हर शै से बाख़बर है। **(117)**

अगर तू उन्हें अज़ाब दे तो बेशक वह तेरे बन्दे हैं, और अगर तू बख़्श दे उन को तो बेशक तू ग़ालिब हिक्मत वाला है। **(118)**

अल्लाह ने फ़रमाया यह दिन है कि सच्चों को नफ़ा देगा उन का सच, उन के लिए बाग़ात हैं जिन के नीचे नेहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, अल्लाह राज़ी हुआ उन से और वह राज़ी हुए उस से, यह बड़ी कामयाबी है। **(119)**

अल्लाह के लिए है बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की और जो कुछ उन के दरमियान है, और वह हर शै पर क़ादिर है। **(120)**

قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मान | से | ख़ान | हम पर | उतार | हमारे रब | ऐ अल्लाह | इब्ने मरयम (अ) | ईसा (अ) | कहा |

تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ ۚ وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तू | और हमें रोज़ी दे | तुझ से | और निशानी | और हमारे पिछले | हमारे पहलों के लिए | ईद | हमारे लिए | हो |

خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿١١٤﴾ قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بَعْدُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बाद | नाशुक्री करेगा | फिर जो | तुम पर | वह उतारूंगा | बेशक मैं | कहा अल्लाह ने | 114 | रोज़ी देने वाला | बेहतर |

مِنْكُمْ فَاِنِّيْٓ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّآ اُعَذِّبُهٗٓ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١١٥﴾ ع ١٥ ٥

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 115 | जहान वाले | से | किसी को | अज़ाब दूंगा | न | उसे अज़ाब दूंगा ऐसा अज़ाब | तो मैं | तुम से |

وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुझे ठहरा लो | लोगों से | तू ने कहा | क्या तू | इब्ने मरयम (अ) | ऐ ईसा (अ) | अल्लाह ने कहा | और जब |

وَاُمِّيَ اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اَقُوْلَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मैं कहूँ | कि | मेरे लिए | है | नहीं | तू पाक है | उस ने कहा | अल्लाह के सिवा | से | दो माबूद | और मेरी माँ |

مَا لَيْسَ لِيْ ۗ بِحَقٍّ ۗ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ ۗ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وقف النبي

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरा दिल | में | जो | तू जानता है | ता तुझे ज़रूर उस का इल्म होता | मैं ने यह कहा होता | अगर | हक़ | मेरे लिए | नहीं |

وَلَآ اَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِكَ ۗ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿١١٦﴾ مَا قُلْتُ لَهُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हें | मैं ने नहीं कहा | 116 | छुपी बातें | जानने वाला | तू | बेशक तू | तेरे दिल में | जो | और मैं नहीं जानता |

اِلَّا مَآ اَمَرْتَنِيْ بِهٖٓ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | और मैं था | और तुम्हारा रब | मेरा रब | तुम अल्लाह की इबादत करो | कि | उस का | जो तू ने मुझे हुक्म दिया | मगर |

شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ۗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | निगरान | तू | तो था | तू ने मुझे उठा लिया | फिर जब | उन में | जब तक मैं रहा | ख़बरदार |

وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿١١٧﴾ اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَاِنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अगर | तेरे बन्दे | तो बेशक वह | तू उन्हें अज़ाब दे | अगर | 117 | बाख़बर | हर शै | पर से | और तू |

تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١١٨﴾ قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नफ़ा देगा | दिन | यह | अल्लाह ने फ़रमाया | 118 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | तू | तो बेशक तू | उन को | तू बख़्शदे |

الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ ۗ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमेशा रहेंगे | नहरें | उन के नीचे | बहती हैं | बाग़ात | उन के लिए | उन का सच | सच्चे |

فِيْهَآ اَبَدًا ۗ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۗ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١١٩﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 119 | बड़ी | कामयाबी | यह | उस से | और वह राज़ी हुए | उन से | अल्लाह राज़ी हुआ | हमेशा | उन में |

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا فِيْهِنَّ ۗ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٢٠﴾ ع ١٦ ٦

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 120 | क़ुदरत वाला क़ादिर | हर शै | पर | और वह | उन के दरमियान | और जो | और ज़मीन | बादशाहत आस्मानों की | अल्लाह के लिए |

آيَاتُهَا ١٦٥ ❀ (٦) سُوْرَةُ الْاَنْعَامِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢٠

आयात 165 — (6) सूरतुल अनआम मवेशी — रुकूआत 20

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए | वह जिस ने | पैदा किया | आस्मान (जमा) | और ज़मीन | और बनाया | अन्धेरों

وَالنُّوْرَ ۬ ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِىْ

और रौशनी | फिर | जिन्हों ने | कुफ़्र किया (काफ़िर) | अपने रब के साथ | बराबर करते हैं | 1 | वह | जिस ने

خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ ثُمَّ قَضٰٓى اَجَلًا ؕ وَاَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ

तुम्हें पैदा किया | से | मिट्टी | फिर | मुक़र्रर किया | एक वक़्त | और एक वक़्त | मुक़र्रर | उस के हाँ | फिर | तुम

تَمْتَرُوْنَ ﴿٢﴾ وَهُوَ اللّٰهُ فِى السَّمٰوٰتِ وَفِى الْاَرْضِ ؕ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ

शक करते हो | 2 | और वह | अल्लाह | में | आस्मान (जमा) | और में | जमीन | वह जानता है | तुम्हारा बातिन

وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ﴿٣﴾ وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ

और तुम्हारा ज़ाहिर | और जानता है | जो तुम कमाते हो | 3 | और उन के पास नहीं आई | से- कोई | निशानी | से | निशानियाँ

رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٤﴾ فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ؕ

उन का रब | मगर | होते हैं वह | उस से | मुँह फेरने वाले | 4 | पस बेशक उन्हों ने झुटलाया | हक़ को | जब | उन के पास आया

فَسَوْفَ يَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٥﴾ اَلَمْ يَرَوْا كَمْ

सो जल्द | उन के पास आजाएगी | ख़बर (हक़ीक़त) | जो वह थे | उस का | मज़ाक़ उड़ाते | 5 | क्या उन्हों ने नही देखा | कितनी

اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ

हम ने हलाक कर दीं | से | उन से क़ब्ल | से | उम्मतें | हम ने उन्हें जमा दिया था | ज़मीन (मुल्क) में | जो | नही जमाया | तुम्हें

وَاَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا ۪ وَّجَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِىْ مِنْ

और हम ने भेजा | बादल | उन पर | मूसलाधार | और हम ने बनाई | नहरें | बहती हैं | से

تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٦﴾

उन के नीचे | फिर हम ने उन्हें हलाक किया | उन के गुनाहों के सबब | और हम ने खड़ी की | से | उन के बाद | उम्मतें | दूसरी | 6

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتٰبًا فِىْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ بِاَيْدِيْهِمْ لَقَالَ

और अगर हम उतारें | तुम पर | कुछ लिखा हुआ | में | काग़ज़ | फिर उसे छू लें | अपने हाथों से | अलबत्ता कहेंगे

الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧﴾ وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ

जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | नहीं यह | मगर | जादू | खुला | 7 | और कहते हैं | क्यों नही उतारा गया

عَلَيْهِ مَلَكٌ ؕ وَلَوْ اَنْزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِىَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُوْنَ ﴿٨﴾

उस पर | फ़रिश्ता | और अगर | हम उतारते | फ़रिश्ता | तो तमाम हो गया होता | काम | फिर | उन्हें मोहलत न दी जाती | 8

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया और अन्धेरों और रौशनी को बनाया, फिर काफ़िर अपने रब के साथ बराबर करते हैं (औरों को बराबर ठहराते हैं)। (1)

वह जिस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर ज़िन्दगी की मुद्दत मुक़र्रर कि, और उस के हाँ एक वक़्त (क़ियामत का) मुक़र्रर है, फिर तुम शक करते हो। (2)

और वही है अल्लाह आस्मानों में और ज़मीन में, वह तुम्हारा बातिन और तुम्हारा ज़ाहिर जानता है और जानता है जो तुम कमाते हो (करते हो)। (3)

और उन के पास नहीं आई उन के रब की निशानियों में से कोई निशानी मगर वह उस से मुँह फेर लेते हैं (4)

पस बेशक उन्हों ने हक़ को झुटलाया जब उन के पास आया। सो जल्द ही उस की हक़ीक़त उन के सामने आजाएगी जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (5)

क्या उन्हों ने नहीं देखा? हम ने उन से क़ब्ल कितनी उम्मतें हलाक कीं? हम ने उन्हें मुल्क में जमाया था (इक़्तिदार दिया था) जितना तुम्हें नहीं जमाया (इक़्तिदार दिया) और हम ने उन पर मूसलाधार (बरसता) बादल भेजा, और हम ने नहरें बनाईं जो उन के नीचे बहती थें, फिर हम ने उन के गुनाहों के सबब उन्हें हलाक किया और उन के बाद हम ने दूसरी उम्मतें खड़ी कीं (बदल दीं)। (6)

और अगर हम उतारें तुम पर काग़ज़ में लिखा हुआ, फिर वह उसे अपने हाथों से छू (भी) लें। अलबत्ता काफ़िर कहेंगे यह नहीं है मगर (सिर्फ़) खुला जादू। (7)

और कहते हैं उस पर फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा गया? और अगर हम फ़रिश्ता उतारते तो काम तमाम हो गया होता, फिर उन्हें मोहलत न दी जाती। (8)

और अगर हम उसे फ़रिश्ता बनाते तो हम उसे आदमी (ही) बनाते, और हम उन पर शुबा डालते (जिस में वह अब) पड़ रहे हैं। (9)

और अल्बत्ता आप (स) से पहले रसूलों के साथ हँसी की गई, तो घेर लिया उन में से हँसी करने वालों को (उस चीज़ ने) जिस पर वह हँसी करते थे। (10)

आप (स) कह दें मुल्क में सैर करो (चल फिर कर देखो) फिर देखो झुटलाने वालों का अन्जाम कैसा हुआ? (11)

आप (स) पूछें किस के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है? कह दें (सब) अल्लाह के लिए है, अल्लाह ने अपने ऊपर रहमत लिख ली है (अपने ज़िम्मे ले ली है), क़ियामत के दिन तुम्हें ज़रूर जमा करेगा जिस में कोई शक नहीं, जिन लोगों ने अपने आप को ख़सारे में डाला तो वही ईमान नहीं लाएंगे। (12)

और उस के लिए है जो बस्ता है रात में और दिन में, और वह सुनने वाला जानने वाला है। (13)

आप (स) कह दें क्या मैं अल्लाह के सिवाए (किसी और को) कारसाज़ बनाऊँ? (जो) आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला है, वह (सब को) खिलाता है और वह ख़ुद नहीं खाता। आप (स) कह दें बेशक मुझे हुक्म दिया गया है कि सब से पहला हो जाऊँ जिस ने हुक्म माना, और, तुम हरगिज़ शिर्क करने वालों से न होना। (14)

आप (स) कह दें बेशक अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूँ तो बड़े दिन के अ़ज़ाब से डरता हूँ। (15)

उस दिन जिस से (अ़ज़ाब) फेर दिया जाए, तहक़ीक़ उस पर अल्लाह ने रहम किया और यह खुली कामयाबी है। (16)

और अगर अल्लाह तुम्हें सख़्ती पहुँचाए तो कोई दूर करने वाला नहीं उस को उस के सिवा, और अगर वह कोई भलाई पहुँचाए तुम्हें तो वह हर शै पर क़ादिर है। (17)

और वह अपने बन्दों पर ग़ालिब है, और वह हिक्मत वाला (सब की) ख़बर रखने वाला है। (18)

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | और हम शुबा डालते | आदमी | तो हम उसे बनाते | फ़रिश्ता | हम उसे बनाते | और अगर |

مَّا يَلْبِسُوْنَ ﴿٩﴾ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो घेर लिया | आप (स) से पहले | से | रसूलों के साथ | हँसी की गई | और अल्बत्ता | 9 | जो वह शुबा करते हैं |

بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١٠﴾ قُلْ ع

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप कह दें | 10 | हँसी करते | उस पर | वह थे | जो-जिस | उन से | हँसी की | उन लोगों को जिन्हों ने |

سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | झुटलाने वाले | अन्जाम | हुआ | कैसा | देखो | फिर | ज़मीन (मुल्क) में | सैर करो |

قُلْ لِّمَنْ مَّا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلْ لِّلّٰهِ ؕ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने (नफ़्स) आप पर | लिखी है | कह दें अल्लाह के लिए | और ज़मीन | आस्मानों में | जो | किस के लिए | आप पूछें |

الرَّحْمَةَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اَلَّذِيْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जो लोग | उस में | नहीं शक | क़ियामत का दिन | तुम्हें ज़रूर जमा करेगा | रहमत |

خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢﴾ وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِى الَّيْلِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रात | में | बस्ता है | जो | और उस के लिए | 12 | ईमान नहीं लाएंगे | तो वही | अपने आप | ख़सारे में डाला |

وَالنَّهَارِ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٣﴾ قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कारसाज़ | मैं बनाऊँ | अल्लाह | क्या सिवाए | आप (स) कह दें | 13 | जानने वाला | सुनने वाला | और वह | और दिन |

فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ؕ قُلْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आप (स) कह दें | और खाता नहीं | खिलाता है | और वह | और ज़मीन | आस्मान (जमा) | बनाने वाला |

اِنِّىْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | और तू हरगिज़ न हो | हुक्म माना | जो-जिस | सब से पहला | मैं हो जाऊँ | कि | बेशक मुझ को हुक्म दिया गया |

الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٤﴾ قُلْ اِنِّىْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّىْ عَذَابَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ़ज़ाब | अपना रब | मैं नाफ़रमानी करूँ | अगर | मैं डरता हूँ | बेशक मैं | आप (स) कह दें | 14 | शिर्क करने वाले |

يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥﴾ مَنْ يُّصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهٗ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस पर रहम किया | तहक़ीक़ | उस दिन | उस से | फेर दिया जाए | जो-जिस | 15 | बड़ा दिन |

وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दूर करने वाला | तो नहीं | कोई सख़्ती | तुम्हें पहुँचाए अल्लाह | और अगर | 16 | कामयाबी खुली | और यह |

لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ؕ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हर शै | पर | तो वह | कोई भलाई | वह पहुँचाए तुम्हें | और अगर | उस के सिवा | उस का |

قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿١٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | ख़बर रखने वाला | हिक्मत वाला | और वह | अपने बन्दे | ऊपर | ग़ालिब | और वह | 17 | क़ादिर |

قُــلْ اَىُّ شَىْءٍ اَكْـبَرُ شَهَادَةً ۭ قُــلِ اللّٰهُ ۟ شَهِيْدٌۢ بَيْنِىْ وَبَيْنَكُمْ ۟

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम्हारे दरमियान | मेरे दरमियान | गवाह | अल्लाह | आप (स) कह दें | गवाही | सब से बड़ी | चीज़ | कौन सी | आप (स) कहें |

وَاُوْحِــىَ اِلَــىَّ هٰـذَا الْـقُـرْاٰنُ لِاُنْــذِرَكُــمْ بِــهٖ وَمَــنْۢ بَـلَـغَ ۭ اَىِٕــنَّـكُـمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या तुम बेशक | पहुँचे | और जिस | इस से | ताकि मैं तुम्हें डराऊँ | क़ुरआन | यह | मुझ पर | और वहि किया गया |

لَـتَـشْـهَـدُوْنَ اَنَّ مَـعَ اللّٰهِ اٰلِـهَـةً اُخْــرٰى ۭ قُــلْ لَّاۤ اَشْـهَـدُ ۚ قُــلْ اِنَّمَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सिर्फ़ | आप (स) कह दें | मैं गवाही नहीं देना | आप (स) कह दें | दूसरा | कोई माबूद | अल्लाह के साथ | कि | तुम गवाही देते हो |

وقف لازم هُـوَ اِلٰـهٌ وَّاحِــدٌ وَّاِنَّـنِـىْ بَـرِىْۤءٌ مِّـمَّا تُـشْـرِكُـوْنَ ﴿١٩﴾ اَلَّـذِيْـنَ اٰتَـيْنٰهُمُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने दी उन्हें | वह जिन्हें | 19 | तुम शिर्क करते हो | उस से जो | बेज़ार | और बेशक मैं | यकता | माबूद | वह |

وقف لازم الْـكِـتٰبَ يَـعْـرِفُـوْنَـهٗ كَـمَـا يَـعْـرِفُـوْنَ اَبْـنَـآءَهُـمْ ۘ اَلَّـذِيْـنَ خَسِـرُوْۤا اَنْـفُـسَـهُـمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने आप | खसारे में डाला | वह जिन्हों ने | अपने बेटे | वह पहचानते हैं | जैसे | वह उस को पहचानते हैं | किताब |

ع ٢ / ٨ فَـهُـمْ لَا يُـؤْمِـنُـوْنَ ﴿٢٠﴾ وَمَــنْ اَظْـلَـمُ مِـمَّـنِ افْـتَـرٰى عَلَى اللّٰهِ كَـذِبًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| झूट | अल्लाह पर | बुहतान बान्धे | उस से जो | सब से बड़ा ज़ालिम | और कौन | 20 | ईमान नहीं लाते | सो वह |

اَوْ كَـذَّبَ بِـاٰيٰـتِـهٖ ۭ اِنَّــــهٗ لَا يُـفْـلِـحُ الظّٰـلِـمُـوْنَ ﴿٢١﴾ وَيَــوْمَ نَـحْـشُـرُهُـمْ جَـمِـيْـعًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सब | उन को जमा करेंगे | और जिस दिन | 21 | ज़ालिम (जमा) | फ़लाह नहीं पाते | बिला शुबा वह | उस की आयतें | या झुटलाए |

ثُــمَّ نَـقُـوْلُ لِـلَّـذِيْـنَ اَشْـرَكُـوْۤا اَيْــنَ شُـرَكَــآؤُكُـمُ الَّـذِيْـنَ كُـنْـتُـمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम थे | जिन का | तुम्हारे शरीक | कहाँ | शिर्क किया (मुश्रिकों) | उन को जिन्हों ने | हम कहेंगे | फिर |

تَزْعُـمُوْنَ ﴿٢٢﴾ ثُـمَّ لَـمْ تَـكُـنْ فِـتْـنَـتُـهُـمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| न थे हम | हमारा रब | कसम अल्लाह की | वह कहें | कि | सिवाए | उन की शरारत | न होगी न रही | फिर | 22 | दावा करते |

مُـشْـرِكِـيْـنَ ﴿٢٣﴾ اُنْـظُـرْ كَـيْـفَ كَـذَبُـوْا عَـلٰۤى اَنْـفُـسِـهِـمْ وَضَــلَّ عَـنْـهُـمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन से | और खोई गई | अपनी जानों | पर | उन्हों ने झूट बान्धा | कैसे | देखो | 23 | शिर्क करने वाले |

مَّـا كَـانُـوْا يَـفْـتَـرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَمِـنْـهُـمْ مَّـنْ يَّـسْـتَـمِـعُ اِلَـيْـكَ ۚ وَجَـعَـلْـنَـا عَلٰى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | और हम ने डाल दिया | आप (स) की तरफ़ | कान लगाता था | जो | और उन से | 24 | वह बातें बनाते थे | जो |

قُـلُـوْبِـهِـمْ اَكِـنَّـةً اَنْ يَّـفْـقَـهُـوْهُ وَفِـىْۤ اٰذَانِـهِـمْ وَقْــرًا ۭ وَاِنْ يَّــرَوْا كُـلَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तमाम | वह देखें | और अगर | बोझ | और उन के कानों में | वह (न) समझें उसे | कि | पर्दे | उन के दिल |

اٰيَــةٍ لَّا يُـؤْمِـنُـوْا بِـهَا ۭ حَـتّٰۤى اِذَا جَـآءُوْكَ يُـجَادِلُـوْنَـكَ يَـقُـوْلُ الَّـذِيْـنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिन लोगों ने | कहते हैं | आप (स) से झगड़ते हैं | आप (स) के पास आते हैं | जब | यहां तक कि | न ईमान लाएंगे उस पर | निशानी |

كَـفَـرُوْۤا اِنْ هٰـذَاۤ اِلَّاۤ اَسَـاطِـيْـرُ الْاَوَّلِـيْـنَ ﴿٢٥﴾ وَهُـمْ يَـنْـهَـوْنَ عَـنْـهُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से | रोकते हैं | और वह | 25 | पहले लोग (जमा) | कहानियां | मगर (सिर्फ़) | यह | नहीं | उन्हों ने कुफ़्र किया |

وَيَـنْـــٔـَـوْنَ عَـنْـهُ ۚ وَاِنْ يُّـهْـلِـكُـوْنَ اِلَّاۤ اَنْـفُـسَـهُـمْ وَمَـا يَـشْـعُـرُوْنَ ﴿٢٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 26 | और वह शऊर नहीं रखते | अपने आप | मगर (सिर्फ़) | हलाक करते हैं | और नहीं | उस से | और भागते हैं |

आप (स) कहें सब से बड़ी गवाही किस की? आप (स) कह दें मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह गवाह है, और मुझ पर यह क़ुरआन वहि किया गया है ताकि मैं तुम्हें इस से डराऊँ और जिस तक यह पहुँचे, क्या तुम (वाक़ई) गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ कोई और भी माबूद हैं! आप (स) कह दें मैं (ऐसी) गवाही नहीं देता, आप (स) कह दें सिर्फ़ वह माबूद यकता है, और मैं उस से बेज़ार हूँ जो तुम शिर्क करते हो। (19)

वह लोग जिन्हें हम ने किताब दी वह उस को पहचानते हैं जैसे वह अपने बेटों को पहचानते हैं। जिन लोगो ने खसारे में डाला अपने आप को सो वह ईमान नहीं लाते। (20)

और उस से बड़ा ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बुहतान बन्धे या झुटलाए उस की आयतों को, बेशक ज़ालिम फ़लाह (कामयाबी) नहीं पाते। (21)

और जिस दिन हम उन सब को जमा करेंगे, फिर हम कहेंगे मुश्रिकों कोः कहां हैं तुम्हारे शरीक जिन का तुम दावा करते थे। (22)

फिर न होगी उन की शरारत (उन का उज़र) इस के सिवा कि वह कहेंगेः हमारे रब अल्लाह की कसम हम मुश्रिक न थे। (23)

देखो! उन्हों ने कैसे झूट बान्धा अपनी जानों पर और वह जो बातें बनाते थे उन से खोई गईं। (24)

और उन से (बाज़) आप की तरफ़ कान लगाए रखते हैं और हम ने उन के दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वह उसे न समझें और उन के कानों में बोझ है, और अगर वह देखें तमाम निशानियां (फिर भी) उस पर ईमान न लाएंगे यहां तक कि जब आप (स) के पास आते हैं तो आप (स) से झगड़ते हैं, कहते हैं वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर): यह सिर्फ़ पहलों की कहानियां हैं। (25)

और वह उस से (दूसरों को) रोकते हैं और (खुद भी) उस से भागते हैं, और वह सिर्फ़ अपने आप को हलाक करते हैं और शऊर नहीं रखते। (26)

और कभी तुम देखो जब वह आग (दोज़ख़) पर खड़े किए जाएंगे तो कहेंगे ऐ काश! हम वापस भेजे जाएं और अपने रब की आयतों को न झुटलाएं और हो जाएं ईमान वालों में से। **(27)**

बल्कि वह उस से क़ब्ल जो छुपाते थे उन पर ज़ाहिर हो गया और वह अगर वापस भेजे जाएं तो फिर (वही) करने लगें जिस से वह रोके गए और बेशक वह झूटे हैं। **(28)**

और कहते हैं हमारी सिर्फ़ यही दुनिया की ज़िन्दगी है और हम उठाए जाने वाले नहीं (हमें फिर ज़िन्दा नहीं होना)। **(29)**

और कभी तुम देखो जब वह अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे। वह फ़रमाएगा क्या यह नहीं सच, वह कहेंगे हां हमारे रब की क़सम (क्यों नहीं), वह फ़रमाएगा पस अ़ज़ाब चखो इस लिए कि तुम कुफ़्र करते थे। **(30)**

तहक़ीक़ वह लोग घाटे में पड़े जिन्हों ने अल्लाह से मिलने को झुटलाया यहां तक कि जब अचानक उन पर क़ियामत आ पहुँची कहने लगे हाए हम पर अफ़सोस! जो हम ने उस में कोताही की, और वह अपने बोझ अपनी पीठों पर उठाए होंगे। आगाह रहो बुरा है जो वह उठाएंगे। **(31)**

और दुनिया की ज़िन्दगी सिर्फ़ खेल और जी का बेहलावा है, और आख़िरत का घर उन लोगों के लिए बेहतर है जो परहेज़गारी करते हैं, सो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते। **(32)**

बेशक हम जानते हैं आप (स) को वह (बात) ज़रूर रंजीदा करती है जो वह कहते हैं, सो वह यक़ीनन आप (स) को नहीं झुटलाते बल्कि ज़ालिम लोग अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं। **(33)**

और अलबत्ता रसूल झुटलाए गए आप (स) से पहले, पस उन्हों ने सब्र किया उस पर जो वह झुटलाए गए और सताए गए यहां तक कि उन पर हमारी मदद आगई, और (कोई) बदलने वाला नहीं अल्लाह की बातों को, और अलबत्ता आप (स) के पास रसूलों की कुछ ख़बरें पहुँच चुकी हैं। **(34)**

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न झुटलाएं हम | वापस भेजे जाएं | ऐ काश हम | तो कहेंगे | आग | पर | जब खड़े किए जाएंगे | तुम देखो | और अगर (कभी) |

بِاٰيٰتِ رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧﴾ بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | ज़ाहिर हो गया उन पर | बल्कि | 27 | ईमान वाले | से | और हो जाएं हम | अपना रब | आयतों को |

كَانُوْا يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَاِنَّهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बेशक वह | उस से | वही रोके गए | तो फिर करने लगें | वापस भेजे जाएं | और अगर | उस से पहले | वह छुपाते थे |

لَكٰذِبُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَقَالُوْٓا اِنْ هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम | और नहीं | दुनिया | हमारी ज़िन्दगी | मगर (सिर्फ़) | है | नहीं | और कहते हैं | 28 | झूटे |

بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ قَالَ اَلَيْسَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या नहीं | वह फ़रमाएगा | अपना रब | पर (सामने) | खड़े किए जाएंगे | तुम देखो | और अगर (कभी) | 29 | उठाए जाने वाले |

هٰذَا بِالْحَقِّ ۚ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस लिए कि | अ़ज़ाब | पस चखो | वह फ़रमाएगा | क़सम हमारे रब की | हां | वह कहेंगे | सच | यह |

كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٠﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ ۚ حَتّٰٓى　ع ٣/٩

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| यहा तक कि | अल्लाह से मिलना | वह लोग जिन्हों ने झुटलाया | घाटे में पड़े | तहक़ीक़ | 30 | तुम कुफ़्र करते थे |

اِذَا جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوْا يٰحَسْرَتَنَا عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا ۙ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस में | जा हम ने कोताही की | पर | हाए हम पर अफ़सोस | वह कहने लगे | अचानक | क़ियामत | आ पहुँची उन पर | जब |

وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ عَلٰى ظُهُوْرِهِمْ ۚ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿٣١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 31 | जो वह उठाएंगे | बुरा | आगाह रहो | अपनी पीठ (जमा) | पर | अपने बोझ | उठाए होंगे | और वह |

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ۚ وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | बेहतर | और आख़िरत का घर | और जी का बेहलावा | खेल | मगर (सिर्फ़) | दुनिया | ज़िन्दगी | और नहीं |

يَتَّقُوْنَ ۚ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٣٢﴾ قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ لَيَحْزُنُكَ الَّذِىْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो वह | आप को ज़रूर रंजीदा करती है | कि वह | बेशक हम जानते हैं | 32 | सो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते | परहेज़गारी करते हैं |

يَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की आयतों का | ज़ालिम लोग | और लेकिन (बल्कि) | नहीं झुटलाते आप (स) को | सो वह यक़ीनन | कहते हैं |

يَجْحَدُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | पस सब्र किया उन्हों ने | आप (स) से पहले | रसूल (जमा) | और अलबत्ता झुटलाए गए | 33 | इन्कार करते हैं |

مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰٓى اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं बदलने वाला | हमारी मदद | उन पर आगई | यहां तक कि | और सताए गए | जो वह झुटलाए गए |

لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ وَلَقَدْ جَآءَكَ مِنْ نَّبَاِى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 34 | रसूल (जमा) | ख़बर | से (कुछ) | आप के पास पहुँची | और अलबत्ता | अल्लाह की बातों को |

وَاِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ اِعْرَاضُهُمْ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِيَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ढूंड लो | कि | तुम से हो सके | तो अगर | उन का मुँह फेरना | आप (स) पर | गरां | है | और अगर |

نَفَقًا فِي الْاَرْضِ اَوْ سُلَّمًا فِي السَّمَآءِ فَتَاْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चाहता अल्लाह | और अगर | कोई निशानी | फिर ले आओ उन के पास | आस्मान में | कोई सीढ़ी | या | ज़मीन में | कोई सुरंग |

النصف

لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٣٥﴾ اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मानते हैं | सिर्फ़ वह | 35 | बे ख़बर (जमा) | से | सो आप (स) न हों | हिदायत पर | ता उन्हें जमा कर देता |

وقف منزل

الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ ؔ وَالْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿٣٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 36 | वह लौटाए जाएंगे | उस की तरफ़ | फिर | उन्हें उठाएगा अल्लाह | और मुर्दे | सुनते हैं | जो लोग |

وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰۤى اَنْ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | पर | क़ादिर | बेशक अल्लाह | आप (स) कह दें | उस का रब | से | कोई निशानी | उस पर | क्यों नही उतारी गई | और वह कहते हैं |

يُّنَزِّلَ اٰيَةً وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन में | चलने वाला | कोई | और नही | 37 | नहीं जानते | उन में अक्सर | और लेकिन | निशानी | उतारे |

وَلَا طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّاۤ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ؕ مَا فَرَّطْنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं छोड़ी हम ने | तुम्हारी तरह | उम्मतें (जमाअतें) | मगर | अपने परों से | उड़ता है | परिन्दा | और न |

فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने झुटलाया | और वह लोग जो कि | 38 | जमा किए जाएंगे | अपना रब | तरफ़ | फिर | चीज़ | कोई | किताब में |

بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّبُكْمٌ فِي الظُّلُمٰتِ ؕ مَنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يُضْلِلْهُ ؕ وَمَنْ يَّشَاْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जिसे चाहे | उसे गुमराह कर दे | अल्लाह चाहे | जो जिस | अन्धेरे | में | और गूंगे | बहरे | हमारी आयात |

يَجْعَلْهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٣٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अज़ाब | तुम पर आए | अगर | भला देखो | आप (स) कह दें | 39 | सीधा | रास्ता | पर | उसे कर दे (चला दे) |

اللّٰهِ اَوْ اَتَتْكُمُ السَّاعَةُ اَغَيْرَ اللّٰهِ تَدْعُوْنَ ۚ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 40 | सच्चे | तुम हो | अगर | तुम पुकारोगे | क्या अल्लाह के सिवा | क़ियामत | या आए तुम पर | अल्लाह |

بَلْ اِيَّاهُ تَدْعُوْنَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُوْنَ اِلَيْهِ اِنْ شَآءَ وَتَنْسَوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम भूल जाते हो | वह चाहे | अगर | उस के लिए | जिसे पुकारते हो | पस खोल देता है (दूर करदेता है) | तुम पुकारते हो | उसी को | बल्कि |

ع ٤ ١٠

مَا تُشْرِكُوْنَ ﴿٤١﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰۤى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَخَذْنٰهُمْ بِالْبَاْسَآءِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सख़्ती में | पस हम ने उन्हें पकड़ा | तुम से पहले | उम्मतें | तरफ़ | और तहक़ीक़ हम ने भेजे (रसूल) | 41 | तुम शरीक करते हो | जो जिस |

وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿٤٢﴾ فَلَوْلَاۤ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह गिड़गिड़ाए | हमारा अज़ाब | आया उन पर | जब | फिर क्यों न | 42 | गिड़गिड़ाएं | ताकि वह | और तक्लीफ़ |

وَلٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 43 | वह करते थे | जो | शैतान | उन को | आरास्ता कर दिखाया | दिल उन के | सख़्त हो गए | और लेकिन |

और अगर आप (स) पर गरां है उन का मुँह फेरना तो अगर तुम से हो सके तो जमीन में कोई सुरंग या आस्मान में कोई सीढ़ी ढूंड निकालो फिर तुम उन के पास कोई निशानी ले आओ, और अगर आल्लाह चाहता तो उन्हें हिदायत पर जमा कर देता, सो आप (स) बे ख़बरो में से न हों। (35)

मानते सिर्फ़ वह हैं जो सुनते हैं, और मुर्दों को अल्लाह उठाएगा (दोबारा ज़िन्दा करेगा) फिर वह उस की तरफ़ लौटाए जाएंगे। (36)

और वह कहते हैं कि उस पर उस के रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई? आप (स) कह दें बेशक अल्लाह उस पर क़ादिर है कि वह उतारे निशानी, लेकीन उन में अक्सर नहीं जानते। (37)

और ज़मीन में कोई चलने वाला (हैवान) नहीं और न कोई परिन्दा जो अपने परों से उड़ता है मगर (उन की भी) तुम्हारी तरह जमाअतें हैं, हम ने किताब में कोई चीज नहीं छोड़ी, फिर अपने रब की तरफ़ जमा किए जाएंगे। (38)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया वह बहरे और गूंगे हैं, अन्धेरों में हैं, जिस को अल्लाह चाहे गुमराह कर दे, और जिस को चाहे सीधे रास्ते पर चलादे। (39)

आप (स) कह दें भला देखो अगर तुम पर अल्लाह का अ़ज़ाब आय या तुम पर क़ियामत आजाए, क्या तुम अल्लाह के सिवा (किसी और को) पुकारोगे? अगर तुम सच्चे हो। (40)

बल्कि तुम उसी को पुकारते हो, पस जिस (दुख) के लिए उसे पुकारते हो अगर वह चाहे तो वह उसे दूर कर देता है, और तुम भूल जाते हो जिस को तुम शरीक करते हो। (41)

तहक़ीक़ हम ने तुम से पहली उम्मतों की तरफ़ रसूल भेजे फिर हम ने (उन की नाफ़रमानी के सबब) उन्हें पकड़ा सख़्ती और तक्लीफ़ में ताकि वह गिड़गिड़ाएं। (42)

फिर जब उन पर हमारा अ़ज़ाब आया वह क्यों न गिड़गिड़ाए लेकिन उन के दिल सख़्त हो गए और जो वह करते थे शैतान ने उन को आरास्ता कर दिखाया। (43)

फिर जब वह भूल गए वह नसीहत जो उन्हें की गई तो हम ने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए यहां तक कि जब वह उस से खुश हो गए जो उन्हें दी गई तो हम ने उन को अचानक पकड़ा (धर लिया) पस उस वक़्त वह मायूस हो कर रह गए। (44)

फिर ज़ालिम क़ौम की जड़ काट दी गई, और हर तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो सारे जहानों का रब है। (45)

आप (स) कह दें भला देखो, अगर अल्लाह तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मुह्र लगादे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद है जो तुम को यह चीज़ें ला दे (वापस करदे), देखो हम कैसे बदल बदल कर आयतें बयान करते हैं फिर वह किनारा करते हैं। (46)

आप (स) कह दें देखो तो सही अगर तुम पर अल्लाह का अज़ाब अचानक या खुल्लम खुल्ला आए क्या ज़ालिम लोगों के सिवा (और कोई) हलाक होगा? (47)

और हम रसूल नहीं भेजते मगर खुशख़बरी देने वाले और डर सुनाने वाले। पस जो ईमान लाया और संवर गया तो उन पर कोई खौफ़ नहीं और न वह ग़मग़ीन होंगे। (48)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया उन्हें अज़ाब पहुँचेगा इस लिए कि वह नाफ़रमानी करते थे। (49)

आप (स) कह दें, मैं नहीं कहता तुम से कि मेरे पास अल्लाह के खज़ाने हैं और न मैं ग़ैब को जानता हूँ, और न मैं तुम से कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ, मैं पैरवी नहीं करता मगर (सिर्फ़ उस की) जो मेरी तरफ़ वहि किया जाता है, आप (स) कह दें क्या नाबीना और बीना बराबर हो सकते हैं? सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (50)

और उस से उन लोगों को डरावें जो खौफ़ रखतें हैं कि अपने रब के सामने जमा किए जाएंगे, उस के सिवा उन का न होगा कोई हिमायती और न कोई सिफ़ारिश करने वाला, ताकि वह बचते रहें। (51)

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हर चीज़ | दरवाज़े | उन पर | तो हम ने खोल दिए | उस के साथ | जो नसीहत की गई | वह भूल गए | फिर जब |

حَتّٰٓى اِذَا فَرِحُوْا بِمَآ اُوْتُوْٓا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह | पस उस वक़्त | अचानक | हम ने पकड़ा उन को | उन्हें दी गई | उस से जो | खुश हो गए | जब | यहां तक कि |

مُّبْلِسُوْنَ ﴿٤٤﴾ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ؕ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और हर तारीफ़ अल्लाह के लिए | जिन लोगों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम) | क़ौम | जड़ | फिर काट दी गई | 44 | मायूस रह गए |

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٥﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे कान | ले (छीन ले) अल्लाह | अगर | भला तुम देखो | आप (स) कह दें | 45 | सारे जहानों का रब |

وَاَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِهٖ ؕ اُنْظُرْ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| देखो | यह | तुम को लादे | अल्लाह | सिवाए | माबूद | कौन | तुम्हारे दिल | पर | और मुह्र लगा दे | और तुम्हारी आँखें |

كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ﴿٤٦﴾ قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर | तुम देखो तो सही | आप (स) कह दें | 46 | किनारा करते हैं | वह | फिर | आयतें | बदल बदल कर बयान करते हैं | कैसे |

اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लोग | सिवाए | हलाक होगा | क्या | या खुल्लम खुल्ला | अचानक | अज़ाब अल्लाह का | तुम पर आए |

الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और डर सुनाने वाले | खुशख़बरी देने वाले | मगर | रसूल (जमा) | और नहीं भेजते हम | 47 | ज़ालिम (जमा) |

فَمَنْ اٰمَنَ وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٤٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 48 | ग़मगीन होंगे | और न वह | उन पर | तो कोई खौफ नहीं | और संवर गया | ईमान लाया | पस जो |

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इस लिए कि | अज़ाब | उन्हें पहुँचे गा | हमारी आयतों को | उन्हों ने झुटलाया | और वह लोग जो |

كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٤٩﴾ قُلْ لَّآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मैं जानता | और नहीं | अल्लाह के खज़ाने | मेरे पास | तुम से | नहीं कहता मैं | आप कह दें | 49 | वह करते थे नाफ़रमानी |

الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّيْ مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरी तरफ़ | जो वहि किया जाता है | मगर | मैं नहीं पैरवी करता | फ़रिश्ता | कि मैं | तुम से | और नहीं कहता मैं | ग़ैब |

قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ؕ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٥٠﴾ ع ٥ ٩ ١١

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 50 | सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते | और बीना | नाबीना | बराबर है | क्या | आप कह दें |

وَاَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नही | अपना रब | तरफ़ (सामने) | वह जमा किए जाएंगे | कि | खौफ़ रखतें हैं | वह लोग जो | उस से | और डरावें |

لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٥١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 51 | बचते रहें | ताकि वह | सिफ़ारिश करने वाला | और न | कोई हिमायती | उस के सिवा | कोई | उन के लिए |

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और शाम | सुबह | अपना रब | पुकारते हैं | वह लोग जो | और दूर न करें आप |

يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ؕ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कुछ | उन का हिसाब | से | आप (स) पर | नहीं | उस का रुख़ (रज़ा) | वह चाहते हैं |

وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | तो हो जाओगे | कि तुम उन्हें दूर करोगे | कुछ | उन पर | आप (स) का हिसाब | से | और नहीं |

الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٢﴾ وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या यही है | ताकि वह कहें | बाज़ से | उन के बाज़ | आज़माया हम ने | और इसी तरह | 52 | ज़ालिम (जमा) |

مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ﴿٥٣﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 53 | शुक्र गुज़ार (जमा) | ख़ूब जानने वाला | क्या नहीं अल्लाह | हमारे दरमियान से | उन पर | अल्लाह ने फ़ज़्ल किया |

وَاِذَا جَآءَكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लिख ली | तुम पर | सलाम | तो कह दें | हमारी आयतों पर | ईमान रखते हैं | वह लोग | आप के पास आएं | और जब |

رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًۢا بِجَهَالَةٍ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नादानी से | कोई बुराई | तुम से | करे | जो | कि | रहमत | अपनी ज़ात | पर | तुम्हारा रब |

ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ ۙ فَاَنَّهٗ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٥٤﴾ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और इसी तरह हम तफ़सील से बयान करते हैं | 54 | मेहरबान | बख़्शने वाला | तो बेशक अल्लाह | और नेक हो जाए | उस के बाद | तौबा कर ले | फिर |

ع ٦ ١٢ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٥٥﴾ قُلْ اِنِّيْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक मैं | कह दें | 55 | गुनहगार (जमा) | रास्ता-तरीक़ा | और ताकि ज़ाहिर हो जाए | आयतें |

نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قُلْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कह दें | अल्लाह के सिवा | से | तुम पुकारते हो | वह जिन्हें | कि मैं बन्दगी करूं | मुझे रोका गया है |

لَّآ اَتَّبِعُ اَهْوَآءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ اِذًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿٥٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 56 | हिदायत पाने वाले | से | और मैं नहीं | उस सूरत में | बेशक मैं बहक जाऊंगा | तुम्हारी ख़ाहिशात | मैं पैरवी नहीं करता |

قُلْ اِنِّيْ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَكَذَّبْتُمْ بِهٖ ؕ مَا عِنْدِيْ مَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिस | नहीं मेरे पास | उस को | और तुम झुटलाते हो | अपना रब | से | रौशन दलील | पर | बेशक मैं | आप कह दें |

تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ يَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह | हक़ | बयान करता है | सिर्फ़ अल्लाह के लिए | हुक्म | मगर | उस की | तुम जल्दी कर रहे हो |

خَيْرُ الْفٰصِلِيْنَ ﴿٥٧﴾ قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की | तुम जल्दी करते हो | जो | मेरे पास | होती | अगर | कह दें | 57 | फ़ैसला करने वाला | बेहतर |

لَقُضِيَ الْاَمْرُ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 58 | ज़ालिमों को | ख़ूब जानने वाला | और अल्लाह | और तुम्हारे दरमियान | मेरे दरमियान | फ़ैसला | अलबत्ता हो चुका होता |

और आप (स) उन लोगों को दूर न करें जो अपने रब को पुकारते हैं सुबह और शाम, वह उस की रज़ा चाहते हैं और आप (स) पर (आप (स) के ज़िम्मे) उन के हिसाब में से कुछ नहीं, और न आप (स) के हिसाब में से उन पर कुछ है। अगर उन्हें दूर करोगे तो ज़ालिमों से हो जाओगे। (52)

और इसी तरह हम ने उन में से बाज़ को बाज़ से आज़माया ताकि वह कहें क्या यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने फ़ज़्ल किया हम में से? क्या अल्लाह शुक्र गुज़ारों को ख़ूब जानने वाला नहीं? (53)

और जब आप (स) के पास वह लोग आएं जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं तो आप (स) कह दें तुम पर सलाम है, तुम्हारे रब ने अपने आप पर रहमत लिख ली (लाज़िम कर ली) है कि तुम में जो कोई बुराई करे नादानी से फिर उस के बाद तौबा कर ले और नेक हो जाए तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (54)

और इसी तरह हम तफ़सील से बयान करते हैं आयतें और (यह इस लिए कि) गुनाहगारों का तरीक़ा ज़ाहिर हो जाए। (55)

आप कह दें मुझे (इस बात से) रोका गया है कि मैं उन की बन्दगी करूं जिन्हें तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा, आप कह दें मैं तुम्हारी ख़ाहिशात की पैरवी नहीं करता, उस सूरत में बेशक मैं बहक जाऊंगा और हिदायत पाने वालों में से न हो गा। (56)

आप (स) कह दें बेशक मैं अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हूँ और तुम उस को झुटलाते हो, तुम जिस (अज़ाब) की जल्दी कर रहे हो वो मेरे पास नहीं। हुक्म सिर्फ़ अल्लाह के लिए है, वह हक़ बयान करता है और वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (57)

आप (स) कह दें अगर मेरे पास होती (वह चीज़) जिस की तुम जल्दी करते हो तो अलबत्ता मेरे और तुम्हारे दरमियान फ़ैसला हो चुका होता, और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानने वाला है। (58)

और उस के पास ग़ैब की कुनजियां हैं, उन को उस के सिवा कोई नहीं जानता, वह जानता है जो ख़ुश्की और तरी में है, और नहीं गिरता कोई पत्ता मगर वह उस को जानता है और कोई दाना नहीं ज़मीन के अन्धेरों में, और न कोई तर न कोई ख़ुश्क, मगर सब रौशन किताब (लौहे महफ़ूज़) में है। **(59)** और वही तो है जो रात में तुम्हारी (रूह) क़ब्ज़ कर लेता है और जानता है जो तुम दिन में कमा चुके हो, फिर तुम्हें उस (दिन) में उठाता है ताकि मुद्दत मुक़र्ररा पूरी हो, फिर तुम्हें उसी की तरफ़ लौटना है, फिर तुम्हें जता देगा जो तुम करते थे। **(60)** और वही अपने बन्दों पर ग़ालिब है, और तुम पर निगेहबान भेजता है यहां तक कि जब तुम में से किसी को मौत आ पहुँचे तो हमारे फ़रिश्ते उस की (रूह) क़ब्ज़े में ले लेते हैं और वह कोताही नहीं करते। **(61)** फिर लौटाए जाएंगे अपने सच्चे मौला की तरफ़, सुन रखो! हुक्म उसी का है और वह हिसाब लेने में बहुत तेज़ है। **(62)** आप (स) कह दें तुम्हें ख़ुश्की और दर्या के अन्धेरों से कौन बचाता है? (उस वक़्त) तुम उस को गिड़गिड़ा कर और चुपके से पुकारते हो (और कहते हो) कि अगर हमें इस से बचाले तो हम शुक्र अदा करने वालों में से होंगे। **(63)** आप (स) कह दें अल्लाह तुम्हें उस से बचाता है और हर सख़्ती से, फिर तुम शिर्क करते हो। **(64)** आप (स) कह दें वह क़ादिर है कि तुम पर भेजे अज़ाब तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पाऊँ के नीचे से या तुम्हें फ़िर्क़ा-फ़िर्क़ा कर के भिड़ा दे, और तुम में से एक को चखा दे दूसरे की लड़ाई (का मज़ा), देखो हम किस तरह आयात फेर फेर कर बयान करते हैं ताकि वह समझ जाएं। **(65)** और तुम्हारी क़ौम ने उस को झुटलाया हालांकि वह हक़ है, आप (स) कह दें मैं तुम पर दारोग़ा नहीं। **(66)** हर ख़बर के लिए एक ठिकाना (मुक़र्ररा वक़्त) है और तुम जल्द जान लोगे। **(67)**

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ ؕ وَيَعْلَمُ مَا فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तरी | ख़ुश्की में | जो | और जानता है | वह | सिवा | उन को जानता | नहीं | ग़ैब | कुनजियां | और उस के पास |

وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِىْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न कोई तर | ज़मीन | अन्धेरे | में | और न कोई दाना | वह उस को जानता है | मगर | पत्ता | कोई | गिरता | और नहीं |

وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿۵۹﴾ وَهُوَ الَّذِىْ يَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّيْلِ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रात में | क़ब्ज़ कर लेता है तुम्हारी (रूह) | जो कि | और वह | 59 | रौशन | किताब | में | मगर | ख़ुश्क | और न |

وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيْهِ لِيُقْضٰٓى اَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुक़र्ररा | मुद्दत | ताकि पूरी हो | उस में | तुम्हें उठाता है | फिर | दिन में | जो तुम कमा चुके हो | और जानता है |

ثُمَّ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۶۰﴾ وَهُوَ الْقَاهِرُ ع ١٢

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग़ालिब | और वही | 60 | तुम करते थे | जो | तुम्हें जता देगा | फिर | तुम्हारा लौटना | उस की तरफ़ | फिर |

فَوْقَ عِبَادِهٖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَكُمُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम में से एक-किसी | आ पहुँचे | जब | यहाँ तक के | निगेहबान | तुम पर | और भेजता है | अपने बन्दे | पर |

الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ ﴿۶۱﴾ ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की तरफ़ | लौटाए जाएंगे | फिर | 61 | नहीं करते कोताही | और वह | हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) | क़ब्ज़ में लेते हैं उस को | मौत |

مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ؕ اَلَا لَهُ الْحُكْمُ ۫ وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ﴿۶۲﴾ قُلْ مَنْ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कौन | आप कह दें | 62 | हिसाब लेने वाला | बहुत तेज़ | और वह | हुक्म | उसी का | सुन रखो | सच्चा | उन का मौला |

يُنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۚ لَئِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि अगर | और चुपके से | गिड़गिड़ा कर | तुम पुकारते हो उस को | और दर्या | ख़ुश्की | अन्धेरे | से | बचाता है तुम्हें |

اَنْجٰنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۶۳﴾ قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हें बचाता है | अल्लाह | आप (स) कह दें | 63 | शुक्र अदा करने वाले | से | तो हम हों | इस | से | हमें बचा ले |

مِّنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿۶۴﴾ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | क़ादिर | वह | आप कह दें | 64 | शिर्क करते हो | तुम | फिर | हर सख़्ती | और से | उस से |

اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे पाऊँ | नीचे | से | या | तुम्हारे ऊपर | से | अज़ाब | तुम पर | भेजे | कि |

اَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम फेर फेर कर बयान करते हैं | किस तरह | देखो | दूसरा | लड़ाई | तुम में से एक | और चखाए | फ़िर्क़ा फ़िर्क़ा | या भिड़ा दे तुम्हें |

الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ﴿۶۵﴾ وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ؕ قُلْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप कह दें | हक़ | हालांकि वह | तुम्हारी क़ौम | उस को | और झुटलाया | 65 | समझ जाएं | ताकि वह | आयात |

لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿۶۶﴾ لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ ۫ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿۶۷﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 67 | तुम जान लोगे | और जल्द | एक ठिकाना | ख़बर | हर एक के लिए | 66 | दारोग़ा | तुम पर | मैं नहीं |

وَاِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यहां तक कि | उन से | तो किनारा कर ले | हमारी आयतें | में | झगड़तें हैं | वह लोग जो कि | तू देखे | और जब |

يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ۭ وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो न बैठ | शैतान | भुलादे तुझे | और अगर | उस के अ़लावा | कोई बात | में | वह मशग़ूल हों |

بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٨﴾ وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| परहेज़ करते हैं | वह लोग जो | पर | और नहीं | 68 | ज़ालिम (जमा) | क़ौम (लोग) | साथ (पास) | याद आना | बाद |

مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَذَرِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और छोड़ दे | 69 | डरें | ताकि वह | नसीहत करना | लेकिन | चीज़ | कोई | उन का हिसाब | से |

الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दुनिया | ज़िन्दगी | और उन्हें धोके में डाल दिया | और तमाशा | खेल | अपना दीन | उन्हों ने बना लिया | वह लोग जो |

وَذَكِّرْ بِهٖٓ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ڰ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सिवाए अल्लाह | से | उस के लिए | नहीं | उस ने किया | बसबब जो | कोई | पकड़ा (न) जाए | ताकि | इस से | और नसीहत करो |

وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ ۚ وَاِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ۭ اُولٰۗىِٕكَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यही लोग | उस से | न लिए जाएं | मुआवज़े | तमाम | बदले में दे | और अगर | कोई सिफ़ारिश करने वाला | और न | कोई हिमायती |

الَّذِيْنَ اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और अज़ाब | गर्म | से | पीना (पानी) | उन के लिए | जो उन्हों ने कमाया (अपना लिया) | पकड़े गए | वह लोग जो |

ع ٨ ١٠ ١٢ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | सिवाए अल्लाह | से | क्या हम पुकारें | कह दें | 70 | वह कुफ़्र करते थे | इस लिए कि | दर्दनाक |

لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلٰٓي اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | जब हिदायत दी हमें | बाद | अपनी एड़ियां (उलटे पाऊँ) | पर | और हम फिर जाएं | और न नुक़्सान करे हमें | न हमें नफ़ा दे |

كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ فِي الْاَرْضِ حَيْرَانَ ۠ لَهٗٓ اَصْحٰبٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| साथी | उस के | हैरान | ज़मीन | में | शैतान | भुला दिया उस को | उस की तरह जो |

يَّدْعُوْنَهٗٓ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ۭ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ۭ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हिदायत | वही | अल्लाह की हिदायत | बेशक | कह दें | हमारे पास आ | हिदायत | तरफ़ | बुलाते हों उस को |

وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧١﴾ وَاَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नमाज़ | क़ाइम करो | और यह कि | 71 | तमाम जहान | परवरदिगार के लिए | कि फ़रमांबरदार रहें | और हुक्म दिया गया हमें |

وَاتَّقُوْهُ ۭ وَهُوَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पैदा किया | वह जो जिस | और वही | 72 | तुम इकट्ठे किए जाओगे | उस की तरफ़ | वह जिस की | और वही | और उस से डरो |

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۭ وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ڛ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो वह हो जाएगा | हो जा | कहेगा वह | और जिस दिन | ठीक तौर पर | और ज़मीन | आस्मान (जमा) |

और जब तू उन लोगों को देखे जो हमारी आयतों में झगड़तें हैं तो उन से किनारा कर ले यहां तक कि वह मशग़ूल हो जाएँ उस के अ़लावा किसी और बात में, और अगर तुझे शैतान भुलादे तो याद आने के बाद न बैठ ज़ालिम लोगों के पास। (68)

और जो लोग परहेज़ करते हैं (परहेज़गार हैं) उन पर उन (झगड़ने वालों) के हिसाब में से कोई चीज़ नहीं, लेकिन नसीहत करना ताकि वह डरें (बाज़ आजाएं)। (69)

और उन लोगों को छोड़ दें जिन्हों ने अपने दीन को खेल और तमाशा बना लिया है और दुनिया की ज़िन्दगी ने उन्हें धोके में डाल दिया है, और उस (कुरआन) से नसीहत करो ताकि कोई अपने किए (अपने अमल) से पकड़ा न जाए, उस के लिए नहीं अल्लाह के सिवा कोई हिमायती और न कोई सिफ़ारिश करने वाला, और अगर बदले में तमाम मुआवज़े दें तो उस से न लिए जाएं (कुबूल न हों), यही वह लोग हैं जो अपने किए पर पकड़े गए, उन्हें गर्म पानी पीना है और दर्दनाक अ़ज़ाब है इस लिए कि वह कुफ़्र करते थे। (70)

कह दें क्या हम अल्लाह के सिवा उस को पुकारें जो हमें न नफ़ा दे सके न हमारा नुक्सान कर सके और (क्या) हम उलटे पाऊँ फिर जाएं उस के बाद जब कि अल्लाह ने हमें हिदायत दे दी उस शख़्स की तरह जिसे शैतान ने भुला दिया ज़मीन (जंगल) में, वह हैरान हो, उस के साथी उस को हिदायत की तरफ़ बुलाते हों कि हमारे पास आ।
आप (स) कह दें बेशक अल्लाह की हिदायत ही हिदायत है और हमें हुक्म दिया गया है कि तमाम जहानों के परवरदिगार के फ़रमांबरदार रहें। (71)

और यह कि नमाज़ क़ाइम करो और उस से डरो, और वही है जिस की तरफ तुम इकट्ठे किए जाओगे। (72)

और वही है जिस ने आस्मानों और जमीन को ठीक तौर पर पैदा किया। और जिस दिन कहेगा "हो जा" तो वह "हो जाएगा",

उस की बात सच्ची है, और मुल्क उसी का है, जिस दिन सूर फूँका जाएगा, ग़ैब और ज़ाहिर का जानने वाला, और वही है हिक्मत वाला, ख़बर रखने वाला। (73)
और जब इब्राहीम (अ) ने कहा अपने बाप आज़र कोः क्या तू बुतों को माबूद बनाता है? बेशक मैं तुझे और तेरी क़ौम को खुली गुमराही में देखता हूँ। (74)
और इस तरह हम इब्राहीम (अ) को आस्मानों और ज़मीन की बादशाही (अजाइबात) दिखाने लगे ताकि वह यक़ीन करने वालों में से हो जाए, (75)
फिर जब उस पर अन्धेरा कर लिया तो एक सितारा देखा, कहा यह मेरा रब है। फिर जब ग़ाइब हो गया तो (इब्राहीम अ) कहने लगे मैं दोस्त नहीं रखता ग़ाइब होने वालों को, (76)
फिर जब चमकता हुआ चाँद देखा तो बोले यह मेरा रब है, फिर जब वह ग़ाइब हो गया तो कहा अगर मुझे हिदायत न दे मेरा रब तो मैं भटकने वाले लोगों में से हो जाऊँ। (77)
फिर जब उस ने जगमगाता हुआ सूरज देखा तो बोले यह मेरा रब है, यह सब से बड़ा है। फिर जब वह ग़ाइब हो गया तो कहा ऐ मेरी क़ौम! बेशक मैं उन से बेज़ार हूँ जिन को तुम शरीक करते हो। (78)
बेशक मैं ने अपना मुँह यक रुख़ हो कर उस की तरफ़ मोड़ लिया जिस ने ज़मीन और आस्मान बनाए और मैं शिर्क करने वालों से नहीं। (79)
और उस की क़ौम ने उस से झगड़ा किया तो उस ने कहा क्या तुम मुझ से अल्लाह (के बारे) में झगड़ते हो? उस ने मुझे हिदायत दे दी है और मैं उन से नहीं डरता जिन्हें तुम शरीक ठहराते हो उस का, मगर यह कि मेरा रब कुछ (तकलीफ़) पहुँचाना चाहे, मेरे रब के इल्म ने हर चीज़ का अहाता कर लिया है, सो क्या तुम सोचते नहीं? (80)
और मैं तुम्हारे शरीक से क्योंकर डरूँ? और तुम (इस से) नहीं डरते कि अल्लाह का शरीक करते हो जिस की उस ने नहीं उतारी तुम पर कोई दलील, सो दोनों फ़रीक़ में से अम्न (दिलजमई) का कौन ज़ियादा हक़दार है? (बताओ) अगर तुम जानते हो। (81)

قَوْلُهُ الْحَقُّ ۚ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग़ैब | जानने वाला | सूर | फूँका जाएगा | जिस दिन | मुल्क | और उस का | सच्ची | उस की बात |

وَالشَّهَادَةِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿٧٣﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ اٰزَرَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आज़र | अपने बाप को | इब्राहीम (अ) | कहा | और जब | 73 | ख़बर रखने वाला | हिक्मत वाला | और वही | और ज़ाहिर |

اَتَتَّخِذُ اَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ اِنِّيْٓ اَرٰىكَ وَقَوْمَكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 74 | खुली | गुमराही में | और तेरी क़ौम | तुझे देखता हूँ | बेशक मैं | माबूद | बुत (जमा) | क्या तू बनाता है |

وَكَذٰلِكَ نُرِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلِيَكُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और ताकि हो जाए वह | और ज़मीन | आस्मानों (जमा) | बादशाही | इब्राहीम (अ) | हम दिखाने लगे | और इसी तरह |

مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह | उस ने कहा | एक सितारा | उस ने देखा | रात | उस पर | अन्धेरा कर लिया | फिर जब | 75 | यक़ीन करने वाले | से |

رَبِّيْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَآ اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ﴿٧٦﴾ فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चमकता हुआ | चाँद | फिर जब देखा | 76 | ग़ाइब होने वाले | मैं दोस्त रखता | नहीं | उस ने कहा | ग़ाइब हो गया | फिर जब | मेरा रब |

قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَاَكُوْنَنَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो मैं हो जाऊँ | मेरा रब | न हिदायत दे मुझे | अगर | कहा | ग़ाइब होगया | फिर जब | मेरा रब | यह | बोले |

مِنَ الْقَوْمِ الضَّآلِّيْنَ ﴿٧٧﴾ فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّيْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरा रब | यह | बोले | जगमगाता हुआ | सूरज | फिर जब उस ने देखा | 77 | भटकने वाले | क़ौम-लोग | से |

هٰذَآ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَتْ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٨﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 78 | तुम शिर्क करते हो | उस से जो | बेज़ार | बेशक मैं | ऐ मेरी क़ौम | कहा | वह ग़ाइब हो गया | फिर जब | सब से बड़ा | यह |

اِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَآ اَنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं मैं | यक रुख़ हो कर | और ज़मीन | आस्मान (जमा) | बनाए | उस की तरफ़ जिस | अपना मुँह | मैं ने मुँह मोड़ लिया | बेशक मैं |

مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٧٩﴾ وَحَآجَّهٗ قَوْمُهٗ ۚ قَالَ اَتُحَآجُّوْٓنِّيْ فِي اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह (के बारे) में | क्या तुम मुझ से झगड़ते हो | उस ने कहा | उस की क़ौम | और उस से झगड़ा किया | 79 | शिर्क करने वाले | से |

وَقَدْ هَدٰىنِ ۚ وَلَآ اَخَافُ مَا تُشْرِكُوْنَ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ رَبِّيْ شَيْئًا ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुछ | मेरा रब | चाहे | यह कि | मगर | उस का | जो तुम शरीक करते हो | और नहीं डरता मैं | और उस ने मुझे हिदायत दे दी है |

وَسِعَ رَبِّيْ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۚ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَكَيْفَ اَخَافُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मैं डरूँ | और क्योंकर | 80 | सो क्या तुम नहीं सोचते | इल्म | हर चीज़ | मेरा रब | अहाता कर लिया |

مَآ اَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ اَنَّكُمْ اَشْرَكْتُمْ بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ عَلَيْكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम पर | उस की | नहीं उतारी | जो | अल्लाह का | शरीक करते हो | कि तुम | और तुम नहीं डरते | जो तुम शरीक करते हो (तुम्हारे शरीक) |

سُلْطٰنًا ۚ فَاَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ۚ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨١﴾ وقف لازم

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 81 | जानते हो | तुम | अगर | अम्न का | ज़ियादा हक़दार | दोनों फ़रीक़ | सो कौन | कोई दलील |

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْاَمْنُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अम्न (दिलजमई) | उन के लिए | यही लोग | ज़ुल्म से | अपना ईमान | और न मिलाया | ईमान लाए | जो लोग |

ع ١٣ ٩ ١٥ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٨٢﴾ وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की कौम | पर | इब्राहीम (अ) | हम ने यह दी | हमारी दलील | और यह | 82 | हिदायत याफ़्ता | और वही |

نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿٨٣﴾ وَوَهَبْنَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बख़्शा हम ने | 83 | जानने वाला | हिक्मत वाला | तुम्हारा रब | बेशक | हम चाहें | जो जिस | दरजे | हम बुलन्द करते हैं |

لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ كُلًّا هَدَيْنَا وَنُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से कब्ल | हम ने हिदायत दी | और नूह (अ) | हिदायत दी हम ने | सब को | और याकूब (अ) | इसहाक़ (अ) | उस को |

وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ وَاَيُّوْبَ وَيُوْسُفَ وَمُوْسٰى وَهٰرُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हारून (अ) | और मूसा (अ) | और युसुफ़ (अ) | और अय्यूब (अ) | और सुलेमान (अ) | दाऊद (अ) | उन की औलाद | और से |

وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٤﴾ وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى وَاِلْيَاسَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और इलयास (अ) | और ईसा (अ) | और यहया (अ) | और ज़करिया (अ) | 84 | नेक काम करने वाले | हम बदला देते हैं | और इसी तरह |

كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٥﴾ وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ وَلُوْطًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और लूत (अ) | और युनुस (अ) | और अलयसअ़ (अ) | और इस्माईल (अ) | 85 | नेक बन्दे | से | सब |

وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَمِنْ اٰبَآئِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन की औलाद | उन के बाप दादा | और से (कुछ) | 86 | तमाम जहान वाले | पर | हम ने फ़ज़ीलत दी | और सब |

وَاِخْوَانِهِمْ وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٨٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 87 | सीधा | रास्ता | तरफ़ | हम ने हिदायत दी उन्हें | और हम ने चुना उन्हें | और उन के भाई |

ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने बन्दे | से | चाहे | जिसे | इस से | हिदायत देता है | अल्लाह की रहनुमाई | यह |

وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٨﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो | यह | 88 | वह करते थे | जो कुछ | उन से | तो ज़ाया हो जाते | वह शिर्क करते | और अगर |

اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَآءِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह लोग | इस का | इनकार करें | पस अगर | और नबूवत | और शरीअ़त | किताब | हम ने दी उन्हें |

فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ ﴿٨٩﴾ اُولٰٓئِكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यही लोग | 89 | इनकार करने वाले | इस के | वह नहीं | ऐसे लोग | इस के लिए | तो हम मुक़र्रर कर देते हैं |

الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नहीं मांगता मैं तुम से | आप (स) कह दें | चलो | सो उन की राह पर | अल्लाह ने हिदायत दी | वह जो |

ع ١٠ ١٦ عَلَيْهِ اَجْرًا اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 90 | तमाम जहान वाले | नसीहत | मगर | यह | नहीं | कोई उज्रत | इस पर |

जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अपने ईमान को ज़ुल्म से न मिलाया, उन्हीं लोगों के लिए दिलजमई है और वही हिदायत याफ़्ता हैं। (82)

और यह हमारी दलील है जो हम ने इब्राहीम (अ) को उन की कौम पर दी, हम जिस के दरजे चाहें बुलन्द करते हैं। बेशक तुम्हारा रब हिक्मत वाला, जानने वाला। (83)

और हम ने उस (इब्राहीम अ) को बख़्शा इसहाक़ (अ) और याकूब (अ), हम ने सब को हिदायत दी और नूह (अ) को हम ने हिदायत दी उस से कब्ल, और उन की औलाद में से दाऊद (अ) और सुलेमान (अ) और अय्यूब (अ) और युसुफ़ (अ) और मूसा (अ) और हारून (अ) को, और इसी तरह हम नेक काम करने वालों को बदला देते हैं। (84)

और ज़करिया (अ) और यहया (अ) और ईसा (अ) और इलयास (अ), सब नेक बन्दों में से हैं। (85)

और इस्माईल (अ) और अलयसअ़ (अ) और युनुस (अ) और लूत (अ), और सब को हम ने तमाम जहान वालों पर फ़ज़ीलत दी। (86)

और कुछ उन के बाप दादा और उन की औलाद और उन के भाइयों को, और हम ने उन्हें चुना और सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत दी। (87)

यह अल्लाह की रहनुमाई है। वह इस से हिदायत देता है अपने बन्दों में से जिसे चाहे, और अगर वह शिर्क करते तो उन से ज़ाया हो जाता जो कुछ वह करते थे। (88)

यह वह लोग हैं जिन्हें हम ने किताब दी और शरीअ़त और नबूवत दी, पस अगर यह लोग इस का इनकार करें तो हम ने इन (बातों) के लिए मुक़र्रर कर दिए हैं ऐसे लोग जो इस के इनकार करने वाले नहीं। (89)

यही वह लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी, सो उन की राह पर चलो, आप कह दें मैं उस पर तुम से कोई उज्रत नहीं मांगता, यह तो नहीं मगर नसीहत तमाम जहान वालों के लिए। (90)

और उन्हों ने अल्लाह की क़द्र न की (जैसे) उस की क़द्र का हक़ था जब उन्हों ने कहा कि अल्लाह ने किसी इन्सान पर कोई चीज़ नहीं उतारी, आप (स) कहें (वह) किताब किस ने उतारी जो मूसा (अ) ले कर आए लोगों के लिए रौशनी और हिदायत तुम ने उसे वरक़ वरक़ कर दिया है, तुम उसे ज़ाहिर करते हो और अक्सर छुपा लेते हो, और उस ने तुम्हें सिखाया जो न तुम जानते थे और न तुम्हारे बाप दादा, आप (स) कह दें अल्लाह (ने नाज़िल की), फिर उन्हें छोड़ दें अपने बेहूदा शुग़ल में खेलते रहें। (91)

और यह (क़ुरआन) किताब है बरकत वाली, हम ने नाज़िल की, अपने से पहली (किताबों) की तस्दीक़ करने वाली ताकि तुम डराओ अहले मक्का को और जो उस के इर्द गिर्द हैं (तमाम आस पास वाले), और जो लोग आख़िरत पर ईमान रखते हैं वह उस पर ईमान लाते हैं और वह अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करते हैं। (92)

और उस से बड़ा ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट (बुहतान) बान्धे, या कहे मेरी तरफ़ वहि की गई है और उसे कुछ वहि नहीं की गई, (उसी तरह वह) जो कहे मैं अभी उतारता हूँ उस के मिस्ल जो अल्लाह ने नाज़िल किया। और अगर तू देखे जब ज़ालिम मौत की सख़्तियों में हों और फ़रिश्ते अपने हाथ फैलाए हों कि अपनी जानें निकालो, आज तुम्हें ज़िल्लत का अ़ज़ाब दिया जाएगा उस सबब से कि तुम अल्लाह के बारे में झूटी बातें कहते थे और उस की आयतों से तकब्बुर करते थे। (93)

और अलबत्ता तुम हमारे पास अकेले अकेले आगए जैसे हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था और जो हम ने तुम्हें (माल ओ असबाब) दिया था छोड़ आए अपनी पीठ पीछे, और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे वह सिफ़ारिश करने वाले नहीं देखते (जिन की निसबत) तुम गुमान करते थे कि वह तुम में (तुम्हारे) साझी हैं, अलबत्ता तुम्हारे दरमियान (रिश्ता) कट गया और तुम जो दावे करते थे सब जाते रहे। (94)

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖٓ اِذْ قَالُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और नही | उन्हों ने अल्लाह की क़द्र जानी | हक़ | उस की क़द्र | जब उन्हों ने कहा | नही | अल्लाह ने उतारी | पर | कोई इन्सान |

مِّنْ شَيْءٍ ؕ قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِيْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई चीज़ | आप (स) कह दें | किस | उतारी | किताब | वह जो | लाए उस को | मूसा (अ) | रौशनी |

وَّهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और हिदायत | लोगों के लिए | तुम ने कर दिया उस को | वरक़ वरक़ | तुम ज़ाहिर करते हो उस को | और तुम छुपाते हो | अक्सर |

وَعُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنْتُمْ وَلَآ اٰبَآؤُكُمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और सिखाया तुम्हें | जो | तुम न जानते थे | तुम | और न | तुम्हारे बाप दादा | आप कह दें | अल्लाह | फिर | उन्हें छोड़ दें |

فِيْ خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩١﴾ وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِيْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | अपने बेहूदा शुग़ल | वह खेलते रहें | 91 | और यह | किताब | हम ने नाज़िल की | बरकत वाली | तस्दीक़ करने वाली | जो |

بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने से पहली (किताबें) | और ताकि तुम डराओ | अहले मक्का | और जो | उस के इर्द गिर्द | और जो लोग | ईमान रखते हैं |

بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَمَنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आखिरत पर | ईमान लाते हैं | इस पर | और वह | पर (की) | अपनी नमाज | हिफ़ाज़त करते हैं | 92 | और कौन |

اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحِيَ اِلَيَّ وَلَمْ يُوْحَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बड़ा जालिम | से-जो | घड़े (बान्धे) | अल्लाह पर | झूट | या | कहे | वहि की गई | मेरी तरफ़ | और नही वहि की गई |

اِلَيْهِ شَيْءٌ وَّمَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की तरफ़ | कुछ | और जो | कहे | मैं अभी उतारता हूँ | मिस्ल | जो नाज़िल किया | अल्लाह | और अगर | तू देखे | जब |

الظّٰلِمُوْنَ فِيْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْٓا اَيْدِيْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْٓا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़ालिम (जमा) | सख़्तियों में | मौत | और फ़रिश्ते | फैलाए हों | अपने हाथ | निकालो |

اَنْفُسَكُمْ ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी जानें | आज तुम्हें बदला दिया जाएगा | अज़ाब | ज़िल्लत | बसबब | तुम कहते थे | अल्लाह पर (के बारे में) |

غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٩٣﴾ وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| झूट | और तुम थे | से | उस की आयतें | तकब्बुर करते | 93 | और अलबत्ता | तुम आगए हमारे पास |

فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक एक (अकेले) | जैसे | हम ने तुम्हें पैदा किया | पहली | बार | और तुम छोड़ आए | जो | हम ने दिया था तुम्हें | पीछे | अपनी पीठ |

وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِيْكُمْ شُرَكٰٓؤُا ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और नही | हम देखते | तुम्हारे साथ | सिफ़ारिश करने वाले तुम्हारे | वह जो | तुम गुमान करते थे | कि वह | तुम में | साझी हैं |

لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٩٤﴾ ع ١١ ١٢

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता कट गया | तुम्हारे दरमियान | और जाते रहे | तुम से | जो | तुम दावा करते थे | 94 |

اِنَّ اللّٰهَ فٰلِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰى ۭ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और निकालने वाला | मुर्दा | से | ज़िन्दा | निकालता है | और गुठली | दाना | फाड़ने वाला | बेशक अल्लाह |

الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ۭ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٩٥﴾ فَالِقُ الْاِصْبَاحِ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चीर कर (चाक करके) निकालने वाला सुबह | 95 | तुम बहके जा रहे हो | पस कहां | यह है तुम्हारा अल्लाह | जिन्दा | से | मुर्दा |

وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ۭ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग़ालिब | अन्दाज़ा | यह | हिसाब | और चाँद | और सूरज | सुकून | रात | और उस ने बनाया |

الْعَلِيْمِ ﴿٩٦﴾ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِيْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | उन से | ताकि तुम रास्ता मालूम करो | सितारे | तुम्हारे लिए | बनाए | वह जिस | और वही | 96 | इल्म वाला |

ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۭ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٩٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 97 | इल्म रखते हैं | लोगों के लिए | बेशक हम ने खोल कर बयान कर दी हैं आयतें | और दर्या | खुश्की | अन्धेरे |

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अमानत की जगह | फिर एक ठिकाना | एक | वजूद शख़्स | से | पैदा किया तुम्हें | वह जो जिस | और वही |

قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ﴿٩٨﴾ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | उतारा | वह जो-जिस | और वही | 98 | जो समझते हैं | लोगों के लिए | बेशक हम ने खोल कर बयान करदी आयतें |

السَّمَاۗءِ مَاۗءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सबजी | उस से | फिर हम ने निकाली | हर चीज़ | उगने वाली | उस से | फिर हम ने निकाली | पानी | आस्मान |

نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ ۙ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| झुके हुए | खोशे | गाभा | से | खजूर | और | एक पर एक चढ़ा हुआ | दाने | उस से | हम निकालते हैं |

وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۭ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं भी मिलते | मिलते जुलते | और अनार | और ज़ैतून | अंगूर के | और बागात |

اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस | में | बेशक | और उस का पकना | फलता है | जब | उस का फल | तरफ़ | देखो |

لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٩٩﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَاۗءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हालांकि उस ने उन्हें पैदा किया | जिन | शरीक | अल्लाह का | और उन्हों ने ठहराया | 99 | ईमान रखते हैं | लोगों के लिए | निशानियां |

١٢ ع ٦ ١٨ وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۭ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٠٠﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 100 | वह बयान करते हैं | उस से जो | और बुलन्द तर | वह पाक है | इल्म के बग़ैर (जहालत से) | और बेटियां | बेटे | उस के लिए | और तराशते हैं |

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की | जबकि नहीं | बेटा | उस का | हो सकता है | क्योंकर | और ज़मीन | आस्मान (जमा) | नई तरह बनाने वाला |

صَاحِبَةٌ ۭ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٠١﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 101 | जानने वाला | हर चीज | और वह | हर चीज | और उस ने पैदा की | बीवी |

बेशक अल्लाह फाड़ने वाला दाने और गुठली का, वह मुर्दा से ज़िन्दा निकालता है और ज़िन्दा से मुर्दा निकालने वाला, यह है तुम्हारा अल्लाह, पस तुम कहां बहके जा रहे हो? (95)

(रात की तारीकी) चाक कर के सुब्ह निकालने वाला, और उस ने रात को (ज़रीआ) सुकून बनाया और सूरज और चाँद को (ज़रीआ) हिसाब, यह अन्दाजा है ग़ालिब, इल्म वाले का। (96)

वही है जिस ने तुम्हारे लिए सितारे बनाए ताकि तुम उन से खुश्की और दर्या के अन्धेरों में रास्ते मालूम करो, बेशक हम ने आयतें खोल खोल कर बयान कर दी हैं उन लोगों के लिए जो इल्म रखते हैं। (97)

और वही है जिस ने तुम्हें एक वजूद से पैदा किया, फिर तुम्हारा एक ठिकाना है और अमानत रहने की जगह। बेशक हम ने आयात खोल कर बयान कर दी हैं समझ वालों के लिए। (98)

और वही है जिस ने आस्मानों से पानी उतारा, फिर हम ने उस से निकाली उगने वाली हर चीज़, फिर हम ने उस से हरे हरे खेत और दरखत निकाले जिस से एक पर एक चढ़े हुए दाने निकालते हैं, और खजूरों के गाभे से झुके हुए खोशे, और अंगूर और जैतून और अनार के बागात एक दूसरे से मिलते जुलते और नहीं भी मिलते, उस के फल की तरफ देखो जब वह फलता है और उस का पकना (देखो), बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां है जो ईमान रखते है। (99)

और उन्हों ने जिन्नों को अल्लाह का शरीक ठहराया हालांकि उस ने उन्हें पैदा किया है और वह उस के लिए बेटे और बेटियां तराशते है जहालत से, वह पाक है और उस से बुलन्द तर है जो वह बयान करते हैं। (100)

नई तरह (नमूने के बगैर) आस्मानों और जमीन का बनाने वाला, उस के बेटा क्योंकर हो सकता है? जबकि उस की बीवी नहीं और उस ने हर चीज़ पैदा की है, और वह हर चीज़ का जानने वाला है। (101)

यही अल्लाह तुम्हारा रब है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं, हर चीज़ का पैदा करने वाला, सो तुम उस की इबादत करो, और वह हर चीज़ का कारसाज़ और निगहबान है। (102)

(मख़्लूक़ की) आँखें उस को नहीं पा सकतीं और वह आँखों को पा सकता है और वह भेद जानने वाला ख़बरदार है। (103)

तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानियाँ आ चुकीं। तो जिस ने देख लिया सो अपने वास्ते, और जो अन्धा रहा तो (उस का वबाल) उस की जान पर, और मैं तुम पर निगहबान नहीं। (104)

और उसी तरह हम आयतें फेर फेर कर बयान करते हैं ताकि वह कहें: तू ने (किसी से) पढ़ा है, और ताकि हम जानने वालों के लिए वाज़ेह कर दें। (105)

उस पर चलो जो वहि आए तुम्हारे रब से तुम्हारी तरफ़, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, और मुशरिकों से मुँह फेर लो। (106)

अगर अल्लाह चाहता तो वह शिर्क न करते और हम ने तुम्हें उन पर निगहबान नहीं बनाया, और तुम उन पर दारोग़ा नहीं। (107)

और अल्लाह के सिवा वह जिन्हें पुकारते हैं तुम उन्हें गाली न दो, पस वह अल्लाह को बे समझे बूझे गुस्ताख़ी से बुरा कहेंगें, उसी तरह हम ने हर फ़िरक़े को उस का अ़मल भला दिखाया, फिर उन्हें अपने रब की तरफ़ लौटना है, वह फिर उन को जता देगा जो वह करते थे। (108)

और वह ताकीद से अल्लाह की क़सम खाते हैं कि अगर उन के पास कोई निशानी आए तो ज़रूर उस पर ईमान लाएंगे, आप (स) कह दें कि निशानियाँ तो अल्लाह के पास हैं, और तुम्हें क्या ख़बर कि जब आ भी जाएं तो यह ईमान न लाएंगे। (109)

और हम उन के दिल और उन की आँखें उलट देंगे, जैसे वह उन (निशानियों) पर पहली बार ईमान नहीं लाए, और हम उन्हें छोड़ देंगे उन की सरकशी में कि वह बहकते रहें। (110)

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सो तुम उस की इबादत करो | हर चीज़ | पैदा करने वाला | उस के सिवा | नहीं कोई माबूद | तुम्हारा रब | यही अल्लाह |

وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿١٠٢﴾ لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۡ وَهُوَ يُدْرِكُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पा सकता है | और वह | आँखें | नहीं पा सकती उस को | 102 | कारसाज़ निगहबान | हर चीज़ | पर | और वह |

الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿١٠٣﴾ قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | निशानियाँ | आ चुकी तुम्हारे पास | 103 | ख़बरदार | भेद जानने वाला | और वह | आँखें |

رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ۭ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम पर | मैं | और नहीं | तो उस की जान पर | अन्धा रहा | और जो | सो अपने वास्ते | देख लिया | सो जो- जिस | तुम्हारा रब |

بِحَفِيْظٍ ﴿١٠٤﴾ وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तू ने पढ़ा है | और ताकि वह कहें | आयतें | हम फेर फेर कर बयान करते हैं | और उसी तरह | 104 | निगहबान |

وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿١٠٥﴾ اِتَّبِعْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारा रब | से | तुम्हारी तरफ़ | जो वहि आए | तुम चलो | 105 | जानने वालों के लिए | और ताकि हम वाज़ेह कर दें |

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٦﴾ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चाहता अल्लाह | और अगर | 106 | मुशरिकीन | से | और मुँह फेर लो | उस के सिवा | नहीं कोई माबूद |

مَآ اَشْرَكُوْا ۭ وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | तुम | और नही | निगहबान | उन पर | बनाया तुम्हें | और नही | न शिर्क करते वह |

بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٧﴾ وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस वह बुरा कहेंगें | अल्लाह के सिवा | से | वह परस्तिश करते हैं | वह जिन्हें | और तुम न गाली दो | 107 | दारोग़ा |

اللّٰهَ عَدْوًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۭ كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۠ ثُمَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर | उन का अ़मल | फ़िर्क़ा | हम ने भला दिखाया हर एक | उसी तरह | बे समझे बूझे | गुस्ताख़ी से | अल्लाह |

اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٨﴾ وَاَقْسَمُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह क़सम खाते थे | 108 | करते थे | जो वह | वह फिर उन को जता देगा | उन को लौटना | अपना रब | तरफ़ |

بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ۭ قُلْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप कह दें | उस पर | तो ज़रूर ईमान लाएंगे | कोई निशानी | उन के पास आए | अलबत्ता अगर | ताकीद से | अल्लाह की |

اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَآ اِذَا جَآءَتْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जब आएं | कि वह | ख़बर तुम्हें | और क्या | अल्लाह के पास | निशानियाँ | कि |

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٩﴾ وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह ईमान नहीं लाए | जैसे | और उन की आँखें | उन के दिल | और हम उलट देंगे | 109 | ईमान न लाएंगे |

بِهٖٓ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١١٠﴾ ع ١٣ ١٠ ١٩

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 110 | वह बहकते रहें | उन की सरकशी | में | और हम छोड़ देंगे उन्हें | पहली बार | उस पर |

٨

وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मुर्दे | और उन से बातें करते | फ़रिश्ते | उन की तरफ़ | उतारते | हम | और अगर |

وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا اِلَّآ اَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह कि | मगर | वह ईमान लाते | न | सामने | हर शै | उन पर | और हम जमा कर देते |

يَّشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُوْنَ ﴿١١١﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हर नबी के लिए | हम ने बनाया | और इसी तरह | 111 | जाहिल (नादान) हैं | उन में अक्सर | और लेकिन | चाहे अल्लाह |

عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बाज़ | तरफ़ | उन के बाज़ | डालते हैं | और जिन | इन्सान | शैतान (जमा) | दुश्मन |

زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا ۚ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस छोड़ दें उन्हें | वह न करते | तुम्हारा रब | चाहता | और अगर | बहकाने के लिए | बातें | मुलम्मा की हुई |

وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١١٢﴾ وَلِتَصْغٰٓى اِلَيْهِ اَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान नहीं रखते | वह लोग जो | दिल (जमा) | उस की तरफ़ | और ताकि माइल हो जाएं | 112 | वह झूट घड़ते हैं | और जो |

بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ﴿١١٣﴾ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो क्या अल्लाह के सिवा | 113 | बुरे काम करते हैं | वह | जो | और ताकि वह करते रहें | और ताकि वह उस को पसन्द करलें | आख़िरत पर |

اَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुफ़स्सल (वाज़ेह) | किताब | तुम्हारी तरफ़ | नाज़िल की | जो-जिस | और वह | कोई मुन्सिफ़ | मैं ढूंढूँ |

وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारा रब | से | उतारी गई है | कि यह | वह जानते हैं | किताब | हम ने उन्हें दी | और वह लोग जिन्हें |

بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١١٤﴾ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तेरा रब | बात | और पूरी है | 114 | शक करने वाले | से | सो तुम न होना | हक़ के साथ |

صِدْقًا وَّعَدْلًا ۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١١٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 115 | जानने वाला | सुनने वाला | और वह | उस के कलिमात | नहीं बदलने वाला | और इन्साफ़ | सच |

وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِي الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह का रास्ता | से | वह तुझे भटका देंगे | ज़मीन में | जो | अक्सर | तू कहा माने | और अगर |

اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿١١٦﴾ اِنَّ رَبَّكَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तेरा रब | बेशक | 116 | अटकल दौड़ाते हैं | मगर | वह | और नहीं | गुमान | मगर (सिर्फ़) | पैरवी करते | नहीं |

هُوَ اَعْلَمُ مَنْ يَّضِلُّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١١٧﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 117 | हिदायत याफ़्ता लोगों को | ख़ूब जानता है | और वह | उस का रास्ता | से | बहकता है | जो | ख़ूब जानता है | वह |

فَكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ بِاٰيٰتِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٨﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 118 | ईमान वाले | उस की आयतों पर | तुम हो | अगर | उस पर | अल्लाह का नाम | लिया गया | उस से जो | सो तुम खाओ |

और अगर हम उन की तरफ़ फ़रिश्ते उतारते, और उन से मुर्दे बातें करते, और हम जमा कर देते उन पर (उन के सामने) हर चीज़ तो भी वह ईमान न लाते मगर यह कि अल्लाह चाहे, और लेकिन उन में अक्सर नादान हैं। (111)

और इसी तरह हम ने हर नबी के लिए इन्सानों और जिन्नों के शयातीन को दुश्मन बना दिया, एक दूसरे की तरफ़ मुलम्मा की हुई बातें बहकाने के लिए इलका करते रहते हैं, और अगर तुम्हारा रब चाहता तो वह ऐसा न करते, पस उन्हें छोड़ दें (उस के साथ) जो वह झूट घड़ते हैं। (112)

और ताकि उन लोगों के दिल उस की तरफ़ माइल हो जाएं जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, और ताकि वह उस को पसन्द करें, और ताकि वह करते रहें जो वह बुरे काम करते हैं। (113)

क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और मुन्सिफ़ ढूंढूँ? और वही है जिस ने तुम्हारी तरफ़ मुफ़स्सल (वाज़ेह) किताब नाज़िल की है, और जिन्हें हम ने किताब दी है (अहले किताब) वह जानते हैं कि यह तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ के साथ उतारी गई है, सो तुम शक करने वालों में से न होना। (114)

और कामिल है तेरे रब की बात सच और इन्साफ़ के ऐतिबार से, उस के कलिमात को कोई बदलने वाला नहीं, और वह सुनने वाला, जानने वाला है। (115)

और ज़मीन में अक्सर (ऐसे हैं) अगर तू उन का कहा माने तो वह तुझे अल्लाह के रास्ते से भटका देंगे, वह नहीं पैरवी करते मगर सिर्फ़ गुमान की, और वह सिर्फ़ अटकल दौड़ाते हैं। (116)

बेशक तेरा रब उसे ख़ूब जानता है जो बहकता है उस के रास्ते से, और वह हिदायत याफ़्ता लोगों को ख़ूब जानता है। (117)

सो तुम उस में से खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया अगर तुम उस की आयतों पर ईमान रखते हो। (118)

और तुम्हें क्या हुआ है कि तुम उस में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया है हालांकि वह तुम्हारे लिए वाज़ेह कर चुका है जो उस ने तुम पर हराम किया है मगर यह कि तुम लाचार हो जाओ, और बहुत से (लोग) अपनी ख़ाहिशात से इल्म (तहक़ीक़) के बग़ैर गुमराह करते हैं, बेशक तुम्हारा रब हद से बढ़ने वालों को ख़ूब जानता है। **(119)**

और छोड़ दो खुला गुनाह और छुपा हुआ, बेशक जो लोग गुनाह करते हैं अनक़रीब उस की सज़ा पाएंगे जो वह बुरे काम करते थे। **(120)**

और उस से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम नहीं लिया गया और बेशक यह गुनाह है, और बेशक शैतान अपने दोस्तों के (दिलों में वसवसा) डालते हैं ताकि वह तुम से झगड़ा करें, और अगर तुम ने उन का कहा माना तो बेशक तुम मुश्रिक होंगे। **(121)**

क्या (वह शख़्स) जो मुर्दा था फिर हम ने उस को ज़िन्दा किया और हम ने उस के लिए नूर बनाया, वह चलता है उस (नूर की रौशनी) से लोगों में, (क्या) उस जैसा हो जाएगा जो अन्धेरों में है? उस से निकलने वाला नहीं, इसी तरह काफ़िरों के लिए उन के अ़मल ज़ीनत दिए गए। **(122)**

और इसी तरह हम ने हर बस्ती में बनाए उस के बड़े मुजरिम ताकि वह उस में मकर करें, और वह मकर नहीं करते मगर अपनी जानों पर, (अपनी ही जानों पर चालें चलते हैं), और वह शऊर नहीं रखते। **(123)**

और जब उन के पास कोई आयत आती है तो कहते हैं कि हम हरगिज़ न मानेंगे जब तक हमें उस जैसा न दिया जाए जो अल्लाह के रसूलों को दिया गया, अल्लाह ख़ूब जानता है कि अपनी रिसालत कहाँ भेजे, अनक़रीब उन लोगों को पहुँचेगी जिन्हों ने जुर्म किया, अल्लाह के हाँ ज़िल्लत और सख़्त अज़ाब, उस का बदला कि वह मकर करते थे। **(124)**

وَمَا لَكُمْ اَلَّا تَاْكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हालांकि वह वाज़ेह कर चुका है | उस पर | नाम अल्लाह का | लिया गया | उस से जो | कि तुम न खाओ | और क्या हुआ तुम्हें |

لَكُمْ مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ اِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ اِلَيْهِ ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बहुत से | और बेशक | उसकी तरफ़ (उस पर) | तुम लाचार हो जाओ | जिस | मगर | तुम पर | जो उस ने हराम किया | तुम्हारे लिए |

لَّيُضِلُّوْنَ بِاَهْوَآئِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़ूब जानता है | वह | तेरा रब | बेशक | इल्म के बग़ैर | अपनी ख़ाहिशात से | गुमराह करते हैं |

بِالْمُعْتَدِيْنَ ﴿١١٩﴾ وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो लोग | बेशक | और उस का छुपा हुआ | खुला गुनाह | और छोड़ दो | 119 | हद से बढ़ने वालों को |

يَكْسِبُوْنَ الْاِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوْا يَقْتَرِفُوْنَ ﴿١٢٠﴾ وَلَا تَاْكُلُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न खाओ | 120 | वह बुरे काम करते | थे | उस की जो | अनक़रीब सज़ा पाएंगे | गुनाह | कमाते (करते) हैं |

مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاِنَّهٗ لَفِسْقٌ ؕ وَاِنَّ الشَّيٰطِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शैतान (जमा) | और बेशक | अलबत्ता गुनाह | और बेशक यह | उस पर | अल्लाह का नाम | नहीं लिया गया | उस से जो |

لَيُوْحُوْنَ اِلٰٓى اَوْلِيٰٓـئِهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ ۚ وَاِنْ اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो बेशक तुम | तुम ने उन का कहा माना | और अगर | ताकि वह झगड़ा करें तुम से | अपने दोस्त | तरफ़ (में) | डालते हैं |

لَمُشْرِكُوْنَ ﴿١٢١﴾ اَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَاَحْيَيْنٰهُ وَجَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا ع ١٣/١

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नूर | उस के लिए | और हम ने बनाया | फिर हम ने उस को ज़िन्दा किया | मुर्दा था | क्या जो | 121 | मुश्रिक होंगे |

يَّمْشِيْ بِهٖ فِى النَّاسِ كَمَنْ مَّثَلُهٗ فِى الظُّلُمٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| निकलने वाला | नहीं | अन्धेरे | में | उस जैसा जो | लोग | में | उस से | वह चलता है |

مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكٰفِرِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٢﴾ وَكَذٰلِكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और इसी तरह | 122 | जो वह करते थे (अ़मल) | जो | काफ़िरों के लिए | ज़ीनत दिए गए | इसी तरह | उस से |

جَعَلْنَا فِىْ كُلِّ قَرْيَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا لِيَمْكُرُوْا فِيْهَا ؕ وَمَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं | उस में | ताकि वह मकर करें | उस के मुजरिम | बड़े | बस्ती | हर | में | हम ने बनाए |

يَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٢٣﴾ وَاِذَا جَآءَتْهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के पास आती है | और जब | 123 | वह शऊर रखते | और नहीं | अपनी जानों पर | मगर | वह मकर करते |

اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَآ اُوْتِىَ رُسُلُ اللّٰهِ ؕؔ وقف لازم / وقف منزل

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | रसूल (जमा) | दिया गया | उस जैसा जो | हम को दिया जाए | जब तक | हम हरगिज़ न मानेंगे | कहते हैं | कोई आयत |

اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने जुर्म किया | वह लोग जो | अनक़रीब पहुँचेगी | अपनी रिसालत | रखे (भेजे) | कहाँ | ख़ूब जानता है | अल्लाह |

صَغَارٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا كَانُوْا يَمْكُرُوْنَ ﴿١٢٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 124 | वह मकर करते थे | उस का बदला | सख़्त | और अज़ाब | अल्लाह के हाँ | ज़िल्लत |

فَـمَـنْ يُّـرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّـهْـدِيَـهٗ يَـشْـرَحْ صَـدْرَهٗ لِـلْاِسْـلَامِ ۚ

| इस्लाम के लिए | उस का सीना | खोल देता है | कि उसे हिदायत दे | अल्लाह चाहता है | पस जिस |
|---|---|---|---|---|---|

وَمَـنْ يُّـرِدْ اَنْ يُّـضِـلَّـهٗ يَـجْـعَـلْ صَـدْرَهٗ ضَـيِّـقًـا حَـرَجًـا كَاَنَّـمَـا

| गोया कि | भींचा हुआ | तंग | उस का सीना | कर देता है | उसे गुमराह करे | कि | चाहता है | और जिस |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

يَـصَّـعَّـدُ فِـى الـسَّـمَـآءِ ۚ كَـذٰلِـكَ يَـجْـعَـلُ اللّٰهُ الـرِّجْـسَ عَـلَـى الَّـذِيْـنَ

| जो लोग | पर | नापाकी (अ़ज़ाब) | कर देता है (डाले गा) अल्लाह | इसी तरह | आस्मानों में आस्मान पर | ज़ोर से चढ़ता है |
|---|---|---|---|---|---|---|

لَا يُـؤْمِـنُـوْنَ ﴿١٢٥﴾ وَهٰـذَا صِـرَاطُ رَبِّـكَ مُـسْـتَـقِـيْـمًـا ۗ قَـدْ فَـصَّـلْـنَا

| हम ने खोल कर बयान कर दी है | सीधा | तुम्हारा रब | रास्ता | और यह | 125 | ईमान नहीं लाते |
|---|---|---|---|---|---|---|

الْاٰيٰـتِ لِـقَـوْمٍ يَّـذَّكَّـرُوْنَ ﴿١٢٦﴾ لَـهُـمْ دَارُ الـسَّـلٰـمِ عِـنْـدَ رَبِّـهِـمْ

| उन का रब | पास-हां | सलामती का घर | उन के लिए | 126 | जो नसीहत पकड़ते हैं | उन लोगों के लिए | आयात |
|---|---|---|---|---|---|---|---|

وَهُـوَ وَلِـيُّـهُـمْ بِـمَـا كَانُـوْا يَـعْـمَـلُـوْنَ ﴿١٢٧﴾ وَيَـوْمَ يَـحْـشُـرُهُـمْ

| वह जमा करेगा | और जिस दिन | 127 | वह करते थे | उसका सिला जो | दोस्त दार-कारसाज़ | और वह |
|---|---|---|---|---|---|---|

جَـمِـيْـعًـا ۚ يٰـمَـعْـشَـرَ الْـجِـنِّ قَـدِ اسْـتَـكْـثَـرْتُـمْ مِّـنَ الْاِنْـسِ ۚ وَقَـالَ

| और कहेंगे | इन्सान-आदमी | से | तुम ने बहुत घेर लिए (अपने ताबे कर लिए) | ऐ जिन्नात के गिरोह | सब |
|---|---|---|---|---|---|

اَوْلِـيٰٓـؤُهُـمْ مِّـنَ الْاِنْـسِ رَبَّـنَـا اسْـتَـمْـتَـعَ بَـعْـضُـنَـا بِـبَـعْـضٍ وَّبَـلَـغْـنَـآ

| और हम पहुँचे | बाज़ से | हमारे बाज़ | हम ने फ़ाइदा उठाया | ऐ हमारे रब | इन्सान | से | उन के दोस्त |
|---|---|---|---|---|---|---|---|

اَجَـلَـنَـا الَّـذِيْٓ اَجَّـلْـتَ لَـنَـا ۗ قَـالَ الـنَّـارُ مَـثْـوٰىكُـمْ خٰـلِـدِيْـنَ

| हमेशा रहोगे | तुम्हारा ठिकाना | आग | फ़रमाएगा | हमारे लिए | तू ने मुक़र्रर की थी | जो | मीआ़द |
|---|---|---|---|---|---|---|---|

فِـيْـهَـآ اِلَّا مَـا شَـآءَ اللّٰهُ ۗ اِنَّ رَبَّـكَ حَـكِـيْـمٌ عَـلِـيْـمٌ ﴿١٢٨﴾ وَكَـذٰلِـكَ

| और इसी तरह | 128 | जानने वाला | हिक्मत वाला | तुम्हारा रब | बेशक | अल्लाह चाहे | जिसे | मगर | उस में |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

١٥ ع ٨ ٢ نُـوَلِّـيْ بَـعْـضَ الـظّٰـلِـمِـيْـنَ بَـعْـضًـا بِـمَـا كَانُـوْا يَـكْـسِـبُـوْنَ ﴿١٢٩﴾

| 129 | जो वह करते थे (उन के आमाल) | उसके सबब | बाज़ पर | ज़ालिम (जमा) | बाज़ | हम मुसल्लत कर देते हैं |
|---|---|---|---|---|---|---|

يٰـمَـعْـشَـرَ الْـجِـنِّ وَالْاِنْـسِ اَلَـمْ يَـاْتِـكُـمْ رُسُـلٌ مِّـنْـكُـمْ

| तुम में से | रसूल (जमा) | क्या नहीं आए तुम्हारे पास | और इन्सान | जिन्नात | ऐ गिरोह |
|---|---|---|---|---|---|

يَـقُـصُّـوْنَ عَـلَـيْـكُـمْ اٰيٰـتِـيْ وَيُـنْـذِرُوْنَـكُـمْ لِـقَـآءَ يَـوْمِـكُـمْ

| तुम्हारा दिन | मुलाक़ात (देखना) | और तुम्हें डराते थे | मेरी आयात | तुम पर | सुनाते थे (बयान करते थे) |
|---|---|---|---|---|---|

هٰـذَا ۗ قَـالُـوْا شَـهِـدْنَـا عَـلٰٓى اَنْـفُـسِـنَـا وَغَـرَّتْـهُـمُ الْـحَـيٰـوةُ الـدُّنْـيَـا

| दुनिया | ज़िन्दगी | और उन्हें धोके में डाल दिया | अपनी जानें | पर (ख़िलाफ़) | वह कहेंगे हम गवाही देते हैं | इस |
|---|---|---|---|---|---|---|

وَشَـهِـدُوْا عَـلٰٓى اَنْـفُـسِـهِـمْ اَنَّـهُـمْ كَانُـوْا كٰـفِـرِيْـنَ ﴿١٣٠﴾

| 130 | कुफ़्र करने वाले थे | कि वह | अपनी जानें (अपने) | पर (ख़िलाफ़) | और उन्हों ने गवाही दी |
|---|---|---|---|---|---|

पस अल्लाह जिस को हिदायत देना चाहता है, उस का सीना इस्लाम के लिए खोल देता है। और जिस को चाहता है कि उसे गुमराह करे, उस का सीना तंग भींचा हुआ (निहायत तंग) कर देता है। गोया कि वह ज़ोर से (बमुश्किल) आस्मान पर चढ़ रहा है, इसी तरह अल्लाह उन लोगों पर अज़ाब डालेगा जो ईमान नहीं लाते। (125)

यह रास्ता है तुम्हारे रब का सीधा, हम ने आयात खोल कर बयान कर दी हैं उन लोगों के लिए जो नसीहत पकड़ते हैं. (126)

उन के लिए उन के रब के पास सलामती का घर है और वह उन का कारसाज़ है उस के सिले में जो वह करते थे। (127)

और जिस दिन वह जमा करेगा उन सब को (फ़रमाएगा) ऐ गिरोह जिन्नात! तुम ने बहुत से आदमी अपने ताबे कर लिए, और इन्सानों में से उन के दोस्त कहेंगे ऐ हमारे रब! हमारे बाज़ ने बाज़ (एक दूसरे) से फ़ाइदा उठाया और हम उस मीआ़द (घड़ी) को पहुँच गए जो तू ने मुक़र्रर की थी। फ़रमाएगा आग तुम्हारा ठिकाना है, उस में हमेशा रहोगे मगर जिसे अल्लाह चाहे. बेशक तुम्हारा रब हिक्मत वाला, जानने वाला है। (128)

और इसी तरह हम बाज़ ज़ालिमों को बाज़ पर (एक दूसरे पर) मुसल्लत कर देते हैं उन के आमाल के सबब। (129)

ऐ गिरोहे जिन्नात ओ इन्सान! क्या तुम्हारे पास तुम में से हमारे रसूल नहीं आए? वह तुम पर हमारे अहकाम बयान करते थे और तुम्हें डराते थे यह दिन देखने से। वह कहेंगे हम अपनी जानों के ख़िलाफ़ (अपने ख़िलाफ़) गवाही देते हैं, और उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने धोके में डाल दिया और उन्हों ने अपने ख़िलाफ़ गवाही दी कि वह काफ़िर थे। (130)

यह इस लिए है कि तेरा रब ज़ुल्म की सज़ा में बस्तियों को हलाक करने वाला नहीं जब कि उन के लोग बेख़बर हों। (131)

और हर एक के लिए उन के आमाल के दरजे हैं और तुम्हारा रब उस से बेख़बर नहीं जो वह करते हैं। (132)

और तुम्हारा रब बेनियाज़ है, रहमत वाला, अगर वह चाहे तो तुम्हें ले जाए (हलाक कर दे) और जिस को चाहे तुम्हारे बाद जानशीन कर दे, जैसे उस ने तुम्हें उठाया औलाद से एक दूसरी क़ौम की। (133)

बेशक जिस का तुम से वादा किया जाता है वह ज़रूर आने वाली है और तुम आजिज़ करने वाले नहीं। (134)

आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह काम करते रहो, मैं भी काम कर रहा हूँ, पस तुम अनक़रीब जान लोगे किस के लिए है आक़िबत का घर। बेशक ज़ालिम (दो जहान की) कामयाबी नहीं पाते। (135)

और (अल्लाह ने) जो खेती और मवेशी पैदा किए हैं उस से उन्हों ने ठहराया है अल्लाह के लिए एक हिस्सा, पस उन्हों ने अपने ख़याल में कहा यह अल्लाह के लिए है और यह हमारे शरीकों के लिए है, पस जो उन के शरीकों के लिए है तो वह नहीं पहुँचता अल्लाह को। और जो अल्लाह के लिए है वह उन के शरीकों को पहुँच जाता है, बुरा है जो वह फ़ैसला करते हैं। (136)

और इसी तरह बहुत से मुशरिकों के लिए उन के शरीकों ने औलाद का क़त्ल अरास्ता कर दिया है ताकि वह उन्हें हलाक कर दें, और उन पर उन का दीन गुड मड कर दें। और अगर अल्लाह चाहता तो वह (ऐसा) न करते, सो तुम उन्हें छोड़ों और वह जो झूट बान्धते हैं (वह जानें और उन का झूट)। (137)

ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब कि उन के लोग | ज़ुल्म से | बस्तियां | हलाक कर डालने वाला | तेरा रब | नहीं है | इस लिए कि | यह |

غٰفِلُوْنَ ﴿١٣١﴾ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۭ وَمَا رَبُّكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारा रब | और नहीं | उन्हों ने किया (उन के आमाल) | उस से जो | दरजे | और हर एक के लिए | 131 | बेख़बर हों |

بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٢﴾ وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ۭ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रहमत वाला | बेनियाज़ | और तुम्हारा रब | 132 | वह करते हैं | उस से जो | बेख़बर |

اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَاۤءُ كَمَآ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जैसे | जिस को चाहे | तुम्हारे बाद | और जानशीन बनादे | तुम्हें ले जाए | वह चाहे | अगर |

اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ﴿١٣٣﴾ اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम से वादा किया जाता है | जिस | बेशक | 133 | दूसरी | क़ौम | औलाद | से | उस ने तुम्हें उठाया |

لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿١٣٤﴾ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | काम करते रहो | ऐ क़ौम | फ़रमा दें | 134 | आजिज़ करने वाले | तुम | और नहीं | ज़रूर आने वाली है |

مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस का | होता है | किस | तुम जान लोगे | पस जल्द | काम कर रहा हूँ | मैं | अपनी जगह |

عَاقِبَةُ الدَّارِ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿١٣٥﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने ठहराया अल्लाह के लिए | 135 | ज़ालिम | फ़लाह नहीं पाते | बेशक | घर | आख़िरत |

مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पस उन्हों ने कहा | एक हिस्सा | और मवेशी | खेती से | उस ने पैदा किए | उस से जो |

هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَاۤىِٕنَا ۚ فَمَا كَانَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| है | पस जो | हमारे शरीकों के लिए | और यह | उन के झूटे ख़याल के मुताबिक़ | यह अल्लाह के लिए |

لِشُرَكَاۤىِٕهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो वह | अल्लाह के लिए | है | और जो | अल्लाह | तरफ़ को | पहुँचता | तो नहीं | उन के शरीकों के लिए |

يَصِلُ اِلٰى شُرَكَاۤىِٕهِمْ ۭ سَاۤءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿١٣٦﴾ وَكَذٰلِكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और इसी तरह | 136 | जो वह फ़ैसला करते हैं | बुरा है | उन के शरीक | तरफ़ (को) | पहुँचता है |

زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन की औलाद | क़त्ल | मुश्रिक (जमा) | से | अक्सर के लिए | अरास्ता कर दिया है |

شُرَكَاۤؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ۭ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| उन का दीन | उन पर | और गुड मड कर दें | ताकि वह उन्हें हलाक करदें | उन के शरीक |

وَلَوْ شَاۤءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 137 | वह झूट बान्धते हैं | और जो | सो तुम उन्हें छोड़ दो | वह न करते | अल्लाह | और अगर चाहता |

وَقَالُوْا هٰذِهٖٓ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ ۖ لَّا يَطْعَمُهَآ اِلَّا مَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिस को | मगर | उसे न खाए | मम्नूअ़ (मना किए हुए) | और खेती | मवेशी | यह | और उन्हों ने कहा |

نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और कुछ मवेशी | उन की पीठ (जमा) | हराम की गई | और कुछ मवेशी | उन के ग़लत ख़याल के मुताबिक़ | हम चाहें |

لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ۭ سَيَجْزِيْهِمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हम जल्द उन्हें सज़ा देंगे | उस पर | झूट बान्धते हैं | उस पर | नाम अल्लाह का | वह नहीं लेते |

بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٨﴾ وَقَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ الْاَنْعَامِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मवेशी (जमा) | इन | पेट में | जो | और उन्हों ने कहा | 138 | झूट बान्धते थे | उस की जो |

خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلٰٓى اَزْوَاجِنَا ۚ وَاِنْ يَّكُنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हो | और अगर | हमारी औ़रतें | पर | और हराम | हमारे मर्दों के लिए | ख़ालिस |

مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ شُرَكَآءُ ۭ سَيَجْزِيْهِمْ وَصْفَهُمْ ۭ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हिक्मत वाला | बेशक वह | उन का बातें बनाना | वह जल्द उन को सज़ा देगा | शरीक | उस में | तो वह सब | मुर्दा |

عَلِيْمٌ ﴿١٣٩﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْٓا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेवक़ूफ़ी से | अपनी औलाद | उन्हों ने क़त्ल किया | वह लोग जिन्हों ने | अलबत्ता घाटे में पड़े | 139 | जानने वाला |

بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ ۭ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह पर | झूट बान्धते हुए | अल्लाह ने उन्हें दिया | जो | और हराम ठहराया | बेख़बरी (नादानी से) |

١٦ ع ٣ قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿١٤٠﴾ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पैदा किए | जिस ने | और वह | 140 | हिदायत पाने वाले | और वह न थे | यक़ीनन वह गुमराह हुए |

جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और खेती | और खजूर | और न चढ़ाए हुए | चढ़ाए हुए | बाग़ात |

مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۭ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और ग़ैर मुशाबह (जुदा जुदा) | मुशाबह (मिलते जुलते) | और अनार | और ज़ैतून | उस के फल | मुख़्तलिफ़ |

كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के काटने के दिन | उस का हक़ | और अदा करो | वह फल लाए | जब | उस के फल | से | खाओ |

وَلَا تُسْرِفُوْا ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿١٤١﴾ وَمِنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और से | 141 | बेजा ख़र्च करने वाले | पसन्द नहीं करता | बेशक वह | और बेजा ख़र्च न करो |

الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ۭ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह ने तुम्हें दिया | उस से जो | खाओ | और ज़मीन से लगे हुए | बार बरदार (बड़े बड़े) | चौपाए |

وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٤٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 142 | खुला | दुश्मन | तुम्हारा | बेशक वह | शैतान | क़दम (जमा) | और न पैरवी करो |

और उन्हों ने कहा यह मवेशी और खेती मम्नूअ़ है, उसे कोई न खाए मगर जिस को हम चाहें उन के (झूटे) ख़याल के मुताबिक़ और कुछ मवेशी हैं कि उन की पीठ पर (सवारी) हराम की है और कुछ मवेशी हैं (जुब्ह करते वक़्त) उन पर अल्लाह का नाम नहीं लेते, (यह) झूट बान्धना है उस (अल्लाह) पर, हम जल्द उन्हें उस की सज़ा देंगे जो वह झूट बान्धते थे। (138)

और उन्हों ने कहा जो उन मवेशियों के पेट में है वह ख़ालिस हमारे मर्दों के लिए है और हमारी औ़रतों पर हराम है, और अगर मुर्दा हो तो सब उस में शरीक हैं, वह जल्द उन्हें उन के बातें बनाने की सज़ा देगा, वह बेशक हिक्मत वाला जानने वाला है। (139)

अलबत्ता वह लोग घाटे में पड़े जिन्हों ने बेवक़ूफ़ी, नादानी से अपनी औलाद को क़त्ल किया और जो अल्लाह ने उन्हें दिया वह हराम ठहरा लिया झूट बान्धते हुए अल्लाह पर, यक़ीनन वह गुमराह हुए, और वह हिदायत पाने वाले न थे। (140)

और वही (ख़ालिक़) है जिस ने बाग़ात पैदा किए (छतरियों पर) चढ़ाए हुए (जैसे अंगूर) और (छतरियों पर) न चढ़ाए हुए, और खजूर और खेती, उस के फल मुख़्तलिफ़ (क़िस्म के) और ज़ैतून और अनार मिलते जुलते और जुदा जुदा, जब वह फल लाए तो उस के फल खाओ, और उस के काटने के दिन उस का हक़ (उ़श्र) अदा कर दो, और बेजा ख़र्च न करो, बेशक अल्लाह बेजा ख़र्च करने वालों को पसन्द नहीं करता। (141)

और चौपायों में से (पैदा किए) बार बरदार (बड़े बड़े) और ज़मीन पर लगे हुए (छोटे छोटे), जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से खाओ और शैतान के क़दमों की पैरवी न करो, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (142)

आठ जोड़े (नर और मादा पैदा किए) दो भेड़ से दो बकरी से, आप पूछें क्या (अल्लाह ने) दोनों नर हराम किए हैं या दोनों मादा? या वह जो दोनों मादा के रहम में लिपटा हुआ (अभी पेट में) हो? मुझे किसी इल्म से बताओ अगर तुम सच्चे हो। (143)

और दो ऊँट से और दो गाए से (पैदा किए), आप (स) पूछें क्या अल्लाह ने दोनों नर हराम किए हैं या दोनों मादा? या जो दोनों के रहमों में लिपटा हुआ हो (अभी पेट में हो)? क्या तुम उस वक़्त मौजूद थे जब अल्लाह ने तुम्हें उस का हुक्म दिया था? पस उस से बड़ा ज़ालिम कौन है जो अल्लाह पर बुहतान बान्धे झूट ताकि लोगों को इल्म के बग़ैर (जहालत से) गुमराह करे, बेशक अल्लाह ज़ुल्म करने वाले लोगों को हिदायत नहीं देता। (144)

आप (स) फ़रमा दीजिए, जो वहि मुझे दी गई है उस में किसी खाने वाले पर कोई खाना हराम नहीं पाता मगर यह कि वह मुर्दार हो या बहता हुआ ख़ून या सुव्वर का गोश्त, पस वह नापाक है, या गुनाह का (नाजाइज़ ज़बीहा) जिस पर ग़ैर अल्लाह का नाम पुकारा गया हो, पस जो लाचार हो जाए, न नाफ़रमानी करने वाला हो और न सरकश हो तो बेशक तेरा रब बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (145)

और उन लोगों पर जो यहूदी हुए, हम ने हराम कर दिया हर नाख़ुन वाला जानवर, और हम ने गाए और बकरी की चरबी उन पर हराम कर दी, सिवाए उस के जो उन की पीठ या अंतड़ियों से लगी हो या हड्डियों के साथ मिली हो, यह हम ने उन को बदला दिया उन की सरकशी का, और बेशक हम सच्चे हैं। (146)

ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दो (2) | बकरी | और से | दो (2) | भेड़ | से | जोड़े | आठ (8) |

قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस पर | लिपट रहा हो | या जो | या दोनों मादा | हराम किए | क्या दोनों नर | पूछें |

اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ نَبِّـُٔوْنِىْ بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ١٤٣

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 143 | सच्चे | तुम | अगर | किसी इल्म से | मुझे बताओ | दोनों मादा | रहम (जमा) |

وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ؕ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या दोनों नर | आप पूछें | दो (2) | गाय | और से | दो (2) | ऊँट | और से |

حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दोनों मादा | रहम (जमा) | उस पर | लिपट रहा हो | या जो | दोनों मादा | या | उस ने हराम किए |

اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से जो | बड़ा ज़ालिम | पस कौन | इस का | अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया | जब | मौजूद | तुम थे | क्या |

افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक अल्लाह | इल्म | बग़ैर | लोग | ताकि गुमराह करे | झूट | अल्लाह पर | बुहतान बान्धे |

لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ١٤٤ قُلْ لَّآ اَجِدُ فِىْ مَآ اُوْحِىَ اِلَىَّ ع ١٧ ٢

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुझे | जो वहि की गई | में | मैं नहीं पाता | फ़रमा दीजिए | 144 | ज़ुल्म करने वाले | लोग | हिदायत नहीं देता |

مُحَرَّمًا عَلٰى طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗٓ اِلَّآ اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| या ख़ून | मुर्दार | यह कि हो | मगर | इस को खाए | कोई खाने वाला | पर | हराम |

مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| या गुनाह की चीज़ | नापाक | पस वह | सुव्वर | या गोश्त | बहता हुआ |

اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो बेशक | और न सरकश | न नाफ़रमानी करने वाला | लाचार हो जाए | पस जो | उस पर | ग़ैर अल्लाह का नाम | पुकारा गया |

رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ١٤٥ وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने हराम कर दिया | यहूदी हुए | वह जो कि | और पर | 145 | निहायत मेहरबान | बख़्शने वाला | तेरा रब |

كُلَّ ذِىْ ظُفُرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُوْمَهُمَآ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की चरबियां | उन पर | हम ने हराम कर दिया | और बकरी | और गाय से | नाख़ुन वाला जानवर | हर एक |

اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَآ اَوِ الْحَوَايَآ اَوْ مَا اخْتَلَطَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जो मिली हो | या | या अंतड़ियां | उन की पीठ (जमा) | जो उठाती हो (लगी हो) | सिवाए |

بِعَظْمٍ ؕ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖؗ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ١٤٦

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 146 | सच्चे हैं | और बेशक हम | उनकी सरकशी का | हम ने उन को बदला दिया | यह | हड्डी से |

فَـــاِنْ كَـــذَّبُـــوْكَ فَـقُـلْ رَّبُّـكُـمْ ذُوْ رَحْـمَـةٍ وَّاسِـعَـةٍ ۚ وَلَا يُـرَدُّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और टाला नही जाता | वसीअ़ | रहमत वाला | तुम्हारा रब | तो आप(स) कह दें | आप को झुटलाएं | पस अगर |

بَـاْسُـهٗ عَـنِ الْـقَـوْمِ الْـمُـجْـرِمِـيْـنَ ﴿١٤٧﴾ سَـيَـقُـوْلُ الَّـذِيْـنَ اَشْـرَكُـوْا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जिन लोगों ने शिर्क किया (मुश्रिक) | जल्द कहेंगे | 147 | मुज्रिमों की क़ौम | से | उस का अज़ाब |

لَـوْ شَـآءَ اللّٰهُ مَـآ اَشْـرَكْـنَـا وَلَآ اٰبَـآؤُنَـا وَلَا حَـرَّمْـنَـا مِـنْ شَـيْءٍ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई चीज़ | हम हराम ठहराते | और न | हमारे बाप दादा | और न | हम शिर्क न करते | चाहता अल्लाह | अगर |

كَـذٰلِـكَ كَـذَّبَ الَّـذِيْـنَ مِـنْ قَـبْـلِـهِـمْ حَـتّٰـى ذَاقُــوْا بَـاْسَـنَـا ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारा अज़ाब | उन्हों ने चखा | यहां तक कि | इन से पहले | जो लोग | झुटलाया | इसी तरह |

قُـلْ هَـلْ عِـنْـدَكُـمْ مِّـنْ عِـلْـمٍ فَـتُـخْـرِجُـوْهُ لَـنَـا ؕ اِنْ تَـتَّـبِـعُـوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम पीछे चलते हो | नहीं | तो उस को निकालो (ज़ाहिर करो) हमारे लिए | कोई इल्म (यक़ीनी बात) | तुम्हारे पास | क्या | फ़रमा दीजिए |

اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَخْرُصُوْنَ ﴿١٤٨﴾ قُـلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۚ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पूरी | हुज्जत | अल्लाह ही के लिए | फ़रमा दें | 148 | अटकल चलाते हो | सिर्फ़ | तुम | और अगर (नहीं) | मगर (सिर्फ़) गुमान |

فَـلَـوْ شَـآءَ لَـهَـدٰىـكُـمْ اَجْـمَـعِـيْـنَ ﴿١٤٩﴾ قُـلْ هَـلُـمَّ شُـهَـدَآءَكُـمُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने गवाह | लाओ | फ़रमा दें | 149 | सब को | तो तुम्हें हिदायत देता | पस अगर वह चाहता |

الَّـذِيْـنَ يَـشْـهَـدُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ حَـرَّمَ هٰـذَا ۚ فَـاِنْ شَـهِـدُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह गवाही दें | फिर अगर | यह | हराम किया | कि अल्लाह | गवाही दें | जो |

فَـلَا تَـشْـهَـدْ مَـعَـهُـمْ ۚ وَلَا تَـتَّـبِـعْ اَهْـوَآءَ الَّـذِيْـنَ كَـذَّبُـوْا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| झुटलाया | जो लोग | ख़्वाहिशात | और न पैरवी करना | उन के साथ | तो तुम गवाही न देना |

بِـاٰيٰـتِـنَـا وَالَّـذِيْـنَ لَا يُـؤْمِـنُـوْنَ بِـالْاٰخِـرَةِ وَهُـمْ بِـرَبِّـهِـمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने रब के | और वह | आखिरत पर | ईमान लाते हैं | नहीं | और जो लोग | हमारी आयतों को |

ع ١٨ ٦ ٥ يَـعْـدِلُـوْنَ ﴿١٥٠﴾ قُـلْ تَـعَـالَـوْا اَتْـلُ مَـا حَـرَّمَ رَبُّـكُـمْ عَـلَـيْـكُـمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम पर | तुम्हारा रब | जो हराम किया | मैं पढ़ कर सुनाऊँ | आओ | फ़रमा दें | 150 | बराबर ठहराते हैं |

اَلَّا تُـشْـرِكُـوْا بِـهٖ شَـيْـئًـا وَّبِـالْـوَالِـدَيْـنِ اِحْـسَـانًـا ۚ وَلَا تَـقْـتُـلُـوْٓا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और न क़त्ल करो | नेक सुलूक | और वालिदैन के साथ | कुछ-कोई | उस के साथ | कि न शरीक ठहराओ |

اَوْلَادَكُـمْ مِّـنْ اِمْـلَاقٍ ؕ نَـحْـنُ نَـرْزُقُـكُـمْ وَاِيَّـاهُـمْ ۚ وَلَا تَـقْـرَبُـوا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और क़रीब न जाओ | और उन को | तुम्हें रिज़्क़ देते हैं | हम | मुफ़लिसी | से | अपनी औलाद |

الْـفَـوَاحِـشَ مَـا ظَـهَـرَ مِـنْـهَـا وَمَـا بَـطَـنَ ۚ وَلَا تَـقْـتُـلُـوا الـنَّـفْـسَ الَّـتِـيْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो जिस | जान | और न क़त्ल करो | छुपी हो | और जो | जो ज़ाहिर हो उस से (उन में) | बेहयाई (जमा) |

حَـرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِـالْـحَـقِّ ؕ ذٰلِـكُـمْ وَصّٰـكُـمْ بِـهٖ لَـعَـلَّـكُـمْ تَـعْـقِـلُـوْنَ ﴿١٥١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 151 | अ़क्ल से काम लो (समझो) | ताकि तुम | इस का | तुम्हें हुक्म दिया है | यह | मगर हक़ पर | अल्लाह ने हुर्मत दी |

पस अगर वह आप (स) को झुटलाएं तो आप (स) कहदें तुम्हारा रब वसीअ़ रहमत वाला है, और उस का अ़ज़ाब मुज्रिमों की क़ौम से टाला नहीं जाता। (147)

मुश्रिक जल्द कहेंगे कि अगर अल्लाह चाहता तो न हम शिर्क करते न हमारे बाप दादा, और न हम कोई चीज हराम ठहराते, इसी तरह (उन लोगों ने) झुटलाया जो उन से पहले थे यहां तक कि उन्हों ने हमारा अ़ज़ाब चखा, आप (स) फ़रमा दीजिए क्या तुम्हारे पास कोई यक़ीनी बात है? तो उस को हमारे सामने ज़ाहिर करो, तुम सिर्फ़ गुमान के पीछे चलते हो और तुम सिर्फ़ अटकल चलाते हो। (148)

आप (स) फ़रमा दें: अल्लाह ही की हुज्जत पूरी (ग़ालिब) है, अगर वह चाहता तो तुम सब को हिदायत दे देता। (149)

आप (स) फ़रमा दें: लाओ अपने गवाह जो गवाही दें कि अल्लाह ने यह हराम किया है, फिर अगर वह गवाही दे दें तो भी तुम उन के साथ गवाही न देना, और उन की ख़्वाहिशात की पैरवी न करना जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया और वह लोग आखिरत पर ईमान नहीं लाते और वह (माबूदाने बातिल को) अपने रब के बराबर ठहराते हैं। (150)

आप (स) फ़रमा दें आओ मैं पढ़ कर सुनाऊँ जो हराम किया है तुम पर तुम्हारे रब ने कि उस के साथ शरीक न ठहराओ और वालिदैन के साथ नेक सुलूक करो, और क़त्ल न करो अपनी औलाद को मुफ़लिसी (के डर) से, हम तुम्हें रिज़्क़ देते हैं और उन को (भी), और बेहयाइयों के क़रीब न जाओ जो उन में खुली हो और जो छुपी हो, और जिस जान को अल्लाह ने हुर्मत दी है उसे क़त्ल न करो मगर हक़ पर, यह तुम्हें इस का हुक्म दिया है ताकि तुम समझो। (151)

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यहां तक कि | बेहतरीन | वह | ऐसे जो | मगर | यतीम | माल | और क़रीब न जाओ |

يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हम तकलीफ़ नहीं देते | इन्साफ़ के साथ | और तौल | माप | और पूरा करो | अपनी जवानी | पहुँच जाए |

نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रिश्तेदार | ख़्वाह हो | तो इन्साफ़ करो | तुम बात करो | और जब | उस की वुस्अ़त (मक़दूर) | मगर | किसी को |

وَبِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ۚ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٥٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 152 | नसीहत पकड़ो | ताकि तुम | इस का | उस ने तुम्हें हुक्म दिया | यह | पूरा करो | और अल्लाह का अ़हद |

وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रास्ते | और न चलो | पस उस पर चलो | सीधा | मेरा रास्ता | यह | और यह कि |

فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٥٣﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 153 | परहेज़गारी इख़्तियार करो | ताकि तुम | तुम्हें हुक्म दिया इस का | यह | उस का रास्ता | से | तुम्हें | पस जुदा कर दें |

ثُمَّ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِيْٓ اَحْسَنَ وَتَفْصِيْلًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तफ़्सील | नेकोकार है | जो | पर | नेमत पूरी करने को | किताब | मूसा (अ) | फिर हम ने दी |

لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٥٤﴾ ١٩ ع ٦

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 154 | ईमान लाएं | अपना रब | मुलाक़ात पर | ताकि वह | और रहमत | और हिदायत | हर चीज़ की |

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि तुम पर | और परहेज़गारी इख़्तियार करो | पस उसकी पैरवी करो | बरकत वाली | हम ने नाज़िल की | किताब | और यह |

تُرْحَمُوْنَ ﴿١٥٥﴾ اَنْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰى طَآئِفَتَيْنِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दो गिरोह | पर | किताब | उतारी गई थी | इस के सिवा नहीं | तुम कहो | कि | 155 | रहम किया जाए |

مِنْ قَبْلِنَا ۪ وَاِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿١٥٦﴾ اَوْ تَقُوْلُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| या तुम कहो | 156 | बेख़बर | उन के पढ़ने पढ़ाने | से | और यह कि हम थे | हम से पहले |

لَوْ اَنَّآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّآ اَهْدٰى مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَآءَكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस आ गई तुम्हारे पास | उन से | ज़ियादा हिदायत पर | अलबत्ता हम होते | किताब | हम पर | उतारी जाती | अगर हम |

بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बड़ा ज़ालिम | पस कौन | और रहमत | और हिदायत | तुम्हारा रब | से | रौशन दलील |

مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ۗ سَنَجْزِي الَّذِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन लोगों को जो | हम जल्द सज़ा देंगे | उस से | और कतराए | अल्लाह की आयतों को | झुटलादे | उस से जो |

يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا سُوْٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ ﴿١٥٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 157 | वह कतराते थे | उस के बदले | अ़ज़ाब | बुरा | हमारी आयतें | से | कतराते हैं |

और यतीम के माल के क़रीब न जाओ मगर इस तरह कि वह बेहतरीन हो यहां तक कि वह अपनी जवानी को पहुँच जाए, और इन्साफ़ के साथ माप तोल पूरा करो, हम किसी को तकलीफ़ नहीं देते (बोझ नहीं डालते) मगर उस के मक़दूर के मुताबिक़, और जब बात करो तो इन्साफ़ की करो, ख़ाह रिश्तेदार (का मामला) हो। और अल्लाह का अ़हद पूरा करो, उस ने तुम्हें यह हुक्म दिया है ताकि तुम नसीहत पकड़ो। **(152)**

और यह मेरा रास्ता सीधा है, पस उस पर चलो और दूसरे रास्तों पर न चलो कि वह तुम्हें इस रास्ते से जुदा कर देंगे, उस ने तुम्हें इस का हुक्म दिया ताकि तुम परहेज़गारी इख़्तियार करो। **(153)**

फिर हम ने मूसा (अ) को किताब दी, उस पर अपनी नेमत पूरी करने को जो नेकोकार है, और हर चीज़ की तफ़्सील के लिए, और हिदायत ओ रहमत के लिए, ताकि वह अपने रब से मुलाक़ात पर ईमान ले आएं। **(154)**

और हम ने यह किताब उतारी है बरकत वाली, पस इस की पैरवी करो और परहेज़गारी इख़्तियार करो ताकि तुम पर रहम किया जाए। **(155)**

कि (कहीं) तुम कहो कि हम से पहले दो गिरोहों पर किताब उतारी गई, और यह कि हम उन के पढ़ने पढ़ाने से बेख़बर थे। **(156)**

या कहो कि अगर हम पर किताब उतारी जाती तो हम ज़ियादा हिदायत पर होते उन से, सो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से रौशन दलील और हिदायत और रहमत आ गई, पस उस से बड़ा ज़ालिम कौन है जो अल्लाह की आयतों को झुटलाए और उन से कतराए, हम उन लोगों को जल्द सज़ा देंगे जो कतराते हैं हमारी आयतों से, बुरा अ़ज़ाब उस के बदले कि वह कतराते थे। **(157)**

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ رَبُّكَ اَوْ يَاْتِيَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या वह इन्तिज़ार कर रहे हैं | मगर | यह | उन के पास आएं | फ़रिश्ते | या आए | तुम्हारा रब | या आए |

بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ۭ يَوْمَ يَاْتِيْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुछ | निशानियां | तुम्हारा रब | जिस दिन | आई | कोई | निशानी | तुम्हारा रब | न काम आएगा | किसी को |

اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِيْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا ۭ قُلِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस का ईमान | न था | ईमान लाया | उस से पहले | या | कमाई | अपने ईमान में | कोई भलाई | फरमा दें |

انْتَظِرُوْٓا اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٥٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इन्तिज़ार करो तुम | हम | मुन्तज़िर हैं | 158 | बेशक | वह लोग जिन्हों ने | तफ़्रका डाला | अपना दीन | और हो गए | गिरोह दर गिरोह |

لَسْتَ مِنْهُمْ فِيْ شَيْءٍ ۭ اِنَّمَآ اَمْرُهُمْ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नही आप (स) | उन से | किसी चीज़ में (कोई तअल्लुक) | फक्त | उन का मामला | अल्लाह के हवाले | फिर | वह जतला देगा उन्हें | वह जो |

كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿١٥٩﴾ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| करते थे | 159 | जो | लाए कोई नेकी | तो उस के लिए | दस | उस के बराबर | और जो |

جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٦٠﴾ قُلْ اِنَّنِيْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई बुराई लाए | तो न बदला पाएगा | मगर उस के बराबर | और वह | न ज़ुल्म किए जाऐंगे | 160 | कह दीजिए | बेशक मुझे |

هَدٰىنِيْ رَبِّيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۚ دِيْنًا قِيَمًا مِّلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राह दिखाई | मेरा रब | तरफ़ | रास्ता | सीधा | दीन | दुरुस्त | मिल्लत | इब्राहीम (अ) |

حَنِيْفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٦١﴾ قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक का हो कर रहने वाला | और न थे | से | मुश्रिक (जमा) | 161 | आप कह दें | बेशक | मेरी नमाज़ | मेरी कुरबानी |

وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٢﴾ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और मेरा जीना | और मेरा मरना | अल्लाह के लिए | रब | सारे जहान का | 162 | नहीं कोई शरीक | उस का | और उसी का | मुझे हुक्म दिया गया |

وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٦٣﴾ قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْ رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ۭ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और मैं | सब से पहला | मुसलमान (फ़रमांबरदार) | 163 | आप कह दें | क्या सिवाए अल्लाह | मैं ढून्ढूं | कोई रब | और वह | रब | हर शै |

وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ اِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ ثُمَّ اِلٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न कमाएगा | हर शख़्स | मगर (सिर्फ़) | उस के ज़िम्मे | और न | उठाएगा कोई उठाने वाला | बोझ दूसरा | फिर | तरफ़ |

رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٦٤﴾ وَهُوَ الَّذِيْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारा (अपना) रब | तुम्हारा लौटना | पस वह तुम्हें जतला देगा | वह जो | तुम थे | उस में | तुम इख़्तिलाफ़ करते | 164 | और वह | जिस ने |

جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हें बनाया | नाइब | ज़मीन | और बुलन्द किए | तुम में से बाज | पर ऊपर | बाज़ | दरजे | ताकि तुम्हें आज़माए |

فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ ۭ اِنَّ رَبَّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ ۡۖ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٥﴾ ع ٢٠/١١/٧ النصف

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | जो उस ने तुम्हें दिया | बेशक | तुम्हारा रब | तेज़ | सज़ा देने वाला | और बेशक वह | यक़ीनन बख़्शने वाला | निहायत मेहरबान | 165 |

क्या वह इन्तिज़ार कर रहे हैं मगर यह कि उन के पास फ़रिश्ते आएं या तुम्हारा रब आए या तुम्हारे रब की बाज़ निशानी आए, जिस दिन आएगी तुम्हारे रब की बाज निशानी, किसी के काम न आएगा उस का ईमान लाना जो पहले से ईमान न लाया था या अपने ईमान में कोई भलाई न कमाई थी, आप (स) फ़रमा दें इन्तिज़ार करो हम (भी) मुन्तज़िर हैं। (158) बेशक जिन लोगों ने तफ़्रका डाला अपने दीन में और गिरोह दर गिरोह हो गए, आप (स) का उन से कोई तअल्लुक नहीं, उन का मामला फ़क़त अल्लाह के हवाले है, फिर वह उन्हें जतला देगा वह जो कुछ करते थे। (159) जो शख़्स कोई नेकी लाए तो उस के लिए उस का दस बराबर (दस गुना अजर) है, और जो कोई बुराई लाए तो वह बदला न पाएगा मगर उस के बराबर (सिर्फ़ उस के बराबर), और वह ज़ुल्म न किए जाऐंगे। (160) आप (स) कह दीजिए बेशक मुझे मेरे रब ने सीधे रास्ते की तरफ़ राह दिखाई है, दुरुस्त दीन, इब्राहीम (अ) की मिल्लत, जो एक (अल्लाह) के हो रहने वाले थे, और वह मुश्रिकों में से न थे। (161) आप (स) कह दें बेशक मेरी नमाज़ और मेरी कुरबानी और मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह के लिए है जो सारे जहानों का रब है। (162) उस का कोई शरीक नहीं, मुझे उसी का हुक्म दिया गया है, और मैं सब से पहला मुसलमान (फ़रमांबरदार) हूं। (163) आप (स) कह दें क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और रब ढून्ढूं? और वही है हर शै का रब, हर शख़्स जो कुछ कमाएगा (उस का गुनाह) सिर्फ़ उस के ज़िम्मे (होगा), कोई उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा, फिर तुम्हें अपने रब की तरफ़ लौटना है, पस वह तुम्हें जतला देगा जिस में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे। (164) और वही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में नाइब बनाया, और बुलन्द किए तुम में से बाज के दरजे बाज पर, ताकि वह तुम्हें उस में आज़माए जो उस ने तुम्हें दिया, बेशक तुम्हारा रब जल्द सज़ा देने वाला है, और वह बेशक यक़ीनन बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (165)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-मीम-सॉद (1)

यह किताब तुम्हारी तरफ़ नाज़िल की गई है तो इस से तुम्हारे सीने में कोई तंगी न हो ताकि तुम उस (के ज़रीए) से डराओ, और ईमान वालों के लिए नसीहत है। (2)

उस की पैरवी करो जो तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर नाज़िल किया गया है, और पीछे न लगो उस के सिवा (और) रफ़ीक़ों के, बहुत कम तुम नसीहत क़ुबूल करते हो। (3)

और हम ने कितनी ही बस्तियां हलाक कीं, पस उन पर हमारा अ़ज़ाब रात को सोते में आया या दोपहर को आराम करते। (4)

पस उन की पुकार (इस के सिवा) न थी जब उन पर आया हमारा अ़ज़ाब, तो उन्हों ने कहा कि बेशक ज़ालिम हम ही थे। (5)

सो हम उन से ज़रूर पूछेंगे जिन की तरफ़ रसूल भेजे गए और हम रसूलों से (भी) ज़रूर पूछेंगे। (6)

अलबत्ता हम उन को अपने इल्म से अहवाल सुना देंगे और हम ग़ाइब न थे। (7)

और उस दिन (आमाल का) वज़न होना बरहक़ है, तो जिन की नेकियों के वज़न भारी हुए, वही फ़लाह (नजात) पाने वाले हैं। (8)

और जिन के (नेकियों के) वज़न हलके हुए तो वही लोग हैं जिन्हों ने अपनी जानों का नुक़सान किया, क्यों कि वह हमारी आयतों से ना इन्साफ़ी करते थे। (9)

और बेशक हम ने तुम्हें ज़मीन में ठिकाना दिया और हम ने उस में तुम्हारे लिए ज़िन्दगी के सामान बनाए, बहुत कम है जो शुक्र करते हैं। (10)

और अलबत्ता हम ने तुम्हें पैदा किया और फिर हम ने तुम्हारी शक्ल ओ सूरत बनाई, फिर हम ने फ़रिश्तों को कहा आदम (अ) को सिज्दा करो तो उन्हों ने सिज्दा किया सिवाए इब्लीस के, वह सिज्दा करने वालों में से न था। (11)

## آيَاتُهَا ٢٠٦ ❀ (٧) سُوْرَةُ الْاَعْرَافِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢٤

| रुकूआत 24 | (7) सूरतुल आराफ़ बुलनदियां | आयात 206 |
|---|---|---|

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓمّٓصٓ ﴿١﴾ كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِىْ صَدْرِكَ حَرَجٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई तंगी | तुम्हारे सीने में | सो न हो | तुम्हारी तरफ़ | नाज़िल की गई | किताब | 1 | अलिफ़-लाम-मीम-साद |

مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾ اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो नाज़िल किया गया | पैरवी करो | 2 | ईमान वालों के लिए | और नसीहत | इस से | ताकि तुम डराओ | इस से |

اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ قَلِيْلًا مَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | बहुत कम | रफ़ीक़ (जमा) | उस के सिवा | से | और पीछे न लगो | तुम्हारा रब | से | तुम्हारी तरफ़ (तुम पर) |

تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣﴾ وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रात में सोते | हमारा अज़ाब | पस उन पर आया | हम ने हलाक कीं | बस्तियां | से | और कितनी ही | 3 | नसीहत क़ुबूल करते हो |

اَوْ هُمْ قَآئِلُوْنَ ﴿٤﴾ فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَآ اِلَّآ اَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर यह कि (तो) | हमारा अ़ज़ाब | उन पर आया | जब | उन का कहना (उन की पुकार) | पस न था | 4 | क़ैलूला करते (दोपहर को आराम करते) | या वह |

قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥﴾ فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की तरफ़ | भेजे गए (रसूल) | उन से जो | सो हम ज़रूर पूछेंगे | 5 | ज़ालिम (जमा) | बेशक हम थे | उन्हों ने कहा |

وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦﴾ فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا كُنَّا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम न थे | इल्म से | उन को | अलबत्ता हम अहवाल सुना देंगे | 6 | रसूल (जमा) | और हम ज़रूर पूछेंगे |

غَآئِبِيْنَ ﴿٧﴾ وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ ِالْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मीज़ान (नेकियों के वज़न) | भारी हुए | तो जिस | बरहक़ | उस दिन | और वज़न | 7 | ग़ाइब |

فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨﴾ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो वही लोग | वज़न | हलके हुए | और जिस | 8 | फ़लाह पाने वाले | वह | तो वही |

الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ﴿٩﴾ وَلَقَدْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बेशक | 9 | ना इन्साफ़ी करते | हमारी आयतों से | क्यों कि थे | अपनी जानें | नुक़्सान किया | वह जिन्हों ने |

مَكَّنّٰكُمْ فِى الْاَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ۗ قَلِيْلًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बहुत कम | ज़िन्दगी के सामान | उस में | तुम्हारे लिए | और हम ने बनाए | ज़मीन में | हम ने तुम्हें ठिकाना दिया |

مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿١٠﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ ع ٨

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़रिश्तों को | फिर हम ने कहा | हम ने तुम्हारी शक्ल ओ सूरत बनाई | फिर | हम ने तुम्हें पैदा किया | और अलबत्ता | 10 | जो तुम शुक्र करते हो |

اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ۖ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۗ لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿١١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | सिज्दा करने वाले | से | वह न था | इब्लीस | सिवाए | तो उन्हों ने सिज्दा किया | आदम को | सिज्दा करो |

قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ۭ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِيْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तू ने मुझे पैदा किया | उस से | बेहतर | मैं | वह बोला | जब मैं ने तुझे हुक्म दिया | कि तू सिज्दा न करे | किस ने तुझे मना किया | उस ने फ़रमाया |

مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ﴿١٢﴾ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तेरे लिए | है | तो नहीं | इस (यहां) से | पस तू उतर जा | फ़रमाया | 12 | मिट्टी | से | और तू ने उसे पैदा किया | आग | से |

اَنْ تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿١٣﴾ قَالَ اَنْظِرْنِيْٓ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुझे मोहलत दे | वह बोला | 13 | ज़लील (जमा) | से | बेशक तू | पस निकल जा | इस में (यहां) | तू तकब्बुर करे | कि |

اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤﴾ قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿١٥﴾ قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तू ने मुझे गुमराह किया | तो जैसे | वह बोला | 15 | मोहलत मिलने वाले | से | बेशक तू | फ़रमाया | 14 | उठाए जाएंगे | उस दिन तक |

لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١٦﴾ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के सामने | से | मैं ज़रूर उन तक आऊंगा | फिर | 16 | सीधा | तेरा रास्ता | उन के लिए | मैं ज़रूर बैठूंगा |

وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ ۭ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के अक्सर | और तू न पाएगा | उन के बाएं | और से | उन के दाएं | और से | और पीछे से उन के |

شٰكِرِيْنَ ﴿١٧﴾ قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۭ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन से | तेरे पीछे लगा | अलबत्ता जो | मर्दूद हो कर | ज़लील | यहां से | निकल जा | फ़रमाया | 17 | शुक्र करने वाले |

لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٨﴾ وَيٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जन्नत | और तेरी बीवी | तू | रहो | और ऐ आदम (अ) | 18 | सब | तुम से | जहन्नम | ज़रूर भर दूंगा |

فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | पस हो जाओगे | दरख़्त | उस | और क़रीब न जाना | तुम चाहो | जहां से | तुम दोनों खाओ |

الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾ فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَاوٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | उन से | जो पोशीदा थी | उन के लिए | ताकि ज़ाहिर कर दे | शैतान | उन के लिए | पस वस्वसा डाला | 19 | ज़ालिम (जमा) |

سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम हो जाओ | इस लिए कि | मगर | दरख़्त | उस | से | तुम्हारा रब | तुम्हें मना किया | नहीं | और वह बोला | उन की सत्र की चीज़ें |

مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَقَاسَمَهُمَآ اِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता से | तुम्हारे लिए | मैं बेशक | और उन से क़सम खागया | 20 | हमेशा रहने वाले | से | या हो जाओ | फ़रिश्ते |

النّٰصِحِيْنَ ﴿٢١﴾ فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की सत्र की चीज़ें | उन के लिए | खुल गईं | दरख़्त | उन दोनों ने चखा | पस जब | धोके से | पस उन को माइल कर लिया | 21 | ख़ैर ख़ाह (जमा) |

وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۭ وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ اَلَمْ اَنْهَكُمَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या तुम्हें मना न किया था | उन का रब | और उन्हें पुकारा | जन्नत | पत्ते | से | अपने ऊपर | जोड़ जोड़ कर रखने | और लगे |

عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَآ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٢٢﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 22 | खुला | दुश्मन | तुम्हारा | शैतान | बेशक | तुम से | और कहा | दरख़्त | उस से मुतअ़ल्लिक़ |

उस ने फ़रमाया जब मैं ने तुझे हुक्म दिया तो तुझे किस ने मना किया कि तू सिज्दा न करे? वह बोला मैं उस से बेहतर हूँ, तू ने मुझे आग से पैदा किया और उसे मिट्टी से पैदा किया। (12) फ़रमाया पस तू यहां से उतर जा, तेरे लिए (लाइक़) नहीं कि तू ग़ुरूर ओ तकब्बुर करे यहां, पस निकल जा, बेशक तू ज़लीलों में से है। (13) वह बोला मुझे उस दिन तक मोहलत दे (जिस दिन मुर्दे) उठाए जाएंगे। (14) फ़रमाया बेशक तू मोहलत मिलने वालों में से है (तुझे मोहलत दी गई) (15) वह बोला जैसे तू ने मेरे गुमराह (होने का फ़ैसला) किया है। मैं ज़रूर बैठूंगा उन के लिए (गुमराह करने के लिए) तेरे सीधे रास्ते पर। (16) फिर मैं उन तक ज़रूर आऊंगा उन के सामने से और उन के पीछे से, और उन के दाएं से और उन के बाएं से, और तू उन में से अक्सर को शुक्र करने वाले न पाएगा। (17) फ़रमाया यहां से निकल जा ज़लील मर्दूद हो कर। उन में से जो तेरे पीछे लगा, अलबत्ता मैं ज़रूर जहन्नम को भर दूंगा तुम सब से (18) ऐ आदम (अ)! तुम और तुम्हारी बीवी (हव्वा) जन्नत में रहो, पस खाओ जहां से तुम चाहो और उस दरख़्त के क़रीब न जाना, (अगर ऐसा करोगे) तो ज़ालिमों में से हो जाओगे। (19) पस वस्वसा डाला शैतान ने उन के लिए (उन के दिल में) ताकि उन के सत्र की चीज़े जो उन से पोशीदा थीं उन के लिए ज़ाहिर कर दे, और बोला तुम्हारे रब ने तुम्हें उस दरख़्त से मना नहीं किया मगर इस लिए कि (कहीं) तुम फ़रिश्ते हो जाओ या हो जाओ हमेशा रहने वालों में से। (20) और उन से क़सम खागया कि मैं बेशक तुम्हारे लिए ख़ैर ख़ाहों से हूँ। (21) पस उस ने उन को माइल कर लिया धोके से, पस जब उन्हों ने दरख़्त चखा तो उन के लिए उन की सत्र की चीज़ें खुल गईं और वह अपने ऊपर जोड़ जोड़ कर रखने लगे (सत्र छुपाने के लिए) जन्नत के पत्ते, और उन के रब ने उन्हें पुकारा क्या मैं ने तुम्हें उस दरख़्त से मना नहीं किया था? और कहा था तुम्हें कि बेशक शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है। (22)

उन दोनों ने कहा ऐ हमारे रब! हम ने अपने ऊपर ज़ुल्म किया, और अगर तू ने हमें न बख़्शा और हम पर रह्म न किया तो हम ज़रूर ख़सारा पाने वालों में से हो जाएंगे। (23)

फ़रमाया तुम उतरो, तुम में से बाज़ बाज के दुश्मन हैं, और तुम्हारे लिए ज़मीन में एक वक़्त (मुऐयन) तक ठिकाना और सामाने ज़ीस्त है। (24)

फ़रमाया उस में तुम जियोगे और उस में तुम मरोगे और उसी से तुम निकाले जाओगे। (25)

ऐ औलादे आदम (अ)! हम ने तुम पर उतारा लिबास जो ढांके तुम्हारे सत्र और (मौजिबे) ज़ीनत हो, और परहेज़गारी का लिबास सब से बेहतर है, यह (लिबास) अल्लाह की निशानियों में से है ताकि वह ग़ौर करें। (26)

ऐ औलादे आदम (अ)! कहीं शैतान तुम्हें बहका न दे, जैसे उस ने निकाला तुम्हारे मां बाप (आदम ओ हव्वा) को जन्नत से, उन के लिबास उतरवा दिए ताकि उन के सत्र ज़ाहिर कर दे, बेशक तुम्हें देखता है वह और उस का क़बीला उस जगह से जहां तुम उन्हें नहीं देखते, बेशक हम ने शैतानों को उन लोगों का रफ़ीक़ बना दिया जो ईमान नहीं लाते। (27)

और जब वह बेहयाई करें तो कहें हम ने अपने बाप दादा को उस पर पाया है और अल्लाह ने हमें हुक्म दिया है उस का, आप (स) फ़रमा दें, बेशक अल्लाह बेहयाई का हुक्म नहीं देता, क्या तुम अल्लाह पर (वह बात) लगाते हो जो तुम नहीं जानते। (28)

आप (स) फ़रमा दें मेरे रब ने मुझे इन्साफ़ का हुक्म दिया है, और अपने चहरे हर नमाज़ के वक़्त सीधे करो, और उसे पुकारो ख़ालिस उस के हुक्म के फ़रमांबरदार हो कर, जैसे तुम्हें (पहले) पैदा किया तुम दोबारा भी (पैदा किए जाओगे)। (29)

एक फ़रीक़ को हिदायत दी और एक फ़रीक़ पर गुमराही साबित हो गई, बेशक उन्हों ने अल्लाह के सिवा शैतानों को अपना रफ़ीक़ बना लिया है और समझते हैं कि वह बेशक हिदायत पर हैं। (30)

قَـالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ٚ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | हम ज़रूर हो जाएंगे | और हम पर रह्म (न) किया | न बख़्शा तू ने हमें | और अगर | अपने ऊपर | हम ने ज़ुल्म किया | ऐ हमारे रब | उन दोनों ने कहा |

الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾ قَـالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَـكُمْ فِى الْاَرْضِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन में | और तुम्हारे लिए | दुश्मन | बाज़ | तुम में से बाज | उतरो | फ़रमाया | 23 | ख़सारा पाने वाले |

مُسْـتَقَرٌّ وَّمَـتَـاعٌ اِلٰى حِـيْـنٍ ﴿٢٤﴾ قَـالَ فِـيْـهَا تَـحْـيَـوْنَ وَفِـيْـهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उस में | तुम जियोगे | उस में | फ़रमाया | 24 | एक वक़्त तक | और सामान | ठिकाना |

تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿٢٥﴾ يٰبَنِىْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا ع ٢ ١٥ ٩

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लिबास | तुम पर | हम ने उतारा | ऐ औलादे आदम (अ) | 25 | तुम निकाले जाओगे | और उस से | तुम मरोगे |

يُّـوَارِىْ سَوْاٰتِـكُمْ وَرِيْـشًـا ۭ وَلِـبَـاسُ التَّقْوٰى ذٰلِـكَ خَـيْرٌ ۭ ذٰلِـكَ مِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | यह | बेहतर | यह | परहेज़गारी | और लिबास | और ज़ीनत | तुम्हारे सत्र | ढांके |

اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَـذَّكَّـرُوْنَ ﴿٢٦﴾ يٰبَنِىْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शैतान | न बहका दे तुम्हें | ऐ औलादे आदम (अ) | 26 | वह ग़ौर करें | ताकि वह | अल्लाह की निशानियां |

كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ۭ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के सत्र | ताकि ज़ाहिर कर दे | उन के लिबास | उन से | उतरवा दिए | जन्नत | से | तुम्हारे मां बाप | उस ने निकाला | जैसे |

اِنَّـهٗ يَـرٰكُمْ هُـوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۭ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शैतान (जमा) | बेशक हम ने बनाया | तुम उन्हें नहीं देखते | जहां | से | और उस का क़बीला | वह | तुम्हें देखता है वह | बेशक |

اَوْلِـيَـآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَـالُـوْا وَجَدْنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने पाया | कहें | कोई बेहयाई | वह करें | और जब | 27 | ईमान नहीं लाते | उन लोगों के लिए | दोस्त रफ़ीक़ |

عَلَيْهَآ اٰبَـآءَنَـا وَاللّٰهُ اَمَـرَنَـا بِهَا ۭ قُـلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَـاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ ۭ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेहयाई का | हुक्म नहीं देता | बेशक अल्लाह | फ़रमा दें | उस का | हमें हुक्म दिया | और अल्लाह | अपने बाप दादा | इस पर |

اَتَـقُـوْلُـوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَـا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨﴾ قُـلْ اَمَـرَ رَبِّـىْ بِالْقِسْطِ ۣ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इन्साफ़ का | मेरा रब | हुक्म दिया | फ़रमा दें | 28 | तुम नहीं जानते | जो | अल्लाह पर | क्या तुम कहते हो (लगाते हो) |

وَاَقِـيْـمُـوْا وُجُـوْهَـكُـمْ عِـنْـدَ كُلِّ مَـسْـجِـدٍ وَّادْعُــوْهُ مُـخْـلِـصِـيْـنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ख़ालिस हो कर | और पुकारो | हर मस्जिद (नमाज़) | नज़दीक (वक़्त) | अपने चहरे | और क़ाइम करो (सीधे करो) |

لَـهُ الـدِّيْـنَ ۥ كَـمَـا بَـدَاَكُـمْ تَـعُـوْدُوْنَ ﴿٢٩﴾ فَـرِيْـقًـا هَـدٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने हिदायत दी | एक फ़रीक़ | 29 | दोबारा (पैदा) होगे | तुम्हारी इब्तिदा की (पैदा किया) | जैसे | दीन (हुक्म) | उस के लिए |

وَفَـرِيْـقًـا حَـقَّ عَـلَـيْـهِمُ الـضَّـلٰـلَـةُ ۭ اِنَّـهُـمُ اتَّـخَـذُوا الـشَّـيٰـطِـيْـنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शैतान (जमा) | उन्हों ने बना लिया | बेशक वह | गुमराही | उन पर | साबित हो गई | और एक फ़रीक़ |

اَوْلِــيَــآءَ مِــنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَـحْـسَـبُـوْنَ اَنَّـهُـمْ مُّـهْـتَـدُوْنَ ﴿٣٠﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | हिदायत पर हैं | कि वह बेशक | और समझते हैं | अल्लाह के सिवा | से | रफ़ीक़ |

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُـــذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और पियो | और खाओ | हर मस्जिद (नमाज) | क़रीब (वक्त) | अपनी ज़ीनत | लेलो (इख़्तियार करलो) | ऐ औलादे आदम |

٣ ع ١٠ وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣١﴾ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की जीनत | हराम किया | किस | फ़रमा दें | 31 | फुज़ूल ख़र्च करने वाले | दोस्त नही रखता | बेशक वह | और बेजा ख़र्च न करो |

الَّتِيْٓ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ۭ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान लाए | उन लोगों के लिए जो | यह | फ़रमा दें | रिज़्क़ | से | और पाक | अपने बन्दों के लिए | उस ने निकाली | जो कि |

فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गिरोह के लिए | आयतें | हम खोल कर बयान करते हैं | इसी तरह | क़ियामत के दिन | ख़ालिस तौर पर | दुनिया | ज़िन्दगी में |

يَّعْلَمُوْنَ ﴿٣٢﴾ قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पोशीदा | और जो | उन से | ज़ाहिर है | जो | बेहयाई | मेरा रब | हराम किया | सिर्फ़ (तो) | फ़रमा दें | 32 | वह जानते हैं |

وَالْاِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई सनद | उस की | नहीं नाज़िल की | जो-जिस | अल्लाह के साथ | तुम शरीक करो | और यह कि | नाहक़ को | और सरकशी | और गुनाह |

وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَاۗءَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आएगा | पस जब | एक मुद्दत मुक़र्रर | और हर उम्मत के लिए | 33 | तुम नहीं जानते | जो | अल्लाह पर | तुम कहो (लगाओ) | और यह कि |

اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٤﴾ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اِمَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर | ऐ औलादे आदम | 34 | आगे बढ़ सकेंगे | और न | एक घड़ी | न वह पीछे हो सकेंगे | उन का मुक़र्ररा वक़्त |

يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ ۙ فَمَنِ اتَّقٰى وَاَصْلَحَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और इस्लाह कर ली | डरा | तो जो | मेरी आयात | तुम पर (तुम्हें) | बयान करें (सुनाएं) | तुम में से | रसूल | तुम्हारे पास आएं |

فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारी आयात को | झुटलाया | और वह लोग जो | 35 | ग़मगीन होंगे | वह | और न | उन पर | कोई ख़ौफ़ नही |

وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَآ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٦﴾ فَمَنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस कौन | 36 | हमेशा रहेंगे | उस में | वह | दोज़ख़ वाले | यही लोग | उन से | और तकब्बुर किया |

اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ۭ اُولٰۗىِٕكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यही लोग | उस की आयतों को | या झुटलाया | झूट | अल्लाह पर | बुहतान बान्धे | उस से जो | बड़ा ज़ालिम |

يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ ۭ حَتّٰٓي اِذَا جَاۗءَتْهُمْ رُسُلُنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारे भेजे हुए | उन के पास आएंगे | जब | यहां तक कि | किताब (लिखा हुआ) | से | उन का नसीब (हिस्सा) | उन्हें पहुँचेगा |

يَتَوَفَّوْنَهُمْ ۙ قَالُوْٓا اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के सिवा | से | पुकारते | तुम थे | कहां जो | वह कहेंगे | उन की जान निकालने |

قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا وَشَهِدُوْا عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿٣٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 37 | काफ़िर थे | कि वह | अपनी जानें | पर | और गवाही देंगे | हम से | वह गुम हो गए | वह कहेंगे |

ऐ औलादे आदम (अ)! अपनी जीनत हर नमाज के वक्त इख़्तियार करो और खाओ और पियो और बेजा खर्च न करो, बेशक अल्लाह फुज़ूल ख़र्च करने वालों को दोस्त नहीं रखता। (31)

आप (स) फ़रमा दें किस ने हराम की है अल्लाह की (वह) ज़ीनत जो उस ने अपने बन्दों के लिए निकाली (पैदा) की है, और पाक रिज़्क़, आप (स) फ़रमा दें यह दुनिया की ज़िन्दगी में उन लोगों के लिए है जो ईमान लाए और ख़ालिस तौर पर क़ियामत के दिन (उन्हीं का हिस्सा है), इसी तरह हम आयतें खोल कर बयान करते हैं उस गिरोह के लिए जो जानते हैं। (32)

आप फ़रमा दें मेरे रब ने तो हराम क़रार दिया है बेहयाइयों को, उन में जो ज़ाहिर हैं और जो पोशीदा है, और गुनाह और सरकशी नाहक़ को, और यह कि तुम अल्लाह के साथ शरीक करो जिस की उस ने कोई सनद नहीं उतारी और यह कि तुम अल्लाह पर लगाओ (वह बात) जो तुम नहीं जानते। (33)

और हर उम्मत के लिए एक मुदद्त मुक़र्रर है, पस जब उन का मुक़र्ररा वक़्त आजाएगा तो न वह पीछे हो सकेंगे एक घड़ी और न आगे बढ़ सकेंगे। (34)

ऐ औलादे आदम (अ)! अगर तुम्हारे पास तुम ही से मेरे रसूल आएं, सुनाएं तुम्हें मेरी आयात तो जो डरा और उस ने इस्लाह कर ली, उन पर न कोई ख़ौफ होगा और न वह ग़मगीन होंगे। (35)

और जिन लोगों ने हमारी आयात को झुटलाया और उन से तकब्बुर किया यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (36)

पस उस से बड़ा जालिम कौन जिस ने अल्लाह पर झूट बुहतान बान्धा या उस की आयतों को झुटलाया, यही वह लोग हैं जिन्हें उन का हिस्सा किताब (लौहे महफ़ूज़) में लिखा हुआ पहुँचेगा, यहां तक जब हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उन के पास उन की जान निकालने आएंगे वह कहेंगे कहां हैं वह जिन को तुम अल्लाह के सिवा पुकारते थे? वह (जवाब में) कहेंगे वह हम से गुम हो गए, और वह अपनी जानों पर (अपने ख़िलाफ़) गवाही देंगे कि वह काफ़िर थे। (37)

(अल्लाह) फ़रमाएगा तुम दाख़िल हो जाओ जहन्नम में उन उम्मतों के हमराह जो गुज़र चुकीं तुम से क़ब्ल, जिन्नों और इन्सानों में से, जब कोई उम्मत दाख़िल होगी वह अपनी साथी (पहली उम्मत) पर लानत करेगी, यहां तक कि जब सब उस में दाख़िल हो जाएंगे तो उन के पिछले अपने पहलों के बारे में कहेंगे, ऐ हमारे रब! यह हैं जिन्हों ने हम को गुमराह किया, पस उन्हें आग का दो गुना अज़ाब दे। (अल्लाह तआला) फ़रमाएगा हर एक के लिए दो गुना है, लेकिन तुम जानते नहीं। (38)

और उन के पहले अपने पिछलों को कहेंगे, तुम्हें हम पर कोई बड़ाई नहीं, लिहाज़ा चखो अज़ाब उस के बदले जो तुम करते थे। (39)

बेशक जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया और उन से तकब्बुर किया, उन के लिए आस्मान के दरवाज़े न खोले जाएंगे और जन्नत में दाख़िल न होंगे जब तक ऊँट दाख़िल (न) हो जाए सुई के नाके में (जो मुमकिन नहीं), इसी तरह हम मुजरिमों को बदला देते हैं। (40)

उन के लिए जहन्नम का बिछौना है और उन के ऊपर से (जहन्नम ही का) ओढ़ना है, इसी तरह हम ज़ालिमों को बदला देते हैं। (41)

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अमल किए, हम किसी पर बोझ नहीं डालते मगर उस की विसात के मुताबिक़, यही लोग जन्नत वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (42)

और हम ने उन के सीनों से कीने खींच लिए, उन (जन्नतों) के नीचे नहरें बहती हैं, और वह कहेंगे तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिस ने हमें इस की तरफ़ रहनुमाई की, और अगर अल्लाह हमें हिदायत न देता (रहनुमाई न फ़रमाता) तो हम हिदायत पाने वाले न थे। अलबत्ता हमारे रब के रसूल हक़ के साथ आए, और उन्हें निदा दी जाएगी कि तुम इस जन्नत के वारिस बनाए गए (उन आमाल के) सिले में जो तुम करते थे। (43)

قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और इन्सान | जिन्नात | से | तुम से क़ब्ल | गुज़र चुकीं | उम्मतों में (हमराह) | तुम दाख़िल हो जाओ | फ़रमाएगा |

فِي النَّارِ ۭ كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ اُخْتَهَا ۭ حَتّٰٓي اِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | मिल जाएंगे | जब | यहां तक | अपनी साथी | लानत करेगी | कोई उम्मत | दाख़िल होगी | जब भी | आग (दोज़ख) में |

جَمِيْعًا ۙ قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ لِاُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا هٰٓؤُلَاۗءِ اَضَلُّوْنَا فَاٰتِهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस दे उन को | उन्हों ने हमें गुमराह किया | यह हैं | ऐ हमारे रब | अपने पहलों के बारे में | उन की पिछली क़ौम | कहेगी | सब |

عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ڛ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ ۳۸

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 38 | तुम जानते | नहीं | और लेकिन | दो गुना | हर एक के लिए | फ़रमाएगा | आग का | दो गुना | अज़ाब |

وَقَالَتْ اُوْلٰىهُمْ لِاُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई बड़ाई | हम पर | है तुम्हें | पस नहीं | अपने पिछलों को | उन के पहले | और कहेंगे |

فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ۳۹ اِنَّ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| झुटलाया | वह लोग जो | बेशक | 39 | तुम कमाते थे (करते थे) | उस का बदला | अज़ाब | चखो |

بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَاۗءِ وَلَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न | आस्मान | दरवाज़े | उन के लिए | न खोले जाएंगे | उन से | और तकब्बुर किया उन्हों ने | हमारी आयतों को |

يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰي يَلِجَ الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ ۭ وَكَذٰلِكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और इसी तरह | सुई | नाका | में | ऊँट | दाख़िल होजाए | यहां तक (जब तक) | जन्नत | दाख़िल होंगे |

نَجْزِي الْمُجْرِمِيْنَ ۴۰ لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۭ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ओढ़ना | उन के ऊपर | और से | बिछौना | जहन्नम का | उन के लिए | 40 | मुजरिम (जमा) | हम बदला देते हैं |

وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ۴۱ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अच्छे | और उन्हों ने अमल किए | ईमान लाए | और जो लोग | 41 | ज़ालिम (जमा) | हम बदला देते हैं | और इसी तरह |

لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَآ ۡ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | वह | जन्नत वाले | यही लोग | उस की वुस्अत | मगर | किसी पर | हम बोझ नहीं डालते |

خٰلِدُوْنَ ۴۲ وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ تَجْرِيْ مِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | बहती हैं | कीने | उन के सीने | में | जो | और खींच लिए हम ने | 42 | हमेशा रहेंगे |

تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ ۚ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ هَدٰىنَا لِهٰذَا ۣ وَمَا كُنَّا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम थे | और न | इस की तरफ़ | हमारी रहनुमाई की | जिस ने | अल्लाह के लिए | तमाम तारीफ़ें | और वह कहेंगे | नहरें | उन के नीचे |

لِنَهْتَدِيَ لَوْلَآ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ ۚ لَقَدْ جَاۗءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۭ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हक़ के साथ | हमारा रब | रसूल | आए | अलबत्ता | अल्लाह | कि हमें हिदायत देता | अगर न | कि हम हिदायत पाते |

وَنُوْدُوْٓا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۴۳

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 43 | करते थे | तुम थे | सिले में | तुम उस के वारिस होंगे | जन्नत | यह कि तुम | कि | और उन्हें निदा दी जाएगी |

وَنَـادٰۤى اَصۡحٰبُ الۡجَنَّةِ اَصۡحٰبَ النَّـارِ اَنۡ قَـدۡ وَجَدۡنَـا مَا وَعَدَنَـا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हम से वादा किया | जो | तहक़ीक़ हम ने पा लिया | कि | दोज़ख़ वालों को | जन्नत वाले | और पुकारेंगे |

رَبُّنَا حَقًّا فَهَلۡ وَجَدۡتُّمۡ مَّا وَعَـدَ رَبُّـكُمۡ حَقًّا ؕ قَـالُوۡا نَعَمۡ ۚ فَـاَذَّنَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो पुकारेगा | हाँ | वह कहेंगे | सच्चा | तुम्हारा रब | जो वादा किया | तुम ने पाया | तो क्या | सच्चा | हमारा रब |

مُـؤَذِّنٌۢ بَيۡنَهُمۡ اَنۡ لَّعۡنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيۡنَ ﴿٤٤﴾ الَّـذِيۡـنَ يَـصُـدُّوۡنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रोकते थे | जो लोग | 44 | ज़ालिम (जमा) | पर | अल्लाह की लानत | कि | उन के दरमियान | एक पुकारने वाला |

وقف لازم عَـنۡ سَـبِيۡـلِ اللّٰهِ وَيَـبۡـغُوۡنَـهَا عِـوَجًـا ۚ وَهُـمۡ بِـالۡاٰخِـرَةِ كٰـفِـرُوۡنَ ﴿٤٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 45 | काफ़िर (जमा) | आख़िरत के | और वह | कजी | और उस में तलाश करते थे | अल्लाह का रास्ता | से |

وَبَيۡنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَعَلَى الۡاَعۡرَافِ رِجَالٌ يَّعۡرِفُوۡنَ كُلًّاۢ بِسِيۡمٰهُمۡ ۚ وَنَادَوۡا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और पुकारेंगे | उन की पेशानी से | हर एक | पहचान लेंगे | कुछ आदमी | आराफ़ | और पर | एक हिजाब | और उन के दरमियान |

اَصۡحٰبَ الۡجَنَّةِ اَنۡ سَلٰمٌ عَلَيۡكُمۡ ۟ لَمۡ يَدۡخُلُوۡهَا وَهُمۡ يَطۡمَعُوۡنَ ﴿٤٦﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 46 | उम्मीदवार है | और वह | वह उस में दाख़िल नहीं हुए | तुम पर | सलाम | कि | जन्नत वाले |

وَاِذَا صُرِفَتۡ اَبۡصَارُهُمۡ تِلۡقَآءَ اَصۡحٰبِ النَّارِ ۙ قَالُوۡا رَبَّنَا لَا تَجۡعَلۡنَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हमें न कर | ऐ हमारे रब | कहेंगे | दोज़ख़ वाले | तरफ़ | उन की निगाहें | फिरेंगी | और जब |

مَعَ الۡقَوۡمِ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿٤٧﴾ وَنَـادٰۤى اَصۡحٰبُ الۡاَعۡـرَافِ رِجَـالًا يَّعۡرِفُوۡنَهُمۡ ع ٥ / ١٢

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह उन्हें पहचान लेंगे | कुछ आदमी | आराफ़ वाले | और पुकारेंगे | 47 | ज़ालिम (जमा) | लोग | साथ |

بِسِيۡمٰهُمۡ قَالُوۡا مَاۤ اَغۡنٰى عَنۡكُمۡ جَمۡعُكُمۡ وَمَا كُنۡتُمۡ تَسۡتَكۡبِرُوۡنَ ﴿٤٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 48 | तुम तकब्बुर करते थे | और जो | तुम्हारा जत्था | तुम्हें | न फ़ाइदा दिया | वह कहेंगे | उन की पेशानी से |

اَهٰۤـــؤُلَآءِ الَّـــذِيۡـــنَ اَقۡـسَـمۡـتُـمۡ لَا يَـنَـالُـهُـمُ اللّٰهُ بِـرَحۡـمَـةٍ ؕ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपनी कोई रहमत | अल्लाह | उन्हें न पहुँचाएगा | तुम क़सम खाते थे | वह जो कि | क्या अब यह वही |

اُدۡخُـلُـوا الۡجَنَّةَ لَا خَـوۡفٌ عَلَيۡكُمۡ وَلَاۤ اَنۡـتُـمۡ تَـحۡـزَنُـوۡنَ ﴿٤٩﴾ وَنَـادٰۤى

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और पुकारेंगे | 49 | ग़मगीन होगे | तुम | और न | तुम पर | कोई ख़ौफ़ | न | जन्नत | तुम दाख़िल हो जाओ |

اَصۡحٰبُ النَّـارِ اَصۡحٰبَ الۡجَنَّةِ اَنۡ اَفِيۡضُوۡا عَلَيۡنَا مِنَ الۡمَآءِ اَوۡ مِمَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से जो | या | पानी | से | हम पर | बहाओ (पहुँचाओ) | कि | जन्नत वाले | दोज़ख़ वाले |

رَزَقَـكُـمُ اللّٰهُ ؕ قَـالُـوۡۤا اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿٥٠﴾ الَّـذِيۡـنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो | 50 | काफ़िर (जमा) | पर | उसे हराम कर दिया | बेशक अल्लाह | वह कहेंगे | अल्लाह | तुम्हें दिया |

اتَّـخَـذُوۡا دِيۡـنَـهُـمۡ لَـهۡـوًا وَّلَـعِـبًـا وَّغَـرَّتۡـهُـمُ الۡـحَـيٰـوةُ الـدُّنۡـيَـا ۚ فَـالۡـيَـوۡمَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस आज | दुनिया | ज़िन्दगी | और उन्हें धोके में डाल दिया | और कूद | खेल | अपना दीन | उन्हों ने बना लिया |

نَنۡسٰهُمۡ كَمَا نَسُوۡا لِقَآءَ يَوۡمِهِمۡ هٰذَا ۙ وَمَا كَانُوۡا بِاٰيٰتِنَا يَجۡحَدُوۡنَ ﴿٥١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 51 | इन्कार करते | हमारी आयतों से | और जैसे-थे | यह-इस | उन का दिन | मिलना | जैसे उन्हों ने भुलाया | हम उन्हें भुलादेंगे |

और जन्नत वाले दोज़ख़ वालों को पुकारेंगे कि तहक़ीक़ हम ने पालिया जो हम से वादा किया था हमारे रब ने सच्चा, तुम से तुम्हारे रब ने जो वादा किया था क्या तुम ने भी पालिया सच्चा? वह कहेंगे हाँ! तो एक पुकारने वाला पुकारेगा उन के दरमियान कि (उन) ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत। (44)

जो लोग अल्लाह के रास्ते से रोकते थे और उस में कजी तलाश करते थे, और वह आख़िरत के काफ़िर (मुन्किर) थे। (45)

और उन के दरमियान एक हिजाब (पर्दा) है, आराफ़ पर कुछ आदमी होंगे, वह हर एक को उस की पेशानी से पहचान लेंगे, और जन्नत वालों को पुकारेंगे कि सलाम हो तुम पर, वह (आराफ़ वाले) जन्नत में दाख़िल नहीं हुए, और वह उम्मीदवार हैं। (46)

और जब उन की निगाहें फिरेंगी दोज़ख़ वालों की तरफ़ तो कहेंगे ऐ हमारे रब! हमें ज़ालिमों के साथ न कर। (47)

और पुकारेंगे आराफ़ वाले कुछ आदमियों को कि उन्हें उन की पेशानी से पहचान लेंगे, वह कहेंगे तुम्हें कुछ फ़ाइदा न दिया तुम्हारे जत्थे ने और जिन पर तुम तकब्बुर करते थे। (48)

क्या अब यह वही लोग नहीं हैं कि तुम क़सम खाया करते थे कि अल्लाह उन्हें अपनी कोई रहमत न पहुँचाएगा, आज उन्हें से कहा गया कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओ, न तुम पर कोई ख़ौफ़ है न तुम ग़मगीन होगे। (49)

और दोज़ख़ वाले पुकारेंगे जन्नत वालों को कि हम पर (थोड़ा) पानी बहाओ (पहुँचाओ) या उस में से (कुछ) जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है, वह कहेंगे बेशक अल्लाह ने यह काफ़िरों पर हराम कर दिया है। (50)

जिन्हों ने अपने दीन को खेल कूद बना लिया और दुनिया की ज़िन्दगी ने उन्हें धोके में डाल दिया, पस आज हम उन्हें भुलादेंगें जैसे उन्हों ने (आज के) इस दिन का मिलना फ़रामोश कर दिया था, और जैसे हमारी आयतों से इन्कार करते थे। (51)

और हम उन के पास एक किताब लाए जिसे हम ने तफ़सील से बयान किया इल्म (की बुनियाद) पर ईमान लाने वाले लोगों के लिए हिदायत और रहमत। (52)

क्या वह यही इन्तिज़ार कर रहे हैं कि उस का कहा हुआ पूरा हो जाए, जिस दिन उस का कहा हुआ हो जाएगा, तो वह लोग जिन्हों ने उसे पहले भुला दिया था वह कहेंगे, बेशक हमारे रब के रसूल हक़ बात लाए थे, तो क्या हमारे लिए कोई सिफ़ारिश करने वाले हैं कि हमारी सिफ़ारिश करें, या हम (दुनिया में) लौटाए जाएं कि हम उस के ख़िलाफ़ अ़मल करें जो हम (पहले) करते थे, बेशक उन्हों ने अपनी जानों का (अपना) नुक़्सान किया, और उन से गुम हो गया जो वह झूट घड़ते थे। (53)

बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिस ने आस्मानों और ज़मीन छः दिन में बनाए, और फिर क़रार फ़रमाया अ़र्श पर, रात को दिन पर ढांक देता है, उस के पीछे (दिन) दौड़ता हुआ आता है, और सूरज और चाँद और सितारे उस के हुक्म से मुसख़्ख़र हैं, याद रखो उसी के लिए है पैदा करना और हुक्म देना, अल्लाह बरकत वाला है सारे जहानों का रब। (54)

अपने रब को पुकारो गिड़ गिड़ा कर और आहिस्ता से, बेशक वह हद से गुज़रने वालों को दोस्त नहीं रखता। (55)

और फ़साद न मचाओ ज़मीन में उस की इस्लाह के बाद, और उसे पुकारो डरते और उम्मीद रखते हुए, बेशक अल्लाह की रहमत क़रीब है नेकी करने वालों के। (56)

और वही है जो अपनी रहमत (बारिश) से पहले हवाएं बतौरे ख़ुशख़बरी भेजता है, यहां तक कि जब वह भारी बादल उठा लाएं तो हम ने उन्हें किसी मुर्दा शहर की तरफ़ हांक दिया, फिर उस से पानी उतारा (बरसाया) फिर हम ने निकाले उस से हर क़िस्म के फल, इसी तरह हम मुर्दों को निकालेंगे ताकि तुम ग़ौर करो। (57)

وَلَـقَـدْ جِئْـنٰـهُـمْ بِـكِـتٰـبٍ فَـصَّـلْـنٰـهُ عَـلٰى عِـلْـمٍ هُـدًى وَّرَحْـمَـةً

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और रहमत | हिदायत | इल्म | पर | हम ने उसे तफ़सील से बयान किया | एक किताब | और अलबत्ता हम लाए उन के पास |

لِّـقَـوْمٍ يُّـؤْمِـنُـوْنَ ﴿٥٢﴾ هَـلْ يَـنْـظُـرُوْنَ اِلَّا تَـاْوِيْـلَـهٗ ؕ يَـوْمَ يَـاْتِـىْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आएगा | जिस दिन | उस का कहना पूरा हो जाए | मगर (यही कि) | वह इन्तिज़ार कर रहे हैं | क्या | 52 | जो ईमान लाए हैं | लोगों के लिए |

تَـاْوِيْـلُـهٗ يَـقُـوْلُ الَّـذِيْـنَ نَـسُـوْهُ مِـنْ قَـبْـلُ قَـدْ جَـآءَتْ رُسُـلُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रसूल (जमा) | बेशक लाए | पहले से | उन्हों ने भुला दिया | वह लोग जो | कहेंगे | उस का कहा हुआ |

رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ اَوْ نُـرَدُّ فَنَعْمَلَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सो हम करें | या हम लौटाए जाएं | हमारी | कि सिफ़ारिश करें | सिफ़ारिश करने वाले | कोई | हमारे लिए | तो क्या है | हक़ | हमारा रब |

غَـيْـرَ الَّـذِىْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ قَـدْ خَـسِـرُوْٓا اَنْـفُـسَـهُـمْ وَضَـلَّ عَنْهُمْ مَّـا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | उन से | और गुम हो गया | अपनी जानें | बेशक नुक़्सान किया उन्हों ने | हम करते थे | उस के ख़िलाफ़ जो |

كَانُـوْا يَـفْـتَـرُوْنَ ﴿٥٣﴾ اِنَّ رَبَّـكُـمُ اللّٰهُ الَّـذِىْ خَـلَـقَ الـسَّـمٰـوٰتِ ع ٦ ١٣

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मान (जमा) | पैदा किया | वह जा जिस | अल्लाह | तुम्हारा रब | बेशक | 53 | वह इफ़्तिरा करते (झूट घड़ते) थे |

وَالْاَرْضَ فِـىْ سِـتَّـةِ اَيَّـامٍ ثُـمَّ اسْـتَـوٰى عَلَى الْـعَـرْشِ ۫ يُغْشِى الَّيْلَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रात | ढांकता है | अ़र्श | पर | क़रार फ़रमाया | फिर | दिन | छः (6) | में | और ज़मीन |

الـنَّـهَـارَ يَـطْـلُـبُـهٗ حَـثِـيْـثًا ۙ وَّالـشَّـمْـسَ وَالْـقَـمَـرَ وَالـنُّـجُـوْمَ مُـسَـخَّـرٰتٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मुसख़्ख़र | और सितारे | और चाँद | और सूरज | दौड़ता हुआ | उस के पीछे आता है | दिन |

بِـاَمْـرِهٖ ؕ اَلَا لَـهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْـرُ ؕ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٥٤﴾ اُدْعُـوْا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पुकारो | 54 | तमाम जहान | रब | बरकत वाला है अल्लाह | और हुक्म देना | पैदा करना | उस के लिए | याद रखो | उस का हुक्म |

رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ؕ اِنَّـهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٥٥﴾ وَلَا تُفْسِدُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न फ़साद मचाओ | 55 | हद से गुज़रने वाले | दोस्त नहीं रखता | बेशक वह | और आहिस्ता | गिड़ गिड़ा कर | अपने रब को |

فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُـوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْـمَـتَ اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की रहमत | बेशक | और उम्मीद रखते | डरते | और उसे पुकारो | उस की इस्लाह | बाद | ज़मीन में |

قَـرِيْـبٌ مِّـنَ الْـمُـحْـسِـنِـيْـنَ ﴿٥٦﴾ وَهُـوَ الَّـذِىْ يُـرْسِـلُ الـرِّيٰـحَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हवाएं | भेजता है | जो-जिस | और वह | 56 | एहसान (नेकी) करने वाले | से | क़रीब |

بُـشْـرًاۢ بَـيْـنَ يَـدَىْ رَحْـمَـتِـهٖ ؕ حَـتّٰـى اِذَآ اَقَـلَّـتْ سَـحَـابًا ثِـقَـالًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| भारी | बादल | उठा लाएं | जब | यहां तक कि | अपनी रहमत (बारिश) | आगे | बतौरे ख़ुशख़बरी |

سُـقْـنٰـهُ لِـبَـلَـدٍ مَّـيِّـتٍ فَـاَنْـزَلْـنَـا بِـهِ الْـمَـآءَ فَـاَخْـرَجْـنَـا بِـهٖ مِـنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | उस से | फिर हम ने निकाला | पानी | उस से | फिर हम ने उतारा | मुर्दा | किसी शहर की तरफ़ | हम ने उन्हें हांक दिया |

كُلِّ الـثَّـمَـرٰتِ ؕ كَـذٰلِـكَ نُـخْـرِجُ الْـمَـوْتٰى لَـعَـلَّـكُـمْ تَـذَكَّـرُوْنَ ﴿٥٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 57 | ग़ौर करो | ताकि तुम | मुर्दे | हम निकालेंगे | इसी तरह | हर फल |

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۚ وَالَّذِىْ خَبُثَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ना पाकीज़ा (खराब) | और वह जो | उस का रब | हुक्म से | उस का सबज़ह | निकलता है | पाकीज़ा | और ज़मीन |

ع ٧ ٥ ١٤ لَا يَخْرُجُ اِلَّا نَكِدًا ۚ كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّشْكُرُوْنَ ﴿٥٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 58 | वह शुक्र अदा करते हैं | लोगों के लिए | आयतें | फेर फेर कर बयान करते हैं | इसी तरह | नाकिस | मगर | नहीं निकलता |

لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं | अल्लाह की इबादत करो | ऐ मेरी कौम | पस उस ने कहा | उस की कौम | तरफ़ | नूह (अ) | अलबत्ता हम ने भेजा |

لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۗ اِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٥٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 59 | एक बड़ा दिन | अज़ाब | तुम पर | डरता हूँ | बेशक मैं | उस के सिवा | कोई माबूद | तुम्हारे लिए |

قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهٖٓ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦٠﴾ قَالَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने कहा | 60 | खुली | गुमराही | में | अलबत्ता तुझे देखते हैं | बेशक हम | उस की कौम | से | सरदार | वाले |

يٰقَوْمِ لَيْسَ بِىْ ضَلٰلَةٌ وَّلٰكِنِّىْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 61 | सारे जहान | रब | से | भेजा हुआ | और लेकिन मैं | कुछ भी गुमराही | मेरे अन्दर | नहीं | ऐ मेरी कौम |

اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّىْ وَاَنْصَحُ لَكُمْ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 62 | तुम जानते | जो नहीं | अल्लाह (की तरफ़) से | और जानता हूँ | तुम्हें | और नसीहत करता हूँ | अपना रब | पैग़ाम (जमा) | मैं पहुँचाता हूँ तुम्हें |

اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम में से | एक आदमी | पर | तुम्हारा रब | से | नसीहत | तुम्हारे पास आई | कि | क्या तुम्हें तअज्जुब हुआ |

لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوْا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٦٣﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَيْنٰهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो हम ने उसे बचा लिया | पस उन्हों ने उसे झुटलाया | 63 | रह्म किया जाए | और ताकि तुम पर | और ताकि तुम परहेज़गारी इख़्तियार करो | ताकि वह डराए तुम्हें |

وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ فِى الْفُلْكِ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारी आयतें | उन्हों ने झुटलाया | वह लोग जो | और हम ने गर्क़ कर दिया | कश्ती में | उस के साथ | और जो लोग |

ع ٨ ٦ ١٥ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ۗ قَالَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने कहा | हूद (अ) | उन के भाई | आद | और तरफ़ | 64 | अन्धे | लोग | थे | बेशक वह |

يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۗ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٦٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 65 | तो क्या तुम नहीं डरते | उस के सिवा | माबूद | कोई | तुम्हारे लिए नहीं | अल्लाह की इबादत करो | ऐ मेरी कौम |

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖٓ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِىْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| में | अलबत्ता हम तुझे देखते हैं | उस की कौम | से | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | सरदार | बोले |

سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦٦﴾ قَالَ يٰقَوْمِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ मेरी कौम | उस ने कहा | 66 | झूटे | से | और हम बेशक तुझे गुमान करते हैं | बेवकूफ़ी |

لَيْسَ بِىْ سَفَاهَةٌ وَّلٰكِنِّىْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 67 | तमाम जहान | रब | से | भेजा हुआ | और लेकिन मैं | कोई बेवकूफ़ी | मुझ में | नहीं |

और पाकीज़ा ज़मीन से उस का सबज़ह उस के रब के हुक्म से (पाकीजा ही) निकलता है, और जो ख़राब है उस से नहीं निकलता मगर नाक़िस, उसी तरह हम शुक्र गुजार लोगों के लिए आयतें फेर फेर कर बयान करते हैं। (58)

अलबत्ता हम ने नूह (अ) को उस की कौम की तरफ़ भेजा, पस उस ने कहा ऐ मेरी कौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, बेशक मैं डरता हूँ तुम पर एक बड़े दिन के अ़ज़ाब से। (59)

उस की क़ौम के सरदार बोलेः हम तुझे खुली गुमराही में देखते हैं। (60)

उस ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! मेरे अन्दर कुछ भी गुमराही (की बात) नहीं लेकिन मैं भेजा हुआ (रसूल) हूँ सारे जहानों के रब की तरफ़ से। (61)

मैं तुम्हें अपने रब के पैग़ाम पहुँचाता हूँ और तुम्हें नसीहत करता हूँ और अल्लाह (की तरफ़) से जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (62)

क्या तुम्हें तअ़ज्जुब हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक नसीहत तुम में से एक आदमी पर आई ताकि वह तुम्हें डराए, और ताकि तुम परहेज़गारी इख़्तियार करो, और ताकि तुम पर रह्म किया जाए। (63)

पस उन्हों ने उसे झुटलाया तो हम ने उसे और उन लोगों को जो कश्ती में उस के साथ थे बचा लिया, और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया उन्हें हम ने ग़र्क़ कर दिया, बेशक वह लोग (हक़ शनासी से) अन्धे थे। (64)

और आ़द की तरफ़ (भेजा) उन के भाई हूद (अ) को, और उस ने कहा ऐ मेरी कौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तो क्या तुम डरते नहीं? (65)

उस की क़ौम के काफ़िर सरदार बोले अलबत्ता हम तुझे देखते हैं बेवकूफ़ी में और हम बेशक तुझे झूटों में से गुमान करते हैं। (66)

उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! मुझ में बेवकूफ़ी (की कोई बात) नहीं, लेकिन मैं तमाम जहानों के रब का भेजा हुआ (रसूल) हूँ। (67)

मैं तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुँचाता हूँ और मैं तुम्हारा ख़ैर ख़ाह, अमीन हूँ। **(68)**

क्या तुम्हें तअज्जुब हुआ कि तुम्हारे पास आई तुम्हारे रब की तरफ़ से एक नसीहत तुम में से एक आदमी पर ताकि वह तुम्हें डराए, और तुम याद करो जब उस ने तुम्हें क़ौमे नूह (अ) के बाद जांनशीन बनाया, और तुम्हें ज़ियादा दिया जिस्म में फैलाओ (डील डौल), सो अल्लाह की नेमतें याद करो ताकि तुम फ़लाह (कामयाबी) पाओ। **(69)**

वह बोले, क्या तू हमारे पास इस लिए आया है कि हम अल्लाह वाहिद की इबादत करें और छोड़ दें जिन्हें हमारे बाप दादा पूजते थे, तो ले आ जिस का तू हम से वादा करता है (धमकाता है) अगर तू सच्चे लोगों में से है। **(70)**

उस ने कहा अलबत्ता तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से पड़ गया अज़ाब और ग़ज़ब, क्या तुम मुझ से उन नामों के बारे में झगड़ते हो जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं, नहीं नाज़िल की अल्लाह ने उस के लिए कोई सनद, सो तुम इन्तिज़ार करो, मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों में से हूँ। **(71)**

तो हम ने उस को बचा लिया और उन को जो उस के साथ थे अपनी रहमत से, और हम ने उन लोगों की जड़ काट दी जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया और वह न थे ईमान लाने वाले। **(72)**

और समूद की तरफ़ (भेजा) उन के भाई सालेह (अ) को, उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, तुम्हारा उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तहक़ीक़ तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी आ चुकी है, यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है, सो उसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाए, और उसे बुराई से हाथ न लगाओ वरना तुम्हें दर्दनाक अज़ाब पकड़ लेगा। **(73)**

أُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ (68) اَوَعَجِبْتُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या तुम्हें तअज्जुब हुआ | 68 | अमीन | ख़ैर ख़ाह | तुम्हारा | और मैं | अपना रब | पैग़ाम (जमा) | मैं तुम्हें पहुँचाता हूँ |

اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि वह तुम्हें डराए | तुम में से | एक आदमी | पर | तुम्हारा रब | से | नसीहत | तुम्हारे पास आई | कि |

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम्हें ज़ियादा दिया | क़ौमे नूह | बाद | जांनशीन | उस ने तुम्हें बनाया | जब | और तुम याद करो |

فِي الْخَلْقِ بَصْۜطَةً ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ (69)

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 69 | फ़लाह (कामयाबी) पाओ | ताकि तुम | अल्लाह की नेमतें | सो याद करो | फैलाव | ख़ल्क़त (जिस्म) | में |

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पूजते थे | जो-जिस | और हम छोड़ दें | वाहिद (अकेले) | अल्लाह | कि हम इबादत करें | क्या तू हमारे पास आया | वह बोले |

اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ (70)

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 70 | सच्चे लोग | से | तू है | अगर | जिस का हम से वादा करता है | तो ले आ हम पर | हमारे बाप दादा |

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّغَضَبٌ ۭ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और ग़ज़ब | अज़ाब | तुम्हारा रब | से | तुम पर | अलबत्ता पड़ गया | उस ने कहा |

اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْٓ اَسْمَآءٍ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं | और तुम्हारे बाप दादा | तुम | तुम ने उन के रख लिए हैं | नाम (जमा) | में | क्या तुम झगड़ते हो मुझ से |

نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۭ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | तुम्हारे साथ | बेशक मैं | सो तुम इन्तिज़ार करो | सनद | कोई | उस के लिए | अल्लाह ने नाज़िल की |

الْمُنْتَظِرِيْنَ (71) فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी | रहमत से | उस के साथ थे | और वह लोग जो | तो हम ने उसे नजात दी (बचा लिया) | 71 | इन्तिज़ार करने वाले |

وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ (72) ع ۹ ۸ ۱۶

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 72 | ईमान लाने वाले | और न थे | हमारी आयात | उन्हों ने झुटलाया | वह लोग जो | जड़ | और हम ने काट दी |

وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وقف لازم

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम अल्लाह की इबादत करो | ऐ मेरी क़ौम | उस ने कहा | सालेह (अ) | उन के भाई | समूद | और तरफ़ |

مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारा रब | से | निशानी | तहक़ीक़ आ चुकी तुम्हारे पास | उस के सिवा | माबूद | कोई | तुम्हारे लिए नहीं |

هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| में | कि खाए | सो उसे छोड़ दो | एक निशानी | तुम्हारे लिए | अल्लाह की ऊँटनी | यह |

اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ (73)

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 73 | दर्दनाक | अज़ाब | वरना पकड़ लेगा तुम्हें | बुराई से | उसे हाथ लगाओ | और न | अल्लाह की ज़मीन |

وَاذْكُـــرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ عَادٍ وَّبَوَّاَكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम्हें ठिकाना दिया | आ़द | बाद | जांनशीन | तुम्हें बनाया उस ने | जब | और तुम याद करो |

فِى الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا وَّتَنْحِتُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और तराशते हो | महल (जमा) | उस की नर्म जगह | से | बनाते हो | ज़मीन | में |

الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन (मुल्क) में | और न फिरो | अल्लाह की नेमतें | सो याद करो | मकानात | पहाड़ |

مُفْسِدِيْنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की कौ़म | से | तकब्बुर किया (मुतकब्बिर) | वह जिन्हों ने | सरदार | बोले | 74 | फ़साद करने वाले (फ़साद करते) |

لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सालेह (अ) | कि | क्या तुम जानते हो | उन से | ईमान लाए | उन से जो | ज़ईफ़ (कमज़ोर) बनाए गए | उन लोगों से |

مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۗ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلَ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿٧٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 75 | ईमान रखते हैं | उस के साथ भेजा गया | उस पर जो | बेशक हम | उन्हों ने कहा | अपना रब | से | भेजा हुआ |

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا بِالَّذِىْٓ اٰمَنْتُمْ بِهٖ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तुम ईमान लाए उस पर | वह जिस पर | हम | तकब्बुर किया | वह जिन्हों ने | बोले |

كٰفِرُوْنَ ﴿٧٦﴾ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना रब | हुक्म | से | और सरकशी की | ऊँटनी | उन्हों ने कूचें काट दीं | 76 | कुफ़्र करने वाले (मुन्किर) |

وَقَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| से | तू है | अगर | जिस का तू हम से वादा करता है | ले आ | ऐ सालेह (अ) | और बोले |

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٧٧﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِىْ دَارِهِمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने घर | में | तो रह गए | ज़ल्ज़ला | पस उन्हें आ पकड़ा | 77 | रसूल (जमा) |

جٰثِمِيْنَ ﴿٧٨﴾ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तहक़ीक़ मैं ने तुम्हें पहुँचा दिया | ऐ मेरी कौ़म | और कहा | उन से | फिर मुँह फेरा | 78 | औन्धे |

رِسَالَةَ رَبِّىْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٧٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 79 | ख़ैर ख़ाह (जमा) | तुम पसन्द नहीं करते | और लेकिन | तुम्हारी | और ख़ैर ख़ाही की | अपना रब | पैग़ाम |

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जो तुम से पहले नहीं की | क्या आते हो बेहयाई के पास (बेहयाई करते हो) | अपनी कौ़म से | कहा | जब | और लूत (अ) |

بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मर्द (जमा) | जाते हो | बेशक तुम | 80 | सारे जहान | से | किसी ने | ऐसी |

شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ۗ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿٨١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 81 | हद से गुज़र जाने वाले | लोग | तुम | बल्कि | औ़रतें | अ़लावा (छोड़ कर) | शहवत से |

और याद करो जब तुम्हें आ़द के बाद जांनशीन बनाया और तुम्हें ज़मीन में ठिकाना दिया, बनाते हो उस की नर्म जगह में महल और तराशते हो पहाड़ों के मकानात, सो अल्लाह की नेमतें याद करो, और मुल्क में फ़साद मचाते न फिरो। (74)

सरदार बोले उन की कौ़म के जो मुतकब्बिर थे, उन ग़रीब लोगों से जो उन में से ईमान ला चुके थे: क्या तुम जानते हो कि सालेह (अ) अपने रब की तरफ़ से भेजा हुआ है (रसूल है), उन्हों ने कहा बेशक वह जो कुछ दे कर भेजा गया है हम उस पर ईमान रखते हैं। (75)

वह जिन्हों ने तकब्बुर किया (सरदार) बोले तुम जिस पर ईमान लाए हो हम उस के मुन्किर हैं। (76)

उन्हों ने ऊँटनी की कूचें काट दीं और अपने रब के हुक्म से सरकशी की और बोले ऐ सालेह (अ)! ले आ जिस का तू हम से वादा करता है (धमकाता है) अगर तू रसूलों में से है। (77)

पस ज़ल्ज़ले ने उन्हें आ पकड़ा तो अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। (78)

फिर (सालेह (अ) ने उन से मुँह फेरा और कहा ऐ मेरी कौ़म! मैं ने तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुँचाया और तुम्हारी ख़ैर ख़ाही की, लेकिन तुम ख़ैर ख़ाहों को पसन्द नहीं करते। (79)

लूत (अ) (को भेजा) जब उस ने अपनी कौ़म से कहा, क्या तुम वह बेहयाई करते हो जो तुम से पहले सारे जहान में किसी ने नहीं की। (80)

बेशक तुम मर्दों के पास शहवत से जाते हो औ़रतों को छोड़ कर, बल्कि तुम हद से गुज़र जाने वाले लोग हो। (81)

और उस की क़ौम का जवाब न था मगर यह कि उन्हों ने कहाः उन्हें (लूत (अ) को) अपनी बस्ती से निकाल दो, यह लोग पाकीज़गी चाहते हैं। (82)

सो हम ने नजात दी उस को और उस के घर वालों को सिवाए उस की बीवी के जो पीछे रह जाने वालों में से थी। (83)

और हम ने उन पर (पत्थरों की) एक बारिश बरसाई, पस देखो मुजरिमों का कैसा अन्जाम हुआ? (84)

और हम ने मदयन की तरफ़ उन के भाई शुऐब (अ) (को भेजा), उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तहक़ीक़ तुम्हारे पास एक दलील पहुँच चुकी है तुम्हारे रब (की तरफ़) से, पस नाप और तोल पूरा करो और लोगों की अशिया न घटाओ, (घटा कर न दो) और मुल्क में इस्लाह के बाद फ़साद न (मचाओ), तुम्हारे लिए यह बेहतर है अगर तुम ईमान वाले हो। (85)

और हर रास्ते पर न बैठो कि तुम (राहगीरों को) डराओ और उसे अल्लाह के रास्ते से रोको जो उस पर ईमान लाया, और उस में कजी ढूँडो, और याद करो जब तुम थोड़े थे तो उस ने तुम्हें बढ़ा दिया, और देखो! फ़साद करने वालों का अन्जाम कैसा हुआ? (86)

और अगर तुम में एक गिरोह है जो उस पर ईमान लाया जिस के साथ मैं भेजा गया हूँ और एक गिरोह (है जो) ईमान नहीं लाया तो तुम सब्र करो यहां तक कि फ़ैसला कर दे अल्लाह हमारे दरमियान, और वह बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है। (87)

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हें निकाल दो | उन्हों ने कहा | यह कि | मगर | उस की क़ौम | जवाब | था | और न |

مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने नजात दी उस को | 82 | पाकीज़गी चाहते हैं | यह लोग | बेशक | अपनी बस्ती | से |

وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَاَمْطَرْنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम ने बारिश बरसाई | 83 | पीछे रहने वाले | से | वह थी | उस की बीवी | मगर | और उस के घर वाले |

عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٨٤﴾ ع ١٠/١٢

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 84 | मुजरिमीन | अन्जाम | हुआ | कैसा हुआ | पस देखो | एक बारिश | उन पर |

وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۗ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की इबादत करो | ऐ मेरी क़ौम | उस ने कहा | शुऐब (अ) | उन के भाई | मदयन | और तरफ़ |

مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۖ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| से | एक दलील | तहक़ीक़ पहुँच चुकी तुम्हारे पास | उस के सिवा | कोई माबूद | से | नहीं तुम्हारा |

رَّبِّكُمْ فَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| लोग | और न घटाओ | और तोल | नाप | पस पूरा करो | तुम्हारा रब |

اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا ۖ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उस की इस्लाह | बाद | ज़मीन (मुल्क) में | फ़साद मचाओ | और न | उन की अशिया |

ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٨٥﴾ ۚ وَلَا تَقْعُدُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बैठो | और न | 85 | ईमान वाले | तुम हो | अगर | तुम्हारे लिए | बेहतर | यह |

بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوْعِدُوْنَ وَتَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह का रास्ता | से | और तुम रोको | तुम डराओ | रास्ता | हर |

مَنْ اٰمَنَ بِهٖ وَتَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ كُنْتُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम थे | जब | और याद करो | कजी | और ढूँडो उस में | उस पर | ईमान लाया | जो |

قَلِيْلًا فَكَثَّرَكُمْ ۠ وَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अन्जाम | हुआ | कैसा | और देखो | तो उस ने तुम्हें बढ़ा दिया | थोड़े |

الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَاِنْ كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنْكُمْ اٰمَنُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान लाया | तुम से | एक गिरोह | है | और अगर | 86 | फ़साद करने वाले |

بِالَّذِيْٓ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوْا فَاصْبِرُوْا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तुम सब्र कर लो | ईमान नहीं लाया | और एक गिरोह | जिस के साथ | मैं भेजा गया | उस पर जो |

حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 87 | फ़ैसला करने वाला | बेहतर | और वह | हमारे दरमियान | फ़ैसला कर दे अल्लाह | यहां तक कि |

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَنُخْرِجَنَّكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हम तुझे ज़रूर निकाल देंगे | उस की क़ौम | से | तकब्बुर करते थे (बड़े बनते थे) | वह जो कि | सरदार | बोले |

يٰشُعَيْبُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारे दीन | में | या यह कि तुम लौट आओ | हमारी बस्ती | से | तेरे साथ | ईमान लाए | और वह जो | ऐ शुऐब (अ) |

قَالَ اَوَلَوْ كُنَّا كٰرِهِيْنَ ﴿٨٨﴾ قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اِنْ عُدْنَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम लौट आएं | अगर | झूटा | अल्लाह पर | अलबत्ता हम ने बुहतान बान्धा (बान्धेंगे) | 88 | नापसन्द करते हों | हम हों | क्या ख़ाह | उस ने कहा |

فِيْ مِلَّتِكُمْ بَعْدَ اِذْ نَجّٰىنَا اللّٰهُ مِنْهَا ؕ وَمَا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّعُوْدَ فِيْهَآ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | कि हम लौट आएं | हमारे लिए | और नहीं है | उस से | हम को बचा लिया अल्लाह | जब | बाद | तुम्हारा दीन | में |

اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّنَا ؕ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ؕ عَلَى اللّٰهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह पर | इल्म में | हर शै | हमारा रब | अहाता कर लिया है | हमारा रब | अल्लाह | यह कि चाहे | मगर |

تَوَكَّلْنَا ؕ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेहतर | और तू | हक़ के साथ | हमारी क़ौम | और दरमियान | हमारे दरमियान | फ़ैसला कर दे | हमारा रब | हम ने भरोसा किया |

الْفٰتِحِيْنَ ﴿٨٩﴾ وَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम ने पैरवी की | अगर | उस की क़ौम | से | कुफ़्र किया | वह जिन्हों ने | सरदार | और बोले | 89 | फ़ैसला करने वाला |

شُعَيْبًا اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٩٠﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सुबह के वक़्त रह गए | ज़लज़ला | तो उन्हें आ लिया | 90 | ख़सारे में होगे | उस सूरत में | तो तुम ज़रूर | शुऐब (अ) |

فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٩١﴾ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| न बस्ते थे | गोया | शुऐब (अ) | झुटलाया | वह जिन्हों ने | 91 | औन्धे पड़े | अपने घर | में |

فِيْهَا ۛ اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَانُوْا هُمُ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٢﴾ فَتَوَلّٰى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर मुहँ फेरा | 92 | ख़सारा पाने वाले | वही | वह हुए | शुऐब | झुटलाया | वह जिन्हों ने | उस में वहां |

عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारी | और ख़ैर ख़ाही की | अपना रब | पैग़ाम (जमा) | मैं ने पहुँचा दिए तुम्हें | अलबत्ता | ऐ मेरी क़ौम | और कहा | उन से |

فَكَيْفَ اٰسٰى عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٩٣﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नबी | कोई | किसी बस्ती | में | और न भेजा हम ने | 93 | काफ़िर (जमा) | क़ौम | पर | ग़म खाऊँ | तो कैसे |

اِلَّآ اَخَذْنَآ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُوْنَ ﴿٩٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 94 | आजिज़ी करें | ताकि वह | और तक्लीफ़ | सख़्ती में | वहां के लोग | हम ने पकड़ा | मगर |

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا وَّقَالُوْا قَدْ مَسَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पहुँच चुकी है | और कहने लगे | वह बढ़ गए | यहां तक कि | भलाई | बुराई | जगह | हम ने बदली | फिर |

اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 95 | बेख़बर थे | और वह | अचानक | पस हम ने उन्हें पकड़ा | और ख़ुशी | तक्लीफ़ | हमारे बाप दादा |

उस की क़ौम के बड़े सरदार जो बड़े बनते थे बोले ऐ शुऐब (अ)! हम ज़रूर निकाल देंगे तुझे और उन्हें जो तेरे साथ ईमान लाए हैं अपनी बस्ती से या यह कि तुम हमारे दीन में लौट आओ, फ़रमाया ख़्वाह हम नापसन्द करते हों (फिर भी?)। (88)

अलबत्ता हम अल्लाह पर झूटा बुहतान बान्धेंगे अगर हम उस के बाद तुम्हारे दीन में लौट आएं जबकि अल्लाह ने हमें उस से बचा लिया है और हमारा काम नहीं कि हम उस में लौट आएं मगर यह कि अल्लाह हमारा रब चाहे, हमारे रब ने अपने इल्म में हर शै का अहाता कर लिया है, हम ने अल्लाह पर भरोसा किया, ऐ हमारे रब! फ़ैसला कर दे हमारे दरमियान और हमारी क़ौम के दरमियान हक़ के साथ और तू बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (89)

और वह सरदार बोले जिन्हों ने कुफ़्र किया उस की क़ौम के, अगर तुम ने शुऐब (अ) की पैरवी की तो उस सूरत में तुम ख़ुद ख़सारे में होगे। (90)

तो उन्हें ज़लज़ले ने आ लिया, पस वह सुबह के वक़्त अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। (91)

जिन्हों ने शुऐब (अ) को झुटलाया (वह ऐसे मिटे) गोया (कभी) बसते न थे वह जिन्हों ने शुऐब (अ) को झुटलाया वही ख़सारा पाने वाले हुए। (92)

फिर उस ने उस से मुहँ फेरा और कहा ऐ मेरी क़ौम! मैं ने तुम्हें अपने रब के पैग़ाम पहुँचा दिए और तुम्हारी ख़ैर ख़ाही कर चुका तो (अब) काफ़िर क़ौम पर कैसे ग़म खाऊँ? (93)

और हम ने किसी बस्ती में कोई नबी नहीं भेजा मगर हम ने वहां के लोगों को सख़्ती में पकड़ा और तक्लीफ़ में ताकि वह आजिज़ी करें। (94)

फिर हम ने बुराई की जगह भलाई से बदली यहां तक कि वह बढ़ गए और कहने लगे तक्लीफ़ और ख़ुशी हमारे बाप दादा को पहुँच चुकी है, पस हम ने उन्हें अचानक पकड़ा और वह बेख़बर थे। (95)

और अगर बस्तियों वाले ईमान ले आते और परहेज़गारी इख़्तियार करते तो अलबत्ता हम उन पर बरकतें खोल देते ज़मीन और आस्मान से, लेकिन उन्हों ने झुटलाया तो हम ने उन्हें पकड़ा उस के नतीजे में जो वह करते थे। (96)

क्या अब वे ख़ौफ़ हैं बस्तियों वाले कि उन पर हमारा अज़ाब रातों रात आ जाए और वह सोए हुए हों। (97)

क्या बस्तियों वाले उस से बे ख़ौफ़ हैं कि उन पर हमारा अज़ाब दिन चढ़े आ जाए और वह खेल कूद रहे हों। (98)

क्या वह अल्लाह की तदबीर से बे ख़ौफ़ हो गए? सो बे ख़ौफ़ नहीं होते अल्लाह की तदबीर से मगर ख़सारा उठाने वाले। (99)

क्या उन लोगों को हिदायत न मिली जो ज़मीन के वारिस हुए वहां के रहने वालों के बाद, अगर हम चाहते तो उन के गुनाहों के सबब उन पर मुसीबत डालते, और हम उन के दिलों पर मुहर लगाते हैं, सो वह सुनते नहीं। (100)

यह बस्तियां हैं जिन की ख़बरें हम तुम पर बयान करते हैं, और अलबत्ता उन के पास आए उन के रसूल निशानियां ले कर, सो वह ईमान न लाए क्योंकि उस से पहले उन्हों ने झुटलाया था, इसी तरह अल्लाह काफ़िरों के दिलों पर मुहर लगाता है। (101)

और हम ने उन के अक्सर में अ़हद का कोई पास न पाया और दरहक़ीक़त हम ने उन में अक्सर नाफ़रमान बद किर्दार पाए। (102)

फिर हम ने उन के बाद मूसा (अ) को अपनी निशानियों के साथ भेजा फ़िरऔन की तरफ़ और उस के सरदारों की तरफ़ तो उन्हों ने उन (निशानियों) का इन्कार किया, सो तुम देखो फ़साद करने वालों का अन्जाम क्या हुआ? (103)

और कहा मूसा (अ) ने, ऐ फ़िरऔन! बेशक मैं तमाम जहानों के रब की तरफ़ से रसूल हूँ। (104)

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰٓى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बरकतें | उन पर | तो अलबत्ता हम खोल देते | और परहेज़गारी करते | ईमान लाते | बस्तियों वाले | यह होता कि | और अगर |

مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के नतीजे में | तो हम ने उन्हें पकड़ा | उन्हों ने झुटलाया | और लेकिन | और ज़मीन | आस्मान | से |

كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٦﴾ اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन पर आए | कि | बस्तियों वाले | क्या बेख़ौफ़ हैं | 96 | जो वह करते थे |

بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ نَآىِٕمُوْنَ ﴿٩٧﴾ اَوَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | बस्तियों वाले | क्या बेख़ौफ़ है | 97 | सोए हुए हों | और वह | रातों रात | हमारा अ़ज़ाब |

يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩٨﴾ اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की तदबीर | क्या वह बेख़ौफ़ हो गए | 98 | खेल कूद रहे हों | और वह | दिन चढ़े | हमारा अज़ाब | उन पर आ जाए |

فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩٩﴾ اَوَلَمْ يَهْدِ ع ١٢ ٢

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हिदायत मिली | क्या न | 99 | ख़सारा उठाने वाले | लोग | मगर | अल्लाह की तदबीर | बेख़ौफ़ नही होते |

لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ اَهْلِهَآ اَنْ لَّوْ نَشَآءُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर हम चाहते | कि | वहां के रहने वाले | बाद | ज़मीन | वारिस हुए | वह लोग जो |

اَصَبْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 100 | नहीं सुनते हैं | सो वह | उन के दिल | पर | और हम मुहर लगाते हैं | उन के गुनाहों के सबब | तो हम उन पर मुसीबत डालते |

تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآىِٕهَا ۚ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आए उन के पास | और अलबत्ता | उन की कुछ ख़बरें | से | तुम पर | हम बयान करते हैं | बस्तियां | यह |

رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से पहले | उन्हों ने झुटलाया | क्योंकि | वह ईमान लाते | सो न | निशानियां ले कर | उन के रसूल |

كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠١﴾ وَمَا وَجَدْنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने पाया | और न | 101 | काफ़िर (जमा) | दिल (जमा) | पर | मुहर लगाता है अल्लाह | इसी तरह |

لِاَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍ ۚ وَاِنْ وَّجَدْنَآ اَكْثَرَهُمْ لَفٰسِقِيْنَ ﴿١٠٢﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 102 | नाफ़रमान बद किर्दार | उन में अक्सर | हम ने पाए | और दरहक़ीक़त | अ़हद का पास | उन के अक्सर में |

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهٖ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उसके सरदार | तरफ़ फ़िरऔन | अपनी निशानियों के साथ | मूसा (अ) | उन के बाद | हम ने भेजा | फिर |

فَظَلَمُوْا بِهَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٠٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 103 | फ़साद करने वाले | अन्जाम | हुआ | क्या | सो तुम देखो | उन का | तो उन्हों ने ज़ुल्म (इन्कार) किया |

وَقَالَ مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ اِنِّىْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 104 | तमाम जहान | रब | से | रसूल | बेशक मैं | ऐ फ़िरऔन | मूसा | और कहा |

حَقِيْقٌ عَلٰٓى اَنْ لَّآ اَقُوْلَ عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तहक़ीक़ तुम्हारे पास लाया हूँ निशानियां | मगर हक़ | अल्लाह पर | मैं न कहूँ | कि | पर | शायां |

مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَرْسِلْ مَعِىَ بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٠٥﴾ قَالَ اِنْ كُنْتَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तू | अगर | बोला | 105 | बनी इस्राईल | मेरे साथ | पस भेज दे | तुम्हारा रब | से |

جِئْتَ بِاٰيَةٍ فَاْتِ بِهَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٠٦﴾ فَاَلْقٰى عَصَاهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना असा | पस उस ने डाला | 106 | सच्चे | से | अगर तू है | तो वह ले आ | लाया है कोई निशानी |

فَاِذَا هِىَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٠٧﴾ وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِىَ بَيْضَآءُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नूरानी | पस नागाह वह | अपना हाथ | और निकाला | 107 | सरीह (साफ़) | अज़दहा | पस वह अचानक |

ع ١٣ ٣

لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿١٠٨﴾ قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह जादूगर | बेशक | फ़िरऔन | क़ौम | से | सरदार | बोले | 108 | नाज़िरीन के लिए |

عَلِيْمٌ ﴿١٠٩﴾ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿١١٠﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 110 | कहते हो | तो अब क्या | तुम्हारी सरजमीन | से | तुम्हें निकाल दे | कि | चाहता है | 109 | इल्म वाला (माहिर) |

قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَاَرْسِلْ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿١١١﴾ يَاْتُوْكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तेरे पास ले आएं | 111 | इकटठा करने वाले (नक़ीब) | शहरों में | और भेज | और उस का भाई | रोक ले | वह बोले |

بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ﴿١١٢﴾ وَجَآءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْٓا اِنَّ لَنَا لَاَجْرًا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई अजर (इन्आम) | हमारे लिए | यक़ीनन | वह बोले | फ़िरऔन | जादूगर (जमा) | और आए | 112 | इल्म वाला (माहिर) | जादूगर | हर |

اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٣﴾ قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿١١٤﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 114 | मुक़र्रबीन | अलबत्ता-से | और तुम बेशक | हाँ | उस ने कहा | 113 | ग़ालिब (जमा) | हम | हुए | अगर |

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِىَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ نَحْنُ الْمُلْقِيْنَ ﴿١١٥﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 115 | डालने वाले | हम | हों | यह कि | और या (वरना) | तू डाल | यह कि | या | ऐ मूसा (अ) | वह बोले |

قَالَ اَلْقُوْا ۚ فَلَمَّآ اَلْقَوْا سَحَرُوْٓا اَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوْهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हें डराया | लोग | आँखें | सिह्र कर दिया | उन्हों ने डाला | पस जब | तुम डालो | कहा |

وَجَآءُوْ بِسِحْرٍ عَظِيْمٍ ﴿١١٦﴾ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना असा | डालो | कि | मूसा (अ) | तरफ़ | और हम ने वहि भेजी | 116 | बड़ा | और वह लाए जादू |

فَاِذَا هِىَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿١١٧﴾ فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | और बातिल हो गया | हक़ | पस साबित हो गया | 117 | जो उन्हों ने ढकोस्ला बनाया था | निगलने लगा | वह | तो नागाह |

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١١٨﴾ فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا صٰغِرِيْنَ ﴿١١٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 119 | जलील | और लौटे | वहीं | पस मग़लूब हो गए | 118 | वह करते थे |

وَاُلْقِىَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿١٢٠﴾ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 121 | तमाम जहान (जमा) | रब पर | हम ईमान लाए | वह बोले | 120 | सिज्दा करने वाले | जादूगर | और गिर गए |

शायां है कि मैं न कहूँ अल्लाह पर मगर हक़, तहक़ीक़ मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानियां लाया हूँ, पस मेरे साथ बनी इस्राईल को भेज दे। (105)

बोला अगर तू कोई निशानी लाया है तो वह ले आ, अगर तू सच्चों में से है। (106)

पस उस (मूसा अ) ने डाला अपना असा, पस अचानक वह साफ़ अज़दहा हो गया। (107)

और अपना हाथ (गरेबान) से निकाला तो नागाह वह नाज़िरीन के लिए नूरानी हो गया। (108)

फ़िरऔन की क़ौम के सरदार बोले बेशक यह तो माहिर जादूगर है। (109)

चाहता है कि तुम्हें निकाल दे तुम्हारी सरज़मीन से, तो अब क्या कहते हो (क्या मश्वरा है)? (110)

वह बोले उस को और उस के भाई को रोक ले और शहरों में भेज दे नक़ीब। (111)

तेरे पास हर माहिर जादूगर ले आएं। (112)

और जादूगर फ़िरऔन के पास आए, वह बोले यक़ीनन हमारे लिए कोई इन्आम हो गा अगर हम ग़ालिब हुए। (113)

उस ने कहा हाँ! तुम बेशक (मेरे) मुक़र्रबीन में से होगे। (114)

वह बोले, ऐ मूसा (अ)! या तू डाल वरना हम डालने वाले हैं। (115)

(मूसा अ) ने कहा तुम डालो, पस जब उन्हों ने डाला लोगों की आँखों पर सिह्र कर दिया और उन्हें डराया और वह बड़ा जादू लाए थे। (116)

और हम ने मूसा (अ) की तरफ़ वहि भेजी कि अपना असा डालो, नागाह वह निगलने लगा जो ढकोस्ला उन्हों ने बनाया था। (117)

पस हक़ साबित हो गया और वह जो करते थे बातिल हो गया। (118)

पस वह वहीं मग़लूब हो गए और लौटे जलील हो कर। (119)

और जादूगर सिज्दे में गिर गए, (120)

वह बोले कि हम तमाम जहानों के रब पर ईमान ले आए। (121)

(यानी) मूसा (अ) और हारून (अ) के रब पर। **(122)**

फ़िरऔन बोला क्या तुम उस पर ईमान ले आए इस से क़ब्ल कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ? बेशक यह एक चाल है कि शहर में तुम ने चली है ताकि उस के रहने वालों को यहां से निकाल दो, पस जल्द (उस का नतीजा) मालूम कर लोगे। **(123)**

मैं ज़रूर काट डालूँगा तुम्हारे (एक तरफ़ के) हाथ और दूसरी तरफ़ के पाऊँ, फिर मैं तुम सब को ज़रूर सूली दूँगा। **(124)**

वह बोले बेशक हम अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं। **(125)**

और तुझ को हम से दुश्मनी नहीं मगर सिर्फ़ यह कि हम अपने रब की निशानियों पर ईमान लाए जब वह हमारे पास आ गईं, ऐ हमारे रब! हम पर सब्र के दहाने खोल दे और हमें मौत दे (उस हाल में कि हम) मुसलमान हों। **(126)**

और सरदार बोले फ़िरऔन की क़ौम के, क्या तू मूसा (अ) और उस की क़ौम को छोड़ रहा है कि वह ज़मीन में फ़साद करें और वह (मूसा अ) तुझे छोड़ दे और तेरे माबूदों को, उस ने कहा हम अनक़रीब उन के बेटों को क़त्ल कर डालेंगे और बेटियों को ज़िन्दा छोड़ देंगे, और हम उन पर ज़ोर आवर हैं। **(127)**

मूसा (अ) ने अपनी क़ौम से कहा कि तुम अल्लाह से मदद मांगो और सब्र करो, बेशक ज़मीन अल्लाह की है, वह अपने बन्दों में से जिस को चाहता है उस का वारिस बना देता है, और अन्जाम कार परहेज़गारों के लिए है। **(128)**

वह बोले हम अज़ीयत दिए गए इस से क़ब्ल कि आप हम में आए और उस के बाद कि आप हम में आए, (मूसा (अ) ने) कहा क़रीब है तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे और तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा (नाइब) बना दे, फिर देखेगा तुम कैसे काम करते हो। **(129)**

और अलबत्ता हम ने पकड़ा फ़िरऔन वालों को क़हतों में और फलों के नुक़सान में ताकि वह नसीहत पकड़ें। **(130)**

رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٢﴾ قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | पहले | उस पर | क्या तुम ईमान लाए | फ़िरऔन | बोला | 122 | और हारून | मूसा (अ) | रब |

اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِى الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यहां से | ताकि निकाल दो | शहर | में | जो तुम ने चली | एक चाल है | यह | बेशक | मैं इजाज़त दूँ तुम्हें |

اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٢٣﴾ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम्हारे पाऊँ | तुम्हारे हाथ | मैं ज़रूर काट डालूँगा | 123 | तुम मालूम कर लोगे | पस जल्द | उस के रहने वाले |

مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٢٤﴾ قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना रब | तरफ़ | बेशक हम | वह बोले | 124 | सब को | मैं तुम्हें ज़रूर सूली दूँगा | फिर | दूसरी तरफ़ | से |

مُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٢٥﴾ وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब | अपना रब | निशानियां | हम ईमान लाए | यह कि | मगर | हम से | तुझ को दुश्मनी | और नहीं | 125 | लौटने वाले |

جَآءَتْنَا ۚ رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿١٢٦﴾ وَقَالَ ع ١٤/٢

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बोले | 126 | मुसलमान (जमा) | और हमें मौत दे | सब्र | हम पर | दहाने खोल दे | हमारा रब | वह हमारे पास आएं |

الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि वह फ़साद करें | और उस की क़ौम | मूसा | क्या तू छोड़ रहा है | फ़िरऔन | क़ौम | से (के) | सरदार |

فِى الْاَرْضِ وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ ۚ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के बेटे | हम अनक़रीब क़त्ल कर देंगे | उस ने कहा | और तेरे माबूद | और वह छोड़ दे तुझे | ज़मीन | में |

وَنَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ﴿١٢٧﴾ قَالَ مُوْسٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मूसा (अ) | कहा | 127 | ज़ोर आवर (जमा) | उन पर | और हम | उन की औरतें (बेटियां) | और ज़िन्दा छोड़ देंगे |

لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا ۚ اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۙ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की | ज़मीन | बेशक | और सब्र करो | अल्लाह से | तुम मदद मांगो | अपनी क़ौम से |

يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۗ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 128 | परहेज़गारों के लिए | और अन्जाम कार | अपने बन्दे | से | चाहता है | जिस | वह उस का वारिस बनाता है |

قَالُوْٓا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप आए हम में | और बाद | आप (अ) हम में आते | कि | क़ब्ल | से | हम अज़ीयत दिए गए | वह बोले |

قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | और तुम्हें ख़लीफ़ा बना दे | तुम्हारा दुश्मन | हलाक कर दे | कि | तुम्हारा रब | क़रीब है | उस ने कहा |

الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٩﴾ وَلَقَدْ اَخَذْنَآ ع ١٥/٥

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने पकड़ा | और अलबत्ता | 129 | तुम काम करते हो | कैसे | फिर देखेगा | ज़मीन |

اٰلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 130 | नसीहत पकड़ें | ताकि वह | फल (जमा) | से (में) | और नुक़सान | क़हतों में | फ़िरऔन वाले |

فَاِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई बुराई | पहुँचती | और अगर | यह | हमारे लिए | वह कहने लगे | भलाई | आई उन के पास | फिर जब |

يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗ ۗ اَلَآ اِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के पास | उन की बदनसीबी | इस के सिवा नहीं | याद रखो | और जो उन के साथ (साथी) | मूसा से | बदशगूनी लेते |

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣١﴾ وَقَالُوْا مَهْمَا تَاْتِنَا بِهٖ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हम पर तू लाएगा | जो कुछ | और वह कहने लगे | 131 | नहीं जानते | उन के अक्सर | और लेकिन |

مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٢﴾ فَاَرْسَلْنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर हम ने भेजे | 132 | ईमान लाने वाले | तुझ पर | हम | तो नहीं | उस से | कि हम पर जादू करे | कैसी भी निशानी |

عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ اٰيٰتٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| निशानियां | और खून | और मेंडक | और जुएं-चचड़ी | और टिड्डी | तूफ़ान | उन पर |

مُّفَصَّلٰتٍ ۟ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿١٣٣﴾ وَلَمَّا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जब | 133 | मुजरिम (जमा) | एक क़ौम (लोग) | और वह थे | तो उन्हों ने तकब्बुर किया | जुदा जुदा |

وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अहद | सबब जो | अपना रब | हमारे लिए | दुआ कर | ऐ मूसा | कहने लगे | अज़ाब | उन पर | वाक़ हुआ |

عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम ज़रूर भेज देंगे | तुझ पर | हम ज़रूर ईमान लाएंगे | अज़ाब | हम से | तू ने खोल दिया (उठा लिया) | अगर | तेरे पास |

مَعَكَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٣٤﴾ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अज़ाब | उन से | हम ने खोल दिया (उठा लिया) | फिर जब | 134 | बनी इस्राईल | तेरे साथ |

اِلٰٓى اَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ﴿١٣٥﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन से | फिर हम ने इन्तिक़ाम लिया | 135 | अहद तोड़ देते | वह | उसी वक़्त | उस तक पहुँचना था | उन्हें | एक मुद्दत तक |

فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन से | और वह थे | हमारी आयतों को | झुटलाया | क्योंकि उन्हों | दर्या में | पस उन्हें ग़र्क़ कर दिया |

غٰفِلِيْنَ ﴿١٣٦﴾ وَاَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कमज़ोर समझे जाते | थे | वह जो | क़ौम | और हम ने वारिस किया | 136 | ग़ाफ़िल (जमा) |

مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ۗ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वादा | और पूरा हो गया | उस में | हम ने बरकत रखी | वह जिस | और उस के मग़रिब (जमा) | ज़मीन | मशरिक़ (जमा) |

رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ بِمَا صَبَرُوْا ۗ وَدَمَّرْنَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम ने बरबाद कर दिया | उन्हों ने सब्र किया | बदले में | बनी इस्राईल | पर | अच्छा | तेरा रब |

مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهٗ وَمَا كَانُوْا يَعْرِشُوْنَ ﴿١٣٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 137 | बह ऊँचा फैलाते थे | और जो | और उस की क़ौम | फ़िरऔन | बनाते थे (बनाया था) | जो |

जब उन के पास आई भलाई तो वह कहने लगे यह हमारे लिए है, और कोई बुराई पहुँचती तो मूसा (अ) और उन के साथियों से बदशगूनी (बद नसीबी) लेते, याद रखो! इस के सिवा नहीं कि उन की बदनसीबी अल्लाह के पास है, लेकिन उन के अक्सर नहीं जानते। **(131)**

और वह कहने लगे तू हम पर कैसी भी निशानी लाएगा कि उस से हम पर जादू करे तो (भी) हम तुझ पर ईमान लाने वाले नहीं। **(132)**

फिर हम ने उन पर भेजे तूफ़ान, और टिड्डी, और जुएं, और मेंडक, और खून, जुदा जुदा निशानियां, तो उन्हों ने तकब्बुर किया और वह मुजरिम क़ौम के लोग थे। **(133)**

और जब उन पर अज़ाब वाक़ हुआ तो कहने लगे कि ऐ मूसा (अ) तू हमारे लिए दुआ कर अपने रब से (उस) अहद के सबब जो तेरे पास है, अगर तू ने हम से अज़ाब उठा लिया तो हम ज़रूर तुझ पर ईमान ले आएंगे और बनी इस्राईल को तेरे साथ ज़रूर भेज देंगे। **(134)**

फिर जब हम ने उन से अज़ाब उठा लिया एक मुद्दत तक (जिसे आख़िर कार) उन्हें पहुँचना था, उसी वक़्त वह अहद तोड़ देते। **(135)**

फिर हम ने उन से इन्तिक़ाम लिया और उन्हें दर्या में ग़र्क़ कर दिया क्योंकि उन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया और वह उन से ग़ाफ़िल थे। **(136)**

और हम ने उस क़ौम को वारिस कर दिया जो कमज़ोर समझे जाते थे, (उस) ज़मीन के मशरिक़ ओ मग़रिब का जिस में हम ने बरकत रखी है (सर ज़मीने फ़लसतीन ओ शाम), और बनी इस्राईल पर तेरे रब का वादा पूरा हो गया उस के बदले में कि उन्हों ने सब्र किया, और हम ने बरबाद कर दिया जो फ़िरऔन और उस की क़ौम ने बनाया था और जो वह ऊँचा फैलाते थे (उन के बुलन्द ओ बाला महल्लात)। **(137)**

और हम ने उतारा बनी इस्राईल को बहरे (क़ुलज़ुम) के पार, पस वह एक ऐसी क़ौम के पास आए जो अपने बुतों (की पूजा) पर जमे बैठे थे, वह बोले ऐ मूसा (अ)! हमारे लिए ऐसे बुत बना दे जैसे उन के हैं, (मूसा अ) ने कहा बेशक तुम लोग जहल (नादानी) करते हो। (138)

बेशक यह लोग जिस (बुत परस्ती) में लगे हुए हैं वह तबाह होने वाली है और बातिल है वह जो यह कर रहे हैं। (139)

मूसा (अ) ने कहा: किया अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिए कोई और माबूद तलाश करूँ? हालांकि उस ने तुम्हें सारे जहान पर फ़ज़ीलत दी। (140)

और (याद करो) जब हम ने तुम्हें फ़िरऔन वालों से नजात दी, वह तुम्हें बुरे अज़ाब से तकलीफ़ देते थे, तुम्हारे बेटों को मार डालते और तुम्हारी बेटियों को जीता छोड़ देते थे। और उस में तुम्हारे लिए तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ी आज़माइश थी। (141)

और हम ने मूसा (अ) से वादा किया तीस (30) रातों का और उस को दस (10) (और बढ़ा कर) पूरा किया तो उस के रब की मुद्दत चालीस (40) रात पूरी हुई, और मूसा (अ) ने अपने भाई हारून (अ) से कहा मेरे नाइब रहो मेरी क़ौम में और इस्लाह करना और मुफ़्सिदों के रास्ते की पैरवी न करना। (142)

और जब मूसा (अ) आए हमारी वादा गाह पर और अपने रब से कलाम किया, मूसा (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे दिखा कि मैं तुझे देखूँ, अल्लाह ने कहा तू मुझे हरगिज न देख सकेगा, अलबत्ता पहाड़ की तरफ़ देख, पस अगर वह अपनी जगह ठहरा रहा तो तभी मुझे देख लेगा, पस जब उस के रब ने तजल्ली की पहाड़ की तरफ़ (तो) उस को रेज़ा रेज़ा कर दिया और मूसा (अ) बेहोश हो कर गिर पड़े, फिर जब होश आया तो उस ने कहा, तू पाक है, मैं ने तौबा की तेरी तरफ़ और मैं ईमान लाने वालों में सब से पहला हूँ। (143)

وَجٰوَزْنَا بِبَنِيٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ يَّعْكُفُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जमे बैठे थे | एक क़ौम | पर (पास) | पस वह आए | बहरे (क़ुलज़ुम) | बनी इस्राईल को | और हम ने पार उतारा |

عَلٰٓى اَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوْا يٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَآ اِلٰهًا كَمَا لَهُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | जैसे | बुत | हमारे लिए | बना दे | ऐ मूसा (अ) | वह बोले | अपने | सनम (जमा) बुत | पर |

اٰلِهَةٌ ۗ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿١٣٨﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह | जो | तबाह होने वाली है | यह लोग | बेशक | 138 | जहल करते हो | तुम लोग | बेशक तुम | उस ने कहा | माबूद (जमा) बुत |

فِيْهِ وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٩﴾ قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तलाश करूँ तुम्हारे लिए | क्या अल्लाह के सिवा | उस ने कहा | 139 | वह कर रहे हैं | जो | और बातिल | उस में |

اِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٤٠﴾ وَاِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | हम ने तुम्हें नजात दी | और जब | 140 | सारे जहान | पर | फ़ज़ीलत दी तुम्हें | हालांकि वह | कोई माबूद |

اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे बेटे | मार डालते थे | अज़ाब | बुरा | तुम्हें तकलीफ़ देते थे | फ़िरऔन वाले |

وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ۚ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿١٤١﴾ ١٦ ع ١٢ ٦

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 141 | बड़ी | तुम्हारा रब | से | आज़माइश | और उस में तुम्हारे लिए | तुम्हारी औरतें (बेटियां) | और जीता छोड़ देते थे |

وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً وَّاَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो पूरी हुई | दस (10) से | और उस को हम ने पूरा किया | रात | तीस (30) | मूसा (अ) | और हम ने वादा किया |

مِيْقَاتُ رَبِّهٖٓ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने भाई से | मूसा | और कहा | रात | चालीस (40) | उस का रब | मुद्दत |

هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ فِيْ قَوْمِيْ وَاَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रास्ता | और न पैरवी करना | और इस्लाह करना | मेरी क़ौम में | मेरा ख़लीफ़ा (नाइब) रह | हारून (अ) |

الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٤٢﴾ وَلَمَّا جَآءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने कहा | अपना रब | और उस ने कलाम किया | हमारी वादा गाह पर | मूसा (अ) | आया | और जब | 142 | मुफ़्सिद (जमा) |

رَبِّ اَرِنِيْٓ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ۚ قَالَ لَنْ تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ انْظُرْ اِلَى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ | तू देख | और लेकिन (अलबत्ता) | तू मुझे हरगिज़ न देखेगा | उस ने कहा | तेरी तरफ़ | मैं देखूं | मुझे दिखा | ऐ मेरे रब |

الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِيْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तजल्ली की | पस जब | तू मुझे देख लेगा | तो तभी | अपनी जगह | वह ठहरा रहा | पस अगर | पहाड़ |

رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ اَفَاقَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| होश आया | फिर जब | बेहोश | मूसा (अ) | और गिरा | रेज़ा रेज़ा | उसको कर दिया | पहाड़ की तरफ़ | उस का रब |

قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٤٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 143 | ईमान लाने वाले | सब से पहला | और मैं | तेरी तरफ़ | मैं ने तौबा की | तू पाक है | उस ने कहा |

قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِىْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने पैग़ामात से | लोग | पर | मैं ने तुझे चुन लिया | बेशक मैं | ऐ मूसा | कहा |

وَبِكَلَامِىْ ۖ فَخُذْ مَآ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٤﴾ وَكَتَبْنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम ने लिख दी | 144 | शुक्र गुज़ार (जमा) | से | और रहो | जो मैं ने तुझे दिया | पस पकड़ ले | और अपने कलाम से |

لَهٗ فِى الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَىْءٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हर चीज़ की | और तफ़सील | नसीहत | हर चीज़ | से | तख़्तियां | में | उस के लिए |

فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ۗ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| उस की अच्छी बातें | वह पकड़ें (इख़्तियार करें) | और हुक्म दे अपनी क़ौम | क़ुव्वत से | पस तू उसे पकड़ ले |

سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿١٤٥﴾ سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِىَ الَّذِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो | अपनी आयात | से | मैं अनक़रीब फेर दूंगा | 145 | नाफ़रमानों का घर | अनक़रीब मैं तुम्हें दिखाऊंगा |

يَتَكَبَّرُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हर निशानी | वह देख लें | और अगर | नाहक़ | ज़मीन में | तकब्बुर करते हैं |

لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रास्ता | न पकड़ें (इख़्तियार करें) | हिदायत | रास्ता | देख लें | और अगर | न ईमान लाएं उस पर |

وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَىِّ يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۗ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस लिए कि उन्हों ने | यह | रास्ता | इख़्तियार कर लें उसे | गुमराही | रास्ता | देख लें | और अगर |

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ﴿١٤٦﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| झुटलाया | और जो लोग | 146 | ग़ाफ़िल (जमा) | उस से | और थे | हमारी आयात | झुटलाया |

بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ۗ هَلْ يُجْزَوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह बदला पाएंगे | क्या | उन के अ़मल | ज़ाया हो गए | आख़िरत | और मुलाक़ात | हमारी आयात को |

ع اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٧﴾ وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के बाद | मूसा | क़ौम | और बनाया | 147 | वह करते थे | जो | मगर |

مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ۗ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ لَا يُكَلِّمُهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं कलाम करता उन से | कि वह | क्या न देखा उन्हों ने | गाय की आवाज़ | उस में | एक धड़ | एक बछड़ा | अपने ज़ेवर | से |

وقف لازم وَلَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤٨﴾ وَلَمَّا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और जब | 148 | और वह ज़ालिम थे | उन्हों ने बना लिया | रास्ता | और नहीं दिखाता उन्हें |

سُقِطَ فِىْٓ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا اَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَئِنْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अगर | वह कहने लगे | तहक़ीक़ गुमराह हो गए | कि वह | और देखा उन्हों ने | गिरे अपने हाथों में (नादिम हुए) |

لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿١٤٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 149 | ख़सारा पाने वाले | से | ज़रूर हो जाएंगे हम | और (न) बख़्श दिया | हमारा रब | रहम न किया हम पर |

अल्लाह ने कहा ऐ मूसा (अ)! बेशक मैं ने तुझे लोगों पर चुन लिया अपने पैग़ामात और अपने कलाम से, पस जो मैं ने तुझे दिया है (क़ुव्वत से) पकड़ ले और शुक्र गुज़ारों में से रहो। **(144)**

और हम ने उस के लिए लिख दी तख़्तियों में हर चीज़ की नसीहत, हर चीज़ की तफ़सील, पस तू उसे क़ुव्वत से पकड़ ले और हुक्म दे अपनी क़ौम को कि वह उस के बेहतर मफ़हूम की पैरवी करें, अनक़रीब मैं तुम्हें नाफ़रमानों का घर (अन्जाम) दिखाऊंगा। **(145)**

मैं अनक़रीब फेर दूंगा उन लोगों को अपनी आयतों से जो ज़मीन में नाहक़ तकब्बुर करते हैं, और अगर वह हर निशानी देख लें (फिर भी) उस पर ईमान न लाएं, और अगर हिदायत का रास्ता देख लें तो भी उस रास्ते को इख़्तियार न करें, और अगर देख लें गुमराही का रास्ता तो इख़्तियार कर लें, यह इस लिए कि उन्हों ने हमारी आयात को झुटलाया और वह उस से ग़ाफ़िल थे। **(146)**

और जिन लोगों ने झुटलाया हमारी आयात को और आख़िरत की मुलाक़ात को, उन के अ़मल ज़ाया हो गए, वह क्या बदला पाएंगे मगर (वही) जो वह करते थे। **(147)**

और मूसा (अ) की क़ौम ने उस के बाद बनाया अपने ज़ेवर से एक बछड़ा, (महज़) एक धड़ जिस में गाय की आवाज़ थी, क्या उन्हों ने न देखा कि न वह उन से कलाम करता है न उन्हें दिखाता है रास्ता? उन्हों ने उसे (माबूद) बना लिया और वह ज़ालिम थे। **(148)**

और जब वह नादिम हुए और उन्हों ने देखा कि वह गुमराह हो गए तो कहने लगे अगर हमारे रब ने हम पर रहम न किया और हमें न बख़्श दिया तो हम ज़रूर हो जाएंगे ख़सारा पाने वालों में से। **(149)**

और जब मूसा (अ) लौटा अपनी क़ौम की तरफ़ गुस्से में भरा हुआ, रंजीदा, उस ने कहा किस क़द्र बुरी मेरी जांनशीनी की तुम ने मेरे बाद! क्या तुम ने अपने परवरदिगार के हुक्म से जल्दी की? और उस (मूसा अ) ने तख़्तियाँ डाल दीं और सर (बालों से) पकड़ा अपने भाई का और उसे अपनी तरफ़ खींचने लगा, वह (हारून अ) बोला ऐ मेरे माँ जाए! लोगों ने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब था कि मुझे क़त्ल कर डाले, पस मुझ पर दुश्मनों को खुश न कर और मुझे जालिम लोगों के साथ शामिल न कर। (150)

उस ने (मूसा अ) ने कहा, ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे भाई को बख्श दे और हमें अपनी रहमत में दाखिल कर, और तू सब से ज़ियादा रहम करने वाला है। (151)

बेशक जिन लोगों ने बछड़े को (माबूद) बना लिया, अ़नक़रीब उन्हें उन के रब का ग़जब पहुंचेगा और ज़िल्लत दुनिया की ज़िन्दगी में, और इसी तरह हम बुहतान बान्धने वालों को सज़ा देते हैं। (152)

और जिन लोगों ने बुरे अ़मल किए फिर उस के बाद तौबा की और वह ईमान ले आए, बेशक तुम्हारा रब उस (तौबा) के बाद बख़्शने वाला, मेह्रबान है। (153)

और जब मूसा (अ) का गुस्सा फ़रू हुआ, उस ने तख़्तियों को उठा लिया, और उन की तहरीर में हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते हैं। (154)

और मूसा (अ) ने अपनी क़ौम से हमारे वादे के लिए सत्तर (70) आदमी चुन लिए, फिर जब उन्हें जल्ज़ले ने आ लिया, उस ने कहा ऐ मेरे रब! तू अगर चाहता तो इस से पहले इन्हें और मुझे हलाक कर देता, क्या तू हमें उस पर हलाक कर देगा जो हम में से बेवक़ूफ़ों ने किया! यह नहीं मगर (सिर्फ़) तेरी आजमाइश है, तू उस से जिस को चाहे गुमराह करे और तू जिस को चाहे हिदायत दे, तू हमारा कारसाज है, सो हमें बख्श दे और हम पर रह्म फ़रमा और तू बहतरीन बख्शने वाला है। (155)

وَلَمَّا رَجَعَ مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ بِئْسَمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या बुरी | उस ने कहा | रंजीदा | गुस्से में भरा हुआ | अपनी क़ौम की तरफ़ | मूसा (अ) | लौटा | और जब |

خَلَفْتُمُوْنِيْ مِنْۢ بَعْدِيْ ۚ اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَاَلْقَى الْاَلْوَاحَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तख़्तियाँ | डाल दीं | अपना परवरदिगार | हुक्म | क्या जल्दी की तुम ने | मेरे बाद | तुम ने मेरी जानशीनी की |

وَاَخَذَ بِرَاْسِ اَخِيْهِ يَجُرُّهٗٓ اِلَيْهِ ۗ قَالَ ابْنَ اُمَّ اِنَّ الْقَوْمَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क़ौम-लोग | बेशक | ऐ मेरे माँ जाए | वह बोला | अपनी तरफ़ | उसे खींचने लगा | अपना भाई | सर | और पकड़ा |

اسْتَضْعَفُوْنِيْ وَكَادُوْا يَقْتُلُوْنَنِيْ ۖ فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْاَعْدَآءَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दुश्मन (जमा) | मुझ पर | पस खुश न कर | मुझे क़त्ल कर डालें | और क़रीब थे | कमज़ोर समझा मुझे |

وَلَا تَجْعَلْنِيْ مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٥٠ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِاَخِيْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और मेरा भाई | मुझे बख़्श दे | ऐ मेरे रब | उस ने कहा | 150 | ज़ालिम (जमा) | क़ौम (लोग) | साथ | और मुझे न बना (शामिल न कर) |

وَاَدْخِلْنَا فِيْ رَحْمَتِكَ ۖ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝١٥١ اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوا ع ۱۸ ۸

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने बना लिया | वह लोग जो | बेशक | 151 | सब से जियादा रहम करने वाला | और तू | अपनी रहमत में | और हमें दाखिल कर |

الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दुनिया | ज़िन्दगी | में | और ज़िल्लत | उन के रब का | ग़ज़ब | अ़नक़रीब उन्हें पहुँचेगा | बछड़ा |

وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِيْنَ ۝١٥٢ وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तौबा की | फिर | बुरे | अ़मल किए | और जिन लोगों ने | 152 | बुहतान बान्धने वाले | हम सज़ा देते हैं | और इसी तरह |

مِنْۢ بَعْدِهَا وَاٰمَنُوْٓا ۡ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١٥٣

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 153 | मेह्रबान | बख़्शने वाला | उस के बाद | तुम्हारा रब | बेशक | और ईमान लाए | उस के बाद |

وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ اَخَذَ الْاَلْوَاحَ ۚ وَفِيْ نُسْخَتِهَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन की तहरीर में | तख़्तियाँ | लिया - उठा लिया | गुस्सा | मूसा (अ) | से-का | ठहरा (फ़रू हुआ) | और जब |

هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ ۝١٥٤ وَاخْتَارَ مُوْسٰى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मूसा | और चुन लिए | 154 | डरते हैं | अपने रब से | वह | उन लोगों के लिए जो | और रहमत | हिदायत |

قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا ۚ فَلَمَّآ اَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ मेरे रब | उस ने कहा | ज़ल्ज़ला | उन्हें पकड़ा (आ लिया) | फिर जब | हमारे वादे के वक़्त के लिए | मर्द | सत्तर (70) | अपनी क़ौम |

لَوْ شِئْتَ اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِيَّايَ ۭ اَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَآءُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेवक़ूफ़ (जमा) | किया | उस पर जो | क्या तू हमें हलाक करेगा | और मुझे | इस से पहले | इन्हें हलाक कर देता | अगर तू चाहता |

مِنَّا ۚ اِنْ هِيَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ۭ تُضِلُّ بِهَا مَنْ تَشَآءُ وَتَهْدِيْ مَنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो जिस | और तू हिदायत दे | तू चाहे | जिस | उस से | तू गुमराह करे | तेरी आज़माइश | मगर | यह नहीं | हम में से |

تَشَآءُ ۭ اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ ۝١٥٥

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 155 | बख़्शने वाला | बेहतरीन | और तू | और हम पर रह्म फ़रमा | सो हमें बख़्श दे | हमारा कारसाज़ | तू | तू चाहे |

وَاكْتُبْ لَنَا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ اِنَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक हम | और आख़िरत में | भलाई | दुनिया | इस | में | हमारे लिए | और लिख दे |

هُدْنَآ اِلَيْكَ ؕ قَالَ عَذَابِيْٓ اُصِيْبُ بِهٖ مَنْ اَشَآءُ ۚ وَرَحْمَتِيْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और मेरी रहमत | मैं चाहूँ | जिस | उस को | मैं पहुँचाता हूँ (दूँ) | अपना अज़ाब | उस ने फ़रमाया | तेरी तरफ़ | हम ने रुजूअ किया |

وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ؕ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ وَيُؤْتُوْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और देते हैं | डरते हैं | उन के लिए जो | सो मैं अनक़रीब वह लिख दूँगा | हर शै | वसीअ़ है |

الزَّكٰوةَ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُوْنَ ۝١٥٦ اَلَّذِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो | 156 | ईमान रखते हैं | हमारी आयात पर | वह | और वह जो | ज़कात |

يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| लिखा हुआ | उसे पाते हैं | वह जो - जिस | उम्मी | नबी | रसूल | पैरवी करते हैं |

عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ ۫ يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भलाई | वह हुक्म देता है उन्हें | और इंजील | तौरेत | में | अपने पास |

وَيَنْهٰىهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | और हराम करता है | पाकीज़ा चीज़ें | उन के लिए | और हलाल करता है | बुराई | से | और रोकता है उन्हें |

الْخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| थे | जो | और तौक़ | उन के बोझ | उन से | और उतारता है | नापाक चीज़ें |

عَلَيْهِمْ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और उस की मदद की | और उस की रफ़ाक़त (हिमायत) की | ईमान लाए उस पर | पस जो लोग | उन पर |

ع ١٩ ٩
وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝١٥٧

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 157 | फ़लाह पाने वाले | वह | वही लोग | उस के साथ | उतारा गया | जो | नूर | और पैरवी की |

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सब | तुम्हारी तरफ़ | अल्लाह का रसूल | बेशक मैं | लोगो | ऐ | कह दें |

الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़िन्दा करता है | वह | मगर | माबूद | नहीं | और ज़मीन | आसमान (जमा) | बादशाहत | उस की | वह जो |

وَيُمِيْتُ ۠ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِيْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जो | उम्मी | नबी | और उस का रसूल | अल्लाह पर | सो तुम ईमान लाओ | और मारता है |

يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝١٥٨

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 158 | हिदायत पाओ | ताकि तुम | और उस की पैरवी करो | और उस के सब कलाम | अल्लाह पर | ईमान रखता है |

وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ۝١٥٩

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 159 | इन्साफ़ करते हैं | और उस के मुताबिक़ | हक़ की | हिदायत देता है | एक गिरोह | क़ौमे मूसा | और से (में) |

और हमारे लिए इस दुनिया में और आख़िरत में भलाई लिख दे, बेशक हम ने तेरी तरफ़ रुजूअ किया, उस ने फ़रमाया मैं अपना अज़ाब जिस को चाहूँ दूँ, और मेरी रहमत हर शै पर वसीअ है, सो मैं वह अनक़रीब लिख दूँगा उन के लिए जो डरते हैं और ज़कात देते हैं और हमारी आयात पर ईमान रखते हैं। (156)

वह लोग जो पैरवी करते हैं (हमारे) रसूल (मुहम्मद स) नबी उम्मी की, जिसे वह लिखा हुआ पाते हैं अपने पास तौरेत में और इंजील में, वह उन्हें हुक्म देता है भलाई का और उन्हें रोकता है बुराई से, और उन के लिए हलाल करता है पाकीज़ा चीज़ें और उन पर हराम करता है नापाक चीज़ें, और उतारता है (उन के सरों) से बोझ और (उन की गर्दनों से) तौक़ जो उन पर थे, पस जो लोग उस पर ईमान लाए और उन्हों ने उस की हिमायत की और उस की मदद की और उस नूर की पैरवी की जो उस के साथ उतारा गया है, वही फ़लाह पाने वाले हैं। (157)

आप कह दें, ऐ लोगो! बेशक मैं तुम सब की तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ, वह जिस की बादशाहत है आस्मानों पर और ज़मीन में, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, वही ज़िन्दा करता है और मारता है, सो तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के रसूल नबी उम्मी (मुहम्मद स) पर, वह जो ईमान रखता है अल्लाह पर और उस के सब कलामों पर, और उस की पैरवी करो ताकि तुम हिदायत पाओ। (158)

और मूसा (अ) की क़ौम में एक गिरोह है जो हक़ की हिदायत देता है और वह उसी के मुताबिक़ इन्साफ़ करते हैं। (159)

और हम ने उन्हें जुदा कर दिया (तक़सीम कर दिया) बारह क़बीले (गिरोह गिरोह की सूरत में) और जब उस की क़ौम ने उस से पानी मांगा, हम ने मूसा की तरफ़ वहि भेजी कि मारो अपनी लाठी उस पत्थर पर, तो उस से बारह चश्मे फूट निकले, हर शख़्स ने पहचान लिया अपना घाट, और हम ने उन पर अब्र का साया किया और उन पर मन्न (एक क़िस्म का गोन्द) और सलवा (बटेर जैसा परिन्दा) उतारा, तुम खाओ पाकीज़ा चीज़ों में से जो हम ने तुम्हें दीं और उन्हों ने हमारा कुछ न बिगाड़ा लेकिन वह अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। **(160)**

और जब उन से कहा गया तुम इस शहर में रहो और इस से खाओ जैसे तुम चाहो और "हित्ततुन" (बख़्श दे) कहो और दरवाज़े (में) सिज्दा करते हुए दाख़िल हो, हम तुम्हें तुम्हारी ख़ताएं बख़्श देंगे, हम अनक़रीब नेकी करने वालों को ज़ियादा देंगे। **(161)**

पस बदल डाला उन में से ज़ालिमों ने उस के सिवा लफ़्ज़ जो उन्हें कहा गया था, सो हम ने उन पर अज़ाब भेजा आस्मान से क्योंकि वह ज़ुल्म करते थे। **(162)**

और उन से उस बस्ती के बारे में पूछो जो दर्या के किनारे पर थी, जब वह "सब्त" (हफ़्ता) के हुक्म के बारे में हद से बढ़ने लगे, उन के सब्त (हफ़्ते) के दिन मछलियां उन के सामने आजातीं और जिस दिन "सब्त" न होता न आतीं, इसी तरह हम उन्हें आज़माते क्योंकि वह नाफ़रमानी करते थे। **(163)**

وَقَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَیْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا ؕ وَاَوْحَیْنَاۤ اِلٰی

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ | और वहि भेजी हम ने | गिरोह गिरोह | बाप दादा की औलाद (क़बीले) | बारह (12) | और हम ने जुदा कर दिया उन्हें |

مُوْسٰٓی اِذِ اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗۤ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पत्थर | अपनी लाठी | मारो | कि | उसकी क़ौम | उस ने पानी मांगा | जब | मूसा |

فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَیْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शख़्स | हर | जान लिया (पहचान लिया) | चश्मे | बारह (12) | उस से | तो फूट निकले |

مَّشْرَبَهُمْ ؕ وَظَلَّلْنَا عَلَیْهِمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَیْهِمُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | और हम ने उतारा | अब्र | उन पर | और हम ने साया किया | अपना घाट |

الْمَنَّ وَالسَّلْوٰی ؕ كُلُوْا مِنْ طَیِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जो हम ने तुम्हें दी | पाकीज़ा | से | तुम खाओ | और सलवा | मन्न |

وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ یَظْلِمُوْنَ ﴿١٦٠﴾ وَاِذْ قِیْلَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कहा गया | और जब | 160 | ज़ुल्म करते | अपनी जानों पर | वह थे | और लेकिन | और हमारा कुछ न बिगाड़ा उन्हों ने |

لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْیَةَ وَكُلُوْا مِنْهَا حَیْثُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जैसे | इस से | और खाओ | शहर | इस | तुम रहो | उन से |

شِئْتُمْ وَقُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हम बख़्श देंगे तुम्हें | सिज्दा करते हुए | दरवाज़ा | और दाख़िल हो | हित्ता (बख़्श दे) | और कहो | तुम चाहो |

خَطِیْٓـٰٔتِكُمْ ؕ سَنَزِیْدُ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿١٦١﴾ فَبَدَّلَ الَّذِیْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह जिन्हों ने | पस बदल डाला | 161 | नेकी करने वाले | अनक़रीब हम ज़ियादा देंगे | तुम्हारी ख़ताएं |

ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَیْرَ الَّذِیْ قِیْلَ لَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हें | कहा गया | वह जो | सिवा | लफ़्ज़ | उन से | ज़ुल्म किया (ज़ालिम) |

فَاَرْسَلْنَا عَلَیْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्योंकि | आस्मान | से | अज़ाब | उन पर | सो हम ने भेजा |

كَانُوْا یَظْلِمُوْنَ ﴿١٦٢﴾ وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْیَةِ الَّتِیْ كَانَتْ ع ٢٠/١٠

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| थी | वह जो कि | बस्ती | से (बारे में) | और पूछो उन से | 162 | वह ज़ुल्म करते थे |

حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ اِذْ یَعْدُوْنَ فِی السَّبْتِ اِذْ تَاْتِیْهِمْ وقف لازم

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के सामने आजातीं | जब | हफ़्ते में | हद से बढ़ने लगे | जब | दर्या | सामने (किनारे) |

حِیْتَانُهُمْ یَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّیَوْمَ لَا یَسْبِتُوْنَ ۙ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सब्त न होता | और जिस दिन | खुल्लम खुल्ला (सामने) | उन का सब्त | दिन | मछलियां उन की |

لَا تَاْتِیْهِمْ ۚ كَذٰلِكَ ۚ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا یَفْسُقُوْنَ ﴿١٦٣﴾ النصف / معانقة ٦ عند المتأخرين ١٢

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 163 | वह नाफ़रमानी करते थे | क्योंकि | हम उन्हें आज़माते थे | इसी तरह | वह न आती थी |

وَاِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمَا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| या | उन्हें हलाक करने वाला | अल्लाह | ऐसी क़ौम | क्यों नसीहत करते हो | उन में से | एक गिरोह | कहा | और जब |

مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और शायद कि वह | तुम्हारा रब | तरफ़ | माज़िरत | वह बोले | सख़्त | अज़ाब | उन्हें अज़ाब देने वाला |

يَتَّقُوْنَ ﴿۱۶۴﴾ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖۤ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मना करते थे | वह जो कि | हम ने बचा लिया | उन्हें समझाई गई थी | जो | वह भूल गए | फिर जब | 164 | डरें |

عَنِ السُّوْٓءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا بِعَذَابٍ بَئِيْسٍ بِمَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| क्योंकि | बुरा | अज़ाब में | ज़ुल्म किया | वह लोग जिन्हों ने | और हम ने पकड़ लिया | बुराई से |

كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿۱۶۵﴾ فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन को हो जाओ | हम ने हुक्म दिया | उस से | जिस से मना किए गए थे | से | सरकशी करने लगे | फिर जब | 165 | नाफ़रमानी करते थे |

قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ﴿۱۶۶﴾ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ اِلٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तक | उन पर | अलबत्ता ज़रूर भेजता रहेगा | तुम्हारा रब | ख़बर दी | और जब | 166 | ज़लील ओ ख़ार | बन्दर |

يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारा रब | बेशक | बुरा अज़ाब | तक्लीफ़ दे उन्हें | जो | रोज़े क़ियामत |

لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖۚ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۶۷﴾ وَقَطَّعْنٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गिरोह दर गिरोह | ज़मीन में | और परागन्दा कर दिया हम ने उन्हें | 167 | मेहरबान | बख़्शने वाला | और बेशक वह | जल्द अज़ाब देने वाला |

مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ؗ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अच्छाइयों में | और आज़माया हम ने उन्हें | उस | सिवा | और उन से | नेकोकार | उन से |

وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۱۶۸﴾ فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह वारिस हुए | नाख़लफ़ | उन के बाद | पीछे आए | 168 | रुजूअ करें | ताकि वह | और बुराइयों में |

الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अब हमें बख़्श दिया जाएगा | और कहते हैं | इस अदना ज़िन्दगी | मताअ़ (असबाब) | वह लेते हैं | किताब |

وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ يَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अहद | उन पर (उन से) | क्या नहीं लिया गया | उस को ले लें | उस जैसा | माल ओ असबाब | आए उन के पास | और अगर |

الْكِتٰبِ اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ وَالدَّارُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और घर | जो उस में | और उन्हों ने पढ़ा | सच | मगर | अल्लाह पर (के बारे में) | वह न कहें | कि | किताब |

الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۶۹﴾ وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मज़बूत पकड़े हुए हैं | और जो लोग | 169 | क्या तुम समझते नहीं | परहेज़गार | उन के लिए जो | बेहतर | आख़िरत |

بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿۱۷۰﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 170 | नेकोकार (जमा) | अजर | ज़ाया नहीं करते | बेशक हम | नमाज़ | और क़ाइम रखते हैं | किताब को |

और जब उन में से एक गिरोह ने कहा तुम ऐसी क़ौम को क्यों नसीहत करते हो जिसे अल्लाह हलाक करने वाला है या अज़ाब देने वाला है सख़्त अज़ाब, वह बोले तुम्हारे रब के पास माज़िरत पेश करने के लिए और (इस उम्मीद पर) कि शायद वह डरें। (164)

फिर जब वह भूल गए जो उन्हें समझाई गई थी, जो बुराई से रोकते थे हम ने उन्हें बचा लिया, और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया हम ने उन्हें बुरे अज़ाब में पकड़ लिया क्योंकि वह नाफ़रमानी करते थे। (165)

फिर जब वह उस से सरकशी करने लगे जिस से मना किए गए थे तो हम ने हुक्म दिया उन को ज़लील ओ ख़ार बन्दर हो जाओ। (166)

और जब तुम्हारे रब ने ख़बर दी कि अलबत्ता वह इन (यहूद) पर ज़रूर भेजता रहेगा रोज़े क़ियामत तक (ऐसे अफ़्राद) जो उन्हें बुरे अज़ाब से तक्लीफ़ दें, बेशक तुम्हारा रब सज़ा देने में तेज़ है, और बेशक वह बख़्शने वाला मेह्रबान है। (167)

फिर हम ने उन्हें ज़मीन में परागन्दा कर दिया गिरोह दर गिरोह, उन में से (कुछ) नेकोकार हैं और उन में से (कुछ) उस के सिवा हैं, और हम ने उन्हें आज़माया अच्छाइयों और बुराइयों में ताकि वह रुजूअ करें। (168)

पीछे आए उन के बाद नाख़लफ़ जो किताब के वारिस हुए, वह इस अदना ज़िन्दगी का असबाब लेते हैं और कहते हैं अब हमें बख़्श दिया जाएगा, और अगर उन के पास उस जैसा माल ओ असबाब (फिर) आए तो उस को ले लें, क्या नहीं लिया गया उन से अहद (जो) किताब (तौरेत) में है कि वह अल्लाह के बारे में न कहें मगर सच और उन्हों ने पढ़ा है जो उस (तौरेत) में है, और आख़िरत का घर बेहतर है उन के लिए जो परहेज़गार हैं, क्या तुम समझते नहीं? (169)

और जो लोग मज़बूत पकड़ते हैं किताब को और नमाज़ क़ाइम करते हैं, बेशक हम नेकोकारों का अजर ज़ाया नहीं करते। (170)

और (याद करो) जब हम ने उठाया पहाड़ उन के ऊपर गोया कि वह साइबान है और उन्हों ने गुमान किया गोया कि वह उन के ऊपर गिरने वाला है, जो हम ने तुम्हें दिया है वह मज़बूती से पकड़ो और जो उस में है याद करो ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ। **(171)**

और (याद करो) जब तुम्हारे रब ने निकाली आदम की पुश्त से उन की औलाद, और उन्हें उन की जानों पर (उन पर) गवाह बनाया, क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? वह बोले क्यों नहीं! हम गवाह हैं, कभी तुम कियामत के दिन कहो बेशक हम इस से गाफ़िल (बेख़बर) थे। **(172)**

या तुम कहो शिर्क तो इस से कब्ल हमारे बाप दादा ने किया और उन के बाद हम (उन की) औलाद हुए, सो क्या तू हमें हलाक करता है उस पर जो ग़लत कारों ने किया। **(173)**

और इसी तरह हम आयतें खोल कर बयान करते हैं ताकि वह रुजूअ करें (लौट आएं)। **(174)**

और उन्हें उस शख़्स की ख़बर सुनाओ जिसे हम ने अपनी आयतें दीं तो वह उस से साफ़ निकल गया तो शैतान उस के पीछे लग गया, सो वह हो गया गुमराहों में से। **(175)**

और अगर हम चाहते तो उसे उन (आयतों) के ज़रीए बुलन्द करते, लेकिन वह ज़मीन की तरफ़ माइल हो गया, और उस ने पैरवी की अपनी ख़ाहिशात की, तो उस का हाल कुत्ते जैसा है, अगर तू उस पर हमला करे तो हांपे या उसे छोड़ दे तो (फिर भी) हांपे, यह मिसाल उन लोगों की है जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया, सो (यह) अहवाल बयान कर दो ताकि वह ग़ौर करें। **(176)**

बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया और अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे **(177)**

अल्लाह जिस को हिदायत दे वही हिदायत याफ़्ता है, और जिस को गुमराह कर दे सो वही लोग घाटा पाने वाले हैं। **(178)**

وَاِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | गिरने वाला | कि वह | और उन्हों ने गुमान किया | साइबान | गोया कि वह | उन के ऊपर | पहाड़ | उठाया हम ने | और जब |

خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ١٧١

ع ٢١ / ١١

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 171 | परहेज़गार बन जाओ | ताकि तुम | जो उस में | और याद करो | मज़बूती से | दिया हम ने तुम्हें | जो | तुम पकड़ो |

وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِيْٓ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की औलाद | उन की पुश्त | से | बनी आदम | से (की) | तुम्हारा रब | लिया (निकाली) | और जब |

وَاَشْهَدَهُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۭ قَالُوْا بَلٰى ۚۛ شَهِدْنَا ۚۛ اَنْ

معانقة ٧ عند المتأخرين ١٢

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि (कभी) | हम गवाह हैं | हां, क्यों नहीं | वह बोले | तुम्हारा रब | क्या नहीं हूँ मैं | उन की जानें | पर | और गवाह बनाया उन को |

تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِيْنَ ١٧٢ اَوْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस के सिवा नहीं (सिर्फ़) | तुम कहो | या | 172 | ग़ाफ़िल (जमा) | उस | से | थे | बेशक हम | क़ियामत के दिन | तुम कहो |

اَشْرَكَ اٰبَاۗؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ اَفَتُهْلِكُنَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सो क्या तू हमें हलाक करता है | उन के बाद | औलाद | और थे हम | उस से कब्ल | हमारे बाप दादा | शिर्क किया |

بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُوْنَ ١٧٣ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और ताकि वह | आयतें | हम खोल कर बयान करते हैं | और इसी तरह | 173 | अहले बातिल (ग़लत कार) | किया | उस पर जो |

يَرْجِعُوْنَ ١٧٤ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो साफ़ निकल गया | हमारी आयतें | हम ने उस को दी | वह जो कि | ख़बर | उन पर (उन्हें) | और पढ़ (सुनाओ) | 174 | रुजूअ करें |

مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ١٧٥ وَلَوْ شِئْنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम चाहते | और अगर | 175 | गुमराह (जमा) | से | सो हो गया | शैतान | तो उस के पीछे लगा | उस से |

لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो उस का हाल | अपनी ख़ाहिशात | और उस ने पैरवी की | ज़मीन की तरफ़ | गिर पड़ा (माइल होगया) | और लेकिन वह | उन के ज़रीए | उसे बुलन्द करते |

كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हांपे | या उसे छोड़ दे | वह हांपे | उस पर | तू हमला करे | अगर | कुत्ता | मानिंद-जैसा |

ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पस बयान कर दो | हमारी आयात | उन्हों ने झुटलाया | वह जो कि | लोग | मिसाल | यह |

الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ١٧٦ سَاۗءَ مَثَلَا ۨالْقَوْمُ الَّذِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जो | लोग | मिसाल | बुरी | 176 | ग़ौर करें | ताकि वह | अहवाल (क़िस्से) |

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ١٧٧ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह हिदायत दे | जो - जिस | 177 | ज़ुल्म करते | वह थे | और अपनी जानें | हमारी आयात | उन्हों ने झुटलाया |

فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ١٧٨

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 178 | घाटा पाने वाले | वह | सो वही लोग | गुमराह कर दे | और जिस | हिदायत याफ़्ता | तो वही |

وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوْبٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिल | उन के | और इन्सान | जिन | से | बहुत से | जहन्नम के लिए | और हम ने पैदा किए |

لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۡ وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۡ وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं सुनते | कान | और उन के लिए | उन से | नहीं देखते | आँखें | और उन के लिए | उन से | समझते नहीं |

بِهَا ۭ اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ۭ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿١٧٩﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 179 | ग़ाफ़िल (जमा) | वह | यही लोग | बदतरीन गुमराह | वह | बल्कि | चौपायों के मानिंद | यही लोग | उन से |

وَلِلّٰهِ الْاَسْمَاۗءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۠ وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कज रवी करते हैं | वह लोग जो | और छोड़ दो | उन से | पस उस को पुकारो | अच्छे | और अल्लाह के लिए नाम (जमा) |

فِيْٓ اَسْمَاۗىِٕهٖ ۭ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٨٠﴾ وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक उम्मत (गिरोह) | हम ने पैदा किया | और से जो | 180 | वह करते थे | जो | अनक़रीब वह बदला पाएंगे | उस के नाम | में |

ع ٢٢/١٠/١٢

يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿١٨١﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारी आयात को | उन्हों ने झुटलाया | और वह लोग जो | 181 | फ़ैसला करते हैं | और उस के मुताबिक़ | हक़ के साथ (ठीक) | वह बतलाते हैं |

سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٢﴾ وَاُمْلِيْ لَهُمْ ۭ اِنَّ كَيْدِيْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरी ख़ुफ़िया तदबीर | बेशक | उन के लिए | और मैं ढील दूँगा | 182 | वह न जानेंगे (ख़बर न होगी) | इस तरह | आहिस्ता आहिस्ता उन को पकड़ेंगे |

مَتِيْنٌ ﴿١٨٣﴾ اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا ۫ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| डराने वाले | मगर | वह | नहीं | जुनून | से | नहीं उन के साहिब को | क्या वह ग़ौर नहीं करते | 183 | पुख़्ता |

مُّبِيْنٌ ﴿١٨٤﴾ اَوَلَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पैदा किया | और जो | और ज़मीन | आस्मान (जमा) | बादशाहत | में | क्या वह नहीं देखते | 184 | साफ़ |

اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۙ وَّاَنْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ فَبِاَيِّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो किस | उनकी अजल (मौत) | क़रीब आगई हो | हो | कि | शायद | और यह कि | कोई चीज़ | अल्लाह |

حَدِيْثٍۢ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٨٥﴾ مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस को | हिदायत देने वाला | तो नहीं | गुमराह करे अल्लाह | जिस | 185 | वह ईमान लाएंगे | इस के बाद | बात |

وَيَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١٨٦﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ۭ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस का क़ाइम होना | कब है | घड़ी (क़ियामत) | से (बारे में) | वह आप (स) से पूछते हैं | 186 | बहकते हैं | उन की सरकशी | में | वह छोड़ देता है उन्हें |

وقف لازم / وقف منزل

قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَآ اِلَّا هُوَ ۘ ثَقُلَتْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भारी है | वह (अल्लाह) | सिवा | उस के वक़्त पर | उस को ज़ाहिर न करेगा | मेरा रब | पास | उस का इल्म | सिर्फ़ | कह दें |

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ۭ يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुतलाशी | गोया कि आप | आप (स) से पूछते हैं | अचानक | मगर | आएगी तुम पर | न | और ज़मीन | आस्मानों | में |

عَنْهَا ۭ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٧﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 187 | नहीं जानते | लोग | अक्सर | और लेकिन | अल्लाह के पास | उस का इल्म | सिर्फ़ | कह दें | उस के |

और हम ने जहन्नम के लिए बहुत से जिन और इन्सान पैदा किए, उन के दिल हैं उन से समझते नहीं, और उन की आँखें हैं उन से वह देखते नहीं, और उन के कान हैं वह सुनते नहीं उन से, यही लोग चौपायों की मानिंद हैं बल्कि (उन से भी) बदतरीन गुमराह हैं, यही लोग ग़ाफ़िल हैं। (179)

और अल्लाह के लिए हैं अच्छे नाम, सो तुम उस को उन (ही) से पुकारो, और उन लोगों को छोड़ दो जो उस के नामों में कज रवी करते हैं, जो वह करते थे अनक़रीब वह उस का बदला पाएंगे। (180)

और जो लोग हम ने पैदा किए (उन में) एक गिरोह है जो ठीक राह बतलाते हैं और उस के मुताबिक़ फ़ैसला करते हैं। (181)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया, आहिस्ता आहिस्ता हम उन को पकड़ेंगे कि उन्हें ख़बर भी न होगी। (182)

और मैं उन के लिए ढील दूँगा, बेशक मेरी ख़ुफ़िया तदबीर पुख़्ता है। (183)

क्या वह ग़ौर नहीं करते? कि उन के साहिब (मुहम्मद स) को कुछ जुनून नहीं, वह नहीं मगर साफ़ साफ़ डराने वाले। (184)

क्या वह नहीं देखते? बादशाहत आस्मानों और ज़मीन की और जो अल्लाह ने कोई चीज़ (भी) पैदा की है, और यह कि शायद क़रीब आगई हो उन की अजल (मौत की घड़ी), तो इस के बाद किस बात पर वह ईमान लाएंगे? (185)

जिस को अल्लाह गुमराह करे तो कोई हिदायत देने वाला नहीं उस को। और वह उन्हें उन की सरकशी में बहकते छोड़ देता है। (186)

वह आप (स) से क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि कब है उस के क़ाइम होने (का वक़्त)? आप (स) कह दें उस का इल्म सिर्फ़ मेरे रब के पास है, उस को उस के वक़्त पर अल्लाह के सिवा कोई ज़ाहिर न करेगा। भारी है आस्मानों और ज़मीन में, और तुम पर न आएगी (वाक़े होगी) मगर अचानक, आप (स) से (यूँ) पूछते हैं गोया कि आप (स) उस के मुतलाशी हैं, आप (स) कह दें: इस का इल्म सिर्फ़ अल्लाह के पास है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (187)

आप (स) कह दें: मैं मालिक नहीं अपनी ज़ात के लिए नफ़ा का न नुक़्सान का मगर जो अल्लाह चाहे, और अगर मैं ग़ैब जानता होता तो मैं बहुत भलाई जमा कर लेता, और मुझे कोई बुराई न पहुँचती, मैं बस डराने वाला ख़ुशख़बरी सुनाने वाला हूँ उन लोगों के लिए (जो) ईमान रखते हैं। (188)

वही है जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया, उस से बनाया उस का जोड़ा ताकि उस के पास सुकून हासिल करे, फिर जब मर्द ने उसे ढांप लिया तो उसे हलका सा हमल रहा, फिर वह उस को लिए फिरी, फिर जब वह बोझल हो गई तो दोनों ने अपने रब अल्लाह को पुकारा, अगर तू ने हमें सालेह बच्चा दिया तो हम ज़रूर तेरे शुक्र करने वालों में से होंगे। (189)

फिर जब अल्लाह ने उन्हें सालेह बच्चा दिया तो जो अल्लाह ने उन्हें दिया था उन्हों ने उस में शरीक ठहराए, सो अल्लाह उस से बरतर है जो वह शरीक ठहराते हैं (190)

क्या वह उन्हें शरीक ठहराते हैं जो कुछ भी पैदा नहीं करते बल्कि वह पैदा किए जाते हैं (ख़ालिक़ नहीं, मख़्लूक़ हैं)। (191)

और वह उन की मदद की क़ुदरत नहीं रखते और न ख़ुद अपनी मदद कर सकते हैं। (192)

और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो वह तुम्हारी पैरवी न करें, तुम्हारे लिए बराबर है ख़्वाह तुम उन्हें बुलाओ या ख़ामोश रहो। (193)

बेशक तुम जिन्हें पुकारते हो अल्लाह के सिवा, वह तुम्हारे जैसे बन्दे हैं, फिर उन्हें पुकारो तो चाहिए था कि वह तुम्हें जवाब दें अगर तुम सच्चे हो। (194)

क्या उन के पाऊँ हैं जिन से वह चलते हैं, या उन के हाथ हैं जिन से वह पकड़ते हैं, या उन की आँखें हैं जिन से वह देखते हैं, या उन के कान हैं जिन से वह सुनते हैं, कह दें, पुकारो अपने शरीकों को, फिर मुझ पर दाओ चलो, पस मुझे मोहलत न दो। (195)

قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِىْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अगर | अल्लाह चाहे | जो | मगर | नुक़्सान | और न | नफ़ा | अपनी ज़ात के लिए | मैं मालिक नहीं | कह दें |

كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۛۚ وَمَا مَسَّنِىَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पहुँचती मुझे | और न | बहुत भलाई | से | मैं अलबत्ता जमा कर लेता | ग़ैब | जानता | मैं होता |

السُّوْٓءُ ۛۚ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿١٨٨﴾ هُوَ الَّذِىْ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो-जिस | वह | 188 | ईमान रखते हैं | लोगों के लिए | और ख़ुशख़बरी सुनाने वाला | डराने वाला | मगर (सिर्फ़) | मैं | बस (फ़क़त) | कोई बुराई |

ع ٢٤ ١٣ معانقة ٨ عند المتأخرين ١٢

خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ اِلَيْهَا ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की तरफ़ (पास) | ताकि वह सुकून हासिल करे | उस का जोड़ा | उस से | और बनाया | एक | जान | से | पैदा किया तुम्हें |

فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ بِهٖ ۚ فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बोझल हो गई | फिर जब | उस के साथ (उसको) | फिर वह लिए फिरी | हलका सा | हमल | उसे हमल रहा | मर्द ने उस को ढांप लिया | फिर जब |

دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ اٰتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٨٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 189 | शुक्र करने वाले | से | हम ज़रूर होंगे | सालेह | तू ने हमें दिया | अगर | दोनों का (अपना) रब | दोनों ने पुकारा अल्लाह को |

فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا ۚ فَتَعٰلَى اللّٰهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सो अल्लाह बरतर | उन्हें दिया | उस में जो | शरीक | उस के | उन दोनों ने ठहराए | सालेह बच्चा | उस ने दिया उन्हें | फिर जब |

عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٩٠﴾ اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئًا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿١٩١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 191 | पैदा किए जाते हैं | और वह | कुछ भी | नहीं पैदा करते | जो | क्या वह शरीक ठहराते हैं | 190 | वह शरीक करते हैं | उस से जो |

وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿١٩٢﴾ وَاِنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और अगर | 192 | मदद करते हैं | ख़ुद अपनी | और न | मदद | उन की | वह क़ुदरत नहीं रखते |

تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़्वाह तुम उन्हें बुलाओ | तुम पर (तुम्हारे लिए) | बराबर | न पैरवी करें तुम्हारी | हिदायत | तरफ़ | तुम उन्हें बुलाओ |

اَمْ اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ﴿١٩٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सिवाए अल्लाह | से | तुम पुकारते हो | वह जिन्हें | बेशक | 193 | ख़ामोश रहो | या तुम |

عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम हो | अगर | तुम्हें | फिर चाहिए कि वह जवाब दें | पस पुकारो उन्हें | तुम्हारे जैसे | बन्दे |

صٰدِقِيْنَ ﴿١٩٤﴾ اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَآ ۫ اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह पकड़ते हैं | उन के हाथ | या | उन से | वह चलते हैं | क्या उन के पाऊँ | 194 | सच्चे |

بِهَآ ۫ اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सुनते हैं | कान | या उन के | उन से | देखते हैं | आँखें | उन की | या | उन से |

بِهَا ؕ قُلِ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿١٩٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 195 | पस न दो मुझे मोहलत | मुझ पर दाओ चलो | फिर | अपने शरीक | पुकारो | कह दें | उन से |

اِنَّ وَلِـيِّۦَ اللّٰهُ الَّـذِىْ نَـزَّلَ الْـكِـتٰـبَ ۖ وَهُـوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩٦﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 196 | नेक बन्दे | हिमायत करता है | और वह | किताब | नाज़िल कि | वह जिस | अल्लाह | मेरा कारसाज़ | बेशक |

وَالَّـذِيْـنَ تَـدْعُـوْنَ مِـنْ دُوْنِـهٖ لَا يَـسْـتَـطِـيْـعُـوْنَ نَـصْـرَكُـمْ وَلَاۤ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और न | तुम्हारी मदद | कुदरत रखते वह | नही | उस के सिवा | पुकारते हैं | और जो लोग |

اَنْفُسَهُمْ يَـنْـصُـرُوْنَ ﴿١٩٧﴾ وَاِنْ تَـدْعُـوْهُـمْ اِلَـى الْـهُـدٰى لَا يَـسْمَعُوْا ۖ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| न सुनें वह | हिदायत | तरफ़ | तुम पुकारो उन्हें | और अगर | 197 | वह मदद करें | खुद अपनी |

وَتَـرٰىـهُـمْ يَـنْـظُـرُوْنَ اِلَـيْـكَ وَهُـمْ لَا يُـبْـصِـرُوْنَ ﴿١٩٨﴾ خُـذِ الْعَفْوَ وَاْمُـرْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हुक्म दें | दरगुज़र | पकड़ें (करें) | 198 | नही देखते है | हालाकि | तेरी तरफ़ | वह तकते है | और तू उन्हें देखता है |

بِـالْـعُـرْفِ وَاَعْـرِضْ عَـنِ الْـجٰـهِـلِـيْـنَ ﴿١٩٩﴾ وَاِمَّـا يَـنْـزَغَـنَّـكَ مِـنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | तुझे उभारे | और अगर | 199 | जाहिल (जमा) | से | और मुँह फेर लें | भलाई का |

الشَّيْطٰنِ نَـزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِـاللّٰهِ ۭ اِنَّـهٗ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٠٠﴾ اِنَّ الَّـذِيْـنَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो लोग | बेशक | 200 | जानने वाला | सुनन वाला | बेशक वह | अल्लाह की | तो पनाह में आजा | कोई छेड़ | शैतान |

اتَّـقَـوْا اِذَا مَـسَّـهُـمْ طٰـۤـىِٕـفٌ مِّـنَ الـشَّـيْـطٰـنِ تَـذَكَّـرُوْا فَـاِذَا هُـمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह | तो फ़ौरन | वह याद करते है | शैतान | से | कोई गुजरने वाला (वस्वसा) | उन्हें छूता है (पहुँचता है) | जब | डरते हैं |

مُّبْصِرُوْنَ ﴿٢٠١﴾ وَاِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ فِى الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُوْنَ ﴿٢٠٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 202 | वह कमी नहीं करते | फिर | गुमराही | में | वह उन्हें खींचते है | और उन के भाई | 201 | देख लेते है |

وَاِذَا لَـمْ تَـاْتِـهِـمْ بِـاٰيَـةٍ قَـالُـوْا لَـوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ۭ قُـلْ اِنَّـمَاۤ اَتَّـبِـعُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मैं पैरवी करता हूँ | सिर्फ़ | कह दें | उसे घड़ लिया | क्यों नही | कहते है | कोई आयत | तुम न लाओ उन के पास | और जब |

مَـا يُـوْحٰـى اِلَـيَّ مِـنْ رَّبِّــيْ ۚ هٰـذَا بَـصَـآىِٕـرُ مِـنْ رَّبِّـكُـمْ وَهُـدًى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हिदायत | तुम्हारा रब | से | सूझ की बातें | यह | मेरा रब | से | मेरी तरफ़ | जो वहि की जाती है |

وَّرَحْـمَـةٌ لِّـقَـوْمٍ يُّـؤْمِـنُـوْنَ ﴿٢٠٣﴾ وَاِذَا قُـرِئَ الْـقُـرْاٰنُ فَـاسْـتَـمِـعُـوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो सुनो | कुरआन | पढ़ा जाए | और जब | 203 | ईमान रखते हैं | लोगों के लिए | और रहमत |

لَـهٗ وَاَنْـصِـتُـوْا لَـعَـلَّـكُـمْ تُـرْحَـمُـوْنَ ﴿٢٠٤﴾ وَاذْكُـرْ رَّبَّـكَ فِـيْ نَفْسِكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना दिल | में | अपना रब | और याद करो | 204 | रह्म किया जाए | ताकि तुम पर | और चुप रहो | उस को |

تَـضَـرُّعًـا وَّخِـيْـفَـةً وَّدُوْنَ الْـجَـهْـرِ مِـنَ الْـقَـوْلِ بِـالْـغُـدُوِّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सुबह | आवाज़ | से | बुलन्द | और बग़ैर | और डरते हुए | आजिज़ी से |

وَالْاٰصَـالِ وَلَا تَـكُـنْ مِّـنَ الْـغٰـفِـلِـيْـنَ ﴿٢٠٥﴾ اِنَّ الَّـذِيْـنَ عِـنْـدَ رَبِّـكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तेरा रब | नज़्दीक | जो लोग | बेशक | 205 | बेख़बर (जमा) | से | और न हो | और शाम |

ع ٢٤ ٨ ١٣ السجدة ١ اللازمة لَا يَـسْـتَـكْـبِـرُوْنَ عَـنْ عِـبَـادَتِـهٖ وَيُـسَـبِّـحُـوْنَـهٗ وَلَـهٗ يَـسْـجُـدُوْنَ ﴿٢٠٦﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 206 | सिज्दा करते हैं | और उसी को | और उस की तस्बीह करते हैं | उस की इबादत | से | तकब्बुर नहीं करते |

बेशक मेरा कारसाज़ अल्लाह है, जिस ने किताब नाजिल की और वह नेक बन्दों की हिमायत करता है। (196)

और उस (अल्लाह) के सिवा जिन को तुम पुकारते हो, वह कुदरत नहीं रखते तुम्हारी मदद की और न खुद अपनी मदद ही करने के क़ाबिल हैं। (197)

और अगर तुम उन्हें पुकारो हिदायत की तरफ़ तो वह (कुछ) न सुनें और तू उन्हें देखता है कि वह तेरी तरफ़ तकते हैं हालांकि वह (कुछ) नहीं देखते। (198)

आप (स) दरगुज़र करें और भलाई का हुक्म दें और जाहिलों से मुँह फेर लें। (199)

और अगर तुझे उभारे शैतान की तरफ़ से कोई छेड़ तो अल्लाह की पनाह में आजा, बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। (200)

बेशक जो लोग (अल्लाह से) डरते हैं जब उन्हें पहुँचता है शैतान (की तरफ़ से) कोई वस्वसा, वह (अल्लाह को) याद करते हैं तो वह फ़ौरन (राहे सवाब) देख लेते हैं। (201)

और उन (शैतानों) के भाई उन्हें गुमराही में खींचते हैं, फिर वह कमी नहीं करते। (202)

और जब तुम उन के पास कोई आयत न लाओ तो वह कहते हैं: तू क्यों नहीं (खुद) घड़ लेता, आप (स) कह दें मैं तो सिर्फ़ उस की पैरवी करता हूँ जो मेरे रब की तरफ़ से मेरी तरफ़ वहि की जाती है, यह (कुरआन) सूझ की बातें हैं तुम्हारे रब की तरफ़ से, और हिदायत ओ रहमत उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। (203)

और जब कुरआन पढ़ा जाए तो (पूरी तवज्जुह) से सुनो उस को और चुप रहो ताकि तुम पर रह्म किया जाए। (204)

और अपने रब को याद करो अपने दिल में आजिज़ी से और डरते हुए और बुलन्द आवाज़ के बग़ैर सुबह ओ शाम, और बेख़बरों से न हो। (205)

बेशक जो लोग तेरे रब के नज़्दीक हैं, वह उस की इबादत से तकब्बुर नहीं करते और उस की तस्बीह करते हैं और उसी को सिज्दा करते हैं। (206)

## آيَاتُهَا ٧٥ ❀ (٨) سُوْرَةُ الْاَنْفَالِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٠

आयात 75 | (8) सूरतुल अंफ़ाल (ग़नाइम) | रुकूआत 10

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ فَاتَّقُوا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप (स) से पूछते हैं | से (बारे में) | ग़नीमत | कह दें | ग़नीमत | अल्लाह के लिए | और रसूल | पस डरो |

اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | और दुरुस्त करो | अपने तईं | आपस में | और अल्लाह की इताअ़त करो | और उस का रसूल | अगर | तुम हो |

مُّؤْمِنِيْنَ ١ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मोमिन (जमा) | 1 | दरहक़ीक़त | मोमिन (जमा) | वह लोग | जब | ज़िक्र किया जाए अल्लाह का | डर जाएं |

قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के दिल | और जब | पढ़ी जाएं | उन पर | उस की आयात | वह ज़ियादा करें | ईमान |

وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ٢ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह अपने रब पर | भरोसा करते हैं | 2 | वह लोग जो | क़ाइम करते हैं | नमाज़ | और उस से जो |

رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ٣ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا لَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने उन्हें दिया | वह ख़र्च करते हैं | 3 | यही लोग | वह | मोमिन (जमा) | सच्चे | उन के लिए |

دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ٤ كَمَآ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दरजे | पास | उन का रब | और बख़्शिश | और रिज़्क़ | इज़्ज़त वाला | 4 | जैसा कि |

اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप (स) को निकाला | आप का रब | से | आप का घर | हक़ के साथ | और बेशक | एक जमाअ़त | से (का) | अहले ईमान |

لَكٰرِهُوْنَ ٥ يُجَادِلُوْنَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नाख़ुश | 5 | वह आप (स) से झगड़ते थे | में | हक़ | बाद | जबकि | वह ज़ाहिर हो चुका | गोया कि वह | हांके जा रहे हैं |

اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ٦ وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ | मौत | और वह | देख रह हैं | 6 | और जब | तुम्हें वादा देता था | अल्लाह | एक का |

الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दो गिरोह | कि वह | तुम्हारे लिए | और चाहते थे | कि | बग़ैर कांटे वाला |

تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हो | तुम्हारे लिए | और चाहता था अल्लाह | कि | साबित कर दे | हक़ | अपने कलिमात से | और काट दे | जड़ |

الْكٰفِرِيْنَ ٧ لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ٨

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| काफ़िर (जमा) | 7 | ताकि हक़ साबित करदे | हक़ | और बातिल साबित करदे | बातिल | ख़ाह | नापसन्द करें | मुज्रिम (जमा) | 8 |

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

आप (स) से ग़नीमत के बारे में पूछते हैं, कह दें ग़नीमत अल्लाह और रसूल (स) के लिए है, पस अल्लाह से डरो और दुरुस्त करो आपस में (तअल्लुक़ात) और अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअ़त करो अगर तुम मोमिन हो। (1)

दरहक़ीक़त मोमिन वह लोग हैं जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाए तो उन के दिल डर जाएं और उन पर (उन के सामने) उस की आयतें पढ़ी जाएं तो वह (आयात) उन का ईमान ज़ियादा करें, और वह अपने रब पर भरोसा करते हैं। (2)

वह लोग जो नमाज़ क़ाइम करते हैं और जो हम ने दिया उस में से ख़र्च करते हैं। (3)

यही लोग सच्चे मोमिन हैं, उन के लिए उन के रब के पास दरजे हैं और बख़्शिश और रिज़्क़ इज़्ज़त वाला। (4)

जैसा कि आप (स) को आप (स) के रब ने आप (स) के घर से हक़ (दुरुस्त तदबीर) के साथ निकाला, और बेशक अहले ईमान की एक जमाअ़त नाख़ुश थी। (5)

वह आप (स) से हक़ के मामले में झगड़ते थे जबकि वह ज़ाहिर हो चुका, गोया कि वह हांके जा रहे हैं मौत की तरफ़, और वह (उसे) देख रहे हैं। (6)

और (याद करो) अल्लाह तुम्हें वादा देता था कि (अबू जहल और अबू सुफ़ियान के) दो गिरोहों में से एक तुम्हारे लिए और तुम चाहते थे कि (जिस में) कांटा न लगे तुम्हारे लिए हो, और अल्लाह चाहता था कि साबित कर दे हक़ अपने कलिमात से, और काफ़िरों की जड़ काट दे। (7)

ताकि हक़ को हक़ साबित कर दे और बातिल को बातिल, ख़ाह मुज्रिम नापसन्द करें। (8)

إِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّيْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक हज़ार | मदद करूंगा तुम्हारी | कि मैं | तुम्हारी | तो उस ने कुबूल करली | अपना रब | तुम फ़र्याद करते थे | जब |

مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ ﴿٩﴾ وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَئِنَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और ताकि मुत्मइन हों | ख़ुशख़बरी | मगर | अल्लाह ने बनाया उसे | और नहीं | 9 | एक दूसरे के पीछे (लगातार) | फ़रिश्ते | से |

بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग़ालिब | बेशक अल्लाह | अल्लाह के पास | से | मगर | मदद | और नहीं | तुम्हारे दिल | उस से |

ع ١ ١٠ ١٥ حَكِيْمٌ ﴿١٠﴾ اِذْ يُغَشِّيْكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम पर | और उतारा उस ने | उस से | तस्कीन | ऊँघ | तुम्हें ढाँप लिया (तारी कर दी) | जब | 10 | हिक्मत वाला |

مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पलीदी (नापाकी) | तुम से | और दूर कर दे | उस से | ताकि पाक कर दे तुम्हें | पानी | आस्मान | से |

الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ ﴿١١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | क़दम | उस से | और जमा दे | तुम्हारे दिल | पर | और ताकि बान्ध दे (मज़बूत करदे) | शैतान |

اِذْ يُوْحِيْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ اَنِّيْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान लाए (मोमिन) | जो लोग | तुम साबित रखो | तुम्हारे साथ | कि मैं | फ़रिश्ते | तरफ़ (को) | तेरा रब | जब वहि भेजी |

سَاُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا فَوْقَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऊपर | सो तुम ज़र्ब लगाओ | रुअब | कुफ्र किया (काफ़िर) | जिन लोगों ने | दिल (जमा) | में | अनक़रीब डाल दूँगा |

الْاَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ﴿١٢﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि वह | यह इस लिए | 12 | पूर | हर | उन से (उन की) | और ज़र्ब लगाओ | गर्दनें |

شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो बेशक | और उस का रसूल | अल्लाह | मुख़ालिफ़ होगा | और जो | और उस का रसूल | अल्लाह | मुख़ालिफ़ हुए |

اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿١٣﴾ ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَاَنَّ لِلْكٰفِرِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| काफ़िरों के लिए | और यक़ीनन | पस चखो | तो तुम | 13 | अज़ाब (मार) | सख़्त | अल्लाह |

عَذَابَ النَّارِ ﴿١٤﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन लोगों से | तुम्हारी मुडभेड़ हो | जब | ईमान लाए | जो लोग | ऐ | 14 | दोज़ख़ | अज़ाब |

كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ﴿١٥﴾ وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस दिन | उन से फेरे | और जो कोई | 15 | पीठ (जमा) | तो उन से न फेरो | (मैदाने जंग में) लड़ने को | कुफ्र किया |

دُبُرَهٗٓ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस वह लौटा | अपनी जमाअत | तरफ़ | या जा मिलने को | जंग के लिए | घात लगाता हुआ | सिवाए | अपनी पीठ |

بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 16 | पलटने की जगह (ठिकाना) | और बुरी | जहन्नम | और उस का ठिकाना | अल्लाह | से | ग़ज़ब के साथ |

(याद करो) जब तुम अपने रब से फ़र्याद करते थे तो उस ने तुम्हारी (दुआ) कुबूल कर ली कि मैं तुम्हारी मदद करूँगा एक हजार लगातार आने वाले फ़रिश्तों से। (9)

और अल्लाह ने उस को नहीं बनाया मगर ख़ुशख़बरी, और ताकि उस से मुत्मइन हों तुम्हारे दिल, और मदद नहीं है मगर अल्लाह के पास से, बेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (10)

(याद करो) जब उस ने तुम पर ऊँघ तारी कर दी, यह उस (अल्लाह) की तरफ़ से तस्कीन (थी) और तुम पर आस्मान से पानी उतारा ताकि तुम्हें पाक कर दे उस से, और तुम से शैतान की डाली हुई नापाकी दूर कर दे, और ताकि तुम्हारे दिल मज़बूत कर दे, और उस से जमा दे (तुम्हारे) क़दम। (11)

(याद करो) जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों को वहि भेजी कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, तुम साबित रखो मोमिनों के (दिल), मैं अनक़रीब काफ़िरों के दिलों में रुअब डाल दूँगा, तुम उन की गर्दनों के ऊपर ज़र्ब लगाओ और उन के एक एक पूर पर ज़र्ब लगाओ। (12)

यह इस लिए हुआ कि वह अल्लाह और उस के रसूल के मुख़ालिफ़ हुए और जो अल्लाह और उस के रसूल का मुख़ालिफ़ होगा (वह याद रखे) बेशक अल्लाह की मार सख़्त है। (13)

तो तुम यह चखो और यक़ीनन काफ़िरों के लिए दोज़ख़ का अज़ाब है। (14)

ऐ ईमान वालो, जब उन से तुम्हारी मुडभेड़ हो जिन्हों ने कुफ़्र किया मैदाने जंग में तो उन से पीठ न फेरो। (15)

और जो कोई उस दिन उन से अपनी पीठ फेरे सिवाए उस के कि घात लगाता हो जंग के लिए या अपनी जमाअत की तरफ़ जा मिलने को, पस वह लौटा अल्लाह के ग़ज़ब के साथ और उस का ठिकाना जहन्नम है, और यह बुरा ठिकाना है। (16)

सो तुम ने उन्हें क़त्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह ने उन्हें क़त्ल किया, और आप (स) ने (मुट्ठी भर ख़ाक) नहीं फेंकी जब आप (स) ने फेंकी बल्कि अल्लाह ने फेंकी, और ताकि मोमिनों को एक बेहतरीन आज़माइश से कामयाबी के साथ गुज़ार दे। बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। **(17)**

यह तो हुआ, और यह कि अल्लाह काफ़िरों का दाओ सुस्त करने वाला है। **(18)**

(काफ़िरो!) अगर तुम फ़ैसला चाहते हो तो अलबत्ता तुम्हारे पास फ़ैसला (इस्लाम की फ़त्ह की सूरत में) आगया है, और अगर तुम बाज़ आजाओ तो वह तुम्हारे लिए बेहतर है, और अगर फिर (यही) करोगे तो हम (भी) फिर करेंगे और तुम्हारा जत्था हरगिज़ तुम्हारे काम न आएगा ख़ाह उस की कस्रत हो और बेशक अल्लाह मोमिनों के साथ है। **(19)**

ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उस के रसूल का हुक्म मानो, और उस से न फिरो जबकि तुम सुनते हो। **(20)**

और उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्हों ने कहा हम ने सुना, हालांकि वह सुनते नहीं। **(21)**

बेशक जानवरों से बदतरीन अल्लाह के नज़दीक (वह हैं जो) बहरे गूंगे हैं, जो समझते नहीं। **(22)**

और अगर अल्लाह उन में कोई भलाई जानता तो उन्हें ज़रूर सुना देता, और अगर अल्लाह उन्हें सुना दे तो ज़रूर फिर जाएं, और वह मुँह फेरने वाले हैं। **(23)**

ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उस के रसूल (की दावत) कुबूल करो जब वह तुम्हें उस के लिए बुलाएं जो तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शे और जान लो कि अल्लाह हाइल हो जाता है आदमी और उस के दिल के दरमियान, और यह कि तुम उसी की तरफ़ (रोज़े हश्र) उठाए जाओगे। **(24)**

और उस फ़ित्ने से डरो जो न पहुँचेगा तुम में से ख़ास तौर पर उन लोगों को जिन्हों ने ज़ुल्म किया, और जान लो कि अल्लाह शदीद अज़ाब देने वाला है। **(25)**

فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ قَتَلَهُمْ ۚ وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आप ने फेंकी | जब | और आप (स) ने न फेंकी थी | उन्हें क़त्ल किया | अल्लाह | बल्कि | सो तुम ने नहीं क़त्ल किया उन्हें |

وَلَٰكِنَّ اللَّهَ رَمَىٰ ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِينَ مِنْهُ بَلَاءً حَسَنًا ۚ إِنَّ اللَّهَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक अल्लाह | अच्छा | आज़माइश | अपनी तरफ़ से | मोमिन (जमा) | और ताकि आज़माए | फेंकी | अल्लाह | बल्कि |

سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٧﴾ ذَٰلِكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ مُوهِنُ كَيْدِ الْكَافِرِينَ ﴿١٨﴾ إِنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर | 18 | काफ़िर (जमा) | मक्र दाओ | सुस्त करने वाला | और यह कि अल्लाह | यह तो हुआ | 17 | जानने वाला | सुनने वाला |

تَسْتَفْتِحُوا فَقَدْ جَاءَكُمُ الْفَتْحُ ۖ وَإِنْ تَنْتَهُوا فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ ۖ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे लिए | बेहतर | तो वह | तुम बाज़ आजाओ | और अगर | फ़ैसला | आगया तुम्हारे पास | तो अलबत्ता | तुम फ़ैसला चाहते हो |

وَإِنْ تَعُودُوا نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَلَوْ كَثُرَتْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और ख़ाह कस्रत हो | कुछ | तुम्हारा जत्था | तुम्हारे | काम आएगा | और हरगिज़ न | हम फिर करेंगे | फिर करोगे | और अगर |

وَأَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٩﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا ع ٢ ١٦

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हुक्म मानो | ईमान लाए | वह लाग जो | ऐ | 19 | मोमिन (जमा) | साथ | और बेशक अल्लाह |

اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَأَنْتُمْ تَسْمَعُونَ ﴿٢٠﴾ وَلَا تَكُونُوا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और न हो जाओ | 20 | सुनते हो | जबकि तुम | उस से | और मत फिरो | अल्लाह और उस का रसूल |

كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿٢١﴾ إِنَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | 21 | वह नहीं सुनते | हालांकि | हम ने सुना | उन्हों ने कहा | उन लोगों की तरह जो |

شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِينَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जो कि | गूंगे | बहरे | अल्लाह के नज़दीक | जानवर (जमा) | बदतरीन |

لَا يَعْقِلُونَ ﴿٢٢﴾ وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَأَسْمَعَهُمْ ۖ وَلَوْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अगर | तो ज़रूर सुना देता उन को | कोई भलाई | उन में | जानता अल्लाह | और अगर | 22 | समझते नहीं |

أَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَهُمْ مُعْرِضُونَ ﴿٢٣﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान लाए | वह लोग जो | ऐ | 23 | मुँह फेरने वाले | और वह | वह ज़रूर फिर जाएं | उन्हें सुना दे |

اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ ۖ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उस के लिए जो ज़िन्दगी बख़्शे तुम्हें | वह बुलाएं तुम्हें | जब | और उसके रसूल का | अल्लाह का | कुबूल कर लो |

وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَيْهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की तरफ़ | और यह कि | और उस का दिल | आदमी | दरमियान | हाइल हो जाता है | कि अल्लाह | और जान लो |

تُحْشَرُونَ ﴿٢٤﴾ وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने ज़ुल्म किया | वह लोग जो | न पहुँचेगा | वह फ़ित्ना | और डरो | 24 | तुम उठाए जाओगे |

مِنْكُمْ خَاصَّةً ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢٥﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 25 | अज़ाब | शदीद | कि अल्लाह | और जान लो | ख़ास तौर पर | तुम में से |

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِي الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम डरते थे | ज़मीन | में | ज़ईफ़ (कमज़ोर) समझे जाते थे | थोड़े | तुम | जब | और याद करो |

اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम्हें रिज़्क़ दिया | अपनी मदद से | और तुम्हें कुव्वत दी | पस ठिकाना दिया उस ने तुम्हें | लोग | उचक ले जाएं तुम्हें | कि |

مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٦﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान लाए | वह लोग जो | ऐ | 26 | शुक्र गुज़ार हो जाओ | ताकि तुम | पाकीज़ा चीज़ें | से |

لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْٓا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 27 | जानते हो | जब कि तुम | अपनी अमानतें | और न ख़ियानत करो | और रसूल | अल्लाह | ख़ियानत न करो |

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और यह कि अल्लाह | बड़ी आज़माइश | और तुम्हारी औलाद | तुम्हारे माल | दरहक़ीक़त | और जान लो |

ع ٣ ١٤ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम अल्लाह से डरोगे | अगर | ईमान लाए | वह लोग जो | ऐ | 28 | बड़ा | अजर | पास |

يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और बख़्श देगा तुम्हें | तुम्हारी बुराइयां | तुम से | और दूर कर देगा | फ़ुरक़ान | तुम्हारे लिए | वह बना देगा |

وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾ وَاِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुफ़्र किया (काफ़िर) | वह लोग जिन्हों ने | ख़ुफ़िया तदबीरें करते थे | और जब | 29 | बड़ा | फ़ज़्ल वाला | और अल्लाह |

لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ۭ وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ۭ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और ख़ुफ़िया तदबीर करता है अल्लाह | और वह ख़ुफ़िया तदबीरें करते थे | या निकाल दें तुम्हें | या क़त्ल कर दें तुम्हें | तुम्हें क़ैद कर लें |

وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿٣٠﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह कहते हैं | हमारी आयात | उन पर | पढ़ी जाती हैं | और जब | 30 | तदबीर करने वाला | बेहतरीन | और अल्लाह |

قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاۗءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَآ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर (सिर्फ़) | यह | नहीं | उस | मिस्ल | कि हम कह लें | अगर हम चाहें | अलबत्ता हम ने सुन लिया |

اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣١﴾ وَاِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह | है | अगर | ऐ अल्लाह | वह कहने लगे | और जब | 31 | पहले (अगले) | क़िस्से कहानियां |

هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَاۗءِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मान | से | पत्थर | हम पर | तो बरसा | तेरी तरफ़ | से | हक़ | वह |

اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣٢﴾ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जबकि आप (स) | कि उन्हें अज़ाब दे | अल्लाह | और नहीं है | 32 | दर्दनाक | अज़ाब | या ले आ हम पर |

فِيْهِمْ ۭ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿٣٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 33 | बख़्शिश मांगते हों | जबकि वह | उन्हें अज़ाब देने वाला | अल्लाह | है | और नहीं | उन में |

और याद करो जब तुम ज़मीन में थोड़े थे, कमज़ोर समझे जाते थे, तुम डरते थे कि तुम्हें उचक ले जाएंगे लोग, पस उस ने तुम्हें ठिकाना दिया और अपनी मदद से कुव्वत दी और पाकीज़ा चीज़ों से तुम्हें रिज़्क़ दिया ताकि तुम शुक्र गुज़ार हो जाओ। (26)

ऐ ईमान वालो! ख़ियानत न करो अल्लाह की और रसूल (स) की, और ख़ियानत न करो अपनी अमानतों में जब कि तुम जानते हो (दीदा ओ दानिस्ता)। (27)

और जान लो कि दरहक़ीक़त तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद बड़ी आज़माइश है, और यह कि अल्लाह के पास बड़ा अजर है। (28)

ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह से डरोगे तो वह तुम्हारे लिए बना देगा (हक़ को बातिल से जुदा करने वाला) फ़ुरक़ान और तुम से तुम्हारी बुराइयां दूर कर देगा और तुम्हें बख़्श देगा, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (29)

और (याद करो) जब काफ़िर आप (स) के बारे में ख़ुफ़िया तदबीरें करते थे कि आप (स) को क़ैद कर लें या क़त्ल कर दें या (मक्के से) निकाल दें, और वह ख़ुफ़िया तदबीरें करते थे और अल्लाह (भी) ख़ुफ़िया तदबीर करता है, और अल्लाह बेहतरीन तदबीर करने वाला है। (30)

और जब उन पर पढ़ी जाती हैं हमारी आयात तो वह कहते हैं अलबत्ता हम ने सुन लिया, अगर हम चाहें तो हम भी इस जैसी (आयात) कह लें, यह तो सिर्फ़ क़िस्से कहानियां हैं अगलों की। (31)

और जब वह कहने लगे ऐ अल्लाह! अगर तेरी तरफ़ से यही हक़ है तो बरसा हम पर आस्मान से पत्थर या हम पर दर्दनाक अज़ाब ले आ। (32)

और अल्लाह (ऐसा) नहीं है कि उन्हें अज़ाब दे जबकि आप (स) उन में हैं, और अल्लाह उन्हें अज़ाब देने वाला नहीं जबकि वह बख़्शिश मांग रहे हों। (33)

और उन में क्या है? कि अल्लाह उन्हें अज़ाब न दे जबकि वह मस्जिदे हराम से रोकते हैं, और वह नहीं हैं उस के मुतवल्ली। उस के मुतवल्ली तो सिर्फ़ मुत्तक़ी हैं, लेकिन उन में से अक्सर नहीं जानते। (34)

और ख़ाने कअ़्बा के नज़दीक उन की नमाज़ क्या होती है मगर सिर्फ़ सीटियाँ और तालियाँ, पस अज़ाब चखो उस के बदले जो तुम कुफ़्र करते थे। (35)

बेशक काफ़िर अपने माल ख़र्च करते हैं ताकि रोकें अल्लाह के रास्ते से, सो अब वह ख़र्च करेंगे, फिर उन पर हस्रत होगी, फिर वह मग़लूब होंगे, और काफ़िर जहन्नम की तरफ़ इकट्ठे किए जाएंगे। (36)

ताकि अल्लाह गन्दे को पाक से जुदा कर दे और गन्दे को एक दूसरे पर रखे, फिर सब को एक ढेर कर दे, फिर उस को जहन्नम में डाल दे, यही लोग हैं ख़सारा पाने वाले। (37)

काफ़िरों से कह दें अगर वह बाज़ आजाएं तो उन्हें माफ़ कर दिया जाएगा जो गुज़र चुका, और अगर वह फिर वही करें तो तहक़ीक़ पहलों की रविश गुज़र चुकी है। (38)

और उन से जंग करो यहां तक कि कोई फ़ित्ना न रहे और दीन पूरा का पूरा अल्लाह का हो जाए, फिर अगर वह बाज़ आजाएं तो बेशक अल्लाह देखने वाला है जो वह करते हैं। (39)

और अगर वह मुँह मोड़ लें तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा साथी है, क्या ख़ूब साथी और क्या ख़ूब मददगार है। (40)

وَمَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मस्जिदे हराम | से | रोकते हैं | जबकि वह | अल्लाह उन्हें अज़ाब दे | कि न | उन के लिए (उन में) | और क्या |

وَمَا كَانُوْٓا اَوْلِيَآءَهٗ ؕ اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗٓ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मुत्तक़ी (जमा) | मगर (सिर्फ़) | उस के मुतवल्ली | नहीं | उस के मुतवल्ली | वह हैं | और नहीं |

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की नमाज़ | थी | और नहीं | 34 | नहीं जानते | उन में से अक्सर | और लेकिन |

عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّتَصْدِيَةً ؕ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अज़ाब | पस चखो | और तालियां | सीटियां | मगर | ख़ाने कअ़्बा | नज़दीक |

بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़र्च करते हैं | कुफ़्र किया (काफ़िर) | जिन लोगों ने | बेशक | 35 | तुम कुफ़्र करते थे | उस के बदले जो |

اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَسَيُنْفِقُوْنَهَا ثُمَّ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| फिर | सो अब ख़र्च करेंगे | रास्ता अल्लाह का | से | ताकि रोकें | अपने माल |

تَكُوْنُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कुफ़्र किया (काफ़िर) | और जिन लोगों ने | वह मग़लूब होंगे | फिर | हसरत | उन पर | होगा |

اِلٰى جَهَنَّمَ يُحْشَرُوْنَ ﴿٣٦﴾ لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पाक | से | गन्दा | ताकि अल्लाह जुदा करदे | 36 | इकट्ठे किए जाएंगे | जहन्नम | तरफ़ |

وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सब | फिर ढेर कर दे | दूसरे | पर | उस के एक | गन्दा | और रखे |

فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ قُلْ لِّلَّذِيْنَ ع ٩ ١٨

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन से जो | कहदें | 37 | ख़सारा पाने वाले | वह | यही लोग | जहन्नम | में | फिर डाल दे उस को |

كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ وَاِنْ يَّعُوْدُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर वही करें | और अगर | गुज़र चुका | जो | उन्हें | माफ़ कर दिया जाए | वह बाज़ आजाएं | अगर | उन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) |

فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٨﴾ وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| यहां तक कि | और उन से जंग करो | 38 | पहले लोग | सुन्नत (रविश) | गुज़र चुकी है | तो तहक़ीक़ |

لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انْتَهَوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह बाज़ आजाएं | फिर अगर | अल्लाह का | सब | दीन | और हो जाए | कोई फ़ित्ना | न रहे |

فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٣٩﴾ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो जान लो | वह मुँह मोड़ लें | और अगर | 39 | देखने वाला | वह करते हैं | जो वह | तो बेशक अल्लाह |

اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ؕ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿٤٠﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 40 | मददगार | और ख़ूब | साथी | ख़ूब | तुम्हारा साथी | कि अल्लाह |

الجزء ١٠

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस का पांचवा हिस्सा | अल्लाह के वास्ते | सो | किसी चीज़ | से | तुम ग़नीमत लो | जो कुछ | और तुम जान लो |

وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और मुसाफ़िरों | और मिस्कीनों | और यतीमों | और क़राबतदारों के लिए | और रसूल के लिए |

اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़ैसले के दिन | अपना बन्दा | पर | हम ने नाज़िल किया | और जो | अल्लाह पर | ईमान रखते | तुम हो | अगर |

يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤١﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 41 | कुदरत वाला | हर चीज़ | पर | और अल्लाह | दोनों फ़ौजें भिड़ गईं | जिस दिन |

اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| परला | किनारे पर | और वह | इधर वाला | किनारे पर | तुम | जब |

وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ مِنْكُمْ ۗ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِي الْمِيْعٰدِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वादे में | अलबत्ता तुम इख़तिलाफ़ करते | तुम बाहम वादा करते | और अगर | तुम से | नीचे | और क़ाफ़िला |

وَلٰكِنْ لِّيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۙ لِّيَهْلِكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि हलाक हो | हो कर रहने वाला | था | जो काम | अल्लाह | ताकि पूरा कर दे | और लेकिन |

مَنْ هَلَكَ عَنْۢ بَيِّنَةٍ وَّيَحْيٰى مَنْ حَيَّ عَنْۢ بَيِّنَةٍ ۗ وَاِنَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बेशक | दलील | से | ज़िन्दा रहना है | जिस | और जिन्दा रहे | दलील | से | हलाक हो | जो |

اللّٰهَ لَسَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٤٢﴾ اِذْ يُرِيْكَهُمُ اللّٰهُ فِيْ مَنَامِكَ قَلِيْلًا ۗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| थोड़ा | तुम्हारी ख़ाब | में | अल्लाह | तुम्हें दिखाया उन्हें | जब | 42 | जानने वाला | सुनने वाला | अल्लाह |

وَلَوْ اَرٰىكَهُمْ كَثِيْرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मामले में | और तुम झगड़ते | तो तुम बुज़दिली करते | बहुत जियादा | तुम्हें दिखाता उन्हें | और अगर |

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ ۗ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٤٣﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 43 | दिलों की बात | जानने वाला | बेशक वह | बचा लिया | अल्लाह | और लेकिन |

وَاِذْ يُرِيْكُمُوْهُمْ اِذِ الْتَقَيْتُمْ فِيْٓ اَعْيُنِكُمْ قَلِيْلًا وَّيُقَلِّلُكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम्हें थोड़े करके दिखलाए | थोड़ा | तुम्हारी आँखें | में | तुम आमन सामने हुए | जब-तो | वह तुम्हें दिखलाए | और जब |

فِيْٓ اَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۗ وَاِلَى اللّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और अल्लाह की तरफ़ | हो कर रहने वाला | था | काम | ताकि पूरा कर दे अल्लाह | उन की आँखें | में |

تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿٤٤﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً

ع ٥ / ٧ / ١

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई जमाअ़त | तुम्हारा आमना सामना हो | जब | ईमान वाले | ऐ | 44 | काम (जमा) | लौटना (बाज़गश्त) |

فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٤٥﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 45 | फ़लाह पाओ | ताकि तुम | बकस्रत | और अल्लाह को याद करो | तो साबित क़दम रहो |

और जान लो कि तुम जो कुछ किसी चीज़ से ग़नीमत हासिल किया है उस का पांचवा हिस्सा अल्लाह के लिए और रसूल के लिए, और (उन के) क़राबतदारों के लिए, और यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों के लिए, अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर और जो हम ने अपने बन्दे पर फ़ैसला (बद्र) के दिन नाज़िल किया। जिस दिन (कुफ़्र ओ इस्लाम की) दोनों फ़ौजें भिड़ गईं, और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाला है। (41)

जब तुम इधर वाले किनारे पर थे और वह परले किनारे पर थे, और क़ाफ़िला तुम से नीचे (तराई में) था, अगर (तुम और काफ़िर) बाहम ते करलेते तो अलबत्ता तुम वादे में इख़्तिलाफ़ करते (वक़्त पर न पहुँचते) लेकिन (अल्लाह ने जमा किया) ताकि पूरा कर दे अल्लाह वह काम जो हो कर रहने वाला था, ताकि जो हलाक हो वह दलील से हलाक हो और जिस को ज़िन्दा रहना है वह ज़िन्दा रहे दलील से, और बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (42)

और जब अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी ख़ाब में उन (काफ़िरों) को दिखाया थोड़ा, और अगर तुम्हें उन (की तादाद) को बहुत दिखाता तो तुम बुज़दिली करते, और (जंग के) मामले में झगड़ते, लेकिन अल्लाह ने बचा लिया, बेशक वह दिलों की बात जानने वाला है। (43)

और जब तुम आमने सामने हुए तो वह (अल्लाह) तुम्हें दिखलाए तुम्हारी आँखों में (दुश्मन को) थोड़े, और तुम्हें उन की आँखों में दिखलाया थोड़ा ताकि अल्लाह पूरा कर दे वह काम जो हो कर रहने वाला था, और तमाम कामों की बाज़गश्त अल्लाह की तरफ़ है। (44)

ऐ ईमान वालो! जब किसी जमाअ़ते (कुफ़्फ़ार) से तुम्हारा आमना सामना हो तो साबित क़दम रहो और अल्लाह को बकस्रत याद करो ताकि तुम फ़लाह (दो जहान में कामयाबी) पाओ। (45)

और इताअत करो अल्लाह की और उस के रसूल (स) की, और आपस में झगड़ा न करो कि बुज़दिल हो जाओगे और तुम्हारी हवा जाती रहेगी (उखड़ जाएगी) और सब्र करो, बेशक अल्लाह साथ है सब्र करने वालों के। (46)

और उन लोगों की तरह न हो जाना जो अपने घरों से निकले इतराते और लोगों के दिखाने को, और अल्लाह के रास्ते से रोकते हुए, और वह जो करते हैं अल्लाह अहाता किए हुए है। (47)

और जब शैतान ने उन के काम ख़ुशनुमा कर के दिखाए, और कहा आज लोगों में से तुम पर कोई ग़ालिब (आने वाला) नहीं, और मैं तुम्हारा रफ़ीक़ (हिमायती) हूँ, फिर जब दोनों लशकर आमने सामने हुए तो अपनी एड़ियों पर उलटा फिर गया और बोला मैं तुम से ला तअ़ल्लुक़ हूँ, मैं देखता हूँ जो तुम नहीं देखते, मैं अल्लाह से डरता हूँ (कि मुझे हलाक न कर दे) और अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है। (48)

जब मुनाफ़िक़ और वह लोग जिन के दिलों में मरज़ था कहने लगे कि उन्हें (मुसलमानों को) उन के दीन ने ख़ब्त में मुब्तला कर रखा है, और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो बेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (49)

और अगर तू देखे जब फ़रिश्ते काफ़िरों की जान निकालते हैं, मारते (जाते) हैं उन के चहरों और उन की पीठों पर और (कहते जाते हैं) दोज़ख़ का अ़ज़ाब चखो। (50)

यह उस का बदला है जो तुम्हारे हाथों ने (आमाल) आगे भेजे हैं और यह कि अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं। (51)

जैसा कि फ़िरऔ़न वालों का और उन से पहले लोगों का दस्तूर था, उन्होंने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया, और अल्लाह ने उन्हें उन के गुनाहों पर पकड़ा, बेशक अल्लाह क़ुव्वत वाला सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है। (52)

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और जाती रहेगी | पस बुज़दिल हो जाओगे | और आपस में झगड़ा न करो | और उस का रसूल | अल्लाह | और इताअ़त करो |

رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और न हो जाना | 46 | सब्र करने वाले | साथ | बेशक अल्लाह | और सब्र करो | तुम्हारी हवा |

كَالَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَّرِئَآءَ النَّاسِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| लोग | और दिखावा | इतराते | अपने घर | से | निकले | उन की तरह जो |

وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿٤٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 47 | अहाता किए हुए | वह करते हैं | से-जो | और अल्लाह | अल्लाह का रास्ता | से | और रोकते |

وَاِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे लिए (तुम पर) | कोई ग़ालिब नहीं | और कहा | उन के काम | शैतान | उन के लिए | ख़ुशनुमा कर दिया | और जब |

الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَاِنِّيْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَآءَتِ الْفِئَتٰنِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दोनों लशकर | आमने सामने हुए | फिर जब | तुम्हारा | रफ़ीक़ | और बेशक मैं | लोग | से | आज |

نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَقَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكُمْ اِنِّيْٓ اَرٰى مَا لَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं | जो | देखता हूँ | मैं बेशक | तुम से | जुदा, ला तअ़ल्लुक़ | बेशक मैं | और बोला | अपनी एड़ियां | पर | उलटा फिर गया |

تَرَوْنَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ ؕ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٤٨﴾ اِذْ يَقُوْلُ ع ٦ ٢

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कहने लगे | जब | 48 | अज़ाब | सख़्त | और अल्लाह | अल्लाह से डरता हूँ | मैं बेशक | तुम देखते |

الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَآءِ دِيْنُهُمْ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन का दीन | उन्हें | धोका दे दिया | मरज़ | उन के दिलों में | और वह जो कि | मुनाफ़िक़ (जमा) |

وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٤٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 49 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | तो बेशक अल्लाह | अल्लाह पर | भरोसा करे | और जो |

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मारते हैं | फ़रिश्ते | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | जान निकालते हैं | जब | तू देखे | और अगर |

وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ۚ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٥٠﴾ ذٰلِكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| यह | 50 | भड़कता हुआ (दोज़ख़) | अज़ाब | और चखो | और उन की पीठ (जमा) | उन के चहरे |

بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٥١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 51 | बन्दों पर | ज़ुल्म करने वाला | नहीं | और यह कि अल्लाह | तुम्हारे हाथ | आगे भेजे | बदला जो |

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की आयतों का | उन्हों ने इन्कार किया | उन से पहले | और जो लोग | फ़िरऔ़न वाले | जैसा कि दस्तूर |

فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٥٢﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 52 | अज़ाब | सख़्त | क़ुव्वत वाला | बेशक अल्लाह | उनके गुनाहों पर | तो अल्लाह ने उन्हें पकड़ा |

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब तक | किसी क़ौम को | उसे दी | कोई नेमत | बदलने वाला | नहीं है | इस लिए कि अल्लाह | यह |

يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٣﴾ كَدَاْبِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जैसा कि दस्तूर | 53 | जानने वाला | सुनने वाला | और यह कि अल्लाह | उन के दिलों में | जो | वह बदलें |

اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो हम ने उन्हें हलाक कर दिया | अपना रब | आयतों को | उन्हों ने झुटलाया | उन से पहले | और वह लोग जो | फ़िरऔन वाले |

بِذُنُوْبِهِمْ وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 54 | ज़ालिम | थे | और सब | फ़िरऔन वाले | और हम ने ग़र्क़ कर दिया | उन के गुनाहों के सबब |

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 55 | ईमान नहीं लाते | सो वह | कुफ़्र किया | वह जिन्हों ने | अल्लाह के नजदीक | जानवर (जमा) | बदतरीन | बेशक |

اَلَّذِيْنَ عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हर बार | में | अपना मुआहदा | तोड़ देते हैं | फिर | उन से | तुम ने मुआहदा किया | वह लोग जो |

وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के जरीए | तो भगा दो | जंग में | तुम उन्हें पाओ | पस अगर | 56 | डरते नहीं | और वह |

مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَاِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किसी क़ौम | से | तुम्हें ख़ौफ़ हो | और अगर | 57 | इब्रत पकड़ें | अजब नहीं कि वह | उन के पीछे | जो |

ع ١٠ خِيَانَةً فَانْۢبِذْ اِلَيْهِمْ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْخَآئِنِيْنَ ﴿٥٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 58 | दग़ाबाज़ (जमा) | पसन्द नहीं करता | बेशक अल्लाह | बराबरी | पर | उन की तरफ़ | तो फेंक दो | ख़ियानत (दग़ाबाज़ी) |

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَبَقُوْا ؕ اِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُوْنَ ﴿٥٩﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 59 | वह आजिज़ न कर सकेंगे | बेशक वह | बाज़ी ले गए | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | और हरगिज़ ख़याल न करें |

وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पले हुए घोड़े | और से | कुव्वत | से | तुम से हो सके | जो | उन के लिए | और तैयार रखो |

تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ وَاٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के सिवा | से | और दूसरे | और तुम्हारे (अपने) दुश्मन | अल्लाह के दुश्मन | उस से | धाक बिठाओ |

لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ يَعْلَمُهُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह का रास्ता | में | कुछ | तुम ख़र्च करोगे | और जो | अल्लाह जानता है उन्हें | तुम उन्हें नहीं जानते |

يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सुलह की तरफ़ | वह झुकें | और अगर | 60 | तुम्हारा नुक़्सान न किया जाएगा | और तुम | तुम्हें | पूरा पूरा दिया जाएगा |

فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 61 | जानने वाला | सुनने वाला | वह | बेशक | अल्लाह पर | और भरोसा रखो | उस की तरफ़ | तो सुलह कर लो |

यह इस लिए है कि अल्लाह (कभी) उस नेमत को बदलने वाला नहीं जो उस ने किसी क़ौम को दी जब तक वह (न) बदल डालें जो उन के दिलों में है (अपना अक़ीदा ओ अहवाल) और यह कि अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (53)

जैसा कि दस्तूर था फ़िरऔन वालों का और उन लोगों का जो उन से पहले थे, उन्हों ने अपने रब की आयतों को झुटलाया तो हम ने उन्हें उन के गुनाहों के सबब हलाक कर दिया और फ़िरऔन वालों को ग़र्क़ कर दिया, और वह सब ज़ालिम थे। (54)

बेशक अल्लाह के नज़दीक सब जानवरों से बदतर वह लोग हैं जिन्हों ने कुफ़्र किया, सो वह ईमान नहीं लाते। (55)

वह लोग जिन से तुम ने मुआहदा किया, फिर वह अपना मुआहदा तोड़ देते हैं हर बार, और वह डरते नहीं। (56)

पस अगर तुम उन्हें जंग में पाओ तो (उन्हें ऐसी सज़ा दो कि) उन के जरीए भगा दो उन को जो उन के पीछे हैं, अजब नहीं कि वह इब्रत पकड़ें। (57)

अगर तुम्हें किसी क़ौम से दग़ा बाज़ी का डर हो तो (उन का मुआहदा) फेंक दो उन की तरफ़ बराबरी पर (बराबरी का जवाब दो), बेशक अल्लाह दग़ाबाज़ों को पसन्द नहीं करता। (58)

और काफ़िर हरगिज़ ख़याल न करें कि वह बाजी ले गए, बेशक वह आजिज़ न कर सकेंगे। (59)

और उन के (मुक़ाबले के) लिए तैयार रखो कुव्वत जो तुम से हो सके और पले हुए घोड़े, उस से धाक बिठाओ अल्लाह के दुश्मनों और अपने दुश्मनों पर, और दूसरों पर उन के सिवा जिन्हें तुम नहीं जानते, अल्लाह उन्हें जानता है, और तुम जो कुछ अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करोगे तुम्हें पूरा पूरा दिया जाएगा और तुम्हारा नुक़्सान न किया जाएगा। (60)

और अगर वह सुलह की तरफ़ झुकें तो (तुम भी) उस (सुलह) की तरफ़ झुको, और अल्लाह पर भरोसा रखो, बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। (61)

और अगर वह तुम्हें धोका देना चाहें तो बेशक तुम्हारे लिए अल्लाह काफ़ी है, वह जिस ने तुम्हें अपनी मदद से और मुसलमानों से ज़ोर दिया। (62)

और उल्फ़त डाल दी उन के दिलों में, अगर तुम सब कुछ ख़र्च कर देते जो ज़मीन में है उन के दिलों में उल्फ़त न डाल सकते थे लेकिन अल्लाह ने उन के दरमियान उल्फ़त डाल दी, बेशक वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (63)

ऐ नबी (स)! अल्लाह काफ़ी है तुम्हें और तुम्हारे पैरू मोमिनों के लिए। (64)

ऐ नबी (स)! मोमिनों को जिहाद पर तरग़ीब दो, अगर तुम में से बीस (20) सब्र वाले (साबित क़दम) होंगे तो वह दो सौ (200) पर ग़ालिब आएंगे, और अगर तुम में से एक सौ (100) हों तो वह एक हज़ार (1000) काफ़िरों पर ग़ालिब आएंगे, इस लिए कि वह लोग (काफ़िर) समझ नहीं रखते। (65)

अब अल्लाह ने तुम से तख़फ़ीफ़ कर दी, और मालूम कर लिया कि तुम में कमज़ोरी है, पस अगर तुम में से एक सौ (100) सब्र वाले हों तो वह दो सौ (200) पर ग़ालिब आएंगे, अगर तुम में से एक हज़ार (1000) हों तो वह अल्लाह के हुक्म से दो हज़ार (2000) पर ग़ालिब रहेंगे और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। (66)

किसी नबी के लिए (लाइक़) नहीं कि उस के (क़ब्ज़े में) क़ैदी हों जब तक वह ज़मीन में दुश्मनों को अच्छी तरह कुचल न दे, तुम दुनिया का माल चाहते हो, और अल्लाह आख़िरत चाहता है, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (67)

अगर अल्लाह (की तरफ़) से पहले ही लिखा हुआ न होता तो उस (फ़िद्या) के लेने की वजह से तुम्हें पहुँचता बड़ा अ़ज़ाब। (68)

पस उस में से खाओ जो तुम्हें ग़नीमत में हलाल पाक मिला, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (69)

وَاِنْ يُّرِيْدُوْٓا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ؕ هُوَ الَّذِيْٓ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिस ने | वह | तुम्हारे लिए काफ़ी है अल्लाह | तो बेशक | तुम्हें धोका दें | कि | वह चाहें | और अगर |

اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾ وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ؕ لَوْ اَنْفَقْتَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम ख़र्च करते | अगर | उन के दिल | दरमियान (में) | और उल्फ़त डाल दी | 62 | और मुसलमानों से | अपनी मदद से | तुम्हें ज़ोर दिया |

مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | और लेकिन | उन क दिल | में | उल्फ़त डाल सकते | न | सब कुछ | ज़मीन | में | जो |

اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٣﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | काफ़ी है तुम्हें | नबी (स) | ऐ | 63 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | बेशक वह | उन के दरमियान | उल्फ़त डाल दी |

ع ٨ ٣

وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٤﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मोमिन (जमा) | तरग़ीब दो | नबी (स) | ऐ | 64 | मोमिन (जमा) | से | तुम्हारे पैरू हैं | और जो |

عَلَى الْقِتَالِ ؕ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग़ालिब आएंगे | सब्र वाले | बीस (20) | तुम में से | हों | अगर | क़िताल (जिहाद) | पर |

مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفًا مِّنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | एक हज़ार (1000) | वह ग़ालिब आएंगे | एक सौ (100) | तुम में से | हों | और अगर | दो सौ (200) |

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾ اَلْـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम से | अल्लाह ने तख़फ़ीफ़ कर दी | अब | 65 | समझ नहीं रखते | लोग | इस लिए कि वह | वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) |

وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ؕ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह ग़ालिब आएंगे | सब्र वाले | एक सो (100) | तुम में से | पस अगर हों | कमज़ोरी | तुम में | कि | और मालूम कर लिया |

مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के हुक्म से | दो हज़ार (2000) | वह ग़ालिब रहेंगे | एक हज़ार (1000) | तुम में से | हों | और अगर | दो सौ (200) |

وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٦٦﴾ مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰى حَتّٰى

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब तक | क़ैदी | उस के | हों | कि | किसी नबी के लिए | नहीं है | 66 | सब्र वाले | साथ | और अल्लाह |

يُثْخِنَ فِي الْاَرْضِ ؕ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۖ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चाहता है | और अल्लाह | दुनिया | माल | तुम चाहते हो | ज़मीन | में | ख़ूनरेज़ी कर ले |

الْاٰخِرَةَ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٧﴾ لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पहले ही | अल्लाह से | लिखा हुआ | अगर न | 67 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | और अल्लाह | आख़िरत |

لَمَسَّكُمْ فِيْمَآ اَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٦٨﴾ فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हें ग़नीमत में मिला | उस में जो | पस खाओ | 68 | बड़ा | अ़ज़ाब | तुम ने लिया | उस में जो | तुम्हें पहुँचता |

حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٩﴾ ع ٩ ٥

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 69 | निहायत मेहरबान | बख़्शने वाला | बेशक अल्लाह | और अल्लाह से डरो | पाक | हलाल |

يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ قُلْ لِّمَنْ فِىْۤ اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰۤى اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِىْ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | मालूम कर लेगा अल्लाह | अगर | क़ैदी | से | तुम्हारे हाथ | में | उन से जो | कह दें | नबी | ऐ |

قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّاۤ اُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बख़्शने वाला | और अल्लाह | तुम्हें | और बख़्शदेगा | तुम से | लिया गया | उस से जो | तुम्हें देगा बेहतर | कोई भलाई | तुम्हारे दिल |

رَّحِيْمٌ ﴿۷۰﴾ وَاِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| इस से क़ब्ल | तो उन्हों ने ख़ियानत की अल्लाह से | आप (स) से खियानत का | वह इरादा करेंगे | और अगर | 70 | निहायत मेह्रबान |

فَاَمْكَنَ مِنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۷۱﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने हिज्रत की | ईमान लाए | जो लोग | बेशक | 71 | हिक्मत वाला | जानने वाला | और अल्लाह | उन से (उन्हें) | तो क़ब्ज़े में दे दिया |

وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ठिकाना दिया | और वह लोग जो | अल्लाह का रास्ता | में | और अपनी जानें | अपने मालों से | और जिहाद किया |

وَّنَصَرُوْۤا اُولٰٓئِكَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान लाए | और वह लोग जो | बाज़ (दूसरे) | रफ़ीक़ | उन के बाज़ | वही लोग | और मदद की |

وَلَمْ يُهَاجِرُوْا مَا لَكُمْ مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ مِّنْ شَىْءٍ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह हिज्रत करें | यहां तक कि | कुछ भी (सरोकार) | उन की रफ़ाक़त | से | तुम्हें नहीं | और उन्हों ने हिज्रत न की |

وَاِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ فِى الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ اِلَّا عَلٰى قَوْمٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह क़ौम | पर (ख़िलाफ़) | मगर | मदद | तो तुम पर (लाज़िम है) | दीन में | वह तुम से मदद मांगें | और अगर |

بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۷۲﴾ وَالَّذِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह लोग | 72 | देखने वाला | तुम करते हो | जो | और अल्लाह | मुआहदा | और उन के दरमियान | तुम्हारे दरमियान |

كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ اِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِى الْاَرْضِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन में | फ़ित्ना | होगा | अगर तुम ऐसा न करोगे | बाज़ (दूसरे) | रफ़ीक़ | उन के बाज़ | जिन्हों ने कुफ़्र किया |

وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ ﴿۷۳﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِىْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | और जिहाद किया उन्हों ने | और उन्हों ने हिज्रत की | ईमान लाए | और वह लोग जो | 73 | बड़ा | और फ़साद |

سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْۤا اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मोमिन (जमा) | वह | वही लोग | और मदद की | ठिकाना दिया | और वह लोग जो | अल्लाह का रास्ता |

حَقًّا ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿۷۴﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْ بَعْدُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के बाद | ईमान लाए | और वह लोग जो | 74 | इज़्ज़त | और रोज़ी | बख़्शिश | उन के लिए | सच्चे |

وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا مَعَكُمْ فَاُولٰٓئِكَ مِنْكُمْ ؕ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और क़राबतदार | तुम में से | पस वही लोग | तुम्हारे साथ | और उन्हों ने जिहाद किया | और उन्हों ने हिज्रत की |

بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِىْ كِتٰبِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۷۵﴾ ع ١٠ ٦

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 75 | जानने वाला | हर चीज़ | बेशक अल्लाह | अल्लाह का हुक्म | में (रू से) | बाज़ (दूसरे) के | क़रीब (ज़ियादा हक़ दार) | उन के बाज़ |

ऐ नबी (स)! आप (स) के हाथ (क़ब्ज़े) में जो क़ैदी हैं, उन से कह दें कि अगर अल्लाह तुम्हारे दिलों में कोई भलाई मालूम कर लेगा तो तुम्हें उस से बेहतर देगा जो तुम से लिया गया और वह तुम्हें बख़्श देगा, और अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेह्रबान है। (70)

और अगर आप (स) से खियानत का इरादा करेंगे तो उन्हों ने उस से क़ब्ल अल्लाह से ख़ियानत की तो अल्लाह ने उन्हें (तुम्हारे) क़ब्ज़े में दे दिया, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (71)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने हिज्रत की और अपने मालों और जानों से अल्लाह की राह में जिहाद किया, और जिन लोगे ने ठिकाना दिया और मदद की वही लोग एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं, और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने हिज्रत न की, तुम्हें नहीं है कुछ सरोकार उन की रफ़ाक़त से, यहां तक कि वह हिज्रत करें, और अगर वह तुम से दीन में मदद मांगें तो तुम पर मदद लाज़िम है, मगर उस क़ौम के खिलाफ़ नहीं जिस के और तुम्हारे दरमियान मुआहदा हो, और जो तुम करते हो अल्लाह उसे देखने वाला है। (72)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं, अगर तुम ऐसा न करोगे तो फ़ित्ना होगा ज़मीन में और बड़ा फ़साद (होगा)। (73)

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने हिज्रत की और जिहाद किया अल्लाह के रास्ते में, और जिन लोगों ने ठिकाना दिया और मदद की वही लोग सच्चे मोमिन हैं, उन के लिए बख़्शिश और इज़्ज़त की रोजी है। (74)

और जो लोग उस के बाद ईमान लाए और उन्हों ने हिज्रत की और तुम्हारे साथ (मिल कर) जिहाद किया पस वही तुम में से हैं, और क़राबतदार (आपस में) एक दूसरे के जियादा हक़ दार हैं अल्लाह के हुक्म से, बेशक अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (75)

अल्लाह और उस के रसूल (स) (की तरफ़) से क़तअ़ तअ़ल्लुक़ है उन मुश्रिकों से जिन्हों ने तुम से अ़हद किया हुआ था। (1)

पस (मुश्रिको) ज़मीन में चार महीने चल फिर लो, और जान लो कि तुम अल्लाह को आ़जिज़ करने वाले नहीं, और यह कि अल्लाह काफ़िरों को रुस्वा करने वाला है। (2)

और अल्लाह और उस के रसूल (की तरफ़) से हज-ए-अक्बर के दिन लोगों के लिए एलान है कि अल्लाह और उस के रसूल का मुश्रिकों से क़तअ़ तअ़ल्लुक़ है, पस अगर तुम तौबा कर लो तो यह तुम्हारे लिए बेहतर है, और अगर तुम ने मुँह फेर लिया तो जान लो कि तुम अल्लाह को आ़जिज़ करने वाले नहीं, और आगाह कर दो उन लोगों को जिन्हों ने कुफ़्र किया अ़ज़ाब दर्दनाक से। (3)

सिवाए उन मुश्रिक लोगों के जिन से तुम ने अ़हद किया था, फिर उन्हों ने तुम से (अ़हद में) कुछ भी कमी न की और न उन्हों ने तुम्हारे ख़िलाफ़ किसी की मदद की, तो उन से उन का अहद उन की (मुक़र्ररा) मुद्दत तक पूरा करो, बेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है। (4)

फिर जब हुर्मत वाले महीने गुज़र जाएं तो मुश्रिकों को क़त्ल करो जहां तुम उन्हें पाओ, और उन्हें पकड़ो और उन्हें घेर लो, और उन के लिए हर घात में बैठो, फिर अगर वह तौबा कर लें और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात अदा करें तो उन का रास्ता छोड़ दो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेह्रबान है। (5)

और अगर मुश्रिकीन हि से कोई आप (स) से पनाह मांगे तो उसे पनाह दे दें यहां तक कि वह सुन ले अल्लाह का कलाम, फिर उसे उस की अम्न की जगह पहुँचा दें, यह इस लिए है कि वह इल्म नहीं रखते (नादान हैं)। (6)

## آيَاتُهَا ١٢٩ ❀ (٩) سُوْرَةُ التَّوْبَـةِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٦

रुकुआत 16 | (9) सूरतुत तौबा | आयात 129

بَـرَآءَةٌ مِّـنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِـهٖٓ اِلَـى الَّـذِيْـنَ عٰهَدْتُّمْ مِّـنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | मुश्रिकीन | से | तुम से अ़हद किया | वह लोग जिन्हों ने | तरफ़ | और उस का रसूल (स) | अल्लाह | से | एलान-ए-बरात |

فَسِيْحُوْا فِى الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِى اللّٰهِ ۙ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह को आ़जिज़ करने वाले | नहीं | कि तुम | और जान लो | महीने | चार | ज़मीन में | पस चल फिर लो |

وَاَنَّ اللّٰهَ مُـخْـزِى الْـكٰـفِـرِيْـنَ ﴿٢﴾ وَاَذَانٌ مِّـنَ اللّٰهِ وَرَسُـوْلِـهٖٓ اِلَـى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ (लिए) | और उस का रसूल | अल्लाह से | और एलान | 2 | काफ़िर (जमा) | रुस्वा करने वाला | और यह कि अल्लाह |

الـنَّـاسِ يَـوْمَ الْـحَـجِّ الْاَكْـبَـرِ اَنَّ اللّٰهَ بَـرِىْٓءٌ مِّـنَ الْـمُـشْـرِكِيْـنَ ۙ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मुश्रिक (जमा) | से | क़तअ़ तअ़ल्लुक़ | कि अल्लाह | हज-ए-अक्बर | दिन | लोग |

وَرَسُوْلُـهٗ ۚ فَـاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि तुम | तो जान लो | तुम ने मुँह फेर लिया | और अगर | तुम्हारे लिए बेहतर | तो यह | तुम तौबा करो | पस अगर | और उस का रसूल |

غَيْرُ مُعْجِزِى اللّٰهِ ۗ وَبَـشِّـــرِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣﴾ اِلَّا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सिवाए | 3 | दर्दनाक | अ़ज़ाब से | उन्हों ने कुफ़्र किया | वह लोग जो | और ख़ुशख़बरी दो (आगाह कर दो) | अल्लाह | आ़जिज़ करने वाले | न |

الَّـذِيْـنَ عٰـهَـدْتُّـمْ مِّـنَ الْـمُـشْـرِكِيْـنَ ثُـمَّ لَـمْ يَـنْـقُـصُوْكُـمْ شَيْـًٔا وَّلَـمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न | कुछ भी | उन्हों ने तुम से कमी न की | फिर | मुश्रिक (जमा) | से | तुम ने अ़हद किया था | वह लोग जो |

يُـظَاهِرُوْا عَلَـيْـكُـمْ اَحَـدًا فَـاَتِـمُّـوْٓا اِلَـيْـهِـمْ عَـهْـدَهُـمْ اِلٰى مُـدَّتِـهِمْ ۗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की मुद्दत | तक | उन का अ़हद | उन से | तो पूरा करो | किसी की | तुम्हारे ख़िलाफ़ | उन्हों ने मदद की |

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٤﴾ فَـاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْـحُـرُمُ فَاقْتُلُوا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो क़त्ल करो | हुर्मत वाले | महीने | गुज़र जाएं | फिर जब | 4 | परहेज़गार (जमा) | दोस्त रखता है | बेशक अल्लाह |

الْـمُـشْـرِكِـيْـنَ حَـيْـثُ وَجَـدْتُّـمُـوْهُـمْ وَخُـذُوْهُـمْ وَاحْـصُـرُوْهُـمْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और उन्हें घेर लो | और उन्हें पकड़ो | तुम उन्हें पाओ | जहां | मुश्रिक (जमा) |

وَاقْـعُـدُوْا لَـهُـمْ كُلَّ مَـرْصَـدٍ ۚ فَـاِنْ تَـابُـوْا وَاَقَـامُـوا الـصَّـلٰـوةَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नमाज़ | और क़ाइम करें | वह तौबा कर लें | फिर अगर | हर घात | उन के लिए | और बैठो |

وَاٰتَـوُا الـزَّكٰـوةَ فَـخَـلُّـوْا سَـبِـيْـلَـهُـمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ غَـفُـوْرٌ رَّحِـيْـمٌ ﴿٥﴾ وَاِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अगर | 5 | निहायत मेह्रबान | बख़्शने वाला | बेशक अल्लाह | उन का रास्ता | तो छोड़ दो | और ज़कात अदा करें |

اَحَـدٌ مِّـنَ الْـمُـشْـرِكِـيْـنَ اسْـتَـجَـارَكَ فَـاَجِـرْهُ حَـتّٰـى يَـسْـمَـعَ كَلٰـمَ اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह का कलाम | वह सुन ले | यहां तक कि | तो उसे पनाह दे दो | आप से पनाह मांगे | मुश्रिकीन | से | कोई |

ثُـمَّ اَبْـلِـغْـهُ مَـاْمَـنَـهٗ ۚ ذٰلِـكَ بِـاَنَّـهُـمْ قَـوْمٌ لَّا يَـعْـلَـمُـوْنَ ﴿٦﴾ ع

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | इल्म नहीं रखते | लोग | इस लिए कि वह | यह | उस की अम्न की जगह | उसे पहुँचा दें | फिर |

كَيْفَ يَكُوْنُ لِلْمُشْرِكِيْنَ عَهْدٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ رَسُوْلِهٖٓ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और उस के रसूल के पास | अल्लाह के पास | अ़हद | मुश्रिकों के लिए | हो | क्यों कर |

اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقَامُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह क़ाइम रहें | सो जब तक | मस्जिदे हराम | पास | तुम ने अ़हद किया | वह लोग जो | सिवाए |

لَكُمْ فَاسْتَقِيْمُوْا لَهُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ⑦ كَيْفَ وَاِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अगर | कैसे | 7 | परहेज़गार (जमा) | दोस्त रखता है | बेशक अल्लाह | उन के लिए | तो तुम क़ाइम रहो | तुम्हारे लिए |

يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوْا فِيْكُمْ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ۗ يُرْضُوْنَكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह तुम्हें राज़ी कर देते हैं | और न अ़हद | क़राबत | तुम्हारी | न लिहाज़ करें | तुम पर | वह ग़ालिब आजाएं |

بِاَفْوَاهِهِمْ وَتَاْبٰى قُلُوْبُهُمْ ۚ وَاَكْثَرُهُمْ فٰسِقُوْنَ ⑧

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 8 | नाफ़रमान | और उन के अक्सर | उन के दिल | लेकिन नहीं मानते | अपने मुहँ (जमा) से |

اِشْتَرَوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस का रास्ता | से | फिर उन्हों ने रोका | थोड़ी | क़ीमत | अल्लाह की आयात से | उन्हों ने ख़रीद ली |

اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ⑨ لَا يَرْقُبُوْنَ فِيْ مُؤْمِنٍ اِلًّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क़राबत | किसी मोमिन | (बारे) में | लिहाज़ नहीं करते | 9 | वह करते है | जो | बुरा | बेशक वह |

وَّلَا ذِمَّةً ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُعْتَدُوْنَ ⑩ فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और क़ाइम करें | तौबा कर लें | फिर अगर वह | 10 | हद से बढ़ने वाले | वह | और वही लोग | अ़हद | और न |

الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ ۭ وَنُفَصِّلُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और खोल कर बयान करते हैं | दीन | में | तो तुम्हारे भाई | और अदा करें ज़कात | नमाज़ |

الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ⑪ وَاِنْ نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी क़स्में | वह तोड़ दें | और अगर | 11 | इल्म रखते हैं | लोगों के लिए | आयात |

مِّنْۢ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ فَقَاتِلُوْٓا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तो जंग करो | तुम्हारा दीन | में | और ऐब निकालें | अपना अ़हद | के बाद से |

اَىِٕمَّةَ الْكُفْرِ ۙ اِنَّهُمْ لَآ اَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| शायद वह | उन की | नहीं क़स्म | बेशक वह | कुफ़्र के सरदार |

يَنْتَهُوْنَ ⑫ اَلَا تُقَاتِلُوْنَ قَوْمًا نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपना अ़हद | उन्हों ने तोड़ डाला | ऐसी क़ौम | क्या तुम न लड़ोगे? | 12 | बाज़ आजाएं |

وَهَمُّوْا بِاِخْرَاجِ الرَّسُوْلِ وَهُمْ بَدَءُوْكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۭ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पहली बार | तुम से पहल की | और वह | रसूल (स) | निकालने का | और इरादा किया |

اَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشَوْهُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ⑬

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 13 | ईमान वाले | अगर तुम हो | तुम उस से डरो | कि | ज़ियादा हक़दार | तो अल्लाह | क्या तुम उन से डरते हो? |

क्यों कर हो मुश्रिकों के लिए अल्लाह के पास और उस के रसूल (स) के पास कोई अ़हद सिवाए उन लोगों के जिन से तुम ने अ़हद किया मस्जिदे हराम (ख़ाने कअ़बा) के पास, सो जब तक वह तुम्हारे लिए (अ़हद पर) क़ाइम रहें तुम (भी) उन के लिए क़ाइम रहो, बेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है। (7)

कैसे (सुलह हो जब हाल यह है कि) अगर वह तुम पर ग़ालिब आजाएं तो न लिहाज़ करें तुम्हारी क़राबत का और न अ़हद का, वह तुम्हें अपने मुहँ से (महज़ ज़बानी) राज़ी कर देते हैं, लेकिन उन के दिल नहीं मानते, और उन में अक्सर नाफ़रमान हैं। (8)

उन्हों ने अल्लाह की आयात से थोड़ी क़ीमत ख़रीद ली, फिर उन्हों ने उस के रास्ते से रोका, बेशक बुरा है जो वह करते हैं। (9)

वह किसी मोमिन के बारे में न क़राबत का लिहाज़ करते हैं न अ़हद का, और वही लोग हैं हद से बढ़ने वाले। (10)

फिर अगर वह तौबा कर लें और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात अदा करें तो तुम्हारे भाई हैं दीन में, और हम आयात खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो इल्म रखते हैं। (11)

और अगर वह अपनी क़स्में तोड़ दें अपने अ़हद के बाद और तुम्हारे दीन में ऐब निकालें, तो कुफ़्र के सरदारों से जंग करो, बेशक उन की क़स्में कुछ नहीं, शायद वह (ताक़त के ज़ोर ही से) बाज़ आजाएं। (12)

क्या तुम ऐसी क़ौम से न लड़ोगे? जिन्हों ने अपना अ़हद तोड़ डाला और उन्हों ने रसूल (स) को निकालने (जिला वतन करने) का इरादा किया और उन्हों ने तुम से पहल की, क्या तुम उन से डरते हो? तो अल्लाह ज़ियादा हक़ रखता है कि तुम उस से डरो अगर तुम ईमान वाले हो? (13)

तुम उन से लड़ो (ताकि) अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब दे तुम्हारे हाथों से और उन्हें रुस्वा करे और तुम्हें उन पर ग़ालिब करे, और दिल ठन्डे करे मोमिन लोगों के, **(14)**

और उन के दिलों से गुस्सा दूर करे, और अल्लाह जिस की चाहे तौबा क़ुबूल करता है, और अल्लाह इल्म वाला हिक्मत वाला है। **(15)**

क्या तुम गुमान करते हो कि तुम छोड़ दिए जाओगे? (जबकि) अल्लाह ने अभी उन को मालूम नहीं किया तुम में से जिन्हों ने जिहाद किया, और उन्हों ने नहीं बनाया अल्लाह के सिवा और उस के रसूल (स) और मोमिनों (के सिवा) राज़दार! और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। **(16)**

मुश्रिकों का (काम) नहीं कि वह आबाद करें अल्लाह की मस्जिदें (जबकि) अपने ऊपर कुफ़्र को तसलीम करते हों, वही लोग हैं जिन के अ़मल अकारत गए, और वह हमेशा जहन्नम में रहेंगे। **(17)**

अल्लाह की मस्जिदें सिर्फ़ वही आबाद करता है जो अल्लाह और यौमे आख़िरत पर ईमान लाया, और उस ने नमाज़ क़ाइम की और ज़कात अदा की और अल्लाह के सिवा किसी से न डरा, सो उम्मीद है कि वही लोग हिदायत पाने वालों में से हों। **(18)**

क्या तुम ने हाजियों को पानी पिलाना और मस्जिद हराम (ख़ाना कअ़्बा) की मुजावरी करने को ठहराया है उस के मानिंद जो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान लाया और उस ने अल्लाह की राह में जिहाद किया, वह बराबर नहीं हैं अल्लाह के नज़दीक, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। **(19)**

जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने हिज्रत की और अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद किया (उन के) दरजे अल्लाह के हां बहुत बड़े हैं, और वही लोग मुराद को पहुँचने वाले हैं। **(20)**

قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ بِاَيْدِيْكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | और तुम्हें ग़ालिब करे | और उन्हें रुस्वा करे | तुम्हारे हाथों से | उन्हें अ़ज़ाब दे अल्लाह | तुम उन से लड़ो |

وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٤﴾ وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوْبِهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के दिल (जमा) | गुस्सा | और दूर कर दे | 14 | मोमिनीन | लोग | सीने (दिल) | और शिफा बख़्शे (ठन्डे करे) |

وَيَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٥﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | क्या तुम समझते हो | 15 | हिक्मत वाला | इल्म वाला | और अल्लाह | जिसे चाहे | पर | और अल्लाह तौबा क़ुबूल करता है |

تُتْرَكُوْا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने नहीं बनाया | तुम में से | उन्हों ने जिहाद किया | वह लोग जो | मालूम किया अल्लाह | और अभी नहीं | तुम छोड़ दिए जाओगे |

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوْلِهٖ وَلَا الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً ۚ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बाख़बर | और अल्लाह | राज़दार | और न मोमिनीन | और न उस का रसूल (स) | अल्लाह | सिवा |

بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰهِ ع ٢ ٨

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की मस्जिदें | वह आबाद करें | कि | मुश्रिकों के लिए | नहीं है | 16 | उस से जो तुम करते हो |

شٰهِدِيْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ۚ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के आमाल | अकारत गए | वही लोग | कुफ़्र को | अपनी जानें (अपने ऊपर) | पर | तसलीम करते हों |

وَفِى النَّارِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿١٧﴾ اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह पर | ईमान लाया | जो | अल्लाह की मस्जिदें | वह आबाद करता है | सिर्फ़ | 17 | हमेशा रहेंगे | वह | और जहन्नम में |

وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | सिवाए | और वह न डरा | और ज़कात अदा की | और उस ने नमाज़ क़ाइम की | और आख़िरत का दिन |

فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٨﴾ اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पानी पिलाना | क्या तुम ने बनाया (ठहराया) | 18 | हिदायत पाने वाले | से | हों | कि | वही लोग | सो उम्मीद है |

الْحَآجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और यौमे आख़िरत | अल्लाह पर | ईमान लाया | उस के मानिंद | मस्जिदे हराम | और आबाद करना | हाजी (जमा) |

وَجٰهَدَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के नज़दीक | वह बराबर नहीं | अल्लाह की राह | में | और उस ने जिहाद किया |

وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وقف لازم

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान लाए | जो लोग | 19 | ज़ालिम (जमा) | लोग | हिदायत नहीं देता | और अल्लाह |

وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۙ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और अपनी जानें | अपने मालों से | अल्लाह का रास्ता | में | और जिहाद किया | और उन्हों ने हिज्रत की |

اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٢٠﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | मुराद को पहुँचने वाले | वह | और वही लोग | अल्लाह के हां | दरजे | बहुत बड़े |

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन में | उन के लिए | और बागात | और खुशनूदी | अपनी तरफ़ से | रहमत की | उन का रब | उन्हें खुशख़बरी देता है |

نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ﴿٢١﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के हां | बेशक अल्लाह | हमेशा | उस में | हमेशा रहेंगे | 21 | दाइमी | नेमत |

اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٢﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا اٰبَآءَكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने बाप दादा | तुम न बनाओ | वह लोग जो ईमान लाए (ईमान वाले) | ऐ | 22 | अ़ज़ीम | अजर |

وَاِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ ؕ وَمَنْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और जो | ईमान पर (ईमान के मुक़ाबिल) | कुफ़्र | अगर वह पसन्द करें | रफ़ीक़ | और अपने भाई |

يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾ قُلْ اِنْ كَانَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हों | अगर | कहे दें | 23 | ज़ालिम (जमा) | वह | तो वही लोग | तुम में से | दोस्ती करेगा उन से |

اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और तुम्हारे कुंबे | और तुम्हारी बीवियां | और तुम्हारे भाई | और तुम्हारे बेटे | तुम्हारे बाप दादा |

وَاَمْوَالُ ٍاقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| उस का नुक़्सान | तुम डरते हो | और तिजारत | जो तुम ने कमाए | और माल |

وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और उस का रसूल | अल्लाह से | तुम्हारे लिए (तुम्हें) | ज़ियादा प्यारे | जो तुम पसन्द करते हो | और घर |

وَجِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ وَاللّٰهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और अल्लाह | उस का हुक्म | ले आए अल्लाह | यहां तक कि | इन्तिज़ार करो | उस की राह में | और जिहाद |

٣ ع ٨ ٩ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٤﴾ لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| में | अल्लाह ने तुम्हारी मदद की | अलबत्ता | 24 | नाफ़रमान | लोग | हिदायत नही देता |

مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपनी कस्रत | तुम खुश हुए (इतरा गए) | जब | और हुनैन के दिन | बहुत से | मैदान (जमा) |

فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़राख़ी के बावजूद | ज़मीन | तुम पर | और तंग हो गई | कुछ | तुम्हें | तो न फ़ाइदा दिया |

ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी तस्कीन | अल्लाह ने नाज़िल की | फिर | 25 | पीठ दे कर | तुम फिर गए | फिर |

عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह तुम ने न देखे | लशकर | और उतारे उस ने | मोमिनीन | और पर | अपने रसूल (स) | पर |

وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٦﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 26 | काफ़िर (जमा) | सज़ा | और यही | वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | और अ़ज़ाब दिया |

उन का रब उन्हें अपनी तरफ़ से रहमत और खुशनूदी और बाग़ात की खुशखबरी देता है, उन में उन के लिए दाइमी नेमत है। (21)

वह उस में हमेशा हमेशा रहेंगे, बेशक अल्लाह के (हां) अजरे अजीम है। (22)

ऐ ईमान वालो! अपने बाप दादा को और अपने भाइयों को रफ़ीक़ न बनाओ अगर वह लोग ईमान के खिलाफ कुफ़्र को पसन्द करें, और तुम में से जो उन से दोस्ती करेगा तो वही लोग जालिम हैं। (23)

कह दें, अगर तुम्हारे बाप दादा, तुम्हारे बेटे, और तुम्हारे भाई, और तुम्हारी बीवियां, और तुम्हारे कुंबे, और माल जो तुम ने कमाए, और तिजारत जिस के नुक़्सान से तुम डरते हो, और घर जिन को तुम पसन्द करते हो, तुम्हें अल्लाह से और उस के रसूल से और उस की राह में जिहाद से जियादा प्यारे हों तो इन्तिज़ार करो यहां तक कि अल्लाह का हुक्म आजाए, और अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (24)

अलबत्ता अल्लाह ने तुम्हारी मदद की बहुत से मैदानों में, और हुनैन के दिन, जब तुम अपनी कस्रत पर इतरागए तो उस (कस्रत) ने तुम्हें कुछ फ़ाइदा न दिया, और तुम पर ज़मीन फ़राख़ी के बावजूद तंग हो गई, फिर तुम पीठ दे कर फिरगए। (25)

फिर अल्लाह ने अपने रसूल (स) पर और मोमिनों पर अपनी तस्कीन नाज़िल की, और उस ने लशकर उतारे जो तुम ने न देखे और काफिरों को अ़ज़ाब दिया, और यही सज़ा है काफ़िरों की। (26)

फिर उस के बाद अल्लाह जिस की चाहे तौबा कुबूल करेगा, और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (27)

ऐ मोमिनों! इस के सिवा नहीं कि मुशरिक पलीद हैं, लिहाज़ा वह क़रीब न जाएं उस साल के बाद मस्जिदे हराम (खाने कअ़्बा) के। और अगर तुम्हें मोहताजी का डर हो तो अल्लाह तुम्हें जल्द ग़नी कर देगा अपने फ़ज़्ल से अगर चाहे, बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (28)

तुम उन लोगों से लड़ो जो ईमान नहीं लाए अल्लाह पर और न यौमे आख़िरत पर, और न हराम जानते हैं वह जो अल्लाह और उस के रसूल (स) ने हराम ठहराया है, और न दीने हक़ को कुबूल करते हैं उन लोगों में से जो अहले किताब हैं, यहां तक कि वह जिज़या दें अपने हाथ से ज़लील हो कर। (29)

यहूद ने कहा उज़ैर (अ) अल्लाह का बेटा है और कहा नसारा ने मसीह (अ) अल्लाह का बेटा है, यह बातें हैं उन के मुँह की, वह रीस करते हैं पहले काफ़िरों की बात की। अल्लाह उन्हें हलाक करे, कहां बहके जा रहे हैं? (30)

उन्हों ने बना लिया अपने उल्मा और अपने दर्वेशों को रब अल्लाह के सिवा, और मसीह (अ) इब्ने मरयम को (भी), और उन्हें हुक्म नहीं दिया गया मगर यह कि वह माबूदे वाहिद की इबादत करें, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, वह उस से पाक है जो वह शिर्क करते हैं। (31)

ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और अल्लाह | जिस की चाहे | पर | इस | बाद | तौबा कुबूल करेगा अल्लाह | फिर |

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۷﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मुशरिक (जमा) | इस के सिवा नहीं | जो लोग ईमान लाए (मोमिन) | ऐ | 27 | निहायत मेहरबान | बख़्शने वाला |

نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इस | साल | बाद | मस्जिदे हराम | लिहाज़ा वह क़रीब न जाएं | पलीद |

وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖۤ اِنْ شَآءَ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर वह चाहे | अपना फ़ज़्ल | से | तुम्हें ग़नी कर देगा अल्लाह | तो जल्द | मोहताजी | तुम्हें डर हो | और अगर |

اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۸﴾ قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह पर | ईमान नहीं लाए | वह लोग जो | तुम लड़ो | 28 | हिक्मत वाला | जानने वाला | बेशक अल्लाह |

وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ

| | | | |
|---|---|---|---|
| जो हराम ठहराया अल्लाह ने | और न हराम जानते हैं | यौमे आख़िरत पर | और न |

وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो | से | दीने हक़ | और न क़ुबूल करते हैं | और उस का रसूल (स) |

اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह | हाथ | से | जिज़या | दें | यहां तक | किताब दिए गए (अहले किताब) |

صٰغِرُوْنَ ﴿۲۹﴾ وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ۨابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ ع ١٠

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और कहा | अल्लाह का बेटा | उज़ैर | यहूद | और कहा | 29 | ज़लील हो कर |

النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन के मुँह की | उन की बातें | यह | अल्लाह का बेटा | मसीह (अ) | नसारा |

يُضَاهِـُٔوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ

| | | | |
|---|---|---|---|
| पहले | वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | बात | वह रीस करते हैं |

قَاتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿۳۰﴾ اِتَّخَذُوْۤا اَحْبَارَهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपने एहबार (उल्मा) | उन्हों ने बना लिया | 30 | बहके जाते हैं | कहां | हलाक करे उन्हें अल्लाह |

وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَالْمَسِيْحَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और मसीह (अ) | अल्लाह के सिवा | से | रब (जमा) | और अपने राहेब (दर्वेश) |

ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَمَاۤ اُمِرُوْۤا اِلَّا لِيَعْبُدُوْۤا اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| माबूदे वाहिद | यह कि वह इबादत करें | मगर | उन्हें हुक्म दिया गया | और नहीं | इब्ने मरयम |

لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۳۱﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 31 | वह शिर्क करते हैं | उस से जो | वह पाक है | उस के सिवा | नहीं कोई माबूद |

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى اللّٰهُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और न मानेगा अल्लाह | अपने मुँह से (जमा) | अल्लाह का नूर | वह बुझा दें | कि | वह चाहते हैं |

اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ (٣٢) هُوَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह | 32 | काफ़िर (जमा) | पसन्द न करें | ख़ाह | अपना नूर | पूरा करे | यह कि | मगर |

الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ताकि उसे ग़ल्बा दे | और दीने हक़ | हिदायत के साथ | अपना रसूल | भेजा | वह जिस ने |

ربع

عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ (٣٣) يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो | ऐ | 33 | मुश्रिक (जमा) | पसन्द न करें | ख़ाह | तमाम पर | दीन | पर |

اٰمَنُوْٓا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| खाते हैं | और राहेब (दर्वेश) | उल्मा | से | बहुत | बेशक | ईमान लाए |

اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह का रास्ता | से | और रोकते हैं | नाहक़ तौर पर | लोग (जमा) | माल (जमा) |

وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| में | और वह उसे ख़र्च नहीं करते | और चाँदी | सोना | जमा कर के रखते हैं | और वह लोग जो |

سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ (٣٤) يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस पर | दहकाएंगे | जिस दिन | 34 | दर्दनाक | अ़ज़ाब | सो उन्हें ख़ुशख़बरी दो | अल्लाह की राह |

فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ۭ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन की पीठ (जमा) | और उनके पहलू (जमा) | उन की पेशानी | उस से | फिर दाग़ा जाएगा | जहन्नम की आग | में |

هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ (٣٥)

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 35 | जो तुम जमा कर के रखते थे | जो | पस मज़ा चखो | अपने लिए | तुम ने जमा कर के रखा | जो | यह है |

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِيْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| में | महीने | बारह (12) | अल्लाह के नज़दीक | महीने | तादाद | बेशक |

كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ مِنْهَآ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन से (उन में) | और ज़मीन | आस्मानों | उस ने पैदा किया | जिस दिन | अल्लाह का हुक्म |

اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ۭ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ڏ فَلَا تَظْلِمُوْا

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| फिर न ज़ुल्म करो | सीधा (दुरुस्त) दीन | यह | हुर्मत वाले | चार (4) |

فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ كَاۗفَّةً كَمَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जैसे | सब के सब | मुश्रिकों | और लड़ो | अपने ऊपर | उन में |

يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَاۗفَّةً ۭ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ (٣٦)

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 36 | परहेज़गार (जमा) | साथ | कि अल्लाह | और जान लो | सब के सब | वह तुम से लड़ते हैं |

वह चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपने मुँह (की फूंकों) से बुझा दें और अल्लाह न मानेगा मगर यह कि अपने नूर को पूरा करे, ख़ाह काफ़िर पसन्द न करें। (32)

वह जिस ने अपना रसूल (स) भेजा हिदायत के साथ और दीने हक़ के साथ ताकि उसे तमाम दीनों पर ग़ल्बा दे, ख़ाह मुश्रिक पसन्द न करें। (33)

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो (मोमिनो)! बेशक बहुत से उल्मा और दर्वेश लोगों के माल नाहक़ तौर पर खाते हैं और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, और वह लोग जो सोना चाँदी जमा कर के रखते हैं और उसे अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते, सो उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़ुशख़बरी दो (आगाह कर दो)। (34)

जिस दिन हम उसे दहकाएंगे जहन्नम की आग में, फिर उस से उन की पेशानियाँ और उन के पहलूओं और उन की पीठों को दाग़ा जाएगा कि यह है वह जो तुम ने अपने लिए जमा कर के रखा था, पस मज़ा चखो जो तुम जमा कर के रखते थे। (35)

बेशक महीनों की तादाद अल्लाह के नज़दीक अल्लाह की किताब में बारह महीने है जब से उस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया, उन में चार हुर्मत वाले (अदब के) महीने हैं, यही है दुरुस्त दीन, पस तुम उन में अपने ऊपर ज़ुल्म न करो, और तुम सब के सब मुश्रिकों से लड़ो जैसे वह सब के सब तुम से लड़ते हैं, और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है। (36)

यह जो महीने का हटा कर (आगे पीछे करना) कुफ़्र में इज़ाफ़ा है, इस से काफ़िर गुमराह होते हैं, वह उसे (उस महीने को) एक साल हलाल कर लेते हैं और दूसरे साल उसे हराम कर लेते हैं ताकि वह गिनती पूरी कर ले उस की जो अल्लाह ने हराम किया। सो वह हलाल करते हैं जो अल्लाह ने हराम किया है, उन के बुरे अमल उन्हें मुज़ैयन कर दिए गए हैं और अल्लाह काफ़िरों की क़ौम को हिदायत नहीं देता। **(37)**

ऐ मोमिनो! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुम्हें कहा जाता है कि अल्लाह की राह में कूच करो तो तुम गिरे जाते हो ज़मीन पर, क्या तुम ने आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द कर लिया? सो (कुछ भी) नहीं है दुनिया की ज़िन्दगी का सामान आख़िरत के मुक़ाबले में मगर थोड़ा। **(38)**

अगर तुम (राहे ख़ुदा) में न निकलोगे तो (अल्लाह) तुम्हें अ़ज़ाब देगा दर्दनाक, और तुम्हारे सिवा कोई और क़ौम बदले में ले आएगा, और तुम उस का कुछ भी न बिगाड़ सकोगे, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। **(39)**

अगर तुम उस (नबी पाक (स) की मदद न करोगे तो अलबत्ता अल्लाह ने मदद की है जब काफ़िरों ने उन्हें निकाला था, वह दूसरे थे दोनों में, जब वह दोनों ग़ारे (सूर) में थे, जब वह अपने साथी (अबू बक्र सिद्दीक़) से कहते थे, घबराओ नहीं, यक़ीनन अल्लाह हमारे साथ है, तो उस ने उन पर तस्कीन नाज़िल की और ऐसे लशकरों से उन की मदद की जो तुम ने नहीं देखे और काफ़िरों की बात पस्त कर दी, और अल्लाह का कलिमा (बोल) वाला है, और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। **(40)**

तुम निकलो हलके हो या भारी, और अपने मालों से जिहाद करो और अपनी जानों से अल्लाह की राह में, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। **(41)**

اِنَّمَا النَّسِیْٓءُ زِیَادَةٌ فِی الْكُفْرِ یُضَلُّ بِهِ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | इस से | गुमराह होते हैं | कुफ़्र में | इज़ाफ़ा | महीने का हटा देना | यह जो |

یُحِلُّوْنَهٗ عَامًا وَّیُحَرِّمُوْنَهٗ عَامًا لِّیُوَاطِـُٔوْا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हराम किया | जो | गिनती | ताकि वह पूरी कर लें | एक साल | और उस को हराम कर लेते हैं | एक साल | वह उस को हलाल करते हैं |

اللّٰهُ فَیُحِلُّوْا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ؕ زُیِّنَ لَهُمْ سُوْٓءُ اَعْمَالِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अल्लाह | उन के आमाल | बुरे | उन्हें | मुज़ैयन करदिए गए | अल्लाह ने हराम किया | जो | तो वह हलाल करते हैं | अल्लाह |

لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الْكٰفِرِیْنَ ﴿۳۷﴾ یٰٓاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مَا لَكُمْ ع ٥ ٨ ١١

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हें क्या हुआ | जो लोग ईमान लाए (मोमिन) | ऐ | 37 | काफ़िर (जमा) | क़ौम | हिदायत नहीं देता |

اِذَا قِیْلَ لَكُمُ انْفِرُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ اِلَی الْاَرْضِ ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन | तरफ़ (पर) | तुम गिरे जाते हो | अल्लाह की राह | में | कूच करो | तुम्हें | कहा जाता है | जब |

اَرَضِیْتُمْ بِالْحَیٰوةِ الدُّنْیَا مِنَ الْاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दुनिया | ज़िन्दगी | सामान | सो नहीं | आख़िरत | से (मुक़ाबला) | दुनिया | ज़िन्दगी को | क्या तुम ने पसन्द कर लिया |

فِی الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِیْلٌ ﴿۳۸﴾ اِلَّا تَنْفِرُوْا یُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِیْمًا ۙ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दर्दनाक | अ़ज़ाब | तुम्हें अ़जाब देगा | अगर न निकलोगे | 38 | थोड़ा | मगर | आख़िरत | में |

وَّیَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَیْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوْهُ شَیْـًٔا ؕ وَاللّٰهُ عَلٰی

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | और अल्लाह | कुछ भी | और न बिगाड़ सकोगे उस का | तुम्हारे सिवा | और क़ौम | और बदले में ले आएगा |

كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۳۹﴾ اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस को निकाला | जब | तो अलबत्ता अल्लाह ने उस की मदद की है | अगर तुम मदद न करोगे उस की | 39 | क़ुदरत रखने वाला | हर चीज़ |

الَّذِیْنَ كَفَرُوْا ثَانِیَ اثْنَیْنِ اِذْ هُمَا فِی الْغَارِ اِذْ یَقُوْلُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह कहते थे | जब | ग़ार | में | जब वह दोनों | दो में | दूसरा | जो काफ़िर हुए (काफ़िर) | वह लोग |

لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِیْنَتَهٗ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपनी तस्कीन | तो अल्लाह ने नाज़िल की | हमारे साथ | यक़ीनन अल्लाह | घबराओ नही | अपने साथी से |

عَلَیْهِ وَاَیَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِیْنَ كَفَرُوا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने कुफ़्र किया | वह लोग जो | बात | और कर दी | जो तुम ने नहीं देखे | ऐसे लशकरों से | और उस की मदद की | उस पर |

السُّفْلٰی ؕ وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِیَ الْعُلْیَا ؕ وَاللّٰهُ عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ ﴿۴۰﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 40 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | और अल्लाह | बाला | वह | और अल्लाह का कलिमा (बोल) | पस्त (नीची) |

اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और अपनी जानों | अपने मालों से | और जिहाद करो | और भारी | हलका-हलके | तुम निकलो |

فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ خَیْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۴۱﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 41 | जानते हो | तुम हो | अगर | तुम्हारे लिए | बेहतर | यह तुम्हारे लिए | अल्लाह की राह | में |

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो आप (स) के पीछे हो लेते | आसान | और सफ़र | क़रीब | माल (ग़नीमत) | होता | अगर |

وَلٰكِنْۢ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ۚ وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की | और अब क़स्में खाएंगे | रास्ता | उन पर | दूर नज़र आया | और लेकिन |

لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अपने आप | वह हलाक कर रहे हैं | तुम्हारे साथ | हम ज़रूर निकलते | अगर हम से हो सकता |

ع ٥ ١٢ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٤٢﴾ عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्यों | तुम्हें | माफ़ करे अल्लाह | 42 | यक़ीनन झूटे हैं | कि वह | जानता है | और अल्लाह |

اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और आप जान लेते | सच्चे | वह लोग जो | आप पर | ज़ाहिर हो जाए | यहां तक कि | उन्हें | तुम ने इजाज़त दी |

الْكٰذِبِيْنَ ﴿٤٣﴾ لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह पर | जो ईमान रखते हैं | वह लोग | नहीं मांगते आप से रुख़सत | 43 | झूटे |

وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۗ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और अपनी जान (जमा) | अपने मालों से | वह जिहाद करें | कि | और यौमे आख़िरत पर |

وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٤﴾ اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो | आप से रुख़सत मांगते हैं | वही सिर्फ़ | 44 | मुत्तक़ियों को | ख़ूब जानता है | और अल्लाह |

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| उन के दिल | और शक में पड़े हैं | और यौमे आख़िरत | अल्लाह पर | ईमान नहीं रखते |

فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| निकलने का | वह इरादा करते | और अगर | 45 | भटक रहे हैं | अपने शक | में | सो वह |

لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन का उठना | अल्लाह ने नापसन्द किया | और लेकिन | कुछ सामान | उस के लिए | ज़रूर तैयार करते |

فَثَبَّطَهُمْ وَقِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٤٦﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 46 | बैठने वाले | साथ | बैठ जाओ | और कहा गया | सो उन को रोक दिया |

لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़राबी | मगर (सिवाए) | तुम्हें बढ़ाते | न | तुम में | वह निकलते | अगर |

وَّلَاَاوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ

| | | | |
|---|---|---|---|
| बिगाड़ | तुम्हारे लिए चाहते है | तुम्हारे दरमियान | और दौड़े फिरते |

وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 47 | ज़ालिमों को | ख़ूब जानता है | और अल्लाह | उन के | सुनने वाले | और तुम में |

अगर माले ग़नीमत क़रीब और सफ़र आसान होता तो वह आप (स) के पीछे हो लेते, लेकिन दूर नज़र आया उन्हें रास्ता, और अब अल्लाह की क़स्में खाएंगे कि अगर हम से हो सकता तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ निकलते, वह अपने आप को हलाक कर रहे हैं, और अल्लाह जानता है कि वह यक़ीनन झूटे हैं। **(42)**

अल्लाह तुम्हें माफ़ करे, आप (स) ने (उस से पेशतर) उन्हें क्यों इजाज़त दे दी, यहां तक कि आप पर ज़ाहिर हो जाते वह लोग जो सच्चे हैं और आप (स) जान लेते झूटों को। **(43)**

आप (स) से वह लोग रुख़सत नहीं मांगते जो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान रखते हैं कि वह जिहाद करें अपने मालों से और अपनी जानों से, और अल्लाह मुत्तक़ियों (डरने वाले, परहेज़गारों) को ख़ूब जानता है। **(44)**

आप (स) से सिर्फ़ वह लोग रुख़सत मांगते हैं जो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, और उन के दिल शक में पड़े हैं, सो वह अपने शक में भटक रहे हैं। **(45)**

और अगर वह निकलने का इरादा करते तो उस के लिए ज़रूर तैयार करते कुछ सामान, लेकिन अल्लाह ने उन का उठना नापसन्द किया, सो उन को रोक दिया और कह दिया गया (माज़ूर) बैठने वालों के साथ बैठ जाओ। **(46)**

और अगर वह तुम में (तुम्हारे साथ) निकलते तो तुम्हारे लिए ख़राबी के सिवा कुछ न बढ़ाते, और तुम्हारे दरमियान दौड़े फिरते, चाहते हुए तुम्हारे लिए बिगाड़, और तुम में उन की बातें सुनने वाले मौजूद हैं, और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है। **(47)**

अलबत्ता उन्हों ने चाहा था इस से क़ब्ल भी बिगाड़, और उन्हों ने तुम्हारे लिए तद्बीरें उलट पलट कीं यहां तक कि हक़ आगया, और ग़ालिब आगया अम्रे इलाही और वह पसन्द न करने वाले (ना ख़ुश) रहे। (48)

और उन में से कोई कहता है मुझे इजाज़त दें और मुझे आज़माइश में न डालें, याद रखो वह आज़माइश में पड़ चुके हैं, और बेशक जहन्नम काफ़िरों को घेरे हुए है। (49)

अगर तुम्हें पहुँचे कोई भलाई तो उन्हें बुरी लगे, और तुम्हें कोई मुसीबत पहुँचे तो वह कहें: हम ने अपना काम पहले ही संभाल लिया था और वह ख़ुशियां मनाते लौट जाते हैं। (50)

आप (स) कह दें हमें हरगिज़ न पहुँचेगा मगर (वही) जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दिया है, वही हमारा मौला है। और मोमिनों को अल्लाह पर ही भरोसा करना चाहिए। (51)

आप (स) कह दें: किया तुम दो ख़ूबियों में से हम पर एक का इन्तिज़ार करते हो, और हम तुम्हारे लिए इन्तिज़ार कर रहे हैं कि तुम्हें पहुँचे अल्लाह के पास से कोई अज़ाब या हमारे हाथों से, सो तुम इन्तिज़ार करो, हम (भी) तुम्हारे साथ मुन्तज़िर हैं। (52)

आप (स) कह दें: तुम ख़ुशी से ख़र्च करो या नाख़ुशी से, हरगिज़ न कुबूल किया जाएगा, बेशक तुम हो क़ौमे-फ़ासिक़ीन (नाफ़रमानों की क़ौम)। (53)

और उन के ख़र्च कुबूल न होने की कोई वजह इस के सिवा नहीं कि उन्हों ने अल्लाह और रसूल से कुफ़्र किया है, और वह नमाज़ को नहीं आते मगर सुस्ती से और वह ख़र्च नहीं करते मगर नाख़ुशी से। (54)

لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوْا لَكَ الْاُمُوْرَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तद्बीरें | तुम्हारे लिए | उन्हों ने उलट पलट की | इस से क़ब्ल | बिगाड़ | अलबत्ता चाहा था उन्हों ने |

حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿٤٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 48 | पसन्द न करने वाले | और वह | अम्रे इलाही | और ग़ालिब आगया | हक़ | आगया | यहां तक कि |

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ ؕ اَلَا فِي

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | याद रखो | और न डाले मुझे आज़माइश में | मुझे | इजाज़त दें | कहता है | जो कोई | और उन में से |

الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا ؕ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 49 | काफ़िरों को | घेरे हुए | जहन्नम | और बेशक | वह पड़ चुके हैं | आज़माइश |

اِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۚ وَاِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई मुसीबत | तुम्हें पहुँचे | और अगर | उन्हें बुरी लगे | कोई भलाई | तुम्हें पहुँचे | अगर |

يَّقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَآ اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَّهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और वह | और वह लौट जाते हैं | इस से पहले | अपना काम | हम ने पकड़ लिया (संभाल लिया) था | तो वह कहें |

فَرِحُوْنَ ﴿٥٠﴾ قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारे लिए | अल्लाह ने लिख दिया | जो | मगर | हरगिज़ न पहुँचेगा हमें | आप कह दें | 50 | वह ख़ुशियां मनाते |

هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 51 | मोमिन (जमा) | भरोसा करना चाहिए | और अल्लाह पर | हमारा मौला | वही |

قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَآ اِلَّآ اِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ؕ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दो ख़ूबियों | एक का | मगर | हम पर | क्या तुम इन्तिज़ार करते हो | आप (स) कह दें |

وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُّصِيْبَكُمُ اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖٓ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के पास | से | कोई अज़ाब | अल्लाह | तुम्हें पहुँचे | कि | तुम्हारे लिए | और हम इन्तिज़ार करते हैं |

اَوْ بِاَيْدِيْنَا ۖ فَتَرَبَّصُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُوْنَ ﴿٥٢﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 52 | इन्तिज़ार करने वाले | तुम्हारे साथ | हम | सो तुम इन्तिज़ार करो | हमारे हाथों से | या |

قُلْ اَنْفِقُوْا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ؕ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम हो | बेशक तुम | तुम से | हरगिज़ न कुबूल किया जाएगा | नाख़ुशी से | या | ख़ुशी से | तुम ख़र्च करो | आप (स) कह दें |

قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٥٣﴾ وَمَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ اِلَّآ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर | उन का ख़र्च | उन से | कुबूल किया जाए | कि | उन के लिए रुकावट बना | और न | 53 | फ़ासिक़ (जमा) | क़ौम |

اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَاْتُوْنَ الصَّلٰوةَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नमाज़ | और वह नही आते | और उस के रसूल के | अल्लाह के | मुन्किर हुए | यह कि वह |

اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿٥٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 54 | नाख़ुशी से | और वह | मगर | और वह ख़र्च नही करते | सुस्त | और वह | मगर |

فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ ۭ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कि अज़ाब दे उन्हें | चाहता है अल्लाह | यही | उन की औलाद | और न | उन के माल | सो तुम्हें तअ़ज्जुब न हो |

بِهَا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٥٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 55 | काफ़िर हों | और वह | उन की जानें | और निकलें | दुनिया की ज़िन्दगी | में | उस से |

وَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ۭ وَمَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लोग | और लेकिन वह | तुम में से | वह | हालांकि नहीं | अलबत्ता तुम में से | बेशक वह | अल्लाह की | और क़स्में खाते हैं |

يَّفْرَقُوْنَ ﴿٥٦﴾ لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ اَوْ مُدَّخَلًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| घुसने की जगह | या | ग़ार (जमा) | या | पनाह की जगह | वह पाएं | अगर | 56 | डरते हैं |

لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तअ़न करते हैं आप पर | जो (बाज़) | और उन में से | 57 | रस्सियां तुड़ाते हैं | और वह | उस की तरफ़ | तो वह फिर जाएं |

فِى الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنْ اُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हें न दिया जाए | और अगर | वह राजी हो जाएं | उस से | उन्हें दे दिया जाए | सो अगर | सदक़ात | में |

مِنْهَآ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ﴿٥٨﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | उन्हें दिया | जो | राज़ी हो जाते | अगर वह | क्या अच्छा होता | 58 | नाराज़ हो जाते हैं | वह | उसी वक़्त | उस से |

وَرَسُوْلُهٗ ۙ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना फ़ज़्ल | से | अल्लाह | अब हमें देगा | हमें काफ़ी है अल्लाह | और वह कहते | और उस का रसूल |

ع ١٤ ١٣ وَرَسُوْلُهٗٓ ۙ اِنَّآ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ﴿٥٩﴾ اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुफ़लिस (जमा) | ज़कात | सिर्फ़ | 59 | रग़बत रखते हैं | अल्लाह की तरफ़ | बेशक हम | और उस का रसूल |

وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِى

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और में | उन के दिल | और उल्फ़त दी जाए | उस पर | और काम करने वाले | मिस्कीन (जमा) मोहताज |

الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۭ فَرِيْضَةً

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| फ़रीज़ा (ठहराया हुआ) | और मुसाफ़िर | अल्लाह की राह | और में | तावान भरने वाले, क़र्ज़दार | गर्दनों (के छुड़ाने) |

مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٠﴾ وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ईज़ा देते (सताते) हैं | जो लोग | और उन में से | 60 | हिक्मत वाला | इल्म वाला | और अल्लाह | अल्लाह | से |

النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ۭ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह ईमान लाते हैं | भलाई तुम्हारे लिए | कान | आप कह दें | कान | वह (यह) | और कहते हैं | नबी |

بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۭ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम में | ईमान लाए | उन लोगों के लिए जो | और रहमत | मोमिनों पर | और यक़ीन रखते हैं | अल्लाह पर |

وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦١﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 61 | दर्दनाक | अ़ज़ाब | उन के लिए | अल्लाह का रसूल | सताते हैं | और जो लोग |

सो तुम्हें तअ़ज्जुब न हो उन के मालों पर और न उन की औलाद पर, अल्लाह यही चाहता है कि उन्हें उस से दुनिया की जिन्दगी में अ़ज़ाब दे, और उन की जानें निकलें तो (उस वक़्त) भी वह काफ़िर हों। (55)

और वह अल्लाह की क़स्में खाते हैं कि बेशक वह तुम में से हैं, हालांकि वह तुम में से नहीं, लेकिन वह लोग डरते हैं। (56)

अगर वह पाएं कोई पनाह की जगह, या ग़ार या घुसने (सर समाने) की जगह तो वह उस की तरफ़ फिर जाएं रस्सियां तुड़ाते हुए। (57)

और उन में से बाज़ आप (स) पर सदक़ात (की तक़्सीम में) तअ़न करते हैं, सो अगर उन में से उन्हें दे दिया जाए तो वह राजी हो जाएं और अगर उन्हें उस से न दिया जाए तो वह उसी वक़्त नाराज़ हो जाते हैं। (58)

क्या अच्छा होता अगर वह (उस पर) राज़ी हो जाते जो अल्लाह ने और उस के रसूल (स) ने उन्हें दिया, और वह कहते हमें अल्लाह काफ़ी है, अब हमें देगा अल्लाह अपने फ़ज़्ल से और उस का रसूल, बेशक हम अल्लाह की तरफ़ रग़बत रखते हैं। (59)

जकात (हक़ है) सिर्फ़ मुफ़लिसों का, और मोहताजों का, और उस पर काम करने वाले (कारकुनों का), और (उन लोगों का) जिन्हें (इस्लाम की) उल्फ़त दी जाए, और गर्दनों के छुड़ाने (आज़ाद कराने) में और क़र्ज़दारों (का क़र्ज़ अदा करने में), और अल्लाह की राह में, और मुसाफ़िरों का, (यह) अल्लाह की तरफ़ से ठहराया हुआ फ़रीज़ा है, और अल्लाह इल्म वाला, हिक्मत वाला है। (60)

और उन में से बाज लोग नबी को सताते हैं और कहते हैं यह तो कान है (कानों का कच्चा है), कह दें कि तुम्हारी भलाई के लिए आप (स) एसे हैं, वह अल्लाह पर ईमान लाते हैं और मोमिनों पर यक़ीन रखते हैं और उन लोगों के लिए रहमत है जो तुम में से ईमान लाए, और जो लोग अल्लाह के रसूल (स) को सताते हैं उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (61)

वह तुम्हारे लिए (तुम्हारे सामने) अल्लाह की क़स्में खाते हैं ताकि तुम्हें खुश करें, और अल्लाह और उस के रसूल (स) का ज़ियादा हक़ है कि वह उन्हें खुश करें अगर वह ईमान वाले हैं. (62)

क्या वह नहीं जानते? कि जो मुक़ाबला करेगा अल्लाह का और उस के रसूल (स) का तो बेशक उस के लिए दोज़ख़ की आग है वह उस में हमेशा रहेंगे, यह बड़ी रुसवाई है। (63)

मुनाफ़िक़ीन डरते हैं कि मुसलमानों पर कोई ऐसी सूरत नाज़िल (न) हो जाए जो उन्हें (मुसलमानों को) जता दे जो उन (मुनाफ़िक़ों) के दिलों में है, आप (स) कह दें: तुम ठठे (हँसी मज़ाक़) करते रहो, बेशक तुम जिस से डरते हो अल्लाह उसे खोलने वाला है (खोल कर रहेगा)। (64)

और अगर तुम उन से पूछो तो वह ज़रूर कहेंगे: हम तो सिर्फ़ दिल्लगी और खेल करते हैं, आप (स) कह दें क्या तुम अल्लाह से, और उस की आयात से, और उस के रसूल (स) से हँसी करते थे? (65)

बहाने न बनाओ, तुम अपने ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गए, और हम तुम में से एक गिरोह को माफ़ कर दें तो दूसरे गिरोह को अ़ज़ाब देंगे, इस लिए कि वह मुज्‌रिम हैं। (66)

मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औ़रतें उन में से बाज़, बाज़ के (एक दूसरे के हम जिन्‌स) हैं, बुराई का हुक्म देते हैं और नेकी से रोकते हैं, और अपने हाथ (मुठठियां ख़र्च करने से) बन्द रखते हैं, वह अल्लाह को भूल बैठे तो अल्लाह ने उन्हें भुला दिया, बेशक मुनाफ़िक़ नाफ़रमान हैं। (67)

अल्लाह ने मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औ़रतों, और काफ़िरों को जहन्नम की आग का वादा दिया है, उस में हमेशा रहेंगे, वही उन के लिए काफ़ी है, और उन पर अल्लाह की लानत है, और उन के लिए हमेशा रहने वाला अ़ज़ाब है। (68)

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और उस का रसूल | और अल्लाह | ताकि तुम्हें खुश करें | तुम्हारे लिए | अल्लाह की | वह क़स्में खाते हैं |

اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا النصف

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या वह नहीं जानते | 62 | वह ईमान वाले हैं | अगर | वह उन को खुश करें | कि | ज़ियादा हक़ |

اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दोज़ख़ की आग | उस के लिए | तो बेशक | और उस के रसूल | अल्लाह | मुक़ाबला करेगा | जो | कि वह |

خَالِدًا فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٣﴾ يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुनाफ़िक़ (जमा) | डरते हैं | 63 | बड़ी | रुसवाई | यह | उस में | हमेशा रहेंगे |

اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के दिल (जमा) | में | वह जो | उन्हें जता दे | सूरत | उन (मुसलमानों) पर | कि नाज़िल हो |

قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَئِنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और अगर | 64 | जिस से तुम डरते हो | खोलने वाला | बेशक अल्लाह | ठठे करते रहो | आप कह दें |

سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ؕ قُلْ اَبِاللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या अल्लाह के | आप (स) कह दें | और खेल करते | दिल्लगी करते | हम थे | कुछ नहीं (सिर्फ़) | तो वह ज़रूर कहेंगे | तुम उन से पूछो |

وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٦٥﴾ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम काफ़िर हो गए हो | न बनाओ बहाने | 65 | हँसी करते | तुम थे | और उस के रसूल | और उस की आयात |

بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ؕ اِنْ نَّعْفُ عَنْ طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम में से | एक गिरोह | से (को) | हम माफ़ कर दें | अगर | तुम्हारा (अपना) ईमान | बाद |

نُعَذِّبْ طَآئِفَةًۢ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿٦٦﴾ اَلْمُنٰفِقُوْنَ ع ۸ ۱۲

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मुनाफ़िक़ मर्द (जमा) | 66 | मुज्‌रिम (जमा) | थे | इस लिए कि वह | एक (दूसरा) गिरोह | हम अ़ज़ाब दें |

وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وقف لازم

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बुराई का | वह हुक्म देते हैं | बाज़ के | से | उन में से बाज़ | और मुनाफ़िक़ औ़रतें |

وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَيَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ؕ نَسُوا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह भूल बैठे | अपने हाथ | और बन्द रखते हैं | नेकी | से | और मना करते हैं |

اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ ؕ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَعَدَ اللّٰهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह ने वादा किया | 67 | नाफ़रमान (जमा) | वह (ही) | मुनाफ़िक़ (जमा) | बेशक | तो उस ने उन्हें भुला दिया | अल्लाह |

الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उस में | हमेशा रहेंगे | जहन्नम की आग | और काफ़िर (जमा) | और मुनाफ़िक़ औ़रतें | मुनाफ़िक़ मर्द (जमा) |

هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٦٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 68 | हमेशा रहने वाला | अ़ज़ाब | और उन के लिए | और अल्लाह ने उन पर लानत की | उन के लिए काफ़ी | वही |

كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَّاَكْثَرَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और ज़ियादा | कुव्वत | तुम से | बहुत ज़ोर वाले | वह थे | तुम से क़ब्ल | जिस तरह वह लोग जो |

اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ؕ فَاسْتَمْتَعُوْا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| सो तुम फ़ाइदा उठा लो | अपने हिस्से से | सो उन्हों ने फ़ाइदा उठाया | और औलाद | माल में |

بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपने हिस्से से | तुम से पहले | वह लोग जो | फ़ाइदा उठाया | जैसे | अपने हिस्से से |

وَخُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْا ؕ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दुनिया में | उन के आमाल | अकारत गए | वही लोग | घुसे | जैसे वह | और तुम घुसे (बुरी बातों में) |

وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَلَمْ يَاْتِهِمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्या इन तक न आई | 69 | ख़सारा उठाने वाले | वह | और वही लोग | और आख़िरत |

نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۙ وَقَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और क़ौमे इब्राहीम (अ) | और समूद | और आद | क़ौमे नूह | इन से पहले | वह लोग जो | ख़बर |

وَاَصْحٰبِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ؕ اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वाज़ेह अहकाम ओ दलाइल के साथ | उन के रसूल (जमा) | उन के पास आए | और उलटी हुई बस्तियाँ | और मदयन वाले |

فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने ऊपर | वह थे | लेकिन | कि वह उन पर ज़ुल्म करता | अल्लाह | था | सो नहीं |

يَظْلِمُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रफ़ीक़ (जमा) | उन में से बाज़ | और मोमिन औरतें | और मोमिन मर्द (जमा) | 70 | ज़ुल्म करते |

وقف لازم بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बुराई | से | और रोकते हैं | भलाई का | वह हुक्म देते हैं | बाज़ |

وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | और इताअत करते हैं | ज़कात | और अदा करते हैं | नमाज़ | और वह क़ाइम करते हैं |

وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٧١﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 71 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | बेशक अल्लाह | कि उन पर अल्लाह रह्म करेगा | वही लोग | और उस का रसूल |

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन के नीचे | जारी हैं | जन्नतें | और मोमिन औरतों | मोमिन मर्द (जमा) | वादा किया अल्लाह |

الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हमेशा रहने के बाग़ात | में | पाकीज़ा | और मकानात | उन में | हमेशा रहेंगे | नहरें |

ع ٩ ٦ ١٥ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٧٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 72 | बड़ी | कामयाबी | वह | यह | सब से बड़ी | अल्लाह | से | और ख़ुशनूदी |

जिस तरह वह लोग जो तुम से क़ब्ल थे, वह तुम से बहुत ज़ोर वाले थे कुव्वत में और ज़ियादा थे माल में और औलाद में, सो उन्हों ने अपने हिस्से से फ़ाइदा उठाया, सो तुम अपने हिस्से से फ़ाइदा उठा लो जैसे उन्हों ने अपने हिस्से से फ़ाइदा उठाया जो तुम से पहले थे, और तुम (बुरी बातों में) घुसे जैसे वह घुसे थे. वही लोग हैं जिन के अ़मल दुनिया और आख़िरत में अकारत गए, और वही लोग हैं ख़सारा उठाने वाले। (69)

क्या इन तक उन लोगों की ख़बर न आई (न पहुँची) जो इन से पहले थे, कौमे नूह और आद और समूद, और क़ौमे इब्राहीम (अ) और मदयन वाले, और वह बस्तियां जो उलट दी गईं, उन के पास उन के रसूल आए वाज़ेह अहकाम ओ दलाइल के साथ, सो अल्लाह ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता लेकिन वह अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे। (70)

और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें उन में से बाज़, बाज़ के (एक दूसरे के) रफ़ीक़ हैं, वह भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं, और वह नमाज़ क़ाइम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं, और अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअत करते हैं, वही लोग हैं जिन पर अल्लाह रह्म करेगा, बेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (71)

अल्लाह ने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों से जन्नतों का वादा किया है जिन के नीचे नहरें जारी हैं, उन में हमेशा रहेंगे, और सदा बहार बाग़ात में पाकीज़ा मकानात, और अल्लाह की ख़ुशनूदी सब से बड़ी बात है, यह बड़ी कामयाबी है। (72)

ऐ नबी (स)! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करें और उन पर सख़्ती करें, और उन का ठिकाना जहन्नम है, और वह पलटने की बुरी जगह है। (73)

वह अल्लाह की क़स्में खाते हैं कि उन्हों ने नहीं कहा, हालांकि उन्हों ने जरूर कुफ़्र का कलिमा कहा, और अपने इस्लाम (लाने के) बाद उन्हों ने कुफ़्र किया, और उन्हों ने वह कुछ करने का इरादा किया जिसे कर न सके, और उन्हों ने बदला न दिया मगर (सिर्फ़ उस बात का) कि अल्लाह और उस के रसूल (स) ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दिया, सो अगर वह तौबा कर लें तो उन के लिए बेहतर होगा, और अगर वह फिर जाएं तो अल्लाह उन्हें दर्दनाक अज़ाब देगा दुनिया में और आख़िरत में, और उन के लिए न होगा ज़मीन में कोई हिमायती और न मददगार। (74)

और उन में से (बाज़ वह हैं) जिन्हों ने अल्लाह से अ़हद किया कि अगर वह हमें अपने फज़्ल से दे तो हम जरूर सदक़ा देंगे और हम जरूर हो जाएंगे सालिहीन (नेकोकारों) में से। (75)

फिर जब उस ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया तो उन्हों ने उस में बुख़्ल किया और वह फिर गए, वह रूगर्दानी करने वाले हैं। (76)

तो (अल्लाह ने) उस का अन्जाम कार उन के दिलों में निफ़ाक़ रख दिया रोज़े (क़ियामत) तक कि वह उस से मिलेंगे, क्यों कि उन्हों ने जो अल्लाह से वादा किया था उस के ख़िलाफ किया और क्यों कि वह झूट बोलते थे। (77)

क्या वह नहीं जानते? कि अल्लाह उन के भेद और उन की सरगोशियों को जानता है, और यह कि अल्लाह ग़ैब की बातों को खूब जानने वाला है। (78)

वह लोग जो उन मोमिनो पर ऐब लगाते हैं जो खुशी से ख़ैरात करते हैं, और वह लोग जो नहीं पाते मगर अपनी मेहनत (का सिला), वह (मुनाफ़िक़) उन से मज़ाक़ करते हैं, अल्लाह ने उन के मजाक़ (का जवाब) दिया। और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (79)

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | और सख़्ती करें | और मुनाफ़िक़ीन | काफ़िर (जमा) | जिहाद करें | नबी (स) | ऐ |

وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٧٣﴾ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं उन्हों ने कहा | अल्लाह की | वह क़स्में खाते हैं | 73 | पलटने की जगह | और बुरी | जहन्नम | और उन का ठिकाना |

وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और क़सद किया उन्हों ने | उन का (अपना) इस्लाम | बाद | और उन्हों ने कुफ़्र किया | कुफ़्र का | कलिमा | हालांकि जरूर उन्हों ने कहा |

بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ وَمَا نَقَمُوْٓا اِلَّآ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उस का रसूल | उन्हें ग़नी कर दिया अल्लाह | यह कि | मगर | और उन्हों ने बदला न दिया | उन्हें न मिली | उस का जो |

مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह फिर जाएं | और अगर | उन के लिए | बेहतर | होगा | वह तौबा कर लें | सो अगर | अपना फ़ज़्ल | से |

يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ عَذَابًا اَلِيْمًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | और नही | और आख़िरत | दुनिया में | दर्दनाक | अ़ज़ाब | अ़ज़ाब देगा उन्हें अल्लाह |

فِى الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٧٤﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता-अगर | अ़हद किया अल्लाह से | जो | और उन से | 74 | कोई मददगार | और न | हिमायती | कोई | ज़मीन में |

اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 75 | सालिहीन | से | और हम जरूर हो जाएंगे | ज़रूर सदक़ा दें हम | अपना फ़ज़्ल | से | हमें दे वह |

فَلَمَّآ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧٦﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 76 | रूगर्दानी करने वाले हैं | और वह | और फिर गए | उस में | उन्हों ने बुख़्ल किया | अपना फ़ज़्ल | से | उस ने दिया उन्हें | फिर जब |

فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِىْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَآ اَخْلَفُوا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने ख़िलाफ़ किया | क्यों कि | वह उस से मिलेंगे | उस रोज़ | तक | उन के दिल | में | निफ़ाक़ | तो उस ने उन का अन्जाम कार किया |

اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ﴿٧٧﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जानते | क्या नही | 77 | वह झूट बोलते थे | और क्यों कि | उस से उन्हों ने वादा किया | जो | अल्लाह |

اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| खूब जानने वाला | और यह कि अल्लाह | और उन की सरगोशियां | उन के भेद | जानता है | कि अल्लाह |

الْغُيُوْبِ ﴿٧٨﴾ اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मोमिन (जमा) | से (जो) | खुशी से करते हैं | ऐब लगाते हैं | वह लोग जो | 78 | ग़ैब की बातें |

فِى الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपनी मेहनत | मगर | जो वह नही पाते | और वह लोग जो | और सदक़ा (जमा) ख़ैरात | में |

فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ؕ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ ۫ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 79 | दर्दनाक | अ़ज़ाब | और उन के लिए | उन से | अल्लाह ने मजाक़ (का जवाब) दिया | उन से | वह मजाक़ करते हैं |

اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ۗ اِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बार | सत्तर (70) | उन के लिए | आप (स) बख़्शिश मांगें | अगर | उन के लिए | बख़्शिश न मांग | या | उन के लिए | तू बख़्शिश मांग |

فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ۗ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उस का रसूल | अल्लाह से | उन्हों ने कुफ़्र किया | क्योंकि वह | यह | उन का | बख़्शेगा अल्लाह | तो हरगिज़ न |

١٠ ع ١٦ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٨٠﴾ فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने बैठ रहने से | पीछे रहने वाले | खुश हुए | 80 | नाफ़रमान (जमा) | लोग | हिदायत नहीं देता | और अल्लाह |

خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْٓا اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और अपनी जानें | अपने मालों से | वह जिहाद करें | कि | और उन्हों ने नापसन्द किया | अल्लाह का रसूल | पीछे |

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِي الْحَرِّ ۗ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सब से ज़ियादा | जहन्नम की आग | आप कह दें | गर्मी | में | ना कूच करो | और उन्हों ने कहा | अल्लाह की राह | में |

حَرًّا ۗ لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨١﴾ فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़ियादा | और रोएं | थोड़ा | चाहिए वह हसें | 81 | वह समझ रखते | काश | गर्मी में |

جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰى طَآئِفَةٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किसी गिरोह | तरफ़ | अल्लाह आप को वापस ले जाए | फिर अगर | 82 | वह कमाते थे | उस का जो | बदला |

مِّنْهُمْ فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوْا مَعِيَ اَبَدًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कभी भी | मेरे साथ | तुम हरगिज़ न निकलोगे | तो आप कह दें | निकलने के लिए | फिर वह आप (स) से इजाज़त मांगें | उन से |

وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِيَ عَدُوًّا ۗ اِنَّكُمْ رَضِيْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बार | पहली | बैठ रहने को | तुम ने पसन्द किया | बेशक तुम | दुश्मन | मेरे साथ | और हरगिज़ न लड़ोगे |

فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मर गया | उन से | कोई | पर | और न पढ़ना नमाज़ | 83 | पीछे रह जाने वाले | साथ | सो तुम बैठो |

اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ۗ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह मरे | और उस का रसूल | अल्लाह से | उन्हों ने कुफ़्र किया | बेशक वह | उस की क़ब्र | पर | और न खड़े होना | कभी |

وَهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ ۗ اِنَّمَا يُرِيْدُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चाहता है | सिर्फ़ | और उन की औलाद | उन के माल | और आप (स) को तअ़ज्जुब में न डालें | 84 | नाफ़रमान | जब कि वह |

اللّٰهُ اَنْ يُّعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٨٥﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 85 | काफ़िर हों | जब कि वह | उन की जानें | और निकलें | दुनिया में | उस से | उन्हें अज़ाब दे | कि | अल्लाह |

وَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَجَاهِدُوْا مَعَ رَسُوْلِهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन का रसूल | साथ | और जिहाद करो | अल्लाह पर | ईमान लाओ | कि | कोई सूरत | नाज़िल की जाती है | और जब |

اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوْا ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٨٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 86 | बैठ रह जाने वाले | साथ | हम हो जाएं | छोड़ दे हमें | और कहते हैं | उन से | मक़दूर वाले (मालदार) | आप से इजाज़त चाहते हैं |

आप (स) उन के लिए बख़्शिश मांगें या उन के लिए बख़्शिश न मांगें (बराबर है), अगर आप (स) उन के लिए सत्तर (70) बार (भी) बख़्शिश मांगें तो अल्लाह उन्हें हरगिज़ न बख़्शेगा, यह इस लिए कि उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल (स) से कुफ़्र किया, और अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (80) पीछे रह जाने वाले अपने बैठ रहने से खुश हुए, रसूल (स) (तबूक के लिए निकलने) के बाद, और उन्हों ने नापसन्द किया कि वह जिहाद करें अपने मालों से और अपनी जानों से अल्लाह कि राह में, और उन्हों ने कहा गर्मी में कूच न करो, आप (स) कह दें जहन्नम की आग गर्मी में सब से ज़ियादा है, काश वह समझ सकते। (81) चाहिए कि वह हसें थोड़ा और रोएं ज़ियादा, यह उस का बदला है जो वह कमाते थे। (82) फिर अगर अल्लाह आप को किसी गिरोह कि तरफ़ वापस ले जाए उन में से, फिर वह आप (स) से (जिहाद के लिए) निकलने की इजाज़त मांगें तो आप (स) कह दें: तुम मेरे साथ कभी भी हरगिज़ न निकलोगे, और हरगिज़ न लड़ोगे दुश्मन से मेरे साथ (मिल कर), बेशक तुम ने पहली बार बैठ रहने को पसन्द किया, सो तुम पीछे रहजाने वालों के साथ बैठो। (83) उन में से कोई मर जाए तो कभी उस पर नमाज़ (जनाज़ा) न पढ़ना और न उस कि क़ब्र पर खड़े होना, बेशक उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल (स) से कुफ़्र किया और वह (उस हाल में) मरे जब कि वह नाफ़रमान थे। (84) और आप (स) को तअ़ज्जुब में न डालें उन के माल और उन की औलाद, अल्लाह तो सिर्फ़ यह चाहता है कि उन्हें उस से दुनिया में अ़ज़ाब दे और (उस हाल में) उन की जानें निकलें जब कि वह काफ़िर हों। (85) और जब कोई सूरत नाज़िल की जाती है कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उस के रसूल (स) के साथ (मिल कर) जिहाद करो तो उन में से मक़दूर वाले आप से इजाज़त चाहते हैं, और कहते हैं हमें छोड़ दे कि हम बैठ रह जाने वालों के साथ हो जाएं। (86)

वह राज़ी हुए कि पीछे रह जाने वाली औरतों के साथ हो जाएं, और मुहर लग गई उन के दिलों पर, सो वह समझते नहीं (87)

लेकिन रसूल (स) और वह लोग जो उन के साथ ईमान लाए उन्हों ने अपने मालों से और अपनी जानों से जिहाद किया, और उन्हीं लोगों के लिए भलाइयां हैं, और यही लोग फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) पाने वाले हैं। (88)

अल्लाह ने उन के लिए बाग़ात तैयार किए हैं, उन के नीचे नहरें जारी हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। (89)

और देहातियों में से बहाना बनाने वाले आए कि उन को रुख़्सत दी जाए, और वह लोग बैठ रहे जिन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल (स) से झूट बोला, अनक़रीब पहुँचेगा उन लोगों को दर्दनाक अ़ज़ाब जिन्हों ने कुफ़्र किया। (90)

नहीं कोई हर्ज ज़ईफ़ों पर और न मरीज़ों पर, न उन लोगों पर जो नहीं पाते कि वह ख़र्च करें, जब कि वह ख़ैर ख़ाह हों अल्लाह और उस के रसूल के, नेकी करने वालों पर कोई इल्ज़ाम नहीं, और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (91)

और न उन लोगों पर (कोई हर्ज है) कि जब आप (स) के पास आए कि आप उन्हें सवारी दें, तो आप (स) ने कहा कि (कोई सवारी) नहीं कि उस पर तुम्हें सवार करूं, तो वह (उस हाल में) लौटे और ग़म से उन की आँखों से आंसू बह रहे थे कि वह कुछ नहीं पाते जो वह ख़र्च कर सकें। (92)

इल्ज़ाम सिर्फ़ उन लोगों पर है जो आप (स) से इजाज़त चाहते हैं और वह ग़नी (माल दार) हैं, वह उस से ख़ुश हुए कि वह रह जाएं पीछे रह जाने वाली औरतों के साथ, और अल्लाह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी, सो वह कुछ नहीं जानते। (93)

رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के दिल | पर | और मुहर लग गई | पीछे रह जाने वाली औरतें | साथ | हो जाएं | कि वह | वह राज़ी हुए |

فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨٧﴾ لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के साथ | ईमान लाए | और वह लोग जो | रसूल | लेकिन | 87 | समझते नहीं | सो वह |

جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भलाइयां | उन के लिए | और यही लोग | और अपनी जानें | अपने मालों से | उन्हों ने जिहाद किया |

وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨٨﴾ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जारी है | बाग़ात | उन के लिए | अल्लाह ने तैयार किया | 88 | फ़लाह पाने वाले | वह | और यही लोग |

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٨٩﴾ ع ١١ ١٢

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 89 | बड़ी | कामयाबी | यह | उन में | हमेशा रहेंगे | नहरें | उन के नीचे |

وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो | बैठ रहे | उन को | कि रुख़्सत दी जाए | देहाती (जमा) | से | बहाना बनाने वाले | और आए |

كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन से | उन्हो ने कुफ़्र किया | वह लोग जो | अनक़रीब पहुँचेगा | और उस का रसूल | अल्लाह | झूट बोला |

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٠﴾ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न | मरीज़ (जमा) | पर | और न | ज़ईफ़ (जमा) | पर | नहीं | 90 | दर्दनाक | अ़ज़ाब |

عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के लिए | वह ख़ैर ख़ाह हों | जब | कोई हर्ज | वह ख़र्च करें | जो | नही पाते | वह लोग जो | पर |

وَرَسُوْلِهٖ ؕ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 91 | निहायत मेहरबान | बख़्शने वाला | और अल्लाह | कोई राह (इल्ज़ाम) | नेकी करने वाले | पर | नहीं | और उस के रसूल |

وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मैं नही पाता | आप ने कहा | ता कि आप (स) उन्हें सवारी दें | आप के पास आए | जब | वह लोग जो | पर | और न |

مَآ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۠ تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आँसू (जमा) | से | बह रहे थे | और उन की आँखें | वह लौटे | उस पर | तुम्हें सवार करूं |

حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ﴿٩٢﴾ اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो | पर | रास्ता (इल्ज़ाम) | इस के सिवा नहीं (सिर्फ़) | 92 | वह ख़र्च करें | जो | कि वह नही पाते | ग़म से |

يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ اَغْنِيَآءُ ۚ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह हो जाएं | कि | वह ख़ुश हुए | ग़नी (जमा) | और वह | आप (स) से इजाज़त चाहते है |

مَعَ الْخَوَالِفِ ۙ وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 93 | नही जानते | सो वह | उन के दिल | पर | और अल्लाह ने मुहर लगादी | पीछे रह जाने वाली औरतें | साथ |

ربع

يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| उन की तरफ़ | तुम लौट कर जाओगे | जब | तुम्हारे पास | उज़्र लाएंगे |

قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारी सब ख़बरें (हालात) | अल्लाह | हमें बता चुका है | तुम्हारा | हरगिज़ हम यक़ीन न करेंगे | उज़्र न करो | आप (स) कह दें |

وَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पोशीदा | जानने वाले | तरफ़ | तुम लौटाए जाओगे | फिर | और उस का रसूल | तुम्हारे अमल | अल्लाह | और अभी देखेगा |

وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٤﴾ سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की | अब क़स्में खाएंगे | 94 | तुम करते थे | वह जो | फिर वह तुम्हें जता देगा | और ज़ाहिर |

لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन से | सो तुम मुँह मोड़ लो | उन से | ताकि तुम दरगुज़र करो | उन की तरफ़ | वापस जाओगे तुम | जब | तुम्हारे आगे |

اِنَّهُمْ رِجْسٌ وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 95 | वह कमाते | थे | उस का जो | बदला | जहन्नम | और उन का ठिकाना | पलीद | बेशक वह |

يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो बेशक अल्लाह | उन से | तुम राज़ी हो जाओ | सो अगर | उन से | ताकि तुम राज़ी हो जाओ | तुम्हारे आगे | वह क़स्में खाते हैं |

لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٩٦﴾ اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुफ़्र में | बहुत सख़्त | देहाती | 96 | नाफ़रमान | लोग | से | राज़ी नहीं होता |

وَّنِفَاقًا وَّاَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | अल्लाह | नाज़िल किए | जो | एहकाम | कि वह न जानें | और ज़ियादा लाइक़ | और निफ़ाक़ में |

رَسُوْلِهٖ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٩٧﴾ وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लेते हैं (समझते हैं) | जो | देहाती | और से (बाज़) | 97 | हिक्मत वाला | जानने वाला | और अल्लाह | अपना रसूल (स) |

مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَآئِرَ عَلَيْهِمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | गर्दिशें | तुम्हारे लिए | और इन्तिज़ार करते हैं | तावान | जो वह खर्च करते हैं |

دَآئِرَةُ السَّوْءِ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٩٨﴾ وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | देहाती | और से (बाज़) | 98 | जानने वाला | सुनने वाला | और अल्लाह | बुरी | गर्दिश |

يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नज़दीकियां | जो वह खर्च करे | और समझते हैं | और आख़िरत का दिन | अल्लाह पर | ईमान रखते हैं |

عِنْدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ اَلَآ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | नज़दीकी | यक़ीनन वह | हां हां | रसूल | और दुआएं | अल्लाह से |

١٢ ع سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 99 | निहायत मेहरबान | बख़्शने वाला | बेशक अल्लाह | अपनी रहमत | में | अल्लाह | जल्द दाख़िल करेगा उन्हें |

जब तुम उन की तरफ़ लौट कर जाओगे तो वह तुम्हारे पास उज़्र लाएंगे। कह दो कि उज़्र न करो, हम हरगिज़ यक़ीन न करेंगे तुम्हारा, अल्लाह हमें तुम्हारी सब ख़बरें बता चुका है। और अभी अल्लाह तुम्हारे अ़मल देखेगा और उस का रसूल (स), फिर तुम पोशीदा और ज़ाहिर जानने वाले (अल्लाह) की तरफ़ लौटाए जाओगे, फिर वह तुम्हें जता देगा जो तुम करते थे। (94) जब तुम उन की तरफ़ वापस जाओगे तब तुम्हारे आगे अल्लाह की क़स्में खाएंगे ताकि तुम उन से दरगुज़र करो, सो तुम उन से मुँह मोड़ लो, बेशक वह पलीद हैं, और उन का ठिकाना जहन्नम है, उस का बदला जो वह कमाते थे। (95) वह तुम्हारे आगे क़स्में खाते हैं ताकि तुम उन से राज़ी हो जाओ, सो अगर तुम उन से राज़ी (भी) हो जाओ तो बेशक अल्लाह राज़ी नहीं होता नाफ़रमान लोगों से। (96) देहाती कुफ़्र और निफ़ाक़ में बहुत सख़्त हैं, और ज़ियादा इमकानात हैं कि वह न जानें जो एहकाम अल्लाह ने अपने रसूल (स) पर नाज़िल किए, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (97) और बाज़ देहाती हैं जो (अल्लाह की राह में) जो ख़र्च करते हैं उसे तावान समझते हैं और तुम्हारे लिए गर्दिशों का इन्तिज़ार करते हैं, उन्हीं पर है बुरी गर्दिश, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (98) और बाज़ देहाती हैं जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं और जो वह ख़र्च करते हैं उसे अल्लाह से नज़दीकियाँ और रसूल (स) की दुआएं (लेने का ज़रीआ़) समझते हैं, हां हां! यक़ीनन वह नज़दीकी का (ज़रीआ़) है उन के लिए, अल्लाह जल्द उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (99)

और सब से पहले (ईमान और इस्लाम में) सबक़त करने वाले मुहाजरीन और अन्सार में से, और जिन्हों ने नेकी के साथ पैरवी की, अल्लाह उन से राज़ी हुआ, और वह उस से राज़ी हुए, और उस ने उन के लिए बाग़ात तैयार किए हैं जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा हमेशा रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। (100)
और जो देहाती तुम्हारे इर्द गिर्द हैं उन में से बाज मुनाफ़िक़ हैं, और मदीने वालों में से बाज निफ़ाक़ पर अड़े हुए हैं, तुम उन्हें नहीं जानते, हम उन्हें जानते हैं और हम जल्द उन्हें दो बार अज़ाब देंगे, फिर वह अज़ाबे अज़ीम की तरफ़ लौटाए जाएंगे। (101)
और कुछ और हैं जिन्हों ने अपने गुनाहों का एतराफ़ किया, उन्हों ने एक अच्छा और दूसरा बुरा अ़मल मिला लिया, करीब है कि अल्लाह उन्हें माफ़ करदे, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेह्रबान है। (102)
आप (स) उन के मालों में से ज़कात ले लें, आप (स) उन्हें पाक और साफ़ कर दें उस से, और उन पर दुआ़ए (ख़ैर) करें, बेशक आप(स) की दुआ़ उन के लिए (बाइसे) सुकून है और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (103)
क्या उन्हें इल्म नहीं कि अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबा कुबूल करता है, और कुबूल करता है सदक़ात और यह कि अल्लाह ही तौबा कुबूल करने वाला, निहायत मेह्रबान है। (104)
और आप (स) कहदें तुम अ़मल किए जाओ, पस अब देखेगा अल्लाह और उस का रसूल (स) और मोमिन तुम्हारे अमल, और तुम जल्द पोशीदा और ज़ाहिर जानने वाले (अल्लाह) की तरफ़ लौटाए जाओगे, सो वह तुम्हें जता देगा जो तुम करते थे। (105)
और कुछ और हैं वह अल्लाह के हुक्म पर मौक़ूफ़ रखे गए हैं, ख़्वाह वह उन्हें अज़ाब दे और ख़्वाह उन की तौबा कुबूल कर ले, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (106)

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और जिन लोगों | और अन्सार | मुहाजरीन | से | सब से पहले | और सबक़त करने वाले |

اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | और तैयार किया उस ने | उस से | और वह राज़ी हुए | राज़ी हुआ अल्लाह उन से | नेकी के साथ | उस की पैरवी की |

جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह | हमेशा | उन में | हमेशा रहेंगे | नहरें | उन के नीचे | बहती हैं | बाग़ात |

الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١٠٠﴾ وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ ۛؕ وَمِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और से (बाज़) | मुनाफ़िक़ (जमा) | देहानी | से बाज़ | तुम्हारे इर्द गिर्द | और उन में जो | 100 | कामयाबी बड़ी |

ع ٥ عند المتقدمين ١٢ وقف منزل

اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ ۛ مَرَدُوْا عَلَى النِّفَاقِ ۫ لَا تَعْلَمُهُمْ ؕ نَحْنُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हम | तुम नहीं जानते उन को | निफ़ाक़ | पर | अड़े हुए हैं | मदीने वाले |

نَعْلَمُهُمْ ؕ سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّوْنَ اِلٰى عَذَابٍ عَظِيْمٍ ﴿١٠١﴾ ع

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 101 | अज़ीम | अज़ाब | तरफ़ | वह लौटाए जाएंगे | फिर | दो बार | जल्द हम उन्हें अज़ाब देंगे | जानते हैं उन्हें |

وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّاٰخَرَ سَيِّئًا ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बुरा | और दूसरा | एक अमल अच्छा | उन्हों ने मिलाया | अपने गुनाहों का | उन्हों ने एतराफ़ किया | और कुछ और |

عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٠٢﴾ خُذْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लेलें आप (स) | 102 | निहायत मेह्रबान | बख़्शने वाला | बेशक अल्लाह | माफ़ कर दे उन्हें | कि | अल्लाह | करीब है |

مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | और दुआ़ करो | उस से | और साफ़ कर दो | तुम पाक कर दो | ज़कात | उनके माल (जमा) | से |

اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٠٣﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | क्या उन्हें इल्म नहीं | 103 | जानने वाला | सुनने वाला | और अल्लाह | उन के लिए | सुकून | आप (स) की दुआ़ | बेशक |

اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सदक़ात | और कुबूल करता है | अपने बन्दे | से - की | तौबा | कुबूल करता है | वह | अल्लाह |

وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٤﴾ وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى اللّٰهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | पस अब देखेगा | तुम किए जाओ अमल | और कह दें आप (स) | 104 | निहायत मेह्रबान | तौबा कुबूल करने वाला | वह | और यह कि अल्लाह |

عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ وَسَتُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जानने वाला पोशीदा | तरफ़ | और जल्द लौटाए जाओगे | और मोमिन (जमा) | और उसका रसूल (स) | तुम्हारे अमल |

وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٥﴾ ع وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मौक़ूफ़ रखे गए | और कुछ और | 105 | तुम करते थे | वह जो | सो वह तुम्हें जता देगा | और ज़ाहिर |

لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٠٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 106 | हिक्मत वाला | जानने वाला | और अल्लाह | तौबा कुबूल कर ले उन की | और ख़्वाह | वह उन्हें अज़ाब दे | ख़्वाह | अल्लाह के हुक्म पर |

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًا بَيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दरमियान | और फूट डालने को | और कुफ़्र के लिए | नुक़्सान पहुँचाने को | मस्जिद | उन्हों ने बनाई | और वह लोग जो |

الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पहले | से | और उस का रसूल (स) | अल्लाह | उस ने जंग की | उस के वासते जो | और घात की जगह बनाने के लिए | मोमिनों (जमा) |

وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّا الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह यक़ीनन | गवाही देता है | और अल्लाह | भलाई | मगर (सिर्फ़) | हम ने चाहा | नही | और वह अल्बत्ता क़स्में खाएंगे |

لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٠٧﴾ لَا تَقُمْ فِيْهِ اَبَدًا ؕ لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तक़्वा | पर | बुन्याद रखी गई | बेशक वह मस्जिद | कभी | उस में | आप (स) न खड़े होना | 107 | झूटे है |

مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ؕ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | वह चाहते है | ऐसे लोग | उस में | आप (स) खड़े हों उस में | कि | ज़ियादा लाइक़ | दिन | पहले | से |

يَّتَطَهَّرُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ﴿١٠٨﴾ اَفَمَنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी इमारत | बुन्याद रखी | सो क्या वह जो | 108 | पाक रहने वाले | महबूब रखता है | और अल्लाह | वह पाक रहें |

عَلٰى تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी इमारत | बुन्याद रखी | जो- जिस | या | बेहतर | और खुशनूदी | अल्लाह से | तक़्वा (खौफ़) | पर |

عَلٰى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهٖ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ ؕ وَاللّٰهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अल्लाह | दोज़ख़ की आग | में | उस को लेकर | सो गिर पड़ी | गिरने वाला | खाई | किनारा | पर |

لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِىْ بَنَوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बुन्याद रखी | जो कि | उन की इमारत | हमेशा रहेगी | 109 | ज़ालिम (जमा) | लोग | हिदायत नही देता |

١٣ ع ١١ ٢ رِيْبَةً فِىْ قُلُوْبِهِمْ اِلَّآ اَنْ تَقَطَّعَ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١١٠﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 110 | हिक्मत वाला | जानने वाला | और अल्लाह | उन के दिल | यह कि टुकड़े हो जाएं | मगर | उन के दिल | में | शक |

اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और उन के माल | उन की जानें | मोमिन (जमा) | से | खरीद लिए | बेशक अल्लाह |

بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ؕ يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सो वह मारते है | अल्लाह की राह | में | वह लड़ते है | जन्नत | उन के लिए | उस के बदले |

وَيُقْتَلُوْنَ ۟ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِى التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और इंजील | तौरात में | सच्चा | उस पर | वादा | और मारे जाते है |

وَالْقُرْاٰنِ ؕ وَمَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ فَاسْتَبْشِرُوْا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पस खुशियां मनाओ | अल्लाह से | अपना वादा | ज़ियादा पूरा करने वाला | और कौन | और क़ुरआन |

بِبَيْعِكُمُ الَّذِىْ بَايَعْتُمْ بِهٖ ؕ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١١١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 111 | अज़ीम | कामयाबी | वह | और यह | उस से | तुम ने सौदा किया | जो कि | सो अपने सौदे पर |

और वह लोग जिन्हों ने मस्जिद ज़रार (नुक़्सान पहुँचाने के लिए) बनाई और कुफ़्र करने के लिए, और मोमिनों के दरमियान फूट डालने के लिए और उस के वासते घात की जगह बनाने के लिए जिस ने अल्लाह और उस के रसूल (स) से जंग की उस से पहले, और वह अल्बत्ता क़स्में खाएंगे कि हम ने सिर्फ़ भलाई चाही, और अल्लाह गवाही देता है वह यक़ीनन झूटे हैं। **(107)** आप (स) उस में कभी न खड़े होना, बेशक वह मस्जिद जिस की बुन्याद पहले दिन से तक़्वे पर रखी गई है ज़ियादा लाइक़ है कि आप (स) उस में खड़े हों, उस में ऐसे लोग हैं जो चाहते हैं कि वह पाक रहें, और अल्लाह महबूब रखता है पाक रहने वालों को। **(108)** सो क्या वह जिस ने अपनी इमारत की बुन्याद अल्लाह के खौफ़ और (उस की) खुशनूदी पर रखी, वह बेहतर है? या वह जिस ने अपनी इमारत की बुन्याद गिरने वाली खाई (गढ़े) के किनारे पर रखी? सो वह उसको लेकर दोज़ख़ की आग में गिर पड़ी, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। **(109)** वह इमारत जिस की उन्हों ने बुन्याद रखी है हमेशा शक डालती रहेगी उन के दिलों में, मगर यह कि उन के दिल टुकड़े टुकड़े हो जाएं, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। **(110)** बेशक अल्लाह ने ख़रीद लीं मोमिनों से उन की जानें और उन के माल, उस के बदले कि उन के लिए जन्नत है, वह लड़ते हैं अल्लाह की राह में, सो वह मारते हैं और मारे (भी) जाते हैं, उस पर सच्चा वादा है तौरात में, और इंजील और क़ुरआन में, और अल्लाह से ज़ियादा कौन अपना वादा पूरा करने वाला है? पस अपने उस सौदे पर खुशियां मनाओ जो तुम ने उस से सौदा किया है, और यह अज़ीम कामयाबी है। **(111)**

तौबा करने वाले, इबादत करने वाले, हम्द ओ सना करने वाले, (अल्लाह की राहे में) सफर करने वाले, रुकूअ करने वाले, सिज्दा करने वाले, नेकी का हुक्म देने वाले, और बुराई से रोकने वाले, और अल्लाह की (क़ाइम करदा) हुदूद की हिफ़ाज़त करने वाले, और मोमिनों को खुशखबरी दो। (112)

नबी (स) के लिए और मोमिनों के लिए (शायां) नहीं कि वह मुश्रिकों के लिए बखशिश चाहें, अगरचे वह उन के क़राबतदार हों, उस के बाद जब कि उन पर जाहिर हो गया कि वह दोज़ख़ वाले हैं। (113)

और इब्राहीम (अ) का अपने बाप के लिए बखशिश चाहना न था मगर एक वादे के सबब जो वह उस बाप से कर चुके थे, फिर जब उन पर जाहिर हो गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो वह उस से बेज़ार हो गए, बेशक इब्राहीम (अ) नर्म दिल बुर्दबार थे। (114)

और अल्लाह ऐसा नहीं है कि किसी को उस के बाद गुमराह करे, जबकि उस ने उन्हें हिदायत दे दी जब तक उन पर वाजेह न कर दे जिस से वह परहेज़ करें, बेशक अल्लाह हर शै का जानने वाला है। (115)

बेशक अल्लाह ही के लिए है बादशाहत आस्मानों की और जमीन की, वह ज़िन्दगी देता है और (वही) मारता है, और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई हीमायती है और न मददगार। (116)

अलबत्ता तवज्जुह फ़रमाई अल्लाह ने नबी (स) पर, और मुहाजरीन ओ अन्सार पर, वह जिन्हों ने तंगी की घड़ी में उस की पैरवी की, उस के बाद जबकि क़रीब था कि उन में से एक फ़रीक़ के दिल फिर जाएं, फिर वह उन पर मुतवज्जुह हुआ, बेशक वह उन पर इन्तिहाई शफ़ीक़, निहायत मेह्रबान है। (117)

اَلتَّآئِبُوْنَ الْعٰبِدُوْنَ الْحٰمِدُوْنَ السَّآئِحُوْنَ الرّٰكِعُوْنَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| रुकूअ करने वाले | सफ़र करने वाले | हम्द ओ सना करने वाले | इबादत करने वाले | तौबा करने वाले |

السّٰجِدُوْنَ الْاٰمِرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बुराई | से | और रोकने वाले | नेकी का | हुक्म देने वाले | सिज्दा करने वाले |

وَالْحٰفِظُوْنَ لِحُدُوْدِ اللّٰهِ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٢﴾ مَا كَانَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नही है | 112 | मोमिन (जमा) | और खुशखबरी दो | अल्लाह की हुदूद की | और हिफ़ाज़त करने वाले |

لِلنَّبِيِّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मुश्रिकों के लिए | वह बख़्शिश चाहें | कि | और जो लोग ईमान लाए (मोमिन) | नबी के लिए |

وَلَوْ كَانُوْۤا اُولِيْ قُرْبٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कि वह | उन पर | जब जाहिर हो गया | उस के बाद | क़राबतदार | वह हों | ख़्वाह |

اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿١١٣﴾ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपने बाप के लिए | इब्राहीम (अ) | बख़्शिश चाहना | और न था | 113 | दोज़ख़ वाले |

اِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَاۤ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗۤ اَنَّهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि वह | उस पर | ज़ाहिर हो गया | फिर जब | उस से | जो उस ने वादा किया | एक वादे के सबब | मगर |

عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ ؕ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَاَوَّاهٌ حَلِيْمٌ ﴿١١٤﴾ وَمَا كَانَ اللّٰهُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | और नहीं है | 114 | बुर्दबार | नर्म दिल | इब्राहीम (अ) | बेशक | उस से | वह बेज़ार हो गया | अल्लाह का दुश्मन |

لِيُضِلَّ قَوْمًاۢ بَعْدَ اِذْ هَدٰىهُمْ حَتّٰى يُبَيِّنَ لَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | वाज़ेह करदे | जब तक | जब उन्हें हिदायत दे दी | बाद | कोई क़ौम | कि वह गुमराह करे |

مَّا يَتَّقُوْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١١٥﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बादशाहत | उस के लिए | बेशक अल्लाह | 115 | जानने वाला | हर शै का | बेशक अल्लाह | वह परहेज़ करें | जिस |

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ وَمَا لَكُمْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और तुम्हारे लिए नही | और वह मारता है | वही ज़िन्दगी देता है | और ज़मीन | आस्मानों |

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١١٦﴾ لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | अल्लाह | अल्बत्ता तवज्जुह फ़रमाई | 116 | और न मददगार | कोई हिमायती | से | अल्लाह के सिवा | कोई |

النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| में | उस की पैरवी की | वह जिन्हों ने | और अन्सार | और मुहाजरीन | नबी (स) |

سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيْقٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| एक फ़रीक़ | दिल (जमा) | फिर जाएं | जब क़रीब था | उस के बाद | तंगी | घड़ी |

مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 117 | निहायत मेह्रबान | इन्तिहाई शफ़ीक़ | उन पर | बेशक वह | उन पर | फिर वह मुतवज्जुह हुआ | उन से |

وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ؕ حَتّٰۤى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | तंग होगई | जब | यहां तक कि | पीछे रखा गया | वह जो | वह तीन | और पर |

الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْۤا اَنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | और उन्हों ने जान लिया | उन की जानें | उन पर | और वह तंग हो गई | बावजूद कुशादगी | ज़मीन |

لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّاۤ اِلَيْهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि वह तौबा करें | वह मुतवज्जुह हुआ उन पर | फिर | उस की तरफ़ | मगर | अल्लाह | से | नही पनाह |

١٣ ع ٨ ٢ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١١٨﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| डरो अल्लाह से | जो लोग ईमान लाए (मोमिन) | ऐ | 118 | निहायत मेहरबान | तौबा कुबूल करने वाला | वह | बेशक अल्लाह |

وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١١٩﴾ مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | मदीने वालों को | न था | 119 | सच्चे लोग | साथ | और हो जाओ |

حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के रसूल (स) | से | कि वह पीछे रहजाते | देहातियों में से | उन के इर्द गिर्द |

وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ لَا يُصِيْبُهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नही पहुँचती उन का | इस लिए कि वह | यह | उन की जान | से | अपनी जानों को | और यह कि जियादा चाहें वह |

ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَطَـُٔوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और न वह कदम रखते है | अल्लाह की राह | में | काई भूख | और न | और न कोई मुशक्कत | कोई पयास |

مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا اِلَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर | कोई चीज | दुश्मन | मे | और न वह छीनते है | काफ़िर (जमा) | गुस्सा हों | ऐसा कदम |

كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 120 | नेकोकार (जमा) | अजर | ज़ाया नही करता | बेशक अल्लाह | नेक अ़मल | उस से | लिखा जाता है उन के लिए |

وَلَا يُنْفِقُوْنَ نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً وَّلَا يَقْطَعُوْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और न ते करते है | और न बड़ा | छोटा | खर्च | वह खर्च करते है | और न |

وَادِيًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | बेहतरीन | अल्लाह | ताकि जज़ा दे उन्हें | लिखा जाता है उन के लिए | मगर | कोई वादी (मैदान) |

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢١﴾ وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً ؕ فَلَوْلَا نَفَرَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पस क्यों न कूच करे | सब के सब | कि वह कूच करें | मोमिन (जमा) | और नहीं है | 121 | वह करते थे (उन के आमाल) |

مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِى الدِّيْنِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दीन में | ताकि वह समझ हमिल करें | एक जमाअत | उन से (उन की) | हर गिरोह | से |

١٥ ع ٢ ٤ وَلِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْۤا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُوْنَ ﴿١٢٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 122 | बचते रहें | ताकि वह (अजब नहीं) | उन की तरफ़ | वह लौटें | जब | अपनी कौम | और ताकि वह डर सुनाएं |

और उन तीन पर (जिन का मामला) पीछे रखा गया था, यहां तक कि उन पर तंग होगई ज़मीन अपनी कुशादगी के बावजूद, और उन पर उन की जानें तंग हो गईं (अपनी जानों से तंग आगए) और उन्हों ने जान लिया कि अल्लाह से कोई पनाह नहीं मगर उसी कि तरफ़ है, फिर वह उन पर (अपनी रहमत से) मुतवज्जुह हुआ ताकि वह तौबा करें, बेशक अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला, निहायत मेहरबान है। (118) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सच्चे लोगों के साथ हो जाओ। (119) (लाइक़) न था मदीने वालों को (और उन्हें) जो उन के इर्द गिर्द देहाती हैं कि वह अल्लाह के रसूल (स) से पीछे रहजाएं, और यह कि वह जियादा चाहें अपनी जानों को उन (स) की जान से, यह इस लिए कि उन को नहीं पहुंचती कोई प्यास, और न कोई मुशक़्क़त, और न कोई भूख, अल्लाह की राह में, और न वह ऐसा क़दम रखते हैं कि काफ़िर गुस्सा हों और न वह छीनते हैं दुश्मन से कोई चीज़, मगर उस से (उस के बदले) उन के लिए नेक अ़मल लिखा जाता है, बेशक अल्लाह अजर ज़ाया नहीं करता नेकोकारों का। (120) और वह कोई छोटा या बड़ा (कम या जियादा) खर्च नहीं करते और न वह ते करते हैं कोई मैदान, मगर उन के लिए लिख दिया जाता है, ताकि अल्लाह उन्हें बेहतरीन जज़ा दे। (121) और (ऐसे तो) नहीं कि मोमिन सब के सब कूच करें। पस क्यों न उन के हर गिरोह में से एक जमाअत कूच करे ताकि वह समझ हासिल करें दीन में, और ताकि वह अपनी क़ौम को डर सुनाएं जब उन की तरफ़ लौटें, अजब नहीं कि वह बचते रहें। (122)

ऐ मोमिनो! अपने नज़दीक के काफ़िरों से लड़ो, और चाहिए कि वह तुम्हारे अन्दर पाएं सख़्ती, और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है। **(123)**

और जब कोई सूरत नाज़िल की जाती है तो उन में से बाज़ कहते हैं उस ने तुम में से किस का ईमान ज़ियादा कर दिया है? सो जो लोग ईमान लाए हैं उस ने ज़ियादा कर दिया है उन का ईमान, और वह ख़ुशियां मनाते हैं, **(124)**

और वह लोग जिन के दिलों में बीमारी है, उस ने जियादा कर दी उन की गन्दगी पर गन्दगी, और वह मरने तक काफ़िर ही रहे। **(125)**

क्या वह नहीं देखते कि वह हर साल आज़माए जाते हैं? एक बार या दो बार, फिर न वह तौबा करते हैं और न नसीहत पकड़ते हैं। **(126)**

और जब उतारी जाती है कोई सूरत तो उन में से एक दूसरे को देखने लगता है, क्या तुम्हें कोई (मुसलमान) देखता है? फिर वह फिर जाते हैं, अल्लाह ने उन के दिल फेर दिए, क्योंकि वह लोग समझ नहीं रखते। **(127)**

अलबत्ता तुम्हारे पास आया एक रसूल (स) तुम में से, जो तुम्हें तकलीफ़ पहुँचे उस पर गरां है, तुम्हारी (भलाई) का बहुत ख़ाहिशमन्द है। मोमिनों पर शफ़ीक़, निहायत मेहरबान है। **(128)**

फिर अगर वह मुँह मोड़ें तो आप (स) कह दें मुझे काफ़ी है अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, मैं ने उसी पर भरोसा किया, और वह अर्शे अज़ीम का मालिक है। **(129)**

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| नज़दीक तुम्हारे | वह जो | लड़ो | वह जो ईमान लाए (मोमिन) | ऐ |

مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً ؕ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कि अल्लाह | और जान लो | सख़्ती | तुम्हारे अन्दर | और चाहिए कि वह पाएं | कुफ़्फ़ार से (काफ़िर) |

مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٣﴾ وَاِذَا مَاۤ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ الربع

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कहते हैं | बाज़ | तो उन में से | कोई सूरत | नाज़िल की जाती | और जब | 123 | परहेज़गारों के साथ |

اَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖۤ اِيْمَانًا ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो ईमान लाए | सो जो | ईमान | उस ने | जियादा कर दिया (उस का) | तुम में से किस |

فَزَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّهُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿١٢٤﴾ وَاَمَّا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और जो | 124 | ख़ुशियां मनाते हैं | और वह | ईमान | उस ने ज़ियादा कर दिया उन का |

الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلٰى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ (पर) | गन्दगी | उस ने ज़ियादा कर दी उन की | बीमारी | उन के दिल (जमा) | में | वह लोग जो |

رِجْسِهِمْ وَمَاتُوْا وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٢٥﴾ اَوَلَا يَرَوْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्या नहीं वह देखते | 125 | काफ़िर (जमा) | और वह | और वह मरे | उन की गन्दगी |

اَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً اَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर | दो बार | या | एक बार | हर साल में | आज़माए जाते हैं | कि वह |

لَا يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾ وَاِذَا مَاۤ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई सूरत | और उतारी जाती है | और जब | 126 | नसीहत पकड़ते हैं | वह | और न | न वह तौबा करते हैं |

نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ ؕ هَلْ يَرٰىكُمْ مِّنْ اَحَدٍ ثُمَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर | कोई | देखता है तुम्हें | क्या | बाज़ (दूसरे) | को | उन में से (कोई एक) | देखना है |

انْصَرَفُوْا ؕ صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| लोग | क्योंकि वह | उन के दिल | अल्लाह | फेर दिए | वह फिर जाते हैं |

لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿١٢٧﴾ لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| गरां | तुम्हारी जानें (तुम) | से | एक रसूल (स) | अलबत्ता तुम्हारे पास आया | 127 | समझ नहीं रखते |

عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| इन्तिहाई शफ़ीक़ | मोमिनों पर | तुम पर | हरीस (बहुत ख़ाहिशमन्द) | तुम्हें तकलीफ़ पहुँचे | जो | उस पर |

رَّحِيْمٌ ﴿١٢٨﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के सिवा | कोई माबूद | नहीं | अल्लाह | मुझे काफ़ी है | ता कह दें | फिर अगर वह मुंह मोड़ें | 128 | निहायत मेहरबान |

عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿١٢٩﴾ ١٦ ع ٥

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 129 | अज़ीम | अर्श | मालिक | और वह | मैं ने भरोसा किया | उस पर |

المنزل ٣

## آيَاتُهَا ١٠٩ ❀ (١٠) سُوْرَةُ يُوْنُس ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١١

रुकुआत 11 — (10) सूरह यूनुस यूनुस (अ) — आयात 109

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓـرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿١﴾ اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने वहि भेजी | कि | तअज्जुब | लोगों को | क्या हुआ | 1 | हिक्मत वाली | किताब | आयतें | यह | अलिफ़ लाम रा |

اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | कि | जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले) | और खुशखबरी दे | लोग | वह डराए | कि | उन से | एक आदमी | तरफ़-पर |

وقف النبي ﷺ

قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؔ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | खुला | जादूगर | यह | बेशक | काफ़िर (जमा) | बोले | उन का रब | पास | सच्चा | पाया |

اِنَّ رَبَّكُمُ اللهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | छे (6) | में | और ज़मीन | आस्मानों | पैदा किया | वह जिस ने | अल्लाह | बेशक तुम्हारा रब |

ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर | सिफ़ारिशी | कोई | नहीं | काम | तदबीर करता है | अर्श पर | काइम हुआ | फिर |

مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ؕ ذٰلِكُمُ اللهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣﴾ اِلَيْهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उसी की तरफ़ | 3 | सो क्या तुम धयान नहीं करते | पस उन की बन्दगी करो | तुम्हारा रब | अल्लाह | वह है | उस की इजाजत | बाद |

مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ؕ وَعْدَ اللهِ حَقًّا ؕ اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दोबारा पैदा करेगा | फिर | पहली बार पैदा करता है | बेशक वही | सच्चा | अल्लाह | वादा | सब | तुम्हारा लौट कर जाना |

لِيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुफ़्र किया | और वह लोग जो | इन्साफ़ के साथ | नेक (जमा) | और उन्हों ने अमल किए | ईमान लाए | वह लोग जो | ताकि जज़ा दे |

لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | वह कुफ़्र करते थे | क्यों कि | दर्दनाक | और अज़ाब | खौलता हुआ | से | पीना है (पानी) | उन के लिए |

هُوَ الَّذِىْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّالْقَمَرَ نُوْرًا وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मन्ज़िलें | और मुक़र्रर कर दीं उस की | नूर (चमकता) | और चाँद | जगमगाता | सूरज | बनाया | जिस ने | वह |

لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ؕ مَا خَلَقَ اللهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हक़ (दुरुस्त तदबीर) से | मगर | यह | अल्लाह | नही पैदा किया | और हिसाब | बरस (जमा) | गिनती | ताकि तुम जान लो |

يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٥﴾ اِنَّ فِى اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और दिन | रात | बदलना | में | बेशक | 5 | इल्म वालों के लिए | निशानियां | वह खोल कर बयान करता है |

وَمَا خَلَقَ اللهُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ﴿٦﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | परहेज़गारों के लिए | निशानियां हैं | और जमीन | आस्मानों में | अल्लाह ने पैदा किया | और जो |

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-रा, यह हिक्मत वाली किताब की आयतें हैं। (1) क्या लोगों को तअज्जुब हुआ? कि हम ने वहि भेजी एक आदमी पर उन में से कि वह लोगों को डराए, और ईमान वालों को खुशखबरी दे कि उन के लिए सच्चा पाया (मक़ाम) है उन के रब के पास काफ़िर बोले बेशक यह तो खुला जादूगर है। (2) बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है, जिस ने पैदा किया छे (6) दिनों में आस्मानों को और ज़मीन को, फिर वह अर्श पर क़ाइम हुआ, काम की तदबीर करता है, कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं मगर उस की इजाजत के बाद, वह अल्लाह है तुम्हारा रब, पस उस की बन्दगी करो, सो क्या तुम धयान नहीं देते? (3) उस की तरफ़ तुम सब को लौट कर जाना है, अल्लाह का वादा सच्चा है, बेशक वही पहली बार पैदा करता है फिर उस को दोबारा पैदा करेगा, ताकि उन लोगों को इन्साफ़ के साथ जज़ा दे जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अमल किए, और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के लिए खौलता हुआ पानी है और दर्दनाक अज़ाब है, क्योंकि वह कुफ़्र करते थे (4) वही है जिस ने सूरज को जगमगाता और चाँद को चमकता बनाया और उस की मन्ज़िलें मुक़र्रर कर दीं ताकि तुम बरसों की गिनती जान लो और हिसाब, अल्लाह ने यह नहीं पैदा किया मगर दुरुस्त तदबीर से, वह इल्म वालों के लिए निशानियां खोल कर बयान करता है। (5) बेशक रात और दिन के बदलने में, और जो अल्लाह ने आस्मानों में और जमीन में पैदा किया (उस में) निशानियां हैं परहेजगारों के लिए। (6)

إِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَرَضُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

बेशक | वह लोग जो | उम्मीद नहीं रखते | हमारा मिलना | और वह राज़ी हो गए | ज़िन्दगी पर | दुनिया

وَاطْمَاَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ۝٧ اُولٰٓئِكَ

और वह मुत्मइन हो गए | उस पर | और जो लोग | वह | से | हमारी आयात | ग़ाफ़िल (जमा) | 7 | यही लोग

مَاْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝٨ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

उन का ठिकाना | जहन्नम | उस का बदला जो | वह कमाते थे | 8 | बेशक | जो लोग ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ ۚ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ

और उन्हों ने अमल किए | नेक | उन्हें राह दिखाएगा | उन का रब | उन के ईमान की बदौलत | बहती होंगी | से | उन के नीचे

الْاَنْهٰرُ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝٩ دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ

नहरें | में | बाग़ात | नेमत | 9 | उन की दुआ | उस में | पाक है तू | ऐ अल्लाह

وَتَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ

और मुलाक़ात के वक़्त की दुआ | उस में | सलाम | और ख़ातिमा | उन की दुआ | कि | तमाम तारीफ़ें | अल्लाह के लिए | रब

الْعٰلَمِيْنَ ۝١٠ وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ ع ٦

सारे जहान | 10 | और अगर | जल्द भेज देता | अल्लाह | लोगों का | बुराई | जल्द चाहते हैं | भलाई

لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ۗ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِيْ

तो फिर हो चुकी होती | उन की तरफ़ | उन की उम्र की मीआद | पस हम छोड़ देते हैं | वह लोग जो | वह उम्मीद नहीं रखते | हमारी मुलाक़ात | में

طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝١١ وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا

उन की सरकशी | वह बहकते हैं | 11 | और जब | पहुँचती है | इन्सान | कोई तक्लीफ़ | वह हमें पुकारता है

لِجَنْۢبِهٖٓ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ

अपने पहलू पर (लेटा हुआ) | या (और) | बैठा हुआ | या (और) | खड़ा हुआ | फिर जब | हम दूर कर दें | उस से | उस की तक्लीफ़ | चल पड़ा

كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَآ اِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهٗ ۗ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ

गोया कि | हमें पुकारा न था | किसी | तक्लीफ़ | उसे पहुँची | उसी तरह | भला कर दिखाया | हद से बढ़ने वालों को

مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١٢ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ

जो | वह करते थे (उन के काम) | 12 | और हम ने हलाक कर दीं | उम्मतें | से | तुम से पहले

لَمَّا ظَلَمُوْا ۙ وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَمَا

जब | उन्हों ने ज़ुल्म किया | और उन के पास आए | उन के रसूल | खुली निशानियों के साथ | और न

كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا ۗ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ۝١٣ ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ

ईमान लाते थे | उसी तरह | हम बदला देते हैं | क़ौम | मुज्रिमों की | 13 | फिर | हम ने बनाया तुम्हें

خَلٰٓئِفَ فِي الْاَرْضِ مِنْ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ۝١٤

जानशीन | ज़मीन में | उन के बाद | ताकि हम देखें | कैसे | तुम काम करते हो | 14

बेशक जो लोग हमारे मिलने की उम्मीद नहीं रखते, और वह दुनिया की ज़िन्दगी पर राज़ी हो गए, और उस पर मुत्मइन हो गए, और जो लोग हमारी आयतों से ग़ाफ़िल हैं, (7)
यही लोग हैं जिन का ठिकाना जहन्नम है, उस का बदला जो वह कमाते थे। (8)
बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अमल किए, उन का रब उन्हें राह दिखाएगा उन के ईमान की बदौलत (ऐसे महलात की) जिन के नीचे नहरें बहती होंगी, नेमत के बाग़ात में। (9)
उस में उन की दुआ (हो गी) ऐ अल्लाह! तू पाक है, और उस में उन की वक़्ते मुलाक़ात की दुआ "सलाम" है, और उन की दुआ का ख़ातिमा है तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो सारे जहानों का रब है। (10)
और अगर अल्लाह लोगों को जल्द बुराई भेजता जैसे वह जल्द भलाई चाहते हैं तो पूरी हो चुकी होती उन की उम्र की मीआद, पस हम उन लोगों को जो हमारी मुलाक़ात की उम्मीद नहीं रखते सरकशी में बहकते छोड़ देते हैं। (11)
और जब इन्सान को कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो वह लेटा हुआ, और बैठा हुआ, और खड़ा हुआ हमें पुकारता है, फिर जब हम दूर कर दें उस से उस की तक्लीफ़, (यूँ) चल पड़ा गोया कि किसी तक्लीफ़ में जो उसे पहुँची, उस ने हमें पुकारा ही न था, उसी तरह हद से बढ़ने वालों को भला कर दिखाया वह काम जो वह करते थे। (12)
और हम ने तुम से पहले कई उम्मतें हलाक कर दीं जब उन्हों ने ज़ुल्म किया, और उन के पास आए उन के रसूल खुली निशानियों के साथ, और वह ईमान न लाते थे, उसी तरह हम मुज्रिमों की क़ौम को बदला देते हैं। (13)
फिर हम ने तुम्हें ज़मीन में उन के बाद जानशीन बनाया ताकि हम देखें तुम कैसे काम करते हो। (14)

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उम्मीद नहीं रखते | वह लोग जो | कहते हैं | वाज़ेह | हमारी आयात | उन पर (उन के सामने) | पढ़ी जाती है | और जब |

لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ اَوْ بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरे लिए | नहीं है | आप कह दें | बदलदो इसे | या | इस के अलावा | कोई कुरआन | तुम ले आओ | हम से मिलने की |

اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ نَفْسِيْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरी तरफ़ | वहि की जाती है | मगर जो | मैं नही पैरवी करता | अपनी | जानिब | से | उस बदलूं | कि |

اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ (١٥) قُلْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप कह दें | 15 | बड़ा | दिन | अज़ाब | अपना रब | मैं ने नाफ़रमानी की | अगर | डरता हूँ | बेशक मैं |

لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तहकीक मैं रह चुका हूँ | उस की | और न ख़बर देता तुम्हें | तुम पर | न पढ़ता मैं उसे | अगर चाहता अल्लाह |

فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ (١٦) فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से जो | बड़ा ज़ालिम | सो कौन | 16 | अक़्ल से काम लेते तुम | सो क्या न | इस से पहले | एक उम्र | तुम में |

افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़लाह नही पाते | बेशक वह | उस की आयतों को | या झुटलाए | झूट | अल्लाह पर | बान्धे |

الْمُجْرِمُوْنَ (١٧) وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| न ज़रर पहुँचा सके उन्हें | जो | अल्लाह के सिवा | से | और वह पूजते हैं | 17 | मुज्रिम (जमा) |

وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ۭ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के पास | हमारे सिफ़ारिशी | यह सब | और वह कहते हैं | और न नफ़ा दे सके उन्हें |

قُلْ اَتُنَبِّـُٔوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ۭ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन | में | और न | आस्मानों में | वह नहीं जानता | उस की जो | अल्लाह | क्या तुम ख़बर देते हो | आप (स) कह दें |

سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ (١٨) وَمَا كَانَ النَّاسُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| लोग | और न थे | 18 | वह शिर्क करते हैं | उस से जो | और बालातर | वह पाक है |

اِلَّآ اُمَّةً وَّاحِدَةً فَاخْتَلَفُوْا ۭ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| से | पहले हो चुकी | बात | और अगर न | फिर उन्हों न इख़्तिलाफ़ किया | उम्मते वाहिद | मगर |

رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ (١٩) وَيَقُوْلُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह कहते हैं | 19 | वह इख़तिलाफ़ करते हैं | उस में | उस में जो | उन के दरमियान | तो फ़ैसला हो जाता | तेरा रब |

لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ فَقُلْ اِنَّمَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इस के सिवा नही | तो कह दें | उस के रब से | कोई निशानी | उस पर | क्यों न उतरी |

ع ٢ ١٠ الْغَيْبُ لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوْا ۚ اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ (٢٠)

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | इन्तिजार करन वाले | से | तुम्हारे साथ | मैं | सो तुम इन्तिजार करो | अल्लाह के लिए | ग़ैब |

और जब पढ़ी जाती हैं उन के सामने हमारी वाज़ेह आयतें, तो जो लोग हम से मिलने की उम्मीद नहीं रखते वह कहते हैं, उस के अलावा तुम कोई और कुरआन ले आओ या उसे बदल दो, आप (स) कह दें मेरे लिए (रवा) नहीं कि मैं अपनी जानिब से बदलूं, मैं पैरवी नहीं करता मगर (उस की) जो मेरी तरफ़ वहि किया जाता है, अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूँ तो मैं बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ। (15)

आप (स) कह दें अगर अल्लाह चाहता तो मैं उसे तुम पर (तुम्हारे सामने) न पढ़ता, और न तुम्हें उस की ख़बर देता, मैं उस से पहले तुम में एक उम्र रह चुका हूँ, सो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते? (16)

सो उस से बड़ा ज़ालिम कौन है? जो अल्लाह पर झूट बान्धे या उस की आयतों को झुटलाए, बेशक मुजरिम फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) नहीं पाते, (17)

और वह अल्लाह के सिवा उन्हें पूजते हैं जो उन्हें न ज़रर पहुँचा सकें और न नफ़ा दे सकें, और वह कहते हैं यह सब अल्लाह के पास हमारे सिफ़ारशी हैं। आप (स) कह दें क्या तुम अल्लाह को उस की खबर देते हो जो वह नहीं जानता आस्मानों में और न जमीन में, वह पाक है और वह बालातर है उस से जो वह शिर्क करते हैं। (18)

और लोग न थे मगर उम्मते वाहिद, फिर उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया, और अगर तेरे रब की तरफ़ से पहले बात न हो चुकी होती तो फ़ैसला हो जाता उन के दरमियान (उस बात का) जिस में वह इख़तिलाफ़ करते हैं। (19)

और वह कहते हैं उस के रब की तरफ़ से उस पर कोई निशानी क्यों न उतरी? तो आप (स) कह दें उस के सिवा नही कि ग़ैब अल्लाह के लिए है, सो तुम इन्तिज़ार करो, मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों से हूँ। (20)

और जब हम चखाएं लोगों को रह्मत (का मज़ा) एक तक्लीफ़ के बाद जो उन्हें पहुँची थी तो उसी वक्त वह हमारी आयात में हीले (बनाने लगें) आप (स) कह दें अल्लाह सब से तेज खुफ़िया तदबीर (बना सकता है), बेशक तुम जो हीले साज़ी करते हो हमारे फ़रिश्ते लिखते हैं। (21)

वही है जो तुम्हें चलाता है खुश्की में और दर्या में, यहां तक कि जब तुम कश्ती में हो, और वह उन के साथ (उन्हें ले कर) पाकीज़ा हवा के साथ चलें, और वह उस से खुश हुए, उस (कश्ती) पर एक तुन्द ओ तेज़ हवा आई, और उन पर हर तरफ़ से मौजें आगईं, और उन्हों ने जान लिया कि उन्हें घेर लिया गया है, वह अल्लाह को पुकारने लगे उस की बन्दगी में ख़ालिस हो कर, कि अगर तू ने हमें इस से नजात दे दी तो हम जरूर तेरे शुक्रगुज़ारों में से होंगे। (22)

फिर जब उस ने उन्हें नजात दे दी उस वक़्त वह ज़मीन में नाहक सरकशी करने लगे, ऐ लोगो! इस के सिवा नहीं कि तुम्हारी शरारत (का बवाल) तुम्हारी जानों पर है, दुनिया की ज़िन्दगी के फ़ाइदे (चन्द रोज़ा हैं) फिर तुम्हें हमारी तरफ़ लौटना है फिर हम तुम्हें बतला देंगे जो तुम करते थे। (23)

इस के सिवा नहीं कि दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल पानी जैसी है, हम ने उसे आस्मान से उतारा तो उस से ज़मीन का सब्ज़ह मिला जुला निकला, जिस से लोग और चौपाए खाते हैं, यहां तक कि जब ज़मीन ने अपनी रौनक़ पकड़ ली, और वह मुज़ैयन हो गई, और जमीन वालों ने खयाल किया कि वह उस पर कुदरत रखते हैं तो (अचानक) हमारा हुक्म रात में या दिन के वक़्त आया, तो हम ने उसे कटा हुआ ढेर कर दिया गोया वह कल थी ही नहीं, इसी तरह हम आयतें खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं। (24)

और अल्लाह सलामती के घर की तरफ़ बुलाता है। और जिसे चाहे सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत देता है। (25)

وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ اِذَا لَهُمْ مَّكْرٌ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जब | हम चखाएं | लोग | रह्मत | बाद | तक्लीफ़ | उन्हें पहुँची | उसी वक्त | उन के लिए | हीला |

فِيْٓ اٰيَاتِنَا ؕ قُلِ اللّٰهُ اَسْرَعُ مَكْرًا ؕ اِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ ﴿٢١﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | हमारी आयात | आप (स) कह दें | अल्लाह | सब से जल्द | खुफ़िया तदबीर | बेशक | हमारे फ़रिश्ते | वह लिखते हैं | जो तुम हीले साज़ी करते हो | 21 |

هُوَ الَّذِيْ يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلْكِ ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वही | जो कि | तुम्हें चलाता है | खुश्की में | और दर्या | यहां तक | जब | तुम हो | कश्ती में |

وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيْحٍ طَيِّبَةٍ وَّفَرِحُوْا بِهَا جَآءَتْهَا رِيْحٌ عَاصِفٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह चलें | उन के साथ | हवा के साथ | पाकीज़ा | और वह खुश हुए | उस से | उस पर आई | एक हवा | तुन्द ओ तेज़ |

وَّجَآءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اُحِيْطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन पर आई | मौज | से | हर जगह (हर तरफ़) | और उन्हों ने जान लिया | कि वह | घेर लिया गया | उन्हें | वह पुकारने लगे |

اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ لَئِنْ اَنْجَيْتَنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | ख़ालिस हो कर | उस के | दीन (बन्दगी) | अलबत्ता अगर | तू नजात दे हमें | से | उस | तो हम ज़रूर होंगे |

مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٢٢﴾ فَلَمَّآ اَنْجٰىهُمْ اِذَا هُمْ يَبْغُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | शुक्रगुज़ार (जमा) | 22 | फिर जब | उन्हें नजात दे दी | उस वक्त | वह | सरकशी करने लगे | में | ज़मीन | नाहक |

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ ۙ مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ लोगो | इस के सिवा नही | तुम्हारी शरारत | पर | तुम्हारी जानों | फ़ाइदे | ज़िन्दगी | दुनिया |

ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٣﴾ اِنَّمَا مَثَلُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर | हमारी तरफ़ | तुम्हें लौटना | फिर हम बतला देंगे तुम्हें | वह जो | तुम करते थे | 23 | इस के सिवा नही | मिसाल |

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दुनिया की ज़िन्दगी | जैसे पानी | हम ने उसे उतारा | आस्मान से | तो मिला जुला निकला | उस से | ज़मीन का सब्ज़ा |

مِمَّا يَاْكُلُ النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذَتِ الْاَرْضُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिस से | खाते हैं | लोग | और चौपाए | यहां तक कि | जब | पकड़ ली | ज़मीन |

زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ اَهْلُهَآ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَآ ۙ اَتٰىهَآ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी रौनक़ | और मुज़ैयन हो गई | और ख़याल किया | ज़मीन वाले | कि वह | कुदरत रखते हैं | उस पर | आया |

اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारा हुक्म | रात में | या दिन के वक़्त | तो हम ने कर दिया | कटा हुआ ढेर | गोया कि | वह न थी |

بِالْاَمْسِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَاللّٰهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कल | इसी तरह | हम खोल कर बयान करते हैं | आयतें | लोगों के लिए | जो ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं | 24 | और अल्लाह |

يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ۚ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बुलाता है | तरफ़ | सलामती का घर | और हिदायत देता है | जिसे वह चाहे | तरफ़ | रास्ता | सीधा | 25 |

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ۚ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न ज़िल्लत | सियाही | उन के चहरे | और न चढ़ेगी | और ज़ियादा | भलाई है | उन्हों ने भलाई की | वह लोग जो कि |

اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने कमाईं | और वह लोग जो | 26 | हमेशा रहेंगे | उस में | वह सब | जन्नत वाले | वही लोग |

السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍۭ بِمِثْلِهَا ۙ وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۭ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | से | उन के लिए नहीं | ज़िल्लत | और उन पर चढ़ेगी | उस जैसा | बुराई | बदला | बुराइयां |

مِنْ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَآ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ۭ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तारीक | रात | से | टुकड़े | उन के चहरे | ढांक दिए गए | गोया कि | बचाने वाला | कोई |

اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम इकट्ठा करेंगे उन्हें | और जिस दिन | 27 | हमेशा रहेंगे | उस में | वह सब | जहन्नम वाले | वही लोग |

جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ وَشُرَكَآؤُكُمْ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम्हारे शरीक | तुम | अपनी जगह | जिन्हों ने शिर्क किया | उन लोगों को | हम कहेंगे | फिर | सब |

فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَآؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 28 | बन्दगी करते | हमारी | तुम न थे | उन के शरीक | और कहेंगे | उन के दरमियान | फिर हम जुदाई डाल देंगे |

فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारी बन्दगी | से | हम थे | कि | और तुम्हारे दरमियान | हमारे दरमियान | गवाह | अल्लाह | पस काफ़ी |

لَغٰفِلِيْنَ ﴿٢٩﴾ هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّآ اَسْلَفَتْ وَرُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की तरफ़ | और वह लौटाए जाएंगे | उस ने भेजा | जो | हर कोई | जांच लेगा | वहां | 29 | अलबत्ता बेख़बर (जमा) |

ع ٣ النصف ٨

مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٣٠﴾ قُلْ مَنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कौन | आप (स) पूछें | 30 | वह झूट बान्धते थे | जो | उन से | और गुम हो जाएगा | सच्चा | उन का (अपना) मौला |

يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और आँखें | कान | मालिक है | या कौन | और ज़मीन | आस्मान | से | रिज़्क़ देता है तुम्हें |

وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ۭ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तदबीर करता है काम | और कौन | ज़िन्दा | से | मुर्दा | और निकालता है | मुर्दा | से | ज़िन्दा | निकालता है | और कौन |

فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣١﴾ فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सच्चा | तुम्हारा रब | अल्लाह | पस यह है तुम्हारा | 31 | क्या फिर तुम नहीं डरते | आप कह दें | अल्लाह | सो वह बोल उठेंगे |

فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿٣٢﴾ كَذٰلِكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उसी तरह | 32 | तुम फिरे जाते हो | पस किधर | गुमराही | सिवाए | सच के बाद | फिर क्या रह गया |

حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 33 | ईमान न लाएंगे | कि वह | उन्हों ने नाफ़रमानी की | वह लोग जो | पर | तेरा रब | बात | सच्ची हुई |

जिन लोगों ने भलाई की उन के लिए भलाई है और (उस से भी) ज़ियादा, और उन के चहरों पर न सियाही चढ़ेगी और न ज़िल्लत, वही लोग जन्नत वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। **(26)** और जिन लोगों ने बुराइयां कमाईं (उन का) बदला उस जैसी बुराई है, और उन पर ज़िल्लत चढ़ेगी, उन के लिए अल्लाह से बचाने वाला कोई नहीं, गोया उन के चहरे ढांक दिए गए हों तारीक रात के टुकड़े से, वही लोग जहन्नम वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। **(27)** और जिस दिन हम उन सब को इकट्ठा करेंगे फिर उन लोगों को कहेंगे जिन्हों ने शिर्क किया अपनी अपनी जगह (रहो) तुम और तुम्हारे शरीक, फिर हम उन के दरमियान जुदाई डाल देंगे, और उन के शरीक कहेंगे, तुम हमारी बन्दगी न करते थे। **(28)** पस हमारे और तुम्हारे दरमियान काफ़ी है अल्लाह गवाह, कि हम तुम्हारी बन्दगी से बेख़बर थे। **(29)** वहां हर कोई जांच लेगा जो उस ने आगे भेजा था और वह अपने सच्चे मौला अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाएंगे और उन से गुम हो जाएगा जो वह झूट बान्धते थे। **(30)** आप (स) पूछें कौन आस्मान और ज़मीन से तुम्हें रिज़्क़ देता है? या कौन कान और आँखों का मालिक है? और कौन ज़िन्दा को मुर्दे से निकालता है? और निकालता है मुर्दे को ज़िन्दा से? और कौन कामों की तदबीर करता है? सो वह बोल उठेंगे, अल्लाह! आप (स) कहदें क्या फिर तुम डरते नहीं? **(31)** पस यह है अल्लाह! तुम्हारा सच्चा रब, सच के बाद गुमराही के सिवा क्या रह गया? फिर तुम किधर फिरे जाते हो? **(32)** उसी तरह तेरे रब की बात उन लोगों पर जिन्हों ने नाफ़रमानी की, सच्ची हुई कि वह ईमान न लाएंगे, **(33)**

आप (स) पूछें क्या तुम्हारे शरीकों में से कोई है? जो पहली बार पैदा करे फिर उसे लौटाए, आप (स) कह दें अल्लाह पहली बार पैदा करता है फिर उसे लौटाएगा, पस तुम किधर पलटे जाते हो? (34) आप (स) पूछें क्या तुम्हारे शरीकों में से (कोई) है जो सहीह राह बताए? आप (स) कह दें अल्लाह सहीह राह बताता है, क्या जो सहीह राह बताता है ज़ियादा हक्दार है कि उस की पैरवी की जाए? या वह जो (खुद भी) राह नहीं पाता मगर यह कि उसे राह दिखाई जाए, सो तुम्हें क्या हो गया है? कैसा फ़ैसला करते हो? (35) और उन में से अक्सर पैरवी नहीं करते मगर गुमान की, बेशक गुमान हक् (की मुआरिफ़त) का कुछ भी काम नहीं देता, बेशक अल्लाह खूब जानता है जो वह करते हैं। (36) और यह कुरआन (ऐसा) नहीं कि कोई अल्लाह के (हुक्म के) बग़ैर (अपनी तरफ़ से) बना ले, लेकिन उस की तस्दीक् करने वाला है जो उस से पहले (नाज़िल हुआ) और किताब की तफ़्सील है, उस में कोई शक नहीं कि यह तमाम जहानों के रब (की तरफ़) से है। (37) क्या वह कहते हैं? कि वह उसे बना लाया है, आप (स) कह दें पस उस जैसी एक ही सूरत ले आओ और जिसे तुम बुला सको, बुला लो, अल्लाह के सिवा, अगर तुम सच्चे हो। (38) बल्कि उन्हों ने उसे झुटलाया जिस के इल्म पर उन्हों ने क़ाबू नहीं पाया, और उस की हकीकत अभी उन के पास नहीं आई, उसी तरह उन से पहलों ने झुटलाया, पस आप (स) देखें कैसा हुआ ज़ालिमों का अन्जाम? (39) और उन में से बाज उस पर ईमान लाएंगे, और उन में से बाज उस पर ईमान न लाएंगे, और तेरा रब फ़साद करने वालों को खूब जानता है। (40) और अगर वह आप (स) को झुटलाएं तो आप (स) कह दें मेरे लिए मेरे अमल, और तुम्हारे लिए तुम्हारे अमल, तुम उस के जवाबदह नहीं जो मैं करता हूँ, और मैं उस का जवाबदह नहीं जो तुम करते हो। (41)

قُــلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآبِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ قُــلِ اللّٰهُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | आप (स) कह दें | फिर उसे लौटाए | मख़्लूक | पहली बार पैदा करे | जो | तुम्हारे शरीक | से | क्या | आप (स) पूछें |

يَبْــدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٤﴾ قُــلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآبِكُمْ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे शरीक | से | क्या | आप (स) पूछें | 34 | पलटे जाते हो तुम | पस किधर | उसे लौटाएगा | फिर | मख़्लूक | पहली बार पैदा करता है |

مَّــنْ يَّـهْـدِيْٓ اِلَــى الْــحَـقِّ ؕ قُــلِ اللّٰهُ يَـهْـدِىْ لِـلْـحَـقِّ ؕ اَفَــمَـنْ يَّـهْـدِيْٓ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राह बताता है | पस क्या जो | सहीह | राह बताता है | अल्लाह | आप कहदें | हक् की तरफ़ (सहीह) | राह बताए | जो |

اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى ۚ فَمَا لَكُمْ ۟

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सो तुम्हें क्या हुआ | उसे राह दिखाई जाए | यह कि | मगर | वह राह नही पाता | या जो | पैरवी की जाए | कि | जियादा हक् दार | हक् की तरफ़ (सही) |

كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا ؕ اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِىْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नही काम देता | गुमान | बेशक | मगर गुमान | उन के अक्सर | और पैरवी नही करते | 35 | तुम फ़ैसला करते हो | कैसा |

مِنَ الْـحَقِّ شَيْـًٔـا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَمَـا كَانَ هٰذَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह- इस | और नहीं है | 36 | वह करते हैं | वह जो | खूब जानता है | बेशक अल्लाह | कुछ भी | हक् | से (का) |

الْــقُــرْاٰنُ اَنْ يُّــفْــتَـرٰى مِــنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰـكِــنْ تَـصْـدِيْـقَ الَّــذِىْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की जो | तस्दीक | और लेकिन | अल्लाह के बग़ैर | से | कि वह बनाले | कुरआन |

بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 37 | तमाम जहानों | रब | से | उस में | कोई शक नही | किताब | और तफ़सील | उस से पहले |

اَمْ يَـقُـوْلُـوْنَ افْـتَـرٰىـهُ ؕ قُــلْ فَـاْتُـوْا بِـسُـوْرَةٍ مِّـثْـلِهٖ وَادْعُــوْا مَـنِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिसे | और बुला लो तुम | उस जैसी | एक ही सूरत | पस ले आओ तुम | आप (स) कह दें | वह उसे बना लाया है | वह कहते हैं | क्या |

اسْتَطَعْتُمْ مِّــنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُـنْـتُـمْ صٰـدِقِـيْـنَ ﴿٣٨﴾ بَــلْ كَـذَّبُــوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने झुटलाया | बल्कि | 38 | सच्चे | तुम हो | अगर | अल्लाह के सिवा | से | तुम बुला सको |

بِـمَا لَـمْ يُـحِـيْـطُوْا بِعِلْمِهٖ وَلَـمَّـا يَـاْتِـهِـمْ تَـاْوِيْـلُـهٗ ؕ كَـذٰلِـكَ كَـذَّبَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| झुटलाया | उसी तरह | उस की हकीकत | उन के पास आई | और अभी नही | उस के इल्म पर | नही काबू पाया | वह जो |

الَّــذِيْـنَ مِــنْ قَـبْـلِـهِـمْ فَـانْـظُرْ كَـيْـفَ كَانَ عَـاقِـبَـةُ الظّٰـلِـمِـيْـنَ ﴿٣٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 39 | ज़ालिम (जमा) | अन्जाम | हुआ | कैसा | पस आप (स) देखें | उन से पहले | वह लोग जो |

وَمِـنْـهُـمْ مَّـنْ يُّـؤْمِـنُ بِـهٖ وَمِـنْـهُـمْ مَّـنْ لَّا يُـؤْمِـنُ بِــهٖ ؕ وَرَبُّــكَ اَعْـلَـمُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| खूब जानता है | और तेरा रब | उस पर | नही ईमान लाएंगे | जो (बाज़) | और उन में से | उस पर | ईमान लाएंगे | जो (बाज़) | और उन में से |

بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿٤٠﴾ وَاِنْ كَـذَّبُـوْكَ فَقُلْ لِّـىْ عَمَلِىْ وَلَـكُـمْ عَمَلُكُمْ ۚ ع ١٠ ٩

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे अमल | और तुम्हारे लिए | मेरे अमल | मेरे लिए | तो कह दें | वह तुम्हें झुटलाएं | और अगर | 40 | फ़साद करने वालों को |

اَنْــتُـمْ بَـرِيْٓـــْٔـوْنَ مِـمَّـآ اَعْـمَـلُ وَاَنَــا بَــرِىْٓءٌ مِّـمَّـا تَـعْـمَـلُـوْنَ ﴿٤١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 41 | तुम करते हो | उस का जो | जवाबदेह नहीं | और मैं | मैं करता हूँ | उस के जो | जवाबदह नहीं | तुम |

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़्वाह | बहरे | सुनाओगे | तो क्या तुम | आप (स) की तरफ़ | कान लगाते हैं | जो (बाज़) | और उन में से |

كَانُوْا لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْظُرُ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تَهْدِى الْعُمْىَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अन्धे | राह दिखा दोगे | पस क्या तुम | आप (स) की तरफ़ | देखते हैं | जो (बाज़) | और उन से | 42 | वह अक़्ल न रखते हों |

وَلَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْـًٔا وَّلٰكِنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और लेकिन | कुछ भी | लोग | जुल्म नहीं करना | बेशक अल्लाह | 43 | वह देखते न हों | ख़्वाह |

النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَاَنْ لَّمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर | वह न रहे थे | गोया | जमा करेगा उन्हें | और जिस दिन | 44 | जुल्म करते हैं | अपने आप पर | लोग |

سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُوْنَ بَيْنَهُمْ ؕ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने झुटलाया | वह लोग | अलबत्ता ख़सारे में रहे | आपस में | वह पहचानेंगे | दिन से (की) | एक घड़ी |

بِلِقَآءِ اللّٰهِ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِىْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जो | बाज़ (कुछ) | हम तुझे दिखा दें | और अगर | 45 | हिदायत पाने वाले | वह न थे | अल्लाह से मिलने को |

نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | गवाह | अल्लाह | फिर | उन का लौटना | पस हमारी तरफ़ | हम तुम्हें उठालें | या | वादा करते हैं हम उन से |

مَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ رَسُوْلُهُمْ قُضِىَ بَيْنَهُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के दरमियान | फ़ैसला कर दिया गया | उन का रसूल | आगया | पस जब | रसूल | उम्मत | और हर एक के लिए | 46 | जो वह करते हैं |

بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर | वादा | यह | कब | और वह कहते हैं | 47 | जुल्म नहीं किए जाते | और वह | इन्साफ़ के साथ |

كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٨﴾ قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِىْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا اِلَّا مَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | मगर | और न नफ़ा | किसी नुक़्सान | अपनी जान के लिए | नहीं मालिक हूँ मैं | आप कह दें | 48 | सच्चे | तुम हो |

شَآءَ اللّٰهُ ؕ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ؕ اِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक घड़ी | पस न ताख़ीर करेंगे वह | उन का वक़्त | आजाएगा | जब | एक वक़्त मुक़र्रर | हर एक उम्मत के लिए | चाहे अल्लाह |

وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٤٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوْ نَهَارًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| या दिन के वक़्त | रात का | उस का अज़ाब | अगर तुम पर आए | भला तुम देखो | आप (स) कह दें | 49 | जल्दी करेंगे वह | और न |

مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٥٠﴾ اَثُمَّ اِذَا مَا وَقَعَ اٰمَنْتُمْ بِهٖ ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस पर | तुम ईमान लाओगे | वाक़े होगा | जब | क्या फिर | 50 | मुज्रिम (जमा) | उस से - उस की | जल्दी करते हैं | क्या है वह |

آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٥١﴾ ثُمَّ قِيْلَ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने जुल्म किया (ज़ालिम) | उन लोगों को जो | कहा जाएगा | फिर | 51 | तुम जल्दी मचाते | उस की | और अलबत्ता तुम थे | अब |

ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ ۚ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٥٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 52 | तुम कमाते थे | वह जो | मगर | तुम्हें बदला दिया जाता | क्या नहीं | हमेशगी | अज़ाब | तुम चखो |

और उन में से बाज़ कान लगाते हैं आप (स) की तरफ़, तो क्या तुम बहरों को सुनाओगे? अगरचे वह अक़्ल न रखते हों। (42)
और उन में से बाज़ देखते हैं आप(स) की तरफ़, तो क्या आप(स) अन्धों को राह दिखा देंगे? अगरचे वह देखते न हों। (43)
बेशक अल्लाह जुल्म नहीं करता लोगों पर कुछ भी, लेकिन लोग अपने आप पर जुल्म करते हैं। (44)
और जिस दिन (योमे हश्र) वह उन्हें जमा करेगा गोया वह (दुनिया में) न रहे थे मगर दिन की एक घड़ी, आपस में पहचानेंगे, अलबत्ता वह ख़सारे में रहे जिन्हों ने झुटलाया अल्लाह से मिलने को, और वह हिदायत पाने वाले न थे। (45)
और अगर हम तुम्हें बाज़ वादे दिखा दें जो हम उन से कर रहे हैं या हम तुम्हें (दुनिया से) उठा लें, पस उन्हें हमारी तरफ़ लौटना है, फ़िर अल्लाह उस पर गवाह है जो वह करते हैं। (46)
हर एक उम्मत के लिए एक रसूल है, पस जब उन का रसूल आगया, उन के दरमियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया गया, और उन पर जुल्म नहीं किया जाता। (47)
और वह कहते हैं यह वादा कब (पूरा) होगा? अगर तुम सच्चे हो। (48)
आप (स) कह दें मैं अपनी जान के लिए मालिक नहीं हूँ किसी नुक़्सान का न नफ़ा का, मगर जो अल्लाह चाहे, हर एक उम्मत के लिए एक वक्त मुक़र्रर है, जब उन का वक़्त आजाएगा पस न वह एक घड़ी ताखीर करेंगे न जल्दी कर सकेंगे। (49)
आप (स) कह दें भला तुम देखो अगर तुम पर उस का अज़ाब आए रात को या दिन के वक्त, तो वह क्या है जिस की मुज्रिम जल्दी कर रहे हैं? (50)
क्या फिर जब वाक़े हो जाएगा (उस वक्त) तुम उस पर ईमान लाओगे? अब (मानते हो) अलबत्ता तुम उस की जल्दी मचाते थे। (51)
फिर ज़ालिमों को कहा जाएगा तुम हमेशगी का अजाब चखो, तुम्हें वही बदला दिया जाता है जो तुम कमाते थे। (52)

और आप (स) से पूछते हैं क्या वह सच है? आप (स) कहदें हां! मेरे रब की क़सम! बेशक वह ज़रूर सच है, और तुम आजिज़ करने वाले नहीं। (53)
और अगर हर ज़ालिम शख़्स के लिए (वह सब कुछ) हो जो ज़मीन में है, वह उस को फ़िदये में देदे, और वह चुपके चुपके पशेमान होंगे जब अ़ज़ाब देखेंगे, और उन के दरमियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसला होगा, और उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा। (54)
याद रखो! अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है, याद रखो! बेशक अल्लाह का वादा सच है, लेकिन उन के अक्सर जानते नहीं। (55)
वही ज़िन्दगी देता है, और वही मारता है, और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (56)
ऐ लोगो! तहक़ीक़ तुम्हारे पास आ गई नसीहत तुम्हारे रब की तरफ़ से, और शिफ़ा उस (रोग) के लिए जो दिलों में है, और मोमिनों के लिए हिदायत ओ रह्मत। (57)
आप (स) कहदें, अल्लाह के फ़ज़्ल से, और उस की रह्मत से, सो वह उस पर ख़ुशी मनाएं, यह उन (सब) से बेहतर है जो वह जमा करते हैं। (58)
आप (स) कह दें, भला देखो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए रिज़्क़ उतारा, फिर तुम ने उस में से कुछ हराम बना लिया और कुछ हलाल, आप (स) कह दें, क्या अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया? या अल्लाह पर झूट बान्धते हो? (59)
और उन लोगों का क्या ख़याल है? जो घड़ते हैं अल्लाह पर झूट, क़ियामत के दिन (उन का क्या हाल होगा) बेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़्ल करने वाला है, लेकिन उन में से अक्सर शुक्र नहीं करते। (60)
और तुम नहीं होते किसी हाल में, और न उस में से कुछ क़ुरआन पढ़ते हो, और न कोई अ़मल करते हो, मगर हम तुम पर गवाह (बाख़बर) होते हैं जब तुम उस में मशग़ूल होते हो, और नहीं तुम्हारे रब से ग़ाइब एक ज़र्रा बराबर भी ज़मीन में और न आस्मान में, और न उस से छोटा और न बड़ा, मगर रौशन किताब में है। (61)

وَيَسْتَنْۢبِـُٔوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَ ۭ قُلْ اِىْ وَرَبِّيْٓ اِنَّهٗ لَحَقٌّ ڱ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٥٣﴾ ع ٥ ١٣

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 53 | आजिज़ करने वाले | तुम हो | और नहीं | ज़रूर सच | बेशक वह | मेरे रब की क़सम | हां | आप कह दें | वह | क्या सच है | और आप (स) से पूछते हैं |

وَلَوْ اَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِى الْاَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهٖ ۭ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पशेमान | और वह चुपके चुपके होंगे | उस को | अलबत्ता फिदया देदे | ज़मीन में | जो कुछ | उस ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम) | हर एक शख़्स के लिए | हो | और अगर |

لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٥٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 54 | ज़ुल्म न किए जाएंगे | और वह | इन्साफ़ के साथ | उन के दरमियान | और फ़ैसला होगा | अज़ाब | वह देखेंगे | जब |

اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اَلَآ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और लेकिन | सच | अल्लाह का वादा | बेशक | याद रखो | और ज़मीन में | आस्मानों में | अल्लाह के लिए जो | बेशक | याद रखो |

اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٥﴾ هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 56 | तुम लौटाए जाओगे | और उस की तरफ़ | और मारता है | ज़िन्दगी देता है | वही | 55 | जानते नहीं | उन के अक्सर |

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاۗءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَاۗءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ڏ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सीनों (दिलों) में | उस के लिए जो | और शिफ़ा | तुम्हारा रब | से | नसीहत | तहक़ीक़ आगई तुम्हारे पास | लोगो | ऐ |

وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٧﴾ قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उस की रह्मत से | अल्लाह | फ़ज़्ल से | आप कह दें | 57 | मोमिनों के लिए | ओ रह्मत | और हिदायत |

فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ۭ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿٥٨﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّآ اَنْزَلَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो उस ने उतारा | भला देखो | आप कह दें | 58 | वह जमा करते हैं | उस से जो | बेहतर | वह-यह | वह ख़ुशी मनाएं | सो उस पर |

اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَّحَلٰلًا ۭ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हुक्म दिया | क्या अल्लाह | आप (स) कह दें | और कुछ हलाल | कुछ हराम | उस से | फिर तुम ने बना लिया | रिज़्क़ | से | तुम्हारे लिए | अल्लाह |

لَكُمْ اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَمَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَي اللّٰهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह पर | घड़ते हैं | वह लोग जो | ख़याल | और क्या | 59 | तुम झूट बान्धते हो | अल्लाह पर | या | तुम्हें |

الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَي النَّاسِ وَلٰكِنَّ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और लेकिन | लोगों पर | फ़ज़्ल करने वाला | बेशक अल्लाह | क़ियामत के दिन | झूट |

اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَمَا تَكُوْنُ فِيْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ ع ٦ ١١

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से कुछ | उस से | और नहीं पढ़ते | किसी हाल में | और नहीं होते तुम | 60 | शुक्र नहीं करते | उन के अक्सर |

قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब तुम मशग़ूल होते हो | गवाह | तुम पर | हम होते हैं | मगर | कोई अ़मल | और नहीं करते | क़ुरआन |

فِيْهِ ۭ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न | ज़मीन में | एक ज़र्रा | बराबर | से | तुम्हारा रब | से | ग़ाइब | और नहीं | उस में |

فِي السَّمَاۗءِ وَلَآ اَصْغَرَ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرَ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦١﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 61 | किताबे रौशन | में | मगर | बड़ा | और न | उस | से | छोटा | और न | आस्मान | में |

أَلَآ إِنَّ أَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 62 | ग़मगीन होंगे | वह | और न | उन पर | न कोई ख़ौफ़ | अल्लाह के दोस्त | बेशक | याद रखो |

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾ لَهُمُ الْبُشْرٰى فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दुनिया कि ज़िन्दगी | में | बशारत | उन के लिए | 63 | और वह तक़्वा करते रहे | ईमान लाए | वह लोग जो |

وَفِى الْاٰخِرَةِ ۭ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ هُوَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह | यह | अल्लाह | बातों में | तबदीली नहीं | आख़िरत | और में |

وقف لازم الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٤﴾ وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के लिए | ग़लबा | बेशक | उन की बात | तुम्हें ग़मगीन करे | और न | 64 | बड़ी | कामयाबी |

جَمِيْعًا ۭ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٥﴾ اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मानों में | जो कुछ | अल्लाह के लिए | बेशक | याद रखो | 65 | जानने वाला | सुनने वाला | वह | तमाम |

وَمَنْ فِى الْاَرْضِ ۭ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सिवाए | पुकारते हैं | वह लोग जो | पैरवी करते हैं | क्या - किस | ज़मीन में | और जो |

اللّٰهِ شُرَكَآءَ ۭ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर (सिर्फ़) | वह | और नहीं | गुमान | मगर | वह नहीं पैरवी करते | शरीक (जमा) | अल्लाह |

يَخْرُصُوْنَ ﴿٦٦﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि तुम सुकून हासिल करो | रात | तुम्हारे लिए | बनाया | जो - जिस | वही | 66 | अटकलें दौड़ाते हैं |

فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 67 | सुनने वाले लोगों के लिए | अलबत्ता निशानियां | उस में | बेशक | दिखाने वाला (रौशन) | और दिन | उस में |

قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ۭ هُوَ الْغَنِيُّ ۭ لَهٗ مَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | उस के लिए | बेनियाज़ | वह | वह पाक है | बेटा | अल्लाह | बना लिया | वह कहते हैं |

فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۭ اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कोई | तुम्हारे पास | नहीं | ज़मीन में | और जो | आस्मानों में |

سُلْطٰنٍۢ بِهٰذَا ۭ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 68 | तुम नहीं जानते | जो | अल्लाह पर | क्या तुम कहते हो | उस के लिए | दलील |

قُلْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| झूट | अल्लाह पर | घड़ते हैं | वह लोग जो | बेशक | आप (स) कह दें |

لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾ مَتَاعٌ فِى الدُّنْيَا ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर | उन को लौटना | हमारी तरफ़ | फिर | दुनिया में | कुछ फ़ाइदा | 69 | वह फ़लाह नहीं पाएंगे |

نُذِيْقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيْدَ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ ع

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 70 | वह कुफ़्र करते थे | उस के बदले | शदीद | अ़ज़ाब | हम चखाएंगे उन्हें |

याद रखो! बेशक (जो) अल्लाह के दोस्त हैं न कोई ख़ौफ़ उन पर और न वह ग़मगीन होंगे। (62)

और जो लोग ईमान लाए और तक़्वा (ख़ौफ़े ख़ुदा और परहेज़गारी) करते रहे। (63)

उन के लिए बशारत है दुनिया की ज़िन्दगी में और आख़िरत में, अल्लाह की बातों में कोई तबदीली नहीं, यही बड़ी कामयाबी है। (64)

और उन की बात तुम्हें ग़मगीन न करे। बेशक तमाम ग़लबा अल्लाह के लिए है, वह सुनने वाला जानने वाला है। (65)

याद रखो! बेशक जो आस्मानों में और ज़मीन में है अल्लाह के लिए है, और किसी की पैरवी (नहीं) करते वह लोग जो अल्लाह के सिवा शरीकों को पुकारते हैं मगर (सिर्फ़) गुमान की पैरवी करते हैं, और वह सिर्फ़ अटकलें दौड़ाते हैं। (66)

वही है जिस ने बनाई तुम्हारे लिए रात ताकि तुम उस में सुकून हासिल करो और दिन रौशन, बेशक उस में सुनने वाले लोगों के लिए निशानियाँ हैं। (67)

वह कहते हैं अल्लाह ने बना लिया (अपना) बेटा। वह पाक है, वह बेनियाज़ है, उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है, तुम्हारे पास नहीं है उस के लिए कोई दलील, क्या तुम अल्लाह पर वह बात कहते हो जो तुम जानते नहीं? (68)

आप (स) कह दें, बेशक वह लोग जो अल्लाह पर झूट घड़ते हैं फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) नहीं पाएंगे। (69)

दुनिया में कुछ फ़ाइदा है, फिर उन को हमारी तरफ़ लौटना है, फिर हम उन्हें शदीद अज़ाब (का मज़ा) चखाएंगे उस के बदले जो वह कुफ़्र करते थे। (70)

और आप (स) उन्हें नूह (अ) का क़िस्सा पढ़ कर सुनाएं, जब उस ने अपनी क़ौम से कहा, ऐ मेरी क़ौम! अगर तुम पर गरां है मेरा क़ियाम और मेरा अल्लाह की आयतों से नसीहत करना, तो मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया, पस तुम और तुम्हारे शरीक अपना काम मुक़र्रर (पक्का) कर लो (ताकि) फिर तुम्हें अपने काम पर कोई शुबाह न रहे, फिर मेरे साथ कर गुज़रो, और मुझे मोहलत न दो। (71) फिर अगर तुम मुँह फेर लो तो मैं ने तुम से कोई अजर नहीं मांगा, मेरा अजर तो सिर्फ़ अल्लाह पर है, और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं रहूँ फ़रमांबरदारों में से। (72) तो उन्हों ने उसे (नूह अ) को झुटलाया, सो हम ने बचा लिया उसे और उन्हें जो उस के साथ कश्ती में थे, और हम ने उन्हें जाँनशीन बनाया, और उन लोगों को ग़र्क़ कर दिया जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया, सो देखो (उन लोगों का) अन्जाम कैसा हुआ? ज़िन्हें डराया गया था। (73) फिर हम ने उस (नूह अ) के बाद कई रसूल उन की क़ौमों की तरफ़ भेजे तो वह उन के पास रौशन दलीलों के साथ आए, सो उन से न हुआ के वह ईमान ले आएं उस (बात) पर जिसे वह उस से क़ब्ल झुटला चुके थे, इसी तरह हम हद से बढ़ने वालों के दिलों पर मुहर लगाते हैं। (74) फिर हम ने भेजा उन के बाद मूसा (अ) और हारून (अ) को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उस के सरदारों (दरबारियों) की तरफ़, तो उन्हों ने तकब्बुर किया और वह गुनाहगार लोग थे। (75) तो जब उन के पास हमारी तरफ़ से हक़ पहुँचा तो वह कहने लगे, बेशक यह अलबत्ता खुला जादू है। (76) मूसा (अ) ने कहा, क्या तुम हक़ की निस्बत (ऐसा) कहते हो? जब वह तुम्हारे पास आगया, क्या यह जादू है? और जादूगर कामयाब नहीं होते। (77) वह बोले क्या तू हमारे पास (इस लिए) आया है कि हमें उस से फेर दे जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया, और हो जाए तुम दोनों के लिए ज़मीन में बड़ाई (सरदारी मिल जाए) और हम तुम दोनों के मानने वालों में से नहीं। (78)

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ ۘ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ وقف لازم

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम पर | गरां | अगर है | ऐ मेरी क़ौम | अपनी क़ौम से | जब उस ने कहा | नूह (अ) | ख़बर (क़िस्सा) | उन पर (उन्हें) | और पढ़ो |

مَّقَامِىْ وَتَذْكِيْرِىْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْٓا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पस तुम मुक़र्रर कर लो | मैं ने भरोसा किया | पस अल्लाह पर | अल्लाह की आयतों से | और मेरा नसीहत करना | मेरा क़ियाम |

اَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْٓا اِلَىَّ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरे साथ | तुम कर गुज़रो | फिर | कोई शुबाह | तुम पर | तुम्हारा काम | न रहे | फिर | और तुम्हारे शरीक | अपना काम |

وَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿٧١﴾ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ اَجْرِىَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरा अजर | तो-सिर्फ़ | कोई अजर | तो मैं ने नही मांगा तुम से | तुम मुँह फेर लो | फिर अगर | 71 | और मुझे मोहलत न दो |

اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۙ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٧٢﴾ فَكَذَّبُوْهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो उन्हों ने उसे झुटलाया | 72 | फ़रमांबरदार (जमा) | से | मैं रहूँ | कि | और मुझे हुक्म दिया गया | अल्लाह पर | मगर (सिर्फ़) |

فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِى الْفُلْكِ وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ وَاَغْرَقْنَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम ने ग़र्क़ कर दिया | जाँशीन | और हम ने बनाया उन्हें | कश्ती में | उस के साथ | और जो | सो हम ने बचा लिया उसे |

الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٣﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 73 | डराए गए लोग | अन्जाम | हुआ | कैसा | सो देखो | हमारी आयतों को | उन्हों ने झुटलाया | वह लोग जो |

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रौशन दलीलों के साथ | वह आए उन के पास | उन की क़ौम | तरफ़ | कई रसूल | उस के बाद | हम ने भेजे | फिर |

فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | हम मुहर लगाते हैं | उसी तरह | उस से क़ब्ल | उस को | उन्हों ने झुटलाया | उस पर जो | सो उन से न हुआ कि वह ईमान ले आएं |

قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٧٤﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ اِلٰى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ | और हारून (अ) | मूसा (अ) | उन के बाद | हम ने भेजा | फिर | 74 | हद से बढ़ने वाले | दिल (जमा) |

فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٧٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 75 | गुनाहगार (जमा) | लोग | और वह थे | तो उन्हों ने तकब्बुर किया | अपनी निशानियों के साथ | उस के सरदार | फ़िरऔन |

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْٓا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٦﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 76 | खुला | अलबत्ता जादू | यह | बेशक | वह कहने लगे | हमारी तरफ़ | से | हक़ | आया उन के पास | तो जब |

قَالَ مُوْسٰٓى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَلَا يُفْلِحُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और कामयाब नहीं होते | यह | क्या जादू | वह आगया तुम्हारे पास | हक़ के लिए (निस्बत) जब | क्या तुम कहते हो | मूसा (अ) | कहा |

السّٰحِرُوْنَ ﴿٧٧﴾ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस पर अपने बाप दादा | पाया हम ने | उस से जो | कि फेर दे हमें | क्या तू आया हमारे पास | वह बोले | 77 | जादूगर |

وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِى الْاَرْضِ ؕ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 78 | ईमान लाने वालों में से | तुम दोनों के लिए | हम | और नहीं | ज़मीन में | बड़ाई | तुम दोनों के लिए | और हो जाए |

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِیْ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِیْمٍ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जादूगर | आ गए | फिर जब | 79 | इल्म वाला | जादूगर | हर | ले आओ मेरे पास | फ़िरऔन | और कहा |

قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰۤى اَلْقُوْا مَاۤ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿٨٠﴾ فَلَمَّاۤ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मूसा (अ) | कहा | उन्हों ने डाला | फिर जब | 80 | डालने वाले हो | तुम | जो | तुम डालो | मूसा (अ) | उन से | कहा |

مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَیُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُصْلِحُ عَمَلَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| काम | नही दुरुस्त करता | बेशक अल्लाह | अभी बातिल कर देगा उसे | बेशक अल्लाह | जादू | तुम लाए हो | जो |

ع ١٢ ١٣ الْمُفْسِدِیْنَ ﴿٨١﴾ وَیُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٨٢﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 82 | मुजरिम (गुनाहगार) | नापसन्द करें | ख़्वाह | अपने हुक्म से | हक़ | अल्लाह | और हक़ कर देगा | 81 | फ़साद करने वाले |

فَمَاۤ اٰمَنَ لِمُوْسٰۤى اِلَّا ذُرِّیَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़िरऔन | से (के) | ख़ौफ की वजह से | उस की क़ौम | से | चन्द लड़के | मगर | मूसा (अ) पर | ईमान लाया | सो न |

وَمَلَا۟ئِهِمْ اَنْ یَّفْتِنَهُمْ ؕ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِی الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बेशक वह | ज़मीन | में | सरकश | फ़िरऔन | और बेशक | वह आफ़त में डाले उन्हें | कि | और उन के सरदार |

لَمِنَ الْمُسْرِفِیْنَ ﴿٨٣﴾ وَقَالَ مُوْسٰى یٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह पर | ईमान लाए | तुम | अगर | ऐ मेरी क़ौम | मूसा (अ) | और कहा | 83 | हद से बढ़ने वाले | अलबत्ता-से |

فَعَلَیْهِ تَوَكَّلُوْۤا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِیْنَ ﴿٨٤﴾ فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने भरोसा किया | अल्लाह पर | तो उन्हों ने कहा | 84 | फ़रमांबरदार (जमा) | तुम हो | अगर | भरोसा करो | तो उस पर |

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿٨٥﴾ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | अपनी रहमत से | और हमें छुड़ादे | 85 | ज़ालिम (जमा) | क़ौम का | तख़्ता-ए-मशक़ | न बना हमें | ऐ हमारे रब |

الْقَوْمِ الْكٰفِرِیْنَ ﴿٨٦﴾ وَاَوْحَیْنَاۤ اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِیْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि घर बनाओ | और उस का भाई | मूसा (अ) | तरफ़ | और हम ने वहि भेजी | 86 | काफ़िर (जमा) | क़ौम |

لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُیُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُیُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِیْمُوا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और क़ाइम करो | क़िब्ला रू | अपने घर | और बनाओ | घर | मिसर में | अपनी क़ौम के लिए |

الصَّلٰوةَ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿٨٧﴾ وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَاۤ اِنَّكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक तू | ऐ हमारे रब | मूसा (अ) | और कहा | 87 | मोमिनीन | और खुशख़बरी दो | नमाज़ |

اٰتَیْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَاَهٗ زِیْنَةً وَّاَمْوَالًا فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ۙ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दुनिया की ज़िन्दगी | में | और माल (जमा) | ज़ीनत | और उस के सरदार | फ़िरऔन | तू ने दिए |

رَبَّنَا لِیُضِلُّوْا عَنْ سَبِیْلِكَ ۚ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰۤى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और मुह्र लगा दे | उन के माल | पर | तू मिटा दे | ऐ हमारे रब | तेरा रास्ता | से | कि वह गुमराह करें | ऐ हमारे रब |

عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا یُؤْمِنُوْا حَتّٰى یَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِیْمَ ﴿٨٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 88 | दर्दनाक | अज़ाब | वह देख लें | यहां तक कि | कि वह ईमान न लाएं | उन के दिलों पर |

और फ़िरऔन ने कहा मेरे पास हर इल्म वाला जादूगर ले आओ। (79) फिर जब जादूगर आगए तो मूसा (अ) ने उन से कहा तुम डालो, जो डालने वाले हो (तुम्हें डालना है)। (80) फिर उन्हों ने डाला तो मूसा (अ) ने कहा तुम जो लाए हो जादू है, बेशक अल्लाह अभी उसे बातिल करदेगा, बेशक अल्लाह फ़साद करने वालों के काम दुरुस्त नहीं करता। (81) और अल्लाह हक़ को अपने हुक्म से हक़ (साबित) कर देगा अगरचे गुनाहगार नापसन्द करें (82) सो मूसा (अ) पर कोई ईमान न लाया मगर उस की क़ौम के चन्द लड़के ख़ौफ़ की वजह से फ़िरऔन और उन के सरदारों के, कि वह उन्हें आफ़त में न डाल दे, और बेशक फ़िरऔन ज़मीन (मुल्क) में सरकश था, और बेशक वह हद से बढ़ने वालों में से था। (83) और मूसा (अ) ने कहा ऐ मेरी क़ौम! अगर तुम अल्लाह पर ईमान लाए हो तो उसी पर भरोसा करो अगर तुम फ़रमांबरदार हो। (84) तो उन्हों ने कहा हम ने अल्लाह पर भरोसा किया, ऐ हमारे रब! हमें न बना ज़ालिमों की क़ौम का तख़्ता-ए-मशक़ (85) और हमें अपनी रहमत से काफ़िरों की क़ौम से छुड़ादे, (86) और हम ने मूसा (अ) और उस के भाई की तरफ़ वहि भेजी कि अपनी क़ौम के लिए मिसर में घर बनाओ और बनाओ अपने घर क़िब्ला रू (नमाज की जगह), और नमाज क़ाइम करो, और मोमिनों को खुशख़बरी दो। (87) और मूसा (अ) ने कहा ऐ हमारे रब! बेशक तू ने फ़िरऔन और उस के लशकर को दुनिया की ज़िन्दगी में ज़ीनत और बहुत से माल दिए हैं, ऐ हमारे रब! कि वह तेरे रास्ते से गुमराह करें, ऐ हमारे रब! उन के माल मिटा दे, और उन के दिलों पर मुह्र लगा दे कि वह ईमान न लाएं यहां तक कि दर्दनाक अज़ाब देख लें। (88)

उस ने फ़रमाया तुम्हारी दुआ क़ुबूल हो चुकी है सो तुम दोनों साबित क़दम रहो, और उन लोगों की राह न चलना जो नावाक़िफ़ हैं। (89)
और हम ने बनी इस्राइल को पार कर दिया दर्या से, पस फ़िरऔन और उस के लशकर ने सरकशी और ज़ियादती से उन का पीछा किया, यहां तक कि जब उसको ग़रक़ाबी ने आ पकड़ा वह कहने लगा कि मैं ईमान लाया कि उस के सिवा कोई माबूद नहीं जिस पर बनी इस्राइल ईमान लाए और मैं हूँ फ़रमांबरदारों में से। (90)
क्या अब? (ईमान की बात करता है) और अलबत्ता पहले तो नाफ़रमानी करता रहा और तू फ़साद करने वालों में से रहा। (91)
सो आज हम तुझे तेरे बदन से बचाएंगे (ग़रक़ नहीं करेंगे) ताकि तू (तेरी लाश) उन के लिए जो तेरे बाद आएं (इब्रत की) एक निशानी रहे, और बेशक लोगों में से अक्सर हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल हैं। (92)
और हम ने बनी इस्राइल को अच्छा ठिकाना दिया, और हम ने उन्हें रिज़्क़ दिया पाकीज़ा चीज़ों से, सो उन्हों ने इख़्तिलाफ़ न किया यहां तक कि उन के पास इल्म आगया, बेशक तुम्हारा रब उन के दरमियान फ़ैसला करेगा रोज़े क़ियामत जिस (बात) में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। (93)
पस अगर तू उस (के बारे) में शक में हो तो हम ने उतारा तेरी तरफ़, तो उन लोगों से पूछ जो तुझ से पहले किताब पढ़ते हैं, तहक़ीक़ तेरे पास हक़ आगया है तुम्हारे रब की तरफ़ से, पस शक करने वालों से न होना। (94)
और न उन लोगों से होना जिन्हों ने झुटलाया अल्लाह की आयतों को, फिर तुम ख़सारा पाने वालों से हो जाओ। (95)
बेशक जिन लोगों पर तुम्हारे रब की बात साबित हो गई वह ईमान न लाएंगे। (96)
अगरचे उन के पास हर निशानी आजाए, यहां तक कि वह दर्दनाक अज़ाब देख लें। (97)

قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَلَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| राह | और न चलना | सो तुम दोनों साबित क़दम रहो | तुम्हारी दुआ | क़ुबूल हो चुकी | उस ने फ़रमाया |

الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٩﴾ وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पस पीछा किया उन का | दर्या | बनी इस्राईल का | और हम ने पार कर दिया | 89 | नावाक़िफ़ हैं | उन लोगों की जो |

فِرْعَوْنُ وَجُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّعَدْوًا ۭ حَتّٰٓى اِذَآ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ قَالَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह कहने लगा | ग़रक़ाबी | जब उसे आ पकड़ा | यहां तक कि | और ज़ियादती | सरकशी | और उस का लशकर | फ़िरऔन |

اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِيْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बनी इस्राईल | उस पर | वह जिस पर ईमान लाए | सिवाए | माबूद | नहीं | कि वह | मैं ईमान लाया |

وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩٠﴾ آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | और तू रहा | पहले | और अलबत्ता तू नाफ़रमानी करता रहा | क्या अब | 90 | फ़रमांबरदार (जमा) | से | और मैं |

الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٩١﴾ فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तेरे बाद आएं | उन के लिए जो | ताकि तू रहे | तेरे बदन से | हम तुझे बचा लेंगे | सो आज | 91 | फ़साद करने वाले |

اٰيَةً ۭ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَلَقَدْ بَوَّاْنَا ع ١٠ ١٤

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अलबत्ता हम ने ठिकाना दिया | 92 | ग़ाफ़िल हैं | हमारी निशानियां | से | लोगों में से | अक्सर | और बेशक | एक निशानी |

بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مُبَوَّاَ صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पाकीज़ा चीज़ें | से | और हम ने रिज़्क़ दिया उन्हें | अच्छा | ठिकाना | बनी इस्राईल |

فَمَا اخْتَلَفُوْا حَتّٰى جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۭ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के दरमियान | फ़ैसला करेगा | तुम्हारा रब | बेशक | इल्म | आगया उन के पास | यहां तक कि | उन्हों ने इख़्तिलाफ़ न किया |

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَاِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में शक में | तू है | पस अगर | 93 | वह इख़्तिलाफ़ करते | उस में | वह थे | उस में जो | रोज़े क़ियामत |

مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ فَسْـَٔـلِ الَّذِيْنَ يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम से पहले | किताब | पढ़ते हैं | वह लोग जो | तो पूछ लें | तेरी तरफ़ | हम ने उतारा | उस से जो |

لَقَدْ جَآءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿٩٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 94 | शक करने वाले | से | पस न होना | तेरा रब | से | हक़ | तहक़ीक़ आगया तेरे पास |

وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوْنَ مِنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | फिर तू हो जाए | अल्लाह | आयतों को | उन्हों ने झुटलाया | वह लोग जो | से | और न होना |

الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तेरा रब | बात | उन पर | साबित हो गई | बेशक वह लोग जो | 95 | ख़सारा पाने वाले |

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَلَوْ جَآءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٩٧﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 97 | दर्दनाक | अज़ाब | वह देख लें | यहां तक कि | हर निशानी | आजाए उन के पास | ख़्वाह | 96 | वह ईमान न लाएंगे |

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ اِيْمَانُهَآ اِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ ۗ لَمَّآ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब | क़ौमे यूनुस (अ) | मगर | उस का ईमान | तो नफ़ा देता उस को | कि वह ईमान लाती | कोई बस्ती | हुई | पस क्यों न |

اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और नफ़ा पहुँचाया उन्हें | दुनिया की ज़िन्दगी | में | रुसवाई | अ़ज़ाब | उन से | हम ने उठा लिया | वह ईमान लाए |

اِلٰى حِيْنٍ ﴿٩٨﴾ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ۗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह सब के सब | ज़मीन में | जो | अलबत्ता ईमान ले आते | तेरा रब | चाहता | और अगर | 98 | एक मुद्दत तक |

اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किसी शख़्स के लिए | और नहीं है | 99 | मोमिन (जमा) | वह हो जाएं | यहां तक कि | लोग | मजबूर करेगा | पस क्या तू |

اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो | पर | गन्दगी | और वह डालता है | हुक्मे इलाही | मगर (बग़ैर) | ईमान लाए | कि |

لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٠﴾ قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَمَا تُغْنِي

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं फ़ाइदा देती | और ज़मीन | आस्मानों | में | क्या है | देखो | आप कह दें | 100 | अक़्ल नहीं रखते |

الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠١﴾ فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर | वह इन्तिज़ार करते हैं | तो क्या | 101 | वह नहीं मानते | लोग | से | और डराने वाले | निशानियां |

مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ قُلْ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे साथ | बेशक मैं | पस तुम इन्तिज़ार करो | आप (स) कह दें | उन से पहले | जो गुज़र चुके | वह लोग | दिन (वाक़िआत) | जैसे |

مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾ ثُمَّ نُنَجِّيْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उसी तरह | वह ईमान लाए | और वह लोग जो | अपने रसूल (जमा) | हम बचालेते हैं | फिर | 102 | इन्तिज़ार करने वाले | से |

ع ١٠ 15 حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर तुम हो | ऐ लोगो! | आप (स) कह दें | 103 | मोमिनीन | हम बचालेंगे | हक़ हम पर |

فِيْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ فَلَآ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | सिवाए | तुम पूजते हो | वह जो कि | तो मैं इबादत नहीं करता | मेरे दीन | से | किसी शक में |

وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ ۖ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | मैं हूँ | कि | और मुझे हुक्म दिया गया | तुम्हें उठालेता है | वह जो | मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ | और लेकिन |

الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٤﴾ وَاَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हरगिज़ न होना | सब से मुँह मोड़ कर | दीन के लिए | अपना मुँह | सीधा रख | और यह कि | 104 | मोमिनीन |

مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٥﴾ وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| न तुझे नफ़ा दे | जो | अल्लाह | सिवाए | और न पुकार | 105 | मुशरिकीन | से |

وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 106 | ज़ालिम (जमा) | से | उस वक़्त | तो बेशक तू | तू ने किया | फिर अगर | नुक़्सान पहुँचाए | और न |

पस क्यों न हुई कोई बस्ती कि वह ईमान लाती तो उस को उस का ईमान नफ़ा देता, मगर यूनुस (अ) की क़ौम (कि वह ईमान ले आई), जब वह ईमान लाए तो हम ने उन से दुनिया की जिन्दगी में रुसवाई का अज़ाब उठा लिया, और उन्हें एक मुददत तक नफ़ा पहुँचाया। (98) और अगर चाहता तेरा रब अलबत्ता जो ज़मीन में हैं सब के सब ईमान ले आते, पस क्या तू लोगों को मजबूर करेगा? यहां तक कि वह मोमिन हो जाएं। (99) और किसी शख़्स के लिए (अपने इख़्तियार में) नहीं कि वह अल्लाह के हुक्म के बग़ैर ईमान ले आए, और वह डालता है (कुफ़्र की) गन्दगी उन लोगों पर जो अ़क्ल नहीं रखते। (100) आप (स) कह दें देखो क्या कुछ है? आस्मानों में और ज़मीन में। और निशानियां और डराने वाले (रसूल) उन लोगों को फ़ाइदा नहीं देते जो नहीं मानते। (101) तो क्या वह इन्तिजार कर रहे हैं मगर उन्हीं लोगों जैसे वाक़िआत का जो उन से पहले गुजर चुके, आप (स) कह दें पस तुम इन्तिज़ार करो बेशक मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों से हूँ। (102) फिर हम बचा लेते हैं अपने रसूलों को, और उसी तरह उन को जो ईमान लाए, हम पर हक़ (ज़िम्मा) है हम बचालेंगे मोमिनों को। (103) आप (स) कह दें, ऐ लोगो! अगर तुम मेरे दीन (के मुतअ़ल्लिक़) किसी शक में हो तो मैं इबादत नहीं करता उन की जिन को तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो, लेकिन मैं उस अल्लाह की इबादत करता हूँ जो तुम्हें (दुनिया से) उठा लेता है, और मुझे हुक्म दिया गया कि मोमिनों में से रहूँ। (104) और यह कि अपना मुँह सब से मोड़ कर दीन के लिए सीधा रख, और हरगिज मुश्रिकों में से न होना। (105) और अल्लाह के सिवा उसे न पुकार जो न तुझे नफ़ा दे सके, और न कोई नुक्सान पहुंचा सके, फिर अगर तू ने (ऐसा) किया तो उस वक़्त तू बेशाक ज़ालिमों में से होगा। (106)

और अगर अल्लाह तुझे पहुँचाए कोई नुक़सान तो उस के सिवा कोई उस को हटाने वाला नहीं, और अगर वह तेरा भला चाहे तो कोई उस के फ़ज्ल को रोकने वाला नहीं, वह पहुँचाता है उस को अपने बन्दों में से जिस को चाहता है, और वह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (107) आप (स) कह दें, ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ पहुँच चुका, तो जिस ने हिदायत पाई सिर्फ़ अपनी जान के लिए हिदायत पाई, और जो गुमराह हुआ तो सिर्फ़ अपने बुरे को गुमराह हुआ, और मैं तुम पर मुख़्तार नहीं हूँ। (108) और (उस की) पैरवी करो जो तुम्हारी तरफ़ वहि होती है, और सबर करो यहां तक कि अल्लाह फ़ैसला कर दे, और वह बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है। (109)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रह्म करने वाला है

अलिफ़-लाम-रा, यह किताब है, इस की आयात मज़बूत की गईं, फिर तफ़सील की गईं हिक्मत वाले, ख़बरदार के पास से (1) यह कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, बेशक मैं उस (की तरफ़) से तुम्हारे लिए डराने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला हूँ। (2) और यह कि मग़्फ़िरत तलब करो अपने रब से, फिर उस की तरफ़ रुजूअ करो वह तुम्हें फ़ाइदा पहुँचाएगा अच्छा सामान, एक मुक़र्ररा वक़्त तक, और देगा हर फ़ज्ल वाले को अपना फ़ज्ल, और अगर तुम फिर जाओ तो बेशक मैं तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ। (3) अल्लाह की तरफ़ तुम्हें लौटना है, और वह हर चीज़ पर क़ुदरत वाला है। (4) याद रखो! बेशक वह अपने सीने दोहरे करते हैं ताकि उस (अल्लाह) से छुपालें, याद रखो! जब वह अपने कपड़े पहनते हैं वह जानता है जो वह छुपाते हैं और जो वह ज़ाहिर करते हैं, बेशक वह दिलों के भेद जानने वाला है। (5)

وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يُّرِدْكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तेरा चाहे | और अगर | उस के सिवा | उस का | तो नही हटाने वाला | कोई नुक़्सान | अल्लाह | पहुँचाए तुझे | और अगर |

بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ۗ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۗ وَهُوَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह | अपने बन्दे | से | चाहता है | जिसे | उस को | वह पहुँचाता है | उस के फ़ज्ल को | तो नही कोई रोकने वाला | भला |

الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٧﴾ قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | हक़ | पहुँच चुका तुम्हार पास | ऐ लोगो! | आप (स) कह दें | 107 | निहायत मेहरबान | बख़्शने वाला |

رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो सिर्फ़ | गुमराह हुआ | और जो | अपनी जान के लिए | उस ने हिदायत पाई | तो सिर्फ़ | हिदायत पाई | तो जो | तुम्हारा रब |

يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٨﴾ وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वहि होती है | जो | और पैरवी करो | 108 | मुख़्तार | तुम पर | मैं | और नही | उस पर (बुरे को) | वह गुमराह हुआ |

اِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾　ع ١١ ١٦

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 109 | फ़ैसला करने वाला | बेहतरीन | और वह | अल्लाह | फ़ैसला कर दे | यहां तक कि | और सबर करो | तुम्हारी तरफ़ |

آيَاتُهَا ١٢٣ ❀ (١١) سُوْرَةُ هُوْدٍ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٠

रुकूआत 10　　(11) सूरह हूद / हूद (अ)　　आयात 123

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ﴿١﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | ख़बरदार | हिक्मत वाले | पास | से | तफ़्सील की गई | फिर | इस की आयात | मज़बूत की गई | यह किताब | अलिफ़ लाम रा |

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۗ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ﴿٢﴾ وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मग़्फ़िरत तलब करो | और यह कि | 2 | और ख़ुशख़बरी देने वाला | डरान वाला | उस से | तुम्हार लिए | बेशक मैं | अल्लाह के सिवा | इबादत करो | यह कि न |

رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुक़र्रर | वक़्त | तक | अच्छी | मताअ़ | वह फ़ाइदा पहुँचाएगा तुम्हें | उस की तरफ़ रुजूअ करो | फिर | अपना रब |

وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ۗ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ़ज़ाब | तुम पर | डरता हूँ | तो बेशक मैं | फिर जाओ | और अगर तुम | अपना फ़ज्ल | फ़ज्ल वाला | हर | और देगा |

يَوْمٍ كَبِيْرٍ ﴿٣﴾ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤﴾ اَلَآ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| याद रखो | 4 | कुदरत वाला | हर शै | पर | और वह | लौटना है तुम्हें | अल्लाह की तरफ़ | 3 | बड़ा | एक दिन |

اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ۗ اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने कपड़े | पहनते है | जब | याद रखो | उस से | ताकि छुपालें | अपने सीने | दोहरे करते हैं | बेशक वह |

يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٥﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | दिलों के भेद | जानने वाला | बेशक वह | और जो वह ज़ाहिर करते हैं | जो वह छुपाते हैं | वह जानता है |

الربع
وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस का रिज़्क़ | अल्लाह | पर | मगर | ज़मीन | में (पर) | चलने वाला | से (कोई) | और नहीं |

وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ؕ كُلٌّ فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | रौशन किताब | में | सब कुछ | और उस के सौंपे जाने की जगह | उस का ठिकाना | और वह जानता है |

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ وَّكَانَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और था | छः (6) दिन | में | और ज़मीन | आस्मान (जमा) | पैदा किया | जो - जिस | और वही |

عَرْشُهٗ عَلَى الْمَآءِ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَلَئِنْ قُلْتَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप कहें | और अगर | अ़मल में | बेहतर | तुम में कौन | ताकि तुम्हें आजमाए | पानी पर | उस का अर्श |

اِنَّكُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ مِنْۢ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं यह | उन्हों ने कुफ़्र किया | वह लोग जो | तो जरूर कहेंगे वह | मौत मरना | बाद | उठाए जाओगे | कि तुम |

اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧﴾ وَلَئِنْ اَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِلٰٓى اُمَّةٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक मुद्दत | तक | अ़ज़ाब | उन से | हम रोक रखें | और अगर | 7 | खुला | जादू | मगर (सिर्फ़) |

مَّعْدُوْدَةٍ لَّيَقُوْلُنَّ مَا يَحْبِسُهٗ ؕ اَلَا يَوْمَ يَاْتِيْهِمْ لَيْسَ مَصْرُوْفًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| टाला जाएगा | न | उन पर आएगा | जिस दिन | याद रखो | क्या रोक रही है उसे | तो वह ज़रूर कहेंगे | गिनी हुई मुऐयन |

ع ١
عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٨﴾ وَلَئِنْ اَذَقْنَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम चखादें | और अगर | 8 | मज़ाक़ उड़ाते | उस का | थे | जिस | उन्हें | और घेरलेगा | उन से |

الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ ۚ اِنَّهٗ لَيَئُوْسٌ كَفُوْرٌ ﴿٩﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | नाशुक्रा | अलबत्ता मायूस | बेशक वह | उस से | हम छीन लें वह | फिर | कोई रहमत | अपनी तरफ़ से | इन्सान को |

وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जाती रहीं | तो वह ज़रूर कहेगा | उसे पहुँची | सख़्ती के बाद | नेमत (आराम) | उसे चखादें | और अगर |

السَّيِّاٰتُ عَنِّيْ ؕ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ﴿١٠﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिन लोगों ने सब्र किया | मगर | 10 | शेख़ीख़ोर | इतराने वाला | बेशक वह | मुझ से | बुराइयां |

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿١١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | बड़ा | और सवाब | बख़्शिश | उन के लिए | यही लोग | नेक | और अ़मल किए |

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعْضَ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ وَضَآئِقٌۢ بِهٖ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से | और तंग होगा | तेरी तरफ़ | वहि किया गया | जो | कुछ हिस्सा | छोड़ दोगे | तो शायद (क्या) तुम |

صَدْرُكَ اَنْ يَّقُوْلُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ جَآءَ مَعَهٗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के साथ | आया | या | ख़ज़ाना | उस पर | उतरा | क्यों न | कि वह कहते हैं | तेरा सीना (दिल) |

مَلَكٌ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ نَذِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿١٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12 | इख़्तियार रखने वाला | हर शै | पर | और अल्लाह | डराने वाले | कि तुम | इसके सिवा नहीं | फ़रिश्ता |

और कोई ज़मीन पर चलने (फिरने) वाला नहीं, मगर उस का रिज़्क़ अल्लाह पर (अल्लाह के ज़िम्मे) है, और वह जानता है उस का ठिकाना और उस के सौंपे जाने की जगह, सब कुछ रौशन किताब (लौहे महफ़ूज़) में है। (6) और वही है जिस ने पैदा किए आस्मान और ज़मीन छः दिन में, और उस का अर्श पानी पर था, ताकि तुम्हें वह आजमाए कि तुम में कौन बेहतर है अ़मल में? और अगर आप (स) कहें कि तुम मरने के बाद उठाए जाओगे तो वह लोग जरूर कहेंगे जिन्हों ने कुफ़्र किया कि यह सिर्फ़ खुला जादू है। (7) और अगर हम उन से अज़ाब रोक रखें एक मुद्दते मुऐयन तक वह ज़रूर कहेंगे क्या चीज़ उसे रोक रही है? याद रखो! जिस दिन उन पर (अ़ज़ाब) आएगा उन से न टाला जाएगा, और उन्हें घेर लेगा जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (8) और अगर हम इन्सान को अपनी तरफ से किसी रहमत का मज़ा चखादें फिर वह उस से छीन लें, तो बेशक वह मायूस, नाशुक्रा हो जाता है। (9) और अगर हम उसे सख़्ती के बाद आराम चखा दें जो उसे पहुँची हो तो वह ज़रूर कहेगा मुझ से बुराइयां जाती रहीं, बेशक वह इतराने वाला शेख़ी ख़ोर है। (10) मगर जिन लोगों ने सब्र किया और नेक अ़मल किए यही लोग हैं जिन के लिए बख़्शिश और बड़ा सवाब है। (11) तो क्या तुम छोड़ दोगे (उस का) कुछ हिस्सा जो तुम्हारी तरफ वहि किया गया है, और उस से तुम्हारा दिल तंग होगा कि वह कहते हैं कि उस पर क्यों न उतरा कोई ख़ज़ाना या उस के (साथ) फ़रिश्ता (क्यों न) आया? इस के सिवा नहीं कि तुम डराने वाले हो और अल्लाह हर शै पर इख़्तियार रखने वाला है। (12)

क्या वह कहते हैं? कि उस ने इस (कुरआन) को खुद घड़ लिया है, आप (स) कह दें तो तुम भी इस जैसी दस (10) सूरतें घड़ी हुई ले आओ और जिस को तुम (मदद के लिए) बुला सको बुला लो अल्लाह के सिवा, अगर तुम सच्चे हो। (13)
फिर अगर वह तुम्हारे (उस चैलेंज का) जवाब न दे सकें तो जान लो कि यह तो अल्लाह के इल्म से नाज़िल किया गया है, और यह कि उस के सिवा कोई माबूद नहीं, पस क्या तुम इस्लाम लाते हो? (14)
जो कोई चाहता है दुनिया की ज़िन्दगी और उस की जीनत, हम उन के लिए उन के अमल इस (दुनिया) में पूरे कर देंगे और उस में उन की कमी न की जाएगी। (15)
यही लोग हैं जिन के लिए आखिरत में आग के सिवा कुछ नहीं, और अकारत गया जो इस (दुनिया) में उन्हों ने किया और जो वह करते थे नाबूद हुए। (16)
पस क्या (यह उस के बराबर है) जो अपने रब के खुले रास्ते पर हो और उस के साथ उस (अल्लाह की तरफ़) से गवाह हो, और उस से पहले मूसा (अ) की किताब इमाम (रहनुमा) और रहमत (थी) यही लोग इस (कुरआन) पर ईमान लाते हैं और गिरोहों में से जो इस का मुन्किर हो तो दोजख उस का ठिकाना है, पस तू शक में न हो इस से, बेशक वह तेरे रब (की तरफ़) से हक़ है, लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (17)
और कौन है उस से बढ़ कर जालिम? जो अल्लाह पर झूट बान्धे, यह लोग अपने रब के सामने पेश किए जाएंगे और गवाह कहेंगे कि यही हैं जिन्हों ने अपने रब पर झूट बोला, याद रखो! जालिमों पर अल्लाह की फटकार है। (18)
जो लोग अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, और उस में कजी ढून्डते हैं, और वह आखिरत के मुन्किर हैं। (19)

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَيٰتٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| घड़ी हुई | इस जैसी | दस सूरतें | तो तुम ले आओ | आप (स) कहदें | उस को खुद घड़ लिया है | क्या वह कहते है |

وَّادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 13 | सच्चे | हो | अगर तुम | अल्लाह | सिवाए | जिस को तुम बुला सको | और तुम बुला लो |

فَاِلَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَاَنْ لَّآ اِلٰهَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई माबूद नही | और यह कि | अल्लाह के इल्म से | नाज़िल किया गया है | कि यह तो | तो जान लो | तुम्हारा | फिर अगर वह जवाब न दे सकें |

اِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٤﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दुनिया कि जिन्दगी | चाहता है | जो | 14 | तुम इस्लाम लाते हो | पस क्या | उस के सिवा |

وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ﴿١٥﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15 | कमी किए जाएंगे (नुक्सान न होगा) | न | इस में | और वह | इस में | उन के अमल | उन के लिए | हम पूरा कर देंगे | और उस की जीनत |

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | और अकारत गया | आग के सिवा | आख़िरत में | उन के लिए | वह जो कि | यही लोग |

صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | हो | पस क्या जो | 16 | वह करते थे | जो | और नाबूद हुए | उस में | उन्हों ने किया |

بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَيَتْلُوْهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मूसा (अ) की किताब | उस से पहले | और | उस से | गवाह | और उस के साथ हो | अपने रब के | खुला रास्ता |

اِمَامًا وَّرَحْمَةً ؕ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | मुन्किर हो इस का | और जो | उस पर | ईमान लाते हैं | यही लोग | और रहमत | इमाम |

الْاَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ ۚ فَلَا تَكُ فِىْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۚ اِنَّهُ الْحَقُّ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बेशक वह हक़ | उस से | शक में | पस तू न हो | तो आग (दोज़ख़) उस का ठिकाना | गिरोहों में |

مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٧﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सब से बड़ा जालिम | और कौन | 17 | ईमान नही लाते | अक्सर लोग | और लेकिन | तेरे रब से |

مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ؕ اُولٰٓئِكَ يُعْرَضُوْنَ عَلٰى رَبِّهِمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने रब के सामने | पेश किए जाएंगे | यह लोग | झूट | अल्लाह पर | बान्धे | उस से जो |

وَيَقُوْلُ الْاَشْهَادُ هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ اَلَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| याद रखो | अपने रब पर | झूट बोला | वह जिन्हों ने | यही हैं | गवाह (जमा) | और वह कहेंगे |

لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٨﴾ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह का रास्ता | से | रोकते है | वह लोग जो | 18 | ज़ालिम (जमा) | पर | अल्लाह की फटकार |

وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 19 | मुन्किर (जमा) | वह | आख़िरत से | और वह | कजी | और उस मे ढून्डते हैं |

أُولٰٓـئِكَ لَمْ يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | और नही है | ज़मीन में | आजिज़ करने वाले, थकाने वाले | नही है | यह लोग |

وقف لازم مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ۘ يُضٰعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ؕ مَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| न | अज़ाब | उन के लिए | दुगना | हिमायती | कोई | अल्लाह | सिवा | से |

كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ ﴿٢٠﴾ أُولٰٓـئِكَ الَّذِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जिन्हों ने | यही लोग | 20 | वह देखते थे | और न | सुनना | वह ताक़त रखते थे |

خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢١﴾ لَا جَرَمَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शक नही | 21 | वह इफ़तिरा करते थे (झूट बान्धते थे) | जो | उन से | और गुम हो गया | अपनी जानों का (अपना) | नुक़्सान किया |

اَنَّهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ﴿٢٢﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने अमल किए | जो लोग ईमान लाए | बेशक | 22 | सब से ज़ियादा नुक़्सान उठाने वाले | वह | आख़िरत में | कि वह |

الصّٰلِحٰتِ وَاَخْبَتُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ ۙ أُولٰٓـئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | वह | जन्नत वाले | यही लोग | अपने रब के आगे | और आजिज़ी की | नेक |

فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٣﴾ مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ كَالْاَعْمٰى وَالْاَصَمِّ وَالْبَصِيْرِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और देखता | और बहरा | जैसे अन्धा | दोनों फ़रीक़ | मिसाल | 23 | हमेशा रहेंगे |

ع ١٦ ٢/٢ وَالسَّمِيْعِ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और हम ने भेजा | 24 | क्या तुम ग़ौर नही करते | मिसाल (हालत) में | क्या दोनों बराबर है | और सुनता |

نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ ۡ اِنِّىْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٥﴾ اَنْ لَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सिवाए | न परस्तिश करो तुम | कि | 25 | खुला | डराने वाला | तुम्हारे लिए | बेशक मैं | उस की क़ौम | तरफ़ | नूह (अ) |

اللّٰهَ ؕ اِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٦﴾ فَقَالَ الْمَلَاُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सरदार | तो बोले | 26 | दुख देने वाला दिन | अज़ाब | तुम पर | बेशक मैं डरता हूँ | अल्लाह |

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا نَرٰىكَ اِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرٰىكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम नही देखते तुझे | हमारे अपने जैसा | एक आदमी | मगर | हम तुझ नही देखते | उस की क़ौम के | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) |

اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِيْنَ هُمْ اَرَاذِلُنَا بَادِىَ الرَّاْىِ ۚ وَمَا نَرٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम देखते | और नही | सरसरी नज़र से | नीच लोग हम में | वह | वह लोग जो | सिवाए | तेरी पैरवी करें |

لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿٢٧﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम देखा तो | ऐ मेरी क़ौम | उस ने कहा | 27 | झूट | बल्कि हम ख़याल करते है तुम्हें | फ़ज़ीलत | कोई | हम पर | तुम्हारे लिए |

اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّىْ وَاٰتٰىنِىْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने पास से | रहमत | और उस ने दी मुझे | अपने रब से | वाज़ेह दलील | पर | मैं हूँ | अगर |

فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ ؕ اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَاَنْتُمْ لَهَا كٰرِهُوْنَ ﴿٢٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 28 | बेज़ार हो | उस से | और तुम | क्या हम वह तुम्हें जबरदस्ती मनवाएं | तुम्हें | वह दिखाई नही देती |

यह लोग ज़मीन में आजिज करने वाले नहीं, और उन के लिए नहीं है अल्लाह के सिवा कोई हिमायती, उन के लिए दुगना अ़ज़ाब है, वह न सुनने की ताक़त रखते थे और न वह देखते थे। (20)

यही लोग है जिन्हों ने अपनी जानों का नुक़्सान किया और उन से गुम हो गया जो वह झूट बान्धते थे। (21)

कोई शक नही कि वह आखिरत में सब से ज़ियादा नुक़्सान उठाने वाले है। (22)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए, और अपने रब के आगे आजिज़ी की, यही लोग जन्नत वाले है, वह उस में हमेशा रहेंगे। (23)

दोनों फ़रीक़ की मिसाल (ऐसी है) जैसे एक अन्धा और बहरा और (दूसरा) देखता और सुनता है, क्या वह दोनों बराबर है हालत में? क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (24)

और हम ने नूह (अ) को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा कि बेशक मैं तुम्हारे लिए (तुम्हें) डराने वाला हूँ खुला (खोल कर) (25)

कि अल्लाह के सिवा किसी की परस्तिश न करो, बेशक मैं तुम पर एक दुख देने वाले दिन के अज़ाब से डरता हूँ (26)

तो उस क़ौम के वह सरदार जिन्हों ने कुफ़्र किया, बोले हम तुझे नहीं देखते मगर हमारे अपने जैसा एक आदमी, और हम नहीं देखते कि किसी ने तेरी पैरवी की हो उन के सिवा जो हम में नीच लोग हैं (वह भी) सरसरी नजर से (बे सोचे समझे) और हम नहीं देखते तुम्हारे लिए अपने ऊपर कोई फ़जीलत, बल्कि हम तुम्हें झूटा खयाल करते है। (27)

उस ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! देखो तो, अगर मैं वाजेह दलील पर हूँ अपने रब (की तरफ़) से और उस ने मुझे अपने पास से रहमत दी है, वह तुम्हें दिखाई नहीं देती, तो क्या हम वह तुम्हें जबरदस्ती मनवाएं? और तुम उस से बेजार हो। (28)

وَيٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ۭ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَمَآ

और ऐ मेरी क़ौम | मैं नही मांगता तुम से | इस पर | कुछ माल | नही | मेरा अजर | मगर | अल्लाह पर | और नही

اَنَا بِطَارِدِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا

मैं हांकने वाला | वह जो ईमान लाए | बेशक वह | मिलने वाले | अपना रब | और लेकिन मैं | देखता हूँ तुम्हें | एक क़ौम

تَجْهَلُوْنَ ﴿٢٩﴾ وَيٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ۭ

जहालत करते हो | 29 | और ऐ मेरी क़ौम | कौन बचाएगा मुझे | से | अल्लाह | अगर | मैं हांक दूँ उन्हें

اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَاۗىِٕنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ

क्या तुम ग़ौर नही करते | 30 | और मैं नही कहता | तुम्हें | मेरे पास | अल्लाह के ख़ज़ाने | और मैं नही जानता

الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ اِنِّىْ مَلَكٌ وَّلَآ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِيْٓ اَعْيُنُكُمْ

ग़ैब | और मैं नही कहता | कि मैं | फ़रिश्ता | और मैं नही कहता | उन लोगों को जिन्हें | हक़ीर समझती हैं | तुम्हारी आँखें

لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ۭ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ښ اِنِّىْٓ

हरगिज़ न देगा उन्हें | अल्लाह | कोई भलाई | अल्लाह | ख़ूब जानता है | जो कुछ | उन के दिलों में | बेशक मैं

اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالُوْا يٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا

उस वक़्त | अलबत्ता ज़ालिमों से | 31 | वह बोले | ऐ नूह (अ) | तू ने झगड़ा किया हम से | सो बहुत | हम से झगड़ा किया

فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣٢﴾ قَالَ اِنَّمَا يَاْتِيْكُمْ

पस ले आ | वह जो तू हम से वादा करता है | अगर तू है | से | सच्चे (जमा) | 32 | उस ने कहा | सिर्फ़ लाएगा तुम पर

بِهِ اللّٰهُ اِنْ شَاۗءَ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِيْٓ اِنْ

उस को | अल्लाह | अगर चाहेगा वह | और तुम नहीं | आजिज कर देने वाले | 33 | और न नफ़ा देगी तुम्हें | मेरी नसीहत | अगर

اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يُّغْوِيَكُمْ ۭ هُوَ رَبُّكُمْ ۣ

मैं चाहूँ | कि मैं नसीहत करूँ | तुम्हें | अगर (जबकि) | है | अल्लाह चाहे | कि गुमराह करे तुम्हें | वह | तुम्हारा रब

وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٣٤﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۭ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ

और उसी की तरफ़ | तुम लौट कर जाओगे | 34 | क्या | वह कहते हैं | बना लाया है उस को | कह दें | अगर मैं ने उसे बना लिया है

فَعَلَيَّ اِجْرَامِيْ وَاَنَا بَرِيْۗءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَاُوْحِيَ اِلٰى نُوْحٍ ٣ ع ١١ ٢

तो मुझ पर | मेरा गुनाह | और मैं | बरी | उस से जो | तुम गुनाह करते हो | 35 | और वहि भेजी गई | नूह (अ) की तरफ़

اَنَّهٗ لَنْ يُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ فَلَا تَبْتَىِٕسْ

कि वह | हरगिज ईमान न लाएगा | से | तेरी क़ौम | सिवाए | जो | ईमान लाचुका | पस तू ग़मगीन न हो

بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا

उस पर जो | वह करते हैं | 36 | और तू बना | कश्ती | हमारे सामने | और हमारे हुक्म से

وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٣٧﴾

और न बात करना मुझ से | में | जिन लोगों ने ज़ुल्म किया (जालिम) | बेशक वह | डूबने वाले | 37

और ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम से उस पर कुछ माल नहीं मांगता, मेरा अजर तो सिर्फ़ अल्लाह पर है, और जो ईमान लाए हैं मैं उन्हें हांकने वाला (दूर करने वाला) नहीं, बेशक वह अपने रब से मिलने वाले हैं, लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम एक क़ौम हो कि जहालत करते हो। (29)
और ऐ मेरी क़ौम! अगर मैं उन्हें हांक दूँ तो मुझे अल्लाह से कौन बचा लेगा? क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (30)
और मैं नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के खज़ाने हैं और न मैं ग़ैब (की बातें) जानता हुँ, और मैं नहीं कहता कि मैं फ़रिश्ता हूँ, और जिन लोगों को तुम्हारी आँखें हक़ीर समझती हैं (तुम हक़ीर समझते हो) मैं नहीं कहता अल्लाह उन्हें हरगिज़ कोई भलाई न देगा, जो कुछ उन के दिलों में है अल्लाह खूब जानता है (अगर एसा कहूँ तो) उस वक़्त अलबत्ता मैं जालिमों से होंगा। (31)
वह बोले ऐ नूह (अ)! तू ने हम से झगड़ा किया, सो हम से बहुत झगड़ा किया, पस वह (अजाब) ले आ जिस का तू हम से वादा करता है, अगर तू सच्चों में से है। (32)
उस ने कहा तुम पर लाएगा सिर्फ़ अल्लाह उस (अज़ाब) को अगर वह चाहेगा, और तुम आजिज कर देने वाले नहीं हो। (33)
और मेरी नसीहत तुम्हें नफ़ा न देगी अगर मैं चाहूँ कि मैं तुम्हें नसीहत करूँ जब कि अल्लाह चाहे कि तुम्हें गुमराह करे, वही तुम्हारा रब है, और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (34)
क्या वह कहते हैं इस (कुरआन) को बना लाया है? आप (स) कह दें अगर मैं ने इस को बना लिया है तो मुझ पर है मेरा गुनाह, और मैं उस से बरी हूँ जो तुम गुनाह करते हो। (35)
और नूह (अ) की तरफ़ वहि की गई कि तेरी क़ौम से (अब) हरग़िज कोई ईमान न लाएगा, सिवाए उस के जो ईमान ला चुका, पस तू उस पर ग़मगीन न हो जो वह करते हैं। (36)
और तू हमारे सामने कश्ती बना और हमारे हुक्म से और ज़ालिमों (के हक़) में मुझ से बात न करना, बेशक वह डूबने वाले हैं। (37)

وَيَصۡنَعُ الۡفُلۡكَ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيۡهِ مَلَاٌ مِّنۡ قَوۡمِهٖ سَخِرُوۡا مِنۡهُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से (पर) | वह हँसते | उस की क़ौम | से (के) | सरदार | उस पर | गुज़रते | और जब भी | कश्ती | और वह बनाता था |

قَالَ اِنۡ تَسۡخَرُوۡا مِنَّا فَاِنَّا نَسۡخَرُ مِنۡكُمۡ كَمَا تَسۡخَرُوۡنَ ﴿٣٨﴾ فَسَوۡفَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सो अनक़रीब | 38 | तुम हँसते हो | जैसे | तुम से (पर) | हँसेंगे | तो बेशक हम | हम से (पर) | तुम हँसते हो | अगर | उस ने कहा |

تَعۡلَمُوۡنَ مَنۡ يَّاۡتِيۡهِ عَذَابٌ يُّخۡزِيۡهِ وَيَحِلُّ عَلَيۡهِ عَذَابٌ مُّقِيۡمٌ ﴿٣٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 39 | दाइमी | अज़ाब | उस पर | और उतरता है | उस को रुस्वा करे | ऐसा अज़ाब | किस पर आता है | तुम जान लोगे |

حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَمۡرُنَا وَفَارَ التَّنُّوۡرُ قُلۡنَا احۡمِلۡ فِيۡهَا مِنۡ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | उस में | चढ़ा ले | हम ने कहा | तन्नूर | और जोश मारा | हमारा हुक्म | जब आया | यहां तक कि |

كُلٍّ زَوۡجَيۡنِ اثۡنَيۡنِ وَاَهۡلَكَ اِلَّا مَنۡ سَبَقَ عَلَيۡهِ الۡقَوۡلُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हुक्म | उस पर | हो चुका | जो | मगर | और अपने घर वाले | दो (नर मादा) | हर एक जोड़ा |

وَمَنۡ اٰمَنَ وَمَاۤ اٰمَنَ مَعَهٗۤ اِلَّا قَلِيۡلٌ ﴿٤٠﴾ وَقَالَ ارۡكَبُوۡا فِيۡهَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस में | सवार हो जाओ | और उस ने कहा | 40 | मगर थोड़े | उस पर | ईमान लाए | और न | ईमान लाया | और जो |

بِسۡمِ اللّٰهِ مَجۡرٖٮهَا وَمُرۡسٰٮهَا اِنَّ رَبِّىۡ لَغَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿٤١﴾ وَهِىَ تَجۡرِىۡ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चली | और वह | 41 | निहायत मेहरबान | अलबत्ता बख़्शने वाला | मेरा रब | बेशक | और उसका ठहरना | उस का चलना | अल्लाह के नाम से |

بِهِمۡ فِىۡ مَوۡجٍ كَالۡجِبَالِ وَنَادٰى نُوۡحُ اۨبۡنَهٗ وَكَانَ فِىۡ مَعۡزِلٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किनारे में | और था | अपना बेटा | नूह (अ) | और पुकारा | पहाड़ जैसी | लहरों में | उन को ले कर |

يّٰبُنَىَّ ارۡكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنۡ مَّعَ الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿٤٢﴾ قَالَ سَاٰوِىۡۤ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मैं जल्द पनाह ले लेता हूँ | उस ने कहा | 42 | काफ़िरों के साथ | और न रहो | हमारे साथ | सवार हो जा | ऐ मेरे बेटे |

اِلٰى جَبَلٍ يَّعۡصِمُنِىۡ مِنَ الۡمَآءِ قَالَ لَا عَاصِمَ الۡيَوۡمَ مِنۡ اَمۡرِ اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह का हुक्म | से | आज | कोई बचाने वाला नहीं | उस ने कहा | पानी से | वह बचा लेगा मुझे | किसी पहाड़ की तरफ़ |

اِلَّا مَنۡ رَّحِمَ وَحَالَ بَيۡنَهُمَا الۡمَوۡجُ فَكَانَ مِنَ الۡمُغۡرَقِيۡنَ ﴿٤٣﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 43 | डूबने वाले | से | तो वह हो गया | मौज | उन के दरमियान | और आगई | जिस पर वह रह्म करे | सिवाए |

وَقِيۡلَ يٰۤاَرۡضُ ابۡلَعِىۡ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقۡلِعِىۡ وَغِيۡضَ الۡمَآءُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पानी | और ख़ुश्क कर दिया गया | थम जा | और ऐ आस्मान | अपना पानी | निगल ले | ऐ ज़मीन | और कहा गया |

وَقُضِىَ الۡاَمۡرُ وَاسۡتَوَتۡ عَلَى الۡجُوۡدِىِّ وَقِيۡلَ بُعۡدًا لِّلۡقَوۡمِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| लोगों के लिए | दूरी | और कहा गया | जूदी पहाड़ पर | और जा लगी | काम | और पूरा हो चुका (तमाम हो गया) |

الظّٰلِمِيۡنَ ﴿٤٤﴾ وَنَادٰى نُوۡحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابۡنِىۡ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरा बेटा | बेशक | ऐ मेरे रब | पस उस ने कहा | अपना रब | नूह (अ) | और पुकारा | 44 | ज़ालिम (जमा) |

مِنۡ اَهۡلِىۡ وَاِنَّ وَعۡدَكَ الۡحَقُّ وَاَنۡتَ اَحۡكَمُ الۡحٰكِمِيۡنَ ﴿٤٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 45 | हाकिम (जमा) | सब से बड़ा हाकिम | और तू | सच्चा | तेरा वादा | और बेशक | मेरे घर वालों में से |

और वह (नूह अ) कश्ती बनाता था और जब भी उस की क़ौम के सरदार उस (के पास) से गुज़रते तो वह उस पर हँस्ते, उस (नूह अ) ने कहा अगर तुम हम पर हँस्ते हो तो बेशक हम (भी) तुम पर हँसेंगे जैसे तुम हँस्ते हो। (38)
सो अनक़रीब तुम जान लोगे किस पर ऐसा अज़ाब आता है जो उस को रुस्वा करे और उतरता है उस पर दाइमी अज़ाब। (39)
यहां तक कि जब हमारा हुक्म आया, और तन्नूर ने जोश मारा (उबल पड़ा) हम ने कहा उस (कश्ती) में चढ़ा ले हर एक का जोड़ा, नर और मादा, और अपने घर वाले उस के सिवाए जिस पर (ग़र्क़ाबी का) हुक्म हो चुका है और जो ईमान लाया (उसे भी सवार कर ले) और उस पर ईमान न लाए थे मगर थोड़े। (40)
और उस ने कहा इस में सवार हो जाओ, अल्लाह के नाम से है इस का चलना और इस का ठहरना, बेशक अलबत्ता मेरा रब बख़्शने वाला, निहायत मेह्रबान है। (41)
और वह (कश्ती) उन को ले कर पहाड़ जैसी लहरों में चली और नूह (अ) ने अपने बेटे को पुकारा, और वह (उस से) किनारे था, ऐ मेरे बेटे! हमारे साथ सवार हो जा, और काफ़िरों के साथ न रहो। (42)
उस ने कहा मैं किसी पहाड़ की तरफ़ जल्दी पनाह ले लेता हूं, वह मुझे पानी से बचा लेगा, उस ने कहा आज कोई बचाने वाला नहीं अल्लाह के हुक्म से, सिवाए उस के जिस पर वह रह्म करे, और उन के दरमियान मौज आगई (हाइल हो गई) तो वह भी डूबने वालों में (शामिल) हो गया। (43)
और कहा गया ऐ ज़मीन! अपना पानी निगल ले, और ऐ आस्मान थम जा, और पानी को ख़ुश्क कर दिया गया, और तमाम हो गया काम, और (कश्ती) जा लगी जूदी पहाड़ पर, और कहा दूरी (लानत) हो ज़ालिम लोगों के लिए। (44)
और पुकारा नूह (अ) ने अपने रब को, पस उस ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक मेरा बेटा मेरे घर वालों में से है, और बेशक तेरा वादा सच्चा है, और तू हाकिमों में सब से बड़ा हाकिम है। (45)

उस ने फ़रमाया, ऐ नूह (अ)! बेशक वह तेरे घर वालों में से नहीं, बेशक उस के अमल नाशाइस्ता हैं, सो मुझ से ऐसी बात का सवाल न कर जिस का तुझे इल्म नहीं, बेशक मैं तुझे नसीहत करता हूँ कि तू नादानों में से (न) हो जाए, **(46)**

उस ने कहा ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ कि मैं तुझ से ऐसी बात का सवाल करूँ जिस का मुझे इल्म न हो, और अगर तू मुझे न बख़्शे और मुझ पर रहम न करे तो मैं नुक़सान पाने वालों में से हो जाऊं। **(47)**

कहा गया, ऐ नूह (अ)! हमारी तरफ़ से सलामती के साथ उतर जाओ और बरकतें हों तुझ पर, और उन गिरोहों पर जो तेरे साथ हैं और कुछ गिरोह हैं कि हम उन्हें जल्द (दुनिया में) फ़ाइदा देंगे, फिर उन्हें हम से पहुँचेगा अ़ज़ाब दर्दनाक। **(48)**

यह ग़ैब की ख़बरें जो हम तुम्हारी तरफ़ वहि करते हैं, न तुम उन को जानते थे इस से पहले और न तुम्हारी क़ौम (जानती थी), पस सब्र करो, बेशक परहेज़गारों का अन्जाम अच्छा है। **(49)**

क़ौमे आ़द की तरफ़ उन के भाई हूद (अ) (आए), उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तुम सिर्फ़ झूट बान्धते हो (इफ़्तिरा करते हो) **(50)**

ऐ मेरी क़ौम! उस पर मैं तुम से कोई सिला नहीं मांगता, मेरा सिला सिर्फ़ उसी पर है जिस ने मुझे पैदा किया, फिर क्या तुम समझते नहीं? **(51)**

और ऐ मेरी क़ौम! अपने रब से बख़्शिश मांगो, फिर उसी की तरफ़ रुजूअ़ करो (तौबा करो), वह तुम पर आस्मान से ज़ोर की बारिश भेजेगा, और तुम्हें क़ुव्वत पर क़ुव्वत बढ़ाएगा और मुजरिम हो कर रूगर्दानी न करो। **(52)**

वह बोले ऐ हूद (अ)! तू हमारे पास कोई सनद ले कर नहीं आया, और हम छोड़ने वाले नहीं अपने माबूदों को तेरे कहने से, और हम तुझ पर ईमान लाने वाले नहीं। **(53)**

قَالَ يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नाशाइस्ता | अ़मल | बेशक वह | तेरे घर वाले | से | नहीं | बेशक वह | ऐ नूह (अ) | उस ने फ़रमाया |

فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۗ اِنِّيْٓ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | तू हो जाए | कि | बेशक मैं नसीहत करता हूँ तुझे | इल्म | उस का | तुझ को | ऐसी बात कि नहीं | सो मुझ से सवाल न कर |

الْجٰهِلِيْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَيْسَ لِيْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुझे | ऐसी बात कि नहीं | मैं सवाल करूँ तुझ से | कि | तुझ से | मैं पनाह चाहता हूँ | ऐ मेरे रब | उस ने कहा | 46 | नादान (जमा) |

بِهٖ عِلْمٌ ۗ وَاِلَّا تَغْفِرْ لِيْ وَتَرْحَمْنِيْٓ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٤٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 47 | नुक़्सान पाने वाले | से | हो जाऊं | और तू मुझ पर रहम न करे | और अगर तू न बख़्शे मुझे | इल्म | उस का |

قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اُمَمٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और गिरोह पर | तुझ पर | और बरकतें | हमारी तरफ़ से | सलामती के साथ | उतर जाओ तुम | ऐ नूह (अ) | कहा गया |

مِّمَّنْ مَّعَكَ ۗ وَاُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٤٨﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 48 | दर्दनाक | अ़ज़ाब | हम से | उन्हें पहुँचेगा | फिर | हम उन्हें जल्द फ़ाइदा देंगे | और कुछ गिरोह | तेरे साथ | से जो |

تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَآ اِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَآ اَنْتَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम | तुम उन को जानते थे | न | तुम्हारी तरफ़ | हम वहि करते हैं उसे | ग़ैब की ख़बरें | से | यह |

وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا ۛ فَاصْبِرْ ۛ اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٩﴾ ع

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 49 | परहेज़गारों के लिए | अच्छा अन्जाम | बेशक | पस सब्र करो | इस से पहले | से | तुम्हारी क़ौम | और न |

وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ۗ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई माबूद | तुम्हारा नहीं | अल्लाह | तुम इबादत करो | ऐ मेरी क़ौम | उस ने कहा | हूद (अ) | उन के भाई | क़ौमे आद | और तरफ़ |

غَيْرُهٗ ۗ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُفْتَرُوْنَ ﴿٥٠﴾ يٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस पर | मैं तुम से नहीं मांगता | ऐ मेरी क़ौम | 50 | झूट बान्धते हो | मगर (सिर्फ़) | तुम | नहीं | उस के सिवा |

اَجْرًا ۗ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى الَّذِيْ فَطَرَنِيْ ۗ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٥١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 51 | क्या फिर तुम समझते नहीं | जिस ने मुझे पैदा किया | पर | मगर (सिर्फ़) | मेरा सिला | नहीं | कोई अजर (सिला) |

وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَآءَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मान | वह भेजेगा | उसी की तरफ़ रुजूअ़ करो | फिर | अपना रब | तुम बख़्शिश मांगो | और ऐ मेरी क़ौम |

عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और रूगर्दानी न करो | तुम्हारि क़ुव्वत | तरफ़ (पर) | क़ुव्वत | और तुम्हें बढ़ाएगा | ज़ोर की बारिश | तुम पर |

مُجْرِمِيْنَ ﴿٥٢﴾ قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम | और नहीं | कोई दलील (सनद) ले कर | तू नहीं आया हमारे पास | ऐ हूद (अ) | वह बोले | 52 | मुजरिम हो कर |

بِتَارِكِيْٓ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 53 | ईमान लाने वाले | तेरे लिए (तुझ पर) | हम | और नहीं | तेरे कहने से | अपने माबूद | छोड़ने वाले |

معانقة ٩ عند المتأخرين ١٢
الوقف على قاصر احسن والبق ١٢

إِن نَّقُولُ إِلَّا اعْتَرَاكَ بَعْضُ آلِهَتِنَا بِسُوٓءٍ ۗ قَالَ إِنِّيٓ أُشْهِدُ اللَّهَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | गवाह करता हूँ | बेशक मैं | उस ने कहा | बुरी तरह | हमारा माबूद | किसी | तुझे आसेब पहुँचाया है | मगर | हम कहते हैं | नहीं |

وَاشْهَدُوٓا أَنِّي بَرِيٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ﴿٥٤﴾ مِن دُونِهِ ۖ فَكِيدُونِي جَمِيعًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सब | सो मक्र (बुरी तदबीर) करो मेरे बारे में | उस के सिवा | 54 | तुम शरीक करते हो | उन से | बेज़ार हूँ | बेशक मैं | और तुम गवाह रहो |

ثُمَّ لَا تُنظِرُونِ ﴿٥٥﴾ إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُم ۚ مَّا مِن دَآبَّةٍ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई | चलने वाला | नहीं | और तुम्हारा रब | मेरा रब | अल्लाह पर | मैं ने भरोसा किया | बेशक मैं | 55 | मुझे मोहलत न दो | फिर |

إِلَّا هُوَ آخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَآ ۚ إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٥٦﴾ فَإِن

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर अगर | 56 | सीधा | रास्ता | पर | मेरा रब | बेशक | उस की चोटी से | पकड़ने वाला | वह | मगर |

تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُم مَّآ أُرْسِلْتُ بِهِۦٓ إِلَيْكُمْ ۚ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई और क़ौम | मेरा रब | और क़ाइम मुक़ाम कर देगा | तुम्हारी तरफ़ | उस के साथ | जो मुझे भेजा गया | मैं ने तुम्हें पहुँचा दिया | तुम रूगर्दानी करोगे |

غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّونَهُۥ شَيْـًٔا ۚ إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ﴿٥٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 57 | निगहबान | हर शै | पर | मेरा रब | बेशक | कुछ | और तुम न बिगाड़ सकोगे उस का | तुम्हारे सिवा |

وَلَمَّا جَآءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُۥ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी | रहमत से | उस के साथ | और वह लोग जो ईमान लाए | हूद (अ) | हम ने बचा लिया | हमारा हुक्म | आया | और जब |

وَنَجَّيْنَاهُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٨﴾ وَتِلْكَ عَادٌ ۖ جَحَدُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना रब | आयतों का | उन्हों ने इन्कार किया | आद | और यह | 58 | सख़्त | अ़ज़ाब | से | और हम ने उन्हें बचा लिया |

وَعَصَوْا رُسُلَهُۥ وَاتَّبَعُوٓا أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٥٩﴾ وَأُتْبِعُوا فِي

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | और उन के पीछे लगाई गई | 59 | ज़िद्दी | हर सरकश | हुक्म | और पैरवी की | अपने रसूल | और उन्हों ने नाफ़रमानी की |

هَٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ أَلَآ إِنَّ عَادًا كَفَرُوا رَبَّهُمْ ۗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना रब | वह मुन्किर हुए | आद | बेशक | याद रखो | और रोज़े क़ियामत | लानत | इस दुनिया |

ركوع ٥ وقف لازم

أَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُودٍ ﴿٦٠﴾ وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا ۚ قَالَ يَٰقَوْمِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ मेरी क़ौम | उस ने कहा | सालेह (अ) | उन का भाई | और समूद की तरफ़ | 60 | हूद की क़ौम | आद के लिए | फटकार | याद रखो |

اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُۥ ۖ هُوَ أَنشَأَكُم مِّنَ الْأَرْضِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन से | पैदा किया तुम्हें | वह | उस के सिवा | कोई माबूद | तुम्हारे लिए | नहीं | अल्लाह की इबादत करो |

وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا فَاسْتَغْفِرُوهُ ثُمَّ تُوبُوٓا إِلَيْهِ ۚ إِنَّ رَبِّي قَرِيبٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नज़दीक | मेरा रब | बेशक | रुजूअ करो उस की तरफ़ (तौबा करो) | फिर | सो उस से बख़्शिश मांगो | उस में | और बसाया तुम्हें उस ने |

مُّجِيبٌ ﴿٦١﴾ قَالُوا يَٰصَٰلِحُ قَدْ كُنتَ فِينَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هَٰذَآ ۖ أَتَنْهَىٰنَآ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या तू हमें मना करता है | इस से क़ब्ल | मरकज़े उम्मीद | हम में (हमारे दरमियान) | तू था | ऐ सालेह (अ) | वह बोले | 61 | क़ुबूल करने वाला |

أَن نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ آبَآؤُنَا وَإِنَّنَا لَفِي شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَآ إِلَيْهِ مُرِيبٍ ﴿٦٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 62 | क़वी शुबाह में | उस की तरफ़ | तू हमें बुलाता है | उस से जो | शक में हैं | और बेशक हम | हमारे बाप दादा | उसे जिस की परस्तिश करते थे | कि हम परस्तिश करें |

हम यही कहते हैं कि तुझे आसेब पहुँचाया है हमारे किसी माबूद ने बुरी तरह, उस ने कहा बेशक मैं अल्लाह को गवाह करता हूँ और तुम (भी) गवाह रहो, मैं उन से बेज़ार हूँ जिन को तुम शरीक करते हो (54) उस के सिवा, सो मेरे बारे में सब मक्र (बुरी तदबीर) कर लो, फिर मुझे मोहलत न दो। (55) मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया (जो) मेरा रब है और तुम्हारा रब है, कोई चलने (फिरने) वाला नहीं मगर वह उस की चोटी से पकड़ने वाला है (क़ब्ज़े में लिए हुए है) बेशक मेरा रब है रास्ते पर सीधे। (56) फिर अगर तुम रूगर्दानी करोगे तो जिस के साथ मुझे तुम्हारी तरफ़ भेजा गया वह मैं ने तुम्हें पहुँचा चुका, और क़ाइम मुक़ाम कर देगा मेरा रब तुम्हारे सिवा किसी और क़ौम को, और तुम उस का कुछ न बिगाड़ सकोगे, बेशक मेरा रब हर शै पर निगहबान है। (57) और जब हमारा हुक्म आया, हम ने हूद (अ) को और जो लोग उस के साथ ईमान लाए अपनी रहमत से बचा लिया, और हम ने उन्हें बचा लिया सख़्त अ़ज़ाब से। (58) और यह आद थे और उन्हों ने अपने रब की आयतों का इन्कार किया, और अपने रसूलों की नाफ़रमानी की, और हर सरकश ज़िद्दी की पैरवी की। (59) और लानत उन के पीछे लगाई गई, इस दुनिया में और रोज़े क़ियामत, याद रखो! आद अपने रब के मुन्किर हुए, याद रखो! हूद (अ) की क़ौम आद पर फटकार है। (60) और समूद की तरफ़ उन के भाई सालेह (अ) को (भेजा), उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, उस ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया, और तुम्हें उस में बसाया, पस उस से बख़्शिश मांगो, फिर उस से तौबा करो, बेशक मेरा रब नज़दीक है, क़ुबूल करने वाला है। (61) वह बोले ऐ सालेह (अ)! तू हमारे दरमियान इस से क़ब्ल मरकज़े उम्मीद था (तुझ से बड़ी उम्मीदें थीं) क्या तू हमें मना करता है कि हम उन की परस्तिश (न) करें जिन की हमारे बाप दादा परस्तिश करते थे, तो जिस की तरफ़ तू हमें बुलाता है उस में हम क़वी शुबाह में हैं। (62)

उस ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! तुम क्या देखते हो (भला देखो तो) अगर मैं अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हूँ, और उस ने मुझे अपनी तरफ़ से रहमत दी है तो अगर मैं उस की नाफ़रमानी करूँ, मुझे अल्लाह से कौन बचाएगा? तुम मेरे लिए नुक़्सान के सिवा कुछ नहीं बढ़ाते। (63) और ऐ मेरी क़ौम! यह अल्लाह की ऊँटनी है, तुम्हारे लिए निशानी, पस उसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाती (फिरे) और उस को न छूओ (न पहुँचाओ) कोई बुराई (नुक़्सान) पस तुम्हें बहुत जल्द अ़ज़ाब पकड़लेगा। (64) फिर उन्हों ने उस की कूँचें काट दीं तो उस (सालेह अ) ने कहा, तुम अपने घरों में बरत लो तीन दिन और, यह झूटा न होने वाला वादा है (पूरा हो कर रहेगा)। (65) फिर जब हमारा हुक्म आया हम ने सालेह (अ) को बचा लिया और उन लोगों को जो उस के साथ ईमान लाए अपनी रहमत (के ज़रीए), और उस दिन की रुस्वाई से, बेशक तुम्हारा रब क़वी, ग़ालिब है। (66) और ज़ालिमों को चिंघाड़ ने आ पकड़ा, पस उन्हों ने सुबह की (सुबह के वक़्त) अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। (67) गोया वह कभी यहां बसे ही न थे, याद रखो! बेशक क़ौमे समूद अपने रब के मुन्किर हुए, याद रखो! समूद पर फटकार है। (68) और हमारे फ़रिश्ते अलबत्ता इब्राहीम (अ) के पास ख़ुशख़बरी ले कर आए, वह सलाम बोले, उस (इब्राहीम अ) ने सलाम कहा, फिर उस ने देर न की एक भुना हुआ बछड़ा ले आया। (69) फिर जब उस (इब्राहीम अ) ने देखा कि उन के हाथ खाने की तरफ़ नहीं पहुँचते तो वह उन से डरा और दिल में उन से ख़ौफ़ महसूस किया, वह बोले डरो मत, बेशक हम क़ौमे लूत (अ) की तरफ़ भेजे गए हैं। (70) और उस की बीवी खड़ी हुई थी तो वह हँस पड़ी सो हम ने उसे ख़ुशख़बरी दी इस्हाक़ (अ), और इस्हाक़ (अ) के बाद याक़ूब (अ) की। (71) वह बोली अए है! क्या मेरे बच्चा होगा? हालांकि मैं बुढ़िया हूँ और यह मेरा ख़ाविन्द बूढ़ा है, बेशक यह एक अ़जीब बात है। (72)

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّىْ وَاٰتٰىنِىْ مِنْهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी तरफ़ से | और उस ने मुझे दी | अपने रब से | रौशन दलील पर | अगर मैं हूँ | क्या देखते हो तुम | ऐ मेरी क़ौम | उस ने कहा |

رَحْمَةً فَمَنْ يَّنْصُرُنِىْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ فَمَا تَزِيْدُوْنَنِىْ غَيْرَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सिवाए | तुम मेरे लिए बढ़ाते | तो नहीं | मैं उस की नाफ़रमानी करूँ | अगर | अल्लाह से | मेरी मदद करेगा (बचाएगा) | तो कौन | रहमत |

تَخْسِيْرٍ ﴿٦٣﴾ وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِىْٓ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | खाए | पस उसे छोड़ दो | निशानी | तुम्हारे लिए | अल्लाह की ऊँटनी | यह | और ऐ मेरी क़ौम | 63 | नुक़्सान |

اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ﴿٦٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 64 | क़रीब (बहुत जल्द) | अ़ज़ाब | पस तुम्हें पकड़ लेगा | बुराई से | और उस को न छूओ तुम | अल्लाह की ज़मीन |

فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِىْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ذٰلِكَ وَعْدٌ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वादा | यह | तीन दिन | अपने घरों में | बरत लो | उस ने कहा | उन्हों ने उस की कूँचें काट दीं |

غَيْرُ مَكْذُوْبٍ ﴿٦٥﴾ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह लोग जो ईमान लाए | सालेह (अ) | हम ने बचा लिया | हमारा हुक्म | आया | फिर जब | 65 | न झूटा होने वाला |

مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْىِ يَوْمِئِذٍ ۭ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِىُّ الْعَزِيْزُ ﴿٦٦﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 66 | ग़ालिब | क़वी | वह | तुम्हारा रब | बेशक | उस दिन की | और रुस्वाई से | अपनी रहमत से | उस के साथ |

وَاَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِىْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٦٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 67 | औन्धे पड़े रह गए | अपने घर | में | पस उन्हों ने सुबह की | चिंघाड़ | वह जिन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम) | और आ पकड़ा |

كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۭ اَلَآ اِنَّ ثَمُوْدَا۟ كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ۭ اَلَا بُعْدًا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फटकार | याद रखो | अपने रब के | मुन्किर हुए | समूद | बेशक | याद रखो | उस में | न बसे थे | गोया |

لِّثَمُوْدَ ﴿٦٨﴾ وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ۭ ع ٦

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सलाम | वह बोले | ख़ुशख़बरी ले कर | इब्राहीम (अ) | हमारे फ़रिश्ते | और अलबत्ता आए | 68 | समूद पर |

قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ﴿٦٩﴾ فَلَمَّا رَآ اَيْدِيَهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने देखे उन के हाथ | फिर जब | 69 | भुना हुआ | एक बछड़ा ले आया | कि | फिर उस ने देर न की | सलाम | उस ने कहा |

لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ۭ قَالُوْا لَا تَخَفْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम डरो मत | वह बोले | ख़ौफ़ | उन से | और महसूस किया | वह उन से डरा | उन की तरफ़ | नहीं पहुँचते |

اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ﴿٧٠﴾ وَامْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सो हम ने उसे ख़ुशख़बरी दी | तो वह हँस पड़ी | खड़ी हुई | और उस की बीवी | 70 | क़ौमे लूत | तरफ़ | बेशक हम भेजे गए हैं |

بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ﴿٧١﴾ قَالَتْ يٰوَيْلَتٰٓى ءَاَلِدُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या मेरे बच्चा होगा | ऐ ख़राबी (अए है) | वह बोली | 71 | याक़ूब (अ) | इस्हाक़ (अ) | और से (के) बाद | इस्हाक़ (अ) की |

وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِىْ شَيْخًا ۭ اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عَجِيْبٌ ﴿٧٢﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 72 | अ़जीब | एक चीज़ (बात) | यह | बेशक | बूढ़ा | मेरा ख़ावन्द | और यह | बुढ़िया | हालांकि मैं |

قَالُوْٓا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम पर | और उस की बरकतें | अल्लाह की रहमत | अल्लाह का हुक्म | से | क्या तू तअज्जुब करती है | वह बोले |

اَهْلَ الْبَيْتِ ؕ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ﴿٧٣﴾ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ اِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| खौफ | इब्राहीम (अ) | से (का) | जाता रहा | फिर जब | 73 | बुजर्गी वाला | खूबियां वाला | बेशक वह | ऐ घर वालो |

وَجَآءَتْهُ الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِيْ قَوْمِ لُوْطٍ ﴿٧٤﴾ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इब्राहीम (अ) | बेशक | 74 | क़ौमे लूत | में | हम से झगड़ने लगा | खुशख़बरी | और उस के पास आगई |

لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ ﴿٧٥﴾ يٰۤاِبْرٰهِيْمُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ قَدْ جَآءَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आचुका | बेशक यह | इस से | ऐराज़ कर | ऐ इब्राहीम (अ) | 75 | रुजूअ करने वाला | नर्म दिल | बुर्दबार |

اَمْرُ رَبِّكَ ۚ وَاِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ﴿٧٦﴾ وَلَمَّا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जब | 76 | न टलाया जाने वाला | अजाब | उन पर आगया | और बेशक उन | तेरे रब का हुक्म |

جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالَ هٰذَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह | और बोला | दिल में | उन से | और तंग हुआ | उन से | वह ग़मगीन हुआ | लूत (अ) के पास | हमारे फ़रिश्ते | आए |

يَوْمٌ عَصِيْبٌ ﴿٧٧﴾ وَجَآءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ؕ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उस से क़ब्ल | उस की तरफ़ | दौड़ती हुई | उस की क़ौम | और उस के पास आई | 77 | बड़ा सख़्ती का दिन |

يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِيْ هُنَّ اَطْهَرُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| निहायत पाकीज़ा | यह | मेरी बेटियां | यह | ऐ मेरी क़ौम | उस ने कहा | बुरे काम | वह करते थे |

لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ فِيْ ضَيْفِيْ ؕ اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक आदमी | तुम से (तुम में) | क्या नही | मेरे मेहमानों में | और न रुस्वा करो मुझे | अल्लाह | पस डरो | तुम्हारे लिए |

رَّشِيْدٌ ﴿٧٨﴾ قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِيْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हक़ | कोई | तेरी बेटियों में | हमारे लिए | नही | तू तो जानता है | वह बोले | 78 | नेक चलन |

وَاِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ ﴿٧٩﴾ قَالَ لَوْ اَنَّ لِيْ بِكُمْ قُوَّةً

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई जोर | तुम पर | मेरे लिए (मेरा) | काश कि | उस ने कहा | 79 | चाहते है? | हम क्या | खूब जानता है | और बेशक तू |

اَوْ اٰوِيْٓ اِلٰى رُكْنٍ شَدِيْدٍ ﴿٨٠﴾ قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारा रब | भेजे हुए | बेशक हम | ऐ लूत (अ) | वह बोले | 80 | मजबूत पाया | तरफ़ | या मै पनाह लेना |

لَنْ يَّصِلُوْٓا اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न मुड़ कर देखे | रात | से (का) | कोई हिस्सा | अपने घर वालों के साथ | सो ले निकल | तुम तक | वह हरगिज नही पहुँचेंगे |

مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ؕ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا مَآ اَصَابَهُمْ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन को पहुँचेगा | जो | उस को पहुँचने वाला | बेशक वह | तुम्हारी बीवी | सिवा | कोई | तुम में से |

اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ؕ اَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيْبٍ ﴿٨١﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 81 | नज्दीक | सुब्ह | क्या नही | सुब्ह | उन का वादा | बेशक |

वह बोले क्या तू अल्लाह के हुक्म से (अल्लाह की कुदरत पर) तअ़ज्जुब करती है? तुम पर अल्लाह की रहमत और उस की बरकतें ऐ घर वालो! बेशक वह खूबियों वाला, बुजर्गी वाला है। (73)

फिर जब इब्राहीम (अ) का ख़ौफ़ जाता रहा, और उस के पास खुशख़बरी आगई, वह हम से क़ौमे लूत (अ) (के बारे) में झगड़ने लगा। (74)

बेशक इब्राहीम (अ) बुर्दबार, नर्म दिल रुजूअ़ करने वाला। (75)

ऐ इब्राहीम (अ)! उस से एराज़ कर (यह ख़याल छोड़ दे) बेशक तेरे रब का हुक्म आचुका, और बेशक उन पर न टलाया जाने वाला अ़जाब आने वाला है (आया ही चाहता है)। (76)

और जब हमारे फ़रिशते लूत (अ) के पास आए वह उस से ग़मगीन हुआ और तंग दिल हुआ उन (की तरफ़) से और बोला यह बड़ा सख़्ती का दिन है। (77)

और उस के पास उस की क़ौम दौड़ती हुई आई, और वह उस से क़ब्ल बुरे काम करते थे, उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! यह मेरी बेटियां (मौजूद) हैं, यह तुम्हारे लिए निहायत पाकीज़ा हैं, पस अल्लाह से डरो और मुझे मेरे मेहमानों में रुस्वा न करो, क्या तुम में एक आदमी (भी) नेक चलन नहीं? (78)

वह बोले तू तो जानता है, तेरी बेटियों में हमारे लिए कोई हक़ (ग़र्ज़) नहीं, और बेशक तू खूब जानता है हम किया चाहते हैं? (79)

उस ने कहा काश मेरा तुम पर कोई जोर होता, या मैं किसी मज़बूत पाए की पनाह लेता। (80)

वह (फ़रिश्ते) बोले, ऐ लूत (अ)! बेशक हम तुम्हारे रब के भेजे हुए है वह तुम तक हरगिज़ न पहुंच सकेंगा, सो तुम अपने घर वालों के साथ रात के किसी हिस्से में (रातों रात) निकलो, और मुड़ कर न देखे तुम में से तुम्हारी बीवी के सिवा कोई, बेशक जो उन को पहुंचेगा उस को पहुंचने वाला है (पहुँच कर रहेगा), बेशक उन पर (अ़ज़ाब के) वादे का वक्त सुब्ह है, क्या सुब्ह नज्दीक नहीं? (81)

पस जब हमारा हुक्म आया, हम ने उन का बुलन्द पस्त कर दिया (ज़ेर ज़बर कर दिया) और हम ने बरसाए उस (बस्ती) पर संगरेज़े के पत्थर तह ब तह (लगातार)। (82) तेरे रब के पास निशान किए हुए, और यह नहीं है ज़ालिमों से कुछ दूर। (83)

और मदयन की तरफ़ उन के भाई शुऐब (अ) (आए), उस ने कहाः ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, और माप तोल में कमी न करो, बेशक मैं तुम्हें आसूदा हाल देखता हूँ, और बेशक मैं तुम पर एक घेर लेने वाले दिन के अज़ाब से डरता हूँ। (84)

और ऐ मेरी क़ौम! इन्साफ़ से माप तोल पूरा करो, लोगों को उन की चीज़ें घटा कर न दो, और ज़मीन में फ़साद करते न फिरो। (85)

अल्लाह (का दिया हुआ जो) बच रहे तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम ईमान वाले हो, और मैं तुम पर निगहबान नहीं हूँ। (86)

वह बोले ऐ शुऐब (अ)! क्या तेरी नमाज़ तुझे हुक्म देती है (सिखाती है)? कि उन्हें छोड़ दें जिन की हमारे बाप दादा परस्तिश करते थे, या अपने मालों में हम जो चाहें न करें, (ताने भरे अंदाज में बोले) बेशक तुम ही बाविक़ार, नेक चलन हो? (87)

उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! तुम्हारा क्या ख़याल है? मैं अपने रब की तरफ़ से अगर रौशन दलील पर हूँ और उस ने मुझे अपनी तरफ़ से अच्छी रोज़ी दी है, और मैं नहीं चाहता कि मैं (खुद) उस के ख़िलाफ़ करूँ जिस से तुम्हें रोकता हूँ, जिस क़द्र मुझ से हो सके मैं सिर्फ़ इस्लाह चाहता हूँ और मेरी तौफ़ीक़ सिर्फ़ अल्लाह ही से है, उसी पर मैं ने भरोसा किया और उसी की तरफ़ रुजूअ करता हूँ। (88)

فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस पर | और हम ने<br>बरसाए | उस का नीचा<br>(पस्त) | उस का ऊपर<br>(बुलन्द) | हम ने<br>करदिया | हमारा<br>हुक्म | आया | पस जब |

حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ مَّنْضُوْدٍ ﴿٨٢﴾ مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ؕ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तेरे रब के पास | निशान<br>किए हुए | 82 | तह ब तह | कंकर<br>(संगरेज़े) | पत्थर |

وَمَا هِيَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ بِبَعِيْدٍ ﴿٨٣﴾ وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ؕ ع ١٥ النصف

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शुऐब (अ) | उन का<br>भाई | और मदयन<br>की तरफ़ | 83 | कुछ दूर | ज़ालिम<br>(जमा) | से | यह | और<br>नहीं |

قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के सिवा | कोई माबूद | तुम्हारे लिए नहीं | अल्लाह | इबादत<br>करो | ऐ मेरी<br>क़ौम | उस ने<br>कहा |

وَلَا تَنْقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ اِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ بِخَيْرٍ وَّاِنِّيْٓ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और<br>बेशक मैं | आसूदा<br>हाल | तुम्हें<br>देखता हूँ | बेशक मैं | और तोल | माप | और न कमी करो |

اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيْطٍ ﴿٨٤﴾ وَيٰقَوْمِ اَوْفُوا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पूरा करो | और ऐ<br>मेरी क़ौम | 84 | एक घेरलेने वाला दिन | अज़ाब | तुम पर | डरता हूँ |

الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन की चीज़ | लोग | और न घटाओ | इन्साफ़ से | और तोल | माप |

وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٨٥﴾ بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर | तुम्हारे<br>लिए | बेहतर | अल्लाह | बचा<br>हुआ | 85 | फ़साद<br>करते हुए | ज़मीन में | और न फिरो |

كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿٨٦﴾ قَالُوْا يٰشُعَيْبُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ शुएब<br>(अ) | वह बोले | 86 | निगहबान | तुम पर | मैं | और<br>नहीं | ईमान वाले | तुम हो |

اَصَلٰوتُكَ تَاْمُرُكَ اَنْ نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَآ اَوْ اَنْ نَّفْعَلَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम न करें | या | हमारे<br>बाप दादा | जो परस्तिश<br>करते थे | हम<br>छोड़ दें | कि | तुझे हुक्म<br>देती है | क्या तेरी नमाज़ |

فِيْٓ اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ؕ اِنَّكَ لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ ﴿٨٧﴾ قَالَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने<br>कहा | 87 | नेक चलन | बुर्दबार<br>(बाविक़ार) | अलबत्ता<br>तू | बेशक तू | जो हम चाहें | अपने मालों में |

يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَرَزَقَنِيْ مِنْهُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी<br>तरफ़ से | उस ने मुझे<br>रोज़ी दी | अपना<br>रब | से | रौशन<br>दलील | पर | मैं हूँ | अगर | क्या तुम देखते हो<br>(क्या ख़याल है) | ऐ मेरी<br>क़ौम |

رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَآ اَنْهٰىكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जिस से मैं<br>तुम्हें रोकता हूँ | तरफ़ | मैं उस के<br>ख़िलाफ़ करूँ | कि | और मैं नहीं<br>चाहता | अच्छी | रोज़ी |

عَنْهُ ؕ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ ؕ وَمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और<br>नहीं | मुझ से हो सके | जो<br>(जिस क़द्र) | इस्लाह | मगर<br>(सिर्फ़) | मैं चाहता | नहीं | उस से |

تَوْفِيْقِيْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿٨٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 88 | मैं रुजूअ<br>करता हूँ | और उसी<br>की तरफ़ | मैं ने भरोसा<br>किया | उस पर | अल्लाह से | मगर<br>(सिर्फ़) | मेरी तौफ़ीक़ |

وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْٓ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जो पहुँचा | उस जैसा | कि तुम्हें पहुँचे | मेरी ज़िद | तुम्हें आमादा न करदे | और ऐ मेरी क़ौम |

قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ۭ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम से | क़ौमे लूत | और नहीं | क़ौमे सालेह | या | क़ौमे हूद | या | क़ौमे नूह (अ) |

بِبَعِيْدٍ ﴿٨٩﴾ وَاسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ۭ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| निहायत मेहरबान | मेरा रब | बेशक | उस की तरफ़ रुजूअ करो | फिर | अपना रब | और बख़्शिश मांगो | 89 | कुछ दूर |

وَّدُوْدٌ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बेशक हम | उन से जो तू कहता है | बहुत | हम नहीं समझते | ऐ शुऐब (अ) | उन्हों ने कहा | 90 | मुहब्बत वाला |

لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ۡ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम पर | तू | और नहीं | तुझ पर पथराओ करते | और अगर तेरा कुम्बा न होता | ज़ईफ़ (कमज़ोर) | अपने दरमियान | तुझे देखते हैं |

بِعَزِيْزٍ ﴿٩١﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ ۭ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | से | तुम पर | ज़ियादा ज़ोर वाला | क्या मेरा कुम्बा | ऐ मेरी क़ौम | उस ने कहा | 91 | ग़ालिब |

وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَاۗءَكُمْ ظِهْرِيًّا ۭ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿٩٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 92 | अहाता किए हुए | उसे जो तुम करते हो | मेरा रब | बेशक | पीठ पीछे | अपने पीछे | और तुम ने उसे लिया (डाल रखा) |

وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰي مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَامِلٌ ۭ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम जान लोगे | जल्द | काम करता हूँ | बेशक मैं | अपनी जगह | पर | तुम काम करते रहो | ऐ मेरी क़ौम |

مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ۭ وَارْتَقِبُوْٓا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम इन्तिज़ार करो | झूटा | वह | और कौन? | उस को रुस्वा कर देगा | अज़ाब | उस पर आता है | कौन - किस? |

اِنِّىْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ﴿٩٣﴾ وَلَمَّا جَاۗءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शुऐब (अ) | हम ने बचा लिया | हमारा हुक्म | और जब आया | 93 | इन्तिज़ार | तुम्हारे साथ | मैं बेशक |

وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कड़क (चिंघाड़) | उन्हों ने ज़ुल्म किया | वह लोग जो | और आलिया | अपनी से | अपनी रहमत से | उस के साथ | और जो लोग ईमान लाए |

فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٩٤﴾ كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۭ اَلَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| याद रखो | उस में (बाहा) | वह नहीं बसे | गोया | 94 | औन्धे पड़े हुए | अपने घरों में | सो सुबह की उन्हों ने |

بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ﴿٩٥﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى ع

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मूसा (अ) | और हम ने भेजा | 95 | समूद | जैसे दूर हुए | मदयन के लिए | दूरी है |

بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٩٦﴾ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهٖ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और उस के सरदार | फ़िरऔन कि तरफ़ | 96 | रौशन | और दलील | अपनी निशानियाँ के साथ |

فَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ وَمَآ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ ﴿٩٧﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 97 | दुरुस्त | फ़िरऔन का हुक्म | और न | फ़िरऔन का हुक्म | तो उन्हों ने पैरवी की |

और ऐ मेरी क़ौम! तुम्हें मेरी ज़िद आमादा न कर दे कि तुम्हें (अ़ज़ाब) पहुँचे उस जैसा जो क़ौमे नूह (अ) या क़ौमे हूद (अ) या क़ौमे सालेह (अ) को, और क़ौमे लूत (अ) नहीं है तुम से कुछ दूर। **(89)** और अपने रब से बख़्शिश मांगो, फिर उस की तरफ़ रुजूअ करो, बेशक मेरा रब निहायत मेहरबान, मुहब्बत वाला है। **(90)** उन्हों ने कहा ऐ शुऐब (अ)! तू जो कहता है उन में से हम बहुत (सी बातें) नहीं समझते और बेशक हम तुझे देखते हैं अपने दरमियान कमज़ोर, और तेरा कुम्बा (भाई बन्द) न होते तो हम तुझ पर पथराओ करते और तू हम पर ग़ालिब नहीं। **(91)** उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! क्या मेरा कुम्बा तुम पर अल्लाह से ज़ियादा ज़ोर वाला है? और तुम ने उसे अपनी पीठ पीछे डाल रखा है, बेशक मेरा रब जो तुम करते हो उसे एहाता (क़ाबू) किए हुए है। **(92)** और ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह काम करते रहो मैं (अपना) काम करता हूँ, तुम जल्द जान लोगे किस पर वह अ़ज़ाब आता है जो उस को रुस्वा कर देगा? और कौन झूटा है? और तुम इन्तिज़ार करो, बेशक मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार में हूँ। **(93)** और जब हमारा हुक्म आया, हम ने शुऐब (अ) को और जो लोग उस के साथ ईमान लाए अपनी रहमत से बचा लिया, और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उन्हें चिंघाड़ ने आलिया, सो उन्हों ने सुबह की (सुबह के वक़्त) अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। **(94)** गोया वह वहां बसे (ही) न थे, याद रखो! (रहमत से) दूरी है मदयन के लिए जैसे दूर हुए समूद। **(95)** और हम ने भेजा मूसा (अ) को अपनी निशानियों और रौशन दलील के साथ, **(96)** फ़िरऔन और उसके सरदारों की तरफ़, तो उन्हों ने फ़िरऔन के हुक्म की पैरवी की और फ़िरऔन का हुक्म दुरुस्त न था। **(97)**

क़ियामत के दिन वह अपनी क़ौम के आगे होगा, तो वह उन्हें दोज़ख़ में ला उतारेगा और बुरा है घाट (उन के) उतरने का मुक़ाम। (98) और इस (दुनिया) में उन के पीछे लानत लगादी गई और क़ियामत के दिन, बुरा है (यह) इन्आम जो उन्हें दिया गया। (99) यह बस्तियों की ख़बरें हैं कि हम तुझ को बयान करते हैं, उन में कुछ मौजूद हैं और (कुछ की जड़ें) कट चुकी हैं। (100) और हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि उन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया, सो उन के कुछ काम न आए वह माबूद जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पुकारते थे, जब तेरे रब का हुक्म आया, और उन्हें हलाकत के सिवा उन्हों ने कुछ न बढ़ाया। (101) और ऐसी ही है तेरे रब की पकड़ जब वह बस्तियों को पकड़ता है और वह ज़ुल्म करते हों, बेशक उस की पकड़ दर्दनाक, सख़्त है। (102) बेशक इस में अलबत्ता उस के लिए निशानी है जो डरा आख़िरत के अज़ाब से, यह एक दिन है जिस में सब लोग जमा होंगे, और यह एक दिन है पेश होने (हाज़री) का। (103) और हम पीछे नहीं हटाते (मुलतवी नहीं करते) मगर (सिर्फ़) एक मुक़र्ररा मुद्दत तक के लिए। (104) जब वह दिन आएगा कोई शख़्स बात न कर सकेगा, मगर उस की इजाज़त से, सो कोई उन में बदबख़्त है और कोई ख़ुश बख़्त। (105) पस जो बदबख़्त हुए वह दोज़ख़ में हैं, उन के लिए उस में चीख़ना और दहाड़ना है। (106) वह उस में हमेशा रहेंगे, जब तक ज़मीन और आस्मान हैं, मगर जितना तेरा रब चाहे, बेशक तेरा रब जो चाहे कर गुज़रने वाला है। (107) और जो लोग ख़ुश बख़्त हुए सो वह हमेशा जन्नत में रहेंगे, जब तक ज़मीन और आस्मान हैं, मगर जितना तेरा रब चाहे, (यह) बख़्शिश है ख़त्म न होने वाली। (108)

يَقْدُمُ قَوْمَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ وَبِئْسَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और बुरा | दोज़ख़ | तो ला उतारेगा उन्हें | क़ियामत के दिन | अपनी क़ौम | आगे होगा |

الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ (٩٨) وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ بِئْسَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बुरा | और क़ियामत के दिन | लानत | इस में | और उन के पीछे लगादी गई | 98 | घाट (उतरने का मुक़ाम) |

الرِّفْدُ الْمَرْفُوْدُ (٩٩) ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ مِنْهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन से | तुझ पर (को) | हम यह बयान करते हैं | बस्तियों की ख़बरें | से | यह | 99 | उन्हें इन्आम दिया गया | इन्आम |

قَآئِمٌ وَّحَصِيْدٌ (١٠٠) وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी जानों पर | उन्हों ने ज़ुल्म किया | और लेकिन (बल्कि) | और हम ने ज़ुल्म नहीं किया उन पर | 100 | और कट चुकीं | क़ाइम (मौजूद) |

فَمَآ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِيْ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | अलावा | वह पुकारते थे | वह जो | उन के माबूद | उन से (के) | सो न काम आए |

مِنْ شَيْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۚ وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ (١٠١)

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 101 | सिवाए हलाकत | और न बढ़ाया उन्हें | तेरे रब का हुक्म | आया | जब | कुछ भी |

وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِيَ ظَالِمَةٌ ۚ اِنَّ اَخْذَهٗٓ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की पकड़ | बेशक | ज़ुल्म करते हों | और वह | बस्तियां | जब उस ने पकड़ा (पकड़ता है) | तेरा रब | पकड़ | और ऐसी ही |

اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ (١٠٢) اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आख़िरत का अज़ाब | उस के लिए है जो डरा | अलबत्ता निशानी | उस में | बेशक | 102 | दर्दनाक सख़्त |

ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ (١٠٣)

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 103 | पेश होने का | एक दिन | और यह | सब लोग | उस में | जमा होंगे | एक दिन | यह |

وَمَا نُؤَخِّرُهٗٓ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ (١٠٤) يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर | कोई शख़्स | न बात करेगा | वह आएगा | जिस दिन | 104 | गिनी हुई (मुक़र्ररा) | एक मुद्दत के लिए | मगर | और हम नहीं हटाते पीछे |

بِاِذْنِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَّسَعِيْدٌ (١٠٥) فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِي النَّارِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दोज़ख़ | सो में | बदबख़्त | जो लोग | पस | 105 | और कोई ख़ुश बख़्त | कोई बदबख़्त | सो उन में | उस की इजाज़त से |

لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ (١٠٦) خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मान (जमा) | जब तक हैं | उस में | हमेशा रहेंगे | 106 | और दहाड़ना | चीख़ना | उस में | उन के लिए |

وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ۚ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ (١٠٧)

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 107 | जो वह चाहे | कर गुज़रने वाला | तेरा रब | बेशक | तेरा रब | जितना चाहे | मगर | और ज़मीन |

وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِي الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जब तक हैं | उस में | हमेशा रहेंगे | सो जन्नत में | ख़ुश बख़्त हुए | वह लोग जो | और जो |

السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ۚ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ (١٠٨)

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 108 | ख़त्म न होने वाली | अता बख़्शिश | तेरा रब | जितना चाहे | मगर | और ज़मीन | आस्मान (जमा) |

فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَآءِ ۚ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا كَمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जैसे | मगर | वह नहीं पूजते | यह लोग | पूजते हैं | उस से<br>जो | शक ओ शुबह में | पस तू न रह |

يَعْبُدُ اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ۚ وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन का हिस्सा | उन्हें पूरा<br>फेर देंगे | और बेशक<br>हम | उस से क़ब्ल | उन के<br>बाप दादा | पूजते थे |

ع ١٢ ٩ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ (١٠٩) وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | सो इख़्तिलाफ़<br>किया गया | किताब | मूसा (अ) | और अलबत्ता<br>हम ने दी | 109 | घटाए बग़ैर |

وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता<br>शक में | और बेशक<br>वह | उन के<br>दरमियान | अलबत्ता फ़ैसला<br>कर दिया जाता | तेरा रब | से | पहले<br>हो चुकी | एक<br>बात | और अगर<br>न |

مِّنْهُ مُرِيْبٍ (١١٠) وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ اَعْمَالَهُمْ ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के अमल | तेरा रब | उन्हें पूरा<br>बदला देगा | जब | सब | और<br>बेशक | 110 | धोके में<br>डालने वाला | उस से |

اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ (١١١) فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तौबा<br>की | और जो | तुम्हें हुक्म<br>दिया गया | जैसे | सो तुम<br>क़ाइम रहो | 111 | बाख़बर | जो वह करते हैं | बेशक<br>वह |

مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ۚ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ (١١٢) وَلَا تَرْكَنُوْٓا اِلَى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ | और न झुको | 112 | देखने<br>वाला | तुम करते<br>हो | उस से<br>जो | बेशक<br>वह | और सरकशी<br>न करो | तुम्हारे<br>साथ |

الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई | अल्लाह | सिवा | तुम्हारे<br>लिए | और<br>नही | आग | पस तुम्हें<br>छुएगी | ज़ुल्म किया<br>उन्हों ने | वह जिन्हों ने |

اَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ (١١٣) وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुछ<br>हिस्सा | दिन | दोनों<br>तरफ़ | नमाज़ | और क़ाइम<br>रखो | 113 | न मदद दिए<br>जाओगे | फिर | मददगार -<br>हिमायती |

مِّنَ الَّيْلِ ۚ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ۚ ذٰلِكَ ذِكْرٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नसीहत | यह | बुराइयां | मिटा<br>देती हैं | नेकियां | बेशक | रात | से (के) |

لِلذّٰكِرِيْنَ (١١٤) وَاصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ (١١٥)

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 115 | नेकी करने<br>वाले | अजर | ज़ाया नही<br>करता | अल्लाह | बेशक | और सब्र<br>करो | 114 | नसीहत मानने<br>वालों के लिए |

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ يَّنْهَوْنَ عَنِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | रोकते | साहबे ख़ैर | तुम से<br>पहले | से | क़ौमें | से | पस क्यों न हुए |

الْفَسَادِ فِى الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और पीछे<br>रहे | उन में | हम ने<br>बचा लिया | से जो | थोड़े | मगर | ज़मीन में | फ़साद |

الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَآ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ (١١٦)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 116 | गुनाहगार | और वह थे | उस में | जो उन्हें दी गई | उन्हों ने ज़ुल्म<br>किया (ज़ालिम) | वह लोग जो |

وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ (١١٧)

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 117 | नेकोकार | जब कि वहां<br>के लोग | ज़ुल्म से | बस्तियां | कि हलाक<br>कर दे | तेरा रब | और नही है |

पस उस से शक ओ शुबह में न रहो जो यह (काफ़िर) पूजते हैं, वह नहीं पूजते मगर जैसे उस से क़ब्ल उन के बाप दादा पूजते थे, और बेशक हम उन्हें उन का हिस्सा घटाए बग़ैर पूरा फेर देंगे। (109)
और हम ने अलबत्ता मूसा (अ) को किताब दी, सो उस में इख़्तिलाफ़ किया गया, और अगर तेरे रब की तरफ़ से एक बात पहले न हो चुकी होती तो अलबत्ता उन के दरमियान फ़ैसला कर दिया जाता, और अलबत्ता वह इस (कुरआन की तरफ़) से धोके में डालने वाले शक में हैं। (110)
और बेशक जब (वक़्त आएगा) सब को पूरा पूरा बदला देगा तेरा रब उन के आमाल का, बेशक जो वह करते हैं वह उस से बाख़बर है। (111)
सो तुम क़ाइम रहो जैसे तुम्हें हुक्म दिया गया है, और वह भी जिस ने तौबा की तुम्हारे साथ, और सरकशी न करो, बेशक जो तुम करते हो वह उस को देख रहा है। (112)
और उन की तरफ़ न झुको जिन्हों ने ज़ुल्म किया, पस तुम्हें आग छुएगी (आ लगेगी), और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई मददगार नहीं, फिर मदद न दिए जाओगे (मदद न पाओगे)। (113)
और नमाज़ क़ाइम रखो दिन के दोनों तरफ़ (सुब्ह ओ शाम) और रात के कुछ हिस्से में, बेशक नेकियां मिटा देती हैं बुराइयों को, यह नसीहत है नसीहत मानने वालों के लिए। (114)
और सब्र करो, बेशक अल्लाह अजर ज़ाया नहीं करता नेकी करने वालों का। (115)
पस तुम से पहले जो क़ौमें हुईं उन में साहबाने ख़ैर क्यों न हुए? कि रोकते ज़मीन में फ़साद से, मगर थोड़े से जिन्हें हम ने उन से बचा लिया और ज़ालिम (उन्हीं लज़्ज़तों के) पीछे पड़े रहे जो उन्हें दी गई थीं, और वह गुनाहगार थे। (116)
और तेरा रब ऐसा नहीं है कि बस्तियों को ज़ुल्म से हलाक कर दे जबकि वहां के लोग नेकोकार हों। (117)

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह हमेशा रहेंगे | एक | उम्मत | लोग (जमा) | तो कर देता | तेरा रब | चाहता | और अगर |

مُخْتَلِفِيْنَ ﴿١١٨﴾ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ۚ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ۚ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बात | और पूरी हुई | पैदा किया उन्हें | और उसी लिए | तेरा रब | रहम किया | जो - जिस | मगर | 118 | इख़तिलाफ़ करते हुए |

رَبِّكَ لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١١٩﴾ وَكُلًّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हर बात | 119 | इकटठे | और इन्सान | जिन (जमा) | से | जहन्नम | अलबत्ता भर दूँगा | तेरा रब |

نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَآءَكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तेरे पास आया | तेरा दिल | उस से | कि हम साबित करें (तसल्ली दें) | रसूल (जमा) | ख़बरें (अहवाल) | से | तुझ पर | हम बयान करते हैं |

فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो | और कह दें | 120 | मोमिनों के लिए | और याद दिहानी | और नसीहत | हक़ | इस | में |

لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ۚ اِنَّا عٰمِلُوْنَ ﴿١٢١﴾ وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम भी | और तुम इन्तिज़ार करो | 121 | काम करते हैं | हम | अपनी जगह | पर | तुम काम किए जाओ | ईमान नहीं लाते |

مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٢٢﴾ وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| काम | बाज़गशत | और उसी की तरफ़ | और ज़मीन | आस्मानों | ग़ैब | और अल्लाह के पास | 122 | मुन्तज़िर (जमा) |

كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٣﴾ ع ١٢ ١٠

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 123 | तुम करते हो | उस से जा | ग़ाफ़िल (बेख़बर) | तुम्हारा रब | और नहीं | उस पर | और भरोसा करो | सो उस की इबादत करो | तमाम |

## آيَاتُهَا ١١١ ❀ (١٢) سُوْرَةُ يُوْسُفَ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٢

रुकुआत 12 — (12) सूरह यूसुफ़ यूसुफ़ (अ) — आयात 111

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿١﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अरबी | कुरआन | उसे नाज़िल किया | बेशक हम ने | 1 | रौशन | किताब | आयतें | यह | अलिफ़ लाम रा |

لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢﴾ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस लिए कि | क़िस्सा | बहुत अच्छा | तुम पर | बयान करते हैं | हम | 2 | समझो | ताकि तुम |

اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता-से | इस से क़ब्ल | तू था | और तहक़ीक़ | कुरआन | यह | तुम्हारी तरफ़ | हम ने भेजा |

الْغٰفِلِيْنَ ﴿٣﴾ اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ يٰٓاَبَتِ اِنِّيْ رَاَيْتُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मैं ने देखा | बेशक मैं | ऐ मेरे बाप | अपने बाप से | यूसुफ़ (अ) | कहा | जब | 3 | बेख़बर (जमा) |

اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ ﴿٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | सिजदा करते | अपने लिए | मैं ने उन्हें देखा | और चाँद | और सूरज | सितारे | ग्यारह (11) |

और अगर तेरा रब चाहता तो लोगों को एक (ही) उम्मत कर देता और वह हमेशा इख़तिलाफ़ करते रहेंगे। (118)
मगर जिस पर तेरे रब ने रहम किया, और उसी लिए उन्हें पैदा किया, और पूरी हुई तेरे रब की बात, अलबत्ता जहन्नम को भर दूँगा जिन्नों और इन्सानों से इकटठे। (119)
और हर बात हम तुम से रसूलों के अहवाल की बयान करते हैं ताकि उस से तुम्हारे दिल को तसल्ली दें, और तुम्हारे पास आया इस में हक़, और मोमिनों के लिए नसीहत और याद दिहानी। (120)
और उन लोगों को कह दें जो ईमान नहीं लाते, तुम अपनी जगह काम किए जाओ, हम (अपनी जगह) काम करते हैं। (121)
और तुम इन्तिज़ार करो, हम भी मुन्तजिर हैं। (122)
और अल्लाह के पास है आस्मानों और ज़मीन के ग़ैब (छुपी हुई बातें), और उस की तरफ़ तमाम कामों की बाज़गशत है, सो उस की इबादत करो, और उस पर भरोसा करो, और तुम्हारा रब उस से बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (123)
अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है
अलिफ़-लाम-रा, यह रौशन किताब की आयतें हैं। (1)
बेशक हम ने उसे कुरआन अरबी जबान में नाज़िल किया, ताकि तुम समझो। (2)
हम तुम पर बहुत अच्छा क़िस्सा बयान करते हैं, इस लिए कि हम ने तुम्हारी तरफ़ यह कुरआन भेजा और तहक़ीक़ तुम उस से क़ब्ल अलबत्ता बेख़बरों में से थे। (3)
(याद करो) जब यूसुफ़ (अ) ने अपने बाप से कहा, ऐ मेरे बाप! बेशक मैं ने ग्यारह (11) सितारों और सूरज चाँद को (सपने में) देखा, मैं ने उन्हें अपने लिए सिजदा करते देखा। (4)

قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰٓى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तेरे लिए | वह चाल चलेंगे | अपने भाई | पर (से) | अपना ख़्वाब | न बयान करना | ऐ मेरे बेटे | उस ने कहा |

كَيْدًا ۗ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٥﴾ وَكَذٰلِكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उसी तरह | 5 | खुला | दुश्मन | इन्सान के लिए (का) | शैतान | बेशक | कोई चाल |

يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी नेमत | और मुकम्मल करेगा | बातों | अन्जाम निकालना | से | और सिखाएगा तुझे | तेरा रब | चुन लेगा तुझे |

عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا عَلٰٓى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस से पहले | तेरे बाप दादा | पर | उस ने उसे पूरा किया | जैसे | याक़ूब (अ) के घर वाले | और पर | तुझ पर |

ع ١ ٦ ١١ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ ۗ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٦﴾ لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यूसुफ़ (अ) | में | बेशक है | 6 | हिक्मत वाला | इल्म वाला | तेरा रब | बेशक | और इसहाक़ (अ) | इब्राहीम (अ) |

وَاِخْوَتِهٖٓ اٰيٰتٌ لِّلسَّآئِلِيْنَ ﴿٧﴾ اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ اَحَبُّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़ियादा प्यारा | और उस का भाई | ज़रूर यूसुफ़ (अ) | उन्हों ने कहा | जब | 7 | पूछने वालों के लिए | निशानियां | और उस के भाई |

اِلٰٓى اَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ۗ اِنَّ اَبَانَا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِ ۚ ﴿٨﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | सरीह | अलबत्ता ग़लती में | हमारा बाप | बेशक | एक जमाअ़त | जब कि हम | हम से | हमारा बाप | तरफ़ (को) |

اقْتُلُوْا يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ اَبِيْكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे बाप | मुँह (तवज्जुह) | तुम्हारे लिए | ख़ाली हो जाए | किसी सर ज़मीन | उसे डाल आओ | या | यूसुफ़ (अ) | मार डालो |

وَتَكُوْنُوْا مِنْ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ﴿٩﴾ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| न क़त्ल करो | उन से | एक कहने वाला | कहा | 9 | नेक (जमा) | लोग | उस के बाद | से | और तुम हो जाओ |

يُوْسُفَ وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चलता (मुसाफ़िर) | कोई | उठाले उस को | कुआं | अन्धा (गहरा) | में | और उसे डाल आओ | यूसुफ़ (अ) |

اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿١٠﴾ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰى يُوْسُفَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यूसुफ़ (अ) | पर (बारे में) | तू हमारा भरोसा नहीं करता | क्या हुआ तुझे | ऐ हमारे अब्बा | कहने लगे | 10 | तुम करने वाले हो (करना ही है) | अगर |

وَاِنَّا لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ ﴿١١﴾ اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَاِنَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बेशक हम | और खेले कूदे | वह खाए | कल | हमारे साथ | उसे भेज दे | 11 | अलबत्ता ख़ैर ख़्वाह | उस के | और बेशक हम |

لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿١٢﴾ قَالَ اِنِّيْ لَيَحْزُنُنِيْٓ اَنْ تَذْهَبُوْا بِهٖ وَاَخَافُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और मैं डरता हूँ | उसे | तुम लेजाओ | कि | ग़मगीन करता है | बेशक मुझे | उस ने कहा | 12 | अलबत्ता मुहाफ़िज़ | उस के |

اَنْ يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَاَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُوْنَ ﴿١٣﴾ قَالُوْا لَئِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर | वह बोले | 13 | बेख़बर (जमा) | उस से | और तुम | भेड़िया | उसे खाजाए | कि |

اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّآ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿١٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 14 | ज़ियांकार | उस सूरत में | बेशक हम | एक जमाअत | और हम | भेड़िया | उसे खा जाए |

उस ने कहा ऐ मेरे बेटे! अपना सपना अपने भाइयों से बयान न करना कि वह तेरे लिए कोई चाल चलेंगे, बेशक शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है। (5) और तेरा रब उसी तरह तुझे चुन लेगा, और तुझे सिखाएगा बातों का अन्जाम निकालना (ख़्वाबों की ताबीर) और तुझ पर अपनी नेमत पूरी करेगा, और याक़ूब (अ) के घर वालों पर, जैसे उस ने इस से पहले तेरे बाप दादा इब्राहीम (अ) और इसहाक़ (अ) पर उसे पूरा किया, बेशक तेरा रब इल्म वाला, हिक्मत वाला है। (6) बेशक यूसुफ़ (अ) और उस के भाइयों में पूछने वालों के लिए खुली निशानियां हैं। (7) जब उन्हों ने कहा ज़रूर यूसुफ़ (अ) और उस का भाई हमारे बाप को हम से ज़्यादा प्यारे हैं, जब कि हम एक जमाअ़त (क़वी) हैं, बेशक हमारे अब्बा सरीह ग़लती में हैं। (8) यूसुफ़ (अ) को मार डालो, या उसे किसी सर ज़मीन में डाल आओ कि तुम्हारे बाप की तवज्जुह तुम्हारे लिए ख़ाली (ख़ास) हो जाए, और तुम उस के बाद (हो जाना) उस के बाद नेक लोग। (9) उन में से एक कहने वाले ने कहा, यूसुफ़ (अ) को क़त्ल न करो, और उसे डाल आओ अन्धे कुएं में कि उसे कोई मुसाफ़िर उठा ले (जाए), अगर तुम्हें करना ही है। (10) कहने लगे ऐ हमारे अब्बा! तुझे क्या हुआ है? तू यूसुफ़ (अ) के बारे में हमारा एतिबार नहीं करता, और बेशक हम तो उस के ख़ैर ख़्वाह हैं। (11) कल उसे हमारे साथ भेजदे वह (जंगल के फल) खाए और खेले कूदे, और बेशक हम उस के मुहाफ़िज़ हैं। (12) उस ने कहा बेशक मुझे यह ग़मगीन (फ़िक्रमन्द) करता है कि तुम उसे ले जाओ और मैं डरता हूँ कि उसे भेड़िया खाजाए, और तुम उस से बेख़बर रहो। (13) वह बोले अगर उसे भेड़िया खाजाए जब कि हम एक क़वी जमाअत हैं, उस सूरत में बेशक हम ज़ियांकार ठहरे। (14)

फिर जब वह उसे लेगए और उन्हों ने इत्तिफ़ाक़ कर लिया कि उसे अन्धे कुआं में डालदें, और हम ने उस की तरफ़ वहि भेजी कि तू उन्हें उन के इस काम को ज़रूर जताएगा और वह न जानते (तुझे न पहचानते) होंगे। (15)
और अन्धेरा पड़े वह अपने बाप के पास रोते हुए आए। (16)
बोले! ऐ हमारे अब्बा! हम लगे दौड़ने आगे निकलने को, और हम ने यूसुफ़ (अ) को अपने असबाब के पास छोड़ दिया तो उसे भेड़िया खागया, और तू नहीं हम पर बावर करने वाला अगरचे हम सच्चे हों। (17)
और वह उस की क़मीस़ पर झूटा ख़ून (लगा कर) लाए, उस ने कहा (नहीं) बल्कि तुम्हारे लिए तुम्हारे दिलों ने एक बात बना ली है, पस (सब्र) ही अच्छा है और जो तुम बयान करते हो उस पर अल्लाह (ही) से मदद चाहता हूँ। (18)
और (उधर) एक क़ाफ़िला आया, पस उन्हों ने अपना पानी भरने वाला भेजा, उस ने अपना डोल डाला, उस ने कहा, आहा ख़ुशी की बात है, यह एक लड़का है और उन्हों ने उसे माले तिजारत समझ कर छुपा लिया, और अल्लाह ख़ूब जानता है जो वह करते थे। (19)
और उन्हों ने उसे बेच दिया खोटे दामों गिनती के चन्द दिरहमों में, और वह उस से बेज़ार हो रहे थे। (20)
और मिसर के जिस शख़्स ने उस को ख़रीदा उस ने कहा अपनी औरत कोः इसे इज़्ज़त ओ इकराम से रख, शायद कि हमें नफ़ा पहुँचाए, या हम इसे बेटा बना लें, और इस तरह हम ने यूसुफ़ (अ) को मुल्क (मिसर) में जगह दी, और ताकि हम उसे बातों का अन्जाम निकालना (ख़्वाबों की ताबीर) सिखाएं और अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (21)
और जब वह (यूसुफ़ अ) अपनी कुव्वत (जवानी) को पहुँच गया हम ने उसे हुक्म और इल्म अता किया, और उसी तरह हम नेकी करने वालों को जज़ा देते हैं। (22)

فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَاَجْمَعُوْٓا اَنْ يَّجْعَلُوْهُ فِیْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुआं | अन्धा | में | उसे डालदें | कि | और उन्हों ने इत्तिफ़ाक़ कर लिया | वह उस को ले गए | फिर जब |

وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15 | न जानते होंगे | और वह | उस | उन का काम | कि तू उन्हें ज़रूर जताएगा | उस की तरफ़ | और हम ने वहि भेजी |

وَجَآءُوْٓ اَبَاهُمْ عِشَآءً يَّبْكُوْنَ ﴿١٦﴾ قَالُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّا ذَهَبْنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दौड़ने गए | हम | ऐ हमारे अब्बा | वह बोले | 16 | रोते हुए | अन्धेरा पड़े | अपने बाप के पास | और वह आए |

نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَمَآ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं | भेड़िया | तो उसे खागया | अपना असबाब | पास | यूसुफ़ (अ) | और हम ने छोड़ दिया | आगे निकलने |

اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰدِقِيْنَ ﴿١٧﴾ وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ الثلثة

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की क़मीस | पर | और वह आए (लाए) | 17 | सच्चे | और ख़्वाह हों हम | हम पर | बावर करने वाला | तू |

بِدَمٍ كَذِبٍ ۗ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ۗ فَصَبْرٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस सब्र | एक बात | तुम्हारे दिल | तुम्हारे लिए | बना ली | बल्कि | उस ने कहा | झूटा | ख़ून के साथ |

جَمِيْلٌ ۗ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾ وَجَآءَتْ سَيَّارَةٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक क़ाफ़िला | और आया | 18 | जो तुम बयान करते हो | पर | मदद चाहता हूँ | और अल्लाह | अच्छा |

فَاَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَهٗ ۗ قَالَ يٰبُشْرٰى هٰذَا غُلٰمٌ ۗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक लड़का | यह | आहा - ख़ुशी की बात | उस ने कहा | अपना डोल | पस उस ने डाला | अपना पानी भरने वाला | पस उन्हों ने भेजा |

وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ ۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَشَرَوْهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने उसे बेच दिया | 19 | वह करते थे | उसे जो | जानने वाला | और अल्लाह | माले तिजारत समझ कर | और उसे छुपा लिया |

بِثَمَنٍۢ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ ۚ وَكَانُوْا فِيْهِ مِنَ الزّٰهِدِيْنَ ﴿٢٠﴾ ع ۲ ۱۲

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | बेरग़बत, बेज़ार | से | उस में | और वह थे | गिनती के | दिरहम | खोटे | दाम |

وَقَالَ الَّذِى اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ لِامْرَاَتِهٖٓ اَكْرِمِىْ مَثْوٰىهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उसे इज़्ज़त ओ इकराम से रख | अपनी औरत को | मिसर | से | उसे ख़रीदा | वह जो, जिस | और बोला |

عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ۗ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यूसुफ़ (अ) को | हम ने जगह दी | और इस तरह | बेटा | हम उसे बना लें | या | हम को नफ़ा पहुँचाए | कि | शायद |

فِى الْاَرْضِ ۡ وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۗ وَاللّٰهُ غَالِبٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग़ालिब | और अल्लाह | बातें | अन्जाम निकालना | से | और ताकि उसे सिखाएं | ज़मीन (मुल्क) | में |

عَلٰٓى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢١﴾ وَلَمَّا بَلَغَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पहुँच गया | और जब | 21 | नही जानते | लोग | अक्सर | और लेकिन | अपने काम पर |

اَشُدَّهٗٓ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ۗ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 22 | नेकी करने वाले | हम जज़ा देते हैं | और उसी तरह | और इल्म | हुक्म | हम ने उसे अता किया | अपनी कुव्वत |

وَرَاوَدَتْهُ الَّتِىْ هُوَ فِىْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दरवाज़े | और बन्द कर दिए | अपने आप को रोकने से | उस का घर | में | उस | वह औरत जो | और उसे फुसलाया |

وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّىْۤ اَحْسَنَ مَثْوَاىَ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और रहना सहना | बहुत अच्छा | मेरा मालिक | बेशक वह | अल्लाह की पनाह | उस ने कहा | आजा जल्दी कर | और बोली |

اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا ۚ لَوْلَاۤ اَنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | अगर न होता | उस का | और वह इरादा करते | उस का | और बेशक उस औरत ने इरादा किया | 23 | ज़ालिम (जमा) | भलाई नहीं पाते | बेशक |

رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बेहयाई | बुराई | उस से | हम ने फेर दिया | उसी तरह | अपना रब | दलील | वह देखे |

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और औरत ने फाड़ दी | दरवाज़ा | और दानों दौड़े | 24 | बरगुज़ीदा | हमारे बन्दे | से | बेशक वह |

قَمِيْصَهٗ مِنْ دُبُرٍ وَّاَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ؕ قَالَتْ مَا جَزَآءُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या सज़ा? | वह कहने लगी | दरवाज़े के पास | औरत का खावन्द | और दोनों को मिला | पीछे से | उस की क़मीस |

مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا اِلَّاۤ اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٥﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 25 | दर्दनाक अज़ाब | या | क़ैद किया जाए | यह कि | सिवाए | बुराई | तेरी बीवी से | इरादा किया | जो - जिस |

قَالَ هِىَ رَاوَدَتْنِىْ عَنْ نَّفْسِىْ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ اَهْلِهَا ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के लोग | से | एक गवाह | और गवाही दी | मेरा नफ़्स | से | मुझे फुसलाया | उस | उस ने कहा |

اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 26 | झूटे | से | और वह | तो वह सच्ची | आगे से | फटी हुई | उस की क़मीस | है | अगर |

وَاِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | और वह | तो वह झूटी | पीछे से | फटी हुई | उस की क़मीस | है | और अगर |

الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٧﴾ فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ مِنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | बेशक यह | उस ने कहा | पीछे से | फटी हुई | उस की क़मीस | देखा | तो जब | 27 | सच्चे |

كَيْدِكُنَّ ؕ اِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾ يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ٚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस | से को | जाने दे | यूसुफ़ (अ) | 28 | बड़ा | तुम्हारा फ़रेब | बेशक | तुम औरतों का फ़रेब |

٣ ع ٩ ١٢ وَاسْتَغْفِرِىْ لِذَنْۢبِكِ ۚ اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـِٕيْنَ ﴿٢٩﴾ وَقَالَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और कहा | 29 | ख़ताकार (जमा) | में | तू है | बेशक तू | अपने गुनाह की | और ऐ औरत बख़्शिश मांग |

نِسْوَةٌ فِى الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| से | अपना गुलाम | फुसला रही है | अज़ीज़ की बीवी | शहर में | औरतें |

نَّفْسِهٖ ۚ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ؕ اِنَّا لَنَرٰىهَا فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | खुली | गुमराही | में | बेशक हम उसे देखती हैं | उस की मुहब्बत | जगह पकड़ गई है | उस का नफ़्स |

उसे (यूसुफ़ अ को) उस औरत ने फुसलाया वह जिस के घर में थे अपने आप को रोकने (क़ाबू रखने) से, और दरवाज़े बन्द कर दिए और बोली आजा जल्दी कर, उस ने कहा अल्लाह की पनाह! बेशक वह (अज़ीज़े मिस्र) मेरा मालिक है, उस ने मेरा रहना सहना बहुत अच्छा (रखा), बेशक ज़ालिम भलाई नहीं पाते। (23)

और बेशक उस औरत ने उस का इरादा किया और वह भी उस का इरादा करते, अगर यह न होता कि वह अपने रब की दलील देख लेते, उस तरह हम ने उस से फेर दी बुराई और बेहयाई, बेशक वह हमारे बरगुज़ीदा बन्दों में से था। (24)

और दोनों दरवाज़े की तरफ़ दौड़े, और उस औरत ने उस की क़मीस फाड़ दी पीछे से, और दोनों को उस का खाविन्द दरवाज़े के पास मिला, वह कहने लगी उस की क्या सज़ा जिस ने तेरी बीवी से बुरा इरादा किया? सिवाए उस के कि वह क़ैद किया जाए या दर्दनाक अज़ाब दिया जाए। (25)

उस (यूसुफ़ अ) ने कहा उस ने मुझे मेरे नफ़्स (की हिफ़ाज़त) से फुसलाया और गवाही दी उस के लोगों में से एक गवाह ने कि अगर उस की क़मीस आगे से फटी हुई है तो वह सच्ची है और वह (यूसुफ़ अ) झूटों में से है (26)

और अगर उस की क़मीम पीछे से फटी हुई है तो वह झूटी है और वह (यूसुफ़ अ) सच्चों में से है। (27)

तो जब उस की क़मीस पीछे से फटी हुई देखी तो उस ने कहा यह तुम औरतों का फरेब है, बेशक तुम्हारा फ़रेब बड़ा है। (28)

यूसुफ़ (अ)! उस (ज़िक्र) को जाने दे और ऐ औरत! अपने गुनाह की बख़्शिश मांग, बेशक तू ही खताकारों में से है। (29)

और शहर में औरतों ने कहा, अजीज की बीवी ने फुसलाया है अपने गुलाम को उस के नफ़्स (की हिफ़ाज़त) से, उस की मुहब्बत (उस के दिल में) जगह पकड़ गई है, बेशक हम उसे खुली गुमराही में देखती हैं। (30)

फिर जब उस ने उन के फ़रेब (का ज़िक्र) सुना तो उन्हें दावत भेजी, और उन के लिए एक महफ़िल तैयार की, और (फल काटने को) दी उन में से हर एक को एक एक छुरी, और कहा उन के सामने निकल आ, फिर जब उन्हों ने (यूसुफ़ अ) को देखा उन पर उस का रुअब (हुस्न) छागया और उन्हों ने (फलों की जगह) अपने हाथ काट लिए और कहने लगीं अल्लाह की पनाह! यह बशर नहीं, मगर यह तो बुज़ुर्ग फ़रिश्ता है। (31) वह बोली सो यह वही है जिस (के बारे) में तुम ने मुझे मलामत की, और मैं ने उसे उस के नफ़्स (की हिफ़ाज़त से) फुसलाया, तो उस ने (अपने आप को) बचा लिया और जो मैं कहती हूँ अगर उस ने ना किया तो अलबत्ता वह क़ैद कर दिया जाएगा और बेइज़्ज़त लोगों में से होगा। (32) उस (यूसुफ़ अ) ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे क़ैद उस से ज़ियादा पसन्द है जिस की तरफ़ वह मुझे बुलाती हैं, अगर तू ने मुझ से उन का फ़रेब न फेरा तो मैं माइल हो जाऊंगा उन की तरफ़, और जाहिलों में से हूँगा। (33) सो उस के रब ने उस की दुआ क़ुबूल करली, पस उस से उन का फ़रेब फेर दिया, बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। (34) फिर निशानियां देख लेने के बाद उन्हें सूझा कि उसे ज़रूर क़ैद में डाल दें एक मुद्दत तक। (35) और उस के साथ दो जवान क़ैद ख़ाने में दाख़िल हुए, उन में से एक ने कहा बेशक मैं (ख़्वाब में) देखता हूँ कि मैं शराब निचोड़ रहा हूँ, और दूसरे ने कहा बेशक मैं (ख़्वाब में) देखता हूँ कि अपने सर पर रोटी उठाए हुए हूँ, परिन्दे उस से खा रहे हैं, हमें उस की ताबीर बतलाइए, बेशक हम आप को नेकोकारों में से देखते हैं। (36) उस (यूसुफ़ अ) ने कहा तुम्हारे पास खाना नहीं आएगा जो तुम्हें दिया जाता है, मगर मैं तुम्हें उस की ताबीर तुम्हारे पास उस के आने से पहले बतलादूंगा, यह उस (इल्म) से है जो मेरे रब ने मुझे सिखाया है, बेशक मैं ने उस क़ौम का दीन छोड़ दिया जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, और वह (रोज़े) आख़िरत से इन्कार करते हैं। (37)

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ وَاَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَاً

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक महफ़िल | उन के लिए | और तैयार की | उन की तरफ़ | दावत भेजी | उन का फ़रेब | उस ने सुना | फिर जब |

وَّاٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर जब | उन पर (उनके सामने) | निकल आ | और कहा | एक एक छुरी | उन में से | हर एक को | और दी |

رَاَيْنَهٗٓ اَكْبَرْنَهٗ وَقَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ۘ وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बशर | नही यह | अल्लाह की | पनाह | और कहने लगीं | अपने हाथ | और उन्हों ने काट लिए | उन पर उस का रुअ़ब छागया | उन्हों ने उसे देखा |

اِنْ هٰذَآ اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ ﴿٣١﴾ قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِىْ لُمْتُنَّنِىْ فِيْهِ ؕ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | तुम ने मलामत की मुझे | जो कि | सो यह वही है | वह बोली | 31 | बुज़ुर्ग | फ़रिश्ता | मगर | यह | नहीं |

وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ؕ وَلَئِنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَآ اٰمُرُهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मैं कहती हूँ उसे | जो | उस ने न किया | और अगर | तो उस ने बचा लिया | उस का नफ़्स | से | और मैं ने उसे फुसलाया |

لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़ियादा पसन्द | क़ैद | ऐ मेरे रब | उस ने कहा | 32 | बेइज़्ज़त (जमा) | से | और अलबत्ता होजाएगा | अलबत्ता क़ैद कर दिया जाएगा |

اِلَىَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِىْٓ اِلَيْهِ ۚ وَاِلَّا تَصْرِفْ عَنِّىْ كَيْدَهُنَّ اَصْبُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| माइल हो जाऊंगा | उन का फ़रेब | मुझ से | और अगर न फेरा | उस की तरफ़ | मुझे बुलाती हैं | उस में जो | मुझ को |

اِلَيْهِنَّ وَاَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٣٣﴾ فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से | पस फेर दिया | उस का रब | उस की (दुआ) | सो क़ुबूल कर ली | 33 | जाहिल (जमा) | से | और मैं हूँगा | उन की तरफ़ |

كَيْدَهُنَّ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٤﴾ ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने देखी | जब | बाद | उस के | उन्हें सूझा | फिर | 34 | जानने वाला | सुनने वाला | वह | बेशक वह | उन का फ़रेब |

الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٣٥﴾ وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ ؕ قَالَ ع ٤ ١٢

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कहा | दो जवान | क़ैद ख़ाना | उस के साथ | और दाख़िल हुए | 35 | एक मुद्दत तक | उसे ज़रूर क़ैद में डालें | निशानियां |

اَحَدُهُمَآ اِنِّىْٓ اَرٰىنِىْٓ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ وَقَالَ الْاٰخَرُ اِنِّىْٓ اَرٰىنِىْٓ اَحْمِلُ فَوْقَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऊपर | उठाए हुए हूँ | मैं देखता हूँ | दूसरा | और कहा | शराब | निचोड़ रहा हूँ | बेशक मैं देखता हूँ | उन में से एक |

رَاْسِىْ خُبْزًا تَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ؕ نَبِّئْنَا بِتَاْوِيْلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | बेशक हम तुझे देखते हैं | उस की ताबीर | हमें बतलाइए | उस से | परिन्दे | खा रहे हैं | रोटी | अपना सर |

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٦﴾ قَالَ لَا يَاْتِيْكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖٓ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मैं तुम्हें बतलादूंगा | मगर | जो तुम्हें दिया जाता है | खाना | तुम्हारे पास नही आएगा | उस ने कहा | 36 | नेकोकार (जमा) |

بِتَاْوِيْلِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّاْتِيَكُمَا ؕ ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِىْ رَبِّىْ ؕ اِنِّىْ تَرَكْتُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मैं ने छोड़ा | बेशक मैं | मेरा रब | मुझे सिखाया | उस से जो | यह | वह आए तुम्हारे पास | कि | क़ब्ल | उस की ताबीर |

مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 37 | इन्कार करते हैं | वह | आख़िरत से | और वह | अल्लाह पर | जो ईमान नहीं लाते | वह क़ौम | दीन |

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَآءِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ مَا كَانَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नही है | और याक़ूब (अ) | और इसहाक़ (अ) | इब्राहीम (अ) | अपने बाप दादा | दीन | और मैं ने पैरवी की |

لَنَآ اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम पर | अल्लाह का फ़ज़्ल | से | यह | कोई - किसी शै | अल्लाह का | हम शरीक ठहराएं | कि | हमारे लिए |

وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٨﴾ يٰصَاحِبَيِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ मेरे साथियो! | 38 | शुक्र अदा नही करते | लोग | अक्सर | और लेकिन | और लोगों पर |

السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٣٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 39 | ज़बरदस्त - ग़ालिब | एक, यकता | या अल्लाह | बेहतर | जुदा जुदा | क्या कई माबूद | क़ैद ख़ाना |

مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اَسْمَآءً سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम | तुम ने रख लिए है | नाम | मगर | उस के सिवा | तुम पूजते | नही |

وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह का | मगर | हुक्म | नही | कोई सनद | उस के लिए | अल्लाह ने उतारी | नहीं | और तुम्हारे बाप दादा |

اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और लेकिन | सीधा दीन | यह | सिर्फ़ उस की | मगर | इबादत करो तुम | कि न | उस ने हुक्म दिया |

اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٠﴾ يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ اَمَّآ اَحَدُكُمَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम में से एक | जो | क़ैद ख़ाना | ऐ मेरे साथियो | 40 | नहीं जानते | अक्सर लोग |

فَيَسْقِيْ رَبَّهٗ خَمْرًا وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَاْكُلُ الطَّيْرُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| परिन्दे | पस खाएंगे | तो सूली दिया जाएगा | दूसरा | और जो | शराब | अपना मालिक | सो वह पिलाएगा |

مِنْ رَّاْسِهٖ قُضِيَ الْاَمْرُ الَّذِيْ فِيْهِ تَسْتَفْتِيٰنِ ﴿٤١﴾ وَقَالَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और कहा | 41 | तुम पूछते थे | उस में | वह जो | काम - बात | फ़ैसला हो चुका | उस के सर से |

لِلَّذِيْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِيْ عِنْدَ رَبِّكَ فَاَنْسٰىهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस उस को भुला दिया | अपना मालिक | पास | मेरा ज़िक्र करना | उन दोनों से | बचेगा वह | कि वह | उस ने गुमान किया | उस से जिस |

ع ٥ ١٥ الشَّيْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِيْنَ ﴿٤٢﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 42 | चन्द बरस | क़ैद में | तो रहा | अपने मालिक से ज़िक्र करना | शैतान |

وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّيْٓ اَرٰى سَبْعَ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह खाती है | मोटी ताज़ी | गाएं | सात | मैं देखता हूँ | कि मैं | बादशाह | और कहा |

سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ मेरे सरदारो | ख़ुश्क | और दूसरे | सब्ज़ | ख़ोशे | और सात | दुबली पतली | सात |

اَفْتُوْنِيْ فِيْ رُءْيَايَ اِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُوْنَ ﴿٤٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 43 | तावीर देने वाले | ख़्वाब की | तुम हो | अगर | मेरे ख़्वाब | में (की) | बतलाओ मुझे तावीर |

और मैं ने अपने बाप दादा इब्राहीम (अ), और इसहाक़ (अ) और याक़ूब (अ) के दीन की पैरवी की, हमारा (काम) नहीं कि हम शरीक ठहराएं अल्लाह का किसी शै को, यह हम पर और लोगों पर अल्लाह का फ़ज़्ल है, लेकिन अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते। (38)

ऐ मेरे क़ैद के साथियो! क्या जुदा जुदा कई माबूद बेहतर हैं? या एक अल्लाह? (सब पर) ग़ालिब। (39)

उस के सिवा तुम कुछ नहीं पूजते मगर नाम हैं जो तुम ने रख लिए (तराश लिए) हैं, और तुम्हारे बाप दादा ने, अल्लाह ने उन की कोई सनद नहीं उतारी, हुक्म सिर्फ़ अल्लाह का है, उस ने हुक्म दिया कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो, यह सीधा दीन है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (40)

ऐ मेरे क़ैद ख़ाने के साथियो! तुम में से एक अपने मालिक को शराब पिलाएगा, और जो दूसरा है तो सूली दिया जाएगा, पस परिन्दे उस के सर से खाएंगे। उस बात का फ़ैसला हो चुका जिस (के बारे) में तुम पूछते थे। (41)

और यूसुफ़ (अ) ने उन दोनों में से जिस (के मुतअ़ल्लिक़) गुमान किया कि वह बचेगा, उस से कहा अपने मालिक के पास मेरा ज़िक्र करना, पस शैतान ने उसे भुला दिया अपने मालिक से उस का ज़िक्र करना, तो वह क़ैद में चन्द बरस रहा। (42)

और बादशाह ने कहा कि मैं देखता हूँ सात मोटी ताज़ी गाएं, उन्हें सात दुबली पतली गाएं खा रही हैं, और सात सब्ज़ ख़ोशे और दूसरे ख़ुश्क, ऐ सरदारो! मुझे मेरे ख़्वाब की तावीर बतलाओ, अगर तुम ख़्वाब की तावीर देने वाले हो (तावीर देना जानते हो)। (43)

उन्हों ने कहा (यह) परेशान ख़्वाब हैं और हम (ऐसे) ख़्वाबों की ताबीर जानने वाले नहीं (नहीं जानते)। (44) और वह जो उन दोनों (में) से बचा था और उसे एक मुद्दत के बाद याद आया, उस ने कहा मैं तुम्हें उस की ताबीर बतलाऊंगा, सो मुझे भेज दो। (45) ऐ यूसुफ़ (अ)! ऐ बड़े सच्चे! हमें (ख़्वाब की ताबीर) बता, सात मोटी ताज़ी गायों को खा रही हैं सात दुबली पतली गाएं, और सात ख़ोशे सब्ज़ हैं और दूसरे ख़ुश्क, ताकि मैं लोगों के पास लौट कर जाऊं शायद वह आगाह हों। (46) उस ने कहा तुम सात साल लगातार खेती बाड़ी करोगे, फिर जो तुम काटो तो उसे उस के ख़ोशे में छोड़ दो, मगर थोड़ा जितना तुम उस में से खालो। (47) फिर उस के बाद आएंगे सात (7) सख़्त साल, वह खा जाएंगे जो तुम ने उन के लिए (बचा) रखा, सिवाए उस के जो तुम थोड़ा बचाओगे। (48) फिर उस के बाद एक साल आएगा उस में लोगों पर बारिश बरसाई जाएगी और वह उस में (रस) निचोड़ेंगे। (49) और बादशाह ने कहा उसे मेरे पास ले आओ, पस जब क़ासिद उस के पास आया तो उस ने कहा अपने मालिक के पास लौट जाओ और उस से पूछो उन औरतों का क्या हाल है? जिन्हों ने अपने हाथ काटे थे, बेशक मेरा रब उन के फ़रेब से ख़ूब वाक़िफ़ है। (50) बादशाह ने (उन औरतों से) कहा तुम्हारा क्या हाल (वाक़िआ) था जब तुम ने यूसुफ़ (अ) को उस के नफ़्स (की हिफ़ाज़त) से फुसलाया वह बोलीं अल्लाह की पनाह! हम ने उस में कोई बुराई नहीं मालूम की (नहीं पाई) अज़ीज़े (मिसर) की औरत बोली अब हक़ीक़त ज़ाहिर हो गई है, मैं ने (ही) उसे उस के नफ़्स (की हिफ़ाज़त) से फुसलाया और वह बेशक सच्चों में से है (सच्चा है)। (51) (यूसुफ़ अ ने कहा) यह (इस लिए था) ताकि वह जान ले कि मैं ने पीठ पीछे उस की ख़ियानत नहीं की, और बेशक अल्लाह चलने नहीं देता दग़ाबाज़ों का फ़रेब। (52)

قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ ۚ وَمَا نَحْنُ بِتَاْوِيْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 44 | जानने वाले | ख़्वाब (जमा) | ताबीर देना | हम | और नहीं | ख़्वाब | परेशान | उन्हों ने कहा |

وَقَالَ الَّذِيْ نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِيْلِهٖ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की ताबीर | मैं बतलाऊंगा तुम्हें | एक मुद्दत | बाद | और उसे याद आया | उन दो से | बचा | वह जो | और उस ने कहा |

فَاَرْسِلُوْنِ ﴿٤٥﴾ يُوْسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ اَفْتِنَا فِيْ سَبْعِ بَقَرٰتٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गाएं | सात | में | हमें बता | ऐ बड़े सच्चे | ऐ यूसुफ़ (अ) | 45 | सो मुझे भेज दो |

سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعِ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और दूसरे | सब्ज़ | ख़ोशे | और सात | दुबली पतली | सात | वह खा रही हैं | मोटी ताज़ी |

يٰبِسٰتٍ ۙ لَّعَلِّيْٓ اَرْجِعُ اِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَ تَزْرَعُوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| खेती बाड़ी करोगे | उस ने कहा | 46 | आगाह हों | शायद वह | लोगों की तरफ़ (पास) | मैं लौटूं | ताकि | ख़ुश्क |

سَبْعَ سِنِيْنَ دَاَبًا ۚ فَمَا حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْۢبُلِهٖٓ اِلَّا قَلِيْلًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| थोड़ा जितना | मगर | उस के ख़ोशे में | तो उसे छोड़ दो | तुम काटो | फिर जो | लगातार | साल | सात |

مِّمَّا تَاْكُلُوْنَ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَّاْكُلْنَ مَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | खाजाएंगे | सख़्त | सात | उस के बाद में | आएंगे | फिर | 47 | तुम खाओ | से जो |

قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تُحْصِنُوْنَ ﴿٤٨﴾ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के बाद | आएगा | फिर | 48 | तुम बचाओगे | से - जो | थोड़ा सा | सिवाए | उन के लिए | तुम ने रखा |

عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيْهِ يَعْصِرُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ　ع ٦ ١٦

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरे पास ले आओ | बादशाह | और कहा | 49 | वह निचोड़ेंगे | और उस में | लोग | बारिश बरसाई जाएगी | उस में | एक साल |

بِهٖ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ فَسْــَٔلْهُ مَا بَالُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या हाल? | पस उस से पूछो | अपना मालिक | तरफ़ (पास) | लौट जा | उस ने कहा | क़ासिद | उस के पास आया | पस जब | उसे |

النِّسْوَةِ الّٰتِيْ قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ۗ اِنَّ رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ عَلِيْمٌ ﴿٥٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 50 | वाक़िफ़ | उन का फ़रेब | मेरा रब | बेशक | अपने हाथ | उन्हों ने काटे | वह जो | औरतें |

قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ عَنْ نَّفْسِهٖ ۗ قُلْنَ حَاشَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पनाह | वह बोलीं | उस का नफ़्स | से | यूसुफ़ (अ) | तुम ने फुसलाया | जब | क्या हाल था तुम्हारा | उस ने कहा |

لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْٓءٍ ۗ قَالَتِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़ाहिर हो गई | अब | अज़ीज़ | औरत | बोली | कोई बुराई | उस पर (में) | हम ने मालूम की | नहीं | अल्लाह की |

الْحَقُّ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٥١﴾ ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि वह जान ले | यह | 51 | सच्चे | अलबत्ता - से | और वह बेशक | उस का नफ़्स | से | उसे फुसलाया मैं ने | मैं | हक़ीक़त |

اَنِّيْ لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ ﴿٥٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 52 | दग़ाबाज़ (जमा) | फ़रेब | नहीं चलने देता | और बेशक अल्लाह | पीठ पीछे | नहीं उस की ख़ियानत की | बेशक मैं |

وَمَآ اُبَرِّئُ نَفْسِيْ ۚ اِنَّ النَّفْسَ لَاَمَّارَةٌۢ بِالسُّوْٓءِ اِلَّا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर | बुराई | सिखाने वाला | नफ़्स | बेशक | अपना नफ़्स | और पाक (बेकुसूर) नही कहता |

مَا رَحِمَ رَبِّيْ ۚ اِنَّ رَبِّيْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٥٣﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ले आओ मेरे पास | बादशाह | और कहा | 53 | निहायत मेहरबान | बख़्शने वाला | मेरा रब | बेशक | मेरा रब | जिस पर रहम किया |

بِهٖٓ اَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِيْ ۚ فَلَمَّا كَلَّمَهٗ قَالَ اِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारे पास | आज | बेशक तुम | उस ने कहा | उस से बात की | फिर जब | अपनी ज़ात के लिए | उस को खास करूँ | उस को |

مَكِيْنٌ اَمِيْنٌ ﴿٥٤﴾ قَالَ اجْعَلْنِيْ عَلٰى خَزَآئِنِ الْاَرْضِ ۚ اِنِّيْ حَفِيْظٌ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हिफ़ाज़त करने वाला | बेशक मैं | जमीन (मुल्क) | खजाने | पर | मुझे कर दे | कहा | 54 | अमीन | बाविकार |

عَلِيْمٌ ﴿٥٥﴾ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِي الْاَرْضِ ۚ يَتَبَوَّاُ مِنْهَا حَيْثُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जहां | उस से (में) | वह रहते | ज़मीन में (मुल्क पर) | यूसुफ़ (अ) को | हम ने कुदरत दी | और उसी तरह | 55 | इल्म वाला |

يَشَآءُ ۭ نُصِيْبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَآءُ وَلَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 56 | नेकी करने वाले | बदला | और हम ज़ाए नही करते | जिस को हम चाहते हैं | अपनी रहमत | हम पहुँचा देते है | चाहते वह |

ع ٨ وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَجَآءَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और आए | 57 | परहेज़गारी करते | और थे वह | ईमान लाए | उन के लिए जो | बेहतर | और आख़िरत का बदला अलबत्ता |

اِخْوَةُ يُوْسُفَ فَدَخَلُوْا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٥٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 58 | वह न पहचाने | उस को | और वह | तो उन्हें पहचान लिया | उस के पास | पस वह दाखिल हुए | यूसुफ़ (अ) | भाई |

وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُوْنِيْ بِاَخٍ لَّكُمْ مِّنْ اَبِيْكُمْ ۚ اَلَا تَرَوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या तुम नही देखते | तुम्हारे बाप से | तुम्हारा (अपना) | भाई | लाओ मेरे पास | कहा उस ने | उन का सामान | जब उन्हें तैयार कर दिया | और जब |

اَنِّيْٓ اُوْفِي الْكَيْلَ وَاَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿٥٩﴾ فَاِنْ لَّمْ تَاْتُوْنِيْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरे पास न लाए | फिर अगर | 59 | उतारने वाला (मेहमान नवाज़) | बेहतरीन | और मैं | पैमाना | पूरा करता हूँ | कि मैं |

بِهٖ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِيْ وَلَا تَقْرَبُوْنِ ﴿٦٠﴾ قَالُوْا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के मुतअल्लिक़ | हम ख़्वाहिश करेंगे | वह बोले | 60 | और न आना मेरे पास | मेरे पास | तुम्हारे लिए | तो कोई नाप नही | उस को |

اَبَاهُ وَاِنَّا لَفٰعِلُوْنَ ﴿٦١﴾ وَقَالَ لِفِتْيٰنِهِ اجْعَلُوْا بِضَاعَتَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की पूंजी | और तुम रख दो | अपने ख़िदमतगारों को | और उस ने कहा | 61 | ज़रूर करने वाले हैं (करना है) | और हम | उस का बाप |

فِيْ رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَآ اِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शायद वह | अपने लोग | तरफ़ | जब वह लौटें | उसको मालूम कर लें | शायद वह | उन के बोरों में |

يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٢﴾ فَلَمَّا رَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम से | रोक दिया गया | ऐ हमारे अब्बा | वह बोले | अपना बाप | तरफ़ | वह लौटे | पस जब | 62 | फिर आजाएं |

الْكَيْلُ فَاَرْسِلْ مَعَنَآ اَخَانَا نَكْتَلْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿٦٣﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 63 | निगहबान है | उस के | और बेशक हम | नाप (ग़ल्ला) लाएं | हमारा भाई | हमारे साथ | पस भेज दें | नाप |

और मैं अपने नफ़्स को पाक नहीं कहता, बेशक नफ़्स बुराई सिखाने वाला है, मगर जिस पर मेरे रब ने रहम किया, बेशक मेरा रब बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (53)
और बादशाह ने कहा उसे मेरे पास ले आओ कि उसे अपनी (ख़िदमत) के लिए खास करूँ, फिर जब (मलिक) ने उस से बात की कहा बेशक तुम आज हमारे पास बाविक़ार, अमीन (साहबे एतिबार) हो। (54)
उस ने कहा मुझे (मुक़र्रर) कर दे मुल्क के खजानों पर, बेशक मैं हिफ़ाजत करने वाला, इल्म वाला हूँ। (55)
और उसी तरह हम ने यूसुफ़ (अ) को मुल्क पर कुदरत दी, वह उस में जहां चाहते रहते, हम जिस को चाहते हैं अपनी रहमत पहुँचा देते है, और हम बदला ज़ाए नहीं करते नेकी करने वालों का। (56)
और जो ईमान लाए और परहेजगारी करते रहे, उन के लिए आखिरत का बदला बेहतर है। (57)
और यूसुफ़ (अ) के भाई आए, पस वह उस के पास दाखिल हुए तो उस ने उन्हें पहचान लिया और वह उस को न पहचाने। (58)
और जब उन का सामान उन्हें तैयार कर दिया तो कहा अपने भाई को मेरे पास लाओ जो तुम्हारे बाप (की तरफ़) से है, क्या तुम नहीं देखते कि मैं पैमाना पूरा (भर) कर देता हूँ और मैं बेहतरीन मेहमान नवाज हूँ। (59)
फिर अगर तुम उस को मेरे पास न लाए तो तुम्हारे लिए कोई नाप (गल्ला) नहीं मेरे पास,और न मेरे पास आना। (60)
वह बोले हम उसके बारे में उस के बाप से ख़ाहिश करेंगे और हमें (यह काम) ज़रूर करना है। (61)
और उस ने अपने ख़िदमतगारों को कहा उन की पूंजी (ग़ल्ले की क़ीमत) उन के बोरों में रख दो, शायद वह उस को मालूम कर लें जब वह लौटें अपने लोगों की तरफ़, शायद वह फिर आजाएं। (62)
पस जब वह अपने बाप की तरफ़ लौटे, बोले ऐ हमारे अब्बा! हम से नाप (ग़ल्ला) रोक दिया गया, पस हमारे साथ हमारे भाई को भेजदें कि हम गल्ला लाएं, और बेशक उसके निगहबान हैं। (63)

उस ने कहा मैं उस के मुतअ़ल्लिक़ तुम्हारा क्या एतिबार करूँ मगर जैसे इस से पहले मैं ने उस के भाई के मुतअ़ल्लिक़ तुम्हारा एतिबार किया, सो अल्लाह बेहतर निगहबान है, और वह तमाम मेहरबानों से बड़ा मेहरबान करने वाला है। (64) और जब उन्हों ने अपना सामान खोला तो उन्हों ने अपनी पूंजी पाई जो वापस कर दी गई थी उन्हें, बोले, ऐ हमारे अब्बा! (और) हम क्या चाहते हैं? यह हमारी पूंजी है, हमें लौटा दी गई है, और हम अपने घर ग़ल्ला लाएंगे और हम अपने भाई की हिफ़ाज़त करेंगे, और एक ऊंट का बोझ ज़ियादा लेंगे, यह (जो हम लाएं हैं) थोड़ा ग़ल्ला है। (65) उस ने कहा मैं उसे हरगिज़ न भेजूंगा तुम्हारे साथ, यहां तक कि तुम मुझे अल्लाह का पुख़्ता अ़हद दो कि तुम उसे मेरे पास ज़रूर ले कर आओगे, मगर यह कि तुम्हें घेर लिया जाए, फिर जब उन्हों ने उसे (याक़ूब अ) को पुख़्ता अ़हद दिया, उसने कहा जो हम कह रहे हैं उस पर अल्लाह ज़ामिन है। (66) और कहा ऐ मेरे बेटो! तुम सब दाख़िल न होना एक (ही) दरवाज़े से, (बल्कि) जुदा जुदा दरवाज़ों से दाख़िल होना, और मैं तुम्हें बचा नहीं सकता अल्लाह की किसी बात से, अल्लाह के सिवा किसी का हुक्म नहीं, उस पर मैं ने भरोसा किया, पस चाहिए उस पर भरोसा करें भरोसा करने वाले। (67) और जब वह दाख़िल हुए जहां से उन्हें उन के बाप ने हुक्म दिया था, वह उन्हें नहीं बचा सकता था अल्लाह की किसी बात से, मगर याक़ूब (अ) के दिल में एक ख़्वाहिश थी सो वह उस ने पूरी कर ली. और बेशक वह साहबे इल्म था उस का जो हम ने उसे सिखाया था, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (68) और जब वह यूसुफ़ के पास दाख़िल हुए उस ने अपने भाई को अपने पास जगह दी, कहा बेशक मैं तेरा भाई हूँ, जो वह करते थे तुम उस पर ग़मगीन न हो। (69)

قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَآ اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस से पहले | उस के भाई के मुतअ़ल्लिक़ | मैं ने तुम्हारा एतिबार किया | जैसे | मगर | उस के मुतअ़ल्लिक़ | क्या मैं तुम्हारा एतिबार करूँ | उस ने कहा |

فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۪ وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَمَّا فَتَحُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने खोला | और जब | 64 | तमाम मेहरबानों से बड़ा मेहरबानी करने वाला | और वह | निगहबान | बेहतर | सो अल्लाह |

مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ ؕ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ हमारे अब्बा | बोले | उन की तरफ़ (उन्हें) | वापस कर दी गई | अपनी पूंजी | उन्हों ने पाई | अपना सामान |

مَا نَبْغِيْ ؕ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا ۚ وَنَمِيْرُ اَهْلَنَا وَنَحْفَظُ اَخَانَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना भाई | और हम हिफ़ाज़त करेंगे | अपने घर | और हम ग़ल्ला लाएंगे | हमारी तरफ़ | लौटा दी गई | हमारी पूंजी | यह | क्या चाहते हैं हम |

وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ؕ ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌ ﴿٦٥﴾ قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हरगिज़ न भेजूंगा उसे | उस ने कहा | 65 | आसान (थोड़ा) | बोझ (ग़ल्ला) | यह | एक ऊंट | बोझ | और ज़ियादा लेंगे |

مَعَكُمْ حَتّٰى تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِيْ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह कि | मगर | तुम ले आओगे ज़रूर मेरे पास उस को | अल्लाह | से (का) | पुख़्ता अ़हद | तुम दो मुझे | यहां तक | तुम्हारे साथ |

يُّحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّآ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٦٦﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 66 | निगहबान (ज़ामिन) | जो हम कहते हैं | पर | अल्लाह | कहा उस ने | अपना पुख़्ता अ़हद | उन्हों ने उसे दिया | फिर जब | तुम्हें | घेर लिया जाए |

وَقَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| से | और दाख़िल होना | एक दरवाज़ा | से | तुम न दाख़िल होना | ऐ मेरे बेटो | और उस ने कहा |

اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ وَمَآ اُغْنِيْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| किसी चीज़ (बात) से | अल्लाह | से (की) | तुम से (को) | और मैं नहीं बचा सकता | जुदा जुदा | दरवाज़े से |

اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस चाहिए भरोसा करें | और उस पर | मैं ने भरोसा किया | उस पर | अल्लाह का | सिवा | हुक्म | नहीं |

الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَيْثُ اَمَرَهُمْ اَبُوْهُمْ ؕ مَا كَانَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं था | उन का बाप | उन्हें हुक्म दिया | जहां से | वह दाख़िल हुए | और जब | 67 | भरोसा करने वाले |

يُغْنِيْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا حَاجَةً فِيْ نَفْسِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिल | में | एक ख़्वाहिश | मगर | किसी चीज़ (बात) | से | अल्लाह | से (की) | उन से (उन्हें) | वह बचा सकता |

يَعْقُوْبَ قَضٰىهَا ؕ وَاِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अक्सर | और लेकिन | हम ने उसे सिखाया | उस का जो | साहबे इल्म | और बेशक वह | वह उसे पूरी कर ली | याक़ूब (अ) |

النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ ع ٨ ١١ ٢

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने पास | उस ने जगह दी | यूसुफ़ (अ) के पास | वह दाख़िल हुए | और जब | 68 | नहीं जानते | लोग |

اَخَاهُ قَالَ اِنِّيْٓ اَنَا اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 69 | वह करते थे | उस पर जो | सो तू ग़मगीन न हो | मैं तेरा भाई | बेशक मैं | उस ने कहा | अपना भाई |

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِىْ رَحْلِ اَخِيْهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना भाई | सामान | में | पीने का प्याला | रख दिया | उन का सामान | उन्हें तैयार कर दिया | फिर जब |

ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَيَّتُهَا الْعِيْرُ اِنَّكُمْ لَسٰرِقُوْنَ ﴿٧٠﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 70 | अलबत्ता चोर हो | बेशक तुम | ऐ काफ़ले वालो | मुनादी करने वाला | एलान किया | फिर |

قَالُوْا وَاَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّاذَا تَفْقِدُوْنَ ﴿٧١﴾ قَالُوْا نَفْقِدُ صُوَاعَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पैमाना | हम गुम कर बैठे (नहीं पाते) | उन्हों ने कहा | 71 | तुम गुम कर बैठे | क्या है जो | उन की तरफ़ | और उन्हों ने मुँह किया | वह बोले |

الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ وَّاَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ﴿٧٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 72 | ज़ामिन | उस का | और मैं | एक ऊंट | बोझ | जो वह लाए | और उस के लिए | बादशाह |

قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِى الْاَرْضِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन (मुल्क) में | कि हम फ़साद करें | हम नहीं आए | तुम ख़ूब जानते हो | अल्लाह की क़सम | वह बोले |

وَمَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾ قَالُوْا فَمَا جَزَآؤُهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿٧٤﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 74 | झूट | तुम हो | अगर | सज़ा उस की | फिर क्या | उन्हों ने कहा | 73 | चोर (जमा) | और हम नहीं |

قَالُوْا جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِىْ رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम सज़ा देते हैं | उसी तरह | उस का बदला | पस वही | उस के सामान में | पाया जाए | जो - जिस | उस कि सज़ा | कहने लगे वह |

الظّٰلِمِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ اَخِيْهِ ثُمَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर | अपना भाई | ख़रजी (बोरा) | पहले | उन की ख़रजियाँ (बोरों) से | पस शुरूअ़ किया | 75 | ज़ालिमों को |

اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ؕ كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| न था | यूसुफ़ के लिए | हम ने तदबीर की | इसी तरह | अपना भाई | बोरा | से | उस को निकाला |

لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِىْ دِيْنِ الْمَلِكِ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम बुलन्द करते हैं | अल्लाह चाहे | यह कि | मगर | बादशाह का दीन | में | अपना भाई | वह ले सकता |

دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ وَفَوْقَ كُلِّ ذِىْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٦﴾ قَالُوْٓا اِنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर | बोले | 76 | एक इल्म वाला | साहबे इल्म | हर | और ऊपर | चाहें हम | जो - जिस | दरजे |

يَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ فِىْ نَفْسِهٖ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने दिल में | यूसुफ़ (अ) | पस उसे छुपाया | उस से क़ब्ल | उस का भाई | तो चोरी की थी | उस ने चुराया |

وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۚ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़ूब जानता है | और अल्लाह | दरजे में | बदतर | तुम | कहा | उन पर | और वह ज़ाहिर न किया |

بِمَا تَصِفُوْنَ ﴿٧٧﴾ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗۤ اَبًا شَيْخًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बूढ़ा | बाप | उस का | बेशक | अज़ीज़ | ऐ | कहने लगे | 77 | जो तुम बयान करते हो |

كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا مَكَانَهٗ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٧٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 78 | एहसान करने वाले | से | हम देखते हैं बेशक तुझे | उस की जगह | हम में से एक | पस ले (रख ले) | बड़ी उम्र का |

फिर जब उन का सामान तैयार कर दिया अपने भाई के सामान में (पानी) पीने का प्याला रखदिया, फिर एक मुनादी करने वाले न एलान किया ऐ काफ़ले वालो! तुम अलबत्ता चोर हो। (70)
वह उन की तरफ़ मुँह कर के बोले, क्या है जो तुम गुम कर बैठे हो? (71)
उन्हों ने कहा, हम बादशाह का पैमाना नहीं पाते, और जो कोई वह लाएगा उस के लिए एक ऊंट का बोझ है (बारे शुतुर मिलेगा) और मैं उस का ज़ामिन हूँ। (72)
वह बोले अल्लाह की क़सम! तुम ख़ूब जानते हो हम (इस लिए) नहीं आए कि मुल्क में फ़साद करें, और हम चोर नहीं। (73)
फिर उन्हों ने कहा अगर तुम झूटे हो (झूटे निकले) फिर उस की क्या सज़ा है? (74)
कहने लगे उस की सजा यह है कि पाया जाए जिस के सामान में पस वही है उस का बदला, उस तरह हम ज़ालिमों को साज़ा देते हैं। (75)
पस उन की बोरों से (तलाश करना) शुरूअ़ किया अपने भाई के बोरे से पहले, फिर उस को अपने भाई के बोरे से निकाल लिया। इसी तरह हम ने यूसुफ़ (अ) के लिए तदबीर की वह बादशाह के दीन में (क़ानून के मुताबिक़) अपने भाई को न ले सकता था मगर यह कि अल्लाह चाहे (अल्लाह की मशिय्यत हो) हम दरजे बुलन्द करते हैं जिस के हम चाहें, और हर साहबे इल्म के ऊपर एक इल्म वाला है। (76)
बोले अगर उस ने चुराया तो चोरी कि थी उस से क़ब्ल उस के भाई ने, पस यूसुफ़ (अ) ने (उस बात को) अपने दिल में छुपाया और उन पर ज़ाहिर न किया, कहा तुम बदतर दरजे में हो और तुम जो बयान करते हो अल्लाह ख़ूब जानता है (77)
कहने लगे, ऐ अज़ीज़! बेशक उस का बाप बड़ी उम्र का बूढ़ा है, पस उस की जगह हम में से एक को रख ले, हम देखते हैं कि तू एहसान करने वालों में से है। (78)

उस ने कहा अल्लाह की पनाह कि उसके सिवा हम (किसी और) को पकड़ें, जिस के पास हम ने अपना सामान पाया (उस सूरत में) हम ज़ालिमों में होंगे। **(79)** फिर जब वह उस से मायूस हो गए तो मशवरा करने के लिए अकेले हो बैठे, उन के बड़े (भाई) ने कहा, क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे बाप ने तुम से अल्लाह का पुख़्ता अ़हद लिया, और उस से क़ब्ल तुम ने यूसुफ़ (अ) के बारे में तक़सीर की, पस मैं हरगिज़ न टलूँगा ज़मीन से (यहां से), यहां तक के मेरा बाप मुझे इजाज़त दे या अल्लाह मेरे लिए कोई तदबीर निकाले, और वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है। **(80)** अपने बाप के पास लौट जाओ, पस कहो ऐ हमारे बाप! तुम्हारे बेटे ने चोरी की और हम ने गवाही नहीं दी थी (सिर्फ़ वही कहा था) जो हमें मालूम था, और हम ग़ैब के निगहबान (ख़बरदार) न थे। **(81)** और पूछ लें उस बस्ती से जिस में हम थे, और उस क़ाफ़ले से जिस में हम आए हैं, और बेशक हम सच्चे हैं। **(82)** उस ने कहा (नहीं) बल्कि तुम्हारे दिल ने बना ली है एक बात, पस सब्र ही अच्छा है, शायद अल्लाह उन सब को मेरे पास ले आए, बेशक वह जानने वाला है, हिक्मत वाला है। **(83)** और उन से मुँह फेर लिया और कहा हाए अफ़सोस! यूसुफ़ (अ) पर, और उस की आँखें सफ़ेद हो गईं ग़म से, पस वह घुट रहा था (ग़म ज़ब्त कर रहा था)। **(84)** वह बोले अल्लाह की क़सम! तुम हमेशा यूसुफ़ (अ) को याद करते रहोगे यहां तक कि तुम हो जाओ बीमार या हलाक हो जाओ। **(85)** उस ने कहा मैं तो अपनी बेक़रारी और अपना ग़म बयान करता हूँ सिर्फ़ अल्लाह के सामने और अल्लाह (की तरफ़) से जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। **(86)**

قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗۤ ۙ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के पास | अपना सामान | हम ने पाया | जिस को | सिवाए | हम पकड़ें | कि | अल्लाह की पनाह | उस ने कहा |

اِنَّاۤ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا اسْتَيْئَسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا ؕ ع ١١ ٣

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मशवरा किया | अकेले हो बैठे | उस से | वह मायूस हो गए | फिर जब | 79 | अलबत्ता ज़ालिमों से | बेशक हम जब |

قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْۤا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम से | लिया है | तुम्हारा बाप | कि | क्या तुम नहीं जानते | उन का बड़ा | कहा |

مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस हरगिज़ न | यूसुफ़ (अ) | बारे में | जो तक़सीर की तुम ने | और उस से क़ब्ल | अल्लाह | से (का) | पुख़्ता अ़हद |

اَبْرَحَ الْاَرْضَ حَتّٰى يَاْذَنَ لِيْۤ اَبِيْۤ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ۚ وَهُوَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह | हुक्म दे (तदबीर निकाले) अल्लाह मेरे लिए | या | मेरा बाप | मुझे | इजाज़त दे | यहां तक | ज़मीन | टलूँगा |

خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِرْجِعُوْۤا اِلٰۤى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰۤاَبَانَاۤ اِنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | ऐ हमारे बाप | पस कहो | अपना बाप | तरफ़ (पास) | लौट जाओ तुम | 80 | सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला |

ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَاۤ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम न थे | हमें मालूम था | जो | मगर | और नहीं गवाही दी हम ने | चोरी की | तुम्हारा बेटा |

لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ﴿٨١﴾ وَسْـَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | हम थे | जो - जिस | बस्ती | और पूछ लें | 81 | निगहबान | ग़ैब के |

وَالْعِيْرَ الَّتِيْۤ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ؕ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٨٢﴾ قَالَ بَلْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बल्कि | उस ने कहा | 82 | सच्चे | और बेशक हम | उस में | हम आए | जो - जिस | और क़ाफ़ला |

سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ عَسَى اللّٰهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | शायद | अच्छा | पस सब्र | एक बात | तुम्हारा दिल | तुम्हारे लिए | बना ली है |

اَنْ يَّاْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿٨٣﴾ وَتَوَلّٰى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और मुँह फेर लिया | 83 | हिक्मत वाला | जानने वाला | वह | बेशक वह | सब को | उन्हें | कि मेरे पास ले आए |

عَنْهُمْ وَقَالَ يٰۤاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | उस की आँखें | और सफ़ेद हो गईं | यूसुफ़ (अ) | पर | हाए अफ़सोस | और कहा | उन से |

الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٨٤﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यहां तक कि | यूसुफ़ (अ) | याद करता | तू हमेशा रहेगा | अल्लाह की क़सम | वह बोले | 84 | घुट रहा था | पस वह | ग़म |

تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ﴿٨٥﴾ قَالَ اِنَّمَاۤ اَشْكُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बयान करता हूँ | मैं तो सिर्फ़ | उस ने कहा | 85 | हलाक होने वाले | से | या हो जाओ | बीमार | तुम हो जाओ |

بَثِّيْ وَحُزْنِيْۤ اِلَى اللّٰهِ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 86 | तुम नहीं जानते | जो | अल्लाह | से | और जानता हूँ | अल्लाह | तरफ़ सामने | और अपना ग़म | अपनी बेक़रारी |

يَا بَنِيَّ اذْهَبُوا فَتَحَسَّسُوا مِن يُوسُفَ وَأَخِيهِ وَلَا تَيْأَسُوا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और न मायूस हो | और उस का भाई | यूसुफ़ (अ) | से (का) | पस खोज निकालो | तुम जाओ | ऐ मेरे बेटो |

مِن رَّوْحِ اللَّهِ ۖ إِنَّهُ لَا يَيْأَسُ مِن رَّوْحِ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लोग | मगर | अल्लाह की रहमत | से | मायूस नहीं होते | बेशक वह | अल्लाह की रहमत | से |

الْكَافِرُونَ (٨٧) فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ مَسَّنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमें पहुँची | अज़ीज़ | ऐ | उन्हों ने कहा | उस पर - सामने | वह दाख़िल हुए | फिर जब | 87 | काफ़िर (जमा) |

وَأَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجَاةٍ فَأَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नाप (ग़ल्ला) | हमें | पस पूरी दें | निकम्मी (नाक़िस) | पूंजी के साथ (ले कर) | और हम आए | सख़्ती | और हमारे घर |

وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ۖ إِنَّ اللَّهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِينَ (٨٨) قَالَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कहा | 88 | सदक़ा करने वाले | जज़ा देता है | बेशक अल्लाह | हम पर (हमें) | सदक़ा करें |

هَلْ عَلِمْتُم مَّا فَعَلْتُم بِيُوسُفَ وَأَخِيهِ إِذْ أَنتُمْ جَاهِلُونَ (٨٩)

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 89 | नादान | जब तुम | और उस का भाई | यूसुफ़ (अ) के साथ | क्या तुम ने किया है? | क्या तुम्हें ख़बर है |

قَالُوا أَإِنَّكَ لَأَنتَ يُوسُفُ ۖ قَالَ أَنَا يُوسُفُ وَهَٰذَا أَخِي

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरा भाई | और यह | मैं यूसुफ़ (अ) | उस ने कहा | यूसुफ़ (अ) | तुम ही | क्या तुम ही | वह बोले |

قَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا ۖ إِنَّهُ مَن يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो बेशक अल्लाह | और सब्र करता है | जो डरता है | बेशक वह | हम पर | अल्लाह | अलबत्ता एहसान किया है |

لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ (٩٠) قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ آثَرَكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुझे पसन्द किया (फ़ज़ीलत दी) | अल्लाह की क़सम | कहने लगे | 90 | नेकी करने वाले | अज्र | ज़ाए नहीं करता |

اللَّهُ عَلَيْنَا وَإِن كُنَّا لَخَاطِئِينَ (٩١) قَالَ لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम पर | मलामत नहीं | उस ने कहा | 91 | ख़ताकार | हम थे | और बेशक | हम पर | अल्लाह |

الْيَوْمَ ۖ يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ ۖ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ (٩٢) اذْهَبُوا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम जाओ | 92 | मेहरबानी करने वाले | सब से ज़ियादा मेहरबान | और वह | तुम को | अल्लाह | बख़्शे | आज |

بِقَمِيصِي هَٰذَا فَأَلْقُوهُ عَلَىٰ وَجْهِ أَبِي يَأْتِ بَصِيرًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बीना हो कर | आएगा | मेरे बाप | चेहरा | पर | पस उस को डालो | यह | मेरी क़मीस ले कर |

ع وَأْتُونِي بِأَهْلِكُمْ أَجْمَعِينَ (٩٣) وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيرُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क़ाफ़िला | जुदा जुदा (रवाना हुआ) | और जब | 93 | तमाम (सारे) | अपने घर वालों को | और मेरे पास आओ (ले आओ) |

قَالَ أَبُوهُمْ إِنِّي لَأَجِدُ رِيحَ يُوسُفَ ۖ لَوْلَا أَن

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | अगर न | यूसुफ़ | हवा (ख़ुशबू) | अलबत्ता पाता हूँ | बेशक मैं | उन का बाप | कहा |

تُفَنِّدُونِ (٩٤) قَالُوا تَاللَّهِ إِنَّكَ لَفِي ضَلَالِكَ الْقَدِيمِ (٩٥)

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 95 | पुराना | अपना वहम | में | बेशक तू | अल्लाह की क़सम | वह कहने लगे | 94 | मुझे बहका हुआ जानो |

ऐ मेरे बेटो! तुम जाओ पस खोज निकालो यूसुफ़ (अ) का और उस के भाई का, और अल्लाह की रहमत से मायूस न हो, बेशक अल्लाह की रहमत से मायूस नहीं होते मगर काफ़िर लोग। **(87)** फिर जब वह उस के सामने दाख़िल हुए उन्हों ने कहा ऐ अज़ीज़! हमें और हमारे घर को पहुँची है सख़्ती, और हम नाक़िस पूंजी ले कर आए हैं, हमें पूरा नाप (ग़ल्ला) दें, और हम पर सदक़ा करें, बेशक अल्लाह सदक़ा करने वालों को जज़ा देता है। **(88)** (यूसुफ़ अ) ने कहा क्या तुम्हें ख़बर है? तुम ने यूसुफ़ (अ) और उस के भाई के साथ क्या (सुलूक) किया? जब तुम नादान थे। **(89)** वह बोले क्या तुम ही यूसुफ़ (अ) हो? उस ने कहा मैं यूसुफ़ (अ) हूँ और यह मेरा भाई है, अल्लाह ने अलबत्ता हम पर एहसान किया है, बेशक जो डरता है और सब्र करता है तो बेशक अल्लाह ज़ाया नहीं करता नेकी करने वालों का अजर। **(90)** कहने लगे अल्लाह की क़सम! अल्लाह ने तुझे हम पर फ़ज़ीलत दी है और हम बेशक ख़ताकार थे। **(91)** उस ने कहा आज तुम पर कोई मलामत (इल्ज़ाम) नहीं, अल्लाह तुम्हें बख़्शे, वह सब से ज़ियादा मेहरबान है मेहरबानी करने वालों में। **(92)** तुम मेरी यह क़मीज़ ले कर जाओ पस उस को मेरे बाप के चेहरे पर डालो, वह बीना हो जाएंगे, और मेरे पास अपने तमाम घर वालों को ले आओ। **(93)** और जब क़ाफ़िला रवाना हुआ उन के बाप ने कहा, बेशक मैं यूसुफ़ (अ) की ख़ुशबू पा रहा हूँ अगर न जानो (न कहो) कि बूढ़ा बहक गया है। **(94)** वह कहने लगे अल्लाह की क़सम! बेशक तू अपने पुराने वहम में है। **(95)**

फिर जब ख़ुशख़बरी देने वाला आया
और उस ने कुर्ता उस (याकूब अ)
के मुँह पर डाला तो वह लौट कर
देखने वाला (बीना) हो गया, बोला
क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था? कि
मैं अल्लाह की तरफ़ से जानता हूँ
जो तुम नहीं जानते। (96)
वह बोले ऐ हमारे बाप! हमारे लिए
बख़्शिश माँगिए हमारे गुनाहों की,
बेशक हम ख़ताकार थे। (97)
उस ने कहा मैं जल्द अपने रब
से तुम्हारे गुनाहों की बख़्शिश
माँगूंगा, बेशक वह बख़्शने वाला
निहायत मेहरबान है। (98)
फिर जब वह यूसुफ़ (अ) के पास
दाख़िल हुए तो उस ने अपने माँ
बाप को अपने पास ठिकाना दिया,
और कहा अगर अल्लाह चाहे तो
तुम मिस्र में दिलजमई के साथ
दाख़िल हो। (99)
और अपने माँ बाप को तख़्त पर
ऊँचा बिठाया, और वह उस के
आगे गिरगए सिज्दे में और उस ने
कहा ऐ मेरे अब्बा! यह मेरे उस
से पहले ख़्वाब की तावीर, उस को
मेरे रब ने सच्चा कर दिया,
और बेशक उस ने मुझ पर
एहसान किया जब मुझे क़ैद ख़ाने
से निकाला, और तुम सब को
गाऊँ से ले आया उस के बाद कि
मेरे और मेरे भाइयों के दरमियान
शैतान ने झगड़ा (फ़साद) डाल
दिया था, बेशक मेरा रब जिस
के लिए चाहे उमदा तदबीर करने
वाला है, बेशक वह जानने वाला,
हिक्मत वाला है। (100)
ऐ मेरे रब! तू ने मुझे एक मुल्क
अ़ता किया और मुझे सिखाया
बातों का अन्जाम (ख़्वाबों की
तावीर) निकालना, ऐ आस्मानों और
ज़मीन के पैदा करने वाले! तू मेरा
कारसाज़ है दुनिया में और आख़िरत
में, मुझे (दुनिया से) फ़रमांबरदारी
की हालत में उठाना और मुझे नेक
बन्दों के साथ मिलाना। (101)
यह ग़ैब की ख़बरों में से है जो हम
तुम्हारी तरफ़ वहि करते हैं और
तुम उन के पास न थे जब उन्हों ने
अपना काम पुख़्ता किया और वह
चाल चल रहे थे। (102)

فَلَمَّآ اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ اَلْقٰىهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| देखने वाला | तो लौट कर होगया | उस का मुँह | पर | उस ने वह (कुर्ता) डाला | ख़ुशख़बरी देने वाला | आया | कि | फिर जब |

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 96 | तुम नहीं जानते | जो | अल्लाह | (तरफ़) से | बेशक मैं जानता हूँ | तुम से | क्या मैं ने नहीं कहा था | बोला |

قَالُوْا يٰٓاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَآ اِنَّا كُنَّا خٰطِـِٕيْنَ ﴿٩٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 97 | ख़ताकार (जमा) | थे | बेशक हम | हमारे गुनाह | हमारे लिए बख़्शिश माँग | ऐ हमारे बाप | वह बोले |

قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ ۗ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٩٨﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 98 | निहायत मेहरबान | बख़्शने वाला | वह | बेशक वह | अपना रब | तुम्हारे लिए | मैं बख़्शिश माँगूंगा | जल्द | उस ने कहा |

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम दाख़िल हो | और कहा | अपने माँ बाप | उस ने ठिकाना दिया अपने पास | यूसुफ़ (अ) पर (पास) | वह दाख़िल हुए | फिर जब |

مِصْرَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾ وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तख़्त | पर | अपने माँ बाप | और ऊंचा बिठाया | 99 | अम्न (दिलजमई) के साथ | अल्लाह ने चाहा | अगर | मिस्र |

وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَقَالَ يٰٓاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَاىَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरा ख़्वाब | तावीर | यह | ऐ मेरे अब्बा | और उस ने कहा | सिज्दे में | उस के लिए (आगे) | और वह गिरगए |

مِنْ قَبْلُ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا ۗ وَقَدْ اَحْسَنَ بِيْٓ اِذْ اَخْرَجَنِيْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुझे निकाला | जब | मुझ पर | और बेशक उस ने एहसान किया | सच्चा | मेरा रब | उस को कर दिया | उस से पहले |

مِنَ السِّجْنِ وَجَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| झगड़ा डाल दिया | कि | उस के बाद | गाऊँ | से | तुम सब को | और ले आया | क़ैद ख़ाना | से |

الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَبَيْنَ اِخْوَتِيْ ۗ اِنَّ رَبِّيْ لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَآءُ ۗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जिस के लिए चाहे | उमदा तदबीर करता है | मेरा रब | बेशक | और मेरे भाइयों के दरमियान | मेरे दरमियान | शैतान |

اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿١٠٠﴾ رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुल्क | से एक | तू ने मुझे अता किया | ऐ मेरे रब | 100 | हिक्मत वाला | जानने वाला | वह | बेशक वह |

وَعَلَّمْتَنِيْ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और ज़मीन | आस्मान (जमा) | पैदा करने वाला | बातें (ख़्वाब) | अन्जाम निकालना (तावीर) | से | और मुझे सिखाया |

اَنْتَ وَلِيّٖ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और मुझे मिला | फ़रमांबरदारी की हालत में | मुझे उठा | और आख़िरत | दुनिया में | मेरा कारसाज़ | तू |

بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠١﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारी तरफ़ | हम वहि करते हैं | ग़ैब की ख़बरें | से | यह | 101 | सालेह (नेक बन्दों) के साथ |

وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا اَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ﴿١٠٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 102 | चाल चल रहे थे | और वह | अपना काम | उन्हों ने जमा किया (पुख़्ता किया) | जब | उन के पास | और तुम न थे |

وَمَآ اَكۡثَرُ النَّاسِ وَلَوۡ حَرَصۡتَ بِمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿١٠٣﴾ وَمَا تَسۡـَٔلُهُمۡ عَلَيۡهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस पर | और तुम नहीं मांगते उन से | 103 | ईमान लाने वाले | तुम चाहो | अगरचे | अक्सर लोग | और नहीं |

ع ١١ ٥ مِنۡ اَجۡرٍ ؕ اِنۡ هُوَ اِلَّا ذِكۡرٌ لِّلۡعٰلَمِيۡنَ ﴿١٠٤﴾ وَكَاَيِّنۡ مِّنۡ اٰيَةٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| निशानियां | और कितनी ही | 104 | सारे जहानों के लिए | नसीहत | मगर | यह नहीं | कोई अजर |

فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ يَمُرُّوۡنَ عَلَيۡهَا وَهُمۡ عَنۡهَا مُعۡرِضُوۡنَ ﴿١٠٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 105 | मुँह फेरने वाले | उन से | लेकिन वह | उन पर | वह गुज़रते है | और ज़मीन | आस्मानों में |

وَمَا يُؤۡمِنُ اَكۡثَرُهُمۡ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمۡ مُّشۡرِكُوۡنَ ﴿١٠٦﴾ اَفَاَمِنُوۡۤا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस किया वह बेखौफ हो गए | 106 | मुश्रिक (जमा) | और वह | मगर | अल्लाह पर | उन में अक्सर | और ईमान नहीं लाते |

اَنۡ تَاۡتِيَهُمۡ غَاشِيَةٌ مِّنۡ عَذَابِ اللّٰهِ اَوۡ تَاۡتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغۡتَةً

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अचानक | घड़ी (क़ियामत) | उन पर आजाए | या | अल्लाह का अ़ज़ाब | से | छा जाने वाली (आफ़त) | कि उन पर आए |

وقف النبی ﷺ وَّهُمۡ لَا يَشۡعُرُوۡنَ ﴿١٠٧﴾ قُلۡ هٰذِهٖ سَبِيۡلِىۡۤ اَدۡعُوۡۤا اِلَى اللّٰهِ ؔ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की तरफ़ | मैं बुलाता हूँ | मेरा रास्ता | यह | आप कह दें | 107 | उन्हें खबर न हो | और वह |

عَلٰى بَصِيۡرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِىۡ ؕ وَسُبۡحٰنَ اللّٰهِ وَمَاۤ اَنَا مِنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ ﴿١٠٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 108 | मुश्रिक (जमा) | से | और मैं नहीं | और अल्लाह पाक है | मेरी पैरवी की | और जो-जिस | मैं | दानाई पर (समझ बूझ के मुताबिक़) |

وَمَاۤ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوۡحِىۡۤ اِلَيۡهِمۡ مِّنۡ اَهۡلِ الۡقُرٰى ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बस्तियों वाले | से | उन की तरफ़ | हम वहि भेजते थे | मर्द | मगर-सिर्फ़ | तुम से पहले | और हम ने नही भेजा |

اَفَلَمۡ يَسِيۡرُوۡا فِى الۡاَرۡضِ فَيَنۡظُرُوۡا كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيۡنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो | अन्जाम | हुआ | कैसा - क्या | पस वह देखते | ज़मीन (मुल्क) में | क्या पस उन्हों ने सैर नहीं की |

مِنۡ قَبۡلِهِمۡ ؕ وَلَدَارُ الۡاٰخِرَةِ خَيۡرٌ لِّلَّذِيۡنَ اتَّقَوۡا ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ﴿١٠٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 109 | पस क्या तुम समझते नहीं | जिन्हों ने परहेज किया | उन के लिए जो | बेहतर | और अलबत्ता आख़िरत का घर | उन से पहले |

حَتّٰۤى اِذَا اسۡتَيۡـَٔسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوۡۤا اَنَّهُمۡ قَدۡ كُذِبُوۡا جَآءَهُمۡ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के पास आई | उन से झूट कहा गया | कि वह | और उन्हों ने गुमान किया | रसूल (जमा) | मायूस होने लगे | जब | यहां तक |

نَصۡرُنَا ۙ فَنُجِّىَ مَنۡ نَّشَآءُ ؕ وَلَا يُرَدُّ بَاۡسُنَا عَنِ الۡقَوۡمِ الۡمُجۡرِمِيۡنَ ﴿١١٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 110 | मुज्रिम (जमा) | क़ौम | से | हमारा अ़ज़ाब | और नहीं फेरा जाता | हम ने जिन्हें चाहा | पस बचा दिए गए | हमारी मदद |

لَقَدۡ كَانَ فِىۡ قَصَصِهِمۡ عِبۡرَةٌ لِّاُولِى الۡاَلۡبَابِ ؕ مَا كَانَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं है | अक़्लमन्दों के लिए | इब्रत (नसीहत) | उन के क़िस्से | में | है | अलबत्ता |

حَدِيۡثًا يُّفۡتَرٰى وَلٰكِنۡ تَصۡدِيۡقَ الَّذِىۡ بَيۡنَ يَدَيۡهِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उस से (अपने से) पहली | वह जो | तस्दीक़ | और लेकिन (बल्कि) | बनाई हुई | बात |

ع ١٢ ٦ وَتَفۡصِيۡلَ كُلِّ شَىۡءٍ وَّهُدًى وَّرَحۡمَةً لِّقَوۡمٍ يُّؤۡمِنُوۡنَ ﴿١١١﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 111 | जो ईमान लाते है | लोगों के लिए | और रहमत | और हिदायत | हर बात | और तफ़सील (बयान) |

अगरचे तुम (कितना ही) चाहो और अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं। (103)

और तुम उन से उस पर कोई अजर नहीं मांगते, यह (और कुछ) नहीं, सारे जहानों के लिए नसीहत है। (104)

और आस्मानों में और ज़मीन में कितनी ही निशानियां हैं वह उन पर गुज़रते हैं, लेकिन वह उन से मुँह फेरने वाले हैं। (105)

और उन में से अक्सर अल्लाह पर ईमान नहीं लाते मगर वह मुश्रिक हैं। (106)

पस किया वह (उस से) बेख़ौफ़ हो गए कि उन पर अल्लाह के अज़ाब की आफ़त आजाए, या उन पर आजाए अचानक क़ियामत, और उन्हें खबर (भी) न हो। (107)

आप (स) कह दें यह मेरा रास्ता है, मैं अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूँ, समझ बूझ के मुताबिक़, मैं (भी) और वह (भी) जिस ने मेरी पैरवी की, और अल्लाह पाक है, और मैं मुश्रिकों में से नहीं। (108)

और हम ने तुम से पहले बस्तियों में रहने वाले लोगों में से सिर्फ़ मर्द (नबी) भेजे जिन की तरफ़ हम वही भजते थे, पस क्या उन्हों ने सैर नहीं की मुल्क में? कि वह देखते उन से पहले लोगों का अन्जाम क्या हुआ? और अलबत्ता आख़िरत का घर उन लोगों के लिए बेहतर है जिन्हों ने परहेज़ किया, पस क्या तुम नहीं समझते? (109)

यहां तक कि जब (ज़ाहिरी असबाब से) रसूल मायूस होने लगे और उन्हों ने गुमान किया कि उन से झूट कहा गया था, उन के पास हमारी मदद आगई, पस जिन्हें हम ने चाहा वह बचा दिए गए और हमारा अजाब नहीं फेरा जाता मुज्रिमों की कौम से। (110)

अलबत्ता उन के क़िस्सों में अक़्लमन्दों के लिए इब्रत है यह बनाई हुई बात नहीं, बल्कि तस्दीक़ है अपने से पहलों की, और बयान है हर बात का, और हिदायत ओ रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं। (111)

अल्लाह के नाम से जो निहायत
मेहरबान, रहम करने वाला है
अलिफ-लाम-मीम-रा - यह किताब
(कुरआन) की आयतें हैं, और जो
तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारी
तरफ उतारा गया हक़ है, मगर
अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (1)
अल्लाह जिस ने आस्मानों को
बुलन्द किया किसी सुतून (सहारे)
के बग़ैर तुम देखते हो उसे, फिर
अ़र्श पर क़रार पकड़ा, और सूरज
और चाँद को मुसख़्ख़र किया (काम
पर लगाया) हर एक चलता है
एक मुद्दत मुक़र्ररा तक, अल्लाह
काम की तदबीर करता है, वह
निशानियाँ बयान करता है ताकि
तुम अपने रब से मिलने का यक़ीन
कर लो। (2)
और वही है जिस ने ज़मीन को
फैलाया, और उस में पहाड़ बनाए
और नहरें (चलाईं) और हर क़िस्म
के फल (पैदा किए) और उस में
दो, दो क़िस्म के (तल्ख़ ओ शीरीं)
फल बनाए, और वह दिन को
रात से ढाँपता है, बेशक उस में
निशानियाँ हैं ग़ौर ओ फ़िक्र करने
वाले लोगों के लिए। (3)
और ज़मीन में पास पास क़ित्आत
हैं, और बाग़ात हैं अंगूरों के, और
खेतियाँ और खजूर एक जड़ से दो
शाख़ों वाली और बग़ैर दो शाख़ों
की, एक ही पानी से (हालांकि)
सैराब की जाती हैं, और हम
बेहतर बना देते हैं उन में से एक
को दूसरे पर ज़ाइक़े में, इस में
निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो
अ़क़्ल से काम लेते हैं। (4)
और अगर तुम तअ़ज्जुब करो तो
उन का यह कहना अजब है: जब
हम मिट्टी हो गए क्या हम (अज़
सरे नौ) नई ज़िन्दगी पाएंगे? वही
लोग हैं जो अपने रब के मुन्किर
हुए, और वही हैं जिन की गर्दनों में
तौक़ होंगे, और वही दोज़ख़ वाले
हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (5)

## آيَاتُهَا ٤٣ ❀ (١٣) سُوْرَةُ الرَّعْدِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

| | | |
|---|---|---|
| रुकूआत 6 | (13) सूरतुर रअ्द गरज | आयात 43 |

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓـمّٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ؕ وَالَّـذِىْٓ اُنْـزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हक़ | तुम्हारे रब की तरफ़ से | तुम्हारी तरफ़ | उतारा गया | और वह जो कि | किताब | आयतें | यह | अलिफ लाम मीम रा |

وَلٰـكِنَّ اَكْـثَـرَ الـنَّـاسِ لَا يُـؤْمِـنُـوْنَ ۝١ اَللّٰهُ الَّـذِىْ رَفَـعَ الـسَّمٰوٰتِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मान (जमा) | बुलन्द किया | वह जिस ने | अल्लाह | 1 | ईमान नहीं लाते | अक्सर लोग | और लेकिन (मगर) |

بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और चाँद | सूरज | और काम पर लगाया | अ़र्श पर | क़रार पकड़ा | फिर | तुम उसे देखते हो | किसी सुतून के बग़ैर |

كُلٌّ يَّـجْـرِىْ لِاَجَـلٍ مُّـسَـمًّى ؕ يُـدَبِّـرُ الْاَمْـرَ يُـفَـصِّـلُ الْاٰيٰـتِ لَعَلَّكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि तुम | निशानियाँ | वह बयान करता है | काम | तदबीर करता है | मुक़र्ररा | एक मुद्दत | चलता है | हर एक |

بِلِقَآءِ رَبِّـكُـمْ تُـوْقِـنُـوْنَ ۝٢ وَهُـوَ الَّـذِىْ مَـدَّ الْاَرْضَ وَجَـعَـلَ فِيْهَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | और बनाया | ज़मीन | फैलाया | वह जिस | और वही | 2 | तुम यक़ीन कर लो | अपना रब | मिलने का |

رَوَاسِـىَ وَاَنْـهٰـرًا ؕ وَمِـنْ كُلِّ الـثَّـمَـرٰتِ جَـعَـلَ فِيْهَا زَوْجَـيْـنِ اثْـنَيْنِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दो, दो क़िस्म | जोड़े | उस में | बनाया | हर एक फल (जमा) | और से | और नहरें | पहाड़ (जमा) |

يُغْشِى الَّـيْـلَ الـنَّـهَارَ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِـكَ لَاٰيٰـتٍ لِّـقَـوْمٍ يَّـتَـفَـكَّـرُوْنَ ۝٣

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं | लोगों के लिए | निशानियाँ | उस | में | बेशक | दिन | रात | वह ढाँपता है |

وَفِـى الْاَرْضِ قِـطَـعٌ مُّـتَـجٰـوِرٰتٌ وَّجَـنّٰـتٌ مِّـنْ اَعْـنَـابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَـخِيْلٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और खजूर | और खेतियाँ | अंगूर (जमा) | से के | और बाग़ात | पास पास | क़ित्आत | ज़मीन | और में |

صِـنْـوَانٌ وَّغَـيْـرُ صِـنْـوَانٍ يُّـسْـقٰى بِـمَـآءٍ وَّاحِـدٍ ۟ وَنُـفَـضِّـلُ بَعْضَهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन का एक | और हम फ़ज़ीलत देते हैं | एक | पानी से | सैराब किया जाता है | दो शाख़ों वाली | और बग़ैर | एक जड़ से दो शाख़ों वाली |

عَـلٰى بَـعْـضٍ فِـى الْاُكُلِ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِـكَ لَاٰيٰـتٍ لِّـقَـوْمٍ يَّـعْـقِـلُـوْنَ ۝٤

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | अक़्ल से काम लेते हैं | लोगों के लिए | निशानियाँ | उस | में | बेशक | ज़ाइक़ा | में | दूसरा | पर |

وَاِنْ تَـعْـجَـبْ فَـعَـجَـبٌ قَـوْلُـهُـمْ ءَاِذَا كُـنَّـا تُـرٰبًـا ءَاِنَّـا لَـفِـىْ خَلْقٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़िन्दगी पाएंगे | क्या हम | मिट्टी | हो गए हम | क्या जब | उन का कहना | तो अजब | तुम तअ़ज्जुब करो | और अगर |

جَـدِيْـدٍ ؕ اُولٰٓـئِـكَ الَّـذِيْـنَ كَـفَـرُوْا بِـرَبِّـهِـمْ ۚ وَاُولٰٓـئِـكَ الْاَغْـلٰـلُ فِىْٓ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | तौक़ (जमा) | और वही हैं | अपने रब के | मुन्किर हुए | जो लोग | वही | नई |

اَعْـنَـاقِـهِـمْ ۚ وَاُولٰٓـئِـكَ اَصْـحٰـبُ الـنَّـارِ ۚ هُـمْ فِـيْـهَا خٰـلِـدُوْنَ ۝٥

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | हमेशा रहेंगे | उस में | वह | दोज़ख़ वाले | और वही हैं | उन की गर्दनों |

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| से | और (हालांकि) गुज़र चुकी | भलाई (रहमत) से पहले | बुराई (अज़ाब) | और वह तुम से जल्दी मांगते हैं |

قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ۗ وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | लोगों के लिए | अलबत्ता मग़फ़िरत वाला | तुम्हारा रब | और बेशक | सज़ाएं | उन से क़ब्ल |

ظُلْمِهِمْ ۚ وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٦﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | और कहते हैं | 6 | अलबत्ता सख़्त अज़ाब देने वाला | तुम्हारा रब | और बेशक | उन का ज़ुल्म |

لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۗ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| डराने वाले | तुम | उस के सिवा नहीं | उस का रब | से | कोई निशानी | उस पर | क्यों न उतरी |

ع وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ﴿٧﴾ اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सुकड़ता है | और जो | हर मादा | जो पेट में रखती है | जानता है | अल्लाह | 7 | हादी | और हर क़ौम के लिए |

الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ۗ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ﴿٨﴾ عٰلِمُ الْغَيْبِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जानने वाला हर ग़ैब | 8 | एक अन्दाज़े से | उस के नज़्दीक | चीज़ | और हर | बढ़ता है | और जो | रह्म (जमा) |

وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ﴿٩﴾ سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बात | आहिस्ता कहे | जो | तुम में | बराबर | 9 | बुलन्द मरतबा | सब से बड़ा | और ज़ाहिर |

وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ﴿١٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | दिन में | और चलने वाला | रात में | छुप रहा है | वह | और जो | पुकार कर - उस को | और जो |

لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वह उसकी हिफ़ाज़त करते हैं | और उस के पीछे | उस (इन्सान) के आगे से | पहरेदार | उस के |

مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | वह बदल लें | यहां तक कि | किसी क़ौम के पास (अच्छी हालत) | जो | नहीं बदलता | अल्लाह | बेशक | अल्लाह का हुक्म | से |

بِاَنْفُسِهِمْ ۗ وَاِذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | और नहीं | उस के लिए | तो नहीं फिरना | बुराई | किसी क़ौम से | इरादा करता है अल्लाह | और जब | अपने दिलों में (अपनी हालत) |

مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ﴿١١﴾ هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उम्मीद दिलाने को | डराने को | बिजली | तुम्हें दिखाता है | वह जो कि | वह | 11 | कोई मददगार | उस के सिवा |

وَّيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ﴿١٢﴾ وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और फ़रिश्ते | उस की तारीफ़ के साथ | गरज | और पाकीज़गी बयान करती है | 12 | बोझल | बादल | और उठाता है |

مِنْ خِيْفَتِهٖ ۚ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जिस | उसे | फिर गिराता है | गरजने वाली बिजलियां | और वह भेजता है | उस के डर से | से |

يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ فِي اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ﴿١٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 13 | पकड़ | सख़्त | और वह | अल्लाह (के बारे) में | झगड़ते हैं | और वह | वह चाहता है |

और वह तुम से रहमत से पहले जल्द अज़ाब मांगते हैं, हालांकि गुज़र चुकी हैं उन से क़ब्ल (इब्रत नाक) सज़ाएं, और बेशक तुम्हारा रब उनके ज़ुल्म के बावजूद लोगों के लिए मग़फ़िरत वाला है, और बेशक तुम्हारा रब सख़्त अज़ाब देने वाला है। (6)

और काफ़िर कहते हैं उस के रब की तरफ़ से उस पर कोई निशानी क्यों न उतरी? उस के सिवा नहीं के तुम डराने वाले हो, और हर क़ौम के लिए हादी हुआ है। (7)

अल्लाह जानता है जो हर मादा पेट में रखती है और जो रह्म में सुकड़ता और बढ़ता है, और उस के नज़्दीक हर चीज़ एक अन्दाज़े से है। (8)

जानने वाला है हर ग़ैब और ज़ाहिर का, सब से बड़ा, बुलन्द मरतबा है। (9)

(उस के लिए) बराबर है तुम में से जो आहिस्ता बात कहे और जो उस को पुकार कर कहे और जो रात में छुप रहा है और जो दिन में चलने (फिरने) वाला है। (10)

उस के पहरेदार हैं इन्सान के आगे से और उस के पीछे से, वह अल्लाह के हुक्म से उस की हिफ़ाज़त करते हैं, बेशक अल्लाह किसी क़ौम की अच्छी हालत नहीं बदलता यहां तक कि वह ख़ुद अपनी हालत बदल लें, और जब अल्लाह किसी क़ौम से बुराई का इरादा करता है तो उस के लिए फिरना नहीं (वह टल नहीं सकती) और उन के लिए उस के सिवा कोई मददगार नहीं। (11)

वही है जो तुम्हें बिजली दिखाता है डराने को और उम्मीद दिलाने को और उठाता है बोझल बादल। (12)

और गरज उस की तारीफ़ के साथ पाकी बयान करती है और फ़रिश्ते उस के डर से (उस की तस्बीह करते हैं) और वह गरजने वाली बिजलियां भेजता है, फिर उन्हें जिस पर चाहता है गिराता है और वह (काफ़िर) अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं और वह सख़्त पकड़ वाला है। (13)

उस को पुकारना हक़ है, और उस के सिवा वह जिन को पुकारते हैं वह उन्हें कुछ भी जवाब नहीं देते मगर जैसे (कोई) अपनी दोनों हथेलियां पानी की तरफ़ फैलादे ताकि (पानी) उस के मुँह तक पहुँच जाए, और वह उस तक हरगिज़ पहुँचने वाला नहीं, और काफ़िरों की पुकार गुमराही के सिवा कुछ नहीं। **(14)**
और अल्लाह ही को सिज्दा करता है जो आस्मानों और जमीन में है, खुशी से या न खुशी से, और सुब्ह ओ शाम उन के साए (भी)। **(15)**
आप (स) पूछें आस्मानों और ज़मीन का रब कौन है? कह दें, अल्लाह है, कह दें तो क्या तुम उस के सिवा बनाते हो हिमायती जो अपनी जानों के लिए (भी) बस नहीं रखते कुछ नफ़ा का और न नुक़्सान का, कह दें क्या बराबर होता है अन्धा और देखने वाला? या क्या उजाला और अन्धेरे बराबर हो जाएंगे? क्या वह अल्लाह के लिए जो शरीक बनालेते हैं उन्हों ने (मखलूक़) पैदा की है उस के पैदा करने की तरह? सो पैदाइश उन पर मुशतबह हो गई, कह दें अल्लाह हर शै का पैदा करने वाला है और वह यकता ग़ालिब है। **(16)**
उस ने आस्मानों से पानी उतारा, सो नदी नाले अपने अपने अन्दाज़े से बह निकले, फिर उठा लाया (ऊपर ले आया) नाला फूला हुआ झाग, और जो आग में तपाते हैं जेवर बनाने को या और असबाब बनाने को, (उस में भी) उस जैसा झाग (मैल) होता है, उसी तरह अल्लाह हक़ और बातिल को बयान करता है, सो झाग दूर हो जाता है (जाया हो जाता है) सूख कर, लेकिन जो लोगों को नफ़ा पहुँचाता है वह जमीन में ठहरा रहता है (बाक़ी रहेता है) इसी तरह अल्लाह मिसालें बयान करता है। **(17)**

لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ؕ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जवाब नही देते | उस के सिवा | वह पुकारते हैं | और जिन को | हक़ | पुकारना | उस को |

لَهُمْ بِشَيْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह | और नही | उस के मुँह तक | ताकि पहुँच जाए | पानी की तरफ़ | अपनी हथेलियां | जैसे फैला दे | मगर | कुछ भी | उन को |

بِبَالِغِهٖ ؕ وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿١٤﴾ وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अल्लाह ही को सिज्दा करता है | 14 | गुमराही | में | सिवाए | काफ़िर (जमा) | पुकार | और नही | उस तक पहुँचने वाला |

مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सुब्ह | और उन के साए | या नाखुशी से | खुशी से | और ज़मीन | आस्मानों | में | जो |

وَالْاٰصَالِ ﴿١٥﴾ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ؕ

السجدة ٢

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | कह दें | और ज़मीन | आस्मानों का रब | कौन | पूछें | 15 | और शाम |

قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कुछ नफ़ा | अपनी जानों के लिए | वह बस नहीं रखते | हिमायती | उस के सिवा | तो क्या तुम बनाते हो | कह दें |

وَّلَا ضَرًّا ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ اَمْ هَلْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या | या | और बीना (देखने वाला) | नाबीना (अन्धा) | बराबर होता है | क्या | कह दें | और न नुक़्सान |

تَسْتَوِي الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ۚ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने पैदा किया है | शरीक | अल्लाह के लिए | वह बनाते है | क्या | और उजाला | अन्धेरे (जमा) | बराबर हो जाएगा |

كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हर शै | पैदा करने वाला | अल्लाह | कह दें | उन पर | पैदाइश | तो मुशतवह होगई | उस के पैदा करने की तरह |

وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿١٦﴾ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सो बह निकले | पानी | आस्मानों से | उस ने उतारा | 16 | ज़बरदस्त (ग़ालिब) | यकता | और वह |

اَوْدِيَةٌۢ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ؕ وَمِمَّا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उस से जो | फूला हुआ | झाग | नाला | फिर उठा लाया | अपने अपने अन्दाज़े से | नदी नाले |

يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَآءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| झाग | असबाब | या | ज़ेवर | हासिल करने (बनाने) को | आग में | उस पर | तपाए है |

مِّثْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۬ؕ فَاَمَّا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सो | और बातिल | हक़ | अल्लाह | बयान करता है | उसी तरह | उसी जैसा |

الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَآءً ۚ وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| लोग | जो नफ़ा पहुँचाता है | और लेकिन | सूख कर | दूर हो जाता है | झाग |

فَيَمْكُثُ فِي الْاَرْضِ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ﴿١٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 17 | मिसालें | अल्लाह | बयान करना है | इसी तरह | ज़मीन में | तो ठहरा रहता है |

وقف النبي ﷺ لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى ۞ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह कि | अगर | उस का (हुक्म) | न माना | और जिन लोगों ने | भलाई | अपने रब (का हुक्म) | उन्हों ने मान लिया | उन के लिए जिन्हों ने |

لَهُمْ مَّا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | वही है | उस को | कि फ़िदये में देदें | उस के साथ | और उस जैसा | सब | जो कुछ ज़मीन में | उन के लिए (उन का) |

ع ٢ / ١١ / ٨ النصف سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۙ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٨﴾ اَفَمَنْ يَّعْلَمُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जानता है | पस क्या जो | 18 | बिछाना (जगह) | और बुरा | जहन्नम | और उन का ठिकाना | हिसाब | बुरा |

اَنَّمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| समझते है | इस के सिवा नहीं | अन्धा | वह | उस जैसा | हक़ | तुम्हारा रब | से | तुम्हारी तरफ़ | उतारा गया | कि जो |

اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿١٩﴾ الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ ﴿٢٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | पुख़्ता क़ौल ओ इक़रार | और वह नहीं तोड़ते | अल्लाह का अ़हद | पूरा करते है | और वह जो कि | 19 | अक़्ल वाले |

وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना रब | और वह डरते हैं | जोड़ा जाए | कि | उस का | अल्लाह ने हुक्म दिया | जो | जोड़े रखते हैं | और वह जो कि |

وَيَخَافُوْنَ سُوْٓءَ الْحِسَابِ ﴿٢١﴾ وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना रब | ख़ुशी | हासिल करने के लिए | उन्हों ने सब्र किया | और वह लोग जो | 21 | हिसाब | बुरा | और ख़ौफ़ खाते हैं |

وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और टाल देते हैं | और ज़ाहिर | पोशीदा | हम ने उन्हें दिया | उस से जो | और ख़र्च किया | नमाज | और उन्हों ने क़ाइम की |

بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٢﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमेशगी | बाग़ात | 22 | आख़िरत का घर | उन के लिए | वही हैं | बुराई | नेकी से |

يَدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और फ़रिश्ते | और उन की औलाद | और उन की बीवियां | उन के बाप दादा | से (में) | नेक हुए | और जो | वह उस में दाख़िल होंगे |

يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿٢٣﴾ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस ख़ूब | तुम ने सब्र किया | इस लिए कि | तुम पर | सलामती | 23 | हर दरवाज़ा | से | उन पर | दाख़िल होंगे |

عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٤﴾ وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस का पुख़्ता करना | उस के बाद | अल्लाह का अहद | तोड़ते हैं | और वह लोग जो | 24 | आख़िरत का घर |

وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ ۙ اُولٰٓئِكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यही हैं | जमीन में | और वह फ़साद करते हैं | कि वह जोड़ा जाए | उस का | अल्लाह ने हुक्म दिया | जो | और वह काटते हैं |

لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿٢٥﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तंग करता है | जिस के लिए वह चाहता है | रिज़्क़ | कुशादा करता है | अल्लाह | 25 | बुरा घर | और उनके लिए | लानत | उन के लिए |

ع ٣ / ٨ / ٩ وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ﴿٢٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 26 | मताअ़ हक़ीर | मगर (सिर्फ़) | आख़िरत (के मुक़ाबले) में | दुनिया की ज़िन्दगी | और नहीं | दुनिया | ज़िन्दगी से | और वह ख़ुश हैं |

जिन लोगों ने अपने रब का हुक्म मान लिया उन के लिए भलाई है, और जिन्हों ने उस का हुक्म न माना अगर जो कुछ ज़मीन में है सब उन का हो और उस के साथ उस जैसा (और भी हो) कि वह उस को फ़िदये में देदें (फिर भी बचाओ न होगा), उन्हीं लोगों के लिए हिसाब बुरा है, और उन का ठिकाना जहन्नम है और (वह) बुरी जगह है। (18) क्या जो शख़्स जानता है कि जो उतारा गया तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से, वह हक़ है उस जैसा (हो सकता है) जो अन्धा हो, इस के सिवा नहीं कि अक़्ल वाले ही समझते हैं। (19) वह जो कि अल्लाह का अ़हद पूरा करते हैं, और पुख़्ता क़ौल ओ इक़रार नहीं तोड़ते। (20) और वह लोग जो जोड़े रखते हैं जिस के लिए अल्लाह ने हुक्म दिया कि जोड़ा जाए, और वह अपने रब से डरते हैं, और बुरे हिसाब का ख़ौफ़ खाते हैं। (21) और जिन लोगों ने अपने रब की ख़ुशी हासिल करने के लिए सब्र किया, और उन्हों ने नमाज़ क़ाइम की, और जो हम ने उन्हें दिया उस से ख़र्च किया पोशीदा और जाहिर, और वह नेकी से बुराई को टाल देते हैं, वही हैं जिन के लिए आख़िरत का घर है। (22) हमेशगी के बाग़ात (हैं) उन में वह दाख़िल होंगे, और वह जो उन के बाप दादा, और उन की बीवियों, और औलाद में से नेक हुए और उन पर हर दरवाजे से फ़रिश्ते दाख़िल होंगे, (23) (यह कहते हुए कि) तुम पर सलामती हो इस लिए कि तुम ने सब्र किया पस ख़ूब है आख़िरत का घर। (24) और जो लोग अल्लाह का अहद उस को पुख़्ता करने के बाद तोड़ते हैं, और वह काटते हैं जिस के लिए अल्लाह ने हुक्म दिया जो उसे जोड़ा जाए, और वह ज़मीन (मुल्क) में फ़साद करते हैं, यही लोग हैं जिन के लिए लानत है और उन के लिए बुरा घर है। (25) अल्लाह जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादा करता है, और (जिस के लिए चाहता है) तंग करता है, और वह दुनिया की ज़िन्दगी से ख़ुश हैं, और दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबले में मताअ़ हक़ीर है। (26)

और काफ़िर कहते हैं उस पर उस के रब (की तरफ़) से कोई निशानी क्यों न उतारी गई? आप (स) कह दें बेशक अल्लाह गुमराह करता है जिस को चाहता है, और अपनी तरफ़ उस को राह दिखाता है जो (उस की तरफ़) रुजूअ़ करे। (27) जो लोग ईमान लाए और इत्मीनान पाते हैं जिन के दिल अल्लाह की याद से, याद रखो! अल्लाह की याद (ही) से दिल इत्मीनान पाते हैं। (28) जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अ़मल किए नेक, उन के लिए ख़ुशहाली है और अच्छा ठिकाना। (29) इसी तरह हम ने तुम्हें उस उम्मत में भेजा है, गुज़र चुकी हैं इस से पहले उम्मतें ताकि जो हम ने तुम्हारी तरफ़ वहि किया है तुम उन को पढ़ कर (सुनाओ) और वह (अल्लाह) रहमान के मुन्किर होते हैं आप (स) कहदें वह मेरा रब है उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उस पर मैं ने भरोसा किया और उसी की तरफ़ मेरा रुजूअ़ है (रुजूअ़ करता हूँ)। (30)
और अगर ऐसा क़ुरआन होता कि उस से पहाड़ चल पड़ते, या उस से ज़मीन फट जाती, या उस से मुर्दे बात करने लगते (फिर भी यह ईमान न लाते) बल्कि अल्लाह ही के लिए है तमाम कामों (का इख़्तियार), तो क्या मोमिनों को (उस से) इत्मीनान नहीं हुआ कि अगर अल्लाह चाहता तो सब लोगों को हिदायत दे देता और काफ़िरों को उन के आमाल के बदले हमेशा सख़्त मुसीबत पहुंचती रहेगी, या उतरेगी क़रीब उन के घर के, यहां तक कि अल्लाह का वादा आजाए और बेशक अल्लाह वादे के खिलाफ़ नहीं करता। (31)
और अलबत्ता तुम से पहले रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया गया, तो मैं ने काफ़िरों को ढील दी, फिर मैं ने उन की पकड़ की सो मेरा बदला (अ़ज़ाब) कैसा था? (32)
पस क्या जो हर शख़्स के आमाल का निगरान है (वह बुतों की तरह हो सकता है?) और उन्हों ने बना लिए अल्लाह के शरीक, आप (स) कहदें उन के नाम तो लो या तुम (अल्लाह) को वह बतलाते हो जो पूरी ज़मीन में उस के इल्म में नहीं, या महज ज़ाहिरी (ऊपरी) बात करते हो, बल्कि जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के लिए उन के फ़रेब ख़ुशनुमा बना दिए गए और वह राहे (हिदायत) से रोक दिए गए और जिस को अल्लाह गुमराह करे उस के लिए कोई हिदायत देने वाला नहीं। (33)

وَيَقُولُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और कहते हैं | वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | क्यों न | उतारी गई | उस पर | कोई निशानी | से | उस का रब | आप कह दें | बेशक अल्लाह |

يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْۤ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ ۝٢٧ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَئِنُّ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गुमराह करता है | जिस को चाहता है | और राह दिखाता है | अपनी तरफ़ | जो | रुजूअ़ करे | 27 | जो लोग | ईमान लाए | और इत्मीनान पाते हैं |

قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ ۝٢٨ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिन के दिल | अल्लाह के ज़िक्र से | याद रखो | अल्लाह के ज़िक्र से | इत्मीनान पाते हैं | दिल (जमा) | 28 | जो लोग | ईमान लाए |

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوْبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاٰبٍ ۝٢٩ كَذٰلِكَ اَرْسَلْنٰكَ فِيْۤ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने अ़मल किए | नेक (जमा) | ख़ुशहाली | उन के लिए | और अच्छा | ठिकाना | 29 | इसी तरह | हम ने तुम्हें भेजा | में |

اُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَاۤ اُمَمٌ لِّتَتْلُوَاۡ عَلَيْهِمُ الَّذِيْۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस उम्मत | गुज़र चुकी हैं | उस से पहले | उम्मतें | ताकि तुम पढ़ो | उन पर (उन को) | वह जो कि | हम ने वहि किया | तुम्हारी तरफ़ |

وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ؕ قُلْ هُوَ رَبِّيْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह | मुन्किर होते हैं | रह्मान के | कह दें | वह | मेरा रब | नहीं कोई माबूद | उस के सिवा | उस पर | मैं ने भरोसा किया | और उस की तरफ़ |

مَتَابِ ۝٣٠ وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ اَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरा रुजूअ़ | 30 | और अगर | यह के (होता) | ऐसा क़ुरआन | चलाए जाते | उस से | पहाड़ | या | फट जाती | उस से | ज़मीन |

اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ؕ بَلْ لِّلّٰهِ الْاَمْرُ جَمِيْعًا ؕ اَفَلَمْ يَايْـَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| या बात करने लगते | उस से | मुर्दे | बल्कि | अल्लाह के लिए | काम | तमाम | तो क्या इत्मीनान नहीं हुआ | वह लोग जो ईमान लाए (मोमिन) | कि |

لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर अल्लाह चाहता | तो हिदायत दे देता | लोग | सब | और हमेशा | वह लोग जो काफ़िर हुए (काफ़िर) | उन्हें पहुँचेगी |

بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के बदले जो उन्हों ने किया (आमाल) | सख़्त मुसीबत | या उतरेगी | क़रीब | से (के) | उन के घर | यहां तक | आजाए | अल्लाह का वादा |

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝٣١ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَمْلَيْتُ ع ٥ ١٠

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक अल्लाह | ख़िलाफ़ नहीं करता | वादा | 31 | और अलबत्ता | मज़ाक़ उड़ाया गया | रसूलों का | तुम से पहले | तो मैं ने ढील दी |

لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۫ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝٣٢ اَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | फिर | मैं ने उन की पकड़ की | सो कैसा | था | मेरा बदला | 32 | पस क्या जो | वह | निगरान |

عَلٰى كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۚ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ قُلْ سَمُّوْهُمْ ؕ اَمْ تُنَبِّـُٔوْنَهٗ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | हर शख़्स | जो उस ने कमाया (आमाल) | और उन्हों ने बना लिए | अल्लाह के | शरीक (जमा) | आप कहदें | उन के नाम लो | या | तुम उसे बतलाते हो |

بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْاَرْضِ اَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ؕ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जो | उस के इल्म में नहीं | ज़मीन में | या | महज ज़ाहिरी | से | बात | बल्कि ख़ुशनुमा बना दिए गए | उन लोगों के लिए जिन्हों ने कुफ़्र किया |

مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا عَنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۝٣٣

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के फ़रेब | और वह रोक दिए गए | से | राह | और जो - जिस | गुमराह कर अल्लाह | तो नहीं | उस के लिए | कोई हिदायत देने वाला | 33 |

لَهُمْ عَـذَابٌ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَمَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं | निहायत तक्लीफ़दह | और अलबत्ता आख़िरत का अज़ाब | दुनिया की ज़िन्दगी | में | अज़ाब | उन के लिए |

لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿٣٤﴾ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِىْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| परहेज़गार (जमा) | वादा किया गया | और जो कि | जन्नत | कैफियत | 34 | कोई बचाने वाला | अल्लाह से | उन के लिए |

تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۗ اُكُلُهَا دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا ۗ تِلْكَ عُقْبَى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अन्जाम | यह | और उस का साया | दाइम | उस के फल | नहरें | उस के नीचे | बहती हैं |

الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۖ وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने उन्हें दी | और वह लोग जो | 35 | जहन्नम | काफ़िरों | और अन्जाम | परहेज़गारों (जमा) |

الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इन्कार करते हैं | जो | गिरोह | और बाज़ | तुम्हारी तरफ़ | नाज़िल किया गया | उस से जो | वह खुश होते हैं | किताब |

بَعْضَهٗ ۗ قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ بِهٖ ۗ اِلَيْهِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की तरफ़ | उस का | और न शरीक ठहराऊं | अल्लाह | मैं इबादत करूँ | कि | मुझे हुक्म दिया गया | इस के सिवा नहीं | आप कहदें | उस की बाज |

اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ﴿٣٦﴾ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ۗ وَلَئِنِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अगर | अरबी ज़बान में | हुक्म | हम ने उस को नाज़िल किया | और उसी तरह | 36 | मेरा ठिकाना | और उसी की तरफ़ | मैं बुलाता हूँ |

اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह से | तेरे लिए नहीं | इल्म (वहि) | जब कि तेरे पास आगया | बाद | उन की ख़ाहिशात | तू ने पैरवी की |

ع ٥ ٦ ١١ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا وَاقٍ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तुम से पहले | रसूल (जमा) | और अलबत्ता हम ने भेजे | 37 | और न कोई बचाने वाला | कोई हिमायती |

وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ۗ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِىَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लाए | कि | किसी रसूल के लिए | और नहीं हुआ | और औलाद | बीवियां | उन को | और हम ने दी |

بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ﴿٣٨﴾ يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो वह चाहता है | मिटा देता है अल्लाह | 38 | एक तहरीर | हर वादे के लिए | अल्लाह की इजाज़त से | बग़ैर | कोई निशानी |

وَيُثْبِتُ ۖ وَعِنْدَهٗٓ اُمُّ الْكِتٰبِ ﴿٣٩﴾ وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कुछ हिस्सा | तुम्हें दिखा दें हम | और अगर | 39 | अस्ल किताब (लौहे महफूज़) | उस के पास | और बाक़ी रखता है |

الَّذِىْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम पर (हमारा काम) | पहुँचाना | तुम पर (तुम्हारे ज़िम्मे) | तो इस के सिवा नहीं | हम तुम्हें वफ़ात दें | या | हम ने उन से वादा किया | वह जो कि |

الْحِسَابُ ﴿٤٠﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِى الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ۗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के किनारे | से | उस का घटाते | ज़मीन | कि हम चले आते हैं | क्या वह नहीं देखते | 40 | हिसाब लेना |

وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ۗ وَهُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٤١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 41 | हिसाब लेने वाला | जल्द | और वह | उस के हुक्म को | कोई पीछे डालने वाला नहीं | हुक्म फ़रमाता है | और अल्लाह |

उन के लिए दुनिया की जिन्दगी में अज़ाब है, अलबत्ता आखिरत का अज़ाब निहायत तक्लीफ़दह है और उन के लिए कोई अल्लाह से बचाने वाला नहीं। (34)

और उस जन्नत की कैफियत जिस का परहेज़गारों से वादा किया गया है (यह है) उस के नीचे नहरें बहती हैं, उस के फल दाइम (हमेशा) हैं और उस का साया (भी) यह है अन्जाम परहेज़गारों का, और काफ़िरों का अन्जाम जहन्नम है। (35)

और जिन लोगों को हम ने दी है किताब (अहले किताब) वह उस से खुश होते हैं जो तुम्हारी तरफ़ उतारा गया, और बाज़ गिरोह उस की बाज (बातों) का इन्कार करते हैं। आप (स) कहदें उस के सिवा नहीं कि मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूँ, और उस का शरीक न ठहराऊं, मैं उस की तरफ़ बुलाता हूँ और उसी की तरफ़ मेरा ठिकाना है। (36)

और उसी तरह हम ने इस (कुरआन) को अरबी ज़बान में हुक्म नाज़िल किया है, और अगर तू ने उन की ख़ाहिशात की पैरवी की उस के बाद जब कि तेरे पास आगया इल्म, न तेरे लिए अल्लाह से (अल्लाह के सामने) कोई हिमायती होगा, न कोई बचाने वाला। (37)

और अलबत्ता हम ने रसूल भेजे तुम से पहले, और हम ने उन को दी बीवियां और औलाद, और किसी रसूल के लिए (इख़्तियार में) नहीं हुआ कि वह लाए कोई निशानी अल्लाह की इजाज़त के बग़ैर, हर वादे के लिए एक तहरीर है। (38)

और अल्लाह जो चाहता है मिटा देता है और बाक़ी रखता है (जो वह चाहता है) और उस के पास लौहे महफूज़ है। (39)

और अगर हम तुम्हें कुछ हिस्सा (उस अज़ाब का) दिखा दें जिस का हम ने उन से वादा किया है, या तुम्हें वफ़ात दे दें, तो इस के सिवा नहीं कि तुम्हारे ज़िम्मे पहुँचाना है और हिसाब लेना हमारा काम है। (40)

क्या वह नहीं देखते? कि हम चले आते हैं ज़मीन को उस के किनारों से घटाते, और अल्लाह हुक्म फ़रमाता है, कोई उस के हुक्म को पीछे डालने वाला नहीं, और वह तेज़ हिसाब लेने वाला है। (41)

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيْعًا ۭ يَعْلَمُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जानता है | सब | चाल (तदबीर) | तो अल्लाह के लिए | उन से पहले | उन लोगों ने जो | और चालें चलीं |

مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ۭ وَسَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٤٢﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 42 | आक़िबत का घर | किस के लिए | काफ़िर | और अनक़रीब जान लेंगे | हर नफ़्स (शख़्स) | जो कमाता है |

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ۭ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۢ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गवाह | अल्लाह | काफ़ी है | आप (स) कहदें | रसूल | तू नहीं | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | और कहते हैं |

بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۙ وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ﴿٤٣﴾ ع ٦ ١٢

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 43 | किताब का इल्म | उस के पास | और जो | और तुम्हारे दरमियान | मेरे दरमियान |

آيَاتُهَا ٥٢ ❀ (١٤) سُوْرَةُ اِبْرٰهِيْمَ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٧

रुकूआत 7 | (14) सूरह इब्राहीम | आयात 52

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓرٰ ۣ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नूर की तरफ़ | अन्धेरों से | लोग | ताकि तुम निकालो | तुम्हारी तरफ़ | हम ने उस को उतारा | एक किताब | अलिफ़ लाम रा |

بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ﴿١﴾ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो कुछ | उसी के लिए | वह जो कि | अल्लाह | 1 | ख़ूबियों वाला | ज़बरदस्त | रास्ता | तरफ़ | उन का रब | हुक्म से |

فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدِ ﴿٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | सख़्त | अज़ाब | से | काफ़िरों के लिए | और ख़राबी | ज़मीन में | और जो कुछ | आस्मानों में |

الَّذِيْنَ يَسْتَحِبُّوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| से | और रोकते हैं | आख़िरत पर | दुनिया | ज़िन्दगी | पसन्द करते हैं | वह जो कि |

سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۭ اُولٰۗىِٕكَ فِيْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | दूर | गुमराही | में | वही लोग | कजी | और उस में ढूंडते हैं | अल्लाह का रास्ता |

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ۭ فَيُضِلُّ اللّٰهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर गुमराह करता है अल्लाह | उन के लिए | ताकि खोल कर बयान करदे | उस की क़ौम की | ज़बान में | मगर | कोई रसूल | और हम ने नहीं भेजा |

مَنْ يَّشَاۗءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | और वह | जिस को चाहता है | और हिदायत देता है | जिस को वह चाहता है |

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नूर की तरफ़ | अन्धेरों से | अपनी क़ौम | तू निकाल | कि | अपनी निशानियों के साथ | मूसा (अ) | और अलबत्ता हम ने भेजा |

وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | शुकर गुज़ार | हर सब्र करने वाले के लिए | अलबत्ता निशानियां | उस | में | बेशक | अल्लाह के दिन | और याद दिला उन्हें |

और जो उन से पहले थे उन्हों ने चालें चलीं तो सारी चाल तो अल्लाह ही की है, वह जानता है जो कमाता है हर शख़्स, और अनक़रीब काफ़िर जान लेंगे आक़िबत का घर किस के लिए है। (42) और काफ़िर कहते हैं: तू रसूल नहीं, आप (स) कह दें, मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह गवाह काफ़ी है, और वह जिस के पास किताब का इल्म है। (43)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-रा - यह एक किताब है, हम ने तुम्हारी तरफ़ उतारी, ताकि तुम लोगों को निकालो उन के रब के हुक्म से अन्धेरों से नूर की तरफ़, ग़ालिब, ख़ूबियों वाले अल्लाह के रास्ते की तरफ़, (1) उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों में है और ज़मीन में है, और काफ़िरों के लिए सख़्त अज़ाब से ख़राबी है। (2) जो दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द करते हैं आख़िरत पर, और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, और उस में कजी ढूंडते हैं, यही लोग दूर की गुमराही में हैं। (3) और हम ने कोई रसूल नहीं भेजा मगर उस की क़ौम की ज़बान में, ताकि वह उन के लिए (अल्लाह के अहकाम) खोल कर बयान कर दे फिर अल्लाह जिस को चाहता है गुमराह करता है, और जिस को चाहता है हिदायत देता है, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (4) और अलबत्ता हम ने मूसा (अ) को अपनी निशानियों के साथ भेजा कि अपनी क़ौम को अन्धेरों से रोशनी की तरफ़ निकाल, और उन्हें अल्लाह के (अज़ीम वाक़िआत के) दिन याद दिला, बेशक उस में हर इन्तिहाई सब्र करने वाले, शुक्र गुज़ार के लिए निशानियां हैं। (5)

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने ऊपर | अल्लाह की नेमत | तुम याद करो | अपनी क़ौम को | मूसा (अ) | कहा | और जब |

اِذْ اَنْجٰىكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बुरा अ़ज़ाब | वह तुम्हें पहुँचाते थे | फ़िरऔ़न की क़ौम | से | जब उस ने नजात दी तुम्हें |

وَيُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ۭ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَاۗءٌ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आज़माइश | उस | और में | तुम्हारी औरतें | और ज़िन्दा छोड़ते थे | तुम्हारे बेटे | और ज़ुबह करते थे |

ع ٢ ١٣ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۝٦ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَىِٕنْ شَكَرْتُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम शुक्र करोगे | अलबत्ता अगर | तुम्हारा रब | और जब आगाह किया | 6 | बड़ी | तुम्हारा रब | से |

لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَىِٕنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ ۝٧ وَقَالَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और कहा | 7 | बड़ा सख़्त | मेरा अ़ज़ाब | बेशक | तुम ने नाशुक्री की | और अलबत्ता अगर | तो मैं ज़रूर तुम्हें और ज़ियादा दूंगा |

مُوْسٰٓى اِنْ تَكْفُرُوْٓا اَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो बेशक अल्लाह | सब | ज़मीन में | और जो | तुम | नाशुक्री करोगे | अगर | मूसा (अ) |

صلے عند المتقدمين ١٣ لَغَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝٨ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम से पहले | वह लोग जो | ख़बर | क्या तुम्हें नहीं आई | 8 | सब ख़ूबियों वाला | बेनियाज़ |

قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ڛ وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ڛ لَا يَعْلَمُهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन की ख़बर नहीं | उन के बाद | और वह जो | और समूद | और आद | नूह (अ) की क़ौम |

اِلَّا اللّٰهُ ۭ جَاۗءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपने हाथ | तो उन्हों ने लौटाए | निशानियों के साथ | उन के रसूल | उन के पास आए | अल्लाह के सिवाए |

فِيْٓ اَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوْٓا اِنَّا كَفَرْنَا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के साथ | तुम्हें भेजा गया | वह जो | बेशक हम नहीं मानते | और वह बोले | उन के मुँह | में |

وقف لازم وَاِنَّا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ۝٩ قَالَتْ رُسُلُهُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के रसूल | कहा | 9 | तरद्दुद में डालते हुए | उस की तरफ़ | तुम हमें बुलाते हो | उस से जो | शक | अलबत्ता में | और बेशक हम |

اَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ يَدْعُوْكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह तुम्हें बुलाता है | और ज़मीन | आस्मानों | बनाने वाला | शुबाह - शक | क्या अल्लाह में |

لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एक मुद्दत मुक़र्ररा | तक | और मोहलत दे तुम्हें | तुम्हारे गुनाह | से (कुछ) | ता कि बख़्शदे तुम्हें |

قَالُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۭ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَصُدُّوْنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमें रोक दो | कि | तुम चाहते हो | हम जैसे | बशर | सिर्फ़ | तुम | नहीं | वह बोले |

عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَاۗؤُنَا فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝١٠

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | रौशन | दलील, मोजिज़ा | पस लाओ हमारे पास | हमारे बाप दादा | पूजते थे | उस से जो |

और (याद करो) जब कहा मूसा (अ) ने अपनी क़ौम को, तुम अपने ऊपर अल्लाह की नेमत याद करो, जब उस ने तुम्हें फ़िरऔ़न की क़ौम से नजात दी, वह तुम्हें बुरा अ़ज़ाब पहुँचाते थे, और तुम्हारे बेटों को ज़ुबह करते थे, और तुम्हारी औ़रतों (लड़कियों) को ज़िन्दा छोड़ देते थे, और उस में तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ी आज़माइश थी। (6) और जब तुम्हारे रब ने आगाह किया, अलबत्ता अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं ज़रूर तुम्हें और ज़ियादा दूंगा, अलबत्ता अगर तुम ने नाशुक्री की तो बेशक मेरा अज़ाब बड़ा सख़्त है। (7) और मूसा (अ) ने कहा अगर नाशुक्री करोगे तुम और जो ज़मीन में है सब के सब, तो बेशक अल्लाह बेनियाज़, सब ख़ूबियों वाला है। (8) क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बर नहीं आई जो तुम से पहले थे (मिसल के लिऐ) क़ौमे नूह (अ), आद और समूद, और वह जो उन के बाद हुए, उन की ख़बर (किसी को) नहीं अल्लाह के सिवा, उन के पास उन के रसूल निशानियों के साथ आए, तो उन्हों ने अपने हाथ उन के मुँह में लौटाए (ख़ामोश कर दिया) और बोले तुम्हें जिस (रिसालत) के साथ भेजा गया है हम नहीं मानते, और अलबत्ता तुम हमें जिस की तरफ़ बुलाते हो हम शक में हैं तरद्दुद में डालते हुए। (9) उन के रसूलों ने कहा क्या तुम्हें ज़मीन और आस्मान के बनाने वाले अल्लाह के बारे में शक है? वह तुम्हें बुलाता है ताकि तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्श दे, और एक मुद्दत मुक़र्ररा तक तुम्हें मोहलत दे, वह बोले नहीं तुम सिर्फ़ हम जैसे बशर हो, तुम चाहते हो कि हमें रोक दो जिन को हमारे बाप दादा पूजते थे, पस हमारे पास रौशन दलील (मोजिज़ा) लाओ। (10)

उन के रसूलों ने उन से कहा (बेशक) हम सिर्फ़ तुम जैसे बशर हैं लेकिन अल्लाह अपने बन्दों में से जिस पर चाहे एहसान करता है, और हमारे लिए (हमारा काम) नहीं कि हम अल्लाह के हुक्म के बग़ैर तुम्हारे पास कोई दलील (मोजिज़ा) लाएं, और मोमिनों को अल्लाह पर ही भरोसा करना चाहिए। **(11)** और हमें क्या हुआ? कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें, और उस ने हमें हमारी राहें दिखा दी हैं, और तुम हमें जो ईज़ा देते हो हम उस पर ज़रूर सब्र करेंगे, और भरोसा करने वालों को अल्लाह पर ही भरोसा करना चाहिए। **(12)** और काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा हम तुम्हें ज़रूर निकाल देंगे अपनी ज़मीन (मुल्क) से, या तुम हमारे दीन में लौट आओ तो उन के रब ने उन की तरफ़ वहि भेजी कि हम ज़ालिमों को ज़रूर हलाक कर देंगे। **(13)** और अलबत्ता हम तुम्हें उन के बाद उस ज़मीन में ज़रूर आबाद कर देंगे, यह इस लिए है जो डरा मेरे रूबरू खड़ा होने से, और डरा मेरे एलाने अज़ाब से। **(14)** और उन्हों ने (अंबिया ने) फ़तह मांगी, और नामुराद हुआ हर सरकश, ज़िद्दी। **(15)** उस के पीछे जहन्नम है, और उसे पीप का पानी पिलाया जाएगा। **(16)** वह उसे घूंट घूंट पिएगा, और उसे गले से न उतार सकेगा, और उसे मौत आएगी हर तरफ़ से और वह मरेगा नहीं, और उस के पीछे सख़्त अज़ाब है। **(17)** उन लोगों की मिसाल जो अपने रब के मुन्किर हुए, उन के अमल राख की तरह हैं कि उस पर आन्धी के दिन ज़ोर की हवा चली (और सब उड़ा लेगई) जो उन्हों ने कमाया उन्हें उस से किसी चीज़ पर कुदरत न होगी, यही है दूर की (परले दरजे की) गुमराही। **(18)** क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया हक़ के साथ (ठीक ठीक) अगर वह चाहे तुम्हें ले जाए और ले आए कोई नई मख़्लूक़। **(19)** और यह अल्लाह पर कुछ दुश्वार नहीं। **(20)**

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ نَّحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एहसान करता है | अल्लाह | और लेकिन | तुम जैसे | बशर | सिर्फ़ | हम | नहीं | उन के रसूल | उन से | कहा |

عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۭ وَمَا كَانَ لَنَآ اَنْ نَّاْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई दलील | तुम्हारे पास लाएं | कि | हमारे लिए | और नहीं है | अपने बन्दे | से | जिस पर चाहे |

اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ⑪ وَمَا لَنَآ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारे लिए | और क्या | 11 | मोमिन (जमा) | पस भरोसा करना चाहिए | और अल्लाह पर | अल्लाह के हुक्म से | मगर (बग़ैर) |

اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ۭ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | पर | और हम ज़रूर सब्र करेंगे | हमारी राहें | और उस ने हमें दिखा दीं | अल्लाह पर | कि हम न भरोसा करें |

اٰذَيْتُمُوْنَا ۭ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ⑫ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ع ٢ ١٢

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | और कहा | 12 | भरोसा करने वाले | पस भरोसा करना चाहिए | और अल्लाह पर | तुम हमें ईज़ा देते हो |

لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ۭ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारे दीन में | तुम लौट आओ | या | अपनी ज़मीन | से | ज़रूर हम तुम्हें निकाल देंगे | अपने रसूलों को |

فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ⑬ وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन | और अलबत्ता हम तुम्हें आबाद करेंगे | 13 | ज़ालिम (जमा) | ज़रूर हम हलाक कर देंगे | उन का रब | उन की तरफ़ | तो वहि भेजी |

مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۭ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَخَافَ وَعِيْدِ ⑭ وَاسْتَفْتَحُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने फ़तह मांगी | 14 | वईद (एलाने अज़ाब) | और डरा | मेरे रूबरू खड़ा होना | डरा | उस के लिए जो | यह | उन के बाद |

وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ⑮ مِّنْ وَّرَاۗىِٕهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ مَّاۗءٍ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पानी | से | और उसे पिलाया जाएगा | जहन्नम | उस के पीछे | 15 | ज़िद्दी | सरकश | हर | और नामुराद हुआ |

صَدِيْدٍ ⑯ يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | मौत | और आएगी उसे | गले से उतार सकेगा उसे | और न | उसे घूंट घूंट पिएगा | 16 | पीप वाला |

كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۭ وَمِنْ وَّرَاۗىِٕهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ⑰ مَثَلُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मिसाल | 17 | सख़्त | अज़ाब | और उस के पीछे | मरने वाला | और न वह | हर तरफ़ |

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ۨاشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ۭ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आन्धी वाला | दिन | में | हवा | उस पर | ज़ोर की चली | राख की तरह | उन के अमल | अपने रब के | वह लोग जो मुन्किर हुए |

لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ⑱

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | दूर | गुमराही | वह | यह | किसी चीज़ पर | उन्हों ने कमाया | उस से जो | उन्हें कुदरत न होगी |

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۭ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हें लेजाए | वह चाहे | अगर | हक़ के साथ | और ज़मीन | आस्मानों | पैदा किया | अल्लाह | कि | क्या तू ने न देखा |

وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ⑲ وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ⑳

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | कुछ दुश्वार | अल्लाह पर | यह | और नहीं | 19 | नई | मख़्लूक़ | और लाए |

وَبَـــرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक हम थे | बड़े बनते थे | उन लोगों से जो | कमजोर | फिर कहेंगे | सब | अल्लाह के आगे | और वह हाज़िर होंगे |

لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किसी क़द्र | अल्लाह का अज़ाब | से | हम से | दफ़ा करते हो | तुम | तो क्या | तावे | तुम्हारे |

قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا اللّٰهُ لَهَدَيْنٰكُمْ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| या | ख़्वाह हम घबराएं | हम पर (हमारे लिए) | बराबर | अलबत्ता हम हिदायत करते तुम्हें | अल्लाह | हमें हिदायत करता | अगर | वह कहेंगे |

ع ٣ ١٥ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿٢١﴾ وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अमर | फ़ैसला हो गया | जब | शैतान | और बोला | 21 | कोई छुटकारा | नहीं हमारे लिए | हम सब्र करें |

اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْ ۭ وَمَا كَانَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| था | और न | फिर मैं ने उस के ख़िलाफ़ किया तुम से | और मैं ने वादा किया तुम से | सच्चा वादा | वादा किया तुम से | बेशक अल्लाह |

لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّآ اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरा | पस तुम ने कहा मान लिया | मैं ने बुलाया तुम्हें | यह कि | मगर | कोई ज़ोर | तुम पर | मेरा |

فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ مَآ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़र्याद रसी कर सकते हो मेरी | तुम | और न | फ़र्याद रसी कर सकता तुम्हारी | नहीं मैं | अपने ऊपर | और इल्ज़ाम लगाओ तुम | लिहाज़ा न लगाओ मुझ पर इल्ज़ाम तुम |

اِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَآ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ۭ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | ज़ालिम (जमा) | बेशक | उस से क़ब्ल | तुम ने शरीक बनाया मुझे | उस से जो | बेशक मैं इन्कार करता हूँ |

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٢﴾ وَاُدْخِلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नेक | और उन्हों ने अ़मल किए | जो लोग ईमान लाए | और दाख़िल किए गए | 22 | दर्दनाक अ़ज़ाब |

جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना रब | हुक्म से | उस में | वह हमेशा रहेंगे | नहरें | उन के नीचे | बहती हैं | बाग़ात |

تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ﴿٢٣﴾ اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मिसाल | बयान की अल्लाह ने | कैसी | क्या तुम ने नहीं देखा | 23 | सलाम | उन में | उन का तुह्फ़ा ए मुलाक़ात |

كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ ﴿٢٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 24 | आस्मान | में | और उस की शाख़ | मज़बूत | उस की जड़ | पाकीज़ा | जैसे दरख़्त | कलिमाए तय्यबा (पाक बात) |

تُؤْتِيْٓ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍ بِاِذْنِ رَبِّهَا ۭ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मिसाल | अल्लाह | और बयान करता है | अपना रब | हुक्म से | हर वक़्त | अपना फल | वह देता है |

لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٥﴾ وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नापाक बात | और मिसाल | 25 | वह ग़ौर ओ फ़िक्र करें | ताकि वह | लोगों के लिए |

كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ﴿٢٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 26 | कुछ भी क़रार | नहीं उस के लिए | जमीन | ऊपर | से | उखाड़ दिया गया | मानिंद दरख़्त नापाक |

वह सब अल्लाह के आगे हाज़िर होंगे, फिर कहेंगे कमज़ोर उन लोगों से जो बड़े बनते थे, बेशक हम तुम्हारे तावे थे तो क्या तुम हम से दफ़ा कर सकते हो? किसी क़द्र अल्लाह का अ़ज़ाब, वह कहेंगे अगर अल्लाह हमें हिदायत करता तो अलबत्ता हम तुम्हें हिदायत करते, अब हमारे लिए बराबर है हम घबराएं या सब्र करें, हमारे लिए कोई छुटकारा नहीं। (21) और (रोज़े हिसाब) जब तमाम अमूर (कामों) का फ़ैसला हो गया शैतान बोला बेशक अल्लाह ने तुम से सच्चा वादा किया था, और मैं ने (भी) तुम से वादा किया, फिर मैं ने तुम से उस के ख़िलाफ़ किया, और न था मेरा तुम पर कोई ज़ोर, मगर यह कि मैं ने तुम्हें बुलाया, और तुम ने मेरा कहा मान लिया, लिहाज़ा तुम मुझ पर कुछ इल्ज़ाम न लगाओ, इल्ज़ाम अपने ऊपर लगाओ, न मैं तुम्हारी फ़र्याद रसी कर सकता हूँ और न तुम मेरी फ़र्याद रसी कर सकते हो, बेशक मैं इन्कार करता हूँ उस का जो तुम ने इस से क़ब्ल मुझे शरीक बनाया, बेशक ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (22) और दाख़िल किए गए वह लोग जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अमल किए बाग़ात में, उन के नीचे नहरें बहती हैं, वह हमेशा रहेंगे उस में अपने रब के हुक्म से, उस में उन का तुह्फ़ाए मुलाक़ात "सलाम" है। (23) क्या तुम ने नहीं देखा? अल्लाह ने कैसी मिसाल बयान की है? पाक बात की? जैसे पाकीज़ा पेड़, उस की जड़ मज़बूत और उस की शाख़ आस्मान में, (24) वह देता है हर वक़्त अपना फल अपने रब के हुक्म से, और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है, ताकि वह ग़ौर ओ फ़िक्र करें। (25) और नापाक बात की मिसाल नापाक पेड़ की तरह है जिसे ज़मीन के ऊपर से उखाड़ दिया गया, उस के लिए कुछ भी क़रार नहीं। (26)

अल्लाह मोमिनों को मज़बूत बात से मज़बूत रखता है, दुनिया की ज़िन्दगी में और आख़िरत में (भी), और अल्लाह ज़ालिमों को भटका देता है, और अल्लाह करता है जो वह चाहता है। **(27)** क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा? जिन्हों ने अल्लाह की नेमत को नाशुक्री से बदल दिया, और अपनी क़ौम को उतारा तबाही के घर में। **(28)** वह जहन्नम है वह उस में दाख़िल होंगे और वह बुरा ठिकाना है। **(29)** और उन्हों ने अल्लाह के लिए शरीक ठहराए ताकि वह उस के रास्ते से गुमराह करें, आप (स) कह दें, फ़ाइदा उठा लो, बेशक तुम्हारा लौटना (बाज़गश्त) जहन्नम की तरफ़ है। **(30)** आप (स) मेरे उन बन्दों से कह दें जो ईमान लाए कि वह नमाज़ क़ाइम करें और उस में से ख़र्च करें जो हम ने उन्हें दिया है छुपा कर और ज़ाहिरी तौर पर, उस से क़ब्ल कि वह दिन आजाए जिस में न ख़रीद ओ फ़रोख़्त होगी और न दोस्ती। **(31)** अल्लाह है जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया, और आस्मान से पानी उतारा, फिर उस से निकाला तुम्हारे लिए फलों से रिज़्क़, और तुम्हारे लिए कश्ती को मुसख़्ख़र (ताबे फ़रमान) किया ताकि उस (अल्लाह) के हुक्म से दर्या में चले और मुसख़्ख़र किया तुम्हारे लिए नहरों को। **(32)** और तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया सूरज और चाँद को कि वह एक दस्तूर पर चल रहे हैं, और तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया रात और दिन को, **(33)** और उस ने तुम्हें दी हर चीज़ जो तुम ने उस से माँगी, और अगर तुम अल्लाह की नेमत गिनने लगो तुम उसे शुमार में न लासकोगे, बेशक इन्सान बड़ा ज़ालिम, नाशुक्रा है। **(34)** और जब इब्राहीम (अ) ने कहा ऐ हमारे रब! बनादे इस शहर को अमन की जगह, और मुझे और मेरी औलाद को उस से दूर रख कि हम बुतों की परस्तिश करने लगें। **(35)**

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दुनिया की ज़िन्दगी | में | मज़बूत | बात से | वह लोग जो ईमान लाए (मोमिन) | अल्लाह | मज़बूत रखता है |

وَفِى الْاٰخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ۙ وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ﴿٢٧﴾ ع ٦ ١٦

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 27 | जो चाहता है | अल्लाह | और करता है | ज़ालिम (जमा) | अल्लाह | और भटका देता है | और आख़िरत में |

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا وَّاَحَلُّوْا قَوْمَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी क़ौम | और उतारा | नाशुक्री से | अल्लाह की नेमत | बदल दिया | वह जिन्हों ने | को | क्या तुम ने नहीं देखा |

دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۗ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٢٩﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने ठहराए अल्लाह के लिए | 29 | ठिकाना | और बुरा | उस में दाख़िल होंगे | जहन्नम | 28 | तबाही का घर |

اَنْدَادًا لِّيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ۗ قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारा लौटना | फिर बेशक | फ़ाइदा उठा लो | कह दें | उस का रास्ता | से | ताकि वह गुमराह करें | शरीक |

اِلَى النَّارِ ﴿٣٠﴾ قُلْ لِّعِبَادِىَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नमाज़ | क़ाइम करें | ईमान लाए | वह जो कि | मेरे बन्दों से | कह दें | 30 | जहन्नम | तरफ़ |

وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِىَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कि आजाए | उस से क़ब्ल | और ज़ाहिर | छुपा कर | हम ने उन्हें दिया | उस से जो | और ख़र्च करें |

يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ﴿٣١﴾ اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने पैदा किया | वह जो | अल्लाह | 31 | और न दोस्ती | उस में | न ख़रीद ओ फ़रोख़्त | वह दिन |

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से | फिर निकाला | पानी | आस्मान से | और उतारा | और ज़मीन | आस्मान (जमा) |

مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِىَ فِى الْبَحْرِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दर्या में | ताकि चले | कश्ती | तुम्हारे लिए | और मुसख़्ख़र किया | तुम्हारे लिए | रिज़्क़ | फल (जमा) | से |

بِاَمْرِهٖ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ﴿٣٢﴾ وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और चाँद | सूरज | तुम्हारे लिए | और मुसख़्ख़र किया | 32 | नहरें (नदियां) | तुम्हारे लिए | और मुसख़्ख़र किया | उस के हुक्म से |

دَآئِبَيْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ﴿٣٣﴾ وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | हर चीज़ | से | और उस ने तुम्हें दी | 33 | और दिन | रात | तुम्हारे लिए | और मुसख़्ख़र किया | एक दस्तूर पर चलने वाले |

سَاَلْتُمُوْهُ ۗ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۗ اِنَّ الْاِنْسَانَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इन्सान | बेशक | उसे शुमार में न लासकोगे | अल्लाह | नेमत | गिनने लगो तुम | और अगर | तुम ने उस से मांगी |

لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ﴿٣٤﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ ع ٥ ١٧

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बना दे | ऐ हमारे रब | इब्राहीम (अ) | कहा | और जब | 34 | नाशुक्रा | बेशक बड़ा ज़ालिम |

هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِىْ وَبَنِىَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ﴿٣٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 35 | बुत (जमा) | हम परस्तिश करें | कि | और मेरी औलाद | और मुझे दूर रख | अमन की जगह | यह शहर |

رَبِّ إِنَّهُنَّ أَضْلَلْنَ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पस जो - जिस | लोग | से | बहुत | उन्हों ने गुमराह किया | बेशक वह | ऐ मेरे रब |

تَبِعَنِي فَإِنَّهُ مِنِّي ۖ وَمَنْ عَصَانِي فَإِنَّكَ غَفُورٌ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बख़्शने वाला | तो बेशक तू | मेरी नाफ़रमानी की | और जो - जिस | मुझ से | बेशक वह | मेरी पैरवी की |

رَّحِيمٌ ﴿٣٦﴾ رَبَّنَا إِنِّي أَسْكَنتُ مِن ذُرِّيَّتِي بِوَادٍ غَيْرِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बग़ैर | मैदान | अपनी औलाद | से कुछ | मैं ने बसाया | बेशक मैं | ऐ हमारे रब | 36 | निहायत मेहरबान |

ذِي زَرْعٍ عِندَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ رَبَّنَا لِيُقِيمُوا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ताकि क़ाइम करें | ऐ हमारे रब | एहतिराम वाला | तेरा घर | नज़्दीक | खेती वाली |

الصَّلَوٰةَ فَاجْعَلْ أَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِي إِلَيْهِمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की तरफ़ | वह माइल हों | लोग | से | दिल (जमा) | पस कर दे | नमाज़ |

وَارْزُقْهُم مِّنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ ﴿٣٧﴾ رَبَّنَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ हमारे रब | 37 | शुक्र करें | ताकि वह | फल (जमा) | से | और उन्हें रिज़्क़ दे |

إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِي وَمَا نُعْلِنُ ۗ وَمَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह पर | छुपी हुई | और नहीं | हम ज़ाहिर करते हैं | और जो | जो हम छुपाते हैं | तू जानता है | बेशक तू |

مِن شَيْءٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ﴿٣٨﴾ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जो - जिस | अल्लाह के लिए | तमाम तारीफ़ें | 38 | आस्मान | में | और न | ज़मीन मे | चीज़ | से - कोई |

وَهَبَ لِي عَلَى الْكِبَرِ إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ ۚ إِنَّ رَبِّي لَسَمِيعُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता सुनने वाला | मेरा रब | बेशक | और इस्हाक़ (अ) | इस्माइल (अ) | बुढ़ापा | पर - में | बख़्शा मुझे |

الدُّعَاءِ ﴿٣٩﴾ رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَوٰةِ وَمِن ذُرِّيَّتِي ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरी औलाद | और से - को | नमाज़ | क़ाइम करने वाला | मुझे बना | ऐ मेरे रब | 39 | दुआ |

رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ﴿٤٠﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और मेरे माँ बाप को | मुझे बख़्शदे | ऐ हमारे रब | 40 | दुआ | और क़ुबूल फ़रमा | ऐ हमारे रब |

ع ٦ ١٨ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ﴿٤١﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम हरगिज़ गुमान करना | और न | 41 | हिसाब | क़ाइम होगा | जिस दिन | और मोमिनों को |

اللَّهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظَّالِمُونَ ۚ إِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हें मोहलत देता है | सिर्फ़ | ज़ालिम (जमा) | वह करते हैं | उस से जो | बेख़बर | अल्लाह |

لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيهِ الْأَبْصَارُ ﴿٤٢﴾ مُهْطِعِينَ مُقْنِعِي

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उठाए हुए | वह दौड़ते होंगे | 42 | आँखें | उस में | खुली रह जाएगी | उस दिन तक |

رُءُوسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ إِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۖ وَأَفْئِدَتُهُمْ هَوَاءٌ ﴿٤٣﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 43 | उड़े हुए | और उन के दिल | उन की निगाहें | उन की तरफ़ | न लौट सकेंगी | अपने सर |

ऐ मेरे रब! बेशक उन्हों ने बहुत से लोगों को गुमराह किया, पस जिस ने मेरी पैरवी की, बेशक वह मुझ से है, और जिस ने मेरी नाफ़रमानी की तो बेशक तू बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (36)

ऐ हमारे रब! बेशक मैं ने अपनी कुछ औलाद को एक बग़ैर खेती वाले मैदान में बसाया है तेरे एहतिराम वाले घर के नज़्दीक, ऐ हमारे रब! ताकि वह नमाज क़ाइम करें, पस लोगों के दिलों को (ऐसा) कर दे कि वह उन की तरफ़ माइल हों, और उन्हें फलों से रिज़्क़ दे, ताकि वह शुक्र करें। (37)

ऐ हमरे रब! बेशक तू जानता है जो हम छुपाते हैं और जो ज़ाहिर करते हैं, और अल्लाह पर कोई चीज़ छुपी हुई नहीं ज़मीन में और न आस्मान में। (38)

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, जिस ने मुझे बुढ़ापे में बख़्शा इस्माइल (अ) और इस्हाक़ (अ), बेशक मेरा रब दुआ सुनने वाला है। (39)

ऐ मेरे रब! मुझे बना नमाज़ क़ाइम करने वाला, और मेरी औलाद को भी, ऐ हमारे रब! मेरी दुआ क़ुबूल फ़रमा ले। (40)

ऐ हमारे रब! जिस दिन हिसाब क़ाइम होगा (रोज़े हिसाब) मुझे और मेरे माँ बाप को, और मोमिनों को बख़्शदे। (41)

और तुम हरगिज़ गुमान न करना कि अल्लाह उस से बेखबर है जो वह ज़ालिम करते हैं। वह सिर्फ़ उन्हें उस दिन तक मोहलत देता है, जिस में खुली रह जाएगी आँखें। (42)

वह अपने सर (ऊपर को) उठाए हुए दौड़ते होंगे, उन की निगाहें उन की तरफ़ न लौट सकेंगी, और उन के दिल (ख़ौफ़ से) उड़े हुए होंगे। (43)

और लोगों को उस दिन से डराओ जब उन पर अ़ज़ाब आएगा, तो कहेंगे ज़ालिम, ऐ हमारे रब! हमें एक थोड़ी मुद्दत के लिए मोहलत देदे कि हम तेरी दावत क़ुबूल कर लें, और हम पैरवी करें रसूलों की, क्या तुम उस से क़ब्ल क़स्में न खाते थे? कि तुम्हारे लिए कोई ज़वाल नहीं। (44) और तुम रहे थे उन लोगों के घरों में जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया था, और तुम पर ज़ाहिर हो गया था कि हम ने उन से कैसा सुलूक किया और हम ने तुम्हारे लिए मिसालें बयान कीं। (45) और उन्हों ने अपने दाओ चले, और अल्लाह के आगे हैं उन के दाओ, अगरचे उन का दाओ ऐसा था कि उस से पहाड़ टल जाते। (46) पस तू हरगिज़ ख़याल न कर कि अल्लाह ख़िलाफ़ करेगा अपने रसूलों से अपना वादा, बेशक अल्लाह ज़बरदस्त बदला लेने वाला है। (47) जिस दिन (उस) ज़मीन से बदल दी जाएगी और ज़मीन और (बदले जाएंगे) आस्मान, और वह सब अल्लाह यकता सख़्त क़हर वाले के आगे निकल खड़े होंगे। (48) और तू देखेगा मुज्रिम उस दिन बाहम ज़न्जीरों में जकड़े होंगे। (49) उन के कुर्ते गन्धक के होंगे, और आग उन के चहरे ढांपे होगी। (50) ताकि अल्लाह हर जान को उस की कमाई (आमाल) का बदला दे, बेशक अल्लाह तेज़ हिसाब लेने वाला है। (51) यह (क़ुरआन) लोगों के लिए पैग़ाम है, और ताकि वह उस से डराए जाएं, और ताकि वह जान लें कि वही माबूद यकता है, और ताकि अ़क़्ल वाले नसीहत पकड़ें। (52) अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है अलिफ़-लाम-रा - यह आयतें हैं किताब की, और वाज़ेह (रौशन) क़ुरआन की। (1)

وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम) | वह लोग जो | तो कहेंगे | अ़ज़ाब | उन पर आएगा | वह दिन | लोग | और डराओ |

رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रसूल (जमा) | और हम पैरवी करें | तेरी दावत | हम क़ुबूल करलें | थोड़ी | एक मुद्दत | तरफ़ | हमें मोहलत दे | ऐ हमारे रब |

اَوَلَمْ تَكُوْنُوْٓا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ﴿٤٤﴾ وَّسَكَنْتُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम रहे थे | 44 | काई ज़वाल | तुम्हारे लिए नहीं | इस से क़ब्ल | तुम क़स्में खाते | तुम थे | या क्या न |

فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन से | हम ने (सुलूक) किया | कैसा | तुम पर | और ज़ाहिर हो गया | अपनी जानों पर | ने ज़ुल्म किया | जिन लोगों | घर (जमा) | में |

وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ﴿٤٥﴾ وَقَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के दाओ | और अल्लाह के आगे | अपने दाओ | और उन्हों ने दाओ चले | 45 | मिसालें | तुम्हारे लिए | और हम ने बयान कीं |

وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿٤٦﴾ فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़िलाफ़ करेगा | अल्लाह | पस तू हरगिज़ ख़याल न कर | 46 | पहाड़ | उस से | कि टल जाए | उन का दाओ | था | और अगरचे |

وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٤٧﴾ يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन | बदल दी जाएगी | जिस दिन | 47 | बदला लेने वाला | ज़बरदस्त | बेशक अल्लाह | अपने रसूल | अपना वादा |

غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿٤٨﴾ وَتَرَى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तू देखेगा | 48 | सख़्त क़हर वाला | यकता | अल्लाह के आगे | वह निकल खड़े होंगे | और आस्मान (जमा) | मुख़्तलिफ़ ज़मीन |

الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ﴿٤٩﴾ سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से - के | उन के कुर्ते | 49 | ज़न्जीरें | में | बाहम जकड़े हुए | उस दिन | मुज्रिम (जमा) |

قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ﴿٥٠﴾ لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | हर जान | अल्लाह | ताकि बदला दे | 50 | आग | उन के चहरे | और ढांप लेगी | गन्धक |

كَسَبَتْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٥١﴾ هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और ताकि वह डराए जाएं | लोगों के लिए | यह पहुँचा देना (पैग़ाम) | 51 | तेज़ हिसाब लेने वाला | बेशक अल्लाह | उस ने कमाया (कमाई) |

بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٥٢﴾ ع ٦ ١٩

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 52 | अक़्ल वाले | और ताकि नसीहत पकड़ें | यकता | वह माबूद | उस के सिवा नहीं | और ताकि वह जान लें | उस से |

## آياتها ٩٩ ❀ (١٥) سُوْرَةُ الْحِجْرِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

| | | |
|---|---|---|
| रुकूआत 6 | (15) सूरतुल हिज्र पत्थर | आयात 99 |

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿١﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | वाज़ेह - रौशन | और क़ुरआन | किताब | आयतें | यह | अलिफ़ लाम रा |

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ﴿٢﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 2 | मुसलमान | काश वह होते | वह लोग जो काफ़िर हुए | आर्ज़ू करेंगे | बसा औक़ात |

ذَرْهُمْ يَاْكُلُوْا وَيَتَمَتَّعُوْا وَيُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पस अनक़रीब | उम्मीद | और ग़फ़्लत में रखे उन्हें | और फ़ाइदा उठा लें | वह खाएं | उन्हें छोड़ दो |

يَعْلَمُوْنَ ﴿٣﴾ وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक लिखा हुआ | उस के लिए | मगर | बस्ती | किसी | हम ने हलाक किया | और नहीं | 3 | वह जान लेंगे |

مَّعْلُوْمٌ ﴿٤﴾ مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | वह पीछे रहते हैं | और न | अपना मुक़र्ररा वक़्त | कोई उम्मत | न सबक़त करती है | 4 | मुक़र्ररा वक़्त |

وَقَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الَّذِىْ نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | दीवाना | बेशक तू | याद दिहानी (क़ुरआन) | उस पर | वह जो कि उतारा गया | ऐ वह | और वह बोले |

لَوْ مَا تَاْتِيْنَا بِالْمَلٰٓئِكَةِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٧﴾ مَا نُنَزِّلُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम नाज़िल नहीं करते | 7 | सच्चा | से | तू है | अगर | फ़रिश्तों को | हमारे पास तू नहीं ले आता | क्यों |

الْمَلٰٓئِكَةَ اِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوْٓا اِذًا مُّنْظَرِيْنَ ﴿٨﴾ اِنَّا نَحْنُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम | बेशक | 8 | मोहलत दिए गए | उस वक़्त | और न होंगे | हक़ के साथ | मगर | फ़रिश्ते |

نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿٩﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | और यक़ीनन हम ने भेजे | 9 | निगहबान | उस के | और बेशक हम | याद दिहानी (क़ुरआन) | हम ने नाज़िल किया |

قَبْلِكَ فِىْ شِيَعِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٠﴾ وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर | कोई रसूल | और नहीं आया उन के पास | 10 | पहले | गिरोह | में | तुम से पहले |

كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١١﴾ كَذٰلِكَ نَسْلُكُهٗ فِىْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٢﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12 | मुज्रिमों | दिल (जमा) | में | हम उसे डाल देते हैं | उसी तरह | 11 | इस्तिहज़ा करते | उस से | वह थे |

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣﴾ وَلَوْ فَتَحْنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम खोल दें | और अगर | 13 | पहले | रस्म - रविश | और पड़ चुकी है | उस पर | वह ईमान नहीं लाएंगे |

عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ فَظَلُّوْا فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ ﴿١٤﴾ لَقَالُوْٓا اِنَّمَا سُكِّرَتْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बान्ध दी गई | इस के सिवा नहीं | तो कहेंगे | 14 | चढ़ते | उस में | वह रहें | आस्मान | से | कोई दरवाज़ा | उन पर |

ع ١٥ ١ اَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ ﴿١٥﴾ وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِى السَّمَآءِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मान | में | और यक़ीनन हम ने बनाए | 15 | सिह्र ज़दह | लोग | हम | बल्कि | हमारी आँखें |

بُرُوْجًا وَّزَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿١٦﴾ وَحَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शैतान | हर | से | और हम ने हिफ़ाज़त की उस की | 16 | देखने वालों के लिए | और उसे ज़ीनत दी | बुर्ज (जमा) |

رَّجِيْمٍ ﴿١٧﴾ اِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٨﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | चमकता हुआ | शोला | तो उस का पीछा करता है | सुनना | चोरी करे | जो | मगर | 17 | मर्दूद |

बाज़ औक़ात काफ़िर आर्ज़ू करेंगे काश वह मुसलमान होते! (2) उन्हें छोड़ दो, वह खाएं और फ़ाइदा उठा लें, और उम्मीद उन्हें ग़फ़्लत में डाले रखे, पस अनक़रीब वह जान लेंगे। (3) और नहीं हलाक किया हम ने किसी बस्ती को, मगर उस के लिए एक लिखा हुआ वक़्त मुक़र्रर था। (4) न कोई उम्मत सबक़त करती है अपने मुक़र्ररा वक़्त से, और न वह पीछे रहते हैं। (5) और वह (काफ़िर) बोले ऐ वह शख़्स जिस पर क़ुरआन उतारा गया है बेशक तू दीवाना है, (6) तू हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नहीं ले आता? अगर तू सच्चों में से है। (7) हम नाज़िल नहीं करते फ़रिश्ते मगर हक़ के साथ, और वह उस वक़्त मोहलत न दिए जाएंगे। (8) बेशक हम ही ने क़ुरआन नाज़िल किया और बेशक हम ही उस के निगहबान हैं। (9) और यक़ीनन हम ने तुम से पहले गिरोहों में (रसूल) भेजे, (10) और उन के पास कोई रसूल नहीं आया मगर वह उस से इस्तिहज़ा करते थे। (11) उसी तरह हम उसे डाल देते हैं मुज्रिमों के दिलों में। (12) वह इस (क़ुरआन) पर ईमान नहीं लाएंगे, और यह पहलों की रस्म पड़ चुकी है। (13) और अगर हम उन पर आस्मान का कोई दरवाज़ा खोल दें, और वह उस में (दिन भर) चढ़ते रहें। (14) तो (यही) कहेंगे कि इस के सिवा नहीं कि हमारी आँखें बान्ध दी गई हैं (हमारी नज़र बन्दी कर दी गई है) बल्कि हम सिह्र ज़दह हैं। (15) और यक़ीनन हम ने आस्मानों में बुर्ज बनाए, और उसे देखने वालों के लिए ज़ीनत दी, (16) और हम ने हर मर्दूद शैतान से उस की हिफ़ाज़त की, (17) मगर जो चोरी कर के (चोरी से) सुन ले, तो चमकता हुआ शोला उस का पीछा करता है। (18)

और हम ने ज़मीन को फैला दिया, और हम ने उस पर पहाड़ रखे, और उस में हर चीज़ मुनासिब उगाई (19) और हम ने तुम्हारे लिए उस में रोज़ी के सामाने बनाए (और उस के लिए भी) जिसे तुम रिज़्क़ देने वाले नहीं। (20) और कोई चीज़ नहीं जिस के ख़ज़ाने हमारे पास न हों, और हम नहीं उतारते मगर एक मुनासिब अन्दाज़े से। (21) और हम ने हवाएं भेजीं (पानी से) भरी हुई, फिर हम ने आस्मान से पानी उतारा, फिर वह हम ने तुम्हें पिलाया, और तुम उस के ख़ज़ाने (जमा) करने वाले नहीं। (22) और बेशक हम (ही) ज़िन्दगी देते हैं, और हम ही मारते हैं, और हम ही वारिस हैं। (23) और तहक़ीक़ हमें मालूम है तुम में से आगे गुज़र जाने वाले, और तहक़ीक़ हमें मालूम है पीछे रह जाने वाले। (24) और बेशक तेरा रब (ही) उन्हें (रोज़े क़ियामत) जमा करेगा, बेशक वह हिक्मत वाला, इल्म वाला है। (25) और तहक़ीक़ हम ने इन्सानों को पैदा किया एक खनखनाते हुए, सियाह सड़े हुए गारे से। (26) और जिनों को उस से पहले हम ने बे धुएं की आग से पैदा किया। (27) और जब तेरे रब ने फ़रिश्तों से कहा बेशक मैं इन्सान को बनाने वाला हूँ, एक खनखनाते हुए सियाह सड़े हुए गारे से। (28) फिर जब मैं उसे दुरुस्त कर लूँ, और उस में अपनी रूह फूंक दूँ तो तुम उस के लिए सिज्दे में गिर पड़ो। (29) पस सिज्दा किया सब के सब फ़रिश्तों ने, (30) इब्लीस के सिवा। उस ने (उस से) इन्कार किया कि वह सिज्दा करने वालों के साथ हो। (31) अल्लाह ने फ़रमाया, ऐ इब्लीस! तुझे क्या हुआ? कि तू सिज्दा करने वालों के साथ न हुआ। (32) उस ने कहा मैं (वह) नहीं हूँ कि सिज्दा करूँ इन्सान को, तू ने उस को खनखनाते हुए सियाह सड़े हुए गारे से पैदा किया है। (33)

وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | और हम ने उगाई | पहाड़ | उस में (पर) | और हम ने रखे | हम ने उस को फैला दिया | और ज़मीन |

مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُوْنٍ ١٩ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ وَمَنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो जिस | सामाने मईशत | उस में | तुम्हारे लिए | और हम ने बनाए | 19 | मौज़ूं | हर शै | से |

لَّسْتُمْ لَهٗ بِرٰزِقِيْنَ ٢٠ وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ وَمَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं | उस के ख़ज़ाने | हमारे पास | मगर | कोई चीज़ | और नहीं | 20 | रिज़्क़ देने वाले | उस के लिए | तुम नहीं |

نُنَزِّلُهٗٓ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ٢١ وَاَرْسَلْنَا الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنْزَلْنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर हम ने उतारा | भरी हुई | हवाएं | और हम ने भेजीं | 21 | मालूम मुनासिब | अन्दाज़े से | मगर | हम उस को उतारते |

مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَسْقَيْنٰكُمُوْهُ ۚ وَمَآ اَنْتُمْ لَهٗ بِخٰزِنِيْنَ ٢٢

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 22 | ख़ज़ाने करने वाले | उस के | तुम | और नहीं | फिर हम ने वह तुम्हें पिलाया | पानी | आस्मान | से |

وَاِنَّا لَنَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَنَحْنُ الْوٰرِثُوْنَ ٢٣ وَلَقَدْ عَلِمْنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तहक़ीक़ हमें मालूम है | 23 | वारिस (जमा) | और हम | और हम मारते हैं | ज़िन्दगी देते हैं | अलबत्ता हम | और बेशक हम |

الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَاْخِرِيْنَ ٢٤ وَاِنَّ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और बेशक | 24 | पीछे रह जाने वाले | और तहक़ीक़ हमें मालूम है | तुम में से | आगे गुज़रने वाले |

رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ۭ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ٢٥ وَلَقَدْ خَلَقْنَا ع ٢ ٢

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तहक़ीक़ हम ने पैदा किया | 25 | इल्म वाला | हिक्मत वाला | बेशक वह | उन्हें जमा करेगा | वह | तेरा रब |

الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ٢٦ وَالْجَآنَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जिन (जमा) | 26 | सड़ा हुआ | सियाह गारे से | खनकनाता हुआ | से | इन्सान |

خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ ٢٧ وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तेरा रब | कहा | और जब | 27 | आग बे धुएं की | से | उस से पहले | हम ने उसे पैदा किया |

لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ٢٨

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 28 | सड़ा हुआ | सियाह गारा | से | खनकनाता हुआ | से | इन्सान | बनाने वाला | बेशक मैं | फ़रिश्तों को |

فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ٢٩

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 29 | सिज्दा करते हुए | उस के लिए | ता गिर पड़ो | अपनी रूह से | उस में | और फूकूं | मैं उस दुरुस्त कर लूँ | फिर जब |

فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ٣٠ اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ اَبٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مَعَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| साथ | वह हो | उस ने इन्कार किया कि | इब्लीस | सिवाए | 30 | सब के सब | वह सब | फ़रिश्तों | पस सिज्दा किया |

السّٰجِدِيْنَ ٣١ قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا لَكَ اَلَّا تَكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِيْنَ ٣٢ قَالَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने कहा | 32 | सिज्दा करने वाले | साथ | कि तू न हुआ | तुझे क्या हुआ | ऐ इब्लीस | उस ने फ़रमाया | 31 | सिज्दा करने वाले |

لَمْ اَكُنْ لِّاَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهٗ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ٣٣

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 33 | सड़ा हुआ | सियाह गारा | से | खनकनाता हुआ | से | तू ने उस को पैदा किया | इन्सान को | कि सिज्दा करूँ | मैं नहीं हूँ |

قَـــالَ فَـــاخْـــرُجْ مِـنْـهَـا فَـــاِنَّـــكَ رَجِـيْـمٌ ﴿٣٤﴾ وَّاِنَّ عَـلَـيْـكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुझ पर | और बेशक | 34 | मर्दूद | बेशक तू | यहां से | पस निकल जा | उस ने कहा |

الـلَّـعْـنَـةَ اِلٰى يَـــوْمِ الـــدِّيْـــنِ ﴿٣٥﴾ قَـــالَ رَبِّ فَـــاَنْـــظِـرْنِــيْٓ اِلٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तक | मुझे मोहलत दे | ऐ मेरे रब | उस ने कहा | 35 | रोज़े इन्साफ़ | तक | लानत |

يَـوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿٣٦﴾ قَـالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿٣٧﴾ اِلٰى يَـوْمِ الْوَقْتِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वक़्त | दिन | तक | 37 | मोहलत दिए जाने वाले | से | बेशक तू | उस ने कहा | 36 | जिस दिन (मुर्दे) उठाए जाएंगे |

الْـمَـعْـلُـوْمِ ﴿٣٨﴾ قَـــالَ رَبِّ بِـمَـآ اَغْـوَيْـتَـنِـيْ لَاُزَيِّـــنَـــنَّ لَـهُـمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | तो मैं ज़रूर आरास्ता करूंगा | तू ने मुझे गुमराह किया | जैसा कि | ऐ मेरे रब | उस ने कहा | 38 | मालूम (मुक़र्रर) |

فِـى الْاَرْضِ وَلَاُغْـوِيَـنَّـهُـمْ اَجْـمَـعِـيْـنَ ﴿٣٩﴾ اِلَّا عِـبَـادَكَ مِـنْـهُـمُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन में से | तेरे बन्दे | सिवाए | 39 | सब | और मैं ज़रूर गुमराह करूंगा उनको | ज़मीन में |

الْـمُـخْـلَـصِـيْـنَ ﴿٤٠﴾ قَـــالَ هٰـذَا صِـــرَاطٌ عَـلَـيَّ مُـسْـتَـقِـيْـمٌ ﴿٤١﴾ اِنَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | 41 | सीधा | मुझ तक | रास्ता | यह | उस ने फ़रमाया | 40 | मुख़्लिस (जमा) |

عِـــبَـــادِيْ لَـــيْـــسَ لَـــكَ عَـلَـيْـهِـمْ سُـلْـطٰـنٌ اِلَّا مَـــنِ اتَّـــبَـــعَـــكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तेरी पैरवी की | जो - जिस | मगर | कोई जोर | उन पर | तेरे लिए (तेरा) | नही | मेरे बन्दे |

مِـــنَ الْـــغٰـــوِيْـــنَ ﴿٤٢﴾ وَاِنَّ جَـهَـنَّـمَ لَـمَـوْعِـدُهُـمْ اَجْـمَـعِـيْـنَ ﴿٤٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 43 | सब | उन के लिए वादा गाह | जहन्नम | और बेशक | 42 | बहके हुए (गुमराह) | से |

٣ ع ١٩ ٢ لَـهَـا سَـبْـعَـةُ اَبْــوَابٍ لِـكُـلِّ بَـــابٍ مِّـنْـهُـمْ جُـزْءٌ مَّـقْـسُـوْمٌ ﴿٤٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 44 | तक़्सीम शुदह | एक हिस्सा | उन से | हर दरवाज़े के लिए | दरवाज़े | सात | उस के लिए |

اِنَّ الْـمُـتَّـقِـيْـنَ فِـيْ جَـنّٰـتٍ وَّعُـيُـوْنٍ ﴿٤٥﴾ اُدْخُـلُـوْهَـا بِـسَـلٰـمٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सलामती के साथ | तुम उन में दाख़िल हो जाओ | 45 | और चश्मे | बाग़ात | में | परहेज़गार | बेशक |

اٰمِـنِـيْـنَ ﴿٤٦﴾ وَنَـزَعْـنَـا مَـا فِـيْ صُـدُوْرِهِـمْ مِّـنْ غِـلٍّ اِخْـوَانًـا عَـلٰى

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | भाई भाई | कीना | से | उन के सीने | में | जो | और हम ने खींच लिया | 46 | बेख़ौफ़ ओ ख़तर |

سُـــرُرٍ مُّـتَـقٰـبِـلِـيْـنَ ﴿٤٧﴾ لَا يَـمَـسُّـهُـمْ فِـيْـهَـا نَـصَـبٌ وَّمَـا هُـمْ مِّـنْـهَـا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से | वह | और न | कोई तक्लीफ़ | उस में | उन्हें न छुएगी | 47 | आमने सामने | तख़्त (जमा) |

بِمُخْرَجِيْنَ ﴿٤٨﴾ نَـبِّـئْ عِـبَـادِيْٓ اَنِّـيْٓ اَنَـا الْـغَـفُـوْرُ الرَّحِـيْـمُ ﴿٤٩﴾ وَاَنَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और यह कि | 49 | निहायत मेहरबान | बख़्शने वाला | मैं | कि बेशक | मेरे बन्दों | ख़बर दे दो | 48 | निकाले जाएंगे |

وقف لازم عَذَابِيْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِيْمُ ﴿٥٠﴾ وَنَبِّئْـهُـمْ عَنْ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ ﴿٥١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 51 | इब्राहीम (अ) | मेहमान | से का | और उन्हें ख़बर दो (सुना दो) | 50 | दर्दनाक | अ़ज़ाब | वह (ही) | मेरा अ़ज़ाब |

اِذْ دَخَـلُـوْا عَـلَـيْـهِ فَـقَـالُـوْا سَـلٰـمًـا ؕ قَـالَ اِنَّـا مِـنْـكُـمْ وَجِـلُـوْنَ ﴿٥٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 52 | डरने वाले (डरते हैं) | तुम से | हम | उस ने कहा | सलाम | तो उन्हों ने कहा | उस पर (पास) | वह दाख़िल हुए (आए) | जब |

अल्लाह ने फ़रमाया पस यहां (जन्नत) से निकल जा बेशक तू मर्दूद है। (34)
और बेशक तुझ पर रोज़े इन्साफ़ (क़ियामत) तक लानत है। (35)
उस ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे उस दिन तक मोहलत दे जिस दिन मुर्दे उठाए जाएंगें। (36)
उस ने फ़रमाया बेशक तू मोहलत दिए जाने वालों में से है, (37)
उस दिन तक जिस का वक़्त मुक़र्रर है। (38)
उस ने कहा ऐ मेरे रब! जैसा कि तू ने मुझे गुमराह किया तो मैं ज़रूर उन के लिए (गुनाह को) ज़मीन में आरास्ता करूंगा, और मैं जरूर उन सब को गुमराह करूंगा। (39)
सिवाए उन में से जो तेरे मुख़्लिस बन्दे हैं। (40)
उस ने फ़रमाया यह रास्ता सीधा मुझ तक (आता है)। (41)
बेशक वह मेरे बन्दे हैं उन पर तेरा कोई जोर नहीं, मगर गुमराहों में से जिस ने तेरी पैरवी की। (42)
और बेशक उन सब के लिए जहन्नम वादागाह है। (43)
उस के सात दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े के लिए उन का बांटा हुआ हिस्सा है। (44)
बेशक परहेज़गार बाग़ों और चश्मों में (होंगे)। (45)
तुम उन में सलामती के साथ बेख़ौफ़ ओ ख़तर दाख़िल हो जाओ। (46)
और हम ने उन के सीनों से खींच लिए कीने, भाई भाई (बन कर) तख़्तों पर आमने सामने (बैठे होंगे)। (47)
उस में उन्हें कोई तक्लीफ़ न छुएगी, और न वह उस से निकाले जाएंगे। (48)
मेरे बन्दों को ख़बर दे दो कि बेशक मैं बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान हूँ। (49)
और यह कि मेरा ही अ़जाब दर्दनाक अ़ज़ाब है। (50)
और उन्हें इब्राहीम (अ) के मेहमानों का (हाल) सुना दो। (51)
जब वह उस के पास आए तो उन्हों ने सलाम कहा, उस ने कहा हम तुम से डरते हैं। (52)

उन्हों ने कहा डरो नहीं, हम तुम्हें एक लड़के की ख़ुशख़बरी देते हैं इल्म वाले की। (53) उस (इब्राहीम अ) ने कहा क्या तुम मुझे इस हाल में ख़ुशख़बरी देते हो कि मुझे बुढ़ापा पहुँच गया है? सो किस बात की ख़ुशख़बरी देते हो? (54) वह बोले हम ने तुम्हें ख़ुशख़बरी दी है सच्चाई के साथ, आप मायूस होने वालों में से न हों। (55) उस ने कहा अपने रब की रहमत से कौन मायूस होगा? गुमराहों के सिवा। (56) उस ने कहा ऐ फ़रिश्तो! पस तुम्हारी मुहिम क्या है? (57) वह बोले बेशक हम भेजे गए हैं मुजरिमों की एक क़ौम की तरफ़, (58) सिवाए लूत (अ) के घर वालों के, अलबत्ता हम उन सब को बचा लेंगे। (59) सिवाए उस की औरत के, हम ने फ़ैसला कर लिया है कि वह पीछे रह जाने वालों में से है। (60) पस जब फ़रिश्ते लूत (अ) के घर वालों के पास आए, (61) उस ने कहा बेशक तुम नाआशना लोग हो। (62) वह बोले बल्कि हम तुम्हारे पास उस (अज़ाब) के साथ आए हैं जिस में वह शक करते थे। (63) और हम तुम्हारे पास हक़ के साथ आए हैं और बेशक हम सच्चे हैं। (64) पस अपने घर वालों को रात के एक हिस्से में (कुछ रात रहे) ले निकलें और ख़ुद उन के पीछे पीछे चलें, और न तुम में से कोई पीछे मुड़ कर देखे, और चले जाओ जैसे तुम्हें हुक्म दिया गया है (65) और हम ने उस की तरफ़ उस बात का फ़ैसला भेज दिया कि सुबह होते उन लोगों की जड़ कट जाएगी। (66) और शहर वाले ख़ुशियां मनाते आए। (67) उस (लूत अ) ने कहा यह मेरे मेहमान हैं, मुझे तुम रुस्वा न करो। (68) और अल्लाह से डरो और मुझे ख़्वार न करो। (69) वह बोले क्या हम ने तुझे सारे जहान (की हिमायत से) मना नहीं किया? (70) उस ने कहा यह मेरी बेटियां हैं (इन से निकाह कर लो) अगर तुम्हें करना है। (71) (ऐ मुहम्मद स) तुम्हारी जान की क़सम यह लोग बेशक अपने नशे में मदहोश थे। (72)

قَالُوْا لَا تَوْجَلْ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ﴿٥٣﴾ قَالَ اَبَشَّرْتُمُوْنِىْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या तुम मुझे ख़ुशख़बरी देते हो | उस ने कहा | 53 | इल्म वाला | एक लड़का | बेशक हम तुम्हें ख़ुशख़बरी देते हैं | डरो नहीं | उन्हों ने कहा |

عَلٰٓى اَنْ مَّسَّنِىَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ ﴿٥٤﴾ قَالُوْا بَشَّرْنٰكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने तुम्हें ख़ुशख़बरी दी | वह बोले | 54 | तुम ख़ुशख़बरी देते हो | सो किस बात | बुढ़ापा | मुझे पहुँच गया | कि | पर - में |

بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْقٰنِطِيْنَ ﴿٥٥﴾ قَالَ وَمَنْ يَّقْنَطُ مِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | मायूस होगा | और कौन | उस ने कहा | 55 | मायूस होने वाले | से | आप न हों | सच्चाई के साथ |

رَّحْمَةِ رَبِّهٖٓ اِلَّا الضَّآلُّوْنَ ﴿٥٦﴾ قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ | पस क्या है तुम्हारा काम (मुहिम) | उस ने कहा | 56 | गुमराह (जमा) | सिवाए | अपना रब | रहमत |

الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٧﴾ قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٥٨﴾ اِلَّآ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सिवाए | 58 | मुजरिम (जमा) | एक क़ौम | तरफ़ | भेजे गए | हम बेशक | वह बोले | 57 | भेजे हुए (फ़रिश्ता) |

اٰلَ لُوْطٍ ؕ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥٩﴾ اِلَّا امْرَاَتَهٗ قَدَّرْنَآ ۙ اِنَّهَا لَمِنَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | बेशक वह | हम ने फ़ैसला कर लिया है | उस की औरत | सिवाए | 59 | सब | अलबत्ता हम उन्हें बचा लेंगे | हम | घर वाले लूत के |

الْغٰبِرِيْنَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا جَآءَ اٰلَ لُوْطِ ِۨالْمُرْسَلُوْنَ ﴿٦١﴾ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लोग | बेशक तुम | उस ने कहा | 61 | भेजे हुए (फ़रिश्ते) | लूत (अ) के घर वाले | आए | पस जब | 60 | पीछे रह जाने वाले |

مُّنْكَرُوْنَ ﴿٦٢﴾ قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿٦٣﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 63 | शक करते | उस में | वह थे | उस के साथ जो | हम आए हैं तुम्हारे पास | बल्कि | वह बोले | 62 | ऊपरे (ना आशना) |

وَاَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٦٤﴾ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | एक हिस्सा | अपने घर वालों को | पस ले निकलें आप | 64 | अलबत्ता सच्चे | और बेशक हम | हक़ के साथ | और हम तुम्हारे पास आए हैं |

الَّيْلِ وَاتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّامْضُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और चले जाओ | कोई | तुम में से | पीछे मुड़ कर देखे | और न | उन के पीछे | और ख़ुद चलें | रात |

حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَقَضَيْنَآ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَآءِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह लोग | जड़ | कि | बात | उस | उस की तरफ़ | और हम ने फ़ैसला भेजा | 65 | तुम्हें हुक्म दिया गया | जैसे |

مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَجَآءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٦٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 67 | ख़ुशियां मनाते | शहर वाले | और आए | 66 | सुबह होते | कटी हुई |

قَالَ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ ضَيْفِىْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ ﴿٦٨﴾ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ ﴿٦٩﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 69 | और मुझे ख़्वार न करो | अल्लाह | और डरो | 68 | पस मुझे रुस्वा न करो तुम | मेरे मेहमान | यह लोग | कि | उस ने कहा |

قَالُوْٓا اَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٠﴾ قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنٰتِىْٓ اِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर | मेरी बेटियां | यह | उस ने कहा | 70 | सारे जहान | से | हम ने तुझे मना किया | क्या नहीं | वह बोले |

كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿٧١﴾ لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِىْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 72 | मदहोश थे | अपने नशे | अलबत्ता में | बेशक वह | तुम्हारी जान की क़सम | 71 | करने वाले (करना है) | तुम हो |

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾ فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के नीचे का हिस्सा | उस के ऊपर का हिस्सा | पस हम ने उसे कर दिया | 73 | सूरज निकलते वक़्त | चिंघाड़ | पस उन्हें आ लिया |

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ﴿٧٤﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| निशानियां | उस | में | बेशक | 74 | संगे गिल (खिंगर) | से | पत्थर | उन पर | और हम ने बरसाए |

لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ ﴿٧٥﴾ وَاِنَّهَا لَبِسَبِيْلٍ مُّقِيْمٍ ﴿٧٦﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| निशानी | उस | में | बेशक | 76 | सीधा | रास्ते पर | और बेशक वह | 75 | ग़ौर ओ फ़िक्र करने वालों के लिए |

لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٧﴾ وَاِنْ كَانَ اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ لَظٰلِمِيْنَ ﴿٧٨﴾ فَانْتَقَمْنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने बदला लिया | 78 | ज़ालिम (जमा) | एयका (वन) वाले (क़ौमे शुऐब) | थे | और तहक़ीक़ | 77 | ईमान वालों के लिए |

وقف لازم
ع ١٩ ٥ ٥
مِنْهُمْ ۘ وَاِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٩﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ اَصْحٰبُ الْحِجْرِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हिज्र वाले | और अलबत्ता झुटलाया | 79 | खुले | रास्ते पर | और बेशक वह दोनों | उन से |

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٨٠﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ اٰيٰتِنَا فَكَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٨١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 81 | मुँह फेरने वाले | उस से | पस वह थे | अपनी निशानियां | और हम ने उन्हें दीं | 80 | रसूल (जमा) |

وَكَانُوْا يَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ ﴿٨٢﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 82 | बेख़ौफ़ ओ ख़तर | घर | पहाड़ (जमा) | से | और वह तराशते थे |

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ ﴿٨٣﴾ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | उन के | तो न काम आया | 83 | सुब्ह होते | चिंघाड़ | पस उन्हें आ लिया |

كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | और ज़मीन | आस्मान (जमा) | पैदा किया हम ने | और नहीं | 84 | वह कमाया करते थे |

بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ ۗ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दरगुज़र करना | पस दरगुज़र करो | ज़रूर आने वाली | क़ियामत | और बेशक | हक़ के साथ | मगर | उन के दरमियान |

الْجَمِيْلَ ﴿٨٥﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨٦﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने तुम्हें दी | और तहक़ीक़ | 86 | जानने वाला | पैदा करने वाला | वह | तुम्हारा रब | बेशक | 85 | अच्छा |

سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ﴿٨٧﴾ لَا تَمُدَّنَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हरगिज़ न बढ़ाएं आप | 87 | अज़मत वाला | और क़ुरआन | बार बार दोहराई जाने वाली | से | सात |

عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और न ग़म खाएं | उन के | कई जोड़े | उस को | जो हम ने बरतने को दिया | तरफ़ | अपनी आँखें |

عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾ وَقُلْ اِنِّيْٓ اَنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मैं | बेशक मैं | और कह दें | 88 | मोमिनों के लिए | अपने बाज़ू | और झुका दें | उन पर |

النَّذِيْرُ الْمُبِيْنُ ﴿٨٩﴾ كَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ ﴿٩٠﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 90 | तक़सीम करने वाले | पर | हम ने नाज़िल किया | जैसे | 89 | डराने वाला अलानिया |

पस उन्हें सूरज निकलते चिंघाड़ ने आ लिया। (73) पस हम ने उस (बस्ती) के ऊपर का हिस्सा नीचे (उल्टा पुल्टा) कर दिया, और हम ने उन पर खिंगर के पत्थर बरसाए। (74) बेशक उस में ग़ौर ओ फ़िक्र करने वालों के लिए निशानियां हैं। (75) और बेशक वह (बस्ती) सीधे रास्ते पर (वाक़े) है। (76) बेशक उस में ईमान वालों के लिए निशानी है। (77) और तहक़ीक़ क़ौमे शुऐब (अ) के लोग ज़ालिम थे। (78) और हम ने उन से बदला लिया, और वह दोनों (बस्तियां वाक़े हैं) एक खुले रास्ते पर। (79) और अलबत्ता "हिज्र" के रहने वालों ने रसूलों को झुटलाया। (80) और हम ने उन्हें अपनी निशानियां दीं पस वह उन से मुँह फेरने वाले थे। (81) और वह पहाड़ों से बेख़ौफ़ ओ ख़तर घर तराशते थे। (82) पस उन्हें सुब्ह होते चिंघाड़ ने आ लिया। (83) तो जो वह कमाया करते थे (उन का क्या धरा) उन के काम न आया। (84) और हम ने आस्मानों और ज़मीन को और जो उन के दरमियान है नहीं पैदा किया मगर हक़ (हिक्मत) के साथ, और बेशक क़ियामत ज़रूर आने वाली है पस अच्छी तरह माफ़ करो। (85) बेशक तुम्हारा रब ही पैदा करने वाला, जानने वाला है। (86) और तहक़ीक़ हम ने तुम्हें (सूरह-ए-फ़ातिहा की) बार बार दोहराई जाने वाली सात (आयात) दीं और अज़मत वाला क़ुरआन। (87) आप (स) हरगिज़ अपनी आँखें न बढ़ाएं (आँख उठा कर भी न देखें) (उन चीज़ों की) तरफ़ जो हम ने उन के कई जोड़ों (गिरोहों) को दीं, और उन पर ग़म न खाएं, और आप (स) अपने बाज़ू झुका दें मोमिनों के लिए। (88) और कह दें बेशक मैं अलानिया डराने वाला हूँ। (89) जैसे हम ने तक़सीम करने वालों (तफ़रिक़ा परदाज़ों) पर अज़ाब नाज़िल किया। (90)

जिन लोगों ने कुरआन को टुकड़े टुकड़े कर डाला (कुछ को माना कुछ को न माना)। (91)
सो तेरे रब की क़सम हम उन सब से ज़रूर पूछेंगे। (92)
उस की बाबत जो वह करते थे। (93)
पस जिस बात का आप (स) को हुक्म दिया गया है साफ़ साफ़ कह दें और मुश्रिकों से एराज करें (मुँह फेर लें)। (94)
बेशक मज़ाक़ उड़ाने वालों (के ख़िलाफ़) तुम्हारे लिए हम काफ़ी हैं। (95)
जो लोग अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद बनाते हैं पस वह अनक़रीब जान लेंगे। (96)
और अलबत्ता हम जानते हैं कि वह जो कहते हैं उस से आप (स) का दिल तंग होता है, (97)
तो तस्बीह करें (पाकीज़गी बयान करें) अपने रब की हम्द के साथ, और सिज्दा करने वालों में से हों, (98)
और अपने रब की इबादत करते रहें यहां तक कि आप (स) के पास यक़ीनी बात (मौत) आ जाए। (99)
अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रह्म करने वाला है
आपहुँचा अल्लाह का हुक्म सो उस की जल्दी न करो, वह पाक है और उस से बरतर जो वह (अल्लाह का) शरीक बनाते हैं। (1)
वह फ़रिश्ते अपने हुक्म से वहि के साथ नाज़िल करता है अपने बन्दों में से जिस पर वह चाहता है कि तुम डराओ कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, पस मुझ ही से डरो। (2)
उस ने पैदा किए आस्मान और ज़मीन हिक्मत के साथ, वह उस से बरतर है जो वह शरीक करते हैं। (3)
उस ने इन्सान को पैदा किया नुत्फ़े से, फिर वह नागहां खुला झगड़ालू हो गया। (4)
और उस ने चौपाए पैदा किए तुम्हारे लिए, उन में गर्म सामान (गर्म कपड़े) और फ़ाइदे हैं, और उन में से (बाज़ को) तुम खाते हो। (5)
और तुम्हारे लिए उन में ख़ूबसूरती और शान है जिस वक़्त शाम को चरा कर लाते हो, और जिस वक़्त सुब्ह को चराने ले जाते हो। (6)

الَّـذِيْـنَ جَعَلُـوا الْـقُـرْاٰنَ عِـضِيْـنَ ﴿٩١﴾ فَـوَرَبِّـكَ لَنَسْـَٔلَنَّـهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ज़रूर पूछेंगे उन से | सो तेरे रब की क़सम | 91 | टुकड़े टुकड़े | क़ुरआन | उन्हों ने कर दिया | वह लोग जो |

اَجْمَعِيْـنَ ﴿٩٢﴾ عَمَّـا كَانُـوْا يَعْمَلُـوْنَ ﴿٩٣﴾ فَاصْـدَعْ بِمَـا تُـؤْمَـرُ الربع

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हें हुक्म दिया गया | जिस का | पस साफ़ साफ़ कह दें आप (स) | 93 | वह करते थे | उस की बाबत जो | 92 | सब |

وَاَعْـرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٩٤﴾ اِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ﴿٩٥﴾ الَّذِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो लोग | 95 | मज़ाक़ उड़ाने वाले | काफ़ी है तुम्हारे लिए | बेशक हम | 94 | मुश्रिक (जमा) | से | और एराज करें |

يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَـرَ ۚ فَـسَـوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَلَـقَـدْ نَعْلَـمُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम जानते हैं | और अलबत्ता | 96 | वह जान लेंगे | पस अनक़रीब | कोई दूसरा | माबूद | अल्लाह के साथ | बनाते हैं |

اَنَّـكَ يَضِيْقُ صَـدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ ﴿٩٧﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّـكَ وَكُـنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हो | अपना रब | हम्द के साथ | ता तस्बीह करें | 97 | जो वह कहते हैं | उस से | तुम्हारा सीना (दिल) | तंग होता है | बेशक तुम |

مِّـنَ الـسّٰـجِـدِيْـنَ ﴿٩٨﴾ وَاعْـبُـدْ رَبَّـكَ حَـتّٰـى يَـاْتِـيَـكَ الْـيَـقِـيْـنُ ﴿٩٩﴾ ع ٢٠ ٦

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 99 | यक़ीनी बात | आए आप (स) के पास | यहां तक कि | अपना रब | और इबादत करें | 98 | सिज्दा करने वाले | से |

آيَاتُهَا ١٢٨ ❀ (١٦) سُوْرَةُ النَّحْلِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٦

आयात 128 — (16) सूरतुन नहल शहद की मक्खी — रुकूआत 16

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَتٰٓى اَمْـرُ اللّٰهِ فَـلَا تَـسْـتَـعْـجِـلُـوْهُ ۗ سُـبْـحٰـنَـهٗ وَتَـعٰـلٰى عَـمَّـا

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| उस से जो | और बरतर | वह पाक है | सो उस की जल्दी न करो | आ पहुँचा अल्लाह का हुक्म |

يُشْرِكُوْنَ ﴿١﴾ يُـنَـزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِـالـرُّوْحِ مِـنْ اَمْـرِهٖ عَلٰى مَـنْ يَّشَآءُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिसे चाहता है | पर | अपने हुक्म | से | वहि के साथ | फ़रिश्ते | वह नाज़िल करता है | 1 | वह शरीक बनाते हैं |

مِـنْ عِـبَـادِهٖٓ اَنْ اَنْـذِرُوْٓا اَنَّـهٗ لَآ اِلٰـهَ اِلَّآ اَنَـا فَـاتَّـقُـوْنِ ﴿٢﴾ خَـلَـقَ

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने पैदा किए | 2 | पस मुझ से डरो | मेरे | सिवाए | कोई माबूद | नही | कि वह | तुम डराओ | कि | अपने बन्दे | से |

الـسَّـمٰـوٰتِ وَالْاَرْضَ بِـالْـحَـقِّ ۚ تَـعٰـلٰى عَـمَّـا يُـشْـرِكُـوْنَ ﴿٣﴾ خَـلَـقَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पैदा किया उस ने | 3 | वह शरीक करते हैं | उस से जो | बरतर | हक़ (हिक्मत) के साथ | और ज़मीन | आस्मान (जमा) |

الْاِنْـسَـانَ مِـنْ نُّـطْـفَـةٍ فَـاِذَا هُـوَ خَـصِـيْـمٌ مُّـبِـيْـنٌ ﴿٤﴾ وَالْاَنْـعَـامَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और चौपाए | 4 | खुला | झगड़ालू | वह | फिर नागहां | नुत्फ़ा | से | इन्सान |

خَـلَـقَـهَـا لَـكُـمْ فِـيْـهَـا دِفْءٌ وَّمَـنَـافِـعُ وَمِـنْـهَـا تَـاْكُـلُـوْنَ ﴿٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | तुम खाते हो | उन में से | और फ़ाइदे (जमा) | गर्म सामान | उन में | तुम्हारे लिए | उस ने उन को पैदा किए |

وَلَـكُـمْ فِـيْـهَـا جَـمَـالٌ حِـيْـنَ تُـرِيْـحُـوْنَ وَحِـيْـنَ تَـسْـرَحُـوْنَ ﴿٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | सुब्ह को चराने ले जाते हो | और जिस वक़्त | शाम को चरा कर लाते हो | जिस वक़्त | ख़ूबसूरती शान | उन में | और तुम्हारे लिए |

وَتَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ اِلَّا بِشِقِّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हलकान कर के | बग़ैर | उन तक पहुँचने वाले | न थे तुम | शह्र (जमा) | तरफ़ | तुम्हारे बोझ | और वह उठाते हैं |

الْاَنْفُسِ ۭ اِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝٧ وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और ख़च्चर | और घोड़े | 7 | रह्म करने वाला | इन्तिहाई शफ़ीक | तुम्हारा रब | बेशक | जानें |

وَالْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَزِيْنَةً ۭ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٨

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | तुम नहीं जानते | जो | और वह पैदा करता है | और ज़ीनत | ताकि तुम उन पर सवार हो | और गधे |

وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا جَاۗىِٕرٌ ۭ وَلَوْ شَاۗءَ لَهَدٰىكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो वह तुम्हें हिदायत देता | और अगर वह चाहे | टेढ़ी | और उस से | राह | सीधी | और अल्लाह पर |

اَجْمَعِيْنَ ۝٩ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً لَّكُمْ مِّنْهُ ع ١ ٩

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से | तुम्हारे लिए | पानी | आस्मान | से | नाज़िल किया (बरसाया) | जिस ने | वही | 9 | सब |

شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ۝١٠ يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से | तुम्हारे लिए | वह उगाता है | 10 | तुम चराते हो | उस में | दरख़्त | और उस से | पीना |

الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हर | और से - के | और अंगूर | और खजूर | और ज़ैतून | खेती |

الثَّمَرٰتِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝١١ وَسَخَّرَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और मुसख़्ख़र किया | 11 | ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं | लोगों के लिए | अलबत्ता निशानियां | उस में | बेशक | फल (जमा) |

لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۭ وَالنُّجُوْمُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और सितारे | और चाँद | और सूरज | और दिन | रात | तुम्हारे लिए |

مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمْرِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝١٢

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12 | वह अक़्ल से काम लेते हैं | लोगों के लिए | अलबत्ता निशानियां | उस | में | बेशक | उस के हुक्म से | मुसख़्ख़र |

وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ۭ اِنَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | उस के रंग | मुख़्तलिफ़ | ज़मीन में | तुम्हारे लिए | पैदा किया | और जो |

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ۝١٣ وَهُوَ الَّذِيْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो - जिस | और वही | 13 | वह सोचते हैं | लोगों के लिए | अलबत्ता निशानियां | उस में |

سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम निकालो | ताज़ा | गोश्त | उस से | ताकि तुम खाओ | दर्या | मुसख़्ख़र किया |

مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पानी चीरने वाली | कश्ती | और तुम देखते हो | तुम वह पहनते हो | ज़ेवर | उस से |

فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝١٤

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 14 | शुक्र करो | और ताकि तुम | उस का फ़ज़्ल | से | और ताकि तलाश करो | उस में |

और वह तुम्हारे बोझ उन शह्रों तक ले जाते हैं जहां जानें हलकान किए बग़ैर तुम पहुँचने वाले न थे। बेशक तुम्हारा रब इन्तिहाई शफ़ीक, निहायत रह्म वाला है। (7)

और घोड़े और खच्चर और गधे ताकि तुम उन पर सवार हो और ज़ीनत के लिए (पैदा किए) और वह पैदा करता है जो तुम नहीं जानते। (8)

और सीधी राह अल्लाह तक पहुँचती है और उन में से (कोई) राह टेढ़ी है, और अगर वह चाहता तो तुम सब को हिदायत द देता। (9)

वही है जिस ने आस्मान से पानी बरसाया, उस से तुम्हारे लिए पीने को है, और उस से दरख़्त (सैराब होते) हैं और जिन में तुम (मवेशी) चराते हो, (10)

वह उस से तुम्हारे लिए उगाता है खेती, और ज़ैतून, और खजूर, और अंगूर और हर क़िस्म के फल, बेशक उस में गौर ओ फ़िक्र करने वालों के लिए निशानियां हैं। (11)

और उस ने तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया रात और दिन को, और सूरज और चाँद को, और सितारे मुसख़्ख़र (काम में लगे हुए) हैं। उस के हुक्म से, बेशक उस में अक़्ल से काम लेने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (12)

और तुम्हारे लिए ज़मीन में पैदा कीं मुख़्तलिफ़ (चीज़ें) रंग ब रंग की, बेशक उस में सोचने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (13)

और वही है जिस ने दर्या को मुसख़्ख़र किया ताकि तुम उस से (मछलियों का) ताज़ा गोश्त खाओ, और उस से ज़ेवर निकालो जो तुम पहनते हो, और तुम देखते हो उस में कश्तियां पानी को चीर कर चलती हैं और ताकि तुम उस के फ़ज़्ल से (रोजी) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। (14)

और उस ने ज़मीन पर पहाड़ रखे कि तुम्हें ले कर (ज़मीन) झुक न पड़े, और दर्या और रास्ते (बनाए) ताकि तुम राह पाओ। **(15)** और अलामतें (बनाईं) और वह सितारों से रास्ता पाते हैं। **(16)** क्या जो (अल्लाह) पैदा करता है उस जैसा है जो पैदा नहीं करता, पस क्या तुम ग़ौर नहीं करते? **(17)** और अगर तुम अल्लाह की नेमतें शुमार करो तो उन्हें पूरा न गिन सकोगे, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। **(18)** और अल्लाह जानता है जो तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो। **(19)** और वह जिन्हें पुकारते हैं अल्लाह के सिवा वह कुछ भी पैदा नहीं करते बल्कि वह ख़ुद पैदा किए गए हैं। **(20)** मुर्दे हैं, ज़िन्दा नहीं, (बेजान हैं), और वह नहीं जानते वह कब उठाए जाएंगे। **(21)** तुम्हारा माबूद, माबूदे यकता है, पस जो लोग ईमान नहीं रखते आख़िरत पर उन के दिल मुन्किर हैं, और वह मग़रूर हैं। **(22)** यक़ीनी बात है अल्लाह जानता है जो वह छुपाते हैं और जो वह ज़ाहिर करते हैं। बेशक वह तकब्बुर करने वालों को पसन्द नहीं करता। **(23)** और जब उन से कहा जाए क्या नाज़िल किया तुम्हारे रब ने? तो वह कहते हैं पहले लोगों की कहानियां हैं। **(24)** अन्जामे कार वह अपने पूरे बोझ उठाएंगे क़ियामत के दिन, और कुछ उन के बोझ जिन्हें वह बग़ैर इल्म के गुमराह करते हैं, ख़ूब सुन लो, बुरा है जो वह लादते हैं। **(25)** जो उन से पहले थे उन्हों ने मक्कारी की पस उन की इमारत पर अल्लाह (का अ़ज़ाब) बुन्यादों से आया, पस गिर पड़ी उन पर छत ऊपर से, और उन पर अ़ज़ाब आया जहां से उन्हें ख़याल न था। **(26)**

وَاَلْقٰی فِی الْاَرْضِ رَوَاسِیَ اَنْ تَمِیْدَ بِكُمْ وَاَنْهٰرًا وَّسُبُلًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और रास्ते | और नहरें - दर्या | तुम्हें ले कर | कि झुक न पड़े | पहाड़ | ज़मीन में - पर | और डाले (रखे) |

لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥﴾ وَعَلٰمٰتٍ ؕ وَبِالنَّجْمِ هُمْ یَهْتَدُوْنَ ﴿١٦﴾ اَفَمَنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या - पस जो | 16 | रास्ता पाते हैं | वह | और सितारा | और अ़लामतें | 15 | राह पाओ | ताकि तुम |

یَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا یَخْلُقُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٧﴾ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की नेमत | तुम शुमार करो | और अगर | 17 | क्या - पस तुम ग़ौर नहीं करते | पैदा नहीं करता | उस जैसा जो | पैदा करे |

لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿١٨﴾ وَاللّٰهُ یَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो तुम छुपाते हो | जानता है | और अल्लाह | 18 | निहायत मेहरबान | अलबत्ता बख़्शने वाला | बेशक अल्लाह | उस को पूरा न गिन सकोगे |

وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿١٩﴾ وَالَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا یَخْلُقُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह पैदा नहीं करते | अल्लाह | सिवाए | वह पुकारते हैं | और जिन्हें | 19 | तुम ज़ाहिर करते हो | और जो |

شَیْـًٔا وَّهُمْ یُخْلَقُوْنَ ﴿٢٠﴾ اَمْوَاتٌ غَیْرُ اَحْیَآءٍ ۚ وَمَا یَشْعُرُوْنَ ۙ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह नहीं जानते | ज़िन्दा | नहीं | मुर्दे | 20 | पैदा किए गए | और वह (ख़ुद) | कुछ भी |

اَیَّانَ یُبْعَثُوْنَ ﴿٢١﴾ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ ع ٢ ١٢ ٨

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान नहीं रखते | पस जो लोग | एक (यकता) | माबूद | तुम्हारा माबूद | 21 | वह उठाए जाएंगे | कब |

بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٢٢﴾ لَا جَرَمَ اَنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | यक़ीनी बात | 22 | तकब्बुर करने वाले (मग़रूर) | और वह | मुन्किर (इन्कार करने वाले) | उन के दिल | आख़िरत पर |

اللّٰهَ یَعْلَمُ مَا یُسِرُّوْنَ وَمَا یُعْلِنُوْنَ ؕ اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِیْنَ ﴿٢٣﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 23 | तकब्बुर करने वाले | पसन्द नहीं करता | बेशक वह | वह ज़ाहिर करते हैं | और जो | वह छुपाते हैं | जो | जानता है | अल्लाह |

وَاِذَا قِیْلَ لَهُمْ مَّاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوْٓا اَسَاطِیْرُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कहानियां | वह कहते हैं | तुम्हारा रब | नाज़िल किया | क्या | उन से | कहा जाए | और जब |

الْاَوَّلِیْنَ ﴿٢٤﴾ لِیَحْمِلُوْٓا اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً یَّوْمَ الْقِیٰمَةِ ۙ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क़ियामत के दिन | पूरे | अपने बोझ (गुनाह) | अन्जामे कार वह उठाएंगे | 24 | पहले लोग |

وَمِنْ اَوْزَارِ الَّذِیْنَ یُضِلُّوْنَهُمْ بِغَیْرِ عِلْمٍ ؕ اَلَا سَآءَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बुरा | ख़ूब सुन लो | इल्म के बग़ैर | वह गुमराह करते हैं | उन के जिन्हें | बोझ | और कुछ |

مَا یَزِرُوْنَ ﴿٢٥﴾ قَدْ مَكَرَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتَی ع ٣ ٩

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पस आया | उन से पहले | वह लोग जो | तहक़ीक़ मक्कारी की | 25 | जो वह लादते हैं |

اللّٰهُ بُنْیَانَهُمْ مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَیْهِمُ السَّقْفُ مِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | छत | उन पर | पस गिर पड़ी | बुन्याद (जमा) | से | उन की इमारत | अल्लाह |

فَوْقِهِمْ وَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَیْثُ لَا یَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 26 | उन्हें ख़याल न था | जहां से | से | अ़ज़ाब | और आया उन पर | उन के ऊपर |

ثُـمَّ يَـوْمَ الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَـقُوْلُ اَيْـنَ شُـرَكَآءِىَ الَّـذِيْـنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जो कि | मेरे शरीक | कहां | और कहेगा | वह उन्हें रुस्वा करेगा | क़ियामत के दिन | फिर |

كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ؕ قَالَ الَّـذِيْـنَ اُوْتُـوا الْعِلْمَ اِنَّ الْخِزْىَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रुस्वाई | बेशक | इल्म (इल्म वाले) | दिए गए | वह लोग जो | कहेंगे | उन (के बारे) में | झगड़ते | तुम थे |

الْـيَوْمَ وَالسُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٧﴾ الَّـذِيْـنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़रिश्ते | उन की जान निकालते हैं | वह जो कि | 27 | काफ़िर (जमा) | पर | और बुराई | आज |

ظَالِمِىْٓ اَنْفُسِهِمْ ۪ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ بَلٰٓى اِنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | हां हां | कोई बुराई | हम न करते थे | पैग़ामे इताअत | पस डालेंगे | अपने ऊपर | ज़ुल्म करते हुए |

اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٨﴾ فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जहन्नम | दरवाज़े | सो तुम दाख़िल हो | 28 | तुम करते थे | वह जो | जानने वाला | अल्लाह |

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन लोगों से जिन्हों ने परहेज़गारी की | और कहा गया | 29 | तकब्बुर करने वाले | ठिकाना | अलबत्ता बुरा | उस में | हमेशा रहोगे |

مَاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوْا خَيْرًا ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِىْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | भलाई की | उन के लिए जो लोग | बहतरीन | वह बोले | तुम्हारा रब | उतारा | क्या |

هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ ؕ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | परहेजगारों का घर | और क्या खूब | बेहतर | और आखिरत का घर | भलाई | दुनिया | इस |

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वहां | उन के लिए | नहरें | उन के नीचे से | बहती हैं | वह उन में दाखिल होंगे | हमेशगी | बाग़ात |

مَا يَشَآءُوْنَ ؕ كَذٰلِكَ يَجْزِى اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٣١﴾ الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की जान निकालते हैं | वह जो कि | 31 | परहेजगार (जमा) | अल्लाह | जज़ा देता है | ऐसी ही | जो वह चाहेंगे |

الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ ۙ يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ ۙ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के बदले जो | जन्नत | तुम दाख़िल हो | सलामती तुम पर | वह कहते हैं | पाक होते हैं | फ़रिश्ते |

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٣٢﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِىَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| या आए | फ़रिश्ते | उन के पास आएं | यह कि | मगर (सिर्फ़) | वह इन्तिज़ार करते हैं | क्या | 32 | तुम करते थे (आमाल) |

اَمْرُ رَبِّكَ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ وَمَا ظَلَمَهُمُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं ज़ुल्म किया उन पर | उन से पहले | वह लोग जो | किया | ऐसा ही | तेरा रब | हुक्म |

اللّٰهُ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٣٣﴾ فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बुराइयां | पस उन्हें पहुँची | 33 | ज़ुल्म करते | अपनी जानें | वह थे | और बल्कि | अल्लाह |

مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٤﴾ ع ٩ ١٠

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 34 | मज़ाक़ उड़ाते | उस का | वह थे | जो | उन को | और घेर लिया | जो उन्हों ने किया (आमाल) |

फिर वह उन्हें क़ियामत के दिन रुस्वा करेगा, और वह कहेगा कहां हैं मेरे वह शरीक जिन के बारे में तुम झगड़ते थे, इल्म वाले कहेंगे बेशक आज के दिन रुस्वाई और बुराई है काफ़िरों पर। (27)

वह जिन की जान फ़रिश्ते (उस हाल में) निकालते हैं कि वह अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे होते हैं, फिर वह इताअत का पैग़ाम डालेंगे कि हम कोई बुराई न करते थे, हां हां! अल्लाह जानने वाला है जो तुम करते थे। (28)

सो तुम जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो, उस में हमेशा रहोगे, अलबत्ता तकब्बुर करने वालों का बुरा ठिकाना है। (29)

और परहेज़गारों से कहा गया तुम्हारे रब ने क्या उतारा? वह बोले बहतरीन (कलाम), जिन लोगों ने भलाई की उन के लिए इस दुनिया में भलाई है और आख़िरत का घर (सब से) बेहतर है, और क्या खूब है! परहेज़गारों का घर। (30)

हमेशगी के बाग़ात, जिन में वह दाख़िल होंगे, उन के नीचे नहरें बहती हैं, वहां जो वह चाहेंगे उन के लिए होगा, अल्लाह परहेज़गारों को ऐसी ही जज़ा देता है (31)

वह जिन की जान फ़रिश्ते (उस हाल में) निकाले हैं कि वह पाक होते हैं, वह (फ़रिश्ते) कहते हैं तुम पर सलामती हो। (32)

अपने आमाल के बदले जन्नत में दाख़िल हो। क्या वह सिर्फ़ (यह) इन्तिज़ार करते हैं कि उन के पास फ़रिश्ते आएं, या तेरे रब का हुक्म आए, ऐसा ही उन लोगों ने किया जो उन से पहले थे, और अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वह अपनी जानों पर (ख़ुद) ज़ुल्म करते थे। (33)

पस उन्हें पहुँचीं उन के आमाल की बुराइयां, और उन्हें घेर लिया उस (अ़ज़ाब) ने जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (34)

और कहा जिन लोगों ने शिर्क किया (मुशरिकों ने) अगर अल्लाह चाहता तो न हम परस्तिश करते और न हमारे बाप दादा उस के सिवाए किसी शै की, और हम उस के हुक्म के सिवा कोई शै हराम न ठहराते, उसी तरह उन लोगों ने किया जो उन से पहले थे, पस क्या है रसूलों के ज़िम्मे? मगर साफ़ साफ़ पहुँचा देना। (35)
और तहक़ीक़ हम ने हर उम्मत में भेजा कोई न कोई रसूल कि अल्लाह की इबादत करो और सरकश से बचो, सो उन में से किसी को अल्लाह ने हिदायत दी, और उन में से बाज़ पर गुमराही साबित हो गई, पस ज़मीन में चलो फिरो, फिर देखो कैसा अन्जाम हुआ झुटलाने वालों का? (36)
अगर तुम उन की हिदायत के लिए ललचाओ तो बेशक अल्लाह हिदायत नहीं देता जिसे वह गुमराह करता है, और उन का कोई मददगार नहीं। (37)
और उन्हों ने अल्लाह की क़सम खाई अपनी सख़्त (पुर ज़ोर) क़सम कि जो मर जाता है उसे अल्लाह (रोज़े क़ियामत) नहीं उठाएगा। क्यों नहीं? उस पर उस का वादा सच्चा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते, (38)
ताकि उन के लिए ज़ाहिर कर दे जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते हैं, और ताकि काफ़िर जान लें कि वह झूटे थे। (39)
जब हम किसी चीज़ का इरादा करें तो हमारा फ़रमाना इस के सिवा नहीं कि हम उस को कहते हैं, कि "हो जा" तो वह हो जाता है। (40)
और जिन लोगों ने अल्लाह के लिए हिजरत कि उस के बाद कि उन पर ज़ुल्म किया गया, हम उन्हें ज़रूर जगह देंगे दुनिया में अच्छी और बेशक आख़िरत का अजर बहुत बड़ा है, काश वह (हिजरत से रह जाने वाले) जानते। (41)
जिन लोगों ने सब्र किया और वह अपने रब पर भरोसा करते हैं। (42)

وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُونِهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के सिवाए | हम परस्तिश करते | न | चाहता अल्लाह | अगर | उन्हों ने शिर्क किया | वह लोग जो | और कहा |

مِنْ شَيْءٍ نَحْنُ وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई शै | उस के (हुक्म के) सिवा | और न हराम ठहराते हम | हमारे बाप दादा | और न | हम | कोई - किसी शै |

كَذَٰلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ إِلَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर | रसूल (जमा) | पर (ज़िम्मे) | पस क्या है | उन से पहले | वह लोग जो | किया | उसी तरह |

الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٣٥﴾ وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | रसूल | हर उम्मत | में | और तहक़ीक़ हम ने भेजा | 35 | साफ़ साफ़ | पहुँचा देना |

اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ ۖ فَمِنْهُمْ مَنْ هَدَى اللَّهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | जिसे हिदायत दी | सो उन में से बाज़ | तागूत (सरकश) | और बचो | अल्लाह | इबादत करो तुम |

وَمِنْهُمْ مَنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلَالَةُ ۚ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर देखो | ज़मीन में | पस चलो फिरो | गुमराही | उस पर | साबित हो गई | बाज़ | और उन में से |

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٦﴾ إِنْ تَحْرِصْ عَلَىٰ هُدَاهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की हिदायत के लिए | तुम हिर्स करो (ललचाओ) | अगर | 36 | झुटलाने वाले | अन्जाम | हुआ | कैसा |

فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ يُضِلُّ ۖ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ﴿٣٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 37 | मददगार | कोई | उन के लिए | और नहीं | वह गुमराह करता है | जिसे | हिदायत नहीं देता | तो बेशक अल्लाह |

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ ۙ لَا يَبْعَثُ اللَّهُ مَنْ يَمُوتُ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो मर जाता है | अल्लाह | नहीं उठाएगा | अपनी क़सम | अपनी सख़्त | अल्लाह की | और उन्हों ने क़सम खाई |

بَلَىٰ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 38 | नहीं जानते | लोग | अक्सर | और लेकिन | सच्चा | उस पर | वादा | क्यों नहीं |

لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يَخْتَلِفُونَ فِيهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | और ताकि जान लें | उस में | इख़्तिलाफ़ करते हैं | जो | उन के लिए | ताकि ज़ाहिर कर दे |

أَنَّهُمْ كَانُوا كَاذِبِينَ ﴿٣٩﴾ إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَنْ نَقُولَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि हम कहते हैं | जब हम उस का इरादा करें | किसी चीज़ को | हमारा फ़रमाना | उस के सिवा नहीं | 39 | झूटे थे | कि वह |

لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٤٠﴾ وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ ع ٥ / ١١

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के बाद | अल्लाह के लिए | उन्हों ने हिजरत कि | और वह लोग जो | 40 | तो वह हो जाता है | हो जा | उस को |

مَا ظُلِمُوا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَلَأَجْرُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ وقف لازم

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| काश | बहुत बड़ा | आख़िरत | और बेशक अजर | अच्छी | दुनिया में | ज़रूर हम उन्हें जगह देंगे | कि उन पर ज़ुल्म किया गया |

كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾ الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٤٢﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 42 | भरोसा करते हैं | और अपने रब पर | उन्हों ने सब्र किया | वह लोग जो | 41 | वह जानते |

وَمَآ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوۡحِیۡۤ اِلَیۡهِمۡ فَسۡـَٔلُوۡۤا اَهۡلَ الذِّكۡرِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| याद रखने वाले | पस पूछो | उन की तरफ़ | हम वहि करते हैं | मर्दों के सिवा | तुम से पहले | हम ने भेजे | और नहीं |

اِنۡ كُنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۴۳﴾ بِالۡبَیِّنٰتِ وَالزُّبُرِؕ وَاَنۡزَلۡنَاۤ اِلَیۡكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारी तरफ़ | और हम ने नाजिल की | और किताबें | निशानियों के साथ | 43 | नहीं जानते | तुम हो | अगर |

النصف
الذِّكۡرَ لِتُبَیِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَیۡهِمۡ وَلَعَلَّهُمۡ یَتَفَكَّرُوۡنَ ﴿۴۴﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 44 | वह ग़ौर ओ फ़िक्र करें | और ताकि वह | उन की तरफ़ | जो नाज़िल किया गया | लोगों के लिए | ताकि वाज़ेह कर दो | याददाशत (किताब) |

اَفَاَمِنَ الَّذِیۡنَ مَكَرُوا السَّیِّاٰتِ اَنۡ یَّخۡسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ الۡاَرۡضَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन | उन को | अल्लाह | धंसादे | कि | बुरे | दाओ किए | जिन लोगों ने | क्या बेख़ौफ़ हो गए हैं |

اَوۡ یَاۡتِیَهُمُ الۡعَذَابُ مِنۡ حَیۡثُ لَا یَشۡعُرُوۡنَ ﴿۴۵﴾ اَوۡ یَاۡخُذَهُمۡ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हें पकड़ ले | या | 45 | वह ख़बर नहीं रखते | उस जगह से | अज़ाब | उन पर आए | या |

فِیۡ تَقَلُّبِهِمۡ فَمَا هُمۡ بِمُعۡجِزِیۡنَ ﴿۴۶﴾ اَوۡ یَاۡخُذَهُمۡ عَلٰی تَخَوُّفٍؕ فَاِنَّ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस बेशक | डराना | पर (बाद) | उन्हें पकड़ ले | या | 46 | आजिज़ करने वाले | वह | पस नहीं | उन को चलते फिरते | में |

رَبَّكُمۡ لَرَءُوۡفٌ رَّحِیۡمٌ ﴿۴۷﴾ اَوَلَمۡ یَرَوۡا اِلٰی مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنۡ شَیۡءٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो चीज़ | अल्लाह | जो पैदा किया | तरफ़ | क्या उन्हों ने नहीं देखा | 47 | निहायत रह्म करने वाला | इन्तिहाई शफ़ीक़ | तुम्हारा रब |

یَّتَفَیَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الۡیَمِیۡنِ وَالشَّمَآئِلِ سُجَّدًا لِّلّٰهِ وَهُمۡ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह | अल्लाह के लिए | सिज्दा करते हुए | और बाएं | दाएं | से | उस के साए | ढलते हैं |

دٰخِرُوۡنَ ﴿۴۸﴾ وَلِلّٰهِ یَسۡجُدُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الۡاَرۡضِ مِنۡ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | जमीन में | और जो | आस्मानों | में | जो | और अल्लाह के लिए सिज्दा करता है | 48 | आजिज़ी करने वाले |

دَآبَّةٍ وَّالۡمَلٰٓئِكَةُ وَهُمۡ لَا یَسۡتَكۡبِرُوۡنَ ﴿۴۹﴾ یَخَافُوۡنَ رَبَّهُمۡ مِّنۡ فَوۡقِهِمۡ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के ऊपर | से | अपना रब | वह डरते हैं | 49 | तकब्बुर नहीं करते | और वह | और फ़रिश्ते | जानदार |

ع ١٠ / ١٢
وَیَفۡعَلُوۡنَ مَا یُؤۡمَرُوۡنَ ﴿۵۰﴾ وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوۡۤا اِلٰهَیۡنِ اثۡنَیۡنِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दो | दो माबूद | तुम बनाओ | न | अल्लाह | और कहा | 50 | उन्हें हुक्म दिया जाता है | जो | और वह (वही) करते हैं |

اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌۚ فَاِیَّایَ فَارۡهَبُوۡنِ ﴿۵۱﴾ وَلَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मानों में | जो | और उसी के लिए | 51 | तुम मुझ से डरो | पस मुझ ही से | यकता | माबूद | वह | इस के सिवा नहीं |

وَالۡاَرۡضِ وَلَهُ الدِّیۡنُ وَاصِبًاؕ اَفَغَیۡرَ اللّٰهِ تَتَّقُوۡنَ ﴿۵۲﴾ وَمَا بِكُمۡ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे पास | और जो | 52 | तुम डरते हो | तो क्या अल्लाह के सिवा | लाज़िम | इताअत ओ इबादत | और उसी के लिए | और ज़मीन |

مِّنۡ نِّعۡمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَیۡهِ تَجۡئَرُوۡنَ ﴿۵۳﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 53 | तुम रोते (चिल्लाते) हो | तो उस की तरफ़ | तक्लीफ़ | तुम्हें पहुँचती है | जब | फिर | अल्लाह की तरफ़ से | कोई नेमत |

ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنۡكُمۡ اِذَا فَرِیۡقٌ مِّنۡكُمۡ بِرَبِّهِمۡ یُشۡرِكُوۡنَ ﴿۵۴﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 54 | वह शरीक करता है | अपने रब के साथ | तुम में से | जब (उस वक़्त) एक फ़रीक़ | तुम से | सख़्ती | खोलदे (दूर कर देता है) | जब | फिर |

और हम ने तुम से पहले भी मर्दों के सिवा (रसूल) नहीं भेजे, हम वहि करते है उन की तरफ़, याद रखने वालों से पूछो अगर तुम नहीं जानते (कि उन रसूलों को हम ने भेजा था)। (43) निशानियों और किताबों के साथ, और हम ने तुम्हारी तरफ़ किताब नाजिल कि है ताकि लोगों के लिए वाज़ेह कर दो जो उन की तरफ़ नाज़िल किया गया है, ताकि वह ग़ौर ओ फ़िक्र करें। (44) जिन लोगों ने बुरे दाओ किए क्या वह उस से बेख़ौफ़ हो गए हैं कि अल्लाह उन को ज़मीन में धंसा दे? या उन पर अज़ाब आजाए जहां से उन को ख़बर ही न हो, (45) या वह उन्हें पकड़ ले चलते फिरते, पस वह (अल्लाह) को आजिज़ करने वाले नहीं, (46) या उन्हें डराने के बाद पकड़ ले, पस बेशक तुम्हारा रब इन्तिहाई शफ़ीक़ निहायत रह्म तरने वाला है। (47) क्या उन्हों ने नहीं देखा? कि जो चीज़ अल्लाह ने पैदा की है, उस के साए ढलते है, दाएं से और बाएं से, अल्लाह के लिए सिज्दा करते हुए, और वह आजिज़ी करने वाले हैं। (48) और अल्लाह को सिज्दा करता है जो भी आस्मानों में और जो भी जानदारों में से जमीन में है और फ़रिश्ते भी, और वह तकब्बुर नहीं करते। (49) वह अपने रब से डरते हैं (जो) उन के ऊपर है, और वह वही करते हैं जो उन्हें हुक्म दिया जाता है। (50) और अल्लाह ने कहा कि न तुम बनाओ दो माबूद। इस के सिवा नहीं कि वह माबूद यकता है, पस मुझ ही से डरो। (51) और उसी के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है और उसी के लिए इताअ़त ओ इबादत लाज़िम है, तो क्या अल्लाह के सिवा (किसी और से) तुम डरते हो? (52) और तुम्हारे पास जो कोई नेमत है सो अल्लाह की तरफ से है, फिर जब तुम्हें तक्लीफ पहुँचती है तो उसी की तरफ़ तुम रोते चिल्लाते हो। (53) फिर वह जब तुम से सख़्ती दूर कर देता है तो तुम में से एक फ़रीक़ उस वक़्त अपने रब के साथ शरीक करने लगता है, (54)

ताकि वह उस की नाशुक्री करें जो हम ने उन्हें दिया, तो तुम फ़ाइदा उठालो, पस अनक़रीब तुम जान लोगे। (55) और जो हम ने उन्हें दिया उस में से वह उन के लिए हिस्सा मक़र्रर करते हैं, जिन (माबूदों) को वह नहीं जानते, अल्लाह की क़सम तुम से उस (के बारे) में ज़रूर पूछा जाएगा जो तुम झूट बान्धते थे। (56) और वह अल्लाह के लिए बेटियां ठहराते हैं, वह पाक है, और अपने लिए वह जो उन का दिल चाहता है। (57) और जब उन में से किसी को लड़की की खुशख़बरी दी जाती है तो उस का चहरा सियाह पड़ जाता है और वह गुस्से से भर जाता है। (58) लोगों से छुपता फिरता है उस "बुराई" की खुशख़बरी के सबब जो उसे दी गई (अब सोचता है) आया उस को रुस्वाई के साथ रखे या उस को मिट्टी में दफ़्न कर दे, याद रखो! बुरा है जो वह फ़ैसला करते हैं। (59) जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उन का हाल बुरा है, और अल्लाह की शान बुलन्द है, और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (60) और अगर अल्लाह गिरिफ़्त करे लोगों की उन के ज़ुल्म के सब्ब तो वह ज़मीन पर कोई चलने वाला न छोड़े, लेकिन वह उन्हें ढील देता है एक मुद्दते मुक़र्ररा तक, फिर जब उन का वक़्त आएगा, न वह एक घड़ी पीछे हटेंगे, और न आगे बढ़ेंगे। (61) और वह अल्लाह के लिए ठहराते हैं जो अपने लिए न पसन्द करते हैं, और उन की ज़बानें झूट बयान करती हैं कि उन के लिए भलाई है, लाज़िमी बात है कि उन के लिए जहन्नम है, बेशक वह (जहन्नम में) आगे भेजे जाएंगे। (62) अल्लाह की क़सम! तहक़ीक़ हम ने भेजे तुम से पहले उम्मतों की तरफ़ (रसूल), फिर शैतान ने उन के अ़मल उन्हें अच्छे कर दिखाए, पस आज वह उन का रफ़ीक़ है, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (63) और हम ने तुम पर किताब नहीं उतारी मगर (सिर्फ़) इस लिए कि तुम वाज़ेह कर दो जिस में उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया, और हिदायत ओ रहमत उन के लिए जो ईमान लाए। (64)

لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوْا ۫ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَيَجْعَلُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह मुक़र्रर करते है | 55 | तुम जान लोगे | पस अनक़रीब | तो तुम फ़ाइदा उठा लो | हम ने उन्हें दिया | उस से जो | ताकि वह नाशुक्री करें |

لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ۭ تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔـلُنَّ عَمَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से जो | तुम से ज़रूर पुछा जाएगा | अल्लाह की क़सम | हम ने उन्हें दिया | उस से जो | हिस्सा | वह नही जानते | उस के लिए जो |

كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ﴿٥٦﴾ وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهٗ ۙ وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٥٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 57 | उन का दिल चाहता है | जो | और अपने लिए | वह पाक है | बेटियां | और वह बनाते (ठहराते) अल्लाह के लिए | 56 | तुम झूट बान्धते थे |

وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٥٨﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 58 | गुस्से से भर जाता है | और वह | सियाह | उस का चेहरा | हो जाता (पड़ जाता है) | लड़की की | उन में से किसी को | खुशख़बरी दी जाए | और जब |

يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ۭ اَيُمْسِكُهٗ عَلٰي هُوْنٍ اَمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| या | रुस्वाई के साथ | या उस को रखे | खुश्ख़बरी दी गई जिस की | जो | बुराई | से - सबब | क़ौम (लोग) | से | छुपता फिरता है |

يَدُسُّهٗ فِي التُّرَابِ ۭ اَلَا سَاۗءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٥٩﴾ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान नही रखते | जो लोग | 59 | जो वह फ़ैसला करते है | बुरा है | याद रखो | मिट्टी में | दबादे (दफ्न करदे) |

بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦٠﴾ ع ١٣

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 60 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | और वह | शान बुलन्द | और अल्लाह के लिए | बुरा | हाल | आख़िरत पर |

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَاۗبَّةٍ وَّلٰكِنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और लेकिन | चलने वाला | कोई | उस (ज़मीन) पर | न छोड़े वह | उन के ज़ुल्म के सब्ब | लोग | अल्लाह | गिरिफ़्त करे | और अगर |

يُؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَاۗءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| न पीछे हटेंगे | उन का वक़्त | आगया | फिर जब | मुक़र्ररा | एक मुद्दत | तक | वह ढील देता है उन्हें |

سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٦١﴾ وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बयान करती है | वह अपने लिए नापसन्द करते हैं | जो | अल्लाह के लिए | और वह बनाते (ठहराते) हैं | 61 | और न आगे बढ़ेंगे | एक घड़ी |

اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ۭ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जहन्नम | उन के लिए | कि | लाज़िमी बात | भलाई | उन के लिए | कि | झूट | उन की ज़बानें |

وَاَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ﴿٦٢﴾ تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम से पहले | उम्मतें | तरफ़ | तहक़ीक़ हम ने भेजे | अल्लाह की क़सम | 62 | आगे भेजे जाएंगे | और बेशक वह |

فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन के लिए | आज | उन का रफ़ीक़ | पस वह | उन के आमाल | शैतान | उन के लिए | फिर अच्छा कर दिखाया |

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो - जिस | उन के लिए | इस लिए कि तुम वाज़ेह कर दो | मगर | किताब | तुम पर | उतारी हम ने | और नहीं | 63 | दर्दनाक अ़ज़ाब |

اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٦٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 64 | वह ईमान लाए है | उन लोगों के लिए | और रहमत | और हिदायत | उस में | उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया |

وَاللّٰهُ اَنْـزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِيْ

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | बेशक | उस की मौत | बाद | ज़मीन | उस से | फिर ज़िन्दा किया | पानी | आस्मान | से | उतारा | और अल्लाह |

ع ٨ ١٢ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَاِنَّ لَكُمْ فِي الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِيْكُمْ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम पिलाते हैं तुम को | अलबत्ता इब्रत | चौपाए | में | तुम्हारे लिए | और बेशक | 65 | वह सुनते हैं | लोगों के लिए | निशानी | उस |

مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٦٦﴾

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 66 | पीने वालों के लिए | खुशगवार | खालिस | दूध | और खून | गोबर | दरमियान | से | उन के पेट (जमा) | में | उस से जो |

وَمِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّرِزْقًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और रिज़्क़ | शराब | उस से | तुम बनाते हो | और अंगूर | खजूर | फल (जमा) | और से |

حَسَنًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَاَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ को | तुम्हारा रब | और इल्हाम किया | 67 | अक़्ल रखते हैं | लोगों के लिए | निशानी | उस | में | बेशक | अच्छा |

النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِيْ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُوْنَ ﴿٦٨﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 68 | छतरियां बनाते हैं | और उस से जो | दरख़्त | और से-में | घर (जमा) | पहाड़ (जमा) | से में | तू बनाले | कि | शहद की मक्खी |

ثُمَّ كُلِيْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِيْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ؕ يَخْرُجُ مِنْۢ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | निकलती है | नर्म ओ हमवार | अपना रब | रस्ते | फिर चल | हर किस्म के फल | से | खा | फिर |

بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस | में | बेशक | लोगों के लिए | शिफ़ा | उस में | उस के रंग | मुख़्तलिफ़ | पीने की एक चीज़ | उन के पेट (जमा) |

لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰىكُمْ ؕ وَمِنْكُمْ مَّنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | और तुम में से बाज़ | वह मौत देता है तुम्हें | फिर | पैदा किया तुम्हें | और अल्लाह | 69 | सोचते हैं | लोगों के लिए | निशानियां |

يُّرَدُّ اِلٰۤى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जानने वाला | बेशक अल्लाह | कुछ | इल्म | बाद | वह बे इल्म हो जाए | ताकि | नाकारा नाक़िस उम्र | लौटाया (पहुँचाया) जाता है तरफ़ |

ع ٩ ١٥ قَدِيْرٌ ﴿٧٠﴾ وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِيْنَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो | पस नहीं | रिज़्क़ | में | बाज़ | पर | तुम में से बाज़ | फ़ज़ीलत दी | और अल्लाह | 70 | क़ुदरत वाला |

فُضِّلُوْا بِرَآدِّيْ رِزْقِهِمْ عَلٰى مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बराबर | उस में | पस वह | उन के हाथ | जो मालिक हुए | पर | अपना रिज़्क़ | लौटा देने वाले | फ़ज़ीलत दिए गए |

اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٧١﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बीवियां | तुम में से | से | तुम्हारे लिए | बनाया | और अल्लाह | 71 | वह इन्कार करते हैं | अल्लाह | पस क्या नेमत से |

وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | और तुम्हें अता की | और पोते | बेटे | तुम्हारी बीवियां | से | तुम्हारे लिए | और बनाया (पैदा किया) |

الطَّيِّبٰتِ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٢﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 72 | इन्कार करते हैं | वह | और अल्लाह की नेमत | वह मानते हैं | तो क्या बातिल को | पाक चीज़ |

और अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा, फिर उस से ज़मीन को उस की मौत (बन्जर होने) के बाद ज़िन्दा किया, बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानी है जो सुनते हैं। (65) और बेशक तुम्हारे लिए चौपाए में (मुक़ाम) इब्रत है, हम तुम्हें पिलाते हैं दूध ख़ालिस उस से जो गोबर और ख़ून के दरमियान उन के पेट में है, पीने वालों के लिए ख़ुशगवार। (66) और ख़जूर और अंगूर के फलों से (रस) तुम उस से शराब बनाते हो, और अच्छा रिज़्क़ (हासिल करते हो) बेशक उस में निशानी है उन लोगों के लिए जो अक़्ल रखते हैं। (67) और तुम्हारे रब ने शहद की मक्खी को इल्हाम किया कि तू पहाड़ों में घर बना ले, और दरख़्तों में, और उस जगह जहां वह छतरियां बनाते हैं। (68) फिर खा हर क़िस्म के फलों से, फिर अपने रब के नर्म ओ हमवार रस्तों पर चल, उन के पेटों से पीने की एक चीज़ निकलती है (शहद) उस के रंग मुख़्तलिफ़ हैं, उस में लोगों के लिए शिफ़ा है, बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो सोचते हैं। (69) और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया, फिर वह तुम्हें मौत देता है, और तुम में से बाज़ को नाकारा उम्र की तरफ़ पहुँचाया जाता है ताकि वह कुछ इल्म के बाद बेइल्म हो जाए, बेशक अल्लाह जानने वाला, क़ुदरत वाला है। (70) और अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी तुम में से बाज़ को बाज़ पर रिज़्क़ में, पस जिन लोगों को फ़ज़ीलत दी गई वह अपना रिज़्क़ लौटाने (देने वाले) नहीं उन्हें जिन के मालिक उन के हाथ हैं (ममलूकों को) कि वह उस में बराबर हो जाएं, पस क्या वह अल्लाह की नेमत का इन्कार करते हैं? (71) और अल्लाह ने तुम में से तुम्हारे लिए तुम्हारी बीवियां बनाईं, और तुम्हारी बीवियों से तुम्हारे लिए पैदा किए बेटे और पोते, और तुम्हें पाक चीज़ें अता कीं, तो क्या वह बातिल को मानते हैं? और अल्लाह की नेमत का वह इन्कार करते हैं। (72)

और अल्लाह के सिवा उस की परस्तिश करते हैं, जिन्हें इख़्तियार नहीं उन के लिए रिज़्क़ का आस्मानों और ज़मीन से कुछ भी, और न वह क़ुदरत रखते हैं। **(73)**
पस तुम चस्पां न करो अल्लाह पर मिसालें, बेशक अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते। **(74)**
अल्लाह ने एक मिसाल बयान की (किसी की) मिल्क में आए हुए ग़ुलाम की जो किसी शै पर इख़्तियार नहीं रखता, और (दूसरा) वह जिसे हम ने अच्छा रिज़्क़ दिया सो वह उस से पोशीदा और ज़ाहिर ख़र्च करता है, क्या वह (दोनों) बराबर हैं? तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं,बल्कि उन में से अक्सर नहीं जानते। **(75)**
और अल्लाह ने दो आदमियों की एक मिसाल बयान की उन में से एक गूंगा है, वह इख़्तियार नहीं रखता किसी शै पर, और वह अपने आक़ा पर बोझ है, वह जहां कहीं उसे भेजे वह कोई भलाई न लाए, क्या बराबर है यह और वह? जो अद्ल का हुक्म देता है, और वह सीधी राह पर है। **(76)**
और अल्लाह के लिए हैं आस्मानों और ज़मीन की पोशीदा बातें, और क़ियामत का आना सिर्फ़ ऐसे है जैसे आँख का झपकना, या वह उस से भी ज़ियादा क़रीब है, बेशक अल्लाह हर शै पर क़ुदरत वाला है। **(77)**
और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माओं के पेटों से निकाला तुम कुछ भी न जानते थे, और अल्लाह ने तुम्हारे बनाए कान, और आँखें, और दिल, ताकि तुम शुक्र अदा करो। **(78)**
क्या उन्हों ने परिन्दों को नहीं देखा आस्मान की फ़िज़ा में हुक्म के पाबन्द, उन्हें (कोई) नहीं थामता सिवाए अल्लाह के, बेशक उस में ईमान लाने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। **(79)**

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | रिज़्क़ | उन के लिए | इख़्तियार नही | जो | अल्लाह | सिवाए | से | और परस्तिश करते है |

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٧٣﴾ فَلَا تَضْرِبُوْا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पस न चस्पां करो | 73 | और न वह क़ुदरत रखते है | कुछ | और ज़मीन | आस्मानों |

لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٧٤﴾ ضَرَبَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बयान किया | 74 | नहीं जानते | और तुम | जानता है | अल्लाह | बेशक | मिसालें | अल्लाह के लिए |

اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने उसे रिज़्क़ दिया | और जो | किसी शै | पर | वह इख़्तियर नही रखता | मिल्क में आया हुआ | एक ग़ुलाम | एक मिसाल | अल्लाह |

مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّجَهْرًا ۗ هَلْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या | और ज़ाहिर | पोशीदा | उस से | ख़र्च करता है | सो वह | अच्छा | रिज़्क़ | अपनी तरफ़ से |

يَسْتَوٗنَ ۗ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۗ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَضَرَبَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और बयान किया | 75 | नही जानते | उन में से अक्सर | बल्कि | अल्लाह के लिए | तमाम तारीफ़ | वह बराबर है |

اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَآ اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह | किसी शै पर | वह इख़्तियार नही रखता | गूंगा | उन में से एक | दो आदमी | एक मिसाल | अल्लाह |

كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ۗ هَلْ يَسْتَوِيْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बराबर | क्या | कोई भलाई | वह न लाए | वह भेजे उस को | जहां कहीं | अपना आक़ा | पर | बोझ |

هُوَ ۙ وَمَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٦﴾ ع ١٠ / ١٦

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 76 | सीधी | राह | पर | और वह | अद्ल के साथ | हुक्म देता है | और जो | वह - यह |

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَمَآ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मगर (सिर्फ़) | काम (आना) क़ियामत | और नहीं | और ज़मीन | आस्मानों | और अल्लाह के लिए पोशीदा बातें |

كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٧٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 77 | क़ुदरत वाला | हर शै | पर | बेशक अल्लाह | उस से भी क़रीब | वह | या | जैसे झपकना आँख |

وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कुछ भी | तुम न जानते थे | तुम्हारी माँएं | पेट (जमा) | से | तुम्हें निकाला | और अल्लाह |

وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 78 | तुम शुक्र अदा करो | ताकि तुम | और दिल (जमा) | और आँखें | कान | तुम्हारे लिए | और उस ने बनाया |

اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ السَّمَآءِ ۗ مَا يُمْسِكُهُنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| थामता उन्हें | नहीं | आस्मान की फ़िज़ा | में | हुक्म के पाबन्द | परिन्दा | तरफ़ | क्या उन्हों ने नहीं देखा |

اِلَّا اللّٰهُ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٧٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 79 | ईमान लाते हैं | लोगों के लिए | निशानियां | उस | में | बेशक | अल्लाह | सिवाए |

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| खालें | से | तुम्हारे लिए | और बनाया | सुकूनत (रहने) की जगह | तुम्हारे घरों | से | तुम्हारे लिए | बनाया | और अल्लाह |

الْاَنْعَامِ بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ اِقَامَتِكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपना क़ियाम | और दिन | अपने कूच के दिन | तुम हल्का पाते हो उन्हें | घर (डेरे) | चौपाए |

وَمِنْ اَصْوَافِهَا وَاَوْبَارِهَا وَاَشْعَارِهَآ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और बरतने की चीज़े | सामान | और उन के बाल | और उन की पशम | उन की ऊन | और से |

اِلٰى حِيْنٍ ﴿٨٠﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे लिए | और बनाया | साए | उस ने पैदा किया | उस से जो | तुम्हारे लिए | बनाया | और अल्लाह | 80 | एक वक़्त (मुद्दत) | तक |

مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ الْحَرَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गर्मी | बचाते है तुम्हें | कुर्ते | तुम्हारे लिए | और बनाया | पनाह गाहें | पहाड़ों | से |

وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ كَذٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम पर | अपनी नेमत | वह मुकम्मिल करता है | उसी तरह | तुम्हारी लड़ाई | बचाते हैं तुम्हें | और कुर्ते |

لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पहुँचा देना | तुम पर | तो इस के सिवा नहीं | वह फिर जाएं | फिर अगर | 81 | फ़रमांबरदार बनो | ताकि तुम |

الْمُبِيْنُ ﴿٨٢﴾ يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन के अक्सर | मुन्किर हो जाते हैं उस के | फिर | अल्लाह | नेमत | वह पहचानते है | 82 | खोल कर (साफ़ साफ़) |

ع ١١ ١٤ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٣﴾ وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| न इजाजत दी जाएगी | फिर | एक गवाह | उम्मत | हर | से | हम उठाएंगे | और जिस दिन | 83 | काफ़िर (जमा) नाशुक्रे |

لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो | देखेंगे | और जब | 84 | उज़्र कुबूल किए जाएंगे | और न वह | उन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | वह लोग |

ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 85 | मोहलत दी जाएगी | वह | और न | उन से | फिर न हल्का किया जाएगा | अजाब | उन्हों ने जुल्म किया (ज़ालिम) |

وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا شُرَكَآءَهُمْ قَالُوْا رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह हैं | ऐ हमारे रब | वह कहेंगे | अपने शरीक | उन्हों ने शिर्क किया (मुश्रिक) | वह लोग जो | देखेंगे | और जब |

شُرَكَآؤُنَا الَّذِيْنَ كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ فَاَلْقَوْا

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| फिर वह डालेंगे | तेरे सिवा | हम पुकारते थे | वह जो कि | हमारे शरीक |

النصف اِلَيْهِمُ الْقَوْلَ اِنَّكُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٨٦﴾ وَاَلْقَوْا اِلَى اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | तरफ़ (सामने) | और वह डालेंगे | 86 | अलबत्ता तुम झूटे | बेशक तुम | क़ौल | उन की तरफ़ |

يَوْمَئِذِ ۨ السَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٨٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 87 | इफ़्तिरा करते (झूट घड़ते थे) | जो | उन से | और गुम हो जाएगा | आजिज़ी | उस दिन |

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए बनाया तुम्हारे घरों को रहने की जगह, और तुम्हारे लिए चौपाए की खालों से डेरे बनाए, जिन्हें तुम हल्का फुलका पाते हो अपने कूच के दिन और अपने क़याम के दिन, और उन की ऊन, और पशम, और उन के बालों से (बनाए) सामान और बरतने की चीज़ें एक मुद्दते मुक़र्ररा तक। (80)

और अल्लाह ने जो पैदा किया उस से तुम्हारे लिए साये बनाए, और तुम्हारे लिए बनाईं पहाड़ों से पनाह गाहें, और उस ने तुम्हारे लिए कुर्ते बनाए जो तुम्हारे लिए गर्मी का बचाओ हैं और कुर्ते (जिरहें हैं) जो तुम्हारे लिए बचाओ हैं तुम्हारी लड़ाई में, उसी तरह वह तुम पर अपनी नेमत मुकम्मिल करता है ताकि तुम फ़रमांबरदार बनो। (81)

फिर अगर वह फिर जाएं तो उस के सिवा नहीं कि तुम पर (तुम्हारा ज़िम्मा) सिर्फ़ खोल कर पहुँचा देना है। (82)

वह अल्लाह की नेमत पहचानते हैं, फिर उस के मुन्किर हो जाते हैं, और उन में से अक्सर नाशुक्रे हैं। (83)

और जिस दिन हर उम्मत से हम एक गवाह उठाएंगे फिर न इजाजत दी जाएगी काफ़िरों को और न उन से उज़्र कुबूल किए जाएंगे। (84)

और (याद करो) जब ज़ालिम अजाब देखेंगे फिर न उन से (अज़ाब) हल्का किया जाएगा और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। (85)

और (याद करो) जब मुश्रिक अपने शरीकों को देखेंगे तो वह कहेंगे ऐ हमारे रब! यह हैं हमारे शरीक जिन्हें हम तेरे सिवा पुकारते थे, फिर वह (उन के शरीक) उन की तरफ़ डालेंगे क़ौल (जवाब देगें कि) बेशक तुम झूटे हो। (86)

और वह उस दिन अल्लाह के सामने आजिज़ी (का पैग़ाम) डालेंगे और उन से गुम हो जाएगा (भूल जाएंगे) जो वह झूट घड़ते थे। (87)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से रोका हम उन के लिए अज़ाब पर अज़ाब बढ़ादेंगे, क्यों कि वह फ़साद करते थे। **(88)** और जिस दिन हम उठाएंगे हर उम्मत में उन पर उन ही में से एक गवाह, और हम आप (स) को इन सब पर गवाह लाएंगे, और हम ने आप (स) पर क़ुरआन नाज़िल किया, हर शै का मुफ़स्सिल बयान, और हिदायत ओ रहमत, और ख़ुशख़बरी मुसलमानों के लिए। **(89)** बेशक अल्लाह अ़दल ओ एहसान का हुक्म देता है और रिशते दारों को (उन के हुक़ूक़) देने का और मना करता है बेहयाई से और नाशाइस्ता कामों से और सरकशी से, तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम ध्यान करो। **(90)** और जब तुम (पुख़्ता) अ़हद करलो तो अल्लाह का अ़हद पूरा करो, और क़समें पुख़्ता करने के बाद उन को न तोड़ो, और तहक़ीक़ तुम ने अपने ऊपर अल्लाह को ज़ामिन बनाया है, बेशक अल्लाह जानता है जो तुम करते हो। **(91)** और तुम उस औ़रत की तरह न होजाना जिस ने अपना सूत मज़बूत करने (कातने) के बाद तुकड़े तुकड़े तोड़ डाला, तुम बनाते हो अपनी क़समों को अपने दरमियान दख़्ल देने का बहाना कि एक गिरोह दूसरे गिरोह पर ग़ालिब आजाए, उस के सिवा नहीं कि अल्लाह तुम्हें आज़माता है, और वह रोज़े क़ियामत तुम पर ज़रूर ज़ाहिर करदेगा जिस में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे। **(92)** और अगर अल्लाह चाहता तो अलबत्ता तुम्हें एक उम्मत बनादेता, लेकिन वह गुमराह करता है जिस को वह चाहता है, और हिदायत देता है जिस को वह चाहता है, और तुम से उस की बाबत ज़रूर पूछा जाएगा जो तुम करते थे। **(93)**

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ زِدْنٰهُمْ عَذَابًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अज़ाब | हम बढ़ादेंगे | अल्लाह की राह | से | और रोका | उन्हों ने कुफ़्र किया | वह लोग जो |

فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يُفْسِدُوْنَ ﴿٨٨﴾ وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِيْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | हम उठाएंगे | और जिस दिन | 88 | वह फ़साद करते थे | क्योंकि | अज़ाब | पर |

كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا عَلَيْهِمْ مِّنْ اَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيْدًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| गवाह | आप (स) को | और हम लाएंगे | उन ही में से | उन पर | एक गवाह | हर उम्मत |

عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ ۭ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हर शै का | (मुफ़स्सिल) बयान | किताब (क़ुरआन) | आप पर | और हम ने नाज़िल की | इन सब पर |

وَّهُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿٨٩﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ ع ١٢ ٦ ١٨

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हुक्म देता है | बेशक अल्लाह | 89 | मुसलमानों के लिए | और ख़ुशख़बरी | और रहमत | और हिदायत |

بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| से | और मना करता है | रिशते दार | और देना | और एहसान | अ़दल का |

الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٩٠﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 90 | ध्यान करो | ताकि तुम | तुम्हें नसीहत करता है | और सरकशी | और नाशाइस्ता | बेहयाई |

وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْاَيْمَانَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क़समें | और न तोड़ो | तुम अ़हद करो | जब | अल्लाह का अ़हद | और पूरा करो |

بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक अल्लाह | ज़ामिन | अपने ऊपर | अल्लाह | और तहक़ीक़ तुम ने बनाया | उन को पुख़्ता करना | बाद |

يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٩١﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना सूत | उस ने तोड़ा | उस औ़रत की तरह | और तुम न हो जाओ | 91 | जो तुम करते हो | जानता है |

مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ اَنْكَاثًا ۭ تَتَّخِذُوْنَ اَيْمَانَكُمْ دَخَلًۢا بَيْنَكُمْ اَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | अपने दरमियान | दख़्ल का बहाना | अपनी क़समें | तुम बनाते हो | तुकड़े तुकड़े | क़ुव्वत (मज़बूती) | बाद |

تَكُوْنَ اُمَّةٌ هِيَ اَرْبٰى مِنْ اُمَّةٍ ۭ اِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ بِهٖ ۭ وَلَيُبَيِّنَنَّ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह ज़रूर ज़ाहिर करेगा | उस से | अल्लाह | आज़माता है तुम्हें | उस के सिवा नहीं | दूसरा गिरोह | से | बढ़ा हुआ (ग़ालिब) | वह | एक गिरोह | हो जाए |

لَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह चाहता | और अगर | 92 | इख़्तिलाफ़ करते थे तुम | उस में | तुम थे | जो | रोज़े क़ियामत | तुम पर |

لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| जिसे वह चाहता है | गुमराह करता है | और लेकिन | एक उम्मत | तो अलबत्ता बना देता तुम्हें |

وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَلَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 93 | तुम करते थे | उस की बाबत | और तुम से ज़रूर पूछा जाएगा | जिस को वह चाहता है | और हिदायत देता है |

وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कोई क़दम | कि फिसले | अपने दरमियान | दख़ल का बहाना | अपनी क़समें | और तुम न बनाओ |

بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَتَذُوْقُوا السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह का रास्ता | से | रोका तुम ने | इस लिए कि | बुराई (वबाल) | और तुम चखो | अपने जम जाने के बाद |

وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٩٤﴾ وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| थोड़ा | मोल | अल्लाह के अ़हद के बदले | और तुम न लो | 94 | बड़ा | अ़ज़ाब | और तुम्हारे लिए |

اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٥﴾ مَا عِنْدَكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो तुम्हारे पास | 95 | तुम जानो | अगर | तुम्हारे लिए | बेहतर | वही | अल्लाह के हां | बेशक जो |

يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ۗ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने सब्र किया | वह लोग जो | और हम ज़रूर देंगे | बाक़ी रहने वाला | अल्लाह के पास | और जो | ख़त्म हो जाता है |

اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई नेक | अमल किया | जो - जिस | 96 | वह करते थे | जो | उस से बेहतर | उन का अजर |

مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पाकीज़ा | ज़िन्दगी | तो हम उसे ज़रूर ज़िंदगी देंगे | मोमिन | जबकि वह | औ़रत | या | मर्द हो |

وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٧﴾ فَاِذَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पस जब | 97 | वह करते थे | जो | उस से बहुत बेहतर | उन का अजर | और हम ज़रूर उन्हें देंगे |

قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٩٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 98 | मर्दूद | शैतान | से | अल्लाह की | तो पनाह लो | कुरआन | तुम पढ़ो |

اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अपने रब पर | ईमान लाए | वह लोग जो | पर | कोई ज़ोर | उस के लिए | नहीं | बेशक वह |

يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٩٩﴾ اِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهٗ وَالَّذِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह लोग जो | उस को दोस्त बनाते हैं | वह लोग जो | पर | उस का ज़ोर | इस क सिवा नहीं | 99 | वह भरोसा करते हैं |

١٣ ع ١١ ١٩ هُمْ بِهٖ مُشْرِكُوْنَ ﴿١٠٠﴾ وَاِذَا بَدَّلْنَآ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ وَّاللّٰهُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अल्लाह | दूसरा हुक्म | जगह | कोई हुक्म | हम बदलते हैं | और जब | 100 | शरीक ठहराते हैं | उस (अल्लाह) के साथ | वह |

اَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مُفْتَرٍ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन में अक्सर | बल्कि | तुम घड़ लेते हो | तू | इस के सिवा नहीं | वह कहते हैं | वह नाज़िल करता है | उस को जो | ख़ूब जानता है |

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠١﴾ قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हक़ के साथ | तुम्हारा रब | से | रूहुल क़ुदुस (जिब्राईल अ.) | इसे उतारा है | आप (स) कहदें | 101 | इल्म नहीं रखते |

لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٠٢﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 102 | मुसलमानों के लिए | और ख़ुशख़बरी | और हिदायत | ईमान लाए (मोमिन) | वह लोग जो | ताकि साबित क़दम करे |

और अपनी क़समों को न बनाओ अपने दरमियान दख़ल का बहाना कि कोई क़दम अपने जम जाने के बाद फिसल जाए और तुम उस के नतीजे में वबाल चखो कि तुम ने रोका अल्लाह के रास्ते से, और तुम्हारे लिए बड़ा अ़ज़ाब है। **(94)** और तुम अल्लाह के अ़हद के बदले न लो थोड़ा मोल (माले दुनिया) बेशक जो अल्लाह के पास है वह (हमेशा) बाक़ी रहने वाला है। अगर तुम जानो तो वही तुम्हारे लिए बेहतर है। **(95)** जो तुम्हारे पास है वह ख़त्म होजाता है और जो अल्लाह के पास है वह (हमेशा) बाक़ी रहने वाला है। और जिन लोगों ने सब्र किया हम ज़रूर उन्हें उन का अजर देंगे उस से बहुत बेहतर जो वह (आमाल) करते थे। **(96)** जिस ने कोई नेक अ़मल किया वह मर्द हो या औ़रत, जब कि हो वह मोमिन, तो हम ज़रूर उसे (दुनिया में) पाकीज़ा ज़िन्दगी देंगे और (आख़िरत) में उन का अजर ज़रूर उस से बेहतर देंगे, जो (आमाल) वह करते थे। **(97)** पस जब तुम क़ुरआन पढ़ो तो अल्लाह की पनाह लो शैतान मर्दूद से। **(98)** बेशक उस का कोई ज़ोर नहीं उन लोगों पर जो ईमान लाए और वह अपने रब पर भरोसा करते हैं। **(99)** इस के सिवा नहीं कि उस का ज़ोर उन लोगों पर है जो उस को दोस्त बनाते हैं और जो लोग अल्लाह के साथ शरीक ठहराते हैं। **(100)** और जब हम कोई हुक्म किसी दूसरे हुक्म की जगह बदलते हैं, और अल्लाह ख़ूब जानता है जो वह नाज़िल करता है, वह (काफ़िर) कहते हैं इस के सिवा नहीं कि तुम (ख़ुद) घड़ लेते हो, (नहीं) बल्कि उन में अक्सर इल्म नहीं रखते। **(101)** आप (स) कह दें कि उसे जिब्राईल (अ) अमीन ने तुम्हारे रब की तरफ़ से उतारा है हक़ के साथ ताकि मोमिनों को साबित क़दम रखे, और मुसलमानों के लिए हिदायत और ख़ुशख़बरी है। **(102)**

और हम ख़ूब जानते हैं कि वह कहते हैं कि इस के सिवा नहीं कि उसे एक आदमी सिखाता है, जिस की तरफ़ वह निसबत करते हैं उस की ज़बान अ़ज़मी (ग़ैर अरबी) है, और यह वाज़ेह अरबी ज़बान है। (103) बेशक जो लोग ईमान नहीं लाते अल्लाह की आयतों पर, अल्लाह उन्हें हिदायत नहीं देता, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (104) इस के सिवा नहीं कि वही लोग झूट बुहतान बान्धते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं रखते, और वही लोग झूटे हैं। (105) जो अल्लाह का मुन्किर हुआ उस (अल्लाह) पर ईमान के बाद, सिवाए उस के जो मजबूर किया गया हो, जब कि उस का दिल ईमान पर मुतमइन हो, बल्कि जो कुफ़ के लिए सीना कुशादा करे (मन मरज़ी से कुफ़ करे) तो उन पर अल्लाह का ग़ज़ब है, और उन के लिए बड़ा अ़ज़ाब है। (106) यह इस लिए है कि उन्हों ने दुनिया की ज़िन्दगी को आख़िरत पर पसन्द किया, और यह कि अल्लाह हिदायत नहीं देता काफ़िर लोगों को। (107) यही लोग हैं अल्लाह ने मुहर लगादी है जिन के दिलों पर, और उन के कानों पर, और उन की आँखों पर, और यही लोग ग़ाफ़िल हैं। (108) कुछ शक नहीं कि यही लोग आख़िरत में ख़सारा (नुक़सान) उठाने वाले हैं। (109) फिर बेशक तुम्हारा रब उन लोगों के लिए जिन्हों ने हिज्रत की, उस के बाद कि वह सताए गए और फिर उन्हों ने जिहाद किया, और सब्र किया, बेशक तुम्हारा रब उस के बाद बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (110) जिस दिन हर शख़्स अपनी (ही) तरफ़ से झगड़ा करता आएगा, और हर शख़्स को पूरा दिया जाएगा जो उस ने किया और उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा। (111)

وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ؕ لِسَانُ الَّذِیْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जो कि | ज़बान | एक आदमी | उस को सिखाता है | इस के सिवा नहीं | वह कहते हैं | कि वह | और हम ख़ूब जानते हैं |

يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِیٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِیٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٠٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 103 | वाज़ेह | अरबी | ज़बान | और यह | अ़जमी | उस की तरफ़ | कजराही (निस्बत) करते हैं |

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ لَا يَهْدِيْهِمُ اللّٰهُ وَلَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन के लिए | अल्लाह | हिदायत नहीं देता | अल्लाह की आयतों पर | ईमान नहीं लाते | वह लोग जो | बेशक |

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٠٤﴾ اِنَّمَا يَفْتَرِی الْكَذِبَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो ईमान नहीं लाते | वह लोग | झूट | बुहतान बान्धता है | इस के सिवा नहीं | 104 | दर्दनाक अ़ज़ाब |

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٠٥﴾ مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बाद | अल्लाह का | मुन्किर हुआ | जो | 105 | झूटे | वह | और यही लोग | अल्लाह की आयतों पर |

اِيْمَانِهٖۤ اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ وَقَلْبُهٗ مُطْمَئِنٌّۢ بِالْاِيْمَانِ وَلٰكِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और लेकिन (बल्कि) | ईमान पर | मुतमइन | जब कि उस का दिल | मजबूर किया गया | जो | सिवाए | उस के ईमान |

مَّنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللّٰهِ ۚ وَلَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन के लिए | अल्लाह का | ग़ज़ब | तो उन पर | सीना | कुफ़ के लिए | कुशादा करे | जो |

عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٠٦﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दुनिया की ज़िन्दगी | उन्हों ने पसन्द किया | इस लिए कि वह | यह | 106 | बड़ा अ़ज़ाब |

عَلَى الْاٰخِرَةِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِی الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 107 | काफ़िर (जमा) | लोग | हिदायत नहीं देता | अल्लाह | और यह कि | आख़िरत | पर |

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन की आँख | और उन के कान | उन के दिल | पर | अल्लाह ने मुहर लगादी | वह जो कि | यही लोग |

وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿١٠٨﴾ لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِی الْاٰخِرَةِ هُمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह | आख़िरत में | कि वह | कुछ शक नहीं | 108 | ग़ाफ़िल (जमा) | वह | और यही लोग |

الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٠٩﴾ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के बाद | उन्हों ने हिज्रत की | उन लोगों के लिए | तुम्हारा रब | बेशक | फिर | 109 | ख़सारा उठाने वाले |

مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَصَبَرُوْۤا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के बाद | तुम्हारा रब | बेशक | उन्हों ने सब्र किया | उन्हों ने जिहाद किया | फिर | सताए गए | कि |

لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٠﴾ يَوْمَ تَاْتِیْ كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ ع ١٣/٢٠

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | झगड़ा करता | शख़्स | हर | आएगा | जिस दिन | 110 | निहायत मेहरबान | अलबत्ता बख़्शने वाला |

نَّفْسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١١١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 111 | ज़ुल्म न किए जाएंगे | और वह | उस ने किया | जो | शख़्स | हर | और पूरा दिया जाएगा | अपनी तरफ़ |

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मुतमइन | बेख़ौफ़ | वह थी | एक बस्ती | एक मिसाल | और बयान की अल्लाह ने |

يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नेमतों से | फिर उस ने नाशुक्री की | हर जगह | से | बाफ़राग़त | उस का रिज़्क़ | उस के पास आता था |

اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के बदले जो | और ख़ौफ़ | भूक | लिबास | अल्लाह | तो चखाया उस को | अल्लाह |

كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿۱۱۲﴾ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सो उन्हों ने उसे झुटलाया | उन में से | एक रसूल | और बेशक उन के पास आया | 112 | वह करते थे |

فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ فَكُلُوْا مِمَّا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से जो | पस तुम खाओ | 113 | ज़ालिम (जमा) | और वह | अज़ाब | तो उन्हें आ पकड़ा |

رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۪ وَّاشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अगर | अल्लाह की नेमत | और शुक्र करो | पाक | हलाल | तुम्हें दिया अल्लाह ने |

كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿۱۱۴﴾ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुर्दार | तुम पर | हराम किया | इस के सिवा नहीं | 114 | तुम इबादत करते हो | सिर्फ़ उस की | तुम हो |

وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पस जो | उस पर | अल्लाह के अलावा | पुकारा जाए | और जो | और ख़िन्ज़ीर का गोश्त | और ख़ून |

اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۵﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 115 | निहायत मेहरबान | बख़्शने वाला | तो बेशक अल्लाह | और न हद से बढ़ने वाला | न सरकशी करने वाला | लाचार हुआ |

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यह | झूट | तुम्हारी ज़बानें | बयान करती हैं | वह जो | और तुम न कहो |

حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ اِنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | झूट | अल्लाह | पर | कि बुहतान बान्धो | हराम | और यह | हलाल |

الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿۱۱۶﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 116 | फ़लाह न पाएंगे | झूट | अल्लाह | पर | बुहतान बान्धते हैं | वह लोग जो |

مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۪ وَّلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۱۷﴾ وَعَلَى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और पर | 117 | दर्दनाक | अज़ाब | और उन के लिए | थोड़ा | फ़ाइदा |

الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| इस से क़ब्ल | तुम पर (से) | जो हम ने बयान किया | हम ने हराम किया | जो लोग यहूदी हुए (यहूदी) |

وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۱۸﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 118 | ज़ुल्म करते | अपने ऊपर | वह थे | बल्कि | और नहीं हम ने ज़ुल्म किया उन पर |

और अल्लाह ने एक बस्ती की मिसाल बयान की, वह मुतमइन बेख़ौफ़ थी, हर जगह से उस के पास रिज़्क़ बाफ़राग़त आ जाता था, फिर उस ने नाशुक्री की, अल्लाह की नेमतों की, तो अल्लाह ने उस के बदले जो वह करते थे उसको भूक और ख़ौफ़ के लिबास का मज़ा चखाया (भूक और ख़ौफ़ उनका लिबादा बन गया)। (112)
और बेशक उन के पास उन ही में से एक रसूल आया, सो उन्हों ने उसे झुटलाया, तो अज़ाब ने उन्हें आ पकड़ा और वह ज़ालिम थे। (113)
पस जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से हलाल और पाक खाओ, और अल्लाह की नेमत का शुक्र करो, अगर तुम उस की इबादत करते हो। (114)
उस के सिवा नहीं कि अल्लाह ने तुम पर हराम किया है मुर्दार और ख़ून, और ख़िन्ज़ीर का गोश्त और जिस पर अल्लाह के अलावा (किसी और) का नाम पुकारा जाए, पस जो लाचार हो जाए न सरकशी करने वाला हो, और न हद से बढ़ने वाला तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (115)
और न कहो तुम वह जो तुम्हारी ज़बानें झूट बयान करती हैं कि यह हलाल है और यह हराम, कि तुम अल्लाह पर झूट बुहतान बान्धो, बेशक जो लोग अल्लाह पर झूट बुहतान बान्धते हैं वह फ़लाह (दो जहान में कामयाबी) न पाएंगे। (116)
(उन के लिए) फ़ाइदा थोड़ा है, और उन के लिए अज़ाब दर्दनाक है। (117)
और यहूदियों पर हम ने हराम किया था जो उस से क़ब्ल हम ने तुम से बयान किया है, और हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वह अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे। (118)

फिर बेशक तुम्हारा रब उन लोगों के लिए जिन्हों ने नादानी से बुरे अ़मल किए, फिर उस के बाद उन्हों ने तौबा की और इस्लाह कर ली, बेशक तुम्हारा रब उस के बाद बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (119)
बेशक इब्राहीम (अ) इमाम थे, अल्लाह के फ़रमांबरदार, यक रुख़ (सब को छोड़ कर एक अल्लाह के हो रहने वाले) और वह मुश्‌रिकों में से न थे, (120)
उस की नेमतों के शुक्रगुज़ार, उस (अल्लाह ने) उन्हें चुन लिया, और उन की रहनुमाई की सीधी राह की तरफ़। (121)
और हम ने उन्हें दुनिया में भलाई दी, और बेशक वह आख़िरत में नेकोकारों में से हैं, (122)
फिर हम ने तुम्हारी तरफ़ वहि भेजी कि हर एक से जुदा हो रहने वाले (यक रुख़) इब्राहीम (अ) की पैरवी करो और वह मुश्‌रिकों में से न थे। (123)
इस के सिवा नहीं कि हफ़्ता उन लोगों पर (अज़मत का दिन) मुक़र्रर किया गया जिन्हों ने उस में इख़्तिलाफ़ किया था, और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता क़ियामत के दिन उन के दरमियान उस (बात) में फ़ैसला कर देगा जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। (124)
तुम अपने रब के रास्ते की तरफ़ बुलाओ दानाई से, और अच्छी नसीहत से, और उन से ऐसे बह्स करो जो सब से बेहतर हो, बेशक तुम्हारा रब उस को ख़ूब जानने वाला है जो अल्लाह के रास्ते से गुमराह हुआ, और वह राह पाने वालों को ख़ूब जानने वाला है। (125)
और अगर तुम तक्लीफ़ दो तो ऐसी ही तक्लीफ़ दो, जैसी तुम्हें तक्लीफ़ दी गई थी, और अगर तुम सब्र करो तो यह सब्र करने वालों के लिए बेहतर है। (126)
और सब्र करो और तुम्हारा सब्र अल्लाह ही की मदद से है। और गम न खाओ उन पर, और वह जो फ़रेब करते हैं उस से तंगी में (दिल तंग) न हो। (127)
बेशक अल्लाह उन लोगों के साथ है जिन्हों ने परहेज़गारी की, और वह लोग जो नेकोकार हैं। (128)

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने तौबा की | फिर | नादानी से | बुरे | अ़मल किए | उन लोगों के लिए जो | तुम्हारा रब | बेशक | फिर |

مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْٓا اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٩﴾ ع ١٥ ٩ ٢١

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 119 | निहायत मेहरबान | बख़्शने वाला | उस के बाद | तुम्हारा रब | बेशक | और उन्हों ने इस्लाह की | उस के बाद |

اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ؕ وَلَمْ يَكُ مِنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | और न थे | यक रुख़ | अल्लाह के | फ़रमांबरदार | एक जमाअ़त (इमाम) | थे | इब्राहीम (अ) | बेशक |

الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٠﴾ شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهٖ ؕ اِجْتَبٰىهُ وَهَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٢١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 121 | सीधी राह | तरफ़ | और उस की रहनुमाई की | उस ने उसे चुन लिया | उस की नेमतों के लिए | शुक्र गुज़ार | 120 | मुश्‌रिक (जमा) |

وَاٰتَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता - से | आख़िरत में | और बेशक वह | भलाई | दुनिया में | और उस को दी हम ने |

الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٢٢﴾ ثُمَّ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यक रुख़ | इब्राहीम (अ) | दीन | पैरवी करो तुम | कि | तुम्हारी तरफ़ | वहि भेजी हम ने | फिर | 122 | नेकोकार (जमा) |

وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٣﴾ اِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो | पर | हफ़्ते का दिन | मुक़र्रर किया गया | उस के सिवा नहीं | 123 | मुश्‌रिक (जमा) | से | और न थे वह |

اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में जो | रोज़े क़ियामत | उन के दरमियान | अलबत्ता फ़ैसला करेगा | तुम्हारा रब | और बेशक | उस में | उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया |

كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٢٤﴾ اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हिक्मत (दानाई) से | अपना रब | रास्ता | तरफ़ | तुम बुलाओ | 124 | इख़्तिलाफ़ करते | उस में | वह थे |

وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | सब से बेहतर | वह | ऐसे जो | और बह्स करो उन से | अच्छी | और नसीहत |

رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٢٥﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 125 | राह पाने वालों को | ख़ूब जानने वाला | और वह | उस का रास्ता | से | गुमराह हुआ | उस को जो | ख़ूब जानने वाला | वह | तुम्हारा रब |

وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ؕ وَلَئِنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और अगर | उस से | जो तुम्हें तक्लीफ़ दी गई | ऐसी ही | तो उन्हें तक्लीफ़ दो | तुम तक्लीफ़ दो | और अगर |

صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ﴿١٢٦﴾ وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की मदद से | मगर | तुम्हारा सब्र | और नहीं | और सब्र करो | 126 | सब्र करने वालों के लिए | बेहतर | तो वह | तुम सब्र करो |

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِىْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿١٢٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 127 | वह फ़रेब करते हैं | उस से जो | तंगी | में | और न हो | उन पर | और गम न खाओ |

اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ﴿١٢٨﴾ ع ١٦ ٩ ٢٢

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 128 | नेकोकार (जमा) | वह | और वह लोग जो | उन्हों ने परहेज़गारी की | वह लोग जो | साथ | बेशक अल्लाह |

آيَاتُهَا ١١١ ❀ (١٧) سُوْرَةُ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْل ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٢

रुकुआत 12 — (17) सूरह बनी इस्राईल, औलादे याक़ूब (अ) — आयात 111

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

سُبْحٰنَ الَّذِيْٓ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मस्जिद | से | रातों रात | अपने बन्दे को | ले गया | वह जो | पाक |

الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِيْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِيَهٗ مِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | ताकि दिखा दें हम उसको | उस के इर्द गिर्द | बरकत दी हम ने | जिस को | मस्जिदे अक़्सा | तक | हराम |

اٰيٰتِنَا ۚ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝١ وَاٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किताब | मूसा | और हम ने दी | 1 | देखने वाला | सुनने वाला | वह | बेशक वह | अपनी निशानियां |

وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِيْ وَكِيْلًا ۝٢

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | कारसाज़ | मेरे सिवा | कि न ठहराओ तुम | बनी इस्राईल के लिए | हिदायत | और हम ने बनाया उसे |

ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۚ اِنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا ۝٣

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | शुक्र गुज़ार | बन्दा | था | बेशक वह | नूह (अ) के साथ | हम ने सवार किया | जो - जिस | औलाद |

وَقَضَيْنَآ اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ فِى الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِى الْاَرْضِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन | में | अलबत्ता तुम फ़साद करोगे ज़रूर | किताब | बनी इस्राईल | तरफ़ - को | साफ़ कह दिया हम ने |

مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيْرًا ۝٤ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ اُوْلٰىهُمَا بَعَثْنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने भेजे | दो में से पहला | वादा | आया | पस जब | 4 | बड़ा ज़ोर | और तुम ज़रूर ज़ोर पकड़ोगे | दो मरतबा |

عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَآ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ فَجَاسُوْا خِلٰلَ الدِّيَارِ ۚ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| शहरों के अन्दर | तो वह घुस पड़े | सख़्त | लड़ाई वाले | अपने बन्दे | तुम पर |

وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا ۝٥ ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | बारी | तुम्हारे लिए | हम ने फेर दी | फिर | 5 | पूरा होने वाला | एक वादा | और था |

وَاَمْدَدْنٰكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَجَعَلْنٰكُمْ اَكْثَرَ نَفِيْرًا ۝٦

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | जत्था (लशकर) | ज़ियादा | और हम ने तुम्हें कर दिया | और बेटे | मालों से | और हम ने तुम्हें मदद दी |

اِنْ اَحْسَنْتُمْ اَحْسَنْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ ۗ وَاِنْ اَسَاْتُمْ فَلَهَا ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो उन के लिए | तुम ने बुराई की | और अगर | अपनी जानों के लिए | तुम ने भलाई की | तुम ने भलाई की | अगर |

فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ لِيَسُوْٓءٗا وُجُوْهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और वह घुस जाएं | तुम्हारे चहरे | कि वह बिगाड़ दें | दूसरा वादा | आया | फिर जब |

الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوْهُ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّلِيُتَبِّرُوْا مَا عَلَوْا تَتْبِيْرًا ۝٧

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | पूरी तरह बरबाद | जहां ग़ल्बा पाएं वह | और बरबाद कर डालें | पहली बार | वह घुसे उस में | जैसे | मस्जिद |

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

पाक है वह, जो अपने बन्दे को रातों रात ले गया मस्जिदे हराम (ख़ाना कअ़बा से) मस्जिदे अक़्सा (बैतुल मुक़द्दस) तक जिस के इर्द गिर्द (अतराफ़) को हम ने बरकत दी है, ताकि हम उसे अपनी निशानियां दिखा दें, बेशक वह सुनने वाला देखने वाला है। (1)

और हम ने मूसा (अ) को किताब दी, और उसे बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया कि तुम मेरे सिवा (किसी को) कारसाज़ न ठहराओ। (2)

ऐ (उन लोगों कि) औलाद! जिन को हम ने नूह (अ) के साथ सवार किया, बेशक वह शुक्रगुज़ार बन्दा था। (3)

और हम ने बनी इस्राईल को किताब में साफ़ कह सुनाया, अलबत्ता तुम फ़साद करोगे ज़मीन में दो मरतबा और तुम ज़रूर ज़ोर पकड़ोगे (सरकशी करोगे)। (4)

पस जब दोनों में से पहले वादे (का वक़्त) आया तो हम ने तुम पर अपने सख़्त लड़ाई वाले बन्दे भेजे, वह शहरों के अन्दर घुस गए (फैल गए), और यह एक वादा था पूरा हो कर रहने वाला। (5)

फिर हम ने उन पर तुम्हारी बारी फेर दी (तुम्हें ग़ल्बा दिया) और मालों से और बेटों से हम ने तुम्हें मदद दी और हम ने तुम्हें बड़ा जत्था (लशकर) कर दिया। (6)

अगर तुम ने भलाई की तो अपनी जानों के लिए, और अगर तुम ने बुराई की तो उन (अपनी जानों) के लिए, फिर (याद करो) जब दूसरे वादे (का वक़्त) आया कि वह (दुश्मन) तुम्हारे चहरे बिगाड़ दें, और वह मस्जिदे (अक़्सा) में घुस जाएं जैसे वह पहली बार घुसे थे, और यह कि जहां ग़ल्बा पाएं, पूरी तरह बरबाद कर डालें। (7)

उम्मीद है (बईद नहीं) कि तुम्हारा रब तुम पर रह्म करे और अगर तुम फिर वही करोगे तो हम (भी) वही करेंगे और हम ने जहन्नम काफ़िरों के लिए क़ैद खाना बनाया है। (8)
बेशक यह क़ुरआन उस राह की रहनुमाई करता है जो सब से सीधी है। और उन मोमिनों को बशारत देता है जो अच्छे अ़मल करते हैं कि उन के लिए बड़ा अजर है। (9)
और यह कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते, हम ने उन के लिए तैयार किया है अ़ज़ाब दर्दनाक। (10)
और इन्सान बुराई की दुआ करता है, जैसे वह भलाई की दुआ़ करता है, और इन्सान जल्द बाज़ है। (11)
और हम ने रात और दिन को दो निशानियां बनाया, फिर हम ने रात की निशानी को मिटा दिया (मान्द कर दिया) और हम ने दिन की निशानी को दिखाने वाली बनाया ताकि तुम अपने रब का फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करो, और ताकि बरसों की गिनती और हिसाब मालूम करो और हर चीज़ को हम ने उसे तफ़्सील के साथ बयान कर दिया है। (12)
और हम ने हर इन्सान की क़िस्मत उस की गर्दन में लटका दी, और हम उस के लिए निकालेंगे रोज़े क़ियामत एक किताब, वह उसे खुला हुआ पाएगा। (13)
अपना नामा-ए-आमाल पढ़ ले, आज तू ख़ुद अपने ऊपर काफ़ी है हिसाब लेने वाला (मोहतसिब)। (14)
जिस ने हिदायत पाई उस ने सिर्फ़ अपने लिए हिदायत पाई, और जो कोई गुमराह हुआ तो वह गुमराह हुआ सिर्फ़ अपने बुरे को, और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाता, और जब तक हम कोई रसूल न भेजें हम अ़ज़ाब देने वाले नहीं। (15)
और जब हम ने किसी बस्ती को हलाक करना चाहा तो हम ने उस के ख़ुश हाल लोगों को हुक्म भेजा तो उन्हों ने उस में नाफ़रमानी की फिर उन पर पूरी हो गई बात (हुक्म साबित हो गया) फिर हम ने उन्हें बुरी तरह हलाक कर दिया। (16)
और हम ने नूह (अ) के बाद कितनी ही बस्तियां हलाक कर दीं और तेरा रब काफ़ी है अपने बन्दों के गुनाहों की ख़बर रखने वाला देखने वाला। (17)

عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يَّرْحَمَكُمْ ۚ وَاِنْ عُدْتُّمْ عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ وقف لازم

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जहन्नम | और हम ने बनाया | हम वही करेंगे | तुम फिर (वही) करोगे | और अगर | वह तुम पर रह्म करे | कि | तुम्हारा रब | उम्मीद है |

لِلْكٰفِرِيْنَ حَصِيْرًا ﴿٨﴾ اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِىْ لِلَّتِىْ هِىَ اَقْوَمُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सब से सीधी | वह | उस के लिए जो | रहनुमाई करता है | यह क़ुरआन | बेशक | 8 | क़ैद खाना | काफ़िरों के लिए |

وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا كَبِيْرًا ﴿٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | बड़ा अजर | उन के लिए | कि | अच्छे | अ़मल करते हैं | वह लोग जो | मोमिन (जमा) | और बशारत देता है |

وَّاَنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٠﴾ ع

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | दर्दनाक | अज़ाब | उन के लिए | हम ने तैयार किया | आख़िरत पर | ईमान नहीं लाते | जो लोग | और यह कि |

وَيَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَيْرِ ۚ وَكَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ﴿١١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | जल्द बाज़ | इन्सान | और है | भलाई की | उस की दुआ़ | बुराई की | इन्सान | और दुआ़ करता है |

وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ اٰيَتَيْنِ فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ الَّيْلِ وَجَعَلْنَآ اٰيَةَ النَّهَارِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन की निशानी | और हम ने बनाया | रात की निशानी | फिर हम ने मिटा दिया | दो निशानियां | और दिन | रात | और हम ने बनाया |

مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बरस (जमा) | गिनती | और ताकि तुम मालूम करो | अपने रब से (का) | फ़ज़्ल | ताकि तुम तलाश करो | दिखाने वाली |

وَالْحِسَابَ ۚ وَكُلَّ شَىْءٍ فَصَّلْنٰهُ تَفْصِيْلًا ﴿١٢﴾ وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उसको लगा दी (लटका दी) | और हर इन्सान | 12 | तफ़्सील के साथ | हम ने बयान किया है | और हर चीज़ | और हिसाब |

طٰٓئِرَهٗ فِىْ عُنُقِهٖ ۚ وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰهُ مَنْشُوْرًا ﴿١٣﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 13 | खुला हुआ | और उसे पाएगा | एक किताब | रोज़े क़ियामत | उस के लिए | और हम निकालेंगे | उसकी गर्दन में | इस की क़िस्मत |

اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ۚ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ﴿١٤﴾ مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो सिर्फ़ | हिदायत पाई | जिस | 14 | हिसाब लेने वाला | अपने ऊपर | आज | तू ख़ुद | काफ़ी है | अपना किताब (नामा-ए-आमाल) | पढ़ ले |

يَهْتَدِىْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई उठाने वाला | और बोझ नहीं उठाता | अपने ऊपर (अपने बुरे को) | गुमराह हुआ | तो सिर्फ़ | गुमराह हुआ | और जो | अपने लिए | उस ने हिदायत पाई |

وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ﴿١٥﴾ وَاِذَآ اَرَدْنَآ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने चाहा | और जब | 15 | कोई रसूल | हम (न) भेजें | जब तक | अ़ज़ाब देने वाले | और हम नहीं | दूसरे का बोझ |

اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | फिर पूरी हो गई | उस में | तो उन्हों ने नाफ़रमानी की | इस के ख़ुश हाल लोग | हम ने हुक्म भेजा | कोई बस्ती | कि हम हलाक करें |

الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا ﴿١٦﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْۢ بَعْدِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बाद | बस्तियां | से | हम ने हलाक कर दी | और कितनी | 16 | पूरी तरह हलाक | फिर हम ने उन्हें हलाक किया | बात |

نُوْحٍ ۚ وَكَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا ۢ بَصِيْرًا ﴿١٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 17 | देखने वाला | ख़बर रखने वाला | अपने बन्दे | गुनाहों की | तेरा रब | और काफ़ी | नूह (अ) |

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो कोई | चाहता है | जल्दी | हम जल्दी दे देंगे | उस को इस (दुनिया) में | जितना हम चाहें | जिस को | हम चाहें | फिर | हम ने बना दिया है |

لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا (١٨) وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के लिए | जहन्नम | वह दाख़िल होगा इस में | मज़म्मत किया हुआ | दूर किया हुआ (धकेला हुआ) | 18 | जो और | चाह | आख़िरत | और कोशिश की उस ने | उस के लिए |

سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا (١٩) كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَآءِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की सी कोशिश | और (बशर्त यह कि) हो वह मोमिन | पस यही लोग | है हुई | उन की कोशिश | क़द्र की हुई (मक़बूल) | 19 | हर एक | हम देते हैं | इन को भी |

وَهٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ۗ وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا (٢٠) اُنْظُرْ كَيْفَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन को भी | से | बख़्शिश | तेरा रब | और नहीं है | बख़्शिश | तेरा रब | रोकी जाने वाली | 20 | देखो | किस तरह |

فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۗ وَلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّاَكْبَرُ تَفْضِيْلًا (٢١)

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने फ़ज़ीलत दी | उन के बाज़ (एक) | पर | बाज़ (दूसरा) | और अलबत्ता आख़िरत | सब से बड़े दरजे | और सब से बरतर | फ़ज़ीलत में | 21 |

ع ١٢/٢ لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا مَّخْذُوْلًا (٢٢) وَقَضٰى رَبُّكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तू न ठहरा | अल्लाह के साथ | कोई दूसरा माबूद | पस तू बैठ रहेगा | मज़म्मत किया हुआ | बेबस हो कर | 22 | और हुक्म फ़रमा दिया | तेरा रब |

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۗ اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कि न इबादत करो | उस के सिवा | और माँ बाप से | हुस्ने सुलूक | अगर वह पहुँच जाएं | तेरे सामने | बुढ़ापा |

اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन में से एक | या | वह दोनों | तो न कह | उन्हें | उफ़ | और न झिड़को उन्हें | और कहो | उन दोनों से | बात |

كَرِيْمًا (٢٣) وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अदब के साथ | 23 | और झुका दे | उन दोनों के लिए | बाज़ू | आजिज़ी | से | मेहरबानी | और कहो | ऐ मेरे रब | उन दोनों पर रहम फ़रमा |

كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا (٢٤) رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ۗ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जैसे | उन्हों ने मेरी पर्वरिश की | बचपन | 24 | तुम्हारा रब | ख़ूब जानता है | जो | तुम्हारे दिलों में | अगर | तुम होंगे | नेक (जमा) |

فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا (٢٥) وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो बेशक वह | है | रुजूअ करने वालों के लिए | बख़्शने वाला | 25 | और दो तुम | क़राबतदार | उस का हक़ | और मिस्कीन |

وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا (٢٦) اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और मुसाफ़िर | और न फ़ुज़ूल ख़र्ची करो | अन्धा धुन्द | 26 | बेशक | फ़ुज़ूल ख़र्च (जमा) | हैं | भाई (जमा) |

الشَّيٰطِيْنِ ۗ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا (٢٧) وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَآءَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शैतान (जमा) | और है | शैतान | अपने रब का | नाशुक्रा | 27 | और अगर | तू मुँह फेर ले | उन से | इन्तिज़ार में |

رَحْمَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُوْرًا (٢٨) وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रहमत | से | अपना रब | तू उस की उम्मीद रखता है | तो कह | उन से | नर्मी की बात | 28 | और न रख | अपना हाथ |

مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا (٢٩)

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बन्धा हुआ | तक से | अपनी गर्दन | और न उसे खोल | पूरी तरह खोलना | फिर तू बैठा रह जाए | मलामत ज़दा | थका हुआ | 29 |

जो कोई जल्दी (दुनिया में) चाहता है, हम उस को जितना चाहें जल्दी (दुनिया में) दे देंगे, फिर हम ने उस के लिए जहन्नम बना दिया है, वह उस में दाख़िल होगा मज़म्मत किया हुआ धकेला हुआ। (18)
और जो कोई आख़िरत चाहे और उस के लिए उस की सी कोशिश करे, बशर्त यह कि वह मोमिन हो, पस यही लोग हैं जिन की कोशिश मक़्बूल हुई। (19)
हम तेरे रब की बख़्शिश से उन को भी और उन को भी हर एक को देते हैं और तेरे रब की बख़्शिश (किसी पर) रोकी जाने वाली नहीं। (20)
देखो! हम ने किस तरह उन के एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी और अलबत्ता आख़िरत के दरजे सब से बड़े, और फ़ज़ीलत में सब से बरतर हैं। (21)
अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद न ठहरा पस तू बैठ रहेगा मज़म्मत किया हुआ, बेबस हो कर। (22)
और तेरे रब ने हुक्म फ़रमा दिया कि उस के सिवा किसी और की इबादत न करो, और माँ बाप से हुस्ने सुलूक करो, और उन में से एक या वह दोनों तेरे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएं तो उन्हें न कहो उफ़ (भी) और उन्हें न झिड़को, और उन दोनों से अदब के साथ बात कहो (करो)। (23)
और उन के लिए आजिज़ी के (साथ) बाज़ू झुका दो मेहरबानी से, और कहो ऐ मेरे रब! उन दोनों पर रहम फ़रमा जैसे उन्हों ने बचपन में मेरी पर्वरिश की। (24)
तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो तुम्हारे दिलों में है, अगर तुम नेक होंगे तो बेशक वह रुजूअ करने वालों को बख़्शने वाला है। (25)
और दो तुम क़राबतदार को उस का हक़, और मिस्कीन और मुसाफ़िर को, और अन्धा धुन्द फ़ुज़ूल ख़र्ची न करो। (26)
बेशक फ़ुज़ूल ख़र्च शैतानों के भाई हैं और शैतान अपने रब का नाशुक्रा है। (27)
और अगर तू अपने रब की रहमत (फ़राख़ दस्ती) के इन्तिज़ार में, जिस की तू उम्मीद रखता है, उन से मुँह फेर ले तो उन से तू कह दिया कर नर्मी की बात। (28)
और अपना हाथ अपनी गर्दन तक बन्धा हुआ न रख (कन्जूस न हो जा) और न उसे खोल पूरी तरह (बिलकुल ही) कि फिर तू मलामत ज़दा थका हारा बैठा रह जाए। (29)

बेशक तेरा रब जिस का वह चाहता है रिज़्क़ फ़राख़ कर देता है और (जिस का चाहता है) तंग कर देता है, बेशक वह अपने बन्दों की ख़बर रखने वाला, देखने वाला है। (30)
और तुम अपनी औलाद को मुफ़्लिसी के डर से क़त्ल न करो, हम ही उन्हें रिज़्क़ देते हैं और तुम को (भी), बेशक उन का क़त्ल बड़ा गुनाह है। (31)
और ज़िना के क़रीब न जाओ, बेशक यह बेहयाई है और बुरा रास्ता। (32)
और उस जान को क़त्ल न करो जिसे (क़त्ल करना) अल्लाह ने हराम किया है मगर हक़ के साथ, और जो मज़्लूम मारा गया तो तहक़ीक़ हम ने उस के वारिस के लिए एक इख़्तियार (क़िसास) दिया है, पस हद से न बढ़े क़त्ल में, बेशक वह मदद दिया गया है। (33)
और यतीम के माल के पास न जाओ (तसर्रुफ़ न करो) मगर इस तरीक़े से जो सब से बेहतर हो, यहां तक कि वह (यतीम) अपनी जवानी को पहुँच जाए। और अहद को पूरा करो, बेशक अहद है पुर्सिश किया जाने वाला (ज़रूर पुर्सिश होगी)। (34)
और जब तुम माप कर दो तो पैमाना पूरा करो, और वज़न करो सीधी तराज़ू के साथ, यह बेहतर है और सब से अच्छा है अन्जाम के ऐतिबार से। (35)
और उस के पीछे न पड़ जिस का तुझे इल्म नहीं, बेशक कान, और आँख, और दिल, उन में से हर एक पुर्सिश किया जाने वाला है (हर एक की पुर्सिश होगी) (36)
और ज़मीन में इतराता हुआ न चल, बेशक तू ज़मीन को हरगिज़ न चीर डालेगा, और न पहाड़ की बुलन्दी को पहुँचेगा। (37)
यह तमाम बुराइयां तेरे रब के नज़्दीक नापसन्दीदा हैं। (38)
यह हिक्मत की (उन बातों) में से है जो तेरे रब ने तेरी तरफ़ वहि की है, और न बना अल्लाह के साथ कोई और माबूद कि फिर तू जहन्नम में डाल दिया जाए मलामत ज़दा, धकेला हुआ (रान्दा-ए-दरगाह)। (39)
क्या तुम्हें चुन लिया तुम्हारे रब ने बेटों के लिए? और अपने लिए फ़रिश्तों को बेटियां बना लिया, बेशक तुम बड़ा बोल बोलते हो। (40)

اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने बन्दों से | है | बेशक वह | और तंग कर देता है | जिस की वह चाहता है | रोज़ी | फ़राख़ कर देता है | तेरा रब | बेशक |

خَبِيْرًاۢ بَصِيْرًا ۝٣٠ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ ۭ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ ع

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम रिज़्क़ देते हैं उन्हें | हम | मुफ़्लिसी | डर | अपनी औलाद | और न क़त्ल करो | 30 | देखने वाला | ख़बर रखने वाला |

وَاِيَّاكُمْ ۭ اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْاً كَبِيْرًا ۝٣١ وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| है | बेशक यह | ज़िना | और न क़रीब जाओ | 31 | गुनाह बड़ा | है | उन का क़त्ल | बेशक | और तुम को |

فَاحِشَةً ۭ وَسَاۗءَ سَبِيْلًا ۝٣٢ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِىْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर | अल्लाह ने हराम किया | वह जो कि | जान | और न क़त्ल करो | 32 | रास्ता | और बुरा | बेहयाई |

بِالْحَقِّ ۭ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस वह हद से न बढ़े | एक इख़्तियार | इस के वारिस के लिए | तो तहक़ीक़ हम ने कर दिया | मज़्लूम | मारा गया | और जो | हक़ के साथ |

فِّى الْقَتْلِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ مَنْصُوْرًا ۝٣٣ وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِىْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस तरीक़े से | मगर | यतीम का माल | और पास न जाओ | 33 | मदद दिया गया | है | बेशक वह | क़त्ल में |

هِىَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۠ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| है | अहद | बेशक | अहद को | और पूरा करो | अपनी जवानी | वह पहुँच जाए | यहां तक कि | सब से बेहतर | वह |

مَسْــــُٔــوْلًا ۝٣٤ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सीधी | तराज़ू के साथ | और वज़न करो | जब तुम माप कर दो | पैमाना | और पूरा करो | 34 | पुर्सिश किया जाने वाला |

ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ۝٣٥ وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۭ اِنَّ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | इल्म | उस का | तेरे लिए तुझे | जिस का नहीं | और पीछे न पड़ तू | 35 | अन्जाम के ऐतिबार से | और सब से अच्छा | बेहतर | यह |

السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰۗىِٕكَ كَانَ عَنْهُ مَسْــــُٔــوْلًا ۝٣٦

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 36 | पुर्सिश किया जाने वाला | इस से | है | यह | हर एक | और दिल | और आँख | कान |

وَلَا تَمْشِ فِى الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पहाड़ | और हरगिज़ न पहुँचेगा | ज़मीन | हरगिज़ न चीर डालेगा | बेशक तू | अकड़ कर (इतराता हुआ) | ज़मीन में | और न चल |

طُوْلًا ۝٣٧ كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوْهًا ۝٣٨ ذٰلِكَ مِمَّآ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में जो | यह | 38 | नापसन्दीदा | तेरा रब | नज़्दीक | उस की बुराई | है | यह | तमाम | 37 | बुलन्दी |

اَوْحٰٓى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۭ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई और | माबूद | अल्लाह के साथ | बना | और न | हिक्मत से | तेरा रब | तेरी तरफ़ | वहि की |

فَتُلْقٰى فِىْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۝٣٩ اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेटों के लिए | तुम्हारा रब | क्या तुम्हें चुन लिया | 39 | धकेला हुआ | मलामत ज़दा | जहन्नम में | फिर तू डाल दिया जाए |

وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلٰۗىِٕكَةِ اِنَاثًا ۭ اِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا عَظِيْمًا ۝٤٠ ع

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 40 | बड़ा बोल | अलबत्ता कहते हो (बोलते हो) | बेशक तुम | बेटियां | फ़रिश्ते | में को | और बना लिया |

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِيَذَّكَّرُوْا ۖ وَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ﴿٤١﴾ قُلْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कह दें आप (स) | 41 | नफ़्रत | मगर | बढ़ती उन को | और नहीं | ताकि वह नसीहत पकड़ें | इस कुरआन | में | और अलबत्ता हम ने तरह तरह से बयान किया |

لَّوْ كَانَ مَعَهٗٓ اٰلِهَةٌ كَمَا يَقُوْلُوْنَ اِذًا لَّابْتَغَوْا اِلٰى ذِى الْعَرْشِ سَبِيْلًا ﴿٤٢﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 42 | कोई रास्ता | अर्श वाले | तरफ़ | वह जरूर ढून्डते | उस सूरत में | वह कहते हैं | जैसे | और माबूद | उस के साथ | अगर होते |

سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا ﴿٤٣﴾ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सात (7) | आस्मान (जमा) | उस की | पाकीज़गी बयान करते हैं | 43 | बहुत बड़ा (बेनिहायत) | बरतर | वह कहते हैं | उस से जो | और बरतर | वह पाक है |

وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ۚ وَاِنْ مِّنْ شَىْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और लेकिन | उस की हम्द के साथ | पाकीज़गी बयान करती है | मगर | कोई चीज | और नहीं | उन में | और जो | और जमीन |

لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ ۗ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿٤٤﴾ وَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुरआन | तुम पढ़ते हो | और जब | 44 | बख़्शने वाला | बुर्दबार | है | बेशक वह | उन की तस्बीह | तुम नहीं समझते |

جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا ﴿٤٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 45 | छुपा हुआ | एक पर्दा | आख़िरत पर | ईमान नहीं लाते | वह लोग जो | और दरमियान | तुम्हारे दरमियान | हम कर देते हैं |

وَّجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۗ وَاِذَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जब | गिरानी | उन के कान | और में | वह न समझें उसे | कि | पर्दे | उन के दिल | पर | और हम ने डाल दिए |

ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِى الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا ﴿٤٦﴾ نَحْنُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम | 46 | नफ़्रत करते हुए | अपनी पीठ (जमा) | पर | वह भागते हैं | यकता | कुरआन में | अपना रब | तुम ज़िक्र करते हो |

اَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُوْنَ بِهٖٓ اِذْ يَسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ وَاِذْ هُمْ نَجْوٰٓى اِذْ يَقُوْلُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब कहते हैं | सरगोशी करते हैं | वह | और जब | तेरी तरफ़ | जब वह कान लगाते हैं | उस को | वह सुनते हैं | जिस ग़र्ज़ से | ख़ूब जानते हैं |

الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ﴿٤٧﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कैसी उन्हों ने चस्पां की | तुम देखो | 47 | सिहरज़दा | एक आदमी | मगर | तुम पैरवी करते | नहीं | ज़ालिम (जमा) |

لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ﴿٤٨﴾ وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम हो गए | क्या जब | और वह कहते हैं | 48 | (सीधी) राह | पस वह इस्तिताअत नहीं पाते | सो वह गुमराह हो गए | मिसालें | तुम्हारे लिए |

عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿٤٩﴾ قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पत्थर | तुम हो जाओ | कह दें | 49 | नई | पैदाइश | फिर जी उठेंगे | क्या हम यकीनन | और रेज़ा रेज़ा | हड्डियां |

اَوْ حَدِيْدًا ﴿٥٠﴾ اَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِيْ صُدُوْرِكُمْ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कौन | फिर अब कहेंगे | तुम्हारे सीने (ख़याल) | में | बड़ी हो | उस से जो | और मख़्लूक़ | या | 50 | लोहा | या |

يُّعِيْدُنَا ۗ قُلِ الَّذِىْ فَطَرَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْغِضُوْنَ اِلَيْكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारी तरफ़ | तो वह हिलाएंगे (मटकाएंगे) | बार | पहली | तुम्हें पैदा किया | वह जिस ने | फ़रमा दें | हमें लौटाएगा |

رُءُوْسَهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هُوَ ۗ قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَرِيْبًا ﴿٥١﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 51 | करीब | वह हो | कि | शायद | आप (स) फ़रमा दें | वह - यह | कब | और कहेंगे | अपने सर |

और हम ने इस कुरआन में तरह तरह से बयान किया है ताकि वह नसीहत पकड़ें, और (इस से) उन्हें नहीं बढ़ती मगर नफ़्रत। (41) आप (स) कह दें, अगर जैसे वह कहते हैं उस के साथ और माबूद होते तो उस सूरत में वह अर्श वाले की तरफ़ जरूर ढून्डते कोई रास्ता। (42) वह उस से निहायत पाक है और बरतर जो वह कहते हैं (43) उस की पाकीज़गी बयान करते हैं सातों आस्मान और जमीन, और जो उन में है, कोई चीज़ नहीं मगर (हर शै) पाकीज़गी बयान करती है उस की हम्द के साथ, लेकिन तुम उन की तस्बीह नहीं समझते, बेशक वह बुर्दबार, बख़्शने वाला है। (44) और जब तुम कुरआन पढ़ते हो, हम तुम्हारे और उन के दरमियान जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते कर देते (डाल देते) हैं एक छुपा हुआ (दबीज़) पर्दा। (45) और हम ने उन के दिलों पर पर्दे डाल दिए के वह इसे न समझें, और उन के कानों में गिरानी है और जब तुम कुरआन में अपने यकता रब का जिक्र करते हो तो वह पीठ फेर कर नफ़्रत करते हुए भाग जाते हैं। (46) हम ख़ूब जानते हैं कि वह उस को किस गर्ज से सुनते हैं जब वह तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं और जब वह सरगोशी करते हैं (यानी) जब कहते हैं जालिम कि तुम पैरवी नहीं करते मगर एक सिहरज़दा आदमी की। (47) तुम देखो! उन्हों ने तुम पर कैसी मिसालें चस्पां कीं, सो वह गुमराह हुए, पस वह (सीधे) रास्ते की इस्तिताअत नहीं पाते। (48) और वह कहते हैं कि क्या जब हम हड्डियां और रेज़ा रेज़ा हो गए, क्या हम यक़ीनन फिर नई पैदाइश (अज़ सर नौ) जी उठेंगे? (49) कह दें तुम पत्थर या लोहा हो जाओ, (50) या कोई और मख़्लूक़ जो तुम्हारे ख़यालों में उस से भी बड़ी हो। फिर अब कहेंगे हमें कौन लौटाएगा। आप (स) फ़रमा दें, वह जिस ने तुम्हें पैदा किया पहली बार, तो वह तुम्हारी तरफ़ अपने सर मटकाएंगे और कहेंगे यह कब होगा (क़ियामत कब आएगी)? आप (स) फ़रमा दें, शायद कि करीब ही हो। (51)

जिस दिन वह तुम्हें पुकारेगा तो तुम उस की तारीफ़ के साथ तामील करोगे (क़ब्रों से निकल आओगे) और तुम ख़याल करोगे कि तुम (दुनिया में) रहे हो सिर्फ़ थोड़ी देर। **(52)** और आप (स) मेरे बन्दों को फ़रमा दें कि (बात) वह कहें जो सब से अच्छी हो, बेशक शैतान उन के दरमियान फ़साद डाल देता है, बेशक शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है। **(53)** तुम्हारा रब तुम्हें ख़ूब जानता है, अगर वह चाहे तो तुम पर रहम करे या अगर वह चाहे तो तुम्हें अज़ाब दे, और हम ने तुम्हें उन पर दारोग़ा (बना कर) नहीं भेजा। **(54)** और तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो कोई आस्मानों में और ज़मीन में है, और तहक़ीक़ हम ने बाज़ नबियों को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी, और हम ने दाऊद (अ) को ज़बूर दी। **(55)** आप (स) कह दें पुकारो उन्हें जिन को तुम उस के सिवा (माबूद) गुमान करते हो, पस वह इख़्तियार नहीं रखते तुम से तकलीफ़ दूर करने का, और न (तकलीफ़) बदलने का। **(56)** वह लोग जिन्हें वह पुकारते हैं वह (ख़ुद) ढूंडते हैं अपने रब की तरफ़ वसीला कि उन में से कौन बहुत ज़ियादा क़रीब हो जाए, और उस की रहमत की उम्मीद रखते हैं, और वह उस के अज़ाब से डरते हैं, बेशक तेरे रब का अज़ाब डर (ही) की बात है। **(57)** और कोई (नाफ़रमान) बस्ती नहीं मगर हम उसे हलाक करने वाले हैं, क़ियामत के दिन से पहले, या उसे सख़्त अज़ाब देने वाले हैं, यह किताब में है लिखा हुआ। **(58)** और हमें निशानियाँ भेजने से नहीं रोका मगर (इस बात ने) कि उन को अगलों ने झुटलाया, और हम ने समूद को ऊँटनी दी ज़रीए-बसीरत ओ इब्रत, उन्हों ने उस पर ज़ुल्म किया, और हम निशानियाँ नहीं भेजते मगर (सिर्फ़) डराने को। **(59)** और जब हम ने तुम से कहा कि बेशक तुम्हारा रब लोगों को (अहाता) क़ाबू किए हुए है, और हम ने जो नुमाइश तुम्हें दिखाई वह हम ने नहीं किया मगर लोगों की आज़माइश के लिए, और थोहर का दरख़्त जिस पर क़ुरआन में लानत की गई है, और हम उन्हें डराते हैं तो उन्हें बढ़ती है सिर्फ़ सरकशी। **(60)**

يَـوْمَ يَـدْعُـوْكُـمْ فَـتَـسْـتَـجِـيْـبُـوْنَ بِـحَـمْـدِهٖ وَتَـظُـنُّـوْنَ اِنْ لَّـبِـثْـتُـمْ اِلَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सिर्फ़ | तुम रहे | कि | और तुम ख़याल करोगे | उस की तारीफ़ के साथ | तो तुम जवाब दोगे (तामील करोगे) | वह पुकारेगा तुम्हें | जिस दिन |

ع ١٢ ٥ قَلِيْلًا ﴿٥٢﴾ وَقُلْ لِّعِبَادِيْ يَقُوْلُوا الَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۚ اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़साद डालता है | शैतान | बेशक | सब से अच्छी | वह | वह जो | वह कहें | मेरे बन्दों को | और फ़रमा दें | 52 | थोड़ी देर |

بَيْنَهُمْ ۚ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿٥٣﴾ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ ۚ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हें | ख़ूब जानता है | तुम्हारा रब | 53 | खुला | दुश्मन | इन्सान का | है | शैतान | बेशक | उन के दरमियान |

اِنْ يَّشَاْ يَرْحَمْكُمْ اَوْ اِنْ يَّشَاْ يُعَذِّبْكُمْ ۚ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿٥٤﴾

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 54 | दारोग़ा | उन पर | हम ने तुम्हें भेजा | और नहीं | तुम्हें अज़ाब दे | वह चाहे | अगर | या | तुम पर रहम करे वह | वह चाहे | अगर |

وَرَبُّـكَ اَعْـلَـمُ بِـمَـنْ فِـى الـسَّـمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَلَـقَـدْ فَـضَّـلْنَا بَعْضَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बाज़ | और तहक़ीक़ हम ने फ़ज़ीलत दी | और ज़मीन | आस्मान (जमा) | में | जो कोई | ख़ूब जानता है | और तुम्हारा रब |

النَّبِيّٖنَ عَلٰى بَعْضٍ وَّاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿٥٥﴾ قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम गुमान करते हो | वह जिन को | पुकारो तुम | कह दें | 55 | ज़बूर | दाऊद (अ) | और हम ने दी | बाज़ पर | नबी (जमा) |

مِّنْ دُوْنِهٖ فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيْلًا ﴿٥٦﴾ اُولٰٓئِكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग | 56 | बदलना | और न | तुम से | तकलीफ़ | दूर करना | पस वह इख़्तियार नहीं रखते | उस के सिवा |

الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمُ الْوَسِيْلَةَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ وَيَرْجُوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह उम्मीद रखते हैं | ज़ियादा क़रीब | उन से कौन | वसीला | अपना रब | तरफ़ | ढूंडते हैं | वह पुकारते हैं | जिन्हें |

رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُوْنَ عَذَابَهٗ ۚ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا ﴿٥٧﴾ وَاِنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं | 57 | डर की बात | है | तेरा रब | अज़ाब | बेशक | उस का अज़ाब | और वह डरते हैं | उस की रहमत |

مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا عَذَابًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अज़ाब | उसे अज़ाब देने वाले | या | क़ियामत का दिन | पहले | उसे हलाक करने वाले | हम | मगर | कोई बस्ती |

شَدِيْدًا ۚ كَانَ ذٰلِكَ فِى الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ﴿٥٨﴾ وَمَا مَنَعَنَآ اَنْ نُّرْسِلَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम भेजें | कि | और नहीं हमें रोका | 58 | लिखा हुआ | किताब में | यह | है | सख़्त |

بِالْاٰيٰتِ اِلَّآ اَنْ كَذَّبَ بِهَا الْاَوَّلُوْنَ ۚ وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिखाने को (ज़रीए बसीरत) | ऊँटनी | समूद | और हम ने दी | अगले लोग (जमा) | उन को | झुटलाया | यह कि | मगर | निशानियाँ |

فَظَلَمُوْا بِهَا ۚ وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا ﴿٥٩﴾ وَاِذْ قُلْنَا لَكَ اِنَّ رَبَّكَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारा रब | बेशक | तुम से | हम ने कहा | और जब | 59 | डराने को | मगर | निशानियाँ | और हम नहीं भेजते | उन्हों ने उस पर ज़ुल्म किया |

اَحَاطَ بِالنَّاسِ ۚ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِيْٓ اَرَيْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और (थोहर का) दरख़्त | लोगों के लिए | आज़माइश | मगर | हम ने तुम्हें दिखाई | वह जो कि | नुमाइश | और हम ने नहीं किया | लोगों को | अहाता किए हुए |

ع ٨ ٦ الْمَلْعُوْنَةَ فِى الْقُرْاٰنِ ۚ وَنُخَوِّفُهُمْ ۙ فَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا ﴿٦٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 60 | बड़ी | सरकशी | मगर (सिर्फ़) | तो नहीं बढ़ती उन्हें | और हम डराते हैं उन्हें | क़ुरआन में | जिस पर लानत की गई |

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ قَالَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने कहा | इब्लीस | सिवाए | तो उन्हों ने सिजदा किया | आदम (अ) को | तुम सिजदा करो | फ़रिश्तों से | हम ने कहा | और जब |

ءَاَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِيْنًا ﴿٦١﴾ قَالَ اَرَءَيْتَكَ هٰذَا الَّذِيْ كَرَّمْتَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तू ने इज़्ज़त दी | वह जिसे | यह | भला तू देख | उस ने कहा | 61 | मिट्टी से | तू ने पैदा किया | उस को जिसे | क्या मैं सिजदा करूँ |

عَلَيَّ ۡ لَىِٕنْ اَخَّرْتَنِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَاَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهٗٓ اِلَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सिवाए | उस की औलाद | जड़ से उखाड़ दूँगा ज़रूर | रोज़े क़ियामत | तक | तू मुझे ढील दे | अलबत्ता अगर | मुझ पर |

قَلِيْلًا ﴿٦٢﴾ قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَاۗؤُكُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारी सज़ा | जहन्नम | तो बेशक | उन में से | तेरी पैरवी की | पस जिस | तू जा | उस ने फ़रमाया | 62 | चन्द एक |

جَزَاۗءً مَّوْفُوْرًا ﴿٦٣﴾ وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी आवाज़ से | उन में से | तेरा बस चले | जो - जिस | और फुसला ले | 63 | भरपूर | सज़ा |

وَاَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْاَمْوَالِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| माल (जमा) | में | और उन से साझा कर ले | और पयादे | अपने सवार | उन पर | और चढ़ा ला |

وَالْاَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ۭ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿٦٤﴾ اِنَّ عِبَادِيْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरे बन्दे | बेशक | 64 | धोका | मगर (सिर्फ़) | शैतान | और नहीं उन से वादा करता | और वादे कर उन से | और औलाद |

لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ ۭ وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيْلًا ﴿٦٥﴾ رَبُّكُمُ الَّذِيْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जो कि | तुम्हारा रब | 65 | कारसाज | तेरा रब | और काफ़ी | ज़ोर - ग़ल्बा | उन पर | तेरा | नहीं |

يُزْجِيْ لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِكُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम पर | है | बेशक वह | उस का फ़ज़्ल | से | ताकि तुम तलाश करो | दर्या में | किश्ती | तुम्हार लिए | चलाता है |

رَحِيْمًا ﴿٦٦﴾ وَاِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम पुकारते थे | जो | गुम हो जाते हैं | दर्या में | तकलीफ़ | तुम्हें छूती (पहुँचती) है | और जब | 66 | निहायत मेह्रबान |

اِلَّآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىكُمْ اِلَى الْبَرِّ اَعْرَضْتُمْ ۭ وَكَانَ الْاِنْسَانُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| इन्सान | और है | तुम फिर जाते हो | ख़ुश्की की तरफ़ | वह तुम्हें बचा लाया | फिर जब | उस के सिवा |

كَفُوْرًا ﴿٦٧﴾ اَفَاَمِنْتُمْ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ اَوْ يُرْسِلَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह भेजे | या | ख़ुश्की की तरफ़ | तुम्हें | धंसा दे | कि | सो क्या तुम निडर हो गए हो | 67 | बड़ा नाशुक्रा |

عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ وَكِيْلًا ﴿٦٨﴾ اَمْ اَمِنْتُمْ اَنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | तुम बेफ़िक्र हो गए | या | 68 | कोई कारसाज़ | अपने लिए | तुम न पाओ | फिर | पत्थर बरसाने वाली हवा | तुम पर |

يُّعِيْدَكُمْ فِيْهِ تَارَةً اُخْرٰى فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| से का | सख़्त झोंका | तुम पर | फिर भेज दे वह | दोबारा | उस में | वह तुम्हें ले जाए |

الرِّيْحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ۙ ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهٖ تَبِيْعًا ﴿٦٩﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 69 | पीछा करने वाला | उस पर | हम पर (हमारा) | अपने लिए | तुम न पाओ | फिर | तुम ने नाशुक्री की | बदले में | फिर तुम्हें ग़र्क़ कर दे | हवा |

और जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम (अ) को सिज्दा करो, तो इब्लीस के सिवा उन सब ने सिज्दा किया, उस ने कहा क्या मैं उसे सिज्दा करूँ? जिसे तू ने मिट्टी से पैदा किया। (61) उस ने कहा भला देख तो यह है वह जिसे तू ने मुझ पर इज़्ज़त दी, अलबत्तता अगर तू मुझे रोज़े क़ियामत तक ढील दे तो मैं चन्द एक के सिवा उस की औलाद को ज़रूर जड़ से उखाड़ दूँगा। (62) उस ने फ़रमाया तू जा, पस उन में से जिस ने तेरी पैरवी की तो बेशक जहन्नम तुम्हारी सज़ा है, सज़ा भी भरपूर। (63) और फुसला ले जिस पर तेरा बस चले उन में से अपनी आवाज़ से, और उन पर अपने सवार और पयादे चढ़ा ला, और उन से साझा कर ले माल और औलाद में, और उन से वादे कर, और उन से शैतान का वादा करना सिर्फ़ धोका है।। (64) बेशक मेरे बन्दों पर तेरा कोई ज़ोर नहीं, और तेरा रब काफ़ी है कारसाज़। (65) तुम्हारा रब वह है जो कि तुम्हारे लिए दर्या में किश्ती चलाता है ताकि तुम उस का फ़ज़्ल (रिज़्क़) तलाश करो, बेशक वह तुम पर निहायत मेह्रबान है। (66) और जब तुम्हें दर्या में तक्लीफ़ पहुँचती है तो गुम हो जाते हैं (भूल जाते हो) जिन्हें उस के सिवा तुम पुकारते थे, फिर जब वह तुम्हें बचा लाया, ख़ुश्की की तरफ़, तो तुम फिर जाते हो, और इन्सान बड़ा नाशुक्रा है। (67) सो क्या तुम निडर हो गए हो कि वह ज़मीन में धंसा दे तुम्हें ख़ुश्की की तरफ़ (ले जा कर) या तुम पर पत्थर बरसाने वाली हवा भेजे, फिर तुम अपने लिए कोई कारसाज न पाओ। (68) या तुम बेफ़िक्र हो गए हो कि वह तुम्हें दोबारा उस (दर्या) में ले जाए, फिर तुम पर हवा का सख़्त झोंका (तूफ़ान) भेज दे फिर तुम्हें नाशुक्री के बदले में ग़र्क़ कर दे, फिर तुम अपने लिए उस पर हमारा कोई पीछा करने वाला न पाओ। (69)

और तहक़ीक़ हम ने औलादे आदम (अ) को इज्ज़त बख़्शी, और हम ने उन्हें ख़ुश्की और दर्या में सवारी दी, और हम ने उन्हें पाकीज़ा चीज़ों से रिज़्क़ दिया, और हम ने उन्हें अपनी बहुत सी मख़्लूक़ पर बड़ाई दे कर फ़ज़ीलत दी। (70)
जिस दिन हम तमाम लोगों को बुलाएंगे उन के पेशवाओं के साथ, पस जिस को उस की किताब (आमाल नामा) दाएं हाथ में दी गई तो वह लोग अपना आमाल नामा पढ़ेंगे और वह ज़ुल्म न किए जाएंगे एक धागे के बराबर (भी)। (71)
और जो इस दुनिया में अन्धा रहा पस वह आख़िरत में (भी) अन्धा (उठेगा) और रास्ते से भटका हुआ। (72)
और उस वहि से जो हम ने तुम्हारी तरफ़ की है क़रीब था कि वह तुम्हें उस से बिचला दें (फिसला दें) ताकि हम पर उस (वहि) के सिवा तुम झूट बान्धो और उस सूरत में अलबत्ता वह तुम्हें दोस्त बना लेते। (73)
और अगर हम तुम्हें साबित क़दम न रखते तो अलबत्ता तुम उन की तरफ़ झुकने लगते कुछ थोड़ा सा। (74)
उस सूरत में हम तुम्हें जिन्दगी में दुगनी (सज़ा) चखाते और दुगनी मौत (के बाद), फिर तुम अपने लिए न पाते हमारे मुक़ाबले में कोई मददगार। (75)
और तहक़ीक़ क़रीब था कि वह तुम्हें सरज़मीने मक्का से फिसला ही दें ताकि वह तुम्हें यहां से निकाल दें और उस सूरत में वह तुम्हारे पीछे न ठहर पाते मगर थोड़ा (अर्सा)। (76)
आप (स) से पहले जो रसूल हम ने भेजे (यही) सुन्नत (चली आ रही) है और तुम हमारी सुन्नत में कोई तबदीली न पाओगे। (77)
सूरज ढलने से रात के अन्धेरे तक नमाज़ क़ाइम करें, और सुब्ह का क़ुरआन, बेशक सुब्ह का क़ुरआन (पढ़ने में फ़िरिश्ते) हाज़िर होते हैं। (78)
और रात का कुछ हिस्सा क़ुरआन की तिलावत के साथ बेदार रहें, यह तुम्हारे लिए ज़ाइद है, क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें मुक़ामे महमूद में खड़ा कर दे। (79)
और आप (स) कहें ऐ मेरे रब! मुझे दाख़िल कर सच्चा दाख़िल करना, और मुझे निकाल सच्चा निकालना (अच्छी तरह), और अपनी तरफ़ से मेरे लिए अता कर ग़ल्बा, मदद देने वाला। (80)

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْٓ اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मे | और हम ने उन्हें रिज़्क़ दिया | और दर्या | ख़ुश्की में | दी | और हम ने उन्हें सवारी | औलादे आदम (अ) | हम ने इज़्ज़त बख़्शी | और तहक़ीक़ |

الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيْلًا ﴿٧٠﴾ يَوْمَ ع ١٠/٧

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिस दिन | 70 | बड़ाई दे कर | हम ने पैदा किया (अपनी मख़्लूक़) | उस से जो | बहुत सी | पर | और हम ने उन्हें फ़ज़ीलत दी | पाकीज़ा चीज़ें |

نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۭ بِاِمَامِهِمْ ۚ فَمَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰٓئِكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो वह लोग | उस के दाएं हाथ में | उसकी किताब | दिया गया | पस जो | उन के पेशवाओं के साथ | तमाम लोग | हम बुलाएंगे |

يَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٧١﴾ وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| इस (दुनिया) में | और जो रहा | 71 | एक धागे बराबर | और न वह ज़ुल्म किए जाएंगे | अपना आमाल नामा | पढ़ेंगे |

اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٧٢﴾ وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि तुम्हें बिचला दें | वह क़रीब था | और तहक़ीक़ | 72 | रास्ता | और बहुत भटका हुआ | अन्धा | आख़िरत में | पस वह | अन्धा |

عَنِ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ ۖ وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता वह तुम्हें बना लेते | और उस सूरत में | इस के सिवा | हम पर | ताकि तुम झूट बान्धो | तुम्हारी तरफ़ | हम ने वहि की | वह जो | से |

خَلِيْلًا ﴿٧٣﴾ وَلَوْلَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ اِلَيْهِمْ شَيْـًٔا قَلِيْلًا ﴿٧٤﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 74 | थोड़ा | कुछ | उनकी तरफ़ | अलबत्ता तुम झुकने लगते | हम तुम्हें साबित क़दम रखते | यह कि | और अगर न | 73 | दोस्त |

اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने लिए | तुम न पाते | फिर | मौत | और दुगनी | ज़िन्दगी | दुगनी | उस सूरत में हम तुम्हें चखाते |

عَلَيْنَا نَصِيْرًا ﴿٧٥﴾ وَاِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि वह तुम्हें निकाल दें | ज़मीन (मक्का) | से | कि तुम्हें फिसला ही दें | क़रीब था | और तहक़ीक़ | 75 | कोई मददगार | हम पर (हमारे मुक़ाबले में) |

مِنْهَا وَاِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٧٦﴾ سُنَّةَ مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने भेजा | जो | सुन्नत | 76 | थोड़ा | मगर | तुम्हारे पीछे | वह न ठहर पाते | और उस सूरत में | यहां से |

قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيْلًا ﴿٧٧﴾ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ ع ٨/٨

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ढलने से | नमाज़ | क़ाइम करें आप (स) | 77 | कोई तबदीली | हमारी सुन्नत में | और तुम न पाओगे | अपने रसूल (जमा) | से | आप से पहले |

الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ۭ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| है | सुब्ह का क़ुरआन | बेशक | सुब्ह (फ़ज्र) | और क़ुरआन | रात | अन्धेरा | तक | सूरज |

مَشْهُوْدًا ﴿٧٨﴾ وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि तुम्हें खड़ा करे | क़रीब | तुम्हारे लिए | नफ़िल (ज़ाइद) | इस (क़ुरआन) के साथ | सो बेदार रहें | रात | और कुछ हिस्सा | 78 | हाज़िर किया गया (फ़रिश्तों को) |

رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ﴿٧٩﴾ وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सच्चा | दाख़िल करना | मुझे दाख़िल कर | ऐ मेरे रब | और कहें | 79 | मुक़ामे महमूद | तुम्हारा रब |

وَّاَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ﴿٨٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 80 | मदद देने वाला | ग़ल्बा | अपनी तरफ़ से | मेरे लिए | और अता कर | सच्चा | निकालना | और मुझे निकाल |

وَقُـــلْ جَـآءَ الْـحَقُّ وَزَهَـقَ الْـبَاطِلُ ۚ اِنَّ الْـبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ﴿٨١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और कह दें आप (स) | आया हक | और नाबूद हो गया | बातिल | बेशक | बातिल | है ही मिटने वाला | 81 |

وَنُـنَـــزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम नाज़िल करते हैं | से | कुरआन | जो | वह शिफ़ा | और रहमत | मोमिनों के लिए | और नहीं जियादा होता |

الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ﴿٨٢﴾ وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़ालिम (जमा) | सिवाए | घाटा | 82 | और जब | हम नेमत बख़्शते हैं | पर - को | इन्सान | वह रूगर्दान हो जाता है |

وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَئُوْسًا ﴿٨٣﴾ قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और पहलू फेर लेता है | और जब | उसे पहुँचती है | बुराई | वह हो जाता | मायूस | 83 | कह दें हर एक | काम करता है | पर |

٩ ع ١
شَاكِلَتِهٖ ۗ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا ﴿٨٤﴾ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना तरीका | सो तुम्हारा परवरदिगार | ख़ूब जानता है | कि वह कौन | जियादा सहीह | रास्ता | 84 | और आप (स) से पूछते हैं |

عَـــنِ الرُّوْحِ ۗ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّيْ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से - के बारे में | रूह | कह दें | रूह | हुक्म से | मेरा रब | और नहीं | तुम्हें दिया गया | इल्म से |

اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٥﴾ وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर | थोड़ा सा | 85 | और अगर | हम चाहें | तो अलबत्ता हम ले जाएं | वह जो कि | हम ने वहि की | तुम्हारी तरफ़ |

ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَيْنَا وَكِيْلًا ﴿٨٦﴾ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۗ اِنَّ فَضْلَهٗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर तुम न पाओ | अपने वास्ते | उस के लिए | हमारे (मुक़ाबले) पर | कोई मददगार | 86 | मगर | रहमत | तुम्हारे रब से | बेशक उस का फ़ज़्ल |

كَانَ عَلَيْكَ كَبِيْرًا ﴿٨٧﴾ قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓى

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| है | तुम पर | बड़ा | 87 | कह दें | अगर | जमा हो जाएं | तमाम इन्सान | और जिन | पर |

اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | वह लाएं | मानिंद | इस कुरआन | न ला सकेंगे | इस के मानिंद | और अगरचे हो जाएं | उन के बाज़ |

لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا ﴿٨٨﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बाज़ के लिए | मददगार | 88 | और हम ने तरह तरह से बयान किया है | लोगों के लिए | में | इस कुरआन | से |

كُلِّ مَثَلٍ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٨٩﴾ وَقَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हर मिसाल | पस कुबूल न किया | अक्सर लोग | सिवाए | नाशुक्री | 89 | और वह बोले | हम हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे | तुझ पर |

حَتّٰى تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْاَرْضِ يَنْبُوْعًا ﴿٩٠﴾ اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यहां तक कि | तू रवां कर दे | हमारे लिए | ज़मीन से | कोई चश्मा | 90 | या हो जाए | तेरे लिए | एक बाग़ | से का |

نَّخِيْلٍ وَّعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِيْرًا ﴿٩١﴾ اَوْ تُسْقِطَ السَّمَآءَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| खजूर (जमा) | और अंगूर | पस तू रवां कर दे | नहरें | उस के दरमियान | बहती हुई | 91 | या | तू गिरा दे | आस्मान |

كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا اَوْ تَاْتِيَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ قَبِيْلًا ﴿٩٢﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जैसा कि तू कहा करता है | हम पर | टुकड़े | या तू ले आ | अल्लाह को | और फ़रिश्ते | रूबरू | 92 |

और कह दें हक़ आया और बातिल नाबूद हो गया, बेशक बातिल है ही मिटने वाला (नीस्त औ नाबूद होने वाला)। (81)
और हम कुरआन नाज़िल करते हैं जो मोमिनों के लिए शिफ़ा और रहमत है, और ज़ालिमों के लिए ज़ियादा नहीं होता घाटे के सिवा। (82)
और जब हम इन्सान को नेमत बख़्शते हैं वह रूगर्दान हो जाता है, और पहलू फेर लेता है, और जब उसे बुराई पहुँचती है तो वह मायूस हो जाता है। (83)
कह दें हर एक अपने तरीके पर काम करता है, सो तुम्हारा परवरदिगार ख़ूब जानता है कि कौन ज़ियादा सहीह रास्ते पर है? (84)
और वह आप (स) से रूह के मुतअल्लिक़ पूछते हैं, आप (स) कह दें रूह मेरे रब के हुक्म से है, और तुम्हें इल्म नहीं दिया गया मगर थोड़ा सा। (85)
और अगर हम चाहें तो अलबत्ता हम ले जाएं (सल्ब कर लें) जो वहि हम ने तुम्हारी तरफ़ की है, फिर तुम उस के लिए अपने वास्ते न पाओ हमारे मुक़ाबले पर कोई मददगार। (86)
मगर तुम्हारे रब की रहमत से है (कि ऐसा नहीं होता), बेशक तुम पर उस का बड़ा फ़ज़्ल है। (87)
आप (स) कह दें अगर तमाम इन्सान और जिन (इस बात) पर जमा हो जाएं कि वह इस कुरआन के मानिंद ले आएं तो वह इस के मानिंद न ला सकेंगे अगरचे उन के बाज़, बाज़ के लिए (वह एक दूसरे के) मददगार हो जाएं। (88)
और हम ने लोगों के लिए इस कुरआन में तरह तरह से बयान कर दी है हर मिसाल, पस अक्सर लोगों ने नाशुक्री के सिवा कुबूल न किया। (89)
और वह बोले कि हम तुझ पर हरगिज़ ईमान न लाएंगे, यहां तक कि तू हमारे लिए ज़मीन से कोई चश्मा रवां कर दे। (90)
या तेरे लिए खजूरों और अंगूर का एक बाग़ हो, पस तू उस के दरमियान बहती नहरें रवां कर दे। (91)
या जैसे तू कहा करता है हम पर आस्मान के टुकड़े गिरा दे, या अल्लाह को और फ़रिश्तों को रूबरू ले आ। (92)

या तेरे लिए सोने का एक घर हो, या तू आस्मान में चढ़ जाए, और हम हरगिज़ तेरे चढ़ने को न मानेंगे जब तक तू हम पर एक किताब न उतारे जिसे हम पढ़ लें, आप (स) कह दें पाक है मेरा रब, मैं सिर्फ़ एक बशर हूँ (अल्लाह का) रसूल। **(93)** और लोगों को (किसी बात ने) नहीं रोका कि वह ईमान लाएं जब उन के पास हिदायत आ गई, मगर यह कि उन्हों ने कहा क्या अल्लाह ने एक बशर को रसूल (बना कर) भेजा है? **(94)** आप (स) कह दें, अगर होते ज़मीन में फ़रिश्ते चलते फिरते, इत्मीनान से रहते तो हम ज़रूर उन पर आस्मानों से फ़रिश्ते रसूल (बना कर) उतारते। **(95)** आप (स) कह दें मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह की गवाही काफ़ी है, बेशक वह अपने बन्दों का ख़बर रखने वाला, देखने वाला है। **(96)** और जिसे अल्लाह हिदायत दे पस वही हिदायत पाने वाला है, और जिसे वह गुमराह करे पस तू उन के लिए उस के सिवा हरगिज़ कोई मददगार न पाएगा, और हम क़ियामत के दिन उन्हें उन के चहरों के बल अन्धे और गूंगे और बहरे उठाएंगे, उन का ठिकाना जहन्नम है, जब कभी जहन्नम की आग बुझने लगेगी हम उन के लिए और भड़का देंगे। **(97)** यह उन की सज़ा है क्यों कि उन्हों ने हमारी आयतों का इन्कार किया और उन्हों ने कहा क्या जब हम हड्डियाँ और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे, क्या हम अज़ सरे नौ पैदा कर के ज़रूर उठाए जाएंगे? **(98)** क्या उन्हों ने नहीं देखा कि अल्लाह जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया है इस पर क़ादिर है कि उन जैसे पैदा करे, और उस ने उन के लिए मुक़र्रर किया एक वक़्त, इस में कोई शक नहीं, ज़ालिमों ने नाशुक्री के सिवा क़ुबूल न किया। **(99)** आप कह दें अगर तुम मालिक होते मेरे रब की रहमत के ख़ज़ानों के, तो तुम ख़र्च हो जाने के डर से ज़रूर बन्द रखते, और इन्सान बहुत तंग दिल है। **(100)**

اَوْ يَكُوْنَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ اَوْ تَرْقٰى فِى السَّمَآءِ ۗ وَلَنْ نُّؤْمِنَ

या | हो | तेरे लिए | एक घर | से - का | सोना | या | तू चढ़ जाए | आस्मान में | और हम हरगिज़ न मानेंगे

لِرُقِيِّكَ حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ ۗ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّىْ هَلْ كُنْتُ

तेरे चढ़ने को | यहां तक कि | तू उतारे | हम पर | एक किताब | हम पढ़ लें जिसे | आप कह दें | पाक है | मेरा रब | नहीं हूँ मैं

ع ١٠ ٩ ١٠ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿٩٣﴾ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ

मगर-सिर्फ़ | एक बशर | रसूल | 93 | और नहीं | रोका | लोग (जमा) | कि वह ईमान लाएं | जब | उन के पास आ गई

الْهُدٰٓى اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿٩٤﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ

हिदायत | मगर | यह कि | उन्हों ने कहा | क्या भेजा | अल्लाह | एक बशर | रसूल | 94 | कह दें | अगर होते

فِى الْاَرْضِ مَلٰٓئِكَةٌ يَّمْشُوْنَ مُطْمَئِنِّيْنَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ

ज़मीन में | फ़रिश्ते | चलते फिरते | इत्मीनान से रहते | हम ज़रूर उतारते | उन पर | आस्मान से

مَلَكًا رَّسُوْلًا ﴿٩٥﴾ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًاۢ بَيْنِىْ وَبَيْنَكُمْ ۗ اِنَّهٗ كَانَ

फ़रिश्ता | रसूल | 95 | कह दें | काफ़ी है | अल्लाह की | गवाह | मेरे दरमियान | और तुम्हारे दरमियान | बेशक वह | है

بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًاۢ بَصِيْرًا ﴿٩٦﴾ وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ

अपने बन्दों का | ख़बर रखने वाला | देखने वाला | 96 | और जिसे | हिदायत दे | अल्लाह | पस वही | हिदायत पाने वाला | और जिसे

يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِهٖ ۗ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

गुमराह करे | पस तू हरगिज़ न पाएगा | उन के लिए | मददगार | उस के सिवा | और हम उठाएंगे उन्हें | क़ियामत के दिन

عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا ۗ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۗ كُلَّمَا خَبَتْ

पर बल | उन के चहरे | अन्धे | और गूंगे | और बहरे | उन का ठिकाना | जहन्नम | जब कभी | बुझने लगेगी

النصف زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا ﴿٩٧﴾ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا وَقَالُوْٓا

हम उन के लिए जियादा कर देंगे | भड़काना | 97 | यह | उन की सजा | क्यों कि वह | उन्हों ने इन्कार किया | हमारी आयतों का | और उन्हों ने कहा

ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿٩٨﴾

क्या जब | हो जाएंगे हम | हड्डियां | और रेज़ा रेज़ा | क्या हम | ज़रूर उठाए जाएंगे | पैदा कर के | अज़ सरे नौ | 98

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰٓى

क्या नहीं | उन्हों ने देखा | कि | अल्लाह | जिस ने | पैदा किया | आस्मान (जमा) | और जमीन | कादिर | पर

اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ اَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۗ فَاَبَى الظّٰلِمُوْنَ

कि वह पैदा करे | उन जैसे | उस ने मुक़र्रर किया | उन के लिए | एक वक़्त | नहीं शक | उस में | तो क़ुबूल न किया | ज़ालिम (जमा)

اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٩٩﴾ قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَآئِنَ رَحْمَةِ رَبِّىْٓ اِذًا

नाशुक्री के सिवा | 99 | आप कह दें | अगर | तुम | मालिक होते | ख़ज़ाने | रहमत | मेरा रब | जब

ع ١١ ٧ ١١ لَّاَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْاِنْفَاقِ ۗ وَكَانَ الْاِنْسَانُ قَتُوْرًا ﴿١٠٠﴾

तुम ज़रूर बन्द रखते | डर से | ख़र्च हो जाना | और है | इन्सान | तंग दिल | 100

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ فَسْـَٔلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِذْ جَآءَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के पास आया | जब | बनी इस्राईल | पस पूछ तू | खुली निशानियां | नौ (9) | मूसा (अ) | और अलबत्ता हम ने दीं |

فَقَالَ لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّيْ لَاَظُنُّكَ يٰمُوْسٰى مَسْحُوْرًا ﴿۱۰۱﴾ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता तू ने जान लिया | उस ने कहा | 101 | जादू किया गया | ऐ मूसा | तुझ पर गुमान करता हूँ | बेशक मैं | फ़िरऔन | उस को | तो कहा |

مَآ اَنْزَلَ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ بَصَآئِرَ ۚ وَاِنِّيْ لَاَظُنُّكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुझ पर गुमान करता हूँ | और बेशक मैं | बसीरत (जमा) | आस्मानों और जमीन का परवरदिगार | मगर | इस को | नहीं नाज़िल किया |

يٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا ﴿۱۰۲﴾ فَاَرَادَ اَنْ يَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْاَرْضِ فَاَغْرَقْنٰهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो हम ने उसे गर्क़ कर दिया | जमीन से | उन्हें निकाल दे | कि | पस उस ने इरादा किया | 102 | हलाक शुदा | ऐ फ़िरऔन |

وَمَنْ مَّعَهٗ جَمِيْعًا ﴿۱۰۳﴾ وَّقُلْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ لِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اسْكُنُوا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम रहो | बनी इस्राईल को | उस के बाद | और हम ने कहा | 103 | सब | उसके साथ | और जो |

الْاَرْضَ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيْفًا ﴿۱۰۴﴾ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने इसे नाजिल किया | और हक़ के साथ | 104 | जमा कर के | तुम को | हम ले आएंगे | आखिरत का वादा | आएगा | फिर जब | जमीन (मुल्क) |

وقف لازم

وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ۗ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿۱۰۵﴾ وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने जुदा जुदा किया | और क़ुरआन | 105 | और डर सुनाने वाला | मगर खुशखबरी देने वाला | हम ने आप (स) को भेजा | और नहीं | नाज़िल हुआ | और सच्चाई के साथ |

لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ عَلٰى مُكْثٍ وَّنَزَّلْنٰهُ تَنْزِيْلًا ﴿۱۰۶﴾ قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖٓ اَوْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| या | तुम इस पर ईमान लाओ | आप कह दें | 106 | आहिस्ता आहिस्ता | और हम ने उस नाज़िल किया | ठहर ठहर कर | लोग | पर | ताकि तुम उसे पढ़ो |

لَا تُؤْمِنُوْا ۗ اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖٓ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के सामने | वह पढ़ा जाता है | जब | इस से क़ब्ल | इल्म दिया गया | वह लोग जिन्हें | बेशक | तुम ईमान न लाओ |

يَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ﴿۱۰۷﴾ وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنْ كَانَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| है | बेशक | हमारा रब | पाक है | और वह कहते हैं | 107 | सिज्दा करते हुए | ठोड़ियों के बल | वह गिर पड़ते हैं |

وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ﴿۱۰۸﴾ وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन में जियादा करता है | रोते हुए | ठोड़ियों के बल | और वह गिर पड़ते हैं | 108 | जरूर पूरा हो कर रहने वाला | हमारा रब | वादा |

السجدة ۳

خُشُوْعًا ﴿۱۰۹﴾ قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ۗ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सो उसी के लिए | तुम पुकारोगे | जो कुछ भी | रहमान | या तुम पुकारो | अल्लाह | तुम पुकारो | आप कहदें | 109 | आजिज़ी |

الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के दरमियान | और ढूंडो | उस में | और न बिलकुल पस्त करो तुम | अपनी नमाज़ में | और न बुलन्द करो तुम | सब से अच्छे नाम |

سَبِيْلًا ﴿۱۱۰﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के लिए | और नहीं है | कोई औलाद | नहीं बनाई | वह जिस ने | अल्लाह के लिए | तमाम तारीफ़ें | और कह दें | 110 | रास्ता |

ع ۱۲ / ۱۱ / ۱۲

شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ﴿۱۱۱﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 111 | खूब बड़ाई | और उस की बड़ाई करो | नातवानी | से, सबब | कोई मददगार | उस का | और नहीं है | सलतनत में | कोई शरीक |

और हम ने मूसा (अ) को नौ (9) खुली निशानियां दीं, पस बनी इस्राईल से पूछ, जब वह (मूसा अ) उन के पास आए तो फ़िरऔन ने उस को कहा बेशक मैं गुमान करता हूँ तुम पर जादू किया गया है (सिहर ज़दा हो)। (101)
उस ने कहा, अलबत्ता तू जान चुका है कि इस को नाजिल नहीं किया मगर आस्मानों और जमीन के परवरदिगार ने बसीरत (समझ बूझ की बातें), और ऐ फ़िरऔन! बेशक मैं तुझे गुमान करता हूँ हलाक शुदा (हलाक हुआ चाहता है)। (102)
पस उस ने इरादा किया कि उन्हें सरजमीने (मिस्र) से निकाल दे तो हम ने उसे और जो उस के साथ थे सब को ग़र्क़ कर दिया। (103)
और हम ने कहा उस के बाद बनी इस्राईल को कि तुम उस मुल्क में रहो, फिर जब आखिरत का वादा आएगा हम तुम सब को ले आएंगे जमा कर के (समेट कर)। (104)
और हम ने इसे (कुरआन को) हक़ के साथ नाजिल किया और वह सच्चाई के साथ नाजिल हुआ, और हम ने आप (स) को नहीं भेजा मगर खुश ख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला। (105)
और कुरआन हम ने जुदा जुदा कर के (थोड़ा थोड़ा) नाजिल किया ताकि तुम लोगों पर ठहर ठहर कर पढ़ो, और हम ने उसे आहिस्ता आहिस्ता (बतद्रीज) नाज़िल किया। (106)
आप (स) कह दें तुम उस पर ईमान लाओ या न लाओ, बेशक जिन्हें इस से क़ब्ल इल्म दिया गया है, जब वह उन के सामने पढ़ा जाता है तो वह सिज्दा करते हुए ठोड़ियों के बल गिर पड़ते हैं। (107)
और वह कहते हैं हमारा रब पाक है, बेशक हमारे रब का वादा ज़रूर पूरा हो कर रहने वाला है। (108)
और वह रोते हुए ठोड़ियों के बल गिर पड़ते हैं और यह (कुरआन) उन में आजिजी और जियादा करता है। (109)
आप (स) कह दें तुम पुकारो अल्लाह (कह कर) या पुकारो रहमान (कह कर) जो कुछ भी पुकारोगे उसी के लिए हैं सब से अच्छे नाम, और न अपनी नमाज़ में (आवाज बहुत) बुलन्द करो और न उस में बिलकुल पस्त करो (बल्कि) उस के दरमियान का रास्ता ढून्डो। (110)
और आप (स) कह दें तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, वह जिस ने कोई औलाद नहीं बनाई, और सलतनत में उस का कोई शरीक नहीं, और न कोई उस का मददगार है नातवानी के सबब, और खूब उस की बड़ाई (बयान) करो। (111)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिस ने अपने बन्दे (मुहम्मद स) पर (यह) किताब नाज़िल की, और उस में कोई कजी न रखी। (1)

(बल्कि) ठीक सीधी (उतारी) ताकि डर सुनाए उस की तरफ़ से सख़्त अ़ज़ाब से, और मोमिनों को ख़ुशख़बरी दे, जो अच्छे अ़मल करते हैं कि उन के लिए अच्छा अजर है, (2)

वह उस में हमेशा रहेंगे। (3)

और वह उन लोगों को डराए जिन्हों ने कहा अल्लाह ने बेटा बना लिया है। (4)

उस का न उन्हें कोई इल्म है और न उन के बाप दादा को था, बड़ी है बात (जो) उन के मुंह से निकलती है, वह नहीं कहते मगर झूट। (5)

तो शायद आप (स) उन के पीछे अपनी जान को हलाक करने वाले हैं, अगर वह ईमान न लाए इस बात पर, ग़म के मारे। (6)

जो कुछ जमीन में है, बेशक हम ने उसे उस के लिए ज़ीनत बनाया है ताकि हम उन्हें आज़माएं कि उन में कौन है अ़मल में बेहतर। (7)

और जो कुछ इस (जमीन) पर है बेशक हम उसे (नाबूद कर के) साफ चटयल मैदान करने वाले हैं। (8)

क्या तुम ने गुमान किया? कि कहफ (ग़ार) और रकीम वाले हमारी निशानियों में से अ़जीब थे। (9)

जब उन जवानों ने गार में पनाह ली तो उन्हों ने कहा, ऐ हमारे रब! हमें अपनी तरफ़ से रहमत दे, और हमारे काम में दुरुस्ती मुहैया कर। (10)

पस हम ने पर्दा डाला उन के कानों पर, उन्हें गार में कई साल (सुलाया)। (11)

## آيَاتُهَا ١١٠ ❀ (١٨) سُوْرَةُ الْكَهْفِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٢

| रुकूआत 12 | (18) सूरतुल कहफ़<br>गार | आयात 110 |
|---|---|---|

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْٓ اَنْزَلَ عَلٰی عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ يَجْعَلْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और न रखी | किताब (कुरआन) | अपने बन्दे पर | नाज़िल की | वह जिस ने | अल्लाह के लिए | तमाम तारीफ़ें |

لَّهٗ عِوَجًا ① قَيِّمًا لِّيُنْذِرَ بَاْسًا شَدِيْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और ख़ुशख़बरी दे | उस की तरफ़ से | सख़्त | अ़ज़ाब | ताकि डर सुनाए | ठीक सीधी | 1 | कोई कजी | उस में |

الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ②

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | अच्छा अजर | कि उन के लिए | अच्छे | अ़मल करते हैं | वह जो | मोमिनों |

مَّاكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ③ وَّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह ने बना लिया है | वह जिन लोगों ने कहा | और वह डराए | 3 | हमेशा | उस में | वह रहेंगे |

وَلَدًا ④ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ كَبُرَتْ كَلِمَةً

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बात | बड़ी है | उन के पाप दादा | और न | कोई इल्म | उन को उस का | नहीं | 4 | बेटा |

تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ⑤ فَلَعَلَّكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो शायद आप | 5 | झूट | मगर | वह कहते हैं | नहीं | उन के मुँह (जमा) | से | निकलती है |

بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बात | इस | वह ईमान न लाए | अगर | उन के पीछे | पर | अपनी जान | हलाक करने वाला |

اَسَفًا ⑥ اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कौन उन में से | ताकि हम उन्हें आज़माएं | उसके लिए | ज़ीनत | ज़मीन पर | जो | हम ने बनाया | बेशक हम | 6 | ग़म के मारे |

اَحْسَنُ عَمَلًا ⑦ وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا صَعِيْدًا جُرُزًا ⑧

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | बंजर (चटयल) | साफ़ मैदान | जो उस पर | अलबत्ता करने वाले | और बेशक हम | 7 | अ़मल में | बेहतर |

اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ كَانُوْا مِنْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| से | वह थे | और रक़ीम | अस्हाबे कहफ़ (ग़ार वाले) | कि | क्या तुम ने गुमान किया? |

اٰيٰتِنَا عَجَبًا ⑨ اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَآ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ हमारे रब | तो उन्हों ने कहा | ग़ार | तरफ़-में | जवान (जमा) | पनाह ली | जब | 9 | हमारी निशानियां अ़जीब |

اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ⑩

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | दुरुस्ती | हमारे काम में | हमारे लिए | और मुहैया कर | रहमत | अपनी तरफ़ से | हमें दे |

فَضَرَبْنَا عَلٰٓى اٰذَانِهِمْ فِى الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا ⑪

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 11 | कई साल | ग़ार में | उन के कान (जमा) | पर | पस हम ने मारा (पर्दा डाला) |

ع ١ ١٢ ١٢ ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَيُّ الْحِزْبَيْنِ اَحْصٰى لِمَا لَبِثُوْٓا اَمَدًا ﴿١٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12 | मुद्दत | कितनी देर रहे | हिसाब रखा | दोनों गिरोह | कौन-किस | ताकि हम देखें | हम ने उन्हें उठाया | फिर |

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّهُمْ فِتْيَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने रब पर | वह ईमान लाए | चन्द नौजवान | बेशक वह | ठीक ठीक | उनका हाल | तुझ से | बयान करते है | हम |

وَزِدْنٰهُمْ هُدًى ﴿١٣﴾ وَّرَبَطْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो उन्हों ने कहा | वह खड़े हुए | जब | उन के दिल | पर | और हम ने गिरह लगादी | 13 | हिदायत | और हम ने और ज़ियादा दी उन्हें |

رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَاۡ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَآ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता हम ने कही | कोई माबूद | उस के सिवा | हम पुकारेंगे | हरगिज न | आस्मानों और जमीन का परवरदिगार | हमारा रब |

اِذًا شَطَطًا ﴿١٤﴾ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और माबूद | उस के सिवा | उन्हों ने बना लिए | हमारी कौम | यह है | 14 | बेजा बात | उस वक्त |

لَوْلَا يَاْتُوْنَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطٰنٍۭ بَيِّنٍ ؕ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इफ्तिरा करे | उस से जो | बड़ा ज़ालिम | पस कौन | वाज़ेह | कोई दलील | उन पर | क्यों वह नहीं लाते |

عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ﴿١٥﴾ وَاِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के सिवा | और जो वह पूजते है | तुम ने उन से किनारा कर लिया | और जब | 15 | झूट | अल्लाह | पर |

فَاْوٗٓا اِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे लिए | मुहैया करेगा | अपनी रहमत | से | तुम्हारा रब | फैला देगा तुम्हें | ग़ार | तरफ़-में | तो पनाह लो |

مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ﴿١٦﴾ وَتَرَى الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | बच कर जाती है | वह निकलती है | जब | सूरज (धूप) | और तुम देखोगे | 16 | सहूलत | तुम्हार काम | से |

كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बाएं तरफ़ | उन से कतरा जाती है | वह ढल जाती है | और जब | दाएं तरफ़ | उन का ग़ार |

وَهُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हिदायत दे अल्लाह | जो - जिसे | अल्लाह की निशानियां | से | यह | उस (ग़ार) की | खुली जगह | में | और वह |

ع ٢ ٥ ١٢ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿١٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 17 | सीधी राह दिखाने वाला | कोई रफ़ीक़ | उस के लिए | पस तू हरगिज़ न पाएगा | वह गुमराह करे | और जो-जिस | पस वह हिदायत याफ़्ता |

وَتَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ ۖ وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दाएं तरफ़ | और हम बदलवाते हैं उन्हें | सोए हुए | हालांकि वह | बेदार | और तू उन्हें समझे |

وَذَاتَ الشِّمَالِ ۖ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ ؕ لَوِ اطَّلَعْتَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अगर तू झांकता | देहलीज पर | दोनों हाथ | फैलाए हुए | और उन का कुत्ता | और बाएं तरफ़ |

عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿١٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | दहशत में | उन से | और तू भर जाता | भागता हुआ | उन से | तो पीठ फेरता | उन पर |

फिर हम ने उन्हें उठाया ताकि हम देखें दोनों गिरोहों में से किस ने खूब याद रखा है कि वह कितनी मुद्दत (ग़ार में) रहे? **(12)**

हम तुझ से ठीक ठीक उन का हाल बयान करते हैं, वह चन्द नौजवान थे, वह ईमान लाए अपने रब पर, और हम ने उन्हें हिदायत और ज़ियादा दी। **(13)**

और हम ने उन के दिलों पर गिरह लगा दी (दिल पुख्ता कर दिए) जब वह खड़े हुए तो उन्हों ने कहा हमारा रब परवरदिगार है आस्मानों का और ज़मीन का, हम उस के सिवाए हरगिज़ किसी को माबूद न पुकारेंगे (वरना) अलबत्ता उस वक़्त हम ने बेजा बात कही। **(14)**

यह है हमारी क़ौम, उस ने उस के सिवा और माबूद बना लिए, वह उन पर कोई वाजेह दलील क्यों नहीं लाते? पस कौन है उस से बड़ा ज़ालिम जो अल्लाह पर झूट इफ्तिरा करे। **(15)**

और जब तुम ने उन से और जिन को वह अल्लाह के सिवा पूजते हैं उन से किनारा कर लिया है तो ग़ार में पनाह लो, तुम्हारा रब तुम्हारे लिए अपनी रहमत फैलादेगा, और तुम्हारे काम में तुम्हारे लिए सहूलत मुहैया करेगा। **(16)**

और तुम देखोगे जब धूप निकलती है, वह उन की ग़ार से दाएं तरफ़ बच कर जाती है, और जब वह ढलती है तो उन से बाएं तरफ़ को कतरा जाती है, और वह ग़ार की खुली जगह में हैं, यह अल्लाह की निशानियों में से है, जिसे हिदायत दे अल्लाह, सो वही हिदायत याफ्ता है और जिसे वह गुमराह करे तो उस के लिए हरगिज़ कोई रफ़ीक़, सीधी राह दिखाने वाला न पाओगे। **(17)**

और तू उन्हें बेदार समझे हालांकि वह सोए हुए हैं और हम उन्हें दाएं तरफ़ और बाएं तरफ़ (करवट) बदलवाते हैं, और उन का कुत्ता दोनों हाथ (पंजे) फैलाए हुए है देहलीज़ पर, अगर तू उन पर झांकता तो उन से पीठ फेर कर भागता, और उन से दहशत में भर जाता। **(18)**

और हम ने उसी तरह उन्हें उठाया ताकि वह आपस में एक दूसरे से सवाल करें, उन में से एक कहने वाले ने कहा तुम (यहां) कितनी देर रहे? उन्हों ने कहा हम रहे एक दिन या एक दिन का कुछ हिस्सा, उन्हों ने कहा तुम्हारा रब ख़ूब जानता है तुम कितनी मुद्दत रहे हो? पस अपने में से एक को अपना यह रुपया दे कर भेजो शहर की तरफ़, पस वह देखे कौन सा खाना पाकीज़ा तर है, तो वह उस से तुम्हारे लिए ले आए और नर्मी करे और किसी को तुम्हारी ख़बर न दे बैठे। (19) बेशक अगर वह तुम्हारी ख़बर पालेंगे तो वह तुम्हें संगसार कर देंगे या तुम्हें लौटा लेंगे अपनी मिल्लत में, और उस सूरत में तुम हरगिज़ कभी फ़लाह न पाओगे। (20) और उसी तरह हम ने (लोगों को) उन पर ख़बरदार किया ताकि वह जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है, और यह कि क़ियामत में कोई शक नहीं, (याद करो) जब वह उन के मामले में आपस में झगड़ते थे, तो उन्हों ने कहा उन पर एक इमारत बनाओ, उन का रब उन्हें ख़ूब जानता है। जो लोग उन के काम पर ग़ालिब थे उन्हों ने कहा हम ज़रूर बनाएंगे उन पर एक मस्जिद (इबादतगाह)। (21) अब (कुछ) कहेंगे वह तीन हैं चौथा उन का कुत्ता है, और (कुछ) कहेंगे वह पाँच हैं और उन का छटा है उन का कुत्ता, बिन देखे फैंकते हैं (अटकल के तुक्के चला रहे हैं), कुछ कहेंगे वह सात हैं और आठवां उन का कुत्ता है, आप (स) कह दें मेरा रब ख़ूब जानता है उन की तेदाद, उन्हें सिर्फ़ थोड़े जानते हैं, पस सरसरी बहस के सिवा उन के (बारे में) न झगड़ो, और न पूछो उन के बारे में उन में से किसी से। (22)

وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ ۚ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन में से | एक कहने वाला | कहा | आपस में | ताकि वह एक दूसरे से सवाल करें | हम ने उन्हें उठाया | और उसी तरह |

كَمْ لَبِثْتُمْ ۚ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۚ قَالُوْا رَبُّكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारा रब | उन्हों ने कहा | एक दिन का कुछ हिस्सा | या | एक दिन | हम रहे | उन्हों ने कहा | तुम कितनी देर रहे |

اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ۚ فَابْعَثُوْٓا اَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖٓ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यह | अपना रुपया दे कर | अपने में से एक | पस भेजो तुम | जितनी मुद्दत तुम रहे | ख़ूब जानता है |

اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ اَيُّهَآ اَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| खाना | तो वह तुम्हारे लिए ले आए | खाना | पाकीज़ा तर | कौन सा | पस वह देखे | शहर | तरफ़ |

مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ﴿١٩﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 19 | किसी को | तुम्हारी | और वह ख़बर न दे बैठे | और नर्मी करे | उस से |

اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हें लौटा लेंगे | या | तुम्हें संगसार कर देंगे | तुम्हारी | अगर वह ख़बर पा लेंगे | बेशक वह |

فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿٢٠﴾ وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने ख़बरदार कर दिया | और उसी तरह | 20 | उस सूरत में कभी | और तुम हरगिज़ फ़लाह न पाओगे | अपनी मिल्लत | में |

عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوْٓا اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई शक नहीं | क़ियामत | और यह कि | सच्चा | अल्लाह का वादा | कि | ताकि वह जान लें | उन पर |

فِيْهَا ۚ اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बनाओ | तो उन्हों ने कहा | उन का मामला | आपस में | वह झगड़ते थे | जब | उस में |

عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ۚ رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ ۚ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो ग़ालिब थे | कहा | ख़ूब जानता है उन्हें | उनका रब | एक इमारत | उन पर |

عَلٰٓى اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ﴿٢١﴾ سَيَقُوْلُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अब वह कहेंगे | 21 | एक मस्जिद | उन पर | हम ज़रूर बनाएंगे | अपने काम | पर |

ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन का कुत्ता | उन का छटा | पाँच | और वह कहेंगे | उन का कुत्ता | उन का चौथा | तीन |

رَجْمًا بِالْغَيْبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ قُلْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कह दें आप (स) | उन का कुत्ता | और उन का आठवां | सात | और कहेंगे वह | बिन देखे | बात फैंकना |

رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِيْلٌ ۗ فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन में | पस न झगड़ो | थोड़े | मगर सिर्फ़ | उन्हें नहीं जानते है | उन की गिनती (तेदाद) | ख़ूब जानता है | मेरा रब |

اِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ۠ وَّلَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ مِّنْهُمْ اَحَدًا ﴿٢٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 22 | किसी | उन में से | उनके (बारे में) | पूछ | और न | ज़ाहिरी (सरसरी) | बहस | सिवाए |

* نصف القرآن باعتبار عدد الحروف بان التّاء بعد الياء من النّصف الاول واللام الثانية من النصف الاخير ١٢

ع ٣ ١٥

وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَاىْءٍ اِنِّىْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ﴿٢٣﴾ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हरगिज़ न कहना तुम | किसी काम को | कि मैं | करने वाला हूँ | यह | कल | 23 | मगर | यह कि | चाहे |

اللّٰهُ ۡ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | और तू याद कर | अपना रब | जब | तू भूल जाए | और कह | उम्मीद है | कि मुझे हिदायत दे |

رَبِّىْ لِاَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا ﴿٢٤﴾ وَلَبِثُوْا فِىْ كَهْفِهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरा रब | बहुत ज़ियादा क़रीब की | उस से | भलाई | 24 | और वह रहे | में | अपना ग़ार |

ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوْا ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तीन सौ (300) | साल | और उन के ऊपर | नौ (9) | 25 | आप (स) कह दें | अल्लाह | खूब जानता है | कितनी मुद्दत वह ठहरे |

لَهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اَبْصِرْ بِهٖ وَاَسْمِعْ ۭ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उसी को | ग़ैब | आस्मानों | और ज़मीन | क्या वह देखता है | और क्या वह सुनता है |

مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا يُشْرِكُ فِىْ حُكْمِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٦﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए नहीं | उस के सिवा | कोई मददगार | और वह शरीक नहीं करता | अपने हुक्म में | किसी को | 26 |

وَاتْلُ مَآ اُوْحِىَ اِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۭ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ڟ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और आप पढ़ें | जो वहि की गई | आप की तरफ़ | से | किताब | आप का रब | नहीं कोई बदलने वाला | उस की बातों को |

وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٧﴾ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम हरगिज़ न पाओगे | उस के सिवा | कोई पनाह गाह | 27 | और रोक रखो | अपना नफ़्स (अपना आप) | साथ |

الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो पुकारते हैं | अपना रब | सुबह | और शाम | वह चाहते हैं | उस का चहरा (रज़ा) |

وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| न दौड़ें (न फिरें) | तुम्हारी आँखें | उन से | तुम तलबगार हो जाओ | आराइश | ज़िन्दगी | दुनिया |

وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और कहा न मानो | जो - जिस | हम ने ग़ाफ़िल कर दिया | उस का दिल | से | अपना ज़िक्र | और पीछे पड़ गया | अपनी ख़ाहिश | और है |

اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿٢٨﴾ وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۣ فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस का काम | हद से बढ़ा हुआ | 28 | और कह दें | हक़ | से | तुम्हारा रब | पस जो | चाह | सो ईमान लाए |

وَّمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ ۙ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | चाहे | सो कुफ़्र करे (न माने) | बेशक हम | हम ने तैयार किया | ज़ालिमों के लिए | आग |

اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۭ وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| घेर लेंगी | उन्हें | उस की क़न्नातें | और अगर | वह फ़र्याद करेंगे | वह दाद रसी किए जाएंगे | पानी से |

كَالْمُهْلِ يَشْوِى الْوُجُوْهَ ۭ بِئْسَ الشَّرَابُ ۭ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٢٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पिघले हुए ताम्बे की मानिंद | वह भून डालेगा | मुँह (जमा) | बुरा है पीना (मशरूब) | और बुरी है | आराम गाह | 29 |

और हरगिज किसी काम को न कहना "कि मैं कल करने वाला हूँ" (कल कर दूँगा), (23)

मगर "यह कि अल्लाह चाहे" (इनशा अल्लाह) और जब तू भूल जाए तो अपने रब को याद कर और कहो उम्मीद है कि मेरा रब मुझे हिदायत दे उस से जियादा क़रीब की भलाई की। (24)

और वह उस ग़ार में तीन सौ (300) साल रहे, और उन के ऊपर नौ (309 साल)। (25)

आप (स) कह दें अल्लाह खूब जानता है वह कितनी मुद्दत ठहरे, उसी को है आस्मानों और जमीन का ग़ैब, क्या (खूब) वह देखता है और क्या (खूब) वह सुनता है। उन के लिए उस के सिवा कोई मददगार नहीं, वह अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं करता। (26)

और आप (स) पढ़ें जो आप (स) की तरफ आप (स) के रब की किताब वहि की गई है, उस की बातों को कोई बदलने वाला नहीं, और तुम हरगिज़ न पाओगे उस के सिवा कोई पनाह गाह। (27)

और अपने आप को उन लोगों के साथ रोके (लगाए) रखो जो अपने रब को पुकारते हैं सुबह और शाम, वह उस की रजा चाहते हैं, और तुम्हारी आँखें उन से न फिरें कि तुम दुनिया की जिन्दगी की आराइश के तलबगार हो जाओ, और उस का कहा न मानो जिस का दिल हम ने अपने ज़िक्र से ग़ाफ़िल कर दिया, और वह अपनी ख़ाहिश के पीछे पड़ गया, और उस का काम हद से बढ़ा हुआ है। (28)

और आप (स) कह दें हक़ तुम्हारे रब की तरफ से है, पस जो चाहे सो ईमान लाए और जो चाहे सो न माने, हम ने बेशक तैयार की है ज़ालिमों के लिए आग, उस की क़न्नातें उन्हें घेर लेंगी, और अगर वह फ़र्याद करेंगे तो पिघले हुए ताम्बे के मानिंद (खौलते) पानी से दाद रसी किए जाएंगे, वह (उन के) मुँह भून डालेगा, बुरा है उन का मशरूब और बुरी है (उन की) आराम गाह (जहन्नम)। (29)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अमल किए नेक, यक़ीनन हम उस का अजर जाया नहीं करेंगे जिस ने अच्छा अ़मल किया। (30)
यही लोग हैं उन के लिए हमेशगी के बाग़ात हैं, बहती हैं उन के नीचे नहरें, उस में उन्हें सोने के कंगन पहनाए जाएंगे, और वह कपड़े पहनेंगे सब्ज बारीक रेशम के और दबीज़ रेशम के, उस में वह मसहरियों पर तकिया लगाए हुए होंगे, अच्छा बदला और खूब है आराम गाह। (31)
और आप (स) उन के लिए दो आदमियों का हाल बयान करें, हम ने उन में से एक के लिए दो (2) बाग़ बनाए अंगूरों के, और हम ने उन्हें खजूरों के दरख़्तों (की बाड़) से घेर लिया, और उन के दरमियान खेती रखी। (32)
दोनों बाग अपने फल लाए, और उस (पैदावार) में कुछ कमी न करते थे, और हम ने उन दोनों के दरमियान में एक नहर जारी कर दी। (33)
और उस के लिए (बहुत) फल था तो वह अपने साथी से बोला, मैं माल में तुझ से जियादा तर हूँ, और आदमियों (जत्थे) के लिहाज से ज़ियादा बाइज़्ज़त हूँ। (34)
और वह अपने बाग़ में दाख़िल हुआ (इस हाल में कि) वह अपनी जान पर ज़ुल्म कर रहा था, वह बोला मैं गुमान नहीं करता कि यह कभी बरबाद होगा। (35)
और मैं गुमान नहीं करता कि क़ियामत बरपा होने वाली है, और अगर मैं अपने रब की तरफ़ लौटाया गया तो मैं ज़रूर इस से बेहतर लौटने की जगह पाऊँगा। (36)
उस के साथी ने उस से कहा और वह उस से बातें कर रहा था, क्या तू उस के साथ कुफ़्र करता है? जिस ने तुझे मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर उस ने तुझे बनाया (पूरा) मर्द। (37)
लेकिन मैं (कहता हूँ) वही अल्लाह मेरा रब है, और मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं करता। (38)

اِنَّ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِيۡعُ اَجۡرَ مَنۡ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो - जिस | अजर | हम ज़ाया नहीं करेंगे | यक़ीनन हम | नेक | और उन्हों ने अ़मल किए | जो लोग ईमान लाए | बेशक |

اَحۡسَنَ عَمَلًا ۚ﴿۳۰﴾ اُولٰٓـئِكَ لَهُمۡ جَنّٰتُ عَدۡنٍ تَجۡرِىۡ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बहती हैं | हमेशगी | बाग़ात | उन के लिए | यही लोग | 30 | अ़मल | अच्छा किया |

مِنۡ تَحۡتِهِمُ الۡاَنۡهٰرُ يُحَلَّوۡنَ فِيۡهَا مِنۡ اَسَاوِرَ مِنۡ ذَهَبٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सोना | से | कंगन | से | उस में | पहनाए जाएंगे | नहरें | उन के नीचे |

وَّيَلۡبَسُوۡنَ ثِيَابًا خُضۡرًا مِّنۡ سُنۡدُسٍ وَّاِسۡتَبۡرَقٍ مُّتَّكِـئِيۡنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तकिया लगाए हुए | और दबीज़ रेशम | बारीक रेशम | से - के | सब्ज़ रंग | कपड़े | और वह पहनेंगे |

فِيۡهَا عَلَى الۡاَرَآئِكِ ؕ نِعۡمَ الثَّوَابُ ؕ وَحَسُنَتۡ مُرۡتَفَقًا ﴿۳۱﴾ وَاضۡرِبۡ ع ٩ ١٦

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बयान करें आप (स) | 31 | आराम गाह | और खूब है | बदला | अच्छा | तख़्तों (मसहरियों) पर | उन में |

لَهُمۡ مَّثَلًا رَّجُلَيۡنِ جَعَلۡنَا لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَيۡنِ مِنۡ اَعۡنَابٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अंगूर (जमा) | से - के | दो बाग़ | उन में एक के लिए | हम ने बनाए | दो आदमी | मिसाल (हाल) | उन के लिए |

وَّحَفَفۡنٰهُمَا بِنَخۡلٍ وَّجَعَلۡنَا بَيۡنَهُمَا زَرۡعًا ﴿۳۲﴾ كِلۡتَا الۡجَنَّتَيۡنِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दोनों बाग़ | 32 | खेती | उन के दरमियान | और बना दी (रखी) | खजूरों के दरख़्त | और हम ने उन्हें घेर लिया |

اٰتَتۡ اُكُلَهَا وَلَمۡ تَظۡلِمۡ مِّنۡهُ شَيۡـئًا ۙ وَّفَجَّرۡنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ﴿۳۳﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 33 | एक नहर | दोनों के दरमियान | और हम ने जारी करदी | कुछ | उस से | और कम न करते थे | अपने फल | लाए |

وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗۤ اَنَا اَكۡثَرُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मैं जियादा तर | उस से बातें करते हुए | और वह | अपन साथी से | तो वह बोला | फल | उस के लिए | और था |

مِنۡكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ﴿۳۴﴾ وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह | अपना बाग़ | और वह दाख़िल हुआ | 34 | आदमियों के लिहाज से | और जियादा बाइज़्ज़त | माल में | तुझ से |

ظَالِمٌ لِّنَفۡسِهٖ ۚ قَالَ مَاۤ اَظُنُّ اَنۡ تَبِيۡدَ هٰذِهٖۤ اَبَدًا ﴿۳۵﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 35 | कभी | यह | बरबाद होगा | कि | मैं गुमान नही करता | वह बोला | अपनी जान पर | ज़ुल्म कर रहा था |

وَّمَاۤ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنۡ رُّدِدۡتُّ اِلٰى رَبِّىۡ لَاَجِدَنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मैं ज़रूर पाऊँगा | अपना रब | तरफ़ | मैं लौटाया गया | और अगर | क़ाइम (बरपा) | क़ियामत | और मैं गुमान नही करता |

خَيۡرًا مِّنۡهَا مُنۡقَلَبًا ﴿۳۶﴾ قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗۤ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से बातें कर रहा था | और वह | उस का साथी | उस से | कहा | 36 | लौटने की जगह | इस से | बेहतर |

اَكَفَرۡتَ بِالَّذِىۡ خَلَقَكَ مِنۡ تُرَابٍ ثُمَّ مِنۡ نُّطۡفَةٍ ثُمَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर | नुत्फ़े से | फिर | मिट्टी से | तुझे पैदा किया | उस के साथ जिस ने | क्या तू कुफ़्र करता है |

سَوّٰٮكَ رَجُلًا ﴿۳۷﴾ لٰـكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّىۡ وَلَاۤ اُشۡرِكُ بِرَبِّىۡۤ اَحَدًا ﴿۳۸﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 38 | किसी को | अपने रब के साथ | और मैं शरीक नहीं करना | मेरा रब | वह अल्लाह | लेकिन मैं | 37 | मर्द | तुझे पूरा बनाया |

وَلَوْلَآ إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की | मगर | नहीं कुव्वत | जो चाहे अल्लाह | तू ने कहा | अपना बाग़ | तू दाख़िल हुआ | जब | और क्यों न |

إِنْ تَرَنِ أَنَا أَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٣٩﴾ فَعَسٰى رَبِّيْٓ أَنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | मेरा रब | तो करीब | 39 | और औलाद में | माल में | अपने से | कम तर | मुझे | अगर तू मुझे देखता है |

يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मान | से | आफ़त | उस पर | और भेजे | तेरा बाग़ | से | बेहतर | मुझे दे |

فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ﴿٤٠﴾ أَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर तू हरगिज़ न कर सके | ख़ुश्क | उस का पानी | हो जाए | या | 40 | चटयल | मिट्टी का मैदान | फिर वह हो कर रह जाए |

لَهٗ طَلَبًا ﴿٤١﴾ وَأُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَأَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | अपने हाथ | वह मलने लगा | पस वह रह गया | उस के फल | और घेर लिया गया | 41 | तलब (तलाश) | उस को |

مَآ أَنْفَقَ فِيْهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ काश | और वह कहने लगा | अपनी छतरियां | पर | गिरा हुआ | और वह | उस में | जो उस ने ख़र्च किया |

لَمْ أُشْرِكْ بِرَبِّيْٓ أَحَدًا ﴿٤٢﴾ وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की मदद करती वह | कोई जमाअत | उस के लिए | और न होती | 42 | किसी को | अपने रब के साथ | मैं शरीक न करता |

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ﴿٤٣﴾ هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इख़्तियार | यहां | 43 | बदला लेने के काबिल | वह था | और न | अल्लाह के सिवा | से |

٥ع١٣ ١٤ لِلّٰهِ الْحَقِّ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ﴿٤٤﴾ وَاضْرِبْ لَهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | और बयान कर दें | 44 | बदला देने में | और बेहतर | सवाब देने में | बेहतर | वह | अल्लाह के लिए बरहक़ |

مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ أَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आस्मान | से | हम ने उस को उतारा | जैसे पानी | दुनिया की जिन्दगी | मिसाल |

فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उड़ाती है उसको | चूरा चूरा | वह फिर हो गया | ज़मीन की नबातात (सब्ज़ा) | उस से-ज़रीए | पस मिल जुल गया |

الرِّيٰحُ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿٤٥﴾ اَلْمَالُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| माल | 45 | बड़ी कुदरत रखने वाला | हर शै पर | अल्लाह | और है | हवा (जमा) |

وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बेहतर | नेकियां | और बाकी रहने वाली | दुनिया की ज़िन्दगी | ज़ीनत | और बेटे |

عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ أَمَلًا ﴿٤٦﴾ وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पहाड़ | हम चलाएंगे | और जिस दिन | 46 | आर्ज़ू में | और बेहतर | सवाब में | तेरे रब के नज़्दीक |

وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ﴿٤٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 47 | किसी को | उन से | फिर न छोड़ेंगे हम | और हम उन्हें जमा कर लेंगे | खुली हुई (साफ़ मैदान) | ज़मीन | और तू देखेगा |

और क्यों न जब तू दाख़िल हुआ अपने बाग़ में, तू ने कहा "माशा अल्लाह" (जो अल्लाह चाहे वही होता है) कोई कुव्वत नहीं मगर अल्लाह की (दी हुई) अगर तू मुझे अपने से कम तर देखता है माल में और औलाद में, (39) तो करीब है कि मेरा रब मुझे तेरे बाग़ से बेहतर दे और उस (तेरे बाग़) पर आफ़त भेजे आस्मान से, फिर वह मिट्टी का चटयल मैदान हो कर रह जाए। (40) या उस का पानी ख़ुश्क हो जाए, और तू हरगिज़ न कर सके उस को तलाश। (41) और उस के फल (अ़ज़ाब में) घेर लिए गए और उस में जो उस ने ख़र्च किया था, वह उस पर अपना हाथ मलता रह गया और वह (बाग़) अपनी छतरियों पर गिरा हुआ था और वह कहने लगा ऐ काश, मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक न करता। (42) और उस के लिए कोई जमाअत न हुई कि अल्लाह के सिवा उस की मदद करती, और वह बदला लेने के काबिल न था। (43) यहां इख़्तियार अल्लाह बरहक़ के लिए है, वही बेहतर है सवाब देने में, और बेहतर है बदला देने में। (44) और आप (स) उन के लिए बयान करें दुनिया की मिसाल (वह ऐसे है) जैसे हम ने आस्मान से पानी उतारा, फिर उस के ज़रीऐ ज़मीन का सब्ज़ा मिल जुल गया (ख़ूब घना उगा) फिर वह चूरा चूरा हो गया कि उस को हवाएं उड़ाती हैं, और अल्लाह हर शै पर बड़ी कुदरत रखने वाला है। (45) माल और बेटे दुनिया की जिन्दगी की ज़ीनत हैं, और बाकी रहने वाली नेकियां तेरे रब के नज़्दीक बेहतर हैं सवाब में, और बेहतर हैं आर्ज़ू में। (46) और जिस दिन हम पहाड़ चलाएंगे, और तू ज़मीन को साफ़ मैदान देखेगा, और हम उन्हें जमा कर लेंगे, फिर हम उन में से किसी को न छोड़ेंगे। (47)

और वह तेरे रब के सामने सफ़ बस्ता पेश किए जाएंगे, (आख़िर) अलबत्ता तुम हमारे सामने आ गए जैसे हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था, जबकि तुम समझते थे कि हम तुम्हारे लिए हरगिज़ कोई वक्ते मौऊद न ठहराएंगे। (48)
और रखी जाएगी किताब, जो उस में (लिखा होगा) सो तुम मुज्रिमों को उस से डरते हुए देखोगे, और वह कहेंगे हाए हमारी शामते आमाल! कैसी है यह तहरीर! यह नहीं छोड़ती छोटी सी बात और न बड़ी बात मगर उसे क़लम बन्द किए हुए है, और वह पा लेंगे जो कुछ उन्हों ने किया (अपने) सामने, और तुम्हारा रब किसी पर जुल्म नहीं करेगा। (49)
और (याद करो) जब हम ने फ़रिश्तों से कहा तुम सिज्दा करो आदम (अ) को तो (उन) सब ने सिज्दा किया सिवाए इब्लीस के, वह (क़ौमे) जिन से था, और वह अपने रब के हुक्म से बाहर निकल गया, सो क्या तुम उस को और उस की औलाद को मेरे सिवाए दोस्त बनाते हो? और वह तुम्हारे दुश्मन हैं, बुरा है ज़ालिमों के लिए बदल। (50)
मैं ने उन्हें न आस्मानों और ज़मीन के पैदा करने (के वक्त) हाजिर किया (बुलाया) और न खुद उन के पैदा करते (वक़्त), और मैं गुमराह करने वालों को (दस्त ओ) बाज़ू बनाने वाला नहीं हूं। (51)
और जिस दिन वह (अल्लाह) फ़रमाएगा कि बुलाओ मेरे शरीकों को जिन्हें तुम ने (माबूद) गुमान किया था, पस वह उन्हें पुकारेंगे तो वह जवाब न देंगे, और हम उन के दरमियान हलाकत की जगह बना देंगे। (52)
और देखेंगे मुज्रिम आग, तो वह समझ जाएंगे कि वह उस में गिरने वाले हैं, और वह उस से (बच निकलने की) कोई राह न पाएंगे। (53)
और हम ने अलबत्ता इस क़ुरआन में लोगों के लिए फेर फेर कर हर क़िस्म की मिसालें बयान की हैं, और इन्सान हर शै से ज़ियादा झगड़ालू है। (54)

وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ؕ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने तुम्हें पैदा किया था | जैसे | अलबत्ता तुम हमारे सामने आ गए | सफ़ बस्ता | तेरा रब | पर - सामने | और वह पेश किए जाएंगे |

اَوَّلَ مَرَّةٍ ۫ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾ وَوُضِعَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और रखी जाएगी | 48 | कोई वक्ते मौऊद | तुम्हारे लिए | कि हम ठहराएंगे | हरगिज़ न | तुम समझते थे | बल्कि (जबकि) | पहली बार |

الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उस में | उस से जो | डरते हुए | मुज्रिम (जमा) | सो तुम देखोगे | किताब |

وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| छोटी बात | यह नही छोड़ती | यह किताब (तहरीर) | कैसी है | हाए हमारी शामते आमाल | और वह कहेंगे |

وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّاۤ اَحْصٰىهَا ۚ وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सामने | जो उन्हों ने किया | और वह पालेंगे | वह उसे घेरे (क़लम बन्द किए) हुए | मगर | बड़ी बात | और न |

وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ﴿٤٩﴾ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا ع ٦ ١٨

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम सिज्दा करो | फ़रिश्तों से | हम ने कहा | और जब | 49 | किसी पर | तुम्हारा रब | और जुल्म नही करेगा |

لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | वह (बाहर) निकल गया | जिन | से | वह था | इब्लीस | सिवाए | तो उन्हों ने सिज्दा किया | आदम (अ) को |

اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗۤ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِىْ وَهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और वह | मेरे सिवाए | दोस्त (जमा) | और उस की औलाद | सो क्या तुम उस को बनाते हो | अपने रब का हुक्म |

لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ﴿٥٠﴾ مَاۤ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पैदा करना | हाज़िर किया मैं ने उन्हें | नही | 50 | बदल | ज़ालिमों के लिए | बुरा है | दुश्मन | तुम्हारे लिए |

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۪ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बनाने वाला | और मैं नहीं | उन की जानें (खुद वह) | और न पैदा करना | और जमीन | आस्मानों |

الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ﴿٥١﴾ وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِىَ الَّذِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह जिन्हें | मेरे शरीक (जमा) | बुलाओ | वह फ़रमाएगा | और जिस दिन | 51 | बाज़ू | गुमराह करने वाले |

زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन के दरमियान | और हम बना देंगे | उन्हें | तो वह जवाब न देंगे | पस वह उन्हें पुकारेंगे | तुम ने गुमान किया |

مَّوْبِقًا ﴿٥٢﴾ وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गिरने वाले है उस में | कि वह | तो वह समझ जाएंगे | आग | मुज्रिम (जमा) | और देखेंगे | 52 | हलाकत की जगह |

وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿٥٣﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِىْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ ع ٧ ١٩

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुरआन | इस | में | हम ने फेर फेर कर बयान किया | और अलबत्ता | 53 | कोई राह | उस से | और न वह पाएंगे |

لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَىْءٍ جَدَلًا ﴿٥٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 54 | झगड़ालू | हर शै से जियादा | इन्सान | और है | हर (तरह की) मिसालें | से | लोगों के लिए |

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह बख़्शिश मांगें | हिदायत | जब आ गई उन के पास | वह ईमान लाएं | कि | लोग | रोका | और नही |

رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आए उन के पास | या | पहलों की | रविश (मामला) | उन के पास आए | यह कि | सिवाए | अपना रब |

الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٥٥﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| खुशख़बरी देने वाले | मगर | रसूल (जमा) | और हम नहीं भेजते | 55 | सामने का | अज़ाब |

وَمُنْذِرِيْنَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ताकि वह फुसला दें | नाहक (की बातों से) | कुफ्र किया (काफिर) | वह जिन्हों ने | और झगड़ा करते हैं | और डर सुनाने वाले |

بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَمَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ﴿٥٦﴾ وَمَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और कौन | 56 | मज़ाक़ | वह डराए गए | और जो जिस | मेरी आयात | और उन्हों ने बनाया | हक़ | उस से |

اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो आगे भेजा | और वह भूल गया | उस से | तो उस ने मुंह फेर लिया | उस का रब | आयतों से | समझाया गया | उस से जो | बड़ा ज़ालिम |

يَدٰهُ ۭ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰي قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और में | वह उसे समझ सकें | कि | पर्दे | उन के दिलों | पर | बेशक हम ने डाल दिए | उस के दोनों हाथ |

اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۭ وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पाएं हिदायत | तो वह हरगिज न | हिदायत | तरफ़ | तुम उन्हें बुलाओ | और अगर | गिरानी | उन के कान |

اِذًا اَبَدًا ﴿٥٧﴾ وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ۭ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस पर जो | उन का मुआखज़ा करे | अगर | रहमत वाला | बख़्शने वाला | और तुम्हारा रब | 57 | कभी भी | जब भी |

كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ۭ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह हरगिज़ न पाएंगे | उन के लिए एक वक्त मुक़र्रर | बल्कि | अज़ाब | उन के लिए | तो वह जल्द भेज दे | उन्हों ने किया |

مِنْ دُوْنِهٖ مَوْىِٕلًا ﴿٥٨﴾ وَتِلْكَ الْقُرٰٓى اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَعَلْنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम ने मुक़र्रर किया | उन्हों ने ज़ुल्म किया | जब | हम ने उन्हें हलाक कर दिया | बस्तियां | और यह (उन) | 58 | पनाह की जगह | उस से वरे |

ع ۸ ٦ ۲۰ لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا ﴿٥٩﴾ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰي لِفَتٰىهُ لَآ اَبْرَحُ حَتّٰٓي

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यहां तक कि | मैं न हटूंगा | अपने जवान (शागिर्द) से | मूसा (अ) | कहा | और जब | 59 | एक मुक़र्ररा वक़्त | उन की तबाही के लिए |

اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِيَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मिलने का मुक़ाम | वह दोनों पहुंचे | फिर जब | 60 | मुद्दते दराज़ | या चलता रहूंगा | दो दर्याओं के | मिलने की जगह | मैं पहुंच जाऊं |

بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾ فَلَمَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर जब | 61 | सुरंग की तरह | दर्या में | अपना रास्ता | तो उस ने बना लिया | अपनी मछली | वह भूल गए | दोनों के दरमियान |

جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَآءَنَا ۡ لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 62 | तक्लीफ़ | इस | अपना सफ़र | से | अलबत्ता हम ने पाई | हमारा सुब्ह का खाना | हमारे पास लाओ | अपने शागिर्द को | उस ने कहा | वह आगे चले |

और लोगों को (किसी बात ने) नहीं रोका कि वह ईमान ले आएं जब कि उन के पास हिदायत आ गई और वह अपने रब से बख़्शिश मांगें, सिवाए इस के कि उन के पास पहलों की रविश आए या उन के पास आए सामने का अज़ाब। (55)

और हम रसूल नहीं भेजते मगर खुशख़बरी देने वाले और डर सुनाने वाले, और झगड़ा करते हैं काफ़िर नाहक़ बातों के साथ, ताकि वह उस से हक़ (बात) को फुसला दें, और उन्हों ने बनाया मेरी आयतों को और जिस से वह डराए गए एक मज़ाक़। (56)

और उस से बड़ा ज़ालिम कौन जिसे उस के रब की आयतों से समझाया गया तो उस ने उस से मुंह फेर लिया, और भूल गया जो उस के दोनों हाथों ने (उस ने) आगे भेजा है, बेशक हम ने उन के दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वह इस कुरआन को समझ सकें और उन के कानों में गिरानी है (बहरे हैं) और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो जब भी वह हरगिज़ हिदायत न पाएंगे कभी भी। (57)

और तुम्हारा रब बख़्शने वाला, रहमत वाला है। अगर उन के किए पर वह उन का मुआख़ज़ा करे तो वह जल्द भेज दे उन के लिए अज़ाब, बल्कि उन के लिए एक वक्त मुक़र्रर है और वह हरगिज उस के वरे पनाह की जगह न पाएंगे। (58)

और उन बस्तियों को जब उन्हों ने ज़ुल्म किया हम ने हलाक कर दिया, और हम ने उन की तबाही के लिए एक वक़्त मुक़र्रर किया। (59)

और (याद करो) जब मूसा (अ) ने अपने शागिर्द से कहा मैं हटूंगा नहीं (चलता रहूंगा) यहां तक कि पहुंच जाऊं दो (2) दर्याओं के मिलने की जगह (संगम पर) या मैं मुद्दते दराज़ चलता रहूंगा। (60)

फिर जब वह दोनों (दर्याओं) के संगम पर पहुंचे तो वह अपनी मछली भूल गए तो उस (मछली) ने अपना रास्ता बना लिया दर्या में सुरंग की तरह। (61)

फिर जब वह आगे चले तो मूसा (अ) ने अपने शागिर्द को कहा हमारे लिए सुब्ह का खाना लाओ, अलबत्ता हम ने अपने इस सफ़र से बहुत (तक्लीफ़) थकान पाई है। (62)

उस ने कहा क्या आप ने देखा? जब हम पत्थर के पास ठहरे तो बेशक मैं मछली भूल गया और मुझे नहीं भुलाया मगर शैतान ने, कि मैं (आप से) उस का ज़िक्र करूँ, और उस ने बना लिया अपना रास्ता दर्या में अ़जीब तरह से। (63)
मूसा (अ) ने कहा यही है (वह मुक़ाम) जो हम चाहते थे, फिर वह दोनों लौटे अपने निशानाते क़दम पर देखते हुए। (64)
फिर उन्हों ने हमारे बन्दों में से एक बन्दा (ख़िज़्र अ) को पाया, उसे हम ने अपने पास से रहमत दी, और हम ने उसे अपने पास से इल्म दिया। (65)
मूसा (अ) ने उस से कहा क्या मैं तुम्हारे साथ चलूँ? इस (बात) पर कि तुम मुझे सिखा दो इस भली राह में से जो तुम्हें सिखाई गई है। (66)
उस (ख़िज़्र अ) ने कहा बेशक तू मेरे साथ हरगिज़ सब्र न कर सकेगा। (67)
और तू उस पर कैसे सब्र कर सकेगा जिस का तू ने वाक़िफ़ियत से अहाता नहीं किया (जिस से तू वाक़िफ़ नहीं)। (68)
मूसा (अ) ने कहा अगर अल्लाह ने चाहा तो तुम जल्द मुझे पाओगे सब्र करने वाला, और मैं तुम्हारी किसी बात की नाफ़रमानी न करूँगा। (69)
ख़िज़्र (अ) ने कहा पस अगर तुझे मेरे साथ चलना है तो मुझ से न पूछना किसी चीज़ से मुतअ़ल्लिक़, यहां तक कि मैं ख़ुद तुझ से ज़िक्र करूँ। (70)
फिर वह दोनों चले यहां तक कि जब वह दोनों कश्ती में सवार हुए, उस (ख़िज़्र अ) ने उस में सुराख़ कर दिया, मूसा (अ) ने कहा तुम ने उस में सुराख़ कर दिया ताकि तुम उस के सवारों को ग़र्क़ कर दो, अलबत्ता तुम ने एक भारी (ख़तरे की) बात की है। (71)
ख़िज़्र (अ) ने कहा क्या मैं ने नहीं कहा था? कि तू मेरे साथ हरगिज़ सब्र न कर सकेगा। (72)
मूसा (अ) ने कहा आप उस पर मेरा मुआख़ज़ा न करें जो मैं भूल गया और मेरे मामले में मुझ पर मुश्किल न डालें। (73)
फिर वह दोनों चले यहां तक कि वह एक लड़के को मिले तो उस (ख़िज़्र अ) ने उसे क़त्ल कर दिया। मूसा (अ) ने कहा क्या तुम ने एक पाक जान को जान (के बदले के) बग़ैर क़त्ल कर दिया, अलबत्ता तुम ने एक नापसन्दीदा काम किया। (74)

قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّىْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मछली | भूल गया | तो बेशक मैं | पत्थर | तरफ़-पास | हम ठहरे | जब | क्या आप ने देखा? | उस ने कहा |

وَمَآ اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِى الْبَحْرِ ۖ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दर्या में | अपना रास्ता | और उस ने बना लिया | मैं उस का ज़िक्र करूँ | कि | शैतान | मगर | भुलाया मुझे | और नहीं |

عَجَبًا ﴿٦٣﴾ قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने निशानाते (क़दम) | पर | फिर वह दोनों लौटे | हम चाहते थे | जो | यह | उस ने कहा | 63 | अ़जीब तरह |

قَصَصًا ﴿٦٤﴾ فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने पास | से | रहमत | हम ने दी उसे | हमारे बन्दे | से | एक बन्दा | फिर दोनों ने पाया | 64 | देखते हुए |

وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾ قَالَ لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | मैं तुम्हारे साथ चलूँ | क्या | मूसा (अ) | उस को | कहा | 65 | इल्म | अपने पास से | और हम ने इल्म दिया उसे |

اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾ قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हरगिज़ न कर सकेगा तू | बेशक तू | उस ने कहा | 66 | भली राह | तुम्हें सिखाया गया है | उस से जो | तुम सिखा दो मुझे | कि |

مَعِىَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿٦٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 68 | वाक़िफ़यत से | तू ने अहाता नहीं किया उसका | जो | उस पर | तू सब्र करेगा | और कैसे | 67 | सब्र | मेरे साथ |

قَالَ سَتَجِدُنِىْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّلَآ اَعْصِىْ لَكَ اَمْرًا ﴿٦٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 69 | किसी बात | तुम्हारे | मैं नाफ़रमानी करूँगा | और न | सब्र करने वाला | अगर चाहा अल्लाह ने | तुम मुझ पाओगे जल्द | उस ने कहा |

قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِىْ فَلَا تَسْـَٔلْنِىْ عَنْ شَىْءٍ حَتّٰٓى اُحْدِثَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मैं बयान करूँ | यहां तक कि | किसी चीज़ | से - के बारे में | तो मुझ से न पूछना | तुझे मेरे साथ चलना है | पस अगर | उस ने कहा |

لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٧٠﴾ فَانْطَلَقَا ۥ حَتّٰٓى اِذَا رَكِبَا فِى السَّفِيْنَةِ خَرَقَهَا ۖ ع ٩ ١١ ٢١

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने सुराख़ कर दिया उस में | कश्ती में | वह दोनों सवार हुए | जब | यहां तक कि | फिर वह दोनों चले | 70 | ज़िक्र | उस का | तुझ से |

قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا اِمْرًا ﴿٧١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 71 | भारी | एक बात | अलबत्ता तू लाया (तू ने की) | उस के सवार | कि तुम ग़र्क़ कर दो | तुम ने उस में सुराख़ कर दिया | उस ने कहा |

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِىَ صَبْرًا ﴿٧٢﴾ قَالَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने कहा | 72 | सब्र | मेरे साथ | हरगिज न कर सकेगा तू | बेशक तू | क्या मैं ने नहीं कहा | (ख़िज़्र अ) ने कहा |

لَا تُؤَاخِذْنِىْ بِمَا نَسِيْتُ وَلَا تُرْهِقْنِىْ مِنْ اَمْرِىْ عُسْرًا ﴿٧٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 73 | मुश्किल | मेरा मामला | से | और मुझ पर न डालें | मैं भूल गया | उस पर जो | आप मेरा मुआख़ज़ा न करें |

فَانْطَلَقَا ۥ حَتّٰٓى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या तुम ने क़त्ल कर दिया | उस ने कहा | तो उस ने उस को क़त्ल कर दिया | एक लड़का | वह मिले | जब | यहां तक कि | फिर वह दोनों चले |

نَفْسًا زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ۗ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا نُّكْرًا ﴿٧٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 74 | नापसन्दीदा | एक काम | तुम आए (तुम ने किया) | अलबत्ता | जान | बग़ैर | पाक | एक जान |

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 75 | सब्र | मेरे साथ | हरगिज़ न कर सकेगा | बेशक तू | तुझ से | मैं ने कहा | क्या नहीं | उस ने कहा |

قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍۢ بَعْدَهَا فَلَا تُصٰحِبْنِيْ ۚ قَدْ بَلَغْتَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता तुम पहुँच गए | तो मुझे अपने साथ न रखना | इस के बाद | किसी चीज़ से | मैं तुम से पूछूँ | उस (मूसा अ) ने कहा अगर |

مِنْ لَّدُنِّيْ عُذْرًا ﴿٧٦﴾ فَانْطَلَقَا ٙ حَتّٰٓى اِذَآ اَتَيَآ اَهْلَ قَرْيَةِ اِۨسْتَطْعَمَآ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दोनों ने खाना मांगा | एक गावँ वालों के पास | जब वह दोनों आए | यहां तक कि | फिर वह दोनों चले | 76 | उज़्र को | मेरी तरफ़ से |

اَهْلَهَا فَاَبَوْا اَنْ يُّضَيِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह चाहती थी | उस में (वहां) एक दीवार | फिर उन्हों ने पाई (देखी) | वह उन की ज़ियाफ़त करें | तो उन्हों ने इन्कार कर दिया कि | उस के बाशिन्दे |

اَنْ يَّنْقَضَّ فَاَقَامَهٗ ۙ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ اَجْرًا ﴿٧٧﴾ قَالَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने कहा | 77 | उज्रत | उस पर | ले लते | अगर तुम चाहते | उस ने कहा | तो उस ने उसे सीधा कर दिया | कि वह गिर पड़े |

هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِيْ وَبَيْنِكَ ۚ سَاُنَبِّئُكَ بِتَاْوِيْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَيْهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस पर | तुम न कर सके | जो | ताबीर | अब तुम्हें बताए देता हूँ | और तुम्हारे दरमियान | मेरे दरमियान | जुदाई | यह |

صَبْرًا ﴿٧٨﴾ اَمَّا السَّفِيْنَةُ فَكَانَتْ لِمَسٰكِيْنَ يَعْمَلُوْنَ فِي الْبَحْرِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दर्या में | वह काम करते थे | ग़रीब लोगों की | सो वह थी | किश्ती | रही | 78 | सब्र |

فَاَرَدْتُّ اَنْ اَعِيْبَهَا وَكَانَ وَرَآءَهُمْ مَّلِكٌ يَّاْخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हर किश्ती | वह पकड़ लेता | एक बादशाह | उन के आगे | और था | मैं उसे ऐबदार कर दूँ | कि | सो मैं ने चाहा |

غَصْبًا ﴿٧٩﴾ وَاَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِيْنَآ اَنْ يُّرْهِقَهُمَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि उन्हें फंसादे | सो हमें अन्देशा हुआ | दोनों मोमिन | उस के माँ बाप | तो थे | लड़का | और रहा | 79 | जबरदस्ती |

طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ﴿٨٠﴾ فَاَرَدْنَآ اَنْ يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पाकीजगी | उस से | बेहतर | उन का रब | कि बदला दे उन दोनों को | पस हम ने इरादा किया | 80 | और कुफ़्र में | सरकशी में |

وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ﴿٨١﴾ وَاَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दो यतीम | दो (2) बच्चों की | सो वह थी | दीवार | और रही | 81 | शफ़क़त | और ज़ियादा क़रीब |

فِي الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सो चाहा कि | नेक | उन का बाप | और था | उन दोनों के लिए | ख़ज़ाना | उस के नीचे | और था | शहर में - के |

رَبُّكَ اَنْ يَّبْلُغَآ اَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| से तुम्हारा रब | मेहरबानी | अपना ख़ज़ाना | और वह दोनों निकालें | अपनी जवानी | कि वह पहुँचें | तुम्हारा रब |

ع ١٢ ١٠ ١ وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِيْ ۭ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿٨٢﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 82 | सब्र | उस पर | तुम न कर सके | जो | ताबीर (हक़ीक़त) | यह | अपना हुक्म (मरज़ी) | से | और यह मैं ने नहीं किया |

وَيَسْئَلُوْنَكَ عَنْ ذِي الْقَرْنَيْنِ ۭ قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ﴿٨٣﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 83 | कुछ हाल | उस से का | तुम पर सामने | अभी पढ़ता हूँ | फ़रमा दें | ज़ुलक़रनैन | से (बाबत) | और आप (स) पूछते हैं |

ख़िज़्र (अ) ने कहा कि क्या मैं ने तुझ से नहीं कहा था कि तू मेरे साथ हरगिज़ सब्र न कर सकेगा? (75)
मूसा (अ) ने कहा अगर इस के बाद मैं तुम से किसी चीज़ से (मुतअ़ल्लिक़) पूछूँ तो मुझे अपने साथ न रखना, अलबत्ता तुम मेरी तरफ़ से पहुँच गए हो (हदे) उज़्र को। (76)
फ़िर वह दोनों चले यहां तक कि एक गावँ वालों के पास आए, उन्हों ने उस के बाशिन्दों से खाना मांगा तो उन्हों ने इन्कार कर दिया उन की ज़ियाफ़त करने से, फिर उन्हों ने वहां एक दीवार देखी जो गिरा चाहती थी तो ख़िज़्र (अ) ने उसे सीधा कर दिया, मूसा (अ) ने कहा अगर तम चाहते तो उस पर तम उज्रत ले लते। (77)
उस ने कहा यह मेरे और तुम्हारे दरमियान जुदाई है। अब मैं तुम्हें ताबीर (हक़ीक़ते हाल) बताए देता हूँ जिस पर तुम सब्र न कर सके। (78)
रही किश्ती। सो वह चन्द ग़रीब लोगों की थी जो दर्या में काम (मेहनत मजदूरी) करते थे और उन के आगे एक बादशाह था जो हर (अच्छी) किश्ती को ज़बरदस्ती पकड़ लेता (छीन लेता) था, सो मैं ने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूँ। (79)
और रहा लड़का! तो उस के माँ बाप दोनों मोमिन थे, सो हमें अन्देशा हुआ कि वह उन्हें सरकशी और कुफ़्र में न फंसादे। (80)
बस हम ने इरादा किया कि उन दोनों को उन का रब बदला दे (जो पाकीजगी) में उस से बेहतर और शफ़क़त में बहुत ज़ियादा क़रीब हो। (81)
और रही दीवार! सो वह थी शहर के दो (2) यतीम बच्चों की, और उस के नीचे उन दोनों के लिए खजाना है, और उन का बाप नेक था, सो तुम्हारे रब ने चाहा कि वह अपनी जवानी को पहुँचें तो वह दोनों तुम्हारे रब की रहमत से अपना ख़ज़ाना निकालें, और यह मैं ने नहीं किया अपनी मरजी से, यह है (वह) हक़ीक़त। जिस पर तुम सब्र न कर सके। (82)
और वह आप (स) से पूछते हैं ज़ुलक़रनैन की बाबत, फ़रमा दें, मैं तुम्हारे सामने अभी उस का कुछ हाल पढ़ता (बयान करता हूँ)। (83)

बेशक हम ने उस को ज़मीन में कुदरत दी और हम ने उसे हर शै का सामान दिया था। (84)
सो वह एक सामान के पीछे पड़ा, (85)
यहां तक कि वह सूरज के गुरूब होने के मुकाम पर पहुँचा, उस ने उसे पाया (देखा) कि वह दलदल की नदी में डूब रहा है, और उस के नज़्दीक उस ने एक क़ौम पाई, हम ने कहा ऐ ज़ुलक़रनैन! (तुझे इख़्तियार है) चाहे तू सज़ा दे, चाहे उन से कोई भलाई इख़्तियार करे। (86)
उस ने कहा, अच्छा! जिस ने ज़ुल्म किया तो जल्द हम उसे सज़ा देंगे, फिर वह अपने रब की तरफ़ लौटाया जाएगा तो वह उसे सख़्त अज़ाब देगा। (87)
और अच्छा! जो ईमान लाया और उस ने अ़मल किए नेक, तो उस के लिए बदला है भलाई, और अनक़रीब हम उस के लिए अपने काम में आसानी (की बात) कहेंगे। (88)
फिर वह एक (और) सामान के पीछे पड़ा। (89)
यहां तक कि जब वह सूरज के तुलूअ होने के मुकाम पर पहुँचा तो उस को पाया (देखा) कि वह एक ऐसी क़ौम पर तुलूअ हो रहा है जिन के लिए हम ने उस (सूरज) के आगे नहीं बनाया था कोई पर्दा (ओट)। (90)
यह है (हक़ीक़त) और जो कुछ उस के पास था उसकी ख़बर हमारे अहाता-ए-(इल्म) में है। (91)
फिर वह (एक और) सामान के पीछे पड़ा। (92)
याहं तक कि जब वह पहुँचा दो पहाड़ों के दरमियान, उस ने उन दोनों के बीच में एक क़ौम पाई, वह लगते न थे कि कोई बात समझें। (93)
अन्हों ने कहा ऐ ज़ुलक़रनैन! बेशक याजूज और माजूज ज़मीन में फ़सादी हैं तो क्या हम तेरे लिए (जमा) कर दें कुछ माल? ता कि हमारे और उन के दरमियान एक दीवार बना दे। (94)
उस ने कहा जिस पर मुझे मेरे रब ने क़ुदरत दी वह बेहतर है, पस तुम मेरी मदद करो कुव्वते (बाज़ू) से, मैं तुम्हारे और उन के दरमियान एक आड़ बना दूँगा। (95)
मझे लोहे के तख़्ते ला दो, यहां तक कि जब उस ने बराबर कर दिया दोनों पहाड़ों के दरमियान, उस ने कहा (अब) धौंको, यहां तक कि जब (धौंक कर) उसे आग कर दिया, उस ने कहा मेरे पास लाओ कि मैं उस पर पिघला हुआ तांबा डालूँ, (96)

إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾ فَأَتْبَعَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक हम ने कुदरत दी | उस को | ज़मीन में | और हम ने उसे दिया | से | हर शै | सामान | 84 | सो वह पीछे पड़ा |

سَبَبًا ﴿٨٥﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِي عَيْنٍ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक सामान | 85 | यहां तक कि | जब वह पहुँचा | गुरूब होने का मुकाम | सूरज | उस ने पाया उसे | डूब रहा है | में | चश्मा-नदी |

حَمِئَةٍ وَوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ۗ قُلْنَا يَا ذَا الْقَرْنَيْنِ إِمَّا أَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दलदल | और उस ने पाया | उस के नज़्दीक | एक क़ौम | हम ने कहा | ऐ ज़ुलक़रनैन | या-चाहे | यह कि |

تُعَذِّبَ وَإِمَّا أَنْ تَتَّخِذَ فِيهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾ قَالَ أَمَّا مَنْ ظَلَمَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तू सज़ा दे | और या चाहे | यह कि | तू इख़्तियार करे | उन में से | कोई भलाई | 86 | उस ने कहा | अच्छा | जिस ने ज़ुल्म किया |

فَسَوْفَ نُعَذِّبُهُ ثُمَّ يُرَدُّ إِلَىٰ رَبِّهِ فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا نُكْرًا ﴿٨٧﴾ وَأَمَّا مَنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो जल्द | हम उसे सज़ा देंगे | फिर | वह लौटाया जाएगा | अपने रब की तरफ़ | तो वह उसे अज़ाब देगा | अज़ाब | बड़ा-सख़्त | 87 | और अच्छा | जो |

آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُ جَزَاءً الْحُسْنَىٰ ۖ وَسَنَقُولُ لَهُ مِنْ أَمْرِنَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान लाया | और उस ने अ़मल किया | नेक | तो उस के लिए | बदला | भलाई | और अनक़रीब हम कहेंगे | उस के लिए | मुतअल्लिक़ | अपना काम |

يُسْرًا ﴿٨٨﴾ ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आसानी | 88 | फिर | वह पीछे पड़ा | एक सामान | 89 | यहां तक कि | जब वह पहुँचा | तुलूअ होने का मुकाम | सूरज | उस ने उस को पाया | तुलूअ हो रहा है |

عَلَىٰ قَوْمٍ لَمْ نَجْعَلْ لَهُمْ مِنْ دُونِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾ كَذَٰلِكَ ۖ وَقَدْ أَحَطْنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक क़ौम पर | हम ने नहीं बनाया | उन के लिए | उस के आगे | कोई पर्दा | 90 | यही | और हमारे अहाते में है |

بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾ ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो कुछ उस के पास | अज रूए ख़बर | 91 | फिर | वह पीछे पड़ा | एक सामान | 92 | यहां तक कि | जब वह पहुँचा | दरमियान | दो दीवारें (पहाड़) |

وَجَدَ مِنْ دُونِهِمَا قَوْمًا ۙ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾ قَالُوا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने पाया | दोनों के बीच | एक क़ौम | नहीं लगते थे | वह समझें | कोई बात | 93 | अन्हों ने कहा |

يَا ذَا الْقَرْنَيْنِ إِنَّ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ فَهَلْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ ज़ुलक़रनैन | बेशक | याजूज | और माजूज | फ़साद करने वाले (फ़सादी) | ज़मीन में | तो क्या |

نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿٩٤﴾ قَالَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम कर दें | तेरे लिए | कुछ माल | पर ताकि | कि तू बनादे | हमारे दरमियान | और उन के दरमियान | एक दीवार | 94 | उस ने कहा |

مَا مَكَّنِّي فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ فَأَعِينُونِي بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिस पर कुदरत दी मुझे | उस में | मेरा रब | बेहतर | पस तुम मेरी मदद करो | कुव्वत से | मैं बना दूँगा | तुम्हारे दरमियान | और उन के दरमियान |

رَدْمًا ﴿٩٥﴾ آتُونِي زُبَرَ الْحَدِيدِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मज़बूत आड़ | 95 | मुझे ला दो तुम | लोहे के तख़्ते | यहां तक कि | जब | उस ने बराबर कर दिया | दरमियान | दोनों पहाड़ | उस ने कहा |

انْفُخُوا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ نَارًا قَالَ آتُونِي أُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿٩٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| धौंको | याहां तक कि | जब उसे कर दिया | आग | उस ने कहा | ले आओ मेरे पास | मैं डालूँ | उस पर | पिघला हुआ तांबा | 96 |

فَمَا اسْطَاعُوْٓا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ﴿٩٧﴾ قَالَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने कहा | 97 | नक़्ब | उस में | और वह न लगा सकेंगे | उस पर चढ़ें | कि | फिर न कर सकेंगे |

هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّيْ ۚ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّيْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और है | हमवार | उस को कर देगा | मेरा रब | वादा | आएगा | पस जब | मेरे रब से | रहमत | यह |

وَعْدُ رَبِّيْ حَقًّا ﴿٩٨﴾ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِيْ بَعْضٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बाज़ (दूसरे) के अन्दर | रेला मारते | उस दिन | उन के बाज | और हम छोड़ देंगे | 98 | सच्चा | मेरा रब | वादा |

وَّنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ﴿٩٩﴾ وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| काफ़िरों के | उस दिन | जहन्नम | और हम सामने कर देंगे | 99 | सब को | फिर हम उन्हें जमा करेंगे | और फूंका जाएगा सूर |

عَرْضَا ﴿١٠٠﴾ الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِيْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِيْ وَكَانُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह थे | मेरा ज़िक्र | से | पर्दे में | उन की आँखें | थीं | वह जो कि | 100 | बिलकुल सामने |

لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ﴿١٠١﴾ اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ يَّتَّخِذُوْا ١١ ع ٢

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कि वह बना लेंगे | वह जिन्हों ने कुफ़्र किया | क्या गुमान करते हैं | 101 | सुनना | न ताक़त रखते |

عِبَادِيْ مِنْ دُوْنِيْٓ اَوْلِيَآءَ ۭ اِنَّآ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ﴿١٠٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 102 | ज़ियाफ़त | काफ़िरों के लिए | जहन्नम | हम ने तैयार किया | बेशक हम | कारसाज | मेरे सिवा | मेरे बन्दे |

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾ اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की कोशिश | बरबाद हो गई | वह लोग | 103 | आमाल के लिहाज़ से | बदतरीन घाटे में | हम तुम्हें बतलाएँ | क्या | फ़रमा दें |

فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾ اُولٰۤئِكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यही लोग | 104 | काम | अच्छे कर रहे हैं | कि वह | ख़याल करते हैं | और वह | दुनिया की ज़िन्दगी | में |

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पस हम क़ाइम न करेंगे | उन के अमल (जमा) | पस अकारत गए | और उस की मुलाक़ात | अपना रब | आयतों का | जिन लोगों ने इन्कार किया |

لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ﴿١٠٥﴾ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने कुफ़्र किया | इस लिए कि | जहन्नम | उन का बदला | यह | 105 | कोई वज़न | क़ियामत के दिन | उन के लिए |

وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ﴿١٠٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो लोग ईमान लाए | बेशक | 106 | हँसी मज़ाक़ | और मेरे रसूल | मेरी आयात | और ठहराया |

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | हमेशा रहेंगे | 107 | ज़ियाफ़त | फ़िरदौस के बाग़ात | उन के लिए | है | और उन्हों ने नेक अमल किए |

لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿١٠٨﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरा रब | बातों के लिए | रोशनाई | समन्दर | हो | अगर | फ़रमा दें | 108 | जगह बदलना | वहाँ से | वह न चाहेंगे |

لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿١٠٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 109 | मदद को | उस जैसा | हम ले आएं | और अगरचे | मेरे रब की बातें | कि ख़त्म हों | पहले | तो ख़त्म हो जाए समन्दर |

फिर वह (याजूज माजूज) न उस पर चढ़ सकेंगे, और न उस पर नक़्ब लगा सकेंगे। (97) उस ने कहा यह मेरे रब की (तरफ़) से रहमत है, पस जब आएगा मेरे रब का वादा (मक़र्रा वक़्त) वह उस को हमवार कर देगा और मेरे रब का वादा सच्चा है। (98) और हम छोड़ देंगे उन के बाज को उस दिन रेला मारते हुए एक दूसरे के अन्दर, और सूर फूंका जाएगा, फिर हम उन सब को जमा करेंगे। (99) और हम उस दिन जहन्नम सामने कर देंगे काफ़िरों के बिलकुल सामने। (100) और मेरे ज़िक्र से जिन की आँखें पर्दा-ए-(ग़फ़लत) में थीं, वह सुनने की ताक़त न रखते थे (सुन न सकते थे)। (101) जिन लोगों ने कुफ़्र किया, क्या वह गुमान करते हैं? कि वह मेरे बन्दों को बना लेंगे मेरे सिवा कारसाज। बेशक हम ने तैयार किया जहन्नम को काफ़िरों की ज़ियाफ़त के लिए। (102) फ़रमा दें क्या हम तुम्हें बतलाएं आमाल के लिहाज़ से बदतरीन घाटे में (कौन हैं)। (103) वह लोग जिन की बरबाद हो गई कोशिश दुनिया की ज़िन्दगी में, और वह ख़याल करते हैं कि वह अच्छे काम कर रहे हैं। (104) यही लोग हैं जन्हों ने इन्कार किया अपने रब की आयतों का और उस की मुलाक़ात का, पस अकारत गए उन के अ़मल, पस क़ियामत के दिन उन के लिए कोई वज़न क़ाइम न करेंगे (उन के अ़मल बे वज़न होंगे)। (105) यह उन का बदला है जहन्नम, इस लिए कि उन्हों ने कुफ़्र किया और मेरी आयतों को और मेरे रसूलों को हँसी मज़ाक़ ठहराया। (106) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अमल किए उन के लिए ज़ियाफ़त है फ़िरदौस (बहिश्त) के बाग़ात। (107) उन में हमेशा रहेंगे, वह वहां से जगह बदलना न चाहेंगे। (108) फ़रमा दें अगर समन्दर मेरे रब की बातें (लिखने के लिए) रोशनाई बन जाए तो समन्दर (का पानी) ख़त्म हो जाएगा उस से पहले कि मेरे रब की बातें ख़त्म हों अगरचे हम उस की मदद को उस जैसा (और समन्दर भी) ले आएं। (109)

आप (स) फ़रमा दें कि मैं तुम जैसा बशर हूँ (अलबत्ता) मेरी तरफ़ वहि की जाती है, तुम्हारा माबूद माबूदे वाहिद है, सो जो अपने रब की मुलाक़ात की उम्मीद रखता है उसे चाहिए कि वह अच्छे अ़मल करे और वह अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न करे। (110)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

काफ़-हा-या-ऐन-साद। (1)
यह तज़किरा है तेरे रब की रहमत का, उस के बन्दे ज़करिया (अ) पर। (2)
(याद करो) जब उस ने अपने रब को आहिस्ता से पुकारा। (3)
उस ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक (बुढ़ापे से) मेरी हड्डियां कमज़ोर हो गई हैं, और मेरा सर सफ़ेद बालों से शोले मारने लगा है (बिलकुल सफ़ेद हो गया) और मैं (कभी) तुझ से मांग कर ऐ मेरे रब महरूम नहीं रहा हूँ। (4)
और अलबत्ता मैं अपने बाद अपने रिश्तेदारों से डरता हूँ, और मेरी बीवी बांझ है, तू मुझे अ़ता फ़रमा अपने पास से एक वारिस। (5)
वह वारिस हो मेरा और औलादे याक़ूब (अ) का, और ऐ मेरे रब! उसे पसंदीदा बना दे। (6)
(इरशाद हुआ) ऐ ज़करिया (अ)! बेशक हम तुझे एक लड़के की बशारत देते हैं, उस का नाम यहया (अ) है। हम ने इस से क़ब्ल किसी को उस का हम नाम नहीं बनाया। (7)
उस ने कहा, ऐ मेरे रब! मेरे लड़का कैसे होगा? जब कि मेरी बीवी बांझ है, और मैं पहुँच गया हूँ बुढ़ापे की इन्तिहाई हद को। (8)
उस ने कहा उसी तरह, तेरा रब फ़रमाता है, यह (अम्र) मुझ पर आसान है, और इस से क़ब्ल मैं ने तुझे पैदा किया, जब कि तू कुछ भी न था। (9)
उस ने कहा ऐ मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी (मक़र्रर) कर दे, फ़रमाया तेरी निशानी (यह है) कि तू लोगों से बात न करेगा तीन रात (दिन) ठीक (होने के बावजूद)। (10)
फिर वह मेहराबे (इबादत) से अपनी क़ौम के पास निकल कर (आया) तो उस ने उन की तरफ़ इशारा किया कि उसकी पाकीज़गी बयान करो सुब्ह ओ शाम। (11)

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हो | सो जो | वाहिद | माबूद | तुम्हारा माबूद | फ़क़त | मेरी तरफ़ | वहि की जाती है | तुम जैसा | बशर | इस के सिवा नहीं कि मैं | फ़रमा दें |

يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ﴿١١٠﴾ ع ١٢ ٩ ٣

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 110 | किसी को | अपना रब | इबादत में | और वह शरीक न करे | अच्छे | अ़मल | तो उसे चाहिए कि वह अ़मल करे | अपना रब | मुलाक़ात | उम्मीद रखता है |

آيَاتُهَا ٩٨ ❀ (١٩) سُوْرَةُ مَرْيَمَ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

रुकूआत 6 — (19) सूरह मरयम — आयात 98

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

كٓهٰيٰعٓصٓ ﴿١﴾ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّآ ﴿٢﴾ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना रब | उस ने पुकारा | जब | 2 | ज़करिया (अ) | अपना बन्दा | तेरा रब | रहमत | तज़किरा | 1 | काफ़ हा या ऐन साद |

نِدَآءً خَفِيًّا ﴿٣﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّيْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सर | और शोले मारने लगा | मेरी | हड्डियां | कमज़ोर हो गई | बेशक मैं | ऐ मेरे रब | उस ने कहा | 3 | आहिस्ता से | पुकारना |

شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ﴿٤﴾ وَاِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने रिश्तेदार | डरता हूँ | और अलबत्ता मैं | 4 | महरूम | ऐ मेरे रब | तुझ से मांग कर | और मैं नहीं रहा | सफ़ेद बाल |

مِنْ وَّرَآءِيْ وَكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ﴿٥﴾ يَّرِثُنِيْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरा वारिस हो | 5 | एक वारिस | अपने पास से | तू मुझे अ़ता कर | बांझ | मेरी बीवी | और है | अपने बाद |

وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ﴿٦﴾ يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुझे बशारत देते हैं | बेशक हम | ऐ ज़करिया (अ) | 6 | पसन्दीदा | ऐ मेरे रब | और उसे बनादे | औलादे याक़ूब (अ) | से का | और वारिस हो |

بِغُلٰمِ ِۨ اسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ﴿٧﴾ قَالَ رَبِّ اَنّٰى

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कैसे | ऐ मेरे रब | उस ने कहा | 7 | कोई हम नाम | इस से क़ब्ल | उस का | नहीं बनाया हम ने | यहया | उस का नाम | एक लड़का |

يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बुढ़ापा | से-की | और मैं पहुँच चुका हूँ | बांझ | मेरी बीवी | जब कि वह है | मेरे लिए (मेरा) लड़का | होगा वह |

عِتِيًّا ﴿٨﴾ قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुझे पैदा किया | और मैं ने | आसान | मुझ पर | वह (यह) | तेरा रब | फ़रमाया | उसी तरह | उस ने कहा | 8 | इन्तिहाई हद |

مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْـًٔا ﴿٩﴾ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۭ قَالَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़रमाया | कोई निशानी | मेरे लिए | कर दे | ऐ मेरे रब | उस ने कहा | 9 | कोई चीज़ (कुछ भी) | जब कि तू न था | क़ब्ल | इस से |

اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ﴿١٠﴾ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी क़ौम | पास | फिर वह निकला | 10 | ठीक | रात | तीन | लोग (जमा) | तू न बात करेगा | तेरी निशानी |

مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿١١﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | और शाम | सुब्ह | कि उस की पाकीज़गी बयान करो | उन की तरफ़ | तो उस ने इशारा किया | मेहराब | से |

يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۗ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ﴿١٢﴾ وَحَنَانًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और शफ़क़त | 12 | बचपन से | नबूवत दानाई | और हम ने उसे दी | मज़बूती से | किताब | पकड़ो (थाम लो) | ऐ यहया (अ) |

مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ۗ وَكَانَ تَقِيًّا ﴿١٣﴾ وَّبَرًّا ۢ بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न था वह | अपने माँ बाप से | और अच्छा सुलूक करने वाला | 13 | परहेज़गार | और वह था | और पाकीज़गी | अपने पास से |

جَبَّارًا عَصِيًّا ﴿١٤﴾ وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जिस दिन | वह फ़ौत होगा | और जिस दिन | वह पैदा हुआ | जिस दिन | उस पर | और सलाम | 14 | नाफ़रमान | गर्दन कश |

يُبْعَثُ حَيًّا ﴿١٥﴾ وَاذْكُرْ فِى الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने घर वालों से | जब वह यकसू हो गई | मरयम (अ) | किताब में | और ज़िक्र करो | 15 | ज़िन्दा हो कर | उठाया जाएगा |

مَكَانًا شَرْقِيًّا ﴿١٦﴾ فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۫ فَاَرْسَلْنَآ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर हम ने भेजा | पर्दा | उन की तरफ़ | से | फिर डाल लिया | 16 | मशरिक़ी | मकान |

اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ﴿١٧﴾ قَالَتْ اِنِّىْٓ اَعُوْذُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पनाह में आती हूँ | बेशक मैं | वह बोली | 17 | ठीक | एक आदमी | उस के लिए | शक्ल बन गया | अपनी रूह (फ़रिश्ता) | उस की तरफ़ |

بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ﴿١٨﴾ قَالَ اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तेरे रब का | भेजा हुआ | कि मैं | इस के सिवा नहीं | उस ने कहा | 18 | परहेज़गार | अगर तू है | तुझ से | अल्लाह की |

لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ﴿١٩﴾ قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ غُلٰمٌ وَّلَمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब कि नहीं | लड़का | मेरे | होगा | कैसे | वह बोली | 19 | पाकीज़ा | एक लड़का | तुझ को | ताकि अता करूँ |

يَمْسَسْنِىْ بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا ﴿٢٠﴾ قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तेरा रब | फ़रमाया | यूँही | उस ने कहा | 20 | बदकार | और मैं नहीं हूँ | किसी बशर ने | मुझे छुआ |

هُوَ عَلَىَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और है | अपनी तरफ़ से | और रहमत | लोगों के लिए | एक निशानी | और ताकि हम उसे बनाएं | आसान | मुझ पर | वह-यह |

اَمْرًا مَّقْضِيًّا ﴿٢١﴾ فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ﴿٢٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 22 | दूर | एक जगह | उसे ले कर | पस वह चली गई | फिर उसे हम्ल रह गया | 21 | तै शुदा | एक अम्र |

فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ يٰلَيْتَنِىْ مِتُّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मर चुकी होती | अए काश मैं | वह बोली | खजूर का दरख़्त | जड़ | तरफ़ | दर्देज़ाह | फिर उसे ले आया |

قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ﴿٢٣﴾ فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَآ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के नीचे | से | पस उसे आवाज दी | 23 | भूली बिसरी | और मैं हो जाती | इस से क़ब्ल |

اَلَّا تَحْزَنِىْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ﴿٢٤﴾ وَهُزِّىْٓ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और हिला | 24 | एक चश्मा | तेरे नीचे | तेरा रब | कर दिया है | कि न घबरा तू |

اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ﴿٢٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 25 | खजूरें | ताज़ा ताज़ा | तुझ पर | झड़ पड़ेंगी | खजूर | तने को | अपनी तरफ़ |

(इरशादे इलाही हुआ) ऐ यहया (अ)! किताब को मज़बूती से थाम लो, और हम ने उसे बचपन (ही) से नबूवत ओ दानाई देदी। (12) और अपने पास से शफ़क़त और पाकीज़गी (अता की) और वह परहेज़गार था, (13) और वह अपने माँ बाप से अच्छा सुलूक करने वाला था, और न था गर्दन कश नाफ़रमान। (14) और सलाम (सलामती) हो उस पर जिस दिन वह पैदा हुआ, और जिस दिन वह फ़ौत होगा, और जिस दिन ज़िन्दा करके उठाया जाएगा। (15) और किताब (कुरआन) में मरयम (अ) का ज़िक्र (याद) करो, जब वह अपने घर वालों से अलग हो गई एक मशरिक़ी मकान में। (16) फिर उस ने डाल लिया उन की तरफ़ से पर्दा, फिर हम ने उस की तरफ़ अपने फ़रिश्ते को भेजा, वह उस के लिए ठीक एक आदमी की शक्ल बन कर आया। (17) वह बोली बेशक मैं तुझ से अल्लाह की पनाह में आती हूँ, अगर तू परहेज़गार है (यहाँ से हट जा)। (18) उस ने कहा इस के सिवा नहीं कि मैं तेरे रब का भेजा हुआ हूँ ताकि तुझे एक पाकीज़ा लड़का अता करूँ। (19) वह बोली मेरे लड़का कैसे होगा? जब कि न मुझे किसी बशर ने छूआ, और न मैं बदकार हूँ। (20) उस ने कहा उसी तरह (अल्लाह का फ़ैसला है), तेरे रब ने फ़रमाया कि यह मुझ पर आसान है, और ताकि हम उसे लोगों के लिए एक निशानी बनाएं, और अपनी तरफ़ से रहमत, और यह है एक तै शुदा अम्र। (21) फिर उसे हम्ल रह गया, पस वह उसे ले कर एक दूर जगह चली गई। (22) फिर दर्दे ज़ह उसे खजूर के दरख़्त की जड़ की तरफ़ ले आया, वह बोली, ए काश! मैं इस से क़ब्ल मर चुकी होती, और मैं हो जाती भूली बिसरी। (23) पस उसे उस के नीचे (वादी) से (फ़रिश्ते ने) आवाज़ दीः तू घबरा नहीं, तेरे रब ने तेरे नीचे एक चश्मा (जारी) कर दिया है। (24) और खजूर का तना अपनी तरफ़ हिला, तुझ पर ताज़ा खजूरें झड़ पड़ेंगी। (25)

तू खा और पी और आँखें ठंडी कर, फिर अगर तू किसी आदमी को देखे तो कह दे कि मैं ने रहमान के लिए रोज़े की नज़्र मानी है, पस आज हरगिज़ किसी आदमी से कलाम न करूंगी (26)

फिर वह उसे उठा कर अपनी क़ौम के पास लाई, वह बोले ऐ मरयम (अ)! तू लाई है गजब की शै। (27)

ऐ हारून (अ) की बहन! तेरा बाप बुरा आदमी न था और न तेरी माँ ही थी बदकार। (28)

तो मरयम ने उस (बच्चे) की तरफ़ इशारा किया, वह बोलेः हम गहवारे (गोद) के बच्चे से कैसे बात करें? (29)

बच्चे ने कहाः बेशक मैं अल्लाह का बन्दा हूँ, उस ने मुझे किताब दी, (30)

और मुझे नबी बनाया, और जहां कहीं मैं हूँ मुझे बाबरकत बनाया है, और जब तक मैं ज़िन्दा रहूँ मुझे हुक्म दिया है नमाज़ का और ज़कात का, (31)

और अपनी माँ से अच्छा सुलूक करने का, और उस ने मुझे नहीं बनाया सरकश, बदनसीब। (32)

और सलामती हो मुझ पर जिस दिन मैं पैदा हुआ, और जिस दिन मैं मरूंगा, और जिस दिन मैं ज़िन्दा करके उठाया जाऊँगा। (33)

यह है ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ), सच्ची बात जिस में वह (लोग) शक करते हैं। (34)

अल्लाह के लिए (सज़ावार) नहीं है कि वह कोई बेटा बनाए, वह पाक है, जब वह किसी काम का फ़ैसला करता है तो उस के सिवा नहीं कि वह कहता है "हो जा" पस वह हो जाता है। (35)

और बेशक अल्लाह मेरा और तुम्हारा रब है, पस उस की इबादत करो, यह सीधा रास्ता है। (36)

(फिर अहले किताब के) फ़िरक़ों ने इख़तिलाफ़ किया बाहम, पस ख़राबी है काफ़िरों के लिए (क़ियामत के) बड़े दिन की हाज़िरी से, (37)

क्या कुछ सुनेंगे! और क्या कुछ देखेंगे! जिस दिन वह हमारे सामने आएंगे, लेकिन आज के दिन ज़ालिम खुली गुमराही में हैं। (38)

فَكُلِيْ وَاشْرَبِيْ وَقَرِّيْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई | आदमी | से | फिर अगर तू देखे | आँखें | और ठंडी कर | और पी | तू खा |

فَقُوْلِيْٓ اِنِّيْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ۚ ٢٦

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 26 | किसी आदमी | आज | पस मैं हरगिज़ कलाम न करूंगी | रोज़ा | रहमान के लिए | कि मैं ने नज़्र मानी है | तो कह दे |

فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ۗ قَالُوْا يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْـًٔا فَرِيًّا ٢٧

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 27 | बुरी (गजब की) | शै | तू लाई है | ऐ मरयम | वह बोले | उसे उठाए हुए | अपनी क़ौम | फिर वह उसे ले कर आई |

يٰٓاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ اُمُّكِ بَغِيًّا ۚ ٢٨

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 28 | बदकार | तेरी माँ | और न थी | बुरा | आदमी | तेरा बाप | था | न | ऐ हारून (अ) की बहन |

فَاَشَارَتْ اِلَيْهِ ۗ قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ٢٩

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 29 | बच्चा | गहवारे में | जो है | कैसे हम बात करें | वह बोले | उस की तरफ़ | तो मरयम ने इशारा किया |

قَالَ اِنِّيْ عَبْدُ اللّٰهِ ۗ اٰتٰنِيَ الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِيْ نَبِيًّا ۙ ٣٠ وَّجَعَلَنِيْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और मुझे बनाया है | 30 | नबी | और मुझे बनाया है | किताब | उस ने मुझे दी है | अल्लाह का बन्दा | बच्चे ने कहा बेशक मैं |

مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ ۠ وَاَوْصٰنِيْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जब तक मैं रहूँ | और ज़कात का | नमाज़ का | और मुझे हुक्म दिया है उस ने | मैं हूँ | जहां कहीं | बाबरकत |

حَيًّا ۙ ٣١ وَّبَرًّاۢ بِوَالِدَتِيْ وَلَمْ يَجْعَلْنِيْ جَبَّارًا شَقِيًّا ٣٢ وَالسَّلٰمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और सलामती | 32 | बदनसीब | सरकश | और उस ने मुझे नहीं बनाया | और अच्छा सुलूक करने वाला अपनी माँ से | 31 | ज़िन्दा |

عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَيَوْمَ اَمُوْتُ وَيَوْمَ اُبْعَثُ حَيًّا ٣٣ ذٰلِكَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह | 33 | ज़िन्दा हो कर | उठाया जाऊँगा | और जिस दिन | मैं मरूंगा | और जिस दिन | मैं पैदा हुआ | जिस दिन | मुझ पर |

عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِيْ فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ٣٤ مَا كَانَ لِلّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं है अल्लाह के लिए | 34 | वह शक करते हैं | वह जिस में | सच्ची | बात | इब्ने मरयम | ईसा (अ) |

اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ ۙ سُبْحٰنَهٗ ۗ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह कहता है | तो इस के सिवा नहीं | किसी काम | जब वह फ़ैसला करता है | वह पाक है | बेटा | कोई | वह बनाए | कि |

لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ٣٥ وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۗ هٰذَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह | पस उस की इबादत करो | और तुम्हारा रब | मेरा रब | अल्लाह | और बेशक | 35 | पस वह हो जाता है | हो जा | उस को |

صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ٣٦ فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पस ख़राबी | आपस में (बाहम) | फ़िर्क़े | फिर इख़तिलाफ़ किया | 36 | सीधा | रास्ता |

لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ٣٧ اَسْمِعْ بِهِمْ وَاَبْصِرْ ۙ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और देखेंगे | क्या कुछ | सुनेंगे | 37 | बड़ा दिन | हाज़िरी | से | काफ़िरों के लिए |

يَوْمَ يَاْتُوْنَنَا لٰكِنِ الظّٰلِمُوْنَ الْيَوْمَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ٣٨

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 38 | खुली गुमराही | में | आज के दिन | ज़ालिम (जमा) | लेकिन | वह हमारे सामने आएंगे | जिस दिन |

وقف لازم

وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِيَ الْاَمْرُ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ وَّهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह | ग़फ़लत में हैं | लेकिन वह | काम | जब फ़ैसला कर दिया जाएगा | हसरत का दिन | और उन को डराएं आप (स) |

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْاَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَاِلَيْنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हमारी तरफ़ | उस पर | और जो | ज़मीन | वारिस होंगे | बेशक हम | 39 | ईमान नहीं लाते |

ع ٢ ٥

يُرْجَعُوْنَ ﴿٤٠﴾ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِبْرٰهِيْمَ ۬ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सच्चे | बेशक वह थे | इब्राहीम (अ) | किताब में | और याद करो | 40 | वह लौटाए जाएंगे |

نَّبِيًّا ﴿٤١﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ يٰۤاَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न देखे | जो न सुन | तुम क्यों परस्तिश करते हो | ऐ मेरे अब्बा | अपने बाप को | जब उस ने कहा | 41 | नबी |

وَلَا يُغْنِيْ عَنْكَ شَيْـًٔا ﴿٤٢﴾ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْ قَدْ جَآءَنِيْ مِنَ الْعِلْمِ مَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | वह इल्म | बेशक मेरे पास आया है | बेशक मैं | ऐ मेरे अब्बा | 42 | कुछ | तुम्हारे | और न काम आए |

لَمْ يَاْتِكَ فَاتَّبِعْنِيْٓ اَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿٤٣﴾ يٰۤاَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शैतान | परस्तिश न कर | ऐ मेरे अब्बा | 43 | सीधा | रास्ता | मैं तुम्हें दिखाऊँगा | पस मेरी बात मानो | तुम्हारे पास नहीं आया |

اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا ﴿٤٤﴾ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْۤ اَخَافُ اَنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | डरता हूँ | बेशक मैं | ऐ मेरे अब्बा | 44 | नाफ़रमान | रहमान का | है | शैतान | बेशक |

يَّمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنَ لِلشَّيْطٰنِ وَلِيًّا ﴿٤٥﴾ قَالَ اَرَاغِبٌ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या रूगर्दां | उस ने कहा | 45 | साथी | शैतान का | फिर तू हो जाए | रहमान | से-का | अज़ाब | तुझे आपकड़े |

اَنْتَ عَنْ اٰلِهَتِيْ يٰۤاِبْرٰهِيْمُ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِيْ مَلِيًّا ﴿٤٦﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 46 | एक मुद्दत के लिए | और मुझे छोड़ दे | तो मैं तुझे संगसार कर दूँगा | तू बाज़ न आया | अगर | ऐ इब्राहीम (अ) | मेरे माबूद (जमा) | से | तू |

قَالَ سَلٰمٌ عَلَيْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِيْ حَفِيًّا ﴿٤٧﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 47 | मेहरबान | मुझ पर | है | बेशक वह | अपना रब | तेरे लिए | मैं अभी बख़्शिश मांगूँगा | तुझ पर | सलाम | उस ने कहा |

وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّيْ ۬ۖ عَسٰۤى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उम्मीद है | अपना रब | और मैं इबादत करूँगा | अल्लाह | सिवाए | तुम परस्तिश करते हो | और जो | और किनारा कशी करता हूँ तुम से |

اَلَّاۤ اَكُوْنَ بِدُعَآءِ رَبِّيْ شَقِيًّا ﴿٤٨﴾ فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह परस्तिश करते थे | और जो | वह किनारा कश होगए उन से | फिर जब | 48 | महरूम | अपना रब | इबादत से | कि न रहूँगा |

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿٤٩﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 49 | नबी | हम ने बनाया | और सब को | और याक़ूब (अ) | इस्हाक़ (अ) | उस को | हम ने अता किया | अल्लाह | सिवाए |

ع ٣ ٦

وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ﴿٥٠﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 50 | निहायत बुलन्द | सच्चा जमील | ज़िक्र | उन का | और हम ने किया | अपनी रहमत | से | उन्हें | और हम ने अता किया |

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰۤى ؗ اِنَّهٗ كَانَ مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥١﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 51 | नबी | रसूल | और था | बरगुज़ीदा | था | बेशक वह | मूसा (अ) | किताब में | और याद करो |

और आप (स) उन्हें हसरत के दिन से डराएं जब मामले का फ़ैसला कर दिया जाएगा, लेकिन वह ग़फ़लत में हैं, और वह ईमान नहीं लाते। (39) बेशक हम वारिस होंगे ज़मीन के और जो कुछ उस पर है, और वह हमारी तरफ़ लौटाए जाएंगे। (40) और किताब में इब्राहीम (अ) को याद करो, बेशक वह सच्चे नबी थे (41) जब उस ने अपने बाप से कहा, ऐ मेरे अब्बा! तुम क्यों उस की परस्तिश करते हो? जो न कुछ सुने और न देखे, और न काम आए तुम्हारे कुछ भी। (42) ऐ मेरे अब्बा! बेशक मेरे पास वह इल्म (वहि) आया है जो तुम्हारे पास नहीं आया, पस मेरी बात मानो, मैं तुम्हें ठीक सीधा रास्ता दिखाऊँगा। (43) ऐ मेरे अब्बा! शैतान की परस्तिश न कर, बेशक शैतान रहमान का नाफ़रमान है। (44) ऐ मेरे अब्बा! बेशक मैं डरता हूँ कि (कहीं) रहमान का अज़ाब तुझे (न) आ पकड़े। फिर तू हो जाए शैतान का साथी। (45) उस ने कहा ऐ इब्राहीम (अ)! क्या तू मेरे माबूदों से रूगर्दां है? अगर तू बाज़ न आया तो मैं तुझे ज़रूर संगसार कर दूँगा, और मुझे एक मुद्दत के लिए छोड़ दे। (46) इब्राहीम (अ) ने कहा तुझ पर सलाम हो, मैं अभी तेरे लिए अपने रब से बख़्शिश मांगूँगा, बेशक वह मुझ पर मेहरबान है, (47) और मैं किनारा कशी करता हूँ तुम से और अल्लाह के सिवा जिन की तुम परस्तिश करते हो, और मैं अपने रब की इबादत करूँगा, उम्मीद है कि मैं अपने रब की इबादत करके महरूम न रहूँगा। (48) फिर जब वह (इब्राहीम अ) उन से और अल्लाह के सिवा वह जिन की परस्तिश करते थे किनारा कश हो गए, हम ने उस को इस्हाक़ (अ) और याक़ूब (अ) अता किए और (उन) सब को हम ने नबी बनाया। (49) और हम ने अपनी रहमत से उन्हें (बहुत कुछ) अता किया और हम ने उन का ज़िक्रे जमील निहायत बुलन्द किया। (50) और किताब में मूसा (अ) को याद करो, बेशक वह बरगुज़ीदा थे, और रसूल नबी थे। (51)

और हम ने उसे कोहे तूर की दाहिनी
जानिब से पुकारा, और हम ने उसे राज़
बतलाने को नज़दीक बुलाया। (52)
और हम ने उसे अपनी रहमत से उस
का भाई हारून (अ) अता किया। (53)
और किताब में इस्माईल (अ) को
याद करो, बेशक वह वादे के सच्चे
थे, और रसूल नबी थे। (54)
और वह अपने घर वालों को नमाज़
और ज़कात का हुक्म देते थे, और वह
अपने रब के हां पसंदीदा थे। (55)
और किताब में इदरीस (अ) को याद
करो, बेशक वह सच्चे नबी थे। (56)
और हम ने उसे एक बुलन्द मुकाम
पर उठा लिया। (57)
यह हैं नबियों में से वह जिन पर
अल्लाह ने इन्आम किया औलादे
आदम में से, और उन में से जिन्हें
हम ने नूह (अ) के साथ (किश्ती में)
सवार किया, और इब्राहीम (अ)
और याकूब (अ) की औलाद में से,
और उन में से जिन्हें हम ने
हिदायत दी, और चुना, जब उन
पर रहमान की आयतें पढ़ी जातीं
वह ज़मीन पर गिर पड़ते सिज्दा
करते और रोते हुए। (58)
फिर उन के बाद चन्द नाख़लफ़
जानशीन हुए, उन्हों ने नमाज़
गंवादी, और ख़ाहिशात (नफ़सानी)
की पैरवी की, पस अनक़रीब उन्हें
गुमराही (की सज़ा) मिलेगी। (59)
मगर जिस ने तौबा की और ईमान
लाया और नेक अमल किए, पस
यही लोग हैं जो जन्नत में दाख़िल
होंगे, और ज़र्रा भर भी उन का
नुक़सान न किया जाएगा, (60)
हमेशगी के बाग़ात में जिन का
वादा रहमान ने ग़ाइबाना अपने
बन्दों से किया, बेशक उस का
वादा आने वाला है। (61)
और उस में सलाम के सिवा कोई बेहूदा
बात न सुनेंगे, और उन के लिए उस में
सुबह ओ शाम उन का रिज़्क़ है। (62)
यह वह जन्नत है जिस का हम
अपने (उन) बन्दों को वारिस
बनाएंगे जो परहेज़गार होंगे। (63)

وَنَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا ﴿٥٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 52 | राज़ बतलाने को | और उसे नज़दीक बुलाया | दाहिनी | कोहे तूर | जानिब | से | और हम ने उसे पुकारा |

وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَآ اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا ﴿٥٣﴾ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किताब में | और याद करो | 53 | नबी | हारून (अ) | उस का भाई | अपनी रहमत से | उसे | और हम ने अता किया |

اِسْمٰعِيْلَ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 54 | नबी | रसूल | और थे | वादे का सच्चा | थे | बेशक वह | इस्माईल (अ) |

وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ﴿٥٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 55 | पसन्दीदा | अपने रब के हां | और वह थे | और ज़कात | नमाज़ का | अपने घर वाले | और हुक्म देते थे |

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿٥٦﴾ وَّرَفَعْنٰهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम ने उसे उठा लिया | 56 | नबी | सच्चे | थे | बेशक वह | इदरीस (अ) | किताब में | और याद करो |

مَكَانًا عَلِيًّا ﴿٥٧﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नबी (जमा) | से | उन पर | अल्लाह ने इन्आम किया | वह जिन्हें | यह वह लोग | 57 | बुलन्द | एक मुकाम |

مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| औलाद | और से | नूह (अ) | साथ | सवार किया हम ने | और उन से जिन्हें | औलादे आदम | से |

اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْرَآءِيْلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | जब पढ़ी जाती | और हम ने चुना | हम ने हिदायत दी | और उन में जिन्हें | इब्राहीम (अ) और याकूब (अ) |

اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ﴿٥٨﴾ فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चन्द जानशीन (ना ख़लफ़) | उन के बाद | फिर जानशीन हुए | 58 | और रोते हुए | सिज्दा करते हुए | वह गिर पड़ते | रहमान की आयतें |

السجدة ٥

اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿٥٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 59 | गुमराही | उन्हें मिलेगी | पस अनक़रीब | ख़ाहिशात | और पैरवी की | नमाज | उन्हों ने गंवादी |

اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह दाख़िल होंगे | पस यही लोग | नेक | और अमल किए | और ईमान लाया | तौबा की | जो- जिस | मगर |

الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ﴿٦٠﴾ جَنّٰتِ عَدْنِ الَّتِيْ وَعَدَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वादा किया | वह जो | हमेशगी के बाग़ात | 60 | कुछ-ज़रा | और उन का न नुक़सान किया जाएगा | जन्नत |

الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ﴿٦١﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह न सुनेंगे | 61 | आने वाला | उस का वादा | है | बेशक वह | ग़ाइबाना | अपने बन्दे (जमा) | रहमान |

فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا سَلٰمًا وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿٦٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 62 | और शाम | सुबह | उस में | उन का रिज़्क़ | और उन के लिए | सिवा सलाम | बेहूदा | उस में |

تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ﴿٦٣﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 63 | परहेज़गार | होंगे | जो | अपने बन्दे | से-को | हम वारिस बनाएंगे | वह जो कि | जन्नत | यह |

وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ ۖ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारे पीछे | और जो | जो हमारे हाथों में (आगे) | उस के लिए | तुम्हारा रब | हुक्म से | मगर | हम उतरते | और नहीं |

وَمَا بَيْنَ ذَٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿٦٤﴾ رَبُّ السَّمَاوَاتِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मानों का रब | 64 | भूलने वाला | तुम्हारा रब | है | और नहीं | उस के दरमियान | और जो |

وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ ۚ هَلْ تَعْلَمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तू जानता है | क्या | उस की इबादत पर | और साबित क़दम रहो | पस उसी की इबादत करो | उन के दरमियान | और जो | और ज़मीन |

ع ١٥ لَهُ سَمِيًّا ﴿٦٥﴾ وَيَقُولُ الْإِنسَانُ أَإِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ أُخْرَجُ حَيًّا ﴿٦٦﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 66 | ज़िन्दा | मैं निकाला जाऊंगा | तो फिर | मैं मर गया | क्या जब | इन्सान | और कहता है | 65 | हम नाम | उस का |

أَوَلَا يَذْكُرُ الْإِنسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِن قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ﴿٦٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 67 | कुछ भी | जब कि वह न था | इस से क़ब्ल | हम ने उसे पैदा किया | बेशक हम | इन्सान | याद करता | क्या नहीं |

فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيَاطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जहन्नम | इर्द गिर्द | हम उन्हें ज़रूर हाज़िर करलेंगे | फिर | शैतान (जमा) | हम उन्हें ज़रूर जमा करेंगे | सो तुम्हारे रब की क़सम |

جِثِيًّا ﴿٦٨﴾ ثُمَّ لَنَنزِعَنَّ مِن كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ أَشَدُّ عَلَى الرَّحْمَٰنِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह रहमान से | बहुत ज़ियादा | जो उन में से | गिरोह | हर | से | ज़रूर खींच निकालेंगे | फिर | 68 | घुटनों के बल गिर हुए |

عِتِيًّا ﴿٦٩﴾ ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أَوْلَىٰ بِهَا صِلِيًّا ﴿٧٠﴾ وَإِن

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं | 70 | दाख़िल होना | ज़ियादा मुस्तहिक़ उस में | वह | उन से जो | ख़ूब वाक़िफ़ | अलबत्ता | फिर | 69 | सरकशी करने वाला |

مِّنكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ﴿٧١﴾ ثُمَّ نُنَجِّي

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम नजात देंगे | फिर | 71 | मुक़र्रर किया हुआ | लाज़िम | तुम्हारा रब | पर | है | यहां से गुज़रना होगा | मगर | तुम में से |

الَّذِينَ اتَّقَوا وَّنَذَرُ الظَّالِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | पढ़ी जाती हैं | और जब | 72 | घुटनों के बल गिरे हुए | उस में | ज़ालिम (जमा) | और हम छोड़ देंगे | वह जिन्हों ने परहेज़गारी की |

آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दोनों फ़रीक़ | कौन सा | वह ईमान लाए | उन से जो | कुफ़्र किया | वह जिन्हों ने | कहते हैं | वाज़ेह | हमारी आयतें |

خَيْرٌ مَّقَامًا وَأَحْسَنُ نَدِيًّا ﴿٧٣﴾ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ هُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह | गिरोहों में से | उन से पहले | हम हलाक कर चुके | और कितने ही | 73 | मजलिस | और अच्छी | बेहतर मुक़ाम |

أَحْسَنُ أَثَاثًا وَرِئْيًا ﴿٧٤﴾ قُلْ مَن كَانَ فِي الضَّلَالَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस को | तो ढील दे रहा है | गुमराही में | जो है | कह दीजिए | 74 | और नमूद | सामान | बहुत अच्छे |

الرَّحْمَٰنُ مَدًّا ۚ حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ إِمَّا الْعَذَابَ وَإِمَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और ख़्वाह | अज़ाब | ख़्वाह | जिस का वादा किया जाता है | वह देखेंगे | जब | यहां तक कि | ख़ूब ढील | रहमान |

السَّاعَةَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضْعَفُ جُندًا ﴿٧٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 75 | लशकर | और कमज़ोर तर | बदतर मुक़ाम | वह | कौन | पस अब वह जान लेंगे | क़ियामत |

और (फ़रिश्तों ने कहा) हम तुम्हारे रब के हुक्म के बग़ैर नहीं उतरते, उसी के लिए है जो हमारे आगे, और जो हमारे पीछे है और जो उस के दरमियान है, और तुम्हारा रब भूलने वाला नहीं। (64) वह रब है आस्मानों का और ज़मीन का, और जो उन के दरमियान है, पस तुम उसी की इबादत करो, और उस की इबादत पर साबित क़दम रहो, क्या तू कोई उस का हम नाम जानता है? (65) और (काफ़िर) इन्सान कहता है क्या जब मैं मर गया तो फिर मैं ज़िन्दा कर के (ज़मीन से) निकाला जाऊंगा। (66) क्या इन्सान याद नहीं करता (क्या उसे याद नहीं) कि हम ने उसे इस से पहले पैदा किया जब कि वह कुछ भी न था। (67) सो तुम्हारे रब की क़सम हम उन्हें और शैतानों को ज़रूर जमा करेंगे, फिर हम उन्हें ज़रूर हाज़िर कर लेंगे जहन्नम के गिर्द घुटनों के बल गिरे हुए। (68) फिर हर गिरोह में से हम उसे ज़रूर खींच निकालेंगे जो उन में से अल्लाह रहमान से बहुत ज़ियादा सरकशी करने वाला था। (69) फिर अलबत्ता हम उन से ख़ूब वाक़िफ़ हैं जो उस (जहन्नम) में दाख़िल होने के ज़ियादा मुस्तहिक़ हैं। (70) और तुम में से कोई नहीं मगर उसे (हर एक को) यहां से गुज़रना होगा। तुम्हारे रब का अपने ऊपर लाज़िम मुक़र्रर किया हुआ। (71) फिर हम उन लोगों को नजात देंगे जिन्हों ने परहेज़गारी की, और हम ज़ालिमों को उस में छोड़ देंगे घुटनों के बल गिरे हुए। (72) और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयतें पढ़ी जाती हैं तो जिन्हों ने कुफ़्र किया वह ईमान लाने वालों से कहते हैं, दोनों फ़रीक़ में से किस का मुक़ाम (मरतबा) बेहतर और मजलिस अच्छी है? (73) और इस से पहले हम कितने ही गिरोह हलाक कर चुके हैं, वह सामान और नमूद (में इस से) बहुत अच्छे थे। (74) कह दीजिए जो गुमराही में है तो उस को अर-रहमान गुमराही में और ख़ूब ढील दे रहा है यहां तक कि वह देख लेंगे, ख़्वाह अज़ाब या क़ियामत जिस का उन से वादा किया जाता है, पस वह तब जान लेंगे कौन है बदतर मुक़ाम (मरतबा) में? और कमज़ोर तर लशकर में। (75)

और जिन लोगों ने हिदायत हासिल की अल्लाह उन्हें और ज़ियादा हिदायत देता है, और तुम्हारे रब के नज़्दीक बाक़ी रहने वाली नेकियां बेहतर हैं ब-एतिबारे सवाब और बेहतर हैं ब-एतिबारे अन्जाम (76)
पस क्या तू ने उस शख़्स को देखा जिस ने हमारे हुक्मों का इन्कार किया? और कहा मैं जरूर माल और औलाद दिया जाऊंगा (77)
क्या वह ग़ैब पर मत्तला हो गया है? या उस ने अल्लाह रहमान से ले लिया है कोई अहद। (78)
हरगिज नहीं! जो वह कहता है अब हम लिख लेंगे और उस को अजाब लंबा बढ़ादेंगे। (79)
और हम वारिस होंगे (ले लेंगे) जो वह कहता है और वह हमारे पास अकेला आएगा। (80)
और उन्हों ने अल्लाह के सिवा (औरों को) माबूद बना लिया है ताकि उन के लिए मोजिबे इज्जत हों। (81)
हरगिज नहीं, जल्द ही वह उन की बन्दगी से इन्कार करेंगे और उन के मुख़ालिफ़ हो जाएंगे। (82)
क्या तुम ने नहीं देखा? बेशक हम ने शैतान भेजे हैं काफ़िरों पर, वह उन्हें ख़ूब उकसाते रहते हैं। (83)
सो तुम उन पर (नुज़ूले अजाब की) जल्दी न करो, हम तो सिर्फ़ उन की गिनती पूरी कर रहे हैं (उन के दिन गिन रहे हैं)। (84)
(याद करो) जिस दिन हम परहेजगारों को अल्लाह रहमान की तरफ़ मेहमान बना कर जमा कर लाएंगे। (85)
और हम गुनाहगारों को हांक कर ले जाएंगे जहन्नम की तरफ़ प्यासे। (86)
वह शफ़ाअत का इख़्तियार नहीं रखते सिवाए उस के जिस ने अल्लाह रहमान से लिया हो इक़रार। (87)
और वह कहते हैं अल्लाह रहमान ने बेटा बना लिया है, (88)
तहक़ीक़ तुम (ज़बान पर) बुरी बात लाए हो। (89)
करीब है (वईद नहीं) कि आस्मान उस से फट पड़ें और ज़मीन टुकड़े टुकड़े हो जाए, और पहाड़ पारा पारा हो कर गिर पड़ें। (90)
कि उन्हों ने अल्लाह के लिए मन्सूब किया बेटा। (91)
जब कि रहमान के शायान नहीं कि वह बेटा बनाए। (92)
नहीं कोई जो आस्मानों में है और ज़मीन में है, मगर रहमान के (हुज़ूर) बन्दा हो कर आता है। (93)
उस ने उन को घेर लिया है, और गिन कर उन का शुमार कर लिया है। (94)
और उन में से हर एक क़ियामत के दिन उस के सामने अकेला आएगा। (95)

وَيَزِيْدُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اهْتَدَوْا هُدًى ۚ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नेकियां | और बाक़ी रहने वाली | हिदायत | हिदायत हासिल की | जिन लोगों ने | अल्लाह | और ज़ियादा देता है |

خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا ﴿٧٦﴾ اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ كَفَرَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इन्कार किया | वह जिस ने | पस क्या तू ने देखा | 76 | ब एतिबारे अन्जाम | और बेहतर | ब एतिबारे सवाब | तुम्हारे रब के नज़्दीक | बेहतर |

بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَاُوْتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٧٧﴾ اَطَّلَعَ الْغَيْبَ اَمِ اتَّخَذَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने ले लिया है | या | ग़ैब | क्या वह मुत्तला हो गया है | 77 | और औलाद | माल | मैं जरूर दिया जाऊंगा | और उस ने कहा | हमारे हुक्मों का |

عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٧٨﴾ كَلَّا ۚ سَنَكْتُبُ مَا يَقُوْلُ وَنَمُدُّ لَهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस को | और हम बढ़ा देंगे | वह जो कहता है | अब हम लिख लेंगे | हरगिज नहीं | 78 | कोई अहद | अल्लाह रहमान से |

مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ﴿٧٩﴾ وَّنَرِثُهٗ مَا يَقُوْلُ وَيَاْتِيْنَا فَرْدًا ﴿٨٠﴾ وَاتَّخَذُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने बना लिया | 80 | अकेला | और वह हमारे पास आएगा | जो वह कहता है | और हम वारिस होंगे | 79 | और लंबा | अज़ाब से |

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا ﴿٨١﴾ كَلَّا ۚ سَيَكْفُرُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जल्द ही वह इन्कार करेंगे | हरगिज नहीं | 81 | मोजिबे इज़्ज़त | उन के लिए | ताकि वह हों | माबूद | अल्लाह के सिवा |

بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ﴿٨٢﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّآ اَرْسَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ ع ٥ ٨

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शैतान (जमा) | बेशक हम ने भेजे | क्या तुम ने नहीं देखा | 82 | मुख़ालिफ़ | उन के | और हो जाएंगे | उन की बन्दगी से |

عَلَى الْكٰفِرِيْنَ تَؤُزُّهُمْ اَزًّا ﴿٨٣﴾ فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ۚ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿٨٤﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 84 | गिनती | उन की | सिर्फ़ हम गिनती पूरी कर रहे हैं | उन पर | सो तुम जल्दी न करो | 83 | उकसाते हैं उन्हें ख़ूब उकसाना | काफ़िर (जमा) | पर |

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿٨٥﴾ وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गुनाहगार (जमा) | और हांक कर ले जाएंगे | 85 | मेहमान बना कर | रहमान की तरफ़ | परहेज़गार (जमा) | हम जमा कर लेंगे | जिस दिन |

اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿٨٦﴾ لَا يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ وقف لازم

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रहमान के पास | जिस ने लिया हो | सिवाए | शफ़ाअत | वह इख़्तियार नहीं रखते | 86 | प्यासे | जहन्नम | तरफ़ |

عَهْدًا ﴿٨٧﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ﴿٨٨﴾ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا اِدًّا ﴿٨٩﴾ وقف لازم

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 89 | बुरी | एक बात | तहक़ीक़ तुम लाए हो | 88 | बेटा | रहमान | बना लिया है | और वह कहते हैं | 87 | इक़रार |

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿٩٠﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 90 | पारा पारा | पहाड़ | और गिर पड़ें | ज़मीन | और टुकड़े टुकड़े हो जाए | उस से | फट पड़ें | आस्मान | क़रीब है |

اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴿٩١﴾ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لِلرَّحْمٰنِ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ﴿٩٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 92 | बेटा | कि वह बनाए | रहमान के लिए | शायान | जब कि नहीं | 91 | बेटा | रहमान के लिए | कि उन्हों ने पुकारा (मन्सूब किया) |

اِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّآ اٰتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ﴿٩٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 93 | बन्दा | रहमान | मगर आता है | और ज़मीन | आस्मानों में | जो | नहीं तमाम (कोई) |

لَقَدْ اَحْصٰىهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿٩٤﴾ وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ﴿٩٥﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 95 | अकेला | आएगा उस के सामने क़ियामत के दिन | और उन में से हर एक | 94 | और उन का शुमार कर लिया है गिन कर | उस ने उन को घेर लिया है |

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रहमान | उन के लिए | पैदा कर देगा | नेक | और उन्हों ने अमल किए | जो लोग ईमान लाए | बेशक |

وُدًّا ﴿٩٦﴾ فَإِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِيْنَ وَتُنْذِرَ بِهٖ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और डराएं उस से | परहेज़गारों | ताकि आप खुशख़बरी दें उस से | आप की ज़बान में | हम ने इसे आसान कर दिया है | पस उस के सिवा नहीं | 96 | मुहब्बत |

قَوْمًا لُّدًّا ﴿٩٧﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ ۭ هَلْ تُحِسُّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम देखते हो | क्या | गिरोह | से | उन से क़ब्ल | हम ने हलाक कर दिए | और कितने ही | 97 | झगड़ालू लोग |

الربع ع ١٦ ٩

مِنْهُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿٩٨﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 98 | आहट | उन की | या तुम सुनते हो | कोई किसी को | उन में |

آيَاتُهَا ١٣٥ ❀ (٢٠) سُوْرَةُ طٰهٰ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٨

रुकुआत 8 — (20) सूरह ता हा — आयात 135

## بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

طٰهٰ ﴿١﴾ مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ﴿٢﴾ اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के लिए जो | याद दिहानी | मगर | 2 | ताकि तुम मुशक़्क़त में पड़ जाओ | क़ुरआन | तुम पर | हम ने नाज़िल नहीं किया | 1 | ता हा |

يَّخْشٰى ﴿٣﴾ تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ﴿٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | ऊंचे | और आस्मान (जमा) | ज़मीन | बनाया | से जिस | नाज़िल किया हुआ | 3 | डरता है |

اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ﴿٥﴾ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | आस्मानों में | उस के लिए जो | 5 | क़ाइम | अ़र्श पर | रहमान |

فِي الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ﴿٦﴾ وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बात | तू पुकार कर कहे | और अगर | 6 | गीली मिट्टी | नीचे | और जो | उन दोनों के दरमियान | और जो | ज़मीन में |

فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَاَخْفٰى ﴿٧﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ لَهُ الْاَسْمَآءُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सब नाम | उसी के लिए | उस के सिवा | नहीं कोई माबूद | अल्लाह | 7 | और निहायत पोशीदा | भेद | जानता है | तो बेशक वह |

وقف لازم

الْحُسْنٰى ﴿٨﴾ وَهَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ﴿٩﴾ اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो कहा | आग | जब उस ने देखी | 9 | मूसा (अ) | कोई ख़बर | तुम्हारे पास आई | और क्या | 8 | अच्छे |

لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| या | चिंगारी | उस से | तुम्हारे पास लाऊँ | शायद मैं | आग | देखी है | बेशक मैं ने | तुम ठहरो | अपने घर वालों को |

اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ﴿١٠﴾ فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِيَ يٰمُوْسٰى ﴿١١﴾ اِنِّيْٓ اَنَا

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मैं | बेशक मैं | 11 | ऐ मूसा (अ) | आवाज़ आई | वह वहां आए | जब पस | 10 | रास्ता | आग पर-के | मैं पाऊँ |

رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۚ اِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٢﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 12 | तुवा | पाक मैदान | बेशक तुम | अपनी जूतियां | सो उतार लो | तुम्हारा रब |

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने किए अमल नेक उन के लिए पैदा कर देगा रहमान (दिलों में) मुहब्बत (96)
पस उस के सिवा नहीं कि हम ने (क़ुरआन) को आप (स) की ज़बान में आसान कर दिया ताकि उस से आप (स) परहेज़गारों को ख़ुशख़बरी दें और झगड़ालू लोगों को उस से डराएं। (97)
और इन से क़ब्ल हम ने हलाक कर दिए कितने ही गिरोह, क्या तुम उन में से किसी को देखते हो? या उन की आहट सुनते हो? (98)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
ता-हा। (1)
हम ने क़ुरआन तुम पर इस लिए नाज़िल नहीं किया कि तुम मुशक़्क़त में पड़ जाओ। (2)
मगर उस के लिए नसीहत है जो डरता है। (3)
नाज़िल किया हुआ है (उस की तरफ़ से) जिस ने ज़मीन और ऊंचे आस्मान बनाए। (4)
रहमान अ़र्श पर क़ाइम है। (5)
उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और जो उन दोनों के दरमियान है, और जो ज़मीन के नीचे है। (6)
और अगर तू पुकार कर कहे बात तो बेशक वह भेद जानता है और निहायत पोशीदा (बात को भी)। (7)
अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उसी के लिए हैं सब अच्छे नाम। (8)
और क्या तुम्हारे पास मूसा (अ) की ख़बर आई? (9)
जब उस ने आग देखी तो अपने घर वालों से कहा कि तुम ठहरो, बेशक मैं ने देखी है आग, शायद मैं तुम्हारे पास उस से चिंगारी ले आऊँ, या आग पर रास्ते (का पता) पा लूँ। (10)
पस जब वह वहां आए, तो आवाज़ आई ऐ मूसा (अ)। (11)
बेशक मैं ही तुम्हारा रब हूँ, सो अपनी जूतियां उतार लो, बेशक तुम तुवा के पाक वादी में हो। (12)

और मैं ने तुम्हें पसंद किया, पस जो वहि की जाए उस की तरफ़ कान लगा कर सुनो। (13)
बेशक मैं ही अल्लाह हूँ, मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, पस मेरी इबादत करो और क़ाइम करो मेरी याद के लिए नमाज, (14)
बेशक क़ियामत आने वाली है, मैं चाहता हूँ कि उसे पोशीदा रखूँ ताकि हर शख़्स को बदला दिया जाए उस कोशिश का जो वह करे। (15)
पस तुझे उस से वह न रोक दे जो उस पर ईमान नहीं रखता और अपनी ख़ाहिश के पीछे पड़ा हुआ है, फिर तू हलाक हो जाए। (16)
और ऐ मूसा (अ) यह तेरे दाहने हात में क्या है? (17)
उस ने कहा यह मेरा अ़सा है, मैं इस पर टेक लगाता हूँ, और इस से पत्ते झाड़ता हूँ अपनी बकरियों पर, और इस में मेरे और भी कई फ़ाइदे हैं। (18)
उस ने फ़रमाया ऐ मूसा (अ)! इसे (ज़मीन पर) डाल दे। (19)
पस उस ने डाल दिया, तो नागाह वह दौड़ता हुआ सांप (बन गया)। (20)
(अल्लाह ने) फ़रमाया उसे पकड़ ले, और न डर, हम जल्द उसे उस की पहली हालत पर लौटा देंगे, (21)
अपना हाथ अपनी बग़ल में लगा ले, वह किसी ऐब के बग़र सफ़ेद (चमकता हुआ) निकलेगा, (यह) दूसरी निशानी है। (22)
ताकि हम तुझे दिखाएं अपनी बड़ी निशानियों में से। (23)
तू फ़िरऔन की तरफ़ जा, बेशक वह सरशक हो गया है। (24)
मूसा (अ) ने कहा, ऐ मेरे रब! मेरे लिए कुशादा कर दे मेरा सीना। (25)
और मेरे लिए मेरा काम आसान कर दे। (26)
और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे। (27)
कि वह मेरी बात समझ लें। (28)
और बना दे मेरे लिए वज़ीर (मुआविन) मेरे ख़ानदान से, (29)
मेरा भाई हारून (अ)। (30)
उस से मेरी कुव्वत (कमर) मज़बूत कर दे। (31)
और उसे शरीक कर दे मेरे काम में, (32)
ताकि हम कस्‌रत से तेरी तस्‌बीह करें, (33)
और कस्‌रत से तुझे याद करें। (34)
बेशक तू हमें ख़ूब देखता है। (35)
अल्लाह ने फ़रमाया, ऐ मूसा (अ)! जो तू ने मांगा तहक़ीक़ तुझे दे दिया गया। (36)
और तहक़ीक़ हम ने तुझ पर एक बार और भी एहसान किया था। (37)
जब हम ने तेरी वालिदा को इल्‌हाम किया जो इल्‌हाम करना था। (38)

وَاَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوْحٰى ﴿١٣﴾ اِنَّنِيْٓ اَنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नही कोई माबूद | अल्लाह | मैं | बेशक मैं | 13 | उस की तरफ़ जो वहि की जाए | पस कान लगा कर सुनो | तुम्हें पसन्द किया | और मैं |

اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدْنِيْ ۙ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ ﴿١٤﴾ اِنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आने वाली | क़ियामत | बेशक | 14 | मेरी याद के लिए | नमाज़ | और क़ाइम करो | पस मेरी इबादत करो | मेरे सिवा |

اَكَادُ اُخْفِيْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا تَسْعٰى ﴿١٥﴾ فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से जो | पस तुझे रोक न दे | 15 | उस का जो वह कोशिश करे | शख़्स | हर | ताकि बदला दिया जाए | मैं उसे पोशीदा रखूँ | मैं चाहता हूँ |

مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ﴿١٦﴾ وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى ﴿١٧﴾

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 17 | ऐ मूसा (अ) | तेरे दाहने हाथ में | यह | और क्या | 16 | फिर तू हलाक हो जाए | अपनी ख़ाहिश | और वह पीछे पड़ा | उस पर | ईमान नहीं रखता | जो |

قَالَ هِيَ عَصَايَ ۚ اَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَاَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِيْ وَلِيَ فِيْهَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस में | और मेरे लिए | अपनी बकरियां | पर | और मैं पत्ते झाड़ता हूँ इस से | इस पर | मैं टेक लगाता हूँ | मेरा अ़सा | यह | उस ने कहा |

مَاٰرِبُ اُخْرٰى ﴿١٨﴾ قَالَ اَلْقِهَا يٰمُوْسٰى ﴿١٩﴾ فَاَلْقٰىهَا فَاِذَا هِيَ حَيَّةٌ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सांप | तो नागाह वह | पस उस ने डाल दिया | 19 | ऐ मूसा (अ) | उसे डाल दे | उस ने फ़रमाया | 18 | और भी | (ज़रूरतें) फ़ाइदे |

تَسْعٰى ﴿٢٠﴾ قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ ۫ سَنُعِيْدُهَا سِيْرَتَهَا الْاُوْلٰى ﴿٢١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 21 | पहली | उस की हालत | हम जल्द उसे लौटा देंगे | और न डर | उसे पकड़ ले | फ़रमाया | 20 | दौड़ता हुआ |

وَاضْمُمْ يَدَكَ اِلٰى جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ اٰيَةً

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| निशानी | ऐब | बग़ैर किसी | सफ़ेद | वह निकलेगा | अपनी बग़ल | तक- से | अपना हाथ | और (मिला) लगा |

اُخْرٰى ﴿٢٢﴾ لِنُرِيَكَ مِنْ اٰيٰتِنَا الْكُبْرٰى ﴿٢٣﴾ اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक वह | फ़िरऔन | तरफ़ | तू जा | 23 | बड़ी | अपनी निशानियों से | ताकि हम तुझे दिखाएं | 22 | दूसरी |

طَغٰى ﴿٢٤﴾ قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ ﴿٢٥﴾ وَيَسِّرْ لِيْٓ اَمْرِيْ ﴿٢٦﴾ وَاحْلُلْ ع ٢٣ ١٠

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और खोल दे | 26 | मेरा काम | और मेरे लिए आसान कर दे | 25 | मेरा सीना | मेरे लिए | कुशादा कर दे | ऐ मेरे रब | उस ने कहा | 24 | सरशक हो गया |

عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِيْ ﴿٢٧﴾ يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ ﴿٢٨﴾ وَاجْعَلْ لِّيْ وَزِيْرًا مِّنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | मेरा वज़ीर | मेरे लिए | और बना दे | 28 | मेरी बात | वह समझ लें | 27 | मेरी ज़बान | से की | गिरह |

اَهْلِيْ ﴿٢٩﴾ هٰرُوْنَ اَخِي ﴿٣٠﴾ اشْدُدْ بِهٖٓ اَزْرِيْ ﴿٣١﴾ وَاَشْرِكْهُ فِيْٓ اَمْرِيْ ﴿٣٢﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 32 | मेरे काम में | और शरीक कर दे | 31 | मेरी कुव्वत | मज़बूत कर उस से | 30 | मेरा भाई | हारून (अ) | 29 | ख़ानदान |

كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيْرًا ﴿٣٣﴾ وَّنَذْكُرَكَ كَثِيْرًا ﴿٣٤﴾ اِنَّكَ كُنْتَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तू है | बेशक तू | 34 | कस्‌रत से | और तुझे याद करें | 33 | कस्‌रत से | हम तेरी तस्‌बीह करें | ताकि |

بِنَا بَصِيْرًا ﴿٣٥﴾ قَالَ قَدْ اُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى ﴿٣٦﴾ وَلَقَدْ مَنَنَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तहक़ीक़ हम ने एहसान किया | 36 | ऐ मूसा (अ) | जो तू ने मांगा | तहक़ीक़ तुझे दे दिया गया | अल्लाह ने फ़रमाया | 35 | हमें ख़ूब देखता है |

عَلَيْكَ مَرَّةً اُخْرٰٓى ﴿٣٧﴾ اِذْ اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّكَ مَا يُوْحٰٓى ﴿٣٨﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 38 | जो इल्‌हाम करना था | तेरी वालिदा | तरफ़- को | हम ने इल्‌हाम किया | जब | 37 | और भी | एक बार | तुझ पर |

وقف لازم

اَنِ اقْذِفِيْهِ فِى التَّابُوْتِ فَاقْذِفِيْهِ فِى الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कि तू उसे डाल | सन्दूक़ में | फिर उसे डाल दे | दर्या में | फिर उसे डाल देगा | दर्या |

بِالسَّاحِلِ يَاْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّىْ وَعَدُوٌّ لَّهٗ ؕ وَاَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| साहिल पर | उसे ले लेगा | मेरा दुश्मन | और उस का दुश्मन | और मैं ने डाल दी | तुझ पर | मुहब्बत |

مِّنِّىْ ۚ وَلِتُصْنَعَ عَلٰى عَيْنِىْ ﴿٣٩﴾ اِذْ تَمْشِىْٓ اُخْتُكَ فَتَقُوْلُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी तरफ़ से | ताकि तू पर्वरिश पाए | मेरी आँखों पर (मेरे सामने) | 39 | जब | जा रही थी | तेरी बहन | तो वह कह रही थी |

هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى مَنْ يَّكْفُلُهٗ ؕ فَرَجَعْنٰكَ اِلٰٓى اُمِّكَ كَىْ تَقَرَّ عَيْنُهَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या मैं तुम्हें बताऊँ | पर | जो | उस की पर्वरिश करे | पस हम ने तुझे लौटा दिया | तरफ़ | तेरी माँ | ताकि ठंडी हों | उस की आँख |

وَلَا تَحْزَنَ ۚ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنٰكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنّٰكَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और वह ग़म न करे | और तू ने क़त्ल करदिया | एक शख़्स | तो हम ने तुझे नजात दी | ग़म से | और तुझे आज़माया |

فُتُوْنًا ۫ فَلَبِثْتَ سِنِيْنَ فِىْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ ۙ ثُمَّ جِئْتَ عَلٰى قَدَرٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कई आज़माइशें | फिर तू ठहरा रहा | कई साल | में | मदयन वाले | फिर | तू आया | वक़्ते मुक़र्रर पर |

يّٰمُوْسٰى ﴿٤٠﴾ وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِىْ ﴿٤١﴾ اِذْهَبْ اَنْتَ وَاَخُوْكَ بِاٰيٰتِىْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ मूसा (अ) | 40 | और हम ने तुझे बनाया | ख़ास अपने लिए | 41 | तू जा | तू | और तेरा भाई | मेरी निशानियों के साथ |

وَلَا تَنِيَا فِىْ ذِكْرِىْ ﴿٤٢﴾ اِذْهَبَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿٤٣﴾ فَقُوْلَا لَهٗ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और सुस्ती न करना | मेरी याद में | 42 | तुम दोनों जाओ | तरफ़ पास | फ़िरऔन | बेशक वह | सरकश हो गया | 43 | तुम कहो | उस को |

قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ يَتَذَكَّرُ اَوْ يَخْشٰى ﴿٤٤﴾ قَالَا رَبَّنَآ اِنَّنَا نَخَافُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नर्म बात | शायद वह | नसीहत पकड़ ले | या | वह डर जाए | 44 | दोनों बोले | ऐ हमारे रब | बेशक हम डरते हैं |

اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيْنَآ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ﴿٤٥﴾ قَالَ لَا تَخَافَآ اِنَّنِىْ مَعَكُمَآ اَسْمَعُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि वह ज़ियादती करे | हम पर | या | वह हद से बढ़े | 45 | उस ने फ़रमाया | तुम डरो नहीं | बेशक मैं | तुम्हारे साथ हूँ | मैं सुनता हूँ |

وَاَرٰى ﴿٤٦﴾ فَاْتِيٰهُ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ فَاَرْسِلْ مَعَنَا بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और मैं देखता हूँ | 46 | पस जाओ उस के पास | और तुम कहो | बेशक हम दोनों भेजे हुए | तेरा रब | पस भेज दे | हमारे साथ | बनी इस्राईल |

وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ؕ قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ ؕ وَالسَّلٰمُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हें अ़ज़ाब न दे | हम तेरे पास आए हैं | निशानी के साथ | से | तेरा रब | और सलाम |

عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ﴿٤٧﴾ اِنَّا قَدْ اُوْحِىَ اِلَيْنَآ اَنَّ الْعَذَابَ عَلٰى

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | जो-जिस | उस ने पैरवी की | हिदायत | 47 | बेशक | वहि की गई | हमारी तरफ़ | कि | अ़ज़ाब | पर |

مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿٤٨﴾ قَالَ فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى ﴿٤٩﴾ قَالَ رَبُّنَا الَّذِىْٓ اَعْطٰى

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिस ने झुटलाया | और मुंह फेरा | 48 | उस ने कहा | पस कौन | तुम्हारा रब | ऐ मूसा (अ) | 49 | उस ने कहा | हमारा रब | जिस ने | अ़ता की |

كُلَّ شَىْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰى ﴿٥٠﴾ قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰى ﴿٥١﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हर चीज़ | उस की शक्ल ओ सूरत | फिर | रहनुमाई की | 50 | उस ने कहा | फिर क्या | हाल | जमाअ़तें | पहली | 51 |

कि तू उसे सन्दूक़ में डाल, फिर सन्दूक़ दर्या में डाल दे, फिर डाल देगा दर्या उसे साहिल पर, मेरा और उस का दुश्मन उस को ले लेगा (दर्या से निकाल लेगा) और मैं ने डाल दी तुझ पर मुहब्बत अपनी तरफ़ से (मख़्लूक़ तुझ से मुहब्बत करे) ताकि तू पर्वरिश पाए मेरे सामने। (39)

और (याद कर) जब तेरी बहन जा रही थी तो (आले फ़िरऔन से) कह रही थी कि क्या मैं तुम्हें (उस का पता) बताऊँ जो इस की पर्वरिश करे? पस हम ने तुझे तेरी माँ की तरफ़ लौटा दिया, ताकि उस की आँखें ठंडी हों, और वह ग़म न करे, और तू ने एक शख़्स को क़त्ल कर दिया तो हम ने तुझे नजात दी ग़म से, और तुझे कई आज़माइशों से आज़माया, फिर कई साल मदयन वालों में ठहरा रहा, फिर तू आया वक़्ते मुक़र्रर पर ऐ मूसा (अ) (मुताबिक़ तक़्दीरे इलाही)। (40)

और मैं ने तुझे ख़ास अपने लिए बनाया। (41)

तुम और तुम्हारा भाई दोनों जाओ मेरी निशानियों के साथ, और सुस्ती न करना मेरी याद में। (42)

तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ, बेशक वह सरकश हो गया है। (43)

तुम उस को नर्म बात कहो शायद वह नसीहत पकड़ ले या डर जाए। (44)

वह बोले, ऐ हमारे रब! बेशक हम डरते हैं कि (कहीं) वह हम पर ज़ियादती (न) करे या हद से (न) बढ़े। (45)

उस ने फ़रमाया तुम डरो नहीं, बेशक मैं तुम्हारे साथ हूँ, मैं सुनता और देखता हूँ। (46)

पस उस के पास जाओ और कहो बेशक हम दोनों भेजे हुए हैं तेरे रब के, पस बनी इस्राईल को हमारे साथ भेज दे और उन्हें अ़ज़ाब न दे, हम तेरे पास तेरे रब की निशानी के साथ आए हैं, और सलाम हो उस पर जिस ने हिदायत की पैरवी की। (47)

बेशक हमारी तरफ़ वहि की गई है कि अ़ज़ाब है उस पर जिस ने झुटलाया और मुंह फेरा। (48)

उस ने कहा ऐ मूसा (अ)! पस तुम्हारा रब कौन है? (49)

मूसा (अ) ने कहा हमारा रब वह है जिस ने हर चीज़ को उस की शक्ल ओ सूरत अ़ता की फिर उस की रहनुमाई की। (50)

उस ने कहा फिर पहली जमाअ़तों का क्या हाल है? (51)

मूसा (अ) ने कहा उस का इल्म मेरे रब के पास किताब में है, मेरा रब न ग़लती करता है, और न भूलता है। (52)
वह जिस ने जमीन को तुम्हारे लिए बिछौना बनाया, और तुम्हारे लिए चलाईं उस में राहें, और आस्मान से पानी उतारा, फिर हम ने उस से सब्जी की मुख़्तलिफ़ अक्साम निकालीं (53)
तुम खाओ और अपने मवेशी चराओ, बेशक उस में अक्ल वालों के लिए निशानियां हैं। (54)
उस (जमीन) से हम ने तुम्हें पैदा किया और उसी में हम तुम्हें लौटा देंगे, और उसी से हम तुम्हें दूसरी बार निकालेंगे। (55)
और हम ने उसे (फ़िरऔन) को अपनी तमाम निशानियां दिखाईं तो उस ने झुटलाया और इन्कार किया। (56)
उस ने कहा ऐ मूसा (अ)! क्या तू हमारे पास आया है कि तू हमें अपने जादू के ज़रीए हमारी ज़मीन (मुल्क से) निकाल दे। (57)
पस हम तेरे मुक़ाबल जरूर लाएंगे उस जैसा एक जादू, पस हमारे और अपने दरमियान एक वक़्त मुक़र्रर कर ले कि न हम उस के खिलाफ़ करें और न तू, एक हमवार मैदान (में मुक़ाबला होगा)। (58)
मूसा (अ) ने कहा तुम्हारा वादा मेले का दिन है और यह कि लोग दिन चढ़े जमा किए जाएं। (59)
फिर लौट गया फ़िरऔन, सो उस ने अपना दाओ (जादू का सामान) जमा किया, फिर आया। (60)
मूसा (अ) ने उन से कहा तुम पर ख़राबी हो, अल्लाह पर न घड़ो झूट कि वह तुम्हें अज़ाब से हलाक करदे, और जिस ने झूट बान्धा वह नामुराद हुआ (61)
तो वह बाहम अपने काम में झगड़ने लगे और उन्होंने छुप कर मशवरा किया। (62)
वह कहने लगे तहक़ीक़ यह दोनों जादूगर हैं, यह चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारी सर जमीन से निकाल दें अपने जादू के ज़रीए, और तुम्हारा अच्छा तरीक़ा ले जाएं (नाबूद कर दें)। (63)
लिहाज़ा अपने दाओ इकट्ठे कर लो, फिर सफ़ बान्ध कर आओ, और तहक़ीक़ कामयाब होगा वही जो आज ग़ालिब रहा। (64)
यह बोले ऐ मूसा (अ)! या तो (पहले अपना दाओ) डाल या हम पहले डालें। (65)

قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ فِيْ كِتٰبٍ ۚ لَا يَضِلُّ رَبِّيْ وَلَا يَنْسَى ﴿٥٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 52 | और न वह भूलता है | मेरा रब | वह न ग़लती करता है | किताब में | मेरा रब | पास | उस का इल्म | उस ने कहा |

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राहें | उस में | तुम्हारे लिए | और चलाईं | बिछौना | जमीन | तुम्हारे लिए | बनाया | वह जिस ने |

وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ شَتّٰى ﴿٥٣﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 53 | मुख़्तलिफ़ | सब्ज़ी | से | जोड़े (अक्साम) | उस से | फिर हम ने निकाले | पानी | आस्मान | से | और उतारा |

كُلُوْا وَارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ﴿٥٤﴾ مِنْهَا ع ٢ ١١

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से | 54 | अक्ल वालों के लिए | निशानियां | उस में | बेशक | अपने मवेशी | और चराओ | तुम खाओ |

خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ﴿٥٥﴾ وَلَقَدْ اَرَيْنٰهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम ने उसे दिखाईं | 55 | दूसरी बार | हम निकालेंगे तुम्हें | और उस से | हम लौटा देंगे तुम्हें | और उस में | हम ने तुम्हें पैदा किया |

اٰيٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَاَبٰى ﴿٥٦﴾ قَالَ اَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारी ज़मीन से | कि तू निकाल दे हमें | क्या तू आया हमारे पास | उस ने कहा | 56 | तो उस ने झुटलाया और इन्कार किया | तमाम | अपनी निशानियां |

بِسِحْرِكَ يٰمُوْسٰى ﴿٥٧﴾ فَلَنَاْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهٖ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अपने दरमियान | हमारे दरमियान | पस मुक़र्रर कर | उस जैसा | एक जादू | पस ज़रूर हम तेरे मुक़ाबल लाएंगे | 57 | ऐ मूसा (अ) | अपने जादू के ज़रीए |

مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهٗ نَحْنُ وَلَآ اَنْتَ مَكَانًا سُوًى ﴿٥٨﴾ قَالَ مَوْعِدُكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारा वादा | उस ने कहा | 58 | एक हमवार मैदान | तू | और न | हम | हम उस के खिलाफ़ न करें | एक वादा (वक़्त) |

يَوْمُ الزِّيْنَةِ وَاَنْ يُّحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ﴿٥٩﴾ فَتَوَلّٰى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने जमा किया | फ़िरऔन | फिर लौट गया | 59 | दिन चढ़े | लोग | जमा किए जाएं | और यह कि | जीनत (मेले) का दिन |

كَيْدَهٗ ثُمَّ اَتٰى ﴿٦٠﴾ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| झूट | अल्लाह पर | न घड़ो | ख़राबी तुम पर | मूसा (अ) | उन से | उस ने कहा | 60 | फिर वह आया | अपना दाओ |

فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى ﴿٦١﴾ فَتَنَازَعُوْٓا اَمْرَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने काम में | तो वह झगड़ने लगे | 61 | जिस ने झूट बान्धा | और वह नामुराद हुआ | अज़ाब से | कि वह हलाक करदे तुम्हें |

بَيْنَهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجْوٰى ﴿٦٢﴾ قَالُوْٓا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह चाहते हैं | अलबत्ता जादूगर | यह दोनों | तहक़ीक़ | वह कहने लगे | 62 | मशवरा | और उन्हों ने छुप कर किया | बाहम |

اَنْ يُّخْرِجٰكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ الْمُثْلٰى ﴿٦٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 63 | अच्छा | तुम्हारा तरीक़ा | और वह लेजाएं | अपने जादू के जरीए | तुम्हारी सर जमीन | से | कि तुम्हें निकाल दें |

فَاَجْمِعُوْا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوْا صَفًّا ۚ وَقَدْ اَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلٰى ﴿٦٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 64 | ग़ालिब रहा | जो | आज | और तहक़ीक़ कामयाब होगा | सफ़ बान्ध कर | फिर तुम आओ | अपने दाओ | लिहाज़ा इकट्ठे कर लो तुम |

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰى ﴿٦٥﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 65 | डालें | जो | पहले | यह कि हम हों | और या | यह कि तू डाल | या तो | ऐ मूसा (अ) | वह बोले |

قَالَ بَلْ اَلْقُوْا ۚ فَاِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन का जादू | से | उस के | खयाल में आईं | और उन की लाठियां | उन की रस्सियां | तो नागहां | तुम डालो | बल्कि | उस ने कहा |

اَنَّهَا تَسْعٰى ﴿٦٦﴾ فَاَوْجَسَ فِيْ نَفْسِهٖ خِيْفَةً مُّوْسٰى ﴿٦٧﴾ قُلْنَا لَا تَخَفْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम डरो नही | हम ने कहा | 67 | मूसा (अ) | कुछ ख़ौफ़ | अपने दिल में | तो पाया (महसूस किया) | 66 | दौड़ रही है | कि वह |

اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى ﴿٦٨﴾ وَاَلْقِ مَا فِيْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْا ۚ اِنَّمَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | जो उन्हों ने बनाया | वह निगल जाएगा | तुम्हारे दाएं हाथ में | जो | और डालो | 68 | ग़ालिब | तुम ही | बेशक तुम |

صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ ۚ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُ حَيْثُ اَتٰى ﴿٦٩﴾ فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जादूगर | पस डाल दिए गए | 69 | वह आए | जहां (कहीं) | जादूगर | और कामयाब नहीं होगा | जादूगर | फरेब | उन्हों ने बनाया |

سُجَّدًا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ هٰرُوْنَ وَمُوْسٰى ﴿٧٠﴾ قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पहले | उस पर | तुम ईमान लाए | उस ने कहा | 70 | और मूसा (अ) | हारून (अ) | रब पर | हम ईमान लाए | वह बोले | सिज्दे में |

اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَاُقَطِّعَنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस मैं ज़रूर काटूँगा | जादू | तुम्हें सिखाया | वह जिस ने | तुम्हारा बड़ा | बेशक वह | तुम्हें | कि मैं इजाज़त दूँ |

اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ فِيْ جُذُوْعِ النَّخْلِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| खजूर के तने | में पर | और मैं तुम्हें ज़रूर सूली दूँगा | दूसरी तरफ़ से | और तुम्हारे पाऊँ | तुम्हारे हाथ |

وَلَتَعْلَمُنَّ اَيُّنَآ اَشَدُّ عَذَابًا وَّاَبْقٰى ﴿٧١﴾ قَالُوْا لَنْ نُّؤْثِرَكَ عَلٰى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | हम हरगिज़ तुझे तरजीह न देंगे | उन्हों ने कहा | 71 | और ता देर रहने वाला | अज़ाब में | ज़ियादा सख़्त | हम में कौन | और तुम खूब जान लोगे |

مَا جَآءَنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالَّذِيْ فَطَرَنَا فَاقْضِ مَآ اَنْتَ قَاضٍ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| करने वाला | तू | जो | पस तू कर गुज़र | और वह जिस ने हमें पैदा किया | वाज़ेह दलाइल से | जो हमारे पास आए |

اِنَّمَا تَقْضِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٧٢﴾ اِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि वह बख़्शदे हमें | अपने रब पर | बेशक हम ईमान लाए | 72 | दुनिया की ज़िन्दगी | इस | तू करे गा | उस के सिवा नही |

خَطٰيٰنَا وَمَآ اَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ۚ وَاللّٰهُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿٧٣﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 73 | बेहतर और हमेशा बाक़ी रहने वाला | और अल्लाह | जादू | से | उस पर | तू ने हमें मजबूर किया | और जो | हमारी खताएं |

اِنَّهٗ مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | न वह मरेगा | जहन्नम | उस के लिए | तो बेशक | मुज्रिम बन कर | अपने रब के सामने | जो आया | बेशक वह |

وَلَا يَحْيٰى ﴿٧٤﴾ وَمَنْ يَّاْتِهٖ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَاُولٰٓئِكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस यही लोग | अच्छे | उस ने अ़मल किए | मोमिन बन कर | उस के पास आया | और जो | 74 | और न जिएगा |

لَهُمُ الدَّرَجٰتُ الْعُلٰى ﴿٧٥﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के नीचे | जारी है | हमेशा रहने वाले | बाग़ात | 75 | बुलन्द | दरजे | उन के लिए |

الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا مَنْ تَزَكّٰى ﴿٧٦﴾ ع ٣ ٢٢ ١٢

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 76 | जो पाक हुआ | जजा है | और यह | उस में | हमेशा रहेंगे | नहरें |

उस ने कहा (नहीं) बल्कि तुम डालो, तो नागहां उन की रस्सियां और उन की लाठियां उस (मूसा अ) के खयाल में आईं (ऐसे नमूदार हुईं) उन के जादू से कि गोया वह दौड़ रही हैं। (66)
तो मूसा (अ) ने अपने दिल में कुछ ख़ौफ़ महसूस किया। (67)
हम ने कहा तुम डरो नहीं, बेशक तुम ही ग़ालिब रहोगे। (68)
और जो तुम्हारे दाएं हाथ में है डालो वह निगल जाएगा जो कुछ उन्हों ने बनाया है, बेशक (जो कुछ) उन्हों ने बनाया है वह जादूगर का फ़रेब है, और जादूगर किसी शान से आए वह कामयाब नहीं होता। (69)
पस जादूगर सिज्दे में डाल दिए गए (गिर पड़े) वह बोले हम हारून (अ) और मूसा (अ) के रब पर ईमान लाए। (70)
फ़िरऔन ने कहा तुम उस पर ईमान ले आए (इस से) पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ, बेशक वह (मूसा अ) तुम्हारा बड़ा है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया है, पस मैं ज़रूर काट डालूँगा तुम्हारे हाथ पाऊँ (जानिब) ख़िलाफ़ से (एक तरफ़ का हाथ दूसरी तरफ़ का पाऊँ) और मैं जरूर तुम्हें खजूर के तनों पर सूली दूँगा, और तुम खूब जान लोगे कि हम दोनों में से किस का अज़ाब ज़ियादा सख़्त और देर पा है। (71)
उन्हों ने कहा हम तुझे हरगिज़ तरजीह न देंगे उन वाज़ेह दलाइल से जो हमारे पास आए हैं और उस पर जिस ने हमें पैदा किया है, पस तू कर गुज़र जो तू करने वाला है, उस के सिवा नहीं कि तू (सिर्फ़) इस दुनिया की ज़िन्दगी में करेगा। (72)
बेशक हम अपने रब पर ईमान लाए कि वह हमारी खताएं बखशदे और उस पर जो तू ने हमें जादू के लिए मजबूर किया, और अल्लाह बेहतर है और हमेशा बाक़ी रहने वाला है। (73)
बेशक वह, जो अपने रब के सामने आया मुज्रिम बन कर तो बेशक उस के लिए जहन्नम है, न वह उस में मरेगा और न जिएगा। (74)
और जो उस के पास मोमिन बन कर आया और उस ने अच्छे अमल किए, पस यही लोग हैं जिन के लिए दरजे बुलन्द हैं। (75)
हमेशा रहने वाले बाग़ात, जारी हैं उन के नीचे नहरें, उन में हमेशा रहेंगे, और यह जज़ा है (उस की) जो पाक हुआ। (76)

وَلَقَدْ أَوْحَيْنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰٓ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِى فَاضْرِبْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पस बना लेना | मेरे बन्दे | कि रातों रात लेजा | मूसा (अ) | तरफ़ - को | और तहक़ीक़ हम ने वहि की |

لَهُمْ طَرِيقًا فِى ٱلْبَحْرِ يَبَسًا لَّا تَخَافُ دَرَكًا وَلَا تَخْشَىٰ ﴿٧٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 77 | और न डर | पकड़ना | ख़ौफ़ होगा | न | ख़ुश्क | दर्या में | रास्ता | उन के लिए |

فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُودِهِۦ فَغَشِيَهُم مِّنَ ٱلْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ﴿٧٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 78 | जैसा कि उन को ढांप लिया | दर्या से | उन्हें ढांप लिया | अपने लश्कर के साथ | फ़िरऔन | फिर उन का पीछा किया |

وَأَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُۥ وَمَا هَدَىٰ ﴿٧٩﴾ يَٰبَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ قَدْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तहक़ीक़ | ऐ बनी इस्राईल | 79 | और न हिदायत दी | अपनी क़ौम | फ़िरऔन | और गुमराह किया |

أَنجَيْنَٰكُم مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوَٰعَدْنَٰكُمْ جَانِبَ ٱلطُّورِ ٱلْأَيْمَنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दाएं | कोहे तूर | जानिब | और हम ने तुम से वादा किया | तुम्हारा दुश्मन | से | हम ने तुम्हें नजात दी |

وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ ٱلْمَنَّ وَٱلسَّلْوَىٰ ﴿٨٠﴾ كُلُوا۟ مِن طَيِّبَٰتِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पाकीज़ा चीज़ें | से | तुम खाओ | 80 | और सलवा | मन्न | तुम पर | और हम ने उतारा |

مَا رَزَقْنَٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا۟ فِيهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِى ۖ وَمَن

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | मेरा ग़ज़ब | तुम पर | कि उतरेगा | उस में | और न सरकशी करो | जो हम ने तुम्हें दिया |

يَحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِى فَقَدْ هَوَىٰ ﴿٨١﴾ وَإِنِّى لَغَفَّارٌ لِّمَن

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस को जो | बड़ा बख़्शने वाला | और बेशक मैं | 81 | तो वह गिरा (नीस्त ओ नाबूद हुआ) | मेरा ग़ज़ब | उस पर | उतरा |

تَابَ وَءَامَنَ وَعَمِلَ صَٰلِحًا ثُمَّ ٱهْتَدَىٰ ﴿٨٢﴾ وَمَآ أَعْجَلَكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुझे जल्द लाई | और क्या (चीज़) | 82 | हिदायत पर रहा | फिर | नेक | और उस ने अमल किया | और वह ईमान लाया | तौबा की |

عَن قَوْمِكَ يَٰمُوسَىٰ ﴿٨٣﴾ قَالَ هُمْ أُو۟لَآءِ عَلَىٰٓ أَثَرِى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरे पीछे | यह हैं | वह | उस ने कहा | 83 | ऐ मूसा (अ) | अपनी क़ौम से |

وَعَجِلْتُ إِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضَىٰ ﴿٨٤﴾ قَالَ فَإِنَّا قَدْ فَتَنَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आज़माइश में डाला | तहक़ीक़ | पस हम ने | उस ने कहा | 84 | ताकि तू राज़ी हो | ऐ मेरे रब | तेरी तरफ़ | और मैं ने जल्दी की |

قَوْمَكَ مِنۢ بَعْدِكَ وَأَضَلَّهُمُ ٱلسَّامِرِىُّ ﴿٨٥﴾ فَرَجَعَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पस लौटा | 85 | सामरी | और उन्हें गुमराह किया | तेरे बाद | तेरी क़ौम |

مُوسَىٰٓ إِلَىٰ قَوْمِهِۦ غَضْبَٰنَ أَسِفًا ۚ قَالَ يَٰقَوْمِ أَلَمْ يَعِدْكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या तुम से वादा नहीं किया था | ऐ मेरी क़ौम | उस ने कहा | अफ़सोस करता | ग़ुस्से में भरा हुआ | अपनी क़ौम की तरफ़ | मूसा (अ) |

رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۚ أَفَطَالَ عَلَيْكُمُ ٱلْعَهْدُ أَمْ أَرَدتُّمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| या तुम ने चाहा | मुद्दत | तुम पर | क्या तवील हो गई | अच्छा वादा | तुम्हारा रब |

أَن يَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُم مَّوْعِدِى ﴿٨٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 86 | मेरा वादा | फिर तुम ने ख़िलाफ़ किया | तुम्हारा रब | से - का | ग़ज़ब | तुम पर | कि उतरे |

और तहक़ीक़ हम ने वहि की मूसा (अ) को कि रातों रात मेरे बन्दों को (निकाल) ले जा, उन के लिए दर्या में (असा मार कर) ख़ुश्क रास्ता बना लेना, न तुझे पकड़ने का ख़ौफ़ होगा और न (ग़र्क़ होने का) डर होगा। (77) फिर फ़िरऔन ने अपने लश्कर के साथ उन का पीछा किया तो उन्हें दर्या (की मौजों) ने ढांप लिया, जैसा कि ढांप लिया (बिलकुल ग़र्क़ कर दिया)। (78) और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह किया और हिदायत न दी। (79) ऐ बनी इस्राईल (औलादे याक़ूब)! तहक़ीक़ हम ने तुम्हारे दुश्मन से तुम्हें नजात दी और कोहे तूर के दाएं जानिब तुम से (तौरेत अ़ता करने का) वादा किया और हम ने तुम पर उतारा "मन्न" और "सलवा"। (80) जो हम ने तुम्हें दिया उस में से पाकीज़ा चीज़ें खाओ, और उस में सरकशी न करो कि तुम पर उतरे मेरा ग़ज़ब, और जिस पर मेरा ग़ज़ब उतरा वह नीस्त ओ नाबूद हुआ। (81) और बेशक मैं बड़ा बख़्शने वाला हूँ उस को जिस ने तौबा की, और वह ईमान लाया और उस ने अ़मल किया नेक, फिर हिदायत पर रहा। (82) और ऐ मूसा (अ)! और क्या चीज़ तुझे अपनी क़ौम से जल्द लाई (क्यों जल्दी की)? (83) उस ने कहा वह मेरे पीछे (आ ही रहे) हैं, मैं ने तेरी तरफ़ (आने में) जल्दी की ताकि तू राज़ी हो। (84) उस ने कहा पस हम ने तहक़ीक़ तेरी क़ौम को आज़माइश में डाला, और उन्हें सामरी ने गुमराह किया। (85) पस मूसा (अ) अपनी क़ौम की तरफ़ लौटे, ग़ुस्से में भरे हुए, अफ़सोस करते हुए, कहा ऐ मेरी क़ौम! क्या तुम से तुम्हारे रब ने अच्छा वादा नहीं किया था? क्या तवील हो गई तुम पर (मेरी जुदाई की) मुद्दत? या तुम ने चाहा कि तुम पर तुम्हारे रब का ग़ज़ब उतरे? फिर तुम ने ख़िलाफ़ किया मेरे वादे के (वादा ख़िलाफ़ी की)। (86)

قَالُوْا مَآ اَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلٰكِنَّا حُمِّلْنَآ اَوْزَارًا مِّنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से- का | बोझ | हम पर लादा गया | और लेकिन (बल्कि) | अपने इख़्तियार से | तुम्हारा वादा | हम ने ख़िलाफ़ नहीं किया | वह बोले |

زِيْنَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنٰهَا فَكَذٰلِكَ اَلْقَى السَّامِرِيُّ ﴿٨٧﴾ فَاَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक बछड़ा | उन के लिए | फिर उस ने निकाला | 87 | सामरी | डाला | फिर उसी तरह | तो हम ने उसे डाल दिया | क़ौम का ज़ेवर |

جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ فَقَالُوْا هٰذَآ اِلٰهُكُمْ وَاِلٰهُ مُوْسٰى ۬ فَنَسِيَ ﴿٨٨﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 88 | फिर वह भूल गया | मूसा (अ) | और माबूद | तुम्हारा माबूद | यह | फिर उन्हों ने कहा | गाय की आवाज़ | उस के लिए | एक क़ालिब |

ع ١٣ / ١٢ اَفَلَا يَرَوْنَ اَلَّا يَرْجِعُ اِلَيْهِمْ قَوْلًا ۙ وَّلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ﴿٨٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 89 | और न नफ़ा | नुक़्सान | उन के | और इख़्तियार नहीं रखता | बात (जवाब) | उन की तरफ़ | कि वह नहीं फेरता | पस क्या वह नहीं देखते |

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ مِنْ قَبْلُ يٰقَوْمِ اِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ ۚ وَاِنَّ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बेशक | इस से | तुम आज़माए गए | इस के सिवा नहीं | ऐ मेरी क़ौम | उस से पहले | हारून (अ) | उन से | कहा | और तहक़ीक़ |

رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ فَاتَّبِعُوْنِيْ وَاَطِيْعُوْٓا اَمْرِيْ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम हरगिज़ जुदा न होंगे | उन्हों ने कहा | 90 | मेरी बात | और इताअत करो (मानो) | सो मेरी पैरवी करो | रहमान है | तुम्हारा रब |

عَلَيْهِ عٰكِفِيْنَ حَتّٰى يَرْجِعَ اِلَيْنَا مُوْسٰى ﴿٩١﴾ قَالَ يٰهٰرُوْنُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ हारून (अ) | उस ने कहा | 91 | मूसा (अ) | हमारी तरफ़ | लौटे | यहां तक कि | जमे हुए | उस पर |

مَا مَنَعَكَ اِذْ رَاَيْتَهُمْ ضَلُّوْٓا ﴿٩٢﴾ اَلَّا تَتَّبِعَنِ ۭ اَفَعَصَيْتَ اَمْرِيْ ﴿٩٣﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 93 | मेरा यह हुक्म | तो क्या तू ने नाफ़रमानी की | कि तू न मेरी पैरवी करे | 92 | वह गुमराह हो गए | तू ने देखा उन्हें | जब | तुझे किस चीज़ ने रोका |

قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَاْخُذْ بِلِحْيَتِيْ وَلَا بِرَاْسِيْ ۚ اِنِّيْ خَشِيْتُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| डरा | बेशक मैं | और न सर से | मुझे दाढ़ी से | न पकड़ें | ऐ मेरे माँ जाए | उस ने कहा |

اَنْ تَقُوْلَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِيْ ﴿٩٤﴾ قَالَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने कहा | 94 | मेरी बात | और न ख़याल रखा | बनी इस्राईल | दरमियान | तू ने तफ़रिक़ा डाल दिया | कि तुम कहोगे |

فَمَا خَطْبُكَ يٰسَامِرِيُّ ﴿٩٥﴾ قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوْا بِهٖ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस को | उन्हों ने न देखा | वह जो कि | मैं ने देखा | वह बोला | 95 | ऐ सामरी | तेरा हाल | पस क्या |

فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ اَثَرِ الرَّسُوْلِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذٰلِكَ سَوَّلَتْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फुसलाया | और इसी तरह | तो मैं ने वह डालदी | रसूल का नक़्शे क़दम | से | एक मुट्ठी | पस मैं ने मुट्ठी भर ली |

لِيْ نَفْسِيْ ﴿٩٦﴾ قَالَ فَاذْهَبْ فَاِنَّ لَكَ فِي الْحَيٰوةِ اَنْ تَقُوْلَ لَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| न | तू कहे | कि | ज़िन्दगी में | बेशक तेरे लिए | पस तू जा | उस ने कहा | 96 | मेरा नफ़्स | मुझे |

مِسَاسَ ۠ وَاِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهٗ ۚ وَانْظُرْ اِلٰٓى اِلٰهِكَ الَّذِيْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जिस | अपने माबूद | तरफ़ | और देख | हरगिज़ तुझ से ख़िलाफ़ न होगा | एक वक़्त मुक़र्रर | तेरे लिए | और बेशक | छूना (हाथ लगाना) |

ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا ۭ لَنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهٗ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ﴿٩٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 97 | उड़ा कर | दर्या में | फिर अलबत्ता उसे बिखेर देंगे | हम उसे अलबत्ता जलाएंगे | जमा हुआ | उस पर | तू रहता था |

वह बोले हम ने अपने इख़्तियार से तुम्हारे वादे के ख़िलाफ़ नहीं किया, बल्कि हम पर बोझ लादा गया क़ौम के ज़ेवर का, तो हम ने उसे (आग में) डाल दिया, फिर उसी तरह सामरी ने डाला। **(87)** फिर उस ने उन के लिए एक बछड़ा निकाला (बनाया), एक मूर्ति जिस में गाय की आवाज़ निकलती थी, फिर उन्हों ने कहा यह तुम्हारा माबूद है, और मूसा (अ) का माबूद है, वह (मूसा अ) तो भूल गया है। **(88)** भला क्या वह नहीं देखते? कि वह (बछड़ा) उन की तरफ़ बात नहीं फेरता (उन को जवाब नहीं देता) न उन के नुक़्सान का इख़्तियार रखता है और न नफ़ा का। **(89)** और तहक़ीक़ उन से हारून (अ) ने उस से पहले कहा था कि ऐ मेरी क़ौम! इस के सिवा नहीं कि तुम इस से आज़माए गए हो और बेशक तुम्हारा रब रहमान है, सो मेरी पैरवी करो और मेरी बात मानो। **(90)** उन्हों ने कहा हम हरगिज़ उस से जुदा न होंगे जमे हुए (बैठे रहेंगे) यहां तक कि मूसा (अ) हमारी तरफ़ लौटें। **(91)** उस (मूसा अ) ने कहा ऐ हारून (अ)! तुझे किस चीज़ ने रोका जब तू ने देखा कि वह गुमराह हो गए हैं? **(92)** कि तू ने मेरी पैरवी करे? तो क्या तू ने नाफ़रमानी की मेरे हुक्म की? **(93)** उस ने कहा ऐ मेरे माँ जाए! मुझे दाढ़ी से और न सर (के बालों) से पकड़ें, बेशक मैं डरा कि तुम कहोगे कि तू ने फूट डाल दिया बनी इस्राईल के दरमियान, और मेरी बात का ख़याल न रखा। **(94)** (फिर मूसा अ ने सामरी से) कहा ऐ सामरी! तेरा क्या हाल है? **(95)** वह बोला मैं ने वह देखा जिस को उन्हों ने नहीं देखा, पस मैं ने रसूल के नक़्शे क़दम से एक मुट्ठी भर ली तो मैं ने वह (बछड़े के क़ालिब में) डाल दी और इसी तरह मेरे नफ़्स ने मुझे फुसलाया। **(96)** मूसा (अ) ने कहा पस तू जा, बेशक तेरे लिए ज़िन्दगी में (यह सज़ा) है कि तू कहता फिरेः न छूना मुझे, और बेशक तेरे लिए एक वक़्ते मुक़र्रर है, हरगिज़ तुझ से ख़िलाफ़ न होगा (न टलेगा), और अपने माबूद की तरफ़ देख जिस पर तू (बैठा) रहता था जमा हुआ, हम उसे अलबत्ता जला देंगे फिर इस (की राख) उड़ा कर दर्या में ज़रूर बिखेर देंगे। **(97)**

इस के सिवा नहीं कि तुम्हारा माबूद अल्लाह है, वह जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, उस का इल्म हर शै पर मुहीत है। (98)
उसी तरह हम तुम से (वह) अहवाल बयान करते हैं जो गुज़र चुके, और तहक़ीक़ हम ने तुम्हें अपने पास से किताबे नसीहत (क़ुरआन) दिया। (99)
जिस ने उस से मुँह फेरा वह बेशक लादेगा क़ियामत के दिन भारी बोझ। (100)
वह उस में हमेशा रहेंगे, और बुरा है उन के लिए क़ियामत के दिन का बोझ। (101)
जिस दिन सूर में फूंक मारी जाएगी, और हम मुज्रीमों को इकटठा करेंगें उस दिन (उन की) आँखें नीली (वे नूर होंगी)। (102)
आपस में आहिस्ता आहिस्ता कहेंगे तुम (दुनिया में) सिर्फ़ दस दिन रहे हो। (103)
वह जो कहते हैं हम खूब जानते हैं जब उन का सब से अच्छी राह वाला (होशमन्द) कहेगा तुम सिर्फ़ एक दिन रहे हो। (104)
और वह आप (स) से पहाड़ो के बारे में दर्याफ़्त करते हैं, तो आप (स) कह दें मेरा रब उन्हें उड़ा कर बिखेर देगा। (105)
फिर उसे (जमीन को) एक हमवार मैदान कर छोड़ेगा। (106)
और तू न देखेगा उस में कोई कजी (नाहमवारी) और न कोई बुलन्दी। (107)
उस दिन सब पीछे चलेंगे एक पुकारने वाले के, उस के लिए कोई कजी न होगी और अल्लाह के सामने आवाज़ें पस्त हो जाएंगी, बस तू सिर्फ़ पस्त आवाज़ सुनेगा। (108)
उस दिन कोई शफ़ाअत नफ़ा न देगी मगर जिस को अल्लाह इजाज़त दे, और उस की बात पसंद करे। (109)
वह जानता है जो कुछ उन के आगे और उन के पीछे है, और वह (अपने इल्म में) उस का एहाता नहीं कर सकते। (110)
और चेहरे झुक जाएंगे "हैय ओ क़य्यूम" (जिन्दा क़ाइम) के सामने, और नामुराद हुआ वह जिस ने ज़ुल्म का बोझ उठाया। (111)
और जो कोई नेकी करे, बशर्ते यह कि वह मोमिन हो तो न उसे किसी ज़ुल्म का ख़ौफ़ होगा और न किसी नुक़सान का। (112)
और उसी तरह हम ने उस पर क़ुरआन नाज़िल किया अ़रबी में और हम ने उस में तरह तरह से डरावे बयान किए ताकि वह परहेज़गार हो जाएं या वह उन के लिए कोई नसीहत पैदा कर दे। (113)

إِنَّمَآ إِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ وَسِعَ كُلَّ شَىْءٍ عِلْمًا ﴿٩٨﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 98 | इल्म | हर शै | वसीअ (मुहीत है) | उस के सिवा | कोई माबूद | नहीं | वह जो | अल्लाह | तुम्हारा माबूद | इस के सिवा नहीं |

كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْۢبَآءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَقَدْ اٰتَيْنٰكَ مِنْ لَّدُنَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने पास से | और तहक़ीक़ हम ने तुम्हें दिया | गुज़र चुका | जो | खबरें अहवाल | से | तुझ पर से | हम बयान करते हैं | इसी तरह |

ذِكْرًا ﴿٩٩﴾ مَّنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهٗ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وِزْرًا ﴿١٠٠﴾ خٰلِدِيْنَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह हमेशा रहेंगे | 100 | (भारी) बोझ | क़ियामत के दिन | लादेगा | तो बेशक वह | उस से | मुंह फेरा | जिस | 99 | (किताब) नसीहत |

فِيْهِ ۖ وَسَآءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ حِمْلًا ﴿١٠١﴾ يَّوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ وَنَحْشُرُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम इकटठा करेंगे | सूर में | फूंक मारी जाएगी | जिस दिन | 101 | बोझ | क़ियामत के दिन | उन के लिए | और बुरा है | उस में |

الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ﴿١٠٢﴾ يَّتَخَافَتُوْنَ بَيْنَهُمْ إِنْ لَّبِثْتُمْ إِلَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर (सिर्फ़) | तुम रहे | नहीं | आपस में | आहिस्ता आहिस्ता कहेंगे | 102 | नीली आँखें | उस दिन | मुज्रीमों का |

عَشْرًا ﴿١٠٣﴾ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ إِذْ يَقُوْلُ أَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً إِنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नही | राह | सब से अच्छी | जब कहेगा | वह कहते है | वह जो | खूब जानते हैं | हम | 103 | दस दिन |

لَّبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ﴿١٠٤﴾ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّىْ نَسْفًا ﴿١٠٥﴾ ع ١٥ ٥ ١٢

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 105 | उड़ा कर | मेरा रब | उन्हें बिखेर देगा | तो कह दें | पहाड़ के बारे में | और वह आप से दर्याफ़्त करेंगे | 104 | एक दिन | मगर | रहे तुम |

فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾ لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّلَآ أَمْتًا ﴿١٠٧﴾ يَوْمَئِذٍ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस दिन | 107 | कोई बुलन्दी | और न | कोई कजी | उस में | न देखेगा तू | 106 | एक हमवार | मैदान | फिर उसे छोड़ देगा |

يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِىَ لَا عِوَجَ لَهٗ ۚ وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रहमान के लिए (सामने) | आवाज़ें | और पस्त होजाएंगी | उस के लिए | नहीं कोई कजी | एक पुकारने वाला | वह सब पीछे चलेंगे |

فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٨﴾ يَوْمَئِذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इजाज़त दे उस को | जिस | मगर | कोई शफ़ाअ़त | न नफ़ा देगी | उस दिन | 108 | आहिस्ता आवाज | मगर (सिर्फ़) | बस तू न सुनेगा |

الرَّحْمٰنُ وَرَضِىَ لَهٗ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के पीछे | और जो | उन के हाथों के दरमियान (आगे) | जो | वह जानता है | 109 | बात | उस की | और पसन्द करे | रहमान |

وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ عِلْمًا ﴿١١٠﴾ وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ لِلْحَىِّ الْقَيُّوْمِ ۖ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| "क़य्यूम" | सामने "हैय" | चेहरे | झुक जाएंगे | 110 | इल्म के अन्दर | उस का | और वह अहाता नहीं कर सकते |

وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١١﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मोमिन | और वह | नेकी | से - कोई | करे | और जो | 111 | ज़ुल्म | बोझ उठाया | जो - जिस | और नामुराद हुआ |

فَلَا يَخٰفُ ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا ﴿١١٢﴾ وَكَذٰلِكَ أَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ़रबी | क़ुरआन | हम ने उस पर नाज़िल किया | और उसी तरह | 112 | और न किसी नुक़सान का | किसी ज़ुल्म का | तो न उसे ख़ौफ़ होगा |

وَّصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ أَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٣﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 113 | कोई नसीहत | उन के लिए | या वह पैदा करदे | परहेज़गार हो जाएं | ताकि वह | डरावे | से | और हम ने तरह तरह से बयान किए उस में |

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | इस से क़ब्ल | क़ुरआन में | जल्दी करो | और न | सच्चा | बादशाह | सो बुलन्द ओ बरतर है अल्लाह |

يُّقْضٰٓى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ ۚ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِىْ عِلْمًا ﴿١١٤﴾ وَلَقَدْ عَهِدْنَآ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम ने हुक्म भेजा | 114 | इल्म | जियादा दे मुझे | ऐ मेरे रब | और कहिए | उस की वहि | तुम्हारी तरफ़ | पूरी की जाए |

ع ٦ ١١ ١٥ اِلٰٓى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِىَ وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ﴿١١٥﴾ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़रिश्तों को | और (याद करो) जब हम ने कहा | 115 | पुख़्ता इरादा | उस में | और हम ने न पाया | तो वह भूल गया | उस से क़ब्ल | आदम की तरफ़ |

اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ اَبٰى ﴿١١٦﴾ فَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक यह | ऐ आदम (अ) | पस हम ने कहा | 116 | उस ने इन्कार किया | इब्लीस | सिवाए | तो सब ने सिजदा किया | आदम का | तुम सिजदा करो |

عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ﴿١١٧﴾ اِنَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | 117 | फिर तुम मुसीबत में पड़ जाओ | जन्नत से | न निकलवा दे | सो तुम्हें | और तुम्हारी बीवी का | तुम्हारा | दुश्मन |

لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ﴿١١٨﴾ وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ﴿١١٩﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 119 | और न धूप में रहोगे | इस में | प्यासे रहोगे | न | और यह कि तुम | 118 | नंगे | और न | इस में | यह कि न भूके रहो | तुम्हारे लिए |

فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰٓاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दरख़्त | पर | मैं तेरी रहनुमाई करूं | क्या | ऐ आदम (अ) | उस ने कहा | शैतान | उस की तरफ़ (दिल में) | फिर वसवसा डाला |

الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ﴿١٢٠﴾ فَاَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की शर्मगाहें | उन पर | तो ज़ाहिर होगईं | उस से | पस दोनों ने खाया | 120 | न पुरानी हो (ज़वाल पजीर न हो) | और बादशाहत | हमेशगी |

وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۡ وَعَصٰٓى اٰدَمُ رَبَّهٗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना रब | आदम (अ) | और नाफ़रमानी की | जन्नत के पत्ते | से | अपने ऊपर | और वह दोनों लगे जोड़ने (ढांपने) |

فَغَوٰى ﴿١٢١﴾ ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ﴿١٢٢﴾ قَالَ اهْبِطَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम दोनों उतर जाओ | फ़रमाया | 122 | और उस राह दिखाई | उस पर | तवज्जुह फ़रमाई | उस का रब | उस को चुन लिया | फिर | 121 | तो वह बहक गया |

مِنْهَا جَمِيْعًا ۢ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّىْ هُدًى ۬

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हिदायत | मेरी तरफ़ से | तुम्हारे पास आए | पस अगर | दुश्मन | बाज़ के | तुम में से बाज | सब | यहां से |

فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَاىَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى ﴿١٢٣﴾ وَمَنْ اَعْرَضَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुँह मोड़ा | और जिस | 123 | बदबख़्त होगा | और न | तो न वह गुमराह होगा | मेरी हिदायत | पैरवी की | तो जिस ने |

عَنْ ذِكْرِىْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क़ियामत के दिन | और हम उसे उठाएंगे | तंग | गुज़रान | उस के लिए | तो बेशक | मेरे ज़िक्र-नसीहत | से |

اَعْمٰى ﴿١٢٤﴾ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِىْٓ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ﴿١٢٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 125 | बीना देखना | और मैं तो था | अन्धा | तू ने मुझे क्यों उठाया | ऐ मेरे रब | वह कहेगा | 124 | अन्धा |

قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ﴿١٢٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 126 | हम तुझे भुला देंगे | आज | और इसी तरह | तो तू ने उन्हें भुला दिया | हमारी आयात | तेरे पास आईं | इसी तरह | वह फ़रमाएगा |

सो अल्लाह बुलन्द ओ बरतर है सच्चा बादशाह, और तुम क़ुरआन (पढ़ने) में जल्दी न करो, इस से क़ब्ल के तुम्हारी तरफ़ पूरी की जाए उस की वहि, और कहिए ऐ मेरे रब! मुझे और जियादा इल्म दे। (114)
और हम ने उस से क़ब्ल आदम (अ) की तरफ़ हुक्म भेजा तो वह भूल गया और हम ने उस में पुख़्ता इरादा न पाया। (115)
और याद करो जब हम ने फ़रिश्तों से कहा तुम आदम (अ) को सिजदा करो तो सब ने सिजदा किया सिवाए इब्लीस के, उस ने इन्कार किया। (116)
पस हम ने कहा ऐ आदम (अ)! बेशक यह तुम्हारा और तुम्हारी बीवी का दुश्मन है। सो तुम्हें निकलवा न दे जन्नत से, फिर तुम तक्लीफ़ में पड़ जाओ। (117)
बेशक तुम्हारे लिए (जन्नत में) यह है कि इस में न भूके रहो, न नंगे। (118)
और यह कि तुम न प्यासे रहोगे और न धूप में तपोगे। (119)
फिर शैतान ने उस के दिल में वसवसा डाला, उस ने कहा ऐ आदम (अ)! क्या मैं तेरी रहनुमाई करूं हमेशगी के दरख़्त पर? और वह बादशाहत जो ज़वाल पजीर न हो? (120)
पस उन दोनों ने उसे खा लिया तो उन पर उन की शर्मगाहें ज़ाहिर हो गईं, और अपने (जिस्म के) ऊपर जन्नत के पत्तों से ढांपने लगे, और आदम (अ) ने अपने रब की नाफ़रमानी की तो वह बहक गया। (121)
फिर उस को चुन लिया उस के रब ने, फिर उस पर (रहमत से) तवज्जुह फ़रमाई (तौबा कुबूल की) और उसे राह दिखाई। (122)
फ़रमाया तुम दोनों यहां से उतर जाओ, तुम्हारी (औलाद में से) बाज़ बाज़ के दुश्मन होंगे, पस अगर (जब भी) मेरी तरफ़ से तुम्हारे पास मेरी हिदायत आए तो जिस ने मेरी हिदायत की पैरवी की वह न गुमराह होगा और न बदबख़्त होगा। (123)
और जिस ने मेरे ज़िक्र (नसीहत) से मुँह मोड़ा तो बेशक उस की मईशत (गुज़रान) तंग होगी और हम उसे उठाएंगे क़ियामत के दिन अन्धा। (124)
वह कहेगा, ऐ मेरे रब! तू ने मुझे अन्धा क्यों उठाया? मैं तो (दुनिया में) बीना (देखता) था (125)
वह फ़रमाएगा इसी तरह तेरे पास हमारी आयात आईं तो तू ने उन्हें भुलाया, और इसी तरह आज हम तुझे भुला देंगे। (126)

और इसी तरह हम (उस को) बदला देते हैं जो हद से निकल जाए और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाए, और अलबत्ता आख़िरत का अज़ाब शदीद तरीन है और ज़ियादा देर तक रहने वाला है। (127) क्या (उस हक़ीक़त ने भी) उन्हें हिदायत न दी कि उन से क़ब्ल हम ने कितनी ही जमाअतें हलाक कर दीं, वह चलते फिरते हैं उन के मसाकिन में, अलबत्ता बेशक उस में अ़क्ल वालों के लिए निशानियां हैं। (128) और अगर तुम्हारे रब की (तरफ़) से एक बात (तै) न हो चुकी होती और मीआ़द मुक़र्रर (न होती) तो अ़ज़ाब ज़रूर (नाज़िल) हो जाता। (129) पस वह जो कहते हैं उस पर सब्र करें, तारीफ़ के साथ अपने रब की तस्बीह करें, (पाकीज़गी) बयान करें तुलूअ़-ए-आफ़ताब से पहले, और ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले, और कुछ रात की घड़ियों में, पस उस की तस्बीह करें, और किनारे दिन के (दोपहर ज़ुहर के वक़्त) ताकि तुम ख़ुश हो जाओ। (130) और अपनी आँखें (उन चीज़ों की) तरफ़ न फैलाना जो हम ने बरतने को दी हैं उन के जोड़ों को, दुनिया की ज़िन्दगी की आराइश ओ ज़ेबाइश (बना कर) ताकि हम उस में उन्हें आज़माएं, और तेरे रब का अ़तिया बेहतर है और सब से ज़ियादा तादेर रहने वाला है। (131) और तुम अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दो, और उस पर क़ाइम रहो, हम तुझ से नहीं मांगते रिज़्क़ (बल्कि) हम तुझे रिज़्क़ देते हैं और अन्जाम (बख़ैर) अहले तक़्वा के लिए है। (132) और वह कहते हैं हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं लाए अपने रब की तरफ़ से, क्या उन के पास (वह) वाज़ेह निशानी नहीं आई जो पहले सहीफ़ों में है। (133) और अगर हम उन्हें हलाक कर देते (रसूलों के) आने से क़ब्ल किसी अ़ज़ाब से तो वह कहते ऐ हमारे रब! तू ने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यों न भेजा? तो हम इस से क़ब्ल कि ज़लील और रुस्वा हों हम तेरे अहकाम की पैरवी करते। (134) आप (स) कह दें, सब मुन्तज़िर हैं, पस तुम (अभी) इन्तिज़ार करो, सो अ़नक़रीब तुम जान लोगे, कौन हैं सीधे रास्ते वाले और कौन है जिस ने हिदायत पाई। (135)

وَكَذٰلِكَ نَجْزِىْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ؕ وَلَعَذَابُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अलबत्ता अज़ाब | अपना रब | आयतों पर | और न ईमान लाए | हद से निकल जाए | जो | हम बदला देते हैं | और इसी तरह |

الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ﴿١٢٧﴾ اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन से क़ब्ल | हम ने हलाक कर दी | कितनी ही | उन्हें | क्या हिदायत न दी | 127 | और ज़ियादा देर तक रहने वाला है | शदीद तरीन | आख़िरत |

مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِىْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِى النُّهٰى ﴿١٢٨﴾ ع ١٣/١٦

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 128 | अक़्ल वालों के लिए | अलबत्ता निशानियां हैं | उस | में | बेशक | उन के मसाकिन में | वह चलते फिरते हैं | क़ौमें जमाअतें |

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّاَجَلٌ مُّسَمًّى ﴿١٢٩﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 129 | मुक़र्रर | और मीआ़द | अज़ाब | तो ज़रूर आजाता | तुम्हारा रब | से | हो चुकी | एक बात | और अगर न |

فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुलूअ़े आफ़्ताब | पहले | अपना रब | तारीफ़ के साथ | और तस्बीह करें | जो वह कहते हैं | पर | पस सब्र करें |

وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ وَمِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | और किनारे | पस तस्बीह करें | रात की घड़ियां | और कुछ | उस के ग़ुरूब | और पहले |

لَعَلَّكَ تَرْضٰى ﴿١٣٠﴾ وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जोड़े | उस से | जो हम ने बरतने को दिया | तरफ़ | अपनी आँखें | और न फैलाना | 130 | ख़ुश हो जाओ | ताकि तुम |

مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ لِنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَرِزْقُ رَبِّكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तेरा रब | और अ़तिया | उस में | ताकि हम उन्हें आज़माएं | दुनिया की ज़िन्दगी | आराइश | उन से - के |

خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿١٣١﴾ وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस पर | और क़ाइम रहो | नमाज़ का | अपने घर वाले | और हुक्म दो तुम | 131 | और तादेर रहने वाला | बेहतर |

لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكَ ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى ﴿١٣٢﴾ وَقَالُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह कहते हैं | 132 | अहले तक़्वा के लिए | और अन्जाम | तुझे रिज़्क़ देते हैं | हम | रिज़्क़ | हम तुझ से नहीं मांगते |

لَوْلَا يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اَوَلَمْ تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا فِى الصُّحُفِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सहीफ़े | में | जो | वाज़ेह निशानी | उन के पास नहीं आई | क्या | अपना रब | से | कोई निशानी | क्यों नहीं लाते |

الْاُوْلٰى ﴿١٣٣﴾ وَلَوْ اَنَّآ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो वह कहते | इस से क़ब्ल | किसी अज़ाब से | उन्हें हलाक कर देते | हम | और अगर | 133 | पहले |

رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| इस से क़ब्ल | तेरे अहकाम | तो हम पैरवी करते | कोई रसूल | हमारी तरफ़ | क्यों तू ने न भेजा | ऐ हमारे रब |

اَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزٰى ﴿١٣٤﴾ قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوْا ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पस तुम इन्तिज़ार करो | मुन्तज़िर हैं | सब | कह दें | 134 | और हम रुस्वा हों | कि हम ज़लील हों |

فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ اَصْحٰبُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدٰى ﴿١٣٥﴾ ع ٨/١٧

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 135 | उस ने हिदायत पाई | और कौन | सीधा | रास्ता | वाले | कौन | सो अ़नक़रीब तुम जान लोगे |

الجزء ١٧

آيَاتُهَا ١١٢ ❀ (٢١) سُوْرَةُ الْاَنْبِيَآءِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٧

| रुकुआत 7 | (21) सूरतुल अम्बिया<br>रसूल (जमा) | आयात 112 |
|---|---|---|

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِیْ غَفْلَةٍ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ग़फ़्लत में | और वह | उन का हिसाब | लोगों के लिए | क़रीब आ गया |

مُّعْرِضُوْنَ ۝١ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह उसे सुनते हैं | मगर | नई | उन के रब से | कोई नसीहत | उन के पास नहीं आती | 1 | मुँह फेर रहे हैं |

وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ۝٢ لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى ۖ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह लोग जिन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम) | सरगोशी | और चुपके चुपके बात की | उन के दिल | ग़फ़्लत में हैं | 2 | खलते हैं (खेलते हुए) | और वह |

هَلْ هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ اَفَتَاْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ۝٣

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | देखते हो | और (जबकि) तुम | जादू | क्या पस तुम आओगे | तुम ही जैसा | एक बशर | मगर | यह | क्या |

قٰلَ رَبِّیْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِی السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٤

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | जानने वाला | सुनने वाला | और वह | और ज़मीन | आस्मानों में | बात | जानता है | मेरा रब | आप ने फ़रमाया |

بَلْ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍۭ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ۚ فَلْيَاْتِنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस वह हमारे पास ले आए | एक शायर | बल्कि वह | उस ने घड़ लिया | बल्कि | ख़्वाब | परेशान | उन्हों ने कहा | बल्कि |

بِاٰيَةٍ كَمَآ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ ۝٥ مَآ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने उसे हलाक किया | कोई बस्ती | उन से क़ब्ल | न ईमान लाई | 5 | पहले | भेजे गए | जैसे | कोई निशानी |

اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ۝٦ وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِیْٓ اِلَيْهِمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की तरफ़ | हम वहि भेजते थे | मर्द | मगर | तुम से पहले | भेजे हम ने | और नहीं | 6 | ईमान लाएंगे | और क्या वह (यह) |

فَسْئَلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٧ وَمَا جَعَلْنٰهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम ने नहीं बनाए उन के | 7 | तुम नहीं जानते | तुम हो | अगर | याद रखने वाले | पस पूछ लो |

جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ۝٨ ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने सच्चा कर दिया उन से | फिर | 8 | हमेशा रहने वाले | और वह न थे | खाना | न खाते हों | ऐसे जिस्म |

الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَآءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ۝٩ لَقَدْ اَنْزَلْنَآ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तहक़ीक़ हम ने नाज़िल की | 9 | हद से बढ़ने वाले | और हम ने हलाक कर दिया | और जिस को हम ने चाहा | पस हम ने बचा लिया उन्हें | वादा |

ع ١٠ ١ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝١٠ وَكَمْ قَصَمْنَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम ने कितनी हलाक कर दीं | 10 | तो क्या तुम समझते नहीं | तुम्हारा ज़िक्र | उस में | एक किताब | तुम्हारी तरफ़ |

مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۝١١

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | दूसरे | गिरोह लोग | उन के बाद | और पैदा किए हम ने | ज़ालिम | वह थी | बस्तियाँ | से |

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

लोगों के लिए उन के हिसाब (का वक़्त) क़रीब आ गया, और वह ग़फ़लत में (उस से) मुँह फेर रहे हैं। (1) उन के पास उन के रब (की तरफ़) से कोई नई नसीहत नहीं आती मगर वह उसे खेलते हुए (बे परवाह हो कर) सुनते हैं। (2) उन के दिल ग़फ़लत में हैं और ज़ालिमों ने चुपके चुपके सरगोशी की कि यह (मुहम्मद रसूलुल्लाह) क्या हैं, मगर एक बशर तुम ही जैसे, क्या (फिर भी) तुम जादू के पास आओगे? जबकि तुम देखते हो। (3) आप (स) ने फ़रमाया मेरा रब जानता है हर बात जो आस्मानों में और ज़मीन में (होती है) और वह सुनने वाला जानने वाला है। (4) बल्कि उन्हों ने कहा (यह) परेशान ख़्वाब हैं, बल्कि उस ने घड़ लिया है, बल्कि वह तो एक शायर है, पस वह हमारे पास कोई निशानी लाए जैसे पहले (नबी निशानियाँ दे कर) भेजे गए थे। (5) उस से क़ब्ल कोई बस्ती जिस को हम ने हलाक किया (निशानियाँ देख कर भी) ईमान नहीं लाई, तो क्या यह ईमान ले आएंगे? (6) और हम ने (रसूल) नहीं भेजे तुम से पहले मगर मर्द, हम उन की तरफ़ वहि भेजते थे, पस याद रखने वालों से पूछ लो अगर तुम नहीं जानते। (7) और हम ने उन के ऐसे जिस्म नहीं बनाए कि वह खाना न खाते हों, और वह न थे हमेशा रहने वाले। (8) फिर हम ने उन से अपना वादा सच्चा कर दिया, पस हम ने उन्हें बचा लिया और जिस को हम ने चाहा, और हम ने हद से बढ़ने वालों को हलाक कर दिया। (9) तहक़ीक़ हम ने तुम्हारी तरफ़ एक किताब नाज़िल की जिस में तुम्हारा ज़िक्र है, तो क्या तुम समझते नहीं? (10) और हम ने हलाक कर दीं कितनी ही बस्तियाँ, कि वह ज़ालिम थीं, और हम ने उन के बाद दूसरे गिरोह (और लोग) पैदा किए। (11)

फिर जब उन्हों ने हमारे अज़ाब की आहट पाई तो उस वक्त उस से भागने लगे। (12)
तुम मत भागो और लौट जाओ उसी तरफ़ जहां तुम्हें आसाइश दी गई थी और अपने घरों की तरफ़, ताकि तुम्हारी पूछ गछ हो। (13)
वह कहने लगे हाए हमारी शामत! बेशक हम ज़ालिम थे। (14)
पस (बराबर) उन की यह पुकार रही, यहां तक कि हम ने उन्हें कटी हुई खेती और बुझी हुई आग (की तरह ढेर) कर दिया। (15)
और हम ने नहीं पैदा किया आस्मान को और ज़मीन को और जो उन के दरमियान में है खेलते हुए (बेकार)। (16)
अगर हम कोई खिलौना बनाना चाहते तो हम उस को अपने पास से बना लेते, अगर हम करने वाले होते (अगर हमें यह करना होता)। (17)
बल्कि हम फेंक मारते हैं, हक़ को बातिल पर, पस वह उस का भेजा (कचुम्बर) निकाल देता है तो वह उसी वक्त नाबूद हो जाता है, और तुम्हारे लिए उस (बात) से ख़राबी है जो तुम बनाते हो। (18)
और उसी के लिए है जो आस्मानो में और ज़मीन में है और जो उस के पास हैं वह सरकशी नहीं करते उस की इबादत से और न वह थकते हैं। (19)
और रात दिन तस्बीह (उस की पाकीज़गी) बयान करते हैं सुस्ती नहीं करते। (20)
क्या उन्हों ने ज़मीन से कोई और माबूद बना लिए हैं कि वह उन्हें (मरने के बाद) दोबारा उठा कर खड़ा करेंगे। (21)
अगर उन दोनों (आस्मान ओ ज़मीन) में और माबूद होते अल्लाह के सिवा तो अलबत्ता (ज़मीन ओ आस्मान) दरहम बरहम हो जाते, पस अर्श अज़ीम का रब अल्लाह उस से पाक है जो वह बयान करते हैं। (22)
वह उस से पूछताछ नहीं कर सकते उस के (बारे में) जो वह करता है बल्कि वह पूछताछ किए जाएंगे। (23)
क्या उन्हों ने उस के सिवा और माबूद बनाए हैं? फ़रमा दें, पेश करो अपनी दलील, यह किताब है जो मेरे साथ है, और किताब जो मुझ से पहले नाज़िल हुई है, अलबत्ता उन में अक्सर नहीं जानते हक़ को, पस वह रूगर्दानी करते हैं। (24)

فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ﴿١٢﴾ لَا تَرْكُضُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम मत भागो | 12 | भागने लगे | उस से | उस वक़्त वह | हमारा अज़ाब | उन्हों ने आहट पाई | फिर जब |

وَارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُوْنَ ﴿١٣﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 13 | तुम्हारी पूछ गछ हो | ताकि तुम | और अपने घर (जमा) | उस में | तुम आसाइश दिए गए | जो | तरफ़ | और लौट जाओ |

قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤﴾ فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यहां तक कि | उन की पुकार | यह | पस रही | 14 | ज़ालिम | हम बेशक थे | हाए हमारी शामत | वह कहने लगे |

جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ﴿١٥﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और ज़मीन | आस्मान (जमा) | और हम ने नही पैदा किया | 15 | बुझी हुई आग | कटी हुई खेती | हम ने उन्हें कर दिया |

وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿١٦﴾ لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो हम उस को बना लेते | कोई खिलौना | हम बनाएं | कि | अगर हम चाहते | 16 | खेलते हुए | उन के दरमियान | और जो |

مِنْ لَّدُنَّآ ۖ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿١٧﴾ بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बातिल | पर | हक़ को | हम फेंक मारते हैं | बल्कि | 17 | करने वाले | अगर हम होते | अपने पास से |

فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۗ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | तुम बनाते हो | उस से जो | ख़राबी | और तुम्हारे लिए | नाबूद हो जाता है | वह | तो उस वक़्त | पस वह उस का भेजा निकाल देता है |

وَلَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَمَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह तकब्बुर (सरकशी) नही करते | उस के पास | और जो | और ज़मीन में | आस्मानों में | जो | और उसी के लिए |

عَنْ عِبَادَتِهٖ وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ﴿١٩﴾ يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और दिन | रात | वह तस्बीह करते हैं | 19 | और न वह थकते हैं | उस की इबादत | से |

لَا يَفْتُرُوْنَ ﴿٢٠﴾ اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ هُمْ يُنْشِرُوْنَ ﴿٢١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 21 | उन्हें उठा खड़ा करेंगे | वह | ज़मीन से | कोई माबूद | उन्हों ने बना लिया | क्या | 20 | वह सुस्ती नहीं करते |

لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | पस पाक है | अलबत्ता दोनों दरहम बरहम हो जाते | अल्लाह | सिवाए | माबूद | उन दोनों में | अगर होते |

رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٢٢﴾ لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और (बल्कि) वह | वह करता है | उस से जो | उस से बाज़ पुर्स नही करते | 22 | वह बयान करते हैं | उस से जो | अर्श | रब |

يُسْـَٔلُوْنَ ﴿٢٣﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ۗ قُلْ هَاتُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लाओ (पेश करो) | फ़रमा दें | और माबूद | अल्लाह के सिवा | उन्हों ने बना लिए हैं | क्या | 23 | बाज़ पुर्स किए जाएंगे |

بُرْهَانَكُمْ ۚ هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِىَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِىْ ۗ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जो मुझ से पहले | और किताब | मेरे साथ | जो | यह किताब | अपनी दलील |

بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 24 | रूगर्दानी करते हैं | पस वह | हक़ | नहीं जानते | उन में अक्सर | बल्कि (अलबत्ता) |

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कि बेशक वह | उस की तरफ़ | हम ने वहि भेजी | मगर | कोई रसूल | आप से पहले | और नहीं भेजा हम ने |

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ﴿٢٥﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक बेटा | अल्लाह | बना लिया | और उन्हों ने कहा | 25 | पस मेरी इबादत करो | मेरे सिवा | नहीं कोई माबूद |

سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह | बात में | वह उस से सबक़त नही करते | 26 | मुअ़ज़्ज़ज़ | बन्दे | बल्कि | वह पाक है |

بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो उन के पीछे | उन के हाथों में (सामने) | जो | वह जानता है | 27 | अ़मल करते | उस के हुक्म पर |

وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ﴿٢٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 28 | डरते रहते है | उस के ख़ौफ से | और वह | उस की रजा हो | जिस के लिए | मगर | और वह सिफारिश नही करते |

وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّيْٓ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जहन्नम | हम उसे सजा देंगे | पस वह शख़्स | उस के सिवा | माबूद | बेशक मैं | उन में से | कहे | और जो |

ع ٣ ١٩ ٢ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾ اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | उन्हों ने कुफ्र किया | वह लोग जो | क्या नही देखा | 29 | ज़ालिम (जमा) | हम सज़ा देते है | इसी तरह |

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ؕ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पानी से | और हम ने किया | पस हम ने दोनों को खोल दिया | बन्द | दोनों थे | और ज़मीन | आस्मान (जमा) |

كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ؕ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَجَعَلْنَا فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पहाड़ | ज़मीन में | और हम ने बनाए | 30 | क्या पस वह ईमान नही लाते हैं | ज़िन्दा | हर शै |

اَنْ تَمِيْدَ بِهِمْ وَجَعَلْنَا فِيْهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٣١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 31 | राह पाएं | ताकि वह | रास्ते | कुशादा | उस में | और हम ने बनाए | कि झुक न पड़े उन के साथ |

وَجَعَلْنَا السَّمَآءَ سَقْفًا مَّحْفُوْظًا ۚ وَّهُمْ عَنْ اٰيٰتِهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿٣٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 32 | रूगर्दानी करते हैं | उस की निशानियां | से | और वह | महफूज | एक छत | आस्मान | और हम ने बनाए |

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सब | और चाँद | और सूरज | और दिन | रात | पैदा किया | जिस ने | और वह |

فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हमेशा रहना | आप (स) से क़ब्ल | किसी बशर के लिए | और हम ने नही किया | 33 | तैर रहे है | दाइरा (मदार) में |

اَفَا۟ئِنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ ﴿٣٤﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| चखना | हर जी | 34 | हमेशा रहेंगे | पस वह | आप इन्तिकाल कर गए | क्या पस अगर |

الْمَوْتِ ؕ وَنَبْلُوْكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ؕ وَاِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿٣٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 35 | तुम लौट कर आओगे | और हमारी ही तरफ़ | आज़माइश | और भलाई | बुराई से | और हम तुम्हें मुब्तला करेंगे | मौत |

और तुम से पहले हम ने कोई रसूल नहीं भेजा मगर हम ने वहि भेजी उस की तरफ़ कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, पस मेरी इबादत करो। (25)
उन (मुश्रिकों) ने कहा कि अल्लाह ने एक बेटा बना लिया है, वह उस (तोहमत) से पाक है, बल्कि मुअ़ज़्ज़ज़ बन्दे हैं। (26)
वह बात में उस से सबक़त नहीं करते और वह उस के हुक्म पर अमल करते हैं। (27)
वह जानता है जो उन के सामने और उन के पीछे है, और वह सिफारिश नहीं करते, मगर जिस के लिए उस की रजा हो, और वह उस के खौफ़ से डरते रहते हैं। (28)
और उन में से जो कोई यह कहे कि बेशक उस के सिवा मैं माबूद हूँ, पस उस शख़्स को हम सज़ाए जहन्नम देंगे, इसी तरह हम जालिमों को सजा देते हैं। (29)
क्या काफ़िरों ने नहीं देखा? कि आस्मान और ज़मीन दोनों मिले हुए थे, पस हम ने दोनों को खोल दिया, और हम ने पानी से हर शै को जिन्दा किया, तो क्या (फिर भी) वह ईमान नहीं लाते? (30)
और हम ने ज़मीन में पहाड़ बनाए ताकि वह उन (लोगों) के साथ झुक न पड़े, और हम ने उस में कुशादा रास्ते बनाए ताकि वह राह पाएं। (31)
और हम ने बनाया आस्मान एक महफूज छत और वह उस की निशानियों से रूगर्दानी करते हैं। (32)
और वही है जिस ने पैदा किया रात और दिन को, और सूरज और चाँद को, सब (अपने अपने) मदार में तैर रहे हैं। (33)
और हम ने आप (स) से पहले किसी बशर के लिए हमेशा रहना नहीं (तजवीज़) किया, पस अगर आप (स) इन्तिक़ाल कर गए तो क्या वह हमेशा रहेंगे? (34)
हर जी (मुतनफ़्फ़िस) को मौत (का जाइक़ा) चखना है, और हम तुम्हें बुराई और भलाई से आज़माइश में मुब्तला करेंगे, और हमारी तरफ़ ही तुम लौट कर आओगे। (35)

और जब काफ़िर तुम्हें देखते हैं तो तुम्हें सिर्फ़ एक हँसी मज़ाक़ ठहराते हैं, कि क्या यह है? वह जो तुम्हारे मावूदों को (बुराई से) याद करता है, और वह अल्लाह के ज़िक्र से मुनकिर हैं। (36) इन्सान को पैदा किया गया है जल्द बाज़, अ़नक़रीब मैं तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता हूँ, सो तुम जल्दी न करो। (37) और वह कहते हैं कि यह वादाए (अ़ज़ाब) कब (आएगा)? अगर तुम सच्चे हो। (38) काश काफ़िर उस घड़ी को जान लेते जब वह न रोक सकेंगे (दोज़ख की) आग को अपने चेहरों से, और न अपनी पीठों से, और न वह मदद किए जाएंगे। (39) बल्कि (क़ियामत) उन पर अचानक आएगी तो वह उन्हें हैरान (बद हवास) कर देगी, पस उन्हें उसे लौटाने की सकत न होगी और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। (40) और अलबत्ता मज़ाक़ उड़ाई गई आप (स) से पहले रसूलों की, पस उन में से जिन्हों ने मज़ाक़ उड़ाया उन्हें उस (अ़ज़ाब ने) आ घेरा जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (41) फ़रमा दें, रहमान (के अ़ज़ाब) से रात और दिन तुम्हारी कौन निगहबानी करता है? बल्कि वह अपने रब की याद से रूगर्दानी करते हैं। (42) क्या हमारे सिवा उन्हें के कुछ और मावूद हैं? जो उन्हें (मसाइब से) बचाते हैं, वह सकत नहीं रखते अपनी मदद की (भी) और न वह हम से (बचाने के लिए) साथी पाएंगे। (43) बल्कि हम ने उन को उन के बाप दादा को साज़ो सामान दिया यहांतक कि उन की उम्र दराज़ हो गई। पस क्या वह नहीं देखते कि हम ज़मीन को उस के किनारों से घटाते (मुनक़िस करते) आ रहे हैं, फिर क्या वह ग़ालिब आने वाले हैं। (44) आप (स) फ़रमा दें इस के सिवा नहीं कि मैं तुम्हें वहि से डराता हूँ, और बहरे पुकार नहीं सुनते जब भी उन्हें डराया जाए। (45)

وَاِذَا رَاٰكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या यह है | एक हँसी मज़ाक़ | मगर (सिर्फ़) | ठहराते तुम्हें | नही | वह जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | तुम्हें देखते हैं | और जब |

الَّذِيْ يَذْكُرُ اٰلِهَتَكُمْ ۚ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 36 | मुनकिर (जमा) | वह | रहमान (अल्लाह) | ज़िक्र से | और वह | तुम्हारे मावूद | याद करता है | वह जो |

خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ؕ سَاُورِيْكُمْ اٰيٰتِيْ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿٣٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 37 | तुम जल्दी न करो | अपनी निशानियां | अ़नक़रीब मैं दिखाता हूँ तुम्हें | जल्दी (जल्द बाज़) | से | इन्सान | पैदा किया गया |

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٨﴾ لَوْ يَعْلَمُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| काश वह जान लेते | 38 | सच्चे | तुम हो | अगर | वादा | यह | कब | और वह कहते हैं |

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَلَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और न | आग | अपने चेहरे | से | वह न रोक सकेंगे | वह घड़ी | जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) |

عَنْ ظُهُوْرِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٣٩﴾ بَلْ تَاْتِيْهِمْ بَغْتَةً

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अचानक | आएगी उन पर | बल्कि | 39 | मदद किए जाएंगे | और न वह | उन की पीठ (जमा) | से |

فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٤٠﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 40 | मोहलत दी जाएगी | और न उन्हें | उस को लौटाना | पस न उन्हें सकत होगी | तो हैरान कर देगी उन्हें |

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मज़ाक़ उड़ाया | उन को जिन्हों ने | आ घेरा (पकड़ लिया) | आप (स) से पहले | रसूलों की | और अलबत्ता मज़ाक़ उड़ाई गई |

مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤١﴾ قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ ع ۱۲ ۳

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रात में | तुम्हारी निगहबानी करता है | कौन | फ़रमा दें | 41 | मज़ाक़ उड़ाते थे | उस के साथ (का) | थे | जो | उन में से |

وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ؕ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٤٢﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 42 | रूगर्दानी करते हैं | अपना रब | याद से | बल्कि वह | रहमान से | और दिन |

اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ؕ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मदद | वह सकत नही रखते | हमारे सिवा | उन्हें बचाते हैं | कुछ मावूद | उन के लिए | क्या |

اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ﴿٤٣﴾ بَلْ مَتَّعْنَا هٰٓؤُلَآءِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन को | हम ने साज़ ओ सामान दिया | बल्कि | 43 | वह साथी पाएंगे | हम से | और न वह | अपने आप |

وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ؕ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِي

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कि हम आ रहे हैं | क्या पस वह नही देखते | उम्र | उन पर की | दराज़ हो गई | यहां तक कि | और उन के बाप दादा को |

الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٤﴾ قُلْ اِنَّمَآ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस के सिवा नही कि | फ़रमा दें | 44 | ग़ालिब आने वाले | क्या फिर वह | उस के किनारे (जमा) | से | उस को घटाते हुए | ज़मीन |

اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۖ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَآءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ﴿٤٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 45 | उन्हें डराया जाए | भी | जब | पुकार | बहरे | और नहीं सुनते हैं | वहि से | मैं तुम्हें डराता हूँ |

وَلَىِٕنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَآ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हाए हमारी शामत | वह ज़रूर कहेंगे | तेरा रब | अ़ज़ाब से | एक लपट | उन्हें छुए | और अगर |

اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क़ियामत | दिन | इंसाफ़ | तराज़ू- मीज़ान | और हम रखेंगे (क़ाइम करेंगे) | 46 | ज़ालिम (जमा) | बेशक हम थे |

فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| एक दाना | वज़न बराबर | होगा | और अगर | कुछ भी | किसी शख़्स पर | तो न ज़ुल्म किया जाएगा |

مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ؕ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और अलबत्ता हम ने अ़ता की | 47 | हिसाब लेने वाले | हम | और काफ़ी | हम उसे ले आएंगे | राई से - का |

مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَضِيَآءً وَّذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 48 | परहेज़गारों के लिए | और नसीहत | और रोशनी | फ़र्क़ करने वाली (किताब) | और हारून (अ) | मूसा (अ) |

الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| क़ियामत | से | और वह | बग़ैर देखे | अपना रब | वह डरते हैं | जो लोग |

مُشْفِقُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ؕ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस के | तो क्या तुम | हम ने इसे नाज़िल किया | बाबरकत | नसीहत | और यह | 49 | ख़ौफ़ खाते हैं |

مُنْكِرُوْنَ ﴿٥٠﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उस से क़ब्ल | हिदायत याबी (फ़हमे सलीम) | इब्राहीम (अ) | और तहक़ीक़ अलबत्ता हम ने दी | 50 | मुन्किर (जमा) |

وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मूर्तियाँ | क्या है यह | और अपनी क़ौम | अपने बाप से | जब उस ने कहा | 51 | जानने वाले | उस के | और हम थे |

الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ﴿٥٢﴾ قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا لَهَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | अपने बाप दादा को | हम ने पाया | वह बोले | 52 | जमे बैठे हो | उन के लिए | तुम | जो कि |

عٰبِدِيْنَ ﴿٥٣﴾ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ فِيْ ضَلٰلٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| गुमराही में | और तुम्हारे बाप दादा | तुम | तहक़ीक़ तुम रहे | उस ने कहा | 53 | पूजा करने वाले |

مُّبِيْنٍ ﴿٥٤﴾ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ﴿٥٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 55 | खलने वाले (दिल लगी करने वाले) | से | तुम | या | हक़ को | क्या तुम लाए हो हमारे पास | वह बोले | 54 | सरीह |

قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِيْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जिस ने | और ज़मीन | आस्मान (जमा) | रब (मालिक) | तुम्हारा रब | बल्कि | उस ने कहा |

فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٦﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 56 | गवाह (जमा) | से | इस बात पर | और मैं | उन्हें पैदा किया |

وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٥٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 57 | पीठ फेर कर | तुम जाओगे | कि | बाद | तुम्हारे बुत (जमा) | अलबत्ता मैं ज़रूर चाल चलूंगा | और अल्लाह की क़सम |

और अगर उन्हें तेरे रब के अ़ज़ाब की एक लपट छुए तो वह ज़रूर कहेंगे हाए हमारी शामत! हम ज़ालिम थे। (46)

और हम क़ियामत के दिन मीज़ाने अदल क़ाइम करेंगे तो किसी शख़्स पर कुछ भी ज़ुल्म न किया जाएगा। और अगर (कोई अ़मल) राई के एक दाने के बराबर भी होगा तो हम उसे ले आएंगे, और काफ़ी हैं हम हिसाब लेने वाले। (47)

और हम ने मूसा (अ) और हारून (अ) को (हक़ ओ बातिल में) फ़र्क़ करने वाली (किताब) और रोशनी अ़ता की, और परहेज़गारों के लिए नसीहत। (48)

जो लोग अपने रब से बग़ैर देखे डरते हैं और वह क़ियामत से ख़ौफ़ खाते हैं। (49)

और यह बाबरकत नसीहत है (जो) हम ने नाज़िल की है तो क्या तुम उस के मुन्किर हो? (50)

और तहक़ीक़ अलबत्ता हम ने उस से क़ब्ल इब्राहीम (अ) को फ़हम सलिम दी थी और हम उस के जानने वाले थे। (51)

जब उस ने कहा अपने बाप से और अपनी क़ौम से, क्या हैं यह मूर्तियाँ? जिन के लिए तुम जमे बैठे हो। (52)

वह बोले हम ने पाया अपने बाप दादा को उन की पूजा करते। (53)

उस (इब्राहीम अ) ने कहा तहक़ीक़ तुम और तुम्हारे बाप दादा सरीह गुमराही में रहे। (54)

वह बोले क्या तुम हमारे पास हक़ लाए हो? या दिल लगी करने वालों में से हो। (55)

उस ने कहा बल्कि तुम्हारा रब मालिक है आस्मानों और ज़मीन का, वह जिस ने उन्हें पैदा किया और उस बात पर मैं गवाहों में से (गवाह) हूँ। (56)

और अल्लाह की क़सम! अलबत्ता मैं तुम्हारे बुतों से ज़रूर चाल चलूंगा, उस के बाद जबकि तुम पीठ फेर कर चले जाओगे। (57)

पस उस ने उन के एक बड़े के सिवा सब को रेज़ा रेज़ा कर डाला, ताकि वह उस की तरफ़ रुजूअ़ करें। (58)
कहने लगे कौन है जिस ने हमारे माबूदों के साथ यह किया? बेशक वह तो ज़ालिमों में से है। (59)
बोले हम ने सुना है कि एक जवान इन (बुतों) के बारे में बातें करता है, उस को इब्राहीम (अ) कहा जाता है। (60)
बोले तो उसे लोगों की आँखों के सामने ले आओ ताकि वह देखें। (61)
उन्हों ने कहा कि ऐ इब्राहीम (अ)! क्या यह तू ने हमारे माबूदों के साथ किया है? (62)
उस ने कहा बल्कि यह उन के बड़े ने किया है तो उन (ही) से पूछ लो अगर वह बोलते हैं। (63)
पस वह सोच में पड़ गए अपने दिलों में, फिर उन्हों ने कहा बेशक तुम ही ज़ालिम हो (नाहक़ पर हो)। (64)
फिर वह अपने सरों पर औन्धे किए गए (उन की मत पलट गयी), तू खूब जानता है कि यह नहीं बोलते। (65)
उस ने कहा क्या तुम फिर अल्लाह के सिवा उन की परस्तिश करते हो? जो न तुम्हें कुछ नफ़ा पहुँचा सकें और न नुक्सान पहुँचा सकें। (66)
तुफ़ है तुम पर! और (उन) बुतों पर जिन की तुम अल्लाह के सिवा परस्तिश करते हो? क्या तुम फिर भी नहीं समझते? (67)
वह कहने लगे उसे जला डालो और अपने माबूदों की मदद करो अगर तुम्हें कुछ करना है। (68)
हम ने हुक्म दिया, ऐ आग! तू इब्राहीम (अ) पर ठंडी हो जा और सलामती। (69)
और उन्हों ने उस के साथ फ़रेब का इरादा किया तो हम ने उन्हें कर दिया इन्तिहाई ज़ियांकार। (70)
और हम ने उसे और लूत (अ) को उस सर ज़मीन की तरफ़ (भेज कर) बचा लिया, जिस में हम ने जहानों के लिए बरकत रखी। (71)
और उस को अता किया इसहाक़ (अ) (बेटा), और याकूब (अ) पोता, और हम ने उन सब को नेकोकार बनाया। (72)

فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 58 | रुजूअ़ करें | उस की तरफ़ | ताकि वह | उन का | एक बड़ा | सिवाए | रेज़ा रेज़ा | उस ने उन्हें कर डाला |

قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 59 | ज़ालिम (जमा) | से | बेशक वह | यह हमारे माबूदों के साथ | किया | कौन - किस | कहने लगे |

قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗٓ اِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٠﴾ قَالُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बोले | 60 | इब्राहीम (अ) | उस का | कहा जाता है | वह उन के बारे में बातें करता है | एक जवान | हम ने सुना है | वह बोले |

فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰٓى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ﴿٦١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 61 | वह देखें | ताकि वह | लोग | आँखें | सामने | उसे | तुम ले आओ |

قَالُوْٓا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٢﴾ قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने किया है | बल्कि | उस ने कहा | 62 | ऐ इब्राहीम (अ) | हमारे माबूदों के साथ | यह | तू ने किया | क्या तू | उन्हों ने कहा |

كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٣﴾ فَرَجَعُوْٓا اِلٰٓى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ | पस वह लौटे (सोच में पड़ गए) | 63 | वह बोलते हैं | अगर | तो उन से पूछ लो | यह | उन का बड़ा |

اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾ ثُمَّ نُكِسُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर वह औन्धे किए गए | 64 | ज़ालिम (जमा) | तुम ही | बेशक तुम | फिर उन्हों ने कहा | अपने दिल |

عَلٰى رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या फिर तुम परस्तिश करते हो | उस ने कहा | 65 | बोलते हैं | यह | नहीं | तू खूब जानता है | अपने सरों पर |

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ﴿٦٦﴾ اُفٍّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुफ़ | 66 | और न नुक्सान पहुँचा सकें तुम्हें | कुछ | न तुम्हें नफ़ा पहुँचा सकें | जो | अल्लाह के सिवा |

لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 67 | फिर तुम नही समझते | क्या | अल्लाह के सिवा | परस्तिश करते हो तुम | और उस पर जिसे | तुम पर |

قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَانْصُرُوْٓا اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿٦٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 68 | तुम हो करने वाले (कुछ करना है) | अगर | अपने माबूदों | और तुम मदद करो | तुम इसे जला डालो | वह कहने लगे |

قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾ وَاَرَادُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने इरादा किया | 69 | इब्राहीम (अ) | पर | और सलामती | ठंडी | ऐ आग तू हो जा | हम ने हुक्म दिया |

بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ﴿٧٠﴾ وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और लूत (अ) | और हम ने उसे बचा लिया | 70 | बहुत ख़सारा पाने वाले (ज़ियांकार) | तो हम ने उन्हें कर दिया | फ़रेब | उस के साथ |

اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿٧١﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस को | और हम ने अता किया | 71 | जहानों के लिए | उस में | वह जिस में हम ने बरकत रखी | सर ज़मीन | तरफ़ |

اِسْحٰقَ ۗ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ۗ وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ﴿٧٢﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 72 | सालेह (नेकोकार) | हम ने बनाया | और सब | पोता | और याकूब (अ) | इसहाक़ (अ) |

وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नेक काम करना | उन की तरफ़ | और हम ने वहि भेजी | हमारे हुक्म से | वह हिदायत देते थे | (जमा) इमाम (पेशवा) | और हम ने उन्हें बनाया |

وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ﴿٧٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 73 | इबादत करने वाले | हमारे ही | और वह थे | ज़कात | और अदा करना | नमाज़ | और क़ाइम करना |

وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | बस्ती से | और हम ने उसे बचा लिया | और इल्म | हुक्म | हम ने उसे दिया | और लूत (अ) |

كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓىِٕثَ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ ﴿٧٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 74 | बदकार | बुरे लोग | थे | बेशक वह | गन्दे काम | करती थी |

ع ٥/٢٥ وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ۭ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾ وَنُوْحًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और नूह (अ) | 75 | (जमा) सालेह (नेकोकार) | से | बेशक वह | अपनी रहमत में | और हम ने दाख़िल किया उसे |

اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेचैनी | से | और उस के लोग | फिर हम ने उसे नजात दी | उस की | तो हम ने कुबूल कर ली | उस से पहले | जब पुकारा |

الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾ وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारी आयातों को | झुटलाया | जिन्हों ने | लोग | से-पर | और हम ने उस की मदद की | 76 | बड़ी |

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٧٧﴾ وَدَاوٗدَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और दाऊद (अ) | 77 | सब | हम ने ग़र्क़ कर दिया उन्हें | बुरे | लोग | वह थे | बेशक वह |

وَسُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِي الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | रात में चर गईं | जब | खेती के बारे में | फ़ैसला कर रहे थे | जब | और सुलेमान (अ) |

غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ﴿٧٨﴾ فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सुलेमान (अ) | पस हम ने उस को फ़हम दी | 78 | मौजूद | उनके फ़ैसले (के वक़्त) | और हम थे | एक क़ौम की बकरियां |

وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ۡ وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पहाड़ (जमा) | दाऊद (अ) | साथ-का | और हम ने मुसख़्ख़र कर दिया | और इल्म | हुक्म | हम ने दिया | और हर एक |

يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ۭ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿٧٩﴾ وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सनअत (कारीगरी) | और हम ने उसे सिखाई | 79 | करने वाले | और हम थे | और परिन्दे | वह तस्बीह करते थे |

لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम | पस क्या | तुम्हारी लड़ाई | से | ताकि वह तुम्हें बचाए | तुम्हारे लिए | एक लिबास |

شٰكِرُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖٓ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के हुक्म से | चलती | तेज़ चलने वाली | हवा | और सुलेमान (अ) के लिए | 80 | शुक्र करने वाले |

اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ۭ وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ ﴿٨١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 81 | जानने वाले | हर शै | और हम हैं | उस में | जिस को हम ने बरकत दी है | सरज़मीन | तरफ़ |

और हम ने उन्हें पेशवा बनाया, वह हमारे हुक्म से हिदायत देते थे और हम ने उन की तरफ़ वहि भेजी नेक काम करने की, और नमाज़ क़ाइम करने, और ज़कात अदा करने की, और वह हमारी ही इबादत करने वाले थे। (73) और हम ने लूत (अ) को हुक्म दिया (हिक्मत और नबुव्वत) और इल्म (दिया) और हम ने उसे उस बस्ती से बचा लिया जो गन्दे काम करती थी, बेशक वह थे बुरे और बदकार लोग (74) और हम ने उसे अपनी रहमत में दाख़िल किया, बेशक वह नेकोकारों में से है। (75) और (याद करो) जब उस से क़ब्ल नूह (अ) ने पुकारा तो हम ने उस की दुआ क़ुबूल कर ली, फिर हम ने उसे और उस के लोगों को बड़ी बेचैनी (सख़्ती) से नजात दी। (76) और हम ने उस की मदद की उन लोगों पर जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया, बेशक वह बुरे लोग थे, फिर हम ने उन सब को ग़र्क़ कर दिया। (77) और (याद करो) जब दाऊद (अ) और सुलेमान (अ) एक खेती के बारे में फ़ैसला कर रहे थे जब उस में रात के वक़्त एक क़ौम की बकरियां चर गईं, और हम उन के फ़ैसले के वक़्त मौजूद थे (78) पस हम ने सुलेमान (अ) को (सहीह फ़ैसले की) फ़हम दी और हर एक को हम ने हुक्म (हिक्मत ओ नबुव्वत) और इल्म दिया, और हम ने पहाड़ों को दाऊद (अ) के साथ मुसख़्ख़र कर दिया, वह तस्बीह करते थे और परिन्दे (भी मुसख़्ख़र किए) और करने वाले हम थे। (79) और हम ने उसे तुम्हारे लिए एक लिबास (बनाने) की कारीगरी सिखाई ताकि वह तुम्हें तुम्हारी लड़ाई से बचाए, पस क्या तुम शुक्र करने वाले हो? (80) और हम ने तेज़ चलने वाली हवा सुलेमान (अ) के लिए (मुसख़्ख़र की) वह उस के हुक्म से उस सरज़मीन की तरफ़ चलती, जिस में हम ने बरकत दी, और हम हर शै को जानने वाले हैं। (81)

और शैतानों में से (मुसख़्ख़र किए) जो ग़ोता लगाते थे उस के लिए, और उस के सिवा और काम (भी) करते थे, और हम उन को संभालते थे। (82) और अय्यूब (अ) को (याद करो) जब उस ने अपने रब को पुकारा कि मुझे तक्लीफ़ पहुँची है और तू रहम करने वालों में सब से बड़ा रहम करने वाला है। (83) तो हम ने कुबूल कर ली उस की (दुआ), पस उसे जो तक्लीफ़ थी हम ने खोल दी (दूर कर दी) और हम ने उसे उस के घर वाले दिए, और उन के साथ उन जैसे (और भी) रहमत फ़रमा कर अपने पास से, और इबादत करने वालों के लिए नसीहत। (84) और इस्माईल (अ), और इदरीस (अ), और ज़ुलकिफ़्ल (अ), यह सब सब्र करने वालों में से थे। (85) और हम ने उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल किया, बेशक वह नेकोकारों में से थे। (86) और (याद करो) जब मछली वाले (यूनुस अ अपनी क़ौम से) गुस्से में भर कर चल दिए, पस उस ने गुमान किया कि हम हरगिज़ उस पर तंगी (गिरफ़्त) न करेंगे (जब मछली निगल गई) तो उस ने अन्धेरों में पुकारा कि (ऐ अल्लाह) तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू पाक है, बेशक मैं ज़ालिमों (क़ुसूरवारों) में से था। (87) फिर हम ने उस की (दुआ) कुबूल कर ली और हम ने उसे ग़म से नजात दी, और इस तरह हम मोमिनों को नजात दिया करते हैं। (88) और (याद करो) जब ज़करिया (अ) ने अपने रब को पुकारा ऐ मेरे रब! मुझे अकेला (लावारिस) न छोड़ और तू (सब से) बेहतर वारिस है। (89) फिर हम ने उस की (दुआ) कुबूल कर ली और हम ने उसे अता किया यहिया (अ) और हम ने उस के लिए उस की बीवी को दुरुस्त (औलाद के क़ाबिल) कर दिया बेशक वह सब नेक कामों में जल्दी करते थे, वह हमें उम्मीद ओ ख़ौफ़ से पुकारते थे। और वह हमारे सामने आजिज़ी करने वाले थे। (90)

وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| काम | और करते थे | उस के लिए | जो ग़ोता लगाते थे | शैतान (जमा) | और से |

دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ﴿۸۲﴾ وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जब उस ने पुकारा | और अय्यूब (अ) | 82 | संभालने वाले | उन के लिए | और हम थे | उस के सिवा |

رَبَّهٗۤ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۸۳﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 83 | रहम करने वाले | सब से बड़ा रहम करनेवाला | और तू | तक्लीफ़ | मुझे पहुँची है | कि मैं | अपना रब |

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के घर वाले | और हम ने दिए उसे | तक्लीफ़ | उस को | जो | पस हम ने खोल दी | उस की | तो हम ने कुबूल कर ली |

وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ﴿۸۴﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 84 | इबादत करने वालों के लिए | और नसीहत | अपने पास | से | रहमत फ़रमा कर | उन के साथ | और उन जैसे |

وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ ۗ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۸۵﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 85 | सब्र करने वाले | से | यह सब | और ज़ुल किफ़्ल | और इदरीस (अ) | और इस्माईल (अ) |

وَاَدْخَلْنٰهُمْ فِيْ رَحْمَتِنَا ۗ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۸۶﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 86 | नेकोकार (जमा) | से | बेशक वह | अपनी रहमत में | और हम ने दाख़िल किया उन्हें |

وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस पर | कि हम हरगिज़ तंगी न करेंगे | पस गुमान किया उस ने | गुस्से में भर कर | चला गया | जब | और ज़ुन नून (मछली वाला) |

فَنَادٰى فِي الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तू पाक है | तेरे सिवा | कोई माबूद | कि नहीं | अन्धेरों में | तो उस ने पुकारा |

اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۸۷﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّيْنٰهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम ने उसे नजात दी | उस की | फिर हम ने कुबूल कर ली | 87 | ज़ालिम (जमा) | से | मैं था | बेशक मैं |

مِنَ الْغَمِّ ۗ وَكَذٰلِكَ نُـْۨجِي الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۸۸﴾ وَزَكَرِيَّاۤ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और ज़करिया (अ) | 88 | मोमिन (जमा) | हम नजात देते हैं | और इसी तरह | ग़म से |

اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا وَّاَنْتَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और तू | अकेला | न छोड़ मुझे | ऐ मेरे रब | अपना रब | जब उस ने पुकारा |

خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿۸۹﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۫ وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَاَصْلَحْنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम ने दुरुस्त कर दिया | यहिया (अ) | उसे | और हम ने अता किया | उस की | फिर हम ने कुबूल कर ली | 89 | वारिस (जमा) | बेहतर |

لَهٗ زَوْجَهٗ ۗ اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नेक काम (जमा) | में | वह जल्दी करते थे | बेशक वह सब | उस की बीवी | उस के लिए |

وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ۗ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ﴿۹۰﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 90 | आजिज़ी करने वाले | हमारे लिए (सामने) | और वह थे | और ख़ौफ़ | उम्मीद | और वह हमें पुकारते थे |

وَالَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपनी रूह | उस में | फिर हम ने फूंक दी | अपनी शर्मगाह (इफ़्फ़त की) | उस ने हिफ़ाज़त की | और (औरत) जो |

وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩١﴾ اِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारी उम्मत | यह है | बेशक | 91 | जहानों के लिए | निशानी | और उस का बेटा | और हम ने उसे बनाया |

اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٩٢﴾ وَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना काम (दीन) | और टुकड़े टुकड़े कर लिया उन्हों ने | 92 | पस मेरी इबादत करो | तुम्हारा रब | और मैं | एक (यकता) | उम्मत |

ع ١٨ ٦ بَيْنَهُمْ ۭ كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नेक काम | कुछ | करे | पस जो | 93 | रुजूअ करने वाले | हमारी तरफ़ | सब | बाहम |

وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ ۚ وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ﴿٩٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 94 | लिख लेने वाले | उस के | और बेशक हम | उस की कोशिश | तो नाक़द्री (अकारत) नहीं | ईमान वाला | और वह |

وَحَرٰمٌ عَلٰي قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٩٥﴾ حَتّٰٓي اِذَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब | यहां तक कि | 95 | लौट कर नहीं आएंगे | कि वह | जिसे हम ने हलाक कर दिया | बस्ती पर | और हराम |

فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ﴿٩٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 96 | फिसलते (दौड़ते) आएंगे | बुलन्दी (टीले) | हर | से | और वह | और माजूज | याजूज | खोल दिए जाएंगे |

وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आँखें | ऊपर लगी (फटी) रह जाएंगी | वह | तो अचानक | सच्चा | वादा | और क़रीब आजाएगा |

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बल्कि हम थे | इस से | ग़फ़लत में | तहक़ीक़ हम थे | हाए हमारी शामत | जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) |

ظٰلِمِيْنَ ﴿٩٧﴾ اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के सिवा | से | तुम परस्तिश करते हो | और जो | बेशक तुम | 97 | ज़ालिम (जमा) |

حَصَبُ جَهَنَّمَ ۭ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ﴿٩٨﴾ لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَاۗءِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| यह | अगर होते | 98 | दाख़िल होने वाले | तुम उस में | जहन्नम | ईंधन |

اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ۭ وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٩٩﴾ لَهُمْ فِيْهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वहां | उनके लिए | 99 | सदा रहेंगे | उस में | और सब | उस में दाख़िल न होते | माबूद |

زَفِيْرٌ وَّهُمْ فِيْهَا لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पहले ठहर चुकी | जो लोग | बेशक | 100 | (कुछ) न सुन सकेंगे | उस में | और वह | चीख़ ओ पुकार |

لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰٓى ۙ اُولٰۗىِٕكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ﴿١٠١﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह न सुनेंगे | 101 | दूर रखे जाएंगे | उस से | वह लोग | भलाई | हमारी (तरफ़) से | उन के लिए |

حَسِيْسَهَا ۚ وَهُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٢﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 102 | वह हमेशा रहेंगे | उन के दिल | जो चाहेंगे | में | और वह | उस की आहट |

(और याद करो मरयम अ को) जिस ने अपनी इफ्फ़त की हिफ़ाज़त की, फिर हम ने उस में अपनी रूह फूंक दी, और हम ने उसे और उस के बेटे को जहानों के लिए निशानी बनाया। (91) बेशक यह है तुम्हारी उम्मत (मिल्लत) यकता उम्मत, और मैं तुम्हारा रब हूँ, पस मेरी इबादत करो। (92) और उन्हों ने अपना काम (दीन) बाहम टुकड़े टुकड़े कर लिया, सब हमारी तरफ़ रुजूअ करने वाले (लौटने वाले) हैं। (93) पस जो कोई नेक काम करे और वह ईमान वाला हो तो अकारत नहीं (जाएगी) उस की कोशिश, और बेशक हम उस के लिख लेने वाले हैं। (94) उस बस्ती पर (दुनिया में लौट कर आना) हराम है, जिसे हम ने हलाक कर दिया कि वह लौट कर नहीं आएंगे। (95) यहां तक कि जब याजूज ओ माजूज खोल दिए जाएंगे, और वह हर टीले से दौड़ते आएंगे। (96) और सच्चा वादा क़रीब आजाएगा तो अचानक मुन्किरों की आँखें फटी की फटी रह जाएंगी, हाए हमारी शामत! तहक़ीक़ हम इस से ग़फ़लत में थे, बल्कि हम ज़ालिम थे। (97) बेशक तुम और वह जिन की तुम परस्तिश करते हो अल्लाह के सिवा, जहन्नम का ईंधन हैं, तुम उस में दाख़िल होने वाले हो। (98) अगर यह माबूद होते तो उस में दाख़िल न होते, और वह सब उस में सदा रहेंगे। (99) उन के लिए वहां चीख़ ओ पुकार है, और वह उस में कुछ न सुन सकेंगे। (100) बेशक जिन लोगों के लिए हमारी तरफ़ से पहले (ही) भलाई ठहर चुकी वह लोग उस से दूर रखे जाएंगे। (101) वह न सुनेंगे उस की आहट (भी) और उन के दिल जो चाहेंगे वह उस (आराम ओ राहत) में हमेशा रहेंगे। (102)

उन्हें ग़मगीन न करेगी बड़ी घबराहट, और फ़रिश्ते उन्हें लेने आएंगे, यह है (वह) दिन जिस का तुम से वादा किया गया था। **(103)** जिस दिन हम आस्मान लपेट देंगे, जैसे तहरीर के काग़ज़ का तूमार लपेटा जाता है, जैसे हम ने पहली बार पैदाइश की थी हम उसे फिर लौटा देंगे, यह वादा हम पर (हमारे ज़िम्मे) है, बेशक हम पूरा करने वाले हैं। **(104)** और तहक़ीक़ हम ने ज़बूर में नसीहत के बाद लिखा कि ज़मीन के वारिस हमारे नेक बन्दे होंगे। **(105)** बेशक इस में इबादत गुज़ार लोगों के लिए (बशारत) एक बड़ी ख़बर है। **(106)** और हम ने नहीं भेजा आप (स) को मगर तमाम जहानों के लिए रहमत। **(107)** आप (स) फ़रमा दें इस के सिवा नहीं कि मेरी तरफ़ वहि की गई है कि बस तुम्हारा माबूद माबूद यकता है, पस क्या तुम हुक्म बरदार हो? **(108)** फिर अगर वह रूगर्दानी करें तो कह दो कि मैं ने तुम्हें ख़बरदार कर दिया है बराबरी पर (यक्साँ तौर से) और मैं नहीं जानता जो तुम से वादा किया गया है वह क़रीब है या दूर? **(109)** बेशक वह जानता है पुकार कर कही हुई बात को (भी) और वह (भी) जानता है जो तुम छुपाते हो। **(110)** और मैं नहीं जानता शायद (अज़ाब में ताख़ीर) तुम्हारे लिए आज़माइश हो और एक मुद्दत तक फ़ाइदा पहुँचाना हो। **(111)** नबी (स) ने कहा ऐ मेरे रब! तू हक़ के साथ फ़ैसला फ़रमा, और हमारा रब निहायत मेहरबान है, उस से मदद तलब की जाती है (उन बातों) पर जो तुम बयान करते (बनाते) हो। **(112)**

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

ऐ लोगो! अपने रब से डरो, बेशक क़ियामत का ज़लज़ला बड़ी भारी चीज़ है। **(1)**

لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَتَتَلَقّٰهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ هٰذَا يَوْمُكُمُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारा दिन | यह है | फ़रिश्ते | और लेने आएंगे उन्हें | बड़ी | घबराहट | ग़मगीन न करेगी उन्हें |

الَّذِىْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿١٠٣﴾ يَوْمَ نَطْوِى السَّمَآءَ كَطَىِّ السِّجِلِّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तूमार | जैसे लपेटा जाता है | आस्मान | हम लपेट लेंगे | जिस दिन | 103 | तुम थे वादा किए गए (वादा किया गया था) | वह जो |

لِلْكُتُبِ ؕ كَمَا بَدَاْنَآ اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ ؕ وَعْدًا عَلَيْنَا ؕ اِنَّا كُنَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक हम हैं | हम पर | वादा | हम उसे लौटा देंगे | पैदाइश | पहली | जैसे हम ने इब्तिदा की | तहरीर का काग़ज़ |

فٰعِلِيْنَ ﴿١٠٤﴾ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِى الزَّبُوْرِ مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कि | नसीहत के बाद | ज़बूर में | और तहक़ीक़ हम ने लिखा | 104 | (पूरा) करने वाले |

الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِىَ الصّٰلِحُوْنَ ﴿١٠٥﴾ اِنَّ فِىْ هٰذَا لَبَلٰغًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक बड़ी ख़बर | इस में | बेशक | 105 | नेक (जमा) | मेरे बन्दे | उस के वारिस | ज़मीन |

لِّقَوْمٍ عٰبِدِيْنَ ﴿١٠٦﴾ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 107 | तमाम जहानों के लिए | रहमत | मगर | हम ने भेजा आप (स) को | और नहीं | 106 | इबादत गुज़ार (जमा) | लोगों के लिए |

قُلْ اِنَّمَا يُوْحٰٓى اِلَىَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम | पस क्या | वाहिद | माबूद | तुम्हारा माबूद | कि बस | मेरी तरफ़ | वहि की गई | इस के सिवा नहीं | फ़रमा दें |

مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٨﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ اٰذَنْتُكُمْ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ وَاِنْ اَدْرِىْۤ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जानता मैं | और नहीं | बराबरी पर | मैं ने तुम्हें ख़बरदार कर दिया | तो कह दो | वह रूगर्दानी करें | फिर अगर | 108 | हुक्म बरदार (जमा) |

اَقَرِيْبٌ اَمْ بَعِيْدٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ ﴿١٠٩﴾ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से कही गयी बात | बुलंद आवाज़ | वह जानता है | बेशक वह | 109 | जो तुम से वादा किया गया | या दूर | क्या क़रीब? |

وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿١١٠﴾ وَاِنْ اَدْرِىْ لَعَلَّهٗ فِتْنَةٌ لَّكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे लिए | आज़माइश | शायद वह | और मैं नहीं जानता | 110 | जो तुम छुपाते हो | और जानता है |

وَمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿١١١﴾ قٰلَ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ وَرَبُّنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हमारा रब | हक़ के साथ | तू फ़ैसला फ़रमा | ऐ मेरे रब | उस (नबी) ने कहा | 111 | एक मुद्दत तक | और फ़ाइदा पहुँचाना |

الرَّحْمٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١١٢﴾ ع ١٩ ٧ النصف

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 112 | जो तुम बयान करते हो | पर | जिस से मदद तलब की जाती है | निहायत मेहरबान |

آيَاتُهَا ٧٨ ❀ (٢٢) سُوْرَةُ الْحَجِّ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٠

रुकूआत 10 | (22) सूरतुल हज | आयात 78

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَىْءٌ عَظِيْمٌ ﴿١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | बड़ी भारी | चीज़ | क़ियामत | ज़लज़ला | बेशक | अपना रब | डरो | ऐ लोगो! |

يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ اَرْضَعَتْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह दूध पिलाती है | जिस को | हर दूध पिलाने वाली | भूल जाएगी | तुम देखोगे उसे | जिस दिन |

وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नशे में | लोग | और तू देखेगा | अपना हम्ल | हर हम्ल वाली (हामिला) | और गिरा देगी |

وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ ﴿٢﴾ وَمِنَ النَّاسِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और कुछ लोग जो | 2 | सख़्त | अल्लाह का अ़ज़ाब | और लेकिन | नशे में | और हालांकि नहीं |

مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हर शैतान | और पैरवी करते हैं | बे जाने बूझे | अल्लाह के (बारे) में | झगड़ा करते हैं | जो |

مَّرِيْدٍ ﴿٣﴾ كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उसे गुमराह करेगा | तो वह बेशक | जो दोस्ती करेगा उस से | कि वह | उस पर (उस की) निस्बत लिख दिया गया | 3 | सरकश |

وَيَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿٤﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर तुम हो | ऐ लोगो! | 4 | दोज़ख़ | अ़ज़ाब | तरफ़ | और राह दिखाएगा उसे |

فِىْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर | मिट्टी से | हम ने पैदा किया तुम्हें | तो बेशक हम | जी उठना | से | शक में |

مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और बग़ैर सूरत बनी | सूरत बनी हुई | गोश्त की बोटी से | फिर | जमे हुए ख़ून से | फिर | नुत्फ़े से |

لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ؕ وَنُقِرُّ فِى الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰۤى

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तक | जो हम चाहें | रह्मों में | और हम ठहराते हैं | तुम्हारे लिए | ताकि हम ज़ाहिर कर दें |

اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْۤا اَشُدَّكُمْ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी जवानी | ताकि तुम पहुँचो | फिर | बच्चा | हम निकालते हैं तुम्हें | फिर | एक मुद्दते मुक़र्ररा |

وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰۤى اَرْذَلِ الْعُمُرِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| निकम्मी उम्र | तक | पहुँचता है | कोई | और तुम में से | फ़ौत हो जाता है | कोई | और तुम में से |

لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ وَتَرَى الْاَرْضَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन | और तू देखता है | कुछ | इल्म (जानना) | बाद | ताकि वह न जाने |

هَامِدَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उभर आई | वह तरोताज़ा हो गई | पानी | उस पर | हम ने उतारा | फिर जब | ख़ुश्क पड़ी हुई |

وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۭ بَهِيْجٍ ﴿٥﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | इस लिए कि | यह | 5 | रौनक़दार | हर जोड़ा | से | और उगा लाई |

هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْىِ الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | क़ुदरत रखने वाला | हर शै | पर | और यह कि वह | मुर्दों | ज़िन्दा करता है | और यह कि वह | वही बरहक़ |

जिस दिन तुम उसे देखोगे, भूल जाएगी हर दूध पिलाने वाली जिस (बच्चे) को दूध पिलाती है, और हर हामिला अपना हम्ल गिरा देगी, और तू लोगों को देखेगा (जैसे वह) नशे में हों हालांकि वह नशे में न होंगे, लेकिन अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है। (2)

और कुछ लोग हैं जो अल्लाह के बारे में बे जाने बूझे झगड़ा करते हैं, और वह हर सरकश शैतान की पैरवी करते हैं। (3)

उस की निसबत लिख दिया गया कि जो उस से दोस्ती करेगा तो वह बेशक उसे गुमराह कर देगा, और उसे दोज़ख़ के अज़ाब की तरफ़ राह दिखाएगा। (4)

ऐ लोगो! अगर तुम (क़ियामत के दिन) जी उठने से शक में हो तो (सोचो) हम ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर जमे हुए ख़ून से, फिर गोश्त की बोटी से, सूरत बनी हुई और बग़ैर सूरत बनी (अधूरी) ताकि हम तुम्हारे लिए (अपनी क़ुदरत) ज़ाहिर कर दें और हम (माँओं के) रह्मों में से जो चाहें एक मुद्दत तक ठहराते हैं, फिर हम तुम्हें निकालते हैं बच्चे (की सूरत में) ताकि फिर तुम अपनी जवानी को पहुँचो, और तुम में कोई (उम्रे तबई से क़ब्ल) फ़ौत हो जाता है, और तुम में से कोई पहुँचता है निकम्मी उम्र तक, ताकि वह जानने के बाद कुछ न जाने (नासमझ हो जाए)। और तू ज़मीन को देखता है ख़ुश्क पड़ी हुई, फिर जब हम ने उस पर पानी उतारा तो वह तरोताजा हो गई, और उभर आई, और वह उगा लाई हर (क़िस्म) का जोड़ा रौनक़दार (नबातात का)। (5)

यह इस लिए है कि अल्लाह ही बरहक़ है, और यह कि वह मुर्दों को जिन्दा करता है, और यह कि वह हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है। (6)

और यह कि क़ियामत आने वाली है, इस में कोई शक नहीं, और यह कि अल्लाह उठाएगा जो क़ब्रों में हैं। **(7)** और लोगों में (कोई ऐसा भी है) जो अल्लाह के बारे में झगड़ता है बग़ैर किसी इल्म के, और बग़ैर किसी दलील के, और बग़ैर किसी किताबे रोशन के। **(8)** (तकब्बुर से) अपनी गर्दन मोड़े हुए ताकि अल्लाह के रास्ते से गुमराह करे, उस के लिए दुनिया में रुस्वाई है और हम उसे रोज़े क़ियामत जलती आग का अ़ज़ाब चखाएंगे। **(9)** यह उस सबब से जो तेरे हाथों ने (आगे) भेजा (तेरे आमाल) और यह कि अल्लाह अपने बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं। **(10)** और लोगों में (कोई ऐसा भी है) जो एक किनारे पर अल्लाह की बन्दगी करता है, फिर अगर उसे भलाई पहुँच गई तो उस (इबादत) से इत्मिनान पा लिया, और उसे अगर कोई आज़माइश पहुँची तो वह अपने मुँह के बल पलट गया, दुनिया और आखिरत के घाटे में रहा, यही है खुला घाटा। **(11)** वह अल्लाह के सिवा पुकारता है (उस को) जो न उसे नुक़्सान पहुँचा सके और न उसे नफ़ा पहुँचा सके, यही है इन्तिहा दरजे की गुमराही। **(12)** वह पुकारता है, उस को जिस का ज़रर उस के नफ़ा से ज़ियादा क़रीब है, बेशक बुरा है (यह) दोस्त और बुरा है (यह) रफ़ीक़। **(13)** जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने दुरुस्त अ़मल किए बेशक अल्लाह उन्हें उन बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे बहती हैं नहरें, बेशक अल्लाह जो चाहता है करता है। **(14)** जो शख़्स गुमान करता है कि अल्लाह उस (रसूल स) की हरगिज़ मदद न करेगा दुनिया और आखिरत में, तो उसे चाहिए के एक रस्सी आस्मान की तरफ़ ताने, फिर उसे (आस्मान को) काट डाले, फिर देखे क्या उस की यह तदबीर उस चीज़ को दूर कर देती है जो उसे गुस्सा दिला रही है। **(15)**

وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | उठाएगा | अल्लाह | और यह कि | उस में | नही शक | आने वाली | घड़ी (क़ियामत) | और यह कि |

فِى الْقُبُوْرِ ۝٧ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बग़ैर किसी इल्म | अल्लाह (के बारे) में | झगड़ता है | जो | और लोगों में से | 7 | क़ब्रों में |

وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۝٨ ثَانِىَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | ताकि गुमराह करे | अपनी गर्दन | मोड़े हुए | 8 | रोशन | और बग़ैर किसी किताब | और बग़ैर किसी दलील |

سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ لَهٗ فِى الدُّنْيَا خِزْىٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रोज़े क़ियामत | और हम उसे चखाएंगे | रुस्वाई | दुनिया में | उस के लिए | अल्लाह | रास्ता |

عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝٩ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नही | और यह कि अल्लाह | तेरे हाथ | आगे भेजा | यह उस सबब जो | 9 | जलती आग | अ़ज़ाब |

بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝١٠ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ ع ٨

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक किनारा | पर | अल्लाह | बन्दगी करता है | जो | लोग | और से | 10 | अपने बन्दों पर | ज़ुल्म करने वाला |

فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ ۨاطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ ۨانْقَلَبَ عَلٰى

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर-बल | तो पलट गया | कोई आज़माइश | उसे पहुँची | और अगर | उस से | तो इत्मिनान पा लिया | भलाई | उसे पहुँच गई | फिर अगर |

وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ۝١١

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | खुला | वह घाटा | यह है | और आखिरत | दुनिया में घाटा | अपना मुँह |

يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ؕ ذٰلِكَ هُوَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह | यह है | न उसे नफ़ा पहुँचाए | और जो | न उसे नुक़्सान पहुँचाए | जो | अल्लाह के सिवा | से | पुकारता है वह |

الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ۝١٢ يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗۤ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के नफ़ा से | जियादा करीब | उस का जरर | उस को जो | वह पुकारता है | 12 | दूर-इन्तिहा दर्जा | गुमराही |

لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ۝١٣ اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जो लोग ईमान लाए | दाख़िल करेगा | बेशक अल्लाह | 13 | रफ़ीक़ | और बेशक बुरा | दोस्त | बेशक बुरा |

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| नहरें | उन के नीचे | बहती हैं | बाग़ात | और उन्हों ने दुरुस्त अ़मल किए |

اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ۝١٤ مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हरगिज़ उस की मदद न करेगा | कि | गुमान करता है | जो | 14 | जो वह चाहता है | करता है | बेशक अल्लाह |

اللّٰهُ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَآءِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आस्मान की तरफ़ | एक रस्सी | तो उसे चाहिए कि ताने | और आखिरत | दुनिया में | अल्लाह |

ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ۝١٥

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15 | जो गुस्सा दिला रही है | उस की तदबीर | दूर कर देती है | क्या | फिर देखे | उसे काट डाले | फिर |

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يُّرِيْدُ ﴿١٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 16 | बह चाहता है | जिस को | हिदायत देता है | और यह कि अल्लाह | रौशन | आयतें | हम ने इस को नाज़िल किया | और इसी तरह |

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـِٕيْنَ وَالنَّصٰرٰى

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और नसारा (मसीही) | और साबी (सितारा परस्त) | यहूदी हुए | और जो | जो लोग ईमान लाए | बेशक |

وَالْمَجُوْسَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا ۖ اِنَّ اللّٰهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रोज़े क़ियामत | उन के दरमियान | फ़ैसला कर देगा | बेशक अल्लाह | और वह जिन्हों ने शिर्क किया (मुशरिक) | और आतिश परस्त |

اِنَّ اللّٰهَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿١٧﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ لَهٗ مَنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | सिज्दा करता है उस के लिए | कि अल्लाह | क्या तू ने नहीं देखा? | 17 | मुत्तला | हर शै | पर | बेशक अल्लाह |

فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُوْمُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और सितारे | और चाँद | और सूरज | ज़मीन में | और जो | आस्मानों में |

وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَاۗبُّ وَكَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ ۭ وَكَثِيْرٌ حَقَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| साबित हो गया | और बहुत से | इन्सान (जमा) | से | और बहुत | और चौपाए | और दरख़्त | और पहाड़ |

عَلَيْهِ الْعَذَابُ ۭ وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक अल्लाह | कोई इज़्ज़त देने वाला | तो नहीं उस के लिए | ज़लील करे अल्लाह | और जिसे | अ़ज़ाब | उस पर |

السجدة ١٠ يَفْعَلُ مَا يَشَاۗءُ ۞ ﴿١٨﴾ هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِيْ رَبِّهِمْ ۡ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने रब (के बारे) में | वह झगड़े | दो फ़रीक़ | यह दो | 18 | जो वह चाहता है | करता है |

فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ۭ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऊपर | डाला जाएगा | आग के | कपड़े | उन के लिए | काटे गए | कुफ़्र किया | पस वह जिन्हों ने |

رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ ﴿١٩﴾ يُصْهَرُ بِهٖ مَا فِيْ بُطُوْنِهِمْ وَالْجُلُوْدُ ﴿٢٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | और जिल्दें (खालें) | उन के पेटों में | जो | उस से | पिघल जाएगा | 19 | खौलता हुआ पानी | उन के सर (जमा) |

وَلَهُمْ مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ ﴿٢١﴾ كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कि वह निकलें | वह इरादा करेंगे | जब भी | 21 | लोहे के | गुर्ज़ | और उन के लिए |

ع ٢ ٩ مِنْهَا مِنْ غَمٍّ اُعِيْدُوْا فِيْهَا ۤ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٢٢﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 22 | जलने का अ़ज़ाब | और चखो | उस में | लौटा दिए जाएंगे | ग़म से (ग़म के मारे) | उस से |

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बाग़ात | नेक | और उन्हों ने अमल किए | जो लोग ईमान लाए | दाख़िल करेगा | बेशक अल्लाह |

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| कंगन | वह पहनाए जाएंगे उस में | नहरें | उन के नीचे | बहती हैं |

مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۭ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿٢٣﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 23 | रेशम | उस में | और उन का लिबास | और मोती | सोने के |

और इसी तरह हम ने इस (क़ुरआन) को उतारा, रौशन आयतें और यह कि अल्लाह जिस को चाहता है हिदायत देता है। **(16)** बेशक जो लोग ईमान लाए, और जो यहूदी हुए, और सितारा परस्त, और नसारा, और आतिश परस्त, और मुशरिक, बेशक अल्लाह फ़ैसला कर देगा रोज़े क़ियामत उन के दरमियान, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर मुत्तला है। **(17)** क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह के लिए सिज्दा करता है जो (भी) आस्मानों में और जो (भी) ज़मीन में है, और सूरज और चाँद और सितारे और पहाड़, और दरख़्त, और चौपाए और बहुत से इन्सान (भी), और बहुत से हैं कि साबित हो गया है उन पर अ़ज़ाब, और जिसे अल्लाह ज़लील करे उस के लिए कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं, और बेशक अल्लाह करता है जो वह चाहता है। **(18)** यह दो फ़रीक़ अपने रब के बारे में झगड़े, पस जिन्हों ने कुफ़्र किया, उन के लिए आग के कपड़े काट जा चुके हैं, उन के सरों के ऊपर खौलता हुआ पानी डाला जाएगा। **(19)** उस से पिघल जाएगा जो उन के पेटों में है और (उन की) खालें (भी) **(20)** और उन के लिए लोहे के गुर्ज़ हैं। **(21)** जब भी वह ग़म के मारे उस से निकलने का इरादा करेंगे उसी में लौटा दिए जाएंगे और (कहा जाएगा) जलने का अ़ज़ाब चखो। **(22)** जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अमल किए, बेशक अल्लाह उन्हें बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे बहती है नहरें, उस में उन्हें सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे, और उस में उन का लिबास रेशम (का होगा)। **(23)**

وَهُدُوْٓا اِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۖ وَهُدُوْٓا اِلٰى صِرَاطِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राह | तरफ़ | और उन्हें हिदायत की गई | बात | से-की | पाकीज़ा | तरफ़ | और उन्हें हिदायत की गई |

الْحَمِيْدِ ﴿٢٤﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह का रास्ता | से | और वह रोकते हैं | जिन लोगों ने कुफ़्र किया | बेशक | 24 | तारीफ़ों का लाइक़ |

وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِيْ جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَآءَ ۨالْعَاكِفُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रहने वाला | बराबर | लोगों के लिए | हम ने मुक़र्रर किया | वह जिसे | मस्जिदे हराम (बैतुल्लाह) |

فِيْهِ وَالْبَادِ ۭ وَمَنْ يُّرِدْ فِيْهِ بِاِلْحَادٍۢ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | हम उसे चखाएंगे | ज़ुल्म से | गुमराही का | उस में | इरादा करे | और जो | और परदेसी | उस में |

عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٥﴾ وَاِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ اَنْ ع ٣ ١٠

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | ख़ाने कअ़बा की जगह | इब्राहीम के लिए | हम ने ठीक कर दी | और जब | 25 | दर्दनाक | अ़ज़ाब |

لَّا تُشْرِكْ بِيْ شَيْـًٔا وَّطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْقَآئِمِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और क़ियाम करने वाले | तवाफ़ करने वालों के लिए | मेरा घर | और पाक रखना | किसी शै | मेरे साथ | न शरीक करना |

وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿٢٦﴾ وَاَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पैदल | वह तेरे पास आएं | हज का | लोगों में | और एलान कर दो | 26 | सिज्दा करने वाले | और रुकूअ़ करने वाले |

وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ﴿٢٧﴾ لِّيَشْهَدُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि वह देखें | 27 | दूर दराज़ | हर रास्ता | से | वह आती हैं | हर दुबली ऊँटनी | और पर |

مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जाने पहचाने (मुक़र्ररा) दिन | में | अल्लाह का नाम | वह याद करें (करते) | अपने | फ़ाइदे |

عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ۚ فَكُلُوْا مِنْهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से | पस तुम खाओ | मवेशी | चौपाए | से | हम ने उन्हें दिया | जो | पर |

وَاَطْعِمُوا الْبَآئِسَ الْفَقِيْرَ ﴿٢٨﴾ ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना मैल कुचैल | चाहिए कि दूर करें | फिर | 28 | मोहताज | बदहाल | और खिलाओ |

وَلْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوْا بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٢٩﴾

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 29 | क़दीम घर | और तवाफ़ करें | अपनी नज़्रें | और पूरी करें |

ذٰلِكَ ۤ وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उसके रब के नज़दीक | उसके लिए | बेहतर | पस वह | शआइरे अल्लाह (अल्लाह की निशानियां) | ताज़ीम करे | और जो | यह |

وَاُحِلَّتْ لَكُمُ الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पस तुम बचो | तुम पर-तुम को | जो पढ़ दिए गए | सिवाए | मवेशी | तुम्हारे लिए | और हलाल क़रार दिए गए |

الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ﴿٣٠﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | झूटी | बात | और बचो | बुत (जमा) | से | गन्दगी |

और उन्हें हिदायत की गई पाकीज़ा बात की तरफ़ और हिदायत की गई तारीफ़ों के लाइक़ (अल्लाह) के रास्ते की तरफ़। (24)
बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया, और वह रोकते हैं अल्लाह के रास्ते से और बैतुल्लाह से जिसे हम ने मुक़र्रर किया है सब लोगों के लिए, उस में रहने वाले और परदेसी बराबर हैं (हुक़ूक़ में) और जो उस में ज़ुल्म से गुमराही का इरादा करेगा हम उसे दर्दनाक अ़ज़ाब (का मज़ा) चखाएंगे। (25)
और (याद करो) जब हम ने इब्राहीम (अ) के लिए ख़ाने कअ़बा की जगह ठीक कर दी, (हम ने हुक्म दिया) कि मेरे साथ किसी को शरीक न करना, और मेरा घर पाक रखना तवाफ़ करने वालों के लिए और क़ियाम करने वालों और रुकूअ़ ओ सिज्दा करने वालों के लिए। (26)
और लोगों में हज का एलान कर दो कि वह तेरे पास पैदल और दुबली ऊँटनियों पर आएं, वह आती हैं हर दूर दराज़ रास्ते से। (27)
ताकि वह फ़ाइदे देखें जो यहां उन के लिये रखे गए हैं, और वह अल्लाह का नाम लें मुक़र्ररा दिनों में (ज़ुबह करते वक़्त) उन मवेशियों (जानवरों) पर जो हम ने उन्हें दिए हैं, पस उन में से तुम (ख़ुद भी) खाओ और बदहाल मोहताज को (भी) खिलाओ। (28)
फिर चाहिए कि अपना मैल कुचैल दूर करें, और अपनी नज़्रें (मन्नतें) पूरी करें, और क़दीम घर (बैतुल्लाह) का तवाफ़ करें। (29)
यह (है हुक्म) और जो अल्लाह की हुरमतों की ताज़ीम करे, पस वह (ताज़ीम) उस के रब के नज़दीक उस के लिए बेहतर है, और तुम्हारे लिए मवेशी हलाल क़रार दिए गए उन के सिवा जो तुम पर पढ़ दिए (सुना दिए गए) पस तुम बचो (किनारा कश रहो) बुतों की गन्दगी से। और बचो झूटी बात से। (30)

حُـنَـفَـآءَ لِلّٰهِ غَـيْـرَ مُـشْـرِكِـيْـنَ بِـهٖ ؕ وَمَـنْ يُّـشْـرِكْ بِـاللّٰهِ فَـكَاَنَّـمَـا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो गोया | अल्लाह का | शरीक करेगा | और जो | उस के साथ | शरीक करने वाले | न | अल्लाह के लिए यक रुख़ हो कर |

خَـرَّ مِـنَ الـسَّـمَـآءِ فَـتَـخْـطَـفُـهُ الطَّـيْـرُ اَوْ تَـهْـوِيْ بِـهِ الـرِّيْـحُ فِـيْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | हवा | उस को | फेंक देती है | या | परिन्दे | पस उसे उचक ले जाते हैं | आस्मान से | वह गिरा |

مَـكَانٍ سَحِيْقٍ ﴿٣١﴾ ذٰلِـكَ ۗ وَمَـنْ يُّـعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَـاِنَّـهَا مِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | तो बेशक यह | शआइरे अल्लाह | ताज़ीम करेगा | और जो | यह | 31 | दूर दराज़ | किसी जगह |

تَـقْـوَى الْـقُـلُـوْبِ ﴿٣٢﴾ لَـكُـمْ فِـيْـهَا مَـنَـافِـعُ اِلٰٓى اَجَـلٍ مُّـسَـمًّـى ثُـمَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर | एक मुद्दते मुक़र्रर | तक | नफ़ा (फ़ाइदे) | उस में | तुम्हारे लिए | 32 | (जमा) क़ल्ब (दिल) | परहेज़गारी |

ع ٤ ٨ ١١ مَـحِـلُّـهَآ اِلَـى الْـبَـيْـتِ الْـعَـتِـيْـقِ ﴿٣٣﴾ وَلِـكُـلِّ اُمَّـةٍ جَـعَـلْـنَـا مَـنْـسَـكًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कुरबानी | हम ने मुक़र्रर की | और हर उम्मत के लिए | 33 | बैते क़दीम (बैतुल्लाह) | तक | उन के पहुँचने का मुक़ाम |

لِّـيَـذْكُـرُوا اسْـمَ اللّٰهِ عَـلٰى مَـا رَزَقَـهُـمْ مِّـنْۢ بَـهِـيْـمَـةِ الْاَنْـعَـامِ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मवेशी | चौपाए | से | जो हम ने दिए उन्हें | पर | अल्लाह का नाम | ताकि वह लें |

فَـاِلٰـهُـكُـمْ اِلٰـهٌ وَّاحِـدٌ فَـلَـهٗٓ اَسْـلِـمُـوْا ؕ وَبَـشِّـرِ الْـمُـخْـبِـتِـيْـنَ ﴿٣٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 34 | आजिज़ी से गर्दन झुकाने वाले | और ख़ुशख़बरी दें | फ़रमांबरदार हो जाओ | पस उस के | मावूदे यकता | पस तुम्हारा माबूद |

الَّـذِيْـنَ اِذَا ذُكِـرَ اللّٰهُ وَجِـلَـتْ قُـلُـوْبُـهُـمْ وَالـصّٰـبِـرِيْـنَ عَـلٰى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | और सब्र करने वाले | उन के दिल | डर जाते हैं | अल्लाह का नाम लिया जाए | जब | वह जो |

مَآ اَصَابَـهُـمْ وَالْـمُـقِـيْـمِـى الـصَّـلٰـوةِ ۙ وَمِـمَّـا رَزَقْـنٰـهُـمْ يُـنْـفِـقُـوْنَ ﴿٣٥﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 35 | वह ख़र्च करते हैं | हम ने उन्हें दिया | और उस से जो | नमाज़ | और क़ाइम करने वाले | जो उन्हें पहुँचे |

وَالْـبُـدْنَ جَـعَـلْـنٰـهَا لَـكُـمْ مِّـنْ شَـعَآئِـرِ اللّٰهِ لَـكُـمْ فِـيْـهَا خَـيْـرٌ ۖ ق

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भलाई | उस में | तुम्हारे लिए | शआइरे अल्लाह | से | तुम्हारे लिए | हम ने मुक़र्रर किए | और कुरबानी के ऊँट |

فَـاذْكُـرُوا اسْـمَ اللّٰهِ عَـلَـيْـهَا صَـوَآفَّ ۚ فَـاِذَا وَجَـبَـتْ جُـنُـوْبُـهَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के पहलू | गिर जाएं | फिर जब | क़तार बान्ध कर | उन पर | अल्लाह का नाम | पस लो तुम |

فَـكُـلُـوْا مِـنْـهَا وَاَطْـعِـمُـوا الْـقَـانِـعَ وَالْـمُـعْـتَـرَّ ؕ كَـذٰلِـكَ سَـخَّـرْنٰـهَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने उन्हें मुसख़्ख़र किया | इसी तरह | और सवाल करने वाले | सवाल न करने वाले | और खिलाओ | उन से | तो खाओ |

لَـكُـمْ لَـعَـلَّـكُـمْ تَـشْـكُـرُوْنَ ﴿٣٦﴾ لَـنْ يَّـنَـالَ اللّٰهَ لُـحُـوْمُـهَا وَلَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और न | उन का गोश्त | हरगिज़ नहीं पहुँचता अल्लाह को | 36 | शुक्र करो | ताकि तुम | तुम्हारे लिए |

دِمَـآؤُهَـا وَلٰـكِـنْ يَّـنَـالُـهُ الـتَّـقْـوٰى مِـنْـكُـمْ ؕ كَـذٰلِـكَ سَـخَّـرَهَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने उन्हें मुसख़्ख़र किया | इसी तरह | तुम से | तक़्वा | उस को पहुँचता | और लेकिन (बल्कि) | उन का ख़ून |

لَـكُـمْ لِـتُـكَـبِّـرُوا اللّٰهَ عَـلٰى مَـا هَـدٰىكُـمْ ؕ وَبَـشِّـرِ الْـمُـحْـسِـنِـيْـنَ ﴿٣٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 37 | नेकी करने वाले | और ख़ुशख़बरी दें | जो उस ने हिदायत दी तुम्हें | पर | अल्लाह | ताकि तुम बड़ाई से याद करो | तुम्हारे लिए |

(सब को छोड़ कर) अल्लाह के लिए यक रुख़ हो कर, (किसी को) न शरीक करने वाले उस के साथ, और जो कोई अल्लाह का शरीक करेगा तो गोया वह आस्मान से गिरा, फिर उसे परिन्दे उचक ले जाते हैं या फेंक देती है उस को हवा किसी दूर दराज़ की जगह में। (31)

यह (है हुक्म) और जो शआइरे अल्लाह (अल्लाह की निशानियाँ) की ताज़ीम करेगा तो बेशक यह दिलों की परहेज़गारी से है। (32)

तुम्हारे लिए उन (मवेशियों) में एक मुद्दते मुक़र्रर तक फ़ाइदे (हासिल करना जाइज़) है, फिर उन के पहुँचने का मुक़ाम बैते क़दीम (बैतुल्लाह) के पास है। (33)

और हम ने हर उम्मत के लिए कुरबानी मुक़र्रर की ताकि वह अल्लाह का नाम लें (ज़ुबह करते वक़्त) उन मवेशियों चौपायों पर जो हम ने उन्हें दिए हैं, पस तुम्हारा माबूद, माबूदे यकता है, पस उस के फ़रमांबरदार हो जाओ, और (ऐ मुहम्मद स) आजिज़ी से गर्दन झुकाने वालों को ख़ुशख़बरी दें। (34)

वह (जिन की कैफ़ियत यह है कि) जब अल्लाह का नाम लिया जाए तो उन के दिल डर जाते हैं, और वह सब्र करने वाले उस पर जो उन्हें पहुँचे, और नमाज़ क़ाइम करने वाले, और जो हम ने उन्हें दिया उस में से वह ख़र्च करते हैं। (35)

और कुरबानी के ऊँट हम ने तुम्हारे लिए शआइरे अल्लाह (अल्लाह की निशानियां) मुक़र्रर किए, तुम्हारे लिए उन में भलाई है, पस अल्लाह का नाम लो (ज़ुबह करते वक़्त) उन पर क़तार बान्ध कर, फिर जब उन के पहलू (ज़मीन पर) गिर जाएं (ज़ुब्ह हो जाएं) तो उन में से (ख़ुद भी) खाओ और खिलाओ, सवाल न करने वालों को और सवाल करने वालों को, इसी तरह हम ने उन्हें तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र (ज़ेरे फ़रमान) किया है ताकि तुम शुक्र करो (एहसान मानो)। (36)

अल्लाह को हरगिज़ नहीं पहुँचता उन का गोश्त और न उन का ख़ून, बल्कि उस को पहुँचता है तक़्वा (तुम्हारे दिलों की परहेज़गारी), उसी तरह हम ने उन्हें तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र (ज़ेरे फ़रमान) किया ताकि तुम अल्लाह को बड़ाई से याद करो उस पर जो उस ने तुम्हें हिदायत दी, और नेकी करने वालों को ख़ुशख़बरी दें। (37)

बेशक अल्लाह दूर करता है मोमिनों से (दुश्मनों के ज़रर), बेशक अल्लाह किसी भी दगाबाज (खाइन) नाशुक्रे को पसंद नहीं करता। (38)
इज़्न (जिहाद) दिया गया उन लोगों को जिन से (काफ़िर) लड़ते हैं, क्यों कि उन पर ज़ुल्म किया गया, और अल्लाह बेशक उन की मदद पर ज़रूर कुदरत रखता है। (39)
जो लोग निकाले गए अपने शहरों से नाहक़, सिर्फ़ (इस बिना पर) कि वह कहते हैं हमारा रब अल्लाह है, और अगर अल्लाह दफ़अ न करता लोगों को एक दूसरे से, तो सोमए (राहिबों के ख़िल्वत ख़ाने) और (नसारा के) गिरजे, और (यहूद के) इबादत ख़ाने और (मुसलमानों की) मस्जिदें ढा दी जातीं जिन में अल्लाह का नाम बकस्रत लिया जाता है, और अलबत्ता अल्लाह ज़रूर उस की मदद करेगा जो उस की मदद करता है, बेशक अल्लाह तवाना, गालिब है। (40)
वह लोग कि अगर हम उन्हें मुल्क में दस्तरस (इख़्तियार) दें तो नमाज क़ाइम करें और ज़कात अदा करें और नेक कामों का हुक्म दें और बुराई से रोकें, और तमाम कामों का अन्जाम अल्लाह ही के लिए है। (41)
और अगर यह तुम्हें झुटलाएं तो इन से क़ब्ल झुटलाया नूह (अ) की क़ौम ने, और आद और समूद ने, (42)
और इब्राहीम (अ) की क़ौम ने, और क़ौमे लूत (अ), (43)
और मदयन वालों ने, और मूसा (अ) को (भी) झुटलाया गया, पस मैं ने काफ़िरों को ढील दी, फिर मैं ने उन्हें पकड़ लिया, तो कैसा हुआ मेरे इन्कार (का अन्जाम)! (44)
सो कितनी ही बस्तियां हैं जिन्हें हम ने हलाक किया और वह ज़ालिम थीं, तो वह (अब) अपनी छतों पर गिरी पड़ी हैं, और (कितने ही) कुएँ बेकार पड़े हैं, और बहुत से गचकारी के (पुख़्ता) महल (वीरान पड़े हैं)। (45)
पस क्या वह ज़मीन पर चलते फिरते नहीं जो उन के दिल (ऐसे) हो जाते कि उन से समझने लगते, या उन के कान (ऐसे हो जाते कि) उन से सुनने लगते, क्यों कि आँखें दरहक़ीक़त अन्धी नहीं हुआ करतीं, बल्कि दिल जो सीनों में हैं अन्धे हो जाया करते हैं। (46)

إِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ إِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| किसी-तमाम | पसंद नहीं करता | बेशक अल्लाह | जो लोग ईमान लाए (मोमिन) | से | बचाव करता है | बेशक अल्लाह |

خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ﴿٣٨﴾ أُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ؕ وَإِنَّ اللّٰهَ ع ٥ ١٢ الثلثة

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बेशक अल्लाह | उन पर ज़ुल्म किया गया | क्योंकि वह | जिन से लड़ते हैं | उन लोगों को | इज़्न दिया गया | 38 | नाशुक्रा | दगाबाज |

عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ﴿٣٩﴾ الَّذِيْنَ أُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नाहक़ | अपने घर (जमा) शहरों | से | निकाले गए | जो लोग | 39 | ज़रूर कुदरत रखता है | उन की मदद पर |

إِلَّآ أَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ؕ وَلَوْ لَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के बाज़ (एक को) | लोग | अल्लाह | दफ़अ करता | और अगर न | हमारा रब अल्लाह | वह कहते हैं | मगर (सिर्फ़) यह कि |

بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़िक्र किया हाता है (लिया जाता है) | और मस्जिदें | और इबादत ख़ाने | और गिरजे | सोमए | तो ढा दिए जाते | बाज़ से (दूसरे) |

فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ؕ وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ؕ إِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताक़त वाला (तवाना) | बेशक अल्लाह | उस की मदद करता है | जो | और अलबत्ता ज़रूर मदद करेगा अल्लाह | बहुत बकस्रत | अल्लाह | नाम | उन में |

عَزِيْزٌ ﴿٤٠﴾ اَلَّذِيْنَ إِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْأَرْضِ أَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अदा करें | नमाज़ | वह क़ाइम करें | ज़मीन (मुल्क) में | हम दस्तरस दें उन्हें | अगर | वह लोग जो | 40 | गालिब |

الزَّكٰوةَ وَأَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और अल्लाह के लिए अन्जाम कार | बुराई से | और वह रोकें | नेक कामों का | और हुक्म दें | ज़कात |

الْأُمُوْرِ ﴿٤١﴾ وَإِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और आद | नूह की क़ौम | इन से क़ब्ल | तो झुटलाया | तुम्हें झुटलाएं | और अगर | 41 | तमाम काम |

وَّثَمُوْدُ ﴿٤٢﴾ وَقَوْمُ إِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ﴿٤٣﴾ وَّأَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और झुटलाया गया | और मदयन वाले | 43 | और क़ौमे लूत (अ) | और इब्राहीम (अ) की क़ौम | 42 | और समूद |

مُوْسٰى فَأَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٤٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 44 | मेरा इन्कार | हुआ | तो कैसा | मैं ने उन्हें पकड़ लिया | फिर | काफ़िरों को | पस मैं ने ढील दी | मूसा (अ) |

فَكَأَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنٰهَا وَهِىَ ظَالِمَةٌ فَهِىَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी छतें | पर | गिरी पड़ी | कि वह यह | ज़ालिम | और यह (वह) | हम ने हलाक किया उन्हें | बस्तियां | तो कितनी |

وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ ﴿٤٥﴾ أَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْأَرْضِ فَتَكُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो हो जाते | जमीन में | पस क्या वह चलते फिरते नहीं | 45 | गचकारी के | और बहुत महल | बेकार | और कुएँ |

لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ بِهَآ أَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ فَإِنَّهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्यों कि दरहक़ीक़त | उन से | सुनने लगते | या कान (जमा) | उन से | वह समझने लगते | दिल | उन के |

لَا تَعْمَى الْأَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِىْ فِى الصُّدُوْرِ ﴿٤٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 46 | सीनों में | वह जो | दिल (जमा) | अन्धे हो जाते हैं | और लेकिन (बल्कि) | आँखें | अन्धी नहीं होतीं |

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ۭ وَاِنَّ يَوْمًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक दिन | और बेशक | अपना वादा | अल्लाह | ख़िलाफ़ करेगा | और हरगिज़ नहीं | अज़ाब | और वह तुम से जल्दी मांगते हैं |

عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٤٧﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बस्तियां | और कितनी ही | 47 | तुम गिनते हो | उस से जो | हज़ार साल के मानिंद | तुम्हारे रब के हां |

ع ٦ ١٣ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا ۚ وَاِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿٤٨﴾ قُلْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़रमा दें | 48 | लौट कर आना | और मेरी तरफ़ | मैं ने पकड़ा उन्हें | फिर | ज़ालिम | और वह | उन को | मैं ने ढील दी |

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَآ اَنَا لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٩﴾ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पस जो लोग ईमान लाए | 49 | डराने वाला आश्कारा | तुम्हारे लिए | मैं | इस के सिवा नहीं | ऐ लोगो! |

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٥٠﴾ وَالَّذِيْنَ سَعَوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिन लोगों ने कोशिश की | 50 | बाइज़्ज़त | और रिज़्क़ | बख़्शिश | उन के लिए | अच्छे | और उन्हों ने अमल किए |

فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٥١﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं भेजा हम ने | 51 | दोज़ख़ वाले | वही हैं | आजिज़ करने (हराने) | हमारी आयात | में |

مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّلَا نَبِيٍّ اِلَّآ اِذَا تَمَنّٰٓى اَلْقَى الشَّيْطٰنُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शैतान | डाला | उस ने आर्ज़ू की | जब | मगर | नबी | और न | रसूल | से-कोई | तुम से पहले |

فِيْٓ اُمْنِيَّتِهٖ ۚ فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللّٰهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह मज़बूत कर देता है | फिर | शैतान | जो डालता है | अल्लाह | पस मिटा देता है | उस की आर्ज़ू | में |

اٰيٰتِهٖ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٢﴾ لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शैतान | जो डाला | ताकि बनाए वह | 52 | हिक्मत वाला | जानने वाला | और अल्लाह | अपनी आयात |

فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْقَاسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ ۭ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन के दिल | और सख़्त | मरज़ | उन के दिलों में | उन लोगों के लिए | एक आज़माइश |

وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَفِيْ شِقَاقٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٥٣﴾ وَّلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जिन्हें | और ताकि जान लें | 53 | दूर बड़ी | अलबत्ता सख़्त ज़िद में | ज़ालिम (जमा) | और बेशक |

اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَيُؤْمِنُوْا بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | तो झुक जाएं | उस पर | तो वह ईमान ले आएं | तुम्हारे रब से | हक़ | कि यह | इल्म दिया गया |

قُلُوْبُهُمْ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 54 | सीधा | रास्ता | तरफ़ | वह लोग जो ईमान लाए | हिदायत देने वाला | और बेशक अल्लाह | उन के दिल |

وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आए उन पर | यहां तक कि | उस से | शक | में | जिन लोगों ने कुफ़्र किया | और हमेशा रहेंगे |

السَّاعَةُ بَغْتَةً اَوْ يَاْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيْمٍ ﴿٥٥﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 55 | मनहूस दिन | अज़ाब | या आ जाए उन पर | अचानक | क़ियामत |

और तुम से अज़ाब जल्दी मांगते हैं, और हरगिज़ न अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ करेगा, और बेशक तुम्हारे रब के हां एक दिन हज़ार साल के मानिंद है उस से जो तुम गिनते हो (तुम्हारे हिसाब में)। (47) और कितनी ही बस्तियां हैं, मैं ने उन को ढील दी और वह ज़ालिम थीं, फिर मैं ने उन्हें पकड़ा, और मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है। (48) फ़रमा दें, ऐ लोगो! इस के सिवा नहीं कि मैं तुम्हारे लिए आश्कारा डराने वाला हूँ। (49) पस जो लोग ईमान लाए, और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, उन के लिए बख़्शिश और बाइज़्ज़त रिज़्क़ है। (50) और जिन लोगों ने कोशिश की (अपने ज़ओम में) हमारी आयात को हराने की, वही हैं दोज़ख़ वाले। (51) और हम ने तुम से पहले नहीं भेजा कोई रसूल और न नबी, मगर जब उस ने आर्ज़ू की तो शैतान ने उस की आर्ज़ू में (वस्वसा) डाला, पस शैतान जो डालता है अल्लाह मिटा देता है, फिर अल्लाह अपनी आयात को मज़बूत कर देता है, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (52) ताकि (उस वस्वसे को) जो शैतान ने डाला उन लोगों के लिए आज़माइश बना दे जिन के दिलों में मरज़ है और उन के दिल सख़्त हैं, और बेशक ज़ालिम अलबत्ता सख़्त ज़िद में हैं। (53) और ताकि जान लें वह लोग जिन्हें इल्म दिया गया है कि यह तुम्हारे रब (की तरफ़ से) हक़ है तो उस पर ईमान ले आएं और उस के लिए झुक जाएं उन के दिल, और बेशक अल्लाह उन लोगों को सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत देने वाला है जो ईमान लाए। (54) और हमेशा रहेंगे उस से शक में जिन लोगों ने कुफ़्र किया, यहां तक कि उन पर अचानक क़ियामत आ जाए, या उन पर आ जाए मनहूस दिन का अ़ज़ाब। (55)

उस दिन बादशाही अल्लाह के लिए है, वह उन के दरमियान फ़ैसला करेगा, पस जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अमल किए वह नेमतों के बाग़ात में होंगे। (56) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयात को झुटलाया उन्हीं के लिए है ज़िल्लत का अ़ज़ाब। (57) और जिन लोगों ने अल्लाह के रास्ते में हिज्रत की, फिर मारे गए (शहीद हो गए) या मर गए, अल्लाह अलबत्ता उन्हें ज़रूर अच्छा रिज़्क़ देगा, और अल्लाह बेशक सब से बेहतर रिज़्क़ देने वाला। (58) वह अलबत्ता उन्हें ज़रूर ऐसे मुक़ाम में दाख़िल करेगा जिसे वह पसंद फ़रमाएंगे, और अल्लाह बेशक इल्म वाला, हिल्म वाला है। (59) यह (तो हुआ), और जस ने दुश्मन को (उसी क़द्र) सताया जैसे उसे सताया गया था, फिर उस पर ज़ियादती की गई तो अल्लाह ज़रूर उस की मदद करेगा, बेशक अल्लाह अलबत्ता माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है। (60) यह इस लिए है कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है, और दिन को दाख़िल करता है रात में, और यह कि अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। (61) यह इस लिए है कि अल्लाह ही हक़ है, और यह कि जिसे वह उस के सिवा पुकारते हैं वह बातिल है, और यह कि अल्लाह ही बुलन्द मरतबा, बड़ा है। (62) क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह ने आस्मानों से पानी उतारा तो ज़मीन सरसब्ज़ हो गई, बेशक अल्लाह निहायत मेहरबान ख़बर रखने वाला है। (63) उसी के लिए है जो आस्मानों में है, और जो कुछ ज़मीन में है, और बेशक अल्लाह वही बेनियाज़, तमाम ख़ूबियों वाला है। (64)

اَلْمُلْكُ يَوْمَىِٕذٍ لِّلّٰهِ ؕ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पस जो लोग ईमान लाए | उन के दरमियान | फ़ैसला करेगा | अल्लाह के लिए | उस दिन | बादशाही |

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِیْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٥٦﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और जिन लोगों ने कुफ़्र किया | 56 | नेमतों के बाग़ात | में | अच्छे | और उन्हों ने अमल किए |

ع ٩ ١٢ وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا فَاُولٰٓىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जिन लोगों ने | 57 | अ़ज़ाबे ज़िल्लत | उन के लिए | पस वही लोग | हमारी आयात को | और झुटलाया |

هَاجَرُوْا فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوْۤا اَوْ مَاتُوْا لَيَرْزُقَنَّهُمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता वह उन्हें रिज़्क़ देगा | वह मर गए | या | मारे गए | फिर | अल्लाह का रास्ता | में | हिज्रत की |

اللّٰهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٥٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 58 | रिज़्क़ देने वाला | सब से बेहतर | अलबत्ता वह | और बेशक अल्लाह | अच्छा | रिज़्क़ | अल्लाह |

لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَهٗ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيْمٌ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता इल्म वाला | और बेशक अल्लाह | वह उसे पसंद करेंगे | ऐसे मुक़ाम में | वह अलबत्ता उन्हें ज़रूर दाख़िल करेगा |

حَلِيْمٌ ﴿٥٩﴾ ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ بِهٖ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से | उसे सताया गया | जैसे | सताया | और जो-जिस | यह | 59 | हिल्म वाला |

ثُمَّ بُغِیَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ﴿٦٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 60 | बख़्शने वाला | अलबत्ता माफ़ करने वाला | बेशक अल्लाह | अल्लाह | ज़रूर मदद करेगा उस की | ज़ियादती की गई उस पर | फिर |

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِی النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | और दाख़िल करता है | दिन में | रात | दाख़िल करता है | इस लिए कि अल्लाह | यह |

فِی الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ بَصِيْرٌ ﴿٦١﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| इस लिए कि अल्लाह | यह | 61 | देखने वाला | सुनने वाला | और यह कि अल्लाह | रात में |

هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ وَاَنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और यह कि | बातिल | वह | उस के सिवा | वह पुकारते हैं | जो-जिसे | और यह कि | वही हक़ |

اللّٰهَ هُوَ الْعَلِیُّ الْكَبِيْرُ ﴿٦٢﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उतारा | कि अल्लाह | क्या तू ने नहीं देखा | 62 | बड़ा | बुलन्द मरतबा | वह | अल्लाह |

مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۫ فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ؕ اِنَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | सरसब्ज़ | ज़मीन | तो हो गई | पानी | आस्मान | से |

اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿٦٣﴾ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो कुछ | आस्मानों में | जो कुछ | उसी के लिए | 63 | ख़बर रखने वाला | निहायत मेहरबान | अल्लाह |

ع ٨ ١٥ فِی الْاَرْضِ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِیُّ الْحَمِيْدُ ﴿٦٤﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 64 | तमाम ख़ूबियों वाला | बेनियाज़ | अलबत्ता वही | और बेशक अल्लाह | ज़मीन में |

اَلَـمْ تَـرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّـرَ لَـكُـمْ مَّـا فِـى الْاَرْضِ وَالْـفُـلْـكَ تَجْـرِىْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चलती है | और कश्ती | जमीन में | जो | तुम्हारे लिए | मुसख़्ख़र किया | कि अल्लाह | क्या तू ने नही देखा |

فِـى الْـبَـحْـرِ بِـاَمْـرِهٖ ؕ وَيُـمْـسِـكُ الـسَّـمَـآءَ اَنْ تَـقَـعَ عَـلَـى الْاَرْضِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन पर | कि वह गिर पड़े | आस्मान | और वह रोके हुए है | उस के हुक्म से | दर्या में |

اِلَّا بِـاِذْنِـهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِـالـنَّـاسِ لَـرَءُوْفٌ رَّحِـيْـمٌ ﴿٦٥﴾ وَهُـوَ الَّـذِىْٓ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिस ने | और वही | 65 | निहायत मेह्रबान | बड़ा शफ़क़त करने वाला | लोगों पर | बेशक अल्लाह | उस के हुक्म से | मगर |

اَحْـيَـاكُـمْ ثُـمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُـمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ اِنَّ الْاِنْـسَـانَ لَـكَـفُـوْرٌ ﴿٦٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 66 | बड़ा नाशुक्रा | इन्सान | बेशक | तुम्हें ज़िन्दा करेगा | फिर | मारेगा तुम्हें | फिर | तुम्हें ज़िन्दा किया |

لِـكُلِّ اُمَّـةٍ جَعَلْـنَـا مَـنْـسَـكًا هُـمْ نَـاسِـكُـوْهُ فَـلَا يُـنَـازِعُـنَّـكَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सो चाहिए कि तुम से न झगड़ा करें | उस पर बन्दगी करते हैं | वह | एक तरीक़े इबादत | हम ने मुक़र्रर किया | हर उम्मत के लिए |

فِـى الْاَمْـرِ وَادْعُ اِلٰى رَبِّـكَ ؕ اِنَّـكَ لَـعَـلٰى هُـدًى مُّـسْـتَـقِـيْـمٍ ﴿٦٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 67 | सीधी | राह | पर | बेशक तुम | अपने रब की तरफ़ | और बुलाओ | उस मामले में |

وَاِنْ جَـادَلُـوْكَ فَـقُـلِ اللّٰهُ اَعْـلَـمُ بِـمَـا تَـعْـمَـلُـوْنَ ﴿٦٨﴾ اَللّٰهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | 68 | जो तुम करते हो | खूब जानता है | अल्लाह | तो आप कह दें | वह तुम से झगड़ें | और अगर |

يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَـوْمَ الْـقِـيٰـمَـةِ فِيْمَا كُنْتُمْ فِـيْـهِ تَـخْـتَـلِـفُـوْنَ ﴿٦٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 69 | इख़्तिलाफ़ करते | उस में | तुम थे | जिस में | रोज़े क़ियामत | तुम्हारे दरमियान | फ़ैसला करेगा |

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ فِىْ كِتٰبٍ ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किताब में | यह | बेशक | और जमीन | आस्मानों में | जो | जानता है | कि अल्लाह | क्या तुझे मालूम नही? |

اِنَّ ذٰلِـكَ عَـلَـى اللّٰهِ يَـسِـيْـرٌ ﴿٧٠﴾ وَيَـعْـبُـدُوْنَ مِـنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَـا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | अल्लाह के सिवा | और वह बन्दगी करते हैं | 70 | आसान | अल्लाह पर | यह | बेशक |

لَـمْ يُـنَـزِّلْ بِـهٖ سُلْطٰنًا وَّمَـا لَـيْسَ لَـهُـمْ بِـهٖ عِلْمٌ ؕ وَمَـا لِلظّٰلِمِيْنَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़ालिमों के लिए | और नही | कोई इल्म | उस का | उन के लिए (उन्हें) | नहीं | और जो-जिस | कोई सनद | उस की | नही उतारी उस ने |

مِـنْ نَّـصِـيْـرٍ ﴿٧١﴾ وَاِذَا تُـتْـلٰى عَـلَـيْـهِـمْ اٰيٰـتُـنَـا بَـيِّـنٰـتٍ تَـعْـرِفُ فِـىْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में-पर | तुम पहचानोगे | वाज़ेह | हमारी आयात | उन पर | पढ़ी जाती हैं | और जब | 71 | कोई मददगार |

وُجُـوْهِ الَّـذِيْـنَ كَـفَـرُوا الْـمُـنْـكَـرَ ؕ يَـكَـادُوْنَ يَـسْـطُـوْنَ بِـالَّـذِيْـنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन पर जो | वह हमला कर दें | क़रीब है | नाखुशी | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | चेहरे |

يَـتْـلُـوْنَ عَـلَـيْـهِـمْ اٰيٰـتِـنَـا ؕ قُـلْ اَفَـاُنَـبِّـئُـكُـمْ بِـشَـرٍّ مِّـنْ ذٰلِـكُـمْ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस | से | बदतर | क्या मैं तुम्हें बतला दूँ? | फ़रमा दें | हमारी आयात | उन पर | पढ़ते हैं |

ع ٩ ٨ ١٦ اَلـنَّـارُ ؕ وَعَـدَهَـا اللّٰهُ الَّـذِيْـنَ كَـفَـرُوْا ؕ وَبِـئْـسَ الْـمَـصِـيْـرُ ﴿٧٢﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 72 | ठिकाना | और बुरा | जिन लोगों ने कुफ़्र किया | अल्लाह | जिस का वादा किया | दोज़ख़ |

क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया जो कुछ जमीन में है, और कश्ती उस के हुक्म से दर्या में चलती है, और वह आस्मानों को रोके हुए है कि वह जमीन पर न गिर पड़े मगर उस के हुक्म से, बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा शफ़क़त करने वाला निहायत मेह्रबान है। (65)
और वही है जिस ने तुम्हें ज़िन्दा किया, फिर तुम्हें मारेगा, फिर तुम्हें जिन्दा करेगा, बेशक इन्सान बड़ा नाशुक्रा है। (66)
हम ने हर उम्मत के लिए एक तरीक़े इबादत मुक़र्रर किया है, वह उस पर (उसी के मुताबिक़) बन्दगी करते हैं, सो चाहिए कि इस मामले में न झगड़ें, और अपने रब की तरफ़ बुलाओ, बेशक तुम हो सीधी राह पर। (67)
और अगर वह तुम से झगड़ें तो आप (स) कह दें अल्लाह खूब जानता है जो तुम करते हो। (68)
अल्लाह रोज़े क़ियामत तुम्हारे दरमियान उस बात का फ़ैसला करेगा जिस में तुम इख़तिलाफ़ करते थे। (69)
क्या तुझे मालूम नहीं? कि अल्लाह जानता है जो आस्मानों में और जो जमीन में है, बेशक यह किताब में है, बेशक यह अल्लाह पर आसान है। (70)
वह अल्लाह के सिवा (उस की) बन्दगी करते हैं जिस की उस ने कोई सनद नहीं उतारी, और उस का (खुद) उन्हें कोई इल्म नहीं, और जालिमों के लिए कोई मददगार नहीं। (71)
और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयात पढ़ी जाती हैं, तो तुम काफ़िरों के चेहरों पर नाखुशी के (आसार) पहचान लोगे, क़रीब है कि वह उन पर हमला कर दें जो उन पर हमारी आयतें पढ़ते हैं, फ़रमा दें, क्या मैं तुम्हें बतलाऊँ जो इस से बदतर है, दोज़ख़, जिस का अल्लाह ने काफ़िरों से वादा किया, और बुरा है (वह) ठिकाना। (72)

ऐ लोगो! एक मिसाल बयान की जाती है, पस उस को (कान खोल कर) सुनो, बेशक जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो वह हरगिज़ एक मक्खी (भी) न पैदा कर सकेंगे अगरचे उस के लिए वह सब जमा हो जाएं, और अगर मक्खी उन से कुछ छीन ले तो वह उस से न छुड़ा सकेंगे, (कितना) बोदा है चाहने वाला और जिस को चाहा (वह भी)। **(73)** उन्हों ने अल्लाह की क़द्र न जानी (जैसे) उस की क़द्र करने का हक़ था, बेशक अल्लाह क़ुव्वत वाला ग़ालिब है। **(74)** अल्लाह फ़रिश्तों में से और आदमियों में से पैग़ाम पहुँचाने वाले चुन लेता है, बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। **(75)** वह जानता है जो उन के आगे और जो उन के पीछे है, और अल्लाह (ही) की तरफ़ सारे कामों की बाज़गश्त है। **(76)** ऐ ईमान वालो! तुम रुकूअ करो, और सिज्दा करो, और इबादत करो अपने रब की, और अच्छे काम करो ताकि तुम दो जहान में कामयाबी पाओ। **(77)** और (अल्लाह की राह में) कोशिश करो (जैसे) कोशिश करने का हक़ है। उस ने तुम्हें चुना, और उस ने तुम पर दीन में कोई तंगी नहीं डाली, तुम्हारे बाप इब्राहीम (अ) का दीन, उस ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है, इस से क़ब्ल (भी) और इस (क़ुरआन) में भी, ताकि रसूल (अक्रम स) तुम्हारे निगरान ओ गवाह हों और तुम निगरान ओ गवाह हो लोगों पर, पस नमाज़ क़ाइम करो, और ज़कात अदा करो, और अल्लाह (की रस्सी) को मज़बूती से थाम लो, वह तुम्हारा कारसाज़ है, सो क्या ही अच्छा है कारसाज़, और (क्या ही) अच्छा है मददगार! **(78)**

يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوا لَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बेशक वह जिन्हें | उस को | पस तुम सुनो | एक मिसाल | बयान की जाती है | ऐ लोगो! |

تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَنْ يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अगरचे | एक मक्खी | पैदा कर सकेंगे | हरगिज़ न | अल्लाह के सिवा | तुम पुकारते हो |

اجْتَمَعُوا لَهُ ۖ وَإِنْ يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَا يَسْتَنْقِذُوهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| न छुड़ा सकेंगे उसे | कुछ | मक्खी | उन से छीन ले | और अगर | उस के लिए | वह जमा हो जाएं |

مِنْهُ ۚ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوبُ (٧٣) مَا قَدَرُوا اللَّهَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | न क़द्र जानी उन्हों ने | 73 | और जिस को चाहा | चाहने वाला | कमज़ोर (बोदा है) | उस से |

حَقَّ قَدْرِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ (٧٤) اللَّهُ يَصْطَفِي

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| चुन लेता है | अल्लाह | 74 | ग़ालिब | क़ुव्वत वाला | बेशक अल्लाह | उस के क़द्र करने का हक़ |

مِنَ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا وَمِنَ النَّاسِ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ (٧٥)

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 75 | देखने वाला | सुनने वाला | बेशक अल्लाह | और आदमियों में से | पैग़ाम पहुँचाने वाले | फ़रिश्तों में से |

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۗ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| लौटना (बाज़गश्त) | अल्लाह | और तरफ़ | और जो उन के पीछे | उन के हाथों के दरमियान (आगे) | जो | वह जानता है |

الْأُمُورُ (٧٦) يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ارْكَعُوا وَاسْجُدُوا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और सिज्दा करो | तुम रुकूअ करो | वह लोग जो ईमान लाए | ऐ | 76 | सारे काम |

وَاعْبُدُوا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۩ (٧٧) السجدة عند الشافعي

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 77 | फ़लाह (दो जहान में कामयाबी) पाओ | ताकि तुम | अच्छे काम | और करो | अपना रब | और इबादत करो |

وَجَاهِدُوا فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِ ۚ هُوَ اجْتَبَاكُمْ وَمَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और न | उस ने तुम्हें चुना | वह-उस | उस की कोशिश करना | हक़ | अल्लाह (की राह) में | और कोशिश करो |

جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ مِنْ حَرَجٍ ۚ مِلَّةَ أَبِيكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे बाप | दीन | कोई तंगी | दीन में | तुम पर | डाली |

إِبْرَاهِيمَ ۚ هُوَ سَمَّاكُمُ الْمُسْلِمِينَ مِنْ قَبْلُ وَفِي هَٰذَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और इस में | इस से क़ब्ल | मुस्लिम (जमा) | तुम्हारा नाम रखा | वह-उस | इब्राहीम (अ) |

لِيَكُونَ الرَّسُولُ شَهِيدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُونُوا شُهَدَاءَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गवाह-निगरान | और तुम हो | तुम पर | तुम्हारा गवाह (निगरान) | रसूल (स) | ताकि हो |

عَلَى النَّاسِ ۚ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاعْتَصِمُوا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और मज़बूती से थाम लो | ज़कात | और अदा करो | नमाज़ | पस क़ाइम करो | लोगों पर |

بِاللَّهِ هُوَ مَوْلَاكُمْ ۖ فَنِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ (٧٨) ع ١٠ / ١٧

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 78 | मददगार | और अच्छा है | मौला | सो अच्छा है | तुम्हारा मौला (कारसाज़) | वह | अल्लाह को |

الجزء ١٨

## آيَاتُهَا ١١٨ ❀ (٢٣) سُوْرَةُ الْمُؤْمِنُوْنَ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

रुकूआत 6 | (23) सूरतुल मोमिनून | आयात 118

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١﴾ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अपनी नमाज़ों में | वह जो | 1 | मोमिन (जमा) | फ़लाह पाई (कामयाब हुए) |

خٰشِعُوْنَ ﴿٢﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ﴿٣﴾ وَالَّذِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | 3 | मुँह फेरने वाले | लग़ू (बेहूदा बातों) से | वह | और जो | 2 | ख़ुशूअ़ (आजिज़ी) करने वाले |

هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ﴿٤﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ﴿٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | हिफ़ाज़त करने वाले | अपनी शर्मगाहों की | वह | और जो | 4 | अदा करने वाले | ज़कात (को) | वह |

اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ﴿٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | कोई मलामत नहीं | पस बेशक वह | उन के दाएं हाथ | जो मालिक हुए | या | अपनी बीवियां | पर-से | मगर |

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ﴿٧﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह | और जो | 7 | हद से बढ़ने वाले | वह | तो वही | उस | सिवा | चाहे | पस जो |

وقف لازم

لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ﴿٨﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | हिफ़ाजत करने वाले | अपनी नमाज़ें | पर की | वह | और जो | 8 | देख भाल करने वाले | और अपने अ़हद | अपनी अमानतें |

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ﴿١٠﴾ الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيْهَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | वह | जन्नत | वारिस होंगे | जो | 10 | वारिस (जमा) | वह | यही लोग |

خٰلِدُوْنَ ﴿١١﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ﴿١٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12 | मिट्टी से | खुलासा (चुनी हुई) | से | इन्सान | और अलबत्ता हम ने पैदा किया | 11 | हमेशा रहेंगे |

ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ﴿١٣﴾ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जमा हुआ खून | नुत्फ़ा | हम ने बनाया | फिर | 13 | मज़बूत जगह | में | नुत्फ़ा | हम ने उसे ठहराया | फिर |

فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हड्डियां | फिर हम ने पहनाया | हड्डियां | बोटी | फिर हम ने बनाया | बोटी | जमा हुआ खून | पस हम ने बनाया |

لَحْمًا ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ﴿١٤﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 14 | पैदा करने वाला | बेहतरीन | अल्लाह | पस बरकत वाला | नई | सूरत | हम ने उसे उठाया | फिर | गोश्त |

ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ﴿١٥﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ﴿١٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 16 | उठाए जाओगे | रोज़े क़ियामत | बेशक तुम | फिर | 15 | ज़रूर मरने वाले | उस के बाद | बेशक तुम | फिर |

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ ﴿١٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 17 | ग़ाफ़िल | ख़ल्क़ (पैदाइश) | से | और हम नहीं | रास्ते | सात | तुम्हारे ऊपर | और तहक़ीक़ हम ने बनाए |

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
(दो जहान में) कामयाब हुए वह मोमिन (1)
जो अपनी नमाज़ों में आजिजी करने वाले हैं। (2)
और वह जो बेहूदा बातों से मुँह फेरने वाले हैं। (3)
और वह जो ज़कात अदा करने वाले हैं। (4)
और वह जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं। (5)
मगर अपनी बीवियों से या जिन के मालिक हुए उन के दाएं हाथ (कनीज़ों) से, बेशक उन पर कोई मलामत नहीं। (6)
पस जो उन के सिवा चाहे तो वही हैं हद से बढ़ने वाले। (7)
और (कामयाब हैं वह मोमिन) वह जो अपनी अमानतों और अपने अहद का पास रखते हैं। (8)
और वह जो अपनी नमाजों की हिफ़ाजत करने वाले हैं। (9)
यही लोग हैं जो वारिस होंगे। (10)
(जन्नत) फ़िरदौस के, वह उस में हमेशा रहेंगे। (11)
और अलबत्ता हम ने इन्सान को चुनी हुई मिट्टी से पैदा किया। (12)
फिर हम ने उसे मजबूत जगह में नुत्फ़ा ठहराया। (13)
फिर हम ने नुत्फ़े को जमा हुआ खून बनाया, फिर हम ने बनाया जमे हुए खून (लोथड़े) को बोटी, फिर हम ने बोटी से हड्डियां बनाईं, फिर हम ने हड्डियों को गोश्त पहनाया, फिर हम ने उसे नई सूरत में उठा कर खड़ा किया, पस अल्लाह बाबरकत है बेहतरीन पैदा करने वाला। (14)
फिर बेशक उस के बाद तुम ज़रूर मरने वाले हो। (15)
फिर बेशक तुम रोज़े क़ियामत उठाए जाओगे। (16)
और तहक़ीक़ हम ने तुम्हारे ऊपर बनाए सात रास्ते और हम पैदाइश से ग़ाफ़िल नहीं। (17)

और हम ने आस्मानों से पानी उतारा एक अन्दाज़े के साथ, फिर उस को हम ने ज़मीन में ठहराया, और बेशक हम उस को ले जाने पर (भी) क़ादिर हैं. (18)
पस हम ने पैदा किए उस से तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बाग़ात, तुम्हारे लिए उन में बहुत से मेवे हैं, और उस से तुम खाते हो। (19)
और दरख़्त (ज़ैतून) जो तूरे सीना से निकलता है, वह उगता है तेल और सालन लिए हुए खाने वालों के लिए। (20)
और बेशक तुम्हारे लिए चौपायों में मुक़ामे इब्रत है, हम तुम्हें उन से पिलाते हैं (दूध) जो उन के पेटों में है, और तुम्हारे लिए उन में (और) बहुत से फ़ाइदे हैं, और उन में से (बाज़ को) तुम खाते हो। (21)
और उन पर और कश्ती पर सवार किए जाते हो। (22)
और अलबत्ता हम ने नूह (अ) को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा, पस उस ने कहा: ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारे लिए कोई माबूद नहीं, तो क्या तुम डरते नहीं? (23)
तो उस की क़ौम के जिन सरदारों ने कुफ़्र किया, बोले यह (कुछ भी) नहीं मगर तुम जैसा एक बशर है, वह चाहता है कि तुम पर बड़ा बन बैठे, और अगर अल्लाह चाहता तो उतारता फ़रिश्ते, हम ने अपने पहले बाप दादा से यह (कभी) नहीं सुना। (24)
वह (कुछ भी) नहीं मगर एक आदमी है जिस को जुनून हो गया है, सो तुम उस का एक मुद्दत तक इन्तिज़ार करो। (25)
उस ने कहा ऐ मेरे रब! मेरी मदद फ़रमा उस पर कि उन्हों ने मुझे झुटलाया। (26)
तो हम ने वही भेजी उस की तरफ़ कि हमारी आँखों के सामने हमारे हुक्म से कश्ती बनाओ, फिर जब हमारा हुक्म आए और तन्नूर उबलने लगे, तो उस (कश्ती) में हर किस्म के जोड़ों में से दो (एक नर एक मादा) रख लो और अपने घर वाले (भी सवार कर लो) उस के सिवा (जिस के ग़र्क़ होने पर) हुक्म हो चुका है उन में से, और मुझ से उन के बारे में बात न करना जिन्हों ने ज़ुल्म किया है, बेशक वह ग़र्क़ किए जाने वाले हैं। (27)

وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِى الْاَرْضِ ۖ وَاِنَّا عَلٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | और बेशक हम | ज़मीन में | हम ने उसे ठहराया | अन्दाज़े के साथ | पानी | आस्मानों से | और हम ने उतारा |

ذَهَابٍۢ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ ﴿١٨﴾ فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| खजूर (जमा) | से के | बाग़ात | उस से | तुम्हारे लिए | पस हम ने पैदा किए | 18 | अलबत्ता क़ादिर | उस का | ले जाना |

وَّاَعْنَابٍ ۘ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَشَجَرَةً وقف لازم

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और दरख़्त | 19 | तुम खाते हो | और उस से | बहुत | मेवे | उस में | तुम्हारे लिए | और अंगूर (जमा) |

تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ ﴿٢٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | खाने वालों के लिए | और सालन | तेल के साथ लिए | उगता है | तूरे सीना | से | निकलता है |

وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۚ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन में | और तुम्हारे लिए | उन के पेटों में | उस से जो | हम तुम्हें पिलाते हैं | इब्रत गीर का मुक़ाम | चौपायों में | तुम्हारे लिए | और बेशक |

مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٢١﴾ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿٢٢﴾ ع ٢٢ ١

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 22 | सवार किए जाते हो | और कश्ती पर | और उन पर | 21 | तुम खाते हो | और उन से | बहुत | फ़ाइदे |

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे लिए नहीं | तुम अल्लाह की इबादत करो | ऐ मेरी क़ौम | पस उस ने कहा | उस की क़ौम की तरफ़ | नूह (अ) | और अलबत्ता हम ने भेजा |

مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٢٣﴾ فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की क़ौम | से के | जिन्हों ने कुफ़्र किया | सरदार | तो वह बोले | 23 | क्या तो तुम डरते नहीं? | उस के सिवा | कोई माबूद |

مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يُرِيْدُ اَنْ يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ ۭ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह चाहता | और अगर | तुम पर | कि बड़ा बन बैठे वह | वह चाहता है | तुम जैसा | एक बशर | मगर | यह नहीं |

لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً ښ مَّا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِىْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٤﴾ اِنْ هُوَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं वह-यह | 24 | पहले | अपने बाप दादा से | यह | नहीं सुना हम ने | फ़रिश्ते | तो उतारता |

اِلَّا رَجُلٌۢ بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٢٥﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِىْ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरी मदद फ़रमा | ऐ मेरे रब | उस ने कहा | 25 | एक मुद्दत तक | उस का | सो तुम इन्तिज़ार करो | जुनून | जिस को | एक आदमी | मगर |

بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٢٦﴾ فَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारी आँखों के सामने | कश्ती | तुम बनाओ | कि | उस की तरफ़ | तो हम ने वहि भेजी | 26 | उन्हों ने मुझे झुटलाया | उस पर |

وَوَحْيِنَا فَاِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ فَاسْلُكْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हर (क़िस्म) से | उस में | तो चला ले (रख ले) | और तन्नूर उबलने लगे | हमारा हुक्म | आजाए | फिर जब | और हमारा हुक्म |

زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हुक्म | उस पर | पहले हो चुका | जो-जिस | सिवा | और अपने घर वाले | दो | जोड़ा |

مِنْهُمْ ۚ وَلَا تُخَاطِبْنِىْ فِى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٢٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 27 | ग़र्क़ किए जाने वाले | बेशक वह | वह जिन्हों ने ज़ुल्म किया | में-बारे में | और न करना मुझ से बात | उन में से |

فَـاِذَا اسْتَوَيْتَ اَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए | तो कहना | कश्ती | पर | तेरे साथ (साथी) | और जो | तुम | बैठ जाओ | फिर जब |

الَّذِىْ نَجّٰنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣٨﴾ وَقُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِىْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुबारक | मन्ज़िल | मुझे उतार | ऐ मेरे रब | और कहो | 28 | ज़ालिम (जमा) | क़ौम | से | हमें नजात दी | वह जिस ने |

وَّاَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ وَّاِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِيْنَ ﴿٣٠﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | आज़माइश करने वाले | और बेशक हम हैं | अलबत्ता निशानियां | उस में | बेशक | 29 | उतारने वाले | बेहतरीन | और तू |

ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٣١﴾ فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रसूल (जमा) | उन के दरमियान | फिर भेजे हम ने | 31 | दूसरा | गिरोह | उन के बाद | हम ने पैदा किया | फिर |

ع ١٠ ٢ مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَقَالَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और कहा | 32 | क्या फिर तुम डरते नहीं? | उस के सिवा | कोई माबूद | नहीं तुम्हारे लिए | तुम अल्लाह की इबादत करो | कि | उन में से |

الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَاَتْرَفْنٰهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम ने उन्हें ऐश दिया | आख़िरत | हाज़िरी को | और झुटलाया | वह जिन्हों ने कुफ़्र किया | उस की क़ौम के | सरदारों |

فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يَاْكُلُ مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से | तुम खाते हो | उस से जो | वह खाता है | तुम्हीं जैसा | एक बशर | मगर | यह नही | दुनिया की ज़िन्दगी | में |

وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَئِنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ ۙ اِنَّكُمْ اِذًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस वक़्त | बेशक तुम | अपने जैसा | एक बशर | तुम ने इताअत की | और अगर | 33 | तुम पीते हो | उस से जो | और पीता है |

لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٣٤﴾ اَيَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ اِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا اَنَّكُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो तुम | और हड्डियां | मिट्टी | और तुम हो गए | मर गए | जब | कि तुम | क्या वह वादा देता है तुम्हें | 34 | घाटे में रहोगे |

مُّخْرَجُوْنَ ﴿٣٥﴾ هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٦﴾ اِنْ هِىَ اِلَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर | नही | 36 | तुम्हें वादा दिया जाता है | वह जो | बईद है | बईद है | 35 | निकाले जाओगे |

حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٣٧﴾ اِنْ هُوَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह | नही | 37 | फिर उठाए जाने वाले | हम | और नहीं | और हम जीते हैं | और हम मरते हैं | दुनिया | हमारी ज़िन्दगी |

اِلَّا رَجُلُ ۨافْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٨﴾ قَالَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने अर्ज़ किया | 38 | ईमान लाने वाले | उस पर | हम | और नहीं | झूट | अल्लाह पर | उस ने झूट बान्धा | एक आदमी | मगर |

رَبِّ انْصُرْنِىْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٣٩﴾ قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نٰدِمِيْنَ ﴿٤٠﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 40 | पछताने वाले | वह ज़रूर रह जाएंगे | बहुत जल्द | उस ने फ़रमाया | 39 | उन्हों ने मुझे झुटलाया | उस पर जो | मेरी मदद फ़रमा | मेरे रब |

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| क़ौम के लिए | दूरी (मार) | ख़स ओ ख़ाशाक | सो हम ने उन्हें कर दिया | (वादाए) हक़ के मुताबिक़ | चिंघाड़ | पस उन्हें आ पकड़ा |

الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤١﴾ ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٤٢﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 42 | दूसरी और उम्मतें | उन के बाद | हम ने पैदा की | फिर | 41 | ज़ालिम (जमा) |

फिर तुम जब बैठ जाओ कश्ती पर तुम और तेरे साथी, तो कहना तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं वह जिस ने हमें नजात दी ज़ालिमों की क़ौम से। (28)
और कहो ऐ मेरे रब! मुझे मुबारक मन्ज़िल (जगह) पर उतार, और तू बेहतरीन उतारने वाला है। (29)
बेशक उस में अलबत्ता निशानियां हैं, और बेशक हम आज़माइश करने वाले हैं। (30)
फिर हम ने उन के बाद पैदा किया दूसरी पीढ़ी। (31)
फिर हम ने उन के दरमियान उन्हीं में से रसूल भेजे कि तुम अल्लाह की इबादत करो, तुम्हारे लिए उस के सिवा कोई माबूद नहीं, फिर क्या तुम डरते नहीं? (32)
और उस की क़ौम के उन सरदारों ने कहा जिन्हों ने कुफ़्र किया और आखिरत की हाजरी को झुटलाया, और हम ने उन्हें दुनिया की जिन्दगी में ऐश दिया था, यह नहीं है मगर तुम्हीं जैसा एक बशर है, वह उसी में से खाता है जो तुम खाते हो, और उसी में से पीता है जो तुम पीते हो। (33)
और अगर तुम ने अपने जैसे एक बशर की इताअत की, तो बेशक तुम उस वक़्त घाटे में रहोगे। (34)
क्या वह तुम्हें वादा देता है कि जब तुम मर गए और तुम मिट्टी और हडिड्यां हो गए तो तुम (फिर) निकाले जाओगे। (35)
बईद है बईद है, वह जो तुम्हें वादा दिया जाता है। (36)
(और कुछ) नहीं मगर यही हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है, हम मरते हैं और जीते हैं, और हम नहीं हैं फिर उठाए जाने वाले (37)
वह (कुछ) नहीं मगर एक आदमी है, उस ने अल्लाह पर झूट बान्धा है और हम नहीं हैं उस पर ईमान लाने वाले (38)
उस ने अर्ज़ किया ऐ मेरे रब! तू उस पर मेरी मदद फ़रमा कि उन्हों ने मुझे झुटलाया (39)
उस ने फ़रमाया वह बहुत जल्द ज़रूर पछताते रह जाएंगे। (40)
पस उन्हें चिंघाड़ ने वादाए हक़ के मुताबिक़ आ पकड़ा, सो हम ने उन्हें ख़स ओ ख़ाशाक की तरह कर दिया, पस मार हो ज़ालिमों की क़ौम के लिए। (41)
फिर हम ने उन के बाद और उम्मतें पैदा कीं। (42)

कोई उम्मत अपनी (मुक़र्रर) मीआद से न सबक़त करती है और न पीछे रह जाती है (43)
फिर हम ने भेजे रसूल पै दर पै, जब भी किसी उम्मत में उस का रसूल आया उन्होंने उसे झुटलाया, तो हम (हलाक करने के लिए) पीछे लाए उन में से एक को दूसरे के, और हम ने उन्हें अफ्साने (भूली बिसरी बातें) बनाया, सो (अल्लाह की) मार उन लोगों के लिए जो ईमान नहीं लाए। (44)
फिर हम ने भेजा मूसा (अ) और उन के भाई हारून (अ) को अपनी निशानियों और खुले दलाइल के साथ। (45)
फ़िरऔन और उस के सरदारों की तरफ़ तो उन्हों ने तकब्बुर किया और वह सरकश लोग थे। (46)
पस उन्हों ने कहा क्या हम अपने जैसे (उन) दो आदमियों पर ईमान ले आएं? और उन की क़ौम (के लोग) हमारी ख़िदमत करने वाले। (47)
पस उन्हों ने दोनों को झुटलाया तो वह हलाक होने वालों में से हो गए। (48)
और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को दी किताब ताकि वह लोग हिदायत पा लें। (49)
और हम ने मरयम (अ) के बेटे (ईसा अ) और उस की माँ को एक निशानी बनाया और हम ने उन्हें ठिकाना दिया एक बुलन्द टीले पर जो ठहरने का मुक़ाम और जारी पानी की (शादाब) जगह थी। (50)
ऐ रसूलो! तुम पाक चीज़ों में से खाओ और अमल करो नेक, बेशक जो तुम करते हो मैं उसे जानने वाला हूँ (जानता हूँ)। (51)
और बेशक यह तुम्हारी उम्मत एक उम्मते वाहिदा है, और मैं तुम्हारा रब हूँ, पस मुझ से डरो। (52)
फिर उन्हों ने आपस में अपना काम टुकड़े टुकड़े काट लिया, (फिर) हर गिरोह वाले उस पर जो उन के पास है ख़ुश हैं। (53)
पस उन्हें उन की ग़फ़लत में एक मुद्दते मुक़र्ररा तक छोड़ दें। (54)
क्या वह गुमान करते हैं? कि हम जो कुछ उन की मदद कर रहे हैं माल और औलाद के साथ। (55)
हम उन के लिए भलाई में जल्दी कर रहे हैं, (नहीं) बल्कि वह समझ नहीं रखते। (56)
बेशक जो लोग अपने रब के डर से सहमे हुए हैं। (57)
और जो लोग अपने रब की आयतों पर ईमान रखते हैं। (58)

مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿٤٣﴾ ثُمَّ اَرْسَلْنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने भेजे | फिर | 43 | पीछे रह जाती है | और न | अपनी मीआद | कोई उम्मत | सबक़त करती है | नहीं |

رُسُلَنَا تَتْرَا ۖ كُلَّمَا جَآءَ اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन में से एक | तो हम पीछे लाए | उन्होंने उसे झुटलाया | उस का रसूल | किसी उम्मत में | आया | जब भी | पै दर पै | रसूल (जमा) |

بَعْضًا وَّجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٤٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 44 | जो ईमान नहीं लाए | लोगों के लिए | सो दूरी (मार) | अफ़साने | और उन्हें बना दिया हम ने | दूसरे |

ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 45 | खुले | और दलाइल | साथ (हमारी) अपनी निशानियों | हारून (अ) | और उन का भाई | मूसा (अ) | हम ने भेजा | फिर |

اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا عَالِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَقَالُوْٓا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस उन्हों ने कहा | 46 | सरकश | लोग | और वह थे | तो उन्हों ने तकब्बुर किया | और उस के सरदार | फ़िरऔन | तरफ़ |

اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عٰبِدُوْنَ ﴿٤٧﴾ فَكَذَّبُوْهُمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस उन्हों ने झुटलाया दोनों का | 47 | बन्दगी (ख़िदमत) करने वाले | हमारी | और उनकी क़ौम | अपने जैसे | दो (2) आदमियों पर | क्या हम ईमान ले आएं |

فَكَانُوْا مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ ﴿٤٨﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि वह लोग | किताब | मूसा (अ) | और तहक़ीक़ हम ने दी | 48 | हलाक होने वाले | से | तो वह हो गए |

يَهْتَدُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗٓ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَآ اِلٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ (पर) | और हम ने उन्हें ठिकाना दिया | एक निशानी | और उस की माँ | मरयम का बेटा (ईसा अ) | और हम ने बनाया | 49 | हिदायत पा लें |

رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ﴿٥٠﴾ يٰٓاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ ع ۱۸ ۳

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पाकीज़ा चीज़ें | से | खाओ | रसूल (जमा) | ऐ | 50 | और बहता हुआ पानी | ठहरने का मुक़ाम | एक बुलन्द टीला |

وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ۭ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٥١﴾ وَاِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारी उम्मत | यह | और बेशक | 51 | जानने वाला | तुम करते हो | उसे जो | बेशक मैं | नेक | और अमल करो |

اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ ﴿٥٢﴾ فَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| टुकड़े टुकड़े | आपस में | अपना काम | फिर उन्हों ने काट लिया | 52 | पस मुझ से डरो | तुम्हारा रब | और मैं | एक उम्मत, उम्मते वाहिदा |

كُلُّ حِزْبٍۢ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿٥٣﴾ فَذَرْهُمْ فِيْ غَمْرَتِهِمْ حَتّٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तक | उन की ग़फ़लत में | पस छोड़ दे उन्हें | 53 | ख़ुश | उन के पास | उस पर जो | हर गिरोह |

حِيْنٍ ﴿٥٤﴾ اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ ﴿٥٥﴾ نُسَارِعُ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम जल्दी कर रहे हैं | 55 | और औलाद | माल | से | उस के साथ | हम मदद कर रहे हैं उन की | कि जो कुछ | क्या वह गुमान करते हैं | 54 | एक मुद्दत मुक़र्रर |

لَهُمْ فِي الْخَيْرٰتِ ۭ بَلْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ خَشْيَةِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| डर | से | वह | जो लोग | बेशक | 56 | वह शऊर (समझ) नहीं रखते | बल्कि | भलाई में | उन के लिए |

رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 58 | ईमान रखते हैं | अपना रब | आयतों पर | वह | और जो लोग | 57 | डरने वाले (सहमे हुए) | अपना रब |

وَالَّذِيْنَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ مَآ اٰتَوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो वह देते हैं | देते हैं | और जो लोग | 59 | शरीक नहीं करते | अपने रब के साथ | वह | और जो लोग |

وَّقُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ ﴿٦٠﴾ اُولٰٓئِكَ يُسٰرِعُوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जल्दी करते हैं | यही लोग | 60 | लौटने वाले | अपना रब | तरफ़ | कि वह | डरते हैं | और उन के दिल |

فِى الْخَيْرٰتِ وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ ﴿٦١﴾ وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की ताक़त के मुताबिक़ | मगर | किसी को | और हम तक्लीफ़ नहीं देते | 61 | सबक़त ले जाने वाले हैं | उन की तरफ़ | और वह | भलाइयों में |

وَلَدَيْنَا كِتٰبٌ يَّنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾ بَلْ قُلُوْبُهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के दिल | बल्कि | 62 | ज़ुल्म न किए जाएंगे (ज़ुल्म न होगा) | और वह (उन) | ठीक ठीक | वह बतलाता है | एक किताब (रजिस्टर) | और हमारे पास |

فِىْ غَمْرَةٍ مِّنْ هٰذَا وَلَهُمْ اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا عٰمِلُوْنَ ﴿٦٣﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 63 | करते रहते हैं | वह उन्हें | उस | अलावा | आमाल (जमा) | और उन के | उस से | ग़फ़्लत |

حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ اِذَا هُمْ يَجْئَرُوْنَ ﴿٦٤﴾ لَا تَجْئَرُوا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम फ़र्याद न करो | 64 | फ़र्याद करने लगे | उस वक़्त वह | अज़ाब में | उन के ख़ुशहाल लोग | हम ने पकड़ा | यहां तक कि जब |

الْيَوْمَ اِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِىْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो तुम थे | तुम पर | पढ़ी जाती थीं | मेरी आयतें | अलबत्ता तुम्हें | 65 | तुम मदद न दिए जाओगे | हम से | बेशक तुम | आज |

عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ﴿٦٦﴾ مُسْتَكْبِرِيْنَ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ﴿٦٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 67 | बेहूदा बकवास करते हुए | अफ़्साना गोई करते हुए | उस के साथ | तकब्बुर करते हुए | 66 | फिर जाते | अपनी एड़ियों के बल |

اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 68 | पहले | उन के बाप दादा | नहीं आया | जो | उन के पास आया | या | कलाम | पस क्या उन्हों ने ग़ौर नहीं किया |

اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दीवानगी | उस को | वह कहते हैं | या | 69 | मुन्किर हैं | उस के | तो वह | अपने रसूल | उन्हों ने नहीं पहचाना | या |

بَلْ جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ وَاَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की ख़ाहिशात | हक़ (अल्लाह) | पैरवी करता | और अगर | 70 | नफ़्रत रखने वाले | हक़ से | और उन में से अक्सर | साथ हक़ बात | वह आया उन के पास | बल्कि |

لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर वह | उन की नसीहत | हम लाए हैं उन के पास | उन के दर्रामयान | और जो | और ज़मीन | आस्मान (जमा) | अलबत्ता दरहम बरहम हो जाता |

عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧١﴾ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेहतर | तुम्हारा रब | तो अजर | अजर | क्या तुम उन से मांगते हो | 71 | रूगर्दानी करने वाले हैं | अपनी नसीहत से |

وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَاِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٣﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 73 | सीधा रास्ता | तरफ़ | उन्हें बुलाते हो | और बेशक तुम | 72 | बेहतरीन रोज़ी दहिन्दा है | और वह |

وَاِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰكِبُوْنَ ﴿٧٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 74 | अलबत्ता हटे हुए हैं | राहे हक़ | से | आख़िरत पर | ईमान नहीं लाते | जो लोग | और बेशक |

और जो लोग अपने रब के साथ शरीक नहीं करते। (59)
और जो लोग देते हैं जो कुछ वह देते हैं और उन के दिल डरते हैं कि वह अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं। (60)
यही लोग भलाइयों में जल्दी करते हैं और वह उन की तरफ़ सबक़त ले जाने वाले हैं। (61)
और हम किसी को तक्लीफ़ नहीं देते मगर उस की ताक़त के मुताबिक़, और हमारे पास (आमाल का) एक रजिस्टर है जो ठीक ठीक बतलाता है और उन पर ज़ुल्म न होगा। (62)
बल्कि उन के दिल इस (हक़ीक़त) से ग़फ़्लत में हैं और उन के (बुरे) आमाल उस के आलावा जो वह करते रहते हैं। (63)
यहां तक कि जब हम ने उन के ख़ुशहाल लोगों को पकड़ा अज़ाब में, तो उस वक़्त वह फ़र्याद करने लगे। (64)
आज फ़र्याद न करो तुम, हमारी (तरफ़) से मदद न दिए जाओगे (मुत्लक़ मदद न पाओगे)। (65)
अलबत्ता तुम पर मेरी आयतें पढ़ी जाती थीं तो तुम अपनी एड़ियों के बल (उलटे) फिर जाते थे। (66)
तकब्बुर करते हुए, उस के साथ अफ़्साना गोई और बेहूदा बकवास करते हुए। (67)
पस क्या उन्हों ने (इस) कलामे (हक़) पर ग़ौर नहीं क्या? या उन के पास वह आया जो नहीं आया था उन के पहले बाप दादा (बड़ों) के पास। (68)
या उन्हों ने अपने रसूल को नहीं पहचाना तो इस लिए उस के मुन्किर हैं। (69)
या वह कहते हैं उस को दीवानगी है? बल्कि वह उन के पास हक़ बात के साथ आया है और उन में से अक्सर हक़ बात से नफ़्रत रखने वाले हैं। (70)
और अगर अल्लाह तआला उन की ख़ाहिशात की पैरवी करता तो अलबत्ता ज़मीन ओ आस्मान और जो कुछ उन के दरमियान है दरहम बरहम हो जाते, बल्कि हम उन के पास उन की नसीहत लाए हैं फिर वह अपनी नसीहत (की बात से) रूगर्दानी कर रहे हैं, (71)
क्या तुम उन से अजर मांगते हो? तो तुम्हारे रब का अजर बेहतर है, और वह बेहतर रोज़ी दहिन्दा है। (72)
और बेशक तुम उन्हें बुलाते हो राहे रास्त की तरफ़। (73)
और जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं लाते, बेशक वह राहे हक़ से हटे हुए हैं। (74)

وَلَوْ رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِىْ طُغْيَانِهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी सरकशी | में-पर | अड़े रहें | जो तक्लीफ़ | जो उन पर | और हम दूर कर दें | हम उन पर रह्म करें | और अगर |

يَعْمَهُوْنَ (٧٥) وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا لِرَبِّهِمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपने रब के सामने | फिर उन्हों ने आजिज़ी न की | अ़ज़ाब में | और अलबत्ता हम ने उन्हें पकड़ा | 75 | भटकते रहें |

وَمَا يَتَضَرَّعُوْنَ (٧٦) حَتّٰٓى اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सख़्त | अ़ज़ाब वाला | दरवाज़ा | उन पर | हम ने खोल दिया | जब | यहां तक कि | 76 | और वह न गिड़गिड़ाए |

ع

اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ (٧٧) وَهُوَ الَّذِىْٓ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और आँखें | कान | बनाए तुम्हारे लिए | जिस ने | और वह | 77 | मायूस हुए | उस में | तो उस वक़्त वह |

وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ (٧٨) وَهُوَ الَّذِىْ ذَرَاَكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फैलाया तुम्हें | वही जिस ने | और वह | 78 | जो तुम शुक्र करते हो | बहुत ही कम | और दिल (जमा) |

فِى الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ (٧٩) وَهُوَ الَّذِىْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और मारता है | ज़िन्दा करता है | वही जो | और वह | 79 | तुम जमा हो कर जाओगे | और उस की तरफ़ | ज़मीन में |

وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ (٨٠) بَلْ قَالُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बल्कि उन्हों ने कहा | 80 | क्या पस तुम समझते नहीं? | और दिन | रात | आना जाना | और उसी के लिए |

مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ (٨١) قَالُوْٓا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम हो गए मिट्टी | हम मर गए | क्या जब | वह बोले | 81 | पहलों ने | जो कहा | जैसे |

وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ (٨٢) لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَاۗؤُنَا هٰذَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह | और हमारे बाप दादा | हम | अलबत्ता हम से वादा किया गया | 82 | फिर उठाए जाएंगे | क्या हम | और हड्डियां |

مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ (٨٣) قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन | किस के लिए | फ़रमा दें | 83 | पहले लोग | कहानियां | मगर (सिर्फ़) | यह नहीं | इस से क़ब्ल |

وَمَنْ فِيْهَآ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ (٨٤) سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۭ قُلْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़रमा दें | जल्दी (ज़रूर) वह कहेंगे अल्लाह के लिए | 84 | तुम जानते हो | अगर | उस में | और जो |

اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ (٨٥) قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और रब | सात | आस्मान (जमा) | रब | कौन | फ़रमा दें | 85 | क्या पस तुम ग़ौर नहीं करते? |

الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ (٨٦) سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۭ قُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ (٨٧) قُلْ مَنْۢ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कौन | फ़रमा दें | 87 | क्या पस तुम नहीं डरते? | फ़रमा दें | जल्दी (ज़रूर) वह कहेंगे अल्लाह का | 86 | अर्शे अज़ीम |

بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर | उस के ख़िलाफ़ | और पनाह नहीं दिया जाता | पनाह देता है | और वह | हर चीज़ | बादशाहत (इख़्तियार) | उस के हाथ में |

كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ (٨٨) سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۭ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ (٨٩)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 89 | तुम जादू में फँस गए हो | फिर कहां से | फ़रमा दें | जल्दी कहेंगे अल्लाह के लिए | 88 | तुम जानते हो |

और अगर हम उन पर रह्म करें, और जो उन पर तक्लीफ़ है वह दूर कर दें तो वह अपनी सरकशी पर अड़े रहें, भटकते फिरें। (75) और अलबत्ता हम ने उन्हें अ़ज़ाब में पकड़ा, फिर न उन्हों ने आजिज़ी की, और न वह गिड़गिड़ाए। (76) यहां तक कि जब हम ने उन पर सख़्त अ़ज़ाब के दरवाज़े खोल दिए तो उस वक़्त वह उस में मायूस हो गए। (77) और वही है जिस ने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए, तुम बहुत ही कम शुक्र करते हो। (78) और वही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में फैलाया, और उसी की तरफ़ तुम जमा हो कर जाओगे। (79) और वही है जो ज़िन्दा करता है और मारता है, और उसी के लिए है रात और दिन का आना जाना, पस क्या तुम समझते नहीं? (80) बल्कि उन्हों ने (वही) कहा जैसे (उन से) पहले (काफ़िर) कहते थे। (81) वह बोले, क्या जब हम मर गए, और हम मिट्टी और हड्डियां हो गए, क्या हम फिर (दोबारा) उठाए जाएंगे? (82) अलबत्ता हम से वादा किया गया और इस से क़ब्ल हमारे बाप दादा से यह (वादा किया गया), यह तो सिर्फ़ पहले लोगों की कहानियां हैं। (83) आप (स) फ़रमा दें किस के लिए है ज़मीन और जो कुछ उस में है? अगर तुम जानते हो। (84) वह ज़रूर कहेंगे अल्लाह के लिए है, आप (स) फ़रमा दें पस क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (85) आप (स) फ़रमा दें कौन है सात आस्मानों का रब और अ़र्शे अ़ज़ीम का रब? (86) वह ज़रूर कहेंगे (यह सब) अल्लाह का है, आप (स) फ़रमा दें पस क्या तुम नहीं डरते? (87) आप (स) फ़रमा दें किस के हाथ में है हर चीज़ का इख़्तियार? और वह पनाह देता है और उस के ख़िलाफ़ (कोई) पनाह नहीं दिया जाता अगर तुम जानते हो। (88) वह ज़रूर कहेंगे (हर इख़्तियार) अल्लाह के लिए, आप (स) फ़रमा दें फिर तुम कहां से जादू में फँस गए हो। (89)

بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٩٠﴾ مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ

बल्कि | हम लाए हैं उन के पास | सच्ची बात | और बेशक वह | अलबत्ता झूटे हैं | 90 | नही अपनाया अल्लाह

مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۢ بِمَا خَلَقَ

किसी को बेटा | और नही है | उस के साथ | कोई और माबूद | उस सूरत में | ले जाता | हर | माबूद | जो उस ने पैदा किया

وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٩١﴾

और चढ़ाई करता | उन का एक | दूसरे पर | पाक है अल्लाह | उस से जो | वह बयान करते हैं | 91

ع ١٥ عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٩٢﴾ قُلْ رَّبِّ

जानने वाला पोशीदा | और आशकारा | पस बरतर | उस से जो | वह शरीक समझते हैं | 92 | फरमा दें | ऐ मेरे रब

اِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَدُوْنَ ﴿٩٣﴾ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِي

अगर तू मुझे दिखा दे | जो उन से वादा किया जाता है | 93 | ऐ मेरे रब | पस तू मुझे न करना | में

الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٤﴾ وَاِنَّا عَلٰٓى اَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ ﴿٩٥﴾

जालिम लोग | 94 | और बेशक हम | पर | कि हम तुम्हें दिखा दें | जो हम वादा कर रहे हैं उन से | अलबत्ता क़ादिर हैं | 95

اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ؕ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَصِفُوْنَ ﴿٩٦﴾

दफ़अ करो | उस से जो | वह | सब से अच्छी भलाई | बुराई | हम | खूब जानते हैं | उस को जो | वह बयान करते हैं | 96

وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٩٧﴾ وَاَعُوْذُ بِكَ

और आप (स) फ़रमा दें | ऐ मेरे रब | मैं पनाह चाहता हूँ | तेरी | से | वस्वसे से | शैतान (जमा) | 97 | और मैं पनाह चाहता हूँ | तेरी

رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ﴿٩٨﴾ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ

ऐ मेरे रब | कि वह आएं मेरे पास | 98 | यहां तक कि | जब आए | उन में किसी को | मौत | कहता है | ऐ मेरे रब

ارْجِعُوْنِ ﴿٩٩﴾ لَعَلِّيْٓ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ كَلَّا ؕ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ

मुझे वापस भेज दे | 99 | शायद मैं | काम कर लूँ | कोई अच्छा काम | उस में | मैं छोड़ आया हूँ | हरगिज़ नही | यह तो | एक बात | वह

قَآئِلُهَا ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٠٠﴾ فَاِذَا نُفِخَ

कह रहा है | और उन के आगे | एक बरज़ख | उस दिन तक | वह उठाए जाएंगे | 100 | फिर जब | फूंका जाएगा

فِي الصُّوْرِ فَلَآ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿١٠١﴾

सूर में | तो न रिश्ते | उन के दरमियान | उस दिन | और न वह एक दूसरे को पूछेंगे | 101

فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٢﴾ وَمَنْ خَفَّتْ

पस-जो-जिस | भारी हुई | उस का तोल (पल्ला) | पस वह लोग | वह | फ़लाह पाने वाले | 102 | और जो | हल्का हुआ

مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فِيْ جَهَنَّمَ

उस का तोल (पल्ला) | तो वही लोग | वह जिन्हों ने | खसारे में डाला | अपनी जानें | जहन्नम में

خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٣﴾ تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ ﴿١٠٤﴾

हमेशा रहेंगे | 103 | झुलस देगी | उन के चेहरे | आग | और वह | उस में | तेवरी चढ़ाए हुए | 104

बल्कि हम उन के पास लाए हैं सच्ची बात, और बेशक वह झूटे हैं। (90) अल्लाह ने किसी को (अपना) बेटा नहीं बनाया, और नहीं है उस के साथ कोई और माबूद, उस सूरत में हर माबूद ले जाता जो उस ने पैदा किया होता, और उन में से एक दूसरे पर चढ़ाई करता, पाक है अल्लाह उन (बातों) से जो वह बयान करते हैं। (91) वह जानने वाला है पोशीदा और आशकारा, पस बरतर है (वह हर) उस से जिस को वह शरीक समझते हैं। (92) आप (स) सफरमां दें ऐ मेरे रब! जो उन से वादा किया जाता है अगर तू मुझे दिखादे। (93) ऐ मेरे रब! पस तू मुझे ज़ालिम लोगो में (शामील) न करना। (94) और बेशक हम उस पर क़ादिर हैं कि हम उन से जो वादा कर रहे हैं तुम्हें दिखा दें। (95) सब से अच्छी भलाई से बुराई को दफ़अ करो, हम खूब जानते हैं जो वह बयान करते हैं। (96) और आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ शैतानों के वस्वसों से। (97) और ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ कि वह मेरे पास आएं। (98) (वह ग़फ़्लत में रहते हैं) यहां तक कि जब उन में किसी को मौत आए तो कहता है ऐ मेरे रब! मुझे (फिर दुनिया में) वापस भेज दे। (99) शायद मैं उस में कोई अच्छा काम कर लूँ जो छोड़ आया हूँ, हरगिज नहीं, यह तो एक बात है जो वह कह रहा है, और उन के आगे एक बरजख (आड़) है उस दिन (क़ियामत) तक कि वह उठाए जाएं। (100) फिर जब सूर फूंका जाएगा तो न रिश्ते रहेंगे उस दिन उन के दरमियान, और न कोई एक दूसरे को पूछेगा। (101) पस जिस (के आमाल) का पल्ला भारी हुआ पस वही लोग फ़लाह (नजात) पाने वाले होंगे। (102) और जिस (के आमाल) का पल्ला हल्का हुआ तो वही लोग हैं जिन्हों ने अपनी जानों को खसारे में डाला, वह जहन्नम में हमेशा रहेंगे। (103) आग उन के चेहरे झुलस देगी और वह उस में तेवरी चढ़ाए हुए होंगे। (104)

क्या मेरी आयतें तुम पर न पढ़ी जाती (सुनाई जाती) थीं? पस तुम उन्हें झुटलाते थे। (105)
वह कहेंगे ऐ हमारे रब! हम पर हमारी बदबख़्ती ग़ालिब आ गई, और हम रास्ते से भटके हुए लोग थे। (106)
ऐ हमारे रब! हमें इस से निकाल ले, फिर अगर हम ने दोबारा (वही) किया तो बेशक हम ज़ालिम होंगे। (107)
वह फ़रमाएगा फिटकारे हुए उस में पड़े रहो और मुझ से कलाम न करो। (108)
बेशक हमारे बन्दों का एक गिरोह था, वह कहते थे ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए, सो हमें बख़्शदे, और हम पर रह्म फ़रमा, और तू बेहतरीन रह्म करने वाला है। (109)
पस तुम ने उन्हें बना लिया मज़ाक़, यहां तक कि उन्हों ने तुम्हें मेरी याद भुला दी और तुम उन से हँसी किया करते थे। (110)
बेशक मैं ने आज उन्हें जज़ा दी उस के बदले कि उन्हों ने सब्र किया, बेशक वही मुराद को पहुँचने वाले हैं। (111)
(अल्लाह तआ़ला) फ़रमाएगा तुम कितनी मुद्दत रहे दुनिया में सालों के हिसाब से? (112)
वह कहेंगे कि हम एक दिन या एक दिन का कुछ हिस्सा रहे, पस पूछ लें शुमार करने वालों से। (113)
फ़रमाएगा तुम सिर्फ़ थोड़ा अर्सा रहे, काश कि तुम (यह हक़ीक़त दुनिया में) जानते होते। (114)
क्या तुम खयाल करते हो कि हम ने तुम्हें बेकार पैदा किया? और यह कि तुम हमारी तरफ़ नहीं लौटाए जाओगे? (115)
पस बुलन्द तर है अल्लाह हक़ीक़ी बादशाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, इज़्ज़त वाला अ़र्श का मालिक। (116)
और जो कोई पुकारे अल्लाह के साथ कोई और माबूद, उस के पास उस के लिए कोई सनद नहीं, सो उस का हिसाब उस के रब के पास है, बेशक कामयाबी नहीं पाएंगे काफ़िर। (117)
और आप (स) कहें, ऐ मेरे रब! बख़्शदे और रह्म फ़रमा, और तू बेहतरीन रह्म करने वाला है। (118)

أَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿١٠٥﴾ قَالُوا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह कहेंगे | 105 | तुम झुटलाते थे | उन्हें | पस तुम थे | तुम पर | पढ़ी जातीं | मेरी आयतें | क्या न थी |

رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ ﴿١٠٦﴾ رَبَّنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ हमारे रब | 106 | रास्ते से भटके हुए | लोग | और हम थे | हमारी बद बख़्ती | हम पर | ग़ालिब आ गई | ऐ हमारे रब |

أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ﴿١٠٧﴾ قَالَ اخْسَئُوا فِيهَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | फिटकारे हुए पड़े रहो | फ़रमाएगा | 107 | ज़ालिम (जमा) | तो बेशक हम | दोबारा किया | फिर अगर | इस से | हमें निकाल ले |

وَلَا تُكَلِّمُونِ ﴿١٠٨﴾ إِنَّهُ كَانَ فَرِيقٌ مِنْ عِبَادِي يَقُولُونَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह कहते थे | हमारे बन्दों का | एक गिरोह | था | बेशक वह | 108 | और कलाम न करो मुझ से |

رَبَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ﴿١٠٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 109 | रहम करने वाले | बेहतरीन | और तू | और हम पर रहम फ़रमा | सो हमें बख़्शदे | हम ईमान लाए | ऐ हमारे रब |

فَاتَّخَذْتُمُوهُمْ سِخْرِيًّا حَتَّىٰ أَنْسَوْكُمْ ذِكْرِي وَكُنْتُمْ مِنْهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन से | और तुम थे | मेरी याद | उन्हों ने भुला दिया तुम्हें | यहां तक कि | मज़ाक़ | पस तुम ने उन्हें बना लिया |

تَضْحَكُونَ ﴿١١٠﴾ إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا أَنَّهُمْ هُمُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वही | बेशक वह | उन्हों ने सब्र किया | उस के बदले | आज | मैं ने जज़ा दी उन्हें | बेशक मैं | 110 | हँसी किया करते |

الْفَائِزُونَ ﴿١١١﴾ قَالَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَ سِنِينَ ﴿١١٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 112 | साल (जमा) | शुमार (हिसाब) | ज़मीन (दुनिया) में | कितनी मुद्दत रहे तुम | फ़रमाएगा | 111 | मुराद को पहुँचने वाले |

قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَاسْأَلِ الْعَادِّينَ ﴿١١٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 113 | शुमार करने वाले | पस पूछ लें | एक दिन का कुछ हिस्सा | या | एक दिन | हम रहे | वह कहेंगे |

قَالَ إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا لَوْ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١١٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 114 | जानते होते | तुम | काश | थोड़ा (अर्सा) | मगर (सिर्फ़) | नहीं तुम रहे | फ़रमाएगा |

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿١١٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 115 | नहीं लौटाए जाओगे | हमारी तरफ़ | और यह कि तुम | (अ़ब्स) बेकार | हम ने तुम्हें पैदा किया | कि | क्या तुम ख़याल करते हो |

فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मालिक | उस के सिवा | नहीं कोई माबूद | हक़ीक़ी | बादशाह | अल्लाह | पस बुलन्द तर |

الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ﴿١١٦﴾ وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नहीं कोई सनद | कोई और माबूद | अल्लाह के साथ | और जो पुकारे | 116 | इज़्ज़त वाला अ़र्श |

لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿١١٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 117 | काफ़िर (जमा) | फ़लाह (कामयाबी) नहीं पाएंगे | बेशक वह | उस के रब के पास | उसका हिसाब | सो, तहक़ीक़ | उस के लिए | उस के पास |

وَقُلْ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ﴿١١٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 118 | बेहतरीन रहम करने वाला है | और तू | और रहम फ़रमा | बख़्शदे | ऐ मेरे रब | और आप (स) कहें |

## آيَاتُهَا ٦٤ ❀ (٢٤) سُوْرَةُ النُّوْرِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٩

रुकूआत 9 — (24) सूरतुन नूर रौशनी — आयात 64

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَاَنْزَلْنَا فِيْهَآ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि तुम | वाज़ेह आयतें | उस में | और हम ने नाजिल की | और लाज़िम किया उस को | जो हम ने नाज़िल की | एक सूरत |

تَذَكَّرُوْنَ (١) اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन दोनो में से | हर एक का | तो तुम कोड़े मारो | और बदकार मर्द | बदकार औरत | 1 | तुम याद रखो |

مِائَةَ جَلْدَةٍ ۪ وَّلَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर | अल्लाह का हुक्म | में | मेहरबानी (तरस) | उन पर | और न पकड़ो (न खाओ) | कोड़े | सौ (100) |

كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एक जमाअत | उन की सज़ा | और चाहिए कि मौजूद हो | और यौमे आख़िरत | अल्लाह पर | तुम ईमान रखते हो |

مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ (٢) اَلزَّانِيْ لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| या मुशरिका | बदकार औरत | सिवा | निकाह नहीं करता | बदकार मर्द | 2 | मोमिनीन | से-कि |

وَّالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَآ اِلَّا زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | यह | और हराम किया गया | या शिर्क करने वाला मर्द | सिवा बदकार मर्द | निकाह नहीं करती | और बदकार (औरत) |

الْمُؤْمِنِيْنَ (٣) وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| फिर वह न लाएं | पाक दामन औरतें | तुहमत लगाएं | और जो लोग | 3 | मोमिनीन |

بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की | और तुम न कुबूल करो | कोड़े | अस्सी (80) | तो तुम उन्हें कोड़े मारो | गवाह | चार (4) |

شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ (٤) اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिन लोगों ने तौबा कर ली | मगर | 4 | नाफ़रमान | वह | यही लोग | कभी | गवाही |

مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (٥) وَالَّذِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो लोग | 5 | निहायत मेहरबान | बख़्शने वाला | तो बेशक अल्लाह | और उन्हों ने इस्लाह कर ली | उस के बाद |

يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ شُهَدَآءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उनकी जानें (खुद) | सिवा | गवाह | उन के | और न हों | अपनी बीवियां | तुहमत लगाएं |

فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ (٦)

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | सच बोलने वाले | कि वह बेशक से | अल्लाह की कसम | गवाहियाँ | चार (4) | उन में से एक | पस गवाही |

وَالْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ (٧)

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | झूट बोलने वाले | से | अगर है वह | उस पर | अल्लाह की लानत | यह कि | और पाँचवी |

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

यह एक सूरत है जो हम ने नाज़िल की, और इस (के अहकाम) को फ़र्ज़ किया, और हम ने इस में वाज़ेह आयतें नाजिल कीं, ताकि तुम याद रखो (ध्यान दो)। (1)

बदकार औरत और बदकार मर्द दोनों में से हर एक को सौ (100) कोड़े मारो, और उन पर न खाओ तरस अल्लाह का हुक्म (चलाने) में, अगर तुम अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान रखते हो, और चाहिए कि उन की सजा (के वक्त) मौजूद हो मुसलमानों की एक जमाअत। (2)

बदकार मर्द बदकार औरत या मुश्रिका के सिवा निकाह नहीं करता, और बदकार औरत (भी) बदकार या शिर्क करने वाले मर्द के सिवा (किसी से) निकाह नहीं करती, और यह (ऐसा निकाह) मोमिनों पर हराम किया गया है। (3)

और जो लोग तुहमत लगाएं पाक दामन औरतों पर, फिर वह (उस पर) चार (4) गवाह न लाएं तो तुम उन्हें अस्सी (80) कोड़े मारो और तुम कुबूल न करो कभी उन की गवाही, यही नाफरमान लोग है। (4)

मगर जिन लोगों न उन के बाद तौबा कर ली और उन्हों ने इस्लाह कर ली, तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (5)

और जो लोग अपनी बीवियों पर तुहमत लगाएं, और खुद उन के सिवा उन के गवाह न हों, तो उन में से हर एक की गवाही यह है कि अल्लाह की कसम के साथ चार बार गवाही दें कि वह सच बोलने वालों में से हैं (सच्चा है)। (6)

और पाँचवी बार यह कि उस पर अल्लाह की लानत हो अगर वह झूट बोलने वालों में से है (झूटा है)। (7)

और उस औरत से टल जाएगी सज़ा अगर वह चार बार अल्लाह की क़सम के साथ गवाही दे कि वह (मर्द) अलबत्ता झूटों में से है (झूटा है)। (8) और पाँचवी बार यह कि उस औरत (मुझ) पर अल्लाह का ग़ज़ब हो अगर वह सच्चों में से है (सच्चा है)। (9) और अगर तुम पर न होता अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत (तो यह मुश्किल हल न होती) और यह कि अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला, हिक्मत वाला है। (10)
बेशक जो लोग बड़ा बुहतान लाए, तुम (ही) में से एक जमाअ़त हैं, तुम उसे अपने लिए बुरा गुमान न करो बल्कि वह तुम्हारे लिए बेहतर है, उन में से हर आदमी के लिए जितना उस ने किया (उतना) गुनाह है, और जिस ने उस का बड़ा (तूफ़ान) उठाया उस के लिए बड़ा अ़ज़ाब है। (11)
जब तुम ने वह (बुहतान) सुना तो क्यों न गुमान किया मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों ने अपनों के बारे में (गुमान) नेक, और उन्हों ने (क्यों न) कहा? यह सरीह बुहतान है। (12)
वह क्यों न लाए उस पर चार गवाह, पस जब वह गवाह न लाए तो अल्लाह के नज़्दीक वही झूटे हैं। (13)
और अगर तुम पर दुनिया और आख़िरत में अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की रहमत न होती तो जिस (शुग़्ल में) तुम पड़े थे तुम पर ज़रूर पड़ता बड़ा अ़ज़ाब। (14)
जब तुम (एक दूसरे से सुन कर) उसे अपनी ज़बान पर लाते थे, और तुम अपने मुँह से कहते थे जिस का तुम्हें कोई इल्म न था, और तुम उसे हलकी बात गुमान करते थे, हालांकि वह अल्लाह के नज़्दीक बहुत बड़ी बात थी। (15)
जब तुम ने वह सुना क्यों न कहा? कि हमारे लिए (ज़ेबा) नहीं है कि हम ऐसी बात कहें, (ऐ अल्लाह) तू पाक है, यह बड़ा बुहतान है। (16)
अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है, (मुबादा) तुम ऐसा काम फिर कभी करो, अगर तुम ईमान वाले हो। (17)
और अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम (साफ़ साफ़) बयान करता है, और अल्लाह बड़ा जानने वाला, हिक्मत वाला है। (18)

وَيَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ اَنْ تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि वह | अल्लाह की क़सम | चार बार गवाही | गवाही दे | अगर | सज़ा | उस औरत से | और टल जाएगी |

لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٨﴾ وَالْخَامِسَةَ اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَآ اِنْ كَانَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह है | अगर | उस पर | अल्लाह का ग़ज़ब | यह कि | और पाँचवी बार | 8 | झूटे लोग | अलबत्ता से |

مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٩﴾ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और यह कि अल्लाह | और उस की रहमत | तुम पर | अल्लाह का फ़ज़्ल | और अगर न | 9 | सच्चे लोग | से |

تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ﴿١٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ۗ ع

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम में से | एक जमाअ़त | बड़ा बुहतान लाए | बेशक जो लोग | 10 | हिक्मत वाला | तौबा क़ुबूल करने वाला |

لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ ۗ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۗ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَّا اكْتَسَبَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो उस ने कमाया (किया) | उन में से | हर एक आदमी के लिए | बेहतर है तुम्हारे लिए | बल्कि वह | अपने लिए | बुरा | तुम उसे गुमान न करो |

مِنَ الْاِثْمِ ۚ وَالَّذِيْ تَوَلّٰى كِبْرَهٗ مِنْهُمْ لَهٗ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١١﴾ لَوْلَآ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्यों न | 11 | बड़ा | अ़ज़ाब | उस के लिए | उन में से | बड़ा उस का | उठाया | और वह जिस | गुनाह से |

اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بِاَنْفُسِهِمْ خَيْرًا ۙ وَّقَالُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने कहा | नेक | अपनों के बारे में | और मोमिन औरतों | मोमिन मर्दों | गुमान किया | तुम ने वह सुना | जब |

هٰذَآ اِفْكٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٢﴾ لَوْلَا جَآءُوْ عَلَيْهِ بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ ۚ فَاِذْ لَمْ يَاْتُوْا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह न लाए | पस जब | गवाह | चार (4) | उस पर | वह लाए | क्यों न | 12 | नुमायान | बुहतान | यह |

بِالشُّهَدَآءِ فَاُولٰٓئِكَ عِنْدَ اللّٰهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٣﴾ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह का फ़ज़्ल | और अगर न | 13 | वही झूटे | अल्लाह के नज़्दीक | तो वही लोग | गवाह |

عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِيْ مَآ اَفَضْتُمْ فِيْهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | तुम पड़े | उस में जो | ज़रूर तुम पर पड़ता | और आख़िरत | दुनिया में | और उस की रहमत | तुम पर |

عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٤﴾ اِذْ تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने मुँह से | और तुम कहते थे | अपनी ज़बानों पर | जब तुम लाते थे उसे | 14 | बड़ा | अ़ज़ाब |

مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَّتَحْسَبُوْنَهٗ هَيِّنًا ۖ وَّهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ ﴿١٥﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15 | बहुत बड़ी (बात) | अल्लाह के नज़्दीक | हालांकि वह | हलकी बात | और तुम उसे गुमान करते थे | कोई इल्म | उस का | तुम्हें | जो नहीं |

وَلَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ۖ سُبْحٰنَكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तू पाक है | ऐसी बात | कि हम कहें | हमारे लिए | नहीं है | तुम ने कहा | तुम ने वह सुना | जब | और क्यों न |

هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ﴿١٦﴾ يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖٓ اَبَدًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कभी भी | ऐसा काम | तुम फिर करो | कि | तुम्हें नसीहत करता है अल्लाह | 16 | बड़ा | बुहतान | यह |

اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧﴾ وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | हिक्मत वाला | बड़ा जानने वाला | और अल्लाह | आयतें (अहकाम) | तुम्हारे लिए | और बयान करता है अल्लाह | 17 | ईमान वाले | अगर तुम हो |

إِنَّ الَّـذِيْـنَ يُـحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِـى الَّـذِيْـنَ اٰمَـنُـوْا لَـهُمْ

बेशक | जो लोग | पसंद करते हैं | कि | फैले | बेहयाई | में जो | ईमान लाए (मोमिन) | उन के लिए

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِـرَةِ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٩﴾

अज़ाब | दर्दनाक | दुनिया में | और आख़िरत में | और अल्लाह | जानता है | और तुम | तुम नहीं जानते | 19

وَلَـوْ لَا فَـضْـلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْـمَـتُـهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ رَّحِـيْـمٌ ﴿٢٠﴾ ع ۲ ۱۰ ۸

और अगर न | अल्लाह का फ़ज़्ल | तुम पर | और उस की रहमत | और यह कि अल्लाह | शफ़क़त करने वाला | निहायत मेह्रबान | 20

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۗ وَمَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ

ऐ | वह लोग जो ईमान लाए (मोमिनो) | तुम न पैरवी करो | क़दम (जमा) | शैतान | और जो | पैरवी करता है | क़दम (जमा)

الشَّيْطٰنِ فَـاِنَّـهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ۗ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ

शैतान | तो बेशक वह | हुक्म देता है | बेहयाई का | और बुरी बात | और अगर न | अल्लाह का फ़ज़्ल | तुम पर

وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَـدًا ۙ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّىْ مَنْ يَّشَآءُ ۗ

और उस की रहमत | न पाक होता | तुम से | कोई आदमी | कभी भी | और लेकिन अल्लाह | पाक करता है | जिसे वह चाहता है

وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢١﴾ وَلَا يَـاْتَـلِ اُولُـوا الْـفَـضْـلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ

और अल्लाह | सुनने वाला | जानने वाला | 21 | और क़सम न खाएं | फ़ज़ीलत वाले | तुम में से | और वस्अत वाले

اَنْ يُّؤْتُـوْٓا اُولِـى الْـقُرْبٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ

कि (न) दें | क़राबत दार | और मिस्कीनों | और हिज्रत करने वाले | अल्लाह की राह में

وَلْـيَـعْـفُـوْا وَلْـيَصْفَحُوْا ۗ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ

और चाहिए कि वह माफ़ कर दें | और वह दरगुज़र करें | क्या तुम नही चाहते | कि | अल्लाह बख़्शदे | तुम्हें | और अल्लाह | बख़्शने वाला

رَّحِيْمٌ ﴿٢٢﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ لُعِنُوْا

निहायत मेह्रबान | 22 | बेशक | जो लोग तुह्मत लगाते हैं | पाक दामन (जमा) | भोली भाली अन्जान | मोमिन औरतें | लानत है उन पर

فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِـرَةِ ۪ وَلَـهُمْ عَـذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٣﴾ يَّـوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ

दुनिया में | और आख़िरत | और उन के लिए | अज़ाब | बड़ा | 23 | दिन | गवाही देंगे | उन पर (ख़िलाफ़)

اَلْسِنَتُهُمْ وَاَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ بِـمَـا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٤﴾ يَوْمَئِذٍ يُّوَفِّيْهِمُ

उन की ज़बानें | और उन के हाथ | और उन के पैर | उस की जो | वह करते थे | 24 | उस दिन | पूरा देगा उन्हें

اللّٰهُ دِيْنَهُمُ الْـحَقَّ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ ﴿٢٥﴾ اَلْخَبِيْثٰتُ

अल्लाह | उन का बदला | सच (ठीक ठीक) | और वह जान लेंगे | कि अल्लाह | वही | बरहक़ | ज़ाहिर करने वाला | 25 | नापाक (गन्दी) औरतें

لِلْخَبِيْثِيْنَ وَالْخَبِيْثُوْنَ لِلْخَبِيْثٰتِ ۚ وَالطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَالطَّيِّبُوْنَ

गन्दे मर्दों के लिए | और गन्दे मर्द | गन्दी औरतों के लिए | और पाक औरतें | पाक मर्दों के लिए | और पाक मर्द (जमा)

لِلطَّيِّبٰتِ ۚ اُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ ۗ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٦﴾ ع ۳ ۶ ۹

पाक औरतों के लिए | यह लोग | पाक दामन हैं | उस से जो | वह कहते हैं | उन के लिए | मग़फ़िरत | और रोज़ी | इज़्ज़त की | 26

बेशक जो लोग पसंद करते हैं कि मोमिनो में बेहयाई फैले उन के लिए दुनिया और आखिरत में दर्दनाक अजाब है, और अल्लाह जानता है जो तुम नहीं जानते (19)

और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और रहमत न होती (तो किया कुछ न हो जाता) और यह कि अल्लाह शफ़क़त करने वाला, निहायत मेह्रबान है। (20)

ऐ मोमिनो! तुम शैतान के क़दमों की पैरवी न करो, और जो शैतान के क़दमों की पैरवी करता है तो वह (शैतान) हुक्म देता है बेहयाई का और बुरी बात का, और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की रहमत न होती तो तुम में से कोई आदमी कभी भी न पाक होता, और लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है पाक करता है, और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (21)

और क़सम न खाएं तुम में से फ़ज़ीलत वाले और (माल में) वस्अत वाले कि वह क़राबतदारों को, मिस्कीनों को, और अल्लाह की राह में हिज्रत करने वालों को न देंगे। और चाहिए कि वह माफ़ कर दें, और दरगुजर करें, क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें बख़्शदे? और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेह्रबान है। (22)

बेशक जो लोग पाक दामन, अन्जान मोमिन औरतों पर तुह्मत लगाते हैं उन पर दुनिया और आखिरत में लानत है, और उन के लिए बड़ा अजाब है (23)

जिस दिन उन की ज़बानें और उन के हाथ और उन के पाऊँ उन के खिलाफ़ गवाही देंगे उस की जो वह करते थे। (24)

उस दिन अल्लाह उन्हें उन का बदला ठीक ठीक पूरा देगा, और वह जान लेंगे कि अल्लाह ही बरहक़ है (हक़ को) ज़ाहिर करने वाला। (25)

गन्दी औरतें गन्दे मर्दों के लिए हैं, और गन्दे मर्द गन्दी औरतों के लिए हैं, और पाक औरतें पाक मर्दों के लिए हैं, और पाक मर्द पाक औरतों के लिए हैं, यह लोग उस से बरी हैं जो वह कहते हैं, उन के लिए मग़फ़िरत और इज़्ज़त की रोज़ी है। (26)

ऐ मोमिनो! तुम अपने घरों के सिवा (दूसरे) घरों में दाखिल न हो, यहां तक कि इजाज़त ले लो, और उन के रहने वालों को सलाम कर लो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है, ताकि तुम नसीहत पकड़ो। (27) फिर अगर उस (घर) में तुम किसी को न पाओ तो उस में दाखिल न हो यहां तक कि तुम्हें इजाज़त दी जाए, और अगर तुम्हें कहा जाए कि लौट जाओ तो तुम लौट जाया करो, यही तुम्हारे लिए ज़ियादा पाकीज़ा है, और जो तुम करते हो अल्लाह जानने वाला है। (28) तुम पर (इस में) कोई गुनाह नहीं अगर तुम उन घरों में दाखिल हो जिन में किसी की सुकूनत (रिहाइश) नहीं, जिस में तुम्हारी कोई चीज़ हो और अल्लाह (खूब) जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। (29) आप (स) फ़रमा दें मोमिन मर्दों को कि वह अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें, यह उन के लिए ज़ियादा सुथरा है, बेशक अल्लाह उस से बाख़बर है जो वह करते हैं। (30) और आप (स) फ़रमा दें मोमिन औरतों को कि वह नीची रखें अपनी निगाहें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें और अपनी ज़ीनत (के मुक़ामात) को ज़ाहिर न करें मगर जो उस में से ज़ाहिर हुआ (जिस का ज़ाहिर होना नागुज़ीर है) और वह अपनी ओढ़नियां अपने गिरेबानों पर डाले रहें और अपनी ज़ीनत (के मुक़ाम) ज़ाहिर न करें सिवाए अपने ख़ावन्दों पर, या अपने बाप, या अपने खुसर, या अपने बेटों, या अपने शौहर के बेटों, या अपने भाइयों या अपने भतीजों पर, अपने भान्जों, या अपनी मुसलमान औरतों, या अपनी कनीज़ों, या वह ख़िदमतगार मर्द जो (औरतों से) ग़रज़ न रखने वाले हों, या वह लड़के जो अभी वाक़िफ़ नहीं औरतों के पर्दे (मामलात से), और वह अपने पाऊं (ज़मीन पर) न मारें कि वह जो अपनी ज़ीनत छुपाए हुए हैं पहचान ली जाए, अल्लाह के आगे तौबा करो तुम सब ऐ ईमान वालो! ताकि तुम दो जहान की कामयाबी पाओ। (31)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम इजाज़त ले लो | यहां तक कि | अपने घरों के सिवा | घर (जमा) | तुम न दाखिल हो | जो लोग ईमान लाए (मोमिन) | ऐ |

وَتُسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَهْلِهَا ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَاِنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर अगर | 27 | तुम नसीहत पकड़ो | ताकि तुम | तुम्हारे लिए | बेहतर है | यह | उन के (रहने) वाले | पर को | और तुम सलाम कर लो |

لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَآ اَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ قِيْلَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हें कहा जाए | और अगर | तुम्हें | इजाज़त दी जाए | यहां तक कि | तो तुम न दाखिल हो उस में | किसी को | उस में | तुम न पाओ |

لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٢٨﴾ لَيْسَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं | 28 | जानने वाला | तुम करते हो | वह जो | और अल्लाह | तुम्हारे लिए | ज़ियादा पाकीज़ा | यही | तो तुम लौट जाया करो | तुम लौट जाओ |

عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जानता है | और अल्लाह | तुम्हारी | कोई चीज़ | जिन में | ग़ैर आबाद | उन घरों में | तुम दाखिल हो | अगर | कोई गुनाह | तुम पर |

مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ﴿٢٩﴾ قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह हिफ़ाज़त करें | अपनी निगाहें | से | वह नीची रखें | मोमिन मर्दों को | आप फ़रमा दें | 29 | तुम छुपाते हो | और जो | जो तुम ज़ाहिर करते हो |

فُرُوْجَهُمْ ۭ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَقُلْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और फ़रमा दें | 30 | वह करते हैं | उस से जो | बाख़बर है | बेशक अल्लाह | उन के लिए | जियादा सुथरा | यह | अपनी शर्मगाहें |

لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَلَا يُبْدِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह ज़ाहिर न करें | अपनी शर्मगाहें | और वह हिफ़ाज़त करें | अपनी निगाहें | से | वह नीची रखें | मोमिन औरतों को |

زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ ۠

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने सीने (गिरेबानों) | पर | अपनी ओढ़नियां | और डाले रहें | उस में से जाहिर हुआ | जो | मगर | अपनी जीनत |

وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَآئِهِنَّ اَوْ اٰبَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| या | अपने शौहरों के बाप (खुसर) | या | बाप (जमा) | या | अपने खावन्दों पर | सिवाए | अपनी ज़ीनत | और वह जाहिर न करें |

اَبْنَآئِهِنَّ اَوْ اَبْنَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| या | अपने भाई के बेटे (भतीजे) | या | अपने भाई | या | अपने शौहरों के बेटे | या | अपने बेटे |

بَنِيْٓ اَخَوٰتِهِنَّ اَوْ نِسَآئِهِنَّ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ اَوِ التّٰبِعِيْنَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| या ख़िद्मतगार मर्द | उन के दाएं हाथ (कनीज़ें) | या जिन के मालिक हुए | या अपनी (मुसलमान) औरतें | अपनी बहनों के बेटे (भान्जे) |

غَيْرِ اُولِى الْاِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ اَوِ الطِّفْلِ الَّذِيْنَ لَمْ يَظْهَرُوْا عَلٰى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | वह वाक़िफ़ नही हुए | वह जो कि | या लड़के | मर्द | से | न ग़रज़ रखने वाले |

عَوْرٰتِ النِّسَآءِ ۠ وَلَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ مِنْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| से | जो छुपाए हुए है | कि वह जान (पहचान) लिया जाए | अपने पाऊं | और वह न मारें | औरतों के पर्दे |

زِيْنَتِهِنَّ ۭ وَتُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٣١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 31 | फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) पाओ | ताकि तुम | ऐ ईमान वालो | सब | अल्लाह की तरफ़ | और तुम तौबा करो | अपनी ज़ीनत |

وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ وَالصّٰلِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَاِمَآئِكُمْ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और अपनी कनीज़ें | अपने गुलाम | से | और नेक | अपने में से (अपनी) | बेवा औरतें | और तुम निकाह करो |

اِنْ يَّكُوْنُوْا فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 32 | इल्म वाला | वस्अत वाला | और अल्लाह | अपने फ़ज़्ल से | अल्लाह | उन्हें ग़नी कर देगा | तंग दस्त (जमा) | अगर वह हों |

وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ نِكَاحًا حَتّٰى يُغْنِيَهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने फ़ज़्ल से | अल्लाह | उन्हें ग़नी कर दे | यहां तक कि | निकाह | नहीं पाते | वह लोग जो | और चाहिए कि बचे रहें |

وَالَّذِيْنَ يَبْتَغُوْنَ الْكِتٰبَ مِمَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوْهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो तुम उन से मकातिबत (आजादी की तहरीर) करलो | तुम्हारे दाएं हाथ (गुलाम) | मालिक हों | उन में से जो | मकातिबत | चाहते हों | और जो लोग |

اِنْ عَلِمْتُمْ فِيْهِمْ خَيْرًا ۖ وَّاٰتُوْهُمْ مِّنْ مَّالِ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اٰتٰىكُمْ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो उस ने तुम्हें दिया | अल्लाह का माल | से | और तुम उनको दो | बेहतरी | उन में | अगर तुम जानो (पाओ) |

وَلَا تُكْرِهُوْا فَتَيٰتِكُمْ عَلَى الْبِغَآءِ اِنْ اَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوْا عَرَضَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सामान | ताकि तुम हासिल कर लो | पाक दामन रहना | अगर वह चाहें | बदकारी पर | अपनी कनीज़ें | और तुम न मजबूर करो |

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَمَنْ يُّكْرِهْهُّنَّ فَاِنَّ اللّٰهَ مِنْۢ بَعْدِ اِكْرَاهِهِنَّ غَفُوْرٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बख़्शने वाला | उन की मजबूरी | बाद | तो बेशक अल्लाह | उन्हें मजबूर करेगा | और जो | दुनिया | ज़िन्दगी |

رَّحِيْمٌ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ وَّمَثَلًا مِّنَ الَّذِيْنَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो | से | और मिसालें | वाज़ेह | अहकाम | तुम्हारी तरफ़ | हम ने नाज़िल किए | और तहक़ीक़ | 33 | निहायत मेहरबान |

ع ٨ ١٠ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٤﴾ اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मानों | नूर | अल्लाह | 34 | परहेज़गारों के लिए | और नसीहत | तुम से पहले | गुज़रे |

وَالْاَرْضِ ؕ مَثَلُ نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ؕ اَلْمِصْبَاحُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| चिराग़ | एक चिराग़ | उस में | जैसे एक ताक़ | उस का नूर | मिसाल | और ज़मीन |

فِيْ زُجَاجَةٍ ؕ اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दरख़्त | से | रोशन किया जाता है | एक सितारा चमकदार | गोया वह | वह शीशा | एक शीशे में |

مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِيْٓءُ وَلَوْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़्वाह | रोशन हो जाए | उस का तेल | क़रीब है | और न मग़रिब का | न मशरिक़ का | ज़ैतून | मुबारक |

لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ؕ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ؕ يَهْدِى اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह जिस को चाहता है | अपने नूर की तरफ़ | रहनुमाई करता है अल्लाह | रोशनी पर रोशनी | आग | उसे न छुए |

وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٣٥﴾ فِيْ بُيُوْتٍ اَذِنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हुक्म दिया | उन घरों में | 35 | जानने वाला | हर शै को | और अल्लाह | लोगों के लिए | मिसालें | और बयान करता है अल्लाह |

اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ ۙ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ﴿٣٦﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 36 | और शाम | सुब्ह | उन में | उस की | तस्बीह करते हैं | उस का नाम | उन में | और लिया जाए | कि बुलन्द किया जाए | अल्लाह |

और तुम निकाह करो अपनी बेवा औरतों का और अपने नेक गुलामों और अपनी कनीज़ों का, अगर वह तंग दस्त हों तो अल्लाह उन्हें ग़नी कर देगा अपने फ़ज़्ल से, और अल्लाह वस्अत वाला, इल्म वाला है। (32) और चाहिए कि बचे रहें (पाक दामन रहें) वह जो कि निकाह (मक़्दूर) नहीं पाते यहां तक कि अल्लाह उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दे, और तुम्हारे गुलाम जो मकातिबत (कुछ ले दे कर आज़ादी की तहरीर) चाहते हों तो उन से मकातिबत कर लो अगर तुम उन में बेहतरी पाओ, और उस माल में से उन को दो जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है, और अपनी कनीजों को बदकारी पर मजबूर न करो अगर वह पाक दामन रहना चाहें (महज इस लिए कि) तुम दुनिया की ज़िन्दगी का सामान हासिल कर लो, और जो उन्हें मजबूर करेगा तो अल्लाह उन (बेचारियों) के मजबूर किए जाने के बाद बख़्शने वाला, निहायत मेह्रबान है। (33) और तहक़ीक़ हम ने तुम्हारी तरफ़ नाजिल किए वाजे अहकाम, और उन लोगों की मिसालें जो तुम से पहले गुज़रे हैं और नसीहत परहेज़गारों के लिए। (34) अल्लाह नूर है ज़मीन और आस्मान का, उस के नूर की मिसाल (ऐसी है) जैसे एक ताक़ हो, उस में एक चिराग़ हो, चिराग़ एक शीशे की (क़न्दील में) हो, वह शीशा गोया एक चमकदार सितारा है, वह रोशन किया जाता है ज़ैतून के एक मुबारक दरख़्त से जो न शर्क़ी है न गरबी, करीब है कि उस का तेल रोशन हो जाए चाहे उसे आग न छुए, नूर पर नूर (सरासर रोशनी), अल्लाह जिस को चाहता है अपने नूर की तरफ़ रहनुमाई करता है, और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है, और अल्लाह हर शै का जानने वाला। (35) (यह रोशनी है) उन घरों में (जिन की निस्बत) अल्लाह ने हुक्म दिया है कि उन्हें बुलन्द किया जाए और उन में उस का नाम लिया जाए, वह उन में सुब्ह शाम उस की तस्बीह करते हैं। (36)

वह लोग (जिन्हें) ग़ाफ़िल नहीं करती कोई तिजारत, न ख़रीद ओ फ़रोख़्त अल्लाह की याद से, नमाज़ क़ाइम रखने और ज़कात अदा करने से, वह उस दिन से डरते हैं जिस में उलट जाएंगे दिल और आँखें। (37) ताकि अल्लाह उन के आमाल की बेहतर से बेहतर जज़ा दे, और उन्हें अपने फ़ज़्ल से जियादा दे, और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब रिज़्क़ देता है। (38) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के आमाल सुराब (चमकते रेत के धोके) की तरह हैं चटियल मैदान में, प्यासा उसे पानी गुमान करता है, यहां तक कि जब वह वहां आता है तो उसे कुछ भी नहीं पाता, और उस ने अल्लाह को अपने पास पाया तो अल्लाह ने उस का हिसाब पूरा कर दिया, और अल्लाह तेज़ हिसाब करने वाला है। (39) (या उन के आमाल ऐसे हैं) जैसे गहरे दर्या में अन्धेरे, जिन्हें ढांप लेती है मौज, उस के ऊपर दूसरी मौज, उस के ऊपर बादल, अन्धेरे हैं एक पर दूसरा, जब वह अपना हाथ निकाले तो तवक़्क़ो नहीं कि उसे देख सके, और जिस के लिए अल्लाह नूर न बनाए उस के लिए कोई नूर नहीं। (40) क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता है जो (भी) आस्मानों और ज़मीन में है, और पर फैलाए हुए परिन्दे (भी) हर एक ने जान ली है अपनी दुआ और अपनी तस्बीह, और अल्लाह जानता है जो वह करते हैं। (41) और अल्लाह (ही) की बादशाहत है आस्मानों की और ज़मीन की, और अल्लाह (ही) की तरफ़ लौट कर जाना है। (42) क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह बादल चलाता है, फिर उन्हें आपस में मिलाता है, फिर वह उन्हें तह ब तह कर देता है, फिर तू देखे उन के दरमियान से बारिश निकलती है, और वह आस्मानों (में जो ओलों के) पहाड़ हैं उन से उतारता है ओले। फिर वह जिस पर चाहे डाल देता है, और जिस से चाहे वह उसे फेर देता है, क़रीब है कि उस की बिजली की चमक आँखों (की बीनाई) ले जाए। (43)

رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नमाज़ | और क़ाइम रखना | अल्लाह की याद | से | और न ख़रीद ओ फ़रोख़्त | तिजारत | उन्हें ग़ाफ़िल नही करती | वह लोग |

وَاِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ ۙ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ ﴿٣٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 37 | और आँखें | दिल (जमा) | उस में | उलट जाएंगे | उस दिन से | और डरते हैं | ज़कात | और अदा करना |

لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۗ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रिज़्क़ देता है | और अल्लाह | अपने फ़ज़्ल से | और वह उन्हें जियादा दे | जो उन्हों ने किया (आमाल) | बेहतर से बेहतर | ताकि उन्हें जज़ा दे अल्लाह |

مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सुराब की तरह | उन के अमल | और जिन लोगों ने कुफ़्र किया | 38 | बेहिसाब | जिसे चाहता है |

بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً ۗ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَهٗ لَمْ يَجِدْهُ شَيْـًٔا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुछ भी | उस का नहीं पाता | जब वह वहां आता है | यहां तक कि | पानी | प्यासा | गुमान करता है | चटियल मैदान में |

وَّوَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ ۗ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٣٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 39 | तेज़ हिसाब करने वाला | और अल्लाह | उस का हिसाब | तो उस (अल्लाह) ने उसे पूरा कर दिया | अपने पास | अल्लाह | और उस ने पाया |

اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के ऊपर से | एक (दूसरी) मौज | उस के ऊपर से | मौज | उसे ढांप लेती है | गहरा पानी | दर्या में | या जैसे अन्धेरे |

سَحَابٌ ۗ ظُلُمٰتٌ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ۗ اِذَآ اَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तवक़्क़ो नही | अपना हाथ | वह निकाले | जब | बाज़ (दूसरे) के ऊपर | उस के बाज़ (एक) | अन्धेरे | बादल |

يَرٰىهَا ۗ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ﴿٤٠﴾ اَلَمْ تَرَ ع ٥ ١١

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या तू ने नही देखा | 40 | कोई नूर | तो नही उस के लिए | नूर | उस के लिए | न बनाए (न दे) अल्लाह | और जिसे | तू उसे देख सके |

اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ ۗ كُلٌّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हर एक | पर फैलाए हुए | और परिन्दे | और ज़मीन | आस्मानों में | जो | उस की | पाकीज़गी बयान करता है | कि अल्लाह |

قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَتَسْبِيْحَهٗ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٤١﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अल्लाह के लिए बादशाहत | 41 | वह करते हैं | वह जो | जानता है | और अल्लाह | अपनी तस्बीह | अपनी दुआ | जान ली |

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿٤٢﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِيْ سَحَابًا ثُمَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर | बादल (जमा) | चलाता है | कि अल्लाह | क्या तू ने नही देखा | 42 | लौट कर जाना | और अल्लाह की तरफ़ | और ज़मीन | आस्मानों |

يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَيُنَزِّلُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह उतारता है | उस के दरमियान से | निकलती है | बारिश | फिर तू देखे | तह ब तह | वह उस को करता है | फिर | आपस में | मिलाता है वह |

مِنَ السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْۢ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिस पर चाहे | उसे | फिर वह डाल देता है | ओले | से | उस में | पहाड़ | से | आस्मानों से |

وَيَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ۗ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ﴿٤٣﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 43 | आँखों को | ले जाए | उस की बिजली | चमक | क़रीब है | जिस से चाहे | से | और उसे फेर देता है |

يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿٤٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 44 | आँखों वाले (अक़्ल मन्द) | इब्रत है | इस में | बेशक | और दिन | रात | बदलता है अल्लाह |

وَاللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَاۗبَّةٍ مِّنْ مَّاۗءٍ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰي بَطْنِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन में से | अपने पेट पर | कोई चलता है | पस उन में से | पानी से | हर जानदार | पैदा किया | और अल्लाह |

مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰي رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰٓي اَرْبَعٍ ۭ يَخْلُقُ اللّٰهُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह पैदा करता है | चार पर | कोई चलता है | और उन में से | दो पाऊँ पर | कोई चलता है |

مَا يَشَاۗءُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤٥﴾ لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ۭ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वाज़ेह | आयतें | तहक़ीक़ हम ने नाज़िल कीं | 45 | क़ुदरत रखने वाला | हर शै | पर | बेशक अल्लाह | जो वह चाहता है |

وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤٦﴾ وَيَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ईमान लाए | और वह कहते हैं | 46 | सीधा | रास्ता | तरफ़ | जिसे वह चाहता है | हिदायत देता है | और अल्लाह |

بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُوْلِ وَاَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के बाद | उस में से | एक फ़रीक़ | फिर गया | फिर | और हम ने हुक्म माना | और रसूल पर | अल्लाह पर |

وَمَآ اُولٰۗىِٕكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَاِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उस का रसूल | अल्लाह की तरफ़ | वह बुलाए जाते हैं | और जब | 47 | ईमान वाले | और वह नहीं |

لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَاِنْ يَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हक़ | उन के लिए | हो | और अगर | 48 | मुँह फेर लेता है | उन में से | एक फ़रीक़ | नागहाँ | उन के दरमियान | ताकि वह फ़ैसला कर दे |

يَّاْتُوْٓا اِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ ﴿٤٩﴾ اَفِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَمِ ارْتَابُوْٓا اَمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| या | वह शक में पड़े हैं | या | कोई रोग | क्या उन के दिलों में | 49 | गर्दन झुकाए | वह आते हैं उस की तरफ़ |

ع ١٠ ١٢ يَخَافُوْنَ اَنْ يَّحِيْفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُوْلُهٗ ۭ بَلْ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٥٠﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 50 | ज़ालिम (जमा) | वही | वह | बल्कि | और उस का रसूल | उन पर | ज़ुल्म करेगा अल्लाह | कि | वह डरते हैं |

اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि वह फ़ैसला कर दें | और उस का रसूल | अल्लाह की तरफ़ | वह बुलाए जाते हैं | जब | मोमिन (जमा) | बात | इस के सिवा नहीं है |

بَيْنَهُمْ اَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥١﴾ وَمَنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | 51 | फ़लाह पाने वाले | वही | और वह | और हम ने इताअत की | हम ने सुना | वह कहते हैं | कि-तो | उन के दरमियान |

يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفَاۗىِٕزُوْنَ ﴿٥٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 52 | कामयाब होने वाले | वही | पस वह | और परहेज़गारी करे | अल्लाह | और डरे | और उस का रसूल | इताअ़त करे अल्लाह की |

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَىِٕنْ اَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ۭ قُلْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़रमा दें | तो वह ज़रूर निकल खड़े होंगे | आप हुक्म दें उन्हें | अलबत्ता अगर | और ज़ोरदार क़समें | अल्लाह की | और उन्हों ने क़समें खाईं |

لَّا تُقْسِمُوْا ۚ طَاعَةٌ مَّعْرُوْفَةٌ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 53 | तुम करते हो | वह जो | ख़बर रखता है | बेशक अल्लाह | पसंदीदा | इताअत | तुम क़समें न खाओ |

अल्लाह रात और दिन को बदलता है, बेशक उस में इब्रत है अ़क़्ल मन्दों के लिए। (44) और अल्लाह ने हर जानदार पानी से पैदा किया, पस उन में से कोई अपने पेट पर चलता है, और उन में से कोई दो पाऊँ पर चलता है, और उन में से कोई चार (पाऊँ) पर चलता है, अल्लाह पैदा करता है जो वह चाहता है, बेशक अल्लाह हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है। (45) तहक़ीक़ हम ने वाज़ेह आयतें नाज़िल कीं, और अल्लाह जिसे चाहता है सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत देता है। (46) और वह कहते हैं कि हम अल्लाह और रसूल पर ईमान लाए और हम ने हुक्म माना, फिर उस में से एक फ़रीक़ फिर गया, और वह ईमान वाले नहीं। (47) और जब वह बुलाए जाते हैं अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ ताकि वह उन के दरमियान फ़ैसला कर दे तो नागहाँ उन में से एक फ़रीक़ मुँह फेर लेता है। (48) और अगर उन के लिए हक़ (पहुँचता) हो तो वह उस की तरफ़ गर्दन झुकाए (ख़ुशी से) चले आते हैं। (49) क्या उन के दिलों में कोई रोग है, या वह शक में पड़े हैं, या वह डरते हैं कि अल्लाह और उस का रसूल उन पर ज़ुल्म करेंगे, (नहीं) बल्कि वही ज़ालिम हैं। (50) मोमिनों की बात इस के सिवा नहीं कि जब वह अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ बुलाए जाते हैं ताकि वह उन के दरमियान फ़ैसला कर दें, तो वह कहते है हम ने सुना और हम ने इताअ़त की और वही हैं फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) पाने वाले। (51) और जो कोई अल्लाह और उस के रसूल की इताअ़त करे और अल्लाह से डरे, और परहेज़गारी करे, पस वही लोग कामयाब होने वाले हैं। (52) और उन्हों ने अल्लाह की ज़ोरदार क़समें खाईं कि अगर आप (स) उन्हें हुक्म दें तो वह ज़रूर (जिहाद) के लिए निकल खड़े होंगे, आप (स) फ़रमा दें तुम क़समें न खाओ, पसंदीदा इताअ़त (मतलूब है), बेशक अल्लाह उस की ख़बर रखता है वह जो तुम करते हो। (53)

आप (स) फरमा दें तुम अल्लाह की और रसूल की इताअत करो, फिर अगर तुम फिर गए तो इस के सिवा नहीं कि रसूल पर उसी क़दर है जो उस के जिम्मे किया गया है और तुम पर (लाज़िम है) जो तुम्हारे ज़िम्मे डाला गया है, अगर तुम उस की इताअत करोगे तो हिदायत पा लोगे, और रसूल पर सिर्फ़ साफ़ साफ़ पहुँचा देना है। (54)
अल्लाह ने उन लोगों से वादा किया है जो तुम में से ईमान लाए और उन्हों ने नेक काम किए कि उन्हें ज़रूर खिलाफ़त (सलतनत) देगा ज़मीन में, जैसे उन के पहलों को खिलाफ़त दी, और उन के लिए उन के दीन को ज़रूर कुव्वत (इस्तेहकाम) देगा, जो उस ने उन के लिए पसंद किया, और उन के लिए खौफ़ के बाद ज़रूर अम्न से बदल देगा, वह मेरी इबादत करेंगे, मेरा शरीक न करेंगे किसी शै को, और जिस ने उस के बाद नाशुक्री की, पस वही लोग नाफ़रमान हैं। (55)
और तुम नमाज़ क़ाइम करो और जकात अदा करो, और रसूल की इताअत करो ताकि तुम पर रह्म किया जाए। (56)
हरगिज़ गुमान न करना कि काफ़िर ज़मीन में आजिज़ करने वाले हैं, और उन का ठिकाना दोज़ख़ है, और (वह) अलबत्ता बुरा ठिकाना है। (57)
ऐ ईमान वालो! चाहिए कि तुम्हारे गुलाम (तुम्हारे पास आने की) तुम से इजाज़त लें, और वह जो नहीं पहुँचे तुम में से (हदे) शऊर को, तीन वक़्त (यानी) नमाजे फज्र से पहले और जब तुम अपने कपड़े उतार कर रख देते हो दोपहर को, और नमाजे इशा के बाद, तुम्हारे लिए (यह) तीन पर्दे (के औक़ात) हैं, नहीं तुम पर और न उन पर कोई गुनाह उन के अलावा (औकात में), तुम में से बाज़, बाज के पास फिरा करते हैं, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम वाज़ेह करता है, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (58)

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस पर | तो इस के सिवा नहीं | फिर अगर तुम फिर गए | रसूल की | और इताअत करो | तुम इताअत करो अल्लाह की | फ़रमा दें |

مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ۗ وَاِنْ تُطِيْعُوْهُ تَهْتَدُوْا ۗ وَمَا عَلَى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | और नहीं | तुम हिदायत पालोगे | तुम इताअत करोगे | और अगर | जो बोझ डाला गया तुम पर (ज़िम्मे) | और तुम पर | जो बोझ डाला गया (जिम्मे) |

الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٥٤﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और काम किए | तुम में से | उन लोगो से जो ईमान लाए | अल्लाह ने वादा किया | 54 | साफ़ साफ़ | पहुँचा देना | मगर-सिर्फ़ | रसूल |

الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो | उस ने ख़िलाफ़त दी | जैसे | ज़मीन में | वह ज़रूर उन्हें खिलाफ़त देगा | नेक |

مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अलबत्ता वह ज़रूर बदल देगा उन के लिए | उन के लिए | उस ने पसंद किया | जो | उन का दीन | उन के लिए | और ज़रूर कुव्वत देगा | उन से पहले |

مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ۗ يَعْبُدُوْنَنِىْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِىْ شَيْئًا ۗ وَمَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जिस | कोई शै | मेरा | वह शरीक न करेंगे | वह मेरी इबादत करेंगे | अम्न | उन का खौफ़ | बाद |

كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नमाज़ | और तुम काइम करो | 55 | नाफ़रमान (जमा) | पस वही लोग | उस के बाद | नाशुक्री की |

وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٥٦﴾ لَا تَحْسَبَنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हरगिज गुमान न करें | 56 | रह्म किया जाए | ताकि तुम पर | रसूल | और इताअत करो | ज़कात | और अदा करो तुम |

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۗ وَلَبِئْسَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और अलबत्ता बुरा | दोज़ख़ | उन का ठिकाना | ज़मीन में | आजिज़ करने वाले हैं | वह जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) |

الْمَصِيْرُ ﴿٥٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِيَسْتَاْذِنْكُمُ الَّذِيْنَ مَلَكَتْ ع ١٣

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मालिक हुए | वह जो कि | चाहिए कि इजाजत लें तुम से | जो लोग ईमान लाए (ईमान वालो) | ऐ | 57 | ठिकाना |

اَيْمَانُكُمْ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ۗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बार-वक़्त | तीन | तुम में से | एहतिलाम-शऊर | नही पहुँचे | और वह लोग जो | तुम्हारे दाएं हाथ (गुलाम) |

مِنْ قَبْلِ صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِيْرَةِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दोपहर | से-को | अपने कपड़े | उतार कर रख देते हो | और जब | नमाज़े फ़ज्र | पहले |

وَمِنْۢ بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَآءِ ۗ ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ لَّكُمْ ۗ لَيْسَ عَلَيْكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नही तुम पर | तुम्हारे लिए | पर्दा | तीन | नमाज़े इशा | और बाद |

وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌۢ بَعْدَهُنَّ ۗ طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلٰى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पर पास | तुम में से बाज़ (एक) | तुम्हारे पास | फेरा करने वाले | उन के बाद अलावा | कोई गुनाह | और न उन पर |

بَعْضٍ ۗ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 58 | हिक्मत वाला | जानने वाला | और अल्लाह | अह्काम | तुम्हारे लिए | वाजेह करता है अल्लाह | इसी तरह | बाज (दूसरे) |

وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَأْذِنُوا كَمَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जैसे | पस चाहिए कि वह इजाज़त लें | (हदे) शऊर को | तुम में से | बच्चे | पहुँचें | और जब |

اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे लिए | अल्लाह वाज़ेह करता है | इसी तरह | उन से पहले | वह जो | इजाज़त लेते थे |

آيَاتِهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٩﴾ وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ اللَّاتِي

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जो | औरतों में से | और खाना नशीन बूढ़ी | 59 | हिक्मत वाला | जानने वाला | और अल्लाह | अपने अहकाम |

لَا يَرْجُونَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَنْ يَضَعْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कि वह उतार रखें | कोई गुनाह | उन पर | तो नहीं | निकाह | आरज़ू नहीं रखती हैं |

ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ ۖ وَأَنْ يَسْتَعْفِفْنَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वह बचें | और अगर | ज़ीनत को | न ज़ाहिर करते हुए | अपने कपड़े |

خَيْرٌ لَهُنَّ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٦٠﴾ لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नाबीना पर | नहीं | 60 | जानने वाला | सुनने वाला | और अल्लाह | उन के लिए | बेहतर |

حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई गुनाह | बीमार पर | और न | कोई गुनाह | लंगड़े पर | और न | कोई गुनाह |

وَلَا عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ أَنْ تَأْكُلُوا مِنْ بُيُوتِكُمْ

| | | | |
|---|---|---|---|
| अपने घरों से | कि तुम खाओ | ख़ुद तुम पर | और न |

أَوْ بُيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أُمَّهَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ إِخْوَانِكُمْ

| | | |
|---|---|---|
| या अपने भाइयों के घरों से | या अपनी माँओं के घरों से | या अपने बापों के घरों से |

أَوْ بُيُوتِ أَخَوَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَعْمَامِكُمْ أَوْ بُيُوتِ عَمَّاتِكُمْ

| | | |
|---|---|---|
| या अपनी फूफियों के घरों से | या अपने ताए चचाओं के घरों से | या अपनी बहनों के घरों से |

أَوْ بُيُوتِ أَخْوَالِكُمْ أَوْ بُيُوتِ خَالَاتِكُمْ أَوْ مَا مَلَكْتُمْ

| | | | |
|---|---|---|---|
| जिस (घर) की तुम्हारे क़ब्ज़े में हों | या | या अपनी ख़ालाओं के घरों से | या अपने ख़ालू, मामूओं के घरों से |

مَفَاتِحَهُ أَوْ صَدِيقِكُمْ ۚ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कि | कोई गुनाह | तुम पर | नहीं | या अपने दोस्त (के घर से) | उस की कुन्जियाँ |

تَأْكُلُوا جَمِيعًا أَوْ أَشْتَاتًا ۚ فَإِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوتًا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तुम दाख़िल हो घरों में | फिर जब | जुदा जुदा | या | साथ साथ | तुम खाओ |

فَسَلِّمُوا عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِنْ عِنْدِ اللَّهِ مُبَارَكَةً

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बाबरकत | अल्लाह के हाँ | से | दुआए ख़ैर | अपने लोगों को | तो सलाम करो |

ع ٨ ١٣ طَيِّبَةً ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٦١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 61 | समझो | ताकि तुम | अहकाम | तुम्हारे लिए | अल्लाह वाज़ेह करता है | इसी तरह | पाकीज़ा |

और जब तुम में से बच्चे पहुँचें हदे शऊर को, पस चाहिए कि वह इजाज़त लें जैसे उन से पहले इजाज़त लेते थे, इसी तरह अल्लाह वाज़ेह करता है तुम्हारे लिए अपने अहकाम, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (59) और जो खाना नशीन बूढ़ी औरतें निकाह की आरज़ू नहीं रखतीं, तो उन पर कोई गुनाह नहीं कि वह अपने (ज़ाइद) कपड़े उतार रखें, ज़ीनत (सिंघार) ज़ाहिर न करते हुए, और अगर वह (उस से भी) बचें तो उन के लिए बेहतर है, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (60) कोई गुनाह नहीं नाबीना पर, और न लंगड़े पर कोई गुनाह है, और न बीमार पर कोई गुनाह है, न ख़ुद तुम पर कि तुम खाओ अपने घरों से, या अपने बापों के घरों से, या अपनी माँओं के घरों से, या अपने भाइयों के घरो से, या अपनी बहनों के घरों से, या अपने ताए चचाओं के घरों से, या अपनी फूफियों के घरों से, या अपने ख़ालू, मामूओं के घरों से, या अपनी ख़ालाओं के घरों से, या जिस घर की कुन्जियाँ तुम्हारे क़ब्ज़े में हों, या अपने दोस्त के घर से, तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम इकट्ठे मिल कर खाओ, या जुदा जुदा, फिर जब तुम घरों में दाख़िल हो तो अपने लोगों को सलाम करो, दुआए ख़ैर अल्लाह के हाँ से, बाबरकत, पाकीज़ा, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम वाज़ेह करता है ताकि तुम समझो। (61)

इस के सिवा नहीं कि मोमिन वह हैं जिन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल (स) पर यक़ीन किया और जब वह किसी इज्तिमाई काम में उस (रसूल) के साथ होते हैं तो चले नहीं जाते जब तक वह उस से इजाज़त न ले लें. बेशक जो लोग आप (स) से इजाजत मांगते हैं यही लोग हैं जो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाए हैं. पस जब वह आप (स) से अपने किसी काम के लिए इजाजत मांगें तो इजाज़त दे दें जिस को उन में से आप चाहें, और उन के लिए अल्लाह से बख़्शिश मांगें, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेह्रबान है। (62)

तुन न बना लो अपने दरमियान रसूल को बुलाना जैसे तुम एक दूसरे को बुलाते हो, तहक़ीक़ अल्लाह जानता है उन लोगो को जो तुम में से नजर बचा कर चुपके से खिसक जाते हैं, पस चाहिए कि वह डरें जो उस के हुक्म के ख़िलाफ़ करते हैं कि उन पर कोई आफ़त पहुँचे या उन को दर्दनाक अज़ाब पहुंचे। (63)

याद रखो! बेशक अल्लाह के लिए है जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है, तहक़ीक़ वह जानता है जिस (हाल) पर तुम हो, और उस दिन को जब उस की तरफ़ वह लौटाए जाएंगे, फिर वह उन्हें बताएगा जो कुछ उन्हों ने किया, और अल्लाह हर शै को जानने वाला है। (64)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

बड़ी बरकत वाला है वह जिस ने अपने बन्दे पर "फ़ुरक़ान" (अच्छे बुरे में फ़र्क़ और फ़ैसला करने वाली किताब) को नाज़िल किया ताकि वह सारे जहानों के लिए डराने वाला हो। (1)

वह जिस के लिए बादशाहत है आस्मानों और जमीन की, और उस ने कोई बेटा नहीं बनाया और उस का कोई शरीक नहीं सलतनत में, और उस ने हर शै को पैदा किया, फिर उस का एक (मुनासिब) अन्दाज़ा किया। (2)

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاِذَا كَانُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह होते हैं | और जब | और उस के रसूल पर | अल्लाह पर | जो ईमान लाए (यक़ीन किया) | मोमिन (जमा) | इस के सिवा नहीं |

مَعَهٗ عَلٰٓى اَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوْا حَتّٰى يَسْتَاْذِنُوْهُ ؕ اِنَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | वह उस से इजाज़त लें | जब तक | वह नही जाते | सब मिल कर करने का काम | पर-में | उस के साथ |

الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उस के रसूल पर | अल्लाह पर | ईमान लाते हैं | वह जो | यही लोग | इजाज़त मांगते हैं आप (स) से | जो लोग |

فَاِذَا اسْتَاْذَنُوْكَ لِبَعْضِ شَاْنِهِمْ فَاْذَنْ لِّمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन में से | आप चाहें | जिस को | तो इजाज़त दे दें | अपने काम | किसी के लिए | वह तुम से इजाजत मांगें | पस जब |

وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٢﴾ لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बुलाना | तुम न बना लो | 62 | निहायत मेह्रबान | बख़्शने वाला | बेशक अल्लाह | उन के लिए अल्लाह (से) | और बख़्शिश मांगें |

الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ؕ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो लोग | अल्लाह | तहक़ीक़ जानता है | बाज़ (दूसरे) को | अपने बाज़ (एक) | जैसे बुलाना | अपने दरमियान | रसूल को |

يَتَسَلَّلُوْنَ مِنْكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖٓ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के हुक्म से | ख़िलाफ़ करते हैं | जो लोग | पस चाहिए कि वह डरें | नज़र बचा कर | तुम में से | चुपके से खिसक जाते हैं |

اَنْ تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾ اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | याद रखो! बेशक अल्लाह के लिए | 63 | दर्दनाक | अज़ाब | या पहुँचे उन को | कोई आफ़त | पहुँचे उन पर | कि |

فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قَدْ يَعْلَمُ مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ ؕ وَيَوْمَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जिस दिन | उस पर | तुम | जो-जिस | तहक़ीक़ वह जानता है | और ज़मीन | आस्मानों में |

يُرْجَعُوْنَ اِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٦٤﴾ ع ١٥

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 64 | जानने वाला | हर शै को | और अल्लाह | उन्हों ने किया | जो-जिस | फिर वह उन्हें बताएगा | उस की तरफ़ | वह लौटाए जाएंगे |

## آيَاتُهَا ٧٧ ❀ (٢٥) سُوْرَةُ الْفُرْقَانِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

आयात 77 — (25) सूरतुल फ़ुरक़ान — रुकुआत 6

कसौटी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

تَبٰرَكَ الَّذِىْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرَا ﴿١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | डराने वाला | सारे जहानों के लिए | ताकि वह हो | अपने बन्दे पर | नाज़िल किया फ़र्क़ करने वाली किताब (क़ुरआन) | वह जो-जिस | बड़ी बरकत वाला |

اِلَّذِىْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और नही है | कोई बेटा | और उस ने नही बनाया | और ज़मीन | आस्मानों | बादशाहत | वह जिस के लिए |

لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَىْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِيْرًا ﴿٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | एक अन्दाज़ा | फिर उस का अन्दाज़ा ठहराया | हर शै | और उस ने पैदा किया | सलतनत में | कोई शरीक | उस का |

معانقة ١٠ عند المتأخرين ١٣

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पैदा किए गए हैं | बल्कि वह | कुछ | वह नहीं पैदा करते | माबूद | उस के अलावा | और उन्हों ने बना लिए |

وَلَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| किसी मौत का | और न वह इख़्तियार रखते हैं | और न किसी नफ़ा का | किसी नुक़्सान का | अपने लिए | और वह इख़्तियार नहीं रखते |

وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا ③ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर-सिर्फ़ | नहीं यह | वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | और कहा | 3 | और न फिर उठने का | और न किसी ज़िन्दगी का |

اِفْكُ ۨافْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۚ فَقَدْ جَآءُوْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तहक़ीक़ वह आगए | दूसरे लोग (जमा) | उस पर | उस की मदद की | उस ने उसे घड़ लिया है | बुहतान-मन घड़त |

ظُلْمًا وَّزُوْرًا ④ وَقَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस वह पढ़ी जाती है | उस ने उन्हें लिख लिया है | पहले लोग | कहानियाँ | और उन्हों ने कहा | 4 | और झूट | ज़ुल्म |

عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ⑤ قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राज़ | जानता है | वह जो | उस को नाज़िल किया है | फ़रमा दें | 5 | और शाम | सुबह | उस पर |

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ⑥ وَقَالُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने कहा | 6 | निहायत मेहरबान | बख़्शने वाला | बेशक वह है | और ज़मीन | आस्मानों में |

مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِيْ فِي الْاَسْوَاقِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बाज़ार (जमा) | में | चलता (फिरता) है | खाना | वह खाता है | यह रसूल | कैसा है |

لَوْلَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِيْرًا ⑦ اَوْ يُلْقٰٓى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| या डाला (उतारा) जाता | 7 | डराने वाला | उस के साथ | कि होता वह | कोई फ़रिश्ता | उस के साथ | उतारा गया | क्यों न |

اِلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ يَّاْكُلُ مِنْهَا ۭ وَقَالَ الظّٰلِمُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़ालिम (जमा) | और कहा | उस से | वह खाता | उस के लिए कोई बाग़ | या होता | कोई ख़ज़ाना | उस की तरफ़ |

اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ⑧ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे लिए | उन्हों ने बयान कीं | कैसी | देखो | 8 | जादू का मारा हुआ | एक आदमी | मगर सिर्फ़ | नहीं तुम पैरवी करते |

الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ⑨ تَبٰرَكَ الَّذِيْٓ ع ١ ١٦

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जो | बड़ी बरकत वाला | 9 | रास्ता (सीधा) | लिहाज़ा न पा सकते हैं | सो वह बहक गए | मिसालें (बातें) |

اِنْ شَاۗءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बहती हैं | बाग़ात | उस से | बेहतर | तुम्हारे लिए | वह बना दे | अगर चाहे |

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ وَيَجْعَلْ لَّكَ قُصُوْرًا ⑩ بَلْ كَذَّبُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने झुटलाया | बल्कि | 10 | महल (जमा) | तुम्हारे लिए | और बना दे | नहरें | जिन के नीचे |

بِالسَّاعَةِ وَاَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيْرًا ⑪

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 11 | दोज़ख़ | क़ियामत को | उस के लिए जिस ने झुटलाया | और हम ने तैयार किया | क़ियामत को |

और उन्हों ने उस के अलावा अपना लिए हैं और माबूद, वह कुछ नहीं पैदा करते बल्कि वह (खुद) पैदा किए गए हैं, और वह अपने लिए इख़्तियार नहीं रखते किसी नुक़्सान का, और न किसी नफ़ा का, और न वह इख़्तियार रखते हैं किसी मौत का और न किसी ज़िन्दगी का, और न फिर (जी) उठने का। (3)
और काफ़िरों ने कहा यह (कुछ भी) नहीं, सिर्फ़ बुहतान है, उस (नबी स) ने इसे घड़ लिया है और इस पर दूसरे लोगों ने उस की मदद की है, तहक़ीक़ वह आगए (उतर आए) हैं ज़ुल्म और झूट पर। (4)
और उन्हों ने कहा कि यह पहले लोगों की कहानियाँ हैं, उस ने उन्हें लिख लिया है, पस वह उस पर पढ़ी जाती हैं (सुनाई जाती हैं) सुबह और शाम। (5)
आप (स) फ़रमा दें इस को नाज़िल किया है उस ने जो आस्मानों और ज़मीन के राज़ जानता है, बेशक वह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (6)
और उन्हों ने कहा कैसा है यह रसूल! (जो) खाना खाता है, और चलता फिरता है बाज़ारों में, उस के साथ कोई फ़रिश्ता क्यों न उतारा गया कि वह उस के साथ डराने वाला होता। (7)
या उस की तरफ़ उतारा जाता कोई ख़ज़ाना, या उस के लिए कोई बाग़ होता कि वह उस से खाता, और ज़ालिमों ने कहा तुम पैरवी करते हो सिर्फ़ जादू के मारे हुए आदमी की। (8)
ऐ नबी (स)! देखो तो उन्हों ने तुम्हारे लिए कैसी बातें बयान की हैं, सो वह बहक गए हैं, लिहाज़ा वह कोई रास्ता नहीं पा सकते। (9)
बड़ी बरकत वाला है वह, अगर वह (अल्लाह) चाहे तो तुम्हारे लिए उस से बेहतर बना दे, (ऐसे) बाग़ात जिन के नीचे नहरें बहती हों, और तुम्हारे लिए महल बना दे। (10)
बल्कि उन्हों ने झुटलाया क़ियामत को, और जिस ने क़ियामत को झुटलाया हम ने उस के लिए दोज़ख़ तैयार किया है। (11)

जब वह (दोज़ख़) उन्हें देखेगी दूर जगह से, वह उसे जोश मारता, चिंघाड़ता सुनेंगे। (12)
और जब वह उस (दोज़ख़) की किसी तगं जगह में डाले जाएंगे (बाहम ज़न्जीरों से) जकड़े हुए, तो वह वहां मौत को पुकारेंगे। (13)
(कहा जाएगा) आज एक मौत को न पुकारो, बल्कि तुम पुकारो बहुत सी मौतों को। (14)
आप (स) फ़रमां दें क्या यह बेहतर है या हमेशगी के बाग़, जिन का वादा परहेजगारों से किया गया है, वह उन के लिए जजा और लौट कर जाने की जगह है। (15)
उस में उन के लिए जो वह चाहेंगे (मौजूद होगा), हमेशा रहेंगे, यह एक वादा है तेरे रब के ज़िम्मे वाजिबुल अदा। (16)
और जिस दिन वह उन्हें जमा करेगा और जिन की वह परस्तिश करते हैं अल्लाह के सिवा, तो वह कहेगा क्या तुम ने मेरे इन बन्दों को गुमराह किया? या वह खुद रास्ते से भटक गए? (17)
वह कहेंगे तू पाक है, हमारे लिए सज़ावार न था कि हम बनाते तेरे सिवा औरों को मददगार, लेकिन तू ने इन्हें और इन के बाप दादा को आसूदगी दी यहां तक कि वह तेरी याद भूल गए, और वह थे हलाक होने वाले लोग। (18)
पस उन्हों (तुम्हारे माबूद) ने तुम्हारी बात झुटला दी, पस अब न तुम (अज़ाब) फेर सकते हो और न अपनी मदद कर सकते हो, और जो तुम में से ज़ुल्म करेगा, हम उसे बड़ा अज़ाब चखाएंगे। (19)
और हम ने तुम से पहले रसूल नहीं भेजे मगर यक़ीनन वह खाते थे खाना, और बाज़ारों में चलते फिरते थे, और हम ने तुम में से बाज़ को बनाया दूसरों के लिए आज़माइश, क्या तुम सब्र करोगे? और तुम्हारा रब देखने वाला है। (20)

اِذَا رَاَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا وَّزَفِيْرًا ﴿١٢﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12 | और चिंघाड़ती | जोश मारती | उसे | वह सुनेंगे | दूर | जगह | से | वह देखेगी उन्हें | जब |

وَاِذَآ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वहां | वह पुकारेंगे | जकड़े हुए | तंग | किसी जगह | उस से - की | वह डाले जाएंगे | और जब |

ثُبُوْرًا ﴿١٣﴾ لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوْرًا وَّاحِدًا وَّادْعُوْا ثُبُوْرًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मौतें | बल्कि पुकारो | एक | मौत को | आज | तुम न पुकारो | 13 | मौत |

كَثِيْرًا ﴿١٤﴾ قُلْ اَذٰلِكَ خَيْرٌ اَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِيْ وُعِدَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वादा किया गया | जो-जिस | हमेशगी के बाग़ | या | बेहतर | क्या यह | फ़रमा दें | 14 | बहुत सी |

الْمُتَّقُوْنَ ۭ كَانَتْ لَهُمْ جَزَآءً وَّمَصِيْرًا ﴿١٥﴾ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो वह चाहेंगे | उस में | उन के लिए | 15 | लौट कर जाने की जगह | जज़ा (बदला) | उन के लिए | वह है | परहेज़गार (जमा) |

خٰلِدِيْنَ ۭ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْـُٔوْلًا ﴿١٦﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह उन्हें जमा करेगा | और जिस दिन | 16 | जिम्मेदाराना | एक वादा | तुम्हारे रब के जिम्मे | है | हमेशा रहेंगे |

وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَقُوْلُ ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम ने गुमराह किया | क्या तुम | तो वह कहेगा | अल्लाह के सिवा | से | वह परस्तिश करते हैं | और जिन्हें |

عِبَادِيْ هٰٓؤُلَآءِ اَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَ ﴿١٧﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तू पाक है | वह कहेंगे | 17 | रास्ता | भटक गए | या वह | यह है-उन | मेरे बन्दे |

مَا كَانَ يَنْۢبَغِيْ لَنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ اَوْلِيَآءَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मददगार | कोई | तेरे सिवा | हम बनाएं | कि | हमारे लिए | सज़ावार-लाइक़ | न था |

وَلٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى نَسُوا الذِّكْرَ ۚ وَكَانُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह थे | याद | वह भूल गए | यहां तक कि | और उन के बाप दादा | तू ने आसूदगी दी उन्हें | और लेकिन |

قَوْمًۢا بُوْرًا ﴿١٨﴾ فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ بِمَا تَقُوْلُوْنَ ۙ فَمَا تَسْتَطِيْعُوْنَ صَرْفًا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| फेरना | पस अब तुम नहीं कर सकते हो | वह जो तुम कहते थे (तुम्हारी बात) | पस उन्हों ने तुम्हें झुटला दिया | 18 | हलाक होने वाले लोग |

وَّلَا نَصْرًا ۚ وَمَنْ يَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيْرًا ﴿١٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 19 | बड़ा | अज़ाब | हम चखाएंगे उसे | तुम में से | वह ज़ुल्म करेगा | और जो | और न मदद करना |

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता खाते थे | वह यक़ीनन | मगर | रसूल (जमा) | से | तुम से पहले | भेजे हम ने | और नहीं |

الطَّعَامَ وَيَمْشُوْنَ فِي الْاَسْوَاقِ ۭ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तुम में से बाज़ को (किसी को) | और हम ने किया (बनाया) | बाज़ारों में | और चलते फिरते थे | खाना |

لِبَعْضٍ فِتْنَةً ۭ اَتَصْبِرُوْنَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيْرًا ﴿٢٠﴾ ع ٢ ١ ١٢

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | देखने वाला | तुम्हारा रब | और है | क्या तुम सब्र करोगे | आज़माइश | बाज़ (दूसरों के लिए) |

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हम पर | उतारे गए | क्यों न | हम से मिलना | वह उम्मीद नहीं रखते | वह लोग जो | और कहा |

الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ نَرٰى رَبَّنَا ۭ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने सरकशी की | अपने दिलों में | तहक़ीक़ उन्हों ने तकब्बुर किया | अपना रब | या हम देख लेते | फ़रिश्ते |

عُتُوًّا كَبِيْرًا ﴿٢١﴾ يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुजरिमों के लिए | उस दिन | नहीं ख़ुशख़बरी | फ़रिश्ते | वह देखेंगे | जिस दिन | 21 | बड़ी सरकशी |

وَيَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿٢٢﴾ وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई काम | जो उन्हों ने किए | तरफ़ | और हम आए (मुतवजजुह होंगे) | 22 | रोकी हुई | कोई आड़ हो | और वह कहेंगे |

فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ﴿٢٣﴾ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ठिकाना | बहुत अच्छा | उस दिन | जन्नत वाले | 23 | बिखरा हुआ (परागन्दा) | गुबार | तो हम करदेंगे उन्हें |

وَّاَحْسَنُ مَقِيْلًا ﴿٢٤﴾ وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़रिश्ते | और उतारे जाएंगे | बादल से | आस्मान | फट जाएगा | और जिस दिन | 24 | आराम गाह | और बेहतरीन |

تَنْزِيْلًا ﴿٢٥﴾ اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ ۨالْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ۭ وَكَانَ يَوْمًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह दिन | और है-होगा | रहमान के लिए | सच्ची | उस दिन | बादशाहत | 25 | बकसरत उतरना |

عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ﴿٢٦﴾ وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ يَقُوْلُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह कहेगा | अपने हाथों को | ज़ालिम | काट खाएगा | और जिस दिन | 26 | सख़्त | काफ़िरों पर |

يٰلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ﴿٢٧﴾ يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِيْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| काश मैं | हाए मेरी शामत | 27 | रास्ता | रसूल के साथ | पकड़ लेता | ऐ काश! मैं |

لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ﴿٢٨﴾ لَقَدْ اَضَلَّنِيْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِيْ ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरे पास पहुँच गई | उस के बाद जब | नसीहत से | अलबत्ता उस ने मुझे बहकाया | 28 | दोस्त | फ़लां को | न बनाता |

وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ﴿٢٩﴾ وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | ऐ मेरे रब | रसूल (स) | और कहेगा | 29 | खुला छोड़ जाने वाला | इन्सान को | शैतान | और है |

قَوْمِي اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ﴿٣٠﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हर नबी के लिए | हम ने बनाए | और इसी तरह | 30 | मतरूक (छोड़ने के क़ाबिल) | इस क़ुरआन को | ठहरा लिया उन्हों ने | मेरी क़ौम |

عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ۭ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ﴿٣١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 31 | और मददगार | हिदायत करने वाला | तुम्हारा रब | और काफ़ी है | गुनाहगारों (मुजरिमीन) | से | दुश्मन |

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| एक ही बार | क़ुरआन | उस पर | नाज़िल किया गया | क्यों न | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | और कहा |

ع ٧ ١٢ كَذٰلِكَ ۚ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا ﴿٣٢﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 32 | ठहर ठहर कर | और हम ने उस को पढ़ा | तुम्हारा दिल | उस से | ताकि हम क़वी करें | इसी तरह |

और जो लोग हम से मिलने की उम्मीद नहीं रखते, उन्हों ने कहा कि हम पर फ़रिश्ते क्यों न उतारे गए? या हम अपने रब को देख लेते, तहक़ीक़ उन्हों ने अपने दिलों में (अपने आप को) बड़ा समझा, और बड़ी सरकशी की। (21)

जिस दिन वह देखेंगे फ़रिश्तों को उस दिन मुजरिमों के लिए कोई ख़ुशख़बरी नहीं होगी और वह कहेंगे कोई आड़ (पनाह) हो, रोकी हुई। (22)

और हम मुतवजजुह होंगे उन के किए हुए कामों की तरफ़ तो हम उन्हें परागन्दा ग़ुबार की तरह करदेंगे। (23)

उस दिन जन्नत वाले बहुत अच्छे ठिकाने में और बेहतरीन आराम गाह में होंगे। (24)

और जिस दिन बादल से आस्मान फट जाएगा और फ़रिश्ते उतारे जाएंगे बकसरत। (25)

उस दिन सच्ची बादशाही रहमान (अल्लाह) के लिए है, और वह दिन काफ़िरों पर सख़्त होगा (26)

और जिस दिन ज़ालिम अपने हाथों को काट खाएगा और कहेगा ऐ काश! मैं ने रसूल के साथ रास्ता पकड़ लिया होता। (27)

हाए मेरी शामत! काश मैं फ़लां को दोस्त न बनाता। (28)

अलबत्ता उस ने मुझे ज़िक्र के मामले में बहकाया, उस के बाद जब कि वह मेरे पास पहुँच गई, और शैतान इन्सान को (ऐन वक़्त पर) तन्हा छोड़ जाने वाला है (29)

और रसूल (स) फ़रमाएगा ऐ मेरे रब! बेशक मेरी क़ौम ने इस क़ुरआन को छोड़ने के क़ाबिल ठहरा लिया (मतरूक कर रखा)। (30)

और इसी तरह हम ने हर नबी के लिए दुश्मन बनाए गुनाहगारों में से। और तुम्हारा रब काफ़ी है हिदायत करने वाला और मददगार। (31)

और काफ़िरों ने कहा क्यों न उस पर क़ुरआन एक ही बार नाज़िल किया गया? इसी तरह (हम ने बतदरीज नाज़िल किया) ताकि उस से तुम्हारा दिल मज़बूत करें और हम ने उस को पढ़ कर (सुनाया) ठहर ठहर कर। (32)

और वह तुम्हारे पास कोई बात नहीं लाते, मगर हम तुम्हें ठीक जवाब और बहतरीन वज़ाहत पहुँचा देते हैं। (33) जो लोग अपने चेहरों के बल जहन्नम की तरफ़ जमा किए जाएंगे, वही लोग हैं बदतरीन मुक़ाम में और बहुत बहके हुए रास्ते से। (34) और अलबत्ता हम ने मूसा (अ) को किताब दी और उस के साथ उस के भाई हारून (अ) को मुआविन बनाया। (35) पस हम ने कहा तुम दोनों उस क़ौम की तरफ़ जाओ जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया तो हम ने उन्हें बुरी तरह हलाक कर के तबाह कर दिया। (36) और क़ौमे नूह (अ) ने जब रसूलों को झुटलाया तो हम ने उन्हें ग़र्क़ कर दिया, और हम ने उन्हें लोगों के लिए एक निशानी (इबरत) बनाया, और हम ने ज़ालिमों के लिए तैयार किया है एक दर्दनाक अज़ाब। (37) और आद और समूद और कुएं वाले और उन के दरमियान बहुत सी नस्लें। (38) और हम ने हर एक के लिए मिसालें बयान कीं (मगर उन्हों ने नसीहत न पकड़ी) और हर एक को तबाह कर के मिटा दिया। (39) तहक़ीक़ वह आए उस (क़ौमे लूत अ की) बस्ती पर जिन पर (पत्थरों की) बुरी बारिश बरसाई गई, तो क्या वह उसे देखते नहीं रहते? बल्कि वह (दोबारा) जी उठने की उम्मीद नहीं रखते। (40) और जब वह तुम्हें देखते हैं तो वह तुम्हारा सिर्फ़ ठट्ठा उड़ाते हैं (कहते हैं) क्या यह है वह जिसे अल्लाह ने रसूल (बना कर) भेजा? (41) क़रीब था कि वह हमें हमारे माबूदों से बहका देता, अगर हम उस पर जमे न रहते, और वह जल्द जान लेंगे, जब वह अज़ाब देखेंगे, कौन है राहे (रास्त) से बदतरीन गुमराह! (42) क्या तुम ने उसे देखा? जिस ने अपनी ख़ाहिश को अपना माबूद बना लिया है, तो क्या तुम उस पर निगहबान हो जाओगे? (43) क्या तुम समझते हो कि उन में से अक्सर सुनते या अक़्ल से काम लेते हैं? वह नहीं हैं मगर चौपायों जैसे, बल्कि राहे (रास्त) से बदतरीन गुमराह हैं। (44)

وَلَا يَاْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاَحْسَنَ تَفْسِيْرًا ﴿٣٣﴾ اَلَّذِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो लोग | 33 | वज़ाहत | और बहतरीन | ठीक (जवाब) | हम पहुँचा देते हैं तुम्हें | मगर | कोई बात | और वह नहीं लाते तुम्हारे पास |

يُحْشَرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ اِلٰى جَهَنَّمَ ۙ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बहुत बहके हुए | मुक़ाम | बदतरीन | वही लोग | जहन्नम की तरफ़ | अपने मुँह | पर-बल | जमा किए जाएंगे |

سَبِيْلًا ﴿٣٤﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَهٗٓ اَخَاهُ هٰرُوْنَ ع ١٢ ٣ ١

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हारून (अ) | उस का भाई | उस के साथ | और हम ने बनाया | किताब | मूसा (अ) | और अलबत्ता हम ने दी | 34 | रास्ते से |

وَزِيْرًا ﴿٣٥﴾ فَقُلْنَا اذْهَبَآ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۭ فَدَمَّرْنٰهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो हम ने तबाह कर दिया उन्हें | हमारी आयतें | जिन्हों ने झुटलाया | क़ौम की तरफ़ | तुम दोनों जाओ | पस हम ने कहा | 35 | वज़ीर (मुआविन) |

تَدْمِيْرًا ﴿٣٦﴾ وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लोगों के लिए | और हम ने बनाया उन्हें | हम ने ग़र्क़ कर दिया उन्हें | रसूल (जमा) | जब उन्हों ने झुटलाया | और क़ौमे नूह (अ) | 36 | बुरी तरह हलाक |

اٰيَةً ۭ وَاَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣٧﴾ وَّعَادًا وَّثَمُوْدَاۡ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और समूद | और आद | 37 | दर्दनाक | एक अज़ाब | ज़ालिमों के लिए | और तैयार किया हम ने | एक निशानी |

وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًاۢ بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ﴿٣٨﴾ وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस का | हम ने बयान कीं | और हर एक को | 38 | बहुत सी | उन के दरमियान | और नस्लें | और कुएं वाले |

الْاَمْثَالَ ۡ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ﴿٣٩﴾ وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِيْٓ اُمْطِرَتْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बरसाई गई | वह जिस पर | बस्ती | पर | और तहक़ीक़ वह आए | 39 | तबाह कर के | हम ने मिटा दिया | और हर एक को | मिसालें |

مَطَرَ السَّوْءِ ۭ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वह उम्मीद नहीं रखते | बल्कि | उस को देखते | तो क्या वह न थे | बुरी बारिश |

نُشُوْرًا ﴿٤٠﴾ وَاِذَا رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ۭ اَهٰذَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या यह | तमस्ख़ुर (ठट्ठा) | मगर (सिर्फ़) | वह बनाते तुम्हें | नहीं | देखते हैं तुम्हें वह | और जब | 40 | जी उठना |

الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ﴿٤١﴾ اِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَآ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर न | हमारे माबूदों से | कि वह हमें बहका देता | क़रीब था | 41 | रसूल | भेजा अल्लाह ने | वह जिसे |

اَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۭ وَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अज़ाब | वह देखेंगे | जिस वक़्त | वह जान लेंगे | और जल्द | उस पर | हम जमे रहते |

مَنْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٤٢﴾ اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ۭ اَفَاَنْتَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो क्या तु | अपनी ख़ाहिश | अपना माबूद | जिस ने बनाया | क्या तुम ने देखा? | 42 | रास्ते से | कौन बदतरीन गुमराह |

تَكُوْنُ عَلَيْهِ وَكِيْلًا ﴿٤٣﴾ اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सुनते हैं | उन के अक्सर | कि | क्या तुम समझते हो? | 43 | निगहबान | उस पर | हो जाएगा |

اَوْ يَعْقِلُوْنَ ۭ اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٤٤﴾ ع ١٠ ٢

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 44 | राह से | बदतरीन गुमराह | बल्कि वह | चौपायों जैसे | मगर | नहीं वह | या अक़्ल से काम लेते हैं |

اَلَمْ تَرَ اِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْ شَآءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ ثُمَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर | साकिन | तो उसे बनादेता | और अगर वह चाहता | दराज़ किया साया | कैसे | अपना रब | तरफ़ | क्या तुम ने नही देखा |

جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا ﴿٤٥﴾ ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا قَبْضًا يَّسِيْرًا ﴿٤٦﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 46 | आहिस्ता आहिस्ता | खींचना | अपनी तरफ़ | हम ने समेटा उस को | फिर | 45 | एक दलील | उस पर | सूरज | हम ने बनाया |

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बनाया | राहत | और नीन्द | पर्दा | रात | तुम्हारे लिए | जिस ने बनाया | और वह |

النَّهَارَ نُشُوْرًا ﴿٤٧﴾ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आगे | खुशखबरी | भेजीं हवाएं | जिस ने | और वही | 47 | उठने का वक्त | दिन |

يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۚ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا ﴿٤٨﴾ لِّنُحْيِۦَ بِهٖ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ताकि हम जिन्दा कर दें उस से | 48 | पानी पाक | आस्मान से | और हम ने उतारा | अपनी रहमत |

بَلْدَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهٗ مِمَّا خَلَقْنَآ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِيَّ كَثِيْرًا ﴿٤٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 49 | बहुत से | और आदमी | चौपाए | हम ने पैदा किया | उस से जो | और हम पिलाएं उसे | शहर मुर्दा |

وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوْا ۖ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٥٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 50 | नाशुक्री | मगर | अक्सर लोग | पस कुबूल न किया | ताकि वह नसीहत पकड़ें | उन के दरमियान | और तहक़ीक़ हम ने उसे तक़सीम किया |

وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ﴿٥١﴾ فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| काफ़िरों | पस न कहा मानें आप (स) | 51 | एक डराने वाला | हर बस्ती | में | तो हम भेज देते | हम चाहते | और अगर |

وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ﴿٥٢﴾ وَهُوَ الَّذِيْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह | दो दर्या | मिलाया | जिस ने | और वही | 52 | बड़ा जिहाद | इस के साथ | और जिहाद करें उन से |

عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और आड़ | एक पर्दा | उन दोनों के दरमियान | और उस ने बनाया | तल्ख़ बदमज़ा | और यह | खुशगवार | शीरीं |

مَّحْجُوْرًا ﴿٥٣﴾ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नसब | फिर बनाए उस के | बशर | पानी से | पैदा किया | जिस ने | और वही | 53 | मज़बूत आड़ |

وَّصِهْرًا ۗ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا ﴿٥٤﴾ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के सिवा | और वह बन्दगी करते हैं | 54 | कुदरत वाला | तेरा रब | और है | और सुस्राल |

مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۗ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلٰى رَبِّهٖ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना रब | पर-खिलाफ़ | काफ़िर | और है | और न उन का नुक्सान कर सके | न नफ़ा पहुँचाए | जो |

ظَهِيْرًا ﴿٥٥﴾ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿٥٦﴾ قُلْ مَآ اَسْـَٔلُكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं मांगता तुम से | फरमा दें | 56 | और डराने वाला | मगर खुशखबरी देने वाला | भेजा हम ने आप को | और नही | 55 | पुश्त पनाही करने वाला |

عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِلَّا مَنْ شَآءَ اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٥٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 57 | रास्ता | अपने रब तक | कि इख़्तियार करले | जो चाहे | मगर | अजर | कोई | इस पर |

क्या तुम ने अपने रब की (कुदरत) की तरफ़ नहीं देखा, उस ने कैसे साए को दराज़ किया? और अगर वह चाहता तो उसे साकिन बना देता, फिर हम ने सूरज को उस पर एक दलील (रहनुमा) बनाया। (45)
फिर हम ने उस (साए) को समेटा अपनी तरफ़ आहिस्ता आहिस्ता खींच कर (46)
और वही है जिस ने तुम्हारे लिए रात को पर्दा, और नीन्द को राहत बनाया, और दिन को उठ (खड़े होने) का वक्त बनाया। (47)
और वही है जिस ने अपनी रहमत के आगे हवाएं खुशख़बरी (सुनाती हुई) भेजीं, और हम ने आस्मान से पानी उतारा। (48)
ताकि उस में से मुर्दा शहर को जिन्दा कर दें। और हम उस से पिलाएं (उन्हें) जो हम ने पैदा किए हैं, बहुत से चौपाए और आदमी। (49)
और तहक़ीक़ हम ने उसे उन के दरमियान तक़्सीम किया ताकि वह नसीहत पकड़ें, पस अक्सर लोगों ने कुबूल न किया मगर नाशुक्री को। (50)
और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में एक डराने वाला भेज देते। (51)
पस आप (स) काफ़िरों का कहा न मानें और इस (हुक्मे इलाही) के साथ उन से बड़ा जिहाद करें। (52)
और वही है जिस ने दो दर्याओं को मिलाया (मिला कर चलाया) यह (इस तरफ का पानी) खुशगवार शीरीं है और यह (दूसरा) तल्ख़ बदमज़ा है, और उस ने उन दोनों के दरमियान (एक गैर महसूस) पर्दा और मज़बूत आड़ बनाई। (53)
और वही है जिस ने पैदा किया पानी से बशर, फिर बनाए उस के नसब (नसबी रिश्ते) और सुस्राल, और तेरा रब कुदरत वाला है। (54)
और वह बन्दगी करते हैं अल्लाह के सिवा उस की जो उन्हें नफ़ा न पहुँचाए, और न उन का नुक्सान कर सके, और काफिर अपने रब के खिलाफ़ पुश्त पनाही करने वाला है। (55)
और हम ने आप (स) को नहीं भेजा मगर (सिर्फ़) खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला। (56)
आप (स) फ़रमा दें: मैं इस पर तुम से नहीं मांगता कोई अजर, मगर जो शख़्स चाहे अपने रब तक रास्ता इख़्तियार कर ले। (57)

और उस हमेशा रहने वाले पर भरोसा करो जिसे मौत नहीं, और उस की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान कर, और काफ़ी है वह अपने बन्दों के गुनाहों की ख़बर रखने वाला। (58) वह जिस ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को, और जो उन के दरमियान है, छः दिन में, फिर अर्श पर क़ाइम हुआ, रहम करने वाला, उस के मुतअल्लिक़ किसी बाख़बर से पूछो। (59) और जब उन से कहा जाए कि तुम रहमान को सिज्दा करो तो वह कहते हैं क्या है रहमान? क्या तू जिसे सिज्दा करने को कहे हम उसे सिज्दा करें? उस (बात) ने उन का बिदकना और बढ़ा दिया। (60) बड़ी बरकत वाला है वह जिस ने बुर्ज बनाए और उस में बनाया सूरज और रोशन चाँद। (61) और वही है जिस ने रात दिन को एक दूसरे के पीछे आने वाला बनाया, यह उस के (समझने) के लिए है जो चाहे कि नसीहत पकड़े या शुक्र गुज़ार बनना चाहे। (62) और रहमान के बन्दे वह हैं जो ज़मीन पर नरम चाल चलते हैं, और जब जाहिल उन से बात करते हैं तो वह बस (सलाम) कहते हैं। (63) और वह अपने रब के लिए रात काटते हैं (रात भर लगे रहते हैं) सिज्दा करते और क़ियाम करते। (64) और वह कहते हैं ऐ हमारे रब! हम से जहन्नम का अ़ज़ाब फेर दे, बेशक उस का अ़ज़ाब लाज़िम हो जाने वाला है (जुदा न होने वाला है)। (65) बेशक वह बुरी है ठहरने की जगह और बुरा मुक़ाम है। (66) और वह लोग कि जब ख़र्च करते हैं तो न फ़ुज़ूल ख़र्ची करते हैं, और न तंगी करते हैं (उन की रविश) उस के दरमियान एतिदाल की है। (67) और वह जो अल्लाह के साथ नहीं पुकारते दूसरा (कोई और) मा'बूद, और उस जान को क़त्ल नहीं करते जिसे (क़त्ल करना) अल्लाह ने हराम किया है, मगर जहां हक़ हो, और वह ज़िना नहीं करते, और जो यह करेगा वह बड़ी सज़ा से दोचार होगा। (68)

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ۭ وَكَفٰى بِهٖ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और काफ़ी है वह | उस की तारीफ़ के साथ | और पाकीज़गी बयान कर | जिसे मौत नही | हमेशा ज़िन्दा रहने वाले पर | और भरोसा कर |

بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا ۝٥٨ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जमीन | आस्मान (जमा) | पैदा किया | वह जिस ने | 58 | ख़बर रखने वाला | अपने बन्दों की | गुनाहों से |

وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ اَلرَّحْمٰنُ فَسْـَٔلْ

ع ٨ عدد المقامين ١٢

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो पूछो | जो रहम करने वाला | अ़र्श पर | फिर क़ाइम हुआ | छः (6) दिन | में | और जो उन दोनों के दरमियान |

بِهٖ خَبِيْرًا ۝٥٩ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ ۚ قَالُوْا وَمَا الرَّحْمٰنُ ۤ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और क्या है रहमान | वह कहते हैं | रहमान को | तुम सिज्दा करो | उन से | कहा जाए | और जब | 59 | किसी बाख़बर | उस के मुतअल्लिक़ |

اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُوْرًا ۝٦٠ تَبٰرَكَ الَّذِيْ جَعَلَ

ع ٥ ١٦ ٣ السجدة ٧

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बनाए | वह जिस ने | बड़ी बरकत वाला है | 60 | बिदकना | उस ने बढ़ा दिया उन का | जिसे तू सिज्दा करने को कहे | क्या हम सिज्दा करें |

فِى السَّمَاۗءِ بُرُوْجًا وَّجَعَلَ فِيْهَا سِرٰجًا وَّقَمَرًا مُّنِيْرًا ۝٦١

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 61 | रोशन | और चाँद | चिराग़ (सूरज) | उस में | और बनाया | बुर्ज (जमा) | आस्मानों में |

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّذَّكَّرَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कि वह नसीहत पकड़े | उस के लिए जो चाहे | एक दूसरे के पीछे आने वाला | और दिन | रात | जिस ने बनाया | और वही |

اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا ۝٦٢ وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन पर | चलते हैं | वह कि | और रहमान के बन्दे | 62 | शुक्र गुज़ार बनना | या चाहे |

هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ۝٦٣ وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रात काटते हैं | और वह जो | 63 | सलाम | कहते है वह | जाहिल (जमा) | उन से बात करते हैं | और जब | नरम चाल |

لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا ۝٦٤ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम से | फेर दे | ऐ हमारे रब | कहते है | और वह जो | 64 | और क़ियाम करते | सिज्दा करते | अपने रब के लिए |

عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۝٦٥ اِنَّهَا سَاۗءَتْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बुरी | बेशक वह | 65 | लाज़िम हो जाने वाला है | उस का अजाब | बेशक | जहन्नम का अ़ज़ाब |

مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ۝٦٦ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और न | न फ़ुज़ूल ख़र्ची करते हैं | जब वह ख़र्च करते हैं | और वह लोग जो | 66 | और (बुरा) मुक़ाम | ठहरने की जगह |

يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ۝٦٧ وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं पुकारते | और वह जो | 67 | एतिदाल | उस के दरमियान | और है | तंगी करते हैं |

مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हराम किया अल्लाह ने | जिसे | जान | और वह क़त्ल नहीं करते | दूसरा | कोई माबूद | अल्लाह के साथ |

اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ۝٦٨

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 68 | वह दो चार होगा बड़ी सज़ा | यह | करेगा | और जो | और वह ज़िना नहीं करते | मगर जहां हक़ हो |

يُّضٰعَفْ لَـهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ﴿٦٩﴾ اِلَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सिवाए | 69 | ख़्वार हो कर | उस में | और वह हमेशा रहेगा | रोज़े क़ियामत | अ़ज़ाब | उस के लिए | दोचन्द कर दिया जाएगा |

مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की बुराइयां | अल्लाह बदल देगा | पस यह लोग | नेक अ़मल | और अ़मल किए उस ने | और वह ईमान लाया | जिस ने तौबा की |

حَسَنٰتٍ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٠﴾ وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नेक | और अ़मल किए | और जिस ने तौबा की | 70 | निहायत मेह्‌रबान | बख़्शने वाला | और है अल्लाह | भलाइयों से |

فَاِنَّهٗ يَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ﴿٧١﴾ وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ ۙ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| झूट | गवाही नहीं देते | और वह लोग जो | 71 | रुजूअ़ करने का मुक़ाम | अल्लाह की तरफ़ | रुजूअ़ करता है | तो बेशक वह |

وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ﴿٧٢﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के रब के अहकाम से | जब उन्हें नसीहत की जाती है | और वह लोग जो | 72 | बुज़ुरगाना | गुज़रते हैं | बेहूदा से | वह गुज़रें | और जब |

لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا ﴿٧٣﴾ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ हमारे रब अ़ता फ़रमा हमें | कहते हैं वह | और वह लोग जो | 73 | और अंधों की तरह | बहरों की तरह | उन पर | नहीं गिर पड़ते |

مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ﴿٧٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 74 | इमाम (पेश्‌वा) | परहेज़गारों का | और बना दे हमें | ठंडक आँखों की | और हमारी औलाद | हमारी बीवियां | से |

اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ﴿٧٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 75 | और सलाम | दुआ़ए ख़ैर | और पेश्‌वाई किए जाएंगे उस में | उन के सब्र की बदौलत | बाला ख़ाने | इन्‌आ़म दिए जाएंगे | यह लोग |

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿٧٦﴾ قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारी | परवाह नहीं रखता | फ़रमा दें | 76 | और मस्‌कन | आरामगाह | अच्छी है | उस में | वह हमेशा रहेंगे |

رَبِّيْ لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ ۚ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ﴿٧٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 77 | लाज़मी | होगी | पस अनक़रीब | झुटलाया तुम ने | अगर न पुकारो तुम | मेरा रब |

آيَاتُهَا ٢٢٧ ❀ (٢٦) سُوْرَةُ الشُّعَرَآءِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١١

रुकूआ़त 11 — (26) सूरतुश शुअ़रा शायर (जमा) — आयात 227

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्‌रबान, रह्‌म करने वाला है

طٰسٓمّٓ ﴿١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हलाक कर लोगे | शायद तुम | 2 | रोशन किताब | आयतें | यह | 1 | ता सीन मीम |

نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٣﴾ اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | हम उतार दें | अगर हम चाहें | 3 | ईमान लाते | कि वह नहीं | अपने तईं |

مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِيْنَ ﴿٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | पस्त | उस के आगे | उन की गर्दनें | तो हो जाएं | कोई निशानी | आस्मान से |

रोज़े क़ियामत उस के लिए अ़ज़ाब दोचन्द कर दिया जाएगा, और वह उस में हमेशा रहेगा, ख़्वार हो कर। (69)
सिवाए उस के जिस ने तौबा की, और वह ईमान लाया, और उस ने नेक अ़मल किए, पस अल्लाह उन लोगों की बुराइयां बदल देगा भलाइयों से, और अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेह्‌रबान है। (70)
और जिस ने तौबा की और नेक अ़मल किए तो बेशक वह रुजूअ़ करता है अल्लाह की तरफ़ (जैसे) रुजूअ़ करने का मुक़ाम (हक़) है। (71)
और वह लोग जो झूट की गवाही नहीं देते और जब बेहूदा चीज़ों के पास से गुज़रें तो गुज़रते हैं बुज़ुर्गाना (सन्‌जीदगी के अन्दाज़ से)। (72)
और वह लोग कि जब उन्हें उन के रब के अहकाम से नसीहत की जाती है तो वह उन पर नहीं गिर पड़ते बहरों और अंधों की तरह। (73)
और वह लोग जो वह कहते हैं ऐ हमारे रब! हमें हमारी बीवियों और हमारी औलाद से आँखों की ठंडक अ़ता फ़रमा, और हमें बनादे परहेज़गारों का पेश्‌वा। (74)
उन लोगों को उन के सब्र की बदौलत (जन्नत के) बाला ख़ाने इन्‌आ़म दिए जाएंगे और वह उस में दुआ़ए ख़ैर और सलाम से पेश्‌वाई किए जाएंगे। (75)
वह उस में हमेशा रहेंगे, (क्या ही) अच्छी है आरामगाह और अच्छा मस्‌कन। (76)
आप (स) फ़रमा दें अगर तुम उस को न पुकारो, तो मेरा रब तुम्हारी परवाह नहीं रखता, अब कि तुम ने झुटलाया, पस अ़नक़रीब (उस की सज़ा) लाज़िमी होगी। (77)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्‌रबान, रह्‌म करने वाला है
ता-सीन-मीम। (1)
यह रोशन किताब की आयतें हैं। (2)
शायद आप (स) (उन के ग़म में) अपने तईं हलाक कर लेंगे कि वह ईमान नहीं लाते। (3)
अगर हम चाहें तो उन पर आस्मान से कोई निशानी उतार दें, तो उस के आगे उन की गर्दनें पस्त हो जाएं। (4)

और उन के पास रहमान की तरफ़ से कोई नई नसीहत नहीं आती मगर वह उस से रूगर्दान हो जाते हैं। (5)
पस बेशक उन्हों ने झुटलाया तो जल्द उन के पास उस की खबरें आएंगी (हक़ीक़त मालूम हो जाएगी) जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते हैं। (6)
क्या उन्हों ने ज़मीन की तरफ नहीं देखा? कि हम ने उस में किस क़द्र उम्दा उम्दा हर क़िस्म की चीजें जोड़ा जोड़ा उगाई हैं। (7)
बेशक उस में अलबत्ता निशानी है, और उन में अक्सर नहीं हैं ईमान लाने वाले। (8)
और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता ग़ालिब है, निहायत मेहरबान। (9)
और (याद करो) जब तुम्हारे रब ने मूसा (अ) को फ़रमाया कि ज़ालिम लोगों के पास जाओ। (10)
(यानी) क़ौमे फ़िरऔन के पास, क्या वह मुझ से नहीं डरते? (11)
उस ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक मैं डरता हूँ (मुझे अन्देशह है) कि वह मुझे झुटलाएंगे। (12)
और मेरा दिल तंग होता है, और मेरी जबान (खूब) नहीं चलती, पस हारून (अ) की तरफ़ पैगाम भेज। (13)
और उन का मुझ पर एक इल्ज़ाम (भी) है, पस मुझे डर है कि वह मुझे क़त्ल न कर दें। (14)
फ़रमाया हरगिज़ नहीं, तुम दोनों हमारी निशानियों के साथ जाओ, बेशक हम तुम्हारे साथ हैं सुनने वाले। (15)
पस तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ तो उसे कहो कि बेशक हम तमाम जहानों के रब के रसूल हैं। (16)
कि तू भेज दे हमारे साथ बनी इस्राईल को। (17)
फ़िरऔन ने कहा क्या हम ने तुझे बचपन में नहीं पाला? और तू हमारे दरमियान रहा अपनी उम्र के कई बरस। (18)
और तू ने वह काम किया जो तू ने किया (एक क़िबती का क़त्ल हो गया) और तू नाशुक्रों में से है। (19)
मूसा (अ) ने कहा मैं ने वह किया था जब मैं राह से बेख़बरों में से था। (20)
जब मैं तुम से ड़रा तो मैं तुम से भाग गया, पस मेरे रब ने मुझे हुक्म अ़ता किया (नबूव्वत दी) और मुझे रसूलों में से बनाया। (21)
और यह नेमत जिस का तू मुझ पर एहसान रखता है? कि तू ने बनी इस्राईल को ग़ुलाम बनाया। (22)
फ़िरऔन ने कहा, और क्या है सारे जहान का रब! (23)

وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ مُحْدَثٍ اِلَّا كَانُوْا عَنْهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से | हो जाते है वह | मगर | नई | रहमान | (तरफ़) से | कोई नसीहत | और नही आती उन के पास |

مُعْرِضِيْنَ ﴿٥﴾ فَقَدْ كَذَّبُوْا فَسَيَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस का | जो वह थे | ख़बरें | तो जल्द आएंगी उन के पास | पस बेशक उन्हों ने झुटलाया | 5 | रूगरदान |

يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٦﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الْاَرْضِ كَمْ اَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हर किस्म | उस में | उगाई हम ने | किस कद्र | जमीन की तरफ | क्या उन्हों ने नही देखा? | 6 | मजाक़ उड़ाते |

زَوْجٍ كَرِيْمٍ ﴿٧﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۚ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٨﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | ईमान लाने वाले | उन में अक्सर | और नही है | अलबत्ता निशानी | उस में | बेशक | 7 | उम्दा | जोड़ा जोड़ा |

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٩﴾ وَاِذْ نَادٰى رَبُّكَ مُوْسٰٓى اَنِ ائْتِ ع ٩ ٥

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि तू जा | मूसा (अ) | तुम्हारा रब | पुकारा (फ़रमाया) | और जब | 9 | रह्म करने वाला | ग़ालिब | अलबत्ता वह | तुम्हारा रब | और बेशक |

الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠﴾ قَوْمَ فِرْعَوْنَ ۚ اَلَا يَتَّقُوْنَ ﴿١١﴾ قَالَ رَبِّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ मेरे रब | उस ने कहा | 11 | क्या वह मुझ से नही डरते | कौमे फ़िरऔन | 10 | ज़ालिम लोग |

اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ﴿١٢﴾ وَيَضِيْقُ صَدْرِيْ وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِيْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरी जबान | और नही चलती | मेरा सीना (दिल) | और तंग होता है | 12 | वह मुझे झुटलाएंगे | कि | बेशक मैं डरता हूँ |

فَاَرْسِلْ اِلٰى هٰرُوْنَ ﴿١٣﴾ وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنْۢبٌ فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ﴿١٤﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 14 | कि वह मुझे क़त्ल (न) कर दें | पस मैं डरता हूँ | एक इल्ज़ाम | मुझ पर | और उनका | 13 | हारून | तरफ़ | पस पैग़ाम भेज |

قَالَ كَلَّا ۚ فَاذْهَبَا بِاٰيٰتِنَآ اِنَّا مَعَكُمْ مُّسْتَمِعُوْنَ ﴿١٥﴾ فَاْتِيَا فِرْعَوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़िरऔन | पस तुम दोनों जाओ | 15 | सुनने वाले | तुम्हारे साथ | बेशक हम | पस तुम दोनों जाओ हमारी निशानियों के साथ | हरगिज़ नहीं | फ़रमाया |

فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾ اَنْ اَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 17 | बनी इस्राईल | हमारे साथ | तू भेज दे | कि | 16 | तमाम जहानों का रब | बेशक हम रसूल | तो उसे कहो |

قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ فِيْنَا وَلِيْدًا وَّلَبِثْتَ فِيْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِيْنَ ﴿١٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | कई बरस | अपनी उम्र के | हमारे दरमियान | और तू रहा | बचपन में | अपने दरमियान | क्या हम ने तुझे नही पाला | फ़िरऔन ने कहा |

وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِيْ فَعَلْتَ وَاَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩﴾ قَالَ فَعَلْتُهَآ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मैं ने वह किया था | मूसा (अ) ने कहा | 19 | नाशुक्रे | से | और तू | जो तू ने किया | अपना (वह) काम | और तू ने किया |

اِذًا وَّاَنَا مِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿٢٠﴾ فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِيْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस अता किया मुझे | जब मैं डरा तुम से | तुम से | तो मैं भाग गया | 20 | राह से बेख़बर (जमा) | से | और मैं | जब |

رَبِّيْ حُكْمًا وَّجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢١﴾ وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तू उस का एहसान रखता है मुझ पर | नेमत | और यह | 21 | रसूल (जमा) | से | और मुझे बनाया | हुक्म | मेरा रब |

اَنْ عَبَّدْتَّ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٢٢﴾ قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٣﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 23 | सारे जहान | रब | और क्या है | फ़िरऔन ने कहा | 22 | बनी इस्राईल | कि तू ने ग़ुलाम बनाया |

قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿٢٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 24 | यक़ीन करने वाले | तुम हो | अगर | और जो उन के दरमियान | और ज़मीन | रब है आस्मानों का | उस ने कहा |

قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗۤ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ﴿٢٥﴾ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे बाप दादा | और रब | तुम्हारा रब | (मूसा अ) ने कहा | 25 | क्या तुम सुनते नही | उस के इर्द गिर्द | उन्हें जो | उस से कहा |

الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٦﴾ قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْۤ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٢٧﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 27 | अलबत्ता दीवाना | तुम्हारी तरफ़ | भेजा गया | वह जो | तुम्हारा रसूल | बेशक | फ़िरऔन बोला | 26 | पहले |

قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 28 | तुम समझते हो | अगर | उन दोनों के दरमियान | और जो | और मग्रिब | मश्रिक | रब | मूसा (अ) ने कहा |

قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَيْرِيْ لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ﴿٢٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 29 | क़ैदी (जमा) | से | तो मैं ज़रूर करदूँगा तुझे | मेरे सिवा | कोई माबूद | तू ने बनाया | अलबत्ता अगर | वह बोला |

قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٠﴾ قَالَ فَاْتِ بِهٖۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | अगर तू है | तू ले आ उसे | वह बोला | 30 | वाज़ेह | एक शै (मोजिज़ा) | अगरचे मैं लाऊँ तेरे पास | (मूसा अ) ने कहा |

الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣١﴾ فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿٣٢﴾ وَّنَزَعَ يَدَهٗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना हाथ | और उस ने खींचा (निकाला) | 32 | खुला (नुमायां) | अज़्दहा | तो अचानक वह | अपना असा | पस मूसा (अ) ने डाला | 31 | सच्चे |

ع ٢ ٢٣ ٦

فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿٣٣﴾ قَالَ لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗۤ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जादूगर | बेशक यह | अपने गिर्द | सरदारों से | फ़िरऔन ने कहा | 33 | देखने वालों के लिए | चमकता हुआ | तो यकायक वह |

عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهٖ ۖ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿٣٥﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 35 | तो क्या तुम हुक्म (मश्वरा) देते हो | अपने जादू से | तुम्हारी सर ज़मीन | से | तुम्हें निकाल दे | कि | यह चाहता है | 34 | दाना, माहिर |

قَالُوْۤا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَابْعَثْ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿٣٦﴾ يَاْتُوْكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ले आएं तेरे पास | 36 | इकटठा करने वाले (नक़ीब) | शहरों | में | और भेज | और उस के भाई को | मोहलत दे उसे | वह बोले |

بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ ﴿٣٧﴾ فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٣٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 38 | जाने पहचाने (मुअय्यन) | एक दिन | मुकर्ररा वक्त पर | जादूगर | पस जमा किए गए | 37 | माहिर | तमाम बड़े जादूगर |

وَّقِيْلَ لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَ ﴿٣٩﴾ لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ اِنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर | जादूगर (जमा) | पैरवी करें | ताकि हम | 39 | जमा होने वाले हो (जमा होगे) | तुम | क्या | लोगों से | और कहा गया |

كَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤٠﴾ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالُوْا لِفِرْعَوْنَ اَئِنَّ لَنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या यक़ीनन हमारे लिए | फ़िरऔन से | उन्हों ने कहा | जादूगर | आए | पस जब | 40 | ग़ालिब (जमा) | हों वह |

لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤١﴾ قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता से | उस वक़्त | और बेशक तुम | हां | उस ने कहा | 41 | ग़ालिब (जमा) | हम | हम हुए | अगर | कुछ इन्आम |

الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٢﴾ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰۤى اَلْقُوْا مَاۤ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿٤٣﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 43 | डालने वाले | तुम | जो | तुम डालो | मूसा (अ) | उन से | कहा | 42 | मुक़र्रबीन |

मूसा (अ) ने कहाः रब है आस्मानों का और ज़मीन का, और जो उन के दरमियान है, अगर तुम यक़ीन करने वाले हो। (24)
उस ने अपने इर्द गिर्द वालों से कहा, क्या तुम सुनते नहीं। (25)
मूसा (अ) ने कहाः रब है तुम्हारा और रब है तुम्हारे पहले बाप दादा का। (26)
फ़िरऔन बोला, बेशक तुम्हारा रसूल जो तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है अलबत्ता दीवाना है। (27)
मूसा (अ) ने कहाः रब है मश्रिक़ का और मग्रिब का, और जो उन दोनों के दरमियान है, अगर तुम समझते हो। (28)
वह बोला, अलबत्ता अगर तू ने कोई और माबूद बनाया मेरे सिवा, तो मैं जरूर तुझे क़ैद करदूँगा। (29)
मूसा (अ) ने कहा अगरचे मैं तेरे पास एक वाज़ेह मोजिज़ा लाऊँ? (30)
वह बोला तू उसे ले आ अगर तू सच्चों में से है (सच्चा है)। (31)
पस मूसा (अ) ने अपना असा डाला तो वह अचानक नुमायां अज़्दहा बन गया। (32)
और उस ने अपना हाथ (गरेबान से) निकाला तो नागाह वह देखने वालों के लिए चमकता दिखाई देने लगा। (33)
फ़िरऔन ने अपने इर्द गिर्द के सरदारों से कहा बेशक यह माहिर जादूगर है। (34)
वह चाहता है कि तुम्हें अपने जादू (के ज़ोर) से तुम्हारी सर जमीन से निकाल दे तो तुम क्या मशवरा देते हो? (35)
वह बोले उसे और उस के भाई को मोहलत दे, और शह्रों में नक़ीब भेज। (36)
कि तेरे पास तमाम बड़े माहिर जादूगर ले आएं। (37)
पस जादूगर जमा हो गए, एक मुअय्यन दिन, वक़्त मुक़र्रा पर। (38)
और लोगों से कहा गया क्या तुम जमा होगे? (39)
ताकि हम पैरवी करें जादूगरों की, अगर वह ग़ालिब हूँ। (40)
जब जादूगर आए तो उन्हों ने फ़िरऔन से कहा क्या हमारे लिए यक़ीनी तौर पर कुछ इन्आम होगा? अगर हम ग़ालिब आए। (41)
उस ने कहा हां! तुम उस वक़्त बेशक (मेरे) मुक़र्रबीन में से होगे। (42)
कहा मूसा (अ) ने उन से (अपना दाओ) डालो जो तुम डालने वाले हो। (43)

पस उन्हों ने अपनी रस्सियां और लाठियां डालीं, और वह बोले कि बेशक फ़िरअ़ौन के इक्बाल से हम ही गालिब आने वाले हैं। (44)
पस मूसा (अ) ने अपना असा डाला तो वह नागाह निगलने लगा जो उन्हों ने ढकोसला बनाया था। (45)
पस जादूगर सिज्दा करते हुए गिर पड़े। (46)
वह बोले कि हम ईमान लाए सारे जहानों के रब पर। (47)
(जो) रब है मूसा (अ) का और हारून (अ) का। (48)
फ़िरअ़ौन ने कहा तुम उस पर (इस से) पहले ईमान ले आए कि मैं तुम्हें इजाजत दूं, बेशक वह अलबत्ता तुम्हारा बड़ा है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया, पस तुम जल्द जान लोगे, मैं ज़रूर तुम्हारे हाथ पाऊं काट डालूंगा, दूसरी तरफ़ के (एक तरफ़ का हाथ दूसरी तरफ़ का पाऊं) और मैं जरूर तुम सब को सूली दूंगा। (49)
वह बोले कुछ हर्ज नहीं बेशक हम अपने रब की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। (50)
हम उम्मीद रखते हैं कि हमारा रब हमारी खताएं बख़्शदेगा, कि हम पहले ईमान लाने वाले हैं। (51)
और हम ने मूसा (अ) की तरफ़ वहि की कि रातों रात मेरे बन्दों को ले कर निकल, बेशक तुम पीछा किए जाओगे (तुम्हारा तआ़कुब होगा)। (52)
पस भेजा फ़िरअ़ौन ने शहरों में नकीब। (53)
बेशक यह लोग एक थोड़ी (छोटी सी) जमाअत हैं। (54)
और वह बेशक हमें गुस्से में लाने वाले (गुस्सा दिला रहे हैं)। (55)
और बेशक हम एक जमाअ़त हैं मुसल्लह, मोहतात। (56)
(इरशादे इलाही): पस हम ने उन्हें बाग़ात और चश्मों से निकाला। (57)
और ख़ज़ानों और उम्दा ठिकानों से। (58)
इसी तरह हम ने उन का वारिस बनाया बनी इस्राईल को। (59)
पस उन्हों ने सूरज निकलते (सुब्ह सवेरे) उन का पीछा किया। (60)
पस जब दोनों जमाअतों ने एक दूसरे को देखा तो मूसा (अ) के साथी कहने लगे, यकीनन हम पकड़ लिए गए। (61)
मूसा (अ) ने कहा, हरगिज नहीं, बेशक मेरा रब मेरे साथ है, वह मुझे जल्द (बच निकलने की) राह दिखाएगा। (62)
पस हम ने मूसा (अ) की तरफ़ वहि भेजी कि तू अपना असा दर्या पर मार (उन्हों ने मारा) तो दर्या फट गया, पस हर हिस्सा बड़े बड़े पहाड़ की तरह हो गया। (63)
और हम ने उस जगह दूसरों (फ़िरऔनियों) को करीब कर दिया। (64)

فَاَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوْا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ اِنَّا لَنَحْنُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक अलबत्ता हम | फ़िरऔन | इक्बाल से | और बोले वह | और अपनी लाठियां | अपनी रस्सियां | पस उन्हों ने डाले |

الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٤﴾ فَاَلْقٰى مُوْسٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِىَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿٤٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 45 | जो उन्हों ने ढकोसला बनाया | निगलने लगा | तो यकायक वह | अपना असा | मूसा (अ) | पस डाला | 44 | गालिब आने वाले |

فَاُلْقِىَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿٤٦﴾ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٧﴾ رَبِّ مُوْسٰى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मूसा (अ) | रब | 47 | सारे जहानों के रब पर | हम ईमान लाए | वह बोले | 46 | सिज्दा करते हुए | पस डाल दिए गए (गिर पड़े) जादूगर |

وَهٰرُوْنَ ﴿٤٨﴾ قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِىْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिस ने | अलबत्ता बड़ा है तुम्हारा | बेशक वह | तुम्हें | इजाजत दूं | कि मैं | पहले | तुम ईमान लाए उस पर | (फ़िरऔन) ने कहा | 48 | और हारून (अ) |

عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۚ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम्हारे पैर | तुम्हारे हाथ | अलबत्ता मैं ज़रूर काट डालूंगा | तुम जान लोगे | पस जल्द | जादू | सिखाया तुम्हें |

مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٤٩﴾ قَالُوْا لَا ضَيْرَ ۫ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने रब की तरफ़ | बेशक हम | कुछ नुक्सान (हर्ज) नहीं | वह बोले | 49 | सब को | और जरूर तुम्हें सूली दूंगा | एक दूसरे के खिलाफ़ का | से कि |

مُنْقَلِبُوْنَ ﴿٥٠﴾ اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطٰيٰنَآ اَنْ كُنَّآ اَوَّلَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पहले | कि हम हैं | हमारी खताएं | हमारा रब | हमें | बख़्शदे | कि | बेशक हम उम्मीद रखते हैं | 50 | लौट कर जाने वाले हैं |

الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥١﴾ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِىْٓ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿٥٢﴾ ع ١٨ ٣

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 52 | पीछा किए जाओगे | बेशक तुम | मेरे बन्दों को | कि तू रातों रात ले निकल | मूसा (अ) | तरफ़ | और हम ने वहि की | 51 | ईमान लाने वाले |

فَاَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿٥٣﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَشِرْذِمَةٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक जमाअत | यह लोग हैं | बेशक | 53 | इकटठा करने वाले (नकीब) | शहरों में | फ़िरऔन | पस भेजा |

قَلِيْلُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَاِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَاِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ﴿٥٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 56 | मुसल्लह माहतात | एक जमाअत | और बेशक हम | 55 | गुस्से में लाने वाले | हमें | और बेशक वह | 54 | थोड़ी सी |

فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٥٧﴾ وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿٥٨﴾ كَذٰلِكَ ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उसी तरह | 58 | उम्दा | और ठिकाने | और खजाने | 57 | और चश्मे | बाग़ात | से | पस हम ने उन्हें निकाला |

وَاَوْرَثْنٰهَا بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٥٩﴾ فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا تَرَآءَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| देखा एक दूसरे को | पस जब | 60 | सूरज निकलते | पस उन्हों ने पीछा किया उन का | 59 | बनी इस्राईल | और हम ने वारिस बनाया उन का |

الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰٓى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ﴿٦١﴾ قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِىَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरे साथ | बेशक | उस ने कहा हरगिज नहीं | 61 | पकड़ लिए गए | यकीनन हम | मूसा (अ) के साथी | कहा (कहने लगे) | दोनों जमाअतें |

رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٦٢﴾ فَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ۚ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दर्या | अपना असा | तू मार | कि | मूसा (अ) | तरफ | पस हम ने वहि भेजी | 62 | वह जल्द मुझे राह दिखाएगा | मेरा रब |

فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ ﴿٦٣﴾ وَاَزْلَفْنَا ثَمَّ الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٤﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 64 | दूसरों को | उस जगह | फिर हम ने करीब कर दिया | 63 | बड़े | पहाड़ की तरह | हर हिस्सा | पस हो गया | तो वह फट गया |

وَاَنْجَيْنَا مُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ﴿٦٥﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 66 | दूसरों को | हम ने गर्क़ कर दिया | फिर | 65 | सब | उस के साथ | और जो | मूसा (अ) | और हम ने बचा लिया |

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٦٧﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारा रब | और बेशक | 67 | ईमान लाने वाले | उन से अक्सर | थे | और न | अलबत्ता निशानी | उस में | बेशक |

ع ١٤ ٨ وقف لازم

لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٦٨﴾ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने बाप को | उस ने कहा | जब | 69 | इब्राहीम (अ) | ख़बर वाक़िआ | उन पर उन्हें | और आप पढ़ें | 68 | निहायत मेह्रबान | ग़ालिब | अलबत्ता वह |

وَقَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٠﴾ قَالُوْا نَعْبُدُ اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِيْنَ ﴿٧١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 71 | जमे हुए | पस हम बैठे रहते हैं उन के पास | बुतों की | हम परस्तिश करते हैं | उन्हों ने कहा | 70 | तुम परस्तिश करते हो | क्या किस | और अपनी क़ौम |

قَالَ هَلْ يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ تَدْعُوْنَ ﴿٧٢﴾ اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ اَوْ يَضُرُّوْنَ ﴿٧٣﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 73 | या वह नुक़्सान पहुँचाते हैं | या वह नफ़ा पहुँचाते हैं तुम्हें | 72 | तुम पुकारते हो | जब | वह सुनते हैं तुम्हारी | क्या | उस ने कहा |

قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَاۤ اٰبَآءَنَا كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किस | क्या पस तुम ने देखा | इब्राहीम (अ) ने कहा | 74 | वह करते | इसी तरह | अपने बाप दादा | हम ने पाया | बल्कि | वह बोले |

كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٥﴾ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمُ الْاَقْدَمُوْنَ ﴿٧٦﴾ فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيْۤ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरे दुश्मन | तो बेशक वह | 76 | पहले | और तुम्हारे बाप दादा | तुम | 75 | तुम परस्तिश करते हो |

اِلَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٧﴾ الَّذِيْ خَلَقَنِيْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ ﴿٧٨﴾ وَالَّذِيْ هُوَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह | और वह जो | 78 | मुझे राह दिखाता है | पस वह | मुझे पैदा किया | वह जिस ने | 77 | सारे जहानों का रब | मगर |

يُطْعِمُنِيْ وَيَسْقِيْنِ ﴿٧٩﴾ وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ﴿٨٠﴾ وَالَّذِيْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह जो | 80 | मुझे शिफ़ा देता है | तो वह | मैं बीमार होता हूँ | और जब | 79 | और मुझे पिलाता है | मुझे खिलाता है |

يُمِيْتُنِيْ ثُمَّ يُحْيِيْنِ ﴿٨١﴾ وَالَّذِيْۤ اَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لِيْ خَطِيْٓـَٔتِيْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरी ख़ताएं | कि मुझे बख़्श देगा | मैं उम्मीद रखता हूँ | और वह जिस से | 81 | मुझे ज़िन्दा करेगा | फिर | मौत देगा |

يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٨٢﴾ رَبِّ هَبْ لِيْ حُكْمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 83 | नेक बन्दों के साथ | और मुझे मिलादे | हुक्म हिक्मत | मुझे अ़ता कर | ऐ मेरे रब | 82 | बदले के दिन |

وَاجْعَلْ لِّيْ لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿٨٤﴾ وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वारिसों में से | और तू मुझे बना दे | 84 | बाद में आने वालों में | अच्छा ख़ैर | मेरे लिए मेरा ज़िक्र | और कर |

جَنَّةِ النَّعِيْمِ ﴿٨٥﴾ وَاغْفِرْ لِاَبِيْۤ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿٨٦﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 86 | गुमराह (जमा) | से | वह है | बेशक वह | मेरे बाप को | और बख़्शदे | 85 | नेमतों वाली | जन्नत |

وَلَا تُخْزِنِيْ يَوْمَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٨٧﴾ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ﴿٨٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 88 | बेटे | और न | माल | न काम आएगा | जिस दिन | 87 | जिस दिन सब उठाए जाएंगे | और मुझे रुस्वा न करना |

اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٩﴾ وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٩٠﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 90 | परहेज़गारों के लिए | जन्नत | और नज़्दीक कर दी जाएगी | 89 | पाक | दिल | अल्लाह के पास आया | जो | मगर |

और हम ने मूसा (अ) को और जो उन के साथ थे सब को बचा लिया। (65) फिर हम ने दूसरों को गर्क़ कर दिया। (66) बेशक उस में अलबत्ता एक निशानी है, और उन में से अक्सर ईमान लाने वाले न थे। (67) और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता ग़ालिब, निहायत मेह्रबान है। (68) और आप (स) उन्हें इब्राहीम (अ) का वाक़िआ पढ़ कर (सुनाएं)। (69) जब उन्हों ने कहा अपने बाप और अपनी क़ौम को, तुम किस की परस्तिश करते हो? (70) उन्हों ने कहा बुतों की परस्तिश करते हैं, पस हम उन के पास जमे बैठे रहते हैं। (71) उस ने कहा क्या वह तुम्हारी सुनते हैं जब तुम पुकारते हो? (72) या वह तुम्हें नफ़ा पहुँचाते हैं? या नुक़्सान पहुँचा सकते हैं? (73) वह बोले (नहीं तो)। बल्कि हम ने अपने बाप दादा को इसी तरह करते पाया है। (74) इब्राहीम (अ) ने कहाः पस क्या तुम ने देखा (गौर भी किया) कि तुम किस की परस्तिश करते हो? (75) और तुम्हारे पहले बाप दादा? (76) तो बेशक वह मेरे दुश्मन हैं सिवाए सारे जहानों के रब के। (77) वह जिस ने मुझे पैदा किया, पस वही मुझे राह दिखाता है। (78) और वही जो मुझे खिलाता है और वही मुझे पिलाता है। (79) और जब मैं बीमार होता हूँ तो वह मुझे शिफ़ा देता है। (80) और वह जो मुझे मौत (से हमकिनार) करेगा, फिर मुझे जिन्दा करेगा। (81) और वह जिस से मैं उम्मीद रखता हूँ कि मुझे बदले के दिन मेरी ख़ताएं बख़्श देगा। (82) ऐ मेरे रब! मुझे हुक्म और हिक्मत अ़ता फ़रमा, और मुझे नेक बन्दों के साथ मिला दे। (83) और मेरा ज़िक्रे ख़ैर (जारी) रख बाद में आने वालों में। (84) और मुझे नेमतों वाली जन्नत के वारिसों में से बना दे। (85) और मेरे बाप को बख़्शदे, बेशक वह गुमराहों में से है। (86) और मुझे उस दिन रुस्वा न करना जब सब उठाए जाएंगे। (87) जिस दिन न काम आएगा माल और न बेटे। (88) मगर जो अल्लाह के पास सलीम (बे ऐब) दिल ले कर आया। (89) और जन्नत परहेज़गारों के नज़्दीक कर दी जाएगी। (90)

और दोज़ख़ ज़ाहिर कर दी जाएगी गुमराहों के लिए। **(91)** और उन्हें कहा जाएगा कहाँ हैं वह जिन की तुम परस्तिश करते थे। **(92)** अल्लाह के सिवा क्या वह तुम्हारी मदद कर सकते हैं? या (ख़ुद) बदला ले सकते हैं? **(93)** पस वह और गुमराह उस (जहन्नम) में औन्धे मुँह डाले जाएंगे। **(94)** और इब्लीस के लशकर सब के सब। **(95)** वह कहेंगे जब कि वह जहन्नम में (बाहम) झगड़ते होंगे। **(96)** अल्लाह की क़सम! बेशक हम खुली गुमराही में थे। **(97)** जब हम तुम्हें सारे जहानों के रब के साथ बराबर ठहराते थे। **(98)** और हमें सिर्फ़ मुजरिमों ने गुमराह किया। **(99)** पस हमारा कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं। **(100)** और न कोई ग़म ख़ार दोस्त है। **(101)** पस काश हमारे लिए दोबारा (दुनिया में) लौटना होता तो हम मोमिनों में से होते। **(102)** बेशक उस में अलबत्ता एक निशानी है, और नहीं हैं उन में अक्सर ईमान लाने वाले। **(103)** और बेशक तुम्हारा रब ग़ालिब है, निहायत मेहरबान। **(104)** नूह (अ) की क़ौम ने झुटलाया रसूलों को। **(105)** (याद करो) जब उन के भाई नूह (अ) ने उन से कहा क्या तुम डरते नहीं? **(106)** बेशक मैं तुम्हारे लिए रसूल हूँ अमानतदार। **(107)** पस अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। **(108)** मैं इस पर तुम से नहीं मांगता कोई अजर, मेरा अजर तो सिर्फ़ (अल्लाह) रब्बुल आलमीन पर है। **(109)** पस अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। **(110)** वह बोले क्या हम तुझ पर ईमान ले आएं? जब कि तेरी पैरवी रज़ीलों ने की है। **(111)** नूह (अ) ने कहा मुझे क्या इल्म वह क्या (काम काज) करते थे। **(112)** उन का हिसाब सिर्फ़ मेरे रब पर है, अगर तुम समझो। **(113)** और मैं मोमिनों को (अपने पास से) दूर करने वाला नहीं। **(114)** मैं तो सिर्फ़ साफ़ साफ़ तौर पर डराने वाला हूँ। **(115)** बोले ऐ नूह (अ)! अगर तुम बाज़ न आए तो ज़रूर संगसार कर दिए जाओगे। **(116)** नूह (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक मेरी क़ौम ने मुझे झुटलाया। **(117)**

وَبُـــرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ (٩١) وَقِيْلَ لَهُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ (٩٢)

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 92 | तुम परस्तिश करते थे | कहां हैं वह जो | उन्हें | और कहा जाएगा | 91 | गुमराहों के लिए | दोज़ख़ | और ज़ाहिर कर दी जाएगी |

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ (٩٣) فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पस औन्धे मुँह डाले जाएंगे उस में | 93 | या बदला ले सकते हैं | वह तुम्हारी मदद कर सकते हैं | क्या | अल्लाह के सिवा |

هُمْ وَالْغَاوٗنَ (٩٤) وَجُنُـوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ (٩٥) قَالُوْا وَهُمْ فِـيْـهَـا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस (जहन्नम) में | और वह | वह कहेंगे | 95 | सब के सब | इब्लीस | और लशकर (जमा) | 94 | और गुमराह | वह |

يَخْتَصِمُوْنَ (٩٦) تَـــاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ (٩٧) اِذْ نُسَوِّيْكُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम बराबर ठहराते थे तुम्हें | जब | 97 | खुली | गुमराही | अलबत्ता में | बेशक हम थे | क़सम अल्लाह की | 96 | झगड़ते होंगे |

بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (٩٨) وَمَآ اَضَلَّنَآ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ (٩٩) فَمَا لَنَا مِنْ شٰفِعِيْنَ (١٠٠)

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 100 | सिफ़ारिश करने वाले | कोई | पस नहीं हमारे लिए | 99 | मुजरिम (जमा) | मगर (सिर्फ़) | और नहीं गुमराह किया हमें | 98 | सारे जहानों के रब के साथ |

وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ (١٠١) فَلَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ (١٠٢)

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 102 | मोमिन (जमा) | से | तो हम होते | लौटना | कि हमारे लिए | पस काश | 101 | ग़म ख़ार | कोई दोस्त | और न |

اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۚ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ (١٠٣) وَاِنَّ رَبَّكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारा रब | और बेशक | 103 | ईमान लाने वाले | उन के अक्सर | और नहीं है | अलबत्ता एक निशानी | उस में | बेशक |

لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ (١٠٤) كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوْحِ ِۨ الْمُرْسَلِيْنَ (١٠٥) اِذْ قَالَ لَهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन से | जब कहा | 105 | रसूलों को | नूह (अ) की क़ौम | झुटलाया | 104 | निहायत मेहरबान | ग़ालिब | अलबत्ता वह |

اَخُوْهُمْ نُوْحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ (١٠٦) اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ (١٠٧) فَاتَّقُوا اللّٰهَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस डरो अल्लाह से | 107 | रसूल अमानत दार | तुम्हारे लिए | बेशक मैं | 106 | तुम डरते | क्या नहीं | नूह (अ) | उन के भाई |

وَاَطِيْعُوْنِ (١٠٨) وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلٰى

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | मगर (सिर्फ़) | मेरा अजर | नहीं | अजर | कोई | इस पर | और मैं नहीं मांगता तुम से | 108 | और मेरी इताअत करो |

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (١٠٩) فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ (١١٠) قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब कि तेरी पैरवी की | तुझ पर | क्या हम ईमान ले आएं | वह बोले | 110 | और मेरी इताअत करो | पस डरो अल्लाह से | 109 | सारे जहां का पालने वाला |

الْاَرْذَلُوْنَ (١١١) قَالَ وَمَا عِلْمِىْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (١١٢) اِنْ حِسَابُهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन का हिसाब | नहीं | 112 | वह करते थे | उस की जो | और मुझे क्या इल्म | कहा (नूह अ) ने | 111 | रज़ीलों ने |

اِلَّا عَلٰى رَبِّىْ لَوْ تَشْعُرُوْنَ (١١٣) وَمَآ اَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِيْنَ (١١٤) اِنْ اَنَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं मैं | 114 | मोमिन (जमा) | हांकने वाला (दूर करने वाला) | मैं | और नहीं | 113 | तुम समझो | अगर | मेरे रब पर | मगर (सिर्फ़) |

اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ (١١٥) قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰنُوْحُ لَتَكُوْنَنَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो ज़रूर होगे | ऐ नूह (अ) | तुम बाज़ न आए | अगर | बोले वह | 115 | साफ़ तौर पर | डराने वाला | मगर-सिर्फ़ |

مِنَ الْمَرْجُوْمِيْنَ (١١٦) قَالَ رَبِّ اِنَّ قَوْمِىْ كَذَّبُوْنِ (١١٧)

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 117 | मुझे झुटलाया | मेरी क़ौम | बेशक | ऐ मेरे रब | (नूह अ ने) कहा | 116 | संगसार किए जाने वाले | से |

النصف

فَافْتَحْ بَيْنِىْ وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَّنَجِّنِىْ وَمَنْ مَّعِىَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٨﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 118 | ईमान वाले | से | मेरे साथी | और जो | और नजात दे मुझे | एक खुला फ़ैसला | और उन के दरमियान | मेरे दरमियान | पस फ़ैसला कर दे |

فَاَنْجَيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿١١٩﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا بَعْدُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के बाद | ग़र्क़ कर दिया हम ने | फिर | 119 | भरी हुई | कश्ती में | उस के साथ | और जो | तो हम ने नजात दी उसे |

الْبٰقِيْنَ ﴿١٢٠﴾ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٢١﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 121 | ईमान लाने वाले | उन के अक्सर | थे | और न | अलबत्ता निशानी | उस में | बेशक | 120 | बाक़ियों को |

ع ١٨ ١٠

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٢﴾ كَذَّبَتْ عَادُ ِالْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٢٣﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 123 | रसूल (जमा) | आद | झुटलाया | 122 | निहायत मेह्रबान | ग़ालिब | अलबत्ता वह | तुम्हारा रब | और बेशक |

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ هُوْدٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٢٤﴾ اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٢٥﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 125 | रसूल अमानतदार | तुम्हारे लिए | बेशक मैं | 124 | क्या तुम डरते नहीं | हूद (अ) | उन के भाई | उन से | जब कहा |

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٢٦﴾ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِىَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरा अजर | नहीं | कोई अजर | उस पर | और मैं नहीं मांगता तुम से | 126 | और मेरी इताअ़त करो | सो तुम डरो अल्लाह से |

اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢٧﴾ اَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِيْعٍ اٰيَةً تَعْبَثُوْنَ ﴿١٢٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 128 | खलल को (बिला ज़रूरत) | एक निशानी | हर बुलन्दी पर | क्या तुम तामीर करते हो | 127 | सारे जहां का पालने वाला | पर | मगर (सिर्फ़) |

وَتَتَّخِذُوْنَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ ﴿١٢٩﴾ وَاِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गिरिफ़्त करते हो तुम | तुम गिरिफ़्त करते हो | और जब | 129 | तुम हमेशा रहोगे | शायद तुम | मज़बूत शानदार महल | और तुम बनाते हो |

جَبَّارِيْنَ ﴿١٣٠﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٣١﴾ وَاتَّقُوا الَّذِىْٓ اَمَدَّكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मदद की तुम्हारी | वह जिस ने | और डरो | 131 | और मेरी इताअत करो | पस डरो अल्लाह से | 130 | जाबिर बन कर |

بِمَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٣٢﴾ اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَّبَنِيْنَ ﴿١٣٣﴾ وَجَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿١٣٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 134 | और चश्मे | और बाग़ात | 133 | और बेटों | मवेशियों से | तुम्हारी मदद की | 132 | उस से जो तुम जानते हो |

اِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٣٥﴾ قَالُوْا سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَوَعَظْتَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़ाह तुम नसीहत करो | हम पर | बराबर | वह बोले | 135 | एक बड़ा दिन | अ़ज़ाब | तुम पर | बेशक मैं डरता हूँ |

اَمْ لَمْ تَكُنْ مِّنَ الْوٰعِظِيْنَ ﴿١٣٦﴾ اِنْ هٰذَآ اِلَّا خُلُقُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣٧﴾ وَمَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं | 137 | अगले लोग | आ़दत | मगर | नहीं है | 136 | नसीहत करने वाले | से | या न हो तुम |

نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿١٣٨﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَهْلَكْنٰهُمْ ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता निशानी | उस में | बेशक | तो हम ने हलाक कर दिया उन्हें | पस उन्हों ने झुटलाया उसे | 138 | अज़ाब दिए जाने वालों में से | हम |

ع ١٨ ١١

وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٩﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٤٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 140 | निहायत मेह्रबान | ग़ालिब | अलबत्ता वह | तुम्हारा रब | और बेशक | 139 | ईमान लाने वाले | उन के अक्सर | और नहीं थे |

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٤١﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ صٰلِحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٤٢﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 142 | क्या तुम डरते नहीं | सालेह (अ) | उन के भाई | उन से | कहा | जब | 141 | रसूल (जमा) | समूद | झुटलाया |

पस मेरे और उन के दरमियान एक खुला फ़ैसला फ़रमा दे, और मुझे नजात दे, और (उन्हें) जो मेरे साथी ईमान वाले हैं। (118)
तो हम ने उसे और जो उस के साथ भरी हुई कश्ती में सवार थे (उन्हें) नजात दी। (119)
फिर उस के बाद हम ने बाक़ियों को ग़र्क़ कर दिया। (120)
बेशक उस में एक निशानी है, और उन के अक्सर न थे ईमान लाने वाले। (121)
और बेशक तुम्हारा रब ग़ालिब है, निहायत मेह्रबान। (122)
(क़ौमे) आ़द ने रसूलों को झुटलाया। (123)
जब उन से उन के भाई हूद (अ) ने कहा क्या तुम डरते नहीं? (124)
बेशक मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल हूँ। (125)
सो तुम अल्लाह से डरो, और मेरी इताअ़त करो। (126)
और मैं तुम से कोई अजर नहीं मांगता, मेरा अजर तो सिर्फ़ अल्लाह रब्बुल आ़लमीन पर है। (127)
क्या तुम हर बुलन्दी पर बिला ज़रूरत एक निशानी तामीर करते हो? (128)
और तुम बनाते हो मज़बूत, शान्दार महल कि शायद तुम हमेशा रहोगे। (129)
और जब तुम (किसी पर) गिरिफ्त करते हो तो जाबिर (ज़ालिम) बन कर गिरिफ़्त करते हो। (130)
पस अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। (131)
और उस से डरो जिस ने उस से तुम्हारी मदद की जो तुम जानते हो। (132)
(यानी) मवेशियों और बेटों से तुम्हारी मदद की। (133)
और बाग़ात और चश्मों से। (134)
बेशक मैं तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब से डराता हूँ। (135)
वह बोले, बराबर है हम पर ख़ाह तुम नसीहत करो या नसीहत करने वालों में से न हो। (136)
(कुछ भी) नहीं है, मगर आ़दत है अगले लोगों की। (137)
और हम अज़ाब दिए जाने वालों में से नहीं। (138)
फिर उन्हों ने उसे झुटलाया और हम ने उन्हें हलाक कर दिया, बेशक उस में निशानी है और न थे उन के अक्सर ईमान लाने वाले। (139)
और बेशक तुम्हारा रब ग़ालिब निहायत मेह्रबान है। (140)
(क़ौमे) समूद ने रसूलों को झुटलाया। (141)
जब उन में से उन के भाई सालेह (अ) ने कहा क्या तुम डरते नहीं? (142)

बेशक मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल हूँ। (143)
सो तुम अल्लाह से डरो, और मेरी इताअत करो। (144)
और मैं तुम से इस पर कोई अजर नहीं मांगता, मेरा अजर तो सिर्फ़ अल्लाह रब्बुल आ़लमीन पर है। (145)
क्या तुम यहां की चीज़ों (नेमतों) में बेफ़िक्र छोड़ दिए जाओगे? (146)
बाग़ात और चश्मों में। (147)
और खेतियों और नख़्लिस्तानों में जिन के ख़ोशे रस भरे हैं। (148)
और तुम ख़ुश हो कर पहाड़ों से घर तराशते हो। (149)
सो अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। (150)
और तुम हद से बढ़ जाने वालों का कहा न मानो। (151)
वह जो फ़साद करते हैं जमीन में, और इस्लाह नहीं करते। (152)
उन्हों ने कहा इस के सिवा नहीं कि तुम सिहरज़दा लोगों में से हो। (153)
तुम नहीं मगर (सिर्फ़) हम जैसे एक बशर हो, पस अगर तुम सच्चे लोगों में से हो (सच्चे हो) तो कोई निशानी ले आओ। (154)
सालेह (अ) ने फ़रमाया यह ऊँटनी है, एक मुअ़य्यन दिन उस के पानी पीने की बारी है और (एक दिन) तुम्हारे लिए पानी पीने की बारी है। (155)
और उसे बुराई से हाथ न लगाना वरना तुम्हें आ पकड़ेगा एक बड़े दिन का अ़ज़ाब। (156)
फिर उन्हों ने उस की कूचें काट दीं पस पशेमान रह गए। (157)
फिर उन्हें अ़ज़ाब ने आ पकड़ा, बेशक उस (वाक़े) में अलबत्ता निशानी (बड़ी इब्रत) है और उन के अक्सर ईमान लाने वाले नहीं। (158)
और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता ग़ालिब निहायत मेहरबान है। (159)
क़ौमे लूत (अ) ने रसूलों को झुटलाया। (160)
(याद करो) जब उन के भाई लूत (अ) ने उन से कहा क्या तुम डरते नहीं? (161)
बेशक मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल हूँ। (162)
पस तुम अल्लाह से डरो, और मेरी इताअत करो। (163)
और मैं तुम से नहीं मांगता इस पर कोई अजर, मेरा अजर तो सिर्फ़ (अल्लाह) रब्बुल आ़लमीन पर है। (164)
क्या तुम मर्दों के पास (बद फ़ेली) के लिए आते हो? दुनिया जहानों में से। (165)
और तुम छोड़ देते हो (उन्हें) जो तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए तुम्हारी बीवियां पैदा की हैं, (नहीं) बल्कि तुम हद से बढ़ने वाले लोग हो। (166)

اِنِّیْ لَکُمْ رَسُوْلٌ اَمِیْنٌ ﴿١٤٣﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِیْعُوْنِ ﴿١٤٤﴾ وَمَاۤ اَسْـَٔلُکُمْ عَلَیْهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस पर | और मैं नहीं मांगता तुम से | 144 | और मेरी इताअ़त करो | सो तुम डरो अल्लाह से | 143 | रसूल अमानतदार | तुम्हारे लिए | बेशक मैं |

مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلٰی رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿١٤٥﴾ اَتُتْرَکُوْنَ فِیْ مَا هٰهُنَاۤ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो यहां है | में | क्या छोड़ दिए जाओगे तुम? | 145 | सारे जहां का पालने वाला | पर | मगर | मेरा अजर | नहीं | कोई अजर |

اٰمِنِیْنَ ﴿١٤٦﴾ فِیْ جَنّٰتٍ وَّعُیُوْنٍ ﴿١٤٧﴾ وَّزُرُوْعٍ وَّنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِیْمٌ ﴿١٤٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 148 | नर्म औ नाज़ुक | उन के ख़ोशे | और खजूरें | और खेतियां | 147 | और चश्मे | बाग़ात में | 146 | बेफ़िक्र |

وَتَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُیُوْتًا فٰرِهِیْنَ ﴿١٤٩﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِیْعُوْنِ ﴿١٥٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 150 | और मेरी इताअत करो | सो डरो अल्लाह से | 149 | ख़ुश हो कर | घर | पहाड़ों से | और तुम तराशते हो |

وَلَا تُطِیْعُوْۤا اَمْرَ الْمُسْرِفِیْنَ ﴿١٥١﴾ الَّذِیْنَ یُفْسِدُوْنَ فِی الْاَرْضِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन | में | फ़साद करते है | जो लोग | 151 | हद से बढ़ जाने वाले | हुक्म | और न कहा मानो |

وَلَا یُصْلِحُوْنَ ﴿١٥٢﴾ قَالُوْۤا اِنَّمَاۤ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِیْنَ ﴿١٥٣﴾ مَاۤ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर (सिर्फ़) एक बशर | तुम नही | 153 | सिहरज़दा लोग | से | तुम | इस के सिवा नहीं | उन्हों ने कहा | 152 | और इस्लाह नहीं करते |

مِّثْلُنَا ۚ فَاْتِ بِاٰیَةٍ اِنْ کُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ﴿١٥٤﴾ قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के लिए | ऊँटनी | यह | उस ने कहा | 154 | सच्चे लोग से | तू | अगर | कोई निशानी | पस लाओ | हम जैसा |

شِرْبٌ وَّلَکُمْ شِرْبُ یَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿١٥٥﴾ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَیَاْخُذَکُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सो (वरना) तुम्हें आ पकड़ेगा | बुराई से | और उसे हाथ न लगाना | 155 | दिन मालूम | एक बारी पानी पीने की | और तुम्हारे लिए | पानी पीने की बारी |

عَذَابُ یَوْمٍ عَظِیْمٍ ﴿١٥٦﴾ فَعَقَرُوْهَا فَاَصْبَحُوْا نٰدِمِیْنَ ﴿١٥٧﴾ فَاَخَذَهُمُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर उन्हें आ पकड़ा | 157 | पशेमान | पस रह गए | फिर उन्हों ने कूचें काट दीं उस की | 156 | एक बड़ा दिन | अज़ाब |

الْعَذَابُ ۭ اِنَّ فِیْ ذٰلِکَ لَاٰیَةً ۭ وَمَا کَانَ اَکْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿١٥٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 158 | ईमान लाने वाले | उन के अक्सर | है | और नहीं | अलबत्ता निशानी | उस में | बेशक | अज़ाब |

وَاِنَّ رَبَّکَ لَهُوَ الْعَزِیْزُ الرَّحِیْمُ ﴿١٥٩﴾ کَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطِ ِۨ الْمُرْسَلِیْنَ ﴿١٦٠﴾ ع ١٩ ٨ ١٢

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 160 | रसूलों को | क़ौमे लूत (अ) | झुटलाया | 159 | निहायत मेहरबान | ग़ालिब | अलबत्ता वह | तुम्हारा रब | और बेशक |

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ لُوْطٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٦١﴾ اِنِّیْ لَکُمْ رَسُوْلٌ اَمِیْنٌ ﴿١٦٢﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 162 | रसूल अमानतदार | तुम्हारे लिए | बेशक मैं | 161 | क्या तुम डरते नही | लूत (अ) | उन के भाई | उन से | कहा | जब |

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِیْعُوْنِ ﴿١٦٣﴾ وَمَاۤ اَسْـَٔلُکُمْ عَلَیْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِیَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरा अजर | नही | कोई अजर | इस पर | और मैं नहीं मांगता तुम से | 163 | और मेरी इताअत करो | पस तुम डरो अल्लाह से |

اِلَّا عَلٰی رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿١٦٤﴾ اَتَاْتُوْنَ الذُّکْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِیْنَ ﴿١٦٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 165 | तमाम जहानों | से | मर्दों के पास | क्या तुम आते हो | 164 | सारे जहां का पालने वाला | पर | मगर-सिर्फ़ |

وَتَذَرُوْنَ مَا خَلَقَ لَکُمْ رَبُّکُمْ مِّنْ اَزْوَاجِکُمْ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ عٰدُوْنَ ﴿١٦٦﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 166 | हद से बढ़ने वाले | लोग | तुम | बल्कि | तुम्हारी बीवियां | से | तुम्हारा रब | तुम्हारे लिए | जो उस ने पैदा किया | और तुम छोड़ते हो |

قَالُوْا لَىِٕنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰلُوْطُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِيْنَ ﴿١٦٧﴾ قَالَ اِنِّىْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक मैं | उस ने कहा | 167 | मुख़्रिज (बाहर निकाले जाने वाले) | से | अलबत्ता तुम जरूर होगे | ऐ लूत (अ) | तुम बाज़ न आए | अगर | वाले वह |

لِعَمَلِكُمْ مِّنَ الْقَالِيْنَ ﴿١٦٨﴾ رَبِّ نَجِّنِىْ وَاَهْلِىْ مِمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٩﴾ فَنَجَّيْنٰهُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो हम ने नजात दी उसे | 169 | वह करते हैं | उस से जो | और मेरे घर वालों | मुझे नजात दे | ऐ मेरे रब | 168 | नफ़्रत करने वाले | से | तुम्हारे अमल से |

وَاَهْلَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٧٠﴾ اِلَّا عَجُوْزًا فِى الْغٰبِرِيْنَ ﴿١٧١﴾ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿١٧٢﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 172 | दूसरे | फिर हम ने हलाक कर दिया | 171 | पीछे रह जाने वालों में | एक बुढ़िया | सिवाए | 170 | सब | और उस के घर वाले |

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٣﴾ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۚ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता एक निशानी | उस में | बेशक | 173 | डराए गए | बारिश | पस बुरी | एक बारिश | उन पर | और हम ने बारिश बरसाई |

ع ٩ ١٦ ١٣ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٤﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٧٥﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 175 | निहायत मेहरबान | ग़ालिब | अलबत्ता वह | तुम्हारा रब | और बेशक | 174 | ईमान लाने वाले | उन के अक्सर | थे | और न |

كَذَّبَ اَصْحٰبُ لْــَٔيْكَةِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧٦﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शुऐब (अ) | उन्हें | जब कहा | 176 | रसूल (जमा) | एयका (बन) वाले | झुटलाया |

اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٧٧﴾ اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٧٨﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٧٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 179 | और मेरी इताअत करो | सो डरो तुम अल्लाह से | 178 | रसूल अमानतदार | तुम्हारे लिए | बेशक मैं | 177 | क्या तुम डरते नही |

وَمَآ اَسْــَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 180 | सारे जहां का पालने वाला | पर | मगर- सिर्फ़ | मेरा अजर | नहीं | कोई अजर | इस पर | और मैं नहीं मांगता तुम से |

اَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُخْسِرِيْنَ ﴿١٨١﴾ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तराज़ू से | और वज़न करो | 181 | नुक़्सान देने वाले | से | और न हो तुम | माप | तुम पूरा करो |

الْمُسْتَقِيْمِ ﴿١٨٢﴾ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जमीन में | और न फिरो | उन की चीज़ें | लोग | और न घटाओ | 182 | ठीक सीधी |

مُفْسِدِيْنَ ﴿١٨٣﴾ وَاتَّقُوا الَّذِىْ خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٨٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 184 | पहली | और मख़्लूक़ | पैदा किया तुम्हें | वह जिस ने | और डरो | 183 | फ़साद मचाते हुए |

قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿١٨٥﴾ وَمَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम जैसा | एक बशर | मगर- सिर्फ़ | और नहीं तू | 185 | सिह्रज़दा (जमा) | से | तू | इस के सिवा नहीं | वह बोले (कहने लगे) |

وَاِنْ نَّظُنُّكَ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿١٨٦﴾ فَاَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मान | से-का | एक टुकड़ा | हम पर | सो तू गिरा | 186 | झूटे | अलबत्ता- से | और अलबत्ता हम गुमान करते हैं तुझे |

اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٨٧﴾ قَالَ رَبِّىْٓ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨٨﴾ فَكَذَّبُوْهُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो उन्हों ने झुटलाया उसे | 188 | तुम करते हो | जो कुछ | ख़ूब जानता है | मेरा रब | कहा | 187 | सच्चे | से | अगर तू है |

فَاَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ ۗ اِنَّهٗ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٨٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 189 | बड़ा (सख़्त) दिन | अज़ाब | था | बेशक वह | साइबान वाला दिन | अज़ाब | पस पकड़ा उन्हें |

वह बोले ऐ लूत (अ)! अगर तुम बाज न आए तो जरूर (बस्ती से) निकाल दिए जाओगे। (167)
उस ने कहा बेशक मैं तुम्हारे फ़ेले (बद) से नफ़्रत करने वालों में से हूँ (168)
ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे घर वालों को उस (के वबाल) से नजात दे जो वह करते हैं। (169)
तो हम ने उसे नजात दी और उस के सब घर वालों को। (170)
सिवाए एक बुढ़िया जो रह गई पीछे रह जाने वालों में। (171)
फिर हम ने दूसरों को हलाक कर दिया। (172)
और हम ने उन पर (पत्थरों की) बारिश बरसाई। पस किया ही बुरी बारिश (उन पर जिन्हें अज़ाब से) डराया गया। (173)
बेशक उस में एक निशानी है और न उन के अक्सर ईमान लाने वाले थे। (174)
और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता ग़ालिब, निहायत मेहरबान है। (175)
झुटलाया एयका (बन) वालों ने रसूलों को। (176)
(याद करो) जब शुऐब (अ) ने उन से कहा क्या तुम डरते नहीं? (177)
बेशक मैं तुम्हारे लिए रसूल हूँ अमानतदार। (178)
सो अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। (179)
और मैं तुम से इस पर कोई अजर नहीं मांगता, मेरा अजर तो सिर्फ़ (अल्लाह) रब्बुल आ़लमीन पर है। (180)
तुम माप पूरा करो, और नुक़्सान देने वालों में से न हो। (181)
और वज़न करो ठीक सीधी तराज़ू से। (182)
और लोगों को उन की चीज़े घटा कर न दो, और जमीन में न फिरो फ़साद मचाते हुए। (183)
और डरो उस (जाते पाक) से जिस ने तुम्हें पैदा किया और पहली मख़्लूक़ को। (184)
कहने लगे इस के सिवा नहीं कि तू सिह्रज़दा लोगों में से है। (185)
और तू सिर्फ़ हम जैसा एक बशर है, और अलबत्ता हम तुझे झूटों में से गुमान करते हैं। (186)
सो तू हम पर आस्मान का एक टुकड़ा गिरा दे अगर तू सच्चों में से है (सच्चा है)। (187)
शुऐब (अ) ने फ़रमाया, मेरा रब ख़ूब जानता है जो कुछ तुम करते हो। (188)
तो उन्हों ने उसे झुटलाया, पस उन्हें (आग के) साइबान वाले दिन अज़ाब ने आ पकड़ा। बेशक वह बड़े सख़्त दिन का अज़ाब था। (189)

बेशक उस में निशानी है, और उन के अक्सर ईमान लाने वाले न थे। (190)
और बेशक तेरा रब ग़ालिब है, निहायत मेह्रबान। (191)
और बेशक यह (कुरआन) सारे जहानों के रब का उतारा हुआ है। (192)
उस को ले कर उतरा है जिब्रील अमीन (अ)। (193)
तुम्हारे दिल पर, ताकि तुम डर सुनाने वालों में से हो। (194)
रोशन वाज़ेह अ़रबी ज़बान में। (195)
और बेशक यह (इस का ज़िक्र) पहले पैग़म्बरों के सहीफ़ों में है। (196)
क्या यह उन के लिए एक निशानी नहीं? कि इसे जानते हैं उल्माए बनी इस्राईल। (197)
और अगर हम इसे किसी ग़ैर अ़रबी (ज़बान दान) पर नाज़िल करते। (198)
फिर वह इसे उन के सामने पढ़ता (फिर भी) वह इस पर ईमान लाने वाले न होते (ईमान न लाते)। (199)
इसी तरह हम ने मुज्रिमों के दिलों में इन्कार दाख़िल कर दिया है। (200)
वह उस पर ईमान न लाएंगे यहां तक कि वह दर्दनाक अ़ज़ाब (न) देख लें। (201)
तो वह उन पर अचानक आजाएगा और उन्हें ख़बर भी न होगी। (202)
फिर वह कहेंगे क्या हमें मोहलत दी जाएगी। (203)
पस क्या वह हमारे अ़ज़ाब को जल्दी चाहते हैं? (204)
क्या तुम ने देखा (ज़रा देखो)? अगर हम उन्हें बरसों फ़ाइदा पहुँचाएं। (205)
फिर उन पर पहुँचे जिस की उन्हें वईद की जाती थी। (206)
जिस से वह फ़ाइदा उठाते थे उन के क्या काम आएगा? (207)
और हम ने किसी बस्ती को हलाक नहीं किया, मगर उस के लिए डराने वाले। (208)
नसीहत के लिए (पहले भेजे) और हम ज़ुल्म करने वाले न थे। (209)
और इस (कुरआन) को शैतान ले कर नहीं उतरे। (210)
और उन को सज़ावार नहीं (वह उस के क़ाबिल नहीं) और न वह (ऐसा) कर सकते हैं। (211)
बेशक वह सुनने (के मुक़ाम) से दूर कर दिए गए हैं। (212)
पस अल्लाह के साथ किसी और को माबूद न पुकारो कि मुब्तिलाए अ़ज़ाब लोगों में से हो जाओ। (213)
और तुम अपने क़रीब तरीन रिश्तेदारों को डराओ। (214)
और उस के लिए अपने बाज़ू झुकाओ जिस ने तुम्हारी पैरवी की मोमिनों में से। (215)

اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۱۹۰﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तेरा रब | और बेशक | 190 | ईमान लाने वाले | उन के अक्सर | और न थे | अलबत्ता निशानी | उस में | बेशक |

لَهُوَ الْعَزِیْزُ الرَّحِیْمُ ﴿۱۹۱﴾ وَاِنَّهٗ لَتَنْزِیْلُ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۹۲﴾ نَزَلَ بِهِ ع ١٠ ١٦ ١٢

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस के साथ (ले कर) उतरा | 192 | सारे जहानों का रब | अलबत्ता उतारा हुआ | और बेशक यह | 191 | निहायत मेह्रबान | ग़ालिब | वह |

الرُّوْحُ الْاَمِیْنُ ﴿۱۹۳﴾ عَلٰی قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِیْنَ ﴿۱۹۴﴾ بِلِسَانٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़बान में | 194 | डर सुनाने वालों में से | ताकि तुम हो | तुम्हारे दिल | पर | 193 | जिब्रील अमीन (अ) |

عَرَبِیٍّ مُّبِیْنٍ ﴿۱۹۵﴾ وَاِنَّهٗ لَفِیْ زُبُرِ الْاَوَّلِیْنَ ﴿۱۹۶﴾ اَوَلَمْ یَكُنْ لَّهُمْ اٰیَةً

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक निशानी | उन के लिए | क्या नहीं है | 196 | पहले (पैग़म्बर) | सहीफ़े | में | और बेशक यह | 195 | रोशन (वाज़ेह) | अ़रबी |

اَنْ یَّعْلَمَهٗ عُلَمٰٓؤُا بَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ ﴿۱۹۷﴾ وَلَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰی بَعْضِ الْاَعْجَمِیْنَ ﴿۱۹۸﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 198 | अ़जमी (ग़ैर अ़रबी) | किसी पर | हम नाज़िल करते इसे | और अगर | 197 | बनी इस्राईल | उल्मा | कि जानते हैं इस को |

فَقَرَاَهٗ عَلَیْهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ مُؤْمِنِیْنَ ﴿۱۹۹﴾ كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِیْ قُلُوْبِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह चलाया है (इन्कार दाख़िल कर दिया है) दिलों में | इसी तरह | 199 | ईमान लाने वाले | इस पर | वह होते | न | उन के सामने | फिर वह पढ़ता इसे |

الْمُجْرِمِیْنَ ﴿۲۰۰﴾ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰی یَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِیْمَ ﴿۲۰۱﴾ فَیَاْتِیَهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो वह आजाएगा उन पर | 201 | दर्दनाक अ़ज़ाब | वह देख लेंगे | यहां तक कि | इस पर | वह ईमान न लाएंगे | 200 | मुज्रिमीन |

بَغْتَةً وَّهُمْ لَا یَشْعُرُوْنَ ﴿۲۰۲﴾ فَیَقُوْلُوْا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُوْنَ ﴿۲۰۳﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 203 | मोहलत दी जाएगी | हम - हमें | क्या | फिर वह कहेंगे | 202 | ख़बर (भी) न होगी | और उन्हें | अचानक |

اَفَبِعَذَابِنَا یَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿۲۰۴﴾ اَفَرَءَیْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِیْنَ ﴿۲۰۵﴾ ثُمَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर | 205 | कई बरसों | हम उन्हें फ़ाइदा पहुँचाएं | अगर | क्या तुम ने देखा? | 204 | वह जल्दी चाहते हैं | क्या पस हमारे अ़ज़ाब को |

جَآءَهُمْ مَّا كَانُوْا یُوْعَدُوْنَ ﴿۲۰۶﴾ مَآ اَغْنٰی عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا یُمَتَّعُوْنَ ﴿۲۰۷﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 207 | वह फ़ाइदा उठाते थे | जो (जिस से) | उन के | क्या काम आएगा? | 206 | उन्हें वईद की जाती थी | जो | पहुँचे उन पर |

وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْیَةٍ اِلَّا لَهَا مُنْذِرُوْنَ ﴿۲۰۸﴾ ذِكْرٰی ۛ وَمَا كُنَّا عند المتقدمين ١٢ ع ٩

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न थे हम | नसीहत के लिए | 208 | डराने वाले | उस के लिए | मगर | किसी बस्ती का | और नहीं हलाक किया हम ने |

ظٰلِمِیْنَ ﴿۲۰۹﴾ وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّیٰطِیْنُ ﴿۲۱۰﴾ وَمَا یَنْۢبَغِیْ لَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन को | और सज़ा वार नहीं | 210 | शैतान (जमा) | इसे ले कर | और नहीं उतरे | 209 | ज़ुल्म करने वाले |

وَمَا یَسْتَطِیْعُوْنَ ﴿۲۱۱﴾ اِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُوْلُوْنَ ﴿۲۱۲﴾ فَلَا تَدْعُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस न पुकारो | 212 | दूर कर दिए गए हैं | सुनना | से | बेशक वह | 211 | और न वह कर सकते हैं |

مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَكُوْنَ مِنَ الْمُعَذَّبِیْنَ ﴿۲۱۳﴾ وَاَنْذِرْ عَشِیْرَتَكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने रिश्तेदार | और तुम डराओ | 213 | मुब्तिलाए अ़ज़ाब | से | कि हो जाओ | कोई दूसरा माबूद | अल्लाह के साथ |

الْاَقْرَبِیْنَ ﴿۲۱۴﴾ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۲۱۵﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 215 | मोमिनीन | से | तुम्हारी पैरवी की | उस के लिए जिस ने | अपना बाज़ू | और झुकाओ | 214 | क़रीब तरीन |

فَاِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ اِنِّیْ بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۱۶﴾ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِیْزِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग़ालिब | पर | और भरोसा करो | 216 | तुम करते हो | उस से जो | बेशक मैं बेज़ार हूँ | तो कह दें | वह तुम्हारी नाफ़रमानी करें | फिर अगर |

الرَّحِیْمِ ﴿۲۱۷﴾ الَّذِیْ یَرٰىكَ حِیْنَ تَقُوْمُ ﴿۲۱۸﴾ وَتَقَلُّبَكَ فِی السّٰجِدِیْنَ ﴿۲۱۹﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 219 | सिज्दा करने वाले (नमाज़ी) | में | और तुम्हारा फिरना | 218 | तुम खड़े होते हो | जब | तुम्हें देखता है | वह जो | 217 | निहायत मेहरबान |

اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ﴿۲۲۰﴾ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ عَلٰى مَنْ تَنَزَّلُ الشَّیٰطِیْنُ ﴿۲۲۱﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 221 | शैतान (जमा) | उतरते हैं | किस पर | मैं तुम्हें बताऊँ | क्या | 220 | जानने वाला | सुनने वाला | वही | बेशक वह |

تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ اَفَّاكٍ اَثِیْمٍ ﴿۲۲۲﴾ یُّلْقُوْنَ السَّمْعَ وَاَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ ﴿۲۲۳﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 223 | झूटे | और उन में अक्सर | सुनी सुनाई बात | डाल दिए हैं | 222 | गुनाहगार | बुहतान लगाने वाला | हर | पर | वह उतरते हैं |

وَالشُّعَرَآءُ یَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ ﴿۲۲۴﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِیْ كُلِّ وَادٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हर वादी में | कि वह | क्या तुम ने नहीं देखा | 224 | गुमराह लोग | उन की पैरवी करते हैं | और शायर (जमा) |

یَّهِیْمُوْنَ ﴿۲۲۵﴾ وَاَنَّهُمْ یَقُوْلُوْنَ مَا لَا یَفْعَلُوْنَ ﴿۲۲۶﴾ اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान लाए | जो लोग | मगर | 226 | वह करते नहीं | जो | वह कहते हैं | और यह कि वह | 225 | सरगर्दां फिरते हैं |

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَذَكَرُوا اللّٰهَ كَثِیْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उस के बाद | और उन्हों ने बदला लिया | बकसरत | और अल्लाह को याद किया | अच्छे | और उन्हों ने अमल किए |

ع ١١ ٢٦ ١٥ مَا ظُلِمُوْا ؕ وَسَیَعْلَمُ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْۤا اَیَّ مُنْقَلَبٍ یَّنْقَلِبُوْنَ ﴿۲۲۷﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 227 | वह उलटते हैं (उन्हें लौट कर जाना है) | लौटने की जगह (करवट) | किस | ज़ुल्म किया | वह लोग जिन्हों ने | और अनक़रीब जान लेंगे | कि उन पर ज़ुल्म हुआ |

## آیَاتُهَا ۹۳ ❀ (۲۷) سُوْرَةُ النَّمْلِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ۷

रुकूआत 7 — (27) सूरतुन नमल / चींटियाँ — आयात 93

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

طٰسٓ تِلْكَ اٰیٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِیْنٍ ﴿۱﴾ هُدًى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हिदायत | 1 | रोशन, वाज़ेह | और किताब | क़ुरआन | आयतें | यह | ता सीन |

وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۲﴾ الَّذِیْنَ یُقِیْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَیُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़कात | और अदा करते हैं | नमाज़ | क़ाइम रखते हैं | जो लोग | 2 | मोमिनों के लिए | और ख़ुशख़बरी |

وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ یُوْقِنُوْنَ ﴿۳﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आख़िरत पर | ईमान नही लाते | जो लोग | बेशक | 3 | यक़ीन रखते हैं | वह | आख़िरत पर | और वह |

زَیَّنَّا لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ یَعْمَهُوْنَ ﴿۴﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِیْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो | यही लोग | 4 | भटकते फिरते हैं | पस वह | उन के अमल | आरास्ता कर दिखाए हम ने उन के लिए |

لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِی الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ﴿۵﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | सब से बढ़ कर ख़सारा उठाने वाले | वह | आख़िरत में | और वह | अज़ाब | बुरा | उन के लिए |

फिर अगर तुम्हारी नाफ़रमानी करें तो कह दें कि जो तुम करते हो बेशक मैं उस से बेज़ार हूँ। (216) और तुम भरोसा करो ग़ालिब, निहायत मेहरबान पर। (217) जो तुम्हें देखता है जब तुम (नमाज़ में) खड़े होते हो। (218) और नमाज़ियों में तुम्हारा फिरना (भी देखता है)। (219) बेशक वही सुनने वाला जानने वाला है। (220) क्या मैं तुम्हें बताऊँ किस पर शैतान उतरते हैं? (221) वह उतरते हैं हर बुहतान लगाने वाले, गुनाहगार पर। (222) (शैतान) सुनी सुनाई बात (उन के कान में) डाल देते हैं और उन में अक्सर झूटे हैं। (223) और (रहे) शायर उन की पैरवी गुमराह लोग करते हैं। (224) क्या तुम ने नहीं देखा? कि वह हर वादी में सरगर्दां फिरते हैं। (225) और यह कि वह कहते हैं जो वह करते नहीं। (226) सिवाए उन के जो ईमान लाए, और उन्हों ने अच्छे अमल किए, और अल्लाह को याद किया बकसरत, और उन्हों ने उस के बाद बदला लिया कि उन पर ज़ुल्म हुआ, और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया वह अनक़रीब जान लेंगे कि किस करवट उन्हें लौट कर जाना है। (227)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

तासीन - यह आयतें हैं क़ुरआन और रोशन वाज़ेह किताब की। (1) हिदायत और ख़ुशख़बरी मोमिनों के लिए। (2) जो लोग नमाज़ क़ाइम रखते हैं, और ज़कात अदा करते हैं, और आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं। (3) बेशक जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते हम ने उन के अमल उन के लिए आरास्ता कर दिखाए हैं, पस वह भटकते फिरते हैं। (4) यही हैं वह लोग जिन के लिए बुरा अज़ाब है, और वह आख़िरत में सब से बढ़ कर ख़सारा उठाने वाले हैं। (5)

और बेशक तुम्हें कुरआन हिक्मत वाले इल्म वाले की तरफ़ से दिया जाता है। (6)
(याद करो) जब मूसा (अ) ने अपने घर वालों से कहा बेशक मैं ने देखी है एक आग, मैं अभी तुम्हारे पास उस की कोई खबर लाता हूँ या आग का अंगारा तुम्हारे पास लाता हूँ ताकि तुम सेंको। (7)
पस जब वह आग के पास आया (अल्लाह तआला की तरफ़ से) निदा दी गई कि बरकत दिया गया जो आग में (जलवा अफरोज है) जो उस के आस पास है (मूसा अ) और पाक है अल्लाह सारे जहानों का परवरदिगार। (8)
ऐ मूसा (अ) हकीकत यह है कि मैं ही अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला हूँ। (9)
और तू अपना असा (नीचे) डाल दे पस जब उस ने उसे लहराता हुआ देखा गोया वह सांप है तो (मूसा अ) पीठ फेर कर लौट गया और उस ने मुड़ कर न देखा, (इरशाद हुआ) ऐ मूसा (अ)! तू ख़ौफ़ न खा, बेशक मेरे पास रसूल ख़ौफ़ नहीं खाते। (10)
मगर जिस ने ज़ुल्म किया, फिर उस ने बुराई के बाद उसे भलाई से बदल डाला तो बेशक मैं बख़्शने वाला, निहायत मेह्रबान हूँ। (11)
और अपना हाथ अपने गरेबान में डाल वह किसी ऐब के बग़ैर सफ़ेद रोशन (हो कर) निकलेगा, नौ (9) निशानियों में से (यह दो मोजिज़े ले कर) फ़िरऔन और उस की कौम की तरफ़ (जा), बेशक वह नाफ़रमान कौम हैं (12)
फिर जब उन के पास आईं हमारी निशानियां आँखें खोलने वाली, वह बोले यह खुला जादू है। (13)
हालांकि उन के दिलों को उस का यक़ीन था, उन्हों ने उस का इन्कार किया ज़ुल्म और तकब्बुर से। तो देखो! फ़साद करने वालों का कैसा अन्जाम हुआ? (14)
और तहक़ीक़ हम ने दिया दाऊद (अ) और सुलेमान (अ) को इल्म, और उन्हों ने कहा तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, वह जिस ने हमें फ़ज़ीलत दी अक्सर अपने मोमिन बन्दों पर (15)
और सुलेमान (अ), दाऊद (अ) का वारिस हुआ, और उस ने कहा ऐ लोगो! मुझे सिखाई गई है परिन्दों की बोली, और हमें हर चीज़ (नेमत) से दी गई है, बेशक यह खुला फ़ज़्ल है। (16)

وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ﴿٦﴾ اِذْ قَالَ مُوْسٰى

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बेशक तुम | दिया जाता है | कुरआन | नज़दीक (जानिब) से | हिक्मत वाला | इल्म वाला | 6 | जब | कहा | मूसा (अ) |

لِاَهْلِهٖۤ اِنِّیْۤ اٰنَسْتُ نَارًا ؕ سَاٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ بِشِهَابٍ قَبَسٍ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने घर वालों से | बेशक मैं | मैं ने देखी है | एक आग | मैं अभी लाता हूँ | उस की | कोई खबर | या लाता हूँ तुम्हारे पास | शोला | अंगारा |

لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿٧﴾ فَلَمَّا جَآءَهَا نُوْدِیَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِی النَّارِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि तुम | तुम सेंको | 7 | पस जब | उस (आग) के पास आया | आवाज़ दी गई | कि बरकत दिया गया | जो | आग में |

وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨﴾ يٰمُوْسٰۤى اِنَّهٗۤ اَنَا اللّٰهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | उस के आस पास | और पाक है अल्लाह | परवरदिगार सारे जहानों का | 8 | ऐ मूसा (अ) | हक़ीक़त यह | मैं अल्लाह |

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٩﴾ وَاَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग़ालिब | हिक्मत वाला | 9 | और तू डाल | अपना असा | पस जब उस ने | उस देखा | लहराता हुआ | गोया कि वह | सांप |

وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰى لَا تَخَفْ ۟ اِنِّیْ لَا يَخَافُ لَدَیَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लौट गया पीठ फेर कर | और मुड़ कर न देखा | ऐ मूसा (अ) | तू ख़ौफ़ न खा | बेशक मैं | ख़ौफ़ नहीं खाते | मेरे पास |

الْمُرْسَلُوْنَ ﴿١٠﴾ اِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًاۢ بَعْدَ سُوْٓءٍ فَاِنِّیْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रसूल (जमा) | 10 | मगर | जो- जिस | ज़ुल्म किया | फिर उस ने बदल डाला | भलाई | बाद | बुराई | तो बेशक मैं |

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١﴾ وَاَدْخِلْ يَدَكَ فِیْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बख़्शने वाला | निहायत मेह्रबान | 11 | और दाख़िल कर (डाल) | अपना हाथ | अपने गरेबान में | वह निकलेगा | सफ़ेद- रोशन | से- के |

غَيْرِ سُوْٓءٍ ۟ فِیْ تِسْعِ اٰيٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किसी ऐब के बग़ैर | में | नौ (9) निशानियां | तरफ़ | फ़िरऔन | और उस की कौम | बेशक वह | हैं |

قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿١٢﴾ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوْا هٰذَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कौम | नाफ़रमान | 12 | फिर जब | आईं उन के पास | हमारी निशानियां | आँखें खोलने वाली | वह बोले | यह |

سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٣﴾ وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَاۤ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जादू खुला | 13 | और उन्हों ने इन्कार किया | उस का | हालांकि उस का यक़ीन था | उन के दिल | ज़ुल्म से | और तकब्बुर से |

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٤﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ ع ١٤ ١٦

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो देखो | कैसा | हुआ | अन्जाम | फ़साद करने वाले | 14 | और तहक़ीक़ दिया हम ने | दाऊद (अ) |

وَسُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ فَضَّلَنَا عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और सुलेमान (अ) | बड़ा इल्म | और उन्हों ने कहा | तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए | वह जिस ने | फ़ज़ीलत दी हमें | पर | अक्सर | से | अपने बन्दे |

الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥﴾ وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मोमिनीन | 15 | और वारिस हुआ | सुलेमान (अ) | दाऊद (अ) | और उस ने कहा | ऐ लोगो | हमें सिखाई गई |

مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَاُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ شَیْءٍ ؕ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बोली | परिन्दे (जमा) | और हमें दी गई | से | हर चीज से | बेशक | यह | अलबत्ता वही | फ़ज़्ल | खुला | 16 |

وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 17 | तरतीब में रखे जाते थे | पस वह | और परिन्दे | और इन्सान | जिन्न | से | उस का लशकर | सुलेमान (अ) के लिए | और जमा किया गया |

حَتّٰٓى اِذَآ اَتَوْا عَلٰى وَادِ النَّمْلِ ۙ قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰٓاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम दाखिल हो | ऐ चीटियों | एक चींटी | कहा | चीटियों का मैदान | पर | आए | जब वह | यहां तक कि |

مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ ۙ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | न जानते हों (उन्हें मालूम न हो) | और वह | और उस का लशकर | सुलेमान (अ) | न रौन्द डाले तुम्हें | अपने घरों (बिलों) में |

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِىْٓ اَنْ اَشْكُرَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि मैं शुक्र अदा करूँ | मुझे तौफ़ीक़ दे | ऐ मेरे रब | और कहा | उस की बात | से | हँसते हुए | तो वह मुसकुराया |

نِعْمَتَكَ الَّتِىْٓ اَنْعَمْتَ عَلَىَّ وَعَلٰى وَالِدَىَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मैं नेक काम करूँ | और यह कि | मेरे माँ बाप | और पर | मुझ पर | तू ने इन्आम फ़रमाई | वह जो | तेरी नेमत |

تَرْضٰىهُ وَاَدْخِلْنِىْ بِرَحْمَتِكَ فِىْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩﴾ وَتَفَقَّدَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उस ने ख़बर ली (जाइज़ा लिया) | 19 | नेक (जमा) | अपने बन्दे | में | अपनी रहमत से | और मुझे दाखिल फ़रमा | तू वह पसंद करे |

الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِىَ لَآ اَرَى الْهُدْهُدَ ۖ اَمْ كَانَ مِنَ الْغَآئِبِيْنَ ﴿٢٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | ग़ाइब होने वाले | से | क्या वह है | हुद हुद | मैं नही देखता | क्या है | तो उस ने कहा | परिन्दे |

لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْلَاَاذْبَحَنَّهٗٓ اَوْ لَيَاْتِيَنِّىْ بِسُلْطٰنٍ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सनद (कोई वजह) | या उसे ज़रूर लानी चाहिए | या उसे जुबह कर डालूँगा | सख़्त | सज़ा | अलबत्ता मैं ज़रूर उसे सज़ा दूँगा |

مُّبِيْنٍ ﴿٢١﴾ فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम को मालूम नहीं वह | वह जो | मैं ने मालूम किया है | फिर कहा | थोड़ी सी | सो उस ने देर की | 21 | वाज़ेह (माकूल) |

وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍۢ بِنَبَاٍ يَّقِيْنٍ ﴿٢٢﴾ اِنِّىْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह बादशाहत करती है उन पर | एक औरत | पाया (देखा) | बेशक मैं ने | 22 | यक़ीनी | एक ख़बर | सबा | से | और मैं तुम्हारे पास लाया हूँ |

وَاُوْتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٣﴾ وَجَدْتُّهَا وَقَوْمَهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उस की कौम | मैं ने पाया है उसे | 23 | बड़ा | एक तख़्त | और उस के लिए | हर शै | और दी गई है |

يَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के आमाल | शैतान | उन्हें | और आरास्ता कर दिखाए है | अल्लाह के सिवा | सूरज को | वह सिज्दा करते हैं |

فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٢٤﴾ اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह सिज्दा करते अल्लाह को | कि नहीं | 24 | राह नहीं पाते | सो वह | रास्ते से | पस रोक दिया उन्हें |

الَّذِىْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो तुम छुपाते हो | और जानता है | और ज़मीन | आस्मानों में | छुपी हुई | निकालता है | वह जो |

وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿٢٥﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٦﴾

السجدة ٨

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 26 | अर्शे अज़ीम | रब | उस के सिवा | नहीं कोई माबूद | अल्लाह | 25 | तुम ज़ाहिर करते हो | और जो |

और सुलेमान (अ) के लिए उस का लशकर जिन्नों, इन्सानों और परीन्दों का जमा किया गया, पस वह तरतीब में रखे जाते थे। (17)
यहां तक कि वह चींटियों के मैदान में आए, एक चींटी ने कहा, ऐ चीटियों! तुम अपने बिलों में दाखिल हो जाओ, (कहीं) सुलेमान (अ) और उस का लशकर तुम्हें रौन्द न डाले और उन्हें ख़बर भी न हो। (18)
तो वह हँसते हुए मुसकुराया उस की बात से, और कहा ऐ मेरे रब! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी नेमत का शुक्र अदा करूँ जो तू ने मुझ पर इन्आम फरमाई है, और मेरे माँ बाप पर, और यह कि मैं नेक काम करूँ जो तू पसंद करे और अपनी रहमत से मुझे अपने नेक बन्दों में दाख़िल फ़रमा ले। (19)
और उस ने परिन्दों का जाइज़ा लिया तो कहा क्या (बात) है मैं हुद हुद को नहीं देखता, क्या वह गाइब हो जाने वालों में से है? (20)
अलबत्ता मैं उसे ज़रूर सख्त सजा दूँगा या उसे जुबह कर डालूँगा, या उसे ज़रूर कोई माकूल वजह मेरे पास लानी (पेश करनी) चाहिए। (21)
सो उस (हुद हुद) ने थोड़ी सी देर की, फिर कहा मैं ने मालूम किया है वह जो तुम को मालूम नहीं, और मैं तुम्हारे पास सबा से एक यक़ीनी ख़बर लाया हूँ। (22)
बेशक मैं ने एक औरत को देखा है, वह उन पर बादशाहत करती है, और (उसे) हर शै दी गई है, और उस के लिए एक बड़ा तख़्त है। (23)
मैं ने उसे और उस की कौम को अल्लाह के सिवा (अल्लाह को छोड़ कर) सूरज को सिज्दा करते पाया है, और शैतान ने उन्हें आरास्ता कर दिखाया है उन के अमल, पस उन्हें (सीधे) रास्ते से रोक दिया है सो वह राह नहीं पाते। (24)
और अल्लाह को (क्यों) सिज्दा नहीं करते? वह जो आस्मानों में और जमीन में छुपी हुई (चीजों को) निकालता है, और जानता है जो तुम छुपाते हो और जो तुम जाहिर करते हो। (25)
अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अर्शे अज़ीम का मालिक है। (26)

सुलेमान (अ) ने कहा, हम अभी देख लेंगे क्या तू ने सच कहा है? या तू झूटों में से है (झूटा है)? (27) मेरा यह खत ले जा, पस यह उन की तरफ़ डाल दे, फिर उन से लौट आ, फिर देख वह क्या जवाब देते हैं। (28) वह औरत कहने लगी, ऐ सरदारो! बेशक मेरी तरफ़ एक बा वक्अत खत डाला गया है। (29) बेशक वह सुलेमान (अ) (की तरफ़) से है और बेशक वह (यूँ है) "अल्लाह के नाम से जो रह्म करने वाला निहायत मेह्रबान है"। (30) यह कि मुझ पर (मेरे मुक़ाबले में) सरकशी न करो, और मेरे पास आओ फ़रमांबरदार हो कर। (31) वह बोली, ऐ सरदारो! मेरे मामले में मुझे राए दो, मैं किसी मामले में फ़ैस्ला करने वाली नहीं (फ़ैस्ला नहीं करती) जब तक तुम मौजूद (न) हो। (32) वह बोले हम कुव्वत वाले, बड़े लड़ने वाले हैं, और फ़ैसला तेरे इख़्तियार में है, तू देख ले तुझे क्या हुक्म करना है। (33) वह बोली, बेशक जब बादशाह किसी बस्ती में दाखिल होते हैं तो उसे तबाह कर देते हैं, और वहां के मुअ़ज़्ज़िजीन को जलील कर दिया करते हैं, और वह उसी तरह करते हैं। (34) और बेशक मैं उन की तरफ़ एक तोहफ़ा भेजने वाली हूँ, फिर देखती हूँ क्या जवाब ले कर लौटते हैं क़ासिद। (35) पस जब सुलेमान (अ) के पास क़ासिद आया तो उस ने कहा कि तुम माल से मेरी मदद करते हो? पस जो अल्लाह ने मुझे दिया है वह बेहतर है उस से जो उस ने तुम्हें दिया है, बल्कि तुम अपने तोहफ़े से खुश होते हो। (36) तू उन की तरफ़ लौट जा, सो हम उन पर ज़रूर लाएंगे ऐसा लशकर जिस (के मुक़ाबले) की उन्हें ताक़त न होगी, और हम ज़रूर उन्हें वहां से जलील कर के निकाल देंगे। और वह खार होंगे। (37) सुलेमान (अ) ने कहा ऐ सरदारो! तुम में कौन उस का तख़्त मेरे पास लाएगा? इस से क़ब्ल कि वह मेरे पास फ़रमांबरदार हो कर आएं। (38) कहा जिन्नात में से एक क़वी हैकल ने, बेशक मैं उस को आप के पास इस से क़ब्ल ले आऊंगा कि आप अपनी जगह से खड़े हों, मैं बेशक उस पर अलबत्ता कुव्वत वाला, अमानतदार हूँ। (39)

قَالَ سَنَنْظُرُ اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٧﴾ اِذْهَبْ بِّكِتٰبِىْ

| मेरा खत | ले जा | 27 | झूटे | से | तू है | या | क्या तू ने सच कहा | उस (सुलेमान अ) ने कहा अभी हम देख लेंगे |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾ قَالَتْ

| वह कहने लगी | 28 | वह जवाब देते हैं | क्या | फिर देख | उन से | फिर लौट आ | उन की तरफ़ | पस उसे डाल दे | यह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّىْۤ اُلْقِىَ اِلَىَّ كِتٰبٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٩﴾ اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ

| और बेशक वह | सुलेमान (अ) | से | बेशक वह | 29 | बा वक्अत | ख़त | मेरी तरफ़ | डाला गया | बेशक मेरी तरफ़ | ऐ सरदारो! |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٣٠﴾ اَلَّا تَعْلُوْا عَلَىَّ وَاْتُوْنِىْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ ع ٢ ١٧ ١٧

| 31 | फ़रमांबरदार हो कर | और मेरे पास आओ | मुझ पर | यह कि तुम सरकशी न करो | 30 | रह्म करने वाला | निहायत मेह्रबान | नाम से अल्लाह के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِىْ فِىْۤ اَمْرِىْ ۚ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً اَمْرًا

| किसी मामला | फ़ैसला करने वाली | मैं नहीं हूँ | मेरे मामले में | मुझे राए दो | ऐ सरदारो! | वह बोली |
|---|---|---|---|---|---|---|

حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ﴿٣٢﴾ قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّاُولُوْا بَاْسٍ شَدِيْدٍ ۙ

| और बड़े लड़ने वाले | कुव्वत वाले | हम | वह बोले | 32 | तुम मौजूद हो | जब तक |
|---|---|---|---|---|---|---|

وَّالْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِىْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ﴿٣٣﴾ قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ

| बादशाह (जमा) | बेशक | वह बोली | 33 | तुझे हुक्म करना है | क्या | तू देख ले | और फ़ैसला तेरी तरफ़ (तेरे इख़्तियार में) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|

اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَجَعَلُوْۤا اَعِزَّةَ اَهْلِهَاۤ اَذِلَّةً ۚ

| जलील | वहां के | मुअज़्ज़िजीन | और कर दिया करते हैं | उसे तबाह कर देते हैं | कोई बस्ती | जब दाख़िल होते हैं |
|---|---|---|---|---|---|---|

وَكَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَاِنِّىْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ يَرْجِعُ

| क्या (जवाब) ले कर लौटते हैं | फिर देखती हूँ | एक तोहफ़ा | उन की तरफ़ | भेजने वाली | और बेशक मैं | 34 | वह करते हैं | और उसी तरह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ ۡ فَمَاۤ

| पस जो | माल से | क्या तुम मेरी मदद करते हो | उस ने कहा | सुलेमान (अ) | आया | पस जब | 35 | क़ासिद |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

اٰتٰىنِۦَ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّاۤ اٰتٰىكُمْ ۚ بَلْ اَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ ﴿٣٦﴾ اِرْجِعْ

| तू लौट जा | 36 | खुश होते हो | अपने तोहफ़े से | तुम | बल्कि | उस ने तुम्हें दिया | उस से जो | बेहतर | मुझे दिया अल्लाह ने |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَاۤ

| वहां से | और ज़रूर निकाल देंगे उन्हें | उस की | उन को | न ताक़त होगी | ऐसा लशकर | हम ज़रूर लाएंगे उन पर | उन की तरफ़ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|

اَذِلَّةً وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ قَالَ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِىْ بِعَرْشِهَا

| उस का तख़्त | मेरे पास लाएगा | तुम में से कौन | उस (सुलेमान अ) ने कहा ऐ सरदारो! | 37 | ख़ार होंगे | और वह | जलील कर के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|

قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِىْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣٨﴾ قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ

| मैं आप के पास ले आऊंगा | जिन्नात से | एक क़वी हैकल | कहा | 38 | फ़रमांबरदार हो कर | वह आए मेरे पास | कि | इस से क़ब्ल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّىْ عَلَيْهِ لَقَوِىٌّ اَمِيْنٌ ﴿٣٩﴾

| 39 | अमानतदार | अलबत्ता कुव्वत वाला | उस पर | और बेशक मैं | अपनी जगह से | कि आप खड़े हों | इस से क़ब्ल | उस को |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

قَالَ الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क़ब्ल | मैं उस को तुम्हारे पास ले आऊंगा | मैं | किताब | से-का | इल्म | उस के पास | उस ने जो | कहा |

اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ ۚ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने कहा | अपने पास | रखा हुआ | पस जब सुलेमान (अ) ने उसे देखा | तुम्हारी निगाह (पलक झपके) | तुम्हारी तरफ़ | कि फिर आए |

هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ ۖ لِيَبْلُوَنِيْٓ ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ۗ وَمَنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जिस | या नाशुक्री करता हूं | आया मैं शुक्र करता हूं | ताकि मुझे आज़माए | मेरे रब का फ़ज़्ल | से | यह |

شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेनियाज़ | मेरा रब | तो बेशक | नाशुक्री की | और जिस | अपनी ज़ात के लिए | शुक्र करता है | तो पस वह | शुक्र किया |

كَرِيْمٌ ﴿٤٠﴾ قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِيْٓ اَمْ تَكُوْنُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| या होती है | आया वह राह पाती (समझ जाती) है | हम देखें | उस का तख़्त | उस के लिए | शक्ल बदल दो | उस ने कहा | 40 | करम करने वाला |

مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٤١﴾ فَلَمَّا جَآءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या ऐसा ही है | कहा गया | वह आई | पस जब | 41 | राह नहीं पाते | जो लोग | से |

عَرْشُكِ ۖ قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| इस से क़ब्ल | इल्म | और हमें दिया गया | वही | गोया कि यह | वह बोली | तेरा तख़्त |

وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۖ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के सिवा | वह परस्तिश करती थी | जो | और उस ने उस को रोका | 42 | मुसलमान-फ़रमांबरदार | और हम हैं |

اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٤٣﴾ قِيْلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| महल | तू दाख़िल हो | उस से | कहा गया | 43 | काफ़िरों | क़ौम से | थी | बेशक वह |

فَلَمَّا رَاَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ۗ قَالَ اِنَّهٗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक यह | उस ने कहा | अपनी पिंडलियाँ | से | और खोल दी | गहरा पानी | उसे समझा | उस ने उस को देखा | पस जब |

صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ۬ۗ قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी जान | बेशक मैं ने ज़ुल्म किया | ऐ मेरे रब | वह बोली | शीशों (जमा) | से | जुड़ा हुआ | महल |

٣ ع ١٣ ١٨ وَاَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ | और तहक़ीक़ हम ने भेजा | 44 | तमाम जहानों का रब | अल्लाह के लिए | सुलेमान (अ) | साथ | और मैं ईमान लाई |

ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِيْقٰنِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दो फ़रीक़ हो गए | वह | पस नागहां | अल्लाह की इबादत करो | कि | सालेह (अ) | उन के भाई | समूद |

يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٥﴾ قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पहले | बुराई के लिए | तुम जल्दी करते हो | क्यों | ऐ मेरी क़ौम | उस ने कहा | 45 | बाहम झगड़ने लगे |

الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٦﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 46 | तुम पर रहम किया जाए | ताकि तुम | तुम बख़्शिश मांगते अल्लाह से | क्यों नहीं | भलाई |

उस शख़्स ने कहा जिस के पास किताब (इलाही) का इल्म था, मैं उस को तुम्हारे पास उस से क़ब्ल ले आऊंगा कि तुम्हारी आँख पलक झपके, पस जब सुलेमान (अ) ने (अचानक) उसे अपने पास रखा हुआ देखा तो उस ने कहा यह मेरे रब के फ़ज़्ल से है, ताकि वह मुझे आज़माए आया मैं शुक्र करता हूँ या नाशुक्री करता हूँ? और जिस ने शुक्र किया तो पस वह अपनी ज़ात के लिए शुक्र करता है, और जिस ने नाशुक्री की तो बेशक मेरा रब बेनियाज़, करम करने वाला है। (40) उस ने कहा उस (मलिका के इम्तिहान के लिए) उस के तख़्त की शक्ल बदल दो, हम देखें कि आया वह राह पाती है (समझ जाती है) या उन लोगों में से होती है जो नहीं समझते। (41) पस जब वह आई (उस से) कहा गया क्या तेरा तख़्त ऐसा ही है? वह बोली गोया कि यह वही है और हमें इस से पहले ही इल्म दिया गया (इल्म हो गया था) और हम हैं मुसलमान (फ़रमांबरदार)। (42) और उस को (ईमान लाने से) रोक रखा था उन माबूदों ने जिन की वह अल्लाह के सिवा परस्तिश करती थी, क्योंकि वह काफ़िरों की क़ौम से थी। (43) उस से कहा गया कि महल में दाख़िल हो, जब उस (मलिका) ने उस (के फ़र्श) को देखा तो उसे गहरा पानी समझा और (पाएंचे उठा कर) अपनी पिंडलियाँ खोल दीं, उस (सुलेमान अ) ने कहा बेशक यह शीशों से जुड़ा हुआ महल है, वह बोली ऐ मेरे रब! बेशक मैं ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया, और (अब) मैं सुलेमान (अ) के साथ (सुलेमान अ के तरीक़े पर) तमाम जहानों के रब अल्लाह पर ईमान लाई। (44) और तहक़ीक़ हम ने (क़ौम) समूद की तरफ़ उन के भाई सालेह (अ) को भेजा कि अल्लाह की इबादत करो, पस नागहां वह दो फ़रीक़ हो गए बाहम झगड़ने लगे। (45) उस ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! तुम भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी करते हो? क्यों नहीं तुम अल्लाह से बख़्शिश मांगते, ताकि तुम पर रहम किया जाए। (46)

वह बोले हम ने तुझ से और तेरे साथियों से बुरा शगुन लिया है, उस ने कहा तुम्हारी बदशगुनी अल्लाह के पास (अल्लाह की तरफ़ से) है बल्कि तुम एक क़ौम हो (जो) आज़माए जाते हो। (47)
और शहर में थे नौ (9) शख़्स वह मुल्क में फ़साद करते थे, और इस्लाह न करते थे। (48)
वह कहने लगे तुम बाहम अल्लाह की क़सम खाओ अलबत्ता हम ज़रूर उस पर और उस के घर वालों पर शबख़ून मारेंगे और फिर उस के वारिसों से कह देंगे, हम उस के घर वालों की हलाकत के वक़्त मौजूद न थे, और बेशक हम अलबत्ता सच्चे हैं। (49)
और उन्हों ने एक मक्र किया और हम ने (भी) एक ख़ुफ़िया तदबीर की और वह न जानते थे (बेख़बर) थे। (50)
पस देखो उन के मक्र का अन्जाम कैसा हुआ! कि हम ने उन्हें और उन की क़ौम सब को हलाक कर डाला। (51)
अब यह उन के घर हैं, गिरे पड़े, उन के ज़ुल्म के सबब, बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानी है जो जानते हैं। (52)
और हम ने उन लोगों को नजात दी जो ईमान लाए और वह परहेज़गारी करते थे। (53)
और (याद करो) जब लूत (अ) ने अपनी क़ौम से कहा क्या तुम बेहयाई पर उतर आए हो? और तुम देखते हो। (54)
क्या तुम औरतों को छोड़ कर मर्दों के पास शहवत रानी के लिए आते हो? बल्कि तुम लोग जहालत करते हो। (55)
पस उस की क़ौम का जवाब सिर्फ़ यह था कि लूत (अ) के साथियों को निकाल दो अपने शहर से, बेशक वह लोग पाकीज़गी पसंद करते हैं। (56)
सो हम ने उसे बचा लिया और उस के घर वालों को सिवाए उस की बीवी के, उसे हम ने पीछे रह जाने वालों में से ठहरा दिया था। (57)
और हम ने उन पर एक बारिश बरसाई, सो क्या ही बुरी बारिश थी डराए गए लोगों पर। (58)
आप (स) फ़रमा दें तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं और उस के बन्दों पर सलाम हो जिन्हें उस ने चुन लिया, क्या अल्लाह बेहतर है या वह जिन्हें वह शरीक ठहराते हैं? (59)

قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ۚ قَالَ طَٰئِرُكُمْ عِندَ اللَّهِ ۖ بَلْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बल्कि | अल्लाह के पास | तुम्हारी बदशगुनी | उस ने कहा | तेरे साथ (साथी) | और वह जो | तुझ से | बुरा शगुन | वह बोले |

أَنتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُونَ ﴿٤٧﴾ وَكَانَ فِي الْمَدِينَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُفْسِدُونَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह फ़साद करते थे | शख़्स | नौ (9) | शहर में | और थे | 47 | आज़माए जाते हो | एक क़ौम | तुम |

فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ﴿٤٨﴾ قَالُوا تَقَاسَمُوا بِاللَّهِ لَنُبَيِّتَنَّهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता हम ज़रूर शबख़ून मारेंगे उस पर | अल्लाह की | तुम बाहम क़सम खाओ | वह कहने लगे | 48 | और इस्लाह नहीं करते थे | ज़मीन (मुल्क) में |

وَأَهْلَهُ ثُمَّ لَنَقُولَنَّ لِوَلِيِّهِ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ أَهْلِهِ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿٤٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 49 | अलबत्ता सच्चे हैं | और बेशक हम | उस के घर वाले | हलाकत के वक़्त | हम मौजूद न थे | उस के वारिसों से | फिर ज़रूर हम कह देंगे | और उस के घर वाले |

وَمَكَرُوا مَكْرًا وَمَكَرْنَا مَكْرًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٠﴾ فَانظُرْ كَيْفَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कैसा | पस देखो | 50 | न जानते थे | और वह | एक तदबीर | और हम ने ख़ुफ़िया तदबीर की | एक तदबीर | और उन्हों ने मक्र किया |

كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ أَنَّا دَمَّرْنَاهُمْ وَقَوْمَهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥١﴾ فَتِلْكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अब यह | 51 | सब को | और उन की क़ौम | हम ने तबाह करदिया उन्हें | कि हम | उन का मक्र | अन्जाम | हुआ |

بُيُوتُهُمْ خَاوِيَةً بِمَا ظَلَمُوا ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٥٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 52 | लोगों के लिए जो जानते हैं | अलबत्ता निशानी | उस में | बेशक | उन के ज़ुल्म के सबब | गिरे पड़े | उन के घर |

وَأَنجَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٣﴾ وَلُوطًا إِذْ قَالَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जब उस ने कहा | और लूत (अ) | 53 | और वह परहेज़गारी करते थे | वह ईमान लाए | वह लोग जो | और हम ने नजात दी |

لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ وَأَنتُمْ تُبْصِرُونَ ﴿٥٤﴾ أَئِنَّكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या तुम | 54 | देखते हो | और तुम | बेहयाई | क्या तुम आगए | अपनी क़ौम से |

لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّن دُونِ النِّسَاءِ ۚ بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| लोग | तुम | बल्कि | औरतों के सिवा (औरतों को छोड़ कर) | शहवत रानी के लिए? | मर्दों के पास | आते हो |

تَجْهَلُونَ ﴿٥٥﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَن قَالُوا أَخْرِجُوا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| निकाल दो | उन्हों ने कहा | मगर-सिर्फ़ यह कि | उस की क़ौम | जवाब | था | पस न | 55 | जहालत करते हो |

آلَ لُوطٍ مِّن قَرْيَتِكُمْ ۖ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ يَتَطَهَّرُونَ ﴿٥٦﴾ فَأَنجَيْنَاهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सो हम ने उसे बचा लिया | 56 | पाकीज़गी पसंद करते हैं | लोग | बेशक वह | अपना शहर | से | लूत (अ) के साथी |

وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَاهَا مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٥٧﴾ وَأَمْطَرْنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम ने बरसाई | 57 | पीछे रह जाने वाले | से | हम ने उसे ठहरा दिया था | उस की बीवी | सिवाए | और उस के घर वाले |

عَلَيْهِم مَّطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنذَرِينَ ﴿٥٨﴾ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلَامٌ ع ٤ ١٩

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और सलाम | तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए | फ़रमा दें | 58 | डराए गए | बारिश | सो क्या ही बुरा | एक बारिश | उन पर |

عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِينَ اصْطَفَىٰ ۗ آللَّهُ خَيْرٌ أَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 59 | वह शरीक ठहराते हैं | या जो | बेहतर | क्या अल्लाह | चुन लिया | वह जिन्हें | उस के बन्दों पर |

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| से | तुम्हारे लिए | और उतारा | और ज़मीन | आस्मानों | पैदा किया | भला कौन? |

السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَأَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| न था | बा रौनक़ | बाग़ात | उस से | पस उगाए हम ने | पानी | आस्मान |

لَكُمْ أَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ۗ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۗ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ﴿٦٠﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 60 | कज रवी करते हैं | लोग | वह | बल्कि | अल्लाह के साथ | क्या कोई माबूद | उन के दरख़्त | कि तुम उगाओ | तुम्हारे लिए |

أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلٰلَهَآ أَنْهٰرًا وَّجَعَلَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और (पैदा) किए | नदी नाले | उस के दरमियान | और (जारी) किया | क़रारगाह | ज़मीन | बनाया | भला कौन-किस |

لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۗ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के साथ | क्या कोई माबूद | आड़ (हदे फ़ासिल) | दो दर्या | दरमियान | और बनाया | पहाड़ (जमा) | उस के लिए |

بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾ أَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह उसे पुकारता है | जब | बेक़रार | क़बूल करता है | भला कौन | 61 | नहीं जानते | उन के अक्सर | बल्कि |

وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْأَرْضِ ۗ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के साथ | क्या कोई माबूद | ज़मीन | नाइब (जमा) | और तुम्हें बनाता है | बुराई | और दूर करता है |

قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾ أَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़ुश्की | अन्धेरों में | तुम्हें राह दिखाता है | भला कौन | 62 | नसीहत पकड़ते हैं | जो | थोड़े |

وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की रहमत | पहले | ख़ुशख़बरी देने वाली | हवाएं | चलाता है | और कौन | और समुन्दर |

ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۗ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٣﴾ أَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पहली बार पैदा करता है मख़्लूक़ | भला कौन | 63 | यह शरीक ठहराते हैं | उस से जो | बरतर है अल्लाह | अल्लाह के साथ | क्या कोई माबूद |

ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ ۗ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और ज़मीन | आस्मान से | तुम्हें रिज़्क़ देता है | और कौन | फिर वह उसे दोबारा (ज़िन्दा) करेगा |

ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۗ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٦٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 64 | सच्चे | तुम हो | अगर | अपनी दलील | ले आओ तुम | फ़रमा दें | अल्लाह के साथ | क्या कोई माबूद |

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ग़ैब | और ज़मीन | आस्मानों में | जो | नहीं जानता | फ़रमा दें |

إِلَّا اللّٰهُ ۗ وَمَا يَشْعُرُوْنَ أَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٦٥﴾ بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन का इल्म | बल्कि थक कर रह गया | 65 | वह उठाए जाएंगे | कब | और वह नहीं जानते | सिवाए अल्लाह के |

فِي الْاٰخِرَةِ ۚ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا ۚ بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ ﴿٦٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 66 | अन्धे | उस से | वह | बल्कि | उस से | शक में | बल्कि वह | आख़िरत (के बारे) में |

भला कौन है? जिस ने आस्मान को और ज़मीन को पैदा किया, और तुम्हारे लिए आस्मान से पानी उतारा, फिर हम ने उस से बा रौनक़ बाग़ उगाए, तुम्हारे लिए (मुमकिन) न था कि तुम उन के दरख़्त उगा सको, क्या अल्लाह के साथ कोई (और) माबूद है? बल्कि वह लोग कज रवी करते हैं। (60) भला कौन है? जिस ने ज़मीन को क़रारगाह बनाया, और उस के दरमियान नदी नाले (जारी किए) और उस के लिए पहाड़ बनाए, और दो दर्याओं के दरमियान हद्दे फ़ासिल बनाई, क्या अल्लाह के साथ कोई (और) माबूद है? बल्कि उन के अक्सर नहीं जानते। (61) भला कौन है? जो बेक़रार (की दुआ) क़बूल करता है जब वह उसे पुकारता है, और बुराई दूर करता है, और तुम्हें ज़मीन में नाइब बनाता है, क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? थोड़े हैं जो नसीहत पकड़ते हैं। (62) भला कौन है जो ख़ुश्की (जंगल) और समुन्दर के अन्धेरों में तुम्हें राह दिखाता है? और कौन है जो उस की रहमत (बारिश) से पहले ख़ुशख़बरी देने वाली हवाएं चलाता है? क्या अल्लाह के साथ कोई (और) माबूद है? अल्लाह बरतर है उस से जो यह शरीक ठहराते हैं? (63) भला कौन है जो मख़्लूक़ को पहली बार पैदा करता है? फिर वह उसे दोबारा ज़िन्दा करेगा, और कौन है जो तुम्हें रिज़्क़ देता है? आस्मान और ज़मीन से, क्या अल्लाह के साथ कोई (और) माबूद है? आप (स) फ़रमा दें कि ले आओ अपनी दलील अगर तुम सच्चे हो। (64) आप (स) फ़रमा दें, जो (भी) आस्मानों और ज़मीन में है, अल्लाह के सिवा ग़ैब (की बातें) नहीं जानता, और वह नहीं जानते कि वह कब (जी) उठाए जाएंगे? बल्कि आख़िरत के बारे में उन का इल्म थक कर रह गया है। (65) (कुछ भी नहीं) बल्कि वह उस से शक में है, बल्कि वह उस से अन्धे हैं। (66)

और काफ़िरों ने कहा क्या जब हम और हमारे बाप दादा मिट्टी हो जाएंगे क्या हम (क़ब्रों से) निकाले जाएंगे? (67)

तहक़ीक़ यही वादा हम से और हमारे बाप दादा से इस से क़ब्ल किया गया था, यह सिर्फ़ अगलों की कहानियां हैं। (68)

आप (स) फ़रमा दें ज़मीन में चलो फिरो, फिर देखो कैसा अन्जाम हुआ मुज्रिमों का! (69)

और आप (स) ग़म न खाएं, और आप (स) दिल तंग न हों, उस से जो वह मक्र ओ फ़रेब करते हैं। (70)

और वह कहते हैं यह वादा कब पूरा होगा? अगर तुम सच्चे हो। (71)

आप (स) फ़रमा दें शायद उस (अ़ज़ाब) का कुछ तुम्हारे लिए क़रीब आगया हो जिस की तुम जल्दी करते हो। (72)

और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता लोगों पर फ़ज़्ल वाला है, लेकिन उन के अक्सर शुक्र नहीं करते। (73)

और बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो उन के दिलों में छुपी हुई है और जो वह ज़ाहिर करते हैं। (74)

और कुछ ग़ाइब (पोशीदा) नहीं ज़मीन ओ आस्मान में मगर वह किताबे रोशन में (लिखी हुई) है। (75)

बेशक यह क़ुरआन बनी इस्राईल पर (बनी इस्राईल के सामने) अक्सर वह बातें बयान करता है जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते हैं। (76)

और बेशक यह (क़ुरआन) अलबत्ता ईमान लाने वालों के लिए हिदायत और रहमत है। (77)

बेशक तुम्हारा रब अपने हुक्म से उन के दरमियान फ़ैसला करता है, और वह ग़ालिब, इल्म वाला है। (78)

पस अल्लाह पर भरोसा करो, बेशक तुम वाज़ेह हक़ पर हो। (79)

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَآؤُنَآ اَىِٕنَّا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या हम | और हमारे बाप दादा | मिट्टी | हम हो जाएंगे | क्या जब | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | और कहा |

لَمُخْرَجُوْنَ ﴿٦٧﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और हमारे बाप दादा | हम | यह-यही | तहक़ीक़ वादा किया गया हम से | 67 | निकाले जाएंगे अलबत्ता |

مِنْ قَبْلُ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾ قُلْ سِيْرُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चलो फिरो तुम | फ़रमा दें | 68 | अगले | कहानियां | मगर-सिर्फ़ | यह | नहीं | इस से क़ब्ल |

فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٦٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 69 | मुज्रिम (जमा) | अन्जाम | हुआ | कैसा | फिर देखो | ज़मीन में |

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِىْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 70 | वह मक्र करते हैं | उस से जो | तंगी में | और आप (स) न हों | उन पर | और तुम ग़म न खाओ |

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٧١﴾ قُلْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़रमा दें | 71 | सच्चे | तुम हो | अगर | वादा | यह | कब | और वह कहते हैं |

عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِىْ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٧٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 72 | तुम जल्दी करते हो | वह जो-जिस | कुछ | तुम्हारे लिए | क़रीब | हो गया हो | कि | शायद |

وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन के अक्सर | और लेकिन | लोगों पर | अलबत्ता फ़ज़्ल वाला | तुम्हारा रब | और बेशक |

لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | उन के दिल | जो छुपी हुई है | ख़ूब जानता है | तुम्हारा रब | और बेशक | 73 | शुक्र नहीं करते |

يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٤﴾ وَمَا مِنْ غَآىِٕبَةٍ فِى السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِلَّا فِىْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | मगर | और ज़मीन | आस्मानों में | ग़ाइब | कुछ | और नहीं | 74 | वह ज़ाहिर करते हैं |

كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٥﴾ اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَقُصُّ عَلٰى بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बनी इस्राईल पर | बयान करता है | क़ुरआन | यह | बेशक | 75 | किताबे रोशन |

اَكْثَرَ الَّذِىْ هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٧٦﴾ وَاِنَّهٗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और बेशक यह | 76 | इख़्तिलाफ़ करते हैं | उस में | वह | वह जो | अक्सर |

لَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٧﴾ اِنَّ رَبَّكَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारा रब | बेशक | 77 | ईमान वालों के लिए | और रहमत | अलबत्ता हिदायत |

يَقْضِىْ بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهٖ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ﴿٧٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 78 | इल्म वाला | ग़ालिब | और वह | अपने हुक्म से | उन के दरमियान | फ़ैसला करता है |

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۗ اِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِيْنِ ﴿٧٩﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 79 | वाज़ेह हक़ | पर | बेशक तुम | अल्लाह पर | पस भरोसा करो |

اِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पुकार | बहरों को | और तुम नही सुना सकते | मुर्दों को | तुम नही सुना सकते | बेशक तुम |

اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٨٠﴾ وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِى الْعُمْيِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की गुमराही | से | अन्धों को | हिदायत देने वाले | और तुम नही | 80 | पीठ फेर कर | जब वह मुड़ जाएं |

اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 81 | फ़रमांबरदार | पस वह | हमारी आयतों पर | ईमान लाता है | जो | मगर-सिर्फ़ | तुम सुनाते | नही |

وَاِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जमीन से | एक जानवर | उन के लिए | हम निकालेंगे | उन पर | वाक़े (पूरा) हो जाएगा वादा (अ़ज़ाब) | और जब |

تُكَلِّمُهُمْ ۙ اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٨٢﴾ ع ٦ ١٦ ٢

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 82 | यक़ीन न करते | हमारी आयात पर | थे | क्यों कि लोग | वह उन से बातें करेगा |

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُّكَذِّبُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| झुटलाते थे | से जो | एक गिरोह | हर उम्मत | से | हम जमा करेंगे | और जिस दिन |

بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿٨٣﴾ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या तुम ने झुटलाया | फ़रमाएगा | जब वह आजाएं | यहां तक | 83 | उन की जमाअ़त बन्दी की जाएगी | फिर वह | हमारी आयतों को |

بِاٰيٰتِىْ وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا اَمَّا ذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٨٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 84 | तुम करते थे | या क्या | इल्म के | उन को | हालांकि अहाता में नही लाए थे | मेरी आयात को |

وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿٨٥﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 85 | न बोल सकेंगे वह | पस वह | इस लिए कि उन्हों ने जुल्म किया | उन पर | वादा (अ़ज़ाब) | और वाक़े (पूरा) हो गया |

اَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| देखने को | और दिन | उस में | कि आराम हासिल करें | रात | हम ने बनाया | कि हम | क्या वह नहीं देखते |

اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٨٦﴾ وَيَوْمَ يُنْفَخُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फूंक मारी जाएगी | और जिस दिन | 86 | ईमान रखते है | उन लगों के लिए | अलबत्ता निशानियां | उस में | बेशक |

فِى الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन में | और जो | आस्मानों में | जो | ता घबरा जाएगा | सूर में |

اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَتَرَى الْجِبَالَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पहाड़ (जमा) | और तू देखता है | 87 | आ़जिज़ हो कर | उस के आगे आएंगे | और सब | अल्लाह चाहे | जिसे | सिवा |

تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِىَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ؕ صُنْعَ اللّٰهِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की कारीगरी | बादलों की तरह चलना | चलेंगे | और वह | जमा हुआ | ता ख़याल करता है उन्हें |

الَّذِىْٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَىْءٍ ؕ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٨٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 88 | तुम करते हो | उस से जो | बाख़बर | बेशक वह | हर शै | ख़ूबी से बनाया | वह जिस ने |

बेशक तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते, न बहरों को (अपनी) पुकार सुना सकते हो (ख़ुसूसन) जब वह पीठ फेर कर मुड़ जाएं। (80) और तुम अन्धों को उन की गुमराही से हिदायत देने वाले नहीं। तुम सिर्फ़ (उस को) सुना सकते हो जो ईमान लाता है हमारी आयतों पर, पस वह फ़रमांबरदार हैं। (81) और जब उन पर वादा-ए-अ़ज़ाब पूरा हो जाएगा तो हम उन के लिए निकालेंगे ज़मीन से एक जानवर, वह उन से बातें करेगा क्यों कि लोग हमारी आयतों पर यक़ीन न करते थे। (82) और जिस दिन हम हर उम्मत में से एक गिरोह जमा करेंगे उन में से जो हमारी आयतों को झुटलाते थे, फिर उन की जमाअ़त बन्दी की जाएगी। (83) यहां तक कि जब वह आजाएंगे (अल्लाह तआ़ला) फ़रमाएगा क्या तुम ने मेरी आयतों को झुटलाया था हालांकि तुम उन को (अपने) अहाता-ए-इल्म में भी नहीं लाए थे (या बतलाओ) तुम क्या करते थे? (84) और उन पर वादा-ए-अजाब पूरा हो गया, इस लिए कि उन्हों ने ज़ुल्म किया था, पस वह बोल न सकेंगे। (85) क्या वह नहीं देखते कि हम ने रात को इस लिए बनाया कि वह उस में आराम हासिल करें और दिन देखने को (रोशन बनाया) बेशक उस में अलबत्ता उन लगों के लिए निशानियां हैं जो ईमान रखते हैं। (86) और जिस दिन सूर में फूंक मारी जाएगी तो घबरा जाएगा जो भी आस्मानों में है और जो ज़मीन में है, सिवाए उस के जिसे अल्लाह चाहे और वह सब उस के आगे आजिज़ हो कर आएंगे। (87) और तू पहाड़ों को देखता है तो उन्हें (अपनी जगह) जमा हुआ खयाल करता है, और वह (क़ियामत के दिन) बादलों की तरह चलेंगे (उड़ते फिरेंगे), अल्लाह की कारीगरी है जिस ने हर शै को ख़ूबी से बनाया है बेशक वह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (88)

जो आया किसी नेकी के साथ तो उस के लिए (उस का अजर) उस से बेहतर है और वह उस दिन घबराहट से महफ़ूज़ होंगे। (89) और जो बुराई के साथ आया तो वह औन्धे मुंह आग में डाले जाएंगे, तुम सिर्फ़ (वही) बदला दिए जाओगे (बदला पाओगे) जो तुम करते थे। (90) (आप स फ़रमा दें) इस के सिवा नहीं कि मुझे हुक्म दिया गया है कि इस शहर (मक्का) के रब की इबादत करूँ जिसे उस ने मोहतरम बनाया है, और उसी के लिए है हर शै, और मुझे हुक्म दिया गया कि मैं मुसलमानों (फ़रमांबरदारों) में से रहूँ। (91) और यह कि मैं कुरआन की तिलावत करूँ (सुना दूँ), पस इस के सिवा नहीं कि जो हिदायत पाता है, वह अपनी ज़ात के लिए हिदायत पाता है और जो गुमराह हुआ तो आप (स) फ़रमा दें कि इस के सिवा नहीं कि मैं तो डराने वाला हूं। (92) और आप (स) फ़रमा दें तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, वह तुम्हें जल्द दिखादेगा अपनी निशानियाँ, पस तुम जल्द उन्हें पहचान लोगे, और तुम्हारा रब उस से बेखबर नहीं जो तुम करते हो। (93)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ता-सीम-मीम। (1) यह वाज़ेह किताब (कुरआन) की आयतें हैं। (2) हम तुम पर पढ़ते हैं (तुम्हें सुनाते हैं) कुछ अहवाले मूसा (अ) और फ़िरऔन का ठीक ठीक, उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। (3) बेशक फ़िरऔन मुल्क में सरकशी कर रहा था, और उस ने कर दिया था उस के लोगों को अलग अलग गिरोह, उन में से एक गिरोह (बनी इस्राईल) को कमज़ोर कर रखा था उन के बेटों को ज़ुबह करता, और ज़िन्दा छोड़ देता था उन की औरतों (बेटियों) को, बेशक वह मुफ़सिदों में से (फ़सादी) था। (4) और हम चाहते थे कि उन लोगों पर एहसान करें जो मुल्क में कमज़ोर कर दिए गए थे, और हम उन्हें पेशवा बनाएं, और हम उन्हें (मुल्क का) वारिस बनाएं। (5)

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस दिन | घबराहट से | और वह | उस से | बेहतर | तो उस के लिए | किसी नेकी के साथ | जो आया |

اٰمِنُوْنَ ﴿٨٩﴾ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ ۗ هَلْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या नहीं | आग में | उन के मुंह | औन्धे डाले जाएंगे | बुराई के साथ | आया | और जो | 89 | महफ़ूज़ होंगे |

تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٠﴾ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस | रब | इबादत करूँ | कि | इस के सिवा मुझे हुक्म नहीं दिया गया | 90 | तुम करते थे | जो | मगर सिर्फ़ | बदला दिए जाओगे |

الْبَلْدَةِ الَّذِيْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَيْءٍ ۫ وَّاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | मैं रहूँ | कि | और मुझे हुक्म दिया गया | हर शै | और उसी के लिए | उस ने मोहतरम बनाया | वह जिसे | शहर |

الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩١﴾ وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी ज़ात के लिए | वह हिदायत पाता है | तो इस के सिवा नहीं | हिदायत पाई | पस जो | मैं तिलावत करूँ कुरआन | और यह कि | 91 | मुसलिमीन-फ़रमांबरदारों |

وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ اِنَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿٩٢﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए | और फ़रमा दें | 92 | डराने वालों में से (डराने वाला हूं) | मैं | इस के सिवा नहीं | तो फ़रमा दें | गुमराह हुआ | और जो |

سَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾ ع ١١

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 93 | तुम करते हो | उस से जो | ग़ाफ़िल (बेख़बर) | तुम्हारा रब | और नहीं | पस तुम पहचान लोगे उन्हें | अपनी निशानियां | वह जल्द दिखादेगा तुम्हें |

## آيَاتُهَا ٨٨ ❀ (٢٨) سُوْرَةُ الْقَصَصِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٩

रुकुआत 9 — (28) सूरतुल क़सस क़िस्स — आयात 88

## بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

طٰسٓمّٓ ﴿١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾ نَتْلُوْا عَلَيْكَ مِنْ نَّبَاِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुछ ख़बर (अहवाल) | तुम पर | हम पढ़ते हैं | 2 | वाज़ेह किताब | आयतें | यह | 1 | ता सीम मीम |

مُوْسٰى وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٣﴾ اِنَّ فِرْعَوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़िरऔन | बेशक | 3 | उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं | ठीक ठीक | और फ़िरऔन | मूसा (अ) |

عَلَا فِي الْاَرْضِ وَجَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| एक गिरोह | कमज़ोर कर रखा था | अलग अलग गिरोह | उस के बाशिन्दे | और उस ने कर दिया | ज़मीन (मुल्क) में | सरकशी कर रहा था |

مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَيَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۭ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | था | बेशक वह | उन की औरतों को | और ज़िन्दा छोड़ देता था | उन के बेटों को | ज़ुबह करता था | उन में से |

الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٤﴾ وَنُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कमज़ोर कर दिए गए थे | उन लोगों पर जो | हम एहसान करें | कि | और हम चाहते थे | 4 | मुफ़सिद (जमा) |

فِي الْاَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ اَئِمَّةً وَّنَجْعَلَهُمُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٥﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 5 | वारिस (जमा) | और हम बनाएं उन्हें | पेशवा (जमा) | और हम बनाएं उन्हें | ज़मीन (मुल्क) में |

وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِى الْاَرْضِ وَنُرِىَ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन के लशकर | और हामान | फ़िरऔन | और हम दिखा दें | ज़मीन (मुल्क) में | उन्हें | और हम क़ुदरत (हुकूमत) दें |

مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ﴿٦﴾ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّ مُوْسٰٓى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मूसा की माँ | तरफ़-को | और हम ने इल्हाम किया | 6 | वह डरते थे | जिस चीज़ | उन से |

اَنْ اَرْضِعِيْهِ ۚ فَاِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ فِى الْيَمِّ وَلَا تَخَافِىْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और न डर | दर्या में | तो डालदे उसे | तू उस पर डरे | फिर जब | कि तू दूध पिलाती रह उसे |

وَلَا تَحْزَنِىْ ۚ اِنَّا رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ وَجَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | रसूलों | से | और उसे बना देंगे | तेरी तरफ़ | उसे लौटा देंगे | बेशक हम | और न ग़म खा |

فَالْتَقَطَهٗٓ اٰلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّحَزَنًا ۗ اِنَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | और ग़म का बाइस | दुश्मन | उन के लिए | ताकि वह हो | फ़िरऔन के घर वाले | फिर उठा लिया उसे |

فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خٰطِئِيْنَ ﴿٨﴾ وَقَالَتِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और कहा | 8 | ख़ताकार (जमा) | थे | और उन के लशकर | और हामान | फ़िरऔन |

امْرَاَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّىْ وَلَكَ ۗ لَا تَقْتُلُوْهُ ۖ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तू क़त्ल न कर इसे | और तेरे लिए | मेरी आँखों के लिए | ठंडक | फ़िरऔन | बीवी |

عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | (हक़ीक़ते हाल) नहीं जानते थे | और वह | बेटा | हम बना लें इसे | या | कि नफ़ा पहुँचाए हमें | शायद |

وَاَصْبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ۗ اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِىْ بِهٖ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस को | कि ज़ाहिर कर देती | तहक़ीक़ क़रीब था | सब्र से ख़ाली (बेक़रार) | मूसा (अ) की माँ | दिल | और हो गया |

لَوْلَآ اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | यक़ीन करने वाले | से | कि वह रहे | उस के दिल पर | कि गिरह लगाते हम | अगर न होता |

وَقَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ فَبَصُرَتْ بِهٖ عَنْ جُنُبٍ وَّهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह | दूर से | उस को | फिर देखती रह | उस के पीछे जा | उस की बहन को | और उस (मूसा अ की वालिदा) ने कहा |

لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١١﴾ وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ فَقَالَتْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह (मूसा की बहन) बोली | पहले से | दूध पिलाने वाली औरतें (दाइयां) | उस से | और हम ने रोक रखा | 11 | (हक़ीक़ते हाल) न जानते थे |

هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰٓى اَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَهُمْ لَهٗ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उस के लिए | और वह | तुम्हारे लिए | वह उस की पर्वरिश करें | एक घर वाले | क्या मैं बतलाऊँ तुम्हें |

نٰصِحُوْنَ ﴿١٢﴾ فَرَدَدْنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَىْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह ग़मगीन न हो | उस की आँख | ताकि ठंडी रहे | उसकी माँ की तरफ़ | तो हम ने लौटा दिया उस को | 12 | ख़ैर ख़ाह |

وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 13 | वह नहीं जानते | उन में से बेशतर | और लेकिन | सच्चा | अल्लाह का वादा | कि | और ताकि जान ले |

और हम उन्हें हुकूमत दें मुल्क में। और हम फ़िरऔन और हामान और उन के लशकर को उन (कमज़ोरों के हाथों) दिखा दें जिस चीज़ से वह डरते थे। (6)

और हम ने मूसा (अ) की माँ को इल्हाम किया कि वह उस को दूध पिलाती रह, फिर जब तू उस पर (उस के बारे में) डरे तो उसे दर्या में डाल दे, और न डर और न ग़म खा, बेशक हम उसे तेरी तरफ़ लौटा देंगे, और उसे बना देंगे रसूलों में से। (7)

फिर फ़िरऔन के घर वालों ने उसे उठा लिया ताकि (आख़िर कार) वह उन के लिए दुश्मन और ग़म का बाइस हो, बेशक फ़िरऔन और हामान और उन के लशकर ख़ताकार थे। (8)

और कहा फ़िरऔन की बीवी ने, यह आँखों की ठंडक है मेरे लिए और तेरे लिए, इसे क़त्ल न कर, शायद हमें नफ़ा पहुँचाए या हम इसे बेटा बनालें, और वह हक़ीक़ते हाल नहीं जानते थे। (9)

और मूसा (अ) की माँ का दिल बेक़रार हो गया, तहक़ीक़ क़रीब था कि वह उस को ज़ाहिर कर देती अगर हम ने उस के दिल पर गिरह न लगाई होती कि वह यक़ीन करने वालों में से रहे। (10)

और मूसा (अ) की वालिदा ने उस की बहन को कहा कि उस के पीछे जा, फिर उसे दूर से देखती रह, और वह हक़ीक़ते हाल न जानते थे। (11)

और हम ने पहले से उस से दाइयों को रोक रखा था, तो मूसा (अ) की बहन बोली, क्या मैं तुम्हें एक घर वाले बतलाऊँ जो तुम्हारे लिए उस की पर्वरिश करें और वह उस के ख़ैर ख़ाह हों। (12)

तो हम ने उस को उस की माँ की तरफ़ लौटा दिया, ताकि ठंडी रहें उस की आँख, और वह ग़मगीन न हो, और ताकि जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है, और लेकिन उन के बेशतर नहीं जानते। (13)

और जब (मूसा अ) अपनी जवानी को पहुँचा और पूरी तरह तवाना हो गया तो हम ने उसे हिक्मत और इल्म अता किया, और हम नेकी करने वालों को इसी तरह बदला दिया करते हैं। **(14)** और वह शहर में दाख़िल हुआ जब कि उस के लोग ग़फ़्लत में थे तो उस ने दो आदमियों को बाहम लड़ते हुए पाया, एक उस की बिरादरी से था और दूसरा उस के दुश्मनों में से था, तो जो उस की बिरादरी से था उस ने उस (के मुक़ाबले) पर जो उस के दुश्मनों में से था मूसा (अ) से मदद मांगी तो मूसा (अ) ने उस को एक मुक्का मारा फिर उस का काम तमाम कर दिया, उस (मूसा अ) ने कहा यह काम शैतान (की हरकत) से हुआ, बेशक वह दुश्मन है खुला बहकाने वाला। **(15)** उस ने अ़रज़ की ऐ मेरे रब! मैं ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया, पस मुझे बख़्शदे, तो उस ने उसे बख़्श दिया, बेशक वही बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान। **(16)** उस ने कहा, ऐ मेरे रब! जैसा कि तू ने मुझ पर इन्आ़म किया है तो मैं हरगिज़ न हूँगा (कभी) मुजरिमों का मददगार। **(17)** पस शहर में उस की सुबह हुई डरते हुए इन्तिज़ार करते हुए (कि देखें अब किया होता है) तो नागहां वही जिस ने कल उस से मदद मांगी थी (देखा कि) वह फिर उस से फ़र्याद कर रहा है! मूसा (अ) ने उस को कहा बेशक तू गुमराह है खुला। **(18)** फिर जब उस ने चाहा कि उस पर हाथ डाले जो उन दोनों का दुश्मन था, तो उस ने कहा ऐ मूसा (अ)! क्या तू चाहता है कि तू मुझे क़त्ल कर दे जैसे तू ने कल एक आदमी को क़त्ल किया था, तू सिर्फ़ (यही) चाहता है कि तू इस सरज़मीन में ज़बरदस्ती करता फिरे और तू नहीं चाहता कि मुसलिहीन (इस्लाह करने वालों) में से हो। **(19)** और एक आदमी शहर के परले सिरे से दौड़ता हुआ आया, उस ने कहा, ऐ मूसा (अ)! बेशक सरदार तेरे बारे में मश्वरा कर रहे हैं ताकि तुझे क़त्ल कर डालें, पस तू (यहां से) निकल जा, बेशक मैं तेरे ख़ैर ख़्वाहों में से हूँ। **(20)**

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰٓى اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और इसी तरह | और इल्म | हिक्मत | हम ने अ़ता किया उसे | और पूरा (तवाना) हो गया | वह पहुँचा अपनी जवानी | और जब |

نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٤﴾ وَدَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ग़फ़्लत | वक़्त पर | शहर | और वह दाख़िल हुआ | 14 | नेकी करने वाले | हम बदला दिया करते हैं |

مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ۫ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह (दूसरा) | उस की बिरादरी | से | यह (एक) | वह बाहम लड़ते हुए | दो आदमी | उस में | तो उस ने पाया | उस के लोग |

مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِىْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِىْ مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के दुश्मन से | वह जो | उस पर | उस की बिरादरी से | वह जो | तो उस ने उस (मूसा) से मदद मांगी | उस के दुश्मन का | से |

فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۖ قَالَ هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शैतान का काम (हरकत) | से | यह | उस ने कहा | उस का | फिर काम तमाम कर दिया | मूसा (अ) | तो एक मुक्का मारा उस का |

اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ فَاغْفِرْ لِىْ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस बख़्शदे मुझे | अपनी जान | मैं ने ज़ुल्म किया | बेशक मैं | ऐ मेरे रब | उस ने अ़रज़ की | 15 | सरीह (खुला) | बहकाने वाला | दुश्मन | बेशक वह |

فَغَفَرَ لَهٗ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦﴾ قَالَ رَبِّ بِمَآ اَنْعَمْتَ عَلَىَّ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुझ पर | तू ने इन्आ़म किया | ऐ मेरे रब जैसा कि | उस ने कहा | 16 | निहायत मेहरबान | बख़्शने वाला | वही | बेशक | तो उस ने बख़्श दिया उस को |

فَلَنْ اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٧﴾ فَاَصْبَحَ فِى الْمَدِيْنَةِ خَآئِفًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| डरता हुआ | शहर में | पस सुबह हुई उस की | 17 | मुजरिमों का | मददगार | तो मैं हरगिज़ न होंगा |

يَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِى اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ يَسْتَصْرِخُهٗ ؕ قَالَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कहा | वह (फिर) उस से फ़र्याद कर रहा है | कल | उस ने मदद मांगी थी उस से | तो यकायक वह जिस | इन्तिज़ार करता हुआ |

لَهٗ مُوْسٰٓى اِنَّكَ لَغَوِىٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٨﴾ فَلَمَّآ اَنْ اَرَادَ اَنْ يَّبْطِشَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हाथ डाले | कि | उस ने चाहा | कि | फिर जब | 18 | खुला | अलबत्ता गुमराह | बेशक तू | मूसा (अ) | उस को |

بِالَّذِىْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِىْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तू क़त्ल करदे मुझे | कि | क्या तू चाहता है | ऐ मूसा (अ) | उस ने कहा | उन दोनों का दुश्मन | वह | उस पर जो |

كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا ۢ بِالْاَمْسِ ۖ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़बरदस्ती करता | कि तू हो | मगर-सिर्फ़ | तू चाहता | नहीं | कल | एक आदमी | जैसे क़त्ल किया तू ने |

فِى الْاَرْضِ وَمَا تُرِيْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿١٩﴾ وَجَآءَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और आया | 19 | सुधार करने वाले | से | तू हो | कि | और तू नहीं चाहता | सरजमीन में |

رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ يَسْعٰى ۫ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنَّ الْمَلَاَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सरदार | बेशक | ऐ मूसा (अ) | उस ने कहा | दौड़ता हुआ | शहर का दूर सिरा | से | एक आदमी |

يَاْتَمِرُوْنَ بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّىْ لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٢٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | सलाहकार (जमा) | से | तेरे लिए | बेशक मैं | पस तू निकल जा | ताकि क़त्ल करडालें तुझे | तेरे बारे में | वह मश्वरा कर रहे हैं |

ع ٨ ٢ ٥ فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ قَالَ رَبِّ نَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 21 | ज़ालिमों की क़ौम | से | मुझे बचाले | उस ने कहा (दुआ की) ऐ मेरे परवरदिगार | इन्तिज़ार करते हुए | डरते हुए | वहां से | पस वह निकला |

وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يَّهْدِيَنِيْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि मुझे दिखाए | मेरा रब | उम्मीद है | कहा | मदयन | तरफ़ | उस ने रुख किया | और जब |

سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿٢٢﴾ وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से-का | एक गिरोह | उस पर | उस ने पाया | मदयन | पानी | वह आया | और जब | 22 | सीधा रास्ता |

النَّاسِ يَسْقُوْنَ ۬ وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रोके हुए हैं | दो औरतें | उन से अ़लाहिदा | और उस ने पाया (देखा) | पानी पिला रहे हैं | लोग |

قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ؕ قَالَتَا لَا نَسْقِيْ حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ ٜ وَاَبُوْنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हमारे अब्बा | चरवाहे | वापस ले जाएं | जब तक कि | हम पानी नहीं पिलाती | वह दोनों बोली | तुम्हारा क्या हाल है | उस ने कहा |

شَيْخٌ كَبِيْرٌ ﴿٢٣﴾ فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰٓى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّيْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक मैं | ऐ मेरे रब | फिर अ़रज़ किया | साए की तरफ़ | फिर वह फिर आया | उन के लिए | तो उस ने पानी पिलाया | 23 | बहुत बूढ़े |

لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿٢٤﴾ فَجَآءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا تَمْشِيْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चलती हुई | उन दोनों में से एक | फिर उस के पास आई | 24 | मोहताज | कोई भलाई (नेमत) | मेरी तरफ़ | तू उतारे | उस का जो |

عَلَى اسْتِحْيَآءٍ ۫ قَالَتْ اِنَّ اَبِيْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ اَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारे लिए | जो तू ने पानी पिलाया | सिला | ताकि तुझे दें वह | तुझे बुलाते हैं | मेरे वालिद | बेशक | वह बोली | शर्म से |

فَلَمَّا جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ٜ نَجَوْتَ مِنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | तुम बच आए | डरो नहीं | उस ने कहा | अहवाल | उस से | और बयान किया | उस के पास आया | पस जब |

الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٥﴾ قَالَتْ اِحْدٰىهُمَا يٰٓاَبَتِ اسْتَاْجِرْهُ ؗ اِنَّ خَيْرَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेहतर | बेशक | इसे मुलाज़िम रख लो | ऐ मेरे बाप | उन में से एक | बोली वह | 25 | ज़ालिमों की क़ौम |

مَنِ اسْتَاْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْاَمِيْنُ ﴿٢٦﴾ قَالَ اِنِّيْٓ اُرِيْدُ اَنْ اُنْكِحَكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| निकाह करदूं तुझ से | कि | बेशक मैं चाहता हूँ | (बाप) ने कहा | 26 | अमानत दार | ताक़तवर | तुम मुलाज़िम रखो | जो जिसे |

اِحْدَى ابْنَتَيَّ هٰتَيْنِ عَلٰٓى اَنْ تَاْجُرَنِيْ ثَمٰنِيَ حِجَجٍ ۚ فَاِنْ اَتْمَمْتَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तम पूरे करो | फिर अगर | आठ (8) साल (जमा) | तुम मेरी मुलाज़िमत करो | कि | (इस शर्त) पर | यह दो (2) | अपनी दो बेटियां | एक |

عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اَشُقَّ عَلَيْكَ ؕ سَتَجِدُنِيْٓ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अनक़रीब तुम पाओगे मुझे | तुम पर | कि मैं मशक़्क़त डालूँ | चाहता मैं | और नहीं | तो तुम्हारी तरफ़ से | दस (10) |

اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾ قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ ؕ اَيَّمَا الْاَجَلَيْنِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुद्दत दोनों में | जो | और तुम्हारे दरमियान | मेरे दरमियान | यह | उस ने कहा | 27 | नेक (खुश मामला) लोगों में से | इनशा अल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा) |

ع ٧ ٣ ٦ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٢٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 28 | गवाह | जो हम कह रहे हैं | पर | और अल्लाह | मुझ पर | कोई जब्र (मुतालबा) नहीं | मैं पूरी करूँ |

पस वह निकला वहां से डरते हुए और इन्तिज़ार करते हुए (कि देखें क्या होता है), उस ने दुआ की कि ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे ज़ालिमों की क़ौम से बचाले। (21)
और जब उस ने मदयन की तरफ़ रुख किया तो कहा उम्मीद है मेरा रब मुझे सीधा रास्ता दिखाएगा। (22)
और जब वह मदयन के पानी (के कुंए) पर आया तो उस ने लोगों के एक गिरोह को पानी पिलाते हुए पाया, और उस ने देखा दो औरतें उन से अ़लाहिदा (अपनी बकरियां) रोके हुए (खड़ी) हैं, उस ने कहा तुम्हारा क्या हाल है? वह बोलीं हम पानी नहीं पिलातीं जब तक चरवाहे (अपने जानवरों को पानी पिला कर) वापस न ले जाएं और हमारे अब्बा बूढ़े हैं। (23)
तो उस ने उन की (बकरियों को) पानी पिलाया। फिर साए की तरफ़ फिर आया, फिर अ़रज़ किया ऐ मेरे परवरदिगार! बेशक जो नेमत तू मेरी तरफ़ उतारे मैं उस का मोहताज हूँ। (24)
फिर उन दोनों में से एक उस के पास आई शर्म से चलती हुई, वह बोली, बेशक मेरे वालिद तुम्हें बुला रहे हैं कि तुम्हें उस का सिला दें जो तू ने हमारे लिए (बकरियों को) पानी पिलाया है, पस जब मूसा (अ) उस (बाप) के पास आया और उस से अहवाल बयान किया तो उस ने कहा डरो नहीं, तुम ज़ालिमों की क़ौम से बच आए हो। (25)
उन में से एक बोली, ऐ मेरे बाप इसे मुलाज़िम रख लें, बेशक बेहतरीन मुलाज़िम जिसे तुम रखो (वही हो सकता है) जो ताक़तवर अमानत दार हो। (26)
(बाप) ने कहा मैं चाहता हूँ कि तुम से अपनी इन दो बेटियों में से एक का निकाह इस शर्त पर कर दूँ कि तुम आठ (8) साल मेरी मुलाज़िमत करो, अगर दस (10) साल पूरे करलो तो (वह) तुम्हारी तरफ़ से (नेकी) हो गी, मैं नहीं चाहता कि मैं तुम पर मशक़्क़त डालूं, अगर अल्लाह ने चाहा तो अ़नक़रीब तुम मुझे खुश मामला लोगों में से पाओगे। (27)
मूसा (अ) ने कहा यह मेरे दरमियान और तुम्हारे दरमियान (अहद) है, मैं दोनों में से जो मुद्दत पूरी करूँ मुझ पर कोई मुतालबा नहीं, और अल्लाह गवाह है उस पर जो हम कह रहे हैं। (28)

फिर जब मूसा (अ) ने अपनी मुद्दत पूरी कर दी तो अपनी घर वाली (बीवी) को साथ ले कर चला, उस ने देखी कोहे तूर की तरफ़ से एक आग, उस ने अपने घर वालों से कहा तुम ठहरो, बेशक मैं ने आग देखी है, शायद मैं उस से तुम्हारे लिए (रास्ते की) कोई ख़बर या आग की चिंगारी लाऊँ ताकि तुम आग तापो। (29)

फिर जब वह उस के पास आया तो निदा (आवाज़) दी गई दाएं मैदान के किनारे से, बरकत वाली जगह में, एक दरख़्त (के दरमियान) से, कि ऐ मूसा (अ)! बेशक मैं अल्लाह हूँ, तमाम जहानों का परवरदिगार। (30)

और यह कि तू अपना अ़सा (ज़मीन पर) डाल, फिर जब उस ने उसे देखा लहराते हुए, गोया कि वह सांप है, वह पीठ फेर कर लौटा, और पीछे मुड़ कर भी न देखा, (अल्लाह ने फ़रमाया) ऐ मूसा (अ)! आगे आ और डर नहीं, बेशक तू अम्न पाने वालों में से है। (31)

तू अपना हाथ अपने गरेबान में डाल, वह सफ़ेद रोशन हो कर निकलेगा, किसी ऐब के बग़ैर, फिर अपना बाज़ू ख़ौफ़ (दूर होने की गरज) से अपनी तरफ़ मिला लेना (सुकेड़ लेना), पस (असा और यदे बैजा) दोनों दलीलें हैं तेरे रब की तरफ से फ़िरऔन और उस के सरदारों की तरफ़, बेशक वह एक नाफ़रमान गिरोह है। (32)

उस ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक मैं ने उन में से एक शख़्स को मार डाला, सो मैं डरता हूँ कि वह मुझे क़त्ल कर देंगे। (33)

और मेरे भाई हारून (अ) ज़बान (के एतिबार से) मुझ से ज़ियादा फ़सीह है, सो उसे मेरे साथ मददगार (बना कर) भेज दे कि वह मेरी तस्दीक़ करे, बेशक मैं डरता हूँ कि वह मुझे झुटलाएंगे। (34)

(अल्लाह ने) फ़रमाया हम अभी तेरे भाई से तेरे बाज़ू को मज़बूत कर देंगे और तुम दोनों के लिए अ़ता करेंगे ग़ल्बा, पस वह हमारी निशानियों के सबब तुम दोनों तक न पहुँच सकेंगे, तुम दोनों और जिस ने तुम्हारी पैरवी की ग़ालिब रहोगे। (35)

فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْاَجَلَ وَسَارَ بِاَهْلِهٖۤ اٰنَسَ مِنْ جَانِبِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ | से | उस ने देखी | साथ अपने घर वाली | और चला वह | मुद्दत | मूसा (अ) | पूरी कर दी | फिर जब |

الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا اِنِّيْۤ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْۤ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शायद मैं | आग | बेशक मैं ने देखी | तुम ठहरो | अपने घर वालों से | उस ने कहा | एक आग | कोहे तूर |

اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿٢٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 29 | आग तापो | ताकि तुम | आग से | या चिंगारी | कोई ख़बर | उस से | मैं लाऊँ तुम्हारे लिए |

فَلَمَّاۤ اَتٰىهَا نُوْدِيَ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْاَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जगह में | दायां | मैदान | किनारे से | निदा दी गई | वह आया उस के पास | फिर जब |

الْمُبٰرَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ اَنْ يّٰمُوْسٰۤى اِنِّيْۤ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | जहानों का परवरदिगार | अल्लाह | बेशक मैं | ऐ मूसा (अ) | कि | एक दरख़्त से | बरकत वाली |

وَاَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लौटा | सांप | गोया कि वह | लहराते हुए | फिर जब उस ने उसे देखा | अपना अ़सा | डालो | और यह कि |

مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰۤى اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ ۟ اِنَّكَ مِنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| से | बेशक तू | और डर नहीं | आगे आ | ऐ मूसा (अ) | और पीछे मुड़ कर न देखा | पीठ फेर कर |

الْاٰمِنِيْنَ ﴿٣١﴾ اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से-के | रोशन सफ़ेद | वह निकलेगा | अपने गरेबान | अपना हाथ | तू डाल ले | 31 | अम्न पाने वाले |

غَيْرِ سُوْٓءٍ ؗ وَّاضْمُمْ اِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दो (2) दलीलें | पस यह दोनों | ख़ौफ़ से | अपना बाज़ू | अपनी तरफ़ | और मिला लेना | बग़ैर किसी ऐब |

مِنْ رَّبِّكَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٣٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 32 | नाफ़रमान | एक गिरोह | हैं | बेशक वह | और उसके सरदार (जमा) | फ़िरऔन | तरफ़ | तेरे रब (की तरफ़) से |

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ﴿٣٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 33 | कि वह मुझे क़त्ल कर देंगे | सो मैं डरता हूँ | एक शख़्स | उन (में) से | बेशक मैं ने मार डाला है | ऐ मेरे रब | उस ने कहा |

وَاَخِيْ هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّيْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْاً

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरे साथ मददगार | सो भेजदे उसे | ज़बान | मुझ से | ज़ियादा फ़सीह | वह | हारून (अ) | और मेरा भाई |

يُّصَدِّقُنِيْۤ ؗ اِنِّيْۤ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ﴿٣٤﴾ قَالَ سَنَشُدُّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हम अभी मज़बूत कर देंगे | फ़रमाया | 34 | वह झुटलाएंगे मुझे | कि | बेशक मैं डरता हूँ | वह तस्दीक़ करे मेरी |

عَضُدَكَ بِاَخِيْكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا يَصِلُوْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पस वह न पहुँचेंगे | ग़ल्बा | तुम्हारे लिए | और हम अ़ता करेंगे | तेरे भाई से | तेरा बाज़ू |

اِلَيْكُمَا ۚۛ بِاٰيٰتِنَا ۚۛ اَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغٰلِبُوْنَ ﴿٣٥﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 35 | ग़ालिब रहोगे | पैरवी करे तुम्हारी | और जो | तुम दोनों | हमारी निशानियों के सबब | तुम तक |

معانقة ١١ عند المتأخرين

فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوْسٰی بِاٰیٰتِنَا بَیِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक जादू | मगर | नहीं है यह | वह बोले | खुली-वाज़ेह | हमारी निशानियां के साथ | मूसा (अ) | आया उन के पास | फिर जब |

مُّفْتَرًی وَّمَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِیْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِیْنَ ﴿٣٦﴾ وَقَالَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और कहा | 36 | अपने अगले बाप दादा | में | यह-ऐसी बात | और नहीं सुनी है हम ने | इफ़्तिरा किया हुआ |

مُوْسٰی رَبِّیْٓ اَعْلَمُ بِمَنْ جَآءَ بِالْهُدٰی مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ تَكُوْنُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| होगा-है | और जिस | उस के पास से | हिदायत | लाया | उस को जो | ख़ूब जानता है | मेरा रब | मूसा (अ) |

لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا یُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़िरऔन | और कहा | 37 | ज़ालिम (जमा) | नहीं फ़लाह पाएंगे | बेशक वह | आख़िरत का अच्छा घर | उस के लिए |

یٰٓاَیُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَیْرِیْ ۚ فَاَوْقِدْ لِیْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पस आग जला मेरे लिए | अपने सिवा | माबूद | कोई | तुम्हारे लिए | नहीं जानता मैं | ऐ सरदारो |

یٰهَامٰنُ عَلَی الطِّیْنِ فَاجْعَلْ لِّیْ صَرْحًا لَّعَلِّیْٓ اَطَّلِعُ اِلٰٓی

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ | मैं झांकूं | ताकि मैं | एक बुलन्द महल | फिर मेरे लिए बना (तैयार कर) | मिट्टी पर | ऐ हामान |

اِلٰهِ مُوْسٰی ۙ وَاِنِّیْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ الْكٰذِبِیْنَ ﴿٣٨﴾ وَاسْتَكْبَرَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और मग़रूर हो गया | 38 | झूटे | से | अलबत्ता समझता हूं उसे | और बेशक मैं | मूसा (अ) | माबूद |

هُوَ وَجُنُوْدُهٗ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَیْنَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारी तरफ़ | कि वह | और वह समझ बैठे | नाहक़ | ज़मीन (दुनिया) में | और उस का लशकर | वह |

لَا یُرْجَعُوْنَ ﴿٣٩﴾ فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِی الْیَمِّ ۚ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दर्या में | फिर हम ने फेंक दिया उन्हें | और उस का लशकर | तो हम ने पकड़ा उसे | 39 | नहीं लौटाए जाएंगे |

فَانْظُرْ كَیْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِیْنَ ﴿٤٠﴾ وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सरदार | और हम ने बनाया उन्हें | 40 | ज़ालिम (जमा) | अन्जाम | हुआ | कैसा | सो देखो |

یَّدْعُوْنَ اِلَی النَّارِ ۚ وَیَوْمَ الْقِیٰمَةِ لَا یُنْصَرُوْنَ ﴿٤١﴾

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 41 | वह मदद न दिए जाएंगे | और रोज़े क़ियामत | जहन्नम की तरफ़ | वह बुलाते हैं |

وَاَتْبَعْنٰهُمْ فِیْ هٰذِهِ الدُّنْیَا لَعْنَةً ۚ وَیَوْمَ الْقِیٰمَةِ هُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह | और रोज़े क़ियामत | लानत | इस दुनिया | में | और हम ने लगादी उन के पीछे |

۴ ع ۱۲ ۲ مِّنَ الْمَقْبُوْحِیْنَ ﴿٤٢﴾ ع وَلَقَدْ اٰتَیْنَا مُوْسَی الْكِتٰبَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| किताब (तौरेत) | मूसा (अ) | और तहक़ीक़ हम ने अता की | 42 | बदहाल लोग (जमा) | से |

مِنْ بَعْدِ مَآ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰی بَصَآئِرَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| (जमा) बसीरत | पहली | उम्मतें | कि हलाक की हम ने | उस के बाद |

لِلنَّاسِ وَهُدًی وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ یَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٣﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 43 | नसीहत पकड़ें | ताकि वह | और रहमत | और हिदायत | लोगों के लिए |

फिर जब मूसा (अ) हमारी वाज़ेह निशानियों के साथ उन के पास आया तो वह बोले यह कुछ भी नहीं मगर एक इफ़्तिरा किया हुआ (घड़ा हुआ) जादू है, और हम ने ऐसी बात अपने अगले बाप दादा से नहीं सुनी है। (36)

और मूसा (अ) ने कहा मेरा रब उस को ख़ूब जानता है जो उस के पास से हिदायत लाया है, और जिस के लिए आख़िरत का अच्छा घर (जन्नत) है, बेशक ज़ालिम (कभी) फ़लाह (कामयाबी) नहीं पाएंगे। (37)

और फ़िरऔन ने कहा, ऐ सरदारो, मैं नहीं जानता तुम्हारे लिए अपने सिवा कोई माबूद, पस ऐ हामान! मेरे लिए मिट्टी (की ईंटों) पर आग जला, फिर (उन पुख़्ता ईंटों से) मेरे लिए तैयार कर एक बुलन्द महल, ताकि मैं (वहां से) मूसा (अ) के माबूद को झांकूं, और मैं तो उसे झूटों में से समझता हूं। (38)

और वह और उस का लशकर दुनिया में नाहक़ मग़रूर हो गए और वह समझ बैठे कि वह हमारी तरफ़ नहीं लौटाए जाएंगे। (39)

तो हम ने उसे और उस के लशकर को पकड़ा और उन्हें दर्या में फेंक दिया, सो देखो कैसा ज़ालिमों का अन्जाम हुआ? (40)

और हम ने उन्हें सरदार बनाया जो जहन्नम की तरफ़ बुलाते रहे, और रोज़े क़ियामत वह न मदद दिए जाएंगे (उन की मदद न होगी)। (41)

और हम ने इस दुनिया में उन के पीछे लानत लगा दी और रोजे क़ियामत वह बदहाल लोगों में से होंगे। (42)

और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को तौरेत अता की उस के बाद कि हम ने पहली उम्मतें हलाक कीं, लोगों के लिए बसीरत (आँखें खोलने वाली) और हिदायत ओ रहमत, ताकि वह नसीहत पकड़ें। (43)

और आप (स) (कोहे तूर के) मग़्रिबी जानिब न थे जब हम ने मूसा (अ) की तरफ़ वहि भेजी और आप (स) (उस वाक़े के) देखने वालों में से न थे। (44)
और लेकिन हम ने बहुत सी उम्मतें पैदा कीं, फिर तवील हो गई उन की मुद्दत, और आप (स) अहले मदयन में रहने वाले न थे कि उन पर हमारे अहकाम पढ़ते (उन्हें हमारे अहकाम सुनाते) लेकिन हम थे रसूल बनाकर भेजने वाले। (45)
और आप (स) तूर के किनारे न थे जब हम ने पुकारा, और लेकिन रहमत आप (स) के रब से (कि नुबुव्वत अ़ता हुई) ताकि आप (स) इस क़ौम को डर सुनाएं जिस के पास आप (स) से पहले कोई डराने वाला नहीं आया, ताकि वह नसीहत पकड़ें। (46)
और एसा न हो कि उन्हें उन के आमाल के सबब कोई मुसीबत पहुँचे तो वह कहतेः ऐ हमारे रब! तू ने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यों न भेजा! पस हम तेरे अहकाम की पैरवी करते और हम होते ईमान लाने वालों में से। (47)
फिर जब उन के पास हमारी तरफ़ से हक़ आगया, कहने लगे कि क्यों न (मुहम्मद (स) को) दिया गया जैसा मूसा (अ) को दिया गया था, क्या उन्हों ने उस का इन्कार नहीं किया? जो उस से क़ब्ल मूसा (अ) को दिया गया, उन्हों ने कहा वह दोनों जादू हैं, वह दोनों एक दूसरे के पुश्त पनाह हैं, और उन्हों ने कहा बेशक हम हर एक का इन्कार करने वाले हैं। (48)
आप (स) फ़रमा दें तुम अल्लाह के पास से कोई किताब लाओ जो इन दोनों (क़ुरआन और तौरेत) से ज़ियादा हिदायत बख़्शने वाली हो कि मैं उस की पैरवी करूँ, अगर तुम सच्चे हो। (49)
फिर अगर वह आप (स) की बात क़ुबूल न करें तो जान लें कि वह सिर्फ़ अपनी ख़ाहिशात की पैरवी करते हैं, और उस से ज़ियादा कौन गुमराह है जिस ने अपनी ख़ाहिश की पैरवी की, अल्लाह की हिदायत के बग़ैर, बेशक अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (50)

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ اِذْ قَضَيْنَآ اِلٰى مُوْسَى الْاَمْرَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और आप (स) न थे | मग़्रिबी जानिब | जब | हम ने भेजा | मूसा (अ) की तरफ़ | हुक्म (वहि) |

وَمَا كُنْتَ مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَلٰكِنَّآ اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और आप (स) न थे | से | देखने वाले | 44 | और लेकिन हम ने | हम ने पैदा की | बहुत सी उम्मतें | तवील हो गई | उनकी, उन पर |

الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۙ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुद्दत | और आप (स) न थे | रहने वाले | में | अहले मदयन | तुम पढ़ते | उन पर | हमारी आयात |

وَلٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّوْرِ اِذْ نَادَيْنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और लेकिन हम | हम थे | रसूल बनाकर भेजने वाले | 45 | और आप (स) ने थे | किनारा | तूर | जब हम ने पुकारा |

وَلٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और लेकिन | रहमत | अपने रब से | ताकि डर सुनाओ | वह क़ौम | नहीं आया उन के पास | कोई | डराने वाला |

مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْلَآ اَنْ تُصِيْبَهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आप (स) से पहले | ताकि वह | नसीहत पकड़ें | 46 | और एसा न हो | कि पहुँचे उन्हें |

مُّصِيْبَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَيَقُوْلُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई मुसीबत | उस के सबब जो भेजा | उन के हाथ (उन के आमाल) | तो वह कहते | ऐ हमारे रब | क्यों न | भेजा तू ने |

اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾ فَلَمَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारी तरफ़ | कोई रसूल | पस पैरवी करते हम | तेरे अहकाम | और हम होते | से | ईमान लाने वाले | 47 | फिर जब |

جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْلَآ اُوْتِيَ مِثْلَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आया उन के पास | हक़ | हमारी तरफ़ से | कहने लगे | क्यों न दिया गया | जैसा |

مَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى ؕ اَوَلَمْ يَكْفُرُوْا بِمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो दिया गया | मूसा (अ) | क्या नही | इन्कार किया उन्हों ने | उस का जो दिया गया | मूसा (अ) | इस से क़ब्ल |

قَالُوْا سِحْرٰنِ تَظٰهَرَا ۫ وَقَالُوْٓا اِنَّا بِكُلٍّ كٰفِرُوْنَ ﴿٤٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने कहा | वह दोनों जादू | एक दूसरे के पुश्त पनाह | और उन्हों ने कहा | हम बेशक | हर एक का | इन्कार करने वाले | 48 |

قُلْ فَاْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ اَهْدٰى مِنْهُمَآ اَتَّبِعْهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़रमा दें | पस लाओ | कोई किताब | से | अल्लाह के पास | वह | ज़ियादा हिदायत | इन दोनों से | मैं पैरवी करूँ उस की |

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٩﴾ فَاِنْ لَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर तुम हो | सच्चे (जमा) | 49 | फिर अगर | वह क़ुबूल न करें | तुम्हारे लिए (तुम्हारी बात) | तो जान लो | कि सिर्फ़ |

يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ؕ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَيْرِ هُدًى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह पैरवी करते हैं | अपनी ख़ाहिशात | और कौन | ज़ियादा गुमराह | उस से जिस ने पैरवी की | अपनी ख़ाहिश | हिदायत के बग़ैर |

مِّنَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٠﴾ ع ٥ ٨

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अल्लाह से (मिन जानिब अल्लाह) | बेशक अल्लाह | हिदायत नहीं देता | ज़ालिम लोग (जमा) | 50 |

النصف

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥١﴾ اَلَّذِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो | 51 | नसीहत पकड़ें | ताकि वह | (अपना) कलाम | उन के लिए | और अलबत्ता हम ने मुसलसल भेजा |

اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَاِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पढ़ा जाता है उन पर (सामने) | और जब | 52 | ईमान लाते हैं | वह इस (कुरआन) पर | इस से क़ब्ल | जिन्हें हम ने किताब दी |

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖٓ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَآ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ ﴿٥٣﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 53 | फ़रमांबरदार | इस के पहले ही | बेशक हम थे | हमारे रब (की तरफ़) से | हक़ | बेशक यह | हम ईमान लाए इस पर | वह कहते हैं |

اُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ اَجْرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوْا وَيَدْرَءُوْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और वह दूर करते हैं | इस लिए कि उन्हों ने सब्र किया | दोहरा | उन का अजर | दिया जाएगा उन्हें | यही लोग |

بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَاِذَا سَمِعُوا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह सुनते हैं | और जब | 54 | वह ख़र्च करते हैं | हम ने दिया उन्हें | और उस से जो | बुराई को | भलाई से |

اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا عَنْهُ وَقَالُوْا لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे अ़मल (जमा) | और तुम्हारे लिए | हमारे लिए हमारे अ़मल | और कहते हैं | उस से | वह किनारा करते हैं | बेहूदा बात |

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ لَا نَبْتَغِي الْجٰهِلِيْنَ ﴿٥٥﴾ اِنَّكَ لَا تَهْدِيْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हिदायत नहीं दे सकते | बेशक तुम | 55 | जाहिल (जमा) | हम नहीं चाहते | तुम पर | सलाम |

مَنْ اَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ وَهُوَ اَعْلَمُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ख़ूब जानता है | और वह | जिस को वह चाहता है | हिदायत देता है | और लेकिन (बल्कि) अल्लाह | जिस को चाहो |

بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَقَالُوْٓا اِنْ نَّتَّبِعِ الْهُدٰى مَعَكَ نُتَخَطَّفْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हम उचक लिए जाएंगे | तुम्हारे साथ | हिदायत | अगर हम पैरवी करें | और वह कहते हैं | 56 | हिदायत पाने वालों को |

مِنْ اَرْضِنَا اَوَلَمْ نُمَكِّنْ لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا يُّجْبٰٓى اِلَيْهِ ثَمَرٰتُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फल | उस की तरफ़ | खिंचे चले आते हैं | हुर्मत वाला मुक़ामे अम्न | उन्हें | दिया ठिकाना हम ने | क्या नहीं | अपनी सरज़मीन से |

كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 57 | नहीं जानते | उन में अक्सर | और लेकिन | हमारी तरफ़ से | बतौरे रिज़्क़ | हर शै (क़िस्म) |

وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍۭ بَطِرَتْ مَعِيْشَتَهَا فَتِلْكَ مَسٰكِنُهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के मस्कन | सो, यह | अपनी मईशत | इतराती | बस्तियां | हलाक कर दीं हम ने | और कितनी |

لَمْ تُسْكَنْ مِّنْۢ بَعْدِهِمْ اِلَّا قَلِيْلًا وَكُنَّا نَحْنُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٥٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 58 | वारिस (जमा) | हम | और हुए हम | क़लील | मगर | उन के बाद | न आबाद हुए |

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى حَتّٰى يَبْعَثَ فِيْٓ اُمِّهَا رَسُوْلًا يَّتْلُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह पढ़े | कोई रसूल | उस की बड़ी बस्ती में | भेज दे | जब तक | बस्तियां | हलाक करने वाला | तुम्हारा रब | और नहीं है |

عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرٰٓى اِلَّا وَاَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ﴿٥٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 59 | ज़ालिम (जमा) | उन के रहने वाले | मगर (जब तक) | बस्तियां | हलाक करने वाले | और हम नहीं | हमारी आयात | उन पर |

और अलबत्ता हम ने मुसलसल भेजा उन के लिए अपना कलाम, ताकि वह नसीहत पकड़ें। (51)

जिन लोगों को हम ने उस से क़ब्ल किताब दी वह इस कुरआन पर ईमान लाते हैं। (52)

और जब उन के सामने (कुरआन) पढ़ा जाता है तो वह कहते हैं हम इस पर ईमान लाए, बेशक यह हक़ है हमारे रब की तरफ़ से, बेशक हम थे पहले से फ़रमांबरदार। (53)

यही लोग हैं जिन्हें उन का अजर दोहरा दिया जाएगा इस लिए कि उन्हों ने सब्र किया और वह भलाई से बुराई को दूर करते हैं और जो हम ने उन्हें दिया वह उस में से ख़र्च करते हैं। (54)

और जब वह बेहूदा बात सुनते हैं तो उस से किनारा करते हैं, और कहते हैं कि हमारे लिए हमारे अमल तुम्हारे लिए तुम्हारे अमल, तुम पर सलाम हो, हम जाहिलों से (उलझना) नहीं चाहते। (55)

बेशक तुम जिस को चाहो हिदायत नहीं दे सकते, बल्कि अल्लाह जिस को चाहता है हिदायत देता है, और हिदायत पाने वालों को वह ख़ूब जानता है। (56)

और वह कहते है अगर हम तुम्हारे साथ हिदायत की पैरवी करें तो हम अपनी सरज़मीन से उचक लिए जाएंगे। क्या हम ने उन्हें हुर्मत वाले मुक़ामे अम्न में ठिकाना नहीं दिया, उस की तरफ़ खिंचे चले आते हैं फल हर क़िस्म के, हमारी तरफ़ से बतौर रिज़्क़, लेकिन उन में अक्सर नहीं जानते। (57)

और कितनी (ही) बस्तियां हम ने हलाक कर दीं जो अपनी आमदनी और गुज़र बसर पर इतराती थीं, सो यह हैं उन के मस्कन, न आबाद हुए उन के बाद मगर कम, और हम ही हुए वारिस (58)

और तुम्हारा रब नहीं है बस्तियों को हलाक करने वाला, जब तक उस की बड़ी बस्ती में कोई रसूल न भेज दे, वह उन पर हमारी आयात पढ़े, और हम बस्तियों को हलाक करने वाले नहीं जब तक उन के रहने वाले ज़ालिम (न) हों। (59)

और तुम्हें जो कोई चीज़ दी गई है सो वह (सिर्फ़) दुनिया की ज़िन्दगी का सामान और उस की ज़ीनत है, और जो अल्लाह के पास है वह बेहतर है और तादेर बाक़ी रहने वाला है, सो क्या तुम समझते नहीं? **(60)** सो जिस से हम ने अच्छा वादा किया फिर वह उस को पाने वाला है, क्या वह उस शख़्स की तरह है जिसे हम ने दुनिया की ज़िन्दगी के सामान दिया, फिर वह रोज़े क़ियामत (गिरफ़्तार हो कर) हाज़िर किए जाने वालों में से हुआ। **(61)** और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा, कहेगा कहां हैं? मेरे शरीक जिन्हें तुम (मेरा शरीक) गुमान करते थे। **(62)** (फिर) कहेंगे वह जिन पर हुक्मे अज़ाब साबित हो गया कि ऐ हमारे रब! यह हैं वह जिन्हें हम ने बहकाया, हम ने उन्हें (वैसे ही) बहकाया जैसे हम (ख़ुद) बहके थे। हम तेरी तरफ़ (तेरे हुज़ूर सब से) बेज़ारी करते हैं, वह हमारी बन्दगी न करते थे। **(63)** और कहा जाएगा तुम अपने शरीकों को पुकारो, सो वह उन्हें पुकारेंगे, तो वह उन्हें जवाब न देंगे, और वह अज़ाब देखेंगे, काश वह हिदायत याफ़्ता होते! **(64)** और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा तो फ़रमाएगा तुम ने पैग़म्बरों को क्या जवाब दिया था? **(65)** पस उन को कोई बात न सूझेगी उस दिन, पस वह आपस में (भी) सवाल न कर सकेंगे। **(66)** सो जिस ने तौबा की और वह ईमान लाया और उस ने अच्छे अमल किए, तो उम्मीद है कि वह कामयाबी पाने वालों में से हो। **(67)** और तुम्हारा रब पैदा करता है जो वह चाहता है और (जो) वह पसंद करता है, नहीं है उन के लिए (उन का कोई) इख़्तियार, अल्लाह उस से पाक है और बरतर है उस से जो वह शरीक करते हैं। **(68)** और तुम्हारा रब जानता है जो उन के सीनों में छुपा है, और जो ज़ाहिर करते हैं। **(69)** और वही है अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उसी के लिए है तमाम तारीफ़ें दुनिया में और आख़िरत में, और उसी के लिए है फ़रमांरवाई, और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। **(70)**

وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | और उस की ज़ीनत | दुनिया | ज़िन्दगी | सो सामान | कोई चीज़ | और जो दी गई तुम्हें |

ع
عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٠﴾ اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने वादा किया उस से | सो क्या जो | 60 | सो क्या तुम समझते नहीं? | बाक़ी रहने वाला तादेर | बेहतर | अल्लाह के पास |

وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह | फिर | दुनिया की ज़िन्दगी | सामान | हम ने दिया उसे | उस की तरह जिसे | पाने वाला उस को | फिर वह | वादा अच्छा |

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٦١﴾ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कहां | पस कहेगा वह | वह पुकारेगा उन्हें | और जिस दिन | 61 | हाज़िर किए जाने वाले | से | रोज़े क़ियामत |

شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٦٢﴾ قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | साबित हो गया | वह जो | कहेंगे | 62 | तुम गुमान करते थे | वह जिन्हें | मेरे शरीक |

الْقَوْلُ رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَغْوَيْنَا ۚ اَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّاْنَآ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम बेज़ारी करते हैं | हम बहके | जैसे | हम ने बहकाया उन्हें | हम ने बहकाया | वह जिन्हें | यह हैं | ऐ हमारे रब | हुक्मे (अज़ाब) |

اِلَيْكَ مَا كَانُوْٓا اِيَّانَا يَعْبُدُوْنَ ﴿٦٣﴾ وَقِيْلَ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने शरीकों को | तुम पुकारो | और कहा जाएगा | 63 | बन्दगी करते | सिर्फ़ हमारी | वह न थे | तेरी तरफ़ (सामने) |

فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَرَاَوُا الْعَذَابَ ۚ لَوْ اَنَّهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| काश वह | अज़ाब | और वह देखेंगे | उन्हें | तो वह जवाब न देंगे | सो वह उन्हें पुकारेंगे |

كَانُوْا يَهْتَدُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اَجَبْتُمُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम ने जवाब दिया | क्या | तो फ़रमाएगा | वह पुकारेगा उन्हें | और जिस दिन | 64 | वह हिदायत याफ़्ता होते |

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦٥﴾ فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْاَنْۢبَآءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पस वह | उस दिन | ख़बरें (बातें) | उन को | पस न सूझेगी | 65 | पैग़म्बर (जमा) |

لَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿٦٦﴾ فَاَمَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسٰٓى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो उम्मीद है | और उस ने अमल किए अच्छे | और वह ईमान लाया | जिस ने तौबा की | सो- लेकिन | 66 | आपस में सवाल न करेंगे |

اَنْ يَّكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ ﴿٦٧﴾ وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह पसंद करता है | जो वह चाहता है | पैदा करता है | और तुम्हारा रब | 67 | कामयाबी पाने वाले | से | कि वह हो |

مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَرَبُّكَ يَعْلَمُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जानता है | और तुम्हारा रब | 68 | उस से जो वह शरीक करते हैं | और बरतर | अल्लाह पाक है | इख़्तियार | उन के लिए | नहीं है |

مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَهُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के सिवा | नहीं कोई माबूद | और वही अल्लाह | 69 | वह ज़ाहिर करते हैं | और जो | उन के सीने | छुपा है | जो |

لَهُ الْحَمْدُ فِي الْاُوْلٰى وَالْاٰخِرَةِ ؗ وَلَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٧٠﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 70 | तुम लौट कर जाओगे | और उसी की तरफ़ | और उसी के लिए फ़रमां रवाई | और आख़िरत | दुनिया में | उसी के लिए तमाम तारीफ़ें |

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ الَّيْلَ سَرْمَدًا إِلٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तक | हमेशा | रात | तुम पर | कर दे (रखे) अल्लाह | अगर | भला तुम देखो तो | फरमा दें |

يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ إِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَأْتِيْكُمْ بِضِيَآءٍ ۭ أَفَلَا تَسْمَعُوْنَ ﴿٧١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 71 | तो क्या तुम सुनते नहीं? | रोशनी | ले आए तुम्हारे पास | अल्लाह के सिवा | माबूद | कौन | रोज़े क़ियामत |

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तक | हमेशा | दिन | तुम पर | बनाए (रखे) अल्लाह | अगर | भला तुम देखो तो | फरमा दें |

يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ إِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَأْتِيْكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِيْهِ ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | तुम आराम करो | रात | ले आए तुम्हारे लिए | अल्लाह के सिवा | माबूद | कौन | रोज़े क़ियामत |

أَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَمِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि तुम आराम करो | और दिन | रात | उस ने तुम्हारे लिए बनाया | और अपनी रहमत से | 72 | तो क्या तुम्हें सूझता नहीं? |

فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾ وَيَوْمَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जिस दिन | 73 | तुम शुक्र करो | और ताकि तुम | उस का फ़ज़्ल (रोज़ी) | और ताकि तुम तलाश करो | उस में |

يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ أَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٧٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 74 | तुम गुमान करते थे | वह जो | मेरे शरीक | कहां? | तो वह कहेगा | वह पुकारेगा उन्हें |

وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيْدًا فَقُلْنَا هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी दलील | तुम लाओ (पेश करो) | फिर हम कहेंगे | एक गवाह | हर उम्मत | से | और हम निकाल कर लाएंगे |

ع ١٥ ١٠ فَعَلِمُوْٓا أَنَّ الْحَقَّ لِلّٰهِ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٧٥﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 75 | जो वह घड़ते थे | उन से | और गुम हो जाएंगी | सच्ची बात अल्लाह की | कि | सो वह जान लेंगे |

إِنَّ قَارُوْنَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوْسٰى فَبَغٰى عَلَيْهِمْ ۠ وَاٰتَيْنٰهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम ने दिए थे उस को | उन पर | सो उस ने ज़ियादती की | मूसा (अ) की क़ौम | से | था | क़ारून | बेशक |

مِنَ الْكُنُوْزِ مَآ إِنَّ مَفَاتِحَهٗ لَتَنُوْٓأُ بِالْعُصْبَةِ أُولِي الْقُوَّةِ ۤ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ज़ोर आवर | एक जमाअत पर | भारी होतीं | उस की कुन्जियां | इतने कि | ख़ज़ानों से |

إِذْ قَالَ لَهٗ قَوْمُهٗ لَا تَفْرَحْ إِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ ﴿٧٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 76 | ख़ुश होने (इतराने) वाले | पसंद नहीं करता | बेशक अल्लाह | न ख़ुश हो (न इतरा) | उस की क़ौम | उस को | जब कहा |

وَابْتَغِ فِيْمَآ اٰتٰىكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपना हिस्सा | और न भूल तू | आख़िरत का घर | तुझे दिया अल्लाह ने | उस से जो | और तलब कर |

مِنَ الدُّنْيَا وَأَحْسِنْ كَمَآ أَحْسَنَ اللّٰهُ إِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और न चाह | तेरी तरफ़ (साथ) | अल्लाह ने एहसान किया | जैसे | और नेकी कर | दुनिया | से |

الْفَسَادَ فِي الْأَرْضِ ۭ إِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٧٧﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 77 | फ़साद करने वाले | पसंद नहीं करता | बेशक अल्लाह | ज़मीन में | फ़साद |

आप (स) फ़रमा दें भला देखो तो अगर अल्लाह रोज़े क़ियामत तक के लिए तुम पर हमेशा रात रखे तो अल्लाह के सिवा और कौन माबूद है? जो तुम्हारे लिए (दिन की) रोशनी ले आए, तो क्या तुम सुनते नहीं? **(71)**

आप (स) फ़रमा दें भला तुम देखो तो अगर अल्लाह तुम पर रखे रोज़े क़ियामत तक के लिए हमेशा दिन तो अल्लाह के सिवा और कौन माबूद है जो तुम्हारे लिए रात ले आए? कि तुम उस में आराम करो, तो क्या तुम्हें सूझता नहीं? **(72)** और उस ने अपनी रहमत से तुम्हारे लिए रात और दिन को बनाया ताकि उस (रात) में आराम करो और (दिन में) रोज़ी तलाश करो, और ताकि तुम (अल्लाह का) शुक्र करो। **(73)** और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा तो वह कहेगा कहां हैं वह? जिन को तुम मेरा शरीक गुमान करते थे। **(74)** और हम हर उम्मत में से एक गवाह निकाल कर लाएंगे, फिर हम कहेंगे अपनी दलील पेश करो, सो वह जान लेंगे कि सच्ची बात अल्लाह की है, और गुम हो जाएंगी (वह सब बातें) जो वह घड़ते थे। **(75)** बेशक क़ारून था मूसा (अ) की क़ौम से, सो उस ने उन पर ज़ियादती की, और हम ने उस को इतने ख़ज़ाने दिए थे कि उस की कुन्जियां एक ज़ोर आवर जमाअत पर (भी) भारी होतीं थीं, जब उस को उस की क़ौम ने कहा, इतरा नहीं बेशक अल्लाह पसंद नहीं करता इतराने वालों को। **(76)** और जो तुझे अल्लाह ने दिया है उस से आख़िरत का घर तलब कर (आख़िरत की फ़िक्र कर) और अपना हिस्सा न भूल दुनिया से, और नेकी कर जैसे तेरे साथ अल्लाह ने नेकी की है, और तू फ़साद न चाह ज़मीन में, बेशक अल्लाह फ़साद करने वालों को पसंद नहीं करता। **(77)**

कहने लगा यह तो एक इल्म की वजह से मुझे दिया गया है जो मेरे पास है, क्या वह नहीं जानता? कि उस से क़ब्ल अल्लाह ने कितनी जमाअतों को हलाक कर दिया है, जो उस से ज़ियादा सख़्त थीं कुव्वत में, और जियादा थीं जमियत में, उन के गुनाहों की बाबत सवाल न किया जाएगा मुज्रिमों से। (78)
फिर वह (क़ारून) अपनी क़ौम के सामने जेब ओ जीनत के साथ निकला तो उन लोगों ने कहा जो तालिब थे दुनिया की ज़िन्दगी के, जो क़ारून को दिया गया है, ऐ काश ऐसा हमारे पास (भी) होता, बेशक वह बड़ा नसीब वाला है। (79)
और जिन लोगों को इल्म दिया गया था उन्हों ने कहा अफ़्सोस है तुम पर! अल्लाह का सवाब (अजर) बेहतर है उस के लिए जो ईमान लाया और उस ने अच्छा अ़मल किया और वह सब्र करने वालों के सिवा (किसी को) नसीब नहीं होता। (80)
फिर हम ने उस को और उस के घर को जमीन में धंसा दिया, सो उस के लिए कोई जमाअ़त न हुई जो अल्लाह के सिवा (अल्लाह से बचाने में) उस की मदद करती और न वह (ख़ुद) हुआ बदला लेने वालों में से। (81)
और कल तक जो लोग उस के मुक़ाम की तमन्ना करते थे, सुब्ह के वक्त कहने लगे हाए शामत! अपने बन्दो में से अल्लाह जिस के लिए चाहे रिज्क़ फ़राख़ कर देता है और (जिस के लिए चाहे) तंग कर देता है, अगर अल्लाह हम पर एहसान न करता तो अलबत्ता हमें (भी) धंसा देता, हाए शामत! काफिर फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) नहीं पाते। (82)
यह आख़िरत का घर है, हम उन लोगों के लिए तैयार करते हैं जो नहीं चाहते जमीन (मुल्क) में बड़ाई और न फ़साद, और नेक अन्जाम परहेजगारों के लिए है। (83)
जो नेकी के साथ आया उस के लिए उस से बेहतर (सिला) है और जो बुराई के साथ आया, तो उन लोगों को जिन्हों ने बुरे अ़मल किए उस के सिवा बदला न मिलेगा जो वह करते थे। (84)

قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ عِنْدِيْ ؕ اَوَلَمْ يَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि अल्लाह | वह जानता | क्या नहीं | मेरे पास | एक इल्म की वजह से | मुझे दिया गया है | यह तो | कहने लगा |

قَدْ اَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهٖ مِنَ الْقُرُوْنِ مَنْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَّاَكْثَرُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जियादा | कुव्वत में | उस से | वह ज़ियादा सख़्त | जो | जमाअ़तें | से (कितनी) | उस से क़ब्ल | बिला शुबाह हलाक कर दिया है |

جَمْعًا ؕ وَلَا يُسْـَٔلُ عَنْ ذُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٧٨﴾ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी क़ौम | पर (सामने) | फिर वह निकला | 78 | मुजरिम (जमा) | उन के गुनाह | से (बाबत) | और न सवाल किया जाएगा | जमियत |

فِيْ زِيْنَتِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारे पास होता ऐसा | ऐ काश | दुनिया की ज़िन्दगी | चाहते थे (तालिब थे) | वह लोग जो | कहा | अपनी ज़ेब ओ ज़ीनत | में (साथ) |

مَآ اُوْتِيَ قَارُوْنُ ۙ اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿٧٩﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जिन्हें | और कहा | 79 | बड़ा | नसीब वाला | बेशक वह | क़ारून | जो दिया गया |

اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अच्छा | और उस ने अमल किया | ईमान लाया | उस के लिए जो | बेहतर | अल्लाह का सवाब | अफ़्सोस तुम पर | दिया गया था इल्म |

وَلَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ ﴿٨٠﴾ فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ الْاَرْضَ ۗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जमीन | और उस के घर को | उस को | फिर हम ने धंसा दिया | 80 | सब्र करने वाले | सिवाए | और वह नसीब नही होता |

فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ وَمَا كَانَ مِنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| से | और न हुआ वह | अल्लाह के सिवा | मदद करती उस की | कोई जमाअ़त | उस के लिए | सो न हुई |

الْمُنْتَصِرِيْنَ ﴿٨١﴾ وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कहने लगे | कल | उस का मुक़ाम | तमन्ना करते थे | जो लोग | और सुबह के वक्त | 81 | बदला लेने वाले |

وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तंग कर देता है | अपने बन्दे | से | जिस के लिए चाहे | रिज़्क़ | फ़राख़ कर देता है | अल्लाह | हाए शामत |

لَوْلَآ اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ؕ وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फलाह नहीं पाते | हाए शामत | अलबत्ता हमें धंसा देता | हम पर | एहसान करता अल्लाह | यह कि | अगर न |

الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٢﴾ تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ ع ٨ ١١

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन लोगों के लिए जो | हम करते हैं उसे | आख़िरत का घर | यह | 82 | काफ़िर (जमा) |

لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٨٣﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 83 | परहेजगारों के लिए | और अन्जाम (नेक) | और न फसाद | जमीन में | बड़ाई | वह नहीं चाहते |

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बुराई के साथ | आया | और जो | उस से बेहतर | तो उस के लिए | नेकी के साथ | जो आया |

فَلَا يُجْزَى الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 84 | वह करते थे | जो | मगर-सिवा | उन्हों ने बुरे काम किए | उन लोगों की जिन्हों ने | तो बदला न मिलेगा |

اِنَّ الَّذِیْ فَرَضَ عَلَیْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰی مَعَادٍ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | वह (अल्लाह) जिस ने | लाज़िम किया | तुम पर | कुरआन | ज़रूर फेर लाएगा तुम्हें | सब से अच्छी लौटने की जगह |

قُلْ رَّبِّیْۤ اَعْلَمُ مَنْ جَآءَ بِالْهُدٰی وَمَنْ هُوَ فِیْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़रमादें | मेरा रब | ख़ूब जानता है | कौन | आया | हिदायत के साथ | और वह कौन | में |

ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿٨٥﴾ وَمَا كُنْتَ تَرْجُوْۤا اَنْ یُّلْقٰۤی اِلَیْكَ الْكِتٰبُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| खुली गुमराही | 85 | और तुम न थे | उम्मीद रखते | कि उतारी जाएगी | तुम्हारी तरफ़ | किताब |

اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ ظَهِیْرًا لِّلْكٰفِرِیْنَ ﴿٨٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर | रहमत | से | तुम्हारा रब | सो तुम हरगिज़ न होना | मददगार | काफ़िरों के लिए | 86 |

وَلَا یَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰیٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ اِذْ اُنْزِلَتْ اِلَیْكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह तुम्हें हरगिज़ न रोकें | से | अल्लाह के अहकाम | बाद | जबकि | नाज़िल किए गए | तुम्हारी तरफ़ |

وَادْعُ اِلٰی رَبِّكَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿٨٧﴾ وَلَا تَدْعُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और आप बुलाएं | अपने रब की तरफ़ | और तुम हरगिज़ न होना | से | मुश्‌रिकीन | 87 | और न पुकारो तुम |

مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۘ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۟ كُلُّ شَیْءٍ هَالِكٌ اِلَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के सिवा | कोई माबूद | दूसरा | नही कोई माबूद | उस के सिवा | हर चीज़ | फ़ना होने वाली | सिवा |

وقف لازم

ع ٩ ١٢ الثلثة

وَجْهَهٗ ؕ لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٨﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उस की ज़ात | उसी के लीए-का | हुक्म | और उस की तरफ़ | तुम लौट कर जाओगे | 88 |

آيَاتُهَا ٦٩ ۞ (٢٩) سُوْرَةُ الْعَنْكَبُوْتِ ۞ رُكُوْعَاتُهَا ٧

आयात 69 — (29) सूरतुल अन्कबूत — मकड़ी — रुकुआत 7

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓمّٓ ﴿١﴾ اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ یُّتْرَكُوْۤا اَنْ یَّقُوْلُوْۤا اٰمَنَّا وَهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अलिफ़ लाम मीम | 1 | क्या गुमान किया है | लोग | कि वह छोड़ दिए जाएंगे | कि | उन्हों ने कह दिया | हम ईमान लाए | और वह |

لَا یُفْتَنُوْنَ ﴿٢﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَیَعْلَمَنَّ اللّٰهُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह न आज़माए जाएंगे | 2 | और अलबत्ता हम ने आज़माया | वह लोग जो | उन से पहले | तो ज़रूर मालूम करलेगा अल्लाह |

الَّذِیْنَ صَدَقُوْا وَلَیَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِیْنَ ﴿٣﴾ اَمْ حَسِبَ الَّذِیْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो | सच्चे हैं | और वह ज़रूर मालूम करलेगा | झूटे | 3 | क्या गुमान किया है | वह लोग जो |

یَعْمَلُوْنَ السَّیِّاٰتِ اَنْ یَّسْبِقُوْنَا ؕ سَآءَ مَا یَحْكُمُوْنَ ﴿٤﴾ مَنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| करते हैं | बुरे काम | कि | वह हम से बाहर बच निकलेंगे | बुरा है | जो वह फ़ैसला कर रहे हैं | 4 | जो |

كَانَ یَرْجُوْا لِقَآءَ اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ ؕ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ﴿٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह उम्मीद रखता है | अल्लाह से मुलाक़ात की | तो बेशक | अल्लाह का वादा | ज़रूर आने वाला | और वह | सुनने वाला | जानने वाला | 5 |

बेशक जिस अल्लाह ने तुम पर कुरआन (पर अ़मल और तब्लीग़) को लाज़िम किया है वह तुम्हें ज़रूर सब से अच्छी लौटने की जगह फेर लाएगा, आप (स) फ़रमा दें मेरा रब ख़ूब जानता है कि कौन हिदायत के साथ आया और कौन खुली गुमराही में है। (85)
और तुम न थे उम्मीद रखते कि तुम्हारी तरफ़ किताब उतारी जाएगी, मगर तुम्हारे रब की रहमत से (नुज़ूल हुआ), सो तुम हरगिज हरगिज़ न होना काफ़िरों के लिए मददगार। (86)
और वह तुम्हें हरगिज़ अल्लाह के अहकाम से न रोकें, उस के बाद जबकि नाज़िल किए गए तुम्हारी तरफ़, और आप (स) अपने रब की तरफ़ बुलाएं, और हरगिज़ मुश्‌रिकों में से न होना। (87)
और अल्लाह के साथ न पुकारो कोई दूसरा माबूद, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उस की ज़ात के सिवा हर चीज फ़ना होने वाली है, उसी का हुक्म है और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (88)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्‌रबान, रह्‌म करने वाला है
अलिफ़-लाम-मीम। (1)
क्या लोगों ने गुमान कर लिया है कि वह (इतने पर) छोड़ दिए जाएंगे कि उन्हों ने कह दिया कि हम ईमान ले आए हैं, और वह न आजमाए जाएंगे। (2)
और अलबत्ता हम ने उन से पहले लोगों को आज़माया, तो अल्लाह जरूर मालूम कर लेगा उन लोगों को जो सच्चे हैं, और ज़रूर मालूम कर लेगा झूटों को। (3)
जो लोग बुरे काम करते हैं क्या उन्हों ने गुमान किया है कि वह हम से बाहर बच निकलेंगे? बुरा है जो वह फ़ैसला (ख़याल) कर रहे हैं। (4)
जो कोई अल्लाह से मुलाक़ात (मिलने) की उम्मीद रखता है तो बेशक अल्लाह का वादा जरूर आने वाला है और वह सुनने वाला, जानने वाला। (5)

और जो कोई कोशिश करता है तो सिर्फ़ अपनी ज़ात के लिए कोशिश करता है। बेशक अल्लाह अलबत्ता जहान वालों से बेनियाज़ है। (6) और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अ़मल किए अलबत्ता हम ज़रूर उन से उन की बुराइयां दूर कर देंगे, और हम ज़रूर उन्हें (उन के आमाल की) ज़ियादा बेहतर जज़ा देंगे जो वह करते थे। (7) और हम ने इन्सान को माँ बाप से हुस्ने सुलूक का हुक्म दिया है, और अगर वह तुझ से कोशिश करें (ज़ोर डालें) कि तू (किसी को) मेरा शरीक ठहराए जिस का तुझे कोई इल्म नहीं, तो उन का कहा न मान, तुम्हें मेरी तरफ़ लौट कर आना है, तो मैं तुम्हें ज़रूर बतलाऊंगा वह जो तुम करते थे। (8) और जो लोग ईमान लाए, और उन्होंने अच्छे अ़मल किए, हम उन्हें ज़रूर नेक बन्दों में दाख़िल करेंगे। (9) और कुछ लोग कहते हैं, हम अल्लाह पर ईमान लाए, फिर जब अल्लाह की राह में सताए गए तो उन्हों ने लोगों के सताने को बना लिया (समझ लिया) जैसे अल्लाह का अ़ज़ाब हो, और अगर तुम्हारे रब की तरफ़ से कोई मदद आए तो (उस वक़्त) वह ज़रूर कहते हैं बेशक हम तुम्हारे साथ हैं, क्या अल्लाह ख़ूब जानने वाला नहीं जो दुनिया जहान वालों के दिल में है। (10) और अल्लाह ज़रूर मालूम करेगा उन लोगों को जो ईमान लाए और ज़रूर मालूम करेगा मुनाफ़िक़ों को। (11) और काफ़िरों ने ईमान लाने वालों को कहाः तुम हमारी राह चलो, और हम तुम्हारे गुनाह उठा लेंगे, हालांकि वह उन के गुनाह उठाने वाले नहीं कुछ भी, बेशक वह झूटे हैं। (12) और वह अलबत्ता ज़रूर अपने बोझ उठायेंगे और बहुत से बोझ अपने बोझ के साथ, और क़ियामत के दिन अलबत्ता उन से ज़रूर उस (के बारे में) बाज़ पुर्स होगी जो वह झूट घड़ते थे। (13)

وَمَنْ جَاهَدَ فَإِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهِ إِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ عَنِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | अलबत्ता बेनियाज़ | बेशक अल्लाह | अपनी ज़ात के लिए | कोशिश करता है वह | तो सिर्फ़ | कोशिश करता है | और जो |

الْعٰلَمِيْنَ (٦) وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُكَفِّرَنَّ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता हम ज़रूर दूर कर देंगे | और उन्होंने अच्छे अ़मल किए | ईमान लाए | और जो लोग | 6 | जहान वाले |

عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَحْسَنَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (٧)

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | वह करते थे | वह जो | ज़ियादा बेहतर | और हम ज़रूर जज़ा देंगे उन्हें | उन की बुराइयां | उन से |

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ؕ وَاِنْ جَاهَدٰكَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तुझ से कोशिश करें | और अगर | हुस्ने सुलूक का | मां बाप से | इन्सान | और हम ने हुक्म दिया |

لِتُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ؕ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तो कहा न मान उन का | उस का कोई इल्म | तुझे | जिस का नहीं | कि तू शरीक ठहराए मेरा |

اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (٨) وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह ईमान लाए | और जो लोग | 8 | तुम करते थे | वह जो | तो मैं ज़रूर बतलाऊंगा तुम्हें | मेरी तरफ़ तुम्हें लौट कर आना |

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصّٰلِحِيْنَ (٩) وَمِنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और से-कुछ | 9 | नेक बन्दों में | हम उन्हें ज़रूर दाख़िल करेंगे | अच्छे | और उन्हों ने अमल किए |

النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَاۤ اُوْذِيَ فِي اللّٰهِ جَعَلَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बना लिया | अल्लाह की (राह) में | सताए गए | फिर जब | अल्लाह पर | हम ईमान लाए | जो कहते हैं | लोग |

فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللّٰهِ ؕ وَلَئِنْ جَآءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे रब से | कोई मदद | आए | और अगर | जैसे अ़ज़ाब अल्लाह का | लोग | सताना |

لَيَقُوْلُنَّ اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ؕ اَوَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِيْ صُدُوْرِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सीनों (दिल) में | वह जो | ख़ूब जानने वाला | क्या नहीं है अल्लाह | तुम्हारे साथ | बेशक हम थे | तो वह ज़रूर कहते हैं |

الْعٰلَمِيْنَ (١٠) وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और अलबत्ता ज़रूर मालूम करेगा | ईमान लाए | वह लोग जो | और अलबत्ता ज़रूर मालूम करेगा अल्लाह | 10 | जहान वाले |

الْمُنٰفِقِيْنَ (١١) وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तुम चलो | उन लोगों को जो ईमान लाए | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | और कहा | 11 | मुनाफ़िक़ (जमा) |

سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ ؕ وَمَا هُمْ بِحٰمِلِيْنَ مِنْ خَطٰيٰهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के गुनाह | से | उठाने वाले | हालांकि वह नहीं | तुम्हारे गुनाह | और हम उठा लेंगे | हमारी राह |

مِّنْ شَيْءٍ ؕ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ (١٢) وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| साथ | और बहुत से बोझ | अपने बोझ | और वह अलबत्ता ज़रूर उठायेंगे | 12 | अलबत्ता झूटे | बेशक वह | कुछ |

اَثْقَالِهِمْ وَلَيُسْـَٔلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ (١٣) ع ١٣ / ١٢

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 13 | वह झूट घड़ते थे | उस से जो | क़ियामत के दिन | और अलबत्ता उन से ज़रूर बाज़ पुर्स होगी | अपने बोझ |

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِيْهِمْ اَلْفَ سَنَةٍ

और बेशक हम ने भेजा | नूह (अ) को | उस की क़ौम की तरफ़ | तो वह रहे | उन में | हजार साल

اِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا ؕ فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١٤﴾

मगर कम | पचास | साल | फिर उन्हें आ पकड़ा | तूफ़ान | और वह | ज़ालिम थे | 14

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَجَعَلْنٰهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٥﴾

फिर हम ने उसे बचा लिया | और कश्ती वालों को | और उसे बनाया | एक निशानी | जहान वालों के लिए | 15

وَاِبْرٰهِيْمَ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ ؕ ذٰلِكُمْ

और इब्राहीम (अ) | जब उस ने कहा | अपनी क़ौम को | तुम इबादत करो अल्लाह की | और उस से डरो | यह

خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٦﴾ اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ

बेहतर तुम्हारे लिए | अगर | तुम जानते हो | 16 | इस के सिवा नहीं | तुम परस्तिश करते हो | से

دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا وَّتَخْلُقُوْنَ اِفْكًا ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ

अल्लाह के सिवा | बुतों की | और तुम घड़ते हो | झूट | बेशक | वह जिन की तुम | परस्तिश करते हो

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوْا

अल्लाह के सिवा | वह मालिक नहीं | तुम्हारे लिए | रिज़्क़ के | पस तुम तलाश करो

عِنْدَ اللّٰهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوْهُ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ اِلَيْهِ

अल्लाह के पास | रिज़्क़ | और उस की इबादत करो | और शुक्र करो | उस का | उस की तरफ़

تُرْجَعُوْنَ ﴿١٧﴾ وَاِنْ تُكَذِّبُوْا فَقَدْ كَذَّبَ اُمَمٌ

तुम्हें लौट कर जाना है | 17 | और अगर | तुम झुटलाओगे | तो झुटला चुकी है | बहुत सी उम्मतें

مِّنْ قَبْلِكُمْ ؕ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٨﴾

तुम से पहली | और नहीं | पर (ज़िम्मे) | रसूल | मगर | पहुँचा देना | साफ़ तौर पर | 18

اَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللّٰهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ

क्या नही | देखा उन्हों ने | कैसे | इब्तिदा करता है अल्लाह | पैदाइश | फिर दोबारा पैदा करेगा उस को

اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿١٩﴾ قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ

बेशक | यह | अल्लाह पर | आसान | 19 | फ़रमा दें | चलो फिरो | ज़मीन में

فَانْظُرُوْا كَيْفَ بَدَاَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللّٰهُ يُنْشِئُ

फिर देखो तुम | कैसे इब्तिदा की | पैदाइश | फिर | अल्लाह | उठाएगा

النَّشْاَةَ الْاٰخِرَةَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٠﴾

उठान | आख़री (दूसरी) | बेशक अल्लाह | पर | हर शै | कुदरत रखने वाला | 20

يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ ﴿٢١﴾

वह अज़ाब देता है | जिस को चाहे | और रहम फ़रमाता है | जिस पर चाहे | और उसी की तरफ़ | तुम लौटाए जाओगे | 21

बेशक हम ने नूह (अ) को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा, तो वह उन में पचास साल कम हज़ार बरस रहे, फिर उन्हें (क़ौमे नूह अ को) तूफ़ान ने आ पकड़ा, और वह जालिम थे। (14)

फिर हम ने उसे और कश्ती वालों को बचा लिया और उस (कश्ती) को जहान वालों के लिए एक निशानी बनाया। (15)

और याद करो जब इब्राहीम (अ) ने अपनी क़ौम को कहा तुम अल्लाह की इबादत करो और उस से डरो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। (16)

इस के सिवा नहीं कि तुम परस्तिश करते हो अल्लाह के सिवा बुतों की, और तुम झूट घड़ते हो, बेशक अल्लाह के सिवा तुम जिन की परस्तिश करते हो वह तुम्हारे लिए रिज़्क़ के मालिक नहीं, पस तुम अल्लाह के पास (से) रिज़्क़ तलाश करो, और तुम उस की इबादत करो और उस का शुक्र करो, और उसी की तरफ़ तुम को लौट कर जाना है। (17)

और अगर तुम झुटलाओगे तो झुटला चुकी हैं बहुत सी उम्मतें तुम से पहली (भी), और रसूल (स) के ज़िम्मे नहीं मगर साफ़ तौर पर पहुँचा देना। (18)

क्या उन्हों ने नहीं देखा कैसे अल्लाह पैदाइश की इब्तिदा करता है! फिर दोबारा उस को पैदा करेगा, बेशक अल्लाह पर यह आसान है। (19)

आप (स) फ़रमा दें (दुनिया में) चलो फिरो, फिर देखो उस ने कैसी पैदाइश की इब्तिदा की फिर अल्लाह उठाएगा दूसरी उठान (दूसरी बार), बेशक अल्लाह हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (20)

वह जिस को चाहे अजाब देता है और जिस पर चाहे रहम फ़रमाता है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (21)

और तुम ज़मीन में आजिज़ करने वाले नहीं और न आस्मान में, और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई हिमायती है और न कोई मददगार। **(22)** और जिन लोगों ने अल्लाह की निशानियों का और उस की मुलाक़ात का इन्कार किया यही लोग मेरी रहमत से नाउम्मीद हुए, और यही हैं जिन के लिए अज़ाब है दर्दनाक। **(23)** सो उस की क़ौम का जवाब इस के सिवा न था कि उसे क़त्ल कर डालो या उस को जला दो, सो अल्लाह ने उस को आग से बचा लिया। बेशक इस में उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ईमान रखते हैं। **(24)** और इब्राहीम (अ) ने कहा: बेशक तुम ने अल्लाह के सिवा बुतों को दुनिया की ज़िन्दगी में आपस की दोस्ती (की वजह) बना लिए हो, फिर क़ियामत के दिन तुम में से एक दूसरे का मुक़ालिफ़ हो जाएगा और तुम में से एक दूसरे पर लानत (मलामत) करेगा, और तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है, और तुम्हारे लिए कोई मददगार नहीं। **(25)** पस उस पर लूत (अ) ईमान लाया और उस ने कहा बेशक मैं अपने रब की तरफ़ हिज्रत करने वाला (वतन छोड़ने वाला हूँ), बेशक वही ग़ालिब हिक्मत वाला है। **(26)** और हम ने उस (इब्राहीम अ) को अता फ़रमाए इस्हाक़ (अ) और याक़ूब (अ) और हम ने उस की औलाद में नुबुव्वत और किताब रखी, और हम ने उस को उस का अजर दिया दुनिया में और बेशक वह आख़िरत में अलबत्ता नेकोकारों में से है। **(27)** और (हम ने भेजा) लूत (अ) को, याद करो जब उस ने कहा अपनी क़ौम को, बेशक तुम बेहयाई का (ऐसा काम) करते हो जो तुम से पहले जहान वालों में से किसी ने नहीं किया। **(28)**

وَمَآ اَنۡتُمۡ بِمُعۡجِزِيۡنَ فِى الۡاَرۡضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ وَمَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं | आस्मान में | और न | ज़मीन में | आजिज़ करने वाले | और न हो तुम |

لَكُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مِنۡ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيۡرٍ ﴿٢٢﴾ وَالَّذِيۡنَ ع ٢ ١٢

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह लोग जिन्हों ने | 22 | कोई मददगार | और न | कोई हिमायती | अल्लाह के सिवा | तुम्हारे लिए |

كَفَرُوۡا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَلِقَآئِهٖۤ اُولٰٓئِكَ يَئِسُوۡا مِنۡ رَّحۡمَتِىۡ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मेरी रहमत से | वह नाउम्मीद हुए | यही हैं | और उस की मुलाक़ात | अल्लाह की निशानियों का | इन्कार किया |

وَاُولٰٓئِكَ لَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿٢٣﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوۡمِهٖۤ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की क़ौम | जवाब | सो न था | 23 | दर्दनाक | अज़ाब | उन के लिए | और यही हैं |

اِلَّاۤ اَنۡ قَالُوا اقۡتُلُوۡهُ اَوۡ حَرِّقُوۡهُ فَاَنۡجٰهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आग से | सो बचा लिया उस को अल्लाह | जला दो उस को | या | क़त्ल करो उस को | उन्हों ने कहा | सिवाए यह कि |

اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ يُّؤۡمِنُوۡنَ ﴿٢٤﴾ وَقَالَ اِنَّمَا اتَّخَذۡتُمۡ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम ने बना लिए | और (इब्राहीम अ ने) कहा इस के सिवा नहीं | 24 | जो ईमान रखते हैं | उन लोगों के लिए | निशानियाँ हैं | इस में | बेशक |

مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ اَوۡثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ بَيۡنِكُمۡ فِى الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا ۚ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| दुनिया की ज़िन्दगी में | अपने दर्मियान (आपस में) | दोस्ती | बुत (जमा) | अल्लाह के सिवा |

ثُمَّ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ يَكۡفُرُ بَعۡضُكُمۡ بِبَعۡضٍ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बाज़ (दूसरे) का | तुम में से बाज़ (एक) | काफ़िर (मुख़ालिफ़) हो जाएगा | क़ियामत के दिन | फिर |

وَّيَلۡعَنُ بَعۡضُكُمۡ بَعۡضًا ۙ وَّمَاۡوٰٮكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمۡ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं तुम्हारे लिए | जहन्नम | और तुम्हारा ठिकाना | बाज़ (दूसरे) का | तुम में से बाज़ (एक) | और लानत करेगा |

مِّنۡ نّٰصِرِيۡنَ ﴿٢٥﴾ فَاٰمَنَ لَهٗ لُوۡطٌ ۘ وَقَالَ اِنِّىۡ مُهَاجِرٌ وقف لازم

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हिज्रत करने वाला | बेशक मैं | और उस ने कहा | लूत (अ) | उस पर | पस ईमान लाया | 25 | कोई मददगार |

اِلٰى رَبِّىۡ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ﴿٢٦﴾ وَوَهَبۡنَا لَهٗۤ اِسۡحٰقَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस्हाक़ (अ) | उस को | और हम ने अता फ़रमाए | 26 | हिक्मत वाला | ज़बरदस्त ग़ालिब | वह | बेशक वह | अपने रब की तरफ़ |

وَيَعۡقُوۡبَ وَجَعَلۡنَا فِىۡ ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالۡكِتٰبَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और किताब | नुबुव्वत | उस की औलाद में | और हम ने रखी | और याक़ूब (अ) |

وَاٰتَيۡنٰهُ اَجۡرَهٗ فِى الدُّنۡيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِى الۡاٰخِرَةِ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आख़िरत में | और बेशक वह | दुनिया में | उस का अजर | और हम ने दिया उस को |

لَمِنَ الصّٰلِحِيۡنَ ﴿٢٧﴾ وَلُوۡطًا اِذۡ قَالَ لِقَوۡمِهٖۤ اِنَّكُمۡ لَتَاۡتُوۡنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम करते हो | बेशक तुम | अपनी क़ौम को | (याद करो) जब उस ने कहा | और लूत (अ) | 27 | अलबत्ता नेकोकारों में से |

الۡفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمۡ بِهَا مِنۡ اَحَدٍ مِّنَ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿٢٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 28 | जहान वाले | से | किसी ने | उस को | नहीं पहले किया तुम से | बेहयाई |

أَىِٕنَّكُمْ لَتَأْتُوْنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُوْنَ السَّبِيْلَ ۙ وَتَأْتُوْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और तुम करते हो | राह | और मारते हो | मर्द (जमा) | अलबत्ता तुम करते हो | क्या तुम वाक़ई |

فِيْ نَادِيْكُمُ الْمُنْكَرَ ۭ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने कहा | कि | सिवाए | उस की क़ौम का जवाब | सो न था | नाशाइस्ता हरकात | अपनी महफ़िलों में |

ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٢٩ قَالَ رَبِّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ मेरे रब | कहा | 29 | सच्चे लोग | से | अगर तू है | अल्लाह का अज़ाब | ले आ हम पर |

ع ٣ ٨ ١٥ انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِيْنَ ۝٣٠ وَلَمَّا جَاۗءَتْ رُسُلُنَآ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) | आए | और जब | 30 | मुफ़्सिद (जमा) | क़ौम लोग | पर | मेरी मदद फ़रमा |

اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مُهْلِكُوْٓا اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस बस्ती | लोग | हलाक करने वाले | बेशक हम | उन्हों ने कहा | ख़ुशख़बरी ले कर | इब्राहीम (अ) |

اِنَّ اَهْلَهَا كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ۝٣١ قَالَ اِنَّ فِيْهَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बेशक उस में | इब्राहीम (अ) ने कहा | 31 | ज़ालिम (बड़े शरीर) हैं | उस के लोग | बेशक |

لُوْطًا ۭ قَالُوْا نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَنْ فِيْهَا ڭ لَنُنَجِّيَنَّهٗ وَاَهْلَهٗٓ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उस के घर वाले | अलबत्ता हम बचा लेंगे उस को | उस को जो उस में | ख़ूब जानते हैं | हम | वह बोले | लूत (अ) |

اِلَّا امْرَاَتَهٗ ڭ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝٣٢ وَلَمَّآ اَنْ جَاۗءَتْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आए | कि | और जब | 32 | पीछे रह जाने वाले | से | वह है | उस की बीवी | सिवा |

رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْۗءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह बोले | दिल में | उन से | और तंग हुआ | उन से | परेशान हुआ | लूत (अ) के पास | हमारे फ़रिश्ते |

لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ ۣ اِنَّا مُنَجُّوْكَ وَاَهْلَكَ اِلَّا

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| सिवा | और तेरे घर वाले | बेशक हम बचाने वाले हैं तुझे | और न ग़म खाओ | डरो नहीं तुम |

امْرَاَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝٣٣ اِنَّا مُنْزِلُوْنَ عَلٰٓي اَهْلِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लोग | पर | नाज़िल करने वाले | बेशक हम | 33 | पीछे रह जाने वाले | से | वह है | तेरी बीवी |

هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاۗءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝٣٤

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 34 | वह बदकारी करते थे | इस वजह से कि | आस्मान से | अज़ाब | इस बस्ती |

وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَآ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝٣٥ وَاِلٰى مَدْيَنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और मदयन की तरफ़ | 35 | वह अक़्ल रखते हैं | लोगों के लिए | कुछ वाज़ेह निशानी | उस से | और अलबत्ता हम ने छोड़ा |

اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۙ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और उम्मीद वार रहो | तुम इबादत करो अल्लाह की | ऐ मेरी क़ौम | पस उस ने कहा | शुऐब (अ) को | उन का भाई |

الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝٣٦

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 36 | फ़साद करते हुए (मचाते) | ज़मीन में | और न फिरो | आख़िरत का दिन |

क्या तुम वाक़ई मर्दों से (फ़ेले बद) करते हो, और राह मारते (डाके डालते) हो, और तुम अपनी महफ़िलों में करते हो नाशायस्ता हरकात, सो उस की क़ौम का जवाब इस के सिवा न था कि उन्हों ने कहा हम पर अल्लाह का अज़ाब ले आ, अगर तू है सच्चे लोगों में से। (29)

लूत (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! मुफ़्सिद लोगों पर मेरी मदद फ़रमा। (30)

और जब आए हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम (अ) के पास ख़ुशख़बरी ले कर, उन्हों ने कहा बेशक हम उस बस्ती के लोगों को हलाक करने वाले हैं, बेशक उस (बस्ती) के लोग बड़े शरीर हैं। (31)

इब्राहीम (अ) ने कहा बेशक उस (बस्ती) में लूत (अ) (भी हैं), वह (फ़रिश्ते) बोले हम ख़ूब जानते हैं उस को जो उस (बस्ती) में हैं, अलबत्ता हम उस को और उस के घर वालों को ज़रूर बचा लेंगे सिवाए उस की बीवी, वह पीछे रह जाने वालों में से है। (32)

और जब हमारे फ़रिश्ते लूत (अ) के पास आए वह उन (के आने) से परेशान हुआ, उन की वजह से दिल तंग हुआ, और वह बोले डरो नहीं और ग़म न खाओ, बेशक हम तुझे और तेरे घर वालों को बचाने वाले हैं सिवाए तेरी बीवी के, वह पीछे रह जाने वालों में से है। (33)

बेशक हम इस बस्ती के लोगों पर आस्मान से अज़ाब नाज़िल करने वाले हैं, इस वजह से कि वह बदकारी करते थे। (34)

और अलबत्ता हम ने उस (बस्ती) से कुछ वाज़ेह निशान उन लोगों के लिए छोड़े (बाक़ी रखे) जो अक़्ल रखते हैं। (35)

और मदयन (वालों) की तरफ़ उन के भाई शुऐब (अ) को भेजा पस उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो और आख़िरत के दिन के उम्मीद वार रहो, और ज़मीन में फ़साद मचाते न फिरो। (36)

फिर उन्हों ने उस को झुटलाया तो उन को आ पकड़ा ज़लज़ले ने, पस वह सुबह को अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। (37) और (हम ने हलाक किया) आद और समूद को, और तहक़ीक़ तुम पर उन के रहने के मुक़ामात वाज़ेह हो गए हैं, और शैतान ने उन के आमाल उन के लिए (उन्हें) भले कर दिखाए फिर उस ने उन्हें राह (हक़) से रोक दिया, हालांकि वह समझ बूझ वाले थे। (38) और (हम ने हलाक किया) क़ारून और फ़िरऔन, और हामान को, और उन के पास मूसा (अ) खुली निशानियों के साथ आए तो उन्हों ने तकब्बुर किया मुल्क में और वह बच कर भाग निकलने वाले न थे। (39) पस हम ने हर एक को उस के गुनाह पर पकड़ा तो उन में से (बाज़ वह हैं) जिन पर हम ने पत्थरों की बारिश भेजी, और उन में से बाज़ को चिंघाड़ ने आ पकड़ा, और उन में से बाज को हम ने ज़मीन में धंसा दिया, और उन में से बाज को हम ने ग़र्क़ कर दिया, और अल्लाह (ऐसा) नहीं कि उन पर ज़ुल्म करता बल्कि वह ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। (40) उन लोगों की मिसाल जिन्हों ने बनाए अल्लाह के सिवा मददगार, मकड़ी की मानिंद है, उस ने एक घर बनाया, और घरों में सब से कमज़ोर (बोदा) घर मकड़ी का है, काश वह जानते होते। (41) बेशक अल्लाह जानता है जो वह पुकारते हैं उस के सिवा जिस चीज़ को भी, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला। (42) और यह मिसालें हम बयान करते हैं, लोगों के लिए, और उन्हें नहीं समझते जानने वालों के सिवा। (43) और अल्लाह ने आस्मान और ज़मीन को पैदा किया हक़ के साथ, बेशक उस में ईमान वालों के लिए निशानी है। (44)

فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अपने घर में | पस वह सुबह को हो गए | ज़लज़ला | तो आ पकड़ा उन्हें | फिर उन्हों ने झुटलाया उस को |

جٰثِمِيْنَ ﴿٣٧﴾ وَعَادًا وَّثَمُوْدَاۡ وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के रहने के मुक़ामात | तुम पर | वाज़ेह हो गए हैं | और तहक़ीक़ | और समूद | और आद | 37 | औन्धे पड़े हुए |

وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| राह | से | फिर रोक दिया उन्हें | उन के आमाल | शैतान | उन के लिए | और भले कर दिखाए |

وَكَانُوْا مُسْتَبْصِرِيْنَ ﴿٣٨﴾ وَقَارُوْنَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और अलबत्ता आए उन के पास | और हामान | और फ़िरऔन | और क़ारून | 38 | समझ बूझ वाले | हालांकि वह थे |

مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْاَرْضِ وَمَا كَانُوْا

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और वह न थे | ज़मीन (मुल्क) में | तो उन्हों ने तकब्बुर किया | खुली निशानियों के साथ | मूसा (अ) |

سٰبِقِيْنَ ﴿٣٩﴾ فَكُلًّا اَخَذْنَا بِذَنْۢبِهٖ فَمِنْهُمْ مَّنْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस पर | हम ने भेजी | जो | तो उन में से | उस के गुनाह पर | हम ने पकड़ा | पस हर एक | 39 | बच कर भाग निकलने वाले |

حَاصِبًا ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने धंसा दिया | जो | और उन में से | चिंघाड़ | उस को पकड़ा | जो (बाज़) | और उन में से | पत्थरों की बारिश |

بِهِ الْاَرْضَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़ुल्म करता उन पर | अल्लाह | और नहीं है | जो हम ने ग़र्क़ कर दिया | और उन में से | ज़मीन में | उस को |

وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٠﴾ مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बनाए | वह लोग जिन्हों ने | मिसाल | 40 | ज़ुल्म करते | ख़ुद अपनी जानों पर | वह थे | और लेकिन (बल्कि) |

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ ۚ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ۗ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एक घर | उस ने बनाया | मकड़ी | मानिंद | मददगार | अल्लाह के सिवा |

وَاِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾ وقف لازم

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 41 | जानते | काश होते वह | मकड़ी का | घर है | घरों में | सब से कमज़ोर | और बेशक |

اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ۗ وَهُوَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह | कोई चीज़ | उस के सिवा | से | जो वह पुकारते हैं | जानता है | बेशक अल्लाह |

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٤٢﴾ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| लोगों के लिए | हम बयान करते हैं | मिसालें | और यह | 42 | हिक्मत वाला | ग़ालिब ज़बरदस्त |

وَمَا يَعْقِلُهَآ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आस्मान (जमा) | पैदा किए अल्लाह ने | 43 | जानने वाले | सिवा | और नहीं समझते उन्हें |

وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٤﴾ ع ٤ ١٦

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 44 | ईमान वालों के लिए | अलबत्ता निशानी | उस में | बेशक | हक़ के साथ | और ज़मीन |

الجزء ٢١

أُتْلُ مَآ أُوْحِىَ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَأَقِمِ الصَّلٰوةَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नमाज़ | और क़ाइम करें | किताब से | आप (स) की तरफ़ | वहि की गई | जो | आप (स) पढ़ें |

إِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ۗ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ أَكْبَرُ ۗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सब से बड़ी बात | और अलबत्ता अल्लाह की याद | और बुराई | बेहयाई | से | रोकती है | नमाज़ | बेशक |

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَلَا تُجَادِلُوْٓا أَهْلَ الْكِتٰبِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अहले किताब | और तुम न झगड़ो | 45 | जो तुम करते हो | जानता है | और अल्लाह |

إِلَّا بِالَّتِىْ هِىَ أَحْسَنُ ۖ إِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ وَقُوْلُوْٓا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और तुम कहो | उन (में) से | जिन लोगों ने ज़ुल्म किया | सिवाए | वह बेहतर | मगर उस तरीक़े से जो |

أٰمَنَّا بِالَّذِىْٓ أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَأُنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَإِلٰهُنَا وَإِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक | और तुम्हारा माबूद | और हमारा माबूद | तुम्हारी तरफ़ | और नाज़िल किया गया | हमारी तरफ़ | नाज़िल किया गया | हम ईमान लाए उस पर जो |

وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَكَذٰلِكَ أَنْزَلْنَآ إِلَيْكَ الْكِتٰبَ ۗ فَالَّذِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस जिन लोगों को | किताब | हम ने नाज़िल की तुम्हारी तरफ़ | और उसी तरह | 46 | फ़रमाबरदार (जमा) | उस के | और हम |

أٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ وَمِنْ هٰٓؤُلَآءِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ ۗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस पर | बाज़ ईमान लाते हैं | और इन अहले मक्का से | उस पर | वह ईमान लाते हैं | किताब | हम ने दी उन्हें |

وَمَا يَجْحَدُ بِأٰيٰتِنَآ إِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| इस से क़ब्ल | आप (स) पढ़ते थे | और न | 47 | काफ़िर (जमा) | मगर (सिर्फ़) | हमारी आयतों का | और वह नहीं इन्कार करते |

مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ إِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٤٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 48 | हक़ नाशनास | अलबत्ता शक करते | उस (सूरत) में | अपने दाएं हाथ से | और न उसे लिखते थे | कोई किताब |

بَلْ هُوَ أٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِىْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْعِلْمَ ۗ وَمَا يَجْحَدُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं इन्कार करते | इल्म दिया गया | वह लोग जिन्हें | सीनों में | वाज़ेह आयतें | बल्कि वह |

بِأٰيٰتِنَآ إِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَقَالُوْا لَوْلَآ أُنْزِلَ عَلَيْهِ أٰيٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۗ قُلْ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप (स) फ़रमा दें | उस के रब से | निशानियां | उस पर | नाज़िल की गई | क्यों न | और वह बोले | 49 | ज़ालिम (जमा) | मगर | हमारी आयतों का |

إِنَّمَا الْأٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ ۗ وَإِنَّمَآ أَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٥٠﴾ أَوَلَمْ يَكْفِهِمْ أَنَّآ أَنْزَلْنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि हम ने नाज़िल की | क्या उन के लिए काफ़ी नहीं | 50 | साफ़ साफ़ | डराने वाला | और इस के सिवा नहीं कि मैं | अल्लाह के पास | निशानियां | इस के सिवा नहीं |

عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ۗ إِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन लोगों के लिए | और नसीहत | अलबत्ता रहमत है | उस में | बेशक | उन पर | पढ़ी जाती है | किताब | आप (स) पर |

يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِىْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ ع ٥/٧/١

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मानों में | जो | वह जानता है | गवाह | और तुम्हारे दरमियान | मेरे दरमियान | आप (स) फ़रमा दें कि काफ़ी है अल्लाह | 51 | वह ईमान लाते हैं |

وَالْأَرْضِ ۗ وَالَّذِيْنَ أٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ أُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٥٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 52 | बड़ घाटा पाने वाले | वही हैं | अल्लाह के | और वह मुन्किर हुए | बातिल पर | ईमान लाए | और जो लोग | और ज़मीन में |

आप (स) पढ़ें जो आप (स) की तरफ़ किताब वहि की गई है, और नमाज़ क़ाइम करें, बेशक नमाज़ रोकती है बेहयाई और बुराई से, और अलबत्ता अल्लाह की याद सब से बड़ी बात है, और अल्लाह जानता है जो तुम करते हो। (45) और तुम अहले किताब से न झगड़ो मगर उस तरीक़े से जो बेहतर हो, सिवाए उन में से जिन लोगों ने ज़ुल्म किया, और तुम कहो हम उस पर ईमान लाए जो हमारी तरफ़ नाज़िल किया गया और जो तुम्हारी तरफ़ नाज़िल किया गया, और हमारा माबूद और तुम्हारा माबूद एक है, और हम उस के फ़रमांबरदार हैं। (46) और उसी तरह हम ने तुम्हारी तरफ़ किताब नाज़िल की, पस जिन लोगों को हम ने किताब दी है वह ईमान लाते हैं उस पर, और अहले मक्का में से बाज़ उस पर ईमान लाते हैं, और हमारी आयतों से इन्कार सिर्फ़ काफ़िर करते हैं। (47) और आप (स) इस (नुज़ूले क़ुरआन) से क़ब्ल कोई किताब न पढ़ते थे और न अपने दाएं हाथ से उसे लिखते थे। उस सूरत में अलबत्ता हक़ नाशनास शक करते। (48) बल्कि यह वाज़ेह आयतें उन के सीनों में महफ़ूज़ हैं जिन्हें इल्म दिया गया, और हमारी आयतों का इन्कार सिर्फ़ ज़ालिम करते हैं। (49) और वह बोले उस पर उस के रब की तरफ़ से निशानियां (मोजिज़ात) क्यों न नाज़िल की गईं, आप (स) फ़रमा दें इस के सिवा नहीं कि निशानियां (मोजिज़ात) अल्लाह के पास हैं और इस के सिवा नहीं कि मैं साफ़ साफ़ डराने वाला हूं। (50) क्या उन लोगों के लिए काफ़ी नहीं कि हम ने आप (स) पर किताब नाज़िल की जो उन पर पढ़ी जाती है, बेशक उस में उन लोगों के लिए रहमत और नसीहत है जो ईमान लाते हैं। (51) आप (स) फ़रमा दें अल्लाह काफ़ी है मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाह, वह जानता है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है, और जो लोग बातिल पर ईमान लाए और वह अल्लाह के मुन्किर हुए वही लोग हैं घाटा पाने वाले। (52)

और वह आप (स) से अज़ाब की जल्दी करते हैं, और अगर मीआ़द न होती मुक़र्रर, तो उन पर अ़ज़ाब आ चुका होता, और वह उन पर ज़रूर अचानक आएगा और उन्हें ख़बर (भी) न होगी। (53)
और वह आप (स) से अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं, और बेशक जहन्नम काफ़िरों को घेरे हुए है। (54)
जिस दिन उन्हें ढांप लेगा अ़ज़ाब, उन के ऊपर से और उन के पाऊँ के नीचे से, और (अल्लाह तआ़ला) कहेगा (उस का मज़ा) चखो जो तुम करते थे। (55)
ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए हो! बेशक मेरी ज़मीन वसीअ़ है, पस तुम मेरी ही इबादत करो। (56)
हर शख़्स को मौत (का मज़ा) चखना है, फिर तुम हमारी तरफ़ लौटाए जाओगे। (57)
और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए, हम ज़रूर उन्हें जगह देंगे जन्नत के बाला ख़ानों में, उस के नीचे नहरें जारी हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे, क्या ही अच्छा अजर है काम करने वालों का। (58)
जिन लोगों ने सब्र किया, और वह अपने रब पर भरोसा करते हैं। (59)
और बहुत से जानवर हैं (जो) नहीं उठाए (फिरते) अपनी रोज़ी, अल्लाह उन्हें रोज़ी देता है और तुम्हें भी, और वह सुनने वाला, जानने वाला है। (60)
और अलबत्ता अगर तुम उन से पूछो किस ने ज़मीन और आस्मानों को बनाया? और सूरज और चाँद को काम में लगाया? तो वह ज़रूर कहेंगे "अल्लाह", फिर वह कहाँ उलटे फिरे जाते हैं? (61)
अल्लाह अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहे रोज़ी फ़राख़ करता है और (जिस के लिए चाहे) उस के लिए तंग कर देता है, बेशक अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है (62)
और अलबत्ता अगर तुम उन से पूछोः किस ने आस्मान से पानी उतारा? फिर उस से ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िन्दा कर दिया, वह ज़रूर कहेंगे "अल्लाह"। आप (स) फ़रमा दें तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, लेकिन उन में अक्सर लोग अ़क़्ल से काम नहीं लेते। (63)

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ۗ وَلَوْ لَآ اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ ۗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अ़ज़ाब | तो आ चुका होता उन पर | मुक़र्रर | मीआ़द | और अगर न | अ़ज़ाब की | और वह आप (स) से जल्दी करते हैं |

وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٣﴾ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ۗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अज़ाब की | आप (स) से जल्दी करते हैं | 53 | उन्हें ख़बर न होगी | और वह | अचानक | और ज़रूर उन पर आएगा |

وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ ۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٤﴾ يَوْمَ يَغْشٰهُمُ الْعَذَابُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ़ज़ाब | उन्हें ढांप लेगा | (जिस) दिन | 54 | काफ़िरों को | अलबत्ता घेरे हुए | जहन्नम | और बेशक |

مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَيَقُوْلُ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 55 | तुम करते थे | जो | चखो तुम | और वह कहेगा | उन के पाऊँ | और नीचे से | उन के ऊपर से |

يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ اَرْضِيْ وَاسِعَةٌ فَاِيَّايَ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 56 | पस तुम इबादत करो | पस मेरी ही | वसीअ़ | मेरी ज़मीन | बेशक | जो ईमान लाए | ऐ मेरे बन्दो |

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۗ ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो लोग ईमान लाए | 57 | तुम लौटाए जाओगे | फिर हमारी तरफ़ | मौत | चखना | हर शख़्स |

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِيْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जारी हैं | बाला ख़ाने | जन्नत | से-के | हम ज़रूर उन्हें जगह देंगे | नेक | और उन्हों ने अमल किए |

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿٥٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 58 | काम करने वाले | (क्या ही) अच्छा अजर है | उस में | वह हमेशा रहेंगे | नहरें | उस के नीचे से |

الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं उठाते | जानवर जो | और बहुत से | 59 | वह भरोसा करते हैं | और वह अपने रब पर | जिन लोगों ने सब्र किया |

رِزْقَهَا ۖ اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ ۖ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٠﴾ وَلَئِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अलबत्ता अगर | 60 | जानने वाला | सुनने वाला | और वह | और तुम्हें भी | उन्हें रोज़ी देता है | अल्लाह | अपनी रोज़ी |

سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और चाँद | सूरज | और काम में लगाया | और ज़मीन | आस्मान (जमा) | किस ने बनाया | तुम पूछो उन से |

لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۚ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٦١﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिस के लिए वह चाहता है | रोज़ी | फ़राख़ करता है | अल्लाह | 61 | वह उलटे फिरे जाते हैं | फिर कहाँ | अल्लाह | वह ज़रूर कहेंगे |

مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ۗ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٦٢﴾ وَلَئِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अलबत्ता अगर | 62 | जानने वाला | हर चीज़ का | बेशक अल्लाह | उस के लिए | और तंग कर देता है | अपने बन्दों में से |

سَاَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ مِنْ بَعْدِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बाद | ज़मीन | उस से | फिर ज़िन्दा कर दिया | पानी | आस्मान से | उतारा | किस ने | तुम उन से पूछो |

مَوْتِهَا لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۗ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ۗ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٣﴾ ع ٦ ١٢ ٢

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 63 | वह अ़क़्ल से काम नहीं लेते | उन में अक्सर लोग | लेकिन | तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए | आप (स) कह दें | अल्लाह | अलबत्ता वह कहेंगे | उस का मरना |

وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ؕ وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आख़िरत का घर | और बेशक | और कूद | सिवाए खेल | दुनिया की ज़िन्दगी | यह | और नहीं |

وقف لازم
لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٤﴾ فَاِذَا رَكِبُوْا فِي الْفُلْكِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कश्ती में | वह सवार होते हैं | फिर जब | 64 | वह जानते होते | काश | ज़िन्दगी | अलबत्ता वही |

دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नागहां (फ़ौरन) वह | ख़ुश्की की तरफ़ | वह उन्हें नजात देता है | फिर जब | उस के लिए एतिकाद | ख़ालिस रख कर | अल्लाह को पुकारते हैं |

يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٥﴾ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۚۙ وَلِيَتَمَتَّعُوْا ٘ فَسَوْفَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पस अनक़रीब वह | और ताकि वह फ़ाइदा उठाएं | हम ने उन्हें दिया | वह जो | ताकि नाशुक्री करें | 65 | शिर्क करने लगते हैं |

يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّيُتَخَطَّفُ النَّاسُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| लोग | जबकि उचक लिए जाते हैं | हरम (सरज़मीने मक्का) को अमन की जगह | कि हम ने बनाया | क्या उन्हों ने नहीं देखा | 66 | जान लेंगे वह |

مِنْ حَوْلِهِمْ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَكْفُرُوْنَ ﴿٦٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 67 | नाशुक्री करते हैं | और अल्लाह की नेमत की | ईमान लाते हैं | क्या पस बातिल पर | उस के इर्द गिर्द | से |

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| या झुटलाया उस ने | झूट | अल्लाह पर | बान्धा | उस से जिस ने | बड़ा ज़ालिम | और कौन |

بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهٗ ؕ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 68 | काफ़िरों के लिए | ठिकाना | जहन्नम में | क्या नहीं | वह आया उस के पास | जब | हक़ को |

ع ٧ ٣
وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٦٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 69 | अलबत्ता साथ है नेकोकारों के | और बेशक अल्लाह | अपने रास्ते (जमा) | हम ज़रूर उन्हें हिदायत देंगे | हमारी (राह) में | और जिन लोगों ने कोशिश की |

## اٰيَاتُهَا ٦٠ ❁ (٣٠) سُوْرَةُ الرُّوْمِ ❁ رُكُوْعَاتُهَا ٦

| | | |
|---|---|---|
| रुकूआत 6 | (30) सूरतुर रूम | आयात 60 |

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓمّٓ ﴿١﴾ غُلِبَتِ الرُّوْمُ ﴿٢﴾ فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बाद | और वह | क़रीब की ज़मीन | में | 2 | रोमी | मग़लूब हो गए | 1 | अलिफ़ लाम मीम |

غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ﴿٣﴾ فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ؕ لِلّٰهِ الْاَمْرُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह ही के लिए हुक्म | चन्द साल (जमा) | में | 3 | अनक़रीब वह ग़ालिब होंगे | अपने मग़लूब होने |

مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ ؕ وَيَوْمَئِذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿٤﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 4 | अहले ईमान | ख़ुश होंगे | और उस दिन | और बाद | पहले |

بِنَصْرِ اللّٰهِ ؕ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٥﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | निहायत मेहरबान | ग़ालिब | और वह | जिस को चाहता है | वह मदद देता है | अल्लाह की मदद से |

और यह दुनिया की ज़िन्दगी खेल कूद के सिवा कुछ नहीं, और बेशक आख़िरत का घर ही (असल) ज़िन्दगी है, काश वह जानते होते। (64) फिर जब वह कश्ती में सवार होते हैं तो वह अल्लाह को पुकारते हैं ख़ालिस उसी पर एतिक़ाद रखते हुए, फिर जब वह उन्हें ख़ुश्की की तरफ़ नजात देता (बचा लाता) है तो वह फ़ौरन शिर्क करने लगते हैं। (65) ताकि उस की नाशुक्री करें जो हम ने उन्हें दिया है, और ताकि वह फ़ाइदा उठाएं, पस अनक़रीब वह जान लेंगे। (66) क्या उन्हों ने नहीं देखा कि हम ने सरज़मीने मक्का को अमन की जगह बनाया, जब कि उस के इर्द गिर्द से लोग उचक लिए जाते हैं, पस क्या वह बातिल पर ईमान लाते हैं और अल्लाह की नेमत की नाशुक्री करते हैं। (67) और उस से बड़ा ज़ालिम कौन है? जिस ने अल्लाह पर झूट बान्धा, या जब हक़ उस के पास आया उस ने उसे झुटलाया, क्या जहन्नम में काफ़िरों के लिए ठिकाना नहीं? (68) और जिन लोगों ने हमारी राह में कोशिश की, हम ज़रूर उन्हें हिदायत देंगे अपने रास्तों की, और बेशक अल्लाह नेकोकारों के साथ है। (69)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-मीम। (1) रोमी क़रीब की सरज़मीं में मग़लूब हो गए। (2) और वह अपने मग़लूब होने के बाद अनक़रीब चन्द सालों में ग़ालिब होंगे। (3) पहले भी और पीछे भी अल्लाह ही का हुक्म है, और उस दिन अहले ईमान अल्लाह की मदद से ख़ुश होंगे। (4) वह जिस को चाहता है मदद देता है, और वह ग़ालिब निहायत मेहरबान है। (5)

(यह) अल्लाह का वादा है, अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता, और लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। (6)
वह दुनिया की ज़िन्दगी के (सिर्फ़) ज़ाहिर को जानते हैं, और वह आख़िरत से ग़ाफ़िल हैं। (7)
क्या वह अपने दिल में ग़ौर नहीं करते? अल्लाह ने नहीं पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को, और जो कुछ उन दोनो के दरमियान है मगर दुरुस्त तदबीर के साथ, और एक मुक़र्ररा मीआद के लिए, और बेशक लोगों में से अक्सर अपने रब की मुलाक़ात के मुनकिर हैं। (8)
क्या उन्हों ने ज़मीन (दुनिया) में सैर नहीं की? वह देखते कि कैसा अन्जाम हुआ उन लोगों का जो उन से पहले थे, वह क़ुव्वत में उन से बहुत ज़ियादा थे, और उन्हों ने ज़मीन को बोया जोता, और उस को आबाद किया उस से ज़ियादा (जिस क़द्र) इन्हों ने आबाद किया है, और उन के पास उन के रसूल रोशन दलाइल के साथ आए, पस अल्लाह (ऐसा) न था कि वह उन पर ज़ुल्म करता और लेकिन वह अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। (9)
फिर जिन लोगों ने बुरे काम किए उन का अन्जाम बुरा हुआ कि उन्हों ने अल्लाह की आयतों को झुटलाया और वह उन का मज़ाक़ उड़ाते थे। (10)
अल्लाह पहली बार ख़ल्क़त को पैदा करता है फिर वह उसे दोबारा पैदा करेगा, फिर तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे। (11)
और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी मुजरिम नाउम्मीद हो कर रह जाएंगे। (12)
और उन के शरीकों में से कोई उन के सिफ़ारशी न होंगे, और वह अपने शरीकों के मुनकिर हो जाएंगे। (13)
और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी उस दिन (लोग) मुतफ़र्रिक़ (तितर बितर) हो जाएंगे। (14)
पस जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अमल किए सो वह बाग़ (जन्नत) में आओ भगत किए जाएंगे। (15)

وَعْدَ اللّٰهِ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अक्सर लोग | और लेकिन | अपना वादा | ख़िलाफ़ नही करता अल्लाह | अल्लाह का वादा है |

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦﴾ يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖ وَهُمْ عَنِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | और वह | दुनिया की ज़िन्दगी | से | ज़ाहिर को | वह जानते है | 6 | नही जानते |

الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ﴿٧﴾ اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۗ مَا خَلَقَ اللّٰهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पैदा किया अल्लाह | नहीं | अपने जी (दिल) में | वह ग़ौर करते | क्या नही | 7 | ग़ाफ़िल है | वह | आखिरत |

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और एक मुक़र्रर मीआद | दुरुस्त तदबीर के साथ | मगर | उन दोनो के दरमियान | और जो | और ज़मीन | आस्मानों |

وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ ﴿٨﴾ اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने सैर की | क्या नहीं | 8 | मुन्किर है | अपना रब | मुलाक़ात से | लोगों से | अक्सर | और बेशक |

فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन से पहले | वह लोग जो | अन्जाम | कैसा हुआ | जो वह देखते | ज़मीन में |

كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاَثَارُوا الْاَرْضَ وَعَمَرُوْهَآ اَكْثَرَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़ियादा | और उन्हों ने उस का आबाद किया | ज़मीन | और उन्हों ने बोया जोता | ताक़त (में) | इन में | बहुत ज़ियादा | वह थे |

مِمَّا عَمَرُوْهَا وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۗ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि उन पर ज़ुल्म करता | अल्लाह | पस न था | रोशन दलाइल के साथ | उन के रसूल | और उन के पास आए | इन्हों ने उसे आबाद किया | उस से जो |

وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٩﴾ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिन लोगों ने | अन्जाम | हुआ | फिर | 9 | ज़ुल्म करते | अपनी जानें | वह थे | और लेकिन |

اَسَآءُوا السُّوْٓاٰى اَنْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَكَانُوْا بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١٠﴾ ع

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | उस से मज़ाक़ करते | और थे वह | अल्लाह की आयतों को | कि उन्हों ने झुटलाया | बुरा | बुरे काम किए |

اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿١١﴾ وَيَوْمَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जिस दिन | 11 | तुम लौटाए जाओगे | फिर उस की तरफ़ | फिर वह उसे दोबारा (पैदा) करेगा | ख़ल्क़त | अल्लाह पहली बार पैदा करता है |

تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿١٢﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | और न होंगे | 12 | मुजरिम (जमा) | नाउम्मीद रह जाएँगे | बरपा होगी क़ियामत |

مِّنْ شُرَكَآئِهِمْ شُفَعٰٓؤُا وَكَانُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ كٰفِرِيْنَ ﴿١٣﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 13 | मुन्किर | अपने शरीकों के | और वह हो जाएंगे | कोई सिफ़ारशी | उन के शरीकों में से |

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ ﴿١٤﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पस जो लोग ईमान लाए | 14 | मुतफ़र्रिक़ हो जाएंगे | उस दिन | क़ाइम होगी क़ियामत | और जिस दिन |

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِىْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ﴿١٥﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 15 | ख़ुशहाल (आओ भगत) किए जाएंगे | बाग़ में | सो वह | नेक | और उन्हों ने अमल किए |

وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآئِ الْاٰخِرَةِ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आख़िरत | और मुलाक़ात को | हमारी आयतों को | और झुटलाया | कुफ़्र किया | और जिन लोगों ने |

فَاُولٰٓئِكَ فِى الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ﴿١٦﴾ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जब | अल्लाह | पस पाकीज़गी (बयान करो) | 16 | हाज़िर (गिरिफ़्तार) किए जाएंगे | अ़ज़ाब में | पस यही लोग |

تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ﴿١٧﴾ وَلَهُ الْحَمْدُ فِى السَّمٰوٰتِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मानों में | तमाम तारीफ़ें | और उस के लिए | 17 | तुम सुबह करो (सुबह के वक़्त) | और जब | तुम शाम करो (शाम के वक़्त) |

وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ﴿١٨﴾ يُخْرِجُ الْحَىَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़िन्दा | वह निकालता है | 18 | तुम ज़ुहर करने हो (ज़ुहर के वक़्त) | और जब | और बाद ज़वाल (तीसरे पहर) | और ज़मीन |

مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बाद | ज़मीन | और वह ज़िन्दा करता है | ज़िन्दा से | मुर्दा | और निकालता है वह | मुर्दा से |

ع ٢ ٥ مَوْتِهَا ؕ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿١٩﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | उस ने पैदा किया तुम्हें | कि | और उस की निशानियों से | 19 | तुम निकाल जाओगे | और उसी तरह | उस का मरना |

تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने पैदा किया | कि | और उस की निशानियों से | 20 | फैले हुए | आदमी | नागहां तुम | फिर | मिट्टी |

لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और उस ने किया | उन की तरफ़ (पास) | ताकि तुम सुकून हासिल करो | जोड़े | तुम्हारी जिन्स से | तुम्हारे लिए |

بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 21 | वह ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं | उन लोगों के लिए | अलबत्ता निशानियां | उस में | बेशक | और मेहरबानी | मुहब्बत | तुम्हारे दरमियान |

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारी ज़बानें | और मुख़्तलिफ़ होना | और ज़मीन | आस्मान (जमा) | उस ने पैदा किया | और उस की निशानियों से |

وَاَلْوَانِكُمْ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ﴿٢٢﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उस की निशानियों में | 22 | आ़लिमों (दानिशमन्दों) के लिए | अलबत्ता निशानियां | उस में | बेशक | और तुम्हारे रंग |

مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَآؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | उस के फ़ज़्ल से | और तुम्हारा तलाश करना | और दिन | रात में | तुम्हारा सोना |

فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बिजली | वह दिखाता है तुम्हें | और उस की निशानियों से | 23 | वह सुनते हैं | उन लोगों के लिए | अलबत्ता निशानियां | उस में |

خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَيُحْيٖ بِهِ الْاَرْضَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन | फिर ज़िन्दा करता है उस से | पानी | आस्मान से | और वह नाज़िल करता है | और उम्मीद के लिए | ख़ौफ़ |

بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٢٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 24 | अक़्ल से काम लेते हैं | उन लोगों के लिए | अलबत्ता निशानियां | इस में | बेशक | उस के मरने के बाद |

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया, और झुटलाया हमारी आयतों को, और मुलाक़ात को आख़िरत की, पस यही लोग अ़ज़ाब में गिरफ़्तार किए जाएंगे। (16)

पस तुम अल्लाह की पाकीज़गी बयान करो शाम के वक़्त और सुब्ह के वक़्त (17)

और उसी के लिए हैं तमाम तारीफ़ें आस्मानों में और ज़मीन में, और तीसरे पहर और ज़ुहर के वक़्त। (18)

वह मुर्दा से ज़िन्दा को निकालता है, और ज़िन्दा से मुर्दा को निकालता है, और वह ज़िन्दा करता है ज़मीन को उस के मरने के बाद, और उसी तरह तुम (क़ब्रों से) निकाले जाओगे। (19)

और उस की निशानियों में से है कि उस ने तुम्हें पैदा किया मिट्टी से, फिर नागहां तुम आदमी (जा बजा) फैले हुए। (20)

और उस की निशानियों में से है कि उस ने तुम्हारे लिए पैदा किए तुम्हारी जिन्स से जोड़े (बीवियां) ताकि तुम उन के पास सुकून हासिल करो, और उस ने तुम्हारे दरमियान मुहब्बत और रहमत (पैदा) की, बेशक उस में अलबत्ता उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं। (21)

और उस की निशानियों में से हैं आस्मानों और ज़मीन का पैदा करना और तुम्हारी ज़बानों और तुम्हारे रंगों का मुख़्तलिफ़ होना, बेशक उस में दानिशमन्दों के लिए निशानियां हैं। (22)

और उस की निशानियों में से है तुम्हारा सोना रात में और दिन (के वक़्त), और तुम्हारा तलाश करना उस के फ़ज़्ल से (रोज़ी), बेशक उस में निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं। (23)

और उस की निशानियों में से है कि वह तुम्हें बिजली दिखाता है ख़ौफ़ और उम्मीद के लिए, और वह नाज़िल करता है आस्मान से पानी, फिर उस से ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िन्दा करता है, बेशक उस में निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो अ़क़्ल से काम लेते हैं। (24)

और उस की निशानियों में से है कि उस के हुक्म से ज़मीन और आस्मान क़ाइम हैं। फिर जब वह एक निदा दे कर तुम्हें ज़मीन से बुलाएगा तो तुम यकबारगी निकल आओगे। (25) और उस के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है, सब उसी के फ़रमांबरदार हैं। (26) और वही है जो पहली बार ख़ल्क़त को पैदा करता है, फिर उस को दोबारा पैदा करेगा, और यह उस पर बहुत आसान है, और उसी की है बुलन्द तर शान आस्मानों में और ज़मीन में, और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (27) उस ने तुम्हारे लिए तुम्हारे हाल से एक मिसाल बयान की, क्या तुम्हारे लिए है (उन में) से जिन के तुम मालिक हो (तुम्हारे गुलामों में से) उस रिज़्क़ में कोई शरीक? जो हम ने तुम्हें दिया ताकि तुम सब आपस में बराबर हो जाओ, क्या तुम उन से उस तरह डरते हो जैसे अपनों से डरते हो, उसी तरह हम अ़क्ल वालों के लिए खोल कर निशानियां बयान करते हैं। (28) बल्कि पैरवी की ज़ालिमों ने बेजाने अपनी ख़ाहिशात की, तो जिसे अल्लाह गुमराह करे (उसे) कौन हिदायत देगा? और नहीं है उन के लिए कोई मददगार। (29) पस तुम (अल्लाह) के दीन के लिए (सब से कट कर) यक रुख़ हो कर अपना चेहरा सीधा रखो, अल्लाह की उस फ़ित्रत पर जिस पर उस ने लोगों को पैदा किया, उस की ख़ल्क़ (बनाई हुई फ़ित्रत) में कोई तब्दीली नहीं, यह सीधा दीन है, और लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। (30) सब उस की तरफ़ रुजूअ़ करने वाले (रहो) और तुम उसी से डरो, और तुम क़ाइम रखो नमाज़, और तुम शिर्क करने वालों में से न हो। (31) उन में से जिन्हों ने अपना दीन टुकड़े टुकड़े कर लिया, फ़िर्के फ़िर्के हो गए। सब के सब गिरोह उस पर ख़ुश हैं जो उन के पास है। (32)

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ؕ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब वह तुम्हें बुलाएगा | फिर | उस के हुक्म से | और ज़मीन | आस्मान | क़ाइम हैं | कि | और उस की निशानियों से |

دَعْوَةً ۖ مِّنَ الْاَرْضِ ۖ اِذَآ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ﴿۲۵﴾ وَلَهٗ مَنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | और उस के लिए | 25 | निकल आओगे | यकबारगी तुम | ज़मीन से | एक निदा |

فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿۲۶﴾ وَهُوَ الَّذِىْ يَبْدَؤُا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पहली बार पैदा करता है | और वही है जो | 26 | फ़रमांबरदार | सब उसी के लिए | और ज़मीन में | आस्मानों में |

الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ ؕ وَلَهُ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बुलन्द तर | शान | और उसी के लिए | उस पर | बहुत आसान | और वह (यह) | फिर उस को दोबारा पैदा करेगा | ख़ल्क़त |

ع
فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۲۷﴾ ضَرَبَ لَكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे लिए | उस ने बयान की | 27 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | और वह | और ज़मीन | आस्मानों में |

مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ؕ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे दाएं हाथ (गुलाम) | जो मालिक हुए | में | क्या तुम्हारे लिए | तुम्हारी जानें (हाल) | से | एक मिसाल |

مِّنْ شُرَكَآءَ فِىْ مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| (क्या) तुम उन से डरते हो | बराबर | उस में | सो (ताकि) तुम | जो हम ने तुम्हें रिज़्क़ दिया | में | कोई शरीक |

كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۲۸﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 28 | अ़क़्ल वालों के लिए | निशानियां | हम खोल कर बयान करते हैं | उसी तरह | अपनी जानें (अपनों से) | जैसे तुम डरते हो |

بَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِىْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तो कौन हिदायत देगा | इल्म के बग़ैर (बेजाने) | अपनी ख़ाहिशात | जिन लोगों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम) | पैरवी की | बल्कि |

مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۲۹﴾ فَاَقِمْ وَجْهَكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना चेहरा | पस सीधा रखो तुम | 29 | मददगार | कोई | उन के लिए | और नहीं | गुमराह करे अल्लाह | जिसे |

لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ؕ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِىْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ؕ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उस पर | लोगों को पैदा किया उस ने | जो (जिस) | फ़ित्रत अल्लाह की | यक रुख़ हो कर | दीन के लिए |

لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ وَلٰكِنَّ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और लेकिन | दीन सीधा | यह | अल्लाह की ख़ल्क़ में | तब्दीली नहीं |

اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۰﴾ مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और क़ाइम रखो तुम | और तुम डरो उस से | उस की तरफ़ | रुजूअ़ करने वाले | 30 | वह जानते नहीं | अक्सर लोग |

الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۳۱﴾ مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| टुकड़े टुकड़े कर लिया | जिन्हों ने | (उन में) से | 31 | शिर्क करने वाले | से | और न हो तुम | नमाज़ |

دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۢ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿۳۲﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 32 | ख़ुश हैं | उन के पास | उस पर | सब गिरोह | फ़िर्के फ़िर्के | और हो गए | अपना दीन |

وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُّنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَآ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर जब | उस की तरफ़ | रुजूअ करते हैं | अपने रब को | वह पुकारते हैं | कोई तक्लीफ़ | पहुँचती है लोगों को | और जब |

اَذَاقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾ لِيَكْفُرُوْا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि नाशुक्री करें | 33 | शरीक करने लगते हैं | अपने रब के साथ | उन में से | एक गिरोह | नागहां | रहमत | अपनी तरफ़ से | वह उन को चखा देता है |

بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۗ فَتَمَتَّعُوْا ۫ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٤﴾ اَمْ اَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई सनद | उन पर | क्या हम ने नाज़िल की | 34 | तुम जान लोगे | फिर अनक़रीब | सो फ़ाइदा उठा लो तुम | उस की जो हम ने दिया |

فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوْا بِهٖ يُشْرِكُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रहमत | लोग | हम चखाएं | और जब | 35 | शरीक करते हैं | उस के साथ | हैं | वह जो | कि वह बतलाती है |

فَرِحُوْا بِهَا ۗ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ اِذَا هُمْ يَقْنَطُوْنَ ﴿٣٦﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 36 | मायूस हो जाते हैं | नागहां वह | उन के हाथ | आगे भेजा | उस के सबब जो | कोई बुराई | पहुँचे उन्हें | और अगर | तो वह खुश हों उस से |

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۗ اِنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | और तंग करता है | वह चाहता है | जिस के लिए | रिज़्क़ | कुशादा करता है | कि अल्लाह | क्या उन्हों ने नहीं देखा |

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٣٧﴾ فَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस का हक़ | क़राबत दार | पस दो तुम | 37 | उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं | अलबत्ता निशानियां | इस में |

وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۗ ذٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह चाहते हैं | उन लोगों के लिए जो | बेहतर | यह | और मुसाफ़िर | और मिसकीन |

وَجْهَ اللّٰهِ ۫ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ رِّبًا لِّيَرْبُوَا۠

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि बढ़े | सूद | से | तुम दो | और जो | 38 | फ़लाह पाने वाले | वह | और वही लोग | अल्लाह की रज़ा |

فِيْٓ اَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़कात | से | और जो तुम दो | अल्लाह के हां | तो नहीं बढ़ता | लोग (जमा) | माल (जमा) | में |

تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ﴿٣٩﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह है जिस ने | 39 | चन्द दर चन्द करने वाले | वह | तो वही लोग | अल्लाह की रज़ा | चाहते हुए |

خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ۗ هَلْ مِنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| से | क्या | वह तुम्हें ज़िन्दा करेगा | फिर | फिर वह तुम्हें मौत देता है | फिर उस ने तुम्हें रिज़्क़ दिया | पैदा किया तुम्हें |

شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ شَيْءٍ ۗ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से जो | और बरतर | वह पाक है | कुछ भी | इन (कामों) में से | करे | जो | तुम्हारे शरीक (जमा) |

ع ١٣ يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٠﴾ ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कमाया | उस से जो | और दर्या (तरी) | खुश्की में | फ़साद | ज़ाहिर हो गया | 40 | वह शरीक ठहराते हैं |

اَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِيْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤١﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 41 | बाज़ आ जाएं वह | शायद वह | उन्हों ने किया (आमाल) | बाज़ | ताकि वह उन्हें (मज़ा) चखाए | लोगों के हाथ |

और जब लोगों को कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो अपने रब को पुकारते हैं उस की तरफ़ रुजूअ करते हुए, फिर जब वह उन्हें अपनी तरफ़ से रहमत (का मजा) चखा देता है तो नागहां एक गिरोह (के लोग) उन में से अपने रब के साथ शरीक करने लगते हैं। (33) कि वह उसकी नाशुक्री करें जो हम ने उन्हें दिया, सो तुम (चन्द रोज़) फ़ाइदा उठा लो, फिर अनक़रीब (तुम उसका अन्जाम) जान लोगे। (34) क्या हम ने उन पर कोई सनद नाजिल की? कि वह बतलाती है जो उस के साथ यह शरीक करते हैं। (35) और जब हम चखाएं लोगों को (रहमत का मज़ा) तो उस से खुश हों, और अगर उन्हें उस के सबब कोई बुराई पुहँचे जो उन के हाथों ने आगे भेजा (उन के आमाल से) तो वह नागहां मायूस हो जाते हैं। (36) क्या उन्हों ने नहीं देखा कि अल्लाह जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादा करता है (और जिस के लिए चाहता है) तंग करता है, बेशक जो लोग ईमान रखते हैं उन के लिए इस में निशानियां हैं। (37) पस तुम क़राबतदारों को उस का हक़ दो और मोहताज और मुसाफ़िर को, यह उन के लिए बेहतर है जो अल्लाह की रज़ा चाहते हैं, और वही लोग फ़लाह (दो जहानों की कामयाबी) पाने वाले हैं। (38) और जो तुम सूद दो कि लोगों के माल बढ़ें (इज़ाफ़ा हो) तो (यह) अल्लाह के हां नहीं बढ़ता और जो तुम अल्लाह की रजा चाहते हुए ज़कात देते हो तो यही लोग हैं (अपना माल और अजर) चन्द दर चन्द करने वाले। (39) अल्लाह ही है जिस ने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम्हें रिज़्क़ दिया, फिर वह तुम्हें मौत देता है फिर वह तुम्हें ज़िन्दा करेगा, क्या तुम्हारे शरीकों में से (कोई है) जो उन कामों मे से कुछ भी करे? वह पाक है और बरतर उस से जो वह शरीक ठहराते हैं। (40) फ़साद खुश्की और तरी में ज़ाहिर हो गया (फैल गया) उस से जो कमाया लोगों के हाथों ने (उन के आमाल के सबब) ताकि वह उन के बाज़ आमाल का मजा उन्हें चखाए, शायद वह बाज़ आ जाएं। (41)

आप (स) फ़रमा दें तुम ज़मीन में चलो फिरो, फिर तुम देखो उन का अन्जाम कैसा हुआ जो पहले थे, उन के अक्सर शिर्क करने वाले थे। (42)

पस अपना चेहरा दीने रास्त की तरफ़ सीधा रखो इस से क़ब्ल कि वह दिन आ जाए जिस को टलना नहीं अल्लाह (की तरफ़) से, उस दिन (सब) जुदा जुदा हो जाएंगे। (43)

जिस ने कुफ़्र किया तो उस पर पड़ेगा उस के कुफ़्र (का वबाल), और जिस ने अच्छे अ़मल किए तो वह अपने लिए सामान कर रहे हैं। (44)

ताकि (अल्लाह) अपने फ़ज़्ल से उन लोगों को जज़ा दे जो ईमान लाए, और उन्हों ने अच्छे अमल किए, बेशक अल्लाह काफ़िरों को पसंद नहीं करता। (45)

और उस की निशानियों में से है कि वह भेजता है हवाएं ख़ुशख़बरी देने वाली, और ताकि वह तुम्हें अपनी रहमत का मज़ा चखाए, और ताकि कश्तियां उस के हुक्म से चलें, और ताकि तुम तलाश करो उस का फ़ज़्ल (रिज़्क़) और ताकि तुम शुक्र करो। (46)

और तहक़ीक़ हम ने आप (स) से पहले बहुत से रसूल भेजे उन की क़ौमों की तरफ़, पस वह उन के पास खुली निशानियों के साथ आए, फिर हम ने मुजरिमों से इन्तिक़ाम लिया और हमारे ज़िम्मे है मोमिनों की मदद करना। (47)

अल्लाह (ही है) जो हवाएं भेजता है, तो वह बादल उभारती है, फिर वह फैलाता है बादल, आस्मान में जैसे वह चाहता है और वह उस (बादल) को टुकड़े टुकड़े कर देता है, फिर तू देखे कि उस के दरमियान से मीनह निकलता है, फिर वह अपने बन्दों में से जिसे चाहे वह पहुँचा देता है, तो वह अचानक ख़ुशियां मनाने लगते हैं। (48)

अगरचे उस से क़ब्ल कि (बारिश) उन पर नाज़िल हो वह पहले ही से मायूस हो रहे थे। (49)

قُــلْ سِيْـرُوْا فِـی الْاَرْضِ فَـانْـظُـرُوْا كَـيْـفَ كَانَ عَـاقِـبَـةُ الَّـذِيْـنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन का जो | अन्जाम | हुआ | कैसा | फिर तुम देखो | ज़मीन | में | तुम चलो फिरो | आप (स) फ़रमा दें |

مِـنْ قَـبْـلُ ؕ كَانَ اَكْـثَـرُهُـمْ مُّـشْـرِكِـيْـنَ ﴿٤٢﴾ فَـاَقِـمْ وَجْـهَـكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना चेहरा | पस सीधा रखो | 42 | शिर्क करने वाले | उन के अक्सर | थे | पहले (थे) |

لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِیَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَــــهٗ مِنَ اللّٰهِ يَوْمَىِٕذٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस दिन | अल्लाह से | उस के लिए (जिस को) | टलना नहीं | वह दिन | आ जाए | कि | इस से क़ब्ल | दीने रास्त के लिए (तरफ़) |

يَّـصَّـدَّعُـوْنَ ﴿٤٣﴾ مَـنْ كَـفَـرَ فَـعَـلَـيْـهِ كُـفْـرُهٗ ۚ وَمَـنْ عَـمِـلَ صَـالِـحًـا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अच्छे अमल | और जिस ने किए | उस का कुफ़्र | तो उसी पर | जिस ने कुफ़्र किया | 43 | जुदा जुदा हो जाएंगे |

فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ ﴿٤٤﴾ لِيَجْـزِیَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए | उन लोगों का जो ईमान लाए | ताकि जज़ा दे वह | 44 | सामान कर रहे हैं | तो वह अपने लिए |

مِـنْ فَـضْـلِـهٖ ؕ اِنَّــهٗ لَا يُـحِـبُّ الْـكٰـفِـرِيْـنَ ﴿٤٥﴾ وَمِــنْ اٰيٰـتِـهٖۤ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उस की निशानियों से | 45 | काफ़िर (जमा) | पसंद नहीं करता | बेशक वह | अपना फ़ज़्ल | से |

اَنْ يُّـرْسِـلَ الـرِّيٰـحَ مُـبَـشِّـرٰتٍ وَّلِـيُـذِيْـقَـكُـمْ مِّـنْ رَّحْـمَـتِـهٖ وَلِـتَـجْـرِیَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और ताकि चलें | से (का) अपनी रहमत | और ताकि वह तुम्हें चखाए | ख़ुशख़बरी देने वाली | हवाएं | कि वह भेजता है |

الْـفُـلْـكُ بِـاَمْـرِهٖ وَلِـتَـبْـتَـغُـوْا مِـنْ فَـضْـلِـهٖ وَلَـعَـلَّـكُـمْ تَـشْـكُـرُوْنَ ﴿٤٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 46 | तुम शुक्र करो | और ताकि तुम | उस का फ़ज़्ल | से | और ताकि तुम तलाश करो | उस के हुक्म से | कश्तियां |

وَلَـقَـدْ اَرْسَـلْـنَـا مِـنْ قَـبْـلِـكَ رُسُــلًا اِلٰی قَـوْمِـهِـمْ فَـجَـآءُوْهُـمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पस वह उन के पास आए | उन की क़ौमें | तरफ़ | बहुत से रसूल | आप (स) से पहले | और तहक़ीक़ हम ने भेजे |

بِـالْـبَـيِّـنٰـتِ فَـانْـتَـقَـمْـنَـا مِـنَ الَّــذِيْـنَ اَجْـرَمُـوْا ؕ وَكَانَ حَـقًّـا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हक़ (ज़िम्मे) | और है | वह जिन्हों ने जुर्म किया (मुजरिम) | से | फिर हम ने इन्तिक़ाम लिया | खुली निशानियों के साथ |

عَـلَـيْـنَـا نَـصْـرُ الْـمُـؤْمِـنِـيْـنَ ﴿٤٧﴾ اَللّٰهُ الَّــذِیْ يُـرْسِـلُ الـرِّيٰـحَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हवाएं | जो भेजता है | अल्लाह | 47 | मोमिनीन | मदद | हम पर (हमारा) |

فَـتُـثِـيْـرُ سَـحَـابًـا فَـيَـبْـسُـطُـهٗ فِـی الـسَّـمَـآءِ كَـيْـفَ يَـشَـآءُ وَيَـجْـعَـلُـهٗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह उसे कर देता है | वह चाहता है | जैसे | आस्मान में | फिर वह (बादल) फैलाता है | बादल | तो वह उभारती है |

كِـسَـفًـا فَـتَـرَی الْــوَدْقَ يَـخْـرُجُ مِـنْ خِـلٰـلِـهٖ ۚ فَـاِذَآ اَصَــابَ بِـهٖ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह उसे पहुँचा देता है | फिर जब | उस के दरमियान से | निकलती है | बारिश की बूंद | फिर तू देखे | टुकड़े टुकड़े |

مَـنْ يَّـشَـآءُ مِـنْ عِـبَـادِهٖۤ اِذَا هُـمْ يَـسْـتَـبْـشِـرُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَاِنْ كَانُـوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| थे | और अगरचे | 48 | ख़ुशियां मनाने लगते हैं | अचानक वह | अपने बन्दों | से | जिसे वह चाहता है |

مِـنْ قَـبْـلِ اَنْ يُّـنَـزَّلَ عَـلَـيْـهِـمْ مِّـنْ قَـبْـلِـهٖ لَـمُـبْـلِـسِـيْـنَ ﴿٤٩﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 49 | अलबत्ता मायूस (जमा) | पहले (ही) से | उन पर | कि वह नाज़िल हो | उस से क़ब्ल |

فَانْظُرْ إِلَىٰ آثَارِ رَحْمَتِ اللَّهِ كَيْفَ يُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के मरने के बाद | ज़मीन | वह कैसे ज़िन्दा करता है | अल्लाह की रहमत | आसार | तरफ़ | पस देख तो |

إِنَّ ذَٰلِكَ لَمُحْيِي الْمَوْتَىٰ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٥٠﴾ وَلَئِنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अगर | 50 | क़ुदरत रखने वाला | हर शै | पर | और वह | मुर्दे | अलबत्ता ज़िन्दा करने वाला | वही | बेशक |

أَرْسَلْنَا رِيحًا فَرَأَوْهُ مُصْفَرًّا لَظَلُّوا مِنْ بَعْدِهِ يَكْفُرُونَ ﴿٥١﴾ فَإِنَّكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस बेशक आप (स) | 51 | नाशुक्री करने वाले | उस के बाद | ज़रूर हो जाएं | ज़र्द शुदा | फिर वह उसे देखें | हवा | हम भेजें |

لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ﴿٥٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 52 | पीठ दे कर | जब वह फिर जाएं | आवाज़ | बहरों | सुना सकते | और नहीं | मुर्दों | नहीं सुना सकते |

وَمَا أَنْتَ بِهَادِ الْعُمْيِ عَنْ ضَلَالَتِهِمْ ۖ إِنْ تُسْمِعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो ईमान लाता है | मगर | आप नहीं सुना सकते | उन की गुमराही से | अन्धा | हिदायत देने वाले | और आप (स) नहीं |

بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُسْلِمُونَ ﴿٥٣﴾ ۞ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ ضَعْفٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कमज़ोरी | से (में) | वह जिस ने तुम्हें पैदा किया | अल्लाह | 53 | फ़रमांबरदार (जमा) | पस वह | हमारी आयतों पर |

ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क़ुव्वत | बाद | फिर उस ने कर दिया | क़ुव्वत | कमज़ोरी | बाद | उस ने बनाया-दी | फिर |

ضَعْفًا وَشَيْبَةً ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۖ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ ﴿٥٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 54 | क़ुदरत वाला | इल्म वाला | और वह | जो वह चाहता है | वह पैदा करता है | और बुढ़ापा | कमज़ोरी |

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُونَ مَا لَبِثُوا غَيْرَ سَاعَةٍ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| एक घड़ी से ज़ियादा | वह नहीं रहे | मुजरिम (जमा) | क़सम खाएंगे | क़ियामत | क़ाइम होगी | और जिस दिन |

كَذَٰلِكَ كَانُوا يُؤْفَكُونَ ﴿٥٥﴾ وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| इल्म दिया गया | वह लोग जिन्हें | और कहा-कहेंगे | 55 | औन्धे जाते | वह थे | उसी तरह |

وَالْإِيمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَىٰ يَوْمِ الْبَعْثِ ۖ فَهَٰذَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पस यह है | जी उठने का दिन | तक | में (मुताबिक़) नविश्ताए इलाही | यक़ीनन तुम रहे हो | और ईमान |

يَوْمُ الْبَعْثِ وَلَٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٥٦﴾ فَيَوْمَئِذٍ لَا يَنْفَعُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नफ़ा न देगी | पस उस दिन | 56 | न जानते थे | तुम | और लेकिन | जी उठने का दिन |

الَّذِينَ ظَلَمُوا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٥٧﴾ وَلَقَدْ ضَرَبْنَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और तहक़ीक़ हम ने बयान की | 57 | राज़ी करना चाहा जाएगा | और न वह | उन की माज़िरत | जिन्हों ने ज़ुल्म किया | वह लोग जो |

لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۚ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِآيَةٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम लाओ उन के पास कोई निशानी | और अगर | मिसालें | हर क़िस्म | इस क़ुरआन | में | लोगों के लिए |

لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا مُبْطِلُونَ ﴿٥٨﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 58 | झूट बनाते हो | मगर (सिर्फ़) | तुम नहीं हो | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | तो ज़रूर कहेंगे |

ع ١٣ ٥ ٨

قرأ حفص ضم الضاد وفتحها في الثلاثة لكن الضم مختارة ١٢

पस तू आसार (निशानियों) की तरफ़ देख अल्लाह की रहमत के, वह कैसे ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िन्दा करता है। बेशक वही मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है, और वह हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है। (50) और अगर हम हवा भेजें, फिर वह उसे ज़र्द शुदा देखें तो वह ज़रूर हो जाएं उस के बाद नाशुक्री करने वाले। (51) पस बेशक आप (स) न मुर्दों को सुना सकते हैं और न बहरों को आवाज़ सुना सकते हैं, जब वह पीठ दे कर फिर जाएं। (52) आप (स) नहीं अँधे को उस की गुमराही से हिदायत देने वाले, नहीं सुना सकते मगर (सिर्फ़ उसे) जो हमारी आयतों पर ईमान लाता है, पस वही फ़रमांबरदार हैं। (53) अल्लाह ही है वह जिस ने तुम्हें कमज़ोरी से पैदा किया, फिर कमज़ोरी के बाद क़ुव्वत, फिर क़ुव्वत के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया, वह जो चाहता है पैदा करता है, और वह इल्म वाला क़ुदरत वाला है। (54) और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी क़सम खाएंगे मुजरिम कि वह एक घड़ी से ज़ियादा नहीं रहे, इसी तरह वह औन्धे जाते थे। (55) और वह कहेंगे जिन्हें इल्म और ईमान दिया गयाः यक़ीनन तुम किताबे इलाही के मुताबिक़ जी उठने के दिन तक रहे हो, पस यह है जी उठने का दिन, लेकिन तुम न जानते थे। (56) पस उस दिन नफ़ा न देगी उन लोगों को उन की माज़िरत (उज़्र ख़्वाही) जिन्हों ने ज़ुल्म किया, और न उन से (अल्लाह को) राज़ी करना चाहा जाएगा। (57) और तहक़ीक़ हम ने बयान कीं लोगों के लिए इस क़ुरआन में हर क़िस्म की मिसालें, और अगर तुम उन के पास कोई निशानी लाओ तो काफ़िर ज़रूर कहेंगे, तुम सिर्फ़ झूट बनाते हो। (58)

इसी तरह अल्लाह उन के दिलों पर मुह्‌र लगा देता है जो समझ नहीं रखते। (59)

आप (स) सब्र करें, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है और जो लोग यक़ीन नहीं रखते वह किसी तौर आप को सुबुक (बरदाशत न करने वाला-ओछा) न कर दें। (60)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्‌रबान, रह्‌म करने वाला है

अलिफ़-लाम-मीम। (1)

यह आयतें हैं पुर हिक्मत किताब की। (2)

हिदायत और रहमत हैं नेकोकारों के लिए। (3)

जो लोग नमाज़ क़ाइम करते हैं, और जकात अदा करते हैं, और वह आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं। (4)

यही लोग अपने रब (की तरफ़) से हिदायत पर हैं और यही लोग फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) पाने वाले हैं। (5)

और लोगों में से कोई ऐसा (बद नसीब भी) है जो ख़रीदता है बेहूदा बातें ताकि वह बेसमझे अल्लाह के रास्ते से गुमराह कर दे, और वह उसे हँसी मज़ाक़ ठहराते हैं, यही लोग हैं जिन के लिए ज़िल्लत वाला अज़ाब है। (6)

और जब उस पर हमारी आयतें पढ़ी (सुनाई) जाती हैं तो तकब्बुर करते हुए मुँह मोड़ लेता है गोया उस ने उसे सुना ही नहीं, गोया उस के कानों में गिरानी (बहरापन) है, पस उसे दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दो। (7)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अचछे अमल किए, उन के लिए नेमतों के बाग़ात हैं। (8)

उन में वह हमेशा रहेंगे, अल्लाह का वादा सच्चा है, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (9)

उस ने सुतून के बग़ैर आस्मानों को पैदा किया, तुम उन्हें देखते हो, और उस ने डाले ज़मीन में पहाड़ कि तुम्हारे साथ झुक न जाए, और उस ने उस में हर क़िस्म के जानवर फैलाए, और हम ने उतारा आस्मान से पानी, फिर हम ने उस में उगाए हर क़िस्म के उम्दा जोड़े। (10)

كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 59 | समझ नहीं रखते | जो लोग | दिल (जमा) | पर | अल्लाह मुह्‌र लगा देता है | उसी तरह |

فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٦٠﴾ ع ٦ ٩

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 60 | यक़ीन नहीं रखते | जो लोग | और वह हरगिज़ हलका न पाएं आप को | सच्चा | अल्लाह का वादा | बेशक | पस आप सब्र करें |

## آيَاتُهَا ٣٤ ❀ (٣١) سُوْرَةُ لُقْمٰنَ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٤

रुकूआत 4 — (31) सूरह लुक़मान — आयात 34

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्‌रबान, रह्‌म करने वाला है

الٓمّٓ ﴿١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | नेकोकारों के लिए | और रहमत | हिदायत | 2 | पुर हिक्मत किताब | आयतें | यह | 1 | अलिफ़ लाम मीम |

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आख़िरत पर | और वह | ज़कात | और अदा करते हैं | नमाज़ | क़ाइम करते हैं | जो लोग |

هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | फ़लाह पाने वाले | वह | और यही लोग | अपने रब से | हिदायत | पर | यही लोग | 4 | वह यक़ीन रखते हैं |

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِىْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह का रास्ता | से | ताकि वह गुमराह करे | खेल की (बेहूदा) बातें | ख़रीदता है | जो | लोग | और से |

بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ۗ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٦﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | ज़िल्लत वाला अज़ाब | उन के लिए | यही लोग | हँसी मज़ाक़ | और वह उसे ठहराते हैं | बे समझे |

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا كَاَنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गोया | उस ने उस सुना नहीं | गोया | तकब्बुर करते हुए | वह मुँह मोड़ लेता है | हमारी आयतें | पढ़ी जाती हैं उस पर | और जब |

فِىْٓ اُذُنَيْهِ وَقْرًا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٧﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने अमल किए | ईमान लाए | बेशक जो लोग | 7 | दर्दनाक | अज़ाब की | पस उस ख़ुशख़बरी दो | गिरानी | उस के कानों में |

الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتُ النَّعِيْمِ ﴿٨﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ۗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सच्चा | अल्लाह का वादा | उस में | हमेशा रहेंगे | 8 | नेमतों के बाग़ात | उन के लिए | अच्छे |

وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٩﴾ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَاَلْقٰى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उस ने डाले | तुम उन्हें देखते हो | बग़ैर सुतून | आस्मान (जमा) | उस ने पैदा किया | 9 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | और वह |

فِى الْاَرْضِ رَوَاسِىَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ۗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जानवर | हर क़िस्म | उस में | और फैलाए | झुक (न) जाए तुम्हारे साथ | कि | पहाड़ (जमा) | ज़मीन में |

وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ﴿١٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | उम्दा | जोड़े | हर क़िस्म | उस में | फिर हम ने उगाए | पानी | आस्मान से | और हम ने उतारा |

هٰذَا خَلْقُ اللّٰهِ فَاَرُوْنِیْ مَاذَا خَلَقَ الَّذِیْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ بَلِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बल्कि | उस के सिवा | वह जो | पैदा किया | क्या | पस तुम मुझे दिखाओ | खल्क़त (बनाया हुआ) अल्लाह का | यह |

ع ١١ / ١٠

الظّٰلِمُوْنَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿١١﴾ وَلَقَدْ اٰتَیْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम शुक्र करो | कि | हिक्मत | लुक़मान | और अलबत्ता हम ने दी | 11 | खुली गुमराही | में | ज़ालिम (जमा) |

لِلّٰهِ ؕ وَمَنْ یَّشْكُرْ فَاِنَّمَا یَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِیٌّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेनियाज़ | तो बेशक अल्लाह | और जिस ने नाशुक्री की | अपने लिए | वह शुक्र करता है | तो इस के सिवा नहीं (सिर्फ़) | शुक्र करता है | और जो | अल्लाह का |

١٢ وقف النبی ﷺ

حَمِیْدٌ ﴿١٢﴾ وَاِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ یَعِظُهٗ یٰبُنَیَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ ؕ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के साथ | तू न शरीक ठहरा | ऐ मेरे बेटे | उसे नसीहत कर रहा था | और वह | अपने बेटे को | लुक़मान | कहा | और जब | 12 | तारीफ़ों के साथ |

اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِیْمٌ ﴿١٣﴾ وَوَصَّیْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَیْهِ ۚ حَمَلَتْهُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उसे पेट में रखा | उस के माँ बाप के बारे में | इन्सान | और हम ने ताकीद कर दी | 13 | अलबत्ता ज़ुल्मे अ़ज़ीम | बेशक शिर्क |

اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰی وَهْنٍ وَّفِصٰلُهٗ فِیْ عَامَیْنِ اَنِ اشْكُرْ لِیْ وَلِوَالِدَیْكَ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और अपने माँ बाप का | कि तू मेरा शुक्र कर | दो साल में | और उस का दूध छुड़ाना | पर कमज़ोरी | कमज़ोरी | उस की माँ |

النصف

اِلَیَّ الْمَصِیْرُ ﴿١٤﴾ وَاِنْ جٰهَدٰكَ عَلٰۤی اَنْ تُشْرِكَ بِیْ مَا لَیْسَ لَكَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुझे | जिस का नहीं | मेरा | कि तू शरीक ठहराए | पर (की) | वह मेरे साथ कोशिश करें | और अगर | 14 | लौट कर आना | मेरी तरफ़ |

بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِی الدُّنْیَا مَعْرُوْفًا ؗ وَّاتَّبِعْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और तू पैरवी कर | अच्छे तरीक़े से | दुनिया में | और उन के साथ बसर कर | तू उन दोनों का कहा न मान | कोई इल्म | उस का |

سَبِیْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَیَّ ۚ ثُمَّ اِلَیَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो कुछ | सो मैं तुम्हें आगाह करूँगा | तुम्हें लौट कर आना है | मेरी तरफ़ | फिर | मेरी तरफ़ | रुजूअ़ करे | जो | रास्ता |

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾ یٰبُنَیَّ اِنَّهَاۤ اِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राई | से (के) | वज़न (बराबर) दाना | अगर हो | बेशक वह | ऐ मेरे बेटे | 15 | तुम करते थे |

فَتَكُنْ فِیْ صَخْرَةٍ اَوْ فِی السَّمٰوٰتِ اَوْ فِی الْاَرْضِ یَاْتِ بِهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ले आएगा उसे | ज़मीन में | या | आस्मानों में | या | सख़्त पत्थर | में | फिर वह हो |

اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِیْفٌ خَبِیْرٌ ﴿١٦﴾ یٰبُنَیَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हुक्म दे | क़ाइम कर नमाज़ | ऐ मेरे बेटे | 16 | ख़बरदार | बारीक बीन | बेशक अल्लाह | अल्लाह |

بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰی مَاۤ اَصَابَكَ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो तुझ पर पहुँचे | पर | और सब्र कर | बुरी बात | से | और रोक तू | अच्छे काम |

اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿١٧﴾ وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| लोगों से | अपना रुख़्सार | और तू टेढ़ा न कर | 17 | बड़ी हिम्मत के काम | से | बेशक यह |

وَلَا تَمْشِ فِی الْاَرْضِ مَرَحًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ﴿١٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | ख़ुद पसंद | इतराने वाले | हर किसी | पसंद नहीं करता | बेशक अल्लाह | इतराता | ज़मीन में | और न चल तू |

यह अल्लाह का बनाया हुआ है, पस तुम मुझे दिखाओ क्या पैदा किया उन्हों ने जो उस के सिवा हैं, बल्कि ज़ालिम खुली गुमराही में हैं। (11)

और अलबत्ता हम ने दी लुक़मान को हिक्मत, (और फ़रमाया) कि तुम अल्लाह का शुक्र करो, और जो शुक्र करता है तो वह सिर्फ़ अपने (ही भले के) लिए करता है, और जिस ने नाशुक्री की तो बेशक अल्लाह बेनियाज़, तारीफ़ों के साथ है। (12)

और (याद करो) जब लुक़मान ने अपने बेटे को कहा और वह उसे नसीहत कर रहा था, ऐ मेरे बेटे! तू अल्लाह के साथ शरीक न ठहरा, बेशक शिर्क एक ज़ुल्मे अ़ज़ीम है। (13)

और हम ने इन्सान को ताकीद की उस के माँ बाप के बारे में (हुस्ने सुलूक की) उस की माँ ने कमज़ोरी पर कमज़ोरी (झेलते हुए) उसे पेट में रखा, और दो साल में उस का दूध छुड़ाया, कि मेरा शुक्र कर और अपने माँ बाप का, मेरी तरफ़ (ही) लौट कर आना है। (14)

और अगर वह दोनों तेरे साथ कोशिश करें कि तू मेरा शरीक ठहराए, जिस का तुझे कोई इल्म (सनद) नहीं तो उन का कहा न मान, और दुनिया (के मामलात) में उन के साथ अचछे तरीक़े से बसर कर, और उस के रास्ते की पैरवी कर जो रुजूअ़ करे मेरी तरफ़, फिर तुम्हें मेरी तरफ़ ही लौट कर आना है, सो मैं तुम्हें आगाह करूँगा जो कुछ तुम करते थे। (15)

ऐ मेरे बेटे! अगर (कोई चीज) एक राई के दाने के बराबर (भी) हो, फिर वह किसी सख़्त पत्थर (चटान) में (पोशीदा) हो, या आस्मानों में, या ज़मीन में (पोशीदा) हो, अल्लाह उसे ले आएगा (हाजिर कर देगा), बेशक अल्लाह बारीक बीन, बाख़बर है। (16)

ऐ मेरे बेटे! नमाज़ क़ाइम कर, और अचछे कामों का हुक्म दे, और तू बुरी बातों से रोक और तुझ पर जो (उफ़्ताद) पहुँचे उस पर सब्र कर, बेशक यह बड़ी हिम्मत के कामों में से है। (17)

और तू लोगों से (बात करते हुए) अपना रुख़्सार न टेढ़ा कर, और ज़मीन में इतराता हुआ न चल, बेशक अल्लाह पसंद नहीं करता किसी इतराने वाले, ख़ुद पसंद को। (18)

और अपनी रफ़्तार में मियाना रवी (इख़्तियार) कर, और अपनी आवाज़ को पस्त रख, बेशक आवाज़ों में सब से नापसंदीदा आवाज गधे की है (19)
क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया है जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ जमीन में है, और उस ने तुम्हें अपनी ज़ाहिर और पोशीदा नेमतें भरपूर दीं, और लोगों में बाज (ऐसे हैं) जो अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं बग़ैर इल्म, बग़ैर हिदायत और बग़ैर रोशन किताब के। (20)
और जब उन से कहा जाए, जो अल्लाह ने नाज़िल किया है तुम उस की पैरवी करो तो वह कहते हैं बल्कि हम उस की पैरवी करेंगे जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया है, क्या (उस सूरत में भी कि) अगर शैतान उन को दोजख के अज़ाब की तरफ़ बुलाता हो? (21)
और जो झुका दे चेहरा (सरे तसलीम ख़म कर दे) अल्लाह की तरफ़, और वह नेकोकार हो, तो बेशक उस ने मजबूत हल्क़ा (दस्त आवेज़) थाम लिया, और अल्लाह की तरफ़ (ही) तमाम कामों की इन्तिहा है। (22)
और जो कुफ़्र करे तो उस का कुफ़्र आप (स) को ग़मगीन न कर दे, उन्हें हमारी तरफ़ (ही) लौटना है, फिर हम उन्हें जरूर जतलाएंगे जो वह करते थे, बेशक अल्लाह दिलों के भेद जानने वाला है। (23)
हम उन्हें थोड़ा (चन्द रोज़ा) फ़ाइदा देंगे, फिर उन्हें खींच लाएंगे सख्त अजाब की तरफ़। (24)
और अगर तुम उन से पूछोः किस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया? तो वह यक़ीनन कहेंगे "अल्लाह"। आप (स) फ़रमा दें तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, बल्कि उन के अक्सर नहीं जानते। (25)
अल्लाह ही के लिए है जो कुछ आस्मानों और जमीन में है, बेशक अल्लाह बेनियाज़, तारीफ़ों के क़ाबिल। (26)
और अगर यह हो कि जमीन में जो भी दरख़्त हैं क़लम बन जाएं और समन्दर उस की सियाही (बन जाएं) और उस के बाद सात समन्दर (और हों) तो भी अल्लाह की बातें ख़तम न हों, बेशक अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (27)

وَاقْصِدْ فِیْ مَشْیِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ؕ اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आवाज़ें | सब से नापसंदीदा | बेशक | अपनी आवाज़ को | और पस्त कर | अपनी रफ़्तार में | और मियाना रवी कर |

لَصَوْتُ الْحَمِیْرِ ﴿١٩﴾ اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا ع ٢ ٨ ١١

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो कुछ | आस्मानों में | जो कुछ | तुम्हारे लिए | मुसख़्ख़र किया | कि अल्लाह | क्या तुम ने नहीं देखा | 19 | गधा | आवाज |

فِی الْاَرْضِ وَاَسْبَغَ عَلَیْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً ؕ وَمِنَ النَّاسِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लोग | और बाज़ | और पोशीदा | ज़ाहिर | अपनी नेमतें | तुम पर (तुम्हें) | और भरपूर दें | ज़मीन में |

مَنْ یُّجَادِلُ فِی اللّٰهِ بِغَیْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًی وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِیْرٍ ﴿٢٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | और बग़ैर किताबे रोशन | और बग़ैर हिदायत | इल्म | बग़ैर | अल्लाह (के बारे में) | झगड़ता है | जो |

وَاِذَا قِیْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो हम ने पाया | बल्कि हम पैरवी करेंगे | वह कहते है | नाज़िल किया अल्लाह | जो | तुम पैरवी करो | उन से | कहा जाए | और जब |

عَلَیْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ الشَّیْطٰنُ یَدْعُوْهُمْ اِلٰی عَذَابِ السَّعِیْرِ ﴿٢١﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 21 | दोजख | अजाब | तरफ़ | उन को बुलाता | शैतान | हो | क्या अगर | अपने बाप दादा | उस पर |

وَمَنْ یُّسْلِمْ وَجْهَهٗۤ اِلَی اللّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो बेशक उस ने थामा | नेकोकार | और वह | अल्लाह की तरफ़ | अपना चेहरा | झुका दे | और जो |

بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰی ؕ وَاِلَی اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ﴿٢٢﴾ وَمَنْ كَفَرَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और जो कुफ़्र करे | 22 | तमाम काम (जमा) | इन्तिहा | और अल्लाह की तरफ़ | हल्क़ा मज़बूत |

فَلَا یَحْزُنْكَ كُفْرُهٗ ؕ اِلَیْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक अल्लाह | वह करते थे | फिर हम उन्हें जरूर जतलाएंगे वह जो | उन का लौटना | हमारी तरफ़ | उस का कुफ़्र | तो आप (स) को ग़मगीन न कर दे |

عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٢٣﴾ نُمَتِّعُهُمْ قَلِیْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ اِلٰی

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ | फिर हम उन्हें खींच लाएंगे | थोड़ा | हम उन्हें फ़ाइदा देंगे | 23 | सीनों (दिलों) के भेद | जानने वाला |

عَذَابٍ غَلِیْظٍ ﴿٢٤﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और ज़मीन | आस्मानों (को) | किस ने पैदा किया | तुम उन से पूछो | और अगर | 24 | सख़्त | अज़ाब |

لَیَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿٢٥﴾ لِلّٰهِ مَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के लिए जो कुछ | 25 | जानते नहीं | बल्कि उन के अक्सर | तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए | फ़रमा दें | तो वह यक़ीनन कहेंगे "अल्लाह" |

فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِیُّ الْحَمِیْدُ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ اَنَّمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह हो कि जो | और अगर | 26 | तारीफ़ों के क़ाबिल | बेनियाज़ | वह | बेशक अल्लाह | और ज़मीन | आस्मानों में |

فِی الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ یَمُدُّهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के बाद | उस की सियाही | और समन्दर | क़लमें | दरख़्त | से-काई | ज़मीन | में |

سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ ﴿٢٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 27 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | बेशक अल्लाह | अल्लाह की बातें | तो भी ख़तम न हों | समन्दर (जमा) | सात |

مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ اِلَّا كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٢٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 28 | देखने वाला | सुनने वाला | बेशक अल्लाह | जैसे एक शख़्स | मगर | और नही तुम्हारा जी उठाना | नही तुम सब का पैदा करना |

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रात में | दिन | और दाख़िल करता है | दिन में | रात | दाख़िल करता है | कि अल्लाह | क्या तू ने नही देखा |

وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۡ كُلٌّ يَّجْرِيْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّاَنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और यह कि अल्लाह | मुक़र्ररा | मुद्दत | तरफ़ | चलता रहेगा | हर एक | और चाँद | सूरज | और उस ने मुसख़्ख़र किया |

بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह परस्तिश करते हैं | जो जिस | और यह कि | वही बरहक़ | इस लिए कि अल्लाह | यह | 29 | ख़बरदार | उस से जो कुछ तुम करते हो |

٣ ع ١١ ١٢ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٣٠﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | क्या तू ने नही देखा | 30 | बड़ाई वाला | बुलन्द मरतबा | वही | और यह कि अल्लाह | बातिल | उस के सिवा |

الْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِهٖ ۭ اِنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | उस की निशानियां | ताकि वह तुम्हें दिखा दे | अल्लाह की नेमतों के साथ | दर्या में | चलती है | कश्ती |

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿٣١﴾ وَاِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| साइबानों की तरह | मौज | उन पर छा जाती है | और जब | 31 | बड़े शुक्र गुज़ार | बड़े सब्र वाले | वास्ते हर | अलबत्ता निशानियां | उस में |

دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ख़ुश्की की तरफ़ | उस ने उन्हें बचा लिया | फिर जब | उस के लिए दीन (इबादत) | ख़ालिस कर के | वह अल्लाह को पुकारते हैं |

فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۭ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ﴿٣٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 32 | नाशुक्रा | अ़हद शिकन | हर | सिवाए | हमारी आयतों का | और इन्कार नहीं करता | मियाना रो | तो उन में कोई |

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ وَالِدٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई बाप | न काम आएगा | वह दिन | और ख़ौफ़ करो | अपना परवरदिगार | तुम डरो | लोगो | ऐ |

عَنْ وَّلَدِهٖ ۡ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا ۭ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह का वादा | बेशक | कुछ | से (के) बाप | काम आएगा | वह | और न कोई बेटा | अपने बेटे | से-के |

حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अल्लाह से | और तुम्हें हरगिज़ धोका न दे | दुनिया की ज़िन्दगी | सो तुम्हें हरगिज़ धोके में न डाले | सच्चा |

الْغَرُوْرُ ﴿٣٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बारिश | और वह नाज़िल करता है | क़ियामत का इल्म | उस के पास | बेशक अल्लाह | 33 | धोका देने वाला |

وَيَعْلَمُ مَا فِي الْاَرْحَامِ ۭ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ۭ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कल | वह करेगा | क्या | कोई शख़्स | जानता | और नही | (हामिला के) रह्म में | जो | और वह जानता है |

٤ ع ١٣ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌۢ بِاَيِّ اَرْضٍ تَمُوْتُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿٣٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 34 | ख़बरदार | इल्म वाला | बेशक अल्लाह | वह मरेगा | ज़मीन | किस | कोई शख़्स | और नही जानता |

नहीं है तुम सब का पैदा करना और नहीं है तुम्हारा जी उठाना मगर जैसे एक शख़्स (का पैदा करना), बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। (28)

क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह दाखिल करता है रात को दिन में, और दिन को दाख़िल करता है रात में, और उस ने सूरज और चाँद को मुसख़्ख़र किया, हर एक चलता रहेगा मुद्दते मुक़र्ररा (रोजे क़ियामत) तक और यह कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस से खबरदार है। (29)

यह इस लिए है कि अल्लाह ही बरहक़ है और यह कि वह उस के सिवा जिस की परस्तिश करते हैं सब बातिल हैं, और यह कि अल्लाह ही बुलन्द मरतबा, बड़ाई वाला है। (30)

क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह की नेमतों के साथ कश्ती दर्या में चलती है ताकि वह तुम्हें उस की निशानियां दिखा दे, बेशक उस में हर बड़े सब्र करने वाले, शुक्र गुजार के लिए निशानियां हैं। (31)

और जब मौज उन पर साइबानों की तरह छा जाती है तो वह अल्लाह को पुकारते हैं ख़ालिस कर के उसी के लिए इबादत, फिर जब उस ने उन्हें ख़ुश्की की तरफ बचा लिया तो उन में कोई मियाना रो रहता है। और हमारी आयतों का इन्कार नहीं करता सिवाए हर अहद शिकन नाशुक्रे के, (32)

ऐ लोगो! तुम अपने परवरदिगार से डरो, और उस दिन का ख़ौफ करो (जिस दिन) न काम आएगा कोई बाप अपने बेटे के, और न कोई बेटा अपने बाप के कुछ काम आएगा, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, सो तुम्हें दुनिया की ज़िन्दगी हरगिज़ धोके में न डाल दे, और धोका देने वाला (शैतान) तुम्हें अल्लाह से हरगिज धोका न दे। (33)

बेशक अल्लाह ही के पास है क़ियामत का इल्म, वही बारिश नाजिल करता है, और वह जानता है जो हामिला के रह्म में है, और नहीं जानता कोई शख़्स के वह कल क्या करेगा, और कोई शख़्स नहीं जानता कि वह किस जमीन में मरेगा, बेशक अल्लाह इल्म वाला, ख़बरदार है। (34)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है
अलिफ़-लाम-मीम। (1)
इस में कोई शक नहीं कि इस किताब (कुरआन) का नाज़िल करना तमाम जहानों के परवरदिगार की तरफ़ से है। (2)
क्या वह कहते हैं कि यह उस ने घड़ लिया है? (नहीं) बल्कि यह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हक़ है ताकि तुम उस क़ौम को डराओ जिस के पास कोई डराने वाला नहीं आया तुम से पहले, ताकि वह हिदायत पा लें। (3)
अल्लाह (ही है) जिस ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को और जो उन के दरमियान है छः (6) दिन में, फिर उस ने अ़र्श पर क़रार किया, तुम्हारे लिए उस के सिवा नहीं कोई मददगार, और न सिफ़ारिश करने वाला, सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (4)
वह हर काम की तदबीर करता है आस्मान से ज़मीन तक, फिर (वह काम) उस की तरफ़ रुजूअ़ करेगा एक दिन में, जिस की मिक़दार एक हज़ार साल है उस (हिसाब) से जो तुम शुमार करते हो। (5)
वह पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला, ग़ालिब, मेहरबान। (6)
वह जिस ने हर शै बहुत ख़ूब बनाई जो उस ने पैदा की और इन्सान की पैदाइश की इब्तिदा मिट्टी से की। (7)
फिर उस की नस्ल को बेक़द्र पानी के ख़ुलासे से बनाया। (8)
फिर उस ने उस के आज़ा को ठीक किया, और उस में फूंकी अपनी (तरफ़ से) अपनी रूह, और तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए, तुम बहुत कम हो जो शुक्र करते हो। (9)
और उन्हों ने कहा: क्या जब हम ज़मीन में गुम हो जाएंगे तो क्या नई पैदाइश में (आएंगे)? बल्कि वह अपने रब की मुलाक़ात से मुन्किर हैं। (10)

آيَاتُهَا ٣٠ ❀ (٣٢) سُوْرَةُ السَّجْدَةِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकूआत 3 (32) सूरतुस सजदा आयात 30

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

الٓمّٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | परवरदिगार तमाम जहानों का | से | इस में | कोई शक नही | किताब | नाज़िल करना | 1 | अलिफ़ लाम मीम |

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस क़ौम को | ताकि तुम डराओ | तुम्हारा रब | से | हक़ | यह | बल्कि | यह उस ने घड़ लिया है | वह कहते है | क्या |

مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٣﴾ اَللّٰهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | 3 | हिदायत पालें | ताकि वह | तुम से पहले | से | डराने वाला | कोई | उन के पास नही आया |

الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | छः (6) | में | उन के दरमियान | और जो | और ज़मीन | आस्मानों को | पैदा किया | वह जिस ने |

ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۗ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ ۗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न सिफ़ारिश करने वाला | मददगार | से-कोई | उस के सिवा | तुम्हारे लिए नही | अ़र्श पर | उस ने क़रार किया | फिर |

اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤﴾ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर | जमीन तक | आस्मान | से | तमाम काम | वह तदबीर करता है | 4 | सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते |

يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗٓ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | तुम शुमार करते हो | उस से जो | एक हज़ार साल | उस की मिक़्दार | है | एक दिन में | उस की तरफ़ | (उस का रिपोर्ट) चढ़ता है |

ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٦﴾ الَّذِيْٓ اَحْسَنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बहुत ख़ूब बनाई | वह जिस ने | 6 | मेह्रबान | ग़ालिब | और ज़ाहिर | जानने वाला पोशीदा | वह |

كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِيْنٍ ﴿٧﴾ ثُمَّ جَعَلَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बनाया | फिर | 7 | मिट्टी | से | इन्सान | पैदाइश | और इब्तिदा की | जो उस ने पैदा की | हर शै |

نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ﴿٨﴾ ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | उस में | और फूंकी | फिर उस (के आज़ा) को ठीक किया | 8 | हक़ीर (बेक़द्र) पानी | से | ख़ुलासे से | उस की नस्ल |

رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۗ قَلِيْلًا مَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | बहुत कम | और दिल (जमा) | और आँखें | कान | तुम्हारे लिए | और बनाए | अपनी रूह |

تَشْكُرُوْنَ ﴿٩﴾ وَقَالُوْٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِي الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِيْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो - में | क्या हम | जमीन में | हम गुम हो जाएंगे | क्या जब | और उन्हों ने कहा | 9 | तुम शुक्र करते हो |

خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۚ بَلْ هُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٠﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | मुन्किर (जमा) | अपना रब | मुलाक़ात से | वह | बल्कि | नई पैदाइश |

قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِىْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम अपने रब की तरफ़ | फिर | तुम पर | वह जो कि मुक़र्रर किया गया है | मौत का फ़रिश्ता | तुम्हारी रूह क़ब्ज़ करता है | फ़रमा दें |

ع ١١ ١٢ تُرْجَعُوْنَ ﴿١١﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने रब के सामने | अपने सर | झुकाए होंगे | मुजरिम (जमा) | जब | तुम देखो | और अगर | 11 | लौटाए जाओगे |

رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ﴿١٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12 | यक़ीन करने वाले | बेशक हम | अच्छे अ़मल | हम करेंगे | पस हमें लौटा दे | और हम ने सुन लिया | हम ने देख लिया | ऐ हमारे रब |

وَلَوْ شِئْنَا لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا وَلٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّىْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरी तरफ़ से | बात | साबित हो चुकी है | और लेकिन | उस की हिदायत | हर शख़्स | हम ज़रूर देते | हम चाहते | और अगर |

لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٣﴾ فَذُوْقُوْا بِمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जो | पस चखो तुम | 13 | इकटठे | और इन्सान | जिन्नों | से | अलबत्ता मैं ज़रूर भर दूँगा जहन्नम |

نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ اِنَّا نَسِيْنٰكُمْ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस का बदला जो | हमेशा का अ़ज़ाब | और चखो तुम | बेशक हम ने तुम्हें भुला दिया | इस | अपने दिन | मुलाक़ात | तुम ने भुला दिया था |

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾ اِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह | याद दिलाई जाती है | जब | वह जो | हमारी आयतों पर | ईमान लाते हैं | इस के सिवा नहीं | 14 | तुम करते थे |

السجدة ٩ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿١٥﴾ تَتَجَافٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अलग रहते हैं | 15 | तकब्बुर नहीं करते | और वह | अपना रब | तारीफ़ के साथ | और पाकीज़गी बयान करते हैं | गिर पड़ते हैं सिज्दे में |

جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۫ وَّمِمَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उस से जो | और उम्मीद | डर | अपना रब | वह पुकारते हैं | ख़्वाबगाहों (बिस्तरों) | से | उन के पहलू |

رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿١٦﴾ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِىَ لَهُمْ مِّنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | उन के लिए | छुपा रखा गया | जो | कोई शख़्स | सो नहीं जानता | 16 | वह ख़र्च करते हैं | हम ने उन्हें दिया |

قُرَّةِ اَعْيُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٧﴾ اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हो | उस के मानिन्द जो | मोमिन | हो | तो क्या जो | 17 | जो वह करते थे | उस का | जज़ा | आँखों की ठंडक |

وقف غفران فَاسِقًا ۭ لَا يَسْتَوٗنَ ﴿١٨﴾ اَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो उन के लिए | अच्छे | और उन्हों ने अमल किए | जो लोग ईमान लाए | रहे | 18 | वह बराबर नहीं होते | फ़ासिक़ (नाफ़रमान) |

جَنّٰتُ الْمَاْوٰى ۡ نُزُلًاۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ فَسَقُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नाफ़रमानी की | वह जिन्हों ने | और रहे | 19 | वह करते थे | उस के (सिले में) जो | मेहमानी | बाग़ात रहने के |

فَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۭ كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَآ اُعِيْدُوْا فِيْهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | लौटा दिए जाएंगे | उस से | कि वह निकलें | वह इरादा करेंगे | जब भी | जहन्नम | तो उन का ठिकाना |

وَقِيْلَ لَهُمْ ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّذِىْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | झुटलाते | उस को | तुम थे | वह जो | दोज़ख़ का अ़ज़ाब | तुम चखो | उन्हें | और कहा जाएगा |

आप (स) फ़रमा दें, मौत का फ़रिश्ता तुम्हारी रूह क़ब्ज़ करता है, जो तुम पर मुक़र्रर किया गया है, फिर तुम अपने रब की तरफ़ लौटाए जाओगे। (11)

और अगर तुम देखो जब मुज्रिम अपने रब के सामने अपने सर झुकाए होंगे (और कह रहे होंगे) ए हमारे रब! (अब) हम ने देख लिया और सुन लिया, पस हमें लौटा दे कि हम अच्छे अ़मल करेंगे, बेशक हम यक़ीन करने वाले हैं। (12)

और अगर हम चाहते तो ज़रूर हर शख़्स को उस की हिदायत दे देते लेकिन (यह) बात साबित हो चुकी है मेरी तरफ़ से कि मैं अलबत्ता जहन्नम को ज़रूर भर दूँगा, इकटठे जिन्नों और इन्सानों से। (13)

पस तुम उस का (मज़ा) चखो जो तुम ने भुला दिया था अपने इस दिन की मुलाक़ात (हाज़िरी) को, हम ने (भी) तुम्हें भुला दिया, और चखो हमेशा का अ़ज़ाब उस के बदले जो तुम करते थे। (14)

इस के सिवा नहीं कि हमारी आयतों पर वह लोग ईमान लाते हैं कि जब वह उन्हें याद दिलाई जाती हैं तो सिज्दे में गिर पड़ते हैं अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करते हैं और वह तकब्बुर नहीं करते। (15)

उन के पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं, और वह अपने रब को पुकारते हैं डर और उम्मीद से और जो हम ने उन्हें दिया है उस में से वह ख़र्च करते हैं। (16)

सो कोई शख़्स नहीं जानता जो छुपा रखा गया है उन के लिए आँखों की ठंडक से, उस की जज़ा है जो वह करते थे। (17)

तो क्या जो मोमिन हो वह उस के बराबर है जो नाफ़रमान हो? (फ़रमा दें) वह बराबर नहीं होते। (18)

रहे वह लोग जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अमल किए तो उन के लिए रहने के बाग़ात हैं, उस के बदले में जो वह करते थे। (19)

और रहे वह जिन्हों ने नाफ़रमानी की तो उन का ठिकाना जहन्नम है, वह जब भी उस से निकलने का इरादा करेंगे वह उस में लौटा दिए (ढकेल दिए) जाएंगे, और उन्हें कहा जाएगा दोज़ख़ का अ़ज़ाब चखो, वह जिस को तुम झुटलाते थे। (20)

और अलबत्ता हम उन्हें ज़रूर चखाएंगे कुछ अ़ज़ाब नज़्दीक (दुनिया) का, (आखिरत के) बड़े अ़ज़ाब से पहले, शायद वह लौट आएं। (21)

और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन है? जिसे उस के रब की आयात से नसीहत की गई, फिर उस ने उन से मुँह फेर लिया, बेशक हम मुज्रीमों से इन्तिक़ाम (बदला) लेने वाले हैं। (22)

और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को तौरेत अता की तो तुम उस के मिलने के बारे में शक में न रहो, और हम ने उसे बना दिया हिदायत बनी इस्राईल के लिए। (23)

और हम ने उन में से पेश्वा बनाए, वह हमारे हुक्म से रहनुमाई करते थे, जब उन्हों ने सब्र किया और वह हमारी आयतों पर यक़ीन करते थे। (24)

बेशक तुम्हारा रब क़ियामत के दिन उन के दरमियान फ़ैसला करेगा जिस (बात) में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। (25)

क्या उन के लिए (यह हक़ीक़त) मोजिबे हिदायत न हुई कि हम ने उन से क़ब्ल कितनी (ही) उम्मतें हलाक कीं, वह उन के रहने की जगहों में चलते (फिरते) हैं, बेशक उस में निशानियां हैं तो क्या वह सुनते नहीं? (26)

क्या उन्हों ने नहीं देखा? कि हम खुश्क ज़मीन की तरफ़ पानी चलाते (रवां करते) हैं, फिर उस से हम खेती निकालते हैं, उस से उन के मवेशी खाते हैं, और वह खुद भी, तो क्या वह देखते नहीं? (27)

और वह कहते हैं यह फ़ैसला कब होगा अगर तुम सच्चे हो। (28)

आप (स) फ़रमा दें, फ़ैसले के दिन काफ़िरों को उन का ईमान (लाना) नफ़ा न देगा, और न वह मोहलत दिए जाएंगे। (29)

पस तुम उन से मुँह फेर लो और तुम इन्तिज़ार करो, बेशक वह भी मुन्तज़िर हैं। (30)

وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْاَدْنٰى دُوْنَ الْعَذَابِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अ़ज़ाब | सिवाए (पहले) | नज़्दीक | अ़ज़ाब | कुछ | और अलबत्ता हम उन्हें ज़रूर चखाएंगे |

الْاَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢١﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उसे नसीहत की गई | उस से जो | बड़ा ज़ालिम | और कौन | 21 | लौट आएं | शायद वह | बड़ा |

بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ثُمَّ اَعْرَضَ عَنْهَا ؕ اِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ مُنْتَقِمُوْنَ ﴿٢٢﴾ ع ۱۱ ۲ ۱۵

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 22 | इन्तिक़ाम लेने वाले | मुज्रिम (जमा) | से | बेशक हम | उस से | उस ने मुँह फेर लिया | फिर | उस के रब की आयात से |

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَلَا تَكُنْ فِىْ مِرْيَةٍ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| शक में | तो तुम न रहो | किताब (तौरेत) | मूसा (अ) | और तहक़ीक़ हम ने दी |

مِّنْ لِّقَآئِهٖ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٢٣﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 23 | बनी इस्राईल के लिए | हिदायत | और हम ने बनाया उसे | उस का मिलना | से मुतअ़ल्लिक़ |

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوْا ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने सब्र किया | जब | हमारे हुक्म से | वह रहनुमाई करते | इमाम (पेश्वा) | उन से | और हम ने बनाया |

وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٢٤﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के दरमियान | फ़ैसला करेगा | वह | तुम्हारा रब | बेशक | 24 | यक़ीन करते | हमारी आयतों पर | और वह थे |

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٢٥﴾ اَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | क्या हिदायत न हुई | 25 | इख़्तिलाफ़ करते | उस में | वह थे | उस में | क़ियामत के दिन |

كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِىْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के घर (जमा) | में | वह चलते हैं | उम्मतें | से | उन से क़ब्ल | हम ने कितनी हलाक कीं |

اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ ؕ اَفَلَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٢٦﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَسُوْقُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कि हम चलाते हैं | क्या उन्हों ने नहीं देखा | 26 | तो क्या वह सुनते नहीं | अलबत्ता निशानियां | उस में | बेशक |

الْمَآءَ اِلَى الْاَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से | खाते हैं | फिर हम निकालते हैं उस से खेती | खुश्क | ज़मीन | तरफ़ | पानी |

اَنْعَامُهُمْ وَاَنْفُسُهُمْ ؕ اَفَلَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى الثلثة

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कब | और वह कहते हैं | 27 | देखते नहीं वह | तो क्या | और वह खुद | उन के मवेशी |

هٰذَا الْفَتْحُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٨﴾ قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नफ़ा न देगा | फ़तह (फ़ैसले) के दिन | फ़रमा दें | 28 | सच्चे | तुम हो | अगर | फ़तह (फ़ैसला) | यह |

الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِيْمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٢٩﴾ فَاَعْرِضْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पस मुँह फेर लो | 29 | मोहलत दिए जाएंगे | वह | और न | उन का ईमान | जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) |

عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ اِنَّهُمْ مُّنْتَظِرُوْنَ ﴿٣٠﴾ ع ۸ ۳ ۱۶

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | 30 | मुन्तज़िर हैं | बेशक वह | और तुम इन्तिज़ार करो | उन से |

## آيَاتُهَا ٧٣ ❀ (٣٣) سُوْرَةُ الْاَحْزَابِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٩

रुकुआत 9 — (33) सुरतुल अहज़ाब लशकर — आयात 73

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और मुनाफ़िक़ों | काफ़िरों | और कहा न मानें | अल्लाह से डरते रहें | ऐ नबी (स) |

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١﴾ وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحٰۤى اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप के रब (की तरफ़) से | आप की तरफ़ | जो वहि किया जाता है | और पैरवी करें आप | 1 | हिक्मत वाला | जानने वाला | है | बेशक अल्लाह |

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿٢﴾ وَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ وَكَفٰى بِاللّٰهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और काफी है अल्लाह | अल्लाह पर | और भरोसा रखें आप (स) | 2 | ख़बरदार | तुम करते हो | उस से जो | है | बेशक अल्लाह |

وَكِيْلًا ﴿٣﴾ مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ وَمَا جَعَلَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और नही बनाया | उस के सीने में | दो दिल | किसी आदमी के लिए | नहीं बनाए अल्लाह ने | 3 | कार साज़ |

اَزْوَاجَكُمُ الّٰٓـِٔيْ تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَآءَكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे मुँह बोले बेटे | और नही बनाया | तुम्हारी माएं | उन से- उन्हें | तुम माँ कह बैठते हो | वह जिन्हें | तुम्हारी बीवियां |

اَبْنَآءَكُمْ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह | हक़ | फ़रमाता है | और अल्लाह | अपने मुँह (जमा) | तुम्हारा कहना | यह तुम | तुम्हारे बेटे |

يَهْدِى السَّبِيْلَ ﴿٤﴾ اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के नज़्दीक | ज़ियादा इंसाफ़ | यह | उनके बापों की तरफ़ | उन्हें पुकारो | 4 | रास्ता | हिदायत देता है |

فَاِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْٓا اٰبَآءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِى الدِّيْنِ وَمَوَالِيْكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और तुम्हारे रफ़ीक़ | दीन में (दीनी) | तो वह तुम्हारे भाई | उन के बापों को | तुम न जानते हो | फिर अगर |

وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيْمَآ اَخْطَاْتُمْ بِهٖ وَلٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने दिल | जो इरादे से | और लेकिन | उस से | उस में जो तुम से भूल चूक हो चुकी | कोई गुनाह | तुम पर | और नही |

وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٥﴾ اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | मोमिनों के | ज़ियादा (हक़दार) | नबी (स) | 5 | मेहरबान | बख़्शने वाला | अल्लाह | और है |

اَنْفُسِهِمْ وَاَزْوَاجُهٗۤ اُمَّهٰتُهُمْ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नज़्दीक तर | उन में से बाज़ | और क़राबतदार | उन की माएं | और उस की बीवियां | उन की जानें |

بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ اِلَّآ اَنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर यह कि | और मुहाजिरों | मोमिनों | से | अल्लाह की किताब | में | बाज़ (दूसरों) से |

تَفْعَلُوْٓا اِلٰٓى اَوْلِيٰٓئِكُمْ مَّعْرُوْفًا كَانَ ذٰلِكَ فِى الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ﴿٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | लिखा हुआ | किताब में | यह | है | हुस्ने सुलूक | अपने दोस्त (जमा) | तरफ़ (साथ) | तुम करो |

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ऐ नबी (स)! अल्लाह से डरते रहें, और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों का कहा न मानें, बेशक अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (1)

और पैरवी करें जो वहि किया जाता है आप (स) को आप (स) के रब की तरफ़ से, बेशक अल्लाह उस से बा ख़बर है जो तुम करते हो। (2)

और आप (स) अल्लाह पर भरोसा रखें, अल्लाह काफ़ी है कार साज़। (3)

अल्लाह ने नहीं बनाए किसी आदमी के लिए उस के सीने में दो दिल, और तुम्हारी उन बीवियों को जिन्हें तुम माँ कह बैठते हो नहीं बनाया तुम्हारी माएं, और तुम्हारे मुँह बोले (ले पालकों को) (सच मुच) तुम्हारे बेटे नहीं बनाया, यह (सिर्फ़) तुम्हारे मुँह से कहने (की बात है) और अल्लाह हक़ फ़रमाता है, और वह रास्ते की हिदायत देता है। (4)

उन्हें उन ही के बापों की तरफ़ (मन्सूब कर के) पुकारो, यह अल्लाह के नज़्दीक ज़ियादा (क़रीने) इंसाफ़ है, फिर अगर तुम उन के बापों को न जानते हो तो वह तुम्हारे दीनी भाई हैं, और वह तुम्हारे रफ़ीक़ हैं, और तुम पर नहीं उस में कोई गुनाह जो तुम से भूल चूक हो चुकी, लेकिन (हां) जो अपने दिल के इरादे से करो, और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है। (5)

नबी (स) मोमिनों के लिए उन के अपने नफ़्स से ज़ियादा हक़दार हैं और आप (नबी स) की बीवीयां उन (मोमिनों) की माँएं हैं, और क़राबतदार अल्लाह की किताब में बाज़ (आम) मुसलमानों और मुहाजिरों की बनिस्बत एक दूसरे से ज़ियादा नज़्दीक (फ़ाइक़) हैं मगर यह कि तुम करो अपने दोस्तों के साथ हुस्ने सुलूक, यह (अल्लाह की) किताब में लिखा हुआ है। (6)

और (याद करो) जब हम ने लिया नबियों से उन का अ़हद, और तुम से (भी लिया) और नूह (अ) से और इब्राहीम (अ) से और मूसा (अ) और मरयम (अ) के बेटे ईसा (अ) से, और हम ने उन से पुख़्ता अ़हद लिया। (7) ताकि वह (उन) सच्चों से उन की सच्चाई (के बारे में) सवाल करे, और उस ने काफ़िरों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार किया है। (8) ऐ ईमान वालो! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत (उस का एहसान) याद करो जब तुम पर बहुत से लश्कर चढ़ आए तो हम ने उन पर आन्धी भेजी और (ऐसे) लश्कर जिन्हें तुम ने न देखा, और अल्लाह उसे देखने वाला है जो तुम करते हो। (9) जब वह तुम पर (चढ़) आए तुम्हारे ऊपर (की तरफ़) से और तुम्हारे नीचे (की तरफ़) से, और जब आँखें चुन्धिया गईं, और दिल गलों में (कलेजे मुँह को) आने लगे और तुम अल्लाह के बारे में (तरह तरह के) गुमान कर रहे थे। (10) यहां (इस मौक़े पर) मोमिन आज़माए गए और वह शदीद हिलाए (झिन्झोड़े) गए। (11) और जब कहने लगे मुनाफ़िक़ और वह जिन के दिलों में रोग है: हम से अल्लाह और उस के रसूल (स) ने जो वादा किया वह सिर्फ़ धोका था। (12) और जब उन में से एक गिरोह ने कहा ऐ यसरिब (मदीने) वालो! तुम्हारे लिए कोई जगह (ठिकाना) नहीं, लिहाज़ा तुम लौट चलो, और उन में से एक गिरोह इजाज़त मांगता था नबी (स) से, वह कहते थे कि हमारे घर बेशक ग़ैर महफ़ूज़ हैं, हालांकि वह ग़ैर महफ़ूज़ नहीं हैं, वह तो सिर्फ़ फ़िरार चाहते हैं। (13) और अगर (दुश्मन) उन पर मदीने के अतराफ़ से दाख़िल हो जाएं (आ घुसें) फिर उन से फ़साद चाहा जाए (कहा जाए) तो वह उसे ज़रूर देंगे (मन्ज़ूर कर लेंगे) और घरों में सिर्फ़ थोड़ी सी देर लगाएंगे। (14) हालांकि वह इस से पहले अल्लाह से अ़हद कर चुके थे कि वह पीठ न फेरेंगे, और अल्लाह से किया हुआ अ़हद पूछा जाने वाला है। (15)

وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُّوْحٍ وَّاِبْرٰهِيْمَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और इब्राहीम (अ) | और नूह (अ) से | और तुम से | उन का अ़हद | नबियों | से | हम ने लिया | और जब |

وَمُوْسٰى وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۪ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | पुख़्ता | अ़हद | उन से | और हम ने लिया | और मरयम के बेटे ईसा (अ) | और मूसा (अ) |

ع ٨/١ ١٢ لِّيَسْـَٔلَ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صِدْقِهِمْ ۚ وَاَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | दर्दनाक | अ़ज़ाब | काफ़िरों के लिए | और उस ने तैयार किया | उन की सच्चाई | से | सच्चे | ताकि वह सवाल करे |

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| लश्कर (जमा) | जब तुम पर (चढ़) आए | अपने ऊपर | अल्लाह की नेमत | याद करो | ईमान वालो | ऐ |

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَّجُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम करते हो | उसे जो | अल्लाह | और है | तुम ने उन्हें न देखा | और लश्कर | आँधी | उन पर | हम ने भेजी |

بَصِيْرًا ﴿٩﴾ اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَاِذْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जब | तुम्हारे | और नीचे से | तुम्हारे ऊपर | से | वह तुम पर आए | जब | 9 | देखने वाला |

زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के बारे में | और तुम गुमान करते थे | गले | दिल (जमा) | और पहुँच गए | कज हुई (चुन्धिया गईं) आँखें |

الظُّنُوْنَا ﴿١٠﴾ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا ﴿١١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | शदीद | हिलाया जाना | और वह हिलाए गए | मोमिन (जमा) | आज़माए गए | यहां | 10 | बहुत से गुमान |

وَاِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो हम से वादा किया | रोग | दिलों में | और वह जिन के | मुनाफ़िक़ (जमा) | कहने लगे | और जब |

اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿١٢﴾ وَاِذْ قَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ يٰۤاَهْلَ يَثْرِبَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ यसरिब (मदीने) वालो | उन में से | एक गिरोह | कहा | और जब | 12 | धोका देना | मगर (सिर्फ़) | अल्लाह और उस का रसूल |

لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا ۚ وَيَسْتَاْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नबी से | उन में से | एक गिरोह | और इजाज़त मांगता था | लिहाज़ा तुम लौट चलो | तुम्हारे लिए | कोई जगह नही |

يَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ۛؕ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۚۛ اِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا (عدد المتقدمی ١٠ / ١٢)

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर (सिर्फ़) | वह नही चाहते | ग़ैर महफ़ूज़ | हालांकि वह नही | ग़ैर महफ़ूज़ | हमारे घर | बेशक | वह कहते थे |

فِرَارًا ﴿١٣﴾ وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ اَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़साद | उन से चाहा जाए | फिर | उस (मदीने) के अतराफ़ | से | उन पर | दाख़िल हो जाएं | और अगर | 13 | फ़िरार |

لَاٰتَوْهَا وَمَا تَلَبَّثُوْا بِهَآ اِلَّا يَسِيْرًا ﴿١٤﴾ وَلَقَدْ كَانُوْا عَاهَدُوا اللّٰهَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | हालांकि वह अ़हद कर चुके थे | 14 | थोड़ी सी | मगर (सिर्फ़) | उस में | और न देर लगाएंगे | तो वह ज़रूर उसे देंगे |

مِنْ قَبْلُ لَا يُوَلُّوْنَ الْاَدْبَارَ ۗ وَكَانَ عَهْدُ اللّٰهِ مَسْـُٔوْلًا ﴿١٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15 | पूछा जाने वाला | अल्लाह का अ़हद | और है | पीठ | फेरेंगे | न | इस से पहले |

قُلْ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ اِنْ فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْتِ اَوِ الْقَتْلِ وَاِذًا

फ़रमा दें | तुम्हें हरगिज़ नफ़ा न देगा | फ़िरार | अगर | तुम भागे | मौत से | या | क़त्ल | और उस सूरत में

لَّا تُمَتَّعُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٦﴾ قُلْ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللّٰهِ اِنْ

न फ़ाइदा दिए जाओगे | मगर (सिर्फ़) | थोड़ा | 16 | फ़रमा दें | कौन जो | वह जो तुम्हें बचाए | अल्लाह से | अगर

اَرَادَ بِكُمْ سُوْٓءًا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ؕ وَلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ

वह चाहे तुम से | बुराई | या | चाहे तुम से | मेहरबानी | और वह न पाएंगे | अपने लिए | अल्लाह के सिवा

وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٧﴾ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الْمُعَوِّقِيْنَ مِنْكُمْ وَالْقَآئِلِيْنَ

कोई दोस्त | और न मददगार | 17 | ख़ूब जानता है | अल्लाह | रोकने वाले | तुम में से | और कहने वाले

لِاِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ اِلَيْنَا ۚ وَلَا يَاْتُوْنَ الْبَاْسَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٨﴾ اَشِحَّةً

अपने भाइयों से | आजाओ | हमारी तरफ़ | और नहीं आते | लड़ाई | मगर | बहुत कम | 18 | बुख़्ल करते हुए

عَلَيْكُمْ ۖ فَاِذَا جَآءَ الْخَوْفُ رَاَيْتَهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ تَدُوْرُ

तुम्हारे मुतअ़ल्लिक़ | फिर जब आए | ख़ौफ़ | तुम देखोगे उन्हें | वह देखने लगते हैं | तुम्हारी तरफ़ | घूम रही है

اَعْيُنُهُمْ كَالَّذِيْ يُغْشٰى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۚ فَاِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ

उन की आँखें | उस शख़्स की तरह | ग़शी आती है | उस पर | मौत से | फिर जब | चला जाए | ख़ौफ़

سَلَقُوْكُمْ بِاَلْسِنَةٍ حِدَادٍ اَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ۚ اُولٰٓئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوْا

तुम्हें ताने देने लगे | ज़बानों से | तेज़ | बख़ीली (लालच) करते हुए | माल पर | यह लोग | नहीं ईमान लाए

فَاَحْبَطَ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ ۚ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿١٩﴾ يَحْسَبُوْنَ

तो अकारत कर दिए अल्लाह ने | उन के अ़मल | और है | यह | अल्लाह पर | आसान | 19 | वह गुमान करते हैं

الْاَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوْا ۚ وَاِنْ يَّاْتِ الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ اَنَّهُمْ

लशकर (जमा) | नहीं गए हैं | और अगर आएं | लशकर | वह तमन्ना करें | कि काश वह

بَادُوْنَ فِي الْاَعْرَابِ يَسْاَلُوْنَ عَنْ اَنْۢبَآئِكُمْ ۚ وَلَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ

बाहर निकले हुए होते | देहातियों में | पूछते रहते | से | तुम्हारी ख़बरें | और अगर | हों | तुम्हारे दरमियान

ع ١٢ ٢ ١٨ مَّا قٰتَلُوْٓا اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٢٠﴾ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ

जंग न करें | मगर | बहुत कम | 20 | अलबत्ता है यक़ीनन | तुम्हारे लिए | में | अल्लाह का रसूल (स) | मिसाल (नमूना) | अच्छा बेहतरीन

لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ﴿٢١﴾ وَلَمَّا

उस के लिए जो | उम्मीद रखता है | अल्लाह | और रोज़े आख़िरत | और अल्लाह को याद करता है | कस्रत से | 21 | और जब

رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ الْاَحْزَابَ ۙ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ

मोमिनों ने देखा | लशकरों को | वह कहने लगे | यह है | जो हम को वादा दिया | अल्लाह | और उस का रसूल (स)

وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۫ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّآ اِيْمَانًا وَّتَسْلِيْمًا ﴿٢٢﴾

और सच कहा था | अल्लाह | और उस का रसूल | और न | उन का ज़ियादा किया | मगर | ईमान | और फ़रमांबरदारी | 22

आप (स) फ़रमा दें: फ़िरार तुम्हें हरगिज़ नफ़ा न देगा अगर तुम मौत या क़त्ल से भागे, और उस सूरत में तुम सिर्फ़ थोड़ा (चन्द दिन) फ़ाइदा दिए जाओगे। (16) आप (स) फ़रमा दें: वह कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचा सकता? अगर वह तुम से बुराई (करना) चाहे या तुम पर मेहरबानी करना चाहे और वह अपने लिए अल्लाह के सिवा कोई दोस्त न पाएंगे और न मददगार। (17) अल्लाह ख़ूब जानता है तुम में से (दूसरों को जिहाद से) रोकने वालों को, और अपने भाइयों से यह कहने वालों को कि हमारी तरफ़ आजाओ, और वह लड़ाई में नहीं आते मगर बहुत कम। (18) तुम्हारा साथ देने में बख़ीली करते हैं, फिर जब ख़ौफ़ आए तो तुम उन्हें देखोगे कि वह तुम्हारी तरफ़ (यूँ) देखने लगते हैं (जैसे) उन की आँखें घूम रही हैं उस शख़्स की तरह जिस पर मौत की ग़शी (तारी) हो, फिर जब ख़ौफ़ चला जाए तो तुम्हें ताने देने लगें तेज़ ज़बानों से, माल पर बख़ीली करते हुए, यह लोग ईमान नहीं लाए, तो अल्लाह ने अकारत कर दिए उन के अ़मल, और अल्लाह पर यह आसान है। (19) वह गुमान करते हैं कि (काफ़िरों के) लशकर (अभी) नहीं गए हैं, और अगर लशकर (दोबारा) आएं तो वह तमन्ना करें कि काश वह देहात में बाहर निकले होते (सेहरा नशीन होते) तुम्हारी ख़बरें पूछते रहते और अगर तुम्हारे दरमियान हों तो जंग न करें मगर बहुत कम। (20) यक़ीनन तुम्हारे लिए है अल्लाह के रसूल (स) में एक बेहतरीन नमूना, (हर) उस शख़्स के लिए जो अल्लाह और रोज़े आख़िरत पर उम्मीद रखता है, और अल्लाह को बकस्रत याद करता है। (21) और जब मोमिनों ने लशकरों को देखा तो वह कहने लगे: यह है जिस का हमें अल्लाह और उस के रसूल ने वादा दिया था, और अल्लाह और उस के रसूल (स) ने सच कहा था, और (उस सूरते हाल ने) उन में ज़ियादा न किया मगर ईमान और फ़रमांबरदारी (का जज़्बा)। (22)

मोमिनों में कुछ ऐसे आदमी हैं कि उन्हों ने अल्लाह से जो अहद किया था वह सच कर दिखाया, सो उन में से (कुछ हैं) जो अपनी नज़र पूरी कर चुके, और उन में (कुछ हैं) जो इन्तिज़ार में हैं, और उन्हों ने कुछ भी तबदीली नहीं की। (23) (यह इस लिए हुआ) कि अल्लाह जज़ा दे सच्चे लोगों को उन की सच्चाई की, और अगर वह चाहे तो मुनाफ़िक़ों को अज़ाब दे या वह उन की तौबा कुबूल कर ले, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है। (24) और अल्लाह ने काफ़िरों को लौटा दिया उन के (अपने) गुस्से में भरे हुए, उन्हों ने कोई भलाई न पाई, और जंग (के मामले में) मोमिनों के लिए अल्लाह काफ़ी है, और अल्लाह है तवाना और ग़ालिब। (25) और अहले किताब में से जिन्हों ने उन की मदद की थी, उस ने उन्हें उन के क़िलों से उतार दिया, और उन के दिलों में रुअ़्ब डाल दिया, एक गिरोह को तुम क़त्ल करते हो और एक गिरोह को क़ैद करते हो। (26) और तुम्हें वारिस बना दिया उन की ज़मीन का, और उन के घरों का, और उन के मालों का, और उस ज़मीन का जहां तुम ने क़दम नहीं रखा था, और अल्लाह है हर शै पर क़ुदरत रखने वाला। (27) ऐ नबी (स) आप (स) अपनी बीवियों से फ़रमा दें, अगर तुम दुनिया की ज़िन्दगी और उस की ज़ीनत चाहती हो तो आओ, मैं तुम्हें कुछ देदूँ और रुख़्सत कर दूँ अच्छी तरह रुख़्सत। (28) और अगर तुम अल्लाह और उस का रसूल (स) और आख़िरत का घर चाहती हो तो बेशक अल्लाह ने तुम में से नेकी करने वालियों के लिए अजरे अ़ज़ीम तैयार कर रखा है। (29) ऐ नबी (स) की बीवियो! जो कोई तुम में से खुली बेहूदगी की मुर्तकिब हो तो उस के लिए अज़ाब दो चन्द बढ़ा दिया जाएगा, और यह अल्लाह पर आसान है (30)

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सो उन में से | उस पर | उन्हों ने अ़हद किया अल्लाह से | जो | उन्हों ने सच कर दिखाया | ऐसे आदमी | मोमिन (जमा) | से (में) |

مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ﴿۲۳﴾ لِّيَجْزِيَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि जज़ा दे | 23 | कुछ भी तबदीली | और उन्हों ने तबदीली नहीं की | इन्तिज़ार में है | जो | और उन में से | नज़र अपनी | पूरा कर चुका | जो |

اللّٰهُ الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ اَوْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| या | अगर वह चाहे | मुनाफ़िक़ों | और वह अ़ज़ाब दे | उन की सच्चाई की | सच्चे लोग | अल्लाह |

يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۲۴﴾ وَرَدَّ اللّٰهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और लौटा दिया अल्लाह ने | 24 | मेहरबान | बख़्शने वाला | है | बेशक अल्लाह | वह उन की तौबा कुबूल कर ले |

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ۗ وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ۗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जंग | मोमिनीन | और काफ़ी है अल्लाह | कोई भलाई | उन्हों ने न पाई | उन के गुस्से में भरे हुए | वह जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) |

وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ﴿۲۵﴾ وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अहले किताब | से | जिन्हों ने उन की मदद की | उन लोगों को | और उतार दिया | 25 | ग़ालिब | तवाना | अल्लाह | और है |

مِنْ صَيَاصِيْهِمْ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيْقًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| एक गिरोह | रुअ़्ब | उन के दिल | में | और डाल दिया | उन के क़िलए | से |

تَقْتُلُوْنَ وَتَاْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ﴿۲۶﴾ وَاَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन के घर (जमा) | उन की ज़मीन | और तुम्हें वारिस बना दिया | 26 | एक गिरोह | और तुम क़ैद करते हो | तुम क़त्ल करते हो |

وَاَمْوَالَهُمْ وَاَرْضًا لَّمْ تَطَـُٔوْهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿۲۷﴾ ع ۳ ۱۹

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 27 | क़ुदरत रखने वाला | हर शै | पर | अल्लाह | और है | तुम ने वहां क़दम नहीं रखा | और वह ज़मीन | और उन के माल (जमा) |

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दुनिया | ज़िन्दगी | चाहती हो | तुम हो | अगर | अपनी बीवियों से | फ़रमा दें | ऐ नबी (स) |

وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَاُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿۲۸﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 28 | अच्छी | रुख़्सत करना | और तुम्हें रुख़्सत कर दूँ | मैं तुम्हें कुछ देदूँ | तो आओ | और उस की ज़ीनत |

وَاِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और आख़िरत का घर | और उस का रसूल | चाहती हो अल्लाह | तुम | और अगर |

فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۲۹﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 29 | अजरे अ़ज़ीम | तुम में से | नेकी करने वालियों के लिए | तैयार किया है | पस बेशक अल्लाह |

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बढ़ाया जाएगा | खुली | बेहूदगी के साथ | तुम में से | लाए (मुर्तकिब हो) | जो कोई | ऐ नबी की बीवियो |

لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۗ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿۳۰﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | आसान | अल्लाह पर | यह | और है | दो चन्द | अज़ाब | उस के लिए |

وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नेक | और अ़मल करे | अल्लाह और उस के रसूल (स) की | तुम में से | इताअत करे | और जो |

نُّؤْتِهَآ اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ وَاَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 31 | इज़्ज़त का रिज़्क़ | उस के लिए | और हम ने तैयार किया | दोहरा | उस का अजर | हम देंगे उस को |

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो मुलाइमत न करो | तुम परहेज़गारी करो | अगर | औरतों में से | किसी एक की तरह | तुम नहीं हो | ऐ नबी (स) की बीवियो! |

بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿٣٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 32 | अच्छी (माक़ूल) | बात | और बात करो तुम | रोग (खोट) | उस के दिल में | वह जो | कि लालच करे | गुफ़्तगू में |

وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अगला | (ज़माना-ए) जाहिलियत | बनाव सिंगार | और बनाव सिंगार का इज़हार करती न फिरो | अपने घरों में | और क़रार पकड़ो |

وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह और उस का रसूल | और इताअत करो | ज़कात | और देती रहो | नमाज़ | और क़ाइम करो |

اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ऐ अहले बैत | आलूदगी | तुम से | कि दूर फ़रमा दे | अल्लाह चाहता है | इस के सिवा नहीं |

وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ﴿٣٣﴾ وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे घर (जमा) | में | जो पढ़ा जाता है | और तुम याद रखो | 33 | ख़ूब पाक | और तुम्हें पाक और साफ़ रखे |

مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ﴿٣٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 34 | बाख़बर | बारीक बीन | है | बेशक अल्लाह | और हिक्मत | अल्लाह की आयतें | से |

اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और मोमिन औरतें | और मामिन मर्द | और मुसलमान औरतें | मुसलमान मर्द | बेशक |

وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ وَالصّٰبِرِيْنَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और सब्र करने वाले मर्द | और रास्तगो औरतें | और रास्तगो मर्द | और फ़रमांबरदार औरतें | और फ़रमांबरदार मर्द |

وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ

| | | | |
|---|---|---|---|
| और सदक़ा करने वाले मर्द | और आजिज़ी करने वाली औरतें | और आजिज़ी करने वाले मर्द | और सब्र करने वाली औरतें |

وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ

| | | | |
|---|---|---|---|
| और हिफ़ाज़त करने वाले मर्द | और रोज़ा रखने वाली औरतें | और रोज़ा रखने वाले मर्द | और सदक़ा करने वाली औरतें |

فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बकसरत | अल्लाह | और याद करने वाले | और हिफ़ाज़त करने वाली औरतें | अपनी शर्मगाहें |

وَّالذّٰكِرٰتِ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٣٥﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 35 | और अजरे अ़ज़ीम | बख़्शिश | उन के लिए | अल्लाह ने तैयार किया | और याद करने वाली औरतें |

और तुम में से जो अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअत करे और नेक अ़मल करे हम उसे उस का दोहरा अजर देंगे और हम ने उस के लिए इज़्ज़त का रिज़्क़ तैयार किया है। (31) ऐ नबी (स) की बीवियो! औ़रतों में से तुम किसी एक की तरह (आ़म) नहीं हो, अगर तुम परहेज़गारी इख़्तियार करो तो गुफ़्तुगू में मुलाइमत न करो कि जिस के दिल में खोट है वह लालच (ख़्याले फ़ासिद) करे और तुम बात करो माक़ूल बात। (32) और अपने घरों में क़रार पकड़ो, और अगले ज़माना-ए-जाहिलियत के बनाव सिंगार का इज़हार करती न फिरो, और नमाज़ क़ाइम करो, और ज़कात देती रहो, और अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअत करो, बेशक अल्लाह चाहता है कि वह तुम से आलूदगी दूर फ़रमा दे ऐ अहले बैत! और तुम्हें ख़ूब (हर तरह से) पाक और साफ़ रखे। (33) और तुम याद रखो जो तुम्हारे घरों में अल्लाह की आयतें और हिक्मत (दानाई की बातें) पढ़ी जाती हैं, बेशक अल्लाह बारीक बीन, बाख़बर है। (34) बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें, और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें, और फ़रमांबरदार मर्द और फ़रमांबरदार औरतें, और रास्तगो मर्द और रास्तगो औरतें, और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें, और आजिज़ी करने वाले मर्द और आजिज़ी करने वाली औरतें, और सदक़ा (ख़ैरात) करने वाले मर्द और सदक़ा (ख़ैरात) करने वाली औरतें, और रोज़ा रखने वाले मर्द और रोज़ा रखने वाली औरतें, और हिफ़ाज़त करने वाले मर्द अपनी शर्मगाहों की, और हिफ़ाज़त करने वाली औरतें, और अल्लाह को बकसरत याद करने वाले मर्द और (अल्लाह को) याद करने वाली औरतें, अल्लाह ने उन (सब) के लिए तैयार की है बख़्शिश और अजरे अ़ज़ीम। (35)

और (गुन्जाइश) नहीं है किसी मोमिन मर्द और न किसी मोमिन औरत के लिए कि जब फ़ैसला कर दें अल्लाह और उस के रसूल (स) किसी मामले का, कि उन के लिए उस मामले में कोई इख़्तियार बाक़ी हो, और जो नाफ़रमानी करेगा, अल्लाह और उस के रसूल (स) की तो अलबत्ता वह सरीह गुमराही में जा पड़ा। (36)

और याद करो जब आप (स) उस शख़्स [ज़ैद र॰ बिन हारिसा] को फ़रमाते थे जिस पर अल्लाह ने इन्आम किया और आप (स) ने भी उस पर इन्आम किया कि अपनी बीवी [ज़ैनब र॰] को अपने पास रोके रख और अल्लाह से डर, और आप (स) छुपाते थे अपने दिल में वह (बात) जिसे अल्लाह जाहिर करने वाला था और आप (स) लोगों (के तअ़न) से डरते थे और अल्लाह जियादा हक़दार है कि तुम उस से डरो, फिर जब ज़ैद ने उस [ज़ैनब] से अपनी हाजत पूरी कर ली तो हम ने उसे आप (स) के निकाह में दे दिया, ताकि मोमिनों पर कोई तंगी न रहे अपने ले पालकों की बीवियों (से निकाह करने में) जब वह उन से अपनी हाजत पूरी कर लें (तलाक़ दे दें) और अल्लाह का हुक्म (पूरा हो कर) रहने वाला है। (37)

नबी पर उस काम में कोई हरज (तंगी) नहीं है जो अल्लाह ने उस के लिए मुक़र्रर किया, अल्लाह का (यही) दस्तूर (रहा है) उन में जो पहले गुज़रे हैं और अल्लाह का हुक्म (सहीह) अन्दाज़े से मुक़र्रर किया हुआ है। (38)

वह जो अल्लाह के पैग़ामात पहुँचाते हैं और वह उस से डरते हैं और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते, और अल्लाह काफ़ी है हिसाब लेने वाला। (39)

मुहम्मद (स) तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं, लेकिन वह अल्लाह के रसूल और (सब) नबियों पर मुह्र (आख़री नबी) हैं और अल्लाह हर शै का जानने वाला है। (40)

ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह को याद करो बकस्रत। (41)

और सुब्ह और शाम उस की पाकीज़गी बयान करो (42)

वही है जो तुम पर रहमत भेजता है और उस के फ़रिश्ते (भी) ताकि वह तुम्हें अँधेरों से नूर की तरफ़ निकाल लाए, और अल्लाह मोमिनों पर मेह्रबान है। (43)

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اَمْرًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| किसी काम का | अल्लाह और उस का रसूल | फ़ैसला कर दें | जब | और न किसी मोमिन औरत के लिए | किसी मोमिन मर्द के लिए | और नहीं है |

اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह और उस का रसूल | नाफ़रमानी करेगा | और जो | उन के काम में | कोई इख़्तियार | उन के लिए | कि (बाक़ी) हो |

فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ﴿٣٦﴾ وَاِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْۤ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस पर | अल्लाह ने इन्आम किया | उस शख़्स को | और (याद करो) जब आप (स) फ़रमाते थे | 36 | सरीह | गुमराही | तो अलबत्ता वह गुमराही में जा पड़ा |

وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने दिल में | और आप (स) छुपाते थे | और डर अल्लाह से | अपनी बीवी | अपने पास | रोके रख | उस पर | और आप (स) ने इन्आम किया |

مَا اللّٰهُ مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشٰىهُ ؕ فَلَمَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर जब | तुम उस से डरो | कि | जियादा हक़दार | और अल्लाह | लोग | और आप (स) डरते थे | उस को जाहिर करने वाला | जो अल्लाह |

قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मोमिनों | पर | न रहे | ताकि | हम ने उसे तुम्हारे निकाह में दे दिया | अपनी हाजत | उस से | ज़ैद | पूरी कर ली |

حَرَجٌ فِيْۤ اَزْوَاجِ اَدْعِيَآئِهِمْ اِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ؕ وَكَانَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और है | अपनी हाजत | उन से | पूरी कर चुकें | जब वह | अपने ले पालक | बीवियों में | कोई तंगी |

اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿٣٧﴾ مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ اللّٰهُ لَهٗ ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के लिए | मुक़र्रर किया अल्लाह ने | उस में जो | कोई हरज | नबी पर | नहीं है | 37 | हो कर रहने वाला | अल्लाह का हुक्म |

سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا مَّقْدُوْرَا ۟ۙ ﴿٣٨﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 38 | अन्दाज़े से | मुक़र्रर किया हुआ | अल्लाह का हुक्म | और है | पहले | गुज़रे | वह जो | में | अल्लाह का दस्तूर |

اۨلَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ وَيَخْشَوْنَهٗ وَلَا يَخْشَوْنَ اَحَدًا اِلَّا اللّٰهَ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के सिवा | किसी से | वह नहीं डरते | और उस से डरते हैं | अल्लाह के पैग़ामात | पहुँचाते हैं | वह जो |

وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ﴿٣٩﴾ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे मर्दों में से | किसी के | बाप | मुहम्मद (स) | नहीं है | 39 | हिसाब लेने वाला | अल्लाह | और काफ़ी है |

وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हर शै का | अल्लाह | और है | नबियों | और मुह्र | अल्लाह के रसूल | और लेकिन |

عَلِيْمًا ﴿٤٠﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ۙ ﴿٤١﴾ ع ٥ ٦ ٢

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 41 | बकस्रत | याद | अल्लाह | याद करो तुम | ईमान वालो | ऐ | 40 | जानने वाला |

وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٤٢﴾ هُوَ الَّذِيْ يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उस के फ़रिश्ते | तुम पर | भेजता है | वही जो | 42 | और शाम | सुबह | और पाकीज़गी बयान करो उस की |

لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ﴿٤٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 43 | मेह्रबान | मोमिनों पर | और है | नूर की तरफ़ | अन्धेरों | से | ताकि वह तुम्हें निकाले |

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ ۚ وَّاَعَدَّ لَهُمْ اَجْرًا كَرِيْمًا ﴿٤٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 44 | बड़ा अच्छा | अजर | उन के लिए | और तैयार किया उस ने | सलाम | वह मिलेंगे उस को | जिस दिन | उन की दुआ |

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿٤٥﴾ وَّدَاعِيًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और बुलाने वाला | 45 | और डर सुनाने वाला | और ख़ुश ख़बरी देने वाला | गवाही देने वाला | बेशक हम ने आप (स) को भेजा | ऐ नबी (स) |

اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ﴿٤٦﴾ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | यह कि | मोमिनों (जमा) | और ख़ुशख़बरी दें | 46 | रोशन | और चिराग़ | उन के हुक्म से | अल्लाह की तरफ़ |

مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيْرًا ﴿٤٧﴾ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَدَعْ اَذٰىهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन का ईज़ा देना | और परवा न करें | और मुनाफ़िक़ (जमा) | काफ़िर (जमा) | और कहा न मानें | 47 | बड़ा | फ़ज़्ल | अल्लाह (की तरफ़) से |

وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿٤٨﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब | ईमान वालो | ऐ | 48 | कारसाज़ | अल्लाह | और काफ़ी | अल्लाह पर | और भरोसा करें |

نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम उन्हें हाथ लगाओ | कि | पहले | तुम उन्हें तलाक़ दो | फिर | मोमिन औरतों | तुम निकाह करो |

فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّوْنَهَا ۚ فَمَتِّعُوْهُنَّ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| पस तुम उन्हें कुछ मताअ़ दो | कि पूरी कराओ तुम उस से | कोई इद्दत | उन पर | तो नहीं तुम्हारे लिए |

وَسَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿٤٩﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَحْلَلْنَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हम ने हलाल कीं | ऐ नबी (स)! | 49 | अच्छी तरह | रुख़सत | और उन्हें रुख़सत कर दो |

لَكَ اَزْوَاجَكَ الّٰتِيْۤ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारा दायां हाथ | मालिक हुआ | और जो | उन का मेहर | तुम ने दे दिया | वह जो कि | तुम्हारी बीवियां | तुम्हारे लिए |

مِمَّاۤ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَبَنٰتِ عَمِّكَ وَبَنٰتِ عَمّٰتِكَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और तुम्हारी फुफियों की बेटियां | और तुम्हारे चचाओं की बेटियां | तुम्हारे | अल्लाह ने हाथ लगा दीं | उन से जो |

وَبَنٰتِ خَالِكَ وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ هَاجَرْنَ مَعَكَ ۫ وَامْرَاَةً

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और औरत | तुम्हारे साथ | उन्हों ने हिज्रत की | वह जिन्हों ने | और तुम्हारी ख़ालाओं की बेटियां | और तुम्हारे मामूओं की बेटियां |

مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ اَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | चाहे नबी (स) | अगर | नबी (स) के लिए | अपने आप को | वह बख़्शदे (नज़्र कर दे) | अगर | मोमिना |

يَّسْتَنْكِحَهَا ۗ خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ قَدْ عَلِمْنَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता हमें मालूम है | मोमिनों | अ़लावा | तुम्हारे लिए | ख़ास | उसे निकाह में लेले |

مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيْۤ اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मालिक हुए उन के दाहिने हाथ (कनीजें) | और जो | उन की औरतें | में | उन पर | जो हम ने फ़र्ज़ किया |

لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٥٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 50 | मेहरबान | बख़्शने वाला | अल्लाह | और है | कोई तंगी | तुम पर | ताकि न रहे |

उन का इस्तिक़्बाल जिस दिन वह उस को मिलेंगे "सलाम" से होगा, और उस ने उन के लिए बड़ा अच्छा अजर तैयार किया है। (44)

ऐ नबी (स)! बेशक हम ने आप (स) को भेजा है गवाही देने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला। (45)

और उस के हुक्म से अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाला, और रोशन चिराग। (46)

और आप (स) मोमिनों को यह ख़ुशख़बरी दें कि उन के लिए अल्लाह की तरफ़ से बड़ा फ़ज़्ल है। (47)

और आप (स) कहा न मानें काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों का, और आप (स) उन के ईज़ा देने का खयाल न करें और अल्लाह पर भरोसा करें। और काफ़ी है अल्लाह कारसाज़। (48)

ऐ ईमान वालो! जब तुम मोमिन औरतों से निकाह करो, फिर तुम उन्हें उस से पहले तलाक़ दे दो कि तुम उन्हें हाथ लगाओ तो उन पर तुम्हारा (कोई हक़) नहीं कि उन की इद्दत पूरी कराओ, पस उन्हें कुछ सामान दे दो और रुख़सत कर दो अच्छी तरह रुखसत। (49)

ऐ नबी (स)! हम ने तुम्हारे लिए हलाल कीं तुम्हारी वह बीवियां जिन को तुम ने उन का मेहर दे दिया, और तुम्हारी कनीज़ें उन में से जो अल्लाह ने (ग़नीमत में से) तुम्हारे हाथ लगा दीं और तुम्हारे चचाओं की बेटियां, और तुम्हारी फुफियों की बेटियां, और तुम्हारे मामूओं की बेटियां, और तुम्हारी खालाओं की बेटियां, वह जिन्हों ने तुम्हारे साथ हिज्रत की, और वह मोमिन औ़रत जो अपने आप को नबी (स) की नज्र कर दे, अगर नबी (स) उसे निकाह में लेना चाहे, यह आ़म मोमिनों के अ़लावा खास तुम्हारे लिए है, अलबत्ता हमें मालूम है जो हम ने उन की औ़रतों और कनीज़ों (के बारे) में उन पर फ़र्ज़ किया है, ताकि तुम पर कोई तंगी न रहे, और अल्लाह बख़्शने वाला, मेह्रबान है। (50)

आप (स) जिस को चाहें दूर रखें उन में से, और जिसे चाहें अपने पास रखें, और जिसे चाहें अपने पास रखें, और जिसे आप (स) ने दूर कर दिया था आप (स) तलब करें तो कोई तंगी (हरज) नहीं आप (स) पर, यह ज़ियादा क़रीब है कि (उस से) उन की आँखें ठंडी रहें और वह आज़ुर्दा न हों, और वह सब की सब उस पर राज़ी रहें जो आप उन्हें दें, और अल्लाह जानता है जो तुम्हारे दिलों में है, और अल्लाह जानने वाला बुर्दबार है। **(51)**

हलाल नहीं आप (स) के लिए इस के बाद (और) औरतें, और न यह कि आप (स) उन से और औरतें बदल लें अगरचे आप (स) को अच्छा लगे उन का हुस्न, सिवाए आप (स) की कनीज़ें, और अल्लाह हर शै पर निगहबान है। **(52)**

ऐ ईमान वालो! तुम नबी (स) के घरों में दाख़िल न हो, सिवाए इस के कि तुम्हें इजाज़त दी जाए खाने के लिए, उस के पकने की राह न तको, लेकिन जब तुम्हें बुलाया जाए तो तुम दाख़िल हो, फिर जब तुम खाना खालो तो तुम मुन्तशिर हो जाया करो, और बातों के लिए जी लगा कर न बैठे रहो। बेशक तुम्हारी यह बात नबी (स) को ईज़ा देती है, पस वह तुम से शर्माते हैं, और अल्लाह हक़ बात (फ़रमाने) से नहीं शर्माता, और जब तुम उन (नबी (स) की बीवियों) से कोई शै मांगो तो उन से पर्दे के पीछे से मांगो. यह बात तुम्हारे और उन के दिलों के लिए ज़ियादा पाकीज़गी का ज़रीआ है, और तुम्हारे लिए जाइज़ नहीं कि तुम अल्लाह के रसूल (स) को ईज़ा दो, और न (जाइज़ है) कि उन के बाद कभी भी उन की बीवियों से तुम निकाह करो, बेशक तुम्हारी यह बात अल्लाह के नज़्दीक बड़ा (गुनाह) है। **(53)**

अगर तुम कोई बात ज़ाहिर करो या उसे छुपाओ तो बेशक अल्लाह हर शै का जानने वाला है। **(54)**

تُرْجِيْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُـــْٔوِيْٓ اِلَيْكَ مَنْ تَشَآءُ ۭ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप (स) तलब करें | और जिस को | जिसे आप (स) चाहें | अपने पास | और पास रखें | उन में से | जिस को आप (स) चाहें | दूर रखें |

مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ۭ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ تَقَرَّ اَعْيُنُهُنَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की आँखें | कि ठंडी रहें | यह ज़ियादा क़रीब है | आप (स) पर | तो कोई तंगी नहीं | दूर कर दिया था आप ने | उन में से जो |

وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَآ اٰتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | जानता है | और अल्लाह | वह सब की सब | उस पर जो आप (स) ने उन्हें दी | और वह राज़ी रहें | और वह आज़ुर्दा न हों |

فِيْ قُلُوْبِكُمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا ﴿51﴾ لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَآءُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| औरतें | आप के लिए | हलाल नहीं | 51 | बुर्दबार | जानने वाला | अल्लाह | और है | तुम्हारे दिलों में |

مِنْۢ بَعْدُ وَلَآ اَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ اَزْوَاجٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप (स) को अच्छा लगे | अगरचे | औरतें | से (और) | उन से | यह कि बदल लें | और न | उस के बाद |

حُسْنُهُنَّ اِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हर शै | पर | अल्लाह | और है | जिस का मालिक हो तुम्हारा हाथ (कनीज़ें) | सिवाए | उन का हुस्न |

रुकू ٦ / ١٢ / ٢

رَّقِيْبًا ﴿52﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ النَّبِيِّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नबी (स) | घर (जमा) | तुम दाख़िल न हो | ईमान वालो | ऐ | 52 | निगहबान |

اِلَّآ اَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ اِلٰى طَعَامٍ غَيْرَ نٰظِرِيْنَ اِنٰىهُ وَلٰكِنْ اِذَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब | और लेकिन | उस का पकना | न राह तको | खाना | तरफ़ (लिए) | तुम्हारे लिए | इजाज़त दी जाए | सिवाए यह कि |

دُعِيْتُمْ فَادْخُلُوْا فَاِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوْا وَلَا مُسْتَاْنِسِيْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और न जी लगा कर बैठे रहो | तो तुम मुन्तशिर हो जाया करो | तुम खालो | फिर जब | तो तुम दाख़िल हो | तुम्हें बुलाया जाए |

لِحَدِيْثٍ ۭ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيٖ مِنْكُمْ ۡ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम से | पस वह शर्माते हैं | नबी (स) | ईज़ा देती है | यह तुम्हारी बात | बेशक | बातों के लिए |

وَاللّٰهُ لَا يَسْتَحْيٖ مِنَ الْحَقِّ ۭ وَاِذَا سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कोई शै | तुम उन से मांगो | और जब | हक़ (बात) से | नही शर्माता | और अल्लाह |

فَسْـَٔـلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ حِجَابٍ ۭ ذٰلِكُمْ اَطْهَرُ لِقُلُوْبِكُمْ وَقُلُوْبِهِنَّ ۭ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और उन के दिल | तुम्हारे दिलों के लिए | ज़ियादा पाकीज़गी | तुम्हारी यह बात | पर्दे के पीछे से | तो उन से मांगो |

وَمَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُؤْذُوْا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَلَآ اَنْ تَنْكِحُوْٓا اَزْوَاجَهٗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की बीवियाँ | यह कि तुम निकाह करो | और न | अल्लाह का रसूल (स) | कि तुम ईज़ा दो | तुम्हारे लिए | और (जाइज़) नहीं |

مِنْۢ بَعْدِهٖٓ اَبَدًا ۭ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمًا ﴿53﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 53 | बड़ा | अल्लाह के नज़्दीक | है | तुम्हारी यह बात | बेशक | कभी | उन के बाद |

اِنْ تُبْدُوْا شَيْـــًٔا اَوْ تُخْفُوْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿54﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 54 | जानने वाला | हर शै | है | तो बेशक अल्लाह | या उसे छुपाओ | कोई बात | अगर तुम ज़ाहिर करो |

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِيْٓ اٰبَآىِٕهِنَّ وَلَآ اَبْنَآىِٕهِنَّ وَلَآ اِخْوَانِهِنَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और न अपने भाई | अपने बेटों | और न | अपने बाप | में | औरतों पर | गुनाह नहीं |

وَلَآ اَبْنَآءِ اِخْوَانِهِنَّ وَلَآ اَبْنَآءِ اَخَوٰتِهِنَّ وَلَا نِسَآىِٕهِنَّ وَلَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और न | अपनी औरतें | और न | अपनी बहनों के बेटे | और न | अपने भाइयों के बेटे | और न |

مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ ۚ وَاتَّقِيْنَ اللّٰهَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पर | है | बेशक अल्लाह | अल्लाह | और डरती रहो | जिस के मालिक हुए उन के हाथ (कनीज़ें) |

كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ﴿٥٥﴾ اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓىِٕكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ۗ يٰٓاَيُّهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ | नबी (स) पर | दरूद भेजते हैं | और उस के फ़रिश्ते | बेशक अल्लाह | 55 | गवाह (मौजूद) | हर शै |

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿٥٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो लोग | बेशक | 56 | खूब सलाम | और सलाम भेजो | उस पर | दरूद भेजो | ईमान वालो |

يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और तैयार किया उन ने | और आख़िरत | दुनिया में | उन पर लानत की अल्लाह ने | अल्लाह और उस का रसूल (स) | ईज़ा देते हैं |

لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿٥٧﴾ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और मोमिन औरतें | मोमिन मर्द (जमा) | ईज़ा देते हैं | और जो लोग | 57 | रुस्वा करने वाला अज़ाब | उन के लिए |

ع بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٥٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 58 | सरीह | और गुनाह | बुहतान | अलबत्ता उन्हों ने उठाया | कि उन्हों ने कमाया (किया) | बग़ैर |

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَبَنٰتِكَ وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| डाल लिया करें | मोमिनों | और औरतों को | और बेटियों को | अपनी बीवियों को | फ़रमा दें | ऐ नबी (स) |

عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ۗ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ يُّعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ۗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो उन्हें न सताया जाए | उन की पहचान हो जाए | कि | क़रीब तर | यह | अपनी चादरें | से | अपने ऊपर |

وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٥٩﴾ لَىِٕنْ لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنٰفِقُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मुनाफ़िक़ (जमा) | बाज़ न आए | अगर | 59 | मेहरबान | बख़्शने वाला | और अल्लाह है |

وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْمُرْجِفُوْنَ فِي الْمَدِيْنَةِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मदीना | में | और झूटी अफ़्वाहें उड़ाने वाले | रोग | उन के दिलों में | और वह जो |

لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُوْنَكَ فِيْهَآ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٦٠﴾ مَّلْعُوْنِيْنَ ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिटकारे हुए | 60 | चन्द दिन | सिवाए | इस (शहर) में | तुम्हारे हमसाया न रहेंगे वह | फिर | उन के | हम ज़रूर तुम्हें पीछे लगा देंगे |

اَيْنَمَا ثُقِفُوْٓا اُخِذُوْا وَقُتِّلُوْا تَقْتِيْلًا ﴿٦١﴾ سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन लोगों में जो | अल्लाह का दस्तूर | 61 | बुरी तरह मारा जाना | और मारे जाएंगे | पकड़े जाएंगे | वह पाए जाएंगे | जहां कहीं |

الربع خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿٦٢﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 62 | कोई तबदीली | अल्लाह के दस्तूर में | और तुम हरगिज़ न पाओगे | इन से पहले | गुज़रे |

औरतों पर गुनाह नहीं (पर्दा न करने में) अपने बाप, और न अपने बेटों, और न अपने भाइयों, और न अपने भाइयों के बेटों, और न अपनी बहनों के बेटों, और न अपनी औरतों से, और न अपनी कनीज़ों से, (ऐ औरतो) तुम अल्लाह से डरती रहो, बेशक अल्लाह हर शै पर गवाह (मौजूद) है। (55) बेशक अल्लाह और उस के फ़रिश्ते नबी (स) पर दरूद भेजते हैं, ऐ ईमान वालो! तुम भी उस पर दरूद भेजो और खूब सलाम भेजो। (56) बेशक जो लोग अल्लाह को और उस के रसूल (स) को ईज़ा देते हैं अल्लाह ने उन पर दुनिया और आख़िरत में लानत की (अपनी रहमत से महरूम कर दिया) और उनके लिए रुस्वा करने वाला अज़ाब तैयार किया। (57) और जो लोग मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को ईज़ा देते हैं, बग़ैर उस के कि उन्हों ने कुछ किया हो तो अलबत्ता उन्हों ने उठाया (अपने सर लिया) बुहतान और सरीह गुनाह। (58) ऐ नबी (स)! आप (स) अपनी बीवियों और अपनी बेटियों को, और मोमिनों की औरतों को फ़रमा दें कि वह अपने ऊपर अपनी चादरें डाल लिया करें (घूंघट निकाल लिया करें) यह (उस से) क़रीब तर है कि उन की पहचान हो जाए, तो उन्हें न सताया जाए, और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (59) अगर बाज़ न आए मुनाफ़िक़ और वह लोग जिन के दिलों में रोग है, और मदीने में झूटी अफ़्वाहें उड़ाने वाले, तो हम ज़रूर तुम्हें उन के पीछे लगा देंगे, फिर वह इस शहर (मदीना) में चन्द दिन के सिवा तुम्हारे हमसाया (पास) न रहेंगे। (60) फिटकारे हुए, वह जहाँ कहीं पाए जाएंगे पकड़े जाएंगे, और बुरी तरह मारे जाएंगे। (61) अल्लाह का (यही) दस्तूर रहा है, उन लोगों में जो गुज़रे हैं इन से पहले, और तुम अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तबदीली न पाओगे। (62)

आप (स) से लोग क़ियामत के बारे में सवाल करते हैं। आप (स) फ़रमा दें इस के सिवा नहीं कि उस का इल्म अल्लाह के पास है, और तुम्हें क्या खबर! शायद क़ियामत क़रीब (ही) हो। (63)
बेशक अल्लाह ने काफ़िरों पर लानत की, और उन के लिए (जहन्नम की) भड़कती हुई आग तैयार की है। (64)
वह उस में हमेशा हमेशा रहेंगे, वह न कोई दोस्त पाएंगे, और न मददगार। (65)
जिस दिन उन के चेहरे आग में उलट पुलट किए जाएंगे, वह कहेंगे ऐ काश! हम ने इताअ़त की होती अल्लाह की, और इताअत की होती रसूल (स) की। (66)
और वह कहेंगे, ऐ हमारे रब! बेशक हम ने इताअत की अपने सरदारों की और अपने बड़ों की, तो उन्हों ने हमें रास्ते से भटकाया। (67)
ऐ हमारे रब! उन्हें दुगना अ़ज़ाब दे और उन पर बड़ी लानत कर। (68)
ऐ ईमान वालो! उन लोगों की तरह न होना जिन्हों ने मूसा (अ) को (इल्ज़ाम लगा कर) सताया तो बरी कर दिया उस को अल्लाह ने उस से जो उन्हों ने कहा (इल्ज़ाम लगाया), और वह (मूसा अ) अल्लाह के नज़्दीक बाआबरू थे। (69)
ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सधी बात कहो। (70)
वह तुम्हारे लिए तुम्हारे अ़मल संवार देगा, और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा, और जिस ने अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअत की तो वह बड़ी मुराद को पहुँचा। (71)
बेशक हम ने अपनी अमानत (जिम्मेदारी को) पेश किया आस्मानों और जमीन और पहाड़ों पर, तो उन्हों ने उस के उठाने से इन्कार किया, और वह उस से डर गए, और इन्सान ने उसे उठा लिया, बेशक वह ज़ालिम, बड़ा नादान था। (72)
ताकि अल्लाह अजाब दे मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों को, और मुश्‌रिक मर्दों और मुश्‌रिक औरतों को, और अल्लाह तौबा क़ुबूल करे मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों की, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेह्‌रबान है। (73)

يَسْـَٔلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَمَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और क्या | अल्लाह के पास | उस का इल्म | इस के सिवा नहीं | फ़रमा दें | क़ियामत | से (मुतअ़ल्लिक़) | लोग | आप से सवाल करते हैं |

يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُوْنُ قَرِيْبًا ﴿٦٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَعَنَ الْكٰفِرِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| काफ़िरों पर | लानत की | बेशक अल्लाह | 63 | क़रीब | हो | क़ियामत | शायद | तुम्हें ख़बर |

وَاَعَدَّ لَهُمْ سَعِيْرًا ﴿٦٤﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۚ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न | कोई दोस्त | वह न पाएंगे | हमेशा | उस में | हमाशा रहेंगे | 64 | भड़कती हुई आग | उन के लिए | और तैयार किया उस ने |

نَصِيْرًا ﴿٦٥﴾ يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوْهُهُمْ فِى النَّارِ يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَآ اَطَعْنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने इताअ़त की होती | ऐ काश हम | वह कहेंगे | आग में | उन के चेहरे | उलट पुलट किए जाएंगे | जिस दिन | 65 | कोई मददगार |

اللّٰهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَا ﴿٦٦﴾ وَقَالُوْا رَبَّنَآ اِنَّآ اَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَآءَنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अपन बड़ों | अपने सरदार | हम ने इताअत की | बेशक हम | ऐ हमारे रब | और वह कहेंगे | 66 | और इताअत की होती रसूल | अल्लाह |

فَاَضَلُّوْنَا السَّبِيْلَا ﴿٦٧﴾ رَبَّنَآ اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और लानत कर उन पर | अ़ज़ाब | दुगना | दे उन्हें | ऐ हमारे रब | 67 | रास्ता | तो उन्हों ने भटकाया हमें |

لَعْنًا كَبِيْرًا ﴿٦٨﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا ع ١٠ ٨ ٥

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने सताया | उन लोगों की तरह | तुम न होना | ईमान वालो | ऐ | 68 | बड़ी | लानत |

مُوْسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا ؕ وَكَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ﴿٦٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 69 | बाआबरू | अल्लाह के नज़्दीक | और वह थे | उन्हों ने कहा | उस से जो | अल्लाह | तो बरी कर दिया उस को | मूसा (अ) |

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ﴿٧٠﴾ يُّصْلِحْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह संवार देगा | 70 | सीधी | बात | और कहो | अल्लाह से डरो | ईमान वालो | ऐ |

لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उस का रसूल | अल्लाह की इताअ़त की | और जो- जिस | तुम्हारे लिए तुम्हारे गुनाह | और बख़्श देगा | तुम्हारे अ़मल (जमा) | तुम्हारे लिए |

فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٧١﴾ اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मान (जमा) | पर | अमानत | हम ने पेश किया | बेशक हम | 71 | बड़ी मुराद | तो वह मुराद को पहुँचा |

وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उस से | और वह डर गए | कि वह उसे उठाएं | तो उन्हों ने इन्कार किया | और पहाड़ | और ज़मीन |

وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ﴿٧٢﴾ لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि अल्लाह अज़ाब दे | 72 | बड़ा नादान | ज़ालिम | था | बेशक वह | इन्सान ने | और उसे उठा लिया |

الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَتُوْبَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और तौबा क़ुबूल करे | और मुश्‌रिक औरतों | और मुश्‌रिक मर्दों | और मुनाफ़िक़ औरतों | मुनाफ़िक़ मर्दों |

اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٣﴾ ع ٩ ٦

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 73 | मेह्‌रबान | बख़्शने वाला | अल्लाह | और है | और मोमिन औरतों | मोमिन मर्दों | पर- की | अल्लाह |

## آيَاتُهَا ٥٤ ❀ (٣٤) سُوْرَةُ سَبَإٍ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

रुकूआत 6 (34) सूरतुस सबा आयात 54

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَلَهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उसी के लिए | ज़मीन में | और जो | आस्मानों में | जो | वह जिस के लिए | तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए |

الْحَمْدُ فِى الْاٰخِرَةِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ① يَعْلَمُ مَا يَلِجُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो दाख़िल होता है | वह जानता है | 1 | ख़बर रखने वाला | हिक्मत वाला | और वह | आख़िरत में | हर तारीफ़ |

فِى الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चढ़ता है | और जो | आस्मान से | नाज़िल होता है | और जो | उस से | निकलता है | और जो | ज़मीन में |

فِيْهَا ۚ وَهُوَ الرَّحِيْمُ الْغَفُوْرُ ② وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَاْتِيْنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम पर नहीं आएगी | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | और कहा (कहते हैं) | 2 | बख़्शने वाला | मेहरबान | और वह | उस में |

السَّاعَةُ ۚ قُلْ بَلٰى وَرَبِّىْ لَتَاْتِيَنَّكُمْ ۙ عٰلِمِ الْغَيْبِ ۚ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से | पोशीदा नहीं | ग़ैब | जानने वाला | अलबत्ता तुम पर ज़रूर आएगी | कसम मेरे रब की | हाँ | फरमा दें | क़ियामत |

مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى الْاَرْضِ وَلَآ اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से | छोटा | और न | ज़मीन में | और न | आस्मानों में | एक ज़र्रे के बराबर |

وَلَآ اَكْبَرُ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ③ لِّيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने अमल किए | उन लोगों को जो ईमान लाए | ताकि जज़ा दे | 3 | रौशन किताब | में | मगर | बड़ा | और न |

الصّٰلِحٰتِ ۚ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ④ وَالَّذِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह लोग जो | 4 | और इज़्ज़त की रोज़ी | बख़्शिश | उन के लिए | यही लोग | नेक |

سَعَوْ فِىْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ⑤

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | सख़्त दर्दनाक | से | अज़ाब | उन के लिए | यही लोग | हराने के लिए | हमारी आयतों में | उन्हों ने कोशिश की |

وَيَرَى الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِىْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे रब की तरफ़ से | तुम्हारी तरफ़ | नाज़िल किया गया | वह जो कि | इल्म | दिया गया | वह लोग जिन्हें | और वह देखते हैं |

هُوَ الْحَقَّ ۙ وَيَهْدِىْٓ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ⑥

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | सज़ावारे तारीफ़ | ग़ालिब | रास्ता | तरफ़ | और वह रहनुमाई करता है | वह हक़ |

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ يُّنَبِّئُكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह ख़बर देता है तुम्हें | ऐसा आदमी | पर | हम बतलाएं तुम्हें | क्या | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | और कहा (कहते हैं) |

اِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ اِنَّكُمْ لَفِىْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ⑦

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | ज़िन्दगी नई | अलबत्ता में | बेशक तुम | पूरी तरह रेज़ा रेज़ा | तुम रेज़ा रेज़ा हो जाओगे | जब |

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों और जो कुछ ज़मीन में है, और उसी के लिए हर तारीफ़ है आख़िरत में, और वह हिक्मत वाला, ख़बर रखने वाला। (1)
वह जानता है जो ज़मीन में दाख़िल होता है (मसलन पानी) और जो उस से निकलता है, और जो आस्मान से नाज़िल होता है, और जो उस में चढ़ता है, और वह मेहरबान है बख़्शने वाला। (2)
और कहते हैं काफ़िर कि हम पर क़ियामत नहीं आएगी, आप (स) फ़रमा दें हाँ! मेरे रब की क़सम! अलबत्ता वह तुम पर ज़रूर आएगी, और वह ग़ैब का जानने वाला है। उस से एक ज़र्रे के बराबर भी पोशीदा नहीं आस्मानों में और न ज़मीन में, और न छोटा उस से और न बड़ा मगर (सब कुछ) रोशन किताब में है। (3)
ताकि वह उन लोगों को जज़ा दे जो ईमान लाए और उन्हों ने अमल किए नेक, यही लोग हैं जिन के लिए बख़्शिश और इज़्ज़त की रोज़ी है। (4)
और जिन लोगों ने हमारी आयतों में कोशिश की हराने के लिए, उन ही लोगों के लिए सख़्त दर्दनाक अज़ाब है। (5)
और जिन्हें इल्म दिया गया वह देखते (जानते) हैं कि जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से नाज़िल किया गया है वह हक़ है, और (अल्लाह) ग़ालिब, सज़ावारे तारीफ़ के रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करता है। (6)
और काफ़िर कहते हैं क्या हम तुम्हें बताएं ऐसा आदमी जो तुम्हें ख़बर देता है कि जब तुम पूरी तरह रेज़ा रेज़ा हो जाओगे, तो बेशक तुम नई ज़िन्दगी में (आओगे)। (7)

उस ने अल्लाह पर झूट बान्धा है या उसे जुनून (है), (नहीं) बल्कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, वह अजाब और दूर की (शदीद) गुमराही में हैं। (8)
क्या उन्हों ने नहीं देखा? उस की तरफ़ जो उन के आगे और जो उन के पीछे है, यानी आस्मान और जमीन, अगर हम चाहें तो हम उन्हें ज़मीन में धंसा दें या उन पर आस्मान का टुकड़ा गिरा दें, बेशक उस में निशानी है हर रुजूअ़ करने वाले बन्दे के लिए। (9)
और तहक़ीक़ हम ने दाऊद (अ) को अपनी तरफ़ से फ़ज़्ल अता किया। ऐ पहाड़ो! उस के साथ तस्बीह करो और परिन्दो (तुम भी)। और हम ने उस के लिए लोहे को नर्म कर दिया। (10)
कि चौड़े ज़िरहें बनाओ, और कड़ियों को जोड़ने में अन्दाज़ा रखो, और अच्छे अ़मल करो, तुम जो कुछ करते हो बेशक मैं उस को देख रहा हूँ। (11)
और सुलेमान (अ) के लिए हवा (को मुसख़्ख़र) किया और उस की सुब्ह की मन्ज़िल एक माह (की राह होती) और शाम की मन्ज़िल एक माह (की राह) और हम ने उस के लिए तांबे का चश्मा बहाया, और जिन्नात में से (बाज) उसके सामने काम करते थे उस के रब के हुक्म से। और उन में से जो हमारे हुक्म से कजी करेगा हम उसे दोज़ख के अ़ज़ाब का मज़ा चखाएंगे। (12)
वह (जिन्नात) बनाते उस के लिए जो वह (सुलेमान अ) चाहते, क़िल्ए, और तस्वीरें, और हौज़ जैसे लगन, एक जगह जमी हुई देगें, ऐ ख़ानदाने दाऊद (अ)! तुम शुक्र बजा ला कर अ़मल करो, और मेरे बन्दों में शुक्रगुज़ार थोड़े हैं। (13)
फिर जब हम ने उस की मौत का हुक्म जारी किया, उन्हें (जिन्नों को) उस की मौत का पता न दिया मगर घुन की तरह कीड़े (दीमक) ने, वह उस का असा खाता था, फिर जब वह गिर पड़ा तो जिन्नों पर हक़ीक़त खुली कि अगर वह ग़ैब जानते होते तो वह न रहते ज़िल्लत के अजाब में। (14)

اَفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَمْ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ بَلِ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान नही रखते | वह लोग जो | बल्कि | जुनून | उसे | या | झूट | अल्लाह पर | उस ने बान्धा |

بِالْاٰخِرَةِ فِى الْعَذَابِ وَالضَّلٰلِ الْبَعِيْدِ ﴿٨﴾ اَفَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | तरफ़ | क्या उन्हों ने नहीं देखा? | 8 | दूर | और गुमराही | अ़ज़ाब में | आख़िरत पर |

بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنْ نَّشَاْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अगर हम चाहें | और ज़मीन | आस्मान से | उन के पीछे | और जो | उन के आगे |

نَخْسِفْ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ ؕ اِنَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | आस्मान से | टुकड़ा | उन पर | या गिरा दें | ज़मीन | उन्हें धंसा दें हम |

ع
فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ﴿٩﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضْلًا ؕ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फज्ल | अपनी तरफ़ से | दाऊद (अ) | और तहक़ीक़ हम ने दिया | 9 | रुजुअ़ करने वाला | बन्दा | लिए- हर | अलबत्ता निशानी | इस में |

يٰجِبَالُ اَوِّبِىْ مَعَهٗ وَالطَّيْرَ ۚ وَاَلَنَّا لَهُ الْحَدِيْدَ ﴿١٠﴾ اَنِ اعْمَلْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बनाओ | कि | 10 | लोहा | उस के लिए | और हम ने नर्म कर दिया | और परिन्दो | उस के साथ | तस्बीह करो | ऐ पहाड़ो |

سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرْ فِى السَّرْدِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّىْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम जो कुछ करते हो उस को | बेशक | अच्छे | और अ़मल करो | (कड़ियों के) जोड़ने में | और अन्दाज़ा रखो | कुशादह ज़िरहें |

بَصِيْرٌ ﴿١١﴾ وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّرَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक माह | और शाम की मन्ज़िल | एक माह | उस की सुबह की मन्ज़िल | हवा | और सुलेमान (अ) के लिए | 11 | देख रहा हूँ |

وَاَسَلْنَا لَهٗ عَيْنَ الْقِطْرِ ؕ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَّعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِاِذْنِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| इज्न (हुक्म) से | उस के सामने | वह काम करते | जिन्न | और से | तांबे का चश्मा | और हम ने बहाया उस के लिए |

رَبِّهٖ ؕ وَمَنْ يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ اَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿١٢﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12 | आग (दौजख) | अ़ज़ाब | से- का | हम उस को चखाएंगे | हमारे हुक्म से | उन में से | कजी करेगा | और जो | उस के रब के |

يَعْمَلُوْنَ لَهٗ مَا يَشَآءُ مِنْ مَّحَارِيْبَ وَتَمَاثِيْلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हौज़ जैसे | और लगन | और तस्वीरें | बड़ी इमारतें (क़िल्ए) | से | जो वह चाहते | उस के लिए | वह बनाते |

وَقُدُوْرٍ رّٰسِيٰتٍ ؕ اِعْمَلُوْٓا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا ؕ وَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِىَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरे बन्दे | से | और थोड़े | शुक्र बजा ला कर | ऐ ख़ानदाने दाऊद | तुम अ़मल करो | एक जगह जमी हुई | और देगें |

الشَّكُوْرُ ﴿١٣﴾ فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلٰى مَوْتِهٖٓ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की मौत का | उन्हें पता न दिया | मौत | उस पर | हुक्म जारी किया | फिर जब हम ने | 13 | शुक्र गुज़ार |

اِلَّا دَآبَّةُ الْاَرْضِ تَاْكُلُ مِنْسَاَتَهٗ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिन्न | हक़ीक़त खुली | वह गिर पड़ा | फिर जब | उस का असा | वह खाता था | घुन का कीड़ा | मगर |

اَنْ لَّوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوْا فِى الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿١٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 14 | ज़िल्लत | अ़ज़ाब | में | वह न रहते | ग़ैब | वह जानते होते | अगर |

لَقَدْ كَانَ لِسَبَاٍ فِىْ مَسْكَنِهِمْ اٰيَةٌ ۚ جَنَّتٰنِ عَنْ يَّمِيْنٍ وَّشِمَالٍ ۬

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बाएं | दाएं से | दो बाग़ | एक निशानी | उन की आबादी | में | (क़ौम) सबा के लिए | अलबत्ता थी |

كُلُوْا مِنْ رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ۭ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَّرَبٌّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और रब | पाकीज़ा | शहर | उस का | और शुक्र अदा करो | अपने रब का रिज़्क़ | से | तुम खाओ |

غَفُوْرٌ ﴿١٥﴾ فَاَعْرَضُوْا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّلْنٰهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम ने उन्हें बदल दिए | सैलाब बन्द से (रुका हुआ) | उन पर | तो हम ने भेजा | फिर उन्हों ने मुंह मोड़ लिया | 15 | बख़्शने वाला |

بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَىْ اُكُلٍ خَمْطٍ وَّاَثْلٍ وَّشَىْءٍ مِّنْ سِدْرٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेरियां | और कुछ | और झाड़ | बदमज़ा | मेवा | वाले | दो बाग़ | उन के दो बाग़ों के बदले |

قَلِيْلٍ ﴿١٦﴾ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْا ۭ وَهَلْ نُجٰزِىْٓ اِلَّا الْكَفُوْرَ ﴿١٧﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 17 | नाशुक्रा | मगर-सिर्फ़ | हम सज़ा देते | और नहीं | उन्हों ने नाशुक्री की | उस के सबब जो | हम ने उन को सज़ा दी | यह | 16 | थोड़ी |

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِىْ بٰرَكْنَا فِيْهَا قُرًى ظَاهِرَةً

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक दूसरे से मुत्तसिल | बस्तियां | उस में | हम ने बरकत दी | वह जिन्हें | बस्तियां | और दरमियान | उन के दरमियान | और हम ने (आबाद) कर दिए |

وَّقَدَّرْنَا فِيْهَا السَّيْرَ ۭ سِيْرُوْا فِيْهَا لَيَالِىَ وَاَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ﴿١٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | अम्न से (बेख़ौफ़ ओ ख़तर) | और दिन (जमा) | रातों | उन में | तुम चलो (फिरो) | उन में आमद ओ रफ़्त | और हम ने मुक़र्रर कर दिया |

فَقَالُوْا رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो हम ने बना दिया उन्हें | अपनी जानों पर | और उन्हों ने ज़ुल्म किया | हमारे सफ़रों के दरमियान | दूरी पैदा कर दे | ऐ हमारे रब | वह कहने लगे |

اَحَادِيْثَ وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| निशानियां | उस में | बेशक | पूरी तरह परागन्दा | और हम ने उन्हें परागन्दा कर दिया | अफ़्साने |

لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿١٩﴾ وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस उन्हों ने उस की पैरवी की | अपना गुमान | इब्लीस | उन पर | सच कर दिखाया | और अलबत्ता | 19 | शुक्र गुज़ार | हर सब्र करने वाले |

اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَمَا كَانَ لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई ग़ल्बा | उन पर | उसे (इब्लीस को) | और न था | 20 | मोमिनीन | से-का | एक गिरोह | सिवाए |

اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِىْ شَكٍّ ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शक में | उस से | वह | उस से जो | आख़िरत पर | जो ईमान रखता है | ताकि हम मालूम कर लें | मगर |

ع ٢ ١٢ ٨ وَرَبُّكَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ حَفِيْظٌ ﴿٢١﴾ قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गुमान करते हो | उन को जिन्हें | पुकारो | फ़रमा दें | 21 | निगहबान | हर शै | पर | और तेरा रब |

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और न | आस्मानों में | एक ज़र्रे के बराबर | वह मालिक नहीं हैं | अल्लाह के सिवा |

فِى الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ ﴿٢٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 22 | कोई मददगार | उन में से | और नहीं उस (अल्लाह) का | उन (आस्मान और ज़मीन) में कोई साझा | उन का | और नहीं | ज़मीन में |

अलबत्ता क़ौमे सबा के लिए उन की आबादी में निशानी थी, दो बाग़ दाएं और बाएं, (हम ने कह दिया कि) तुम अपने परवरदिगार के रिज़्क़ से खाओ और उस का शुक्र अदा करो, शह्र है पाकीज़ा और परवरदिगार है बख़्शने वाला। (15)
फिर उन्हों ने मुंह मोड़ लिया तो हम ने उन पर (बन्द तोड़ कर) ज़ोर का सैलाब भेजा और उन दो बाग़ों के बदले (दूसरे) दो बाग़ दिए बदमज़ा मेवा वाले और कुछ झाड़, और थोड़ी सी बेरियाँ। (16)
यह हम ने उन्हें सजा दी इस लिए कि उन्हों ने नाशुक्री की और हम सिर्फ़ नाशुक्रे को सजा देते हैं। (17)
और हम ने आबाद कर दी उन के दरमियान और (शाम) की उन बस्तियों के दरमियान जिन्हें हम ने बरकत दी है, एक दूसरे से लगी बस्तियां, और हम ने उन में सफ़र के पड़ाव मुक़र्रर कर दीं, तुम उन में चलो फिरो, रात और दिन बेख़ौफ़ ओ ख़तर। (18)
वह कहने लगे ऐ हमारे परवरदिगार! हमारे सफ़रों के दरमियान दूरी पैदा कर दे, और उन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया तो हम ने उन्हें बना दिया अफ़्साने, और हम ने उन्हें पूरी पूरी तरह परागन्दा कर दिया, बेशक उस में हर बड़े सब्र करने वाले शुक्र गुजार के लिए नशानियां हैं। (19)
और अलबत्ता इब्लीस ने उन पर अपना गुमान सच कर दिखाया, पस उन्हों ने उस की पैरवी की सिवाए एक गिरोह मोमिनों के। (20)
और इब्लीस को उन पर कोई ग़ल्बा न था मगर (हम चाहते थे कि) मालूम कर लें जो आख़िरत पर ईमान रखता है उस से (जुदा कर के) जो उस (के बारे में) शक में है, और तेरा रब हर शै पर निगहबान है। (21)
आप (स) फ़रमा दें, उन्हें पुकारो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा (माबूद) गुमान करते हो, वह (तो) एक जर्रा बराबर चीज के भी मालिक नहीं (इख़्तियार नहीं रखते) आस्मानों में और न ज़मीन में और न उन (आस्मान और जमीन) में उन का कोई साझा है और न उन में से कोई (अल्लाह का) मददगार है। (22)

और शफ़ाअत (सिफ़ारिश) नफ़ा नहीं देती उस के पास सिवाए उस के जिसे वह इजाज़त देदे, यहां तक कि जब उन के दिलों से (घबराहट) दूर कर दी जाती है तो कहते हैं क्या कहा है तुम्हारे रब ने, वह (सिफ़ारिशी) कहते हैं कि हक़ (फ़रमाया है), और वह बुलन्द मरतबा बुज़ुर्ग क़द्र है। (23) आप (स) फ़रमा दें कौन तुम्हें रोज़ी देता है आस्मानों से और ज़मीन से, फ़रमा दें "अल्लाह" बेशक हम या तुम (दोनों में से एक) अलबत्ता हिदायत पर हैं या खुली गुमराही में है। (24) आप (स) फ़रमा दें (अगर हम मुजरिम हैं तो) तुम से उस गुनाह की बाबत न पूछा जाएगा जो हम ने किया और न हम से उस बाबत पूछा जाएगा जो तुम करते हो। (25) फ़रमा दें हम सब को जमा करेगा हमारा रब, फिर हमारे दरमियान ठीक ठीक फ़ैसला करेगा, और वह फ़ैसला करने वाला, जानने वाला है। (26) आप (स) फ़रमा दें मुझे दिखाओ जिन्हें तुम ने साथ मिलाया है उस के साथ शरीक (ठहरा कर), हरगिज़ नहीं बल्कि अल्लाह ही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (27) और हम ने आप (स) को भेजा है तमाम नुए-इन्सानी के लिए खुशख़बरी देने वाला, और डर सुनाने वाला, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (28) और वह कहते हैं यह वादए क़ियामत कब (आएगा) अगर तुम सच्चे हो। (29) आप (स) फ़रमा दें तुम्हारे लिए वादे का एक दिन (तय) है, उस से न तुम एक घड़ी पीछे हट सकते हो, और न तुम आगे बढ़ सकते हो। (30) और काफ़िर कहते हैं: हम हरगिज़ इस क़ुरआन पर ईमान न लाएंगे, और न उन (किताबों) पर जो इस से पहले थीं, और काश! तुम देखो, जब यह ज़ालिम अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे, रद करेगा उन में से एक दूसरे की बात, कमज़ोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे अगर तुम न होते तो हम ज़रूर ईमान लाने वाले होते। (31) और बड़े लोग कमज़ोर लोगों से कहेंगे, क्या हम ने तुम्हें हिदायत से रोका? जब कि वह तुम्हारे पास आई (नहीं), बल्कि तुम (ख़ुद) मुजरिम थे। (32)

وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ ۚ حَتّٰٓى اِذَا فُزِّعَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दूर कर दी जाती है | जब | यहां तक | उस को | जिसे वह इजाज़त दे | सिवाए | उस के पास | शफ़ाअत | और नफ़ा नहीं देती |

عَنْ قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَاذَا ۙ قَالَ رَبُّكُمْ ۭ قَالُوا الْحَقَّ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बुलन्द मरतबा | और वह | हक़ | वह कहते है | तुम्हारे रब ने | फरमाया | क्या | कहते हैं | उन के दिलों से |

الْكَبِيْرُ ﴿٢٣﴾ قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ قُلِ اللّٰهُ ۙ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फरमा दें अल्लाह | और जमीन | आस्मानों से | तुम को रिज़्क़ देना है | कौन | फरमा दें | 23 | बुज़ुर्ग क़द |

وَاِنَّآ اَوْ اِيَّاكُمْ لَعَلٰى هُدًى اَوْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٤﴾ قُلْ لَّا تُسْـَٔلُوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम से न पूछा जाएगा | फरमादें | 24 | खुली | गुमराही में | या | अलबत्ता हिदायत पर | तुम ही | या | और बेशक हम |

عَمَّآ اَجْرَمْنَا وَلَا نُسْـَٔلُ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٥﴾ قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर | हमारा रब | हम सब को | वह जमा करेगा | फ़रमा दें आप (स) | 25 | जो तुम करते हो | उसकी बाबत | और न हम से पूछा जाएगा | जो हम ने गुनाह किया | उसकी बाबत |

يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ۭ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ ﴿٢٦﴾ قُلْ اَرُوْنِيَ الَّذِيْنَ اَلْحَقْتُمْ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम ने साथ मिला दिया है | वह जिन्हें | मुझे दिखाओ | फ़रमा दें | 26 | जानने वाला | फ़ैसला करने वाला | और वह | ठीक ठीक | हमारे दरमियान | फ़ैसला करेगा |

بِهٖ شُرَكَاۗءَ كَلَّا ۭ بَلْ هُوَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٧﴾ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप (स) को हम ने भेजा | और नहीं | 27 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | वह अल्लाह | बल्कि | हरगिज़ नहीं | शरीक | उस के साथ |

اِلَّا كَاۗفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 28 | नहीं जानते | अक्सर लोग | और लेकिन | और डर सुनाने वाला | खुशख़बरी देने वाला | मगर तमाम लोगों (नुए-इन्सानी) के लिए |

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾ قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक दिन | वादा | तुम्हारे लिए | फरमा दें | 29 | सच्चे | तुम हो | अगर | यह वादा (क़ियामत) | कब | और वह कहते हैं |

لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ عَنْهُ سَاعَةً وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ع ٣ ٩ النصف

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | और कहते हैं | 30 | तुम आगे बढ़ सकते हो | और न | एक घड़ी | उस से | न तुम पीछे हट सकते हो |

لَنْ نُّؤْمِنَ بِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ ۭ وَلَوْ تَرٰٓى

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और काश तुम देखो | इस से पहले | उस पर जो | और न | इस क़ुरआन पर | हम हरगिज़ ईमान न लाएंगे |

اِذِ الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ښ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दूसरे | तरफ़ | उन में से एक | लौटाएगा (रद करेगा) | अपने रब के सामने | खड़े किए जाएंगे | ज़ालिम (जमा) | जब |

الْقَوْلَ ۚ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لَوْلَآ اَنْتُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अगर न तुम होते | तकब्बुर करते थे (बड़े लोग) | उन लोगों को जो | जो कमज़ोर किए गए | कहेंगे | बात |

لَكُنَّا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْٓا اَنَحْنُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या हम | उन से जो कमज़ोर किए गए | जो लोग तकब्बुर करते थे (बड़े लोग) | कहेंगे | 31 | ईमान लाने वाले | ज़रूर हम होते |

صَدَدْنٰكُمْ عَنِ الْهُدٰى بَعْدَ اِذْ جَاۗءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 32 | मुजरिम (जमा) | तुम थे | बल्कि | जब आ गई तुम्हारे पास | उस के बाद | हिदायत | से | हम ने रोका तुम्हें |

وَقَالَ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रात और दिन | चाल | बल्कि | उन लोगों से जो तकब्बुर करते थे (बड़े) | कमज़ोर किए गए | वह लोग जो | और कहेंगे |

إِذْ تَأْمُرُوْنَنَآ أَنْ نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ وَنَجْعَلَ لَهٗٓ أَنْدَادًا ۚ وَأَسَرُّوا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह छुपाएंगे | शरीक (जमा) | उस के लिए | और हम ठहराएं | अल्लाह का | कि हम इन्कार करें | जब तुम हुक्म देते थे हमें |

النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ۚ وَجَعَلْنَا الْأَغْلٰلَ فِيْٓ أَعْنَاقِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गर्दनों में | तौक़ | और हम डालेंगे | अ़ज़ाब | जब वह देखेंगे | शर्मिन्दगी |

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَمَآ أَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किसी बस्ती में | और हम ने नहीं भेजा | 33 | वह करते थे | जो | मगर | वह सज़ा न दिए जाएंगे | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) |

مِّنْ نَّذِيْرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ ۙ إِنَّا بِمَآ أُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 34 | मुन्किर हैं | उस के | तुम जो दे कर भेजे गए हो | बेशक हम | उस के खुशहाल लोग | कहा | मगर | कोई डराने वाला |

وَقَالُوْا نَحْنُ أَكْثَرُ أَمْوَالًا وَّأَوْلَادًا ۙ وَّمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿٣٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 35 | अ़ज़ाब दिए जाने वाले | हम | और नहीं | और औलाद में | माल में | ज़ियादा | हम | और उन्हों ने कहा |

قُلْ إِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अक्सर लोग | और लेकिन | और तंग कर देता है | जिस के लिए वह चाहता है | रिज़्क़ | वसीअ़ फ़रमाता है | मेरा रब | बेशक | फ़रमा दें |

ع ٤ / ١٠ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَمَآ أَمْوَالُكُمْ وَلَآ أَوْلَادُكُمْ بِالَّتِيْ تُقَرِّبُكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हें नज़्दीक करदे | वह जो कि | तुम्हारी औलाद | और न | तुम्हारे माल | और नहीं | 36 | नहीं जानते |

عِنْدَنَا زُلْفٰٓى إِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۫ فَأُولٰٓئِكَ لَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | यही लोग | और उस ने अच्छे अ़मल किए | ईमान लाया | जो | मगर | दर्जा | हमारे नज़्दीक |

جَزَآءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوْا وَهُمْ فِي الْغُرُفٰتِ اٰمِنُوْنَ ﴿٣٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 37 | अम्न से होंगे | बालाख़ानों में | और वह | उस के बदले जो उन्हों ने किया | दुगनी | जज़ा |

وَالَّذِيْنَ يَسْعَوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ أُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अ़ज़ाब में | यही लोग | आ़जिज़ करने (हराने) वाले | हमारी आयतों में | काेशिश करते हैं | और जो लोग |

مُحْضَرُوْنَ ﴿٣٨﴾ قُلْ إِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिस के लिए वह चाहता है | रिज़्क़ | वसीअ़ फ़रमाता है | मेरा रब | बेशक | फ़रमा दें | 38 | हाज़िर किए जाएंगे |

مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ۚ وَمَآ أَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो वह | कोई शै | तुम ख़र्च करोगे | और जो | उस के लिए | और तंग कर देता है | अपने बन्दों में से |

يُخْلِفُهٗ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٣٩﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सब | वह जमा करेगा उन को | और जिस दिन | 39 | रिज़्क़ देने वाला | बहतरीन | और वह | उस का इवज़ देगा |

ثُمَّ يَقُوْلُ لِلْمَلٰٓئِكَةِ أَهٰٓؤُلَآءِ إِيَّاكُمْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿٤٠﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 40 | परस्तिश करते थे | तुम्हारी ही | क्या यह लोग | फ़रिश्तों को | फिर फ़रमाएगा |

और कहेंगे कमज़ोर लोग बड़ों कोः (नहीं) बल्कि (हमें रोक रखा था तुम्हारी) दिन रात की चालों ने, जब तुम हमें हुक्म देते थे कि हम अल्लाह का इन्कार करें और हम उस के लिए शरीक ठहराएं, और जब वह अज़ाब देखेंगे तो शर्मिन्दगी छुपाएंगे, और हम तौक़ डालेंगे काफ़िरों की गर्दनों में, और वह (उसी की) सज़ा पाएंगे जो वह करते थे। (33) और हम ने नहीं भेजा किसी बस्ती में कोई डराने वाला मगर उस के खुशहाल लोगों ने कहाः जो (हिदायत) दे कर तुम भेजे गए हो, हम उस के मुन्किर हैं। (34) और उन्हों ने कहा कि हम माल और औलाद में ज़ियादा (बढ़ कर) हैं, और हम अ़ज़ाब दिए जाने वाले नहीं (हमें अ़ज़ाब न होगा)। (35) आप (स) फ़रमा दें बेशक मेरा रब जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ वसीअ़ फ़रमाता है (और जिस के लिए चाहे) वह तंग कर देता है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (36) और नहीं तुम्हारे माल और औलाद (ऐसे कि) जो तुम्हें दर्जा में हमारे नज़्दीक कर दें, मगर जो ईमान लाया और उस ने अच्छे अ़मल किए तो उन ही लोगों के लिए दुगनी जज़ा है उस के बदले जो उन्हों ने किया, और वह बालाख़ानों में अम्न से होंगे। (37) और जो लोग हमारी आयतों को हराने की कोशिश करते हैं, यही लोग अ़ज़ाब में हाज़िर किए जाएंगे। (38) आप (स) फ़रमा दें मेरा रब अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ वसीअ़ फ़रमाता है (और जिस के लिए चाहे) तंग कर देता है, और कोई शै तुम ख़र्च करोगे तो वह तुम को उस का इवज़ देगा, और वह बेहतरीन रिज़्क़ देने वाला है। (39) और जिस दिन वह जमा करेगा, उन सब को, फिर फ़रिश्तों से फ़रमाएगा, क्या यह लोग तुम्हारी ही परस्तिश करते थे? (40)

वह कहेंगे, तू पाक है, तू हमारा कारसाज़ है न कि वह, बल्कि वह जिन्नों की परस्तिश करते थे, उन में से अक्सर उन पर एतिक़ाद रखते थे। (41) सो आज तुम में से कोई एक दूसरे के न नफ़ा का इख़्तियार रखता है और न नुक़्सान का, और हम उन लोगों को कहेंगे जिन्हों ने ज़ुल्म (शिर्क) किया: तुम जहन्नम के अ़ज़ाब (का मज़ा) चखो जिस को तुम झुटलाते थे। (42) और जब उन पर पढ़ी जाती हैं हमारी वाज़ेह आयात तो वह कहते हैं: यह तो सिर्फ़ (तुम जैसा) आदमी है, चाहता है कि तुम्हें उन से रोके जिन की परस्तिश तुम्हारे बाप दादा करते थे, और वह कहते हैं यह (कुरआन) नहीं है मगर घड़ा हुआ झूट, और काफ़िरों ने हक़ के बारे में कहा जब वह उन के पास आया कि यह नहीं मगर खुला जादू। (43) और हम ने उन्हें (मुशरिकीने अरब को) किताबें नहीं दीं कि वह उन्हें पढ़ते हों और न आप (स) से पहले उन की तरफ़ कोई डराने वाला भेजा। (44) और जो उन से पहले थे उन्हों ने झुटलाया, और यह (मुशरिकीने अरब) उस के दसवें हिस्से को (भी) न पहुँचे जो हम ने उन्हें दिया था, सो उन्हों ने मेरे रसूलों को झुटलाया तो कैसा हुआ मेरा अज़ाब (45) फ़रमा दें: मैं तुम्हें सिर्फ़ नसीहत करता हूँ एक बात की कि तुम अल्लाह के वास्ते खड़े हो जाओ दो, दो और अकेले अकेले, फिर तुम गौर करो कि तुम्हारे साथी को क्या जुनून है, वह (स) तो सिर्फ़ सख़्त अज़ाब आने से पहले तुम्हें डराने वाले हैं। (46) आप (स) फ़रमा दें: मैं ने तुम से जो मांगा हो कोई अजर तो वह तुम्हारा है, मेरा अजर तो सिर्फ़ अल्लाह के ज़िम्मे है, और वह हर शै की इत्तिलाअ़ रखने वाला (गवाह) है। (47) आप (स) फ़रमा दें, बेशक मेरा रब ऊपर से हक़ उतारता है, और सब ग़ैब की बातों का जानने वाला है। (48)

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह परस्तिश करते थे | बल्कि | उन के सिवाए (न कि वह) | हमारा कारसाज़ | तू | तू पाक है | वह कहेंगे |

الْجِنَّ ۚ اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾ فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम में से बाज़ (एक) | इख़्तियार नहीं रखता | सो आज | 41 | एतिक़ाद रखते थे | उन पर | इन में से अक्सर | जिन्न (जमा) |

لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَّلَا ضَرًّا ۗ وَنَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आग (जहन्नम) का अज़ाब | तुम चखो | जिन्हों ने ज़ुल्म किया | उन लोगों को | और हम कहेंगे | और न नुक़्सान का | नफ़ा का | बाज़ (दूसरे) के लिए |

الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारी आयात | उन पर | पढ़ी जाती हैं | और जब | 42 | तुम झुटलाते थे | उस का | तुम थे | वह जिस |

بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا رَجُلٌ يُّرِيْدُ اَنْ يَّصُدَّكُمْ عَمَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से जिस | कि रोके तुम्हें | वह चाहता है | एक आदमी | मगर सिर्फ़ | नहीं है यह | वह कहते हैं | वाज़ेह |

كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُكُمْ ۚ وَقَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّآ اِفْكٌ مُّفْتَرًى ۗ وَقَالَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और कहा | झूट घड़ा हुआ | मगर | नहीं यह | और वह कहते हैं | तुम्हारे बाप दादा | परस्तिश करते थे |

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٣﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 43 | जादू खुला | मगर | यह नहीं | जब वह आया उन के पास | हक़ के बारे में | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) |

وَمَآ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ كُتُبٍ يَّدْرُسُوْنَهَا وَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ قَبْلَكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप (स) से पहले | उन की तरफ़ | भेजा हम ने | और न | कि उन्हें पढ़ें | किताबें | दीं हम ने उन्हें | और न |

مِنْ نَّذِيْرٍ ﴿٤٤﴾ وَكَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۙ وَمَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दसवाँ हिस्सा | और यह न पहुँचे | इन से पहले | उन्हों ने जो | और झुटलाया | 44 | कोई डराने वाला |

مَآ اٰتَيْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِيْ ۫ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٤٥﴾ قُلْ ع ٥ ١١

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़रमा दें | 45 | मेरा अज़ाब | हुआ | तो कैसा | मेरे रसूलों को | सो उन्हों ने झुटलाया | जो हम ने उन्हें दिया |

اِنَّمَآ اَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ مَثْنٰى وَفُرَادٰى

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और अकेले अकेले | दो, दो | तुम खड़े हो जाओ अल्लाह के वास्ते | कि | एक बात की | मैं सिर्फ़ नसीहत करता हूँ तुम्हें |

ثُمَّ تَتَفَكَّرُوْا ۗ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ لَّكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हें | डराने वाले | मगर सिर्फ़ | वह | नहीं | कोई जुनून | क्या तुम्हारे साथी को | फिर तुम गौर करो |

بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ ﴿٤٦﴾ قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कोई अजर | जो मैं ने मांगा हो तुम से | फ़रमा दें | 46 | सख़्त अज़ाब | आगे (आने से पहले) |

فَهُوَ لَكُمْ ۭ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हर शै | पर-की | और वह | अल्लाह के ज़िम्मे | मगर-सिर्फ़ | मेरा अजर | नहीं | तुम्हारा है | तो वह |

شَهِيْدٌ ﴿٤٧﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ ۚ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿٤٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 48 | सब ग़ैबों का जानने वाला | हक़ को | डालता (ऊपर से उतारता है) | मेरा रब | बेशक | फ़रमा दें | 47 | इत्तिलाअ़ रखने वाला |

قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيْدُ ﴿٤٩﴾ قُلْ اِنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर | फ़रमा दें | 49 | और न लौटाएगा | बातिल | और न पैदा करेगा | हक़ आ गया | फ़रमा दें |

ضَلَلْتُ فَاِنَّمَآ اَضِلُّ عَلٰى نَفْسِيْ ۚ وَاِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوْحِيْٓ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह वहि करता है | तो उस की बदौलत | मैं हिदायत पर हूँ | और अगर | अपनी जान पर (अपने नुक़्सान को) | मैं बहका हूँ | तो इस के सिवा नहीं | मैं बहका हूँ |

اِلَيَّ رَبِّيْ ۗ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ ﴿٥٠﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ فَزِعُوْا فَلَا فَوْتَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न बच सकेंगे | वह घबराएंगे | जब | ऐ काश तुम देखो | 50 | क़रीब | सुनने वाला | बेशक वह | मेरा रब | मेरी तरफ़ |

وَاُخِذُوْا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ﴿٥١﴾ وَّقَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖ ۚ وَاَنّٰى لَهُمُ التَّنَاوُشُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पकड़ना (हाथ आना) | उन के लिए | और कहां | उस पर | हम ईमान लाए | और वह कहेंगे | 51 | क़रीब जगह (पास) | से | और पकड़ लिए जाएंगे |

مِنْ مَّكَانٍ بَعِيْدٍ ﴿٥٢﴾ وَقَدْ كَفَرُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ۚ وَيَقْذِفُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह फेंकते हैं | इस से क़ब्ल | उस से | और तहक़ीक़ उन्हों ने कुफ़्र किया | 52 | दूर (दारुलजज़ा) | जगह | से |

بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيْدٍ ﴿٥٣﴾ وَحِيْلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो वह चाहते थे | और दरमियान | उन के दरमियान | और आड़ कर दी गई | 53 | दूर जगह | से | बिन देखे |

ع ٦ ٩ ١٢ كَمَا فُعِلَ بِاَشْيَاعِهِمْ مِّنْ قَبْلُ ۗ اِنَّهُمْ كَانُوْا فِيْ شَكٍّ مُّرِيْبٍ ﴿٥٤﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 54 | तरद्दुद में डालने वाले | शक | में | वह थे | बेशक वह | इस से क़ब्ल | उन के हम जिन्सों के साथ | किया गया | जैसे |

## آيَاتُهَا ٤٥ ❀ (٣٥) سُوْرَةُ فَاطِرٍ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٥

रुकुआत 5 — (35) सूरह फ़ातिर — पैदा करने वाला — आयात 45

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पैग़म्बर | फ़रिश्ते | बनाने वाला | और ज़मीन | आस्मानों | पैदा करने वाला | तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए |

اُولِيْٓ اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۗ يَزِيْدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَآءُ ۗ اِنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक अल्लाह | जो वह चाहे | पैदाइश में | ज़ियादा कर देता है | और चार चार | और तीन तीन | दो दो | परों वाले |

عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١﴾ مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो बन्द करने वाला नहीं | रहमत से | लोगों के लिए | खोल दे अल्लाह | जो | 1 | क़ुदरत रखने वाला | हर शै | पर |

لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْ بَعْدِهٖ ۗ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | और वह | उस के बाद | उस का | तो कोई भेजने वाला नहीं | और जो वह बन्द कर दे | उस का |

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۗ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के सिवा | कोई पैदा करने वाला | क्या | अपने ऊपर | अल्लाह की नेमत | तुम याद करो | ऐ लोगो |

يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۖ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | उलटे फिरे जाते हो तुम | तो कहां | उस के सिवा | कोई माबूद | नहीं | और ज़मीन | आस्मान से | वह तुम्हें रिज़्क़ देता है |

आप (स) फ़रमा दें: हक़ आ गया और न (कोई नई चीज़) दिखाएगा बातिल और न लौटाएगा (कोई पुरानी चीज़)। (49)

आप (स) फ़रमा दें अगर मैं बहका हूँ तो इस के सिवा नहीं कि अपने नुक्सान को बहका हूँ, और अगर मैं हिदायत पर हूँ तो उस की बदौलत हूँ कि मेरा रब मेरी तरफ़ वहि करता है, बेशक वह सुनने वाला, क़रीब है। (50)

ऐ काश! तुम देखो, जब वह घबराएंगे तो (भाग कर) न बच सकेंगे, और पास ही से पकड़ लिए जाएंगे। (51)

और कहेंगे कि हम उस (नबी स) पर ईमान ले आए और कहां (मुमकिन) है उन के लिए दूर जगह (दारुलजज़ा) से (ईमान का) हाथ आना। (52)

और तहक़ीक़ उन्हों ने इस से क़ब्ल उस से कुफ़्र किया, और वह फेंकते हैं बिन देखे दूर जगह से (अटकल पच्चू बातें करते हैं)। (53)

जो वह चाहते थे, उस के और उन के दरमियान आड़ डाल दी गई, जैसे उन के हम जिन्सों के साथ इस से क़ब्ल किया गया, बेशक वह तरद्दुद में डालने वाले शक में थे। (54)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो आस्मानों और जमीन का पैदा करने वाला है, फ़रिश्तों को पैग़ाम बर बनाने वाला, परों वाले दो दो, और तीन तीन, और चार चार, पैदाइश में जो चाहे वह जियादा कर देता है, बेशक अल्लाह हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है। (1)

अल्लाह लोगों के लिए जो रहमत खोल दे तो (कोई) उस का बन्द करने वाला नहीं, और जो वह बन्द कर दे तो उस के बाद कोई उस का भेजने वाला नहीं, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (2)

ऐ लोगो! तुम याद करो अपने ऊपर अल्लाह की नेमत, क्या अल्लाह के सिवा कोई पैदा करने वाला है? वह तुम्हें आस्मान से रिज़्क़ देता है और जमीन से, उस के सिवा कोई माबूद नहीं तो कहां तुम उलटे फिरे जाते हो? (3)

और अगर वह तुझे झुटलाएं तो तहक़ीक़ झुटलाए गए हैं तुम से पहले भी रसूल, और तमाम कामों की बाज़गश्त (लौटना) अल्लाह की तरफ़ है। (4)
ऐ लोगो! बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, पस दुनिया की ज़िन्दगी हरगिज तुम्हें धोके में न डाल दे, और धोके बाज (शैतान) तुम्हें अल्लाह से हरगिज़ धोके में न डाल दे। (5)
बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है पस तुम उसे दुश्मन (ही) समझो, वह तो अपने गिरोह को बुलाता है ताकि वह जहन्नम वालों से हों। (6)
जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन लोगों के लिए सख़्त अजाब है, और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अमल किए उन के लिए बख़्शिश और बड़ा अजर है। (7)
सो क्या जिस के लिए उस का बुरा अमल आरास्ता क्या गया, फिर उस ने उस को अच्छा देखा (समझा) (क्या वह नेकोकारों जैसा हो सकता है) पस बेशक जिस को अल्लाह चाहता है गुमराह ठहराता है और जिस को चाहता है हिदायत देता है, पस तुम्हारी जान न जाती रहे उन पर हस्रत कर के, बेशक जो वह करते हैं अल्लाह उसे जानता है। (8)
और अल्लाह (ही है) जिस ने भेजा हवाओं को, फिर वह बादलों को उठाती हैं, फिर हम उस (बादल) को मुर्दा शह्र की तरफ़ ले गए, फिर हम ने उस से ज़मीन को उस के मरने (बंजर हो जाने) के बाद ज़िन्दा किया, इसी तरह (मुर्दों को रोज़े हश्र) जी उठना है। (9)
जो कोई इज़्ज़त चाहता है तो तमाम तर इज्जत अल्लाह के लिए है उस की तरफ़ चढ़ता है पाकीज़ा कलाम, और अच्छे अ़मल उस को बुलन्द करता है, और जो लोग बुरी तदबीरें करते हैं, उन के लिए सख़्त अ़ज़ाब है, और उन लोगों की तदबीर अकारत जाएगी। (10)
और अल्लाह (ही) ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर तुम्हें जोड़े जोड़े बनाया, और न कोई औरत हामिला होती है, और न वह जनती है, मगर उस के इल्म में है, और कोई बड़ी उम्र वाला उम्र नहीं पाता, और न किसी की उम्र से कमी की जाती है मगर (यह सब) किताब में लिखा हुआ है। यह बेशक अल्लाह पर आसान है। (11)

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ ۗ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| लौटना | और अल्लाह की तरफ़ | तुम से पहले | रसूल (जमा) | तो तहक़ीक़ झुटलाए गए | वह तुझे झुटलाएं | और अगर |

الْاُمُوْرُ ﴿٤﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पस हरगिज़ तुम्हें धोके में न डाल दे | सच्चा | अल्लाह का वादा | बेशक | ऐ लोगो | 4 | तमाम काम |

الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۖ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿٥﴾ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दुश्मन | तुम्हारे लिए | बेशक शैतान | 5 | धोके बाज़ | अल्लाह से | और तुम्हें धोके में न डाल दे | दुनिया की ज़िन्दगी |

فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ۭ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | जहन्नम वाले | से | ताकि वह हों | अपने गिरोह को | वह तो बुलाता है | दुश्मन | पस उसे समझो |

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۬ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | अच्छे | और उन्हों ने अमल किए | और जो लोग ईमान लाए | सख़्त अज़ाब | उन के लिए | जिन लोगों ने कुफ़्र किया |

مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿٧﴾ اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ۭ ع ١٣

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अच्छा | फिर उस ने देखा उसे | उस का बुरा अ़मल | उस के लिए | आरास्ता किया गया | सो क्या जिस | 7 | बड़ा | और अजर | बख़्शिश |

فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَاۗءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ ڮ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारी जान | पस न जाती रहे | जिस को वह चाहता है | और हिदायत देता है | जिस को वह चाहता है | गुमराह ठहराता है | पस बेशक अल्लाह |

عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿٨﴾ وَاللّٰهُ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भेजा | वह जिस ने | और अल्लाह | 8 | वह करते हैं | उसे जो | जानने वाला | बेशक अल्लाह | हस्रत कर के | उन पर |

الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन | उस से | फिर हम ने ज़िन्दा किया | मुर्दा शह्र | तरफ़ | फिर हम उसे ले गए | बादल | फिर वह उठाती हैं | हवाएं |

بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ﴿٩﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो अल्लाह के लिए इज्जत | इज़्ज़त | चाहता है | जो कोई | 9 | जी उठना | इसी तरह | उस के मरने के बाद |

جَمِيْعًا ۭ اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهٗ ۭ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह उस को बुलन्द करता है | अच्छा | और अ़मल | पाकीज़ा कलाम | चढ़ता है | उस की तरफ़ | तमाम तर |

وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۭ وَمَكْرُ اُولٰۗىِٕكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन लोगों | और तदबीर | अ़ज़ाब सख़्त | उन के लिए | बुरी | तदबीरें करते हैं | और जो लोग |

هُوَ يَبُوْرُ ﴿١٠﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर उस ने तुम्हें बनाया | नुत्फ़े से | फिर | मिट्टी से | उस ने पैदा किया तुम्हें | और अल्लाह | 10 | वह अकारत जाएगी |

اَزْوَاجًا ۭ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ۭ وَمَا يُعَمَّرُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उम्र पाता | और नहीं | उस के इल्म में है | मगर | और न वह जनती है | कोई औ़रत | हामिला होती है | और न | जोड़े जोड़े |

مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖٓ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ۭ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿١١﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | आसान | अल्लाह पर | यह | बेशक | किताब में | मगर | उस की उम्र से | और न कमी की जाती है | कोई बड़ी उम्र वाला |

وَمَا يَسْتَوِى الْبَحْرٰنِ ۖ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आसान उस का पीना | शीरी प्यास बुझाने वाला | यह | दोनों दर्या | और बराबर नही |

وَهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۗ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम निकालते हो | ताज़ा | गोश्त | तुम खाते हो | और हर एक से | शोर तल्ख़ | और यह |

حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि तुम तलाश करो | चीरती है पानी को | उस में | कश्तियां | और तू देखता है | जिस को पहनते हो तुम | ज़ेवर |

مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢﴾ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और दाख़िल करता है दिन को | दिन में | वह दाख़िल करता है रात | 12 | तुम शुक्र करो | और ताकि तुम | उस के फ़ज़्ल से (रोज़ी) |

فِى الَّيْلِ ۙ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِىْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मुक़र्ररा | एक वक़्त | हर एक चलता है | और चांद | सूरज | और उस ने मुसख़्ख़र किया | रात में |

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۗ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उस के सिवा | तुम पुकारते हो | और जिन को | उस के लिए बादशाहत | तुम्हारा परवरदिगार | यही है अल्लाह |

مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ﴿١٣﴾ اِنْ تَدْعُوْهُمْ لَا يَسْمَعُوْا دُعَآءَكُمْ ۚ وَلَوْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अगर | तुम्हारी पुकार (दुआ) | वह नही सुनेंगे | तुम उन को पुकारो | अगर | 13 | खजूर की घुटली का छिलका | वह मालिक नहीं |

سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ ۗ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُوْنَ بِشِرْكِكُمْ ۗ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे शिर्क करने का | वह इन्कार करेंगे | और रोज़े क़ियामत | तुम्हारी | वह हाजत पूरी न कर सकेंगे | वह सुन लें |

ع ٢ ١٢

وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيْرٍ ﴿١٤﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मोहताज | तुम | ऐ लोगो! | 14 | ख़बर देने वाला | मानिंद | और तुझ को ख़बर न देगा |

اِلَى اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِىُّ الْحَمِيْدُ ﴿١٥﴾ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हें ले जाए | अगर वह चाहे | 15 | सज़ावारे हम्द | बेनियाज़ | वह | और अल्लाह | अल्लाह के |

وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٦﴾ وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿١٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 17 | दुशवार | अल्लाह पर | यह | और नहीं | 16 | नई ख़ल्क़त | और ले आए वह |

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۗ وَاِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ اِلٰى حِمْلِهَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ (लिए) अपना बोझ | कोई बोझ से लदा हुआ | बुलाए | और अगर | बोझ दूसरे का | कोई उठाने वाला | और नहीं उठाएगा |

لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَىْءٌ وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۗ اِنَّمَا تُنْذِرُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आप (स) डराते हैं | इस के सिवा नही (सिर्फ़) | क़राबतदार | अगरचे हों | कुछ | उस से | न उठाएगा वह |

الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۗ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नमाज़ | और क़ाइम रखते हैं | बिन देखे | अपना रब | डरते हैं | वह लोग जो |

وَمَنْ تَزَكّٰى فَاِنَّمَا يَتَزَكّٰى لِنَفْسِهٖ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿١٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | लौट कर जाना | और अल्लाह की तरफ़ | ख़ुद अपने लिए | वह पाक साफ़ होता है | तो सिर्फ़ | पाक होता है | और जो |

और दोनों दर्या बराबर नहीं, यह (एक) शीरी है प्यास बुझाने वाला, उस का पीना भी आसान, और यह (दूसरा) शोर तल्ख़ है, और हर एक से तुम ताज़ा गोश्त खाते हो, और (उन में से) तुम ज़ेवर (मोती) निकालते हो जिस को तुम पहनते हो, और तू उस में कश्तियां देखता है कि पानी को चीरती (हुई चलती है) ताकि तुम उस के फ़ज़्ल से रोज़ी तलाश करो, और ताकि तुम शुक्र करो। (12)

और रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है, और उस ने सूरज चाँद को मुसख़्ख़र किया, हर एक मुक़र्ररा वक़्त तक चलता है, यही तुम्हारा परवरदिगार है, उसी के लिए बादशाहत, और जिन को तुम उस के सिवा पुकारते हो, वह खजूर की घुटली के छिलके (के भी) मालिक नहीं। (13)

और तुम उनको पुकारो तो वह नहीं सुनेंगे तुम्हारी पुकार, और अगर वह सुन भी लें तो तुम्हारी हाजत पूरी न कर सकेंगे, और वह रोज़े क़ियामत तुम्हारे शिर्क करने का इन्कार करेंगे, और तुझ को ख़बर देने वाले (अल्लाह) की मानिंद कोई ख़बर न देगा। (14)

ऐ लोगो! तुम अल्लाह के मोहताज हो, और अल्लाह ही बेनियाज़ सज़ावारे हम्द ओ सना है। (15) अगर वह चाहे तो (सब को) ले जाए (नाबूद कर दे) और नई ख़ल्क़त ले आए। (16) और यह नहीं है अल्लाह पर (कुछ) दुशवार। (17)

और कोई उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा, और अगर कोई बोझ से लदा हुआ (गुनाहगार किसी को) अपना बोझ (उठाने) के लिए बुलाए तो वह उस से कुछ न उठाएगा, अगरचे उस का क़राबतदार हो, आप (स) तो सिर्फ़ उनको डरा सकते हैं जो अपने रब से डरते हैं बिन देखे, और नमाज़ क़ाइम रखते हैं, और जो पाक होता है वह सिर्फ़ अपने लिए पाक साफ़ होता है, और अल्लाह की तरफ़ ही लौट कर जाना है। (18)

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ﴿١٩﴾ وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ ﴿٢٠﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | और न रोशनी | और न अन्धेरे | 19 | और आँखों वाला | अन्धा | और बराबर नहीं |

وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُوْرُ ﴿٢١﴾ وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَآءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मुर्दे | और न | ज़िन्दे | और नहीं बराबर | 21 | और न झुलसती हवा | और न साया |

إِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَآ أَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जो | सुनाने वाले | और तुम नहीं | जिस को वह चाहता है | सुना देता है | बेशक अल्लाह |

فِي الْقُبُوْرِ ﴿٢٢﴾ إِنْ أَنْتَ إِلَّا نَذِيْرٌ ﴿٢٣﴾ إِنَّآ أَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हक़ के साथ | हम ने आप (स) को भेजा | बेशक हम | 23 | डराने वाले | मगर-सिर्फ़ | तुम नहीं | 22 | क़ब्रों में |

بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ وَإِنْ مِّنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ ﴿٢٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 24 | डराने वाला | उस में | मगर गुज़रा | कोई उम्मत | और नहीं | और डर सुनाने वाला | खुशखबरी देने वाला |

وَإِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ جَآءَتْهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आए उन के पास | इन से अगले | वह लोग जो | तो तहक़ीक़ झुटलाया | वह तुम्हें झुटलाएं | और अगर |

رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर | 25 | रोशन | और किताबों के साथ | और सहीफ़ों के साथ | रोशन दलाइल के साथ | उन के रसूल |

ع ٣/١٢/١٥ أَخَذْتُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٢٦﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक अल्लाह | क्या तू ने नहीं देखा | 26 | मेरा अज़ाब | हुआ | फिर कैसा | वह जिन्हों ने कुफ़्र किया | मैं ने पकड़ा |

أَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَأَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मुख़्तलिफ़ | फल (जमा) | उस से | फिर हम ने निकाले | पानी | आस्मान से | उतारा |

أَلْوَانُهَا ۚ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ بِيْضٌ وَّحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मुख़्तलिफ़ | और सुर्ख़ | क़त्आत सफ़ेद | और पहाड़ों से-में | उन के रंग |

أَلْوَانُهَا وَغَرَابِيْبُ سُوْدٌ ﴿٢٧﴾ وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और जानवर (जमा) | और लोगों से-में | 27 | सियाह | गहरे रंग | उन के रंग |

وَالْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ۗ إِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | डरते हैं | इस के सिवा नहीं | उसी तरह | उन के रंग | मुख़्तलिफ़ | और चौपाए |

مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ۗ إِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ﴿٢٨﴾ إِنَّ الَّذِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो | बेशक | 28 | बख़्शने वाला | ग़ालिब | बेशक अल्लाह | इल्म वाले | उस के बन्दे | से |

يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَأَنْفَقُوْا مِمَّا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उस से जो | और वह ख़र्च करते हैं | नमाज़ | और क़ाइम रखते हैं | अल्लाह की किताब | जो पढ़ते हैं |

رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ﴿٢٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 29 | हरगिज़ घाटा नहीं | ऐसी तिजारत | वह उम्मीद रखते हैं | और खुले तौर पर | पोशीदा | हम ने उन्हें दिया |

और बराबर नहीं अन्धा और आँखों वाला। (19) और न अन्धेरे और न नूर (रोशनी), (बराबर हैं)। (20) और न साया और न झुलसती हवा। (21) और बराबर नहीं ज़िन्दे (आलिम) और न मुर्दे (जाहिल), बेशक अल्लाह जिस को चाहता है सुना देता है, और तुम (उनको) सुनाने वाले नहीं जो क़ब्रों में हैं। (22) बल्कि तुम सिर्फ़ डराने वाले हो। (23) बेशक हम ने आप (स) को हक़ के साथ भेजा, ख़ुशख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला, और कोई उम्मत नहीं जिस में कोई डराने वाला न गुज़रा हो। (24) और अगर वह तुम्हें झुटलाएं तो तहक़ीक़ उन के अगले लोगों ने भी झुटलाया, उन के पास उन के रसूल आए रोशन दलाइल (निशानात) और सहीफ़ों और रोशन किताबों के साथ। (25) फिर जिन लोगों ने कुफ़्र किया मैं ने उन्हें पकड़ा, फिर कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब? (26) क्या तू ने नहीं देखा? बेशक अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा, फिर हम ने उस से फल निकाले, उन के रंग मुख़्तलिफ़ हैं, और पहाड़ों में क़त्आत (घाटियां) हैं सफ़ेद और सुर्ख़, उन के रंग मुख़्तलिफ़ हैं, और (कुछ) गहरे सियाह रंग के। (27) और उसी तरह लोगों में, और जानवरों और चौपायों में, उन के रंग मुख़्तलिफ़ हैं, इस के सिवा नहीं कि अल्लाह से उस के इल्म वाले बन्दे (ही) डरते हैं, बेशक अल्लाह ग़ालिब, बख़्शने वाला है। (28) बेशक जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ क़ाइम रखते हैं और जो हम ने उन्हें दिया उस में से ख़र्च करते हैं पोशीदा और ज़ाहिर, वह ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं (जिस में) हरगिज़ घाटा नहीं। (29)

لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّهٗ غَفُوْرٌ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बख़्शने वाला | बेशक वह | अपने फ़ज़्ल से | और वह उन्हें ज़ियादा दे | उन के अजर | ताकि वह पूरे पूरे दे दे |

شَكُوْرٌ ﴿٣٠﴾ وَالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तस्दीक़ करने वाली | हक़ | वह | किताब से | तुम्हारी तरफ़ | हम ने वहि भेजी है | और वह जो | 30 | क़द्रदान |

لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهٖ لَخَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٣١﴾ ثُمَّ اَوْرَثْنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने वारिस बनाया | फिर | 31 | देखने वाला | अलबत्ता बाख़बर | अपने बन्दों से | बेशक अल्लाह | उन के पास | उस की जो |

الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी जान पर | ज़ुल्म करने वाला | पस उन से (कोई) | अपने बन्दे | से-को | हम ने चुना | वह जिन्हें | किताब |

وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرٰتِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| यह | हुक्म से अल्लाह के | नेकियों में | सबक़त ले जाने वाला | और उन से (कोई) | बीच का रास्ता चलने वाला | और उन से (कोई) |

هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿٣٢﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह ज़ेवर पहनाए जाएंगे | वह उन में दाख़िल होंगे | बाग़ात हमेशगी के | 32 | फ़ज़्ल बड़ा | वह (यही) |

فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿٣٣﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 33 | रेशम | उस में | और उन का लिबास | और मोती | सोना | से | कंगन (जमा) | से-का | उन में |

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ۭ اِنَّ رَبَّنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारा रब | बेशक | ग़म | हम से | दूर कर दिया | वह जिस ने | तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए | और वह कहेंगे |

لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ ﴿٣٤﴾ الَّذِيْٓ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना फ़ज़्ल | से | हमेशा रहने का घर | हमें उतारा | वह जिस | 34 | क़द्र दान | अलबत्ता बख़्शने वाला |

لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुफ़्र किया | और वह जिन लोगों ने | 35 | थकावट | उस में | और न हमें छूएगी | कोई तक्लीफ़ | उस में | न हमें छूएगी |

لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और न हल्का किया जाएगा | कि वह मर जाएं | उन पर | न क़ज़ा आएगी | जहन्नम की आग | उन के लिए |

عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ۭ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ كُلَّ كَفُوْرٍ ﴿٣٦﴾ وَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह | 36 | हर नाशुक्रे | हम सज़ा देते हैं | इसी तरह | उस का अज़ाब | से-कुछ | उन से |

يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا ۚ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बर अक्स | नेक | हम अमल करें | हमें निकाल ले | ऐ हमारे परवरदिगार | उस (दोज़ख़) में | चिल्लाएंगे |

الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ۭ اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जो-जिस | उस में | कि नसीहत पकड़ लेता वह | क्या हम ने तुम्हें उम्र न दी थी | हम करते थे | उस के जो |

ع ١١ ١٦ تَذَكَّرَ وَجَاۗءَكُمُ النَّذِيْرُ ۭ فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿٣٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 37 | कोई मददगार | ज़ालिमों के लिए | पस नहीं | सो चखो तुम | डराने वाला | और आया तुम्हारे पास | नसीहत पकड़ता |

ताकि अल्लाह उन्हें उन के अजर (ओ सवाब) पूरे पूरे दे, और उन्हें (और) ज़ियादा दे अपने फ़ज़्ल से, बेशक वह बख़्शने वाला, क़द्रदान है। (30)

और वह जो हम ने तुम्हारी तरफ़ किताब भेजी है, वह हक़ है, उस की तस्दीक़ करने वाली जो उस के पास है, बेशक अल्लाह अपने बन्दों से बाख़बर है, देखने वाला। (31)

फिर हम ने अपने चुने हुए बन्दों को किताब का वारिस बनाया, पस उन में से कोई अपनी जान पर ज़ुल्म करने वाला है, और उन में से कोई बीच की राह है, और उन में से कोई अल्लाह के हुक्म से नेकियों में सबक़त ले जाने वाला है, यही है बड़ा फ़ज़्ल। (32)

हमेशगी के बाग़ात हैं जिन में वह दाख़िल होंगे, वह उन में कंगनों के ज़ेवर पहनाए जाएंगे, सोने और मोती के, और उन में उन का लिबास रेशम का होगा। (33)

और वह कहेंगे तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिस ने हम से ग़म दूर कर दिया, बेशक हमारा रब बख़्शने वाला, क़द्रदान है। (34)

वह जिस ने हमें हमेशा रहने के घर में उतारा अपने फ़ज़्ल से, न इस में हमें कोई तक्लीफ़ छूएगी, और न हमें इस में कोई थकावट छूएगी। (35)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के लिए जहन्नम की आग है, न उन पर क़ज़ा आएगी कि वह मर जाएं, और न उन से हल्का किया जाएगा दोज़ख़ का कुछ अज़ाब, इसी तरह हम हर नाशुक्रे को अज़ाब देते हैं। (36)

और वह दोज़ख़ के अन्दर चिल्लाएंगे, ऐ हमारे परवरदिगार! हमें (यहां से) निकाल ले कि हम नेक अमल करें, उस के बरअक्स जो हम करते थे, क्या हम ने तुम्हें (इतनी) उम्र न दी थी कि नसीहत पकड़ लेता उस में जिसे नसीहत पकड़नी होती, और तुम्हारे पास डराने वाला (भी) आया, सो तुम (अब इन्कार का मज़ा) चखो, ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं। (37)

बेशक अल्लाह आस्मानों और ज़मीन की पोशीदा बातें जानने वाला है, बेशक वह उन के सीनों के भेदों से बाख़बर है। (38)
वही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में जांनशीन बनाया, सो जिस ने कुफ़्र किया तो उसी पर है उस के कुफ़्र (का वबाल) और काफ़िरों को उन के रब के नज़्दीक उन का कुफ़्र सिवाए ग़ज़ब के कुछ नहीं बढ़ाता, और काफ़िरों को नहीं बढ़ाता उन का कुफ़्र सिवाए ख़सारे के। (39)
आप (स) फ़रमा दें क्या तुम ने अपने शरीकों को देखा जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, तुम मुझे दिखाओ कि उन्हों ने ज़मीन से क्या पैदा किया है? या आस्मानों (के बनाने में) उन का क्या साझा है? या हम ने उन्हें कोई किताब दी है कि वह उस की सनद पर हों (सनद रखते हों), बल्कि ज़ालिम एक दूसरे से वादे नहीं करते सिवाए धोके के। (40)
बेशक अल्लाह ने थाम रखा है आस्मानों को और ज़मीन को कि वह टल (न) जाएं, और अगर वह टल जाएं तो उन्हें उस के बाद कोई भी नहीं थामेगा, बेशक वह (अल्लाह) हिल्म वाला, बख़्शने वाला है। (41)
और उन्हों (मुश्रिकीने मक्कह) ने अल्लाह की बड़ी सख़्त क़स्में खाईं कि अगर उन के पास कोई डराने वाला आए तो वह ज़रूर जियादा हिदायत पाने वाले होंगे (दुनिया की) हर एक उम्मत से (बढ़ कर), फिर जब उन के पास एक नजीर आया तो उन में बिदकने के सिवा (और कुछ) ज़ियादा न हुआ। (42)
दुनिया में अपने आप को बड़ा समझने के सबब और बुरी चाल (के सबब), और बुरी चाल (का वबाल) सिर्फ़ उस के करने वाले पर पड़ता है, तो क्या वह सिर्फ़ पहलों के दस्तूर का इंतिज़ार कर रहे हैं! सो तुम अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तबदीली न पाओगे, और तुम अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तग़य्युर न पाओगे। (43)

اِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बाख़बर | बेशक वह | और ज़मीन | आस्मानों की पोशीदा बातें | जानने वाला | बेशक अल्लाह |

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٣٨﴾ هُوَ الَّذِىْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ فِى الْاَرْضِ ؕ فَمَنْ كَفَرَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सो जिस ने कुफ़्र किया | ज़मीन में | जांनशीन | तुम्हें बनाया | जिस ने | वही | 38 | सीनों (दिलों) के भेदों से |

فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ؕ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ اِلَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सिवाए | उन का रब | नज़्दीक | उन का कुफ़्र | काफ़िर (जमा) | और नहीं बढ़ाता | उस का कुफ़्र | तो उसी पर |

مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ اِلَّا خَسَارًا ﴿٣٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या तुम ने देखा | फ़रमा दें | 39 | ख़सारा | सिवाए | उन का कुफ़्र | काफ़िर (जमा) | और नहीं बढ़ाता | नाराज़ी (ग़ज़ब) |

شُرَكَآءَكُمُ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اَرُوْنِىْ مَاذَا خَلَقُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने पैदा किया | क्या | तुम मुझे दिखाओ | अल्लाह के सिवा | तुम पुकारते हो | वह जिन्हें | अपने शरीक |

مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِى السَّمٰوٰتِ ۚ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई किताब | हम ने दी उन्हें | या | आस्मानों में | साझा | उन के लिए | या | ज़मीन | से |

فَهُمْ عَلٰى بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ اِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ بَعْضُهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के बाज़ (एक) | ज़ालिम (जमा) | वादे करते | नहीं | बल्कि | उस से-की | दलील (सनद) पर | पस (कि) वह |

بَعْضًا اِلَّا غُرُوْرًا ﴿٤٠﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और ज़मीन | आस्मान (जमा) | थाम रखा है | बेशक अल्लाह | 40 | धोका | सिवाए | बाज़ (दूसरे) से |

اَنْ تَزُوْلَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَآ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के बाद | कोई भी | थामेगा उन्हें | न | टल जाएं | और अगर वह | टल जाएं वह | कि |

اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿٤١﴾ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी सख़्त क़स्में | अल्लाह की | और उन्हों ने क़सम खाई | 41 | बख़्शने वाला | हिल्म वाला | है | बेशक वह |

لَئِنْ جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ لَّيَكُوْنُنَّ اَهْدٰى مِنْ اِحْدَى الْاُمَمِ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उम्मत (जमा) | हर एक से | ज़ियादा हिदायत पाने वाले | अलबत्ता वह ज़रूर होंगे | कोई डराने वाला | उन के पास आए | अगर |

فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ مَّا زَادَهُمْ اِلَّا نُفُوْرَا ﴿٤٢﴾ اِسْتِكْبَارًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने को बड़ा समझने के सबब | 42 | बिदकना | मगर सिवाए | न उन (में) ज़ियादा हुआ | एक नज़ीर | उन के पास आया | फिर जब |

فِى الْاَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ؕ وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सिर्फ़ | बुरी | चाल | और नहीं उठता (उलटा पड़ता) | बुरी | और चाल | ज़मीन (दुनिया) में |

بِاَهْلِهٖ ؕ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ ۚ فَلَنْ تَجِدَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सो तुम हरगिज़ न पाओगे | पहले | दस्तूर | मगर सिर्फ़ | वह इन्तिज़ार कर रहे हैं | तो क्या | उस के करने वाले पर |

لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَحْوِيْلًا ﴿٤٣﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 43 | कोई तग़य्युर | अल्लाह के दस्तूर में | और तुम हरगिज़ न पाओगे | कोई तबदीली | अल्लाह के दस्तूर में |

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आक़िबत (अन्जाम) | हुआ | कैसा | सो वह देखते | ज़मीन (दुनिया) में | क्या वह चले फिरे नहीं |

الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَمَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं | कुव्वत में | उन से | बहुत ज़ियादा | और वह थे | उन से पहले | उन लोगों का जो |

كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَهُ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन में | और न | आस्मानों में | कोई शै | कि उसे आजिज़ कर दे | अल्लाह | है |

إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ﴿٤٤﴾ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लोग | अल्लाह पकड़ करे | और अगर | 44 | बड़ी कुदरत वाला | इल्म वाला | है | बेशक वह |

بِمَا كَسَبُوا مَا تَرَكَ عَلَىٰ ظَهْرِهَا مِنْ دَابَّةٍ وَلَٰكِنْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और लेकिन | कोई चलने फिरने वाला | उस की पुश्त | पर | वह न छोड़े | उन के आमाल के सबब |

يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُسَمًّى فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन की अजल | आ जाएगी | फिर जब | एक मद्दते मुअय्यन | तक | वह उन्हें ढील देता है |

ع ٥ ٨ ١٤ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِعِبَادِهِ بَصِيرًا ﴿٤٥﴾

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 45 | देखने वाला | अपने बन्दों को | है | तो बेशक अल्लाह |

آيَاتُهَا ٨٣ ﴿٣٦﴾ سُورَةُ يٰسٓ رُكُوعَاتُهَا ٥

| | | |
|---|---|---|
| रुकूआत 5 | (36) सूरह या सीन | आयात 83 |

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يٰسٓ ﴿١﴾ وَالْقُرْآنِ الْحَكِيمِ ﴿٢﴾ إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣﴾ عَلَىٰ صِرَاطٍ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रास्ता | पर | 3 | रसूलों में से | बेशक आप (स) | 2 | बाहिक्मत | क़सम है कुरआन | 1 | या सीन |

مُسْتَقِيمٍ ﴿٤﴾ تَنْزِيلَ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ﴿٥﴾ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَا أُنْذِرَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं डराए गए | वह क़ौम | ताकि आप (स) डराएं | 5 | मेहरबान | ग़ालिब | नाज़िल किया | 4 | सीधा |

آبَاؤُهُمْ فَهُمْ غَافِلُونَ ﴿٦﴾ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَىٰ أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस वह | उन में से अक्सर | पर | बात | तहक़ीक़ साबित हो गई | 6 | ग़ाफ़िल (जमा) | पस वह | उन के बाप (दादा) |

لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٧﴾ إِنَّا جَعَلْنَا فِي أَعْنَاقِهِمْ أَغْلَالًا فَهِيَ إِلَى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तक | फिर वह | तौक़ | उन की गरदनें | में | बेशक हम ने किए (डाले) | 7 | ईमान न लाएंगे |

الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُقْمَحُونَ ﴿٨﴾ وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के आगे | से | और हम ने कर दी | 8 | सर ऊँचा किए (सर उलल रहे हैं) | तो वह | ठोड़ियाँ |

سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ﴿٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | देखते नहीं | पस वह | फिर हम ने उन्हें ढांप दिया | एक दीवार | और उन के पीछे | एक दीवार |

क्या वह दुनिया में चले फिरे नहीं कि वह देखते कि उन से पहले लोगों का अन्जाम कैसा हुआ! और वह कुव्वत में उन से बहुत ज़ियादा थे, और अल्लाह (ऐसा) नहीं कि कोई शै आस्मानों में और न ज़मीन में (कोई शै उसे हरा सकती है), बेशक वह इल्म वाला, कुदरत वाला है। (44)

और अगर अल्लाह लोगों को उन के आमाल के सबब पकड़े तो वह न छोड़े कोई चलने फिरने वाला उस की पुश्त (रूए ज़मीन) पर, लेकिन वह उन्हें एक मद्दते मुअय्यन तक ढील देता है, फिर जब आ जाएगी उन की अजल तो बेशक अल्लाह अपने बन्दों को देखने वाला है (उन के आमाल का बदला ज़रूर मिलेगा)। (45)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

या सीन। (1)

क़सम है बाहिक्मत कुरआन की। (2)

बेशक आप (स) रसूलों में से हैं। (3)

सीधे रास्ते पर हैं। (4)

नाज़िल किया हुआ ग़ालिब, मेहरबान का। (5)

ताकि आप (स) उस क़ौम को डराएं जिस के बाप दादा नहीं डराए गए, पस वह ग़ाफ़िल हैं। (6)

तहक़ीक़ उन में से अक्सर पर (अल्लाह की) बात साबित हो चुकी है, पस वह ईमान न लाएंगे। (7)

बेशक हम ने उन की गर्दनों में डाले हैं तौक़, फिर वह ठोड़ी तक (अड़ गए हैं) तो उन के सर उलल रहे हैं। (8)

और हम ने कर दी उन के आगे एक दीवार और उन के पीछे एक दीवार, फिर हम ने उन्हें ढाँप दिया, पस वह देखते नहीं। (9)

और बराबर है उन के लिए ख़ाह तुम उन्हें डराओ या न डराओ, वह ईमान न लाएंगे। (10)
इस के सिवा नहीं कि तुम (उस को) डराते हो जो किताबे नसीहत की पैरवी करे। और बिन देखे अल्लाह से डरे, पस आप (स) उसे बख़्शिश और अच्छे अजर की ख़ुशख़बरी दें। (11)
बेशक हम मुर्दों को ज़िन्दा करते हैं, और हम लिखते हैं उन के अ़मल जो उन्होंने आगे भेजे और जो उन्होंने पीछे (आसार) छोड़े, और हर शै को हम ने किताबे रोशन में शुमार कर रखा है। (12)
और आप (स) उन के लिए बस्ती वालों का क़िस्सा बयान करें, जब उन के पास रसूल आए। (13)
जब हम ने उन की तरफ़ दो (रसूल) भेजे तो उन्होंने उन्हें झुटलाया, फिर हम ने तीसरे से तक़्वियत दी, पस उन्हों ने कहा: बेशक हम तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं। (14)
वह बोले: तुम महज़ हम जैसे आदमी हो, और नहीं उतारा रहमान (अल्लाह) ने कुछ भी, तुम महज़ झूट बोलते हो। (15)
उन्हों ने कहा: हमारा परवरदिगार जानता है, बेशक हम तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं। (16)
और हम पर (हमारे ज़िम्मे) नहीं मगर (सिर्फ़) साफ़ साफ़ पहुँचा देना। (17)
वह कहने लगे: हम ने बेशक मनहूस पाया तुम्हें, अगर तुम बाज़ न आए तो हम तुम्हें ज़रूर संगसार कर देंगे और तुम्हें हम से दर्दनाक अ़ज़ाब ज़रूर पहुँचेगा। (18)
उन्हों ने कहा: तुम्हारी नहूसत तुम्हारे साथ है क्या तुम (इस को नहूसत समझते हो) कि तुम समझाए गए हो, बल्कि तुम हद से बढ़ने वाले लोग हो। (19)
और शहर के परले सिरे से एक आदमी दौड़ता हुआ आया, उस ने कहा: ऐ मेरी क़ौम! तुम रसूलों की पैरवी करो। (20)
तुम उन की पैरवी करो जो तुम से कोई अजर नहीं मांगते और वह हिदायत याफ़्ता हैं। (21)

وَسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | वह ईमान न लाएंगे | तुम उन्हें न डराओ | या | ख़ाह तुम उन्हें डराओ | उन पर-उन के लिए | और बराबर |

اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बिन देखे | रहमान (अल्लाह) | और डरे | किताबे नसीहत | पैरवी करे | जो | तुम डराते हो | इस के सिवा नहीं |

فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَّاَجْرٍ كَرِيْمٍ ﴿١١﴾ اِنَّا نَحْنُ نُحْيِ الْمَوْتٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुर्दे | ज़िन्दा करते हैं | बेशक हम | 11 | अच्छा | और अजर | बख़्शिश की | पस उसे ख़ुशख़बरी दें |

وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَاٰثَارَهُمْ ۗ وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ فِيْٓ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| में | हम ने उसे शुमार कर रखा है | और हर शै | और उन के असर (निशानात) | जो उन्होंने आगे भेजा (अमल) | और हम लिखते हैं |

اِمَامٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٢﴾ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ ۘ اِذْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जब | बस्ती वाले | मिसाल (क़िस्सा) | उन के लिए | और बयान करें आप (स) | 12 | किताबे रोशन |

جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿١٣﴾ اِذْ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوْهُمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो उन्होंने झुटलाया उन्हें | दो (2) | उन की तरफ़ | हम ने भेजे | जब | 13 | रसूल (जमा) | उन के पास आए |

فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوْٓا اِنَّآ اِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ ﴿١٤﴾ قَالُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह बोले | 14 | भेजे गए | तुम्हारी तरफ़ | बेशक हम | पस उन्हों ने कहा | तीसरे से | फिर हम ने तक़्वियत दी |

مَآ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۙ وَمَآ اَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ مِنْ شَيْءٍ ۙ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुछ | रहमान (अल्लाह) | उतारा | और नहीं | हम जैसे | आदमी | मगर-महज़ | तुम नहीं हो |

اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَكْذِبُوْنَ ﴿١٥﴾ قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ اِنَّآ اِلَيْكُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारी तरफ़ | बेशक हम | जानता है | हमारा परवरदिगार | उन्हों ने कहा | 15 | झूट बोलते हो | मगर-महज | तुम | नहीं |

لَمُرْسَلُوْنَ ﴿١٦﴾ وَمَا عَلَيْنَآ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٧﴾ قَالُوْٓا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह कहने लगे | 17 | साफ़ साफ़ | पहुँचा देना | मगर | हम पर | और नहीं | 16 | अलबत्ता भेजे गए |

اِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और ज़रूर पहुँचेगा तुम्हें | ज़रूर हम संगसार कर देंगे तुम्हें | तुम बाज़ न आए | अगर | तुम्हें | हम ने मनहूस पाया |

مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٨﴾ قَالُوْا طَآئِرُكُمْ مَّعَكُمْ ۗ اَئِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या | तुम्हारे साथ | तुम्हारी नहूसत | उन्हों ने कहा | 18 | दर्दनाक | अ़ज़ाब | हम से |

ذُكِّرْتُمْ ۗ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿١٩﴾ وَجَآءَ مِنْ اَقْصَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| परला सिरा | से | और आया | 19 | हद से बढ़ने वाले | लोग | तुम | बल्कि | तुम समझाए गए |

الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | रसूलों की | तुम पैरवी करो | ऐ मेरी क़ौम | उस ने कहा | दौड़ता हुआ | एक आदमी | शहर |

اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا يَسْـَٔلُكُمْ اَجْرًا وَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٢١﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 21 | हिदायत याफ़्ता | और वह | कोई अजर | तुम से नहीं मांगते | जो | तुम पैरवी करो |

وقف غفران
ع ١٢ ١٨
وقف لازم

الجزء ٢٣

وَمَا لِيَ لَآ اَعْبُدُ الَّذِىْ فَطَرَنِىْ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 22 | तुम लौट कर जाओगे | और उसी की तरफ़ | पैदा किया मुझे | वह जिस ने | मैं न इबादत करूँ | मुझे | और क्या हुआ |

ءَاَتَّخِذُ مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً اِنْ يُّرِدْنِ الرَّحْمٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّىْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| न काम आए मेरे | कोई नुक्सान | रहमान-अल्लाह | वह चाहे | अगर | ऐसे माबूद | उस के सिवा | क्या मैं बना लूँ |

شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يُنْقِذُوْنِ ﴿٢٣﴾ اِنِّىْٓ اِذًا لَّفِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٤﴾ اِنِّىْٓ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक मैं | 24 | खुली | अलबत्ता गुमराही में | उस वक्त | बेशक मैं | 23 | और न छुड़ा सकें वह मुझे | कुछ भी | उन की सिफ़ारिश |

اٰمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُوْنِ ﴿٢٥﴾ قِيْلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ؕ قَالَ يٰلَيْتَ قَوْمِىْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरी क़ौम | ऐ काश | उस ने कहा | जन्नत | तू दाख़िल हो जा | इरशाद हुआ | 25 | पस तुम मेरी सुनो | तुम्हारे रब पर | मैं ईमान लाया |

يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ بِمَا غَفَرَ لِىْ رَبِّىْ وَجَعَلَنِىْ مِنَ الْمُكْرَمِيْنَ ﴿٢٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 27 | नवाज़े हुए लोग | से | और उस ने किया मुझे | मेरा रब | वह बात जिस की वजह से उस ने बख़्श दिया मुझे | 26 | वह जानती |

وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى قَوْمِهٖ مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِيْنَ ﴿٢٨﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 28 | उतारने वाले | और न थे हम | आस्मान | से | कोई लश्कर | उस के बाद | उस की क़ौम | पर | और नहीं उतारा हम ने |

اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ خٰمِدُوْنَ ﴿٢٩﴾ يٰحَسْرَةً

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हाए हस्रत | 29 | बुझ कर रह गए | वह | पस अचानक | एक | चिंघाड़ | मगर | न थी |

وقف غفران

عَلَى الْعِبَادِ ۚ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٠﴾ اَلَمْ يَرَوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या उन्हों ने नहीं देखा | 30 | हँसी उड़ाते | उस से | वह थे | मगर | कोई रसूल | नहीं आया उन के पास | बन्दों पर |

كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ اَنَّهُمْ اِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٣١﴾ وَاِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं | 31 | लौट कर नहीं आएंगे वह | उन की तरफ़ | कि वह | नसलों से | उन से क़ब्ल | हलाक की हम ने | कितनी |

ع ٢ / ٢٠

كُلٌّ لَّمَّا جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ الْمَيْتَةُ ۚۖ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुर्दा | ज़मीन | उन के लिए | एक निशानी | 32 | हाज़िर किए जाएंगे | हमारे रूबरू | सब के सब | मगर | सब |

اَحْيَيْنٰهَا وَاَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَاْكُلُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَجَعَلْنَا فِيْهَا جَنّٰتٍ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बाग़ात | उस में | और बनाए हम ने | 33 | वह खाते हैं | पस उस से | अनाज | उस से | और निकाला हम ने | हम ने ज़िन्दा किया उसे |

مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ وَّفَجَّرْنَا فِيْهَا مِنَ الْعُيُوْنِ ﴿٣٤﴾ لِيَاْكُلُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि वह खाएं | 34 | चश्मे | से | उस में | और जारी किए हम ने | और अंगूर | खजूर | से के |

مِنْ ثَمَرِهٖ ۙ وَمَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيْهِمْ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ سُبْحٰنَ الَّذِىْ خَلَقَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पैदा किए | वह ज़ात जिस ने | पाक | 35 | तो क्या वह शुक्र न करेंगे | उन के हाथों | बनाया उसे | और नहीं | उस के फलों से |

الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 36 | वह नहीं जानते | और उस से जो | और उन की जानों से | ज़मीन | उगाती है | उस से जो | हर चीज़ | जोड़े |

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ۚۖ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ﴿٣٧﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 37 | अन्धेरे में रह जाते हैं | वह | तो अचानक | दिन | उस से | हम खींचते हैं | रात | उन के लिए | और एक निशानी |

और मुझे क्या हुआ (मेरे पास क्या उज़्र है) कि मैं उस की इबादत न करूँ जिस ने मुझे पैदा किया, और तुम उसी की तरफ़ लौट कर जाओगे। (22)
क्या मैं उस के सिवा ऐसे माबूद बनालूँ? अगर अल्लाह मुझे नुक्सान पहुँचाना चाहे तो उन की सिफ़ारिश मेरे काम न आए कुछ भी, और न वह मुझे छुड़ा सकें। (23)
बेशक मैं उस वक्त खुली गुमराही में हूँगा। (24)
बेशक मैं तुम्हारे परवरदिगार पर ईमान लाया, पस तुम मेरी सुनो (25)
(उस शहीद को) इरशाद हुआ कि तू जन्नत में दाख़िल हो जा, उस ने कहा: ऐ काश! मेरी कौम जानती। (26)
वह बात जिस की वजह से मुझे बख़्श दिया मेरे रब ने और उस ने मुझे (अपने) नवाजे हुए लोगों में से किया। (27)
और हम ने उन के बाद उस की क़ौम पर कोई लशकर नहीं उतारा आस्मान से, और न हम उतारने वाले थे (भेजने की हाजत थी)। (28)
(उन की सज़ा) न थी मगर एक चिंघाड़, पस वह अचानक बुझ कर रह गए। (29)
हाए हस्रत बन्दों पर! कि उन के पास कोई रसूल नहीं आया मगर वह उस की हँसी उड़ाते थे। (30)
क्या उन्हों ने नहीं देखा? हम ने उन से क़ब्ल कितनी नसलें हलाक कीं कि वह उन की तरफ़ लौट कर नहीं आएंगे। (31)
और कोई एसा (नहीं) मगर सब के सब हमारे रूबरू हाजिर किए जाएंगे। (32)
और मुर्दा ज़मीन उन के लिए एक निशानी है, हम ने उसे ज़िन्दा किया और हम ने उस से अनाज निकाला, पस वह उस से खाते हैं। (33)
और हम ने उस में बाग़ात बनाए (लगाए) खजूर और अंगूर के, और हम ने उस में चश्मे जारी किए। (34)
ताकि वह उस के फलों से खाएं और उसे नहीं बनाया उन के हाथों ने, तो क्या वह शुक्र न करेंगे? (35)
पाक है वह ज़ात जिस ने हर चीज के जोड़े पैदा किए उस (क़बील) से जो ज़मीन उगाती है (नबातात) और खुद उनकी जानों (इन्सानों में से) और उन में से जिन्हें वह (खुद भी) नहीं जानते। (36)
और उन के लिए रात एक निशानी है, हम दिन को उस से खींचते (निकालते) हैं तो वह अचानक अन्धेरे में रह जाते हैं। (37)

और सूरज अपने मुकर्ररा रास्ते पर चलता रहता है, यह अल्लाह ग़ालिब और दाना का निज़ाम (मुक़र्रर करदह) है। (38)
और चाँद के लिए हम ने मनज़िलें मुक़र्रर कीं यहाँ तक कि वह खजूर की पुरानी शाख की तरह हो जाता है (पहली का बारीक सा चाँद)। (39)
न सूरज की मजाल कि चाँद को जा पकड़े और न रात की (मजाल) कि पहले आ सके दिन से, और सब अपने दाइरे में गर्दिश करते हैं। (40)
और उन के लिए एक निशानी है कि हम ने उन की औलाद को सवार किया भरी हुई कश्ती में। (41)
और हम ने उन के लिए उस कश्ती जैसी (और चीज़ें) पैदा कीं जिन पर वह सवार होते हैं। (42)
और अगर हम चाहें तो हम उन्हें गर्क कर दें तो न (कोई) उन के लिए फ़र्याद रस (हो) और न वह छुड़ाए जाएंगे। (43)
मगर हमारी रहमत से (कि पार लगते हैं) और एक वक्ते मुअय्यन तक फ़ाइदा उठाते हैं। (44)
और जब उन से कहा जाए कि तुम डरो उस से जो तुम्हारे सामने है और जो तुम्हारे पीछे है, शायद तुम पर रहम किया जाए (तो सुन कर नहीं देते)। (45)
और उन के पास उन के रब की निशानियों में से कोई निशानी नहीं आती मगर वह उस से रूगर्दानी करते हैं। (46)
और जब उन से कहा जाए कि जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से खर्च करो तो काफ़िर कहते हैं मोमिनों से कि क्या हम उसे खिलाएं? जिसे अगर अल्लाह चाहता तो उसे खाने को देता, तुम सिर्फ़ खुली गुमराही में हो। (47)
और वह (काफ़िर) कहते हैं कि कब (पूरा होगा) यह वादाए (क़ियामत)? अगर तुम सच्चे हो। (48)
वह इन्तिज़ार नहीं करते हैं मगर एक चिंघाड़ (सूर की तुन्द आवाज़) की, जो उन्हें आ पकड़ेगी और वह बाहम झगड़ रहे होंगे। (49)
फिर न वह वसीयत कर सकेंगे और न अपने घर वालों की तरफ़ लौट सकेंगे। (50)
और (दोबारा) फूंका जाएगा सूर में तो वह यकायक क़ब्रों से अपने रब की तरफ़ दौड़ेंगे। (51)
वह कहेंगे हाय हम पर! हमें किस ने उठा दिया? हमारी क़ब्रों से, यह है वह जो अल्लाह रहमान ने वादा किया था, और रसूलों ने सच कहा था। (52)

وَالشَّمْسُ تَجْرِیْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِیْرُ الْعَزِیْزِ الْعَلِیْمِ ۝۳۸ وَالْقَمَرَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और चाँद | 38 | जानने वाला (दाना) | ग़ालिब | निज़ाम | यह | अपने | ठिकाना (मुक़र्ररा रास्ते) | चलता रहता है | और सूरज |

قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰی عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِیْمِ ۝۳۹ لَا الشَّمْسُ یَنْۢبَغِیْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लाइक (मजाल) | सूरज | न | 39 | पुरानी | खजूर की शाख की तरह | हो जाता है | यहाँ तक कि | मनज़िलें | हम ने मुक़र्रर कीं उस को |

لَهَاۤ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّیْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ؕ وَكُلٌّ فِیْ فَلَكٍ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दाइरे में | और सब | दिन | पहले आ सके | रात | और न | चाँद | जा पकड़े वह | कि | उस के लिए |

یَّسْبَحُوْنَ ۝۴۰ وَاٰیَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّیَّتَهُمْ فِی الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ۝۴۱

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 41 | भरी हुई | कश्ती में | उन की औलाद | हम ने सवार किया | कि हम | उन के लिए | और एक निशानी | 40 | तैरते (गर्दिश करते) हैं |

وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا یَرْكَبُوْنَ ۝۴۲ وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِیْخَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो न फ़र्याद रस | हम गर्क कर दें उन्हें | हम चाहें | और अगर | 42 | वह सवार होते हैं | जो जिस | उस (कश्ती) जैसी | उन के लिए | और हम ने पैदा किया |

لَهُمْ وَلَا هُمْ یُنْقَذُوْنَ ۝۴۳ اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰی حِیْنٍ ۝۴۴ وَاِذَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जब | 44 | एक वक्ते मुअय्यन तक | और फ़ाइदा देना | हमारी तरफ़ से | रहमत | मगर | 43 | छुड़ाए जाएं | और न वह | उन के लिए |

قِیْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَیْنَ اَیْدِیْكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝۴۵ وَمَا

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं | 45 | तुम पर रहम किया जाए | शायद तुम | तुम्हारे पीछे | और जो | तुम्हारे सामने | जो | तुम डरो | उन से | कहा जाए |

تَاْتِیْهِمْ مِّنْ اٰیَةٍ مِّنْ اٰیٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِیْنَ ۝۴۶ وَاِذَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जब | 46 | रूगर्दानी करते | उस से | वह हैं | मगर | उन का रब | निशानियां में से | कोई निशानी | उन के पास |

قِیْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन लोगों से जो ईमान लाए (मोमिन) | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | कहते हैं | तुम्हें दिया अल्लाह ने | उस से जो | खर्च करो तुम | उन से | कहा जाए |

اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ یَشَآءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗۤ ۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ۝۴۷

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 47 | खुली | गुमराही | में | मगर-सिर्फ़ | तुम | नहीं | उसे खाने को देता | अगर अल्लाह चाहता | (उस को) जिसे | क्या हम खिलाएं |

وَیَقُوْلُوْنَ مَتٰی هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ۝۴۸ مَا یَنْظُرُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह इन्तिज़ार नहीं कर रहे हैं | 48 | सच्चे | तुम हो | अगर | यह वादा | कब | और वह कहते हैं |

اِلَّا صَیْحَةً وَّاحِدَةً تَاْخُذُهُمْ وَهُمْ یَخِصِّمُوْنَ ۝۴۹ فَلَا یَسْتَطِیْعُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर न कर सकेंगे | 49 | बाहम झगड़ रहे होंगे | और वह | वह उन्हें आ पकड़ेगी | एक | चिंघाड़ | मगर |

تَوْصِیَةً وَّلَاۤ اِلٰۤی اَهْلِهِمْ یَرْجِعُوْنَ ۝۵۰ وَنُفِخَ فِی الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ ع ۱۸ ۲

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो यकायक वह | सूर में | और फूंका जाएगा | 50 | वह लौट सकेंगे | अपने घर वाले | तरफ़ | और न | वसीयत करना |

مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰی رَبِّهِمْ یَنْسِلُوْنَ ۝۵۱ قَالُوْا یٰوَیْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किस ने उठा दिया हमें | ऐ वाए हम पर | वह कहेंगे | 51 | दौड़ेंगे | अपने रब की तरफ़ | क़ब्रें | से |

مِنْ مَّرْقَدِنَا ؔ هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ۝۵۲ وقف لازم وقف منزل وقف غفران

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 52 | रसूलों | और सच कहा था | रहमान-अल्लाह | जो वादा किया | यह | हमारी क़ब्रें | से |

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ٥٣

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 53 | हाज़िर किए जाएंगे | हमारे सामने | सब | वह | पस यकायक | एक | चिंघाड़ | मगर | होगी | न |

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا وَّلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ٥٤ إِنَّ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | 54 | करते थे | जो तुम | मगर बस | और न तुम बदला पाओगे | कुछ | किसी शख़्स | न ज़ुल्म किया जाएगा | पस आज |

أَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِيْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ٥٥ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِيْ ظِلٰلٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सायों में | और उन की बीवियां | वह | 55 | बातें (मज़े करने में) | एक शुग़्ल में | आज | अहले जन्नत |

عَلَى الْأَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ٥٦ لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ ٥٧

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 57 | जो वह चाहेंगे | और उन के लिए | मेवा | उस में | उन के लिए | 56 | तकिया लगाए हुए | तख़्तों पर |

سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ٥٨ وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ٥٩

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 59 | मुजरिमो (जमा) | ऐ | आज | और अलग हो जाओ तुम | 58 | मेहरबान परवरदिगार | से | फ़रमाया जाएगा | सलाम |

أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ أَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ ۚ إِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दुश्मन | तुम्हारा | बेशक वह | शैतान | परस्तिश न करना | ऐ औलादे आदम | तुम्हारी तरफ़ | क्या मैं ने हुक्म नहीं भेजा था |

وقف غفران

مُّبِيْنٌ ٦٠ وَّأَنِ اعْبُدُوْنِيْ ۚ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ٦١ وَلَقَدْ أَضَلَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तहक़ीक़ गुमराह कर दिया | 61 | सीधा | रास्ता | यही | और यह कि तुम मेरी इबादत करना | 60 | खुला |

مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيْرًا ۚ أَفَلَمْ تَكُوْنُوْا تَعْقِلُوْنَ ٦٢ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जिस का | जहन्नम | यह है | 62 | सो क्या तुम अ़क़्ल से काम नहीं लेते? | बहुत सी | मख़्लूक़ | तुम में से |

كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ٦٣ اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ٦٤ اَلْيَوْمَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आज | 64 | तुम कुफ़्र करते थे | उस के बदले जो | आज | उस में दाख़िल हो जाओ | 63 | तुम से वादा किया गया था |

نَخْتِمُ عَلٰٓى أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ أَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह थे | उस की जो | उन के पाऊँ | और गवाही देंगे | उन के हाथ | और हम से बोलेंगे | उन के मुंह | पर | हम मुहर लगा देंगे |

يَكْسِبُوْنَ ٦٥ وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَأَنّٰى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो कहां | रास्ता | फिर वह सबक़त करें | उन की आँखें | पर | ला मिटा दें (मिलयामेट करदें) | और अगर हम चाहें | 65 | कमाते (करते थे) |

يُبْصِرُوْنَ ٦٦ وَلَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर न कर सकेंगे | उन की जगहें | पर-में | हम मस्ख़ कर दें उन्हें | और अगर हम चाहें | 66 | वह देख सकेंगे |

مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُوْنَ ٦٧ وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ

ع ٤ ٣

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़ल्क़त (पैदाइश) में | औंधा कर देते हैं | हम उम्र दराज़ कर देते हैं | और जिस | 67 | और न वह लौटें | चलना |

أَفَلَا يَعْقِلُوْنَ ٦٨ وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهٗ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नसीहत | मगर | वह (यह) | नहीं | उस के लिए | और नहीं शायान | शे'र | और हम ने नहीं सिखाया उस को | 68 | तो क्या वह समझते नहीं? |

وَّقُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ ٦٩ لِّيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ٧٠

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 70 | काफ़िर (जमा) | पर | बात (हुज्जत) | और साबित हो जाए | ज़िन्दा | हो | जो | ताकि (आप स) डराएं | 69 | और क़ुरआन वाज़ेह |

(यह) न होगी मगर एक चिंघाड़, पस यकायक वह सब हमारे सामने हाज़िर किए जाएंगे। (53) पस आज ज़ुल्म न किया जाएगा किसी शख़्स पर कुछ (भी) और तुम बदला न पाओगे मगर उसी का जो तुम करते थे। (54) बेशक आज अहले जन्नत एक शुग़्ल में ख़ुश होते होंगे। (55) वह और उन की बीवियाँ सायों में तख़्तों पर तकिया लगाए हुए (बैठे) होंगे। (56) उन के लिए उस (जन्नत) में हर क़िस्म का मेवा और उन के लिए जो वह चाहेंगे (मौजूद होगा)। (57) मेहरबान परवरदिगार की तरफ़ से सलाम फ़रमाया जाएगा। (58) और ऐ मुजरिमो! तुम आज अलग हो जाओ। (59) क्या मैं ने तुम्हारी तरफ़ हुक्म नहीं भेजा था ऐ औलादे आदम! कि तुम परस्तिश न करना शैतान की, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (60) और यह कि तुम मेरी इबादत करना, यही सीधा रास्ता है। (61) और उस ने तुम में से बहुत लोगों को गुमराह कर दिया, सो क्या तुम अ़क़्ल से काम नहीं लेते थे? (62) यह है वह जहन्नम जिस का तुम से वादा किया गया था। (63) तुम जो कुफ़्र करते थे उस के बदले आज इस में दाख़िल हो जाओ। (64) आज हम उन के मुँह पर मुहर लगा देंगे, और हम से उन के हाथ बोलेंगे और उन के पाऊँ गवाही देंगे जो वह करते थे। (65) और अगर हम चाहें तो उन की आँखें मिलयामेट कर दें, फिर वह रास्ते की तरफ़ सबक़त करें (दौड़ें) तो कहां देख सकेंगे? (66) और अगर हम चाहें तो उन्हें उन की जगहों पर मस्ख़ कर दें, फिर वह न चल सकेंगे और न लौट सकेंगे। (67) और हम जिस की उम्र दराज़ करते हैं उसे पैदाइश में औंधा कर देते हैं तो क्या वह समझते नहीं? (68) और हम ने उस (आप स) को शे'र नहीं सिखाया और यह आप (स) के शायान नहीं है, यह नहीं मगर (किताबे) नसीहत और वाज़ेह क़ुरआन। (69) ताकि आप (स) (उस को) डराएं जो ज़िन्दा हो और काफ़िरों पर हुज्जत साबित हो जाए। (70)

या क्या वह नहीं देखते कि हम ने जो (चीज़ें) अपनी कुदरत से बनाई, उन में से उन के लिए पैदा किए चौपाए, पस वह उन के मालिक हैं। **(71)** और हम ने उन (चौपायों) को उन के बस में कर दिया, पस उन में से (बाज़) उन की सवारी है और उन में से बाज़ को वह खाते हैं। **(72)** और उन में उन के लिए (बहुत से) फ़ाइदे और पीने की चीज़ें हैं, क्या फिर वह शुक्र नहीं करते? **(73)** और उन्हों ने बना लिए अल्लाह के सिवा और माबूद (इस ख़याले बातिल से कि) शायद वह मदद किए जाएंगे। **(74)** वह उन की मदद नहीं कर सकते और वह उन के लिए (मुजरिम) लशकर (की शक्ल में) हाज़िर किए जाएंगे। **(75)** पस आप (स) को उनकी बात मग़मूम न करे बेशक हम जानते हैं जो वह छुपाते हैं और जो वह ज़ाहिर करते हैं। **(76)** क्या इन्सान ने नहीं देखा कि हम ने उस को नुत्फ़े से पैदा किया? और फिर नागहां वह हुआ झगड़ालू खुला। **(77)** और उस ने हमारे लिए एक मिसाल बयान की और अपनी पैदाइश को भूल गया, कहने लगा कौन हड्डियों को ज़िन्दा करेगा? जब कि वह गल गईं होंगी। **(78)** आप (स) फ़रमा दें: उसे वह ज़िन्दा करेगा जिस ने उसे पहली बार पैदा किया, और वह हर तरह से पैदा करना जानता है। **(79)** जिस ने तुम्हारे लिए सब्ज़ दरख़्त से आग पैदा की, पस अब तुम उस (आग) से सुलगाते हो। **(80)** वह जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया, क्या वह इस पर क़ादिर नहीं कि उन जैसों को पैदा करे, हाँ (क्यों नहीं) वह बड़ा पैदा करने वाला दाना है। **(81)** उस का काम उस के सिवा नहीं कि जब वह किसी शै का इरादा करता है तो वह उस को कहता है "हो जा" तो वह हो जाती है। **(82)** सो पाक है वह (ज़ाते वाहिद) जिस के हाथ में हर शै की बादशाहत है, और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। **(83)**

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

क़सम है परा जमा कर सफ़ बान्धने वाले (फ़रिश्तों) की। **(1)** फिर झिड़क कर डांटने वालों की। **(2)** फिर क़ुरआन तिलावत करने वालों की। **(3)**

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ اَيْدِيْنَآ اَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ﴿٧١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 71 | मालिक हैं | उन के | पस वह | चौपाए | बनाया अपने हाथों (कुदरत) से | उस से जो | उन के लिए | हम ने पैदा किया | या क्या वह नहीं देखते? |

وَذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَمِنْهَا يَاْكُلُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़ाइदे | उन में | और उन के लिए | 72 | वह खाते हैं | और उन से | उन की सवारी | पस उन से | उन के लिए | और हम ने फ़रमांबरदार किया उन्हें |

وَمَشَارِبُ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾ وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لَّعَلَّهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शायद वह | और माबूद | अल्लाह के सिवा | और उन्हों ने बना लिए | 73 | क्या फिर वह शुक्र नहीं करते? | और पीने की चीज़ें |

يُنْصَرُوْنَ ﴿٧٤﴾ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ ۙ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ ﴿٧٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 75 | हाज़िर किए जाएंगे | लशकर | उन के लिए | और वह | उन की मदद | वह नहीं कर सकते | 74 | मदद किए जाएं |

فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٦﴾ اَوَلَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इन्सान | क्या नहीं देखा | 76 | वह ज़ाहिर करते हैं | और जो | जो वह छुपाते हैं | बेशक हम जानते हैं | उन की बात | पस आप (स) का मग़मूम न करे |

وقف لازم

اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٧﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक मिसाल | हमारे लिए | और उस ने बयान की | 77 | खुला | झगड़ालू | वह | फिर नागहां | नुत्फ़े से | कि हम ने पैदा किया उस को |

وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ ؕ قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ ﴿٧٨﴾ قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْٓ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जिस ने | उसे ज़िन्दा करेगा | फ़रमा दें | 78 | गल गईं | जब कि वह | हड्डियां | कौन ज़िन्दा करेगा | कहने लगा | अपनी पैदाइश | और भूल गया |

اَنْشَاَهَآ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمُ ﴿٧٩﴾ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | तुम्हारे लिए | पैदा किया | जिस ने | 79 | जानने वाला | पैदा करना | हर तरह | और वह | पहली बार | उसे पैदा किया |

الشَّجَرِ الْاَخْضَرِ نَارًا فَاِذَآ اَنْتُمْ مِّنْهُ تُوْقِدُوْنَ ﴿٨٠﴾ اَوَلَيْسَ الَّذِيْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जिस ने | क्या नहीं | 80 | सुलगाते हो | उस से | तुम | पस अब | आग | सब्ज़ | दरख़्त |

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ؔ بَلٰى ۗ وَهُوَ

وقف غفران ١٢

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह | हाँ | उन जैसा | वह पैदा करे | कि | पर | क़ादिर | और ज़मीन | आस्मानों | पैदा किया |

الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨١﴾ اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ اِذَآ اَرَادَ شَيْئًا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٨٢﴾

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 82 | तो वह हो जाती है | हो जा | उस को | वह कहता है | कि | वह इरादा करे किसी शै का | जब | उस का काम | इस के सिवा नहीं | 81 | दाना | बड़ा पैदा करने वाला |

فَسُبْحٰنَ الَّذِيْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾

ع ١٦/٥

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 83 | तुम लौट कर जाओगे | और उसी की तरफ़ | हर शै | बादशाहत | उस के हाथ में | वह जिस | सो पाक है |

آيَاتُهَا ١٨٢ ❀ (٣٧) سُوْرَةُ الصّٰٓفّٰتِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٥

रुकुआत 5 — (37) सूरतुस साफ़्फ़ात — आयात 182

सफ़ बांधने वाले

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ﴿١﴾ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ﴿٢﴾ فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ﴿٣﴾

المنزل ٦

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | ज़िक्र (क़ुरआन) | फिर तिलावत करने वाले | 2 | झिड़क कर | फिर डांटने वाले | 1 | परा जमा कर | क़सम सफ़ बान्धने वाले |

اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ﴿٤﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और रब | और जो उन के दरमियान | और जमीन | आस्मानों | रब | 4 | अलबत्ता एक | तुम्हारा माबूद | बेशक |

الْمَشَارِقِ ﴿٥﴾ اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ ﹰالْكَوَاكِبِ ﴿٦﴾ وَحِفْظًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और महफूज़ किया | 6 | सितारे | ज़ीनत से | आस्माने दुनिया | बेशक हम ने मुज़ैयन किया | 5 | मश्रिक़ों |

مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ﴿٧﴾ لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और मारे जाते हैं | मलाए आला | तरफ़ | कान नहीं लगा सकते | 7 | सरकश | हर शैतान | से |

مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ﴿٨﴾ دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ﴿٩﴾ اِلَّا مَنْ خَطِفَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ले भागा | जो | सिवाए | 9 | अज़ाबे दाइमी | और उन के लिए | भगाने को | 8 | हर तरफ | से |

الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ﴿١٠﴾ فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| या | ज़ियादा मुश्किल पैदा करना | क्या उन | पस उन से पूछें | 10 | एक अंगारा दहकता हुआ | तो उस के पीछे लगा | उचक कर |

مَّنْ خَلَقْنَا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ ﴿١١﴾ بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُوْنَ ﴿١٢﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12 | और वह मज़ाक उड़ाते हैं | आप (स) ने तअज्जुब किया | बल्कि | 11 | मिट्टी चिपकती हुई | से | बेशक हम ने पैदा किया उन्हें | हम ने पैदा किया | जो |

وَاِذَا ذُكِّرُوْا لَا يَذْكُرُوْنَ ﴿١٣﴾ وَاِذَا رَاَوْا اٰيَةً يَّسْتَسْخِرُوْنَ ﴿١٤﴾ وَقَالُوْٓا اِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं | और उन्हों ने कहा | 14 | वह हँसी में उड़ा देते हैं | वह देखते हैं कोई निशानी | और जब | 13 | वह नसीहत कुबूल नहीं करते | नसीहत की जाए | और जब |

هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿١٦﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 16 | फिर उठाए जाएंगे | क्या हम | और हड्डियां | मिट्टी | और हम हो गए | हम मर गए | क्या जब | 15 | जादू खुला | मगर-सिर्फ़ | यह |

اَوَ اٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ﴿١٧﴾ قُلْ نَعَمْ وَاَنْتُمْ دٰخِرُوْنَ ﴿١٨﴾ فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ललकार | पस इस के सिवा नहीं वह | 18 | ज़लील ओ खार | और तुम | हाँ | फ़रमा दें | 17 | हमारे बाप दादा पहले | क्या |

وَّاحِدَةٌ فَاِذَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿١٩﴾ وَقَالُوْا يٰوَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿٢٠﴾ هٰذَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह | 20 | बदले का दिन | यह | हाए हमारी खराबी | और वह कहेंगे | 19 | देखने लगेंगे | वह | पस नागहां | एक |

ع ۱ ۲۱ ۵ يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢١﴾ اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जिन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम) | तुम जमा करो | 21 | झुटलाते | उस को | तुम थे | वह जिस | फ़ैसले का दिन |

وَاَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿٢٢﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاهْدُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रास्ता | तरफ़ | पस तुम उन को दिखाओ | अल्लाह के सिवा | 22 | वह परस्तिश करते थे | और जिस | और उन के जोड़े (साथी) |

الربع الْجَحِيْمِ ﴿٢٣﴾ وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْئُوْلُوْنَ ﴿٢٤﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ ﴿٢٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 25 | तुम एक दूसरे की मदद नहीं करते | क्या हुआ तुम्हें | 24 | उन से पुर्सिश होगी | बेशक वह | और ठहराओ उन को | 23 | जहन्नम |

بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٢٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 27 | बाहम सवाल करते हुए | बाज़ पर दूसरे की तरफ़ | उन में से बाज़ (एक) | और रुख करेगा | 26 | सर झुकाए फ़रमांबरदार | आज | बल्कि वह |

قَالُوْٓا اِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَاْتُوْنَنَا عَنِ الْيَمِيْنِ ﴿٢٨﴾ قَالُوْا بَلْ لَّمْ تَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 29 | ईमान लाने वाले | तुम न थे | बल्कि | वह कहेंगे | 28 | दाएं तरफ़ से | तुम हम पर आए थे | बेशक तुम | वह कहेंगे |

बेशक तुम्हारा माबूद एक ही है। (4)
परवरदिगार है आस्मानों का और ज़मीन का और जो उन दोनों के दरमियान है, और परवरदिगार है मश्रिक़ों (मुकामाते तुलूअ़) का। (5)
बेशक हम ने मुज़ैयन किया आस्माने दुनिया को सितारों की ज़ीनत से। (6)
और हर सरकश शैतान से महफ़ूज़ किया। (7)
और मलाए आला (ऊपर की मजलिस) की तरफ़ कान नहीं लगा सकते, हर तरफ़ से (अंगारे) मारे जाते हैं। (8)
भगाने को और उन के लिए दाइमी अज़ाब है। (9)
सिवाए उस के जो उचक कर ले भागा तो उस के पीछे एक दहकता हुआ अंगारा लगा। (10)
पस आप (स) उन से पूछें: क्या उन का पैदा करना ज़ियादा मुश्किल है या जो (मख़्लूक़) हम ने पैदा की? बेशक हम ने उन्हें चिपकती हुई मिट्टी (गारे) से पैदा किया। (11)
बल्कि आप ने (उन की हालत पर) तअज्जुब किया और वह मज़ाक़ उड़ाते हैं। (12)
और जब उन्हें नसीहत की जाए तो वह नसीहत क़ुबूल नहीं करते। (13)
और जब कोई निशानी देखते हैं तो वह हँसी में उड़ा देते हैं। (14)
और उन्हों ने कहा यह तो सिर्फ़ खुला जादू है। (15)
क्या जब हम मर गए और हम मिट्टी और हड्डियां हो गए? क्या हम फिर उठाए जाएंगे? (16)
क्या हमारे पहले बाप दादा (भी)? (17)
आप (स) फ़रमा दें हाँ! और तुम ज़लील ओ खार होगे। (18)
पस इस के सिवा नहीं कि वह एक ललकार होगी, पस नागहां वह देखने लगेंगे। (19)
और वह कहेंगे, हाए हमारी खराबी! यह बदले का दिन है। (20)
यह फ़ैसले का दिन है, वह जिस को तुम झुटलाते थे। (21)
तुम जमा करो ज़ालिमों और उन के साथियों को और जिस की वह परस्तिश करते थे। (22)
अल्लाह के सिवाए। पस तुम उन को जहन्नम का रास्ता दिखाओ। (23)
और उन को ठहराओ, बेशक उन से पुर्सिश होगी। (24)
तुम्हें क्या हुआ? तुम एक दूसरे की मदद नहीं करते। (25)
बल्कि वह आज सर झुकाए फ़रमांबरदार (अपने आप को पकड़वाते) हैं। (26)
और उन में से एक दूसरे की तरफ़ बाहम सवाल करते हुए रुख करेगा। (27)
वह कहेंगे बेशक तुम हम पर दाएं तरफ़ से (बड़े ज़ोर से) आते थे। (28)
वह कहेंगे (नहीं) बल्कि तुम ईमान लाने वाले न थे। (29)

और हमारा तुम पर कोई ज़ोर न था, बल्कि तुम एक सरकश क़ौम थे। (30)
पस हम पर हमारे रब की बात साबित हो गई, बेशक हम अलबत्ता (मज़ा) चखने वाले हैं। (31)
पस हम ने तुम्हें बहकाया, बेशक हम (ख़ुद) गुमराह थे। (32)
पस बेशक वह उस दिन अज़ाब में (भी) शरीक रहेंगे। (33)
बेशक हम इसी तरह करते हैं मुजरिमों के साथ। (34)
बेशक जब उन से कहा जाता था कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं (तो) वह तकब्बुर करते थे। (35)
और वह कहते हैं: क्या हम अपने माबूदों को छोड़ दें? एक शायर दीवाने की ख़ातिर। (36)
बल्कि वह (स) हक़ के साथ आए हैं और वह (स) तस्दीक़ करते हैं रसूलों की। (37)
बेशक तुम दर्दनाक अज़ाब ज़रूर चखने वाले हो। (38)
और तुम्हें बदला न दिया जाएगा मगर (उस के मुताबिक़) जो तुम करते थे। (39)
(हाँ) मगर अल्लाह के ख़ास किए हुए (चुने हुए) बन्दे। (40)
उन के लिए रिज़्क़ मालूम (मुक़र्रर) है। (41)
(यानी) मेवे, और वह एज़ाज़ वाले होंगे। (42)
नेमत के बाग़ात में। (43)
तख़्तों पर आमने सामने। (44)
दौरा होगा उन के आगे बहते हुए (साफ़) मशरूब के जाम का। (45)
सफ़ेद रंग का, पीने वालों के लिए लज़्ज़त (देने वाला)। (46)
न उस में दर्दसर होगा और न वह उस से बहकी बहकी बातें करेंगे। (47)
और उन के पास होंगी नीची निगाहों वालियां, बड़ी बड़ी आँखों वालियां। (48)
गोया वह अंडे हैं पोशीदा रखे हुए। (49)
फिर उन में से एक दूसरे की तरफ़ बाहम सवाल करते हुए रुख़ करेगा। (50)
उन में से एक कहने वाला कहेगा: बेशक (दुनिया में) मेरा एक हमनशीन था। (51)
वह कहा करता था क्या तू (क़ियामत को) सच मानने वालों में से है? (52)
क्या जब हम मर गए और हम हो गए मिट्टी और हड्डियां, क्या हमें बदला दिया जाएगा? (53)
वह कहेगा: क्या तुम झांकने वाले हो (दोज़ख़ी को झांक कर देख सकते हो?) (54)
तो वह झाँकेगा तो उसे देखेगा दोज़ख़ के दरमियान में (55)
वह कहेगा अल्लाह की क़सम! क़रीब था कि तू मुझे हलाक कर डाले। (56)

وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍۚ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ﴿٣٠﴾ فَحَقَّ عَلَيْنَا

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम पर | पस साबित हो गई | 30 | सरकश | एक क़ौम | तुम थे | बल्कि | कोई ज़ोर | तुम पर | हमारा | था | और न |

قَوْلُ رَبِّنَآ ۖ اِنَّا لَذَآئِقُوْنَ ﴿٣١﴾ فَاَغْوَيْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ ﴿٣٢﴾ فَاِنَّهُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस बेशक वह | 32 | गुमराह | बेशक हम थे | पस हम ने बहकाया तुम्हें | 31 | अलबत्ता चखने वाले | बेशक हम | हमारा रब | बात |

يَوْمَئِذٍ فِى الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 34 | मुजरिमों के साथ | करते हैं | इसी तरह | बेशक हम | 33 | मुश्तरिक (शरीक) | अज़ाब में | उस दिन |

اِنَّهُمْ كَانُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَيَقُوْلُوْنَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह कहते हैं | 35 | वह तकब्बुर करते थे | अल्लाह के सिवा | नहीं कोई माबूद | उन को | कहा जाता | जब | वह थे | बेशक वह |

اَئِنَّا لَتَارِكُوْٓا اٰلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ ﴿٣٦﴾ بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तस्दीक़ की | हक़ के साथ | वह आए | बल्कि | 36 | दीवाना | एक शायर की ख़ातिर | अपने माबूद | छोड़ देने वाले | क्या हम |

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٧﴾ اِنَّكُمْ لَذَآئِقُوا الْعَذَابِ الْاَلِيْمِ ﴿٣٨﴾ وَمَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर जो | और तुम्हें बदला न दिया जाएगा | 38 | दर्दनाक | अज़ाब | ज़रूर चखने वाले | बेशक तुम | 37 | रसूलों की |

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٤٠﴾ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | यही लोग | 40 | ख़ास किए हुए | अल्लाह के बन्दे | मगर | 39 | तुम करते थे |

رِزْقٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿٤١﴾ فَوَاكِهُ ۚ وَهُمْ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٤٢﴾ فِىْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٤٣﴾ عَلٰى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | 43 | नेमत के बाग़ात | में | 42 | एज़ाज़ वाले होंगे | और वह | मेवे | 41 | रिज़्क़ मालूम |

سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٤٤﴾ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ﴿٤٥﴾ بَيْضَآءَ لَذَّةٍ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लज़्ज़त | सफ़ेद | 45 | बहता हुआ शराब | से का | जाम | उन पर उन के आगे | दौरा होगा | 44 | तख़्त आमने सामने (जमा) |

لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٤٦﴾ لَا فِيْهَا غَوْلٌ وَّلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَعِنْدَهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन के पास | 47 | बहकी बातें करेंगे | उस से | और न वह | ख़राबी (दर्द सर) | न उस में | 46 | पीने वालों के लिए |

قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ عِيْنٌ ﴿٤٨﴾ كَاَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿٤٩﴾ فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन में से बाज़ (एक) | पस रुख़ करेगा | 49 | पोशीदा रखे हुए | अंडे | गोया वह | 48 | बड़ी आँखों वालियां | नीची निगाहों वालियां |

عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٥٠﴾ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ اِنِّىْ كَانَ لِىْ قَرِيْنٌ ﴿٥١﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 51 | एक हमनशीन | मेरा | था | बेशक मैं | उन में से | एक कहने वाला | कहेगा | 50 | बाहम सवाल करते हुए | बाज़ पर (दूसरे की तरफ़) |

يَّقُوْلُ ءَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِيْنَ ﴿٥٢﴾ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हड्डियां | मिट्टी | और हो गए | हम मर गए | क्या जब | 52 | सच्चे जानने वाले | से | क्या तू | वह कहता था |

ءَاِنَّا لَمَدِيْنُوْنَ ﴿٥٣﴾ قَالَ هَلْ اَنْتُمْ مُّطَّلِعُوْنَ ﴿٥٤﴾ فَاطَّلَعَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो वह झांकेगा | 54 | झांकने वाले हो | तुम | क्या | वह कहने लगा | 53 | अलबत्ता बदला दिए जाएंगे | क्या हम |

فَرَاٰهُ فِىْ سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ﴿٥٥﴾ قَالَ تَاللّٰهِ اِنْ كِدْتَّ لَتُرْدِيْنِ ﴿٥٦﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 56 | कि तू मुझे हलाक कर डाले | तो क़रीब था | अल्लाह की क़सम | वह कहेगा | 55 | दोज़ख़ | दरमियान | में | तो उसे देखेगा |

وَلَوْ لَا نِعْمَةُ رَبِّىْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٥٧﴾ اَفَمَا نَحْنُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या पस नहीं हम | 57 | हाज़िर किए जाने वाले | से | तो मैं ज़रूर होता | मेरा रब | नेमत | और अगर न |

بِمَيِّتِيْنَ ﴿٥٨﴾ اِلَّا مَوْتَتَنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿٥٩﴾ اِنَّ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | 59 | अ़ज़ाब दिए जाने वालों में से | हम | और नहीं | पहली | हमारी मौत | सिवाए | 58 | मरने वालों में से |

هٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٠﴾ لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ﴿٦١﴾ اَذٰلِكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या यह | 61 | अमल करने वाले | पस चाहिए ज़रूर अ़मल करें | इस जैसी (नेमत) के लिए | 60 | कामयाबी अ़ज़ीम | अलबत्ता वह | यह |

خَيْرٌ نُّزُلًا اَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّوْمِ ﴿٦٢﴾ اِنَّا جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً لِّلظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٣﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 63 | ज़ालिमों के लिए | एक आजमाइश | हम ने उस को बनाया | बेशक हम | 62 | थोहर का दरख़्त | या | ज़ियाफ़त | बेहतर |

اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْۤ اَصْلِ الْجَحِيْمِ ﴿٦٤﴾ طَلْعُهَا كَاَنَّهٗ رُءُوْسُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सर (जमा) | गोया कि वह | उस का खोशा | 64 | जहन्नम | जड़ | में | वह निकलता है | एक दरख़्त | बेशक वह |

الشَّيٰطِيْنِ ﴿٦٥﴾ فَاِنَّهُمْ لَاٰكِلُوْنَ مِنْهَا فَمَالِئُوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿٦٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 66 | पेट (जमा) | उस से | सो भरने वाले | उस से | खाने वाले हैं | पस बेशक वह | 65 | शैतानों |

ثُمَّ اِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿٦٧﴾ ثُمَّ اِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَاِلَى

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता तरफ़ | उन की वापसी | बेशक | फिर | 67 | खौलता हुआ पानी | से | मिला मिला कर | उस पर | उन के लिए | बेशक | फिर |

الْجَحِيْمِ ﴿٦٨﴾ اِنَّهُمْ اَلْفَوْا اٰبَآءَهُمْ ضَآلِّيْنَ ﴿٦٩﴾ فَهُمْ عَلٰۤى اٰثٰرِهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के नक़्शे क़दम पर | सो वह | 69 | गुमराह (जमा) | अपने बाप दादा | उन्हों ने पाया | बेशक वह | 68 | जहन्नम |

يُهْرَعُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ اَكْثَرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٧١﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 71 | अगलों में से अक्सर | उन से पहले | और तहक़ीक़ गुमराह हुए | 70 | दौड़ते जाते थे |

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا فِيْهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ﴿٧٢﴾ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अन्जाम | हुआ | कैसा | सो देखें | 72 | डराने वाले | उन में | और तहक़ीक़ हम ने भेजे |

٢ ع٥٣ ٦ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٣﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٧٤﴾ وَلَقَدْ نَادٰىنَا نُوْحٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नूह (अ) | और तहक़ीक़ हमें पुकारा | 74 | ख़ास किए हुए | अल्लाह के बन्दे | मगर | 73 | जिन्हें डराया गया |

فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 76 | बड़ी | मुसीबत | से | और उस के घर वाले | और हम ने नजात दी उसे | 75 | दुआ क़ुबूल करने वाले | सो हम अलबत्ता ख़ूब |

وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبٰقِيْنَ ﴿٧٧﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿٧٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 78 | बाद में आने वाले | में | उस पर- उस का | और हम ने छोड़ा | 77 | बाक़ी रहने वाली | वह | उस की औलाद | और हम ने किया |

سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٩﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٠﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 80 | नेकोकारों | हम जज़ा देते हैं | इसी तरह | बेशक हम | 79 | सारे जहानों में | नूह (अ) | पर | सलाम हो |

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨١﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿٨٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 82 | दूसरे | हम ने ग़र्क़ कर दिया | फिर | 81 | मोमिन (जमा) | हमारे बन्दे | से | बेशक वह |

और अगर मेरे रब की नेमत न होती तो मैं जरूर (अ़ज़ाब के लिए) हाज़िर किए जाने वालों में से होता। (57)
तो क्या अब हम मरने वाले नहीं हैं? (58)
सिवाए हमारी पहली मौत (जिस से हम दो चार हो चुके) और न हम अ़जाब दिए जाने वालों में से होंगे? (59)
बेशक यही है अ़ज़ीम कामयाबी। (60)
पस इस जैसी नेमत के लिए चाहिए कि जरूर अ़मल करें अमल करने वाले। (61)
क्या यह बेहतर ज़ियाफ्त है या थोहर का दरख़्त? (62)
बेशक हम ने उस को एक फ़ितना बनाया है ज़ालिमों के लिए। (63)
बेशक वह एक दरख़्त है जहन्नम की जड़ (गहराई) में निकलता है। (64)
उस का खोशा, गोया कि वह शैतानों के सर (साँपों के फन) हैं। (65)
बेशक वह उस से खाएंगे, सो उस से पेट भरेंगे। (66)
फिर बेशक उस (खाने) पर उन के लिए खौलता हुआ पानी (पीप) मिला मिला कर (दिया जाएगा)। (67)
फिर उन की वापसी जहन्नम की तरफ़ होगी। (68)
बेशक उन्हों ने अपने बाप दादा को गुमराह पाया था। (69)
सो वह उन के नक़्शे क़दम पर दौड़ते जाते थे। (70)
और तहक़ीक़ उन से पहले गुमराह हुए थे (उन के) अगलों में से अक्सर। (71)
तहक़ीक़ हम ने उन में डराने वाले (रसूल) भेजे थे। (72)
सो आप (स) देखें कैसा हुआ उन का अन्जाम जिन्हें डराया गया था? (73)
मगर अल्लाह के ख़ास किए हुए बन्दे (बन्दगाने ख़ास का अन्जाम कितना अच्छा हुआ)। (74)
और तहक़ीक़ नूह (अ) ने हमें पुकारा, सो हम ख़ूब दुआ़ क़ुबूल करने वाले हैं। (75)
और हम ने उसे और उस के घर वालों को बड़ी मुसीबत से नजात दी। (76)
और हम ने किया उस की औलाद को बाक़ी रहने वाली। (77)
और हम ने उस का (ज़िक्रे ख़ैर) बाद में आने वालों में छोड़ा। (78)
नूह (अ) पर सलाम हो सारे जहानों में। (79)
बेशक हम इसी तरह नेकोकारों को जज़ा देते हैं। (80)
बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (81)
फिर हम ने दूसरों को ग़र्क़ कर दिया। (82)

और बेशक इब्राहीम (अ) उसी के तरीक़े पर चलने वालों में से थे। (83)
जब वह अपने रब के पास आए साफ़ दिल के साथ। (84)
(याद करो) जब उस ने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहाः तुम किस (वाहियात) चीज़ की परस्तिश करते हो? (85)
क्या तुम अल्लाह के सिवा झूट मूट के माबूद चाहते हो? (86)
सो तमाम जहानों के परवरदिगार के बारे में तुम्हारा क्या गुमान है? (87)
फिर उस ने सितारों को एक नज़र देखा। (88)
तो उस ने कहा बेशक मैं बीमार हूँ। (89)
पस वह लोग पीठ फेर कर उस से फिर गए। (90)
फिर वह उन के माबूदों में छुप कर घुस गया, फिर वह (बतौरे तमस्ख़र) कहने लगाः क्या तुम नहीं खाते? (91)
क्या हुआ तुम्हें? तमु बोलते नहीं? (92)
फिर वह पूरी क़ुव्वत से मारता हुआ उन पर जा पड़ा। (93)
फिर वह (बुत परस्त) मुतवज्जुह हुए उसकी तरफ़ दौड़ते हुए (आए)। (94)
उस ने फ़रमाया क्या तुम (उनकी) परस्तिश करते हो? जो तुम ख़ुद तराशते हो। (95)
हालांकि अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया, और जो तुम करते (बनाते) हो। (96)
उन्हों ने (एक दूसरे को) कहाः उस के लिए एक इमारत (आतिश ख़ाना) बनाओ, फिर उसे आग में डाल दो। (97)
फिर उन्हों ने उस पर दाओ करना चाहा तो हम ने उन्हें ज़ेर कर दिया। (98)
और इब्राहीम (अ) ने कहाः मैं अपने रब की तरफ़ जाने वाला हूँ, अनक़रीब वह मुझे राह दिखाएगा। (99)
ऐ मेरे रब! मुझे अ़ता फ़रमा (नेक औलाद) सालेहीन में से। (100)
पस हम ने उसे एक बुर्दबार लड़के की बशारत दी। (101)
फिर जब वह उस के साथ दौड़ने (की उम्र को) पहुँचा तो इब्राहीम (अ) ने कहा कि ऐ मेरे बेटे! बेशक मैं ख़्वाब में देखता हूँ कि मैं तुझे ज़ुबह कर रहा हूँ। अब तू देख कि तेरी क्या राए है? उस ने कहा ऐ मेरे अब्बाजान! आप को जो हुक्म किया जाता है वह करें, आप मुझे जल्द ही पाएंगे इंशाअल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा) सब्र करने वालों में से। (102)
पस जब दोनों ने हुक्मे इलाही को मान लिया, बाप ने बेटे को पेशानी के बल लिटाया। (103)
और हम ने उस को पुकारा कि ऐ इब्राहीम (अ)! (104)
तहक़ीक़ तू ने ख़्वाब को सच कर दिखाया, बेशक हम नेकोकारों को इसी तरह जज़ा दिया करते हैं। (105)
बेशक यह खुली आज़माइश (बड़ा इम्तिहान था)। (106)
और हम ने एक बड़ा ज़बीहा (क़ुरबानी को) उस का फ़िदया दिया। (107)

وقف لازم

وَاِنَّ مِنْ شِيْعَتِهٖ لَاِبْرٰهِيْمَ ﴿٨٣﴾ اِذْ جَآءَ رَبَّهٗ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 84 | साफ़ | दिल के साथ | अपना रब | जब वह आया | 83 | अलबत्ता इब्राहीम (अ) | उस के तरीक़े पर चलने वाले | से | और बेशक |

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَاذَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٨٥﴾ اَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ اللّٰهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के सिवा | माबूद | क्या झूट मूट के | 85 | तुम परस्तिश करते हो | किस चीज | और अपनी कौम | अपने बाप को | जब उस ने कहा |

تُرِيْدُوْنَ ﴿٨٦﴾ فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٧﴾ فَنَظَرَ نَظْرَةً فِى النُّجُوْمِ ﴿٨٨﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 88 | सितारे | में को | एक नज़र | फिर उस ने देखा | 87 | तमाम जहानों | रब के बारे में | तुम्हारा गुमान | सो क्या | 86 | तुम चाहते हो |

فَقَالَ اِنِّىْ سَقِيْمٌ ﴿٨٩﴾ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِيْنَ ﴿٩٠﴾ فَرَاغَ اِلٰٓى اٰلِهَتِهِمْ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के माबूदों | तरफ़-में | फिर पोशीदा घुस गया | 90 | पीठ फेर कर | उस से | पस वह फिर गए | 89 | बीमार हूँ | बेशक मैं | तो उस ने कहा |

فَقَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٩١﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُوْنَ ﴿٩٢﴾ فَرَاغَ عَلَيْهِمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | फिर जा पड़ा वह | 92 | तुम बोलते नही | क्या हुआ तुम्हें? | 91 | क्या तुम नही खाते | फिर कहने लगा |

ضَرْبًا بِالْيَمِيْنِ ﴿٩٣﴾ فَاَقْبَلُوْٓا اِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ ﴿٩٤﴾ قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या तुम परस्तिश करते हो | उस ने फ़रमाया | 94 | दौड़ते हुए | उस की तरफ़ | फिर वह मुतवज्जुह हुए | 93 | अपने दाएं हाथ (क़ुदरत) से | मारता हुआ |

مَا تَنْحِتُوْنَ ﴿٩٥﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْيَانًا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक इमारत | उस के लिए | बनाओ | उन्हों ने कहा | 96 | तुम करते हो | और जो | उस ने पैदा किया तुम्हें | हालांकि अल्लाह | 95 | जो तुम तराशते हो |

فَاَلْقُوْهُ فِى الْجَحِيْمِ ﴿٩٧﴾ فَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿٩٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 98 | नीचा | तो हम ने कर दिया उन्हें | दाओ | उस पर | फिर उन्हों ने चाहा | 97 | आग में | फिर डाल दो उसे |

وَقَالَ اِنِّىْ ذَاهِبٌ اِلٰى رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٩٩﴾ رَبِّ هَبْ لِىْ مِنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | मुझे अता फ़रमा | ऐ मेरे रब | 99 | अनक़रीब वह मुझे राह दिखाएगा | अपने रब की तरफ़ | जाने वाला हूँ | बेशक मैं | और उस (इब्राहीम) ने कहा |

الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠٠﴾ فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيْمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْىَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दौड़ने | उस के साथ | वह पहुँचा | फिर जब | 101 | बुर्दबार | एक लड़का | पस बशारत दी हम ने उसे | 100 | नेक सालेह (जमा) |

قَالَ يٰبُنَىَّ اِنِّىْٓ اَرٰى فِى الْمَنَامِ اَنِّىْٓ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तेरी राए | क्या | अब तू देख | तुझे ज़ुबह कर रहा हूँ | कि मैं | ख़्वाब | में | बेशक मैं देखता हूँ | ए मेरे बेटे | उस ने कहा |

قَالَ يٰٓاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ سَتَجِدُنِىْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | अल्लाह ने चाहा | अगर | आप जल्द ही मुझे पाएंगे | जो हुक्म आप का किया जाता है | आप करें | ऐ मेरे अब्बा जान | उस ने कहा |

الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾ فَلَمَّآ اَسْلَمَا وَتَلَّهٗ لِلْجَبِيْنِ ﴿١٠٣﴾ وَنَادَيْنٰهُ اَنْ يّٰٓاِبْرٰهِيْمُ ﴿١٠٤﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 104 | ऐ इब्राहीम (अ) | कि | और हम ने उस को पुकारा | 103 | पेशानी के बल | (बाप ने बेटे को) लिटाया | दोनों ने हुक्मे (इलाही) मान लिया | पस जब | 102 | सब्र करने वाले |

قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٠٥﴾ اِنَّ هٰذَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक यह | 105 | नेकोकारों | हम जज़ा दिया करते हैं | बेशक हम इसी तरह | ख़्वाब | तहक़ीक़ तू ने सच कर दिखाया |

لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِيْنُ ﴿١٠٦﴾ وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ عَظِيْمٍ ﴿١٠٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 107 | बड़ा | एक ज़बीहा | और हम ने उस का फ़िदया दिया | 106 | खुली | आज़माइश | अलबत्ता वह |

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٠٨﴾ سَلٰمٌ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ﴿١٠٩﴾ كَذٰلِكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इसी तरह | 109 | इब्राहीम (अ) | पर | सलाम | 108 | बाद में आने वालों में | उस पर (उस का ज़िक्र ख़ैर) | और हम ने बाक़ी रखा |

نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١١٠﴾ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١١﴾ وَبَشَّرْنٰهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम ने उसे बशारत दी | 111 | मोमिनीन | हमारे बन्दे | से | बेशक वह | 110 | नेकोकारों | हम जज़ा दिया करते हैं |

بِاِسْحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٢﴾ وَبٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اِسْحٰقَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस्हाक़ (अ) | और पर | उस पर- उस को | और हम ने बरकत नाज़िल की | 112 | सालेहीन | से | एक नबी | इस्हाक़ (अ) की |

٣ ع ٣٩ ٧

وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِيْنٌ ﴿١١٣﴾ وَلَقَدْ مَنَنَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम ने एहसान किया | और तहक़ीक़ अलबत्ता | 113 | सरीह | अपनी जान पर | और ज़ुल्म करने वाला | नेकोकार | उन दोनों की औलाद | और से में |

عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١١٤﴾ وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿١١٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 115 | बड़ा | ग़म | से | और उन की क़ौम | और उन दोनों को नजात दी | 114 | और हारून (अ) | मूसा (अ) पर |

وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٦﴾ وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ﴿١١٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 117 | वाज़ेह | किताब | और हम ने उन दोनों को दी | 116 | ग़ालिब (जमा) | वही | तो वह रहे | और हम ने मदद की उन की |

وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١١٨﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन दोनों पर (उन का ज़िक्रे ख़ैर) | और हम ने बाक़ी रखा | 118 | सीधा | रास्ता | और हम ने उन दोनों को हिदायत दी |

فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿١١٩﴾ سَلٰمٌ عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٠﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम जज़ा देते हैं | बेशक हम इसी तरह | 120 | और हारून (अ) | मूसा (अ) पर | सलाम | 119 | बाद में आने वालों में |

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢١﴾ اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٢﴾ وَاِنَّ اِلْيَاسَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इल्यास (अ) | और बेशक | 122 | मोमिनीन | हमारे बन्दे | से | बेशक वह दोनों | 121 | नेकोकारों |

لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٢٣﴾ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٢٤﴾ اَتَدْعُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या तुम पुकारते हो | 124 | क्या तुम नहीं डरते | अपनी क़ौम को | जब उस ने कहा | 123 | रसूलों | अलबत्ता से |

بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخٰلِقِيْنَ ﴿١٢٥﴾ اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ اٰبَآئِكُمُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे बाप दादा | और रब | तुम्हारा रब | अल्लाह | 125 | पैदा करने वाला (जमा) | सब से बेहतर | और तुम छोड़ देते हो | बअ्ल |

الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٢٦﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٢٧﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के बन्दे | सिवाए | 127 | वह ज़रूर हाज़िर किए जाएंगे | तो बेशक वह | पस उन्हों ने झुटलाया | 126 | पहले |

الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٢٨﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٢٩﴾ سَلٰمٌ عَلٰٓى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | सलाम | 129 | बाद में आने वालों में | और हम ने बाक़ी रखा उस पर (उस का ज़िक्रे ख़ैर) | 128 | मुख़्लिस (जमा) |

اِلْ يَاسِيْنَ ﴿١٣٠﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣١﴾ اِنَّهٗ مِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | बेशक वह | 131 | नेकोकारों | जज़ा दिया करते हैं | बेशक हम इसी तरह | 130 | इलयासीन (इल्यास अ) |

عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٢﴾ وَاِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٣٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 133 | रसूल (जमा) | अलबत्ता- से | लूत (अ) | और बेशक | 132 | मोमिनीन | हमारे बन्दे |

और हम ने उसका ज़िक्रे ख़ैर बाद में आने वालों में बाक़ी रखा (108)
सलाम हो इब्राहीम (अ) पर। (109)
इसी तरह हम नेकोकारों को जज़ा दिया करते हैं। (110)
बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से था। (111)
और हम ने उसे बशारत दी इस्हाक़ (अ) की (कि वह) एक नबी सालेहीन में से होगा। (112)
और हम ने उस पर बरकत नाज़िल की और इस्हाक़ (अ) पर, और उन दोनों की औलाद में नेकोकार (भी हैं) और अपनी जान पर सरीह ज़ुल्म करने वाले (भी)। (113)
और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) और हारून (अ) पर एहसान किया। (114)
और हम ने उन दोनों को और उन की क़ौम को बड़े ग़म (फ़िरऔन के मज़ालिम) से नजात दी। (115)
और हम ने उन की मदद की, तो वही ग़ालिब रहे। (116)
और हम ने उन दोनों को वाज़ेह किताब दी। (117)
और उन दोनों को सीधे रास्ते की हिदायत दी। (118)
और हम ने उन दोनों का ज़िक्रे ख़ैर बाद में आने वालों में बाक़ी रखा। (119)
सलाम हो मूसा (अ) और हारून (अ) पर। (120)
बेशक हम इसी तरह नेकोकारों को जज़ा देते हैं। (121)
बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (122)
और बेशक इल्यास (अ) रसूलों में से थे। (123)
(याद करो) जब उस ने अपनी क़ौम से कहा क्या तुम (अल्लाह से) नहीं डरते? (124)
क्या तुम बअल (बुत) को पुकारते हो? और तुम सब से बेहतर पैदा करने वाले को छोड़ते हो। (125)
(यानी) अल्लाह को (जो) तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे पहले बाप दादा का (भी) रब है। (126)
पस उन्हों ने उसे झुटलाया तो बेशक वह ज़रूर हाजिर किए जाएंगे (पकड़े जाएंगे)। (127)
अल्लाह के मुख्लिस (खास बन्दों) के सिवा। (128)
और हम ने उस का ज़िक्रे ख़ैर बाक़ी रखा बाद में आने वालों में। (129)
सलाम हो इल्यास (अ) पर। (130)
बेशक हम इसी तरह नेकोकारों को जज़ा दिया करते हैं। (131)
बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (132)
और बेशक लूत (अ) रसूलों में से थे। (133)

(याद करो) जब हम ने नजात दी उसे और उस के सब घर वालों को। (134)
पीछे रह जाने वालों में से एक बुढ़िया के सिवा। (135)
फिर हम ने और सब को हलाक किया। (136)
और बेशक तुम सुब्ह होते और रात में उन पर (उन की बस्तियों से) गुज़रते हो (137)
तो क्या तुम अक्ल से काम नहीं लेते? (138)
और बेशक यूनुस (अ) अलबत्ता रसूलों में से थे। (139)
जब वह भाग कर भरी हुई कश्ती (के पास) गए (140)
तो उन्हों ने कुरआ डाला, सो वह (कश्ती से) धकेले गए। (141)
फिर उन्हें मछली ने निगल लिया और वह (अपने आप को) मलामत कर रहे थे। (142)
फिर अगर वह तस्बीह करने वालों में से न होते। (143)
तो वह उस के पेट में क़ियामत के दिन तक रहते। (144)
फिर हम ने उन्हें चटयल मैदान में फेंक दिया और वह बीमार थे। (145)
और हम ने उगाया उस पर एक बेलदार दरख़्त। (146)
और हम ने उसे एक लाख या उस से ज़ियादा लोगों की तरफ़ भेजा। (147)
सो वह लोग ईमान लाए और हम ने उन्हें एक मुद्दत तक के लिए फ़ाइदा उठाने दिया। (148)
पस आप (स) उन से पूछें क्या तेरे रब के लिए बेटियां हैं और उन के लिए बेटे? (149)
क्या हम ने फ़रिश्तों को औरत ज़ात पैदा किया है? और वह देख रहे थे? (150)
याद रखो, बेशक वह अपनी बुहतान तराज़ी से कहते हैं। (151)
(कि) अल्लाह साहिबे औलाद है, और वह बेशक झूटे हैं। (152)
क्या उस ने बेटियों को बेटों पर पसंद किया? (153)
तुम्हें क्या हो गया है? तुम कैसा फ़ैसला करते हो? (154)
तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (155)
क्या तुम्हारे पास कोई खुली सनद है? (156)
तो अपनी वह किताब ले आओ अगर तुम सच्चे हो। (157)
और उन्हों ने उस के और जिन्नात के दरमियान एक रिश्ता ठहराया, और तहक़ीक़ जान लिया जिन्नात ने के बेशक वह (अज़ाब में) हाज़िर (गिरफ़्तार) किए जाएंगे। (158)
अल्लाह उस से पाक है जो वह बयान करते हैं। (159)
सिवाए अल्लाह के चुने हुए बन्दे। (160)

اِذْ نَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٣٤﴾ اِلَّا عَجُوْزًا فِى الْغٰبِرِيْنَ ﴿١٣٥﴾ ثُمَّ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर | 135 | पीछे रह जाने वाले | में | एक बुढ़िया | सिवाए | 134 | सब | और उस के घर वाले | हम ने उसे नजात दी | जब |

دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿١٣٦﴾ وَاِنَّكُمْ لَتَمُرُّوْنَ عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِيْنَ ﴿١٣٧﴾ وَبِالَّيْلِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और रात में | 137 | सुब्ह करते हुए (सुबह होते) | उन पर | अलबत्ता गुज़रते हो | और बेशक तुम | 136 | औरों को | हम ने हलाक किया |

اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٣٨﴾ وَاِنَّ يُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٣٩﴾ اِذْ اَبَقَ اِلَى ع ٢٥/٨

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ | भाग गए वह | जब | 139 | रसूलों | अलबत्ता से | यूनुस (अ) | और बेशक | 138 | तो क्या तुम अक्ल से काम नहीं लेते |

الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿١٤٠﴾ فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ ﴿١٤١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 141 | धकेले गए | से | सो वह हुआ | तो कुरआ डाला | 140 | भरी हुई | कश्ती |

فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿١٤٢﴾ فَلَوْلَآ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ ﴿١٤٣﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 143 | तस्बीह करने वाले | से | होता | यह कि वह | फिर अगर न | 142 | मलामत करने वाला | और वह | मछली | फिर उसे निगल लिया |

لَلَبِثَ فِىْ بَطْنِهٖٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤٤﴾ فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ

الصّٰفّٰت

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह | चटयल मैदान में | फिर हम ने उसे फेंक दिया | 144 | दोबारा जी उठने के दिन (रोज़े हश्र) | तक | उस के पेट में | अलबत्ता रहता |

سَقِيْمٌ ﴿١٤٥﴾ وَاَنْۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِيْنٍ ﴿١٤٦﴾ وَاَرْسَلْنٰهُ اِلٰى

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ | और हम ने भेजा उस को | 146 | बेलदार | से | दरख़्त | उस पर | और हम ने उगाया | 145 | बीमार |

مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ يَزِيْدُوْنَ ﴿١٤٧﴾ فَاٰمَنُوْا فَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿١٤٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 148 | एक मुद्दत तक | तो हम ने उन्हें फ़ाइदा उठाने दिया | सो वह ईमान लाए | 147 | उस से ज़ियादा | या | एक लाख |

فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُوْنَ ﴿١٤٩﴾ اَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓئِكَةَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़रिश्ते | हम ने पैदा किया | क्या | 149 | बेटे | और उन के लिए | बेटियां | क्या तेरे रब के लिए | पस पूछें उन से |

اِنَاثًا وَّهُمْ شٰهِدُوْنَ ﴿١٥٠﴾ اَلَآ اِنَّهُمْ مِّنْ اِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٥١﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 151 | अलबत्ता कहते हैं | अपनी बुहतान तराज़ी | से | बेशक वह | याद रखो | 150 | देख रहे थे | और वह | औरत |

وَلَدَ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٥٢﴾ اَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِيْنَ ﴿١٥٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 153 | बेटों पर | बेटियां | क्या उस ने पसंद किया | 152 | झूटे | और बेशक वह | अल्लाह साहिबे औलाद |

مَا لَكُمْ ۣ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿١٥٤﴾ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٥٥﴾ اَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई सनद | तुम्हारे पास | क्या | 155 | तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? | 154 | तुम फ़ैसला करते हो | कैसा | तुम्हें क्या हो गया |

مُّبِيْنٌ ﴿١٥٦﴾ فَاْتُوْا بِكِتٰبِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٥٧﴾ وَجَعَلُوْا بَيْنَهٗ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के दरमियान | और उन्हों ने ठहराया | 157 | सच्चे | तुम हो | अगर | अपनी किताब | तो ले आओ | 156 | खुली |

وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ۭ وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٥٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 158 | हाज़िर किए जाएंगे | बेशक वह | जिन्नात | और तहक़ीक़ जान लिया | एक रिश्ता | जिन्नात | और दरमियान |

سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٥٩﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٦٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 160 | ख़ास किए हुए (चुने हुए) | अल्लाह के बन्दे | मगर | 159 | वह बयान करते हैं | उस से जो | पाक है अल्लाह |

فَاِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ ﴿١٦١﴾ مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ ﴿١٦٢﴾ اِلَّا مَنْ هُوَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो-वह | सिवाए | 162 | उस के खिलाफ़ बहकाने वाले | नहीं हो तुम | 161 | तुम परस्तिश करते हो | और जो | तो बेशक तुम |

صَالِ الْجَحِيْمِ ﴿١٦٣﴾ وَمَا مِنَّآ اِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿١٦٤﴾ وَّاِنَّا لَنَحْنُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता हम | और बेशक हम | 164 | एक मुअय्यन दर्जा | मगर उस के लिए | हम में से | और नहीं | 163 | जहन्नम | जाने वाला |

الصَّآفُّوْنَ ﴿١٦٥﴾ وَاِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُوْنَ ﴿١٦٦﴾ وَاِنْ كَانُوْا لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٦٧﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 167 | कहा करते | वह थे | और बेशक | 166 | तस्बीह करने वाले | अलबत्ता हम | और बेशक हम | 165 | सफ़ बस्ता होने वाले |

لَوْ اَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٦٨﴾ لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٦٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 169 | ख़ास किए (मुंतख़िब) | अल्लाह के बन्दे | ज़रूर हम होते | 168 | पहले लोग | से | कोई नसीहत हमारे पास | अगर होती |

فَكَفَرُوْا بِهٖ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٧٠﴾ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने बन्दों के लिए | हमारा वादा | और पहले सादिर हो चुका है | 170 | वह जान लेंगे | तो अनक़रीब | उस का | फिर उन्हों ने इन्कार किया |

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧١﴾ اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ ﴿١٧٢﴾ وَاِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता वही | हमारा लशकर | और बेशक | 172 | फ़तहमन्द | अलबत्ता वही | बेशक वह | 171 | रसूलों |

الْغٰلِبُوْنَ ﴿١٧٣﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿١٧٤﴾ وَّاَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٥﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 175 | वह देख लेंगे | पस अनक़रीब | और उन्हें देखते रहें | 174 | एक वक़्त तक | तक | उन से | पस एराज़ करें | 173 | ग़ालिब (जमा) |

اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿١٧٦﴾ فَاِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَآءَ صَبَاحُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सुबह | तो बुरी | उन के मैदान में | वह नाज़िल होगा | तो जब | 176 | वह जल्दी कर रहे हैं | तो क्या हमारे अज़ाब के लिए |

الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٧﴾ وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿١٧٨﴾ وَّاَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٩﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 179 | वह देख लेंगे | पस अनक़रीब | और देखते रहें | 178 | एक मुद्दत | तक | उन से | और एराज़ करें | 177 | जिन का डराया जा चुका है |

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٨٠﴾ وَسَلٰمٌ عَلَى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | और सलाम | 180 | वह बयान करते हैं | उस से जो | इज़्ज़त वाला रब | तुम्हारा रब | पाक है |

ع ٥ ٩٩ ٩ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٨١﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٢﴾

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 182 | तमाम जहानों का रब | और तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए | 181 | रसूलों |

## آيَاتُهَا ٨٨ ❀ (٣٨) سُوْرَةُ صٓ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٥

रुकूआत 5 (38) सूरह साद आयात 88

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِى الذِّكْرِ ﴿١﴾ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ﴿٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | और मुख़ालिफ़त | घमंड में | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | बल्कि | 1 | नसीहत देने वाला | कुरआन की कसम | साद |

كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِيْنَ مَنَاصٍ ﴿٣﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | छुटकारा | वक़्त | और न था | तो वह फ़र्याद करने लगे | उम्मतें | उन से क़ब्ल | हम ने हलाक कर दी | कितनी ही |

तो बेशक तुम और वह जिन की तुम परस्तिश करते हो। (161) तुम नहीं बहका सकते उस (अल्लाह) के ख़िलाफ़ (किसी को)। (162) उस के सिवा जो जहन्नम में जाने वाला है। (163) और (फ़रिश्तों ने कहा) हम में से कोई भी ऐसा नहीं जिस का एक मुअय्यन दर्जा न हो। (164) और बेशक हम ही सफ बस्ता रहने वाले हैं। (165) और बेशक हम ही तस्बीह करने वाले हैं। (166) और बेशक वह (कुफ़्फ़ारे मक्का) कहा करते थे। (167) अगर हमारे पास होती पहले लोगों की कोई (किताबे) नसीहत। (168) तो हम ज़रूर अल्लाह के मुंतख़िब बन्दों में से होते। (169) फिर उन्हों ने उस का इन्कार किया तो वह अनक़रीब (उस का अन्जाम) जान लेंगे। (170) और हमारा वादा अपने बन्दों (यानी) रसूलों के लिए पहले (ही) सादिर हो चुका है। (171) बेशक वही फ़तह मन्द होंगे। (172) और बेशक अलबत्ता हमारा लशकर ही ग़ालिब रहेगा। (173) पस आप (स) एक वक्त तक (थोड़ा अर्सा) उन से एराज़ करें। (174) और उन्हें देखते रहें, पस अनक़रीब वह (अपना अन्जाम) देख लेंगे। (175) तो क्या वह हमारे अज़ाब के लिए जल्दी कर रहे हैं? (176) तो जब वह उन के मैदान में नाज़िल होगा तो उन की सुबह बुरी होगी जिन्हें डराया जा चुका है। (177) और आप (स) एक मुद्दत तक (थोड़ा अर्सा) उन से एराज़ करें। (178) और देखते रहें, पस अनक़रीब वह (अपना अन्जाम) देख लेंगे। (179) पाक है तुम्हारा रब इज़्ज़त वाला रब, उस से जो वह बयान करते हैं। (180) और सलाम हो रसूलों पर। (181) और तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए जो तमाम जहानों का रब है। (182)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

साद। नसीहत देने वाले कुरआन की क़सम। (1) (आप की दावत बर हक़ है) बल्कि जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह घमंड और मुख़ालिफ़त में हैं। (2) कितनी ही उम्मतें उन से क़ब्ल हम ने हलाक कर दीं तो वह फ़र्याद करने लगे और (अब) छुटकारे का वक़्त न था। (3)

और उन्हों ने तअ़ज्जुब किया कि उन के पास उन में से एक डराने वाला आया, और काफ़िरों ने कहाः यह जादूगर है, झूटा है। (4)
क्या उस ने सारे माबूदों को बना दिया है एक माबूद, बेशक यह तो एक बड़ी अ़जीब बात है। (5)
और उन के कई सरदार यह कहते हुए चल पड़े कि चलो और अपने माबूदों पर जमे रहो, बेशक यह सोची समझी स्कीम है। (6)
हम ने पिछले मजहब में ऐसी (बात) नहीं सुनी, यह तो महज़ मन घड़त है। (7)
क्या हम में से उसी परे अल्लाह का कलाम नाज़िल क्या गया?
(हाँ) बल्कि वह शक में हैं मेरी नसीहत से, बल्कि (अभी) उन्हों ने मेरा अ़ज़ाब नहीं चखा। (8)
क्या तुम्हारे रब की रहमत के ख़ज़ाने उन के पास हैं? जो ग़ालिब, बहुत अ़ता करने वाला है। (9)
क्या उन के लिए है बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की और जो उन के दरमियान है? तो वह (आस्मानों पर) चढ़ जाएं रस्सियां तान कर। (10)
शिकस्त खूर्दा गिरोहों में से यह भी एक लशकर है। (11)
उन से पहले झुटलाया क़ौमे नूह (अ) ने और आद और मीख़ों वाले फ़िरऔन ने। (12)
और समूद और क़ौमे लूत, और अयका वालों ने, गिरोह वह थे। (13)
उन सब ने रसूलों को झुटलाया, पस (उन पर) अ़ज़ाब आ पड़ा। (14)
और इन्तिज़ार नहीं करते यह लोग मगर एक चिंघाड़ का, जिस में कोई ढील (गुन्जाइश) न होगी। (15)
और उन्हों ने (मज़ाक़ के तौर पर) कहा कि ऐ हमारे रबः हमें जल्दी दे हमारा हिस्सा रोज़े हिसाब से पहले (16)
जो वह कहते हैं उस पर आप (स) सब्र करें, और याद करें हमारे बन्दे दाऊद (अ) कुव्वत वाले को, बेशक वह खूब रुजूअ़ करने वाला था। (17)
बेशक हम ने पहाड़ उस के साथ मुसख़्ख़र कर दिए थे, वह सुब्ह ओ शाम तस्बीह करते थे। (18)

وَعَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह जादूगर | काफ़िर (जमा) | और कहा | उन में से | एक डराने वाला | उन के पास आया | कि | और उन्हों ने तअ़ज्जुब किया |

كَذَّابٌ ﴿٤﴾ اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ﴿٥﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | बड़ी अजीब | एक शै (बात) | बेशक यह | एक | माबूद | सारे माबूदों | क्या उस ने बना दिया | 4 | झूटा |

وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَاصْبِرُوْا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक यह | अपने माबूदों पर | और जमे रहो | चलो | कि | उन के | सरदार | और चल पड़े |

لَشَيْءٌ يُّرَادُ ﴿٦﴾ مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِي الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ ۚ اِنْ هٰذَآ اِلَّا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर-महज | यह | नही | पिछला | मज़हब | में | ऐसी | हम ने नही सुना | 6 | इरादा की हुई (मतलब की) | कोई शै (बात) |

اخْتِلَاقٌ ﴿٧﴾ ءَاُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْۢ بَيْنِنَا ۭ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शक में | वह | बल्कि | हम में से | ज़िक्र (कलाम) | उस पर | क्या नाज़िल किया गया | 7 | मन घड़त |

مِّنْ ذِكْرِيْ ۚ بَلْ لَّمَّا يَذُوْقُوْا عَذَابِ ﴿٨﴾ اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़ज़ाने | उन के पास | क्या | 8 | मेरा अज़ाब | चखा उन्हों ने | नहीं | बल्कि | मेरी नसीहत से |

رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيْزِ الْوَهَّابِ ﴿٩﴾ اَمْ لَهُمْ مُّلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और ज़मीन | बादशाहत आस्मानों | क्या उन के लिए | 9 | बहुत अ़ता करने वाला | ग़ालिब | तुम्हारे रब की रहमत |

وَمَا بَيْنَهُمَا ۣ فَلْيَرْتَقُوْا فِي الْاَسْبَابِ ﴿١٠﴾ جُنْدٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُوْمٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शिकस्त खूर्दा | यहां | जो | एक लशकर | 10 | रस्सियों में (रस्सियां तान कर) | तो वह चढ़ जाएं | और जो उन दोनों के दरमियान |

مِّنَ الْاَحْزَابِ ﴿١١﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ ذُو الْاَوْتَادِ ﴿١٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12 | कीलों वाला | और फ़िरऔन | और आद | क़ौमे नूह | उन से पहले | झुटलाया | 11 | गिरोहों में से |

وَثَمُوْدُ وَقَوْمُ لُوْطٍ وَّاَصْحٰبُ لْئَيْكَةِ ۭ اُولٰٓئِكَ الْاَحْزَابُ ﴿١٣﴾ اِنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नही | 13 | गिरोह | वह थे | और अयका वाले | और क़ौमे लूत | और समूद |

كُلٌّ اِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ﴿١٤﴾ وَمَا يَنْظُرُ هٰٓؤُلَآءِ ع ١٤ ١٠

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह लोग | और इन्तिज़ार नही करते | 14 | अ़ज़ाब | पस आ पड़ा | रसूलों | झुटलाया | मगर | सब |

اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً مَّا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ﴿١٥﴾ وَقَالُوْا رَبَّنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ हमारे रब | और उन्हों ने कहा | 15 | ढील | कोई | जिस के लिए नही | एक | चिंघाड़ | मगर |

عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ﴿١٦﴾ اِصْبِرْ عَلٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस पर | आप (स) सब्र करें | 16 | रोज़े हिसाब | पहले | हमारा हिस्सा | हमें | जल्दी दे |

مَا يَقُوْلُوْنَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوٗدَ ذَا الْاَيْدِ ۚ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ﴿١٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 17 | खूब रुजूअ करने वाला | बेशक वह | कुव्वत वाला | दाऊद (अ) | हमारे बन्दे | और याद करें | जो वह कहते हैं |

اِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِشْرَاقِ ﴿١٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | और सुबह के वक्त | शाम के वक्त | वह तस्बीह करते थे | उस के साथ | पहाड़ | बेशक हम ने मुसख़्ख़र कर दिए |

وَالطَّيْرَ مَحْشُوْرَةً ۭ كُلٌّ لَّهٗٓ اَوَّابٌ ﴿١٩﴾ وَشَدَدْنَا مُلْكَهٗ وَاٰتَيْنٰهُ الْحِكْمَةَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हिक्मत | और हम ने उस को दी | उस की बादशाहत | और हम ने मजबूत की | 19 | रुजूअ़ करने वाले | सब उस की तरफ़ | इकटठे किए हुए | और परिन्दे |

وقف لازم
وَفَصْلَ الْخِطَابِ ﴿٢٠﴾ وَهَلْ اَتٰىكَ نَبَؤُا الْخَصْمِ ۘ اِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ﴿٢١﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 21 | मेहराब | वह दीवार फांद कर आए | जब | खबर झगड़ने वाले | आप के पास आई (पहुँची) | और क्या | 20 | खिताब | और फ़ैसला कुन |

اِذْ دَخَلُوْا عَلٰى دَاوٗدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوْا لَا تَخَفْ ۚ خَصْمٰنِ بَغٰى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज्यादती की | हम दो झगड़ने वाले | ख़ौफ़ न खाओ | उन्हों ने कहा | उन से | तो वह घबराया | दाऊद (अ) | पर पास | जब वह दाख़िल हुए |

بَعْضُنَا عَلٰى بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَآ اِلٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ | और हमारी रहनुमाई करें | और ज़ियादती (बेइन्साफ़ी न) करें | हक़ के साथ | हमारे दरमियान | तो आप फ़ैसला कर दें | दूसरे पर | हम में से एक |

سَوَآءِ الصِّرَاطِ ﴿٢٢﴾ اِنَّ هٰذَآ اَخِيْ ۣ لَهٗ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ نَعْجَةً وَّلِيَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और मेरे पास | दुंबियां | निन्यानवे (99) | उस के पास | मेरा भाई | बेशक यह | 22 | रास्ता | सीधा |

نَعْجَةٌ وَّاحِدَةٌ ۣ فَقَالَ اَكْفِلْنِيْهَا وَعَزَّنِيْ فِي الْخِطَابِ ﴿٢٣﴾ قَالَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| (दाऊद अ ने) कहा | 23 | गुफ्तगू में | और उस ने मुझे दबाया | वह मेरे हवाले कर दे | पस उस ने कहा | एक | दुंबी |

لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ اِلٰى نِعَاجِهٖ ۭ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْخُلَطَآءِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भागीदार | से | अक्सर | और बेशक | अपनी दुंबियां | तरफ़ साथ | तेरी दुंबी | मांगने से | यकीनन उस ने जुल्म किया |

لَيَبْغِيْ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने अमल किए दुरुस्त | जो ईमान लाए | सिवाए | बाज | पर | उन में से बाज़ | ज़ियादती किया करते है |

وَقَلِيْلٌ مَّا هُمْ ۭ وَظَنَّ دَاوٗدُ اَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَخَرَّ رَاكِعًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| झुक कर | और गिर गया | अपना रब | तो उस ने मग्फ़िरत तलब की | हम ने उसे आज़माया है | कि कुछ | दाऊद (अ) | और खयाल किया | वह ऐसे | और बहुत कम |

السجدة ١٠
وَاَنَابَ ﴿٢٤﴾ فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ۭ وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अच्छा | अलबत्ता कुर्ब | हमारे पास | उस के लिए | और बेशक | यह | उस की | पस हम ने बख़्श दी | 24 | और उस ने रुजूअ़ किया |

مَاٰبٍ ﴿٢٥﴾ يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِي الْاَرْضِ فَاحْكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सो तू फ़ैसला कर | ज़मीन में | नाइब | हम ने तुझे बनाया | बेशक हम ने | ऐ दाऊद (अ) | 25 | ठिकाना |

بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह का रास्ता | से | कि वह तुझे भटका दे | ख़ाहिश | और न पैरवी कर | हक़ के साथ | लोगों के दरमियान |

اِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا نَسُوْا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने भुला दिया | उस पर कि | शदीद | अ़ज़ाब | उन के लिए | अल्लाह का रास्ता | से | भटकते हैं | जो लोग | बेशक |

ع ١٢ ٢ ١١
يَوْمَ الْحِسَابِ ﴿٢٦﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बातिल | उन के दरमियान | और जो | और ज़मीन | आस्मान | और नहीं पैदा किया हम ने | 26 | रोज़े हिसाब |

ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنَ النَّارِ ﴿٢٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 27 | आग | से | उन के लिए जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | पस ख़राबी है | जिन लोगों ने कुफ़्र किया | गुमान | यह |

और इकटठे किए हुए परिन्दे (भी उस के मुसख़्ख़र थे) सब उस की तरफ़ रुजूअ़ करने वाले थे। (19) और हम ने उस की बादशाहत मज़बूत की और उस को हिक्मत दी और फ़ैसला कुन ख़िताब। (20) और क्या आप (स) के पास झगड़ने वालों (अहले मुक़द्दमा) की ख़बर पहुँची? जब वह दीवार फांद कर मेहराब में आ गए (21) जब वह दाख़िल हुए दाऊद (अ) के पास तो वह उन से घबरागए। उन लोगों ने कहाः डरो नहीं, हम दो झगड़ने वाले (अहले मुक़द्दमा) है, हम में से एक ने दूसरे पर ज़ियादती की है तो आप हमारे दरमियान फ़ैसला कर दें हक के साथ, और बेइन्साफी न करें, और सीधे रास्ते की तरफ़ हमारी रहनुमाई करें। (22) बेशक मेरे इस भाई के पास निन्यानवे (99) दुंबियां हैं और मेरे पास (सिर्फ़) एक दुंबी है, पस उस ने कहा कि वह (भी) मेरे हवाले कर दे, और उस ने मुझे गुफ्तगू में दबाया है। (23) दाऊद (अ) ने कहाः सचमुच उस ने तेरी दुंबी मांग कर जुल्म किया है (कि) अपनी दुंबियों के साथ मिलाले, और बेशक अक्सर साथी एक दूसरे पर ज़ियादती किया करते हैं सिवाए उन के जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए और (ऐसे लोग) बहुत कम हैं, और दाऊद (अ) ने ख़याल किया कि हम ने कुछ उसे आजमाया है तो उस ने अपने रब से मग्फ़िरत तलब की, और झुक कर (सिज्दे में) गिर गया। (24) पस हम ने बख़्श दी उस की यह (लग़्ज़िश), और बेशक उस के लिए हमारे पास कुर्ब और अच्छा ठिकाना है। (25) ऐ दाऊद (अ)! बेशक हम ने तुझे बनाया ज़मीन (मुल्क) में नाइब, सो तू लोगों के दरमियान हक (इंसाफ़) के साथ फ़ैसला कर और (अपनी) ख़ाहिश की पैरवी न कर कि वह तुझे भटका दे अल्लाह के रास्ते से, बेशक जो लोग अल्लाह के रास्ते से भटकते हैं उन के लिए शदीद अज़ाब है इस लिए कि उन्हों ने रोज़े हिसाब को भुला दिया। (26) और हम ने आस्मान और ज़मीन और जो उन के दरमियान है बातिल (बेकार ख़ाली अज़ हिक्मत) नहीं पैदा किया, यह गुमान है (उन लोगों का) जिन्हों ने कुफ़्र किया, पस ख़राबी है काफ़िरों के लिए आग से। (27)

क्या हम कर देंगे? उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए उन लोगों की तरह जो जमीन में फ़साद फैलाते हैं? क्या हम परहेज़गारों को कर देंगे फ़ाजिरों (बदकिरदारों) की तरह? (28)
हम ने आप की तरफ़ एक मुबारक किताब नाजिल की ताकि वह उस की आयात पर गौर करें, और ताकि अ़क़्ल वाले नसीहत पकड़ें। (29)
और हम ने दाऊद (अ) को सुलेमान (अ) अ़ता किया, बहुत अच्छा बन्दा, बेशक वह (अल्लाह की तरफ़) रुजूअ़ करने वाला था। (30)
(वह वक्त याद करो) जब शाम के वक्त उस के सामने पेश किए गए असील, उम्दा घोड़े। (31)
तो उस ने कहाः बेशक मैं ने अपने रब की याद की वजह से माल की मुहब्बत को दोस्त रखा, यहां तक कि (घोड़े) छुप गए (दूरी के) परदे में। (32)
उन (घोड़ों) को मेरे सामने फेर लाओ, फिर वह उन की पिंडलियों और गर्दनों पर हाथ फेरने लगा। (33)
और अलबत्ता हम ने सुलेमान (अ) की आज़माइश की और हम ने उस के तख़्त पर एक धड़ डाला, फिर उस ने (अल्लाह की तरफ़) रुजूअ़ किया। (34)
उस ने कहा ऐ मेरे रब! तू मुझे बख़्श दे और मुझे ऐसी सलतनत अ़ता फ़रमा दे जो मेरे बाद किसी को सज़ावार (मयस्सर) न हो, बेशक तू ही अता करने वाला है। (35)
फिर हम ने मुसख़्ख़र कर दिया उस के लिए हवा को, जहां वह पहुँचना चाहता, वह उस के हुक्म से नर्म नर्म चलती। (36)
और तमाम जिन्नात (ताबे कर दिए) इमारत बनाने वाले और ग़ोता मारने वाले। (37)
और दूसरे ज़न्जीरों में जकड़े हुए। (38)
यह हमारा अ़तिया है, अब तू एहसान कर या रख छोड़ हिसाब के बग़ैर (तुम से कुछ हिसाब न होगा)। (39)
और बेशक उस के लिए हमारे पास अलबत्ता कुर्ब और अच्छा ठिकाना है। (40)
और आप (स) याद करें हमारे बन्दे अय्यूब (अ) को जब उस ने अपने रब को पुकारा कि मुझे शैतान ने ईज़ा और दुख पहुँचाया है। (41)
(हम ने फ़रमाया) जमीन पर मार अपना पाऊँ, यह (लो) गुस्ल के लिए ठंडा और पीने के लिए (शीरीं पानी)। (42)
और हम ने उस के अहले ख़ाना और उन के साथ उन जैसे (और भी) अता किए (यह) हमारी तरफ़ से रहमत और अ़क़्ल वालों के लिए नसीहत। (43)

اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَالْمُفْسِدِيْنَ فِى الْاَرْضِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जमीन में | उन की तरह जो फ़साद फैलाते हैं | अच्छे | और उन्हों ने अ़मल किए | जो लोग ईमान लाए | क्या हम कर देंगे |

اَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ ﴿٢٨﴾ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुबारक | आप (स) की तरफ़ | हम ने उसे नाज़िल किया | एक किताब | 28 | बदकिरदारों की तरह | परहेज़गारों | हम कर देंगे | क्या |

لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٢٩﴾ وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सुलेमान (अ) | दाऊद (अ) को | और हम ने अ़ता किया | 29 | अ़क़्ल वाले | और ताकि नसीहत पकड़ें | उस की आयात | ताकि वह ग़ौर करें |

نِعْمَ الْعَبْدُ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ﴿٣٠﴾ اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| असील घोड़े | शाम के वक्त | उस पर-सामने | पेश किए गए | जब | 30 | रुजूअ़ करने वाला | बेशक वह | बहुत अच्छा बन्दा |

الْجِيَادُ ﴿٣١﴾ فَقَالَ اِنِّيْٓ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّيْ حَتّٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यहां तक कि | अपने रब की याद | से | माल की मुहब्बत | मैं ने दोस्त रखा | बेशक मैं | तो उस ने कहा | 31 | उम्दा |

تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿٣٢﴾ رُدُّوْهَا عَلَيَّ فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوْقِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पिंडलियों पर | हाथ फेरना | फिर शुरु किया | मेरे सामने | फेर लाओ उन्हें | 32 | पर्दे में | छुप गए |

وَالْاَعْنَاقِ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| एक धड़ | उस के तख़्त पर | और हम ने डाला | सुलेमान | और अलबत्ता हम ने आज़माइश की | 33 | और गर्दनों |

ثُمَّ اَنَابَ ﴿٣٤﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا لَّا يَنْۢبَغِيْ لِاَحَدٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किसी को | न सज़ा वार हो | ऐसी सलतनत | और अ़ता फ़रमा दे मुझे | मुझे बख़्शदे तू | ऐ मेरे रब | उस ने कहा | 34 | फिर उस ने रुजूअ़ किया |

مِّنْۢ بَعْدِيْ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿٣٥﴾ فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيْحَ تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के हुक्म से | वह चलती थी | हवा | फिर हम ने मुसख़्ख़र कर दिया उस के लिए | 35 | अ़ता फ़रमाने वाला | तू | बेशक तू | मेरे बाद |

رُخَآءً حَيْثُ اَصَابَ ﴿٣٦﴾ وَالشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّآءٍ وَّغَوَّاصٍ ﴿٣٧﴾ وَّاٰخَرِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और दूसरे | 37 | और ग़ोता मारने वाले | इमारत बनाने वाले | तमाम | और देव (जिन्नात) | 36 | वह पहुँचना चाहता | जहां | नर्मी से |

مُقَرَّنِيْنَ فِى الْاَصْفَادِ ﴿٣٨﴾ هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَيْرِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बग़ैर | रोक रख | या | अब तू एहसान कर | हमारा अ़तिया | यह | 38 | ज़न्जीरों में | जकड़े हुए |

حِسَابٍ ﴿٣٩﴾ وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٤٠﴾ وَاذْكُرْ عَبْدَنَآ ع ۳ ۱۲

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारा बन्दा | और आप (स) याद करें | 40 | ठिकाना | और अच्छा | अलबत्ता कुर्ब | हमारे पास | और बेशक उस के लिए | 39 | हिसाब |

اَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّعَذَابٍ ﴿٤١﴾ وقف لازم

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 41 | और दुख | ईज़ा | शैतान | मुझे पहुँचाया | बेशक मैं | अपना रब | जब उस ने पुकारा | अय्यूब (अ) |

اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّشَرَابٌ ﴿٤٢﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस को | और हम ने अता किया | 42 | और पीने के लिए | ठंडा | गुस्ल के लिए | यह | अपना पाऊँ | (जमीन पर) मार |

اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ ﴿٤٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 43 | अ़क़्ल वालों के लिए | और नसीहत | हमारी (तरफ़) से | रहमत | उन के साथ | और उन जैसे | उस के अहले ख़ाना |

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ۗ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ۗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तू ले | अपने हाथ में | झाड़ू | और उस से मार उस को | और क़सम न तोड़ | बेशक हम | हम ने उसे पाया | साबिर |

نِعْمَ الْعَبْدُ ۗ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿٤٤﴾ وَاذْكُرْ عِبٰدَنَآ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अच्छा बन्दा | बेशक वह (अल्लाह की तरफ़) रुजूअ़ करने वाला | 44 | और याद करें | हमारे बन्दों | इब्राहीम (अ) | और इस्हाक़ (अ) | और याक़ूब (अ) |

اُولِى الْاَيْدِىْ وَالْاَبْصَارِ ﴿٤٥﴾ اِنَّآ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ﴿٤٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हाथों वाले | और आँखों वाले | 45 | बेशक हम | हम ने उन्हें मुम्ताज़ किया | ख़ास सिफ़त | याद | घर (आख़िरत का) | 46 |

وَاِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ ﴿٤٧﴾ وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बेशक वह | हमारे नज़दीक | अलबत्ता- से | चुने हुए | सब से अच्छे | 47 | और याद करें | इस्माईल (अ) |

وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ۗ وَكُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ ﴿٤٨﴾ هٰذَا ذِكْرٌ ۗ وَاِنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अलयसअ़ (अ) | और ज़ुलकिफ़्ल (अ) | और यह तमाम | से | सब से अच्छे लोग | 48 | यह एक नसीहत | और बेशक |

لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٤٩﴾ جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ ﴿٥٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| परहेज़गारों के लिए | अलबत्ता अच्छा | ठिकाना | 49 | बाग़ात | हमेशा रहने के | खुले हुए | उन के लिए | दरवाज़े | 50 |

مُتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ ﴿٥١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तकिया लगाए हुए वह | उन में | मंगवाएंगे | उन में | मेवे | बहुत से | और शराब (मशरूबात) | 51 |

وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ ﴿٥٢﴾ هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन के पास | नीचे रखने वालियां | निगाह | हम उम्र | 52 | यह | जो- जिस | वादा किया जाता है तुम से |

لِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٥٣﴾ اِنَّ هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهٗ مِنْ نَّفَادٍ ﴿٥٤﴾ هٰذَا ۗ وَاِنَّ

الثلثة

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रोज़े हिसाब के लिए | 53 | बेशक | यह | यक़ीनन हमारा रिज़्क़ | उसके लिए - उस को नहीं | ख़तम होना | 54 | यह | और बेशक |

لِلطّٰغِيْنَ لَشَرَّ مَاٰبٍ ﴿٥٥﴾ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٥٦﴾ هٰذَا ۙ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सरकशों के लिए | अलबत्ता बुरा | ठिकाना | 55 | जहन्नम | वह उस में दाख़िल होंगे | सो बुरा | बिछौना | 56 | यह |

فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّغَسَّاقٌ ﴿٥٧﴾ وَّاٰخَرُ مِنْ شَكْلِهٖۤ اَزْوَاجٌ ﴿٥٨﴾ هٰذَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस उस को चखो तुम | खौलता हुआ पानी | और पीप | 57 | और उस के अ़लावा | उस की शक्ल की | कई क़िस्में | 58 | यह |

فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۚ لَا مَرْحَبًا بِهِمْ ۗ اِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ﴿٥٩﴾ قَالُوْا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक जमाअ़त | घुस रहे हैं | तुम्हारे साथ | न हो कोई फ़राख़ी | उन्हें | बेशक वह | दाख़िल होने वाले जहन्नम में | 59 | वह कहेंगे |

بَلْ اَنْتُمْ ۗ لَا مَرْحَبًا بِكُمْ ۗ اَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوْهُ لَنَا ۚ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٦٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बल्कि तुम | कोई मरहबा न हो | तुम्हें | बेशक तुम | तुम ही यह आगे लाए | हमारे लिए | सो बुरा | ठिकाना | 60 |

قَالُوْا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِى النَّارِ ﴿٦١﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह कहेंगे | ऐ हमारे रब | जो आगे लाया | हमारे लिए | यह | तू ज़ियादा कर दे | अज़ाब | दो चंद | जहन्नम में | 61 |

وَقَالُوْا مَا لَنَا لَا نَرٰى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْاَشْرَارِ ﴿٦٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह कहेंगे | क्या हुआ हमें | हम नहीं देखते | वह लोग | हम शुमार करते थे उन्हें | से | अश्रार (बहुत बुरे) | 62 |

और अपने हाथ में झाड़ू ले और तू उस से (अपनी बीवी को) मार, और क़सम न तोड़, बेशक हम ने उसे साबिर पाया (और) अच्छा बन्दा, बेशक अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ करने वाला। (44)
और आप (स) हमारे बन्दों इब्राहीम (अ) और इस्हाक़ (अ) और याक़ूब (अ) को याद करें जो हाथों वाले और आँखों वाले (इल्म ओ अक्ल की कुव्वतों वाले) थे। (45)
हम ने उन्हें एक ख़ास सिफ़त से मुम्ताज़ किया (और वह है) याद आख़िरत के घर की। (46)
और बेशक वह हमारे नज़्दीक चुने हुए सब से अच्छे लोगों में से थे। (47)
और आप (स) याद करें इस्माईल (अ) और अलयसअ़ (अ) और ज़ुलकिफ़्ल (अ) को, और यह तमाम ही सब से अच्छे लोगों में से थे। (48)
यह एक नसीहत है, और परहेज़गारों के लिए अलबत्ता अच्छा ठिकाना है। (49)
हमेशा रहने के बाग़ात, जिन के दरवाज़े उन के लिए खुले होंगे। (50)
उन में तकिया लगाए हुए होंगे, और उन में मंगवाएंगे मेवे बहुत से और मश्रूबात। (51)
और उन के पास नीची निगाह रखने वाली (बा हया) हम उम्र (औरतें) होंगी। (52)
यह है जिस का तुम से वादा किया जाता है रोज़े हिसाब के लिए। (53)
बेशक यह हमारा रिज़्क़ है, उस को (कभी) ख़तम होना नहीं। (54)
यह है (जज़ा)! और बेशक सरकशों के लिए अलबत्ता बुरा ठिकाना है। (55)
(यानी) जहन्नम, जिस में वह दाख़िल होंगे, सो बुरा है फ़र्श (उन की आरामगाह)! (56)
यह खौलता हुआ पानी और पीप है, पस तुम उस को चखो। (57)
और उस के अ़लावा उस की शक्ल की कई क़िस्में होंगी। (58)
यह एक जमाअ़त है जो तुम्हारे साथ (जहन्नम में) दाख़िल हो रही है, उन्हें कोई फ़राख़ी न हो, बेशक वह जहन्नम में दाख़िल होने वाले हैं। (59)
वह कहेंगेः बल्कि तुम्हें कोई फ़राख़ी न हो, बेशक तुम ही हमारे लिए यह (मुसीबत) आगे लाए हो, सो बुरा है ठिकाना। (60)
वह कहेंगे, ऐ हमारे रब! जो हमारे लिए यह (मुसीबत) आगे लाया है तू जहन्नम में (उस के लिए) अज़ाब दो चन्द कर दे (61)
और वह कहेंगे हमें क्या हुआ? हम (दोज़ख़ में) उन लोगों को नहीं देखते जिन्हें हम बुरे लोगों में शुमार करते थे। (62)

क्या हम ने उन्हें ठठे में पकड़ा था? या कज हो गई है उन से (हमारी) आँखें? (63)
बेशक अहले दोज़ख़ का बाहम यह झगड़ना बिलकुल सच है। (64)
आप (स) फ़रमा दें: इस के सिवा नहीं कि मैं डराने वाला हूँ और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह यकता ज़बरदस्त है। (65)
परवरदिगार है आस्मानों का और ज़मीन का और जो उन दोनों के दरमियान है, ग़ालिब, बड़ा बख़्शने वाला। (66)
आप फ़रमा दें यह एक बड़ी खबर है। (67)
तुम उस से बेपरवाह हो। (68)
मुझे कुछ खबर न थी आ़लमे बाला (बुलन्द क़द्र फ़रिश्तों) की जब वह बाहम झगड़ते थे। (69)
मेरी तरफ़ इस के सिवा वहि नहीं की जाती कि मैं साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ। (70)
(याद करो) जब तुम्हारे रब ने कहा फ़रिश्तों को कि मैं मिट्टी से एक बशर पैदा करने वाला हूँ। (71)
फिर जब मैं उसे दुरुस्त कर दूँ और उस में अपनी रूह से फूँक दूँ तो तुम गिर पड़ो उस के आगे सिज्दा करते हुए। (72)
पस सब फ़रिश्तों ने इकटठे सिज्दा किया। (73)
सिवाए इब्लीस के, उस ने तकब्बुर किया और वह हो गया काफ़िरों में से। (74)
(अल्लाह ने) फ़रमाया ऐ इब्लीस! उस को सिज्दा करने से तुझे किस ने मना किया (रोका) जिसे मैं ने अपने हाथों से पैदा किया? क्या तू ने तकब्बुर किया (अपने को बड़ा समझा) या तू बुलन्द दरजे वालों में से है? (75)
उस ने कहा: मैं उस से बेहतर हूँ, तू ने मुझे आग से पैदा किया और उसे पैदा किया मिट्टी से। (76)
(अल्लाह तआ़ला ने) फ़रमाया: पस यहां से निकल जा क्योंकि तू रांदा-ए-दरगाह है। (77)
और बेशक तुझ पर मेरी लानत रहेगी रोज़े क़ियामत तक। (78)
उस ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे उस दिन तक मोहलत दे जिस दिन (मुर्दे) उठाए जाएंगे। (79)
(अल्लाह ने) फ़रमाया: पस तू मोहलत दिए जाने वालों में से है। (80)
उस दिन तक जिस का वक़्त मुझे मालूम है। (81)
उस ने कहा मुझे तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम! मैं उन सब को ज़रूर गुमराह करूंगा। (82)

اَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا اَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْاَبْصَارُ ﴿٦٣﴾ اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बिलकुल सच | बेशक यह | 63 | आँखें | उन से | कज हो गई है | या | ठठे में | क्या हम ने उन्हें पकड़ा था |

تَخَاصُمُ اَهْلِ النَّارِ ﴿٦٤﴾ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا مُنْذِرٌ ۖ وَّمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ ع ٤ ١٢

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के सिवा | कोई माबूद | और नहीं | डराने वाला | कि मैं | इस के सिवा नहीं | फरमा दें | 64 | अहले दोज़ख़ | बाहम झगड़ना |

الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٦٥﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيْزُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग़ालिब | उन दोनों के दरमियान | और जो | और ज़मीन | आस्मानों | रब | 65 | ज़बरदस्त | वाहिद (यकता) |

الْغَفَّارُ ﴿٦٦﴾ قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيْمٌ ﴿٦٧﴾ اَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُوْنَ ﴿٦٨﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 68 | मुँह फेरने वाले (बेपरवाह हो) | उस से | तुम | 67 | एक ख़बर बड़ी | वह यह | फ़रमादें | 66 | बड़ा बख़्शने वाला |

مَا كَانَ لِىَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَاِ الْاَعْلٰٓى اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٦٩﴾ اِنْ يُّوْحٰٓى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं वहि की जाती | 69 | वह बाहम झगड़ते थे | जब | आ़लमे बाला की | कुछ ख़बर | मेरे पास (मुझे) | न था |

اِلَىَّ اِلَّآ اَنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٠﴾ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّىْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि मैं | फ़रिश्तों का | तुम्हारा रब | जब कहा | 70 | साफ़ साफ़ | मैं डराने वाला | यह कि | सिवाए | मेरी तरफ़ |

خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ طِيْنٍ ﴿٧١﴾ فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِىْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी रूह | से | उस में | और मैं फूँकूं | मैं दुरुस्त कर दूँ उसे | फिर जब | 71 | मिट्टी से | एक बशर | पैदा करने वाला |

فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ﴿٧٢﴾ فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿٧٣﴾ اِلَّآ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सिवाए | 73 | इकटठे | सब | फ़रिश्ते | पस सिज्दा किया | 72 | सिज्दा करते हुए | उस के लिए (आगे) | तो तुम गिर पड़ो |

اِبْلِيْسَ ۖ اِسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا مَنَعَكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किस ने मना किया तुझे | ऐ इब्लीस | उस ने फ़रमाया | 74 | काफ़िरों | से | और वह हो गया | उस ने तकब्बुर किया | इब्लीस |

اَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَىَّ ۖ اَسْتَكْبَرْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| से | या तू है | क्या तू ने तकब्बुर किया | अपने हाथों से | मैं ने पैदा किया | उस को जिसे | कि तू सिज्दा करे |

الْعَالِيْنَ ﴿٧٥﴾ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۖ خَلَقْتَنِىْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तू ने पैदा किया उसे | आग से | तू ने पैदा किया मुझे | उस से | बेहतर | मैं | उस ने कहा | 75 | बुलन्द दरजे वाले |

مِنْ طِيْنٍ ﴿٧٦﴾ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ﴿٧٧﴾ وَّاِنَّ عَلَيْكَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुझ पर | और बेशक | 77 | रांदा-ए-दरगाह | क्योंकि तू | यहां से | पस निकल जा | उस ने फ़रमाया | 76 | मिट्टी | से |

لَعْنَتِىْٓ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٧٨﴾ قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِىْٓ اِلٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तक | पस तू मुझे मोहलत दे | ऐ मेरे रब | उस ने कहा | 78 | रोज़े क़ियामत | तक | मेरी लानत |

يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿٧٩﴾ قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِلٰى يَوْمِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | तक | 80 | मोहलत दिए जाने वाले | से | पस बेशक तू | उस ने फ़रमाया | 79 | जिस दिन उठाए जाएंगे |

الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ﴿٨١﴾ قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٢﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 82 | सब | मैं ज़रूर उन्हें गुमराह करूँगा | सो तेरी इज़्ज़त की क़सम | उस ने कहा | 81 | वक़्त मुअ़य्यन |

اِلَّا عِبَادَكَ مِنۡهُمُ الۡمُخۡلَصِيۡنَ ﴿٨٣﴾ قَالَ فَالۡحَقُّ وَالۡحَقَّ اَقُوۡلُ ﴿٨٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 84 | मैं कहता हूँ | और सच | यह हक़ (सच) | उस ने फ़रमाया | 83 | मुख़्लिस (जमा) | उन में से | सिवाए तेरे बन्दे |

لَاَمۡلَـئَنَّ جَهَنَّمَ مِنۡكَ وَمِمَّنۡ تَبِعَكَ مِنۡهُمۡ اَجۡمَعِيۡنَ ﴿٨٥﴾ قُلۡ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़रमा दें | 85 | सब | उन से | तेरे पीछे चलें | और उन से जो | तुझ से | जहन्नम | मैं ज़रूर भर दूँगा |

مَاۤ اَسۡـَٔلُكُمۡ عَلَيۡهِ مِنۡ اَجۡرٍ وَّمَاۤ اَنَا مِنَ الۡمُتَكَلِّفِيۡنَ ﴿٨٦﴾ اِنۡ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं | 86 | बनावट करने वालों से | मैं | और नहीं | कोई अजर | इस पर | मैं मांगता तुम से | नहीं |

ع ٥ ٣٢ ١٣ هُوَ اِلَّا ذِكۡرٌ لِّلۡعٰلَمِيۡنَ ﴿٨٧﴾ وَلَتَعۡلَمُنَّ نَبَاَهٗ بَعۡدَ حِيۡنٍ ﴿٨٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 88 | एक वक़्त | बाद | उस का हाल | और तुम ज़रूर जान लोगे | 87 | तमाम जहानों के लिए | नसीहत | यह मगर |

## آيَاتُهَا ٧٥ ❀ (٣٩) سُوۡرَةُ الزُّمَرِ ❀ رُكُوۡعَاتُهَا ٨

रुकुआत 8 — (39) सूरतुज़ ज़ुमर — टोलियाँ, गिरोह — आयात 75

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

تَنۡزِيۡلُ الۡكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الۡعَزِيۡزِ الۡحَكِيۡمِ ﴿١﴾ اِنَّاۤ اَنۡزَلۡنَاۤ اِلَيۡكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारी तरफ़ | बेशक हम ने नाजिल की | 1 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | अल्लाह की तरफ़ से | यह किताब | नाज़िल किया जाना |

الۡكِتٰبَ بِالۡحَقِّ فَاعۡبُدِ اللّٰهَ مُخۡلِصًا لَّهُ الدِّيۡنَ ﴿٢﴾ اَلَا لِلّٰهِ الدِّيۡنُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के लिए दीन | याद रखो | 2 | दीन | उसी के लिए | ख़ालिस कर के | पस अल्लाह की इबादत करो | हक़ के साथ | यह किताब |

وقف لازم الۡخَالِصُ ؕ وَالَّذِيۡنَ اتَّخَذُوۡا مِنۡ دُوۡنِهٖۤ اَوۡلِيَآءَ ۘ مَا نَعۡبُدُهُمۡ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नही इबादत करते हम उन की | दोस्त | उस के सिवा | बनाते हैं | और जो लोग | ख़ालिस |

اِلَّا لِيُقَرِّبُوۡنَاۤ اِلَى اللّٰهِ زُلۡفٰى ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَحۡكُمُ بَيۡنَهُمۡ فِيۡ مَا هُمۡ فِيۡهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | वह | जिस में | उन के दर्रामयान | फ़ैसला कर देगा | बेशक अल्लाह | कुर्ब का दर्जा | अल्लाह का | मगर इस लिए कि वह मुक़र्रब बना दें हमें |

يَخۡتَلِفُوۡنَ ۬ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهۡدِيۡ مَنۡ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ﴿٣﴾ لَوۡ اَرَادَ اللّٰهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चाहता अल्लाह | अगर | 3 | नाशुक्रा | झूटा | जो हो | हिदायत नहीं देता | बेशक अल्लाह | वह इख़्तिलाफ़ करते हैं |

اَنۡ يَّتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصۡطَفٰى مِمَّا يَخۡلُقُ مَا يَشَآءُ ۙ سُبۡحٰنَهٗ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह पाक है | जिसे वह चाहता | वह पैदा करता है (मख़्लूक़) | उस से जो | अलबत्ता वह चुन लेता | औलाद | कि बनाए |

هُوَ اللّٰهُ الۡوَاحِدُ الۡقَهَّارُ ﴿٤﴾ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ بِالۡحَقِّ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हक़ (दुरुस्त तदबीर के) साथ | और ज़मीन | आस्मानों | उस ने पैदा किया | 4 | ज़बरदस्त | वाहिद (यकता) | वही अल्लाह |

يُكَوِّرُ الَّيۡلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى الَّيۡلِ وَسَخَّرَ الشَّمۡسَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सूरज | और उस ने मुसख़्ख़र किया | रात पर | और दिन को लपेटता है | दिन पर | रात | वह लपेटता है |

وَالۡقَمَرَ ؕ كُلٌّ يَّجۡرِيۡ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اَلَا هُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡغَفَّارُ ﴿٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | बख़्शने वाला | वह ग़ालिब | याद रखो | मुक़र्ररा | एक मुद्दत | हर एक चलता है | और चाँद |

उन में से तेरे मुख़्लिस (ख़ास) बन्दों के सिवा। (83)
(अल्लाह ने) फ़रमायाः यह सच है और मैं सच ही कहता हूँ। (84)
मैं ज़रूर जहन्नम भर दूँगा तुझ से और उन सब से जो तेरे पीछे चलें। (85)
आप (स) फ़रमा दें: मैं तुम से इस (तबलीग़े क़ुरआन) पर कोई अजर नहीं मांगता, और नहीं हूँ मैं बनावट करने वालों में से। (86)
यह (क़ुरआन) नहीं है मगर तमाम जहानों के लिए नसीहत। (87)
और उस का हाल तुम एक वक़्त के बाद (जल्द ही) ज़रूर जान लोगे। (88)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

इस किताब का नाज़िल किया जाना अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाले की तरफ़ से है। (1)
बेशक हम ने तुम्हारी तरफ़ यह किताब हक़ के साथ नाज़िल की है, पस तुम अल्लाह की इबादत करो दीन उसी के लिए ख़ालिस कर के। (2)
याद रखो! दीन ख़ालिस अल्लाह ही के लिए है, और जो लोग उस के सिवा दोस्त बनाते हैं (वह कहते हैं) हम सिर्फ़ इस लिए उन की इबादत करते हैं कि वह क़ुर्ब के दरजे में हमें अल्लाह का मुक़र्रब बना दें, बेशक अल्लाह उन के दर्रामयान उस (अम्र) में फ़ैसला फ़रमा देगा जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते हैं, बेशक अल्लाह किसी झूटे, नाशुक्रे को हिदायत नहीं देता। (3)
अगर अल्लाह चाहता कि बनाले (किसी को अपनी) औलाद तो वह अपनी मख़्लूक़ में से जिस को चाहता चुन लेता, वह पाक है, वही है अल्लाह यकता, जबरदस्त। (4)
उस ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को दुरुस्त तदबीर के साथ, वह रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है और उस ने मुसख़्ख़र किया सूरज और चाँद को, हर एक, एक मुद्दते मुक़र्ररा तक चलता है, याद रखो, वह ग़ालिब, बख़्शने वाला है। (5)

उस ने तुम्हें नफ़्से वाहिद (आदम अ) से पैदा किया, फिर उस ने उस से उस का जोड़ा बनाया, और तुम्हारे लिए चौपायों में से आठ जोड़े भेजे, वह तुम्हें पैदा करता है तुम्हारी माँओं के पेटों में, तीन तारीकियों के अन्दर एक कैफ़ियत के बाद दूसरी कैफ़ियत में, यह है तुम्हारा अल्लाह, तुम्हारा परवरदिगार, उसी के लिए है बादशाहत, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तुम कहाँ फिरे जाते हो? **(6)** अगर तुम नाशुक्री करोगे तो बेशक अल्लाह तुम से बेनियाज़ है, और वह पसंद नहीं करता अपने बन्दों के लिए नाशुक्री, और अगर तुम शुक्र करोगे तो वह तुम्हारे लिए उसे पसंद करता है, और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाता, फिर तुम्हें अपने रब की तरफ़ लौटना है, फिर वह तुम्हें जतला देगा जो तुम करते थे। बेशक वह दिलों की पोशीदा बातों को (भी) जानने वाला है। **(7)** और जब इन्सान को कोई सख़्ती पहुँचे तो वह अपने रब की तरफ़ रुजूअ कर के उसे पुकारता है, फिर जब वह उसे अपनी तरफ़ से नेमत दे तो वह भूल जाता है जिस के लिए वह उस से क़ब्ल (अल्लाह को) पुकारता था, और वह अल्लाह के लिए शरीक बनालेता है ताकि उस के रास्ते से गुमराह करे, आप (स) फ़रमा दें: तू फ़ाइदा उठाले अपने कुफ़्र से थोड़ा, बेशक तू दोज़ख़ वालों में से है। **(8)** (क्या यह नाशुक्रा बेहतर है) या वह? जो रात की घड़ियों में इबादत करने वाला सिज्दा करने वाला हो कर और क़याम करने वाला, (और) वह आख़िरत से डरता है और अपने रब की रहमत से उम्मीद रखता है। आप (स) फ़रमा दें: क्या बराबर हैं वह जो इल्म रखते हैं और वह जो इल्म नहीं रखते? इस के सिवा नहीं कि अक़्ल वाले ही नसीहत क़ुबूल करते हैं। **(9)** आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए हो! तुम अपने रब से डरो, जिन लोगों ने इस दुनिया में अच्छे काम किए उन के लिए भलाई है, और अल्लाह की ज़मीन वसीअ़ है, इस के सिवा नहीं कि सब्र करने वालों को उन का अजर बेहिसाब पूरा पूरा दिया जाएगा। **(10)**

خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَاَنْزَلَ لَكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे लिए | और उस ने भेजे | उस का जोड़ा | उस से | फिर उस ने बनाया | नफ़्से वाहिद | से | उस ने पैदा किया तुम्हें |

مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ؕ يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| एक कैफ़ियत | तुम्हारी माएं | पेटों में | वह पैदा करता है तुम्हें | जोड़े | आठ (8) | चौपायों से |

مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ لَاۤ اِلٰهَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं कोई माबूद | बादशाहत | उस के लिए | तुम्हारा परवरदिगार | यह तुम्हारा अल्लाह | तीन (3) | तारीकियों में | दूसरी कैफ़ियत | के बाद |

اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿٦﴾ اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۟

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम से | बेनियाज़ | तो बेशक अल्लाह | अगर तुम नाशुक्री करोगे | 6 | तुम फिरे जाते हो | तो कहां | उस के सिवा |

وَلَا يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَاِنْ تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ لَكُمْ ؕ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई बोझ उठाने वाला बोझ | और नहीं उठाता | वह उसे पसंद करता है तुम्हारे लिए | तुम शुक्र करोगे | और अगर | नाशुक्री | अपने बन्दों के लिए | और वह पसंद नहीं करता |

اُخْرٰى ؕ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ؕ اِنَّهٗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक वह | तुम करते थे | वह जो | फिर वह जतला देगा तुम्हें | लौटना है तुम्हें | अपना रब | तरफ़ | फिर | दूसरे का |

عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٧﴾ وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह पुकारता है अपना रब | कोई सख़्ती | इन्सान | लगे-पहुँचे | और जब | 7 | सीनों (दिलों) की पोशीदा बातें | जानने वाला |

مُنِيْبًا اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَا خَوَّلَهٗ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوْۤا اِلَيْهِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की तरफ़-लिए | वह पुकारता था | जो | वह भूल जाता है | अपनी तरफ़ से | नेमत | वह उसे दे | फिर जब | उस की तरफ़ | रुजूअ़ कर के |

مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ قُلْ تَمَتَّعْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़ाइदा उठा ले | फ़रमा दें | उस के रास्ते से | ताकि गुमराह करे | शरीक (जमा) | और वह बना लेता है अल्लाह के लिए | उस से क़ब्ल |

بِكُفْرِكَ قَلِيْلًا ۖۗ اِنَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ﴿٨﴾ اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इबादत करने वाला | वह | या जो | 8 | आग (दोज़ख़) वाले | से | बेशक तू | थोड़ा | अपने कुफ़्र से |

اٰنَآءَ الَّيْلِ سَاجِدًا وَّقَآئِمًا يَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَيَرْجُوْا رَحْمَةَ رَبِّهٖ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना रब | रहमत | और उम्मीद रखता है | आख़िरत | वह डरता है | और क़याम करने वाला | सिज्दा करने वाला | घड़ियों में रात की |

قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ اِنَّمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस के सिवा नहीं | जो इल्म नहीं रखते | और वह लोग | वह इल्म रखते हैं | वह लोग जो | बराबर हैं | क्या | फ़रमा दें |

يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٩﴾ قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا ع ١ ٩ ١٥

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम डरो | ईमान लाए | जो | ऐ मेरे बन्दो | फ़रमा दें | 9 | अक़्ल वाले | नसीहत क़ुबूल करते हैं |

رَبَّكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَاَرْضُ اللّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और अल्लाह की ज़मीन | भलाई | इस दुनिया | में | अच्छे काम किए | उन के लिए जिन्हों ने | अपना रब |

وَاسِعَةٌ ؕ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿١٠﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | बेहिसाब | उन का अजर | सब्र करने वाले | पूरा बदला दिया जाएगा | इस के सिवा नहीं | वसीअ़ |

قُلْ اِنِّیْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّـهُ الدِّيْنَ ﴿١١﴾ وَاُمِرْتُ لِاَنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस का | और मुझे हुक्म दिया गया | 11 | दीन | उसी के लिए | खालिस कर के | मैं अल्लाह की इबादत करूँ | कि | बेशक मुझे हुक्म दिया गया | फ़रमा दें |

اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٢﴾ قُلْ اِنِّیْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّیْ عَذَابَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ़ज़ाब | अपना रब | मैं नाफ़रमानी करूँ | अगर | बेशक मैं डरता हूँ | फ़रमा दें | 12 | फ़रमांबरदार-मुस्लिम (जमा) | पहला | कि मैं हूँ |

يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٣﴾ قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّـهُ دِيْنِیْ ﴿١٤﴾ فَاعْبُدُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| परस्तिश करो | 14 | अपना दीन | उसी के लिए | खालिस कर के | मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ | फ़रमा दें | 13 | एक बड़ा दिन |

مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ ۗ قُلْ اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने आप को | घाटे में डाला | वह जिन्हों ने | घाटा पाने वाले | बेशक | फ़रमा दें | उस के सिवाए | जिस की तुम चाहो |

وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ اَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ﴿١٥﴾ لَهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | 15 | सरीह | घाटा | वह | यह | खूब याद रखो | रोज़े क़ियामत | और अपने घर वाले |

مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ۗ ذٰلِكَ يُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से | डराता है अल्लाह | यह | सायबान (चादरें) | और उन के नीचे से | आग के | सायबान | उन के ऊपर से |

عِبَادَهٗ ۗ يٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ﴿١٦﴾ وَالَّذِيْنَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ اَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | सरकश (शैतान) | बचते रहे | और जो लोग | 16 | पस मुझ से डरो | ऐ मेरे बन्दो | अपने बन्दों |

يَّعْبُدُوْهَا وَاَنَابُوْٓا اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰى ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ﴿١٧﴾ الَّذِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जो | 17 | मेरे बन्दों | सो खुशख़बरी दें | खुशख़बरी | उन के लिए | अल्लाह की तरफ़ | और उन्हों ने रुजूअ किया | उस की परस्तिश करें |

يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ۗ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हें हिदायत दी अल्लाह ने | वह जिन्हें | वही लोग | उस की अच्छी बातें | फिर पैरवी करते हैं | बात | सुनते हैं |

وَاُولٰٓئِكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿١٨﴾ اَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ۗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ़ज़ाब | हुक्म-वईद | उस पर | साबित हो गया | क्या तो-जो-जिस | 18 | अ़क़्ल वाले | वह | और यही लोग |

اَفَاَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِی النَّارِ ﴿١٩﴾ لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बाला खाने | उन के लिए | अपना रब | जो लोग डरे | लेकिन | 19 | आग में | जो | बचा लोगे | क्या पस तुम |

مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ ۙ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۗ وَعْدَ اللّٰهِ ۗ لَا يُخْلِفُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| खिलाफ़ नहीं करता | अल्लाह का वादा | नहरें | उन के नीचे | जारी हैं | बने बनाए | बाला खाने | उन के ऊपर से |

اللّٰهُ الْمِيْعَادَ ﴿٢٠﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَلَكَهٗ يَنَابِيْعَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चश्मे | फिर चलाया उस को | पानी | आस्मान से | उतारा | कि अल्लाह | क्या तू ने नहीं देखा | 20 | वादा | अल्लाह |

فِی الْاَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़र्द | फिर तू देखे उसे | फिर वह खुश्क हो जाती है | उस के रंग | मुख़्तलिफ़ | खेती | उस से | वह निकालता है | फिर | ज़मीन में |

ع ٢ ١٢ ١٦ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ حُطَامًا ۗ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِاُولِی الْاَلْبَابِ ﴿٢١﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 21 | अक़्ल वालों के लिए | अलबत्ता नसीहत | इस में | बेशक | चूरा चूरा | फिर वह कर देता है उसे |

आप (स) फ़रमा दें कि मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूँ ख़ालिस कर के उसी के लिए दीन। (11)
और मुझे हुक्म दिया गया है कि सब से पहले मैं ख़ुद मुसलिम बनों। (12)
आप (स) फ़रमा दें, बेशक मैं डरता हूँ कि अगर मैं नाफ़रमानी करूँ अपने परवरदिगार की, एक बड़े दिन के अ़ज़ाब से। (13)
आप (स) फ़रमा दें: मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ उसी के लिए अपना दीन ख़ालिस कर के। (14)
पस तुम जिस की चाहो परस्तिश करो अल्लाह के सिवा, आप (स) फ़रमा दें: बेशक वह घाटा पाने वाले हैं जिन्हों ने अपने आप को और अपने घर वालों को घाटे में डाला रोज़े क़ियामत, खूब याद रखो! यही है सरीह घाटा। (15)
उन के लिए उन के ऊपर से आग के साएबान होंगे और उन के नीचे से भी (आग की) चादरें। यह है जिस से अल्लाह अपने बन्दों को डराता है ऐ मेरे बन्दो! मुझ ही से डरो। (16)
और जो लोग तागूत से बचते रहे कि उस की परस्तिश करें, और उन्हों ने अल्लाह की तरफ़ रुजूअ किया, उन के लिए खुशख़बरी है। सो आप (स) मेरे बन्दों को खुशखबरी दें। (17)
जो (पूरी तवज्जुह से) बात सुनते हैं फिर उस की अच्छी अच्छी बातों की पैरवी करते हैं, यही वह लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी, और यही लोग हैं अ़क़्ल वाले। (18)
तो क्या जिस पर अ़ज़ाब की वईद साबित हो गई, पस क्या तुम उसे बचा लोगे जो आग में (गिर गया)? (19)
लेकिन जो लोग डरे अपने रब से, उन के लिए बाला खाने हैं, उन के ऊपर बने बनाए बाला खाने हैं, उन के नीचे नहरें जारी हैं, अल्लाह का वादा है, अल्लाह वादे के खिलाफ़ नहीं करता। (20)
क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा, फिर उसे चश्मे (बना कर) ज़मीन में चलाया, फिर वह उस से मुख़्तलिफ़ रंगों की खेती निकालता है, फिर वह खुश्क हो जाती है, फिर तू उसे ज़र्द देखता है, फिर वह उसे चूरा चूरा कर देता है, बेशक इस में अलबत्ता नसीहत है अक़्ल वालों के लिए। (21)

पस क्या जिस का सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया तो वह अपने रब की तरफ़ से नूर पर है? (क्या वह और संगदिल बराबर हैं) सो ख़राबी है उन के लिए जिन के दिल अल्लाह के ज़िक्र से ज़ियादा सख़्त हो गए, यही लोग गुमराही में हैं खुली। (22)

अल्लाह ने बेहतरीन कलाम नाज़िल किया, एक किताब जिस के मज़ामीन मिलते जुलते, बार बार दोहराए गए हैं, उस से बाल (रोंगटे) खड़े हो जाते हैं उन लोगों की जिल्दों पर जो अपने रब से डरते हैं, फिर उन की जिल्दें और उन के दिल नर्म हो जाते हैं अल्लाह की याद की तरफ़ (राग़िब होते हैं), यह है अल्लाह की हिदायत, उस से अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है, और जिसे अल्लाह गुमराह करे उस के लिए कोई हिदायत देने वाला नहीं। (23)

पस क्या जो शख़्स क़ियामत के दिन अपने चेहरे को बुरे अज़ाब से बचाता है (अहले जन्नत के बराबर हो सकता है?) और ज़ालिमों को कहा जाएगा तुम (उस का मज़ा) चखो जो तुम करते थे। (24)

जो लोग उन से पहले थे उन्हों ने झुटलाया तो उन पर अज़ाब आगया जहां से उन्हें ख़याल (भी) न था। (25)

पस अल्लाह ने उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में रुस्वाई (का मज़ा) चखाया, और अलबत्ता आख़िरत का अज़ाब बहुत ही बड़ा है, काश वह जानते होते। (26)

और तहक़ीक़ हम ने इस क़ुरआन में लोगों के लिए बयान की हर क़िस्म की मिसाल ताकि वह नसीहत पकड़ें। (27)

क़ुरआन अ़रबी (ज़बान में), किसी (भी) कजी के बग़ैर ताकि वह परहेज़गारी इख़्तियार करें। (28)

अल्लाह ने एक मिसाल बयान की है, एक आदमी (ग़ुलाम) है, उस में कई (आक़ा) शरीक हैं जो आपस में ज़िद्दी (झगड़ालू) हैं और एक आदमी एक आदमी का (ग़ुलाम) है, क्या दोनों की हालत बराबर है? तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं बल्कि उन में से अक्सर इल्म नहीं रखते। (29)

बेशक तुम मरने (इन्तिक़ाल करने) वाले हो, और वह (भी) मरने वाले हैं। (30)

फिर बेशक तुम क़ियामत के दिन अपने रब के पास झगड़ोगे। (31)

اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ فَوَيْلٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सो ख़राबी | अपने रब की तरफ़ से | नूर | पर | तो वह | इस्लाम के लिए | उस का सीना | अल्लाह ने खोल दिया | क्या - पस जिस |

لِّلْقٰسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٢﴾ اَللّٰهُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | 22 | खुली | गुमराही | में | यही लोग | अल्लाह की याद | से | उन के दिल | उन के लिए सख़्त |

نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ ۖ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिल्दें | उस से | बाल खड़े हो जाते हैं | दोहराई गई | मिलती जुलती (आयात वाली) | एक किताब | बेहतरीन कलाम | नाज़िल किया |

الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की याद | तरफ़ | और उन के दिल | उन की जिल्दें | नर्म हो जाती हैं | फिर | अपना रब | वह डरते हैं | जो लोग |

ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गुमराह करता है अल्लाह | और जो जिस | जिसे वह चाहता है | हिदायत देता है उस से | अल्लाह की हिदायत | यह |

فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٢٣﴾ اَفَمَنْ يَّتَّقِيْ بِوَجْهِهٖ سُوْٓءَ الْعَذَابِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बुरा अज़ाब | अपने चेहरे से | बचाता है | क्या पस जो | 23 | कोई हिदायत देने वाला | उस के लिए | तो नहीं |

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَقِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٢٤﴾ كَذَّبَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| झुटलाया | 24 | तुम कमाते (करते) थे | जो | तुम चखो | ज़ालिमों को | और कहा जाएगा | क़ियामत के दिन |

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٥﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 25 | उन्हें ख़याल न था | जहां से | अज़ाब | तो उन पर आ गया | इन से पहले | जो लोग |

فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आख़िरत | और अलबत्ता अज़ाब | दुनिया | ज़िन्दगी | में | रुस्वाई | पस चखाया उन्हें अल्लाह ने |

اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ وقف لازم

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| में | लोगों के लिए | और तहक़ीक़ हम ने बयान की | 26 | वह जानते होते | काश | बहुत ही बड़ा |

هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ़रबी | क़ुरआन | 27 | नसीहत पकड़ें | ताकि वह | मिसाल | हर क़िस्म की | इस क़ुरआन |

غَيْرَ ذِيْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٢٨﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيْهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | एक आदमी | एक मिसाल | बयान की अल्लाह ने | 28 | परहेज़गारी इख़्तियार करें | ताकि वह | किसी कजी के बग़ैर |

شُرَكَآءُ مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मिसाल (हालत) | दोनों की बराबर है | क्या | एक आदमी के लिए | सालिम (ख़ालिस) | और एक आदमी | आपस में ज़िद्दी | कई शरीक |

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۚ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बेशक वह | मरने वाले | बेशक तुम | 29 | इल्म नहीं रखते | उन में अक्सर | बल्कि | तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए |

مَّيِّتُوْنَ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ﴿٣١﴾ ع ٣ ١٧

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 31 | तुम झगड़ोगे | अपना रब | पास | क़ियामत के दिन | बेशक तुम | फिर | 30 | मरने वाले |

ركوع ٤

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सच्चाई को | और उस ने झुटलाया | अल्लाह पर | झूट बान्धा | से-जिस | बड़ा ज़ालिम | पस कौन |

اِذْ جَآءَهٗ ؕ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَالَّذِيْ جَآءَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आया | और जो शख़्स | 32 | काफ़िरों के लिए | ठिकाना | जहन्नम में | क्या नही | वह उस के पास आई | जब |

بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿٣٣﴾ لَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | 33 | मुत्तक़ी (जमा) | वह | यही लोग | उस को | और उस ने उस की तस्दीक़ की | सच्चाई के साथ |

مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٤﴾ لِيُكَفِّرَ اللهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि दूर कर दे अल्लाह | 34 | नेकोकारों (जमा) | जज़ा | यह | उन का रब | हाँ-पास | जो वह चाहेंगे |

عَنْهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ عَمِلُوْا وَيَجْزِيَهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेहतरीन (आमाल) | उन का अजर | और उन्हें जज़ा दे | उन्हों ने किए (आमाल) | वह जो | बुराई | उन से |

الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٣٥﴾ اَلَيْسَ اللهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ ؕ وَيُخَوِّفُوْنَكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह ख़ौफ़ दिलाते हैं आप को | अपने बन्दे को | काफ़ी | अल्लाह | क्या नही | 35 | वह करते थे | वह जो |

بِالَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٦﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 36 | कोई हिदायत देने वाला | तो नही उस के लिए | गुमराह कर दे अल्लाह | और जिस | उस के सिवा | उन से जो |

وَمَنْ يَّهْدِ اللهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّضِلٍّ ؕ اَلَيْسَ اللهُ بِعَزِيْزٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग़ालिब | क्या नही अल्लाह | गुमराह करने वाला | कोई | उस के लिए | तो नही | अल्लाह हिदायत दे | और जिस |

ذِى انْتِقَامٍ ﴿٣٧﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मानों | पैदा किया | कौन-किस | तुम पूछो उन से | और अगर | 37 | बदला लेने वाला |

وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللهُ ؕ قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जिन को तुम पुकारते हो | क्या पस देखा तुम ने | फ़रमा दें | अल्लाह | तो वह ज़रूर कहेंगे | और ज़मीन |

مِنْ دُوْنِ اللهِ اِنْ اَرَادَنِيَ اللهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दूर करन वाले हैं | वह सब | क्या | कोई ज़र्र | चाहे मेरे लिए अल्लाह | अगर | अल्लाह के सिवा | से |

ضُرِّهٖٓ اَوْ اَرَادَنِيْ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ ؕ قُلْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़रमा दें | उस की रहमत | रोकने वाले हैं | वह सब | क्या | कोई रहमत | वह चाहे मेरे लिए | या | उस का ज़र्र |

حَسْبِيَ اللهُ ؕ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿٣٨﴾ قُلْ يٰقَوْمِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ मेरी क़ौम | फ़रमा दें | 38 | भरोसा करने वाले | भरोसा करते हैं | उस पर | काफ़ी है मेरे लिए अल्लाह |

اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 39 | तुम जान लोगे | पस अनक़रीब | काम करता हूँ | बेशक मैं | अपनी जगह | पर | तुम काम किए जाओ |

مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٤٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 40 | दाइमी | अज़ाब | उस पर | और उतर आता है | रुस्वा कर दे उस को | अज़ाब | आता है उस पर | कौन |

पस उस से बड़ा ज़ालिम और कौन? जिस ने अल्लाह पर झूट बान्धा, और सच्चाई को झुटलाया जब वह उस के पास आई, क्या काफ़िरों का ठिकाना जहन्नम में नहीं? (32)

और जो शख़्स सच्चाई के साथ आया और उस ने उस की तस्दीक़ की, यही लोग मुत्तक़ी (परहेज़गार) हैं। (33)

उन के लिए है उन के रब के हां जो (भी) वह चाहेंगे, यह जज़ा है नेकोकारों की। (34)

ताकि अल्लाह उन से उन के आमाल की बुराई दूर करदे और उन्हें नेक कामों का अजर दे उन के बेहतरीन अमल के लिहाज़ से जो वह करते थे। (35)

क्या अल्लाह अपने बन्दे को काफ़ी नहीं? और वह आप (स) को डराते हैं उन (झूटे माबूदों) से जो उस के सिवा हैं, और जिस को अल्लाह गुमराह करदे तो उस को कोई हिदायत देने वाला नहीं। (36)

और जिस को अल्लाह हिदायत दे तो उस को कोई गुमराह करने वाला नहीं, क्या अल्लाह ग़ालिब, बदला देने वाला नहीं? (37)

और अगर आप (स) उन से पूछें कि आस्मानों और ज़मीन को किस ने पैदा क्या? तो वह ज़रूर कहेंगे "अल्लाह ने", आप (स) फ़रमा दें: पस क्या तुम ने देखा जिन को पुकारते हो अल्लाह के सिवा, अगर अल्लाह मेरे लिए कोई ज़र्र चाहे तो क्या वह सब उस का ज़र्र दूर कर सकती हैं? या वह मेरे लिए कोई रहमत चाहे तो क्या वह सब उस की रहमत रोक सकती हैं? आप (स) फ़रमा दें मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं। (38)

आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह काम किए जाओ, बेशक मैं (अपना) काम करता हूँ, पस अनक़रीब तुम जान लोगे। (39)

कौन है जिस पर आता है अज़ाब जो उसे रुस्वा कर दे और (कौन है) जिस पर दाइमी अज़ाब उतरता है? (40)

बेशक हम ने आप (स) पर लोगों (की हिदायत) के लिए किताब नाज़िल की हक़ के साथ, पस जिस ने हिदायत पाई तो अपनी ज़ात के लिए, और जो गुमराह हुआ तो इस के सिवा नहीं कि वह अपने लिए गुमराह होता है, और आप (स) नहीं उन पर निगहबान (ज़िम्मेदार)। (41) अल्लाह रूह को उस की मौत के वक़्त क़ब्ज़ करता है, और जो न मरे अपनी नींद में, जिस की मौत का फ़ैसला किया तो उस को (नींद की सूरत में ही) रोक लेता है और दूसरी (रूहों को) छोड़ देता है एक मुक़र्ररा वक़्त तक, बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं। (42) क्या उन्हों ने अल्लाह के सिवा बना लिए हैं शफ़ाअत (सिफ़ारिश) करने वाले? आप (स) फ़रमा दें: (इस सूरत में भी) कि वह कुछ भी इख़्तियार न रखते हों और न समझ रखते हों? (43) आप (स) फ़रमा दें: अल्लाह ही के (इख़्तियार में) है तमाम शफ़ाअत, उसी के लिए है आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत, फिर उस की तरफ़ तुम लौटोगे। (44) और जब ज़िक्र किया जाता है अल्लाह वाहिद का, तो जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उन के दिल मुतनफ़्फ़िर हो जाते हैं, और जब उन का ज़िक्र किया जाता है जो उस के सिवा हैं (यानी औरों का) तो फ़ौरन ख़ुश हो जाते हैं। (45) आप (स) फ़रमा दें: ऐ अल्लाह! पैदा करने वाले आस्मानों और ज़मीन के, जानने वाले पोशीदा और ज़ाहिर के, तू अपने बन्दों के दरमियान (इस अम्र में) फ़ैसला करेगा जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। (46) और अगर जिन लोगों ने ज़ुल्म किया, जो कुछ ज़मीन में है सब का सब और उस के साथ उतना ही (और भी) उन के पास हो तो वह बदले में दे दें रोज़े क़ियामत बुरे अज़ाब से (बचने के लिए), और अल्लाह की तरफ़ से उन पर ज़ाहिर हो जाएगा जिस का वह गुमान (भी) न करते थे। (47)

إِنَّآ أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हिदायत पाई | पस जिस | हक़ के साथ | लोगों के लिए | किताब | आप (स) पर | बेशक हम ने नाज़िल की |

فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | आप (स) | और नहीं | अपने लिए | वह गुमराह होता है | तो इस के सिवा नहीं | गुमराह हुआ | और जो | तो अपनी ज़ात के लिए |

بِوَكِيْلٍ ﴿٤١﴾ اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّتِيْ ع

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | उस की मौत | वक़्त | (जमा) जान-रूह | क़ब्ज़ करता है | अल्लाह | 41 | निगहबान |

لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا ۚ فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मौत | उस पर | फ़ैसला किया उस ने | वह जिस | तो रोक लेता है | अपनी नींद | में | न मरे |

وَيُرْسِلُ الْاُخْرٰىٓ اِلٰىٓ اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लोगों के लिए | अलबत्ता निशानियाँ | उस में | बेशक | मुक़र्ररा | एक वक़्त | तक | दूसरी को | वह छोड़ देता है |

يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٤٢﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُفَعَآءَ ۚ قُلْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़रमा दें | शफ़ाअत करने वाले | अल्लाह के सिवा | उन्हों ने बना लिया | क्या | 42 | ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं |

اَوَلَوْ كَانُوْا لَا يَمْلِكُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤٣﴾ قُلْ لِّلّٰهِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| फ़रमा दें अल्लाह के लिए | 43 | और न वह समझ रखते हों | कुछ | वह न इख़्तियार रखते हों | क्या अगर |

الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا ۚ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ ثُمَّ اِلَيْهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की तरफ़ | फिर | और ज़मीन | आस्मानों | बादशाहत | उसी के लिए | तमाम | शफ़ाअत |

تُرْجَعُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَاِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ قُلُوْبُ الَّذِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो | दिल | मुतनफ़्फ़िर हो जाते हैं | एक-वाहिद | ज़िक्र किया जाता है अल्लाह | और जब | 44 | तुम लौटोगे |

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَاِذَا ذُكِرَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِذَا هُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह | तो फ़ौरन | उस के सिवा | उन का जो | ज़िक्र किया जाता है | और जब | आख़िरत पर | ईमान नहीं रखते |

يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٤٥﴾ قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عٰلِمَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जानने वाला | और ज़मीन | आस्मानों | पैदा करने वाला | ऐ अल्लाह | फ़रमा दें | 45 | ख़ुश हो जाते हैं |

الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह थे | उस में जो | अपने बन्दों | दरमियान | तू फ़ैसला करेगा | तू | और ज़ाहिर | पोशीदा |

فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِي الْاَرْضِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो कुछ ज़मीन में | ज़ुल्म किया | उन के लिए जिन्हों ने | हो | और अगर | 46 | इख़्तिलाफ़ करते | उस में |

جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अज़ाब | बुरे | से | उस को | बदले में दें वह | उस के साथ | और इतना ही | सब का सब |

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ﴿٤٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 47 | गुमान करते | न थे वह | जो | अल्लाह (की तरफ़) से | और ज़ाहिर हो जाएगा उन पर | रोज़े क़ियामत |

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और ज़ाहिर हो जाएंगे उन पर | बुरे काम | जो वह करते थे | और घेर लेगा | उन को | जो | वह थे | उस का |

يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤٨﴾ فَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ اِذَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मज़ाक़ उड़ाते | 48 | फिर जब | पहुँचती है | इन्सान | कोई तक्लीफ़ वह हमें पुकारता है | जब फिर |

خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम अ़ता करते हैं उस को | कोई नेमत | अपनी तरफ़ से | वह कहता है | यह तो | मुझे दी गई है | पर | इल्म | बल्कि यह | एक आज़माइश |

وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٩﴾ قَدْ قَالَهَا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और लेकिन | उन में अक्सर | जानते नहीं | 49 | यक़ीनन यही कहा था | जो लोग | से | इन से पहले |

فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٥٠﴾ فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो वह न दूर किया | उन से | जो | वह करते थे | 50 | पस उन्हें पहुँचें | बुराइयां |

مَا كَسَبُوْا وَالَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ هٰٓؤُلَآءِ سَيُصِيْبُهُمْ سَيِّاٰتُ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| जो उन्हों ने कमाई | और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया | इन में से | जल्द पहुँचेंगी इन्हें | बुराइयां |

مَا كَسَبُوْا وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٥١﴾ اَوَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो इन्हों ने कमाया | और यह नहीं | आजिज़ करने वाले | 51 | क्या यह नहीं जानते | कि अल्लाह | फ़राख़ करता है |

الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रिज़्क़ | जिस के लिए | वह चाहता है | और तंग कर देता है | बेशक | इस में | निशानियां | उन लोगों के लिए |

ع ١١ ٥ ٢ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾ قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह ईमान लाए | 52 | फ़रमा दें | ऐ मेरे बन्दो | वह जिन्हों ने | जियादती की | पर | अपनी जानें |

لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मायूस न हो तुम | से | अल्लाह की रहमत | बेशक अल्लाह | बख़्श देता है | गुनाह (जमा) | सब |

اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٥٣﴾ وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक वह | वही | बख़्शने वाला | मेहरबान | 53 | और रुजूअ करो | तरफ़ | अपना रब | और फ़रमांबरदार हो जाओ उस के |

مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَاتَّبِعُوْٓا اَحْسَنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस से क़ब्ल | कि | तुम पर आए | अज़ाब | फिर | तुम मदद न किए जाओगे | 54 | और पैरवी करो | सब से बेहतर |

مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो नाज़िल की गई | तुम्हारी तरफ़ | से | तुम्हारा रब | इस से क़ब्ल | कि तुम पर आए | अज़ाब |

بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿٥٥﴾ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अचानक | और तुम | तुम को शऊर (ख़बर) न हो | 55 | कि कहे | कोई शख़्स | हाए अफ़्सोस | उस पर |

مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ﴿٥٦﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो मैं ने कोताही की | में | अल्लाह की जनाब | और यह कि मैं | अलबत्ता से | हँसी उड़ाने वाले | 56 |

और उन पर बुरे काम ज़ाहिर हो जाएंगे जो वह करते थे और वह (अज़ाब) उन को घेर लेगा जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (48)

फिर जब इन्सान को कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो वह हमें पुकारता है, फिर जब हम उस को अपनी तरफ़ से कोई नेमत अता करते हैं तो वह कहता है कि यह तो मुझे दिया गया है (मेरे) इल्म (की बिना) पर, (नहीं) बल्कि यह एक आज़माइश है, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। (49)

यक़ीनन यह उन लोगों ने (भी) कहा था जो इन से पहले थे, तो जो वह करते थे उस ने उन से (अजाब को) दूर न किया। (50)

पस उन्हें पहुँचें (उन पर आ पड़ें) बुराइयां जो उन्हों ने कमाई थीं, और इन में से जिन लोगों ने ज़ुल्म किया जल्द इन्हें पहुँचेंगी (इन पर आ पड़ेंगी) बुराइयां जो इन्हों ने कमाई हैं, और यह नहीं हैं (अल्लाह को) आजिज़ करने वाले। (51)

किया यह नहीं जानते कि अल्लाह जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ फ़राख़ कर देता है (और वह जिस के लिए चाहता है) तंग कर देता है, बेशक इस में उन लोगों के लिए शिानियां हैं जो ईमान लाए। (52)

आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरे बन्दो! जिन्हों ने ज़ियादती की है अपनी जानों पर, तुम अल्लाह की रहमत से मायूस न हो, बेशक अल्लाह सब गुनाह बख़्श देता है, बेशक वही बख़्शने वाला, मेहरबान है। (53)

और तुम अपने रब की तरफ़ रुजूअ करो, और उस के फ़रमांबरदार हो जाओ इस से क़ब्ल कि तम पर अज़ाब आ जाए, फिर तुम मदद न किए जाओगे। (54)

और पैरवी करो सब से बेहतर (किताब की) जो तुम्हारी तरफ़ नाज़िल की गई है तुम्हारे रब की तरफ़ से, इस से क़ब्ल कि तुम पर अचानक अज़ाब आ जाए और तुम्हें ख़बर भी न हो। (55)

कि कोई शख़्स कहे, हाए अफ़्सोस उस पर जो मैं ने अल्लाह के हक़ में कोताही की और यह कि मैं हँसी उड़ाने वालों में से रहा। (56)

या यह कहे कि अगर अल्लाह मुझे हिदायत देता तो मैं ज़रूर परहेज़गारों में से होता। (57) या जब वह अ़ज़ाब देखे तो कहेः काश! अगर मेरे लिए दोबारा (दुनिया में जाना हो) तो मैं नेकोकारों में से हो जाऊँ। (58) (अल्लाह फ़रमाएगा) हाँ! तहक़ीक़ तेरे पास मेरी आयात आईं, तू ने उन्हें झुटलाया, और तू ने तकब्बुर किया, और तू काफ़िरों में से था। (59) और क़ियामत के दिन तुम देखोगे जिन लोगों ने अल्लाह पर झूट बोला, उन के चेहरे सियाह होंगे, क्या तकब्बुर करने वालों का ठिकाना जहन्नम में नहीं? (60) और जिन लोगों ने परहेज़गारी की, अल्लाह उन्हें उन की कामयाबी के साथ नजात देगा, न उन्हें कोई बुराई छूएगी, न वह ग़मगीन होंगे। (61) अल्लाह हर शै का पैदा करने वाला है, और वह हर शै पर निगहबान है। (62) उसी के पास हैं आस्मानों और ज़मीन की कुंजियाँ, और जो लोग अल्लाह की आयात से मुन्किर हुए वही ख़सारा पाने वाले हैं। (63) आप (स) फ़रमा दें कि ऐ जाहिलो! क्या तुम मुझे कहते हो कि मैं अल्लाह के सिवा (किसी और) की परस्तिश करूँ। (64) और यक़ीनन आप (स) की तरफ़ और आप (स) से पहलों की तरफ़ वहि भेजी गई है, अगर तुम ने शिर्क किया तो तुम्हारे अ़मल बिलकुल अकारत जाएंगे और तुम ज़रूर ख़सारा पाने वालों (ज़ियां कारों) में से होंगे। (65) बल्कि तुम अल्लाह ही की इबादत करो, और शुक्र गुज़ारों में से हो। (66) और उन्हों ने अल्लाह की क़द्र शनासी न की जैसा कि उस की क़द्र शनासी का हक़ था, और तमाम ज़मीन रोज़े क़ियामत उस की मुट्ठी में होगी, और तमाम आस्मान उस के दाएं हाथ में लिपटे होंगे, और वह उस से पाक और बरतर है जो वह शरीक करते हैं। (67)

اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِىْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٥٧﴾ اَوْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| या | 57 | परहेज़गार (जमा) | से | मैं ज़रूर होता | मुझे हिदायत देता | यह कि अल्लाह | अगर | वह कहे | या |

تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِىْ كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | तो मैं हो जाऊँ | दोबारा | मेरे लिए | काश अगर | अ़ज़ाब | देखे | जब | वह कहे |

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٨﴾ بَلٰى قَدْ جَآءَتْكَ اٰيٰتِىْ فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तू ने तकब्बुर किया | उन्हें | तू ने झुटलाया | मेरी आयात | तहक़ीक़ तेरे पास आईं | हाँ | 58 | नेकोकार (जमा) |

وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٩﴾ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जिन लोगों ने झूट बोला | तुम देखोगे | और क़ियामत के दिन | 59 | काफ़िरों | से | और तू था |

عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ؕ اَلَيْسَ فِىْ جَهَنَّمَ مَثْوًى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ठिकाना | जहन्नम | में | क्या नहीं | सियाह | उन के चेहरे | अल्लाह पर |

لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٦٠﴾ وَيُنَجِّى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| उन की कामयाबी के साथ | वह जिन्हों ने परहेज़गारी की | और नजात देगा अल्लाह | 60 | तकब्बुर करने वाले |

لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْٓءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦١﴾ اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَىْءٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हर शै | पैदा करने वाला | अल्लाह | 61 | ग़मगीन होंगे | और न वह | बुराई | न छुएगी उन्हें |

وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿٦٢﴾ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और ज़मीन | आस्मानों | उस के पास कुंजियां | 62 | निगहबान | चीज़ | हर | पर | और वह |

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٣﴾ قُلْ ع ٦ ١١ ٢

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़रमा दें | 63 | ख़सारा पाने वाले | वह | वही लोग | अल्लाह की आयात के | मुन्किर हुए | और जो लोग |

اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّىْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَقَدْ اُوْحِىَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और यक़ीनन वहि भेजी गई है | 64 | जाहिलो | ऐ | मैं परस्तिश करूँ | तुम मुझे कहते हो | तो क्या अल्लाह के सिवा |

اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَئِنْ اَشْرَكْتَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तू ने शिर्क किया | अलबत्ता अगर | आप (स) से पहले | वह जो कि | और तरफ़ | आप (स) की तरफ़ |

لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٥﴾ بَلِ اللّٰهَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बल्कि अल्लाह | 65 | ख़सारा पाने वाले | से | और तू होगा ज़रूर | तेरे अ़मल | अलबत्ता अकारत जाएंगे |

فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हक़ | और उन्हों ने क़द्र शनासी न की अल्लाह की | 66 | शुक्र गुज़ारों | से | और हो | पस इबादत करो |

قَدْرِهٖ ۖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और तमाम आस्मान | रोज़े क़ियामत | उस की मुट्ठी | तमाम | और ज़मीन | उस की क़द्र शनासी |

مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 67 | वह शिर्क करते हैं | उस से जो | और बरतर | वह पाक है | उस के दाएं हाथ में | लिपटे हुए |

وَنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जमीन में | और जो | आस्मानों में | जो | तो बेहोश हो जाएगा | सूर में | और फूंक दी जाएगी |

اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ﴿٦٨﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 68 | देखने लगेंगे | खड़े | वह | तो फ़ौरन | दोबारा | फूंक मारी जाएगी उस में | फिर | चाहे अल्लाह | सिवाए जिसे |

وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِایْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नबी (जमा) | और लाए जाएंगे | किताब | और रख दी जाएगी | अपने रब के नूर से | ज़मीन | और चमक उठेगी |

وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِىَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَوُفِّيَتْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और पूरा पूरा दिया जाएगा | 69 | जुल्म न किया जाएगा | और वह (उन पर) | हक़ के साथ | उन के दरमियान | और फ़ैसला किया जाएगा | और गवाह (जमा) |

ع كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَسِيْقَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और हांके जाएंगे | 70 | जो कुछ वह करते हैं | खूब जानता है | और वह | जो उस ने किया (उस के आमाल) | हर शख़्स |

الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا فُتِحَتْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| खोल दिए जाएंगे | वह आएंगे वहां | यहां तक कि जब | गिरोह दर गिरोह | जहन्नम | तरफ़ | कुफ़्र किया (काफ़िर) | वह जिन्हों ने |

اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तु में से | रसूल (जमा) | क्या नहीं आए थे तुम्हारे पास | उस के मुहाफ़िज़ | उन से | और कहेंगे | उस के दरवाज़े |

يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारा दिन | मुलाक़ात | और तुम्हें डराते थे | तुम्हारे रब की आयतें (अहकाम) | तुम पर | वह पढ़ते थे |

هٰذَا ؕ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧١﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 71 | काफ़िरों | पर | अज़ाब | हुक्म | पूरा हो गया | और लेकिन | हाँ | वह कहेंगे | यह |

قِيْلَ ادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ठिकाना | सो बुरा है | उस में | हमेशा रहने को | जहन्नम | दरवाज़े | तुम दाखिल हो | कहा जाएगा |

الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गिरोह दर गिरोह | जन्नत की तरफ़ | अपना रब | वह डरे | वह लोग जो | ले जाया जाएगा | 72 | तकब्बुर करने वाले |

حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के मुहाफ़िज़ | उन से | और कहेंगे | उस के दरवाज़े | और खाल दिए जाएंगे | वह वहां आएंगे | जब | यहां तक कि |

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ﴿٧٣﴾ وَقَالُوا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह कहेंगे | 73 | हमेशा रहने को | सो इस में दाखिल हो | तुम अच्छे रहे | तुम पर | सलाम |

الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन | और हमें वारिस बनाया | अपना वादा | हम से सच्चा किया | वह जिस ने | तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए |

نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿٧٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 74 | अ़मल करने वाले | अजर | सो किया ही अच्छा | हम चाहें | जहां | जन्नत | से-में | हम मुक़ाम करलें |

और सूर में फूंक मारी जाएगी तो (हर कोई) जो आस्मानों और जमीन में है बेहोश हो जाएगा, सिवाए उस के जिसे अल्लाह चाहे, फिर उस में फूंक मारी जाएगी दोबारा, तो वह फ़ौरन खड़े हो कर (इधर उधर) देखने लगेंगे। (68)

और जमीन अपने रब के नूर से चमक उठेगी और (आमाल की) किताब (खोल कर) रख दी जाएगी और नबी और गवाह लाए जाएंगे, और उन के दरमियान हक़ के साथ (ठीक ठीक) फ़ैसला किया जाएगा और उन पर जुल्म न किया जाएगा। (69)

और हर शख़्स को उस के आमाल का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा, और वह खूब जानता है जो कुछ वह करते हैं। (70)

और काफ़िर हाँके जाएंगे गिरोह दर गिरोह जहन्नम की तरफ़, यहां तक कि जब वह वहां आएंगे तो उस के दरवाजे खोल दिए जाएंगे और उन से कहेंगे उस के मुहाफ़िज़ (दारोग़ा) क्या तुम्हारे पास तुम में से रसूल नहीं आए थे? जो तुम पर तुम्हारे रब के अहकाम पढ़ते थे, और तुम्हें डराते थे इस दिन की मुलाक़ात से। वह कहेंगे "हाँ" लेकिन काफ़िरों पर अज़ाब का हुक्म पूरा हो गया। (71)

कहा जाएगा तुम जहन्नम के दरवाजों में दाखिल हो, इस में हमेशा रहने को, सो बुरा है तकब्बुर करने वालों का ठिकाना। (72)

और जो लोग अपने रब से डरे उन्हें जन्नत की तरफ़ गिरोह दर गिरोह ले जाया जाएगा, यहां तक कि जब वह वहां आएंगे और खोल दिए जाएंगे उस के दरवाजे, और उन से उस के मुहाफ़िज़ (दारोग़ा) कहेंगे कि तुम पर सलाम हो, तुम अच्छे रहे, सो इस में हमेशा रहने को दाखिल हो। (73)

और वह कहेंगे तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, जिस ने अपना वादा सच्चा किया और हमें ज़मीन का वारिस बनाया कि हम मुक़ाम कर लें जन्नत में जहां हम चाहें, सो किया ही अच्छा है अ़मल करने वालों का अजर। (74)

और तुम देखोगे फ़रिश्तों को हलक़ा बान्धे अ़र्श के गिर्द, अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करते हुए, उन के दरमियान हक़ के साथ (ठीक ठीक) फ़ैसला कर दिया जाएगा और कहा जाएगा तमाम तारीफ़ें सारे जहानों के परवरदिगार अल्लाह के लिए हैं। (75)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

हा-मीम। (1)

इस क़ुरआन का उतारा जाना अल्लाह ग़ालिब, हर चीज के जानने वाले (की तरफ़) से है (2)

गुनाहों को बख़्शने वाला, तौबा क़ुबूल करने वाला, शदीद अ़ज़ाब वाला, बड़े फ़ज़्ल वाला, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। (3)

नहीं झगड़ते अल्लाह की आयात में, मगर वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया, सो तुम्हें धोके में न डाल दे उन की चलत फिरत दुनिया के मुल्कों में। (4)

उन से क़ब्ल नूह (अ) की क़ौम और उन के बाद (दूसरे) गिरोहों ने झुटलाया, और हर उम्मत ने अपने रसूलों के बारे में इरादा बान्धा कि वह उसे पकड़ लें, और नाहक़ झगड़ा करें ताकि उस से हक़ को दबा दें, तो मैं ने उन्हें पकड़ लिया, सो (देखो) कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब। (5)

और इसी तरह तुम्हारे रब की बात काफ़िरों पर साबित हो गई कि वह दोज़ख़ वाले हैं। (6)

जो फ़रिश्ते अ़र्श को उठाए हुए हैं और जो उस के इर्द गिर्द हैं वह तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करते हैं अपने रब की, और वह उस पर ईमान लाते हैं, और ईमान लाने वालों के लिए मग़फ़िरत मांगते हैं कि ऐ हमारे रब! हर शै को समो लिया है (तेरी) रहमत और इल्म ने, सो तू उन लोगों को बख़्श दे जिन्हों ने तौबा की, और तेरे रास्ते की पैरवी की, और तू उन्हें जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा ले। (7)

وَتَرٰى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तारीफ़ के साथ | पाकीज़गी बयान करते हुए | अ़र्श के गिर्द | से | हलक़ा बान्धे | फ़रिश्ते | और तुम देखोगे |

رَبِّهِمْ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٥﴾ ع ٥ ٥ الربع

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 75 | परवरदिगार सारे जहानों का | तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए | और कहा जाएगा | हक़ के साथ | उन के दरमियान | और फ़ैसला कर दिया जाएगा | अपना रब |

## آيَاتُهَا ٨٥ ❀ (٤٠) سُوْرَةُ الْمُؤْمِنَ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٩

रुकूआत 9 — (40) सूरतुल मोमिन — आयात 85

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٢﴾ غَافِرِ الذَّنْبِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गुनाह (जमा) | बख़्शने वाला | 2 | हर चीज का जानने वाला | ग़ालिब | अल्लाह से | किताब (क़ुरआन) | उतारा जाना | 1 | हा मीम |

وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِى الطَّوْلِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उस के सिवा | नहीं कोई माबूद | बड़े फ़ज़्ल वाला | शदीद अ़ज़ाब वाला | तौबा | और क़ुबूल करने वाला |

اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿٣﴾ مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया | मगर | अल्लाह की आयात | में | वह नहीं झगड़ते | 3 | लौट कर जाना | उसी की तरफ़ |

فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِى الْبِلَادِ ﴿٤﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नूह (अ) की क़ौम | इन से क़ब्ल | झुटलाया | 4 | शहरों में | उन का चलना फिरना | सो तुम्हें धोके में न डाल दे |

وَّالْاَحْزَابُ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۠ وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍۭ بِرَسُوْلِهِمْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अपने रसूल के मुतअ़ल्लिक़ | हर उम्मत | और इरादा बान्धा | उन के बाद | और गिरोह (जमा) |

لِيَاْخُذُوْهُ وَجَادَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ ۠

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो मैं ने उन्हें पकड़ लिया | हक़ | उस से | ताकि नाचीज़ कर दें, दबा दें | नाहक़ | और झगड़ा करें | कि वह उसे पकड़ लें |

فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٥﴾ وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | तुम्हारे रब की | बात | साबित हो गई | और इसी तरह | 5 | मेरा अ़ज़ाब | हुआ | सो कैसा |

الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٦﴾ الَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وقف لازم وقف النبي ﷺ ١٢

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अ़र्श | उठाए हुए है | वह जो (फ़रिश्ते) | 6 | दोज़ख़ वाले | कि वह | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) |

وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और मग़फ़िरत मांगते है | उस पर | और ईमान लाते है | अपना रब | तारीफ़ के साथ | वह पाकीज़गी बयान करते है | और जो उस के इर्द गिर्द |

لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सो तू बख़्श दे | और इल्म | रहमत | हर शै | समो लिया है | ऐ हमारे रब | वह ईमान लाए | उन के लिए जो |

لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | जहन्नम | अ़ज़ाब | और तू उन्हें बचाले | तेरा रास्ता | और उन्हों ने पैरवी की | वह लोग जिन्हों ने तौबा की |

رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ الَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सालेह है | और जो | तू ने उन से वादा किया | वह जिन का | हमेशगी के बाग़ात | और उन्हें दाख़िल करना | ऐ हमारे रब |

مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ ۭ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ग़ालिब | तू ही | बेशक तू | और उन की औलाद | और उन की बीवियां | उन के बाप दादा | से |

الْحَكِيْمُ ﴿۸﴾ وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ ۭ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَئِذٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस दिन | बुराइयाँ | बचा | और जो | बुराइयाँ | और तू उन्हें बचाले | 8 | हिक्मत वाला |

فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ۭ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۹﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिन लोगों ने कुफ़्र किया | बेशक | 9 | अज़ीम | कामयाबी | (यही) वह | और यह | तो यक़ीनन तू ने उस पर रहम किया |

يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللّٰهِ اَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपने तईं | तुम्हारा बेज़ार होना | से | बहुत बड़ा | अलबत्ता अल्लाह का बेज़ार होना | वह पुकारे जाएंगे |

اِذْ تُدْعَوْنَ اِلَى الْاِيْمَانِ فَتَكْفُرُوْنَ ﴿۱۰﴾ قَالُوْا رَبَّنَآ اَمَتَّنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तू ने हमें मुर्दा रखा | ऐ हमारे रब | वह कहेंगे | 10 | तो तुम कुफ़्र करते थे | ईमान की तरफ़ | तुम बुलाए जाते थे | जब |

اثْنَتَيْنِ وَاَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ | तो क्या | अपने गुनाहों का | पस हम ने एतिराफ़ कर लिया | दो बार | और ज़िन्दगी बख़्शी हमें तू ने | दो बार |

خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿۱۱﴾ ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗٓ اِذَا دُعِيَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वाहिद | पुकारा जाता अल्लाह | इस लिए कि जब | यह तुम (पर) | 11 | सबील | से कोई | निकलना |

كَفَرْتُمْ ۚ وَاِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا ۭ فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ ﴿۱۲﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12 | बड़ा | बुलन्द | पस हुक्म अल्लाह के लिए | तुम मान लेते | उस का शरीक किया जाता | और अगर | तुम कुफ़्र करते |

هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ رِزْقًا ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रिज़्क़ | आस्मानों से | तुम्हारे लिए | और उतारता है | अपनी निशानियां | तुम्हें दिखाता है | जो कि | वह |

وَمَا يَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ يُّنِيْبُ ﴿۱۳﴾ فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के लिए | ख़ालिस करते हुए | पस पुकारो अल्लाह | 13 | रुजूअ करता है | सिवाए जो | और नहीं नसीहत क़ुबूल करता |

الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۱۴﴾ رَفِيْعُ الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अर्श का मालिक | दरजे | बुलन्द | 14 | काफ़िर (जमा) | बुरा मानें | अगरचे | इबादत |

يُلْقِي الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ لِيُنْذِرَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ताकि वह डराए | अपने बन्दों (में) से | वह चाहता है | जिस पर | अपने हुक्म से | वह डालता है रूह |

يَوْمَ التَّلَاقِ ﴿۱۵﴾ يَوْمَ هُمْ بٰرِزُوْنَ ۚ لَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह पर | न पोशीदा होगी | ज़ाहिर होंगे | वह | जिस दिन | 15 | मुलाक़ात (क़ियामत) का दिन |

مِنْهُمْ شَيْءٌ ۭ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۭ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿۱۶﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 16 | ज़बरदस्त क़हर वाला | वाहिद | अल्लाह के लिए | आज | बादशाहत | किस के लिए | कोई शै | उन से-की |

ऐ हमारे रब! और उन्हें हमेशगी के बाग़ात में दाख़िल फ़रमा, वह जिन का तू ने उन से वादा किया है और (उन को भी) जो सालेह हैं उन के बाप दादा में से और उन की बीवियों और उन की औलाद में से, बेशक तू ही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (8)
और उन्हें बुराइयों से बचाले और जो उस दिन बुराइयों से बचा, तो यक़ीनन तू ने उस पर रहम किया और यही अज़ीम कामयाबी है। (9)
बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह पुकारे जाएंगे (उन्हें पुकार कर कहा जाएगा) कि अल्लाह का बेज़ार होना तुम्हारे अपने तईं बेज़ार होने से बहुत बड़ा है, जब तुम ईमान की तरफ़ बुलाए जाते थे तो तुम कुफ़्र करते थे। (10)
वह कहेंगे ऐ हमारे रब! तू ने हमें मुर्दा रखा दो बार, और हमें ज़िन्दगी बख़्शी दो बार, पस हम ने अपने गुनाहों का एतिराफ़ कर लिया, तो क्या (अब यहां से) निकलने की कोई सबील है? (11)
कहा जाएगा यह तुम पर इस लिए (है) कि जब अल्लाह वाहिद को पुकारा जाता तो तुम कुफ़्र करते और अगर (किसी को) उस का शरीक किया जाता तो तुम मान लेते, पस हुक्म अल्लाह के लिए है जो बुलन्द, बड़ा है। (12)
वह जो तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है, और तुम्हारे लिए आस्मान से रिज़्क़ उतारता है, और नसीहत क़ुबूल नहीं करता सिवाए जो (अल्लाह की तरफ़) रुजूअ करता है। (13)
पस तुम अल्लाह को पुकारो, उसी के लिए इबादत ख़ालिस करते हुए, अगरचे काफ़िर बुरा मानें। (14)
बुलन्द दरजों वाला, अर्श का मालिक, वह अपने हुक्म से रूह (वहि) डालता है (भेजता है) जिस पर अपने बन्दों में से चाहता है ताकि वह क़ियामत के दिन से डराए। (15)
जिस दिन वह ज़ाहिर होंगे, न पोशीदा होगी अल्लाह पर उन की कोई शै, (निदा होगी) आज किस के लिए है बादशाहत? (एलान होगा) "अल्लाह के लिए" जो वाहिद, ज़बरदस्त क़हर वाला है। (16)

आज हर शख़्स को उस के आमाल का बदला दिया जाएगा, आज कोई ज़ुल्म न होगा, बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (17) और उन्हें क़रीब आने वाले रोज़े क़ियामत से डराएं, जब दिल ग़म से भरे गलों के नज़दीक (कलेजे मुँह को) आ रहे होंगे। ज़ालिमों के लिए नहीं कोई दोस्त, न कोई सिफ़ारिश करने वाला, जिस की बात मानी जाए। (18) वह जानता है आँखों की ख़ियानत और जो वह सीनों में छुपाते हैं। (19) और अल्लाह हक़ के साथ फ़ैसला करता है, और जो लोग उस के सिवा पुकारते हैं वह कुछ भी फ़ैसले नहीं करते, बेशक अल्लाह ही सुनने वाला, देखने वाला है। (20) क्या वह ज़मीन में चले फिरे नहीं? तो वह देखते कैसा अन्जाम हुआ उन लोगों का जो उन से पहले थे, वह क़ुव्वत में उन से बहुत ज़ियादा सख़्त थे, और ज़मीन में आसार (निशानियों के एतिबार से भी), तो अल्लाह ने उन्हें गुनाहों के सबब पकड़ा, और उन के लिए नहीं है कोई अल्लाह से बचाने वाला। (21) इस लिए कि उन के पास उन के रसूल खुली निशानियों ले कर आते थे, तो उन्हों ने कुफ़्र किया, पस उन्हें अल्लाह ने पकड़ा, बेशक वह क़व्वी, सख़्त अज़ाब देने वाला है। (22) और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को भेजा अपनी निशानियों और रोशन सनद के साथ। (23) फ़िरऔन और हामान और क़ारून की तरफ़ तो उन्हों ने कहा (मूसा अ तो) जादूगर, बड़ा झूटा है। (24) फिर जब वह उन के पास हमारी तरफ़ से हक़ के साथ आए, तो उन्हों ने कहाः उन के बेटों को क़त्ल कर डालो जो उस के साथ ईमान लाए, और उन की बेटियों को ज़िन्दा रहने दो, और काफ़िरों का दाओ गुमराही के सिवा (कुछ) नहीं। (25)

اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ؕ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक अल्लाह | आज | नहीं ज़ुल्म | वह जो उस ने कमाया (आमाल) | हर शख़्स | बदला दिया जाएगा | आज |

سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٧﴾ وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जब दिल (जमा) | क़रीब आने वाला रोज़ (क़ियामत) | और आप (स) उन्हें डराएं | 17 | हिसाब लेने वाला | तेज़ |

لَدَى الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ ؕ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और न कोई सिफारिश करने वाला | दोस्त | से- कोई | नहीं ज़ालिमों के लिए | ग़म से भरे हुए | गलों के नज़्दीक |

يُّطَاعُ ﴿١٨﴾ يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِى الصُّدُوْرُ ﴿١٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 19 | सीने (जमा) | छुपाते हैं | और जो कुछ | आँखों | ख़ियानत | वह जानता है | 18 | जिस की बात मानी जाए |

وَاللّٰهُ يَقْضِىْ بِالْحَقِّ ؕ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उस के सिवा | पुकारते हैं | और जो लोग | हक़ के साथ | फ़ैसला करता है | और अल्लाह |

لَا يَقْضُوْنَ بِشَىْءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿٢٠﴾ اَوَلَمْ ع

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या नहीं | 20 | देखने वाला | सुनने वाला | वही | बेशक अल्लाह | कुछ भी | नहीं फ़ैसले करते |

يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन लोगों का जो | अन्जाम | हुआ | कैसा | तो वह देखते | ज़मीन में | वह चले फिरे |

كَانُوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْا هُمْ اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاٰثَارًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और आसार | क़ुव्वत | इन से | ज़ियादा सख़्त | वह | वह थे | इन से पहले | थे |

فِى الْاَرْضِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह से | उन के लिए | है | और नहीं | उन के गुनाहों के सबब | तो उन्हें पकड़ा अल्लाह | ज़मीन में |

مِنْ وَّاقٍ ﴿٢١﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| खुली निशानियों के साथ | उन के रसूल | उन के पास आते थे | इस लिए कि वह | यह | 21 | बचाने वाला | से कोई |

فَكَفَرُوْا فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ قَوِىٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٢﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 22 | सख़्त अज़ाब वाला | क़व्वी | बेशक वह | पस पकड़ा उन्हें अल्लाह | तो उन्हों ने कुफ़्र किया |

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٣﴾ اِلٰى فِرْعَوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़िरऔन की तरफ़ | 23 | रोशन | और सनद | अपनी निशानियों के साथ | मूसा (अ) | और तहक़ीक़ हम ने भेजा |

وَهَامٰنَ وَقَارُوْنَ فَقَالُوْا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٢٤﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह आए उन के पास | फिर जब | 24 | बड़ा झूटा | जादूगर | तो उन्हों ने कहा | और क़ारून | और हामान |

بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوْٓا اَبْنَآءَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के साथ | ईमान लाए | वह जो | उन के बेटे | तुम क़त्ल करो | उन्हों ने कहा | हमारे पास (तरफ़) से | हक़ के साथ |

وَاسْتَحْيُوْا نِسَآءَهُمْ ؕ وَمَا كَيْدُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِىْ ضَلٰلٍ ﴿٢٥﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 25 | गुमराही में | सिवाए | काफ़िरों | और नहीं दाओ | उन की औरतें (बेटियां) | और ज़िन्दा रहने दो |

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِیْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰی وَلْیَدْعُ رَبَّهٗ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना रब | और उसे पुकारने दो | मूसा (अ) | मैं क़त्ल करूँ | मुझे छोड़ दो | फ़िरऔन | और कहा |

اِنِّیْٓ اَخَافُ اَنْ یُّبَدِّلَ دِیْنَكُمْ اَوْ اَنْ یُّظْهِرَ فِی الْاَرْضِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन में | यह कि ज़ाहिर कर दे (फैला दे) | या | तुम्हारा दीन | कि वह बदल दे | बेशक मैं डरता हूँ |

الْفَسَادَ ﴿٢٦﴾ وَقَالَ مُوْسٰۤی اِنِّیْ عُذْتُ بِرَبِّیْ وَرَبِّكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम्हारे रब से-की | अपने रब से-की | पनाह ले ली | बेशक मैं | मूसा (अ) | और कहा | 26 | फ़साद |

ع ٣ ٨ مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا یُؤْمِنُ بِیَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٢٧﴾ وَقَالَ رَجُلٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक मर्द | और कहा | 27 | रोज़े हिसाब पर | (जो) ईमान नही रखता | मग़रूर | हर | से |

مُّؤْمِنٌ ۖ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ یَكْتُمُ اِیْمَانَهٗۤ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| एक आदमी | क्या तुम क़त्ल करते हो | अपना ईमान | वह छुपाए हुए था | फ़िरऔन के लोग | से | मोमिन |

اَنْ یَّقُوْلَ رَبِّیَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَیِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ؕ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे रब की तरफ़ से | खुली निशानियों के साथ | और वह तुम्हारे पास आया है | मेरा रब अल्लाह | कि वह कहता है |

وَاِنْ یَّكُ كَاذِبًا فَعَلَیْهِ كَذِبُهٗ ۚ وَاِنْ یَّكُ صَادِقًا یُّصِبْكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हें पहुँचेगा | सच्चा | और अगर है वह | उस का झूट | तो उस पर | झूटा | वह है | और अगर |

بَعْضُ الَّذِیْ یَعِدُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یَهْدِیْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हद से गुज़रने वाला | जो हो | हिदायत नहीं देता | बेशक अल्लाह | तुम से वादा करता है | वह जो | कुछ |

كَذَّابٌ ﴿٢٨﴾ یٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْیَوْمَ ظٰهِرِیْنَ فِی الْاَرْضِ ؗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन में | ग़ालिब | आज | बादशाहत | तुम्हारे लिए | ऐ मेरी क़ौम | 28 | सख़्त झूटा |

فَمَنْ یَّنْصُرُنَا مِنْۢ بَاْسِ اللّٰهِ اِنْ جَآءَنَا ؕ قَالَ فِرْعَوْنُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़िरऔन | कहा | अगर वह आ जाए हम पर | अल्लाह का अ़ज़ाब | से | हमारी मदद करेगा | तो कौन |

مَاۤ اُرِیْكُمْ اِلَّا مَاۤ اَرٰی وَمَاۤ اَهْدِیْكُمْ اِلَّا سَبِیْلَ الرَّشَادِ ﴿٢٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 29 | भलाई | राह | मगर | और राह नही दिखाता तुम्हें | जो मैं देखता हूँ | मैं दिखाता (राए देता) तुम्हें मगर | नहीं |

وَقَالَ الَّذِیْۤ اٰمَنَ یٰقَوْمِ اِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَیْكُمْ مِّثْلَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मानिंद | तुम पर | मैं डरता हूँ | ऐ मेरी क़ौम | ईमान ले आया | वह शख़्स जो | और कहा |

یَوْمِ الْاَحْزَابِ ﴿٣٠﴾ مِثْلَ دَاْبِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और समूद | और आ़द | क़ौमे नूह | हाल | जैसे | 30 | (साबिक़ा) गिरोहों का दिन |

وَالَّذِیْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ؕ وَمَا اللّٰهُ یُرِیْدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ﴿٣١﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 31 | अपने बन्दों के लिए | कोई ज़ुल्म | चाहता | अल्लाह | और नही | उन के बाद | और जो लोग |

وَیٰقَوْمِ اِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَیْكُمْ یَوْمَ التَّنَادِ ﴿٣٢﴾

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 32 | दिन चीख़ ओ पुकार | तुम पर | मैं डरता हूँ | और ऐ मेरी क़ौम |

और फ़िरऔन ने कहाः मुझे छोड़ दो कि मैं मूसा (अ) को क़त्ल कर दूँ और उसे अपने रब को पुकारने दो, बेशक मैं डरता हूँ कि वह बदल देगा तुम्हारा दीन या ज़मीन में फ़साद फैलाएगा। (26)

और मूसा (अ) ने कहा, बेशक मैं ने पनाह ले ली है अपने और तुम्हारे रब की, हर मग़रूर से जो रोज़े हिसाब पर ईमान नहीं रखता। (27)

और कहा फ़िरऔन के लोगों में से एक मोमिन मर्द ने (जो) अपना ईमान छुपाए हुए था, क्या तुम एक आदमी को (महज इस बात पर) क़त्ल करते हो कि वह कहता है "मेरा रब अल्लाह है" और वह तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से खुली निशानियों के साथ आया है और अगर वह झूटा है तो उस के झूट (का वबाल) उसी पर होगा, और अगर वह सच्चा है तो वह जो तुम से वादा कर रहा है उस का कुछ (अ़ज़ाब) तुम पर (ज़रूर) पहुँचेगा, बेशक अल्लाह (उसे) हिदायत नहीं देता जो हद से गुज़रने वाला, सख़्त झूटा। (28)

ऐ मेरी क़ौम आज बादशाहत तुम्हारी है, तुम ग़ालिब हो ज़मीन में, अगर अल्लाह का अ़ज़ाब हम पर आ जाए तो उस से बचाने के लिए कौन हमारी मदद करेगा? फ़िरऔन ने कहा, मैं तुम्हें राए नही देता मगर जो मैं देखता हूँ, और मैं तुम्हें राह नहीं दिखाता मगर भलाई की राह। (29)

और उस शख़्स ने कहा जो ईमान ले आया था, ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम पर साबिक़ा गिरोहों के दिन के मानिंद (अ़ज़ाब नाज़िल होने से) डरता हूँ, (30)

जैसे हाल हुआ क़ौमे नूह और आ़द और समूद का और जो उन के बाद (हुए) और अल्लाह नहीं चाहता अपने बन्दों के लिए कोई ज़ुल्म। (31)

और ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम पर चीख़ ओ पुकार के दिन से डरता हूँ। (32)

जिस दिन तुम भागोगे पीठ फेर कर, तुम्हारे लिए अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा, और जिस को अल्लाह गुमराह करदे उस के लिए कोई नहीं हिदायत देने वाला। (33)
और तहक़ीक़ तुम्हारे पास इस से क़ब्ल यूसुफ़ (अ) वाज़ेह दलाइल के साथ आए, सो तुम हमेशा शक में रहे उस (के बारे में) जिस के साथ वह तुम्हारे पास आए, यहां तक कि जब वह फ़ौत हो गए तो तुम ने कहाः उस के बाद अल्लाह हरगिज कोई रसूल न भेजेगा, इसी तरह अल्लाह (उसे) गुमराह करता है जो हद से गुज़रने वाला, शक में रहने वाला हो। (34)
जो लोग अल्लाह की आयतों (के बारे) में झगड़ते हैं किसी दलील के बग़ैर जो उन के पास हो (उन की यह कज बहसी) सख्त ना पसंद है अल्लाह के नज़्दीक और उन के नज्दीक जो ईमान लाए, इसी तरह अल्लाह हर मगरूर, सरकश के दिल पर मुह्र लगा देता है। (35)
और फ़िरऔन ने कहा ऐ हामान! मेरे लिए बुलन्द इमारत बना, शायद कि मैं पहुँच जाऊँ। (36)
आस्मानों के रास्ते, पस मैं मूसा (अ) के माबूद को झाँक लूँ, और बेशक मैं उसे झूटा गुमान करता हूँ, और उसी तरह फ़िरऔन को उस के बुरे अ़मल आरास्ता दिखाए गए और वह रोक दिया गया सीधे रास्ते से, और फ़िरऔन की तदबीर सिर्फ़ तबाही ही थी। (37)
और जो शख़्स ईमान ले आया था, उस ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! तुम मेरी पैरवी करो, मैं तुम्हें भलाई का रास्ता दिखाऊँगा। (38)
ऐ मेरी क़ौम! इस के सिवा नहीं कि यह दुनिया की ज़िन्दगी थोड़ा सा फ़ाइदा है, और आख़िरत बेशक हमेशा रहने का घर है। (39)
जिस शख़्स ने बुरा अ़मल किया उसे उस जैसा बदला दिया जाएगा, और जिस ने अच्छा अ़मल किया, वह ख़ाह मर्द हो या औ़रत, बशर्त यह कि वह मोमिन हो, तो यही लोग दाख़िल होंगे जन्नत में, उस में उन्हें बे हिसाब रिज़्क़ दिया जाएगा। (40)

يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ ۚ مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गुमराह कर दे | और जिस को | बचाने वाला | कोई | अल्लाह से | नहीं तुम्हारे लिए | पीठ फेर कर | तुम फिर जाओगे (भागोगे) | जिस दिन |

اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ جَآءَكُمْ يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| इस से क़ब्ल | यूसुफ़ (अ) | और तहक़ीक़ आए तुम्हारे पास | 33 | कोई हिदायत देने वाला | तो नहीं उस के लिए | अल्लाह |

بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمْ بِهٖ ۗ حَتّٰٓى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम ने कहा | वह फ़ौत हो गए | जब | यहां तक | आए तुम्हारे पास जिस के साथ | शक में उस से | सो तुम हमेशा रहे | (वाज़ेह) दलाइल के साथ |

لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ۗ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ هُوَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जो वह | गुमराह करता है अल्लाह | इसी तरह | कोई रसूल | उस के बाद | हरगिज़ न भेजेगा अल्लाह |

مُسْرِفٌ مُّرْتَابُ ﴿٣٤﴾ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बग़ैर किसी दलील | अल्लाह की आयतों | में | झगड़ा करते हैं | जो लोग | 34 | शक में रहने वाला | हद से गुज़रने वाला |

اَتٰىهُمْ ۗ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۗ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुह्र लगा देता है अल्लाह | इसी तरह | ईमान लाए | उन लोगों के जो | और नज्दीक | अल्लाह के नज़्दीक | सख्त ना पसंद | आई उन के पास |

عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ﴿٣٥﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बना दे तो | ऐ हामान | फ़िरऔन | और कहा | 35 | सरकश | मग़रूर | हर दिल | पर |

لِيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ﴿٣٦﴾ اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ فَاَطَّلِعَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस झाँक लूँ | आस्मानों | रास्ते | 36 | रास्ते | पहुँच जाऊँ | शायद कि मैं | एक (बुलन्द) महल | मेरे लिए |

اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا ۗ وَكَذٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़िरऔन को | आरास्ता दिखाए गए | और उसी तरह | झूटा | उस अलबत्ता गुमान करता हूँ | और बेशक मैं | मूसा (अ) का माबूद | तरफ़, को |

سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ۗ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ﴿٣٧﴾ ع

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 37 | मगर (सिर्फ़) तबाही में | फ़िरऔन | और नहीं तदबीर | सीधा रास्ता | से | और वह रोक दिया गया | उस के बुरे अ़मल |

وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٣٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 38 | भलाई | रास्ता | मैं तुम्हें राह दिखाऊँगा | तुम मेरी पैरवी करो | ऐ मेरी क़ौम | वह जो ईमान ले आया था | और कहा |

يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ۡ وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह | आख़िरत | और बेशक | (थोड़ा) फ़ाइदा | दुनिया की ज़िन्दगी | यह | इस के सिवा नहीं | ऐ मेरी क़ौम |

دَارُ الْقَرَارِ ﴿٣٩﴾ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो-जिस | उसी जैसा | मगर | उसे बदला न दिया जाएगा | बुरा | अ़मल किया | जो-जिस | 39 | (हमेशा) रहने का घर |

عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो यही लोग | और (बशर्त यह कि) वह मोमिन | या औरत | मर्द | से | अच्छा | अ़मल किया |

يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٤٠﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 40 | बे हिसाब | उस में | वह रिज़्क़ दिए जाएंगे | जन्नत | दाख़िल होंगे |

النصف

وَيٰقَوْمِ مَا لِيْۤ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِيْۤ اِلَى النَّارِ ﴿٤١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 41 | आग (जहन्नम) | तरफ़ | और बुलाते हो तुम मुझे | नजात | तरफ़ | मैं बुलाता हूँ तुम्हें | क्या हुआ मुझे | और ऐ मेरी क़ौम |

تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई इल्म | उस का | मुझे | नहीं | जो | उस के साथ | और मैं शरीक ठहराऊँ | अल्लाह का | कि मैं इन्कार करूँ | तुम बुलाते हो मुझे |

وَاَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ﴿٤٢﴾ لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْۤ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तमु बुलाते हो मुझे | यह कि | कोई शक नहीं | 42 | बख़्शने वाला | ग़ालिब | तरफ़ | बुलाता हूँ तुम्हें | और मैं |

اِلَيْهِ لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ مَرَدَّنَاۤ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर जाना है हमें | और यह कि | आख़िरत में | और न | दुनिया में | बुलाना | नहीं उस के लिए | उस की तरफ़ |

اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٤٣﴾ فَسَتَذْكُرُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सो तुम जल्द याद करोगे | 43 | आग वाले (जहन्नमी) | वह वही | हद से बढ़ने वाले | और यह कि | अल्लाह की तरफ़ |

مَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ ؕ وَاُفَوِّضُ اَمْرِيْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| देखने वाला | बेशक अल्लाह | अल्लाह को | अपना काम | और मैं सौंपता हूँ | तुम्हें | जो मैं कहता हूँ |

بِالْعِبَادِ ﴿٤٤﴾ فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और घेर लिया | दाओ जो वह करते थे | बुराइयाँ | सो उसे बचा लिया अल्लाह ने | 44 | बन्दों को |

بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ﴿٤٥﴾ اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उस पर | वह हाज़िर किए जाते हैं | आग | 45 | बुरा अज़ाब | फ़िरऔन वालों को |

غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ۚ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ ۟ اَدْخِلُوْۤا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दाख़िल करो तुम | क़ियामत | क़ाइम होगी | और जिस दिन | और शाम | सुबह |

اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ﴿٤٦﴾ وَاِذْ يَتَحَآجُّوْنَ فِي النَّارِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आग (जहन्नम) में | वह बाहम झगड़ेंगे | और जब | 46 | अज़ाब | शदीद तरीन | फ़िरऔन वाले |

فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْۤا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे | बेशक हम थे | वह बड़े बनते थे | उन लोगों को जो | कमज़ोर | तो कहेंगे |

تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ﴿٤٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 47 | आग | से-का | कुछ हिस्सा | हम से | दूर कर दोगे | तुम | तो क्या | ताबे |

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْۤا اِنَّا كُلٌّ فِيْهَاۤ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़ैसला कर चुका है | बेशक अल्लाह | इस में | सब | बेशक हम | बड़े बनते थे | वह लोग जो | कहेंगे |

بَيْنَ الْعِبَادِ ﴿٤٨﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जहन्नम | निगहबान दारोग़ा (जमा) को | आग में | वह लोग जो | और कहेंगे | 48 | बन्दों के दरमियान |

ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ﴿٤٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 49 | से का अज़ाब | एक दिन | हम से | हल्का कर दे | अपने रब से | तुम दुआ करो |

और ऐ मेरी क़ौम! यह क्या बात है कि मैं तुम्हें नजात की तरफ़ बुलाता हूँ और तुम मुझे जहन्नम की तरफ़ बुलाते हो। (41)

तुम मुझे बुलाते हो कि मैं अल्लाह का इन्कार करूँ और उस के साथ उसे शरीक ठहराऊँ जिस का मुझे कोई इल्म नहीं और मैं तुम्हें ग़ालिब बख़्शने वाले (अल्लाह) की तरफ़ बुलाता हूँ। (42)

कोई शक नहीं कि तुम मुझे जिस की तरफ़ बुलाते हो उस का दुनिया में और आख़िरत में (कुछ भी) नहीं और यह कि हमें फिर जाना है अल्लाह की तरफ़, और यह कि हद से बढ़ जाने वाले ही जहन्नमी हैं। (43)

सो तुम जल्दी याद करोगे जो मैं तुम्हें कहता हूँ और मैं अपना काम (मामला) अल्लाह को सौंपता हूँ, बेशक अल्लाह बन्दों को देखने वाला है। (44)

सो अल्लाह ने उसे बचा लिया (उन) बुरे दाओ से जो वह करते थे, और फ़िरऔन वालों को बुरे अज़ाब ने घेर लिया। (45)

(जहन्नम की) आग जिस पर वह सुब्ह ओ शाम पेश किए जाते हैं, और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी (हुक्म होगा कि) तुम दाख़िल करो फ़िरऔन वालों को शदीद तरीन अज़ाब में। (46)

और जब वह जहन्नम में बाहम झगड़ेंगे तो कहेंगे कमज़ोर उन लोगों को जो बड़े बनते थे: बेशक हम (दुनिया में) तुम्हारे मातहत थे तो क्या (अब) तुम दूर कर दोगे हम से आग का कुछ हिस्सा? (47)

वह लोग जो बड़े बनते थे कहेंगे: बेशक हम सब इस में हैं, बेशक अल्लाह बन्दों के दरमियान फ़ैसला कर चुका है। (48)

और वह लोग जो आग में होंगे वह कहेंगे दारोग़ों (जहन्नम के निगहबान फ़रिश्तों) को: अपने रब से दुआ करो, एक दिन का अज़ाब हम से हल्का कर दे। (49)

वह कहेंगे, क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल खुली निशानियों के साथ नहीं आए थे? वह कहेंगे हाँ! वह कहेंगे तो तुम पुकारो, और न होगी काफ़िरों की पुकार मगर बेसूद। (50) बेशक हम ज़रूर मदद करते हैं अपने रसूलों की और उन लोगों की जो ईमान लाए दुनिया की ज़िन्दगी में और (उस दिन भी) जिस दिन गवाही देने वाले खड़े होंगे। (51) जिस दिन ज़ालिमों को नफ़ा न देगी उन की उज़्र ख़ाही, और उन के लिए लानत (अल्लाह की रहमत से दूरी) है और उन के लिए बुरा घर है। (52) और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को हिदायत (तौरेत) दी और हम ने बनी इसराईल को तौरेत का वारिस बनाया। (53) (जो) अक़्ल मन्दों के लिए हिदायत और नसीहत है। (54) पस आप (स) सब्र करें, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, और अपने क़ुसूरों के लिए मग़फ़िरत तलब करें, और अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करें शाम और सुबह। (55) बेशक जो लोग अल्लाह की आयात में झगड़ते हैं बग़ैर किसी सनद के, जो उन के पास आई हो, उन के दिलों में तकब्बुर (बड़ाई की हवस) के सिवा कुछ नहीं, जिस तक वह कभी पहुँचने वाले नहीं, पस आप अल्लाह की पनाह चाहें, बेशक वही सुनने वाला देखने वाला है। (56) यक़ीनन आस्मानों का और ज़मीन का पैदा करना लोगों के पैदा करने से बहुत बड़ा है, लेकिन अक्सर लोग समझते नहीं। (57) और बराबर नहीं नाबीना और बीना, और (न) वह जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अमल किए, और न वह जो बदकार हैं। बहुत कम तुम ग़ौर ओ फ़िक्र करते हो। (58)

قَالُوْٓا اَوَ لَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ قَالُوْا بَلٰى ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हाँ | वह कहेंगे | निशानियों के साथ | तुम्हारे रसूल | तुम्हारे पास आते | क्या नहीं थे | वह कहेंगे |

قَالُوْا فَادْعُوْا ۚ وَمَا دُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿٥٠﴾ ع ١٣ ١٠

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 50 | गुमराही में (बेसूद) | मगर | काफ़िर (जमा) | पुकार | और न | तो तुम पुकारो | वह कहेंगे |

اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दुनिया | ज़िन्दगी | में | ईमान लाए | और जो लोग | अपने रसूल (जमा) | ज़रूर मदद करते हैं | बेशक हम |

وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ ﴿٥١﴾ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़ालिम (जमा) | नफ़ा न देगी | जिस दिन | 51 | गवाही देने वाले | खड़े होंगे | और जिस दिन |

مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿٥٢﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और तहक़ीक़ हम ने दी | 52 | बुरा घर (ठिकाना) | और उन के लिए | लानत | और उन के लिए | उन की उज़्र ख़ाही |

مُوْسَى الْهُدٰى وَاَوْرَثْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ ﴿٥٣﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 53 | किताब (तौरेत) | बनी इस्राईल | और हम ने वारिस बनाया | हिदायत | मूसा (अ) |

هُدًى وَّذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ ﴿٥٤﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह का वादा | बेशक | पस आप (स) सब्र करें | 54 | अक़्ल मन्दों के लिए | और नसीहत | हिदायत |

حَقٌّ وَّاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ | और पाकीज़गी बयान करें | अपने गुनाहों के लिए | और मग़फ़िरत तलब करें | सच्चा |

بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ﴿٥٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की आयात | में | झगड़ते हैं | वह लोग जो | बेशक | 55 | और सुबह | शाम |

بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا كِبْرٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तकब्बुर | सिवाए | उन के सीने (दिल) | में | नही | उन के पास आई हो | किसी सनद | बग़ैर |

مَّا هُمْ بِبَالِغِيْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वही सुनने वाला | बेशक वह | अल्लाह की | पस आप (स) पनाह चाहें | उस तक पहुँचने वाले | नहीं वह |

الْبَصِيْرُ ﴿٥٦﴾ لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| से | बहुत बड़ा | और ज़मीन | आस्मानों | यक़ीनन पैदा करना | 56 | देखने वाला |

خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٧﴾

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 57 | जानते (समझते) नहीं | अक्सर लोग | और लेकिन | लोगों को पैदा करना |

وَمَا يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

| | | | |
|---|---|---|---|
| और जो लोग ईमान लाए | और बीना | नाबीना | और बराबर नही |

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَلَا الْمُسِيْٓءُ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٨﴾

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 58 | जो तुम ग़ौर ओ फ़िक्र करते हो | बहुत कम | और न बदकार | और उन्हों ने अच्छे अमल किए |

إِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | क़ियामत | ज़रूर आने वाली | नहीं शक | इस में | और लेकिन | अक्सर | लोग |

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान नही लाते | 59 | और कहा | तुम्हारे रब ने | तुम दुआ करो मुझ से | मैं कुबूल करूंगा | तुम्हारी |

اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | जो लोग | तकब्बुर करते हैं | से | मेरी इबादत | अनक़रीब वह दाखिल होंगे | जहन्नम |

ع ٦ ١١ دٰخِرِيْنَ ﴿٦٠﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़ार हो कर | 60 | अल्लाह | वह जिस ने | बनाई | तुम्हारे लिए | रात | ताकि तुम सुकून हासिल करो | उस में |

وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और दिन | दिखाने को | बेशक अल्लाह | फ़ज़्ल वाला | लोगों पर |

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٦١﴾ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और लेकिन | अक्सर लोग | शुक्र नही करते | 61 | यह है | अल्लाह | तुम्हारा रब | पैदा करने वाला |

كُلِّ شَيْءٍ ۘ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۫ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٦٢﴾ كَذٰلِكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हर शै | नहीं कोई माबूद | उस के सिवा | तो कहां तुम | उलटे फिरे जाते हो | 62 | इसी तरह |

يُؤْفَكُ الَّذِيْنَ كَانُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٦٣﴾ اَللّٰهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उलटे फिर जाते हैं | वह लोग जो | थे | अल्लाह की आयात से-का | वह इन्कार करते हैं | 63 | अल्लाह |

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً وَّصَوَّرَكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जिस ने | बनाया | तुम्हारे लिए | ज़मीन | क़रारगाह | और आस्मान | छत | और तुम्हें सूरत दी |

فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ ذٰلِكُمُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तो बहुत ही हसीन | तुम्हें सूरत दी | और तुम्हें रिज़्क़ दिया | से | पाकीज़ा चीज़ें | यह है |

اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚۖ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٤﴾ هُوَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार | सो बरकत वाला है अल्लाह | परवरदिगार सारे जहानों का | 64 | वही |

الْحَيُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ؕ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ज़िन्दा रहने वाला | नहीं कोई माबूद | सिवाए उस के | पस तुम पुकारो उसे | खालिस कर के | उस के लिए दीन |

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٥﴾ قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए | परवरदिगार सारे जहानों का | 65 | आप (स) फ़रमा दें | बेशक मैं | मुझे मना कर दिया गया है | कि परस्तिश करूँ मैं |

الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِيَ الْبَيِّنٰتُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह जिन की | तुम पूजा करते हो | अल्लाह के सिवा | जब | वह मेरे पास आ गईं | खुली निशानियां |

مِنْ رَّبِّيْ وَاُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٦﴾

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मेरे रब से | और मुझे हुक्म दिया गया | कि मैं अपनी गर्दन झुका दूँ | परवरदिगार के लिए तमाम जहानों का | 66 |

बेशक क़ियामत ज़रूर आने वाली है, इस में कोई शक नहीं, लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (59) और तुम्हारे रब ने कहाः तुम मुझ से दुआ करो, मैं तुम्हारी (दुआ) कुबूल करूंगा, बेशक जो लोग मेरी इबादत से तकब्बुर (सरताबी) करते हैं अनक़रीब ख़ार हो कर वह जहन्नम में दाख़िल होंगे। (60) अल्लाह वह है जिस ने बनाई तुम्हारे लिए रात ताकि तुम उस में सुकून हासिल करो और दिन दिखाने को (रौशन बनाया), बेशक अल्लाह फ़ज़्ल वाला है लोगों पर और लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। (61) यह है अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार, हर शै का पैदा करने वाला, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तो तुम कहां उलटे फिरे जाते हो? (62) इसी तरह वह लोग उलटे फिर जाते हैं जो अल्लाह की आयात का इन्कार करते हैं। (63) अल्लाह, जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को क़रारगाह बनाया और आस्मान को छत (बनाया) और तुम्हें सूरत दी तो बहुत ही हसीन सूरत दी, और तुम्हें पाकीज़ा चीज़ों से रिज़्क़ दिया, यह है अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार, सो बरकत वाला है अल्लाह, सारे जहां का परवरदिगार। (64) वही ज़िन्दा रहने वाला है, नहीं कोई माबूद उस के सिवा, पस तुम उसी को पुकारो उस के लिए दीन ख़ालिस करके, तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, सारे जहान का परवरदिगार। (65) आप (स) फ़रमा दें: बेशक मुझे मना कर दिया गया है कि मैं उन की परस्तिश करूँ जिन की तुम अल्लाह के सिवा पूजा करते हो, जब मेरे पास आ गईं मेरे रब (की तरफ़) से खुली निशानियां, और मुझे हुक्म दिया गया है कि तमाम जहानों के परवरदिगार के लिए अपनी गर्दन झुका दूँ, (66)

वह जिस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर लोथड़े से, फिर वह तुम्हें निकालता है (माँ के पेट से) बच्चा सा, फिर (तुम्हें बाक़ी रखता है) ताकि तुम अपनी जवानी को पहुँचो, फिर (ज़िन्दा रखता है) ताकि तुम बूढ़े हो जाओ और तुम में से (कोई है) जो फ़ौत हो जाता है उस से क़ब्ल, और ताकि तुम सब (अपने अपने) वक़्ते मुक़र्ररा को पहुँचो और ताकि तुम समझो। (67)
वही है जो ज़िन्दगी अता करता है और मारता है, फिर जब वह किसी अमर का फ़ैसला करता है तो उस के सिवा नहीं कि वह उस को कहता है "हो जा" सो वह हो जाता है (68)
क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह की आयात में झगड़ते हैं? वह कहां फिरे जाते (भटकते) हैं? (69)
जिन लोगों ने किताब को झुटलाया और उसे जिस के साथ हम ने अपने रसूलों को भेजा, पस वह जल्द जान लेंगे। (70)
जब उन की गर्दनों में तौक़ और ज़न्जीरें होंगी, वह घसीटे जाएंगे। (71)
खौलते हुए पानी में, फिर वह आग (जहन्नम) में झोंक दिए जाएंगे। (72)
फिर कहा जाएगा उन को, कहां हैं वह जिन को तुम अल्लाह के सिवा शरीक करते थे? (73)
वह कहेंगे वह तो हम से गुम हो गए (कहीं नज़र नहीं आते) बल्कि हम तो इस से क़ब्ल किसी चीज को पुकारते ही न थे, इसी तरह अल्लाह काफ़िरों को गुमराह करता है। (74)
यह उस का बदला है जो तुम ज़मीन में नाहक़ खुश होते (फिरते) थे, और बदला है उस का जिस पर तुम इतराते थे। (75)
तुम जहन्नम के दरवाज़ों में दाखिल हो जाओ, हमेशा उस में रहने को, सो बड़ा बनने वालों का बुरा है ठिकाना। (76)
पस आप (स) सब्र करें, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, पस अगर हम आप को उस (अज़ाब) का कुछ हिस्सा दिखा दें जो हम उन से वादा करते हैं या (उस से क़ब्ल) हम आप को वफ़ात दे दें (बहर सूरत) वह हमारी ही तरफ़ लौटाए जाएंगे। (77)

هُوَ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| लोथड़े से | फिर | नुत्फ़े से | फिर | मिट्टी से | पैदा किया तुम्हें | वह जिस ने |

ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُيُوْخًا ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बूढ़े | ताकि तुम हो जाओ | फिर | अपनी जवानी | ताकि तुम पहुँचो | फिर | बच्चा सा | तुम्हें निकालता है वह | फिर |

وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوْٓا اَجَلًا مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और ताकि तुम | वक़्ते मुक़र्ररा | और ताकि तुम पहुँचो | उस से क़ब्ल | जो फ़ौत हो जाता है | और तुम में से |

تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾ هُوَ الَّذِىْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो इस के सिवा नहीं | किसी अमर | वह फ़ैसला करता है | फिर जब | और मारता है | ज़िन्दगी अता करता है | वही है जो | 67 | समझो |

يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٦٨﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ ع ٨ ١٢

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | झगड़ते हैं | जो लोग | तरफ़ | क्या नहीं देखा तुम ने | 68 | सो वह हो जाता है | हो जा | वह कहता है उस के लिए |

اٰيٰتِ اللّٰهِ ۭ اَنّٰى يُصْرَفُوْنَ ﴿٦٩﴾ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِالْكِتٰبِ وَبِمَآ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उस को जो | किताब को | झुटलाया | जिन लोगों ने | 69 | फिरे जाते हैं | कहां | अल्लाह की आयात |

اَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۟ۛ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٠﴾ اِذِ الْاَغْلٰلُ معانقة ١٣ عند المتأخرين ١٢

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तौक़ (जमा) | जब | 70 | वह जान लेंगे | पस जल्द | अपने रसूल | उस के साथ | हम ने भेजा |

فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ ۭ يُسْحَبُوْنَ ﴿٧١﴾ فِى الْحَمِيْمِ ۙ ثُمَّ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| फिर | खौलते हुए पानी में | 71 | वह घसीटे जाएंगे | और ज़न्जीरें | उन की गर्दनों में |

فِى النَّارِ يُسْجَرُوْنَ ﴿٧٢﴾ ثُمَّ قِيْلَ لَهُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٣﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 73 | शरीक करते | जिन को तुम थे | कहां | उन को | कहा जाएगा | फिर | 72 | वह झोंक दिए जाएंगे | आग में |

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पुकारते थे हम | नहीं | बल्कि | हम से | वह गुम हो गए | वह कहेंगे | अल्लाह के सिवा |

مِنْ قَبْلُ شَيْـــًٔا ۭ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٤﴾ ذٰلِكُمْ بِمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस का बदला जो | यह | 74 | काफ़िरों | गुमराह करता है अल्लाह | इसी तरह | कोई चीज़ | इस से क़ब्ल |

كُنْتُمْ تَفْرَحُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُوْنَ ﴿٧٥﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 75 | इतराते | तुम थे | और बदला उस का जो | नाहक़ | ज़मीन में | तुम खुश होते थे |

اُدْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ठिकाना | सो बुरा | उस में | हमेशा रहने को | जहन्नम | दरवाज़े | तुम दाखिल हो जाओ |

الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٧٦﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम आप (स) को दिखा दें | पस अगर | सच्चा | अल्लाह का वादा | बेशक | आप सब्र करें | 76 | तकब्बुर करने (बड़ा बनने) वालों का |

بَعْضَ الَّذِىْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ﴿٧٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 77 | वह लौटाए जाएंगे | पस हमारी तरफ़ | हम आप (स) को वफ़ात दे दें | या | हम उन से वादा करते हैं | वह जो | बाज़ (कुछ हिस्सा) |

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आप (स) पर- से | हम ने हाल बयान किया | जो- जिन | उन में से | आप (स) से पहले | बहुत से रसूल | और तहक़ीक़ हम ने भेजे |

وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۗ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लाए | कि | किसी रसूल के लिए | और न था | आप (स) पर- से | हम ने हाल नही बयान किया | जो- जिन | और उन में से |

بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और घाटे में रह गए | हक़ के साथ | फ़ैसला कर दिया गया | अल्लाह का हुक्म | आ गया | सो जब | अल्लाह के हुक्म से | मगर- बग़ैर | कोई निशानी |

ع ٨ ١٠ ١٢ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٧٨﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चौपाए | तुम्हारे लिए | बनाए | वह जिस ने | अल्लाह | 78 | अहले बातिल | उस वक़्त |

لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बहुत से फ़ाइदे | उन में | और तुम्हारे लिए | 79 | तुम खाते हो | और उन से | उन से | ताकि तुम सवार हो |

وَلِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا حَاجَةً فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और उन पर | तुम्हारे सीनों (दिलों में) | हाजत | उन पर | और ताकि तुम पहुँचो |

وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ ۖ فَاَيَّ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُنْكِرُوْنَ ﴿٨١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 81 | तुम इन्कार करोगे | अल्लाह की निशानियों का | तो किन किन | अपनी निशानियां | और वह दिखाता है तुम्हें | 80 | लदे फिरते हो | और कशतियों पर |

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अन्जाम | हुआ | कैसा | तो वह देखते | ज़मीन में | पस क्या वह चले फिरे नही |

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ كَانُوْٓا اَكْثَرَ مِنْهُمْ وَاَشَدَّ قُوَّةً

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कुव्वत | और बहुत ज़ियादा | इन से | बहुत जियादा | वह थे | इन से कब्ल | उन लोगों का जो |

وَّاٰثَارًا فِي الْاَرْضِ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 82 | वह कमाते (करते) थे | जो | उन के | वह काम आया | सो न | ज़मीन में | और आसार |

فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرِحُوْا بِمَا عِنْدَهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| इल्म से | उन के पास | खुश हुए (इतराने लगे) उस पर जो | खुली निशानियों के साथ | उन के रसूल | उन के पास आए | फिर जब |

وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٨٣﴾ فَلَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारा अजाब | उन्हों ने देखा | फिर जब | 83 | मज़ाक़ उड़ाते | उस का | थे | जो वह | उन्हें | और घेर लिया |

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ مُشْرِكِيْنَ ﴿٨٤﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 84 | शरीक करते | उस के साथ | हम थे | वह जिस | और हम मुन्किर हुए | वह वाहिद | अल्लाह पर | हम ईमान लाए | वह कहने लगे |

فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا ۭ سُنَّتَ اللّٰهِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह का दस्तूर | हमारा अज़ाब | जब उन्हों ने देख लिया | उन का ईमान | उन को नफ़ा देता | तो न हुआ |

ع ٩ ١١ ١٢ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ فِيْ عِبَادِهٖ ۚ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٥﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 85 | काफ़िर (जमा) | उस वक़्त | और घाटे में रह गए | उस के बन्दों में | गुज़र चुका है | वह जो |

और तहक़ीक़ हम ने आप (स) से पहले बहुत से रसूल भेजे, उन में से (कुछ हैं) जिन का हाल हम ने आप से बयान किया और उन में से (कुछ हैं) जिन का हाल हम ने आप से बयान नहीं किया, और किसी रसूल के लिए (मक़्दूर) न था कि वह कोई निशानी अल्लाह के हुक्म के बग़ैर ले आए, सो जब अल्लाह का हुक्म आ गया, हक़ के साथ फ़ैसला कर दिया गया, और अहले बातिल उस वक़्त घाटे में रह गए। (78)

अल्लाह (ही) है जिस ने तुम्हारे लिए चौपाए बनाए। ताकि तुम सवार हो उन में से (बाज़ पर), और उन में से (बाज़) तुम खाते हो, (79)

और तुम्हारे लिए उन में बहुत से फ़ाइदे हैं और ताकि तुम उन पर (सवार हो कर) अपने दिलों की मुराद (मन्ज़िले मक़्सूद) को पहुँचो और उन पर और कशतियों पर तुम लदे फिरते हो। (80)

और वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है, तुम अल्लाह की किन किन निशानियों का इन्कार करोगे? (81)

पस क्या वह जमीन में चले फिरे नहीं? तो वह देखते कि कैसा हुआ अन्जाम उन लोगों का जो उन से क़ब्ल थे, वह तादाद और कुव्वत में इन से बहुत ज़ियादा थे, और वह जमीन में (इन से बढ़ चढ़ कर) आसार (छोड़ गए) सो जो वह करते थे उन के (कुछ) काम न आया। (82)

फिर जब उन के पास उन के रसूल खुली निशानियों के साथ आए तो वह उस इल्म पर इतराने लगे जो उन के पास था और उन्हें उस (अज़ाब) ने घेर लिया जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (83)

फिर जब उन्हों ने हमारा अजाब देखा तो वह कहने लगे हम अल्लाह वाहिद पर ईमान लाए और हम उस के मुन्किर हुए जिस को हम उस के साथ शरीक करते थे। (84)

तो (उस वक्त ऐसा) न हुआ कि उन का ईमान उन को नफ़ा देता जब उन्हों ने हमारा अज़ाब देख लिया, अल्लाह का दस्तूर है जो उस के बन्दों में गुज़र चुका (होता चला आया है) और उस वक्त काफ़िर घाटे में रह गए। (85)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
हा-मीम। (1)
(यह कलाम) नाज़िल किया हुआ है निहायत मेहरबान रहम करने वाले (अल्लाह की तरफ़) से। (2)
यह एक किताब है जिस की आयतें वाज़ेह कर दी गई हैं, कुरआन अ़रबी ज़बान में उन लोगों के लिए जो जानते हैं। (3)
ख़ुशख़बरी देने वाला, डर सुनाने वाला, सो उन में से अक्सर ने मुँह फेर लिया, पस वह सुनते नहीं। (4)
और उन्होंने कहा कि हमारे दिल पर्दों में हैं उस (बात) से जिस की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो, और हमारे कानों में गिरानी है, और हमारे और तुम्हारे दरमियान एक पर्दा है, सो तुम अपना काम करो, बेशक हम अपना काम करते हैं। (5)
आप (स) फ़रमा दें, इस के सिवा नहीं कि मैं तुम जैसा एक बशर हूँ, मेरी तरफ़ वहि की जाती है कि तुम्हारा माबूद, माबूदे यकता है, पस सीधे रहो उस के हुज़ूर और उस से मग़्फ़िरत मांगो, और ख़राबी है मुशरिकों के लिए। (6)
वह जो लोग ज़कात नहीं देते और वह आख़िरत के मुन्किर हैं। (7)
बेशक जो लोग ईमान लाए, और उन्होंने अच्छे अ़मल किए, उन के लिए अजर है न ख़तम होने वाला। (8)
आप (स) फ़रमा दें क्या तुम उस का इन्कार करते हो जिस ने ज़मीन को दो (2) दिनों में पैदा किया और तुम उस के शरीक ठहराते हो, यही है सारे जहानों का रब। (9)
और उस ने उस (ज़मीन) में बनाए उस के ऊपर पहाड़, और उस में बरकत रखी, और उस में चार (4) दिनों में उन की ख़ुराकें मुक़र्रर कीं, यकसां तमाम सवाल करने वालों के लिए। (10)
फिर उस ने आस्मान की तरफ़ तवज्जुह फ़रमाई, और वह एक धुआं था, तो उस ने उस से और ज़मीन से कहा तुम दोनों आओ ख़ुशी से या नाख़ुशी से, उन दोनों ने कहा, हम दोनों ख़ुशी से हाज़िर हैं। (11)

آيَاتُهَا ٥٤ ❀ (٤١) سُوْرَةُ حٰمٓ السَّجْدَةِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

आयात 54 — (41) सूरह हा-मीम सजदा — रुकुआत 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حٰمٓ ۝١ تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝٢ كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुरआन | जुदा जुदा (वाज़ेह) कर दी गई उस की आयतें | एक किताब | 2 | रहम करने वाला | निहायत मेहरबान | से | नाज़िल किया हुआ | 1 | हा-मीम |

عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝٣ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस वह | उन में से अक्सर | सो मुँह फेर लिया | और डर सुनाने वाला | ख़ुशख़बरी देने वाला | 3 | वह जानते हैं | उन लोगों के लिए | अ़रबी (ज़बान) में |

لَا يَسْمَعُوْنَ ۝٤ وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की तरफ़ | तुम बुलाते हो हमें | उस से जो | पर्दों में | हमारे दिल | और उन्होंने कहा | 4 | वह सुनते नहीं |

وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ۝٥

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | काम करते हैं | बेशक हम | सो तुम काम करो | एक पर्दा | और तुम्हारे दरमियान | और हमारे दरमियान | बोझ-गिरानी | और हमारे कानों में |

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यकता | माबूद | तुम्हारा माबूद | यह कि | मेरी तरफ़ | वहि की जाती है | तुम जैसा | कि मैं एक बशर | इस के सिवा नहीं | फ़रमा दें |

فَاسْتَقِيْمُوْٓا اِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ۝٦ الَّذِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जो | 6 | मुशरिकों के लिए | और ख़राबी | उस से मग़्फ़िरत मांगो | उस की तरफ़ (उस के हुज़ूर) | पस सीधे रहो |

لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝٧ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान लाए | जो लोग | बेशक | 7 | मुन्किर हैं | वह | आख़िरत का | और वह | ज़कात | नहीं देते |

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝٨ قُلْ اَئِنَّكُمْ ع ٨ ١٥

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या तुम | फ़रमा दें | 8 | ख़तम न होने वाला | अजर | उन के लिए | और उन्होंने अ़मल किए अच्छे |

لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِيْ خَلَقَ الْاَرْضَ فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ لَهٗٓ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के | और तुम ठहराते हो | दो (2) दिनों में | ज़मीन | पैदा किया | उस का जिस ने | इन्कार करते हो |

اَنْدَادًا ۗ ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٩ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के ऊपर | पहाड़ (जमा) | उस में | और उस ने बनाए | 9 | सारे जहानों का रब | वह | शरीक (जमा) |

وَبٰرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَآ اَقْوَاتَهَا فِيْٓ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ ۗ سَوَآءً

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यकसां | चार (4) दिन (जमा) | में | उन की ख़ुराकें | उस में | और मुक़र्रर कीं | उस में | और बरकत रखी |

لِّلسَّآئِلِيْنَ ۝١٠ ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो उस ने कहा | एक धुआं | और वह | आस्मान की तरफ़ | फिर उस ने तवज्जुह फ़रमाई | 10 | तमाम सवाल करने वालों के लिए |

لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ۗ قَالَتَآ اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ ۝١١

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | ख़ुशी से | हम दोनों आए (हाज़िर हैं) | उन दोनों ने कहा | नाख़ुशी से | या | ख़ुशी से | तुम दोनों आओ | और ज़मीन से | उस से |

فَقَضٰهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِیْ یَوْمَیْنِ وَاَوْحٰی فِیْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस का काम | हर आस्मान | में | और वहि कर दी | दो (2) दिनों में | सात आस्मान | फिर उस ने बनाए |

وَزَیَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْیَا بِمَصَابِیْحَ ۖ وَحِفْظًا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِیْرُ الْعَزِیْزِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग़ालिब | अन्दाज़ा (फ़ैसला) | यह | और हिफ़ाज़त के लिए | चिराग़ों (सितारों) से | दुनिया | आस्मान | और हम ने ज़ीनत दी |

الْعَلِیْمِ ﴿١٢﴾ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चिंघाड़ | जैसी | एक चिंघाड़ | मैं डराता हूँ तुम्हें | तो फ़रमा दें | वह मुँह मोड़ लें | फिर अगर | 12 | इल्म वाला |

عَادٍ وَّثَمُوْدَ ﴿١٣﴾ اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْ بَیْنِ اَیْدِیْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और उन के पीछे से | उन के आगे से | रसूल | जब आए उन के पास | 13 | आ़द और समूद |

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ قَالُوْا لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़रिश्ते | तो ज़रूर उतारता | हमारा रब | अगर चाहता | उन्हों ने जवाब दिया | सिवाए अल्लाह | कि तुम न इबादत करो |

فَاِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿١٤﴾ فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो वह तकब्बुर (ग़ुरूर) करने लगे | आ़द | फिर जो | 14 | मुन्किर हैं | उस के साथ | तुम भेजे गए हो | उस का जो | पस बेशक |

فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ؕ اَوَلَمْ یَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि अल्लाह | वह देखते | क्या नही | कुव्वत | हम से | ज़ियादा | कौन | और वह कहने लगे | नाहक़ | ज़मीन (मुल्क) में |

الَّذِیْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَكَانُوْا بِاٰیٰتِنَا یَجْحَدُوْنَ ﴿١٥﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15 | इन्कार करते | हमारी आयतों का | और वह थे | कुव्वत | उन से | बहुत ज़ियादा | वह | पैदा किया उन्हें | वह जिस ने |

فَاَرْسَلْنَا عَلَیْهِمْ رِیْحًا صَرْصَرًا فِیْٓ اَیَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِیْقَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि हम चखाएं उन्हें | नहूसत | दिनों में | तुन्द ओ तेज़ | हवा | उन पर | पस हम ने भेजी |

عَذَابَ الْخِزْیِ فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰی وَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह | ज़ियादा रुस्वा करने वाला | आख़िरत | और अलबत्ता अज़ाब | दुनिया की ज़िन्दगी | में | रुस्वाई | अ़ज़ाब |

لَا یُنْصَرُوْنَ ﴿١٦﴾ وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَیْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰی عَلَی الْهُدٰی

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हिदायत पर | अन्धा रहना | ता उन्हों ने पसंद किया | सो हम ने रास्ता दिखाया उन्हें | समूद | और रहे | 16 | मदद न किए जाएंगे |

فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ﴿١٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 17 | वह कमाते (करते थे) | उस की सजा में जो | ज़िल्लत | अ़ज़ाब | चिंघाड़ | तो उन्हें आ पकड़ा |

ع ٢ / ١٦ وَنَجَّیْنَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا یَتَّقُوْنَ ﴿١٨﴾ وَیَوْمَ یُحْشَرُ اَعْدَآءُ اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के दुश्मन | जमा किए जाएंगे | और जिस दिन | 18 | और वह परहेज़गारी करते थे | ईमान लाए | वह लोग जो | और हम ने बचा लिया |

اِلَی النَّارِ فَهُمْ یُوْزَعُوْنَ ﴿١٩﴾ حَتّٰٓی اِذَا مَا جَآءُوْهَا شَهِدَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गवाही देंगे | वह आएंगे उस के पास | जब | यहां तक कि | 19 | गिरोह गिरोह किए जाएंगे | तो वह | जहन्नम की तरफ़ |

عَلَیْهِمْ سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿٢٠﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | जो वह करते थे | उस पर | और उन की जिल्दें (गोश्त पोस्त) | और उन की आँखें | उन के कान | उन पर |

फिर उस ने दो दिनों में सात आस्मान बनाए और हर आस्मान में उस के काम की वहि कर दी, और हम ने आस्माने दुनिया को सितारों से ज़ीनत दी और खूब महफूज कर दिया, यह ग़ालिब, इल्म वाले (अल्लाह का) फ़ैसला है। (12)
फिर अगर वह मुँह मोड़ लें तो आप (स) फ़रमा दें कि मैं तुम्हें डराता हूँ एक चिंघाड़ से, जैसी चिंघाड़ आ़द ओ समूद (पर अ़ज़ाब आया था)। (13)
जब उन के पास रसूल आए, उन के आगे से और उन के पीछे से कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, तो उन्हों ने जवाब दिया कि अगर हमारा रब चाहता तो जरूर फ़रिशते उतारता, पस तुम जिस (पैग़ाम) के साथ भेजे गए हो, हम बेशक उस के मुन्किर हैं। (14)
फिर जो आद थे वह मुल्क में ग़रूर करने लगे नाहक़, और वह कहने लगे कि हम से ज़ियादा कुव्वत में कौन है? क्या वह नहीं देखते कि अल्लाह जिस ने उन्हें पैदा किया, वह कुव्वत में उन से बहुत ज़ियादा है, और वह हमारी आयतों का इन्कार करते थे। (15)
पस हम ने भेजी उन पर नहूसत के दिनों में तुन्द ओ तेज हवा, ताकि हम उन्हें रुस्वाई का अ़जाब चखाएं दुनिया की ज़िन्दगी में, और अलबत्ता आखिरत का अजाब ज़ियादा रुस्वा करने वाला है, और न वह मदद किए जाएंगे। (16)
और रहे समूद, सो हम ने उन्हें रास्ता दिखाया तो उन्हों ने हिदायत (के मुक़ाबले) पर अन्धा रहना पसंद किया, तो उन्हें चिंघाड़ ने आ पकड़ा (यानी) ज़िल्लत के अ़ज़ाब ने, उस की सज़ा में जो वह करते थे। (17)
और हम ने उन लोगों को बचा लिया जो ईमान लाए, और वह परहेज़गारी करते थे। (18)
और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन जहन्नम की तरफ़ जमा किए (हांके) जाएंगे तो वह गिरोह दर गिरोह (तक़सीम) कर दिए जाएंगे। (19)
यहां तक कि जब वह उस के पास आएंगे तो उन पर उन के कान, और उन की आँखें, और उन के गोश्त पोस्त गवाही देंगे उस पर जो वह करते थे। (20)

और वह अपने गोश्त पोस्त से कहेंगे, तुम ने हमारे खिलाफ़ गवाही क्यों दी? वह जवाब देंगेः हमें उस अल्लाह ने गोयाई दी जिस ने हर शै को गोया कर दिया है, और उसी ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (21)
और जो तुम छुपाते थे (तुम ने समझा) कि तुम्हारे खिलाफ़ गवाही न देंगे तुम्हारे कान और न तुम्हारी आँखें और न तुम्हारे गोश्त पोस्त, बल्कि तुम ने गुमान कर लिया था कि अल्लाह उस से (उस के बारे में) बहुत कुछ नहीं जानता जो तुम करते हो। (22)
तुम्हारे उस गुमान (खयाले बातिल) ने जो तुम ने अपने रब के बारे में किया था तुम्हें हलाक किया, सो तुम हो गए खसारा पाने वालों में से। (23)
फिर अगर वह सब्र करें तो (भी) जहन्नम उन के लिए ठिकाना है, और अगर वह (अब) माफ़ी चाहें तो वह माफ़ी कुबूल किए जाने वालों में से न होंगे। (24)
और हम ने उन के कुछ हमनशीन मुक़र्रर किए, तो उन्हों ने उन के लिए आरास्ता कर दिखाया जो उन के आगे और जो उन के पीछे था और उन पर (अ़ज़ाब की वईद का) क़ौल पूरा हो गया जैसे उन उम्मतों में जो गुज़र चुकी हैं उन से क़ब्ल जिन्नात और इन्सानों की, बेशक वह खसारा पाने वाले थे। (25)
और उन लोगों ने कहा जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िरों ने) कि तुम इस कुरआन को सुनो ही मत, और अगर (सुनाने लगें) तो इस में गुल मचाओ, शायद कि तुम ग़ालिब आ जाओ। (26)
पस हम काफ़िरों को ज़रूर सख़्त अ़ज़ाब चखाएंगे, और अलबत्ता हम उन के बदतरीन आमाल का उन्हें ज़रूर बदला देंगे। (27)
यह है अल्लाह के दुश्मनों का बदला जहन्नम, और उन के लिए है उस में हमेशगी का घर, उस का बदला जो वह हमारी आयतों का इन्कार करते थे। (28)

وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَيْنَا ؕ قَالُوْٓا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हमें गोयाई दी अल्लाह ने | वह जवाब देंगे | हम पर (हमारे ख़िलाफ़) | तुम ने गवाही दी | क्यों | अपनी जिल्दों (गोश्त पोस्त) से | और वह कहेंगे |

الَّذِيْٓ اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَّهُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّاِلَيْهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उसी की तरफ़ | पहली बार | तुम्हें पैदा किया | और वह-उस | हर शै | गोया अ़ता फ़रमाया | वह जिस ने |

تُرْجَعُوْنَ ﴿٢١﴾ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तुम पर (तुम्हारे ख़िलाफ़) | कि गवाही देंगे | तुम छुपाते थे | और जो | 21 | तुम लौटाए जाओगे |

سَمْعُكُمْ وَلَآ اَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُوْدُكُمْ وَلٰكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنَّ اللّٰهَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कि अल्लाह | तुम ने गुमान कर लिया था | और लेकिन (बल्कि) | और न तुम्हारी जिल्दें (गोश्त पोस्त) | और न तुम्हारी आँखें | तुम्हारे कान |

لَا يَعْلَمُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِيْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जो | तुम्हारा गुमान | और उस | 22 | तुम करते हो | जो | बहुत कुछ | नहीं जानता |

ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾ فَاِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर अगर | 23 | ख़सारा पाने वाले | से | सो तुम हो गए | हलाक किया तुम्हें | अपने रब के मुतअ़ल्लिक़ | तुम ने गुमान किया था |

يَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّسْتَعْتِبُوْا فَمَا هُمْ مِّنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | तो न वह | वह माफ़ी चाहें | और अगर | उन के लिए | ठिकाना | तो जहन्नम | वह सब्र करें |

الْمُعْتَبِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ فَزَيَّنُوْا لَهُمْ مَّا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | तो उन्हों ने आरास्ता कर दिखाया उन के लिए | कुछ हमनशीन | उन के लिए | और हम ने मुक़र्रर किए | 24 | माफ़ी क़ुबूल किए जाने वाले |

بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन उम्मतों में | क़ौल | उन पर | और पूरा हो गया | और जो उन के पीछे | उन के आगे |

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۚ اِنَّهُمْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बेशक वह | और इन्सान | जिन्नात में से-की | उन से क़ब्ल | जो गुज़र चुकी |

كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ ع ٣ ١٢

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| इस कुरआन को | तुम मत सुनो | उन्हों ने कुफ़्र किया | उन लोगों ने जो | और कहा | 25 | ख़सारा पाने वाले थे |

وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ﴿٢٦﴾ فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन लोगों को जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | पस हम ज़रूर चखाएंगे | 26 | तुम ग़ालिब आ जाओ | शायद कि तुम | उस में | और गुल मचाओ |

عَذَابًا شَدِيْدًا وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ

| | | | |
|---|---|---|---|
| वह जो | बदतरीन | और हम उन्हें ज़रूर बदला देंगे | सख़्त अ़ज़ाब |

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾ ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعْدَآءِ اللّٰهِ النَّارُ ۚ لَهُمْ فِيْهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | उन के लिए | जहन्नम | अल्लाह के दुश्मन (जमा) | बदला | यह | 27 | वह करते थे (आमाल) |

دَارُ الْخُلْدِ ؕ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿٢٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 28 | इन्कार करते | हमारी आयतों का | वह थे | उस का जो | बदला | हमेशगी का घर |

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا رَبَّنَآ اَرِنَا الَّذَيْنِ اَضَلّٰنَا مِنَ الْجِنِّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जिन्नात में से | जिन्हों ने गुमराह किया हमें | उन्हें | हमें दिखा दे | ऐ हमारे रब | वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | और कहेंगे |

وَالْاِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ اَقْدَامِنَا لِيَكُوْنَا مِنَ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿٢٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 29 | इन्तिहाई ज़लील (जमा) | से | ताकि वह हों | अपने पाऊँ | तले | हम उन दोनों को डालें | और इन्सानों |

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | उतरते हैं | वह साबित क़दम रहे | फिर | हमारा रब अल्लाह | उन्हों ने कहा | वह जिन्हों ने | बेशक |

الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِىْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह जो | जन्नत पर | और तुम खुश हो जाओ | और न ग़मगीन हो | कि न तुम ख़ौफ खाओ | फ़रिश्ते |

كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٠﴾ نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और आख़िरत में | दुनिया | ज़िन्दगी में | तुम्हारे रफ़ीक़ | हम | 30 | तुम्हें वादा दिया जाता है |

وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِىْٓ اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ﴿٣١﴾ نُزُلًا مِّنْ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | ज़ियाफ़त | 31 | तुम मांगोगे | जो | उस में | और तुम्हारे लिए | तुम्हारे दिल | जो चाहें | उस में | और तुम्हारे लिए |

غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ ﴿٣٢﴾ وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ

ع ۴
۱۸

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अ़मल करे | अल्लाह की तरफ़ | बुलाए | उस से जो | बात | बेहतर | और किस | 32 | रहम करने वाला | बख़्शने वाला |

صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِىْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَا تَسْتَوِى الْحَسَنَةُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नेकी | और बराबर नहीं होती | 33 | मुसलमानों | से | बेशक मैं | और वह कहे | अच्छे |

وَلَا السَّيِّئَةُ ؕ اِدْفَعْ بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِىْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उस के दरमियान | आप के दरमियान | वह जो शख़्स | तो यकायक | बेहतरीन | वह | उस से जो | दूर कर दें आप (स) | और न बुराई |

عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِىٌّ حَمِيْمٌ ﴿٣٤﴾ وَمَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं | सब्र किया | वह जिन्हों ने | मगर | और नहीं मिलती यह | 34 | क़राबती (जिगरी) | दोस्त | गोया कि वह | अ़दावत |

يُلَقّٰهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿٣٥﴾ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई वस्वसा | शैतान | से | तुम्हें वस्वसा आए | और अगर | 35 | बड़े नसीब वाले | मगर | मिलती यह |

فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٦﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और दिन | रात | उस की निशानियाँ | और से | 36 | जानने वाला | सुनने वाला | वही | बेशक वह | अल्लाह की | तो पनाह चाहें |

وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ؕ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम सिज्दा करो अल्लाह को | चाँद को | और न | सूरज को | तुम न सिज्दा करो | और चाँद | और सूरज |

الَّذِىْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿٣٧﴾ فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सो वह जो | तकब्बुर करें | पस अगर वह | 37 | इबादत करते | सिर्फ़ उस की | तुम हो | अगर | पैदा किया उन्हें | वह जिस ने |

عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْـَٔمُوْنَ ﴿٣٨﴾ السجدة

السجدة ۱۱

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 38 | नहीं उकताते | और वह | और दिन | रात | उस की | वह तस्बीह करते हैं | आप के रब के नज़्दीक |

और काफ़िर कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हमें दिखा दे जिन्हों ने हमें गुमराह किया था जिन्नात में से और इन्सानों में से कि हम उन को अपने पाऊँ तले (रौन्द) डालें ताकि वह इन्तिहाई ज़लीलों में से हों। (29)
बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है, फिर उस पर साबित क़दम रहे, उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं कि न तुम ख़ौफ़ खाओ और न तुम ग़मगीन हो, और तमु उस जन्नत पर खुश हो जाओ जिस का तुम्हें वादा दिया जाता है। (30)
हम तुम्हारे रफ़ीक़ हैं ज़िन्दगी में दुनिया की और आख़िरत में (भी), और तुम्हारे लिए उस में (मौजूद हैं) जो तुम्हारे दिल चाहें, और तुम्हारे लिए उस में (मौजूद हैं) जो तुम मांगोगे। (31)
(यह) ज़ियाफ़त है बख़्शने वाले, रहीम (अल्लाह) की तरफ़ से। (32)
और उस से बेहतर किस का क़ौल? जो बुलाए अल्लाह की तरफ़ और अच्छे अ़मल करे और कहेः बेशक मैं मुसलमानों में से हूँ। (33)
और बराबर नहीं होती नेकी और बुराई, आप (स) (बुराई को) इस (अन्दाज से) दूर करें जो बेहतरीन हो तो यकायक वह शख़्स कि आप के दरमियान और उस के दरमियान अ़दावत थी (ऐसे हो जाएगा कि) गोया वह जिगरी दोस्त है। (34)
और यह (सिफ़त) नहीं मिलती मगर उन्हें जिन्हों ने सब्र किया और यह नहीं मिलती मगर बड़े नसीब वालों को। (35)
और अगर तुम्हें शैतान की तरफ़ से आए कोई वस्वसा तो अल्लाह की पनाह चाहें, बेशक वह सुनने वाला, जानने वाला है। (36)
और उस की निशानियों में से हैं रात और दिन, और सूरज और चाँद, तुम न सूरज को सिज्दा करो न चाँद को, और तुम अल्लाह को सिज्दा करो, वह जिस ने उन (सब) को पैदा किया अगर तुम सिर्फ़ उस की इबादत करते हो। (37)
पस अगर वह तकब्बुर करें (तो उस से क्या फ़र्क़ पड़ता है), सो वह (फ़रिश्ते) जो आप के रब के नज़्दीक हैं वह रात दिन उस की तस्बीह करते हैं, और वह उकताते नहीं। (38)

और उस की निशानियों में से है कि तू ज़मीन को सुनसान देखता है, फिर जब हम ने उस पर पानी उतारा तो वह लहलहाने लगती है और फूलती है, बेशक वह जिस ने उस को ज़िन्दा किया, अलबत्ता वह मुर्दों को जिन्दा करने वाला है, बेशक वह हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (39)

बेशक जो लोग हमारी आयात में कज रवी करते हैं वह हम पर (हम से) पोशीदा नहीं, तो क्या जो शख्स आग में डाला जाए बेहतर है या जो रोज़े क़ियामत अमान के साथ आए? तुम जो चाहो करो, बेशक तुम जो कुछ करते हो वह देखने वाला है। (40)

बेशक जिन लोगों ने कुरआन का इन्कार किया जब वह उन के पास आया (वह अपना अन्जाम देख लेंगे), बेशक यह ज़बरदस्त किताब है। (41)

उस के पास नहीं आता बातिल उस के सामने से और न उस के पीछे से, नाज़िल किया गया हिक्मत वाले, सज़ावारे हम्द (अल्लाह की तरफ़) से। (42)

आप (स) को उस के सिवा नहीं कहा जाता जो आप (स) से पहले रसूलों को कहा जा चुका है, बेशक आप (स) का रब बड़ी मग्फ़िरत वाला, और दर्दनाक सजा देने वाला है। (43)

और अगर हम कुरआन को अ़जमी ज़बान का बनाते तो वह कहते: उस की आयतें क्यों न साफ़ साफ़ बयान की गईं? क्या किताब अ़जमी और रसूल अ़रबी? आप (स) फ़रमा दें: जो ईमान लाए यह उन लोगों के लिए हिदायत और शिफ़ा है, और जो लोग ईमान नहीं लाते उन के कानों में गिरानी है और यह उन के लिए आंखों पर पट्टी, (गोया) यह लोग पुकारे जाते हैं किसी दूर जगह से। (44)

और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को किताब दी तो उस में इख़्तिलाफ़ किया गया और अगर न आप (स) के रब की तरफ़ से एक बात पहले ठहर चुकी होती तो उन के दरमियान फ़ैसला हो चुका होता, और बेशक यह ज़रूर उस से तरद्दुद में डालने वाले शक में हैं। (45)

जिस ने अच्छे अ़मल किए तो अपनी ज़ात के लिए (किए) और जिस ने बुराई की उस का बवाल उसी पर होगा, और आप (स) का रब अपने बन्दों पर मुत्लक़ ज़ुल्म करने वाला नहीं। (46)

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पानी | उस पर | हम ने उतारा | फिर जब | दबी हुई (सुनसान) | ज़मीन | तू देखता है | कि तू | और उस की निशानियों में से |

اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ؕ اِنَّ الَّذِيْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ؕ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हर शै पर | बेशक वह | अलबत्ता ज़िन्दा करने वाला मुर्दों को | उस को जिन्दा किया | वह जिस ने | बेशक | और फूलती है | वह लहलहाने लगती है |

قَدِيْرٌ ﴿٣٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम पर | वह पोशीदा नहीं | हमारी आयात में | कज रवी करते हैं | जो लोग | बेशक | 39 | कुदरत रखने वाला |

اَفَمَنْ يُّلْقٰى فِي النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْٓ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِعْمَلُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम करो | रोजे क़ियामत | अमान के साथ | आए | या जा | बेहतर | आग में | डाला जाए | तो क्या जो |

مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٤٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब | ज़िक्र (कुरआन) का | वह जिन्हों ने इन्कार किया | बेशक | 40 | देखने वाला | जो तुम करते हो | बेशक वह | जो तुम चाहो |

جَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّهٗ لَكِتٰبٌ عَزِيْزٌ ﴿٤١﴾ لَّا يَاْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के सामने से | बातिल | उस के पास नहीं आता | 41 | ज़बरदस्त | अलबत्ता किताब है | और बेशक यह | वह आया उन के पास |

وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ ؕ تَنْزِيْلٌ مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ ﴿٤٢﴾ مَا يُقَالُ لَكَ اِلَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सिवाए | आप को | नहीं कहा जाता | 42 | सज़ावारे हम्द | हिक्मत वाले | से | नाज़िल किया गया | और न उस के पीछे से |

مَا قَدْ قِيْلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ وَّذُوْ عِقَابٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और सज़ा देने वाला | बड़ी मग़्फ़िरत वाला | आप (स) का रब | बेशक | आप (स) से क़ब्ल | रसूलों को | जो कहा जा चुका है |

اَلِيْمٍ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की आयतें | साफ़ बयान की गईं | क्यों न | तो वह कहते | अ़जमी (ज़बान का) | कुरआन (को) | और अगर हम बनाते उसे | 43 | दर्दनाक |

ءَاَعْجَمِيٌّ وَّعَرَبِيٌّ ؕ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और शिफ़ा | हिदायत | ईमान लाए | उन लोगों के लिए जो | वह-यह | फ़रमा दें | और अ़रबी (रसूल) | क्या अजमी (किताब) |

وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ؕ اُولٰٓئِكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह लोग | अन्धापन | उन पर | और वह-यह | गिरानी | उन के कानों में | ईमान नहीं लाए | और जो लोग |

قرا حفص بتسهيل الهمزة الثانية ١٢

يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٤٤﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ ع ٥ ١٣ ١٩

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किताब | मूसा (अ) | और तहक़ीक़ हम ने दी | 44 | दूर | किसी जगह | से | पुकारे जाते हैं |

فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो फ़ैसला हो चुका होता | आप (स) के रब की तरफ़ से | पहले ठहर चुकी | एक बात | और अगर न होती | उस में | तो इख़्तिलाफ़ किया गया |

بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿٤٥﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अच्छे | अमल किए | जो जिस | 45 | तरद्दुद में डालने वाले शक में | उस से | ज़रूर शक में | और बेशक वह | उन के दरमियान |

فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٤٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 46 | अपने बन्दों पर | मुत्लक़ ज़ुल्म करने वाला | आप (स) का रब | और नहीं | तो उस पर (उस का बवाल) | बुराई की | और जिस | तो अपनी ज़ात के लिए |

إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرٰتٍ مِّنْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| से | फल (जमा) | कोई | और नहीं निकलता | क़ियामत का इल्म | उस की तरफ़ लौटाया (हवाले किया) जाता है |

أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثٰى وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهٖ ۚ وَيَوْمَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जिस दिन | उस के इल्म में | मगर | और न वह बच्चा जनती है | कोई औरत | और नहीं हामिला होती है | उस के ग़िलाफ़ों (गाभों) |

يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَآءِي ۙ قَالُوٓا ءَاذَنّٰكَ ۙ مَا مِنَّا مِنْ شَهِيدٍ ﴿٤٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 47 | कोई शाहिद | नहीं हम से | इत्तिलाअ़ दे दी हम ने तुझे | वह कहेंगे | मेरे शरीक | कहां | वह पुकारेगा उन्हें |

وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوا يَدْعُونَ مِنْ قَبْلُ ۖ وَظَنُّوا مَا لَهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नहीं उन के लिए | और उन्हों ने समझ लिया | उस से क़ब्ल | जो वह पुकारते थे | उन से | और खोया गया |

مِّنْ مَّحِيصٍ ﴿٤٨﴾ لَا يَسْـَٔمُ الْإِنْسَانُ مِنْ دُعَآءِ الْخَيْرِ ۡ وَإِنْ مَّسَّهُ الشَّرُّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बुराई | उसे लग जाए | और अगर | भलाई मांगने | से | इन्सान | नहीं थकता | 48 | कोई बचाओ (ख़लासी) |

فَيَـُٔوسٌ قَنُوطٌ ﴿٤٩﴾ وَلَئِنْ أَذَقْنٰهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किसी तकलीफ़ | के बाद | अपनी तरफ़ से | रहमत | हम चखाएं उसे | और अलबत्ता अगर | 49 | नाउम्मीद | तो मायूस हो जाता है |

مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ هٰذَا لِي ۙ وَمَآ أَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَلَئِنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और अलबत्ता अगर | क़ाइम होने वाली | क़ियामत | और मैं ख़याल नहीं करता | यह मेरे लिए | तो वह ज़रूर कहेगा | जो उस को पहुंची |

رُّجِعْتُ إِلٰى رَبِّيٓ إِنَّ لِي عِنْدَهٗ لَلْحُسْنٰى ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पस हम ज़रूर आगाह कर देंगे | अलबत्ता भलाई | उस के पास | मेरे लिए | बेशक | अपने रब की तरफ़ | मुझे लौटाया गया |

الَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا ۡ وَلَنُذِيقَنَّهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٠﴾ وَإِذَآ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जब | 50 | सख़्त | एक अज़ाब | से | और अलबत्ता हम ज़रूर चखाएंगे उन्हें | उस से जो उन्हों ने किया (आमाल) | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) |

أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَـَٔا بِجَانِبِهٖ ۚ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बुराई | आ लगे उसे | और जब | अपना पहलू | और बदल लेता है | वह मुँह मोड़ लेता है | इन्सान पर | हम इन्आम करते हैं |

فَذُو دُعَآءٍ عَرِيضٍ ﴿٥١﴾ قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के पास | से | अगर हो | क्या तुम ने देखा | आप (स) फ़रमा दें | 51 | (लम्बी) चौड़ी | तो दुआओं वाला |

ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهٖ مَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِي شِقَاقٍۭ بَعِيدٍ ﴿٥٢﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 52 | दूर दराज़ | ज़िद | में | वह | उस से जो | बड़ा गुमराह | कौन | तुम ने कुफ़्र किया उस से | फिर |

سَنُرِيهِمْ ءَايٰتِنَا فِي الْأٰفَاقِ وَفِيٓ أَنْفُسِهِمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कि यह | उन के लिए | ज़ाहिर हो जाए | यहां तक | और उन की ज़ात में | अतराफ़े आलम में | हम जल्द दिखा देंगे उन्हें अपनी आयात |

الْحَقُّ ۗ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٥٣﴾ أَلَآ إِنَّهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़ूब याद रखो। बेशक वह | 53 | शाहिद | हर शै | पर | कि वह | आप (स) के रब के लिए | क्या काफ़ी नहीं | हक़ |

فِي مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآءِ رَبِّهِمْ ۗ أَلَآ إِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطٌ ﴿٥٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 54 | अहाता किए हुए | हर शै पर-का | याद रखो। बेशक वह | अपना रब | मुलाक़ात से | शक में |

क़ियामत का इल्म उसी के हवाले किया जाता है, और कोई फल अपने गाभों से नहीं निकलता और कोई औरत (मादा) हामिला नहीं होती और वह बच्चा नहीं जनती मगर (यह सब) उस के इल्म में होता है। और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगाः कहां हैं मेरे शरीक? वह कहेंगेः हम ने तुझे इत्तिलाअ़ दे दी है कि हम में से कोई (उस का) शाहिद (गवाह) नहीं। **(47)** और खोया गया उन से जिसे वह (अल्लाह के सिवा) पुकारते थे उस से क़ब्ल, और उन्हों ने समझ लिया कि (अब) उन के लिए कोई ख़लासी नहीं। **(48)** इन्सान भलाई मांगने से नहीं थकता, और अगर उसे कोई बुराई लग जाए तो वह नाउम्मीद हो कर मायूस हो जाता है। **(49)** और अलबत्ता अगर उसे कोई तकलीफ़ पहुँचने के बाद हम अपनी तरफ़ से अपनी रहमत का मज़ा चखाएं तो वह ज़रूर कहेगाः यह मेरे लिए है, और मैं ख़याल नहीं करता कि क़ियामत क़ाइम होने वाली है, और अगर मुझे अपने रब की तरफ़ लौटाया गया तो बेशक उस के पास मेरे लिए अलबत्ता भलाई होगी, पस हम काफ़िरों को उन के आमाल से ज़रूर आगाह करेंगे, और अलबत्ता हम उन्हें ज़रूर चखाएंगे एक अज़ाब सख़्त। **(50)** और जब हम इन्सान पर इन्आम करते हैं तो वह मुँह मोड़ लेता है, और अपना पहलू बदल लेता है, और जब उसे (ज़रा) बुराई लगे तो लम्बी चौड़ी दुआओं वाला (बन जाता है)। **(51)** आप (स) फ़रमा देंः क्या तुम ने देखा (यह तो बतलाओ) अगर (यह क़ुरआन) अल्लाह के पास से हो, फिर तुम ने उस से कुफ़्र किया तो उस से बड़ा गुमराह कौन जो मुख़ालिफ़त में दूर तक निकल गया हो? **(52)** हम जल्द अपनी आयात उन्हें अतराफ़े आलम में और (ख़ुद) उन की ज़ात में दिखा देंगे यहां तक कि उन पर ज़ाहिर हो जाएगा कि यह (क़ुरआन) हक़ है, क्या आप (स) के रब के लिए काफ़ी नहीं कि वह हर शै का शाहिद है। **(53)** ख़ूब याद रखो! बेशक वह अपने रब की मुलाक़ात (रूबरू हाज़री) से शक में हैं, याद रखो! बेशक वह हर शै का अहाता किए हुए है। **(54)**

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
हा-मीम। (1)
अ़यन-सीन-क़ाफ़। (2)
इसी तरह आप (स) की तरफ़ और आप (स) के पहलों की तरफ़ वहि फ़रमाता है अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला। (3)
उसी के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में, और वह बुलन्द, अ़ज़मत वाला है। (4)
क़रीब है कि आस्मान उन के ऊपर से फट पड़ें। और फ़रिश्ते अपने रब की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते हैं और उन के लिए मग़्फ़िरत तलब करते हैं जो ज़मीन में हैं. याद रखो! बेशक अल्लाह ही बख़्शने वाला रहम करने वाला (5)
और जो लोग ठहराते हैं अल्लाह के सिवा (दूसरों को) रफ़ीक़, अल्लाह उन्हें देख रहा है, आप (स) उन पर ज़िम्मेदार नहीं। (6)
और उसी तरह हम ने आप (स) की तरफ़ वहि किया क़ुरआन अ़रबी ज़बान में ताकि आप (स) डराएं अहले मक्का को और उन्हें जो उस के इर्द गिर्द हैं, और आप (स) डराएं जमा होने के दिन से, कोई शक नहीं उस में, एक फ़रीक़ जन्नत में होगा और एक फ़रीक़ दोज़ख़ में। (7)
और अगर अल्लाह चाहता तो ज़रूर उन्हें एक उम्मत बना देता और लेकिन वह जिसे चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल करता है, और ज़ालिमों के लिए न कोई कारसाज़ है और न मददगार। (8)
क्या उन्हों ने अल्लाह के सिवा कारसाज़ ठहरा लिए हैं? पस अल्लाह ही कारसाज़ है, वही मुर्दों को ज़िन्दा करता है. और वही हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। (9)
और जिस बात में तुम इख़्तिलाफ़ करते हो उस का फ़ैसला अल्लाह के पास है, वही है अल्लाह मेरा रब, उस पर मैं ने भरोसा किया, और उसी की तरफ़ मैं रुजूअ़ करता हूँ। (10)

## آيَاتُهَا ٥٣ ❀ (٤٢) سُوْرَةُ الشُّوْرٰى ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٥

रुकूआ़त 5 — (42) सूरतुश शूरा सलाह औ मशवरा — आयात 53

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حٰمٓ ﴿١﴾ عٓسٓقٓ ﴿٢﴾ كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप (स) से पहले | वह जो | और तरफ़ | आप (स) की तरफ़ | वहि फ़रमाता है | इसी तरह | 2 | अ़यन-सीन-क़ाफ़ | 1 | हा मीम |

اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٣﴾ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَهُوَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह | ज़मीन में | और जो | आस्मानों में | जो | उसी के लिए | 3 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | अल्लाह |

الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿٤﴾ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلٰٓئِكَةُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और फ़रिश्ते | उन के ऊपर से | फट पड़ें | आस्मानों (जमा) | क़रीब है | 4 | अ़ज़मत वाला | बुलन्द |

يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ۭ اَلَآ اِنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक अल्लाह | याद रखो | ज़मीन में | उस के लिए जो | और वह मग़्फ़िरत तलब करते हैं | अपने रब की तारीफ़ के साथ | तस्बीह करते हैं |

هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٥﴾ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ اللّٰهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | रफ़ीक़ | उस के सिवा | ठहराते हैं | और जो लोग | 5 | मेहरबान | बख़्शने वाला | वह-वही |

حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ ڮ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿٦﴾ وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने वहि किया | और उसी तरह | 6 | ज़िम्मेदार | उन पर | और आप (स) नहीं | निगरान उन पर (उन्हें देख रहा है) |

اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और आप (स) डराएं | उस के इर्द गिर्द | और जो | बस्तियों का मरकज़ (अहले मक्का) | ताकि आप (स) डराएं | अ़रबी ज़बान | क़ुरआन | आप (स) की तरफ़ |

يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۭ فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيْقٌ فِي السَّعِيْرِ ﴿٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | दोज़ख़ में | और एक फ़रीक़ | जन्नत में | एक फ़रीक़ | उस में | नहीं शक | जमा होने का दिन |

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जिसे चाहता है | वह दाख़िल करता है | और लेकिन | एक उम्मत | ज़रूर बना देता उन्हें | चाहता अल्लाह | और अगर |

فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ وَالظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٨﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने ठहरा लिए | क्या | 8 | और न मददगार | कारसाज़ | कोई | नहीं उन के लिए | और ज़ालिम (जमा) | अपनी रहमत में |

مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۚ فَاللّٰهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِ الْمَوْتٰى ۡ وَهُوَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह | मुर्दों | ज़िन्दा करता है | और वही | वही कारसाज़ | पस अल्लाह | कारसाज़ (जमा) | उस के सिवा |

عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٩﴾ وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهٗٓ ع ٩ ٢

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो उस का फ़ैसला | किसी चीज़ | उस में | इख़्तिलाफ़ करते हो तुम | और जो-जिस | 9 | क़ुदरत रखने वाला | चीज़ | हर | पर |

اِلَى اللّٰهِ ۭ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّيْ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ڰ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿١٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | मैं रुजूअ़ करता हूँ | और उस की तरफ़ | भरोसा किया मैं ने | उस पर | मेरा रब | वही है अल्लाह | तरफ़-पास अल्लाह |

فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जोड़े | तुम्हारी ज़ात (जिन्स) से | तुम्हारे लिए | उस ने बनाए | और ज़मीन | पैदा करने वाला आस्मानों |

وَّمِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا ۚ يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ؕ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह | कोई शै | उस क मिस्ल | नहीं | इस (दुनिया) में | वह फैलाता है तुम्हें | जोड़े | चौपायों | और से |

السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿۱۱﴾ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يَبْسُطُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह फ़राख़ करता है | और ज़मीन | आस्मानों | कुंजियां | उस के लिए (पास) | 11 | देखने वाला | सुनने वाला |

الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۲﴾ شَرَعَ لَكُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे लिए | उस ने मुक़र्रर किया | 12 | जानने वाला | हर शै का | बेशक वह | और तंग करता है | वह चाहता है | जिस के लिए | रिज़्क़ |

مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आप की तरफ़ (को) | हम ने वहि की | और वह जिस | नूह (अ) | उस का | उस ने जिस का हुक्म दिया | वही दीन |

وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰٓى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दीन | कि तुम क़ाइम करो | और ईसा (अ) | और मूसा (अ) | इब्राहीम (अ) | उस का | और जिस का हुक्म दिया हम ने |

وَلَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ ؕ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ مَا تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ ؕ اَللّٰهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | उस की तरफ़ | जिस की तरफ़ आप उन्हें बुलाते हैं | मुशरिकों पर | सख़्त | उस में | और तफ़र्रुक़ा न डालो तुम |

يَجْتَبِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ ﴿۱۳﴾ وَمَا تَفَرَّقُوْٓا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने तफ़र्रुक़ा न डाला | 13 | जो रुजूअ करता है | उस की तरफ़ | और हिदायत देता है | जिसे वह चाहता है | अपनी तरफ़ | चुन लेता है |

اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ؕ وَلَوْلَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और अगर न | आपस की | ज़िद | इल्म | कि आ गया उन के पास | उस के बाद | मगर |

كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के दरमियान | तो फ़ैसला कर दिया जाता | एक मुद्दते मुक़र्ररा | तक | आप के रब की तरफ़ से | गुज़र चुका होता | फ़ैसला |

وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْرِثُوا الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿۱۴﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 14 | तरद्दुद में डालने वाला | उस से | अलबत्ता वह शक में | उन के बाद | किताब के वारिस बनाए गए | जो लोग | और बेशक |

فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ وَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ ۚ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन की ख़ाहिशात | और आप न चलें | जैसा कि मैं ने हुक्म दिया है आप (स) को | और क़ाइम रहें | आप बुलाएं | पस उसी के लिए |

وَقُلْ اٰمَنْتُ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ ۚ وَاُمِرْتُ لِاَعْدِلَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कि मैं इंसाफ़ करूँ | और मुझे हुक्म दिया गया | से हर किताब | नाज़िल की अल्लाह ने | उस पर जो | मैं ईमान ले आया | और कहें |

بَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ؕ لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे आमाल | और तुम्हारे लिए | हमारे आमाल | हमारे लिए | और तुम्हारा रब | हमारा रब | अल्लाह | तुम्हारे दरमियान |

لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿۱۵﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 15 | बाज़गश्त (लौटना) | और उसी की तरफ़ | हमारे दरमियान (हमें) | जमा करेगा | अल्लाह | और तुम्हारे दरमियान | कोई हुज्जत (झगड़ा) नहीं हमारे दरमियान |

आस्मानों और ज़मीन का पैदा करने वाला, उस ने बनाए तुम्हारे लिए तुम्हारी जिन्स से जोड़े और चौपायों से जोड़े, वह तुम्हें इस (दुनिया) में फैलाता है। उस के मिस्ल कोई शै नहीं, और वह सुनने वाला, देखने वाला। **(11)** उसी के पास हैं आस्मानों और ज़मीन की कुंजियां, वह रिज़्क़ फ़राख़ करता है जिस के लिए वह चाहता है (और जिस पर चाहे) तंग कर देता है, बेशक वह हर शै का जानने वाला। **(12)** उस ने तुम्हारे लिए वही दीन मुक़र्रर किया है जिस के क़ाइम करने का उस ने हुक्म दिया था नूह (अ) को और जिस की हम ने आप (स) की तरफ़ वहि की, और जिस का हुक्म हम ने इब्राहीम (अ) और मूसा (अ) और ईसा (अ) को दिया था कि तुम दीन क़ाइम करो और उस में तफ़र्रुक़ा न डालो, वह मुशरिकों पर गरां गुज़रती है जिस की तरफ़ आप (स) उन्हें बुलाते हैं, अल्लाह अपनी तरफ़ (अपने क़ुर्ब के लिए) जिस को चाहता है चुन लेता है। और जो उस की तरफ़ रुजूअ करता है उसे अपनी तरफ़ से हिदायत देता है। **(13)** और उन्हों ने तफ़र्रुक़ा न डाला मगर उस के बाद कि उन के पास इल्म (वहि) आ गया आपस की ज़िद की वजह से, और अगर आप (स) के रब की तरफ़ से एक मुद्दते मुक़र्ररा तक मोहलत देने का फ़ैसला न गुज़र चुका होता तो उन के दरमियान फ़ैसला कर दिया जाता, और बेशक जो लोग उन के बाद किताब के वारिस बनाए गए अलबत्ता वह उस से तरद्दुद में डालने वाले शक में हैं। **(14)** पस उसी के लिए आप (स) बुलाएं, और (उस पर) क़ाइम रहें जैसा कि मैं ने आप को हुक्म दिया है और आप (स) उन की ख़ाहिशात पर न (चलें), और कहें कि मैं ईमान ले आया हर किताब पर जो अल्लाह ने नाज़िल की और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं तुम्हारे दरमियान इंसाफ़ करूँ, अल्लाह हमारा भी रब है और तुम्हारा भी रब है। हमारे लिए हमारे आमाल और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल, हमारे और तुम्हारे दरमियान कोई झगड़ा नहीं, अल्लाह हमें जमा करेगा, और उसी की तरफ़ बाज़गश्त है। **(15)**

और जो लोग अल्लाह के बारे में झगड़ा करते हैं उस के बाद कि उस को क़ुबूल कर लिया गया, उन की हुज्जत (क़ुबूल करने वालों से झगड़ा) उन के रब के हां लग़्व (बेसबात) है और उन पर ग़ज़ब है, और उन के लिए सख़्त अ़ज़ाब है। **(16)** अल्लाह है जिस ने किताब हक़ के साथ नाज़िल की और मीज़ान (भी), और तुझे क्या ख़बर कि शायद क़ियामत क़रीब हो। **(17)** उस की वह लोग जल्दी मचाते हैं जो उस पर ईमान नहीं रखते। और जो लोग ईमान लाए वह उस से डरते हैं और वह जानते हैं कि यह हक़ है, याद रखो! बेशक जो लोग क़ियामत के बारे में झगड़ते हैं वह दूर (बड़ी) गुमराही में हैं। **(18)** अल्लाह अपने बन्दों पर मेहरबान है, वह जिसे चाहता है रिज़्क़ देता है, और वह क़वी, ग़ालिब है। **(19)** जो शख़्स चाहता है खेती आख़िरत की, हम उस की खेती में उस के लिए इज़ाफ़ा कर देते हैं, और जो दुनिया की खेती चाहता है हम उसे उस में से देते हैं और उस के लिए नहीं आख़िरत में कोई हिस्सा। **(20)** या उन के कुछ शरीक हैं जिन्हों ने उन के लिए ऐसा दीन मुक़र्रर किया है जिस की अल्लाह ने इजाज़त नहीं दी, और अगर एक क़ौले फ़ैसल न होता तो उन के दरमियान (यहीं) फ़ैसला हो जाता, और बेशक ज़ालिमों के लिए अ़ज़ाब है दर्दनाक। **(21)** तुम ज़ालिमों को देखोगे अपने आमाल (के वबाल) से डरते होंगे, और वह उन पर वाक़े होने वाला है, और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अमल किए, वह जन्नतों के बाग़ात में होंगे, वह जो चाहेंगे उन के रब के हां (मिलेगा) यही है बड़ा फ़ज़्ल। **(22)**

وَالَّذِيْنَ يُحَآجُّوْنَ فِى اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا اسْتُجِيْبَ لَهٗ حُجَّتُهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन की हुज्जत | कि क़ुबूल कर लिया गया उस के लिए - उस को | उस के बाद | अल्लाह के बारे में | झगड़ा करते हैं | और जो लोग |

دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَّلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿١٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 16 | सख़्त | अ़ज़ाब | और उन के लिए | ग़ज़ब | और उन पर | उन का रब | हां | लग़्व |

اَللّٰهُ الَّذِىْٓ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَالْمِيْزَانَ ۗ وَمَا يُدْرِيْكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुझे ख़बर | और क्या | और मीज़ान | हक़ के साथ | किताब | नाज़िल की | वह जिस ने | अल्लाह |

لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيْبٌ ﴿١٧﴾ يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान नहीं रखते | वह लोग जो | उस की | वह जल्दी मचाते हैं | 17 | क़रीब | क़ियामत | शायद |

بِهَا ۚ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَا ۙ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهَا الْحَقُّ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हक़ | कि यह | और वह जानते हैं | उस से | वह डरते हैं | ईमान लाए | और जो लोग | उस पर |

اَلَآ اِنَّ الَّذِيْنَ يُمَارُوْنَ فِى السَّاعَةِ لَفِىْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ﴿١٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | दूर | अलबत्ता गुमराही में | क़ियामत के बारे में | झगड़ते हैं | बेशक जो लोग | याद रखो |

اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِىُّ الْعَزِيْزُ ﴿١٩﴾ ع ٢

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 19 | ग़ालिब | क़वी | और वह | जिस को चाहे | वह रिज़्क़ देता है | अपने बन्दों पर | मेहरबान | अल्लाह |

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِىْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | खेती में उस की | हम इज़ाफ़ा कर देते हैं उस के लिए | आख़िरत | खेती | चाहता है | जो शख़्स |

كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۙ وَمَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आख़िरत में | और नहीं उस के लिए | उस में से | हम उसे देते हैं | दुनिया की खेती | चाहता है |

مِنْ نَّصِيْبٍ ﴿٢٠﴾ اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दीन | से- ऐसा | उन के लिए | उन्हों ने मुक़र्रर किया | कुछ शरीक (जमा) | क्या उन के लिए | 20 | कोई हिस्सा |

مَا لَمْ يَاْذَنْۢ بِهِ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ لَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के दरमियान | तो फ़ैसला हो जाता | एक क़ौले फ़ैसल | और न अगर | अल्लाह | उस की | इजाज़त दी | जो - जिस नहीं |

وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢١﴾ تَرَى الظّٰلِمِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़ालिमों | तुम देखोगे | 21 | दर्दनाक | अ़ज़ाब | उन के लिए | ज़ालिमों | और बेशक |

مُشْفِقِيْنَ مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ؕ وَالَّذِيْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और जो लोग | उन पर | वाक़े होने वाला | और वह | उस से जो उन्हों ने कमाया (आमाल) | डरते होंगे |

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِىْ رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | जन्नतों | बाग़ात | में | अच्छे | और उन्हों ने अ़मल किए | ईमान लाए |

مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿٢٢﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 22 | बड़ा | फ़ज़्ल | वह यही | यह | उन के रब के हां | जो वह चाहेंगे |

ذٰلِكَ الَّذِیْ یُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने अच्छे अमल किए | वह जो ईमान लाए | अपने बन्दे | अल्लाह बशारत देता है | वह जिस | यही |

قُلْ لَّاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَیْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِی الْقُرْبٰی ؕ وَمَنْ یَّقْتَرِفْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कमाएगा | और जो | करावतदारी में की | मुहब्बत | सिवाए | कोई अजर | इस पर | मैं तुम से नहीं मांगता | फ़रमा दें |

حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِیْهَا حُسْنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿۲۳﴾ اَمْ یَقُوْلُوْنَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह कहते हैं | क्या | 23 | क़द्र दान | बख़्शने वाला | बेशक अल्लाह | ख़ूबी | उस में | हम बढ़ा देंगे उस के लिए | कोई नेकी |

افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا ۚ فَاِنْ یَّشَاِ اللّٰهُ یَخْتِمْ عَلٰی قَلْبِكَ ؕ وَیَمْحُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और मिटाता है | तुम्हारे दिल पर | वह मुहर लगा देता | चाहता अल्लाह | सो अगर | झूट | अल्लाह पर | उस ने बाँधा |

اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَیُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۲۴﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 24 | दिलों की बातों को | जानने वाला | बेशक वह | अपने कलिमात से | हक़ | और साबित करता है | बातिल | अल्लाह |

وَهُوَ الَّذِیْ یَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَیَعْفُوْا عَنِ السَّیِّاٰتِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बुराइयां | से-को | और माफ़ कर देता है | अपने बन्दों से | तौबा | जो क़ुबूल फ़रमाता है | और वही |

وَیَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۲۵﴾ وَیَسْتَجِیْبُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अच्छे | और उन्हों ने अमल किए | वह जो ईमान लाए | और क़ुबूल करता है | 25 | जो तुम करते हो | और वह जानता है |

وَیَزِیْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِیْدٌ ﴿۲۶﴾ وَلَوْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अगर | 26 | सख़्त | अज़ाब | उन के लिए | और काफ़िरों | अपने फ़ज़्ल से | और उन को ज़ियादा देता है |

بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِی الْاَرْضِ وَلٰكِنْ یُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अन्दाज़े से | वह उतारता है | और लेकिन | ज़मीन में | तो वह सरकशी करते | अपने बन्दों के लिए | रिज़्क़ | कुशादा कर देता अल्लाह |

مَّا یَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِیْرٌۢ بَصِیْرٌ ﴿۲۷﴾ وَهُوَ الَّذِیْ یُنَزِّلُ الْغَیْثَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बारिश | नाज़िल फ़रमाता है | वह जो | और वही | 27 | देखने वाला | बाख़बर | अपने बन्दों से | बेशक वह | जिस क़द्र वह चाहता है |

مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَیَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ؕ وَهُوَ الْوَلِیُّ الْحَمِیْدُ ﴿۲۸﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 28 | सतूदा सिफ़ात | कारसाज़ | और वही | अपनी रहमत | और फैलाता है | जब वह मायूस हो गए | बाद |

وَمِنْ اٰیٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَثَّ فِیْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चौपाए | उन के दरमियान | उस ने फैलाए | और जो | और ज़मीन | आस्मानों | पैदा करना | उस की निशानियां | और से |

ع ٣ ١٠ وَهُوَ عَلٰی جَمْعِهِمْ اِذَا یَشَآءُ قَدِیْرٌ ﴿۲۹﴾ وَمَاۤ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِیْبَةٍ فَبِمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो उस के सबब जो | कोई मुसीबत | और जो पहुँची तुम्हें | 29 | क़ुदरत रखने वाला | जब वह चाहे | उन के जमा करने पर | और वह |

كَسَبَتْ اَیْدِیْكُمْ وَیَعْفُوْا عَنْ كَثِیْرٍ ﴿۳۰﴾ وَمَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِیْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आजिज़ करने वाले | तुम | और नहीं | 30 | बहुत से | और माफ़ फ़रमा देता है | तुम्हारे हाथों | कमाया |

فِی الْاَرْضِ ۚۖ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِیٍّ وَّلَا نَصِیْرٍ ﴿۳۱﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 31 | और न कोई मददगार | कोई कारसाज़ | अल्लाह के सिवा | और नहीं तुम्हारे लिए | ज़मीन में |

यही है वह जिस की अल्लाह अपने बन्दों को बशारत देता है जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अमल किए, आप (स) फ़रमा दें: मैं तुम से क़राबत की मुहब्बत के सिवा इस पर कोई अजर नहीं मांगता, और जो शख़्स कोई नेकी कमाएगा (करेगा) हम उस के लिए उस में ख़ूबी बढ़ा देंगे, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, क़द्र दान है (23)
क्या वह कहते हैं कि उस ने अल्लाह पर बाँधा है झूट, सो अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हारे दिल पर मुहर लगा देता, और अल्लाह बातिल को मिटाता है और हक़ को साबित करता है अपने कलिमात से, बेशक वह दिलों की बातों को जानने वाला है। (24)
और वही है जो अपने बन्दों से तौबा क़ुबूल फ़रमाता है और बुराइयों को माफ़ कर देता है, और वह जानता है जो तुम करते हो। (25)
और वह (उन की दुआएं) क़ुबूल करता है जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अमल किए, और वह उन को अपने फ़ज़्ल से और ज़ियादा देता है, और काफ़िरों के लिए सख़्त अज़ाब है। (26)
और अगर अल्लाह अपने बन्दों के लिए रिज़्क़ कुशादा कर देता तो वह ज़मीन में सरकशी करते, लेकिन वह अन्दाज़े से जिस क़द्र चाहता है उतारता है, बेशक वह अपने बन्दों (की ज़रुरतों) से बाख़बर देखने वाला है। (27)
और उस के बाद जब कि वह नाउम्मीद हो गए तो वही है जो बारिश नाज़िल फ़रमाता है, और अपनी रहमत फैलाता है, और वही है कारसाज़, सतूदा सिफ़ात। (28)
और उस की निशानियों में से है पैदा करना आस्मानों का और ज़मीन का, और जो उस ने उन के दरमियान चौपाए फैलाए, और वह जब चाहे उन के जमा करने पर क़ुदरत रखता है। (29)
और तुम्हें जो कोई मुसीबत पहुँची तो वह उस के सबब (पहुँची) जो तुम्हारे हाथों ने कमाया (किया) और वह बहुत से (गुनाह) माफ़ (ही) कर देता है। (30)
और तुम ज़मीन में (अल्लाह तआला को) आजिज़ करने वाले नहीं हो, और अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिए न कोई कारसाज़ है और न कोई मददगार। (31)

और उस की निशानियों में से समन्दर में पहाड़ों जैसे जहाज़ हैं। (32) अगर वह चाहे तो हवा को ठहरा दे तो उस की सत्ह पर खड़े हुए रह जाएं, बेशक उस में निशानियां हैं हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए। (33) या वह उन्हें उन के आमाल के सबब हलाक कर दे और बहुतों को माफ़ कर दे। (34) और जान लें वह लोग जो हमारी आयात में झगड़ते हैं कि उन के लिए कोई ख़लासी (जाए फ़िरार) नहीं। (35) पस तुम्हें जो कुछ कोई शै दी गई है तो वह दुनियवी ज़िन्दगी का (नापाइदार) फ़ाइदा है, और जो अल्लाह के पास है वह बेहतर और हमेशा बाक़ी रहने वाला है, उन लोगों के लिए जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं। (36) और जो लोग बचते हैं बड़े गुनाहों से और बेहयाइयों से और जब वह गुस्से में होते हैं तो माफ़ कर देते हैं। (37) और जिन लोगों ने क़ुबूल किया अपने रब का फ़रमान और उन्हों ने नमाज़ क़ाइम की, और उन का काम बाहम मशवरा (से होता है) और जो हम ने उन्हें दिया उस में से वह ख़र्च करते हैं। (38) और जो लोग (ऐसे हैं कि) जब उन पर कोई ज़ुल्म ओ अत्याचार पहुँचे तो वह बदला लेते हैं। (39) और बुराई का बदला उसी जैसी बुराई है, सो जिस ने माफ़ कर दिया और इस्लाह (दुरुस्ती) कर दी तो उस का अजर अल्लाह के ज़िम्मे है, बेशक वह ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता। (40) और अलबत्ता जिस ने बदला लिया अपने ऊपर ज़ुल्म के बाद, सो यह लोग हैं जिन पर कोई राहे (इल्ज़ाम) नहीं। (41) इस के सिवा नहीं कि इल्ज़ाम उन पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं, और ज़मीन में नाहक़ फ़साद मचाते हैं, यही लोग हैं जिन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (42) और अलबत्ता जिस ने सब्र किया और माफ़ कर दिया तो बेशक यह बड़ी हिम्मत के कामों में से है। (43)

وَمِنْ اٰيٰتِهِ الْجَوَارِ فِى الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿٣٢﴾ اِنْ يَّشَاْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हवा | वह ठहरा दे | अगर वह चाहे | 32 | पहाड़ों जैसे | समन्दर में | जहाज़ | और उस की निशानियों से |

فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهْرِهٖ ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हर सब्र करने वाले के लिए | अलबत्ता निशानियां | बेशक उस में | उस की पीठ (सतह) पर | खड़े हुए | तो वह रह जाएं |

شَكُوْرٍ ﴿٣٣﴾ اَوْ يُوْبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيْرٍ ﴿٣٤﴾ وَّيَعْلَمَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जान लें | 34 | बहुतों को | और माफ़ कर दे | उन के आमाल के सबब | वह उन्हें हलाक कर दे | या | 33 | शुक्र करने वाले |

الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا ۭ مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ﴿٣٥﴾ فَمَآ اُوْتِيْتُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस जो कुछ दी गई तुम्हें | 35 | ख़लासी | कोई | नहीं उन के लिए | हमारी आयात में | झगड़ते हैं | वह लोग जो |

مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और हमेशा बाक़ी रहने वाला | बेहतर | अल्लाह के पास | और जो | दुनियवी ज़िन्दगी | तो फ़ाइदा | कोई शै |

لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَالَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह बचते हैं | और जो लोग | 36 | वह भरोसा करते हैं | और अपने रब पर वह | उन लोगों के लिए जो ईमान लाए |

كَبٰۗىِٕرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ ﴿٣٧﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 37 | वह माफ़ कर देते हैं | वह गुस्से में होते हैं | और जब | और बेहयाइयां | कबीरा (बड़े) गुनाह |

وَالَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۠ وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मशवरा | और उन का काम | नमाज़ | और उन्हों ने क़ाइम की | अपने रब का (फ़रमान) | क़ुबूल किया | और जिन लोगों ने |

بَيْنَهُمْ ۠ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَهُمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हें पहुँचे | जब | और जो लोग | 38 | वह ख़र्च करते हैं | हम ने अता किया उन्हें | और उस से जो | बाहम |

الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿٣٩﴾ وَجَزٰۗؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस जैसी | बुराई | बुराई | और बदला | 39 | बदला लेते हैं | वह | कोई ज़ुल्म ओ तअद्दी |

فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 40 | ज़ालिम (जमा) | दोस्त नहीं रखता | बेशक वह | अल्लाह पर ज़िम्मे | तो उस का अजर | और इस्लाह कर दी | माफ़ कर दिया | सो जिस |

وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰۗىِٕكَ مَا عَلَيْهِمْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| नहीं उन पर | सो यह लोग | अपने ऊपर ज़ुल्म के बाद | उस ने बदला लिया | और अलबत्ता-जिस |

مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿٤١﴾ اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लोग | वह ज़ुल्म करते हैं | वह लोग जो | पर | राह (इल्ज़ाम) | इस के सिवा नहीं | 41 | कोई राह |

وَيَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | यही लोग | नाहक़ | ज़मीन में | और वह फ़साद करते हैं |

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٤٢﴾ وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿٤٣﴾ ع

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 43 | बड़ी हिम्मत के काम | अलबत्ता से | बेशक यह | और माफ़ कर दिया | सब्र किया | और अलबत्ता-जिस | 42 | दर्दनाक अज़ाब |

وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْ بَعْدِهٖ ؕ وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़ालिम (जमा) | और तुम देखोगे | उस के बाद | कोई कारसाज़ | तो नही उस के लिए | गुमराह कर दे अल्लाह | और जिस को |

لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿٤٤﴾ وَتَرٰىهُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तू देखेगा उन्हें | 44 | कोई राह | लौटना | तरफ़-का | क्या | वह कहेंगे | अज़ाब | वह देखेंगे | जब |

يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا خٰشِعِيْنَ مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| गोशाए चश्म पोशीदा (नीम कुशादा) | से | वह देखते होंगे | ज़िल्लत से | आजिज़ी करते हुए | उस (दोज़ख) पर | पेश किए जाएंगे वह |

وَقَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अपना घराना | अपने आप को | ख़सारे में डाला | वह जिन्हों ने | ख़सारा पाने वाले | बेशक | जो ईमान लाए (मोमिन) | और कहेंगे |

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ﴿٤٥﴾ وَمَا كَانَ لَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | और नही है | 45 | हमेशा रहने वाला अज़ाब | में | ज़ालिम (जमा) | ख़ूब याद रखो! बेशक | रोज़े क़ियामत |

مِّنْ اَوْلِيَآءَ يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तो नहीं उस के लिए | गुमराह कर दे अल्लाह | और जिस | अल्लाह के सिवा | वह मदद दें उन्हें | कोई कारसाज़ |

مِنْ سَبِيْلٍ ﴿٤٦﴾ اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के लिए | फेरने वाला नही | वह दिन | कि आए | इस से क़ब्ल | अपने रब का (फ़रमान) | तुम क़ुबूल कर लो | 46 | कोई रास्ता |

مِنَ اللّٰهِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ ﴿٤٧﴾ فَاِنْ اَعْرَضُوْا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह मुंह फेर लें | फिर अगर | 47 | कोई इन्कार (रोक टोक करने वाला) | और नही तुम्हारे लिए | उस दिन | पनाह | कोई | नही तुम्हारे लिए | अल्लाह से |

فَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ؕ اِنْ عَلَيْكَ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَاِنَّاۤ اِذَاۤ اَذَقْنَا

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चखाते हैं हम | जब | और बेशक | पहुँचाना | सिवा | आप पर-ज़िम्मे | नही | निगहबान | उन पर | हम ने भेजा तुम्हें | तो नही |

الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आगे भेजा | उस के बदले | कोई बुराई | पहुँचे उन्हें | और अगर | ख़ुश हो जाता है उस से | रहमत | अपनी तरफ़ से | इन्सान |

اَيْدِيْهِمْ فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُوْرٌ ﴿٤٨﴾ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और ज़मीन | आस्मानों | अल्लाह के लिए बादशाहत | 48 | बड़ा नाशुक्रा | तो बेशक इन्सान | उन के हाथों |

يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ﴿٤٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 49 | बेटे | जिस के लिए वह चाहता है | और अ़ता करता है | बेटियां | जिस के लिए वह चाहता है | वह अ़ता करता है | जो वह चाहता है | वह पैदा करता है |

اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जानने वाला | बेशक वह | बाँझ | जिस को वह चाहता है | और कर देता है | और बेटियां | बेटे | जमा कर देता है उन्हें | या |

قَدِيْرٌ ﴿٥٠﴾ وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पीछे से | या | मगर वहि से | कि उस से कलाम करे अल्लाह | किसी बशर को | और नही है | 50 | क़ुदरत रखने वाला |

حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ عَلِيٌّ حَكِيْمٌ ﴿٥١﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 51 | हिक्मत वाला | बुलन्द तर | बेशक वह | जो वह चाहे | उस के हुक्म से | पस वह वहि करे | कोई फ़रिश्ता | या वह भेजे | एक पर्दा |

और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे तो उस के लिए नहीं उस के बाद कोई कारसाज़, और तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब वह अज़ाब देखेंगे (तो) वह कहेंगे: क्या लौटने की कोई राह है? (44)
और तू देखेगा जब वह आजिज़ी करते हुए ज़िल्लत से दोज़ख़ पर पेश किए जाएंगे तो वह देखते होंगे अध खुली आँखों से, और मोमिन कहेंगे: ख़सारा पाने वाले वह हैं जिन्हों ने ख़सारे में डाला अपने आप को और अपने घराने को रोज़े क़ियामत, ख़ूब याद रखो! ज़ालिम बेशक हमेशा रहने वाले अ़ज़ाब में होंगे। (45)
और उन के लिए नहीं है कोई कारसाज जो उन्हें अल्लाह के सिवा मदद दे, और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे उस के लिए (हिदायत का) कोई रास्ता नहीं। (46)
तुम अपने रब का फ़रमान उस से क़ब्ल क़ुबूल कर लो कि वह दिन आए जिस को अल्लाह (की जानिब) से कोई फेरने वाला नहीं, तुम्हारे लिए नहीं उस दिन कोई पनाह, और तुम्हारे लिए कोई रोक टोक करने वाला नहीं। (47)
फिर अगर वह मुंह फेर लें तो हम ने आप को उन पर नहीं भेजा निगहबान, आप (स) के जिम्मे (पैग़ाम) पहुँचाने के सिवा नहीं, और बेशक जब हम इन्सान को अपनी तरफ़ से रहमत (का मज़ा) चखाते हैं तो वह उस से ख़ुश हो जाता है, और अगर उन्हें उस के बदले कोई बुराई पहुँचे जो उन के हाथों ने आगे भेजा, तो बेशक इन्सान बड़ा नाशुक्रा है। (48)
अल्लाह के लिए है आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत, जो वह चाहता है पैदा करता है, वह अ़ता करता है जिस को वह चाहे बेटियां, और वह अ़ता करता है जिस के लिए वह चाहता है बेटे (49)
या उन्हें जमा कर देता (जोड़े देता है) बेटे और बेटियां, और जिस को वह चाहता है बाँझ (बेऔलाद) कर देता है, बेशक वह जानने वाला क़ुदरत रखने वाला है। (50)
और किसी बशर की (मजाल) नहीं कि अल्लाह उस से कलाम करे मगर वहि (इशारे) से या पर्दे के पीछे से, या वह कोई फ़रिश्ता भेजे, पस वह उस के हुक्म से जो (अल्लाह) चाहे वह वहि करे (पैग़ाम पहुँचा दे), बेशक वह बुलन्द तर, हिक्मत वाला है। (51)

और उसी तरह हम ने आप (स) की तरफ़ अपने हुक्म से कुरआन को वहि किया, आप (स) न जानते थे कि किताब क्या है? और न ईमान (की तफ़सील) और लेकिन हम ने उसे नूर बना दिया, उस से हम अपने बन्दों में से जिस को चाहते हैं हिदायत देते हैं, और बेशक आप (स) जरूर रहनुमाई करते हैं सीधे रास्ते की तरफ़। (52)
(यानी) अल्लाह का रास्ता, उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ जमीन में है, याद रखें! तमाम कामों की बाजगश्त अल्लाह की तरफ़ है। (53)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
हा-मीम। (1)
क़सम है वाज़ेह किताब की। (2)
बेशक हम ने उसे बनाया अ़रबी जबान में कुरआन, ताकि तुम समझो। (3)
और बेशक वह (कुरआन) हमारे पास लौहे महफूज में है, बुलन्द मरतबा, बाहिक्मत। (4)
क्या हम यह नसीहत तुम से एराज कर के इस लिए हटा लें कि तुम हद से गुज़रने वाले लोग हो। (5)
और हम ने पहले लोगों में बहुत से नबी भेजे। (6)
और उन के पास नहीं आया कोई नबी, मगर वह उस से ठठा करते थे. (7)
पस हम ने उन (अहले मक्का) से ज़ियादा सख़्त पकड़ (ताक़त) वाले लोगों को हलाक किया और गुजर चुकी है पहले लोगों की मिसाल। (8)
और अगर तुम उन से पूछो कि किस ने आस्मानों को और जमीन को पैदा क्या? तो वह जरूर कहेंगे "उन्हें पैदा किया है गालिब, इल्म वाले (अल्लाह) ने"। (9)
वह जिस ने तुम्हारे लिए जमीन को फ़र्श बनाया और तुम्हारे लिए उस में बनाए रास्ते ताकि तुम राह पाओ। (10)
और वह अल्लाह जिस ने एक अन्दाजे के साथ आस्मानों से पानी उतारा, फिर हम ने उस से जिन्दा किया मुर्दा जमीन को, उसी तरह तुम (क़ब्रों से) निकाले जाओगे। (11)

وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ۭ مَا كُنْتَ تَدْرِىْ مَا الْكِتٰبُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या है किताब | तुम न जानते थे | अपने हुक्म से | कुरआन | तुम्हारी तरफ़ | हम ने वहि किया | और उसी तरह |

وَلَا الْاِيْمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِىْ بِهٖ مَنْ نَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِنَا ۭ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने बन्दों में से | जिस को हम चाहते हैं | हम हिदायत देते हैं उस से | नूर | हम ने बना दिया उसे | और लेकिन | और न ईमान |

وَاِنَّكَ لَتَهْدِيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٢﴾ صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो कुछ | वह जिस के लिए | रास्ता अल्लाह का | 52 | सीधा | रास्ता | तरफ़ | ज़रूर रहनुमाई करते हो | और बेशक तुम |

فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ اَلَآ اِلَى اللّٰهِ تَصِيْرُ الْاُمُوْرُ ﴿٥٣﴾ ع ١٠ ٥ ٦

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 53 | तमाम काम | बाजगश्त | अल्लाह की तरफ़ | याद रखें | जमीन में | और जो कुछ | आस्मानों में |

آيَاتُهَا ٨٩ ❀ (٤٣) سُوْرَةُ الزُّخْرُفِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٧

रुकूआत 7 — (43) सूरतुज़ ज़ुख़्रुफ़ चमक-दमक — आयात 89

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حٰمٓ ﴿١﴾ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾ اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ

عدد المقدمی ١٢ ع ١١

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि तुम | अ़रबी जबान | कुरआन | हम ने इसे बनाया | बेशक हम | 2 | वाज़ेह | क़सम है किताब | 1 | हा मीम |

تَعْقِلُوْنَ ﴿٣﴾ وَاِنَّهٗ فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيْمٌ ﴿٤﴾ اَفَنَضْرِبُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या हम हटा लें | 4 | बाहिक्मत | बुलन्द मरतबा | हमारे पास | असल किताब (लौहे महफूज) | में | और बेशक वह | 3 | समझो |

عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا اَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ ﴿٥﴾ وَكَمْ اَرْسَلْنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और कितने ही भेजे हम ने | 5 | हद से गुज़रने वाले | लोग | तुम हो | कि | एराज़ कर के | नसीहत | तुम से |

مِنْ نَّبِيٍّ فِي الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦﴾ وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से | वह थे | मगर | कोई नबी | और नहीं आया उन के पास | 6 | पहले लोगों में | नबी |

يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٧﴾ فَاَهْلَكْنَآ اَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّمَضٰى مَثَلُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मिसाल | और गुज़र चुकी | पकड़ | उन से | सख़्त | पस हम ने हलाक किया | 7 | मज़ाक़ करते |

الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨﴾ وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो वह ज़रूर कहेंगे | और ज़मीन | पैदा किया आस्मानों को | किस | तुम उन से पूछो | और अगर | 8 | पहले लोग |

خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ﴿٩﴾ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़र्श | ज़मीन | तुम्हारे लिए | बनाया | वह जिस | 9 | इल्म वाला | ग़ालिब | उन्हें पैदा किया |

وَّجَعَلَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٠﴾ وَالَّذِيْ نَزَّلَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उतारा | और वह जिस | 10 | तुम राह पाओ | ताकि तुम | रास्ते सबील | उस में | तुम्हारे लिए | और बनाए |

مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءًۢ بِقَدَرٍ ۚ فَاَنْشَرْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿١١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | तुम निकाले जाओगे | उसी तरह | मुर्दा ज़मीन | उस से | फिर ज़िन्दा किया हम ने | एक अंदाज़े से | पानी | आस्मान से |

وَالَّـــذِىْ خَـلَـقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّـهَـا وَجَـعَـلَ لَـكُـمْ مِّـنَ الْـفُـلْـكِ وَالْاَنْـعَـامِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और चौपाए | कशतियां | तुम्हारे लिए | और बनाई | उन सब के | जोड़े | पैदा किए | और वह जिस |

مَـا تَرْكَبُوْنَ ﴿١٢﴾ لِتَسْتَوٗا عَلٰى ظُهُوْرِهٖ ثُمَّ تَذْكُرُوْا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ اِذَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब | अपना रब | नैमत | तुम याद करो | फिर | उन की पीठों पर | ताकि तुम ठीक बैठो | 12 | तुम सवार होते हो | जिस |

اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَـقُـوْلُـوْا سُبْحٰنَ الَّـذِىْ سَخَّرَ لَنَا هٰـذَا وَمَـا كُنَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न थे हम | इस | मुसख़्ख़र किया हमारे लिए | वह ज़ात जिस | पाक है | और तुम कहो | उस पर | तुम ठीक बैठ जाओ |

لَـهٗ مُقْرِنِيْنَ ﴿١٣﴾ وَاِنَّـــآ اِلٰى رَبِّـنَـا لَمُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٤﴾ وَجَعَلُوْا لَـــهٗ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के लिए | उन्हों ने बना लिया | 14 | जरूर लौट कर जाने वाले | अपना रब | तरफ़ | और बेशक हम | 13 | क़ाबू में लाने वाले | इस को |

ع ١٥ مِنْ عِبَادِهٖ جُـــزْءًا ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾ اَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से जो उस ने पैदा किया | क्या उस ने बना ली | 15 | खुले तौर पर | नाशुक्रा | बेशक इन्सान | हिस्सा (लख़्ते जिगर) | उस के बन्दों में से |

بَـنٰـتٍ وَّاَصْـفٰـكُـمْ بِالْبَنِيْنَ ﴿١٦﴾ وَاِذَا بُـشِّـرَ اَحَـدُهُـمْ بِـمَـا ضَـرَبَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने बयान की | उस की जो | उन में से एक | खुशखबरी दी जाए | और जब | 16 | बेटों के साथ | और तुम्हें मख़सूस किया | बेटियां |

لِلرَّحْمٰـــنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُـوَ كَظِيْمٌ ﴿١٧﴾ اَوَمَـنْ يُّنَشَّؤُا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर्वरिश पाए | किया जो | 17 | ग़मगीन | और वह | सियाह | हो जाता है उस का चेहरा | मिसाल | रहमान (अल्लाह) के लिए |

فِى الْحِلْيَةِ وَهُـوَ فِى الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِيْنٍ ﴿١٨﴾ وَجَعَلُوا الْمَلٰٓئِكَةَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़रिश्ते | और उन्हों ने ठहरा लिया | 18 | ग़ैर वाज़ेह | झगड़े (बहस मुबाहसा) में | और वह | ज़ेवर में |

الَّـذِيْـنَ هُـمْ عِـبٰـدُ الـرَّحْـمٰـنِ اِنَـاثًـا ؕ اَشَـهِـدُوْا خَـلْـقَـهُـمْ ؕ سَتُكْتَبُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अभी लिख लिया जाएगा | उन की पैदाइश | क्या तुम मौजूद थे | औरतें | रह्मान (अल्लाह के) बन्दे | वह | वह जो |

شَهَادَتُهُمْ وَيُسْـَٔلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَقَـالُـوْا لَـوْ شَـآءَ الرَّحْمٰنُ مَا عَبَدْنٰهُمْ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हम न इबादत करते उन की | रह्मान (अल्लाह) | अगर चाहता | और वह कहते हैं | 19 | और उन से पूछा जाएगा | उन की गवाही (दावा) |

مَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُـمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿٢٠﴾ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने दी उन्हें | क्या | 20 | अटकल दौड़ाते हैं | मगर सिर्फ़ | वह | नहीं | कुछ इल्म | उस का | उन्हें नहीं |

كِتٰبًا مِّنْ قَبْلِهٖ فَهُمْ بِهٖ مُسْتَمْسِكُوْنَ ﴿٢١﴾ بَلْ قَالُوْٓا اِنَّـا وَجَدْنَـآ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक हम ने पाया | वह कहते हैं | बल्कि | 21 | थामे हुए हैं | सो वह उस को | इस से क़ब्ल | कोई किताब |

اٰبَـآءَنَـا عَـلٰٓى اُمَّـةٍ وَّاِنَّـــا عَـلٰٓى اٰثٰـرِهِـمْ مُّـهْـتَـدُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَكَـذٰلِـكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उसी तरह | 22 | राह पाने वाले (चल रहे हैं) | उन के नक़्शे क़दम पर | और बेशक हम | एक तरीक़े पर | अपने बाप दादा |

مَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِىْ قَرْيَةٍ مِّـنْ نَّـذِيْـرٍ اِلَّا قَـالَ مُتْرَفُوْهَآ ۙ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के खुशहाल | कहा | मगर | कोई डर सुनाने वाला | किसी बस्ती में | इस से पहले | नहीं भेजा हम ने |

اِنَّـا وَجَـدْنَـآ اٰبَـآءَنَـا عَـلٰٓى اُمَّـةٍ وَّاِنَّـــا عَـلٰٓى اٰثٰـرِهِـمْ مُّـقْـتَـدُوْنَ ﴿٢٣﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 23 | पैरवी करते हैं | उन के नक़्शे क़दम पर | और बेशक हम | एक तरीक़े पर | अपने बाप दादा | बेशक हम ने पाया |

और वह जिस ने उन सब के जोड़े बनाए, और तुम्हारे लिए बनाईं कशतियां और चौपाए जिन पर तुम सवार होते हो। (12)
ताकि तमु उन की पीठों पर ठीक तौर से बैठो, फिर तुम याद करो अपने रब की नेमत को, जब तुम उस पर ठीक बैठ जाओ, और तुम कहोः पाक है वह ज़ात जिस ने इसे हमारे लिए मुसख़्ख़र (ताबे फ़रमान) किया और हम इस को क़ाबू में लाने वाले न थे। (13)
और बेशक हम अपने रब की तरफ़ जरूर लौट कर जाने वाले हैं। (14)
और उन्हों ने उस के बन्दों में से उस के लिए बना लिया है जुज (लख़्ते जिगर), बेशक इन्सान सरीह नाशुक्रा है (15)
क्या उस ने अपनी मख़्लूक़ में से (अपने लिए) बेटियां बना लीं? और तुम्हें मख़सूस किया (नवाज़ा) बेटों के साथ? (16)
और जब उन में से किसी को उस (बेटी) की खुश्ख़बरी दी जाए जिस की मिसाल उस ने अल्लाह के लिए दी तो उस का चेहरा सियाह हो जाता है, और वह गम से भर जाता है। (17)
क्या वह (औलाद) जो ज़ेवर में पर्वरिश पाए और वह बहस मुबाहसा में ग़ैर वाजेह हो (अल्लाह के हिस्से में आई)। (18)
और उन्हों ने ठहराया फ़रिश्तों को औरतें, जो अल्लाह के बन्दे हैं, क्या तुम उन की पैदाइश (के वक्त) मौजूद थे? उन का यह दावा अभी लिख लिया जाएगा और क़ियामत के (दिन) उन से पूछा जाएगा। (19)
और वह कहते हैंः अगर अल्लाह चाहता तो हम उन की इबादत न करते, उन्हें उस का कुछ इल्म नहीं, वह तो सिर्फ़ अटकल दौड़ाते हैं। (20)
क्या हम ने उन्हें उस से कब्ल कोई किताब दी है जिस को वह थामे हुए हैं (उस से इस्तिद्लाल करते हैं)। (21)
बल्कि वह कहते हैं कि हम ने अपने बाप दादा को एक तरीक़े पर पाया, और बेशक हम उन के नक्शे क़दम पर चल रहे हैं। (22)
और उसी तरह हम ने आप (स) से पहले किसी बस्ती में कोई डर सुनाने वाला नहीं भेजा, मगर उस के खुशहाल लोगों ने कहा, बेशक हम ने पाया अपने बाप दादा को एक तरीक़े पर, और बेशक हम उन के नक़्शे क़दम की पैरवी करते हैं। (23)

नबी (स) ने कहाः क्या (उस सूरत में भी) अगरचे मैं बेहतर राह बतलाने वाला (दीने हक़ लाया) हूँ उस से जिस पर तुम ने अपने बाप दादा को पाया? वह बोलेः बेशक हम उस का इन्कार करने वाले हैं जिस के साथ तुम भेजे गए हो। (24) तो हम ने उन से बदला लिया, सो देखो कि झुटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुआ? (25) और (याद करो) जब इब्राहीम (अ) ने अपने बाप दादा और अपनी क़ौम को कहाः बेशक मैं उस से बेज़ार हूँ जिस की तुम परस्तिश करते हो, (26) मगर (हाँ) जिस ने मुझे पैदा किया, तो बेशक वह जल्द मुझे हिदायत देगा। (27) और उस (इब्राहीम अ) ने उस को किया अपनी नस्ल में बाक़ी रहने वाली बात, ताकि वह रुजूअ करते रहें। (28) बल्कि मैं ने उन्हें और उन के बाप दादा को सामाने ज़ीस्त दिया, यहां तक कि उन के पास कुरआन आ गया, और साफ़ साफ़ बयान करने वाला रसूल। (29) और जब उन के पास हक़ आया तो वह कहने लगे कि यह जादू है, और बेशक हम इस का इन्कार करने वाले हैं। (30) और वह बोले कि यह कुरआन क्यों न नाज़िल किया गया दो बस्तियों (मक्का या ताइफ़) के किसी बड़े आदमी पर? (31) क्या वह तुम्हारे रब की रहमत तक़्सीम करते हैं, और हम ने उन के दरमियान उन की रोज़ी दुनिया की ज़िन्दगी में तक़्सीम की है, और हम ने उन में से एक के दरजे दूसरे पर बुलन्द किए हैं ताकि उन में से एक दूसरे को ख़िदमतगार बनाए, और तुम्हारे रब की रहमत उस से बेहतर है जो वह जमा करते हैं। (32) और अगर (एहतिमाल) न होता कि तमाम लोग एक तरीक़े पर हो जाएंगे तो हम बनाते उन के लिए जो कुफ़्र करते हैं अल्लाह का। उन के घरों के लिए चाँदी की छत और सीढ़ियाँ जिन पर वह चढ़ते हैं (33) और उन के घरों के दरवाज़े और तख़्त जिन पर वह तकिया लगाते हैं। (34) और (ख़ूब) आराइश करते, और यह सब (कुछ) नहीं मगर दुनिया की ज़िन्दगी की पूंजी है, और तुम्हारे रब के नज़दीक आख़िरत परहेज़गारों के लिए है। (35)

قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكُمْ بِاَهْدٰى مِمَّا وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ ۚ قَالُوْٓا اِنَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक हम | वह बोले | अपने बाप दादा | उस पर | तुम ने पाया | उस से जिस | बेहतर राह बतलाने वाला | क्या अगरचे मैं तुम्हारे पास लाया हूँ | (नबी ने) कहा |

بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٢٤﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हुआ | कैसा | सो देखो | उन से | तो हम ने बदला लिया | 24 | इन्कार करने वाले | जिस के साथ तुम भेजे गए | उस पर |

٢ ع ١٠ ٨ النصف

عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٥﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖٓ اِنَّنِيْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक मैं | और अपनी क़ौम | अपने बाप को | इब्राहीम (अ) | कहा | और जब | 25 | झुटलाने वालों का | अन्जाम |

بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٦﴾ اِلَّا الَّذِيْ فَطَرَنِيْ فَاِنَّهٗ سَيَهْدِيْنِ ﴿٢٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 27 | जल्द मुझे हिदायत देगा | तो बेशक वह | मुझे पैदा किया | मगर वह जिस ने | 26 | उस से जिस की तुम परस्तिश करते हो | बेज़ार |

وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِيْ عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾ بَلْ مَتَّعْتُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बल्कि मैं ने सामाने ज़ीस्त दिया | 28 | रुजूअ करते रहें | ताकि वह | अपनी नस्ल में | बाक़ी रहने वाली | बात | और उस ने किया उस को |

هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٩﴾ وَلَمَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जब | 29 | साफ़ साफ़ बयान करने वाला | और रसूल | हक़ (कुरआन) | आ गया उन के पास | यहां तक कि | और उन के बाप दादा | उन को |

جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَقَالُوْا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह बोले | 30 | इन्कार करने वाले | इस का | और बेशक हम | जादू | यह | वह कहने लगे | हक़ | आ गया उन के पास |

لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ﴿٣١﴾ اَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या वह | 31 | बड़े | दो बस्तियां | से | किसी आदमी पर | यह कुरआन | क्यों न उतारा गया |

يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ۚ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दुनिया की ज़िन्दगी | में | उन की रोज़ी | उन के दरमियान | हम ने तक़्सीम की | हम | तुम्हारा रब | रहमत | तक़्सीम करते हैं |

وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन में से बाज़ (एक) दूसरे को | ताकि बनाए | दरजे | बाज़ (दूसरे) पर | उन में से बाज़ (एक) | और हम ने बुलन्द किए |

سُخْرِيًّا ۚ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَلَوْلَآ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और अगर (यह) न होता | 32 | वह जमा करते हैं | उस से जो | बेहतर | और तुम्हारे रब की रहमत | ख़िदमतगार |

اَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रहमान (अल्लाह) का | उनके लिए जो कुफ़्र करते हैं | तो हम बनाते | एक उम्मत (तरीक़ा) | तमाम लोग | कि हो जाएंगे |

لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلِبُيُوْتِهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के घरों के लिए | 33 | वह चढ़ते | जिन पर | और सीढ़ियां | चाँदी से की | छत | उनके घरों के लिए |

اَبْوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِـُٔوْنَ ﴿٣٤﴾ وَزُخْرُفًا ۚ وَاِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर | यह सब | और नही | और आराइश करते | 34 | वह तकिया लगाते | जिन पर | और तख़्त | दरवाज़े |

مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٥﴾ ٣ ع ١٠ ٩

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 35 | परहेजगारों के लिए | तुम्हारे रब के नज़दीक | और आखिरत | दुनिया की जिन्दगी | पूंजी |

وَمَنْ يَعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ ﴿٣٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 36 | साथी | उस का | तो वह | एक शैतान | हम मुक़र्रर (मुसल्लत) कर देते हैं उस के लिए | रह्मान (अल्लाह) की याद | से | ग़फ़्लत करे | और जो |

وَاِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 37 | हिदायत याफ़्ता | कि वह | और वह गुमान करते हैं | रास्ते से | अलबत्ता वह रोकते हैं उन्हें | और बेशक वह |

حَتّٰٓى اِذَا جَآءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ بَيْنِىْ وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मश्रिक़ ओ मग़्रिब | दूरी | और तेरे दरमियान | मेरे दरमियान | ऐ काश | वह कहेगा | वह आएंगे हमारे पास | जब | यहां तक कि |

فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ ﴿٣٨﴾ وَلَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ اِذْ ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ فِى الْعَذَابِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ़ज़ाब में | यह कि तुम | जब ज़ुल्म कर चुके तुम ने | आज | और हरगिज़ नफ़ा न देगा तुम्हें | 38 | साथी | तू बुरा |

مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٩﴾ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِى الْعُمْىَ وَمَنْ كَانَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो हो | अंधों | या राह दिखाएंगे | बहरों | सुनाएंगे | तो क्या आप (स) | 39 | मुशतरिक हो |

فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٠﴾ فَاِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا مِنْهُمْ مُّنْتَقِمُوْنَ ﴿٤١﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 41 | इन्तिकाम लेने वाले | उन से | तो बेशक हम | आप (स) का | ले जाएं | फिर अगर | 40 | सरीह गुमराही | में |

اَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِىْ وَعَدْنٰهُمْ فَاِنَّا عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُوْنَ ﴿٤٢﴾ فَاسْتَمْسِكْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस आप (स) मज़बूती से थाम लें | 42 | कुदरत रखने वाले (क़ादिर) हैं | उन पर | तो बेशक हम | हम ने वादा किया उन से | वह जो | या हम दिखादें तुम्हें |

بِالَّذِىْٓ اُوْحِىَ اِلَيْكَ ۚ اِنَّكَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤٣﴾ وَاِنَّهٗ لَذِكْرٌ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नसीहत (नामा) | और बेशक यह | 43 | सीधा | रास्ता | पर | बेशक आप (स) | आप (स) की तरफ़ | वहि किया गया | वह जो |

لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ۚ وَسَوْفَ تُسْــَٔلُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَسْــَٔلْ مَنْ اَرْسَلْنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने भेजे | जो | और पूछ लें | 44 | तुम से पूछा जाएगा | और अनक़रीब | और आप (स) की क़ौम के लिए | आप (स) के लिए |

مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَآ ۚ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कोई माबूद | रह्मान (अल्लाह) के सिवा | से | क्या हम ने मुक़र्रर किए | हमारे रसूलों में से | आप (स) से पहले |

يُّعْبَدُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ ع ٣ / ١٠

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उस के सरदार | फ़िरऔन | तरफ़ | अपनी निशानियों के साथ | मूसा (अ) | और तहक़ीक़ हम ने भेजा | 45 | उन की इबादत के लिए |

فَقَالَ اِنِّىْ رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِاٰيٰتِنَآ اِذَا هُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह | नागहां | हमारी निशानियों के साथ | वह आया | फिर जब | 46 | तमाम जहानों का परवरदिगार | बेशक मैं रसूल | तो उस ने कहा |

مِّنْهَا يَضْحَكُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ اِلَّا هِىَ اَكْبَرُ مِنْ اُخْتِهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की बहन (दूसरी निशानी) | से | बड़ी | मगर वह | कोई निशानी | और हम उन्हें दिखाते थे | 47 | उस से (उन निशानियों पर) हँसने लगे |

وَاَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ | और उन्हों ने कहा | 48 | वह रुजूअ़ करें | ताकि वह | अ़ज़ाब में | और हम ने गिरफ्तार किया उन्हें |

السّٰحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ اِنَّنَا لَمُهْتَدُوْنَ ﴿٤٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 49 | अलबत्ता हिदायत पाने वाले | बेशक हम | तेरे पास | उस अ़हद के सबब जो | अपना रब | हमारे लिए | दुआ कर | जादूगर |

और जो कोई अल्लाह की याद से ग़फ़्लत करे, हम मुसल्लत कर देते हैं उस के लिए एक शैतान, तो वह उस का साथी हो जाता है। (36) और बेशक वह उन्हें (अल्लाह के) रास्ते से रोकते हैं, और वह गुमान करते हैं कि वह हिदायत याफ़्ता हैं। (37) यहां तक कि जब वह हमारे पास आएंगे तो वह (अपने शैतान साथी से) कहेगाः ऐ काश मेरे और तेरे दरमियान मश्रिक़ ओ मग़्रिब की दूरी होती, तू बुरा साथी निकला। (38) और जब कि तुम ज़ुल्म कर चुके तो आज तुम्हें यह हरगिज़ नफ़ा न देगा कि तुम अजाब में मुशतरिक हो। (39) तो क्या आप (स) बहरों को सुनाएंगे या अँधों को राह दिखाएंगे? और उस को जो सरीह गुमराही में हो। (40) फिर अगर हम आप (स) को (दुनिया से) ले जाएं तो बेशक हम (फिर भी) उन से इन्तिक़ाम लेने वाले हैं। (41) या हम आप (स) को दिखा दें वह जो हम ने उन से वादा किया है तो बेशक हम उन पर कादिर हैं (42) पस आप (स) वह मजबूती से थाम लें जो आप (स) की तरफ़ वहि किया गया है, बेशक आप (स) सीधे रास्ते पर हैं। (43) और बेशक यह (कुरआन) एक नसीहत नामा है आप (स) के लिए और आप (स) की क़ौम के लिए। और अनकरीब तुम से पूछा जाएगा। (44) आप (स) हमारे उन रसूलों से पूछ लें जो हम ने आप से पहले भेजेः क्या हम ने अल्लाह के सिवा कोई माबूद मुक़र्रर किए थे जिन की इबादत की जाए। (45) और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को अपनी निशानियों के साथ भेजा फ़िरऔन और उस के सरदारों की तरफ़, तो उस ने कहाः बेशक मैं तमाम जहानों के परवरदिगार का रसूल हूँ (46) फिर जब वह हमारी निशानियों के साथ उन के पास आया तो नागहां वह उन निशानियों पर हँसने लगे। (47) और हम उन्हें कोई निशानी नहीं दिखाते थे, मगर वह पहली निशानी से बड़ी होती, हम ने उन्हें अजाब में गिरफ्तार किया ताकि वह (हक़ की तरफ़) रुजूअ करें। (48) और उन्हों ने कहाः ऐ जादूगर! हमारे लिए अपने रब से दुआ़ कर उस अहद के सबब जो तेरे पास है, बेशक हम हिदायत पाने वाले हैं (हिदायत पा लेंगे)। (49)

फिर जब हम ने उन से अ़ज़ाब हटा दिया तो नागहां वह अहद तोड़ गए। (50)
और फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम में पुकारा (मनादी की), उस ने कहाः ऐ मेरी क़ौम! क्या मिस्र की बादशाहत मेरी नहीं? और यह नहरें जारी हैं मेरे (महलात के) नीचे से, तो क्या तुम नहीं देखते? (51)
बल्कि मैं उस से बेहतर हूँ जो कम क़द्र है, और वह मालूम नहीं होता साफ़ गुफ़्तगू करता। (52)
तो उस पर सोने के कंगन क्यों न डाले गए? या उस के साथ फरिश्ते (क्यों न) आए परा बान्ध कर। (53)
पस उस ने अपनी क़ौम को बेअक्ल कर दिया, तो उन्हों ने उस की इताअत की, बेशक वह नाफ़रमान लोग थे। (54)
फ़िर जब उन्हों ने हमें गुस्सा दिलाया तो हम ने उन से इन्तिक़ाम लिया और उन सब को ग़र्क़ कर दिया। (55)
तो हम ने उन्हें गए गुज़रे कर दिया, और बाद में आने वालों के लिए एक दास्तान। (56)
और जब ईसा (अ) इब्ने मरयम की मिसाल बयान की गई तो यकायक तुम्हारी क़ौम उस से खुशी के मारे चिल्लाने लगी। (57)
वह बोलेः क्या हमारे माबूद बेहतर हैं या वह (ईसा इब्ने मरयम)? वह उस को तुम्हारे सामने सिर्फ़ झगड़ने के लिए बयान करते हैं, बल्कि वह तो हैं ही झगड़ालू। (58)
ईसा (अ) सिर्फ़ एक बन्दे हैं, हम ने इन्आम किया उन पर और हम ने उन्हें बनी इस्राईल के लिए एक मिसाल बनाया। (59)
और अगर हम चाहते तो तुम में से फ़रिश्ते पैदा करते ज़मीन में, वह तुम्हारे जांनशीन होते। (60)
और बेशक वह क़ियामत की एक निशानी है, तो तुम हरगिज़ उस में शक न करो, और मेरी पैरवी करो, यह सीधा रास्ता है। (61)
और शैतान तुम्हें रोक न दे, बेशक वह तुम्हारे लिए खुला दुश्मन है। (62)
और जब ईसा (अ) आए खुली निशानियों के साथ, तो उन्हों ने कहाः तहक़ीक़ मैं तुम्हारे पास हिक्मत के साथ आया हूँ, और इस लिए कि मैं तुम्हारे लिए वह बाज़ बातें बयान कर दूँ जिन में तुम इख़्तिलाफ़ करते हो, सो तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो। (63)

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ﴿٥٠﴾ وَنَادٰى فِرْعَوْنُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़िरऔ़न | और पुकारा | 50 | अहद तोड़ गए | नागहां वह | अ़ज़ाब | उन से | हम ने खोला (हटा दिया) | फिर जब |

فِىْ قَوْمِهٖ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَيْسَ لِىْ مُلْكُ مِصْرَ وَهٰذِهِ الْاَنْهٰرُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नहरें | और यह | मिस्र की बादशाहत | क्या नहीं मेरे लिए | उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम | अपनी क़ौम | में |

تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِىْ ۚ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٥١﴾ اَمْ اَنَا خَيْرٌ مِّنْ هٰذَا الَّذِىْ هُوَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह | वह जो | उस से | बेहतर | क्या- बल्कि मैं | 51 | देखते तुम | तो क्या नहीं | मेरे नीचे से | जारी हैं |

مَهِيْنٌ ۙ وَّلَا يَكَادُ يُبِيْنُ ﴿٥٢﴾ فَلَوْلَآ اُلْقِىَ عَلَيْهِ اَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सोने के | कंगन | उस पर | डाले गए | तो क्यों न | 52 | साफ़ गुफ़्तगू करता | और वह मालूम नहीं होता | कम क़द्र |

اَوْ جَآءَ مَعَهُ الْمَلٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِيْنَ ﴿٥٣﴾ فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهٗ فَاَطَاعُوْهُ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो उन्हों ने उस की इताअत की | अपनी क़ौम | पस उस ने बेअक़्ल कर दिया | 53 | परा बान्ध कर | फ़रिश्ते | उस के साथ | या आए |

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٥٤﴾ فَلَمَّآ اٰسَفُوْنَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस हम ने ग़र्क़ कर दिया उन्हें | उन से | हम ने इन्तिक़ाम लिया | उन्हों ने गुस्सा दिलाया हमें | फिर जब | 54 | नाफ़रमान | लोग | थे | बेशक वह |

اَجْمَعِيْنَ ﴿٥٥﴾ فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَّمَثَلًا لِّلْاٰخِرِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَلَمَّا ضُرِبَ ع ٥ ١١ ١١

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बयान की गई | और जब | 56 | बाद में आने वाले | पेश रो (गए गुज़रे) और मिसाल (दास्तान) | तो हम ने कर दिया उन्हें | 55 | सब |

ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا اِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّوْنَ ﴿٥٧﴾ وَقَالُوْٓا ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेहतर | क्या हमारे माबूद | और वह बोले | 57 | उस से (खुशी से) चिल्लाने लगते हैं | यका यक तुम्हारी क़ौम | मिसाल | ईसा इब्ने मरयम |

اَمْ هُوَ ۗ مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ۗ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ﴿٥٨﴾ اِنْ هُوَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं वह (ईसा अ) | 58 | झगड़ालू | लोग | बल्कि वह | मगर (सिर्फ़) झगड़ने को | तुम्हारे लिए | नहीं वह बयान करते उस को | या वह |

اِلَّا عَبْدٌ اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِّبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٥٩﴾ وَلَوْ نَشَآءُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अगर हम चाहते | 59 | बनी इस्राईल के लिए | एक मिसाल | और हम ने बनाया उस को | उस पर | हम ने इन्आम क्या | एक बन्दा | सिर्फ़ |

لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلٰٓئِكَةً فِى الْاَرْضِ يَخْلُفُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَاِنَّهٗ لَعِلْمٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक निशानी | और बेशक वह | 60 | वह (तुम्हारे) जांनशीन होते | ज़मीन में | फ़रिश्ते | तुम में से | अलबत्ता हम करते |

لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُوْنِ ۚ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 61 | सीधा | रास्ता | यह | और मेरी पैरवी करो | उस में | तो हरगिज़ शक न करो तुम | क़ियामत की |

وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٦٢﴾ وَلَمَّا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जब | 62 | दुश्मन खुला | तुम्हारे लिए | बेशक वह | शैतान | और रोक न दे तुम्हें |

جَآءَ عِيْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِاُبَيِّنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और इस लिए कि बयान कर दूँ | हिक्मत के साथ | तहक़ीक़ मैं आया हूँ तुम्हारे पास | उस ने कहा | खुली निशानियों के साथ | ईसा (अ) | आए |

لَكُمْ بَعْضَ الَّذِىْ تَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿٦٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 63 | और मेरी इताअत करो | सो डरो अल्लाह से | उस में | तुम इख़्तिलाफ़ करते हो | वह जो कि | बाज़ | तुम्हारे लिए |

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ رَبِّیْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 64 | सीधा | रास्ता | यह | सो तुम उस की इबादत करो | और तुम्हारा रब | मेरा रब | वह | बेशक अल्लाह |

فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जिन्हों ने ज़ुल्म किया | उन लोगों के लिए | सो ख़राबी | आपस में | गिरोह (जमा) | फिर इख़तिलाफ़ डाल लिया |

مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ اَلِيْمٍ ﴿٦٥﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह उन पर आ जाए | कि | क़ियामत | सिर्फ़ | वह इन्तिज़ार करते हैं | क्या | 65 | दिन दुख देने वाला | अज़ाब से |

بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٦٦﴾ اَلْاَخِلَّاۗءُ يَوْمَىِٕذٍۢ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बाज़ से (एक) | उन के बाज़ (दूसरे) | उस दिन | तमाम दोस्त | 66 | शऊर न रखते हूँ | और वह | अचानक |

ع ٦ ١١ ١٢ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِيْنَ ﴿٦٧﴾ يٰعِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَآ اَنْتُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न तुम | आज | तुम पर | कोई ख़ौफ़ नहीं | ऐ मेरे बन्दो | 67 | परहेज़गारों | सिवा | दुश्मन |

تَحْزَنُوْنَ ﴿٦٨﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ﴿٦٩﴾ اُدْخُلُوا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम दाख़िल हो जाओ | 69 | मुसलिम (जमा) | और वह थे | हमारी आयात पर | जो ईमान लाए | 68 | ग़मगीन होंगे |

الْجَنَّةَ اَنْتُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُوْنَ ﴿٧٠﴾ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रिकाबियां | उन पर | लिए फिरेंगे | 70 | तुम ख़ुश बख़्त किए जाओगे | और तुम्हारी बीवियां | तुम | जन्नत |

مِّنْ ذَهَبٍ وَّاَكْوَابٍ ۚ وَفِيْهَا مَا تَشْتَهِيْهِ الْاَنْفُسُ وَتَلَذُّ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और लज़्ज़त होगी | जी (जमा) | वह जो चाहेंगे | और उस में | और आबख़ोरे | सोने की |

الْاَعْيُنُ ۚ وَاَنْتُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٧١﴾ وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْٓ اُوْرِثْتُمُوْهَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम वारिस बनाए गए उस के | वह जिस | जन्नत | और यह | 71 | हमेशा रहोगे | उस में | और तुम | आँखों |

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٧٢﴾ لَكُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ كَثِيْرَةٌ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बहुत | मेवे | उस में | तुम्हारे लिए | 72 | जो तुम करते थे | उस के बदले |

مِّنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٧٣﴾ اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ عَذَابِ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ﴿٧٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 74 | हमेशा रहेंगे | अज़ाबे जहन्नम | में | मुजरिम (जमा) | बेशक | 73 | तुम खाते हो | उस से |

لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और हम ने ज़ुल्म नहीं किया उन पर | 75 | नाउम्मीद पड़े रहेंगे | और वह उस में | उन से | हल्का न किया जाएगा |

وَلٰكِنْ كَانُوْا هُمُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٧٦﴾ وَنَادَوْا يٰمٰلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अच्छा हो कि मौत का फ़ैसला कर दे हम पर (हमारी) | ऐ मालिक | और वह पुकारेंगे | 76 | ज़ालिम (जमा) | वह | वह थे | और लेकिन (बल्कि) |

رَبُّكَ ۭ قَالَ اِنَّكُمْ مّٰكِثُوْنَ ﴿٧٧﴾ لَقَدْ جِئْنٰكُمْ بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लेकिन | हक़ के साथ | तहक़ीक़ हम आए तुम्हारे पास | 77 | हमेशा रहने वाले | बेशक तुम | वह कहेगा | तेरा रब |

اَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٨﴾ اَمْ اَبْرَمُوْٓا اَمْرًا فَاِنَّا مُبْرِمُوْنَ ﴿٧٩﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 79 | ठहराने वाले | तो बेशक हम | कोई बात | उन्हों ने ठहरा ली | क्या | 78 | नापसंद करने वाले | हक़ से को | तुम में से अक्सर |

बेशक अल्लाह ही मेरा रब और तुम्हारा रब है, सो तुम उस की इबादत करो, यह रास्ता है सीधा। (64)
फिर गिरोहों ने आपस में इख़तिलाफ़ डाल लिया, सो उन लोगों के लिए ख़राबी है जिन्हों ने ज़ुल्म किया, अ़ज़ाब से दुख देने वाले दिन के। (65)
क्या वह सिर्फ़ क़ियामत का इन्तिज़ार करते हैं कि वह उन पर अचानक आ जाए और वह शऊर (ख़बर भी) न रखते हूँ। (66)
परहेज़गारों के सिवा उस दिन तमाम दोस्त एक दूसरे के दुश्मन होंगे। (67)
ऐ मेरे बन्दो! तुम पर कोई ख़ौफ़ नहीं आज के दिन और न तुम ग़मगीन होंगे। (68)
जो लोग हमारी आयात पर ईमान लाए और वह मुस्लिम (फ़रमांबरदार) थे। (69)
तुम दाख़िल हो जाओ तुम और तुम्हारी बीवियां जन्नत में, तुम ख़ुश बख़्त किए जाओगे। (70)
उन पर सोने की रिकाबियां और आबख़ोरे लिए फिरेंगे, और उस में (मौजूद होगा) जो (उन के) दिल चाहेंगे और आँखों की लज़्ज़त (होगी), और तुम उस में हमेशा रहोगे। (71)
और यह वह जन्नत है जिस के तुम वारिस बनाए गए हो उन (आमाल) के बदले जो तुम करते थे। (72)
तुम्हारे लिए उस में बहुत मेवे हैं, उन में से तुम खाओगे। (73)
बेशक मुज्रिम जहन्नम के अ़ज़ाब में हमेशा रहेंगे। (74)
उन से हल्का न किया जाएगा, और वह उस में नाउम्मीद पड़े रहेंगे। (75)
और हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वही ज़ालिम थे। (76)
और वह पुकारेंगे ए मालिक (दारोगाए जहन्नम)! अच्छा हो कि तेरा रब हमारी मौत का फ़ैसला करदे, वह कहेगा: बेशक तुम (इसी हाल में) हमेशा रहने वाले हो। (77)
तहक़ीक़ हम तुम्हारे पास हक़ के साथ आए, लेकिन तुम में से अक्सर हक़ को नापसंद करने वाले थे। (78)
क्या उन्हों ने कोई बात ठहरा ली है तो बेशक हम (भी) ठहराने वाले हैं। (79)

क्या वह गुमान करते हैं? कि हम नहीं सुनते उन की पोशीदा बातों और उन की सरगोशियों को, हाँ (क्यों नहीं) हमारे फ़रिश्ते उन के पास लिखते हैं। (80)
आप (स) फ़रमा दें: अगर अल्लाह का कोई बेटा होता तो मैं (उस का) पहला इबादत करने वाला होता। (81)
आस्मानों और जमीन का रब, अ़र्श का रब, उस से पाक है जो वह बयान करते हैं। (82)
पस आप (स) उन को छोड़ दें कि वह बेहूदा बातें करें और खेलें यहां तक कि वह उस दिन को पा लें जिस का उन से वादा किया जाता है। (83)
और वही जो आस्मानों में माबूद है और जमीन में माबूद है, और वही हिक्मत वाला, इल्म वाला है। (84)
और बड़ी बरकत वाला और जिस के लिए बादशाहत आस्मानों की और जमीन की, और जो कुछ उन दोनों के दरमियान है, और उस के पास है क़ियामत का इल्म, और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (85)
और वह जिन को अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, वह शफ़ाअ़त का इख़्तियार नहीं रखते, सिवाए उस के जिस ने गवाही दी हक़ की और वह जानते हैं। (86)
और अगर आप (स) उन से पूछें कि उन्हें किस ने पैदा किया? तो वह जरूर कहेंगे "अल्लाह ने" तो वह किधर उलटे फिरे जाते हैं? (87)
क़सम है (रसूल के यह) कहने की कि ऐ मेरे रब! यह लोग ईमान नहीं लाएंगे। (88)
तो आप (स) उन से मुँह फेर लें और सलाम कहें, पस जल्द वह (अन्जाम) जान लेंगे। (89)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है
हा-मीम। (1)
क़सम है वाज़ेह किताब की। (2)
बेशक हम ने उसे एक मुबारक रात (लैलतल क़द्र) में नाज़िल किया, बेशक हम ही हैं डराने वाले। (3)
उस (रात) में फ़ैसल किया जाता है हर अम्र हिक्मत वाला। (4)

اَمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ ۭ بَلٰى وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के पास | और हमारे फ़रिश्ते | हाँ | और उन की सरगोशियां | उन की पोशीदा बातें | हम नहीं सुनते | कि हम | क्या वह गुमान करते हैं |

يَكْتُبُوْنَ ﴿٨٠﴾ قُلْ اِنْ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ ڰ فَاَنَا اَوَّلُ الْعٰبِدِيْنَ ﴿٨١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 81 | इबादत करने वाला | पहला | तो मैं | कोई बेटा | रह्मान (अल्लाह का) | अगर होता | फ़रमा दें | 80 | लिखते हैं |

سُبْحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٨٢﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 82 | वह बयान करते हैं | उस से जो | अ़र्श का रब | और ज़मीन | आस्मानों का रब | पाक है |

فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِىْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٨٣﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 83 | उन को वादा किया जाता है | वह जिस | उस दिन को | वह पा लें | यहां तक | और खेलें | वह बेहूदा बातें करें | पस छोड़ दें उन को |

وَهُوَ الَّذِىْ فِى السَّمَآءِ اِلٰهٌ وَّفِى الْاَرْضِ اِلٰهٌ ۭ وَهُوَ الْحَكِيْمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हिक्मत वाला | और वही | माबूद | और ज़मीन में | माबूद | आस्मानों में | वह जो | और वही |

الْعَلِيْمُ ﴿٨٤﴾ وَتَبٰرَكَ الَّذِىْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो उन दोनों के दरमियान | और ज़मीन | आस्मानों | बादशाहत | उस के लिए | वह जो | और बड़ी बरकत वाला | 84 | इल्म वाला |

وَعِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٥﴾ وَلَا يَمْلِكُ الَّذِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जिन को | और इख़्तियार नहीं रखते | 85 | तुम लौट कर जाओगे | और उस की तरफ़ | क़ियामत का इल्म | और उस के पास |

يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह | हक़ की | जिस ने गवाही दी | सिवाए | शफ़ाअत | उस के सिवा | वह पुकारते हैं |

يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ فَاَنّٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो किधर | तो वह जरूर कहेंगे अल्लाह | पैदा किया उन्हें | किस | आप (स) उन से पूछें | और अगर | 86 | जानते हैं |

يُؤْفَكُوْنَ ﴿٨٧﴾ وَقِيْلِهٖ يٰرَبِّ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾ وقف لازم

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 88 | ईमान नहीं लाएंगे | लोग | यह | बेशक | ऐ मेरे रब | क़सम उस के कहने की | 87 | वह उलटे फिरे जाते हैं |

فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلٰمٌ ۭ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٩﴾ ع ٣٢ ١٢

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 89 | पस जल्द उन्हें मालूम हो जाएगा | सलाम | और कहें | उन से | तो आप (स) मुँह फेर लें |

## آيَاتُهَا ٥٩ ❀ (٤٤) سُوْرَةُ الدُّخَانِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकूआत 3 — (44) सूरतुद दुख़ान / धुवाँ — आयात 59

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حٰمٓ ﴿١﴾ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِىْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ ع ١٢ عند المتقدمين ١٢

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक मुबारक रात | में | बेशक हम ने नाज़िल किया इसे | 2 | वाज़ेह | क़सम किताब | 1 | हा-मीम |

اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ﴿٣﴾ فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ﴿٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | हिक्मत वाला | हर अम्र | फ़ैसल किया जाता है | उस में | 3 | डराने वाले | बेशक हम हैं |

اَمۡـرًا مِّـنۡ عِنۡـدِنَـا ؕ اِنَّـا كُنَّـا مُرۡسِلِيۡـنَ ۝٥ رَحۡـمَـةً مِّـنۡ رَّبِّـكَ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारा रब | से | रहमत | 5 | भेजने वाले | बेशक हम है | हमारे पास से | हुक्म हो कर |

وقف لازم

اِنَّـهٗ هُوَ السَّمِيۡعُ الۡعَلِيۡمُ ۝٦ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا ۘ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन दोनों के दरमियान | और जो | और ज़मीन | रब है आस्मानों | 6 | जानने वाला | सुनने वाला | बेशक वही |

اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّوۡقِنِيۡنَ ۝٧ لَاۤ اِلٰـهَ اِلَّا هُوَ يُحۡىٖ وَيُمِيۡتُ ؕ رَبُّكُمۡ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे बाप दादा | और रब | तुम्हारा रब | वह जान डालता है और जान निकालता है | उस के सिवा | नहीं कोई माबूद | 7 | यक़ीन करने वाले | अगर तुम हो |

الۡاَوَّلِيۡنَ ۝٨ بَلۡ هُمۡ فِىۡ شَكٍّ يَّلۡعَبُوۡنَ ۝٩ فَارۡتَقِبۡ يَوۡمَ تَاۡتِى السَّمَآءُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मान लाए | उस दिन | तो तुम इन्तिज़ार करो | 9 | खेलते हैं | शक में | बल्कि वह | 8 | पहले |

بِدُخَانٍ مُّبِيۡنٍ ۝١٠ يَّغۡشَى النَّاسَ ؕ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ۝١١ رَبَّنَا اكۡشِفۡ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| खोल (दूर) कर दे | ऐ हमारे रब | 11 | अज़ाब दर्दनाक | यह | लोगों | वह ढांप लेगा | 10 | ज़ाहिर | धुआं |

عَنَّا الۡعَذَابَ اِنَّا مُؤۡمِنُوۡنَ ۝١٢ اَنّٰى لَـهُمُ الذِّكۡرٰى وَقَدۡ جَآءَهُمۡ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तहक़ीक़ आ चुका उन के पास | नसीहत | उन को | कहां | 12 | ईमान ले आएंगे | बेशक हम | अज़ाब | हम से |

وقف لازم

رَسُوۡلٌ مُّبِيۡنٌ ۝١٣ ثُمَّ تَوَلَّوۡا عَنۡهُ وَقَالُوۡا مُعَلَّمٌ مَّجۡنُوۡنٌ ۝١٤ اِنَّا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक हम | 14 | दीवाना | सिखाया हुआ | और कहने लगे | उस से | वह फिर गए | फिर | 13 | रसूल खोल खोल कर बयान करने वाला |

وقف لازم

كَاشِفُوا الۡعَذَابِ قَلِيۡلًا اِنَّكُمۡ عَآئِدُوۡنَ ۝١٥ يَوۡمَ نَبۡطِشُ الۡبَطۡشَةَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पकड़ | हम पकड़ेंगे | जिस दिन | 15 | तुम बेशक (पिछली) हालत पर लौट आने वाले हो | थोड़ा | अज़ाब | खोलने वाले |

الۡكُبۡرٰى ۚ اِنَّا مُنۡتَقِمُوۡنَ ۝١٦ وَلَقَدۡ فَتَنَّا قَبۡلَهُمۡ قَوۡمَ فِرۡعَوۡنَ وَجَآءَهُمۡ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और आया उन के पास | क़ौमे फ़िरऔन | इन से क़ब्ल | और हम आज़मा चुके हैं | 16 | इन्तिक़ाम लेने वाले | बेशक हम | बड़ी (सख़्त) |

رَسُوۡلٌ كَرِيۡمٌ ۝١٧ اَنۡ اَدُّوۡۤا اِلَىَّ عِبَادَ اللّٰهِ ؕ اِنِّىۡ لَكُمۡ رَسُوۡلٌ اَمِيۡنٌ ۝١٨

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | एक रसूल अमीन | तुम्हारे लिए | बेशक मैं | बन्दे अल्लाह के | मेरे | कि हवाले कर दो | 17 | करीम (आली क़द्र) | एक रसूल |

وَّاَنۡ لَّا تَعۡلُوۡا عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّىۡۤ اٰتِيۡكُمۡ بِسُلۡطٰنٍ مُّبِيۡنٍ ۝١٩ وَاِنِّىۡ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बेशक मैं | 19 | वाज़ेह | दलील के साथ | आया हूँ तुम्हारे पास | बेशक मैं | अल्लाह पर (के मुक़ाबिल) | तुम सरकशी न करो | और यह कि |

عُذۡتُ بِرَبِّىۡ وَرَبِّكُمۡ اَنۡ تَرۡجُمُوۡنِ ۝٢٠ وَاِنۡ لَّمۡ تُؤۡمِنُوۡا لِىۡ فَاعۡتَزِلُوۡنِ ۝٢١

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 21 | तो एक किनारे हो जाओ मुझ से | मुझ पर | तुम ईमान नहीं लाते | और अगर | 20 | तुम मुझे संगसार कर दो | कि | और तुम्हारा रब | अपने रब की | पनाह चाहता हूँ |

العلقة

فَدَعَا رَبَّهٗۤ اَنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوۡمٌ مُّجۡرِمُوۡنَ ۝٢٢ فَاَسۡرِ بِعِبَادِىۡ لَيۡلًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रात में | तो तू ले जा मेरे बन्दों को | 22 | मुजरिम लोग | यह | कि | तो उस ने दुआ की अपने रब से |

اِنَّكُمۡ مُّتَّبَعُوۡنَ ۝٢٣ وَاتۡرُكِ الۡبَحۡرَ رَهۡوًا ؕ اِنَّهُمۡ جُنۡدٌ مُّغۡرَقُوۡنَ ۝٢٤

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 24 | डूबने वाले | एक लशकर | बेशक वह | ठहरा हुआ | दर्या | और छोड़ जाओ | 23 | पीछा किए जाओगे | बेशक तुम |

كَمۡ تَرَكُوۡا مِنۡ جَنّٰتٍ وَّعُيُوۡنٍ ۝٢٥ وَّزُرُوۡعٍ وَّمَقَامٍ كَرِيۡمٍ ۝٢٦

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 26 | और मकान नफ़ीस | और खेतियां | 25 | और चश्मे | बाग़ात | से | वह कितने (ही) छोड़ गए |

हुक्म हो कर हमारे पास से। बेशक हम ही हैं (रसूल) भेजने वाले। (5)
रहमत आप (स) के रब की तरफ़ से, बेशक वही है सुनने वाला जानने वाला। (6)
रब है आस्मानों का और ज़मीन का और जो उन के दरमियान है, अगर तुम हो यक़ीन करने वाले। (7)
उस के सिवा कोई माबूद नहीं, वही जान डालता है, वही जान निकालता है, और (वही) रब है तुम्हारा और तुम्हारे पहले बाप दादा का। (8)
बल्कि वह शक में पड़े खेलते हैं। (9)
तो तुम उस दिन का इन्तिज़ार करो कि आस्मान ज़ाहिर धुआं लाएगा, (10)
और ढांप लेगा (छा जाएगा) लोगों पर, यह है दर्दनाक अज़ाब। (11)
(अब वह कहेंगे) ऐ हमारे रब! हम से अज़ाब दूर कर दे, बेशक हम ईमान ले आएंगे। (12)
उन को नसीहत कहां याद आएगी? उन के पास तो खोल खोल कर बयान करने वाला रसूल आ चुका है। (13)
फिर वह उस से फिर गए और कहने लगेः (यह तो) सिखाया हुआ दीवाना है। (14)
बेशक हम थोड़ा अज़ाब खोलने वाले हैं (मगर) तुम बेशक फिर बाग़ियाना हालत पर लौट आने वाले हो। (15)
जिस दिन हम सख़्त पकड़ पकड़ेंगे, बेशक हम इन्तिक़ाम लेने वाले हैं। (16)
और हम उन से पहले क़ौमे फ़िरऔन को आज़मा चुके हैं, और उन के पास एक आली क़द्र रसूल आया। (17)
कि अल्लाह के बन्दों को मेरे हवाले कर दो, बेशक मैं तुम्हारे लिए एक रसूल अमीन हूँ। (18)
और यह कि तुम अल्लाह के मुक़ाबिल सरकशी न करो, बेशक मैं तुम्हारे पास वाज़ेह दलील के साथ आया हूँ। (19)
और बेशक मैं पनाह लेता हूँ अपने रब की और तुम्हारे रब की (उस से) कि तुम मुझे संगसार कर दो। (20)
और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो मुझ से एक किनारे हो जाओ। (21)
तो उस ने अपने रब से दुआ की कि यह मुजरिम लोग हैं। (22)
(इरशादे इलाही हुआ) तो तुम मेरे बन्दों को ले जाओ रातों रात, बेशक तुम्हारा पीछा किया जाएगा। (23)
और छोड़ जाओ दर्या ठहरा (खुला) हुआ, बेशक वह एक लशकर हैं डूबने वाले। (24)
और वह छोड़ गए कितने ही बाग़ात, और चश्मे, (25)
और खेतियां, और नफ़ीस मकान, (26)

और नेमतें, जिन में वह मज़े उड़ाते थे। (27)
उसी तरह (हुआ उन का अन्जाम), और हम ने दूसरी क़ौम को उन का वारिस बनाया। (28)
सो उन पर आस्मान और ज़मीन न रोए और वह न हुए ढील दिए गए (लोगों में)। (29)
और तहक़ीक़ हम ने बनी इस्राईल को ज़िल्लत वाले अ़ज़ाब से नजात दी. (30)
(यानी) फ़िरऔन से, बेशक वह हद से बढ़ जाने वालों में से सरकश था। (31)
और अलबत्ता हम ने उन्हें तमाम जहान वालों पर दानिस्ता पसंद किया। (32)
और हम ने उन्हें खुली निशानियां दीं, जिन में खुली आज़माइश थी। (33)
बेशक यह लोग कहते हैं, (34)
यह हमारा मरना तो सिर्फ़ एक ही बार है और हम दोबारा उठाए जाने वाले नहीं। (35)
अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप दादा को ले आओ। (36)
क्या वह बेहतर हैं या तुब्बअ़ की क़ौम? और जो लोग उन से क़ब्ल थे? हम ने उन्हें हलाक किया, बेशक वह मुजरिम लोग थे। (37)
और हम ने आस्मानों और ज़मीन को और जो कुछ उन के दरमियान है खेलते हुए (अबस खेल कूद के लिए) नहीं पैदा किया। (38)
हम ने उन्हें नहीं पैदा किया मगर हक़ के साथ, लेकिन उन में से अक्सर नहीं जानते। (39)
बेशक फ़ैसले का दिन (रोज़े क़ियामत) उन सब का वक़्ते मुक़र्रर (मीआ़द) है। (40)
जिस दिन काम न आएगा कोई साथी कुछ भी किसी साथी के, और न वह मदद किए जाएंगे। (41)
मगर जिस पर अल्लाह ने रहम किया, बेशक वही है ग़ालिब रहम करने वाला। (42)
बेशक थोहर का दरख़्त। (43)
गुनाहगारों का खाना है। (44)
(वह) पेटों में पिघले हुए तांबे की तरह खौलता रहेगा। (45)
जैसे खौलता हुआ गर्म पानी (46)
उसे पकड़ लो, फिर उसे जहन्नम के बीचों बीच तक खींचो। (47)
फिर उस के सर के ऊपर डालो खौलते हुए पानी के अ़ज़ाब से। (48)

وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ﴿٢٧﴾ كَذٰلِكَ ۟ وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿٢٨﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 28 | दूसरे | क़ौम | और हम ने वारिस बनाया उन का | उसी तरह | 27 | मज़े उड़ाते | उस में | वह थे | और नेमतें |

ع ٢١ / ١٢

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ﴿٢٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 29 | ढील दिए गए | और न हुए वह | और ज़मीन | आस्मान | उन पर | सो न रोए |

وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿٣٠﴾ مِنْ فِرْعَوْنَ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़िरऔन | से | 30 | अ़ज़ाब ज़िल्लत वाला | से | बनी इस्राईल | और तहक़ीक़ हम ने नजात दी |

اِنَّهٗ كَانَ عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣١﴾ وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰى عِلْمٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दानिस्ता | और अलबत्ता हम ने उन्हें पसंद किया | 31 | हद से बढ़ जाने वालों में से | सरकश | था | बेशक वह |

عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰيٰتِ مَا فِيْهِ بَلٰٓـؤٌا مُّبِيْنٌ ﴿٣٣﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक यह लोग | 33 | खुली | आज़माइश | वह जिन में | निशानियां | और हम ने उन्हें दी | 32 | तमाम जहान वालों पर |

لَيَقُوْلُوْنَ ﴿٣٤﴾ اِنْ هِيَ اِلَّا مَوْتَتُنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِيْنَ ﴿٣٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 35 | दोबारा उठाए जाने वाले | और हम नहीं | पहली (एक ही) बार | हमारा मरना | मगर सिर्फ़ | नहीं यह | 34 | अलबत्ता कहते हैं |

فَاْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٦﴾ اَهُمْ خَيْرٌ اَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۙ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क़ौमे तुब्बअ़ | या | बेहतर | क्या वह | 36 | सच्चे | अगर तुम हो | हमारे बाप दादा | तो ले आओ |

وَّالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ اَهْلَكْنٰهُمْ ؗ اِنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿٣٧﴾ وَمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं | 37 | मुजरिम (जमा) | थे | बेशक वह | हम ने हलाक किया उन्हें | उन से क़ब्ल | और जो लोग |

خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿٣٨﴾ مَا خَلَقْنٰهُمَآ اِلَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर | हम ने नहीं पैदा किया उन्हें | 38 | खेलते हुए | और जो उन दोनों के दरमियान | और ज़मीन | आस्मानों | हम ने पैदा किया |

بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़ैसले का दिन | बेशक | 39 | नहीं जानते | उन में से अक्सर | और लेकिन | हक़ के साथ (ठीक तौर पर) |

مِيْقَاتُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٤٠﴾ يَوْمَ لَا يُغْنِيْ مَوْلًى عَنْ مَّوْلًى شَيْئًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुछ | किसी साथी के | कोई साथी | न काम आएगा | जिस दिन | 40 | सब | उन सब का वक़्ते मुक़र्रर |

ع ٢ / ١٣ / ١٥

وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٤١﴾ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٤٢﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 42 | रहम करने वाला | वह ग़ालिब | बेशक वह | रहम किया अल्लाह ने | जिस | मगर | 41 | मदद किए जाएंगे | और न वह |

اِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوْمِ ﴿٤٣﴾ طَعَامُ الْاَثِيْمِ ﴿٤٤﴾ كَالْمُهْلِ ۚ يَغْلِيْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| खौलता है | पिघले हुए तांबे की तरह | 44 | खाना गुनाहगारों का | 43 | थोहर का दरख़्त | बेशक |

معانقة ١٣ / عند المتاخرين ١٢

فِي الْبُطُوْنِ ﴿٤٥﴾ كَغَلْيِ الْحَمِيْمِ ﴿٤٦﴾ خُذُوْهُ فَاعْتِلُوْهُ اِلٰى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तक | फिर खींचो उसे | तुम पकड़ लो उसे | 46 | गर्म पानी | जैसे खौलता हुआ | 45 | पेटों में |

سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ صُبُّوْا فَوْقَ رَاْسِهٖ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيْمِ ﴿٤٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 48 | अ़ज़ाब खौलता हुआ पानी | से | उस का सर | पर- ऊपर | फिर डालो | 47 | बीचों बीच जहन्नम |

ذُقْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ ﴿٤٩﴾ اِنَّ هٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهٖ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | जो तुम थे | बेशक यह | 49 | इज़्ज़त वाला | ज़ोर आवर | तू | बेशक तू | चख |

تَمْتَرُوْنَ ﴿٥٠﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ مَقَامٍ اَمِيْنٍ ﴿٥١﴾ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٥٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 52 | और चश्मे | बाग़ात | में | 51 | अम्न का मुक़ाम | में | बेशक मुत्तक़ीन (अल्लाह से डरने वाले) | 50 | शक करते |

يَّلْبَسُوْنَ مِنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٥٣﴾ كَذٰلِكَ ۗ وَزَوَّجْنٰهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम जोड़े बना देंगे उन के लिए | इसी तरह | 53 | एक दूसरे के आमने सामने | और दबीज़ रेशम | बारीक रेशम | से - के | पहने हुए |

بِحُوْرٍ عِيْنٍ ﴿٥٤﴾ يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيْنَ ﴿٥٥﴾ لَا يَذُوْقُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह न चखेंगे | 55 | इत्मीनान से | हर क़िस्म का मेवा | उस में | वह मांगेंगे | 54 | ख़ूबरू बड़ी बड़ी आँखों वालियां |

فِيْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى ۚ وَوَقٰهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿٥٦﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 56 | जहन्नम का अज़ाब | और उस (अल्लाह) ने बचा लिया उन्हें | पहली मौत | सिवाए | मौत | वहाँ |

فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكَ ۗ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٥٧﴾ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने इसे आसान कर दिया | इस के सिवा नहीं | 57 | कामयाबी बड़ी | यही | यह | तुम्हारा रब | से - के | फ़ज़्ल से |

ع ١٨ ٣ ١٦ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٨﴾ فَارْتَقِبْ اِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُوْنَ ﴿٥٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 59 | इन्तिज़ार में है | बेशक वह | पस आप (स) इन्तिज़ार करें | 58 | नसीहत पकड़ें | ताकि वह | आप (स) की ज़बान में |

آيَاتُهَا ٣٧ ❀ (٤٥) سُوْرَةُ الْجَاثِيَةِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٤

रुकूआत 4 — (45) सूरतुल जासिया — गिरी हुई — आयात 37

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾ اِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मानों में | बेशक | 2 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | अल्लाह (की तरफ़) से | नाज़िल की हुई किताब | 1 | हा-मीम |

وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣﴾ وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो जानवर | वह फैलाता है | और जो | और तुम्हारी पैदाइश में | 3 | अहले ईमान के लिए | अलबत्ता निशानियां | और ज़मीन |

اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह ने उतारा | और जो | और दिन | रात | और तबदीली | 4 | यक़ीन करने वाले लोगों के लिए | निशानियां |

مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उस के मरने (ख़ुश्क होने) के बाद | ज़मीन | उस से | फिर ज़िन्दा किया | रिज़्क़ | आस्मान से |

وَتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٥﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम वह पढ़ते हैं | अल्लाह के अहकाम | यह | 5 | अक़्ल (सलीम) वालों के लिए | निशानियां | हवाएं | और गर्दिश |

عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | वह ईमान लाएंगे | और उसकी आयात | अल्लाह के बाद | बात | पस किस | हक़ के साथ | आप (स) पर |

चख, बेशक ज़ोर आवर, इज़्ज़त वाला है तू। (49)
बेशक यह है वह जिस में तुम शक करते थे (50)
बेशक मुत्तक़ी अम्न के मुक़ाम में होंगे। (51)
बाग़ात और चश्मों में। (52)
पहने हुए बारीक और दबीज रेशम के कपड़े एक दूसरे के आमने सामने (बैठे होंगे)। (53)
उसी तरह हम ख़ूबरू बड़ी बड़ी आँखों वालियों से उन के जोड़े बना देंगे (54)
वह मांगेंगे उस में इत्मीनान से हर क़िस्म का मेवा। (55)
वह पहली मौत के सिवा वहाँ (फिर) मौत का ज़ाइक़ा न चखेंगे, और अल्लाह ने उन्हें जहन्नम के अज़ाब से बचा लिया। (56)
तुम्हारे रब का फ़ज़्ल, यही है बड़ी कामयाबी। (57)
बेशक हम ने इस (क़ुरआन) को आसान कर दिया है आप की ज़बान में ताकि वह नसीहत पकड़ें। (58)
पस आप (स) इन्तिज़ार करें, बेशक वह भी मुन्तज़िर हैं। (59)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
हा-मीम। (1)
यह नाज़िल की हुई किताब है, ग़ालिब हिक्मत वाले अल्लाह की तरफ़ से। (2)
बेशक आस्मानों और ज़मीन में अलबत्ता अहले ईमान के लिए निशानियां हैं। (3)
और तुम्हारी पैदाइश में और जो जानवर वह फैलाता है, उन में यक़ीन करने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (4)
और रात दिन की तबदीली में, और उस रिज़्क़ (बारिश) में जो अल्लाह ने आस्मान से उतारा, फिर उस से जिन्दा किया जमीन को उस के ख़ुश्क होने के बाद और हवाओं की गर्दिश में अक़्ले सलीम रखने वालों के लिए निशानियां हैं। (5)
यह अल्लाह के अहकाम हैं जिन्हें हम आप (स) पर हक़ के साथ (ठीक ठीक) पढ़ते हैं, पस अल्लाह और उस की आयात के बाद वह किस बात पर ईमान लाएंगे? (6)

खराबी है हर झूट बान्धने वाले गुनाहगार के लिए। (7)

वह अल्लाह की आयात को सुनता है जो उस पर पढ़ी जाती हैं, फिर तकब्बुर करता हुआ अड़ा रहता है गोया कि उस न सुना ही नहीं, पस उसे दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़ुशख़बरी दो। (8)

और जब वह हमारी आयात के किसी शै से वाकिफ़ होता है तो वह उस को पकड़ता (बनाता है) हँसी मज़ाक़, यही लोग हैं जिन के लिए रुस्वा करने वाला अ़ज़ाब है। (9)

उन के आगे जहन्नम है, और उन के कुछ काम न आएंगे जो उन्हों ने कमाया और वह न जिन को उन्हों ने अल्लाह के सिवा कारसाज ठहराया, और उन के लिए बड़ा अ़ज़ाब है। (10)

यह (कुरआन सरासर) हिदायत है, और जिन लोगों ने कुफ्र किया अपने रब की आयात का, उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब में से एक बड़ा अ़ज़ाब होगा। (11)

अल्लाह वह है जिस ने तुम्हारे लिए दर्या को मुसख़्ख़र किया ताकि चलें उस में उस के हुक्म से कश्तियां, और ताकि उस के फ़ज़्ल से (रोज़ी) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। (12)

और उस ने तुम्हारे लिए अपने हुक्म से मुसख़्ख़र किया सब को जो आस्मानों में और जमीन में हैं, बेशक उस में ग़ौर ओ फ़िक्र करने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (13)

आप (स) उन लोगों को फ़रमा दें जो ईमान लाए कि वह उन लोगों से दरगुज़र करें जो अल्लाह के अय्याम (जज़ाए आमाल) की उम्मीद नहीं रखते ताकि अल्लाह उन लोगों को बदला दे उन के आमाल का। (14)

जिस ने नेक अमल किया अपनी जात के लिए (किया) और जिस ने बुरा किया तो (उस का वबाल) उसी पर (होगा), फिर तुम अपने रब की तरफ़ लौटाए जाओगे। (15)

और तहक़ीक़ हम ने बनी इस्राईल को किताब (तौरेत) और हकूमत और नुबूव्वत दी और हम ने उन्हें पाकीज़ा चीज़ें अ़ता कीं, और हम ने उन्हें जहान वालों पर फ़ज़ीलत दी। (16)

और हम ने उन्हें दीन के बारे में वाज़ेह निशानियां दीं तो उन्हों ने इख़्तिलाफ़ न किया मगर उस के बाद कि जब उन के पास इल्म आ गया आपस की जिद की वजह से, बेशक तुम्हारा रब उन के दरमियान फ़ैसला फ़रमाएगा क़ियामत के दिन जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। (17)

وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ٧ يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तकब्बुर करता हुआ | फिर अड़ा रहता है | पढ़ी जाती हैं उस पर | अल्लाह की आयात | वह सुनता है | 7 | गुनाहगार | हर झूट बान्धने वाले के लिए | खराबी |

كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ٨ وَاِذَا عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْـًٔا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किसी शै | हमारी आयात में से | और जब वह वाकिफ़ हो | 8 | दर्दनाक | अ़ज़ाब की | पस उसे ख़ुशख़बरी दो | उस ने नही सुना उसे | गोया कि |

اتَّخَذَهَا هُزُوًا ۗ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ٩ مِنْ وَّرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जहन्नम | उन की दूसरी तरफ़ (आगे) | 9 | अ़ज़ाब रुस्वा करने वाला | उन के लिए | यही लोग | हँसी मज़ाक | वह उस को पकड़ता है |

وَلَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَيْـًٔا وَّلَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ ۚ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कारसाज़ | अल्लाह के सिवा | और न जो उन्हों ने ठहराया | कुछ | जो उन्हों ने कमाया | और न काम आएगा उन के |

وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ١٠ هٰذَا هُدًى ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | अपना रब | आयात का | और जिन लोगों ने कुफ्र किया (न माना) | यह (कुरआन) हिदायत | 10 | बड़ा | अ़ज़ाब | और उन के लिए |

عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ١١ اَللّٰهُ الَّذِيْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ ع ۲ ١٧

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कश्तियां | ताकि चलें | दर्या | तुम्हारे लिए | मुसख़्ख़र किया | अल्लाह वह जिस | 11 | दर्दनाक अज़ाब | से | एक अज़ाब |

فِيْهِ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ١٢ وَسَخَّرَ لَكُمْ مَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | और उस ने मुसख़्ख़र किया तुम्हारे लिए | 12 | शुक्र करो | और ताकि तुम | उस के फ़ज़्ल से | और कि तुम तलाश करो | उस के हुक्म से | उस में |

فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مِّنْهُ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| निशानियां | उस में | बेशक | अपने हुक्म से | सब | ज़मीन में | और जो | आस्मानों में |

لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ١٣ قُلْ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا لِلَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उम्मीद नही रखते | उन लोगों से जो | दरगुज़र करें | ईमान लाए | उन लोगों को जो | फ़रमा दें | 13 | ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं | उन लोगों के लिए |

اَيَّامَ اللّٰهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا ۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ١٤ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ़मल किया नेक | जिस | 14 | वह कमाते थे (आमाल) | उस का जो | उन लोगों को | ताकि वह बदला दे | अल्लाह के अय्याम |

فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ۖ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ١٥ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तहक़ीक़ हम ने दी | 15 | तुम लौटाए जाओगे | तुम अपने रब की तरफ़ | फिर | तो उस पर | बुरा किया | और जिस | तो अपनी जात के लिए |

بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पाकीज़ा चीज़ें | और हम ने अ़ता की उन्हें | और नबूव्वत | और हुक्म | किताब | बनी इस्राईल |

وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ١٦ وَاٰتَيْنٰهُمْ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْٓا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया | अम्र से (दीन के बारे में) | वाज़ेह निशानियां | और हम ने उन्हें दी | 16 | जहान वालों पर | और हम ने फ़ज़ीलत दी उन्हें |

اِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۙ بَغْيًا ۢ بَيْنَهُمْ ۗ اِنَّ رَبَّكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक तुम्हारा रब | आपस की | ज़िद से | इल्म | जब आ गया उन के पास | उस के बाद | मगर |

يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ١٧

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 17 | इख़्तिलाफ़ करते | उस में | वह थे | उस में | क़ियामत के दिन | उन के दरमियान | फ़ैसला करेगा |

ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़ाहिशात | और न पैरवी करें | तो आप (स) उस की पैरवी करें | दीन से-के | शरीअ़त (ख़ास तरीक़ा) पर | हम ने कर दिया आप को | फिर |

الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨﴾ اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुछ | अल्लाह से (के सामने) | आप (स) के | हरगिज़ काम न आएंगे | बेशक वह | 18 | इल्म नहीं रखते | उन लोगों की जो |

وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 19 | परहेज़गारों | रफ़ीक़ | और अल्लाह | बाज़ (दूसरे) | रफ़ीक़ (जमा) | उन में से बाज़ (एक) | ज़ालिम (जमा) | और बेशक |

هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٢٠﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | यक़ीन रखने वाले लोगों के लिए | और रहमत | और हिदायत | लोगों के लिए | दानाई की बातें | यह |

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान लाए | उन लोगों की तरह जो | कि हम कर देंगे उन्हें | बुराइयां | कमाई (की) | वह जिन्हों ने | क्या गुमान करते हैं |

ع ٢ ١٠ ١٨ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ۗ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٢١﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 21 | जो वह हुक्म लगाते हैं | बुरा | और उन का मरना | उन का जीना | बराबर | और उन्हों ने अमल किए अच्छे |

وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस का जो उस ने कमाया (आमाल) | हर शख़्स | और ताकि बदला दिया जाए | हक़ (हिक्मत) के साथ | और ज़मीन | आस्मानों | और पैदा किया अल्लाह ने |

وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾ اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और गुमराह कर दिया उसे अल्लाह | अपनी ख़ाहिश | अपना माबूद | बना लिया | जो-जिस | क्या तुम ने देखा | 22 | ज़ुल्म न किए जाएंगे | और वह |

عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ۗ فَمَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो कौन | पर्दा | उस की आँख पर | और कर दिया (डाल दिया) | और उस का दिल | उस के कान | और उस ने मुह्र लगा दी | इल्म पर (के बावजूद) |

يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ۗ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَقَالُوْا مَا هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमारी ज़िन्दगी | सिर्फ़ | नहीं यह | और उन्हों ने कहा | 23 | तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते ? | अल्लाह के बाद | उसे हिदायत देगा |

الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَآ اِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस का | उन्हें | और नहीं | ज़माना | मगर-सिर्फ़ | और नहीं हलाक करता हमें | और हम जीते हैं | हम मरते हैं | दुनिया |

مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿٢٤﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वाज़ेह | हमारी आयात | पढ़ी जाती हैं उन पर | और जब | 24 | अटकल दौड़ाते हैं | मगर-सिर्फ़ | वह | नहीं | से-कोई इल्म |

مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर तुम हो | हमारे बाप दादा को | तुम ले आओ | वह कहते हैं | सिवा यह कि | उन की हुज्जत | नहीं होती |

صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ اِلٰى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ | वह फिर तुम्हें जमा करेगा | वह फिर तुम्हें मौत देगा | अल्लाह तुम्हें ज़िन्दगी देता है | फ़रमा दें | 25 | सच्चे |

ع ٣ ٥ ١٩ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 26 | जानते नहीं | अक्सर लोग | और लेकिन | उस में | कोई शक नहीं | क़ियामत का दिन |

फिर हम ने आप (स) को दीन के एक ख़ास तरीक़े पर कर दिया तो आप (स) उस की पैरवी करें, और जो लोग इल्म नहीं रखते उन की ख़ाहिशात की पैरवी न करें। (18)
बेशक वह अल्लाह के सामने आप के काम न आएंगे कुछ भी और बेशक ज़ालिम एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं, और अल्लाह परहेज़गारों का रफ़ीक़ है (19)
यह लोगों के लिए दानाई की बातें हैं, और हिदायत ओ रहमत यक़ीन रखने वाले लोगों के लिए। (20)
क्या वह लोग यह गुमान करते हैं जिन्हों ने बुराइयां कीं कि हम उन्हें उन लोगों की तरह कर देंगे जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अमल किए ताकि बराबर (हो जाए) उन का जीना और मरना, बुरा है जो वह हुक्म लगाते हैं। (21)
और अल्लाह ने आस्मानों को और ज़मीन को पैदा किया हिक्मत के साथ और ताकि हर शख़्स को उस के आमाल का बदला दिया जाए और उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा। (22)
क्या तुम ने उस शख़्स को देखा जिस ने बना लिया अपनी ख़ाहिशों को अपना माबूद, और अल्लाह ने इल्म के बावजूद उसे गुमराह कर दिया, और मुह्र लगा दी उस के कान और उस के दिल पर, और डाल दिया उस की आँख पर पर्दा, तो कौन अल्लाह के बाद उसे हिदायत देगा, तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (23)
और उन्हों ने कहा कि यह (ज़िन्दगी और कुछ) नहीं सिर्फ़ हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है, हम मरते हैं और हम जीते हैं, और हमें सिर्फ़ ज़माना हलाक कर देता है, और उन्हें उस का कोई इल्म नहीं, वह सिर्फ़ अटकल दौड़ाते हैं। (24)
और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयात पढ़ी जाती हैं तो उन की हुज्जत (दलील) नहीं होती इस के सिवा कि वह कहते हैं: हमारे बाप दादा को ले आओ अगर तुम सच्चे हो। (25)
आप फ़रमा दें: अल्लाह (ही) तुम्हें ज़िन्दगी देता है (वही) फिर तुम्हें मौत देगा फिर (वही) तुम्हें क़ियामत के दिन जमा करेगा, जिस में कोई शक नहीं, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। (26)

और अल्लाह (ही) के लिए है बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की, और जिस दिन क़ियामत क़ाइम (बपा) होगी उस दिन बातिल परस्त ख़सारा पाएंगे। (27)
और तुम हर उम्मत को घुटनों के बल गिरी हुई देखोगे, हर उम्मत अपने नामाए आमाल की तरफ़ पुकारी जाएगी, आज तुम्हें बदला दिया जाएगा उस का जो तुम करते थे। (28)
यह हमारी तहरीर है जो तुम्हारे बारे में हक़ के साथ बोलती है, बेशक हम लिखाते थे जो तुम करते थे। (29)
पस जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए तो उन्हें उन का रब अपनी रहमत में दाखिल करेगा, यही है खुली कामयाबी। (30)
और वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (उन्हें कहा जाएगा) सो क्या तुम पर मेरी आयात न पढ़ी जाती थीं? तो तुम ने तकब्बुर किया और तुम मुजरिम लोग थे। (31)
और जब (तुम से) कहा जाता था कि बेशक अल्लाह का वादा सच है और क़ियामत में कोई शक नहीं, तो तुम ने कहाः हम नहीं जानते कि क़ियामत क्या है। हम तो बस एक गुमान सा रखते हैं, और हम नहीं हैं यक़ीन करने वाले। (32)
और उन पर उन के आमाल की बुराइयां खुल गईं और उन्हें उस (अ़ज़ाब) ने घेर लिया जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (33)
और कहा जाएगाः हम ने तुम्हें भुला दिया है जैसे तुम ने इस दिन के मिलने को भुला दिया था, और तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है, और तुम्हारा कोई मददगार नहीं। (34)
यह इस लिए है कि तुम ने बना लिया था अल्लाह की आयात को एक मज़ाक़, और तुम्हें दुनिया की जिन्दगी ने फ़रेब दे रखा था, सो वह आज उस से न निकाले जाएंगे और न उन्हें (अल्लाह की) रज़ा मन्दी हासिल करने का मौक़ा दिया जाएगा। (35)
पस तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो रब है आस्मानों का और रब है ज़मीन का, और रब है तमाम जहानों का। (36)
और उसी के लिए है किबरियाई (बड़ाई) आस्मानों में और ज़मीन में, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (37)

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّخْسَرُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़सारा पाएंगे | उस दिन | क़ियामत | क़ाइम होगी | और जिस दिन | और ज़मीन | आस्मानों | और अल्लाह के लिए बादशाहत |

الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۗ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰٓى اِلٰى كِتٰبِهَا ۗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी किताब (नामाए आमाल) की तरफ़ | पुकारी जाएगी | उम्मत | हर | घुटनों के बल गिरी हुई | हर उम्मत | और तुम देखोगे | 27 | बातिल परस्त |

اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٨﴾ هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम पर (तुम्हारे बारे में) | बोलती है | यह हमारी किताब (तहरीर) | 28 | तुम करते थे | जो | तुम्हें बदला दिया जाएगा | आज |

بِالْحَقِّ ۗ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٩﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान लाए | पस जो | 29 | तुम करते थे | जो | लिखाते थे | बेशक हम | हक़ के साथ |

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۗ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कामयाबी | वह (यही) | यह | अपनी रहमत में | उन का रब | तो वह दाखिल करेगा उन्हें | और उन्हों ने अ़मल किए नेक |

الْمُبِيْنُ ﴿٣٠﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۗ اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम पर | पढ़ी जाती | मेरी आयात | सो क्या न थीं | कुफ़्र किया | और वह लोग जिन्हों ने | 30 | खुली |

فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣١﴾ وَاِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह का वादा | कहा जाता था बेशक | और जब | 31 | मुजरिम (जमा) | लोग | और तुम थे | तो तुम ने तकब्बुर किया |

حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ ۙ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या है क़ियामत | हम नहीं जानते | तुम ने कहा | उस में | कोई शक नहीं | और क़ियामत | सच |

اِنْ نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَّمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बुराइयां | उन पर | और खुल गईं | 32 | यक़ीन करने वाले | हम | और नहीं | अटकल जैसा | मगर-सिर्फ़ | नहीं हम गुमान करते |

مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَقِيْلَ الْيَوْمَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आज | और कहा जाएगा | 33 | वह मज़ाक़ उड़ाते | उस का | जिस का वह थे | उन्हें | और घेर लिया | जो उन्हों ने किया (आमाल) |

نَنْسٰىكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं तुम्हारे लिए | जहन्नम | और तुम्हारा ठिकाना | इस | अपना दिन | मिलना | तुम ने भुला दिया | जैसे | हम ने भुला दिया तुम्हें |

مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٣٤﴾ ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّغَرَّتْكُمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और फ़रेब दिया तुम्हें | एक मज़ाक़ | अल्लाह की आयात | तुम ने बना लिया | इस लिए कि तुम | यह | 34 | कोई मददगार (जमा) |

الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٣٥﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 35 | रज़ा मन्दी हासिल करने का मौक़ा दिया जाएगा | और न उन्हें | उस से | वह न निकाले जाएंगे | सो आज | दुनिया की जिन्दगी |

فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٦﴾

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 36 | तमाम जहानों का रब | और ज़मीन का रब | आस्मानों का रब | पस अल्लाह के लिए तमाम तारीफ़ें |

وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۪ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٣٧﴾ ع ٢ / ٢٠

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 37 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | और वह | और ज़मीन | आस्मानों में | किबरियाई | और उस के लिए |

## آيَاتُهَا ٣٥ ❀ (٤٦) سُوْرَةُ الْاَحْقَافِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٤

रुकूआत 4 — (46) सूरतुल अह़क़ाफ़ रेगिस्तान — आयात 35

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

حٰمٓ ① تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ②

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | अल्लाह से | किताब | नाज़िल करना | 1 | हा मीम |

مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हक़ के साथ | मगर | और जो उन दोनों के दरमियान | और ज़मीन | आस्मानों | नही पैदा किया हम ने |

وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّآ اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ③ قُلْ اَرَءَيْتُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भला तुम देखो | फ़रमा दें | 3 | रूगर्दानी करने वाले | वह डराए जाते है | जिस से | और जिन लोगों ने कुफ़्र किया | और एक मीआद मुक़र्ररा |

مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जमीन से | उन्हों ने पैदा किया | क्या | दिखाओ मुझे तुम | अल्लाह के सिवा | जिन को तुम पुकारते हो |

اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۚ اِيْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ اَوْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| या | इस | से पहले | कोई किताब | ले आओ मेरे पास | आस्मानों में | कुछ साझा | उन के लिए | या |

اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ④ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से जो वह पुकारता है | बड़ा गुमराह | और कौन | 4 | सच्चे | तुम हो | अगर | इल्म से-की | आसार |

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | और वह | क़ियामत का दिन | तक | उस को | जवाब न देगा | जो | अल्लाह के सिवा |

دُعَآئِهِمْ غٰفِلُوْنَ ⑤ وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَآءً

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दुश्मन | उन के | वह होंगे | जमा किए जाएंगे लोग | और जब | 5 | बेखबर है | उन का पुकारना |

وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ⑥ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वाज़ेह | हमारी आयात | पढ़ी जाती हैं उन पर | और जब | 6 | मुन्किर (जमा) | उन की इबादत से | और वह होंगे |

قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ⑦

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | खुला | यह जादू | उन के पास आ गया वह | जब | हक़ का | जिन लोगों ने इन्कार किया | कहते है वह |

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۗ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَلَا تَمْلِكُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो तुम इख़्तियार नही रखते | मैं ने खुद बना लिया है इसे | अगर | फ़रमा दें | उस ने खुद बना लिया है इसे | वह कहते है | क्या |

لِيْ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ۗ هُوَ اَعْلَمُ بِمَا تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ۗ كَفٰى بِهٖ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह काफ़ी है इस का | इस में | तुम बातें बनाते हो | वह जो | वह खूब जानता है | कुछ भी | अल्लाह से | मेरे लिए |

شَهِيْدًاۢ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۗ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ⑧

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | रह्म करने वाला | बख़्शने वाला | और वह | और तुम्हारे दरमियान | मेरे दरमियान | गवाह |

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है
हा-मीम। (1)
किताब का नाज़िल करना ग़ालिब, हिक्मत वाले अल्लाह (की तरफ़) से है। (2)
हम ने नहीं पैदा किया है आस्मानों और ज़मीन को और जो उन दोनों के दरमियान है मगर हक़ के साथ और एक मुक़र्ररा मीआद (के लिए) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया जिस से वह डराए जाते हैं (उस से) रूगर्दानी करने वाले हैं। (3)
आप (स) फ़रमा दें भला तुम देखो (सोचो) तो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो मुझे दिखाओ कि उन्हों ने ज़मीन से क्या पैदा किया? या उन के लिए आस्मानों में कुछ साझा है? ले आओ मेरे पास इस से पहले की कोई किताब या कोई इल्मी आसार (निशानात) अगर तुम सच्चे हो। (4)
और उस से बड़ा गुमराह कौन है? जो अल्लाह के सिवा उस को पुकारता है जो उसे जवाब न देगा क़ियामत के दिन तक, और वह उन के पुकारने से (भी) बेख़बर है। (5)
और जब लोग (मैदाने हश्र) में जमा किए जाएंगे वह उन के दुश्मन होंगे और वह उन की इबादत के मुन्किर होंगे। (6)
और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयात पढ़ी जाती हैं तो वह कहते हैं जिन्हों ने इन्कार किया हक़ के बारे में जब कि वह उन के पास आ गया: यह खुला जादू है। (7)
क्या वह कहते हैं कि उस ने इसे खुद बना लिया है, आप (स) फ़रमा दें: अगर मैं ने इसे खुद बना लिया है तो तुम मुझे अल्लाह से (बचाने का) कुछ भी इख़्तियार नहीं रखते, वह खूब जानता है जो तुम इस (के बारे) में बातें बनाते हो, वह काफ़ी है इस का गवाह मेरे और तुम्हारे दरमियान, और वह है बख़्शने वाला, रह्म करने वाला। (8)

قُـــلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَآ اَدْرِىْ مَا يُفْعَلُ بِــىْ وَلَا بِكُمْ ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न तुम्हारे साथ | मेरे साथ | क्या किया जाएगा | और नहीं जानता मैं | रसूलों में से | नया | नहीं हूँ मैं | फ़रमा दें |

اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَىَّ وَمَآ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٩ قُلْ اَرَءَيْتُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भला तुम देखो तो | फ़रमा दें | 9 | डर सुनाने वाला साफ़ साफ़ | मगर सिर्फ़ | और नहीं हूँ मैं | मेरी तरफ़ | जो वहि किया जाता है | सिवाए सिर्फ़ | नहीं पैरवी करता |

اِنْ كَانَ مِـــنْ عِـنْـدِ اللّٰهِ وَكَـفَـرْتُـمْ بِـهٖ وَشَـهِـدَ شَـاهِـدٌ مِّـنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | एक गवाह | और गवाही दी | इस का | और तुम ने इन्कार किया | अल्लाह के पास से | है | अगर |

بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى مِثْلِهٖ فَـــاٰمَـــنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| लोग | हिदायत नहीं देता | बेशक अल्लाह | और तुम ने तकब्बुर किया | फिर वह ईमान ले आया | इस जैसी (एक किताब) पर | बनी इस्राईल |

الظّٰلِمِيْنَ ۝١٠ وَقَـالَ الَّـذِيْـنَ كَـفَـرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَـنُوْا لَـوْ كَانَ خَيْرًا ع ١

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेहतर | अगर होता | उन के लिए जो ईमान लाए (मोमिन) | वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | और कहा | 10 | ज़ालिम (जमा) |

مَّا سَبَقُوْنَآ اِلَيْهِ ؕ وَاِذْ لَمْ يَهْتَدُوْا بِـهٖ فَسَيَقُوْلُوْنَ هٰذَآ اِفْكٌ قَدِيْمٌ ۝١١

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | पुराना | झूट | यह | तो अब कहेंगे | इस से | न हिदायत पाई उन्हों ने | और जब | इस की तरफ़ | न वह पहल करते हम पर |

وَمِـنْ قَـبْـلِهٖ كِـتٰـبُ مُـوْسٰٓى اِمَـامًـا وَّرَحْـمَـةً ؕ وَهٰـذَا كِـتٰـبٌ مُّـصَـدِّقٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तसदीक़ करने वाली | किताब | और यह | और रहमत | रहनुमा-इमाम | मूसा (अ) | किताब | और इस से पहले |

لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ وَبُشْرٰى لِلْمُحْسِنِيْنَ ۝١٢ اِنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | 12 | नेकोकारों के लिए | और खुशख़बरी | उन लोगों को जिन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम) | ताकि वह डराए | अरबी | ज़बान |

الَّـذِيْـنَ قَـالُـوْا رَبُّـنَـا اللّٰهُ ثُـمَّ اسْتَقَامُوْا فَـلَا خَـوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और न वह | उन पर | तो कोई ख़ौफ़ नहीं | वह क़ाइम रहे | फिर | हमारा रब अल्लाह | जिन लोगों ने कहा |

يَـحْـزَنُـوْنَ ۝١٣ اُولٰٓـئِكَ اَصْـحٰـبُ الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ جَـزَآءً ۢ بِـمَـا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की जो | जज़ा | उस में | हमेशा रहेंगे | अहले जन्नत | यही लोग | 13 | ग़मगीन होंगे |

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١٤ وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ اِحْسٰنًا ؕ حَمَلَتْهُ اُمُّــهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की माँ | वह उस को उठाए रही | हुस्ने सुलूक का | माँ बाप के साथ | इन्सान | और हम ने हुक्म दिया | 14 | वह अमल करते थे |

كُـرْهًـا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا ؕ وَحَمْلُهٗ وَفِصٰـلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह पहुँचा | जब | यहां तक | तीस (30) महीने | और उस का दूध छुड़ाना | और उस का हम्ल | और उस ने उस को जना तक्लीफ़ के साथ | तक्लीफ़ के साथ |

اَشُـــدَّهٗ وَبَـلَـغَ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۙ قَـالَ رَبِّ اَوْزِعْنِىْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तेरी नेमत | कि मैं शुक्र करूँ | तौफ़ीक़ दे मुझे | ऐ मेरे रब | उस ने अर्ज़ की | साल | चालीस (40) | और वह पहुँचा (हुआ) | अपने ज़ोर (जवानी) को |

الَّـتِىْٓ اَنْـعَـمْـتَ عَـلَـىَّ وَعَـلٰى وَالِـــدَىَّ وَاَنْ اَعْـمَـلَ صَالِـحًا تَرْضٰـىهُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तू पसंद करे उसे | नेक अमल | और यह कि मैं अमल करूँ | और मेरे माँ बाप पर | तू ने इन्आम फ़रमाई मुझ पर | वह जो |

وَاَصْـلِـحْ لِىْ فِىْ ذُرِّيَّتِىْ ۚ اِنِّىْ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاِنِّــىْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝١٥

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15 | मुसलमानों (फ़रमांबरदारों) | से | और बेशक मैं | तेरी तरफ़ | बेशक मैं ने तौबा की | मेरी औलाद में | मेरे लिए | और इस्लाह कर दे |

आप (स) फ़रमा दें कि मैं रसूलों में नया नहीं हूँ, और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ और तुम्हारे साथ क्या किया जाएगा, मैं सिर्फ़ उस की पैरवी करता हूँ जो मेरी तरफ़ वहि किया जाता है, और मैं सिर्फ़ साफ़ साफ़ डर सुनाने वाला हूँ। **(9)** आप (स) फ़रमा दें: भला तुम देखो तो अगर (यह क़ुरआन) अल्लाह के पास से है, और तुम ने इस का इन्कार किया, और गवाही दी एक गवाह ने बनी इस्राईल में से उस जैसी किताब पर, और वह ईमान ले आया, और तुम ने तकब्बुर किया (तुम अड़े रहे), बेशक अल्लाह हिदायत नहीं देता ज़ालिम लोगों को। **(10)** और काफ़िरों ने मोमिनों के लिए (के बारे में) कहा: अगर (यह) बेहतर होता तो वह इस की तरफ़ हम पर पहल न करते, और जब उन्हों ने इस से हिदायत न पाई तो अब कहेंगे: यह पुराना झूट है। **(11)** और इस से पहले मूसा (अ) की किताब (तौरेत) थी रहनुमा और रहमत, और है यह किताब (उस की) तसदीक़ करने वाली अरबी ज़बान में ताकि ज़ालिमों को डराए, और ख़ुशख़बरी है नेकोकारों के लिए। **(12)** बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है, फिर वह (उस पर) क़ाइम रहे, तो कोई ख़ौफ़ नहीं उन पर और न वह ग़मगीन होंगे। **(13)** यही लोग अहले जन्नत हैं, हमेशा उस में रहेंगे, (यह) उन की जज़ा है जो वह अमल करते थे **(14)** और हम ने इन्सान को माँ बाप के साथ हुस्ने सुलूक का हुक्म दिया, उस की माँ उसे तक्लीफ़ के साथ (पेट में) उठाए रही और उस ने उसे तक्लीफ़ के साथ जना, और उस का हम्ल और उस का दूध छुड़ाना 30 महीने में (हुआ) यहां तक कि जब वह अपनी जवानी को पहुँचा और हुआ चालीस (40) साल का तो उस ने अर्ज़ की: ऐ मेरे रब! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी नेमत का शुक्र करूँ जो तू ने मुझ पर इन्आम फ़रमाई और मेरे माँ बाप पर, और यह कि मैं नेक अमल करूँ जिसे तू पसंद करे, और मेरे लिए मेरी औलाद में इस्लाह कर दे (नेक बना दे), बेशक मैं ने तेरी तरफ़ (तेरे हुज़ूर) तौबा की और बेशक मैं फ़रमांबरदारों में से हूँ। **(15)**

أُولَٰٓئِكَ الَّذِيْنَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّاٰتِهِمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की बुराइयां | से | और हम दरगुजर करते हैं | उन्हों ने किए | जो | बेहतरीन (अमल) | उन से | हम क़ुबूल करते हैं | वह जो कि | यही लोग |

فِيْٓ اَصْحٰبِ الْجَنَّةِ ؕ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿١٦﴾ وَالَّذِيْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह जिस | 16 | उन्हें वादा दिया जाता था | वह जो | सच्चा वादा | अहले जन्नत | में |

قَالَ لِوَالِدَيْهِ اُفٍّ لَّكُمَآ اَتَعِدٰنِنِيْٓ اَنْ اُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُوْنُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| (बहुत से) गिरोह | हालांकि गुज़र चुके | मैं निकाला जाऊँगा | क्या तुम मुझे वादा (खबर) देते हो | तुम्हारे लिए-पर | तुफ़ | अपने माँ बाप के लिए | उस ने कहा |

مِنْ قَبْلِيْ ۚ وَهُمَا يَسْتَغِيْثٰنِ اللّٰهَ وَيْلَكَ اٰمِنْ ۖ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सच्चा | अल्लाह का वादा | बेशक | तू ईमान ले आ | तेरा बुरा हो | फ़र्याद करते हैं अल्लाह से | और वह दोनों | मुझ से पहले |

فَيَقُوْلُ مَا هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٧﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन पर | साबित हो गई | वह जो | यही लोग | 17 | पहलों | कहानियां | मगर-सिर्फ़ | यह | नहीं | तो वह कहता है |

الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ؕ اِنَّهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक वह | जिन्नात और इन्सान (जमा) | से | इन से क़ब्ल | गुज़र चुकीं | उम्मतों में | बात (अज़ाब) |

كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿١٨﴾ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۚ وَلِيُوَفِّيَهُمْ اَعْمَالَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के आमाल | और ताकि वह पूरा दे उन को | उस से जो उन्हों ने किया | दरजे | और हर एक के लिए | 18 | ख़सारा पाने वाले | थे |

وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٩﴾ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आग के सामने | वह जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | लाए जाएंगे | और जिस दिन | 19 | उन पर न ज़ुल्म किया जाएगा | और वह-उन |

اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِيْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۚ فَالْيَوْمَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पस आज | उन का | और तुम फ़ाइदा उठा चुके | अपनी दुनिया की ज़िन्दगी | में | अपनी नेमतें | तुम ले गए (हासिल कर चुके) |

تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ

| | | | |
|---|---|---|---|
| तुम तकब्बुर करते थे | इस लिए कि | रुस्वाई का अज़ाब | नहीं बदला दिया जाएगा |

٢ ع١٠ ٢ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَاذْكُرْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और याद कर | 20 | तुम नाफ़रमानियां करते थे | और इस लिए कि | नाहक़ | ज़मीन में |

اَخَا عَادٍ ؕ اِذْ اَنْذَرَ قَوْمَهٗ بِالْاَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| डराने वाले | और गुज़र चुके | अहक़ाफ़ में | अपनी क़ौम | उस ने डराया | जब | आद के भाई |

مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖٓ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنِّيْٓ اَخَافُ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बेशक मैं डरता हूँ | अल्लाह के सिवा | कि तुम इबादत न करो | और उस के बाद | उस से पहले |

عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٢١﴾ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَاْفِكَنَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्या तू हमारे पास आया कि तू फेर दे हमें | वह बोले | 21 | एक बड़ा दिन | अज़ाब | तुम पर |

عَنْ اٰلِهَتِنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 22 | सच्चे (जमा) | से | तू है | अगर | जो कुछ तू वादा करता है हम से | पस ले आ हम पर | हमारे माबूद | से |

यही वह लोग हैं जिन के बेहतरीन अमल हम क़ुबूल करते हैं जो उन्हों ने किए और हम उन की बुराइयों से दरगुजर करते हैं, (यह) अहले जन्नत में से (होंगे), सच्चा वादा है जो उन्हें वादा दिया जाता था। (16) और जिस ने अपने माँ बाप के लिए कहाः तुम पर तुफ़! क्या तुम मुझे यह खबर देते हो कि मैं (रोज़े हश्र) निकाला जाऊँगा, हालांकि बहुत से गिरोह गुज़र चुके हैं मुझ से पहले, और वह दोनों अल्लाह से फ़र्याद करते हैं (और उस को कहते हैं): तेरा बुरा हो, तू ईमान ले आ, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, तो वह कहता है कि यह तो सिर्फ़ पहलों (अगलों) की कहानियां हैं। (17) यही लोग हैं जिन पर अजाब की बात साबित हो गई (उन) उम्मतों में जो इन से क़ब्ल गुज़र चुकीं जिन्नात में से और इन्सानों में से, बेशक वह खसारा पाने वालों में से थे। (18) और हर एक के लिए दरजे हैं, उस (के मुताबिक़) जो उन्हों ने किया ताकि वह उन को उन के आमाल का पूरा (बदला) दे, और उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा। (19) और जिस दिन लाए जाएंगे काफ़िर आग के सामने (उन से कहा जाएगा): तुम अपनी नेमतें अपनी दुनिया की ज़िन्दगी में हासिल कर चुके हो और उन का फ़ाइदा (भी) उठा चुके हो, पस आज तुम्हें रुस्वाई के अज़ाब का बदला दिया जाएगा, इस लिए कि तुम ज़मीन में नाहक़ तकब्बुर करते थे, और इस लिए कि तुम नाफ़रमानियां करते थे। (20) और क़ौमे आद के भाई (हूद) को याद कर, जब उस ने अपनी क़ौम को (सर ज़मीने) अहक़ाफ़ में डराया, और गुज़र चुके हैं डराने वाले (नबी) उस से पहले और उस के बाद (भी) कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, बेशक मैं डरता हूँ तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब से। (21) वह बोलेः क्या तू हमारे पास इस लिए आया कि हमें हमारे माबूदों से फेर दे, पस तू जो कुछ हम से वादा करता है हम पर ले आ अगर तू सच्चों में से है (सच्चा है)। (22)

उस ने कहाः इस के सिवा नहीं कि इल्म अल्लाह के पास है और मैं जिस (पैग़ाम) के साथ भेजा गया हूँ वह तुम्हें पहुँचाता हूँ, लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम लोग जहालत करते हो। (23) फिर जब उन्हों ने उस को देखा कि एक अब्र उन की वादियों की तरफ़ चला आ रहा है, तो वह बोलेः यह हम पर बारिश बरसाने वाला बादल है, (नहीं) बल्कि यह वह है जिस की तुम जल्दी करते थे, एक आन्धी जिस में दर्दनाक अ़ज़ाब है। (24) वह तहस नहस कर देगी हर शै को अपने रब के हुक्म से, पस (उन का यह हाल होगया कि) उन के मकानों के सिवा कुछ न दिखाई देता था, इसी तरह हम मुजरिम लोगों को बदला दिया करते हैं। (25) और हम ने उन्हें उन (बातों) में इस क़द्र कुदरत दी थी कि तुम्हें उस पर उस क़द्र कुदरत नहीं दी, और हम ने उन को दिए कान और आँखें और दिल, पस न उन के कान और न उन की आँखें और न उन के दिल उन के कुछ भी काम आए, जब वह इन्कार करते थे अल्लाह की आयात का, और उन को उस (अ़ज़ाब) ने घेर लिया जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (26) और तहक़ीक़ हम ने हलाक कर दीं तुम्हारे इर्द गिर्द की बस्तियाँ, और हम ने बार बार अपनी निशानियाँ दिखाईं ताकि वह लौट आएं। (27) फिर क्यों न उन की मदद की उन्हों ने जिन्हें बना लिया था (अल्लाह का) कुर्ब हासिल करने के लिए अल्लाह के सिवा माबूद, बल्कि वह उन से ग़ाइब हो गए, और यह उन का बुहतान था जो वह इफ़्तिरा करते (घड़ते थे) (28) और जब हम आप (स) की तरफ़ जिन्नात की एक जमाअ़त फेर लाए, वह कुरआन सुनते थे, पस वह आप (स) के पास हाज़िर हुए तो उन्हों ने (एक दूसरे को) कहाः चुप रहो, फिर जब पढ़ना तमाम हुआ तो वह अपनी क़ौम की तरफ़ डर सुनाते हुए लौटे। (29)

قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَأُبَلِّغُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ وَلَٰكِنِّي

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और लेकिन मैं | जो मैं भेजा गया हूँ उस के साथ | और मैं पहुँचाता हूँ तुम्हें | अल्लाह के पास | इल्म | इस के सिवा नहीं | उस ने कहा |

أَرَاكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ (٢٣) فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की वादियाँ | सामने (चला) आ रहा है | एक अब्र | फिर जब देखा उन्हों ने उस को | 23 | तुम जहालत करते हो | गिरोह लोग | देखता हूँ तुम्हें |

قَالُوا هَٰذَا عَارِضٌ مُمْطِرُنَا ۚ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की | तुम जल्दी करते थे | जिस | बल्कि वह | हम पर बारिश बरसाने वाला | एक बादल | यह | वह बोले |

رِيحٌ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ (٢٤) تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍ بِأَمْرِ رَبِّهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना रब | हुक्म से | शै | हर | वह तहस नहस कर देगी | 24 | दर्दनाक अ़ज़ाब | उस में | एक हवा (आन्धी) |

فَأَصْبَحُوا لَا يُرَىٰ إِلَّا مَسَاكِنُهُمْ ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हम बदला देते हैं | इसी तरह | उन के मकान | सिवाए | न दिखाई देता था | पस वह रह गए |

الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ (٢٥) وَلَقَدْ مَكَّنَّاهُمْ فِيمَا إِنْ مَكَّنَّاكُمْ فِيهِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उस में पर | नहीं हम ने कुदरत दी तुम्हें | उस में | और अलबत्ता हम ने उनको कुदरत दी थी | 25 | मुजरिम लोग |

وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَأَبْصَارًا وَأَفْئِدَةً فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| काम आए उन के | तो न | और दिल (जमा) | और आँखें | कान | उन्हें | और हम ने बना दिए |

سَمْعُهُمْ وَلَا أَبْصَارُهُمْ وَلَا أَفْئِدَتُهُمْ مِنْ شَيْءٍ إِذْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| जब | कुछ भी | और न दिल उन के | और न उन की आँखें | उन के कान |

كَانُوا يَجْحَدُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उस का | जो वह थे | उन को | और उस ने घेर लिया | अल्लाह की आयात का | वह इन्कार करते थे |

يَسْتَهْزِئُونَ (٢٦) وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِنَ الْقُرَىٰ ع ٣ ٣

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बस्तियाँ | से | जो तुम्हारे इर्द गिर्द | और तहक़ीक़ हम ने हलाक कर दिया | 26 | वह मज़ाक़ उड़ाते |

وَصَرَّفْنَا الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ (٢٧) فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मदद की उन की | फिर क्यों न | 27 | लौट आएँ | ताकि वह | और हम ने बार बार दिखाईं अपनी निशानियाँ |

الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ قُرْبَانًا آلِهَةً ۖ بَلْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बल्कि | माबूद | कुर्ब हासिल करने को | अल्लाह के सिवा | जिन्हें बना लिया उन्हों ने |

ضَلُّوا عَنْهُمْ ۚ وَذَٰلِكَ إِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ (٢٨) وَإِذْ صَرَفْنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम फेर लाए | और जब | 28 | वह इफ़्तिरा करते थे | और जो | उन का बुहतान | और यह | वह गुम (ग़ाइब) हो गए उन से |

إِلَيْكَ نَفَرًا مِنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُونَ الْقُرْآنَ ۖ فَلَمَّا حَضَرُوهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह हाज़िर हुए उस के पास | पस जब | कुरआन | वह सुनते थे | जिन्नात की | एक जमाअ़त | आप (स) की तरफ़ |

قَالُوا أَنْصِتُوا ۖ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ مُنْذِرِينَ (٢٩)

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 29 | डर सुनाते हुए | अपनी क़ौम | तरफ़ | वह लौटे | (पढ़ना) तमाम हुआ | फिर जब | चुप रहो | उन्हों ने कहा |

قَـالُـوْا يٰقَوْمَنَآ اِنَّـا سَمِعْنَا كِتٰبًا اُنْــزِلَ مِـنْۢ بَعْدِ مُوْسٰـى مُصَدِّقًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तस्दीक़ करने वाली | मूसा (अ) | बाद | नाज़िल की गई | एक किताब | बेशक हम ने सुनी | ऐ हमारी क़ौम | उन्हों ने कहा |

لِّـمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَـهْـدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ وَاِلٰى طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٣٠﴾ يٰقَوْمَنَآ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ हमारी क़ौम | 30 | रास्त | राह | और तरफ़ | हक़ की तरफ़ | वह रहनुमाई करती है | उस (अपने) से पहले | उस की जो |

اَجِيْبُوْا دَاعِـيَ اللّٰهِ وَاٰمِـنُـوْا بِـهٖ يَغْفِرْ لَـكُمْ مِّـنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُـجِرْكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह पनाह देगा तुम्हें | तुम्हारे गुनाह | से | बख़्श देगा तुम्हें | उस पर | और ईमान ले आओ | अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाला | क़ुबूल कर लो |

مِّـنْ عَـذَابٍ اَلِـيْمٍ ﴿٣١﴾ وَمَـنْ لَّا يُـجِبْ دَاعِـيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आजिज़ करने वाला | तो नही | अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाला | न क़ुबूल करेगा | और जो | 31 | दर्दनाक अज़ाब | से |

فِي الْاَرْضِ وَلَيْسَ لَـهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءُ ۚ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 32 | गुमराही खुली | में | यही लोग | हिमायती | उस के सिवा | उस के लिए | और नही | ज़मीन में |

اَوَلَـمْ يَـرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّـذِيْ خَـلَـقَ الـسَّـمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَـمْ يَعْـيَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और वह थका नही | और ज़मीन | पैदा किया आस्मानों को | वह जिस ने | कि अल्लाह | क्या नहीं देखा उन्हों ने |

بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ۚ بَلٰٓى اِنَّـهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَـدِيْـرٌ ﴿٣٣﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 33 | क़ुदरत रखने वाला | हर शै | पर | बेशक वह | हाँ | मुर्दे | कि वह ज़िन्दा करे | पर | वह क़ादिर है | उन के पैदा करने से |

وَيَـوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ۚ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ۚ قَالُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह कहेंगे | हक़ | यह | क्या नहीं | आग के सामने | जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | पेश किए जाएंगे | और जिस दिन |

بَلٰى وَرَبِّنَا ۚ قَــالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٤﴾ فَاصْبِـرْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस आप (स) सब्र करें | 34 | तुम इन्कार करते थे | वह जिस | अज़ाब | पस तुम चखो | वह फरमाएगा | हमारे रब की क़सम | हाँ |

كَمَا صَبَـرَ اُولُـوا الْـعَزْمِ مِنَ الـرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَّـهُمْ ۚ كَاَنَّـهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गोया कि वह | उन के लिए | और जल्दी न करें | रसूलों | से | ऊलूल अ़ज़्म | सब्र किया | जैसे |

يَـوْمَ يَـرَوْنَ مَا يُـوْعَـدُوْنَ ۙ لَـمْ يَلْـبَـثُـوْٓا اِلَّا سَاعَـةً مِّـنْ نَّـهَارٍ ۚ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दिन की | एक घड़ी | मगर-सिर्फ़ | वह नही ठहरे | जिस का वादा किया जाता है उन से | जिस दिन देखेंगे वह |

بَـلٰـغٌ ۚ فَـهَـلْ يُـهْـلَـكُ اِلَّا الْـقَـوْمُ الْـفٰـسِـقُـوْنَ ﴿٣٥﴾

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 35 | नाफ़रमान लोग | मगर | पस नही हलाक होंगे | पहुँचाना |

## آيَاتُهَا ٣٨ ❀ (٤٧) سُوْرَةُ مُحَمَّدٍ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٤

रुकुआत 4 (47) सूरह मुहम्मद आयातें 38

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلَّـذِيْـنَ كَـفَـرُوْا وَصَـدُّوْا عَـنْ سَـبِيْـلِ اللّٰهِ اَضَـلَّ اَعْـمَالَـهُمْ ﴿١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | उन के आमाल | अकारत कर दिए | अल्लाह का रास्ता | से | और उन्हों ने रोका | काफ़िर हुए | जो लोग |

उन्हों ने कहा कि ऐ हमारी क़ौम! हम ने एक किताब सुनी है जो नाज़िल की गई है मूसा (अ) के बाद, अपने से पहले की तस्दीक़ करने वाली, वह रहनुमाई करने वाली (दीने) हक़ की तरफ़ और राहे रास्त की तरफ़। (30) ऐ हमारी क़ौम! अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले (की बात) क़ुबूल कर लो और उस पर ईमान ले आओ, (अल्लाह) तुम्हें तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और वह तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से पनाह देगा। (31) और जो अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले की बात को क़ुबूल न करेगा, वह ज़मीन में (अल्लाह को) आजिज़ करने वाला नहीं, और उस (अल्लाह) के सिवा उस के लिए कोई हिमायती नहीं, यही लोग खुली गुमराही में हैं। (32) क्या उन्हों ने नहीं देखा? कि अल्लाह ही है जिस ने आस्मानों को और जमीन को पैदा किया, और वह उन के पैदा करने से नहीं थका, वह उस पर क़ादिर है कि मुर्दों को ज़िन्दा करे, हाँ! बेशक वह हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है। (33) और जिस दिन काफ़िर आग (जहन्नम) के सामने पेश किए जाएंगे, (पूछा जाएगा) क्या यह हक़ (अम्रे वाक़ई) नहीं? वह कहेंगेः हमारे रब की क़सम, हाँ (यह हक़ है), अल्लाह तआला फ़रमाएगाः पस तुम अज़ाब चखो जिस का तुम इन्कार करते थे। (34) पस आप (स) सब्र करें जैसे ऊलूलअ़ज़्म (बाहिम्मत) रसूलों ने सब्र किया, और उन के लिए (अ़ज़ाब की) जल्दी न करें, वह जिस दिन देखेंगे (वह अजाब) जिस का उन से वादा किया जाता है (उन्हें ऐसा मालूम होगा कि) गोया वह दुनिया में सिर्फ़ दिन की एक घड़ी ठहरे थे, (पैग़ाम) पहुँचाना है, पस हलाक न होंगे मगर नाफ़रमान लोग। (35)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

जो लोग काफ़िर हुए और उन्हों ने अल्लाह के रास्ते से रोका, उन के आमाल (अल्लाह ने) अकारत कर दिए। (1)

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अमल किए और वह उस पर ईमान लाए जो मुहम्मद (स) पर नाज़िल किया गया, और वह उन के रब की तरफ़ से हक़ है, उस (अल्लाह) ने उन से उन के गुनाह दूर कर दिए और उन का हाल दुरुस्त कर दिया। (2)
यह इस लिए हुआ कि जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन्हों ने बातिल की पैरवी की और यह कि जो लोग ईमान लाए, उन्हों ने अपने रब की तरफ़ से हक़ की पैरवी की, इसी तरह अल्लाह लोगों के लिए उन की मिसालें (अहवाल) बयान करता है। (3)
फिर जब तुम काफ़िरों से भिड़ जाओ तो उन की गर्दनें मारो, यहां तक कि जब उन की ख़ूब ख़ूं रेज़ी कर चुको तो उन की क़ैद मज़बूत कर लो (मुशकें कस लो), पस उस के बाद एहसान कर दो (बिला मुआवज़ा रिहा कर दो) या मुआवज़ा (ले कर छोड़ दो) यहां तक कि लड़ने वाले अपने हथियार रख दें (डाल दें), यह है (हुक्मे इलाही), और अगर अल्लाह चाहता तो उन से ख़ुद ही निपट लेता, लेकिन (वह चाहता है) कि तुम में से बाज़ (एक) को दूसरे से आज़माए, और जो लोग अल्लाह के रास्ते में मारे गए तो वह उन के आमाल हरगिज़ ज़ाया न करेगा। (4)
वह जल्द उन को हिदायत देगा और उन का हाल संवारेगा। (5)
और वह उन्हें जन्नत में दाख़िल करेगा जिस से उस ने उन्हें शनासा कर दिया है। (6)
ऐ मोमिनो! अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दम जमा देगा (तुम्हें साबित क़दम कर देगा)। (7)
और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के लिए तबाही है और उस (अल्लाह) ने उन के अमल ज़ाया कर दिए। (8)
यह इस लिए कि उन्हों ने उसे नापसंद किया जो अल्लाह ने नाज़िल किया तो (अल्लाह) ने उन के अमल अकारत कर दिए। (9)
क्या वह ज़मीन में चले फिरे नहीं? तो वह देख लेते कि कैसा अन्जाम हुआ उन से पहले लोगों का, अल्लाह ने उन पर तबाही डाल दी, और काफ़िरों को उन की मानिंद (सज़ा होगी)। (10)
यह इस लिए कि अल्लाह उन लोगों का कारसाज़ है जो ईमान लाए और काफ़िरों का कोई कारसाज़ नहीं। (11)

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मुहम्मद (स) पर | उस पर जो नाज़िल किया गया | और वह ईमान लाए | अच्छे | और उन्हों ने अमल किए | ईमान लाए | और जो लोग |

وَّهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ﴿٢﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | उन का हाल | और दुरुस्त कर दिया | उन की बुराइयां (गुनाह) | उन से | उस ने दूर कर दिए | उन का रब | से | हक़ | और वह |

ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान लाए | जो लोग | और यह कि | बातिल | उन्हों ने पैरवी की | जिन लोगों ने कुफ़्र किया | यह इस लिए कि |

اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ﴿٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | उन की मिसालें | लोगों के लिए | अल्लाह बयान करता है | इसी तरह | अपने रब (की तरफ़) से | हक़ | उन्हों ने पैरवी की |

فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ ؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़ूब ख़ून रेज़ी कर चुको उन की | जब | यहां तक कि | गर्दनें | तो मारो तुम | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | भिड़ जाओ | फिर जब तुम |

فَشُدُّوا الْوَثَاقَ ۙ فَاِمَّا مَنًّاۢ بَعْدُ وَاِمَّا فِدَآءً حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रख दे लड़ाई (लड़ने वाले) | यहां तक कि | मुआवज़ा | और या | उस के बाद | एहसान करो | पस या | क़ैद | तो मज़बूत कर लो |

اَوْزَارَهَا ۛۚ ذٰلِكَ ۛؕ وَلَوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ ۙ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا۟

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि आज़माए | और लेकिन | उन से | ज़रूर इन्तिक़ाम लेता | अल्लाह चाहता | और अगर | यह | अपने हथियार |

بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ ؕ وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | उन के आमाल | तो वह हरगिज़ ज़ाया न करेगा | अल्लाह का रास्ता | में | मारे गए | और जो लोग | बाज़ (दूसरे) से | तुम से बाज़ को |

سَيَهْدِيْهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ﴿٥﴾ وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ﴿٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | उस ने जिस से शनासा कर दिया है उन्हें | जन्नत | और दाख़िल करेगा उन्हें | 5 | उन का हाल | और संवारेगा | वह जल्द उन को हिदायत देगा |

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और जमा देगा | वह मदद करेगा तुम्हारी | तुम मदद करोगे अल्लाह की | अगर | जो लोग ईमान लाए (मोमिन) | ऐ |

اَقْدَامَكُمْ ﴿٧﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَاَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | उन के अमल | और उस ने ज़ाया कर दिए | उन के लिए | तो तबाही है | और जिन लोगों ने कुफ़्र किया | 7 | तुम्हारे क़दम |

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ﴿٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | उन के अमल | तो अकारत कर दिए | नाज़िल किया अल्लाह ने | जो | इस लिए कि उन्हों ने नापसंद किया | यह |

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन लोगों का जो | अन्जाम | हुआ | कैसा | तो वह देख लेते | ज़मीन में | क्या वह चले फिरे नही |

مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۫ وَلِلْكٰفِرِيْنَ اَمْثَالُهَا ﴿١٠﴾ ذٰلِكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| यह | 10 | उन की मानिंद | और काफ़िरों के लिए | उन पर | तबाही डाल दी अल्लाह ने | उन से पहले |

بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ ﴿١١﴾ ع ١١ ٥

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | उन के लिए | कोई कारसाज़ नही | काफ़िरों | और यह कि | उन लोगों का जो ईमान लाए | कारसाज़ | इस लिए कि अल्लाह |

صح ١٢ وقد يبتدأ بقوله ذٰلك ولكن حسن اتصاله بما قبله ويوقف على ذٰلك ١٢ عند المتقدمين ١٢

إِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बहती है | बाग़ात | और उन्होंने नेक अमल किए | जो लोग ईमान लाए | दाख़िल करता है | बेशक अल्लाह |

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۖ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَتَمَتَّعُوْنَ وَيَاْكُلُوْنَ كَمَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जैसे | और वह खाते हैं | वह फ़ाइदा उठाते हैं | कुफ़्र किया | और जिन लोगों ने | नहरें | उन के नीचे |

تَاْكُلُ الْاَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ﴿١٢﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ هِيَ اَشَدُّ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बहुत ही सख़्त | वह | बस्तियां | और बहुत सी | 12 | उन के लिए | ठिकाना | और आग | चौपाए | खाते है |

قُوَّةً مِّنْ قَرْيَتِكَ الَّتِيْٓ اَخْرَجَتْكَ ۚ اَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ﴿١٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 13 | उन के लिए | तो कोई न मदद करने वाला | हम ने हलाक कर दिया उन्हें | आप (स) को निकाल दिया | वह जिस | आप (स) की बस्ती से | कुव्वत में |

اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ كَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के बुरे अमल | आरास्ता दिखाए गए उसको | उस की तरह | अपने रब से - के | रोशन (रास्ता) | पर | है | पस क्या जो |

وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ﴿١٤﴾ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۗ فِيْهَآ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | परहेज़गारों | वह जो वादा की गई | जन्नत | मिसाल (कैफ़ियत) | 14 | अपनी ख़ाहिशात | और उन्होंने पैरवी की |

اَنْهٰرٌ مِّنْ مَّآءٍ غَيْرِ اٰسِنٍ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهٗ ۚ وَاَنْهٰرٌ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और नहरें | उस का ज़ाइक़ा | बदलने वाला | न | दूध की | और नहरें | बदबू न करने वाला | पानी | से - की | नहरें |

مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ۗ وَلَهُمْ فِيْهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | और उन के लिए | मुसफ़्फ़ा | शहद की | और नहरें | पीने वालों के लिए | सरासर लज़्ज़त | शराब की |

مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ۚ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हमेशा रहने वाला आग में | वह | उस की तरह जो | उन के रब से | और बख़्शिश | हर क़िस्म के फल |

وَسُقُوْا مَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ ﴿١٥﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सुनते है | जो | और उन में से | 15 | उन की अंतड़ियां | टुकड़े टुकड़े कर डालेगा | गर्म पानी | और उन्हें पिलाया जाएगा |

اِلَيْكَ ۚ حَتّٰىٓ اِذَا خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इल्म दिया गया (अहले इल्म) | उन लोगों से जिन्हें | वह कहते हैं | आप (स) के पास से | वह निकलते हैं | जब | यहां तक कि | आप (स) की तरफ़ |

مَاذَا قَالَ اٰنِفًا ۟ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के दिलों पर | मुहर कर दी अल्लाह ने | वह जो | यही लोग | अभी | उस ने कहा | क्या |

وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ﴿١٦﴾ وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَّاٰتٰىهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हें अता की | हिदायत | और ज़ियादा दी उन्हें | और वह लोग जिन्हों ने हिदायत पाई | 16 | अपनी ख़ाहिशात | और उन्हों ने पैरवी की |

تَقْوٰىهُمْ ﴿١٧﴾ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अचानक | आ जाए उन पर | कि | क़ियामत | मगर | मुन्तज़िर | पस नहीं वह | 17 | उन की परहेज़गारी |

فَقَدْ جَآءَ اَشْرَاطُهَا ۚ فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَآءَتْهُمْ ذِكْرٰىهُمْ ﴿١٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | उन का नसीहत (कुबूल करना) | वह आगई उन के पास | जब | उन के लिए - को | तो कहां | उस की अलामात | सो आ चुकी हैं |

बेशक अल्लाह दाख़िल करता है उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किए बाग़ात में जिन के नीचे नहरें बहती हैं, और जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह फ़ाइदा उठाते हैं और (उसी तरह) खाते हैं जैसे चौपाए खाते हैं, और आग (जहन्नम) उन का ठिकाना है। (12)
और बहुत सी बस्तियां (थीं), वह बहुत ही सख़्त थीं क़ुव्वत में आप (स) की बस्ती से जिस के रहने वालों ने आप (स) को निकाल दिया, हम ने उन्हें हलाक कर दिया तो कोई उन की मदद करने वाला न हुआ। (13)
पस क्या जो अपने परवरदिगार के रोशन रास्ते पर हो उस की तरह है जिसे उस के बुरे अमल आरास्ता कर दिखाए गए, और उन्होंने अपनी ख़ाहिशात की पैरवी की। (14)
जन्नत की कैफ़ियत जो परहेज़गारों को वादा की गई, (यह है) कि उस में नहरें हैं बदबू न करने वाले पानी की, नहरें हैं दूध की जिस का ज़ाइक़ा बदलने वाला नहीं, और नहरें हैं शराब की जो पीने वालों के लिए सरासर लज़्ज़त है, और नहरें हैं मुसफ़्फ़ा (साफ़ किए हुए) शहद की, और उस में उन के लिए हर क़िस्म के फल हैं, और उन के रब (की तरफ़ से) बख़्शिश, (क्या वह) उस की तरह है? जो हमेशा आग में रहने वाला है, और उन्हें गर्म (खौलता हुआ) पानी पिलाया जाएगा तो उन की अंतड़ियां टुकड़े टुकड़े कर देगा। (15)
और उन में से बाज़ ऐसे हैं जो आप (स) की तरफ़ (कान लगा कर) सुनते हैं, फिर जब वह आप (स) के पास से निकलते हैं तो वह अहले इल्म से कहते हैं कि उस (हज़रत स) ने अभी क्या कहा है? यही वह लोग हैं जिन के दिलों पर अल्लाह ने मुहर कर दी है, और उन्होंने अपनी ख़ाहिशात की पैरवी की। (16)
और जिन लोगों ने हिदायत पाई (अल्लाह ने) उन्हें और ज़ियादा हिदायत दी और उन्हें उन की परहेज़गारी अता की। (17)
पस वह मुन्तज़िर नहीं मगर क़ियामत (की आमद) के, कि उन पर अचानक आ जाए, सो उस की अलामात तो आ चुकी हैं, जब वह उन के पास आ गई तो उन्हें नसीहत क़ुबूल करना कहां (नसीब) होगा। (18)

सो जान लो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और आप (स) बख़्शिश मांगें अपने कुसूरों के लिए, मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के लिए, और अल्लाह जानता है तुम्हारा चलना फिरना, और तुम्हारे रहने सहने के मुक़ाम को। (19)
और जो लोग ईमान लाए वह कहते हैं कि (जिहाद की) एक सूरत क्यों न उतारी गई? सो जब मुहक्कम (साफ़ साफ़ मतलब वाली) सूरत उतारी जाती है और ज़िक्र किया जाता है उस में जंग का, तो तुम देखोगे कि वह लोग जिन के दिलों में (निफ़ाक़ की) बीमारी है, वह आप (स) की तरफ़ देखते हैं (उस शख़्स के) देखने की तरह बेहोशी तारी हो गई हो जिस पर मौत की, सो ख़राबी है उन के लिए। (20)
(सहीह तो यह था कि वह) इताअ़त करते और माक़ूल बात कहते, पस जब काम पुख़्ता होजाए, अगर वह अल्लाह के साथ सच्चे होते तो अलबत्ता उन के लिए बेहतर होता। (21)
सो तुम इस के नज़्दीक हो कि अगर तुम हाकिम हो जाओ तो तुम फ़साद मचाओ ज़मीन में, और अपने रिश्ते तोड़ डालो। (22)
यही वह लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की, फिर उन्हें बहरा कर दिया और अन्धा कर दिया उन की आँखों को। (23)
तो क्या वह क़ुरआन में ग़ौर नहीं करते? क्या उन के दिलों पर ताले (पड़े हैं)? (24)
बेशक जो लोग अपनी पुश्त फेर कर पलट गए उस के बाद जब कि उन के लिए हिदायत वाज़ेह हो गई, शैतान ने उन के लिए आरास्ता कर दिखाया और उन को ढील दी। (25)
यह इस लिए कि उन्हों ने उन लोगों से कहा जिन्हों ने इस (किताब) को नापसंद किया जो अल्लाह ने नाज़िल की कि अ़नक़रीब हम तुम्हारा कहना मान लेंगे बाज़ कामों (बातों) में, और अल्लाह उन की ख़ुफ़िया बातों को जानता है। (26)
पस कैसा (हाल होगा)? जब फ़रिश्ते उन की रूह क़ब्ज़ करेंगे (और) मारते होंगे उन के चेहरों और उन की पीठों पर। (27)
यह इस लिए होगा कि उन्हों ने उस की पैरवी की जिस ने अल्लाह को नाराज़ किया और उन्हों ने उस की रज़ा को नापसंद किया तो उस (अल्लाह) ने उन के आमाल अकारत कर दिए। (28)
क्या जिन लोगों के दिलों में रोग है वह गुमान करते हैं कि अल्लाह हरगिज़ ज़ाहिर न करेगा उन की दिली अदावतों को। (29)

فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सो जान लो | यह कि | नहीं कोई माबूद | अल्लाह के सिवा | और बख़्शिश मांगें आप (स) | अपने कुसूर के लिए | और मोमिन मर्दों के लिए |

وَالْمُؤْمِنٰتِ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰىكُمْ ١٩ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ع ٨ ٢ ٦

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और मोमिन औरतों | और अल्लाह | जानता है | तुम्हारा चलना फिरना | और तुम्हारे रहने सहने का मुक़ाम | 19 | और वह कहते हैं | वह जो लोग ईमान लाए |

لَوْلَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ ۚ فَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَّذُكِرَ فِيْهَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| क्यों न उतारी गई | एक सूरत | सो जब | उतारी जाती है | फ़ैसला कुन सूरत | और ज़िक्र किया जाता है | उस में |

الْقِتَالُ ۙ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ نَظَرَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जंग | तुम देखोगे | वह लोग | उन के दिलों में | बीमारी | वह देखते हैं | आप (स) की तरफ़ | देखना |

الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۭ فَاَوْلٰى لَهُمْ ٢٠ طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ ۣ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेहोशी तारी हो गई | उस पर | मौत की | सो ख़राबी उन के लिए | 20 | इताअ़त | और बात | मअ़रूफ़ |

فَاِذَا عَزَمَ الْاَمْرُ ۣ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ٢١ فَهَلْ عَسَيْتُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| फिर जब | पुख़्ता हो जाए काम | पस अगर वह सच्चे होते अल्लाह के साथ | अलबत्ता होता बेहतर उन के लिए | 21 | सो तुम इस के नज़्दीक |

اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ ٢٢

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर | तुम वाली (हाकिम) हो जाओ | कि तुम फ़साद मचाओ | ज़मीन में | और तुम काटो (तोड़ डालो) | अपने रिश्ते | 22 |

اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَاَعْمٰٓى اَبْصَارَهُمْ ٢٣

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| यही हैं | वह लोग जिन पर | अल्लाह ने लानत की | फिर उन को बहरा कर दिया | और अन्धा कर दिया | उन की आँखें | 23 |

اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ اَمْ عَلٰي قُلُوْبٍ اَقْفَالُهَا ٢٤ اِنَّ الَّذِيْنَ ارْتَدُّوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो क्या वह ग़ौर नहीं करते? | क़ुरआन | क्या | दिलों पर | उन के ताले | 24 | बेशक | जो लोग | पलट गए |

عَلٰٓي اَدْبَارِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी पुश्त पर | इस के बाद | जब वाज़ेह हो गई | उन के लिए | हिदायत | शैतान | आरास्ता कर दिखाया | उन के लिए |

وَاَمْلٰى لَهُمْ ٢٥ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ سَنُطِيْعُكُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और ढील दी गई | उन को | 25 | यह | इस लिए कि वह | उन्हों ने कहा | उन लोगों से जिन्हों | उन्हों ने नापसंद किया | जो नाज़िल किया अल्लाह ने | अ़नक़रीब हम तुम्हारा कहा मान लेंगे |

فِيْ بَعْضِ الْاَمْرِ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِسْرَارَهُمْ ٢٦ فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | बाज़ | काम | और अल्लाह | जानता है | उन की ख़ुफ़िया बातें | 26 | पस क्या | जब उन की रूह क़ब्ज़ करेंगे |

الْمَلٰۗىِٕكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ٢٧ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़रिश्ते | वह मारते होंगे | उन के चेहरों | और उन की पीठों | 27 | यह इस लिए कि उन्हों ने | पैरवी की |

مَآ اَسْخَطَ اللّٰهَ وَكَرِهُوْا رِضْوَانَهٗ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ٢٨ اَمْ حَسِبَ ع ٩ ٣ ٧

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो जिस | अल्लाह को नाराज़ किया | और उन्हों ने पसंद न किया | उस की रज़ा | तो उस ने अकारत कर दिए | उन के आमाल | 28 | क्या गुमान करते हैं? |

الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَنْ لَّنْ يُّخْرِجَ اللّٰهُ اَضْغَانَهُمْ ٢٩

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| (वह लोग) जिन | उन के दिलों में | मरज़-रोग | कि | हरगिज़ ज़ाहिर न करेगा अल्लाह | उन के दिल की अदावतें | 29 |

وَلَـوْ نَـشَـآءُ لَاَرَيْـنٰـكَـهُـمْ فَـلَـعَـرَفْـتَـهُـمْ بِـسِـيْـمٰـهُـمْ ۭ وَلَـتَـعْـرِفَـنَّـهُـمْ فِـىْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| में से | और तुम जरूर पहचान लोगे उन्हें | उन के चेहरों से | सो अलबत्ता तुम उन्हें पहचान लो | तो तुम्हें दिखा दें वह लोग | और अगर हम चाहें |

لَحْنِ الْقَوْلِ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुजाहिदों | हम मालूम कर लें | यहां तक कि | और हम ज़रूर आज़माएंगे तुम्हें | 30 | तुम्हारे आमाल | जानना है | और अल्लाह | तरज़े कलाम |

مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ ۙ وَنَبْلُوَاۡ اَخْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जिन लोगों ने कुफ़्र किया | बेशक | 31 | तुम्हारी ख़बरें (हालात) | और हम जाँच लें | और सब्र करने वाले | तुम में से |

وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَشَآقُّوا الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उस के बाद | रसूल | और उन्हों ने मुख़ालिफ़त की | अल्लाह का रास्ता | से | और उन्हों ने रोका |

مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى ۙ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۭ وَسَيُحْبِطُ اَعْمَالَهُمْ ﴿٣٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 32 | उन के आमाल | और वह जल्द अकारत कर देगा | कुछ भी | और वह हरगिज़ न बिगाड़ सकेंगे अल्लाह का | हिदायत | उन पर | जब वाज़ेह हो गई |

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْٓا

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और बातिल न करो | और इताअत करो रसूल की | इताअत करो अल्लाह की | जो लोग ईमान लाए (मोमिनो) | ऐ |

اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर | अल्लाह का रास्ता | से | और उन्हों ने रोका | जिन लोगों ने कुफ़्र किया | बेशक | 33 | अपने आमाल |

مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ﴿٣٤﴾ فَلَا تَهِنُوْا وَتَدْعُوْٓا اِلَى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ | और न बुलाओ | पस तुम सुस्ती न करो | 34 | उन को | तो हरगिज़ नहीं बख़्शेगा अल्लाह | काफ़िर (ही) | और वह | मर गए |

السَّلْمِ ۖ وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ ۖ وَاللّٰهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 35 | तुम्हारे आमाल | और वह हरगिज़ कमी न करेगा | तुम्हारे साथ | और अल्लाह | ग़ालिब | और तुम ही | सुलह |

اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ۭ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह तुम्हें देगा | और तक़्वा इख़्तियार करो | ईमान ले आओ | और अगर | और कूद | खेल | दुनिया की ज़िन्दगी | इस के सिवा नहीं |

اُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْـَٔلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ ﴿٣٦﴾ اِنْ يَّسْـَٔلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम बुख़्ल करो | फिर तुम से चिमट जाए | वह तुम से (माल) तलब करे | अगर | 36 | तुम्हारे माल | और न तलब करेगा तुम से | तुम्हारे अजर (जमा) |

وَيُخْرِجْ اَضْغَانَكُمْ ﴿٣٧﴾ هٰٓاَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِىْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | कि तुम ख़र्च करो | तुम्हें पुकारा जाता है | हाँ! वह लोग | यह तुम हो | 37 | तुम्हारे खोट | और ज़ाहिर हो जाएं |

سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَمَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ۭ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने आप से | तो इस के सिवा नहीं कि वह बुख़्ल करता है | बुख़्ल करता है | और जो | कोई ऐसा है कि बुख़्ल करता है | फिर तुम में से | अल्लाह का रास्ता |

وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह बदल देगा | तुम रूगर्दानी करोगे | और अगर | मोहताज (जमा) | और तुम | बेनियाज़ | और अल्लाह |

ع ١٠ ٤ ٨ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۙ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْٓا اَمْثَالَكُمْ ﴿٣٨﴾

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 38 | तुम्हारे जैसे | वह न होंगे | फिर | दूसरी क़ौम तुम्हारे सिवा |

और अगर हम चाहें तो तुम्हें उन लोगों को दिखा दें, सो अलबत्ता तुम उन्हें उन के चेहरों से पहचान लोगे, और तुम ज़रूर उन्हें उन के तरज़े कलाम से पहचान लोगे, और अल्लाह तुम्हारे आमाल को जानता है। (30) और हम ज़रूर तुम्हें आज़माएंगे यहां तक हम मालूम कर लें कि (कौन है) तुम में से मुजाहिद और सब्र करने वाले और हम जाँच लें तुम्हारे हालात। (31) बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, और उन्हों ने रसूल (स) की मुख़ालिफ़त की उस के बाद जब कि उन पर हिदायत वाज़ेह हो गई, वह हरगिज़ अल्लाह का कुछ भी न बिगाड़ सकेंगे और वह (अल्लाह) जल्द उन के आमाल अकारत कर देगा। (32) ऐ मोमिनो! अल्लाह की इताअत करो और रसूल (स) की इताअत करो, और अपने आमाल बातिल न करलो। (33) बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, फिर वह काफ़िर (कुफ़्र की हालत में) मर गए तो अल्लाह हरगिज न बख़्शेगा उन को। (34) पस तुम सुस्ती (कम हिम्मती) न करो और (ख़ुद) सुलह की तरफ़ न बुलाओ, और तुम ही ग़ालिब रहोगे, और अल्लाह तुम्हारे साथ है और वह हरगिज़ कमी न करेगा तुम्हारे आमाल में। (35) इस के सिवा नहीं कि दुनिया की ज़िन्दगी (महज़) खेल कूद है, और तुम अगर ईमान ले आओ और तक़्वा इख़्तियार करो तो वह तुम्हें तुम्हारे अजर देगा, और तुम से तुम्हारे माल तलब न करेगा। (36) अगर वह तुम से माल तलब करे और तुम से चिमट जाए (तलब ही करता रहे) तो तुम बुख़्ल करो, और जाहिर हो जाएं तुम्हारे खोट। (37) हाँ। तुम ही वह लोग हो जिन्हें पुकारा जाता है कि अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करो, फिर तुम में से कोई ऐसा है जो बुख़्ल करता है, और जो बुख़्ल करता है तो इस के सिवा नहीं कि वह अपने आप से बुख़्ल करता है, और अल्लाह बेनियाज़ है और तुम (उस के) मोहताज हो और अगर तुम रूगर्दानी करोगे तो वह तुम्हारे सिवा (तुम्हारी जगह) कोई दूसरी क़ौम बदल देगा और वह तुम्हारे जैसे न होंगे। (38)

آيَاتُهَا ٢٩ ❀ (٤٨) سُوْرَةُ الْفَتْحِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٤

रुकुआत 4 — (48) सूरतुल फ़तह — आयात 29

जीत

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

बेशक हम ने आप (स) को खुली फ़तह दी, (1) ताकि अल्लाह आप (स) की अगली पिछली कोताहियाँ को बख़्शदे, और आप (स) पर अपनी नेमत मुकम्मल कर दे, और आप (स) को सीधे रास्ते की रहनुमाई करे। (2) और अल्लाह आप (स) को नुस्रत दे, एक नुस्रत (मदद) ज़बरदस्त। (3) वही है जिस ने मोमिनों के दिल में तसल्ली उतारी, ताकि वह (उन का) ईमान बढ़ाए उन के (पहले) ईमान के साथ, और आस्मानों और ज़मीन के लशकर अल्लाह ही के हैं, और है अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला। (4) ताकि वह मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को उन बाग़ात में दाख़िल कर दे जिन के नीचे नहरें जारी हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे और उन से उन की बुराइयां दूर कर देगा, और यह अल्लाह के नज़्दीक बड़ी कामयाबी है। (5) और वह अज़ाब देगा मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों को, और अल्लाह के साथ बुरे गुमान करने वाले मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को, उन पर बुरी गर्दिश है। और अल्लाह ने उन पर ग़ज़ब किया, और उन पर लानत की (रहमत से महरूम कर दिया) और उन के लिए जहन्नम तैयार किया, और वह बुरा ठिकाना है। (6) और अल्लाह ही के लिए हैं आस्मानों और ज़मीन के लशकर, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (7) बेशक हम ने आप (स) को भेजा है गवाही देने वाला, और ख़ुशख़बरी देने वाला, और डराने वाला। (8) ताकि तुम लोग अल्लाह पर और उस के रसूल (स) पर ईमान लाओ, और उस की मदद करो और उस की ताज़ीम करो, और अल्लाह की तस्बीह (पाकीज़गी बयान) करो सुबह ओ शाम। (9)

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ﴿١﴾ لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप (स) के कुसूर | से | जो पहले गुज़रे | अल्लाह | आप के लिए | ताकि बख़्शदे | 1 | खुली | फ़तह | आप (स) को | बेशक हम ने फ़तह दी |

وَمَا تَاَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | सीधा | रास्ता | और आप (स) की रहनुमाई करे | आप (स) पर | अपनी नेमत | और वह मुकम्मल करदे | और जो पीछे हुए |

وَّيَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا عَزِيْزًا ﴿٣﴾ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | सकीना (तसल्ली) | उतारी | वह जिस | वही | 3 | ज़बरदस्त | नुस्रत | और आप (स) को नुस्रत दे अल्लाह |

قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْٓا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ ۭ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और अल्लाह के लिए लशकर (जमा) | उन का ईमान | साथ | ईमान | ताकि वह बढ़ाए | मोमिनों | दिल (जमा) |

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٤﴾ لِّيُدْخِلَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि वह दाख़िल करे | 4 | हिक्मत वाला | जानने वाला | अल्लाह | और है | और ज़मीन | आस्मानों |

الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह हमेशा रहेंगे | नहरें | उन के नीचे | जारी है | जन्नत | और मोमिन औरतें | मोमिन मर्दों |

فِيْهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | बड़ी कामयाबी | अल्लाह के नज़्दीक | यह | और है | उन की बुराइयां | उन से | और दूर कर देगा | उन में |

وَّيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और मुश्रिक औरतों | और मुश्रिक मर्दों | और मुनाफ़िक़ औरतों | मुनाफ़िक़ मर्दों | और वह अज़ाब देगा |

الظَّاۗنِّيْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ۭ عَلَيْهِمْ دَاۗىِٕرَةُ السَّوْءِ ۚ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बुरी | दायरा (गर्दिश) | उन पर | गुमान बुरे | अल्लाह के साथ | गुमान करने वाले |

وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۭ وَسَاۗءَتْ مَصِيْرًا ﴿٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | ठिकाना | और बुरा है | जहन्नम | और तैयार किया उन के लिए | और उन पर लानत की | उन पर | और अल्लाह का ग़ज़ब |

وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿٧﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 7 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | और है अल्लाह | और ज़मीन | और अल्लाह के लिए लशकर आस्मानों के |

اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿٨﴾ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह पर | ताकि तुम ईमान लाओ | 8 | और डराने वाला | और ख़ुशख़बरी देने वाला | गवाही देने वाला | बेशक हम ने आप (स) को भेजा |

وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ۭ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | और शाम | सुबह | और उस (अल्लाह) की तस्बीह करो | और उस की ताज़ीम करो | और उस की मदद करो | और उस का रसूल (स) |

اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّـمَـا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ ؕ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन के हाथों के ऊपर | अल्लाह का हाथ | वह अल्लाह से बैअत कर रहे हैं | इस के सिवा नहीं कि | आप से बैअत कर रहे हैं | बेशक जो लोग |

فَمَنْ نَّكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह पर-से | जो उस ने अहद किया | पूरा किया | और जिस | अपनी ज़ात पर | उस ने तोड़ दिया | तो इस के सिवा नहीं | फिर जिस ने तोड़ दिया अहद |

١ ع ١٠ ٩ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١٠﴾ سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| से | पीछे रह जाने वाले | आप (स) से | अब कहेंगे | 10 | अजरे अ़ज़ीम | तो वह अनक़रीब उसे देगा |

الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَآ اَمْوَالُنَا وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह कहते हैं | और बख़्शिश मांगिए हमारे लिए | और हमारे घर वाले | हमारे मालों | हमें मशग़ूल रखा | देहाती |

بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के सामने | तुम्हारे लिए | इख़्तियार रखता है | तो कौन | फ़रमा दें | उन के दिलों में | जो नही | अपनी ज़बानों से |

شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ؕ بَلْ كَانَ اللّٰهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| है अल्लाह | बल्कि | कोई फ़ाइदा | चाहे तुम्हें | या | कोई नुक़्सान | तुम्हें | अगर वह चाहे | किसी चीज़ का |

بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿١١﴾ بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और मोमिन (जमा) | रसूल (स) | हरगिज़ वापस न लौटेंगे | कि | तुम ने गुमान किया | बल्कि | 11 | ख़बरदार | उस से जो तुम करते हो |

اِلٰٓى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّزُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बुरा गुमान | और तुम ने गुमान किया | तुम्हारे दिलों में-को | यह | और भली लगी | कभी | अपने अहले खाना | तरफ़ |

وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُوْرًا ﴿١٢﴾ وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और उस का रसूल | अल्लाह पर | ईमान नहीं लाता | और जो | 12 | हलाक होने वाली क़ौम | और तुम थे-हो गए |

فَاِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ﴿١٣﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और ज़मीन | और अल्लाह के लिए आस्मानों की बादशाहत | 13 | दहकती आग | काफ़िरों के लिए | तो बेशक हम ने तैयार की |

يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 14 | मेहरबान | बख़्शने वाला | अल्लाह | और है | जिस को वह चाहे | और अ़ज़ाब दे | जिस को वह चाहे | वह बख़्शदे |

سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰى مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कि तुम उन्हें ले लो | ग़नीमतों की तरफ़ | तुम चलोगे | जब | पीछे बैठ रहने वाले | अ़नक़रीब कहेंगे |

ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ؕ قُلْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| फ़रमा दें | अल्लाह का फ़रमान | कि वह बदल डालें | वह चाहते हैं | हम तुम्हारे पीछे चलें | हमें छोड़ दो (इजाज़त दो) |

لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| फिर अब वह कहेंगे | इस से क़ब्ल | कहा अल्लाह ने | इसी तरह | तुम हरगिज़ हमारे पीछे न आओ |

بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ؕ بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٥﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 15 | मगर थोड़ा | वह समझते नहीं हैं | बल्कि-जबकि | तुम हसद करते हो हम से | बल्कि |

बेशक (हुदैबिया में) जो लोग आप (स) से बैअत कर रहे हैं इस के सिवा नहीं कि वह अल्लाह से बैअ़त कर रहे हैं, उन के हाथों पर अल्लाह का हाथ है, फिर जिस ने अहद तोड़ दिया तो इस के सिवा नहीं कि उस ने अपनी ज़ात (के बुरे) को तोड़ा, और जिस ने वह अहद पूरा किया जो उस ने अल्लाह से किया था तो वह (अल्लाह) उसे अनक़रीब देगा अजरे अज़ीम। (10)
अब पीछे रह जाने वाले देहाती आप (स) से कहेंगे कि हमें हमारे मालों और हमारे घर वालों ने मश्ग़ूल रखा (रुख़सत न दी) सो आप (स) हमारे लिए बख़्शिश मांगिए, वह अपनी ज़बानों से वह कहते हैं जो उन के दिलों में नहीं, आप (स) फ़रमा दें तुम्हारे लिए अल्लाह के सामने कौन इख़्तियार रखता है किसी चीज़ का? अगर वह तुम्हें नुक़्सान (पहुँचाना) चाहे या तुम्हें नफ़ा (पहुँचाना) चाहे, बल्कि तुम जो कुछ करते हो, अल्लाह उस से ख़बरदार है। (11)
बल्कि तुम ने गुमाने (बातिल) किया कि रसूल (स) और मोमिन हरगिज अपने अहले खाना की तरफ़ कभी वापस न लौटेंगे, और यह बात भली लगी तुम्हारे दिलों को, और तुम ने गुमान किया एक बुरा गुमान, और तुम हलाक होने वाली क़ौम हो गए। (12)
और जो ईमान नहीं लाता अल्लाह पर और उस के रसूल (स) पर, तो बेशक हम ने काफ़िरों के लिए दहकती आग तैयार कर रखी है। (13)
और अल्लाह (ही) के लिए है आस्मानों की और जमीन की बादशाहत, वह जिस को चाहे बख़्श दे और जिस को चाहे अ़ज़ाब दे, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (14)
अ़नक़रीब कहेंगे पीछे बैठ रहने वाले: जब तुम चलोगे (ख़ैबर की) गनीमतों की तरफ़ कि तुम उन्हें लेलो, हमें इजाज़त दो कि हम तुम्हारे पीछे चलें, वह चाहते है कि अल्लाह का फ़रमान बदल डालें, आप (स) फ़रमा दें: तुम हरगिज़ हमारे पीछे न आओ, इसी तरह कहा अल्लाह ने इस से क़ब्ल, फिर अब वह कहेंगे: बल्कि तुम हम से हसद करते हो जबकि (हक़ीक़त यह है) कि वह बहुत थोड़ा समझते हैं। (15)

आप (स) देहातियों में से पीछे रह जाने वालों से फ़रमा दें: अनक़रीब तुम एक सख़्त जंगजू क़ौम की तरफ़ बुलाए जाओगे कि तुम उन से लड़ते रहो या वह इस्लाम क़ुबूल कर लें, सो अगर तुम इताअत करोगे तो अल्लाह तुम्हें अच्छा अजर देगा, और अगर तुम फिर गए जैसे तुम इस से क़ब्ल फिर गए थे तो वह तुम्हें अज़ाब देगा अज़ाब दर्दनाक। (16)
नहीं है अँधे पर कोई गुनाह, और नहीं है लंगड़े पर कोई गुनाह, और न बीमार पर कोई गुनाह, और जो अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअत करेगा वह उसे उन बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, और जो फिर जाएगा वह उसे दर्दनाक अज़ाब देगा। (17)
तहक़ीक़ अल्लाह मोमिनों से राज़ी हुआ जब वह आप (स) से बैअत कर रहे थे दरख़्त के नीचे, सो उस ने मालूम कर लिया जो उन के दिलों में (ख़ुलूस था) तो उस ने उन पर तसल्ली उतारी, और बदले में उन्हें क़रीब ही एक फ़तह अ़ता की। (18)
और बहुत सी ग़नीमतें उन्हों ने हासिल कीं, और है अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला। (19)
और अल्लाह ने तुम से वादा किया नेमतों का, कस्रत से जिन्हें तुम लोगे, पस उस ने यह तुम्हें जल्द दे दी और लोगों के हाथ तुम से रोक दिए, और ताकि (यह) हो मोमिनों के लिए एक निशानी, और तुम्हें सीधे रास्ते की हिदायत दे। (20)
और एक और फ़तह भी, तुम ने (अभी) उस पर क़ाबू नहीं पाया। घेर रखा है अल्लाह ने उस को, और अल्लाह है हर शै पर क़ुदरत रखने वाला। (21)
और अगर तुम से काफ़िर लड़ते तो वह पीठ फेरते, फिर वह न कोई दोस्त पाते और न कोई मददगार। (22)
अल्लाह का दस्तूर है जो इस से क़ब्ल गुज़र चुका है (चला आ रहा है) और तुम अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तबदीली न पाओगे। (23)

قُــلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَـوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِىْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सख़्त लड़ने वाली (जंगजू) | एक क़ौम की तरफ़ | अनक़रीब तुम बुलाए जाओगे | देहातियों | से | पीछे बैठ रहने वालों को | फ़रमा दें |

تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अजर | तुम्हें देगा अल्लाह | तुम इताअ़त करोगे | अगर | या वह इस्लाम क़ुबूल कर लें | तुम उन से लड़ते रहो |

حَسَنًا ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ١٦

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 16 | दर्दनाक | अ़ज़ाब | वह तुम्हें अ़ज़ाब देगा | इस से क़ब्ल | जैसे तुम फिर गए थे | तुम फिर गए | और अगर | अच्छा |

لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَـرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَـرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मरीज़ पर | और न | कोई गुनाह | लंगड़े पर | और नहीं | कोई तंगी (गुनाह) | अँधे पर | नहीं |

حَـرَجٌ ۗ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के नीचे | बहती हैं | बाग़ात | वह दाख़िल करेगा उसे | और उस के रसूल की | इताअ़त करेगा अल्लाह की | और जो | कोई गुनाह |

الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ١٧ لَقَدْ رَضِىَ اللّٰهُ ع ٢ الصف ١٠

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तहक़ीक़ राज़ी हुआ अल्लाह | 17 | अज़ाब दर्दनाक | वह अ़ज़ाब देगा उसे | फिर जाएगा | और जो | नहरें |

عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِىْ قُلُوْبِهِمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो उन के दिलों में | सो उस ने मालूम कर लिया | दरख़्त | नीचे | वह आप (स) से बैअ़त कर रहे थे | जब | मोमिनों से |

فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ١٨ وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बहुत सी | और ग़नीमतें | 18 | एक फ़तह क़रीब | और बदले में दी उन्हें | उन पर | सकीना (तसल्ली) | तो उस ने उतारी |

يَّاْخُذُوْنَهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ١٩ وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ग़नीमतें | वादा किया अल्लाह ने | 19 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | और है अल्लाह | उन्हों ने वह हासिल कीं |

كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِىَ النَّاسِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लोग | हाथ | और रोक दिए | यह | तुम्हें | तो जल्द दे दी उस ने | तुम लोगे उन्हें | कस्रत से |

عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ٢٠

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | सीधा | रास्ता | और वह हिदायत दे तुम्हें | मोमिनों के लिए | एक निशानी | और ताकि हो | तुम से |

وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और है अल्लाह | उस को | घेर रखा है अल्लाह | उस पर | तुम ने क़ाबू नहीं पाया | और एक और (फ़तह) |

عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرًا ٢١ وَلَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता वह फेरते | वह जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | तुम से लड़ते | और अगर | 21 | क़ुदरत रखने वाला | हर शै | पर |

الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ٢٢ سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِىْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जो | अल्लाह का दस्तूर | 22 | और न कोई मददगार | कोई दोस्त | वह न पाते | फिर | पीठ (जमा) |

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ٢٣

| | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 23 | कोई तबदीली | अल्लाह के दस्तूर में | और तुम हरगिज़ न पाओगे | इस से क़ब्ल | गुज़र चुका |

وَهُوَ الَّذِىْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दरमियान (वादी-ए) मक्का में | उन से | और तुम्हारे हाथ | तुम से | उन के हाथ | जिस ने रोका | और वह |

مِنْۢ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ﴿٢٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 24 | देखने वाला | तुम जो कुछ करते हो उसे | और है अल्लाह | उन पर | कि फ़तह मन्द किया तुम्हें | उस के बाद |

هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْىَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और क़ुर्बानी के जानवर | मस्जिदे हराम | से | और तुम्हें रोका | जिन्हों ने कुफ़्र किया | वह-यह |

مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ۗ وَلَوْ لَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ وَنِسَآءٌ مُّؤْمِنٰتٌ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और मोमिन औरतें | मोमिन (जमा) | मर्द | और अगर न | अपना मुकाम | कि वह पहुँचे | रुके हुए |

لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَئُوْهُمْ فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नादानिस्ता | सदमा-नुक़्सान | उन से | पस तुम्हें पहुँच जाता | तुम उनको पामाल करदेते | कि | तुम नही जानते उन्हें |

لِيُدْخِلَ اللّٰهُ فِىْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا الَّذِيْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन लोगों को | अलबत्ता हम अ़ज़ाब देते | अगर वह जुदा हो जाते | जिसे वह चाहे | अपनी रहमत में | ताकि दाख़िल करे अल्लाह |

كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٢٥﴾ اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | की | जब | 25 | दर्दनाक | अ़ज़ाब | उन में से | जो काफ़िर हुए |

فِىْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपनी तसल्ली | तो अल्लाह ने उतारी | ज़मानाए जाहिलियत | ज़िद | ज़िद | अपने दिलों में |

عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى

| | | | |
|---|---|---|---|
| तक़्वे की बात | और उन पर लाज़िम फ़रमा दिया | और मोमिनों पर | अपने रसूल (स) पर |

ع ٣ ١١ وَكَانُوْٓا اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمًا ﴿٢٦﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 26 | जानने वाला | हर शै का | और है अल्लाह | और उस के अहल | ज़ियादा हक़दार उस के | और वह थे |

لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मस्जिदे हराम | अलबत्ता तुम ज़रूर दाखिल होगे | हक़ीक़त के मुताबिक़ | ख़्वाब | अपने रसूल (स) को | सच्चा दिखाया अल्लाह ने | यक़ीनन |

اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۙ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ ۙ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और (बाल) कटवाओगे | अपने सर | मुंडवाओगे | अम्न ओ अमान के साथ | अल्लाह ने चाहा | अगर |

لَا تَخَافُوْنَ ۗ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इस | उस से वरे (पहले) | पस कर दी उस ने | जो तुम नहीं जानते | पस उस ने मालूम कर लिया | तुम्हें कोई ख़ौफ़ न होगा |

فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿٢٧﴾ هُوَ الَّذِىْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हक़ | और दीन | हिदायत के साथ | अपना रसूल (स) | जिस ने भेजा | वह | 27 | एक क़रीबी फ़तह |

لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۗ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٢٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 28 | गवाह | अल्लाह | और काफ़ी है | तमाम | दीन | पर | ताकि उसे ग़ालिब कर दे |

और वही है जिस ने वादीए मक्का में उन के हाथ तुम से रोके और तुम्हारे हाथ उन से, उस के बाद कि तुम्हें उन पर फ़तह मन्द किया, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे है देखने वाला। (24)

यह वह लोग हैं जिन्हों ने कुफ़्र किया और तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका, और रुके हुए क़ुरबानी के जानवरों को उन के मुक़ाम पर पहुँचने से रोका, और (हम तुम्हें क़िताल की इजाज़त देते) अगर (शहरे मक्का में) ऐसे मोमिन मर्द और मोमिन औरतें न होते जिन्हें तुम नहीं जानते कि तुम उन्हें पामाल कर देते, पस उन से तुम्हें पहुँच जाता सदमा (नुक़्सान) नादानिस्ता। (ताख़ीर इस लिए हुई) ताकि अल्लाह जिसे चाहे अपनी रहमत में दाख़िल करे, अगर वह जुदा हो जाते तो हम अ़ज़ाब देते उन में से काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब। (25)

जब काफ़िरों ने अपने दिलों में ज़िद की, ज़िद (हट) ज़मानाए जाहिलियत की तो अल्लाह ने अपने रसूल (स) पर और मोमिनों पर अपनी तसल्ली उतारी और उन्हें लाज़िम फ़रमाया (क़ाइम रखा) तक़्वे की बात पर, और वही उस के ज़ियादा हक़दार और उस के अहल थे, और अल्लाह हर शै का जानने वाला है। (26)

यक़ीनन अल्लाह ने अपने रसूल (स) को सच्चा ख़्वाब हक़ीक़त के मुताबिक़ दिखाया कि अल्लाह ने चाहा तो तुम ज़रूर मस्जिदे हराम में दाखिल होगे अम्न ओ अमान के साथ, अपने सर मुंडवाओगे और बाल कटवाओगे, तुम्हें कोई ख़ौफ़ न होगा, पस उस ने मालूम कर लिया जो तुम नहीं जानते थे, पस उस ने कर दी उस (फ़त्हे मक्का) से पहले ही एक क़रीबी फ़तह। (27)

वही है जिस ने अपने रसूल (स) को भेजा हिदायत और दीने हक़ के साथ ताकि उसे तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे, और अल्लाह की गवाही काफ़ी है। (28)

मुहम्मद (स) अल्लाह के रसूल हैं, और जो लोग उन के साथ हैं वह काफ़िरों पर बड़े सख़्त हैं, आपस में रह्म दिल हैं, तू उन्हें देखेगा रुकूअ करते, सिज्दा रेज़ होते, वह तलाश करते हैं अल्लाह का फ़ज़्ल और (उस की) रजा मन्दी, उन की अ़लामत उन के चेहरों पर सिज्दों के असर (निशानात) हैं, यह उन की सिफ़त तौरेत में (मज़कूर) है और उन की यह सिफ़त इन्जील में है, जैसे एक खेती, उस ने अपनी सुई निकाली, फिर उसे क़व्वी किया, फिर वह मोटी हुई, फिर वह अपनी नाल पर खड़ी हो गई, वह किसानों को भली लगती है ताकि उन काफ़िरों को गुस्से में लाए (उन के दिल जलाए), अल्लाह ने वादा किया है उन से जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, मग़्फ़िरत और अजरे अजीम का। (29)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

ऐ मोमिनो! अल्लाह और उस के रसूल (स) के आगे न बढ़ो और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (1)
ऐ मोमिनो! नबी (स) की आवाज़ पर तुम अपनी आवाज़ें ऊँची न करो, और उन के सामने ज़ोर से न बोलो, जैसे तुम एक दूसरे से बुलन्द आवाज़ में गुफ़्तगू करते हो, कहीं तुम्हारे अमल अकारत (न) हो जाएं और तुम्हें ख़बर भी न हो। (2)
बेशक जो लोग अल्लाह के रसूल (स) के नज़्दीक (सामने) अपनी आवाज़ें पस्त रखते हैं, यह वह लोग हैं जिन के दिलों को अल्लाह ने परहेज़गारी के लिए आज़माया है, उन के लिए मग़्फ़िरत और अजरे अ़ज़ीम है। (3)
बेशक जो लोग आप (स) को पुकारते हैं हुजरों के बाहर से, उन में से अक्सर अ़क़्ल नहीं रखते। (4)

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ۭ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ اَشِدَّاۗءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاۗءُ بَيْنَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आपस में | रह्म दिल | काफ़िरों पर | बड़े सख़्त | उन के साथ | और जो लोग | अल्लाह के रसूल | मुहम्मद (स) |

تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ۡ سِيْمَاهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की अलामत | और रजा मन्दी | अल्लाह से-का | फ़ज़्ल | वह तलाश करते हैं | सिज्दा रेज़ होते | रुकूअ करते | तू उन्हें देखेगा |

فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ۭ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ۚ وَمَثَلُهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन की मिसाल (सिफ़त) | तौरेत में | उन की मिसाल (सिफ़त) | यह | सिज्दों का असर | से | उन के चेहरों में-पर |

فِي الْاِنْجِيْلِ ۚ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْــَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर वह खड़ी हो गई | फिर वह मोटी हुई | फिर उसे क़व्वी किया | अपनी सुई | उस ने निकाली | जैसे एक खेती | इन्जील में |

عَلٰي سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ۭ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन से जो | वादा किया अल्लाह ने | काफ़िरों | उन से | ताकि गुस्से में लाए | किसान (जमा) | वह भली लगती है | अपनी जड़ (नाल) पर |

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ٢٩

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 29 | अ़ज़ीम | और अजर | मग़्फ़िरत | उन में से | और उन्हों ने आमाल किए अच्छे | ईमान लाए |

آيَاتُهَا ١٨ ❀ (٤٩) سُوْرَةُ الْحُجُرَاتِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकुआत 2 | (49) सूरतुल हुजुरात कमरे | आयात 18

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और उस का रसूल (स) | अल्लाह के सामने-आगे | न आगे बढ़ो तुम | जो लोग ईमान लाए (मोमिन) | ऐ |

وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ١ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْٓا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| न ऊँची करो | मोमिनो | ऐ | 1 | जानने वाला | सुनने वाला | बेशक अल्लाह | और डरो अल्लाह से |

اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जैसे बुलन्द आवाज | गुफ़्तगू में | उस के सामने | और न ज़ोर से बोलो | नबी (स) की आवाज़ | ऊपर-पर | अपनी आवाज़ें |

بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ٢ اِنَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | 2 | न जानते (ख़बर भी न) हो | और तुम | तुम्हारे अ़मल | अकारत हो जाएं | कहीं | बाज़ (दूसरे) से | तुम्हारे बाज़ (एक) |

الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो-जिन | यह वह लोग | अल्लाह का रसूल (स) | नज़्दीक | अपनी आवाज़ें | पस्त रखते हैं | जो लोग |

امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ۭ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ٣ اِنَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | 3 | अ़ज़ीम | और अजर | मग़्फ़िरत | उन के लिए | परहेज़गारी के लिए | उन के दिल | आज़माया है अल्लाह ने |

الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَاۗءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ٤

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | अ़क़्ल नहीं रखते | उन में से अक्सर | हुजरों | बाहर से | आप (स) को पुकारते हैं | जो लोग |

معانقة ١٥ عند المتأخرين ١٢

ع ٣ ١٢

وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बख़्शने<br>वाला | और<br>अल्लाह | उन के<br>लिए | बेहतर | अलबत्ता<br>होता | उन के<br>पास | आप (स)<br>निकल आते | यहां<br>तक कि | सब्र<br>करते | अलबत्ता<br>वह | और<br>अगर |

رَّحِيْمٌ ﴿٥﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ جَاۗءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْٓا اَنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कहीं | तो खूब तहक़ीक़<br>कर लिया करो | ख़बर<br>ले कर | कोई फ़ासिक़<br>बद किर्दार | आए तुम्हारे<br>पास | अगर | जो लोग ईमान<br>लाए (मोमिन) | ऐ | 5 | मेह्रबान |

تُصِيْبُوْا قَوْمًۢا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰي مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ﴿٦﴾ وَاعْلَمُوْٓا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और<br>जान रखो | 6 | नादिम<br>(जमा) | जो तुम ने किया<br>(अपना किया) | पर | फिर हो तुम | नादानी से | किसी<br>क़ौम को | तुम ज़रर<br>पहुँचाओ |

اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۭ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता तुम<br>मुशकिल में पड़ो | कामों से-में | अक्सर | में | अगर वह तुम्हारा<br>कहा मानें | अल्लाह का<br>रसूल (स) | तुम्हारे<br>दरमियान | कि |

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे<br>सामने | और नापसंदीदा<br>कर दिया | तुम्हारे दिलों में | और उस आरास्ता<br>कर दिया | ईमान की | तुम्हें | मुहब्बत दी | और लेकिन<br>अल्लाह |

الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ﴿٧﴾ فَضْلًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़ज़्ल | 7 | हिदायत<br>पाने वाले | वह | यही लोग | और नाफ़रमानी | और गुनाह | कुफ़्र |

مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٨﴾ وَاِنْ طَاۗىِٕفَتٰنِ مِنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से-के | दो गिरोह | और<br>अगर | 8 | हिक्मत<br>वाला | जानने<br>वाला | और<br>अल्लाह | और नेमत | अल्लाह से-के |

الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَاِنْۢ بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन दोनों<br>में से एक | फिर अगर<br>ज़ियादती करे | उन दोनों के<br>दरमियान | तो सुलह<br>करा दो तुम | बाहम लड़ पड़ें | मोमिन (जमा) |

عَلَي الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْۗءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ فَاۗءَتْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर अगर जब<br>वह रुजूअ़ कर ले | हुक्मे<br>इलाही | तरफ़ | रुजूअ़<br>करे | यहां<br>तक कि | ज़ियादती<br>करता है | उस से<br>जो | तो तुम<br>लड़ो | दूसरे पर |

فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ﴿٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | इंसाफ़<br>करने वाले | दोस्त<br>रखता है | बेशक<br>अल्लाह | और तुम इंसाफ़<br>किया करो | अदल के<br>साथ | उन दोनों के<br>दरमियान | तो सुलह<br>करा दो तुम |

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि<br>तुम पर | और डरो<br>अल्लाह से | अपने भाई | दरमियान | पस सुलह<br>करा दो | भाई | मोमिन<br>(जमा) | इस के<br>सिवा नहीं |

١ ع ١٠ ١٣ تُرْحَمُوْنَ ﴿١٠﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰٓى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या<br>अजब | (दूसरे)<br>गिरोह का | एक<br>गिरोह | न मज़ाक़ उड़ाए | जो लोग ईमान लाए<br>(मोमिन) | ऐ | 10 | रहम किया<br>जाए |

اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَاۗءٌ مِّنْ نِّسَاۗءٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेहतर | कि वह हों | क्या<br>अजब | औरतों से का | और न औरतें | उन से | बेहतर | कि वह हों |

مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ۭ بِئْسَ الِاسْمُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बुरा नाम | बुरे अल्क़ाब से | और बाहम<br>न चिड़ाओ | बाहम<br>(एक दूसरे) | और न ऐब<br>लगाओ | उन से |

الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿١١﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | वह ज़ालिम<br>(जमा) | तो यही<br>लोग | तौबा न की<br>(बाज़ न आया) | और<br>जो-जिस | ईमान के बाद | फ़िस्क़ |

और अगर वह सब्र करते यहां तक कि आप (स) (खुद) उन के पास निकल आते तो उन के लिए अल्बत्ता बेहतर होता, और अल्लाह बख़्शने वाला मेह्रबान है। (5)

ऐ मोमिनो! अगर तुम्हारे पास कोई बदकार आए ख़बर ले कर तो खूब तहक़ीक़ कर लिया करो, कहीं नादानी से तुम किसी क़ौम को ज़रर पहुँचा बैठो, फिर तुम्हें अपने किए पर नादिम होना पड़े। (6)

और जान रखो कि तुम्हारे दरमियान अल्लाह के रसूल (स) हैं, अगर वह अक्सर कामों में तुम्हारा कहा मानें तो तुम (ख़ुद ही) मुशकिलात में पड़ जाओ, लेकिन अल्लाह ने तुम्हें ईमान की मुहब्बत दी और उसे तुम्हारे दिलों में आरास्ता (पसंदीदा) कर दिया और उस ने तुम्हारे सामने (दिलों में) नापसंदीदा कर दिया कुफ़्र ओ फ़िस्क़ और नाफ़रमानी को, यही लोग (राहे) हिदायत पाने वाले हैं। (7)

अल्लाह के तरफ़ से फ़ज़्ल और नेमत, और अल्लाह है जानने वाला, हिक्मत वाला। (8)

और अगर मोमिनों के दो गिरोह बाहम लड़ पड़ें तो तुम उन दोनों के दरमियान सुलह करा दो, फिर अगर ज़ियादती करे उन दोनों में से एक दूसरे पर, तो तुम उस से लड़ो जो ज़ियादती करता है, यहां तक कि वह अल्लाह के हुक्म की तरफ़ रुजूअ़ कर ले, फिर जब वह रुजूअ़ कर ले तो तुम उन दोनों के दरमियान अदल के साथ सुलह करा दो और तुम इंसाफ़ करो, बेशक अल्लाह इंसाफ़ करने वालों को दोस्त रखता है। (9)

इस के सिवा नहीं कि सब मोमिन भाई (भाई) हैं, पस तुम अपने दो भाइयों के दरमियान सुलह करा दो, अल्लाह से डरो ताकि तुम पर रह्म किया जाए। (10)

ऐ मोमिनो! (तुम से) एक गिरोह (मर्द) दूसरे गिरोह (मर्दों) का मज़ाक़ न उड़ाएं, क्या अजब कि वह उन से बेहतर हों और न औरतें औरतों का (मज़ाक़) उड़ाएं, क्या अजब कि वह उन से बेहतर हों, और एक दूसरे पर ऐब न लगाओ, और बाहम बुरे अल्क़ाब से न चिड़ाओ (नाम न बिगाड़ो), ईमान के बाद फ़िस्क़ में नाम कमाना बुरा है, और जो बाज़ न आया तो यही लोग ज़ालिम हैं। (11)

ऐ मोमिनो! बहुत से गुमानों से बचो, बेशक बाज़ गुमान गुनाह होते हैं और एक दूसरे की टटोल में न रहा करो, और तुम में से कोई एक दूसरे की ग़ीबत न करे, क्या पसंद करता है तुम में से कोई कि वह अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाए? तो तुम उस से घिन करोगे, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला, निहायत मेहरबान है। (12)
ऐ लोगो! बेशक हम ने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया, और हम ने तुम्हें बनाया ज़ातें और क़बीले ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो, बेशक अल्लाह के नज़्दीक तुम में सब से ज़ियादा इज़्ज़त वाला वह है जो सब से ज़ियादा परहेज़गार है, अल्लाह बेशक जानने वाला, ख़बरदार है। (13)
देहाती कहते हैं कि हम ईमान ले आए, आप (स) फ़रमा दें: तुम ईमान नहीं लाए हो, बल्कि तुम कहो कि हम झुक गए हैं, और अभी दाख़िल नहीं हुआ तुम्हारे दिलों में ईमान, और अगर तुम अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअत करोगे तो अल्लाह तुम्हारे आमाल से कमी न करेगा कुछ भी, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (14)
इस के सिवा नहीं कि मोमिन वह लोग हैं जो अल्लाह और उस के रसूल (स) पर ईमान लाए, फिर वह शक में न पड़े और उन्हों ने अपने मालों और जानों से अल्लाह की राह में जिहाद किया, यही लोग हैं सच्चे। (15)
आप (स) फ़रमा दें: क्या तुम अल्लाह को अपना दीन (दीनदारी) जतलाते हो? और अल्लाह जानता है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है (16)
वह आप (स) पर एहसान रखते हैं कि वह इस्लाम लाए, आप (स) फ़रमा दें कि तुम मुझ पर अपने इस्लाम लाने का एहसान न रखो, बल्कि अल्लाह तुम पर एहसान रखता है कि उस ने तुम्हें ईमान की तरफ़ हिदायत दी, अगर तुम सच्चे हो। (17)
बेशक अल्लाह आस्मानों और ज़मीन की पोशीदा बातें जानता है, और अल्लाह वह (सब कुछ) देखने वाला है जो तुम करते हो। (18)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۡ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बाज़ गुमान | बेशक | गुमानों से | बहुत से | बचो | जो लोग ईमान लाए (मोमिन) | ऐ |

اِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ۭ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि वह खाए | तुम में से कोई | क्या पसंद करता है? | बाज़ (दूसरे) की | तुम में से (एक) | और ग़ीबत न करे | और टटोल में न रहा करो एक दूसरे की | गुनाह |

لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ١٢

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12 | निहायत मेहरबान | तौबा कुबूल करने वाला | बेशक अल्लाह | और अल्लाह से डरो तुम | तो उस से तुम घिन करोगे | मुर्दा | अपने भाई का गोश्त |

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَاۗىِٕلَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और क़बीले | ज़ातें | और बनाया तुम्हें | और एक औरत | एक मर्द से | बेशक हम ने पैदा किया तुम्हें | ऐ लोगो! |

لِتَعَارَفُوْا ۭ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ١٣

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 13 | बाख़बर | जानने वाला | बेशक अल्लाह | तुम में सब से बड़ा परहेज़गार | अल्लाह के नज़्दीक | बेशक तुम में सब से ज़ियादा इज़्ज़त वाला | ताकि तुम एक दूसरे की शनाख़्त करो |

قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ۭ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अभी नहीं | हम इस्लाम लाए हैं | तुम कहो | और लेकिन | तुम ईमान नहीं लाए | फ़रमा दें | हम ईमान लाए | देहाती | कहते हैं |

يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ ۭ وَاِنْ تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हें कमी न करेगा | अल्लाह और उस का रसूल (स) | तुम इताअत करोगे | और अगर | तुम्हारे दिलों में | ईमान | दाख़िल हुआ |

مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْـًٔا ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ١٤ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जो | मोमिन (जमा) | इस के सिवा नहीं | 14 | मेहरबान | बख़्शने वाला | बेशक अल्लाह | कुछ भी | तुम्हारे आमाल | से |

اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने मालों से | और उन्हों ने जिहाद किया | न पड़े शक में वह | फिर | और उस का रसूल (स) | अल्लाह पर | ईमान लाए |

وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ١٥ قُلْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़रमा दें | 15 | सच्चे | वह | यही लोग | अल्लाह की राह | में | और अपनी जानों से |

اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | आस्मानों में | जो | जानता है | और अल्लाह | अपना दीन | क्या तुम जतलाते हो अल्लाह को? |

فِي الْاَرْضِ ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ١٦ يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا ۭ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह इस्लाम लाए | कि | आप (स) पर | वह एहसान रखते हैं | 16 | जानने वाला | चीज़ | हर एक | और अल्लाह | ज़मीन में |

قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ اِسْلَامَكُمْ ۚ بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम पर | एहसान रखता है | बल्कि अल्लाह | अपने इस्लाम लाने का | मुझ पर | न एहसान रखो तुम | फ़रमा दें |

اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ١٧ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जानता है | बेशक अल्लाह | 17 | सच्चे | तुम हो | अगर | ईमान की तरफ़ | कि उस ने हिदायत दी तुम्हें |

غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ١٨ ع ٢ ٨ ١٣

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | तुम करते हो | वह जो | देखने वाला | और अल्लाह | और ज़मीन | पोशीदा बातें आस्मानों की |

## آيَاتُهَا ٤٥ ❀ (٥٠) سُوْرَةُ قٓ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकुआत 3 (50) सूरह काफ़ आयात 45

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ﴿١﴾ بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन में से | एक डर सुनाने वाला | उन के पास आया | कि | उन्हों ने तअज्जुब किया | बल्कि | 1 | मजीद | क़सम है कुरआन | काफ़ |

فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَیْءٌ عَجِيْبٌ ﴿٢﴾ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मिट्टी | और हो गए | क्या जब हम मर गए | 2 | अजीब | शै | यह | काफ़िरों | तो कहा |

ذٰلِكَ رَجْعٌ ۢ بَعِيْدٌ ﴿٣﴾ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ ۚ وَعِنْدَنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हमारे पास | उन में से | ज़मीन | जो कुछ कम करती है | तहक़ीक़ हम जानते हैं | 3 | दूर | दोबारा लौटना | यह |

كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ﴿٤﴾ بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِیْٓ اَمْرٍ مَّرِيْجٍ ﴿٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | उलझी हुई | एक बात में | पस वह | जब वह आया उन के पास | हक़ को | बल्कि उन्हों ने झुटलाया | 4 | महफ़ूज़ रखने वाली किताब |

اَفَلَمْ يَنْظُرُوْٓا اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उस में नहीं | और उस को आरास्ता किया | बनाया उस को | कैसे | उन के ऊपर | आस्मान की तरफ़ | तो क्या वह नहीं देखते? |

مِنْ فُرُوْجٍ ﴿٦﴾ وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِیَ وَاَنْۢبَتْنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उगाए | पहाड़ (जमा) | उस में | और डाले (जमाए) | हम ने फैलाया | और ज़मीन | 6 | शिगाफ़ | कोई |

فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ ۢ بَهِيْجٍ ﴿٧﴾ تَبْصِرَةً وَّذِكْرٰی لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ﴿٨﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | रुजूअ करने वाला बन्दा | लिए हर | और नसीहत | ज़रीआए बीनाई | 7 | खुशनुमा | हर किस्म | से के | उस में |

وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّحَبَّ الْحَصِيْدِ ﴿٩﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | काटने (खेती) | और दाना (ग़ल्ला) | बाग़ात | उस से | फिर हम ने उगाए | बाबरकत | पानी | आस्मान से | और हम ने उतारा |

وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيْدٌ ﴿١٠﴾ رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۙ وَاَحْيَيْنَا بِهٖ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से | और हम ने ज़िन्दा किया | बन्दों के लिए | रिज़्क़ | 10 | तह ब तह | ख़ोशे | जिन के | बुलन्द ओ बाला | और खजूर के दरख़्त |

بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذٰلِكَ الْخُرُوْجُ ﴿١١﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नूह (अ) की क़ौम | इन से क़ब्ल | झुटलाया | 11 | निकलना | इसी तरह | मुर्दा | शहर (ज़मीन) |

وَّاَصْحٰبُ الرَّسِّ وَثَمُوْدُ ﴿١٢﴾ وَعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ وَاِخْوَانُ لُوْطٍ ﴿١٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 13 | लूत (अ) | और भाई (जमा) | और फ़िरऔन | और आद | 12 | और समूद | और अहले रस |

وَّاَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۚ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ ﴿١٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 14 | वादाए अज़ाब | पस साबित हो गया | रसूलों | सब ने झुटलाया | और क़ौमे तुब्बअ | और अहले अयका (बन के रहने वाले) |

اَفَعَيِيْنَا بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ ۚ بَلْ هُمْ فِیْ لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٥﴾ ع ١٥

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15 | पैदा करना अज़ सरे नौ | से | शक में | बल्कि वह | पहली बार | पैदा करने से | तो क्या हम थक गए |

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
क़ाफ़ - क़सम है कुरआन मजीद की। (1)
बल्कि उन्हों ने तअज्जुब किया कि उन के पास उन में से एक डर सुनाने वाला आया, तो काफ़िरों ने कहा कि यह अजीब शै है। (2)
क्या जब हम मर गए और मिट्टी हो गए (फिर जी उठेंगे?), यह दोबारा लौटना दूर (अज़ अक़्ल) है (3)
तहक़ीक़ हम जानते हैं जो कुछ कम करती है उन (के अज्साम) में से ज़मीन और हमारे पास महफ़ूज़ रखने वाली किताब है। (4)
बल्कि उन्हों ने हक़ को झुटलाया जब वह उन के पास आया, पस वह एक उलझी हुई बात में (पड़े हैं)। (5)
तो क्या वह अपने ऊपर आस्मान की तरफ़ नहीं देखते? कि हम ने उस को कैसे बनाया। और हम ने उसको (सितारों से) आरास्ता किया और उस में कोई शिगाफ़ तक नहीं। (6)
और ज़मीन को हम ने फैलाया और उस में पहाड़ जमाए. और हम ने उस में उगाईं हर क़िस्म की खुशनुमा (चीज़ें)। (7)
हर रुजूअ करने वाले बन्दे के लिए ज़रीआए बीनाई ओ नसीहत। (8)
और हम ने आस्मान से बाबरकत पानी उतारा, फिर हम ने उस से बाग़ात उगाए और खेती का गल्ला। (9)
और बुलन्द ओ बाला खजूर के दरख़्त, जिन के तह ब तह (खूब गुंधे हुए) खोशे हैं। (10)
रिज़्क़ बन्दों के लिए और हम ने उस से मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा किया, इसी तरह (क़ब्र से) निकलना होगा। (11)
इन से क़ब्ल झुटलाया नूह (अ) की क़ौम और अहले रस और समूद ने। (12)
आद और फ़िरऔन और लूत (अ) के भाइयों ने। (13)
और बन के रहने वालों ने और क़ौमे तुब्बअ ने, सब ने रसूलों को झुटलाया, पस वादाए अज़ाब साबित हो गया। (14)
तो क्या हम पहली बार पैदा करने से थक गए हैं? बल्कि वह दोबारा पैदा करने की (तरफ़) से शक में हैं। (15)

और तहक़ीक़ हम ने इन्सान को पैदा किया और हम जानते हैं जो वस्वसे गुज़रते हैं उस के जी में, और हम उस की शह रग से (भी) ज़ियादा क़रीब हैं। (16)
जब (वह कोई काम करता है) तो लिखने वाले लिख लेते हैं (एक) दाएं से और (एक) बाएं से बैठा हुआ। (17)
और वह कोई बात (जबान से) नहीं निकालता मगर उस के पास (लिखने के लिए) एक निगहबान तैयार बैठा है। (18)
और हक़ के साथ मौत की बेहोशी आ गई, यह वह है जिस से तू बिदकता था। (19)
और सूर फूंका गया, यह वईद का दिन है। (20)
और हर शख़्स (हमारे हुज़ूर) हाज़िर होगा, उस के साथ एक चलाने वाला और एक गवाही देने वाला होगा। (21)
तहक़ीक़ तू इस से ग़फ़्लत में था, तो हम ने तुझ से तेरा (ग़फ़्लत का) पर्दा हटा दिया। पस तेरी नज़र आज बड़ी तेज़ है। (22)
और कहेगा उस का हम नशीन (फ़रिश्ता) जो मेरे पास (आमाल नामा था) यह हाजिर है। (23)
(हुक्म होगा) तुम दोनों जहन्नम में डाल दो हर नाशुक्रे सरकश को, (24)
भलाई को रोकने वाला, हद से गुज़रने वाला, शुबहात डालने वाला। (25)
जिस ने अल्लाह के साथ दूसरा माबूद ठहराया, पस तुम उसे डाल दो सख़्त अज़ाब में। (26)
उस का हम नशीन (शैतान) कहेगा कि ऐ हमारे रब! मैं ने उसे सरकश नहीं बनाया, बल्कि वह परले दरजे की गुमराही में था। (27)
(अल्लाह) फ़रमाएगाः तुम मेरे सामने न झगड़ो, और मैं तुम्हारी तरफ़ पहले वादाए अज़ाब भेज चुका हूँ। (28)
मेरे पास बात नहीं बदली जाती और नहीं मैं ज़ुल्म करने वाला बन्दों पर। (29)
जिस दिन हम जहन्नम से कहेंगे कि क्या तू भर गई? और वह कहेगीः क्या कुछ (और) मज़ीद है? (30)
और जन्नत परहेज़गारों के नज़्दीक कर दी जाएगी, न होगी दूर। (31)
यह है जो तुम से वादा किया जाता था, हर रुजूअ करने वाले, निगहदाश्त करने वाले के लिए (32)
जो अल्लाह रहमान से बिन देखे डरा, और रुजूअ करने वाले दिल के साथ आया। (33)
(हम फ़रमाएंगे) उस में सलामती के साथ दाख़िल हो जाओ, यह हमेशा रहने का दिन है। (34)

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهٗ ۚۖ وَنَحْنُ اَقْرَبُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बहुत क़रीब | और हम | उस का जी | उस के | जो वस्वसे गुज़रते हैं | और हम जानते हैं | इन्सान | और तहक़ीक़ हम ने पैदा किया |

اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ﴿١٦﴾ اِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الْيَمِيْنِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दाएं से | दो (2) लेने (लिख लेने) वाले | जब लेते (लिख लेते) हैं | 16 | रगे गर्दन (शह रग) | से | उस के |

وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيْدٌ ﴿١٧﴾ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ﴿١٨﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | तैयार बैठा हुआ | एक निगहबान | उस के पास | मगर | कोई बात | और नहीं निकालता | 17 | बैठा हुआ | और बाएं से |

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ﴿١٩﴾ وَنُفِخَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और फूंका गया | 19 | भागता (बिदकता) | उस से | जिस से तू था | यह | हक़ के साथ | मौत की बेहोशी | और आ गई |

فِى الصُّوْرِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيْدِ ﴿٢٠﴾ وَجَآءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَآئِقٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक चलाने वाला | उस के साथ | हर शख़्स | और आएगा (हाज़िर होगा) | 20 | वईद का दिन | यह | सूर में |

وَّشَهِيْدٌ ﴿٢١﴾ لَقَدْ كُنْتَ فِىْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَآءَكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तेरा पर्दा | तुझ से | तो हम ने हटा दिया | इस से | ग़फ़्लत में | तहक़ीक़ तू था | 21 | और गवाही देने वाला |

فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ﴿٢٢﴾ وَقَالَ قَرِيْنُهٗ هٰذَا مَا لَدَىَّ عَتِيْدٌ ﴿٢٣﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 23 | हाज़िर | जो मेरे पास | यह | उस का हम नशीन | और कहेगा | 22 | बड़ी तेज़ | आज | पस तेरी नज़र |

اَلْقِيَا فِىْ جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿٢٤﴾ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيْبِ ﴿٢٥﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 25 | शुबहात डालने वाला | हद से गुज़रने वाला | माल के लिए | मना करने वाला | 24 | सरकश | हर नाशुक्रा | जहन्नम में | तुम दोनों डाल दो |

اِلَّذِىْ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَاَلْقِيٰهُ فِى الْعَذَابِ الشَّدِيْدِ ﴿٢٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 26 | सख़्त | अज़ाब में | पस उसे डाल दो तुम | दूसरा | माबूद | अल्लाह के साथ | ठहराया | वह जिस |

قَالَ قَرِيْنُهٗ رَبَّنَا مَآ اَطْغَيْتُهٗ وَلٰكِنْ كَانَ فِىْ ضَلٰلٍ بَعِيْدٍ ﴿٢٧﴾ قَالَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़रमाएगा | 27 | परले दरजे की | गुमराही में | था | और लेकिन वह | मैं ने उसे सरकश नहीं बनाया | ऐ हमारे रब | उस का हम नशीन | कहेगा |

لَا تَخْتَصِمُوْا لَدَىَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ اِلَيْكُمْ بِالْوَعِيْدِ ﴿٢٨﴾ مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बात | नहीं बदली जाती | 28 | वादा ए अज़ाब | तुम्हारी तरफ़ | और मैं पहले भेज चुका हूँ | मेरे पास सामने | तुम न झगड़ो |

لَدَىَّ وَمَآ اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٢٩﴾ يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَاْتِ ع ٢ ١٦

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या तू भर गई? | जहन्नम से | हम कहेंगे | जिस दिन | 29 | बन्दों पर | ज़ुल्म करने वाला | और नहीं मैं | मेरे पास (हाँ) |

وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ ﴿٣٠﴾ وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ ﴿٣١﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 31 | दूर | न | परहेज़गारों के लिए | जन्नत | और नज़्दीक कर दी जाएगी | 30 | मज़ीद है | से कुछ | क्या | और वह कहेगी |

هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِكُلِّ اَوَّابٍ حَفِيْظٍ ﴿٣٢﴾ مَنْ خَشِىَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बिन देखे | रहमान (अल्लाह) | डरा | जो | 32 | निगहदाश्त करने वाला | हर रुजूअ करने वाले के लिए | यह जो तुम से वादा किया जाता था |

وَجَآءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْبِ ﴿٣٣﴾ اِدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُوْدِ ﴿٣٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 34 | हमेशा रहने का दिन | यह | सलामती के साथ | तुम उस में दाख़िल हो जाओ | 33 | रुजूअ करने वाले दिल के साथ | और आया |

لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ ﴿٣٥﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इन से क़ब्ल | और कितनी हलाक की हम ने | 35 | और भी जियादा | और हमारे पास | उस में | जो वह चाहेंगे | उन के लिए |

مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوْا فِى الْبِلَادِ ؕ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿٣٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 36 | भागने की जगह | से (कहीं) | क्या | पस कुरेदने (छान मारने) लगे शहरों में | पकड़ में | इन से | वह जियादा सख़्त | उम्मतें |

اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह | डाले (लगाए) कान | या | दिल | उस का | हो | उस के लिए जो | नसीहत | इस | में | बेशक |

شَهِيْدٌ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ۖ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| छः (6) दिन में | और जो उन दोनों के दरमियान | और ज़मीन | आस्मानों | हम ने पैदा किया | और तहक़ीक़ | 37 | मुतवज्जेह |

وَمَا مَسَّنَا مِنْ لُّغُوْبٍ ﴿٣٨﴾ فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और पाकीज़गी बयान करो | जो वह कहते हैं | पर | पस सब्र करो तुम | 38 | किसी तकान ने | और नहीं छुआ हमें |

بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوْبِ ﴿٣٩﴾ وَمِنَ الَّيْلِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और रात में | 39 | और गुरूब होने से क़ब्ल | सूरज का तुलूअ़ | क़ब्ल | अपने रब की तारीफ़ के साथ |

فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ ﴿٤٠﴾ وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | पुकारने वाला पुकारेगा | जिस दिन | और सुनो तुम | 40 | सिज्दों (नमाज़) | और बाद | पस उसकी पाकीज़गी बयान करो |

مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ﴿٤١﴾ يَّوْمَ يَسْمَعُوْنَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوْجِ ﴿٤٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 42 | बाहर निकलने का दिन | यह | हक़ के साथ | चीख़ | वह सुनेंगे | जिस दिन | 41 | जगह क़रीब |

اِنَّا نَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَاِلَيْنَا الْمَصِيْرُ ﴿٤٣﴾ يَوْمَ تَشَقَّقُ الْاَرْضُ عَنْهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन से | ज़मीन | जिस दिन शक़ हो जाएगी | 43 | फिर लौट कर आना है | और हमारी तरफ़ | और मारते हैं | ज़िन्दगी देते हैं | बेशक हम |

سِرَاعًا ؕ ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ ﴿٤٤﴾ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह कहते हैं | वह जो | हम ख़ूब जानते हैं | 44 | आसान | हमारे लिए | हश्र | यह | जल्दी करते हुए |

ع ٣ ١٦ ١٤ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۫ فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ ﴿٤٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 45 | मेरी वईद | वह डरता है | जो | क़ुरआन से | पस नसीहत करें | जब्र करने वाले | उन पर | और नहीं आप (स) |

## اٰيَاتُهَا ٦٠ ❀ (٥١) سُوْرَةُ الذّٰرِيٰتِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकूआत 3 — (51) सूरतुज़ ज़ारियात — आयात 60

बिखेरने वालियाँ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ﴿١﴾ فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ﴿٢﴾ فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ﴿٣﴾ فَالْمُقَسِّمٰتِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर तक़सीम करने वाले | 3 | नर्मी से | फिर चलने वाली | 2 | बोझ | फिर उठाने वाली | 1 | उड़ा कर | क़सम है परागन्दा करने वाली (हवाओं) |

اَمْرًا ﴿٤﴾ اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ﴿٥﴾ وَّاِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ ﴿٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | अलबत्ता वाक़े होने वाली | जज़ा ओ सज़ा | और बेशक | 5 | अलबत्ता सच है | तुम्हें वादा दिया जाता है | इस के सिवा नहीं | 4 | हुक्म से |

उस में उन के लिए है जो वह चाहेंगे और हमारे पास और भी जियादा है। (35)

और हम ने इन (अहले मक्का) से क़ब्ल कितनी (ही) हलाक कीं उम्मतें, वह पकड़ (कुव्वत) में इन से जियादा सख़्त थीं, पस उन्हों ने शहरों को छान मारा था, क्या कहीं भागने की जगह पा सके? (36)

बेशक उस में नसीहत (बड़ी इब्रत) है उस के लिए जिस का दिल (बेदार) हो, या कान लगाए, और वह मुतवज्जेह हो। (37)

और तहक़ीक़ हम ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया और जो उन के दरमियान है, छः (6) दिन में, और हमें किसी तकान ने नहीं छुआ। (38)

पस जो वह कहते हैं तुम उस पर सब्र करो, और अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करो, सूरज के तुलूअ़ और गुरूब से क़ब्ल। (39)

और रात में पस उस की पाकीज़गी बयान करो और नमाज़ों के बाद (भी)। (40)

और सुनो, जिस दिन पुकराने वाला क़रीब जगह से पुकारेगा। (41)

जिस दिन वह ठीक ठीक चीख़ सुनेंगे, यह (क़ब्रों से) बाहर निकलने का दिन होगा। (42)

बेशक हम ज़िन्दगी देते हैं और हम ही मारते हैं और हमारी तरफ़ (ही) लौट कर आना है। (43)

जिस दिन ज़मीन शक़ हो जाएगी वह जल्दी करते हुए निकलेंगे, यह हश्र हमारे लिए आसान है। (44)

जो वह कहते हैं हम ख़ूब जानते हैं, और तुम उन पर जब्र करने वाले नहीं, पस आप (स) (उस को) क़ुरआन से नसीहत करें, जो मेरी वईद (वादाए अ़ज़ाब) से डरता है। (45)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क़सम है (ख़ाक) उड़ा कर परागन्दा करने वाली हवाओं की, (1)

फिर (बारिश का) बोझ उठाने वाली हवाओं की, (2)

फिर नर्मी से चलने वाली (कश्तियों) की, (3)

फिर हुक्म से तक़सीम करने वाले (फ़रिश्तों) की, (4)

इस के सिवा नहीं कि तुम्हें वादा जो दिया जाता है अलबत्ता सच है। (5)

और बेशक जज़ा ओ सज़ा अलबत्ता वाक़े होने वाली है। (6)

और क़सम है रास्तों वाले आस्मान की। (7)
बेशक तुम अलबत्ता मुख़्तलिफ़ बात में हो। (8)
उस (कुरआन) से वही फेरा जाता है जो (अल्लाह की तरफ़ से) फेरा जाता है। (9)
अटकल दौड़ाने वाले मारे गए। (10)
जो वह ग़फ़्लत में भूले हुए हैं। (11)
वह पूछते हैं कि जज़ा ओ सज़ा का दिन कब होगा? (12)
(हाँ) उस दिन वह आग पर उलटे सीधे पड़ेंगे। (13)
(अब) तुम अपनी शरारत (का मज़ा) चखो, यह है वह जिस की तुम जल्दी करते थे। (14)
बेशक मुत्तक़ी बाग़ात और चश्मों में होंगे। (15)
लेने वाले जो दिया उन्हें उन का रब, बेशक वह इस से क़ब्ल नेकोकार थे। (16)
वह रात में थोड़ा सोते थे। (17)
और वक़्ते सुबह वह असतग़फ़ार करते (बख़्शिश मांगते) थे। (18)
और उन के मालों में हक़ है सवाली और ग़ैर सवाली (तंगदस्त) के लिए। (19)
और ज़मीन में यक़ीन करने वालों के लिए निशानियां हैं। (20)
और तुम्हारी ज़ात में (भी), तो क्या तुम देखते नहीं? (21)
और आस्मानों में तुम्हारा रिज़्क़ है और जो तुम से वादा किया जाता है। (22)
क़सम है रब की आस्मानों और ज़मीन के, बेशक यह (कुरआन) हक़ है जैसे तुम बोलते हो। (23)
क्या आप (स) के पास ख़बर आई इब्राहीम (अ) के मुअज़्ज़ज़ मेहमानों की? (24)
जब वह उस के पास आए तो उन्हों ने "सलाम" कहा, उस (इब्राहीम अ) ने (भी) सलाम कहा, वह लोग नाशनासा थे। (25)
फिर वह अपने अहले ख़ाना की तरफ़ मुतवज्जेह हुए, फिर एक मोटा ताज़ा बछड़ा (के कबाब) ले आए। (26)
फिर उन के सामने रखा (और) कहाः क्या तुम खाते नहीं? (27)
तो उस (इब्राहीम अ) ने उन से (दिल में) डर महसूस किया, वह बोले कि तुम डरो नहीं, और उन्हों ने उसे एक दाशिमन्द बेटे की बशारत दी। (28)
फिर उस की बीवी आगे आई हैरत से बोलती हुई, उस ने अपने चेहरे पर (हाथ) मारा और बोलीः (मैं) बुढ़िया (और ऊपर से) बांझ। (29)
उन्हों ने कहाः ऐसे ही फ़रमाया है तेरे रब ने, बेशक वह है हिक्मत वाला, जानने वाला। (30)

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ﴿٧﴾ اِنَّكُمْ لَفِىْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ﴿٨﴾ يُّؤْفَكُ عَنْهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से | फेरा जाता है | 8 | मुख़्तलिफ़ | बात | अलबत्ता में | बेशक तुम | 7 | रास्तों वाले | और क़सम है आस्मान की |

مَنْ اُفِكَ ﴿٩﴾ قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ ﴿١٠﴾ الَّذِيْنَ هُمْ فِىْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ ﴿١١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | भूले हुए हैं | ग़फ़्लत में | वह | वह जो | 10 | अटकल दौड़ाने वाले | मारे गए | 9 | जो फेरा जाता है |

يَسْـَٔلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿١٢﴾ يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُوْنَ ﴿١٣﴾ ذُوْقُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम चखो | 13 | उलटे सीधे पड़ेंगे | आग पर | वह | उस दिन | 12 | जज़ा ओ सज़ा का दिन | कब? | वह पूछते हैं |

فِتْنَتَكُمْ ۭ هٰذَا الَّذِىْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿١٤﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِىْ جَنّٰتٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बाग़ात में | मुत्तक़ी (नेक चलन) | बेशक | 14 | जल्दी करते | तुम थे उस की | वह जो | यह | अपनी शरारत |

وَّعُيُوْنٍ ﴿١٥﴾ اٰخِذِيْنَ مَآ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस | क़ब्ल | थे | बेशक वह | उन का रब | जो दिया उन्हें | लेने वाले | 15 | और चश्मे |

مُحْسِنِيْنَ ﴿١٦﴾ كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ ﴿١٧﴾ وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह | और वक़्ते सुबह | 17 | वह सोते | रात से-में | थोड़ा | वह थे | 16 | नेकोकार |

يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿١٨﴾ وَفِىْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ﴿١٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 19 | और तंगदस्त (ग़ैर सवाली) | सवाली के लिए | हक़ | उन के माल (जमा) | और में | 18 | असतग़फ़ार करते |

وَفِى الْاَرْضِ اٰيٰتٌ لِّلْمُوْقِنِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَفِىْٓ اَنْفُسِكُمْ ۭ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٢١﴾ وَفِى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और में | 21 | तो क्या तुम देखते नहीं? | और तुम्हारी ज़ात में | 20 | यक़ीन करने वालों के लिए | निशानियां | और ज़मीन में |

السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿٢٢﴾ فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हक़ है | बेशक यह | और ज़मीन | आस्मानों | क़सम है रब की | 22 | और जो तुम से वादा किया जाता है | तुम्हारा रिज़्क़ | आस्मानों |

مِّثْلَ مَآ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ﴿٢٣﴾ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ — ع ٢٣ ١٨

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इब्राहीम (अ) | मेहमान | बात (ख़बर) | आई तुम्हारे पास | क्या | 23 | बोलते हो | जो तुम | जैसे |

الْمُكْرَمِيْنَ ﴿٢٤﴾ اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ۭ قَالَ سَلٰمٌ ۚ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿٢٥﴾ — وقف لازم

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 25 | नाशनासा | लोग | सलाम | उस ने कहा | सलाम | तो उन्हों ने कहा | उस के पास | वह आए | जब | 24 | इज़्ज़तदार |

فَرَاغَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِيْنٍ ﴿٢٦﴾ فَقَرَّبَهٗٓ اِلَيْهِمْ قَالَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कहा | उन के | फिर वह सामने रखा | 26 | मोटा ताज़ा बछड़ा | पस लाया | अपने अहले ख़ाना की तरफ़ | फिर वह मुतवज्जेह हुआ |

اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ۭ قَالُوْا لَا تَخَفْ ۭ وَبَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक बेटे की | और उन्हों ने बशारत दी | तुम डरो नहीं | वह बोले | कुछ डर | उन से | तो उस ने महसूस किया | 27 | क्या तुम खाते नहीं? |

عَلِيْمٍ ﴿٢٨﴾ فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِىْ صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बुढ़िया | और बोली | अपना चेहरा | उस ने हाथ मारा | हैरत से बोलती हुई | उस की बीवी | फिर आगे आई | 28 | दानिशमन्द |

عَقِيْمٌ ﴿٢٩﴾ قَالُوْا كَذٰلِكِ ۙ قَالَ رَبُّكِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٠﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | जानने वाला | हिक्मत वाला | वह | बेशक | तेरा रब | फ़रमाया | यूँ ही | उन्हों ने कहा | 29 | बांझ |

الجزء ٢٧

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣١﴾ قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक हम भेजे गए हैं | उन्हों ने जवाब दिया | 31 | भेजे हुए (फ़रिश्तो) | ऐ | मक़सद तुम्हारा | तो क्या | उस ने कहा |

اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣٢﴾ لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ طِيْنٍ ﴿٣٣﴾ مُّسَوَّمَةً

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| निशान किए हुए | 33 | पकी हुई मिट्टी से | पत्थर | उन पर | ताकि हम भेजें (बरसाएं) | 32 | मुज्रिम क़ौम (मुज्रिमों की क़ौम) | तरफ़ |

عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣٤﴾ فَاَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيْهَا مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 35 | ईमान वाले | से | उस में | जो था | पस हम ने निकाल लिया | 34 | हद से गुज़र जाने वालों के लिए | तुम्हारे रब के हां |

فَمَا وَجَدْنَا فِيْهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٣٦﴾ وَتَرَكْنَا فِيْهَآ اٰيَةً

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक निशानी | उस में | और हम ने छोड़ दी | 36 | मुसलमानों | से का | एक घर के सिवा | उस में | पस हम ने न पाया |

لِّلَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٣٧﴾ وَفِيْ مُوْسٰٓى اِذْ اَرْسَلْنٰهُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जब हम ने उसे भेजा | और मूसा (अ) में | 37 | दर्दनाक अ़ज़ाब | जो डरते हैं | उन लोगों के लिए |

اِلٰى فِرْعَوْنَ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٨﴾ فَتَوَلّٰى بِرُكْنِهٖ وَقَالَ سٰحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿٣٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 39 | या दीवाना | जादूगर | और कहा | अपनी कुव्वत के साथ | तो उस ने सरताबी की | 38 | रोशन दलील (मोजिज़े) के साथ | फ़िरऔन की तरफ़ |

فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿٤٠﴾ وَفِيْ عَادٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और आद में | 40 | मलामत ज़दा | और वह | दर्या में | फिर हम ने उन्हें फेंक दिया | और उस का लशकर | पस हम ने उसे पकड़ा |

اِذْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيْحَ الْعَقِيْمَ ﴿٤١﴾ مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ اَتَتْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आती | किसी शै को | वह न छोड़ती थी | 41 | नामुबारक आन्धी | उन पर | जब हम ने भेजी |

عَلَيْهِ اِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيْمِ ﴿٤٢﴾ وَفِيْ ثَمُوْدَ اِذْ قِيْلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़ाइदा उठा लो | उन को | जब कहा गया | और समूद में | 42 | गली सड़ी हड्डी की तरह | मगर उसे कर देती | जिस पर |

حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٤٣﴾ فَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बिजली की कड़क | पस उन्हें पकड़ा | अपने रब का हुक्म | से | तो उन्हों ने सरकशी की | 43 | एक मुद्दत तक |

وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿٤٤﴾ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مِنْ قِيَامٍ وَّمَا كَانُوْا مُنْتَصِرِيْنَ ﴿٤٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 45 | खुद अपनी मदद करने वाले | और वह न थे | खड़ा होने की | पस उन में सकत न रही | 44 | देखते थे | और वह |

ع ٢ ٢٣ ١ وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٤٦﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 46 | लोग नाफ़रमान | थे | बेशक वह | उस से क़ब्ल | और नूह (अ) की क़ौम |

وَالسَّمَآءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْىدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَالْاَرْضَ فَرَشْنٰهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने फ़र्श बनाया उसे | और ज़मीन | 47 | वसीउ़ल क़ुदरत हैं | और बेशक हम | हाथ (कुव्वत) से | हम ने उसे बनाया | और आस्मान |

فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि तुम | दो जोड़े (क़िस्म) | हम ने पैदा किए | हर शै | और से | 48 | पस हम कैसा अच्छा बिछाने वाले हैं |

تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٩﴾ فَفِرُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ ؕ اِنِّيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٥٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 50 | वाज़ेह | डर सुनाने वाला | उस से | तुम्हारे लिए | बेशक मैं | अल्लाह की तरफ़ | पस तुम दौड़ो | 49 | नसीहत पकड़ो |

उस (इब्राहीम अ) ने कहा ऐ फ़रिश्तो! तुम्हारा मक़सद क्या है? (31) उन्हों ने जवाब दियाः बेशक हम मुज्रिमों की क़ौम की तरफ़ भेजे गए हैं। (32) ताकि हम उन पर पकी हुई मिट्टी के पत्थर (संगरेज़े) बरसाएं। (33) तुम्हारे रब के हां हद से गुज़र जाने वालों के लिए निशान किए हुए। (34) पस हम ने निकाल लिया (उन्हें) जो उस (शहर) में ईमान वाले थे। (35) पस हम ने उस (शहर) में (लूत अ) के सिवा मुसलमानों का घर न पाया। (36) और हम ने छोड़ दी दर्दनाक अज़ाब से डरने वालों के लिए उस शहर में एक निशानी। (37) और मूसा (अ) में (भी एक निशानी) है, जब हम ने उसे फ़िरऔन की तरफ़ भेजा रोशन मोजिज़े के साथ। (38) तो उस (फ़िरऔन) ने अपनी कुव्वत (अरकाने सलतनत) के साथ सरताबी की और कहा कि यह जादूगर या दीवाना है। (39) पस हम ने उसे और उस के लशकर को पकड़ा, फिर हम ने उन्हें फेंक दिया दर्या में और वह मलामत ज़दा (रह गया)। (40) और (तुम्हारे लिए निशानी है) आद में, जब हम ने उन पर नामुबारक आन्धी भेजी. (41) वह किसी शै को न छोड़ती थी जिस पर वह आती मगर उसे एक गली सड़ी हड्डी की तरह कर देती। (42) और समूद में (भी एक निशानी है) जब उन्हें कहा गया कि एक (थोड़ी) मुद्दत और फ़ाइदा उठा लो। (43) तो उन्हों ने अपने रब के हुक्म से सरकशी की, पस उन्हें बिजली की कड़क ने आ पकड़ा उन के देखते देखते। (44) पस उन में खड़ा होने की सकत न रही और न खुद अपनी मदद कर सकते थे। (45) और नूह (अ) की क़ौम को उस से क़ब्ल (हम ने हलाक किया), बेशक वह नाफ़रमान लोग थे। (46) और हम ने आस्मान को बनाया अपने ज़ोर से और बेशक हम उस की क़ुदरत रखते हैं। (47) और हम ने ज़मीन को (बतौर) फ़र्श बनाया, और हम कैसा अच्छा बिछाने वाले हैं। (48) और हर शै से हम ने दो क़िस्म पैदा कीं ताकि तुम नसीहत पकड़ो। (49) पस तुम अल्लाह की तरफ़ दौड़ो, बेशक मैं तुम्हारे लिए उस (की तरफ़) से वाज़ेह डराने वाला हूँ। (50)

और अल्लाह के साथ किसी दूसरे को माबूद न ठहराओ, मैं बेशक तुम्हारे लिए उस (की तरफ) से वाज़ेह डर सुनाने वाला हूँ। (51)
इसी तरह नहीं आया कोई रसूल (उन के पास) जो इन से पहले थे मगर उन्हों ने (उसे) जादूगर या दीवाना कहा। (52)
क्या उन्हों ने एक दूसरे को उस की वसीयत की है? बल्कि वह सरकश लोग हैं। (53)
पस आप (स) उन से मुँह मोड़ लें तो आप (स) पर कोई इल्ज़ाम नहीं। (54)
और आप (स) समझाएं, बेशक समझाना ईमान लाने वालों को नफ़ा देता है। (55)
और मैं ने पैदा किए जिन्न और इन्सान सिर्फ़ इस लिए कि वह मेरी इबादत (बन्दगी और फ़रमांबरदारी) करें। (56)
मैं उन से कोई रिज़्क़ नहीं मांगता और मैं नहीं चाहता कि वह मुझे खिलाएं। (57)
बेशक अल्लाह ही राज़िक़ है, कुव्वत वाला, निहायत कुदरत वाला। (58)
पस बेशक जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उन के लिए (अज़ाब के) पैमाने हैं, जैसे पैमाने उन के साथियों के लिए थे, पस वह जल्दी न करें। (59)
सो उन लोगों के लिए बरबादी है जिन्हों ने उस दिन का इन्कार किया जिस का उन से वादा किया जाता है। (60)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
क़सम है तूरे सीना की। (1)
और लिखी हुई किताब की, (2)
खुले औराक़ में। (3)
और बैते मअ़मूर (फ़रिश्तों के कअबाए आस्मानी) की। (4)
और बुलन्द छत की। (5)
और जोश मारते दर्या की। (6)
बेशक तेरे रब का अज़ाब ज़रूर वाक़े होने वाला है (7)
उसे कोई टालने वाला नहीं। (8)
जिस दिन थरथराएगा आस्मान (बुरी तरह) थरथरा कर, (9)
और चलेंगे पहाड़ चलने की तरह (उड़े फिरेंगे) (10)
सो उस दिन झुटलाने वालों के लिए बरबादी है। (11)
वह जो मश्ग़ले में (बेहूदगी से) खेलते हैं। (12)
जिस दिन वह जहन्नम की आग की तरफ़ धक्के दे कर धकेले जाएंगे। (13)
यह है वह आग जिस को तुम झुटलाते थे। (14)

وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۭ اِنِّیْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿٥١﴾ كَذٰلِكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इसी तरह | 51 | वाज़ेह डर सुनाने वाला | उस से | तुम्हारे लिए | बेशक मैं | कोई दूसरा माबूद | अल्लाह के साथ | और तुम न ठहराओ |

مَآ اَتَى الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿٥٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 52 | या दीवाना | जादूगर | उन्हों ने कहा | मगर | कोई रसूल | इन से पहले | वह जो | नहीं आया |

اَتَوَاصَوْا بِهٖ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿٥٣﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ﴿٥٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 54 | कोई इल्ज़ाम | तो नहीं आप (स) | पस आप (स) मुँह मोड़ लें उन से | 53 | सरकश | लोग | बल्कि वह | क्या उन्हों ने एक दूसरे को वसीयत की उस की |

وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿٥٥﴾ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और इन्सान | जिन्न | और नहीं पैदा किया मैं ने | 55 | ईमान लाने वाले | नफ़ा देता है | समझाना | तो बेशक | आप (स) समझाएं |

اِلَّا لِیَعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾ مَآ اُرِیْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّمَآ اُرِیْدُ اَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | और मैं नहीं चाहता | कोई रिज़्क़ | उन से | मैं नहीं मांगता | 56 | इस लिए कि वह मेरी इबादत करें | मगर सिर्फ़ |

یُّطْعِمُوْنِ ﴿٥٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِیْنُ ﴿٥٨﴾ فَاِنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस बेशक | 58 | निहायत कुदरत वाला | कुव्वत वाला | राज़िक़ | वह | बेशक अल्लाह | 57 | वह मुझे खिलाएं |

لِلَّذِیْنَ ظَلَمُوْا ذَنُوْبًا مِّثْلَ ذَنُوْبِ اَصْحٰبِهِمْ فَلَا یَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿٥٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 59 | पस वह जल्दी न करें | उन के साथी | पैमाने | जैसे | डोल (पैमाने) | उन लोगों के लिए जिन्हों ने ज़ुल्म किया |

فَوَیْلٌ لِّلَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ یَّوْمِهِمُ الَّذِیْ یُوْعَدُوْنَ ﴿٦٠﴾ ع ١٤ ٣ ٢

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 60 | उन से वादा किया जाता है | वह जिस | उन का दिन | से-का | उन लोगों के लिए जिन्हों ने इन्कार किया | सो बरबादी |

آيَاتُهَا ٤٩ ❀ (٥٢) سُوْرَةُ الطُّوْرِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकुआत 2 — (52) सूरतुत तूर पहाड़ — आयात 49

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالطُّوْرِ ﴿١﴾ وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ﴿٢﴾ فِیْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ﴿٣﴾ وَّالْبَیْتِ الْمَعْمُوْرِ ﴿٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | और बैते मअ़मूर | 3 | खुले | औराक़ में | 2 | लिखी हुई | और किताब | 1 | क़सम तूरे (सीना) |

وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ ﴿٥﴾ وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ ﴿٦﴾ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ﴿٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | ज़रूर वाक़े होने वाला | तेरे रब का अज़ाब | बेशक | 6 | और दर्या जोश मारता | 5 | बुलन्द | और छत |

مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ﴿٨﴾ یَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا ﴿٩﴾ وَّتَسِیْرُ الْجِبَالُ سَیْرًا ﴿١٠﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | चलने की तरह | पहाड़ | और चलेंगे | 9 | थरथरा कर | आस्मान | जिस दिन थरथराएगा | 8 | कोई टालने वाला | नहीं उस को |

فَوَیْلٌ یَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِیْنَ ﴿١١﴾ الَّذِیْنَ هُمْ فِیْ خَوْضٍ یَّلْعَبُوْنَ ﴿١٢﴾ یَوْمَ — وقف لازم

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिस दिन | 12 | खेलते हैं | मश्ग़ले में | वह | वह जो | 11 | झुटलाने वालों के लिए | उस दिन | सो बरबादी |

یُدَعُّوْنَ اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ﴿١٣﴾ هٰذِهِ النَّارُ الَّتِیْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٤﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 14 | झुटलाते | उस को | तुम थे | वह आग जो | यह है | 13 | धक्के दे कर | जहन्नम की आग | तरफ़ | वह धकेले जाएंगे |

اَفَسِحْرٌ هٰذَآ اَمْ اَنْتُمْ لَا تُبْصِرُوْنَ ﴿١٥﴾ اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْٓا اَوْ لَا تَصْبِرُوْا ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| न सब्र करो | या | फिर तुम सब्र करो | उस में दाख़िल हो जाओ | 15 | दिखाई नहीं देता तुम्हें | या तुम | यह | तो क्या जादू |

سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ ۗ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बेशक मुत्तक़ी (जमा) | 16 | जो तुम करते थे | सो इस के सिवा नहीं कि तुम्हें बदला दिया जाएगा | तुम पर | बराबर |

فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَعِيْمٍ ﴿١٧﴾ فٰكِهِيْنَ بِمَآ اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ ۚ وَوَقٰهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और बचाया उन्हें | उन के रब ने | उस के साथ जो दिया उन्हें | ख़ुश होंगे | 17 | और नेमतों | बाग़ों में |

رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿١٨﴾ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 19 | जो तुम करते थे | उस के बदले में | रचते पचते | और तुम पियो | तुम खाओ | 18 | दोज़ख़ | अ़ज़ाब | उन के रब ने |

مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى سُرُرٍ مَّصْفُوْفَةٍ ۚ وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ﴿٢٠﴾ وَالَّذِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो लोग | 20 | बड़ी आँखों वाली हूरें | और उन की ज़ौजियत में दिया हम ने | सफ़ बस्ता | तख़्तों पर | तकिया लगाए हुए |

اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِاِيْمَانٍ اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और | उन की औलाद | उन के साथ | हम ने मिला दिया | ईमान के साथ | उन की औलाद | और उन्हों ने पैरवी की | ईमान लाए |

اَلَتْنٰهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ۗ كُلُّ امْرِئٍۢ بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ ﴿٢١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 21 | रहन | उस ने कमाया (आमाल) | उस में जो | हर आदमी | कोई चीज़ (कुछ) | उन के अ़मल से | कमी नहीं की हम ने |

وَاَمْدَدْنٰهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَّلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٢٢﴾ يَتَنَازَعُوْنَ فِيْهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | लपक लपक कर ले रहे होंगे | 22 | जो उन का जी चाहेगा | उस से | और गोश्त | फलों के साथ | और हम उन की मदद करेंगे |

كَاْسًا لَّا لَغْوٌ فِيْهَا وَلَا تَاْثِيْمٌ ﴿٢٣﴾ وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | ख़िद्मतगार लड़के | उन पर के | और इर्द गिर्द फिरेंगे | 23 | और न गुनाह की बात | उस में | न बकवास | प्याला |

كَاَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿٢٤﴾ وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बाज़ पर (दूसरे की तरफ़) | उन में से बाज़ (एक) | और मुतवज्जह होगा | 24 | छुपा कर रखे हुए | मोती | गोया वह |

يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٢٥﴾ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِيْٓ اَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ ﴿٢٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 26 | डरते थे | अपने अहले ख़ाना में | पहले | बेशक हम थे | वह कहेंगे | 25 | आपस में पूछते हुए |

فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَوَقٰنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ ﴿٢٧﴾ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस से क़ब्ल | बेशक हम थे | 27 | गर्म हवा (लू) | अ़ज़ाब | और हमें बचा लिया | हम पर | तो एहसान किया अल्लाह ने |

١ ع٢٨ ٢ نَدْعُوْهُ ۗ اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيْمُ ﴿٢٨﴾ فَذَكِّرْ فَمَآ اَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना रब | फ़ज़्ल से | तो आप (स) नहीं | पस आप (स) नसीहत करें | 28 | रह्म करने वाला | एहसान करने वाला | वही | बेशक वह | हम उस को पुकारते |

بِكَاهِنٍ وَّلَا مَجْنُوْنٍ ﴿٢٩﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهٖ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के साथ | हम मुन्तज़िर है | शायर | वह कहते हैं | क्या | 29 | दीवाना | और न | काहिन |

رَيْبَ الْمَنُوْنِ ﴿٣٠﴾ قُلْ تَرَبَّصُوْا فَاِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُتَرَبِّصِيْنَ ﴿٣١﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 31 | इन्तिज़ार करने वाले | से | तुम्हारे साथ | बेशक मैं | तुम इन्तिज़ार करो | फ़रमा दें | 30 | ज़माना | हवादिस |

तो क्या यह जादू है? या तुम को दिखाई नहीं देता? (15)
उस में दाख़िल हो जाओ, फिर तुम सब्र करो या न सब्र करो, तुम्हारे लिए बराबर है, इस के सिवा नहीं कि जो तुम करते थे तुम्हें (उस का) बदला दिया जाएगा। (16)
बेशक मुत्तक़ी (बहिश्त के) बाग़ों और नेमतों में होंगे। (17)
उस के साथ ख़ुश होंगे जो उन के रब ने उन्हें दिया, और उन के रब ने उन्हें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा लिया। (18)
तुम खाओ और पियो मज़े से (जी भर कर) उस के बदले में जो तुम करते थे। (19)
तख़्तों पर सफ़ बस्ता तकिये लगाए हुए। और हम उन की शादी कर देंगे बड़ी आँखों वाली हूरों से। (20)
और जो लोग ईमान लाए और उन की औलाद ने ईमान के साथ उन की पैरवी की, हम ने उन की औलाद को उन के साथ मिला दिया और हम ने उन के अ़मल से कुछ कमी नहीं की, हर आदमी अपने आमाल में रहन है। (21)
और हम उन की मदद करेंगे फलों और गोश्त से, जो उन का जी चाहेगा। (22)
वह एक दोसरे से प्याले लपक लपक कर ले रहे होंगे जिस में न बकवास होगी न गुनाह की बात। (23)
और उन के इर्द गिर्द फिरेंगे ख़िद्मतगार लड़के। गोया वह छुपा कर रखे हुए मोती हैं। (24)
और उन में से एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जेह होगा आपस में पूछते हुए। (25)
वह कहेंगे बेशक हम इस से पहले अहले ख़ाना में डरते थे (26)
तो अल्लाह ने हम पर एहसान किया और हमें बचा लिया लू के अज़ाब से। (27)
बेशक इस से क़ब्ल हम उस को पुकारते थे, बेशक वही एहसान करने वाला, रह्म करने वाला है। (28)
पस आप (स) नसीहत करते रहें, पस आप (स) अपने रब के फ़ज़्ल से न काहिन हैं न दीवाने। (29)
क्या वह कहते हैं कि यह शायर है, हम उस के साथ हवादिसे ज़माने के मुन्तज़िर हैं। (30)
आप (स) फ़रमा दें तुम इन्तिज़ार करो, बेशक मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों में से हूँ। (31)

क्या उन की अ़क़्लें उन्हें यही सिखाती हैं? या वह सरकश लोग हैं। (32)
क्या वह कहते हैं कि उस ने उसे (कुरआन) को घड़ लिया है (नहीं) बल्कि वह ईमान नहीं लाते। (33)
तो चाहिए कि वह उस जैसी एक बात ले आएं अगर वह सच्चे हैं। (34)
क्या वह पैदा किए गए हैं बग़ैर किसी शै (बनाने वाले) के, या वह (खुद) पैदा करने वाले हैं। (35)
क्या उन्हों ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को? (नहीं) बल्कि वह यक़ीन नहीं रखते। (36)
क्या उन के पास तेरे रब (की रहमत) के ख़ज़ाने हैं? या वह दारोग़े हैं? (37)
क्या उन के पास कोई सीढ़ी है? जिस पर (चढ़ कर) वह सुनते हैं, तो चाहिए कि उन का सुनने वाला कोई खुली सनद लाए। (38)
क्या उस के बेटियां और तुम्हारे लिए बेटे? (39)
क्या आप (स) उन से मांगते हैं कोई अजर? कि वह तावान (के बोझ) से दबे जाते हैं। (40)
क्या उन के पास (इल्मे) ग़ैब है? कि वह लिख लेते हैं। (41)
क्या वह इरादा रखते हैं किसी दाओ का? तो जिन लोगों ने कुफ़्र किया वही दाओ में गिरफ़्तार होंगे। (42)
क्या उन के लिए अल्लाह के सिवा कोई माबूद है? अल्लाह उस से पाक है जो वह शिर्क करते हैं। (43)
और अगर वह आस्मान से कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें तो वह कहते हैं: बादल जमा हुआ एक के ऊपर एक। (44)
पस तुम उन को छोड़ दो यहां तक कि वह मिलें (देख लें) अपना वह दिन जिस में वह बेहोश कर दिए जाएंगे। (45)
जिस दिन उन का दाओ कुछ भी उन के काम न आएगा और न उन की मदद की जाएगी। (46)
और बेशक जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उन के लिए उस के अ़लावा अ़ज़ाब है। लेकिन उन में अक्सर नहीं जानते। (47)
और आप (स) अपने रब के हुक्म पर सब्र करें, बेशक आप (स) हमारी हिफ़ाज़त में हैं और आप (स) अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करें जिस वक़्त आप (स) उठें। (48)
और रात में (भी), पस उस की पाकीज़गी बयान करें और सितारों के पीठ फेरते (ग़ाइब होते) वक़्त (भी)। (49)

اَمْ تَاْمُرُهُمْ اَحْلَامُهُمْ بِهٰذَآ اَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿٣٢﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ تَقَوَّلَهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस ने उसे घड़ लिया है | क्या वह कहते हैं? | 32 | सरकश लोग | या वह | यही | उन की अक़्लें | क्या हुक्म देती (सिखाती) हैं उन्हें |

بَلْ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾ فَلْيَاْتُوْا بِحَدِيْثٍ مِّثْلِهٖٓ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ﴿٣٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 34 | सच्चे | अगर वह हैं | इस जैसी | एक बात | तो चाहिए कि वह ले आएं | 33 | वह ईमान नहीं लाते | बल्कि |

اَمْ خُلِقُوْا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ اَمْ هُمُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿٣٥﴾ اَمْ خَلَقُوا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या उन्हों ने पैदा किए? | 35 | पैदा करने वाले | या वह | बग़ैर किसी शै | से | क्या वह पैदा किए गए हैं |

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ بَلْ لَّا يُوْقِنُوْنَ ﴿٣٦﴾ اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَبِّكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तेरा रब | ख़ज़ाने | क्या उन के पास | 36 | वह यक़ीन नहीं रखते | बल्कि | और ज़मीन | आस्मान (जमा) |

اَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ اَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَّسْتَمِعُوْنَ فِيْهِ ۚ فَلْيَاْتِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो चाहिए कि लाए | उस में-पर | वह सुनते हैं | कोई सीढ़ी | क्या उन के लिए-पास | 37 | दारोग़े | या वह |

مُسْتَمِعُهُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٨﴾ اَمْ لَهُ الْبَنٰتُ وَلَكُمُ الْبَنُوْنَ ﴿٣٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 39 | बेटे | और तुम्हारे लिए | बेटियां | क्या उस के लिए | 38 | खुली | कोई सनद | उन का सुनने वाला |

اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ﴿٤٠﴾ اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग़ैब | क्या उन के पास | 40 | दबे जाते हैं | तावान से | तो वह | कोई अजर | क्या तुम उन से मांगते हो |

فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿٤١﴾ اَمْ يُرِيْدُوْنَ كَيْدًا ۚ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا هُمُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वही | तो जिन लोगों ने कुफ़्र किया | किसी दाओ | क्या वह इरादा रखते हैं | 41 | पस वह लिख लेते हैं |

الْمَكِيْدُوْنَ ﴿٤٢﴾ اَمْ لَهُمْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ ۚ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 43 | उस से जो शिर्क करते हैं | पाक है अल्लाह | अल्लाह के सिवा | कोई माबूद | क्या उन के लिए | 42 | दाओ में गिरफ़्तार होंगे |

وَاِنْ يَّرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَآءِ سَاقِطًا يَّقُوْلُوْا سَحَابٌ مَّرْكُوْمٌ ﴿٤٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 44 | तह ब तह (जमा हुआ) | बादल | वह कहते हैं | गिरता हुआ | आस्मान से | कोई टुकड़ा | वह देखें | और अगर |

فَذَرْهُمْ حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ فِيْهِ يُصْعَقُوْنَ ﴿٤٥﴾ يَوْمَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिस दिन | 45 | बेहोश कर दिए जाएंगे | उस में | वह जो | अपना दिन | वह मिलें | यहां तक कि | पस छोड़ दो उन को |

لَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَاِنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बेशक | 46 | मदद किए जाएंगे | और न वह | कुछ भी | उन का दाओ | उन से-का | न काम आएगा |

لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا عَذَابًا دُوْنَ ذٰلِكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 47 | नहीं जानते | उन में से अक्सर | और लेकिन | वरे-अ़लावा उस | अ़ज़ाब | उन लोगों के लिए जिन्हों ने ज़ुल्म किया |

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَاِنَّكَ بِاَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और आप (स) पाकीज़गी बयान करें अपने रब की तारीफ़ के साथ | हमारी आँखों (हिफ़ाज़त) में | बेशक आप (स) | अपने रब के हुक्म पर | और आप (स) सब्र करें |

حِيْنَ تَقُوْمُ ﴿٤٨﴾ وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاِدْبَارَ النُّجُوْمِ ﴿٤٩﴾ ع ٢ ٢١ ٢

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 49 | सितारों | और पीठ फेरते | पस उस की पाकीज़गी बयान करें | रात | और से (में) | 48 | आप (स) उठें | जिस वक़्त |

## آيَاتُهَا ٦٢ ❀ (٥٣) سُوْرَةُ النَّجْمِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

| रुकुआत 3 | (53) सूरतुन नज्म<br>सितारा | आयात 62 |
|---|---|---|

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالنَّجْمِ اِذَا هَــوٰى ﴿١﴾ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَـا غَوٰى ﴿٢﴾ وَمَا يَنْطِقُ عَنِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | और वह नहीं बात करते | 2 | वह भटके | और न | तुम्हारे रफ़ीक़ | न बहके | 1 | वह ग़ाइब होने लगे | जब | सितारे की क़सम |

الْهَوٰى ﴿٣﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ﴿٤﴾ عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ﴿٥﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | सख़्त कुव्वतों वाला | उस ने उसे सिखाया | 4 | भेजी जाती है | वहि | वह सिर्फ़ | नहीं | 3 | ख़ाहिश |

ذُوْ مِرَّةٍ فَاسْتَوٰى ﴿٦﴾ وَهُوَ بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى ﴿٧﴾ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ﴿٨﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | फिर और नज़्दीक हुआ | फिर वह नज़्दीक हुआ | 7 | सब से बुलन्द | किनारे पर | और वह | 6 | फिर सामने आया | ताक़तों वाला |

فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ﴿٩﴾ فَاَوْحٰى اِلٰى عَبْدِهٖ مَآ اَوْحٰى ﴿١٠﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | जो उस ने वहि की | अपना बन्दा | तरफ़ | तो उस ने वहि की | 9 | या उस से कम | दो किनारे | कमान | तो वह था (रह गई) |

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ﴿١١﴾ اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى ﴿١٢﴾ وَلَقَدْ رَاٰهُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तहक़ीक़ उस ने देखा उसे | 12 | जो उस ने देखा | पर | तो क्या तुम झगड़ते हो उस से | 11 | जो उस ने देखा | दिल | न झूट कहा |

نَزْلَةً اُخْرٰى ﴿١٣﴾ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ﴿١٤﴾ عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ﴿١٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15 | जन्नतुल मावा | उस के नज़्दीक | 14 | सिदरतुल मुन्तहा | नज़्दीक | 13 | दूसरी मरतबा |

اِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ﴿١٦﴾ مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى ﴿١٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 17 | और न हद से बढ़ी | आँख | न कजी की | 16 | जो छा रहा था | सिदरह | जब छा रहा था |

لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى ﴿١٨﴾ اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى ﴿١٩﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 19 | और उज़्ज़ा | लात | तो क्या तुम ने देखा? | 18 | बड़ी | अपना रब | निशानियां | से | तहक़ीक़ उस ने देखी |

وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْاُخْرٰى ﴿٢٠﴾ اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى ﴿٢١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 21 | औरतें | और उस के लिए | मर्द | क्या तुम्हारे लिए | 20 | तीसरी एक और | और मनात |

تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى ﴿٢٢﴾ اِنْ هِيَ اِلَّآ اَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम | तुम ने वह नाम रख लिए हैं | मगर-सिर्फ़ नाम | यह | नहीं | 22 | बेढंगी | यह बांट तक़्सीम | यह |

وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह नहीं पैरवी करते | सनद | कोई | उस की | नहीं उतारी अल्लाह ने | और तुम्हारे बाप दादा |

اِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْاَنْفُسُ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنْ رَّبِّهِمُ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| उन के रब से | और (हालांकि) पहुँच चुकी उन के पास | नफ़्स (जमा) | और जो ख़ाहिश | मगर-सिर्फ़ गुमान |

ع ٢٥ ١ ٥ الْهُدٰى ﴿٢٣﴾ اَمْ لِلْاِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى ﴿٢٤﴾ فَلِلّٰهِ الْاٰخِرَةُ وَالْاُوْلٰى ﴿٢٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 25 | और दुनिया | पस अल्लाह ही के लिए आख़िरत | 24 | जिस की वह तमन्ना करे | इन्सान के लिए | क्या | 23 | हिदायत |

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

सितारे की क़सम! जब वह ग़ाइब होने लगे। (1)

तुम्हारे रफ़ीक़ (मुहम्मद स) न बहके और न वह भटके। (2)

और वह अपनी ख़ाहिश से बात नहीं करते। (3)

वह सिर्फ़ वहि है जो भेजी जाती है। (4)

उस को सिखाया उस सख़्त कुव्वत वाले, ताक़तों वाले (फ़रिश्ते) ने। (5)

फिर उस ने क़स्द किया (रसूल स के सामने आया)। (6)

और वह बुलन्द किनारे पर था। (7)

फिर वह नज़्दीक हुआ, फिर और नज़्दीक हुआ। (8)

तो वह कमान के दो किनारों के (फ़ासिले के) बराबर रह गया या उस से भी कम। (9)

तो उस ने वहि की अपने बन्दे की तरफ़ जो वहि की। (10)

जो उस ने (आँखों से) देखा (उस के) दिल ने तस्दीक़ की। (11)

क्या जो उस ने देखा तुम उस से उस पर झगड़ते हो? (12)

और तहक़ीक़ उस ने उसे दूसरी मरतबा देखा। (13)

सिदरतुल मुन्तहा के नज़्दीक। (14)

उस के नज़्दीक जन्नतुल मावा (आरामगाहे बहिश्त) है। (15)

जब सिदरह पर छा रहा था जो छा रहा था। (16)

आँख ने न कजी की और न वह हद से बढ़ी। (17)

तहक़ीक़ उस ने अपने रब की बड़ी निशानियां देखीं। (18)

क्या तुम ने देखा है लात और उज़्ज़ा, (19)

और तीसरी एक और मनात को? (20)

क्या तुम्हारे लिए मर्द (बेटे) हैं और उस के लिए औरतें (बेटियां)? (21)

यह बांट तक़्सीम बेढंगी है। (22)

यह (कुछ) नहीं सिर्फ़ नाम हैं जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं, अल्लाह ने नहीं उतारी उस की कोई सनद, वह नहीं पैरवी करते मगर सिर्फ़ गुमान और ख़ाहिशे नफ़्स की, हालांकि उन के रब की तरफ़ से उन के पास हिदायत पहुँच चुकी है। (23)

क्या इन्सान के लिए वह जो तमन्ना करे? (24)

पस अल्लाह ही के लिए आख़िरत और दुनिया। (25)

وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِى السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِىْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا اِلَّا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर | कुछ | उन की सिफ़ारिश | नफ़ा नही देती | आस्मानों में | फ़रिश्तों से | और कितने |

مِنْۢ بَعْدِ اَنْ يَّاْذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى ﴿٢٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान नहीं रखते | जो लोग | बेशक | 26 | और वह पसंद फ़रमाए | जिस के लिए चाहे वह | इजाज़त दे अल्लाह | कि | उस के बाद |

بِالْاٰخِرَةِ لَيُسَمُّوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ الْاُنْثٰى ﴿٢٧﴾ وَمَا لَهُمْ بِهٖ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस का | और नही उन्हें | 27 | औरतों जैसा | नाम | फ़रिश्तों | अलबत्ता वह रखते हैं नाम | आख़िरत पर |

مِنْ عِلْمٍ ۗ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ ۚ وَاِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِىْ مِنَ الْحَقِّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| यक़ीन से-मुक़ाबला | नफ़ा नहीं देता | और बेशक गुमान | मगर-सिर्फ़ गुमान | वह पैरवी करते | नहीं | कोई इल्म |

شَيْـًٔا ﴿٢٨﴾ فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ۙ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सिवाए | और वह न चाहता हो | हमारी याद से | रूगर्दां हुआ | जो | से | पस मुँह फेर लें | 28 | कुछ |

الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ۗ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह खूब जानता है | तेरा रब | बेशक | इल्म की | उन की रसाई | यह | 29 | दुनिया की ज़िन्दगी |

بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ﴿٣٠﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِى

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | और अल्लाह के लिए जो | 30 | हिदायत पाई | उसे-जिस | खूब जानता है | और वह | उस के रास्ते से | गुमराह हुआ | उसे जो |

السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۙ لِيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوْا بِمَا عَمِلُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की जो उन्हों ने किए (आमाल) | बुराई की | उन्हें जिन्हों ने | ताकि वह बदला दे | ज़मीन में | और जो | आस्मानों |

وَيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ﴿٣١﴾ اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कबीरा (बड़े) गुनाहों से | वह बचते हैं | जो लोग | 31 | भलाई के साथ | नेकी की | उन लोगों को जिन्हों ने | और जज़ा दे |

وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ۗ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ۗ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब | तुम्हें | और खूब जानता है वह | वसीअ़ मग़्फ़िरत वाला | तुम्हारा रब | बेशक | छोटे गुनाह | मगर-सिवाए | और बेहयाइयों |

اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَاِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ فِىْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ فَلَا تُزَكُّوْٓا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस पाकीज़ा न समझो | अपनी माँएं | पेट (जमा) | में | बच्चे | तुम | और जब | ज़मीन से | उस ने पैदा किया तुम्हें |

اَنْفُسَكُمْ ۗ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ﴿٣٢﴾ اَفَرَءَيْتَ الَّذِىْ تَوَلّٰى ﴿٣٣﴾ وَاَعْطٰى ٢ ع ٦

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उस ने दिया | 33 | जिस ने रूगर्दानी की | तो क्या तू ने देखा | 32 | परहेज़गारी की | उसे जो-जिस | वह खूब जानता है | अपने आप |

قَلِيْلًا وَّاَكْدٰى ﴿٣٤﴾ اَعِنْدَهٗ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرٰى ﴿٣٥﴾ اَمْ لَمْ يُنَبَّاْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह खबर नहीं दिया गया | क्या | 35 | तो वह देख रहा है | इल्मे ग़ैब | क्या उस के पास | 34 | और उस ने बन्द कर दिया | थोड़ा सा |

بِمَا فِىْ صُحُفِ مُوْسٰى ﴿٣٦﴾ وَاِبْرٰهِيْمَ الَّذِىْ وَفّٰٓى ﴿٣٧﴾ اَلَّا تَزِرُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि नहीं उठाता | 37 | वफ़ा किया | वह जो-जिस | और इब्राहीम (अ) | 36 | मूसा (अ) | सहीफ़े | में | वह जो |

وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ﴿٣٨﴾ وَاَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى ﴿٣٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 39 | जो उस ने कोशिश की | मगर | किसी इन्सान के लिए | नहीं | और यह कि | 38 | किसी दूसरे का बोझ | कोई बोझ उठाने वाला |

और आस्मानों में कितने ही फ़रिश्ते हैं जिन की सिफ़ारिश कुछ भी नफ़ा नहीं देती मगर उस के बाद कि इजाज़त दे अल्लाह जिस के लिए चाहे और पसंद फ़रमाए। (26)
बेशक जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते वह अलबत्ता फ़रिश्तों के नाम औरतों जैसे रखते हैं। (27)
और उन्हें उस का कोई इल्म नही, वह सिर्फ़ गुमान की पैरवी करते हैं, और गुमान यक़ीन के मुक़ाबले में कुछ नफ़ा नहीं देता। (28)
पस आप (स) उस से मुँह फेर लें जो हमारी याद से रूगर्दां हुआ, और वह न चाहता हो सिवाए दुनिया की ज़िन्दगी। (29)
यह उन के इल्म की रसाई (हद) है, बेशक तेरा रब उसे खूब जानता है जो उस के रास्ते से गुमराह हुआ और वह उसे खूब जानता है जिस ने हिदायत पाई। (30)
और अल्लाह ही के लिए है जो कुछ आस्मानों और जो ज़मीन में है ताकि जिन लोगों ने बुराई की उन्हें उन के आमाल का बदला दे, और उन्हें जजा दे जिन लोगों ने भलाई के साथ नेकी की। (31)
जो छोटे गुनाहों के सिवा बड़े गुनाहों और बेहयाइयों से बचते हैं, बेशक तुम्हारा रब वसीअ़ मग़्फ़िरत वाला है, वह तुम्हें खूब जानता है जब उस ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया और जब तुम अपनी माँओं के पेटों में बच्चे थे, पस तुम अपने आप को पाकीज़ा न समझो, वह उसे खूब जानता है जिस ने परहेज़गारी की। (32)
तो क्या तू ने देखा उस को जिस ने रूगर्दानी की। (33)
और थोड़ा (माल) दिया और (फिर) बन्द कर दिया। (34)
क्या उस के पास इल्मे ग़ैब है? तो वह देख रहा है। (35)
क्या वह खबर नहीं दिया गया (क्या उसे ख़बर नही) जो मूसा (अ) के सहीफ़ों में है। (36)
और इब्राहीम (अ) जिस ने (अपना क़ौल) पूरा किया। (37)
कोई बोझ उठाने वाला नहीं उठाता किसी दूसरे का बोझ। (38)
और यह कि किसी इन्सान के लिए नहीं (किसी को नहीं मिलता) मगर उसी क़द्र जितनी उस ने कोशिश की, (39)

وَاَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ يُرٰى ﴿٤٠﴾ ثُمَّ يُجْزٰىهُ الْجَزَآءَ الْاَوْفٰى ﴿٤١﴾ وَاَنَّ اِلٰى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और यह कि तरफ़ | 41 | बदला पूरा पूरा | उसे बदला दिया जाएगा | फिर | 40 | अनक़रीब देखी जाएगी | उस की कोशिश | और यह कि |

رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ﴿٤٢﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ اَضْحَكَ وَاَبْكٰى ﴿٤٣﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ اَمَاتَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वही मारता है | और बेशक वह | 43 | और वह रुलाता है | वही हंसाता है | और बेशक | 42 | इन्तिहा | तुम्हारा रब |

وَاَحْيَا ﴿٤٤﴾ وَاَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ﴿٤٥﴾ مِنْ نُّطْفَةٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नुत्फ़े से | 45 | और औरत | मर्द | जोड़े | उस ने पैदा किए | और बेशक वह | 44 | और जिलाता है |

اِذَا تُمْنٰى ﴿٤٦﴾ وَاَنَّ عَلَيْهِ النَّشْاَةَ الْاُخْرٰى ﴿٤٧﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ اَغْنٰى

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने ग़नी किया | वही | और बेशक वह | 47 | दोबारा | (जी) उठाना | उसी पर | और यह कि | 46 | जब वह डाला जाता |

وَاَقْنٰى ﴿٤٨﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ رَبُّ الشِّعْرٰى ﴿٤٩﴾ وَاَنَّهٗۤ اَهْلَكَ عَادَا الْاُوْلٰى ﴿٥٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 50 | आद पहली (क़दीम) | उस ने हलाक किया | और बेशक वह | 49 | शिअ़रा (सितारे) का रब | और बेशक वही | 48 | और सरमायादार किया |

وَثَمُوْدَاۡ فَمَاۤ اَبْقٰى ﴿٥١﴾ وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا هُمْ اَظْلَمَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बड़े ज़ालिम | वह | वह थे | बेशक वह | उन से क़ब्ल | और क़ौमे नूह (अ) | 51 | पस उस ने बाक़ी न छोड़ा | और समूद |

وَاَطْغٰى ﴿٥٢﴾ وَالْمُؤْتَفِكَةَ اَهْوٰى ﴿٥٣﴾ فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰى ﴿٥٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नेमत | पस किस | 54 | जिस ने ढांप लिया | जो उस को ढांप लिया | 53 | दे मारा | और उलटन वाली बस्तियां | 52 | और बहुत सरकश |

رَبِّكَ تَتَمَارٰى ﴿٥٥﴾ هٰذَا نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى ﴿٥٦﴾ اَزِفَتِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क़रीब आ गई | 56 | पहले डराने वाले | से | एक डराने वाला | यह | 55 | तू शक करेगा | अपना रब |

الْاٰزِفَةُ ﴿٥٧﴾ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ كَاشِفَةٌ ﴿٥٨﴾ اَفَمِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो क्या से | 58 | कोई खोलने वाला | अल्लाह के सिवा | उस के लिए उस का | नहीं | 57 | क़रीब आने वाली |

هٰذَا الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَتَضْحَكُوْنَ وَلَا تَبْكُوْنَ ﴿٦٠﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 60 | और तुम नहीं रोते | और तुम हंसते हो | 59 | तुम तअ़ज्जुब करते हो | इस बात |

وَاَنْتُمْ سٰمِدُوْنَ ﴿٦١﴾ فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا ﴿٦٢﴾ — السجدة ١٣ / ركوع ٣

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 62 | अल्लाह के आगे और उस की इबादत करो | पस तुम सिज्दा करो | 61 | ग़फ़लत करते (ग़ाफ़िल) हो | और तुम |

## اٰيَاتُهَا ٥٥ ۞ (٥٤) سُوْرَةُ الْقَمَرِ ۞ رُكُوْعَاتُهَا ٣

| | | |
|---|---|---|
| रुकूआत 3 | (54) सूरतुल क़मर चाँद | आयात 55 |

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ﴿١﴾ وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह कहते हैं | वह मुंह फेर लेते हैं | कोई निशानी | और अगर वह देखते हैं | 1 | चाँद | और शक़ हो गया | क़ियामत | क़रीब आ गई |

سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ﴿٢﴾ وَكَذَّبُوْا وَاتَّبَعُوْۤا اَهْوَآءَهُمْ وَكُلُّ اَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | वक़्त मुक़र्रर | और हर काम | अपनी ख़्वाहिशात | और पैरवी की | और उन्हों ने झुटलाया | 2 | (हमेशा) से होता चला आया | जादू |

और अगर यह कि उस की कोशिश अनक़रीब देखी जाएगी। (40) फिर उसे पूरा पूरा बदला दिया जाएगा। (41) और यह कि तुम्हारे रब (ही) की तरफ़ इन्तिहा है। (42) और बेशक वही हंसाता और रुलाता है। (43) और बेशक वही मारता और जिलाता है। (44) और बेशक वही जिस ने मर्द और औरत के जोड़े पैदा किए। (45) नुत्फ़े से, जब वह (रहम में) डाला जाता है, (46) और यह कि उसी पर (उसी के ज़िम्मे है) दोबारा जी उठाना। (47) और बेशक वही उस ने ग़नी किया और सरमायादार किया। (48) और बेशक वही शिअ़रा सितारे का रब है। (49) और बेशक उस ने क़दीम आ़द को हलाक किया, (50) और समूद को, पस उस ने बाक़ी न छोड़ा। (51) और क़ौमे नूह (अ) को उस से क़ब्ल, बेशक वह बड़े ज़ालिम और बहुत सरकश थे। (52) और (क़ौमे लूत अ की) उलटने वाली बस्तियों को दे मारा। (53) तो उस को ढांप लिया जिस ने ढांप लिया। (54) पस तू अपने रब की किस किस नेमत में शक करेगा! (55) यह पहले डराने वालों में से एक डराने वाला। (56) क़रीब आने वाली (क़ियामत) क़रीब आ गई। (57) अल्लाह के सिवा उस का कोई खोलने वाला नहीं। (58) तो क्या तुम उस बात से तअ़ज्जुब करते हो? (59) और तुम हंसते हो और तुम रोते नहीं! (60) और गा बजा कर टालते हो। (61) पस तुम अल्लाह के आगे सिज्दा करो और तुम उस की इबादत करो। (62)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क़ियामत क़रीब आ गई और चाँद शक़ हो गया (1) और अगर वह कोई निशानी देखते हैं तो मुँह फेर लेते हैं और कहते हैं कि (यह) हमेशा से होता चला आया जादू है। (2) और उन्हों ने झुटलाया और अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी की, और हर काम के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है। (3)

और तहक़ीक़ उन के पास आ गईं (वह) ख़बरें जिन में इब्रत है। (4)
कामिल दानिशमन्दी की बातें, पस उन्हें डराने वालों ने फ़ाइदा न दिया। (5)
सो तुम उन से मुँह फेर लो, जिस दिन बुलाएगा एक बुलाने वाला (फ़रिश्ता) नागवार शै की तरफ़। (6)
उन की आँखें झुकी हुई (होंगी), वह क़ब्रों से (इस तरह) निकलेंगे गोया कि वह परागन्दा टिड्डियां हैं। (7)
पुकारने वाले की तरफ लपकते हुए काफ़िर कहेंगेः यह बड़ा सख़्त दिन है। (8)
झुटलाया इन से क़ब्ल क़ौमे नूह (अ) ने, पस उन्हों ने हमारे बन्दे (नूह अ) को झुटलाया और उन्हों ने कहाः दीवाना, और उसे डराया धमकाया। (9)
पस उस ने अपने रब को पुकारा कि मैं मग़लूब हो चुका, पस तू मेरी मदद कर। (10)
तो हम ने कस्रत से बरसने वाले पानी से आस्मान के दरवाज़े खोल दिए। (11)
और ज़मीन से चश्मे जारी कर दिए, पस (ज़मीन आस्मान का) पानी उस काम पर मिल गया जो (इल्मे इलाही में) मुक़र्रर हो चुका था (क़ौमे नूह अ की ग़रक़ाबी के लिए)। (12)
और हम ने उसे तख़्तों और कीलों वाली (कश्ती पर) सवार किया। (13)
हमारी आँखों के सामने (हमारी निगरानी में) चलती थी उस के बदले के लिए जिस की नाक़द्री की गई। (14)
और तहक़ीक़ हम ने उसे (बतौर) निशानी रहने दिया। तो क्या है कोई नसीहत पकड़ने वाला? (15)
पस (देखो कि) कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब और मेरा डराना (16)
और तहक़ीक़ हम ने नसीहत के लिए कुरआन को आसान कर दिया तो क्या है कोई नसीहत पकड़ने वाला? (17)
आ़द ने झुटलाया तो कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब और मेरा डराना? (18)
हम ने नहूसत के दिन में उन पर तुन्द ओ तेज़ हवा भेजी (जो) चलती ही गई। (19)
वह लोगों को उखाड़ फेंकती थी गोया कि वह जड़ से उखड़े हुए खजूर के तने हैं (20)
सो कैसा हुआ मेरा अज़ाब और मेरा डराना? (21)
और तहक़ीक़ हम ने नसीहत के लिए कुरआन को आसान कर दिया तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला? (22)
समूद ने डराने वालों (रसूलों) को झुटलाया। (23)
पस उन्हों ने कहाः क्या हम अपने में से एक बशर की पैरवी करें? बेशक उस सूरत में हम अलबत्ता गुमराही और दीवानगी में होंगे। (24)

وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ الْاَنْۢبَآءِ مَا فِيْهِ مُزْدَجَرٌ ﴿٤﴾ حِكْمَةٌۢ بَالِغَةٌ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हिक्मतें वालिगा (कामिल दानिशमन्दी) | 4 | डांट (इब्रत) | जिस में | ख़बरें (जमा) | से | और तहक़ीक़ आ गई उन के पास |

فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ ﴿٥﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ ۘ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ اِلٰى شَيْءٍ نُّكُرٍ ﴿٦﴾ وقف لازم

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | शै नागवार | तरफ़ | बुलाएगा एक बुलाने वाला | जिस दिन | उन से | सो तुम मुँह फेर लो | 5 | डराने वाले | ता न फ़ाइदा दिया |

خُشَّعًا اَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ ﴿٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | परागन्दा | टिड्डियां | गोया कि वह | क़ब्रों से | वह निकलेंगे | उन की आँखें | झुकी हुई |

مُّهْطِعِيْنَ اِلَى الدَّاعِ ۗ يَقُوْلُ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ﴿٨﴾ كَذَّبَتْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| झुटलाया | 8 | बड़ा सख़्त दिन | यह | काफ़िर (जमा) | कहेंगे | पुकारने वाले की तरफ़ | लपकते हुए |

قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ فَكَذَّبُوْا عَبْدَنَا وَقَالُوْا مَجْنُوْنٌ وَّازْدُجِرَ ﴿٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | और डराया धमकाया गया | दीवाना | और उन्हों ने कहा | हमारे बन्दे | तो उन्हों ने झुटलाया | क़ौमे नूह | इन से क़ब्ल |

فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ﴿١٠﴾ فَفَتَحْنَآ اَبْوَابَ السَّمَآءِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मान के दरवाज़े | तो हम ने खोल दिए | 10 | पस मेरी मदद कर | मग़लूब | कि मैं | अपना रब | पस उस ने पुकारा |

بِمَآءٍ مُّنْهَمِرٍ ﴿١١﴾ وَّفَجَّرْنَا الْاَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَآءُ عَلٰٓى اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ﴿١٢﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12 | (जो) मुक़र्रर हो चुका था | उस काम पर | पानी | पस मिल गया | चश्मे | ज़मीन | और हम ने जारी कर दिए | 11 | कस्रत से बरसने वाले पानी से |

وَحَمَلْنٰهُ عَلٰى ذَاتِ اَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ ﴿١٣﴾ تَجْرِيْ بِاَعْيُنِنَا جَزَآءً لِّمَنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के लिए जिस | बदला | हमारी आँखों के सामने | चलती थी | 13 | और कीलों वाली | तख़्तों वाली | पर | और हम ने सवार किया उसे |

كَانَ كُفِرَ ﴿١٤﴾ وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَآ اٰيَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿١٥﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरा अज़ाब | पस कैसा हुआ | 15 | कोई नसीहत पकड़ने वाला | तो क्या है | एक निशानी | और तहक़ीक़ हम ने उसे रहने दिया | 14 | नाक़द्री की गई |

وَنُذُرِ ﴿١٦﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿١٧﴾ كَذَّبَتْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| झुटलाया | 17 | कोई नसीहत पकड़ने वाला? | तो क्या है | नसीहत के लिए | कुरआन | और तहक़ीक़ हम ने आसान किया | 16 | और मेरा डराना |

عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿١٨﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तेज़ | हवा | उन पर | बेशक हम ने भेजी | 18 | और मेरा डराना | मेरा अज़ाब | हुआ | तो कैसा | आ़द |

فِيْ يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ﴿١٩﴾ تَنْزِعُ النَّاسَ ۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तने | गोया कि वह | लोग | वह उखाड़ देती (फेंकती) | 19 | चलती ही गई | नहूसत के दिन | में |

نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ﴿٢٠﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٢١﴾ وَلَقَدْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अलबत्ता तहक़ीक़ | 21 | और मेरा डराना | मेरा अज़ाब | हुआ | सो कैसा | 20 | जड़ से उखड़ी हुई खजूर के पेड़ |

يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٢٢﴾ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِالنُّذُرِ ﴿٢٣﴾ ع ٢٢ ٨

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 23 | डराने वालों को | झुटलाया समूद ने | 22 | कोई नसीहत हासिल करने वाला | तो क्या है | नसीहत के लिए | हम ने आसान कर दिया कुरआन |

فَقَالُوْٓا اَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهٗٓ ۙ اِنَّآ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿٢٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 24 | और दीवानगी | अलबत्ता गुमराही में | बेशक हम उस सूरत में | हम पैरवी करें उस की | एक | अपने में से | क्या एक बशर | पस उन्हों ने कहा |

ءَاُلْقِيَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْۢ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ اَشِرٌ ﴿٢٥﴾ سَيَعْلَمُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जल्द जान लेंगे | 25 | ख़ुद पसंद | बड़ा झूटा | बल्कि वह | हमारे दरमियान (हम में से) | उस पर | क्या डाला (नाज़िल किया) गया ज़िक्र (वही) |

غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْاَشِرُ ﴿٢٦﴾ اِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | आज़माइश | ऊँटनी | भेजने वाले | बेशक हम | 26 | ख़ुद पसंद | बड़ा झूटा | कौन | कल |

فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ﴿٢٧﴾ وَنَبِّئْهُمْ اَنَّ الْمَآءَ قِسْمَةٌۢ بَيْنَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के दरमियान | तक़सीम कर दिया गया | कि पानी | और उन्हें ख़बर दे | 27 | और सब्र कर | सो तू इन्तिज़ार कर उन का |

كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ﴿٢٨﴾ فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطٰى فَعَقَرَ ﴿٢٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 29 | और कूँचें काट दीं | सो उस ने दस्त दराज़ी की | अपने साथी को | तो उन्हों ने पुकारा | 28 | हाज़िर किया गया (हाज़िर होना) | पीने की बारी | हर |

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٣٠﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चिंघाड़ | उन पर | बेशक हम ने भेजी | 30 | और मेरा डराना | मेरा अ़ज़ाब | हुआ | तो कैसा |

وَّاحِدَةً فَكَانُوْا كَهَشِيْمِ الْمُحْتَظِرِ ﴿٣١﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नसीहत के लिए | हम ने आसान किया क़ुरआन | और अलबत्ता तहक़ीक़ | 31 | तरह सूखी रौन्दी हुई बाड़, बाड़ लगाने वाला | सो वह हो गए | एक |

فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٣٢﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطٍۢ بِالنُّذُرِ ﴿٣٣﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने भेजी | बेशक हम | 33 | डराने वाले (रसूल) | लूत (अ) की क़ौम ने | झुटलाया | 32 | कोई नसीहत हासिल करने वाला | तो क्या है |

عَلَيْهِمْ حَاصِبًا اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ ؕ نَجَّيْنٰهُمْ بِسَحَرٍ ﴿٣٤﴾ نِّعْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا ؕ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी तरफ़ से | फ़ज़्ल फ़रमा कर | 34 | सुबह सवेरे | हम ने बचा लिया उन्हें | सिवाए लूत के अहले ख़ाना | पत्थर बरसाने वाली आन्धी | उन पर |

كَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ شَكَرَ ﴿٣٥﴾ وَلَقَدْ اَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो वह झगड़ने लगे | हमारी पकड़ से | और तहक़ीक़ (लूत अ ने) उन्हें डराया | 35 | जो शुक्र करे | हम जज़ा देते हैं | इसी तरह |

بِالنُّذُرِ ﴿٣٦﴾ وَلَقَدْ رَاوَدُوْهُ عَنْ ضَيْفِهٖ فَطَمَسْنَآ اَعْيُنَهُمْ فَذُوْقُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस चखो तुम | उन की आँखें | तो हम ने मिटा दीं | उस के मेहमान | से | और अलबत्ता तहक़ीक़ उन्हों ने (लूत अ से) लेना चाहा | 36 | डराने में |

عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ صَبَّحَهُمْ بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣٨﴾ فَذُوْقُوْا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस चखो तुम | 38 | ठहरने वाली (दाइमी) | अ़ज़ाब | सवेरे | सुबह आन पड़ा उन पर | और तहक़ीक़ | 37 | और मेरा डराना | मेरा अ़ज़ाब |

ع ١٨ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٣٩﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٤٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 40 | कोई नसीहत हासिल करने वाला | तो क्या है | नसीहत के लिए | क़ुरआन | और अलबत्ता तहक़ीक़ हम ने आसान किया | 39 | और मेरा डराना | मेरा अ़ज़ाब |

وَلَقَدْ جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ﴿٤١﴾ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तमाम | हमारी आयतों को | उन्हों ने झुटलाया | 41 | डराने वाले (रसूल) | फ़िरऔ़न वाले | और तहक़ीक़ आए |

فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٤٢﴾ اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन से | बेहतर | क्या तुम्हारे काफ़िर | 42 | साहिबे क़ुदरत | ग़ालिब | पकड़ | पस हम ने उन्हें आ पकड़ा |

اَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِي الزُّبُرِ ﴿٤٣﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ ﴿٤٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 44 | अपना बचाव कर लेने वाले | जमाअ़त | हम | वह कहते हैं | क्या | 43 | सहीफ़ों में | या तुम्हारे लिए नजात (माफ़ी नामा) |

क्या हमारे दरमियान उस पर वह नाज़िल की गई? (नहीं) बल्कि वह बड़ा झूटा, ख़ुद पसंद है। (25) वह कल (जल्द ही) जान लेंगे कि कौन बड़ा झूटा, ख़ुद पसंद है। (26) (ऐ सालेह अ) बेशक हम भेजने वाले हैं ऊँटनी उनकी आज़माइश के लिए, सो तू उन का (अनजाम देखने के लिए) इन्तिज़ार कर और सब्र कर। (27) और उन्हें ख़बर दे कि पानी उन के दरमियान तक़सीम कर दिया गया है और हर एक को (अपनी) पीने की बारी पर हाज़िर होना है। (28) तो उन्हों ने अपने साथी को पुकारा, सो उस ने दस्त दराज़ी की और (ऊँटनी की) कूँचें काट दीं। (29) तो कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब और मेरा डराना? (30) बेशक हम ने उन पर एक ही चिंघाड़ भेजी, सो वह हो गए बाड़े वाले की सूखी रौन्दी हुई बाड़ की तरह। (31) और तहक़ीक़ हम ने नसीहत के लिए क़ुरआन को आसान कर दिया, तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला। (32) लूत (अ) की क़ौम ने रसूलों को झुटलाया। (33) (तो) बेशक हम ने उन पर पत्थर बरसाने वाली आन्धी भेजी, लूत (अ) के अहले ख़ाना के सिवा कि हम ने बचा लिया उन्हें सुबह सवेरे, (34) अपनी तरफ़ से फ़ज़्ल फ़रमा कर, इसी तरह हम जज़ा देते हैं (उस को) जो शुक्र करे। (35) और तहक़ीक़ (लूत अ) ने उन्हें हमारी पकड़ से डराया तो वह डराने में झगड़ने (शक करने) लगे। (36) और तहक़ीक़ उन्हों ने लूत (अ) से उन के मेहमानों को (बुरे इरादे से) लेना चाहा तो हम ने उन की आँखें मिटा दीं (चौपट कर दीं), पस मेरे अ़ज़ाब और मेरे डराने (का मज़ा) चखो। (37) और तहक़ीक़ सुबह सवेरे उन पर दाइमी अज़ाब आ पड़ा। (38) पस मेरे अ़ज़ाब और डराने (का मज़ा) चखो। (39) और तहक़ीक़ हम ने क़ुरआन को आसान किया है नसीहत के लिए, तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला। (40) और तहक़ीक़ क़ौमे फ़िरऔ़न के पास रसूल आए। (41) उन्हों ने हमारी आयतों (अहकाम और निशानियों) को झुटलाया तमाम (की तमाम) तो हम ने उन्हें आ पकड़ा एक ग़ालिब और साहिबे क़ुदरत की पकड़ (की सूरत में)। (42) क्या उन से तुम्हारे काफ़िर बेहतर हैं? या तुम्हारे लिए माफ़ी नामा है (क़दीम) सहीफ़ों में? (43) क्या वह कहते हैं कि हम एक जमाअ़त अपना बचाव कर लेने वाले। (44)

अनक़रीब यह जमाअ़त शिकस्त खाएगी और वह भागेंगे पीठ (फेर कर)। (45) बल्कि क़ियामत उन की वादागाह है, और क़ियामत (की घड़ी) बहुत सख़्त और बड़ी तल्ख़ होगी (46) बेशक मुजरिम गुमराही और जहालत में हैं। (47) उस दिन वह अपने चेहरों के बल जहन्नम में घसीटे जाएंगे, (उन से कहा जाएगा:) तुम जहन्नम (की आग) लगने का मज़ा चखो। (48) बेशक हम ने हर शै को एक अन्दाज़े के मुताबिक़ पैदा किया। (49) और हमारा हुक्म सिर्फ़ एक (इशारा होता है) जैसे आँख का झपकना। (50) और अलबत्ता हम हलाक कर चुके हैं तुम जैसे बहुत सों को, तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला? (51) और जो कुछ उन्हों ने किया सहीफ़ों में है। (52) और हर छोटी बड़ी (बात) लिखी हुई है। (53) बेशक मुत्तक़ी बाग़ात और नहरों में होंगे। (54) साहिबे क़ुदरत बादशाह के नज़्दीक सच्चाई के मुक़ाम में। (55)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है
रहमान (अल्लाह)। (1) उस ने क़ुरआन सिखाया (2) उस ने इन्सान को पैदा किया। (3) उस ने उसे बात करना सिखाया। (4) सूरज और चाँद एक हिसाब से (गर्दिश में हैं)। (5) और तारे और दरख़्त सर बसजूद हैं। (6) और उस ने आस्मान को बुलन्द किया और तराज़ू रखी। (7) कि तुम तोल में हद से तजावुज़ न करो (8) और तोल इंसाफ़ से क़ाइम करो, और तोल न घटाओ (कम न तोलो)। (9) और उस ने ज़मीन को मख़्लूक़ के लिए बिछाया। (10) उस में मेवे हैं और ग़िलाफ़ वाली खजूरें हैं। (11) और ग़ल्ला भूसे वाला, और ख़ुशबू के फूल। (12) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (13)

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ﴿٤٥﴾ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और क़ियामत | वादागाह उन की | बल्कि क़ियामत | 45 | पीठ | और वह फेर लेंगे (भागेंगे) | जमाअ़त | अनक़रीब शिकस्त खाएगी |

اَدْهٰى وَاَمَرُّ ﴿٤٦﴾ اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِىْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿٤٧﴾ يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ وقف لازم

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह घसीटे जाएंगे | जिस दिन | 47 | और जहालत | गुमराही में | बेशक मुजरिम (जमा) | 46 | और बड़ी तल्ख़ | वह सख़्त |

فِى النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ؕ ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ ﴿٤٨﴾ اِنَّا كُلَّ شَىْءٍ خَلَقْنٰهُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने उसे पैदा किया | शै | बेशक हम हर | 48 | जहन्नम | लगना | तुम चखो | अपने मुँह (जमा) | पर बल | जहन्नम में |

بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾ وَمَآ اَمْرُنَآ اِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ﴿٥٠﴾ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَآ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अलबत्ता हम हलाक कर चुके हैं | 50 | आँख का | जैसे झपकना | एक | मगर सिर्फ़ | और नहीं हमारा हुक्म | 49 | एक अन्दाज़े के मुताबिक़ |

اَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٥١﴾ وَكُلُّ شَىْءٍ فَعَلُوْهُ فِى الزُّبُرِ ﴿٥٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 52 | सहीफ़ों में | जो उन्हों ने की | और हर बात | 51 | कोई नसीहत हासिल करने वाला | तो क्या है | तुम जैसे |

وَكُلُّ صَغِيْرٍ وَّكَبِيْرٍ مُّسْتَطَرٌ ﴿٥٣﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِىْ جَنّٰتٍ وَّنَهَرٍ ﴿٥٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 54 | और नहरें | बाग़ात में | बेशक मुत्तक़ी (जमा) | 53 | लिखी हुई | और बड़ी | छोटी | और हर |

فِىْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٥٥﴾ ع ١٥ ٣ ١٠

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 55 | साहिबे क़ुदरत | बादशाह | नज़्दीक | सच्चाई का मुक़ाम | में |

## آيَاتُهَا ٧٨ ❀ (٥٥) سُوْرَةُ الرَّحْمٰنِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकूआ़त 3 — (55) सूरतुर रह्मान — आयात 78
बेहद मेहरबान

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

اَلرَّحْمٰنُ ﴿١﴾ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ﴿٢﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ﴿٣﴾ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ﴿٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | उस ने उसे सिखाया बात करना | 3 | उस ने पैदा किया इन्सान | 2 | उस ने सिखाया क़ुरआन | 1 | रहमान (अल्लाह) |

اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ﴿٥﴾ وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ﴿٦﴾ وَالسَّمَآءَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और आस्मान | 6 | वह सिज्दा में (सर बसजूद हैं) | और दरख़्त | और झाड़ियां तारे | 5 | एक हिसाब से | और चाँद | सूरज |

رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ﴿٧﴾ اَلَّا تَطْغَوْا فِى الْمِيْزَانِ ﴿٨﴾ وَاَقِيْمُوا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और क़ाइम करो | 8 | तराज़ू (तोल) में | हद से तजावुज़ करो | कि न | 7 | तराज़ू | और रखी | उस ने उसे बुलन्द किया |

الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ﴿٩﴾ وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस ने उस को रखा (बिछाया) | और ज़मीन | 9 | तोल | और न घटाओ | इंसाफ़ से | वज़न (तोल) |

لِلْاَنَامِ ﴿١٠﴾ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ﴿١١﴾ وَالْحَبُّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और ग़ल्ला | 11 | ग़िलाफ़ वाले | और खजूरें | मेवे | उस में | 10 | मख़्लूक़ के लिए |

ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ﴿١٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٣﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 13 | तुम झुटलाओगे | अपने रब | तो कौन सी नेमतों | 12 | और ख़ुशबू के फूल | भूसे वाला |

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ﴿١٤﴾ وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शोला मारने वाली | जिन्नात | और उस ने पैदा किया | 14 | ठिकरी जैसी | खखाती मिट्टी | से | उस ने पैदा किया इन्सान |

مِّنْ نَّارٍ ﴿١٥﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٦﴾ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दोनों मशरिक़ों | रब | 16 | तुम झुटलाओगे | अपने रब | तो कौन सी नेमतों | 15 | आग से |

وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ﴿١٧﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٨﴾ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दो दर्या | उस ने बहाए | 18 | तुम झुटलाओगे | अपने रब | तो कौन सी नेमतों | 17 | दोनों मग़रिब | और रब |

يَلْتَقِيٰنِ ﴿١٩﴾ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ﴿٢٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢١﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 21 | तुम झुटलाओगे | अपने रब | तो कौन सी नेमतों | 20 | वह ज़ियादती नहीं करते (नहीं मिलते) | एक आड़ | उन दोनों के दरमियान | 19 | एक दूसरे से मिले हुए |

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٢٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٣﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 23 | तुम झुटलाओगे | अपने रब | तो कौन सी नेमतों | 22 | और मूंगे | मोती | उन दोनों से | निकलते हैं |

النصف

وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَاٰتُ فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿٢٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने रब | तो कौन सी नेमतों | 24 | पहाड़ों की तरह | दर्या में | चलने वाली | कश्तियां | और उस के लिए |

ع ١ ٢٥ ١١

تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٥﴾ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴿٢٦﴾ وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| साहिबे अ़ज़मत | तेरा रब | चेहरा (ज़ात) | और बाक़ी रहेगा | 26 | फ़ना होने वाला | जो इस (ज़मीन) पर | हर कोई | 25 | तुम झुटलाओगे |

وَالْاِكْرَامِ ﴿٢٧﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٨﴾ يَسْـَٔلُهُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मानों में | जो कोई | उस से मांगता है | 28 | तुम झुटलाओगे | अपने रब | तो कौन सी नेमतों | 27 | एहसान करने वाला |

وَالْاَرْضِ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِيْ شَاْنٍ ﴿٢٩﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | तुम झुटलाओगे | अपने रब | तो कौन सी नेमतों | 29 | किसी न किसी काम में | वह | हर रोज़ | और ज़मीन में |

سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ﴿٣١﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٢﴾ يٰمَعْشَرَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ गिरोह | 32 | तुम झुटलाओगे | अपने रब | तो कौन सी नेमतों | 31 | ऐ जिन ओ इन्स | तुम्हारी तरफ़ | हम जल्द फ़ारिग़ (मुतवज्जुह) होते हैं |

الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मानों के किनारे | से | तुम निकल भागो | कि | तुम से हो सके | अगर | और इन्स | जिन्न |

وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ۭ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ﴿٣٣﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तो कौन सी नेमतों | 33 | लेकिन ज़ोर से | तुम नहीं निकल सकोगे | तो निकल भागो | और ज़मीन |

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٤﴾ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّنُحَاسٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और धुआं | आग से | एक शोला | तुम पर | भेज दिया जाएगा | 34 | तुम झुटलाओगे | अपने रब |

فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ﴿٣٥﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٦﴾ فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मान | फट जाएगा | फिर जब | 36 | तुम झुटलाओगे | अपने रब | तो कौन सी नेमतों | 35 | तो मुक़ाबला न कर सकोगे |

فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ﴿٣٧﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 38 | तुम झुटलाओगे | अपने रब | तो कौन सी नेमतों | 37 | जैसे सुर्ख़ चमड़ा | गुलाबी | तो वह होगा |

उस ने इन्सान को पैदा किया खंखनाती मिट्टी से ठिकरी जैसी। (14) और जिन्नात को शोले वाली आग से पैदा किया। (15) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (16) रब है दोनों मशरिक़ों और दोनों मग़रिबों का। (17) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (18) उस ने दो दर्या बहाए एक दूसरे से मिले हुए। (19) उन दोनों के दरमियान एक आड़ है, वह (एक दूसरे से) नहीं मिलते। (20) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (21) उन दोनों से निकलते हैं मोती और मूंगे। (22) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (23) और उसी के लिए हैं चलने वाली कश्तियां दर्या में पहाड़ों की तरह। (24) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (25) जमीन पर जो कोई है फ़ना होने वाला है। (26) और बाक़ी रहेगी साहिबे अ़ज़मत एहसान करने वाले तेरे रब की ज़ात। (27) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (28) जो कोई आस्मानों और जमीन में है, वह उसी से मांगता है, वह हर रोज़ किसी न किसी काम (नए हाल) में है। (29) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (30) ऐ जिन्न ओ इन्स! (सब से फ़ारिग़ हो कर) हम जल्द तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जुह होते हैं। (31) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (32) ऐ गिरोहे जिन्न और इन्स, अगर तुम से हो सके निकल भागने आस्मानों और जमीन के किनारों से तो निकल भागो, तुम नहीं निकल सकोगे, उस के लिए बड़ा ज़ोर चाहिए। (33) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (34) तुम पर भेज दिया जाएगा एक शोला आग से, और धुआं, तो मुक़ाबला न कर सकोगे। (35) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (36) फिर जब फट जाएगा आस्मान, तो वह सुर्ख़ चमड़े जैसा गुलाबी हो जाएगा। (37) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (38)

पस उस दिन न पूछा जाएगा उस के (अपने) गुनाहों के बारे में किसी इन्सान से और न जिन्न से। (39) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (40) मुजरिम पहचाने जाएंगे अपनी पेशानी से, फिर वह पेशानियों के (बालों) से और क़दमों से पकड़े जाएंगे। (41) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (42) यह है वह जहन्नम जिसे गुनाहगार झुटलाते थे। (43) वह उस के और खौलते हुए गर्म पानी के दरमियान फिरेंगे। (44) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (45) और जो अपने रब के हुज़ूर खड़ा होने से डरा, उस के लिए दो बाग़ हैं। (46) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे। (47) बहुत सी शाखों वाले। (48) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (49) (उन बाग़ों में) दो चश्मे जारी हैं। (50) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (51) उन दोनों (बाग़ों) में हर मेवे की दो, दो क़िस्में हैं। (52) तो कौन सी नेमतों को अपने रब की तुम झुटलाओगे? (53) फ़र्शों पर तकिया (लगाए हुए होंगे) जिन के अस्तर रेशम के होंगे, और दोनों बाग़ों के मेवे नज़दीक होंगे। (54) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (55) उन में निगाहें नीची रखने वालियाँ हैं, उन्हें हाथ नहीं लगाया किसी इन्सान ने उन से क़ब्ल और न किसी जिन्न ने। (56) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (57) गोया वह याकूत और मूंगे हैं। (58) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (59) एहसान का बदला एहसान के सिवा और क्या हो सकता है। (60) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (61) और उन दोनों के अलावा दो बाग़ और भी हैं। (62) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (63) निहायत गहरे सब्ज़ रंग के। (64) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (65) उन दोनों (बाग़ात) में दो चश्मे हैं फ़व्वारों की तरह उबलते हुए। (66)

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْـَٔلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖۤ اِنْسٌ وَّلَا جَآنٌّ ﴿٣٩﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने रब | तो कौन सी नेमतों | 39 | और न जिन्न | किसी इन्सान | उस के गुनाहों के मुतअल्लिक़ | न पूछा जाएगा | पस उस दिन |

تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٠﴾ يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पेशानियों से | फिर वह पकड़े जाएंगे | अपनी पेशानी से | मुजरिम (जमा) | पहचाने जाएंगे | 40 | तुम झुटलाओगे |

وَالْاَقْدَامِ ﴿٤١﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٢﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ يُكَذِّبُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| झुटलाते हैं | वह जिसे | जहन्नम | यह | 42 | तुम झुटलाओगे | अपने रब | तो कौन सी नेमतों | 41 | और क़दमों |

بِهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ يَطُوْفُوْنَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيْمٍ اٰنٍ ﴿٤٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

وقف لازم

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो कौन सी नेमतों | 44 | खौलते हुए | गर्म पानी | और दरमियान | उस के दरमियान | वह फिरेंगे | 43 | उसे मुजरिम (जमा) गुनाहगार |

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٥﴾ وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿٤٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

ع ٢ / ١٢

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो कौन सी नेमतों | 46 | दो बाग़ | अपने रब के हुज़ूर खड़ा होना | जो डरा | और उस के लिए | 45 | तुम झुटलाओगे | अपने रब |

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٧﴾ ذَوَاتَاۤ اَفْنَانٍ ﴿٤٨﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٩﴾ فِيْهِمَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन दोनों में | 49 | तुम झुटलाओगे | अपने रब | तो कौन सी नेमतों | 48 | बहुत सी शाखों वाले | 47 | तुम झुटलाओगे | अपने रब |

عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ﴿٥٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥١﴾ فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हर | से-की | उन दोनों में | 51 | तुम झुटलाओगे | अपने रब | तो कौन सी नेमतों | 50 | जारी हैं | दो चश्मे |

فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ﴿٥٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٣﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى فُرُشٍۢ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़र्शों पर | तकिया लगाए हुए | 53 | तुम झुटलाओगे | अपने रब | तो कौन सी नेमतों | 52 | दो क़िस्में | मेवे |

بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ۭ وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿٥٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने रब | तो कौन सी नेमतों | 54 | नज़दीक | दोनों बाग़ | और मेवे | रेशम के | उन के अस्तर |

تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٥﴾ فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ ۙ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन से क़ब्ल | इन्सान ने | उन्हें हाथ नहीं लगाया किसी | निगाहें | बन्द (नीचे) रखने वाली | उन में | 55 | तुम झुटलाओगे |

وَلَا جَآنٌّ ﴿٥٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٧﴾ كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٥٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 58 | और मूंगे | याकूत | गोया कि | 57 | तुम झुटलाओगे | अपने रब | तो कौन सी नेमतों | 56 | और न किसी जिन्न |

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٩﴾ هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सिवा | एहसान | क्या बदला | 59 | तुम झुटलाओगे | अपने रब | तो कौन सी नेमतों |

الْاِحْسَانُ ﴿٦٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦١﴾ وَمِنْ دُوْنِهِمَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन दोनों के अलावा | 61 | तुम झुटलाओगे | अपने रब | तो कौन सी नेमतों | 60 | एहसान |

جَنَّتٰنِ ﴿٦٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٣﴾ مُدْهَآمَّتٰنِ ﴿٦٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 64 | निहायत गहरे सब्ज़ रंग के | 63 | तुम झुटलाओगे | अपने रब | तो कौन सी नेमतों | 62 | दो बाग़ |

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٥﴾ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ﴿٦٦﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 66 | बशिद्दत जोश मारने वाले | दो चश्मे | उन दोनों में | 65 | तुम झुटलाओगे | अपने रब | तो कौन सी नेमतों |

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٧﴾ فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ﴿٦٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 68 | और अनार | खजूर के दरख़्त | मेवे | उन दोनों में | 67 | तुम झुटलाओगे | अपने रब | तो कौन सी नेमतों |

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٩﴾ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ ﴿٧٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो कौन सी नेमतों | 70 | खूबसूरत | खूब सीरत | उन में | 69 | तुम झुटलाओगे | अपने रब | तो कौन सी नेमतों |

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧١﴾ حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِى الْخِيَامِ ﴿٧٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने रब | तो कौन सी नेमतों | 72 | ख़ेमों में | रुकी रहने वाली (पर्दा नशीन) | हूरें | 71 | तुम झुटलाओगे | अपने रब |

تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٣﴾ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٧٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने रब | तो कौन सी नेमतों | 74 | और न किसी जिन्न | उन से क़ब्ल | किसी इन्सान | उन्हें हाथ नही लगाया | 73 | तुम झुटलाओगे |

تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٥﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ﴿٧٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 76 | नफ़ीस | और खूबसूरत | सब्ज़ | मसनदों पर | तकिया लगाए हुए | 75 | तुम झुटलाओगे |

ع ٣ / ١٢ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٧﴾ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِى الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿٧٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 78 | और एहसान करने वाला | साहिबे जलाल | तुम्हारा रब | नाम | बरकत वाला | 77 | तुम झुटलाओगे | अपने रब | तो कौन सी नेमतों |

## آيَاتُهَا ٩٦ ❀ سُوْرَةُ الْوَاقِعَةِ (٥٦) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकूआत 3 — (56) सूरतुल वाक़िआ — वाके होनेवाली — आयात 96

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وقف لازم اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١﴾ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ﴿٢﴾ خَافِضَةٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस्त करने वाली | 2 | कुछ झूट | उस के वाके होने में | नही | 1 | वाके होने वाली | वाके हो जाएगी | जब |

رَّافِعَةٌ ﴿٣﴾ اِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا ﴿٤﴾ وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ﴿٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे पहाड़, रेज़ा रेज़ा हो कर | 4 | सख़्त ज़ल्ज़ला | ज़मीन | लरज़ने लगेगी | जब | 3 | बुलन्द करने वाली |

فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْۢبَثًّا ﴿٦﴾ وَّكُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ﴿٧﴾ فَاَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۙ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो दाएं हाथ वाले | 7 | तीन | जोड़े (गिरोह) | और तुम हो जाओगे | 6 | परागन्दा | गुबार | फिर हो जाएंगे |

مَآ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ﴿٨﴾ وَاَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ﴿٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | बाएं हाथ वाले | क्या | और बाएं हाथ वाले | 8 | दाएं हाथ वाले | क्या |

وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ﴿١٠﴾ اُولٰٓـئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿١١﴾ فِىْ جَنّٰتِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बाग़ात | में | 11 | मुक़र्रब (जमा) | यही हैं | 10 | सबक़त ले जाने वाले हैं | और सबक़त ले जाने वाले |

النَّعِيْمِ ﴿١٢﴾ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣﴾ وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 14 | पिछलों से में | और थोड़े | 13 | पहलों से में | बड़ी जमाअत | 12 | नेमत |

عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ﴿١٥﴾ مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ﴿١٦﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 16 | आमने सामने | उस पर | तकिया लगाए हुए | 15 | सोने के तारों से बुने हुए | तख़्तों पर |

तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (67)
उन दोनों (बाग़ात) में मेवे औ खजूर के दरख़्त और अनार होंगे। (68)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (69)
उन में खूब सीरत, खूबसूरत (बीवियां) होंगी। (70)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (71)
ख़ेमों में पर्दा नशीन हूरें। (72)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (73)
और उन से क़ब्ल उन्हें हाथ नहीं लगाया किसी इन्सान ने और न किसी जिन्न ने। (74)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (75)
सब्ज़, खूबसूरत, नफ़ीस मसनदों पर तकिया लगाए हुए। (76)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (77)
तुम्हारे साहिबे जलाल, एहसान करने वाले रब का नाम बरकत वाला है। (78)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

जब वाके हो जाएगी वाके होने वाली (क़ियामत)। (1)
उस के वाके होने में कुछ झूट नहीं। (2)
(किसी को) पस्त करने वाली (किसी को) बुलन्द करने वाली। (3)
जब ज़मीन सख़्त जल्ज़ले से लरज़ने लगेगी। (4)
और पहाड़ टूट फूट कर रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे। (5)
फिर परागन्दा गुबार हो जाएंगे। (6)
और तुम हो जाओगे तीन गिरोह। (7)
तो दाएं हाथ वाले (सुब्हानल्लाह) क्या हैं दाएं हाथ वाले! (8)
और बाएं हाथ वाले (अफ़्सोस) क्या हैं बाएं हाथ वाले! (9)
और सबक़त ले जाने वाले (माशा अल्लाह) सबक़त ले जाने वाले हैं! (10)
यही हैं (अल्लाह के) मुक़र्रब। (11)
नेमतों वाले बाग़ात में। (12)
बड़ी जमाअत पहलों में से। (13)
और थोड़े पिछलों में से। (14)
सोने के तारों से बुने हुए तख़्तों पर। (15)
तकिया लगाए हुए उस पर आमने सामने (बैठे हुए)। (16)

يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ﴿١٧﴾ بِاَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ ۙ وَكَاْسٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और पियाले | और सुराहियां | कटोरों के साथ | 17 | हमेशा रहने वाले | लड़के | उन के | इर्द गिर्द फिरेंगे |

مِّنْ مَّعِيْنٍ ﴿١٨﴾ لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ﴿١٩﴾ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से जो | और मेवे | 19 | और न उन की अक्ल में फ़ुतूर आएगा | उस से | न उन्हें दर्दे सर होगा | 18 | साफ़ शराब | से के |

يَتَخَيَّرُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٢١﴾ وَحُوْرٌ عِيْنٌ ﴿٢٢﴾ كَاَمْثَالِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जैसे | 22 | और बड़ी आँखों वाली हूरें | 21 | वह चाहेंगे | वह जो | और परिन्दों का गोश्त | 20 | वह पसंद करेंगे |

اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ﴿٢٣﴾ جَزَآءً ۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٤﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | वह न सुनेंगे | 24 | जो वह करते थे | उस की | जज़ा | 23 | (सीपी में) छुपे हुए | मोती |

لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا ﴿٢٥﴾ اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ﴿٢٦﴾ وَاَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۙ مَآ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या | और दाएं हाथ वाले | 26 | सलाम सलाम | कलाम | मगर | 25 | और न गुनाह की बात | बेहूदा बात |

اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ﴿٢٧﴾ فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ﴿٢٨﴾ وَّطَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ ﴿٢٩﴾ وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ﴿٣٠﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | लमबा-दराज | और साया | 29 | तह दर तह | और केले | 28 | बेख़ार वाली | बेरियों में | 27 | दाएं हाथ वाले |

وَّمَآءٍ مَّسْكُوْبٍ ﴿٣١﴾ وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ﴿٣٢﴾ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ ﴿٣٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 33 | और न कोई रोक टोक | न ख़तम होने वाला | 32 | कसीर | और मेवे | 31 | गिरता हुआ | और पानी |

وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ﴿٣٤﴾ اِنَّآ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً ﴿٣٥﴾ فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ﴿٣٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 36 | कुंवारी (जमा) | पस हम ने उन्हें बनाया | 35 | ख़ूब उठान | उन्हें उठान दी | बेशक हम | 34 | ऊँचे | और फ़र्श (जमा) |

عُرُبًا اَتْرَابًا ﴿٣٧﴾ لِّاَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٣٨﴾ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٩﴾ وَثُلَّةٌ ع ٨ ١٢

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बहुत से | 39 | अगलों में से | बहुत से | 38 | दाएं हाथ वालों के लिए | 37 | महबूब हम उम्र |

مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٠﴾ وَاَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ﴿٤١﴾ فِيْ سَمُوْمٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| गर्म हवा | में | 41 | बाएं हाथ वाले | क्या | और बाएं हाथ वाले | 40 | पिछलों में से |

وَّحَمِيْمٍ ﴿٤٢﴾ وَّظِلٍّ مِّنْ يَّحْمُوْمٍ ﴿٤٣﴾ لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْمٍ ﴿٤٤﴾ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस से क़ब्ल | थे | बेशक वह | 44 | और न फ़र्हत | न कोई ठंडक | 43 | धुआँ | से के | और साया | 42 | और खौलता हुआ पानी |

مُتْرَفِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَكَانُوْا يُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ ﴿٤٦﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 46 | गुनाह भारी | पर | अड़े हुए | और वह थे | 45 | नेमत में पले हुए |

وَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَ ۙ اَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٤٧﴾ اَوَ اٰبَآؤُنَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और क्या हमारे बाप दादा | 47 | ज़रूर दोबारा उठाए जाएंगे | क्या हम | और हड्डियां | मिट्टी | और हो गए | हम मर गए | क्या जब | और वह कहते थे |

الْاَوَّلُوْنَ ﴿٤٨﴾ قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٩﴾ لَمَجْمُوْعُوْنَ ۙ اِلٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ पर | ज़रूर जमा किए जाएंगे | 49 | और पिछले | पहले | बेशक | आप (स) कह दें | 48 | पहले |

مِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٥٠﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ﴿٥١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 51 | झुटलाने वाले | गुमराह लोग | ऐ | बेशक तुम | फिर | 50 | एक मुक़र्ररा दिन | वक़्त |

उन के इर्द गिर्द लड़के फिरेंगे हमेशा (लड़के ही) रहने वाले। (17) आबख़ोरों और सुराहियों के साथ और साफ़ शराब के पियालों (के साथ) (18) न उस से उन्हें दर्दे सर होगा और न उन की अ़क्लों में फ़ुतूर आएगा। (19) और मेवे जो वह पसंद करेंगे। (20) और परिन्दों का गोश्त जो वह चाहेंगे। (21) और बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरें, (22) जैसे मोती (के दाने) सीपी में छुपे हुए। (23) उस की जज़ा जो वह करते थे। (24) वह उस में न बेहूदा बात सुनेंगे और न गुनाह की बात। (25) मगर "सलाम सलाम", मतलब कि ठीक ठीक बात होगी। (26) और दाएं हाथ वाले (सुबहानल्लाह) क्या हैं दाएं हाथ वाले! (27) बेरियों में बेख़ार वाली। (28) और तह दर तह केले। (29) और दराज़ साया। (30) और गिरता हुआ पानी (झरने)। (31) और कसीर मेवे। (32) न (वह) ख़तम होंगे और न (उन्हें) कोई रोक टोक (होगी)। (33) और ऊँचे ऊँचे फ़र्श। (34) बेशक हम ने उन्हें ख़ूब उठान दी। (35) पस हम उन्हें कुंवारी बना देंगे, (36) महबूब, हम उम्र। (37) दाएं हाथ वालों के लिए। (38) बहुत से अगलों में से, (39) और बहुत से पिछलों में से। (40) और बाएं हाथ वाले (अफ़्सोस) क्या हैं बाएं हाथ वाले! (41) गर्म हवा और खौलते हुए पानी में। (42) और धुएँ के साए में। (43) न कोई ठंडक और न कोई फ़र्हत। (44) बेशक वह उस से क़ब्ल नेमत में पले हुए थे। (45) और वह भारी गुनाह पर अड़े हुए थे। (46) और वह कहते थेः क्या जब हम मर गए और (मिट्टी में मिल कर) मिट्टी हो गए और हड्डियां (हो गए) क्या हम दोबारा ज़रूर उठाए जाएंगे? (47) क्या हमारे बाप दादा भी? (48) आप (स) कह दें: बेशक पहले और पिछले। (49) ज़रूर जमा किए जाएंगे एक दिन जिस का वक़्त मुक़र्रर है। (50) फिर बेशक तुम ऐ झुटलाने वाले गुमराह लोगो! (51)

لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ﴿٥٢﴾ فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿٥٣﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 53 | पेट (जमा) | उस से | फिर भरना होगा | 52 | थोहर का | दरख़्त | से | अलबत्ता खाने वाले |

فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ﴿٥٤﴾ فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ﴿٥٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 55 | पयासे ऊँट की तरह पीना | सो पीना होगा | 54 | खौलता हुआ पानी | से | उस पर | सो पीना होगा |

هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٥٦﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ﴿٥٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 57 | तुम तस्दीक़ करते | सो क्यों नही | हम ने पैदा किया | 56 | रोज़े जज़ा | उन की मेहमानी | यह |

اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ﴿٥٨﴾ ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿٥٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 59 | पैदा करने वाले | हम | या | तुम उसे पैदा करते हो | क्या तुम | 58 | जो तुम डालते हो | भला तुम देखो तो |

نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿٦٠﴾ عَلٰٓى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | 60 | उस से आजिज़ | और नहीं हम | मौत | तुम्हारे दरमियान | हम ने मुक़र्रर किया | हम |

اَنْ نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और यक़ीनन तुम जान चुके हो | 61 | तुम नहीं जानते | जो | में | और हम पैदा कर दें तुम्हें | तुम जैसे | कि हम बदल दें |

النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ﴿٦٣﴾ ءَاَنْتُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या तुम | 63 | जो तुम बोते हो | भला तुम देखा तो | 62 | तुम ग़ौर करते | तो क्यों नही | पैदाइश पहली |

تَزْرَعُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ﴿٦٤﴾ لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रेज़ा रेज़ा | अलबत्ता हम उसे कर दें | अगर हम चाहें | 64 | काश्त करने वाले | हम | या | उस की काश्त करते हो |

فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ﴿٦٥﴾ اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٦٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 67 | महरूम रह जाने वाले | हम | बल्कि | 66 | तावान पड़ जाने वाले | बेशक हम | 65 | बातें बनाते | फिर तुम हो जाओ |

اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِيْ تَشْرَبُوْنَ ﴿٦٨﴾ ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | तुम ने उसे उतारा | क्या तुम | 68 | तुम पीते हो | जो | पानी | भला तुम देखो तो |

الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ﴿٦٩﴾ لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कड़वा | हम कर दें उसे | हम चाहें | अगर | 69 | उतारने वाले | या हम | बादल |

فَلَوْلَا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ اَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِيْ تُوْرُوْنَ ﴿٧١﴾ ءَاَنْتُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या तुम | 71 | तुम सुलगाते हो | जो | आग | भला तुम देखो तो | 70 | तो क्यों तुम शुक्र नही करते |

اَنْشَاْتُمْ شَجَرَتَهَآ اَمْ نَحْنُ الْمُنْشِئُوْنَ ﴿٧٢﴾ نَحْنُ جَعَلْنٰهَا تَذْكِرَةً

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नसीहत | हम ने उसे बनाया | हम | 72 | पैदा करने वाले | या हम | उस के दरख़्त | तुम ने पैदा किए |

وَّمَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ ﴿٧٣﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٧٤﴾ ع ٣ ١٥

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 74 | अज़मत वाला | अपने रब | नाम से-की | पस तू पाकीज़गी बयान कर | 73 | हाजत मंदों के लिए | और सामान |

فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ﴿٧٥﴾ وَاِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ﴿٧٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 76 | बड़ी | अगर तुम जाना (ग़ौर करो) | एक क़सम है | और बेशक यह | 75 | सितारे (जमा) | मुक़ाम की | सो मैं क़सम खाता हूँ |

अलबत्ता तुम थोहर के दरख़्त से खाने वाले हो। (52)
पस उस से पेट भरना होगा। (53)
सो उस पर पीना होगा खौलता हुआ पानी। (54)
सो पीना होगा पयासे ऊँट की तरह। (55)
रोज़े जज़ा उन की यह मेहमानी होगी। (56)
हम ने तुम्हें पैदा किया, सो तुम क्यों तस्दीक़ नहीं करते? (57)
भला देखो तो! जो (नुत्फ़ा) तुम (औरतों के रह्म में) डालते हो। (58)
क्या तुम उसे पैदा करते हो या हम हैं पैदा करने वाले? (59)
हम ने तुम्हारे दरमियान मौत (का वक़्त) मुक़र्रर किया है, और हम उस से आजिज़ नहीं। (60)
कि हम बदल दें तुम्हारी शक्लें और हम पैदा करदें तुम्हें (ऐसे आलम) में जिस को तुम नहीं जानते। (61)
और यक़ीनन तुम जान चुके हो पहली पैदाइश तो तुम क्यों ग़ौर नहीं करते? (62)
भला तुम देखो तो जो तुम बोते हो। (63)
क्या तुम उस की काश्त करते हो या हम हैं काश्त करने वाले? (64)
अगर हम चाहें तो अलबत्ता हम उसे कर दें रेज़ा रेज़ा, फिर तुम बातें बनाते रह जाओ। (65)
(कि) बेशक हम तावान पड़ जाने वाले हो गए। (66)
बल्कि हम महरूम रह जाने वाले हैं। (67)
भला तुम देखो तो पानी जो तुम पीते हो। (68)
क्या तुम ने उसे बादल से उतारा या हम हैं उतारने वाले? (69)
अगर हम चाहें तो हम उसे कड़वा (खारी) कर दें, तो तुम क्यों शुक्र नहीं करते? (70)
भला तुम देखो तो जो आग तुम सुलगाते हो, (71)
क्या तुम ने उस के दरख़्त पैदा किए या हम हैं पैदा करने वाले? (72)
हम ने उसे याद दिलाने वाली बनाया और मुसाफ़िरों के लिए सामाने ज़िन्दगी। (73)
पस तू अपने अज़मत वाले रब के नाम की पाकीज़गी बयान कर। (74)
सो मैं सितारों के मुक़ाम की क़सम खाता हूँ। (75)
और बेशक यह एक बड़ी क़सम है अगर तुम ग़ौर करो। (76)

बेशक यह कुरआन है
गिरामी क़द्र। (77)
यह एक पोशीदा किताब
(लौहे महफ़ूज़) में है। (78)
उसे हाथ नहीं लगाते सिवाए
पाक लोग। (79)
तमाम जहानों के रब (की तरफ़) से
उतारा हुआ। (80)
पस क्या तुम इस बात को यूँ ही
टालने वाले? (81)
और तुम बनाते हो झुटलाने को
अपना वज़ीफ़ा। (82)
फिर क्यों नहीं जब (किसी की
जान) पहुँचती है हलक को, (83)
और उस वक़्त तुम तकते हो। (84)
और हम तुम से भी ज़ियादा उस
के क़रीब (होते हैं) लेकिन तुम नहीं
देखते। (85)
अगर तुम खुद मुख्तार हो तो क्यों
नहीं? (86)
तुम उसे (निकलती जान को) लौटा
लेते अगर तुम सच्चे हो। (87)
पस जो (मरने वाला) अगर मुक़र्रब
लोगों में से हो। (88)
तो (उस के लिए) राहत और खुशबूदार
फूल और नेमतों के बाग हैं (89)
और अलबत्ता अगर वह दाएं हाथ
वालों में से हो। (90)
पस तेरे लिए सलामती कि तू दाएं
हाथ वालों से है। (91)
और अगर गुमराह, झुटलाने वालों
में से हो। (92)
तो (उस की) मेहमानी खौलता हुआ
पानी है, (93)
और दोज़ख़ में झोंका जाना। (94)
बेशक यह अलबत्ता यक़ीनी बात
है। (95)
पस आप (स) पाकीज़गी बयान करें अपने
अज़मत वाले रब के नाम की। (96)
अल्लाह के नाम से जो बहुत
मेहरबान, रह्म करने वाला है
पाकीज़गी से याद करता है अल्लाह
को जो (भी) आस्मानों और जमीन
में है, और वह ग़ालिब, हिक्मत
वाला है। (1)
उसी के लिए बादशाहत आस्मानों
की और जमीन की, वही ज़िन्दगी
देता है और वही मौत देता है,
और वह हर शै पर कुदरत रखने
वाला। (2)
वही अव्वल और (वही) आखिर,
और ज़ाहिर और बातिन, और वह
हर शै को खूब जानने वाला। (3)

إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ ﴿٧٧﴾ فِي كِتٰبٍ مَّكْنُونٍ ﴿٧٨﴾ لَّا يَمَسُّهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ ﴿٧٩﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 79 | सिवाए पाक | उसे हाथ नही लगाते | 78 | पोशीदा | एक किताब | में | 77 | कुरआन है गिरामी क़द्र | बेशक यह |

تَنْزِيلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِينَ ﴿٨٠﴾ أَفَبِهٰذَا الْحَدِيثِ أَنْتُمْ مُّدْهِنُونَ ﴿٨١﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 81 | यूँ ही टालने वाले | तुम | बात | तो क्या इस | 80 | तमाम जहानों | रब | से | उतारा हुआ |

وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنَّكُمْ تُكَذِّبُونَ ﴿٨٢﴾ فَلَوْلَآ إِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُومَ ﴿٨٣﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 83 | हलक को | पहुँचती है | जब | फिर क्यों नही | 82 | झुटलाते हो | कि तुम | अपना रिज़्क़ (वज़ीफ़ा) | और तुम बनाते हो |

وَأَنْتُمْ حِينَئِذٍ تَنْظُرُونَ ﴿٨٤﴾ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلٰكِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और लेकिन | तुम से | उस के | ज़ियादा क़रीब | और हम | 84 | तकते हो | उस वक़्त | और तुम |

لَّا تُبْصِرُونَ ﴿٨٥﴾ فَلَوْلَآ إِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ﴿٨٦﴾ تَرْجِعُونَهَآ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम उसे लौटा लो | 86 | किसी के कहर में न आने वाले (खुद मुख्तार) | अगर तुम | तो क्यों नही | 85 | तुम नही देखते |

إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ﴿٨٧﴾ فَأَمَّآ إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٨٨﴾ فَرَوْحٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो राहत | 88 | मुक़र्रब लोग | से | अगर हो | पस जो | 87 | सच्चे (जमा) | अगर तुम |

وَّرَيْحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ نَعِيمٍ ﴿٨٩﴾ وَأَمَّآ إِنْ كَانَ مِنْ أَصْحٰبِ الْيَمِينِ ﴿٩٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 90 | दाएं हाथ वाले | से | अगर वह हो | और अलबत्ता | 89 | नेमतों के | और बाग़ | और खुशबूदार फूल |

فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ أَصْحٰبِ الْيَمِينِ ﴿٩١﴾ وَأَمَّآ إِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِينَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| झुटलाने वालों | से | अगर वह हो | और अलबत्ता | 91 | दाएं हाथ वालों | से | तेरे लिए | तो सलामती |

الضَّآلِّينَ ﴿٩٢﴾ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيمٍ ﴿٩٣﴾ وَّتَصْلِيَةُ جَحِيمٍ ﴿٩٤﴾ إِنَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | 94 | दोज़ख़ | और उसे डाल देना | 93 | खौलता हुआ पानी | से | तो मेहमानी | 92 | गुमराह (जमा) |

هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِينِ ﴿٩٥﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٩٦﴾ ع ٣ ١٦

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 96 | अज़मत वाला | अपने रब | पस आप (स) पाकीज़गी बयान करें नाम की | 95 | यक़ीनी बात | अलबत्ता यह | यह |

آيَاتُهَا ٢٩ ۞ (٥٧) سُورَةُ الْحَدِيدِ ۞ رُكُوعَاتُهَا ٤

रुकूआत 4 | (57) सूरतुल हदीद लोहा | आयात 29

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١﴾ لَهُ مُلْكُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के लिए बादशाहत | 1 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | और वह | और जमीन | आस्मानों में | जो | पाकीज़गी से याद करता है अल्लाह को |

السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | कुदरत रखने वाला | हर शै | पर | और वह | और मौत देता है | वह जिन्दगी देता है | और जमीन | आस्मानों |

هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٣﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | खूब जानने वाला | हर शै को | और वह | और बातिन | और ज़ाहिर | और आखिर | अव्वल | वही |

هُوَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर उस ने क़रार पकड़ा | दिन | छः (6) | में | और ज़मीन | आस्मानों | पैदा किया | जिस ने | वही |

عَلَى الْعَرْشِ ۚ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِى الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो उतरता है | उस से | और जो निकलता है | ज़मीन | में | जो दाख़िल होता है | वह जानता है | अ़र्श पर |

مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ۚ وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उसे जो | और अल्लाह | तुम हो | जहां कहीं | तुम्हारे साथ | और वह | उस में | और जो चढ़ता है | आस्मानों से |

تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٤﴾ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लौटना | और अल्लाह की तरफ़ | और ज़मीन | बादशाहत आस्मानों | उसी के लिए | 4 | देखने वाला | तुम करते हो |

الْاُمُوْرُ ﴿٥﴾ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ ۚ وَهُوَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह | रात में | दिन | और दाख़िल करता है | दिन में | रात | वह दाख़िल करता है | 5 | तमाम काम |

عَلِيْمٌ ۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٦﴾ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में जो | और ख़र्च करो | और उस के रसूल | अल्लाह पर | तुम ईमान लाओ | 6 | दिलों की बात को | जानने वाला |

جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ۚ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَاَنْفَقُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने ख़र्च किया | तुम में से | वह ईमान लाए | पस जो लोग | उस में | जानशीन | उस ने तुम्हें बनाया |

لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿٧﴾ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۚ وَالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह तुम्हें बुलाते हैं | और रसूल | अल्लाह पर | तुम ईमान नहीं लाते | और क्या (हो गया है) तुम्हें | 7 | बड़ा अजर | उन के लिए |

لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | ईमान वाले | अगर तुम हो | तुम से अ़हद | और यक़ीनन वह ले चुका है | अपने रब पर | कि तुम ईमान लाओ |

هُوَ الَّذِىْ يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهٖۤ اٰيٰتٍ ۢ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| से | ताकि वह तुम्हें निकाले | वाज़ेह आयात | अपना बन्दा | पर | नाज़िल फ़रमाता है | वही है जो |

الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۚ وَاِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | निहायत मेहरबान | शफ़क़त करने वाला | तुम पर | और बेशक अल्लाह | रोशनी की तरफ़ | अन्धेरों से |

وَمَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आस्मानों | और अल्लाह के लिए मीरास | अल्लाह का रास्ता | में | तुम ख़र्च नहीं करते | और क्या (हो गया है) तुम्हें |

وَالْاَرْضِ ۚ لَا يَسْتَوِىْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और क़िताल किया | फ़तह | पहले | जिस ने ख़र्च किया | तुम में से | बराबर नहीं | और ज़मीन |

اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْ بَعْدُ وَقٰتَلُوْا ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने क़िताल किया | बाद में | जिन्हों ने ख़र्च किया | से | दरजे | बड़े | यह लोग |

ع ١٠/١٤ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١٠﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | बाख़बर | उस से जो तुम करते हो | और अल्लाह | अच्छा | वादा किया अल्लाह ने | और हर एक |

वही जिस ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को छः दिन में, फिर उस ने अ़र्श पर क़रार पकड़ा, वह जानता है जो ज़मीन में दाख़िल होता है और जो उस से निकलता है, और जो आस्मानों से उतरता है और जो उस में चढ़ता है, और वह तुम्हारे साथ है जहां कहीं (भी) तुम हो, और जो तुम करते हो अल्लाह है उसे देखने वाला। (4)

उसी के लिए है आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत, और अल्लाह की तरफ़ है तमाम कामों का लौटना। (5)

वह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है, और वह है ख़ूब जानने वाला दिलों की बात (तक) को। (6)

तुम अल्लाह और उस के रसूल (स) पर ईमान लाओ और उस (माल) में से ख़र्च करो जिस में उस ने तुम्हें जांनशीन बनाया है, पस तुम में से जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने ख़र्च किया, उन के लिए बड़ा अजर है। (7)

और तुम्हें क्या हो गया? कि तुम ईमान नहीं लाते अल्लाह और उस के रसूल (स) पर, जबकि वह तुम्हें बुलाते हैं कि तुम अपने रब पर ईमान ले आओ, और वह यक़ीनन तुम से अ़हद ले चुका है अगर तुम ईमान वाले हो। (8)

वही है जो अपने बन्दे पर वाज़ेह आयात नाज़िल फ़रमाता है, ताकि वह तुम्हें निकाले अन्धेरों से रोशनी की तरफ़, और बेशक अल्लाह तुम पर शफ़क़त करने वाला मेहरबान है। (9)

और तुम्हें क्या हो गया? कि तुम ख़र्च नहीं करते अल्लाह के रास्ते में, और अल्लाह के लिए है आस्मानों और ज़मीन की मीरास (बाक़ी रह जाने वाला सब), तुम में से बराबर नहीं वह जिस ने ख़र्च किया और क़िताल किया फ़त्हे (मक्का) से पहले, यह लोग दरजे में (उन) से बड़े हैं जिन्हों ने बाद में ख़र्च किया और उन्हों ने क़िताल किया, और अल्लाह ने हर एक से अच्छा वादा किया है और जो तुम करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (10)

कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे?
क़र्ज़ हसना (अच्छा क़र्ज़), पस वह
उस को दोगुना बढ़ादे और उस के
लिए बड़ा उम्दा अजर है। (11)
जिस दिन तुम मोमिन मर्दों और
मोमिन औरतों को देखोगे कि उन का
नूर उन के सामने और उन के दाएं
दौड़ता होगा, तुम्हें आज ख़ुशख़बरी
है बागात की जिन के नीचे बहती
हैं नहरें, वह उन में हमेशा रहेंगे,
यह बड़ी कामयाबी है। (12)
जिस दिन कहेंगे मुनाफ़िक़ मर्द और
मुनाफ़िक़ औरतें उन लोगों को जो
ईमान लाए, हमारी तरफ़ निगाह
करो, हम तुम्हारे नूर से (कुछ)
हासिल कर लें, कहा जाएगाः
अपने पीछे लौट जाओ, पस (वहां)
नूर तलाश करो। फिर उन के
दरमियान एक दीवार खड़ी कर दी
जाएगी, उस का एक दरवाज़ा होगा,
उस के अन्दर रहमत और उस के
बाहर की तरफ़ अज़ाब होगा। (13)
वह (मुनाफ़िक़) उन (मुसलमानों)
को पुकारेंगेः क्या हम तुम्हारे साथ
न थे? वह कहेंगेः हाँ (क्यों नहीं!)
लेकिन तुम ने अपनी जानों को
फ़ित्ने में डाला, और तुम
इन्तिज़ार करते और शक करते थे
और तुम्हें तुम्हारी झूटी आर्ज़ूओं ने
धोके में डाला यहां तक कि अल्लाह
का हुक्म आ गया और अल्लाह
के बारे में तुम्हें धोका देने वाले
(शैतान) ने धोके में डाला। (14)
सो आज न तुम से कोई फ़िदया
लिया जाएगा और न उन लोगों
से जिन्हों ने कुफ़्र किया, तुम्हारा
ठिकाना जहन्नम है, यह तुम्हारी
ख़बर गीरी करने वाली और बुरी
लौटने की जगह है। (15)
क्या मोमिनों के लिए अभी वक़्त नहीं
आया? कि उन के दिल अल्लाह की
याद के लिए झुक जाएं और (उस के
लिए) जो हक़ तआला की तरफ से
नाज़िल हुआ है, और वह उन लोगों
की तरह न हो जाएं जिन्हें इस से
क़ब्ल किताब दी गई, फिर एक
लम्बी मुद्दत उन पर गुज़र गई तो
उन के दिल सख़्त हो गए, और उन
में से अक्सर नाफ़रमान हैं। (16)
(ख़ूब) जान लो कि अल्लाह जमीन
को उस के मरने के बाद जिन्दा
करता है। तहक़ीक़ हम ने तुम्हारे
लिए निशानियां बयान कर दी हैं
ताकि तुम समझो। (17)

مَنْ ذَا الَّذِىْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗۤ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और उस के लिए | उस को | पस बढ़ादे वह उस को दोगुना | क़र्ज़ हसना | क़र्ज़ दे अल्लाह को | कौन है जो |

اَجْرٌ كَرِيْمٌ (١١) يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन का नूर | दौड़ता होगा | और मोमिन औरतों | मोमिन मर्दों | तुम देखोगे | जिस दिन | 11 | अजर बड़ा उम्दा |

بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के नीचे | बहती है | बागात | आज | ख़ुशख़बरी तुम्हें | और उन के दाएं | उन के सामने |

الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ (١٢) يَوْمَ يَقُوْلُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जिस दिन कहेंगे | 12 | कामयाबी बड़ी | वह-यह | यह | उस में | वह हमेशा रहेंगे | नहरें |

الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| से | हम हासिल कर लें | हमारी तरफ़ निगाह करो | वह ईमान लाए | उन लोगों को जो | और मुनाफ़िक़ औरतें | मुनाफ़िक़ मर्द (जमा) |

نُّوْرِكُمْ ۚ قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ؕ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के दरमियान | फिर मारी (खड़ी कर दी) जाएगी | नूर | फिर तुम तलाश करो | अपने पीछे | लौट जाओ तुम | कहा जाएगा | तुम्हारा नूर |

بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ؕ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ (١٣)

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 13 | अज़ाब | उस की तरफ़ से | और उस के बाहर | रहमत | उस में | उस के अन्दर | एक दरवाज़ा | उस का | एक दीवार |

يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी जानों को | तुम ने फ़ित्ने में डाला | और लेकिन तुम | हाँ | वह कहेंगे | तुम्हारे साथ | क्या हम न थे | वह उन्हें पुकारेंगे |

وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِىُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह का हुक्म | आ गया | यहां तक कि | तुम्हारी झूटी आर्ज़ूएं | और तुम्हें धोके में डाला | और तुम शक करते थे | और तुम इन्तिज़ार करते |

وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ (١٤) فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَّلَا مِنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | और न | कोई फ़िदया | तुम से | न लिया जाएगा | सो आज | 14 | धोका देने वाला | अल्लाह के बारे में | और तुम्हें धोके में डाला |

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ؕ هِىَ مَوْلٰىكُمْ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ (١٥)

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15 | लौटने की जगह | और बुरी | तुम्हारी मौला | यह | जहन्नम | ठिकाना तुम्हारा | कुफ़्र किया | वह लोग जिन्हों ने |

اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो नाज़िल हुआ | अल्लाह की याद के लिए | उन के दिल | झुक जाएं | कि | उन लोगों के लिए जो ईमान लाए (मोमिन) | क्या नज़्दीक (वक़्त) नही आया |

مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो दराज़ हो गई | इस से क़ब्ल | जिन्हें किताब दी गई | उन लोगों की तरह | और वह न हो जाएं | हक़ | से |

عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ (١٦) اِعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि अल्लाह | तुम जान लो | 16 | फ़ासिक़ (नाफ़रमान) | उन में से | और कसीर | उन के दिल | फिर सख़्त हो गए | मुद्दत | उन पर |

يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ (١٧)

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 17 | समझो | ताकि तुम | निशानियां | तुम्हारे लिए | तहक़ीक़ हम ने बयान कर दी | उस के मरने के बाद | जमीन | जिन्दा करता है |

إِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह दो चन्द कर दिया जाएगा उन के लिए | हसना (अच्छा) | क़र्ज़ | और जिन्हों ने क़र्ज़ दिया अल्लाह को | और ख़ैरात करने वाली औरतें | ख़ैरात करने वाले मर्द | बेशक |

وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿١٨﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वही | यही लोग | और उस के रसूल (जमा) | अल्लाह पर | ईमान लाए | और जो लोग | 18 | बड़ा उम्दा | अज्र | और उन के लिए |

الصِّدِّيْقُوْنَ ۖ وَالشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ۖ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और उन का नूर | उन का अज्र | उन के लिए | नज़्दीक अपने रब के | और शहीद (जमा) | सिद्दीक़ (जमा) |

ع ٢ ١٨ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿١٩﴾ اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस के सिवा नही | तुम जान लो | 19 | दोज़ख़ वाले | यही लोग | हमारी आयतों को | और झुटलाया | और जिन्हों ने कुफ़्र किया |

الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और कस्रत की ख़्वाहिश | बाहम | और फ़ख़्र करना | और ज़ीनत | और कूद | खेल | दुनिया की ज़िन्दगी |

فِى الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ۖ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर वह ज़ोर पकड़ती है | उस की पैदावार | काश्तकार | भली लगी | बारिश की तरह | और औलाद | मालों में |

فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا ۖ وَفِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और मग़्फ़िरत | सख़्त अज़ाब | और आख़िरत में | चूरा चूरा | वह हो जाती है | फिर | ज़र्द | सो तू उस को देखता है |

مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ۖ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿٢٠﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | धोके का सामान | मगर-सिर्फ़ | दुनिया की ज़िन्दगी | और नही | और रज़ा मन्दी | अल्लाह की तरफ़ से |

سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मान | जैसी चौड़ाई (वुस्अत) | उस की चौड़ाई (वुस्अत) | और जन्नत | अपने रब की तरफ़ से | मग़्फ़िरत | तरफ़ | तुम दौड़ो |

وَالْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۖ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह का फ़ज़्ल | यह | और उस के रसूलों | अल्लाह पर | ईमान लाए | उन लोगों के लिए जो | वह तैयार की गई | और ज़मीन |

يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۖ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢١﴾ مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई मुसीबत | नही पहुँचती | 21 | बड़े | फ़ज़्ल वाला | और अल्लाह | जिसे वह चाहे | वह उस को देता है |

فِى الْاَرْضِ وَلَا فِىٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ۖ اِنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | कि हम पैदा करें उस को | उस से क़ब्ल | किताब में | मगर | तुम्हारी जानों में | और न | ज़मीन में |

ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿٢٢﴾ لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न तुम ख़ुश हो | जो तुम से जाती रहे | पर | ताकि तुम ग़म न खाओ | 22 | आसान | अल्लाह पर | यह |

بِمَآ اٰتٰىكُمْ ۖ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِ ﴿٢٣﴾ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बुख़्ल करते हैं | जो लोग | 23 | फ़ख़्र करने वाले | इतराने वाले | हर एक (किसी) | पसंद नही करता | और अल्लाह | उस पर जो उस ने तुम्हें दिया |

وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۖ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِىُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 24 | सज़ावारे हम्द | वह बेनियाज़ | तो बेशक अल्लाह | मुँह फेर ले | और जो | बुख़्ल का | लोग | और हुक्म (तरग़ीब) देते हैं |

बेशक ख़ैरात करने वाले मर्द और ख़ैरात करने वाली औरतें, और जिन्हों ने अल्लाह को क़र्ज़ हसना (अच्छा क़र्ज़) दिया, वह उन के लिए दो चन्द कर दिया जाएगा, और उन के लिए बड़ा उम्दा अजर है। (18)
और जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाए, यही लोग हैं अपने रब के नज़्दीक सिद्दीक़ (सच्चे) और शहीद, उन के लिए उन का अजर है और उन का नूर, और जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया, यही लोग दोज़ख़ वाले हैं। (19)
तुम (ख़ूब) जान लो, इस के सिवा नहीं कि दुनिया की ज़िन्दगी (महज़) खेल कूद है, और एक ज़ीनत और बाहम फ़ख़्र (ख़ुद सताई) करना और कस्रत की ख़्वाहिश करना मालों में और औलाद में, बारिश की तरह कि काश्तकार को उस की पैदावार भली लगी, फिर वह ज़ोर पकड़ती है, पस तू उस को देखता है ज़र्द, फिर वह चूरा चूरा हो जाती है, और आख़िरत में सख़्त अज़ाब भी है और मग़्फ़िरत भी है अल्लाह की तरफ़ से और रज़ा मन्दी, और दुनिया की ज़िन्दगी धोके के सामान के सिवा कुछ भी नहीं। (20)
तुम दौड़ो मग़्फ़िरत की तरफ़ अपने रब की, और उस जन्नत की तरफ़ जिस की वुस्अत आस्मानों और ज़मीन की वुस्अत जैसी (बराबर) है, उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो ईमान लाए अल्लाह और उस के रसूलों पर, यह अल्लाह का फ़ज़्ल है, वह उस को देता है जिसे वह चाहता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (21)
कोई मुसीबत नहीं पहुँचती ज़मीन में और न तुम्हारी जानों में मगर किताब में (दर्ज) है, इस से पहले कि हम उस को पैदा करें, बेशक यह अल्लाह पर आसान है। (22)
ताकि तुम उस पर ग़म न खाओ जो तुम से जाती रहे और न ख़ुश हो जाओ उस पर जो उस ने तुम्हें दिया, और अल्लाह किसी इतराने वाले, फ़ख़्र करने वाले को पसंद नहीं करता। (23)
जो लोग बुख़्ल करते हैं और तरग़ीब देते हैं लोगों को बुख़्ल की, और जो मुँह फेर ले तो बेशक अल्लाह बेनियाज़, सज़ावारे हम्द (सतोदा सिफ़ात) है। (24)

तहक़ीक़ हम ने अपने रसूलों को भेजा वाज़ेह दलाइल के साथ और हम ने उन के साथ उतारी किताब और मीज़ाने अ़दल ताकि लोग इंसाफ़ पर क़ाइम रहें, और हम ने लोहा उतारा, उस में सख़्त ख़तरा (बला की सख़्ती) है और लोगों के लिए कई फ़ायदे हैं, और ताकि अल्लाह मालूम कर ले कि कौन उस की मदद करता है और उस के रसूलों की, बिन देखे, बेशक अल्लाह क़व्वी, ग़ालिब है। (25)
और तहक़ीक़ हम ने नूह (अ) और इब्राहीम (अ) को भेजा और हम ने उन की औलाद में नुबूव्वत और किताब रखी। सो उन में से कुछ हिदायत याफ़्ता हैं, और उन में से अक्सर नाफ़रमान हैं। (26)
फिर हम ने उन के क़दमों के निशानात पर (उन के पीछे) अपने रसूल लाए, और उन के पीछे हम ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) को लाए और हम ने उसे इंजील दी, और जिन लोगों ने उस की पैरवी की उन के दिलों में नर्मी और मुहब्बत डाल दी। और तरके दुनिया (जिस की रस्म) ख़ुद उन्हों ने निकाली हम ने उन पर वाजिब न की थी, मगर (उन्हों ने) अल्लाह की रज़ा चाहने के लिए (इख़्तियार की) तो उस को न निबाहा (जैसे) उस के निबाहने का हक़ था, तो उन में से जो लोग ईमान लाए हम ने उन्हें उन का अजर दिया, और अक्सर उन में से नाफ़रमान हैं। (27)
ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह से डरो और उन के रसूलों पर ईमान लाओ, वह अपनी रहमत से (सवाब के) दो हिस्से अ़ता करेगा और तुम्हारे लिए एसा नूर कर देगा कि तुम उस के साथ चलोगे और वह बख़्श देगा तुम्हें, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (28)
ताकि अहले किताब जान लें कि वह अल्लाह के फ़ज़्ल में से किसी शै पर क़ुदरत नहीं रखते, और यह कि फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ में है, वह उसे देता है जिस को वह चाहे और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (29)

لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَاَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| किताब | उन के साथ | और हम ने उतारी | वाज़ेह दलाइल के साथ | अपने रसूलों | तहक़ीक़ हम ने भेजा |

وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَاَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | लोहा | और हम ने उतारा | इंसाफ़ पर | लोग | ताकि क़ाइम रहें | और मीज़ाने (अदल) |

بَأْسٌ شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मदद करता है उस की | कौन | और ताकि मालूम कर ले अल्लाह | लोगों के लिए | और फ़ायदा | लड़ाई (ख़तरा) सख़्त |

وَرُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٢٥﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا ع ٢ ١٩

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नूह (अ) | और तहक़ीक़ हम ने भेजा | 25 | ग़ालिब | क़व्वी | बेशक अल्लाह | बिन देखे | और उस के रसूल |

وَّاِبْرٰهِيْمَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हिदायत याफ़्ता | सो उन में से कुछ | और किताब | नुबूव्वत | उन की औलाद में | और हम ने रखी | और इब्राहीम (अ) |

وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम उन के पीछे लाए | अपने रसूल | उन के क़दमों के निशानात पर | हम उन के पीछे लाए | फिर | 26 | नाफ़रमान | उन में से | और अक्सर |

بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ ۙ وَجَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जिन्हों ने | दिलों में | और हम ने डाल दी | इंजील | और हम ने उसे दी | इब्ने मरयम (अ) | ईसा (अ) |

اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّرَحْمَةً ۗ وَرَهْبَانِيَّةَ ابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हम ने वाजिब नहीं की | जो उन्हों ने ख़ुद निकाली | और तरके दुनिया | और रहमत | नर्मी | उस की पैरवी की |

عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَآءَ رِضْوَانِ اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस को निबाहने का हक़ | उस को निबाहा | तो न | अल्लाह की रज़ा | चाहना | मगर | उन पर |

فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 27 | नाफ़रमान | उन में से | और अक्सर | उन का अजर | उन में से | उन लोगों के लिए जो ईमान लाए | तो हम ने दिया |

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह तुम्हें अ़ता करेगा | उस के रसूलों पर | और ईमान लाओ | डरो अल्लाह से तुम | जो लोग ईमान लाए | ऐ |

كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ بِهٖ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हें | और वह बख़्शदेगा | उस के साथ | तुम चलोगे | ऐसा नूर | तुम्हारे लिए | और कर देगा | अपनी रहमत | से | दो हिस्से |

وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٨﴾ لِّئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कि वह क़ुदरत नहीं रखते | अहले किताब | ताकि जान लें | 28 | मेहरबान | बख़्शने वाला | और अल्लाह |

عَلٰى شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह देता है उसे | अल्लाह के हाथ में | फ़ज़्ल | और यह कि | अल्लाह का फ़ज़्ल | से | किसी शै पर |

مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾ ع ٣ ٢٠

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 29 | बड़ा | फ़ज़्ल वाला | और अल्लाह | जिस का वह चाहता है |

الجزء ٢٨

## آيَاتُهَا ٢٢ ❀ (٥٨) سُوْرَةُ الْمُجَادِلَةِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकूआत 3 | (58) सूरतुल मुजादिला इख़्तिलाफ़ करने वाली | आयात 22

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ فِيْ زَوْجِهَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपने ख़ावन्द के बारे में | आप (स) से बहस करती थी | वह औ़रत जो | बात | सुन ली अल्लाह ने | यक़ीनन |

وَتَشْتَكِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ①

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | देखने वाला | सुनने वाला | बेशक अल्लाह | तुम दोनों की गुफ़्तगू | सुनता था | और अल्लाह | अल्लाह | के पास | और शिकायत करती थी |

اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَآىِٕهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ۭ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन की माँएं | नहीं | उन की माँएं | वह नहीं | अपनी बीवियों से | तुम में से | ज़िहार करते हैं | जो लोग |

اِلَّا الّٰۗـِٔيْ وَلَدْنَهُمْ ۭ وَاِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا ۭ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और झूट | बात से | नामाकूल | अलबत्ता कहते हैं | और बेशक वह | जिन्हों ने जना है उन्हें | सिर्फ़ वह औरतें |

وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ② وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَآىِٕهِمْ ثُمَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर | अपनी बीवियों से | जिहार करते हैं | और जो लोग | 2 | बख़्शने वाला | अलबत्ता माफ़ करने वाला | और बेशक अल्लाह |

يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ۭ ذٰلِكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| यह | कि एक दूसरे को हाथ लगाएं | इस से क़ब्ल | एक गुलाम | तो आज़ाद करना लाज़िम है | उस से जो उन्हों ने कहा (क़ौल) | वह रुजूअ़ करलें |

تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ③ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो रोजे | न पाए | तो जो कोई | 3 | बाख़बर | उस से जो तुम करते हो | और अल्लाह | उस से- की | तुम्हें नसीहत की जाती है |

شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ۭ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो खाना खिलाए | उसे मक्दूर न हो | फिर- जिस | कि वह एक दूसरे को हाथ लगाएं | इस से क़ब्ल | लगातार | दो महीने |

سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا ۭ ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۭ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۭ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की हदें | और यह | और उस का रसूल | अल्लाह पर | यह इस लिए कि तुम ईमान रखो | मसाकीन को | साठ (60) |

وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ④ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह और उस का रसूल | वह मुख़ालिफ़त करते हैं | जो लोग | बेशक | 4 | दर्दनाक अ़ज़ाब | और न मानने वालों के लिए |

كُبِتُوْا كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۭ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वाजेह आयतें | और यक़ीनन हम ने नाज़िल कीं | उन से पहले | वह लोग जो | जैसे ज़लील किए गए | वह ज़लील किए जाएंगे |

وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ⑤ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो वह उन्हें आगाह करेगा | सब | उन्हें उठाएगा अल्लाह | जिस दिन | 5 | ज़िल्लत का | अ़ज़ाब | और काफ़िरों के लिए |

بِمَا عَمِلُوْا ۭ اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ⑥ ع ٦/١

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | निगरान | हर शै पर | और अल्लाह | और वह उसे भूल गए थे | उसे गिन रखा था अल्लाह ने | वह जो उन्हों ने किया |

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

यक़ीनन अल्लाह ने उस औ़रत (ख़ौलह॰) की बात सुन ली जो आप (स) से अपने शौहर के बारे में बह्स करती थी और अल्लाह के पास शिकायत करती थी, और अल्लाह तुम दोनों की गुफ़्तगू सुनता था। बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। (1) तुम में से जो लोग अपनी बीवियों से जिहार करते हैं (उन्हें माँ कह देते हैं) तो वह उन की माँएं नहीं (हो जातीं), उन की माँएं वही हैं जिन्हों ने उन्हें जना है, और बेशक वह एक नामाकूल बात और झूट कहते हैं, और बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है। (2) और जो लोग अपनी बीवियों से जिहार करते हैं (उन्हें माँएं कह देते हैं) फिर वह अपने क़ौल से रुजूअ़ कर लें तो (उन पर) लाजिम है आजाद करना एक गुलाम, इस से क़ब्ल कि वह एक दूसरे को हाथ लगाएं (बाहम इख़तिलात करें), यह है जिस की तुम्हें नसीहत की जाती है, और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (3) जो कोई (गुलाम) न पाए तो वह लगातार दो महीने रोज़े (रखे) इस से क़ब्ल कि वह एक दूसरे को हाथ लगाएं (इख़्तिलात करें), फिर जिस को (उस का भी) मक्दूर न हो तो साठ (60) मिस्कीनों को खाना खिलाए, यह इस लिए है कि तुम अल्लाह और उस के रसूल (स) पर ईमान रखो, और यह अल्लाह की (मुक़र्रर कर्दा) हदें हैं, और न मानने वालों के लिए दर्दनाक अ़जाब है। (4) बेशक जो लोग अल्लाह और उस के रसूल (स) की मुख़ालिफ़त करते हैं वह जलील किए जाएंगे जैसे जलील किए गए वह लोग जो उन से पहले थे, और यक़ीनन हम ने वाज़ेह आयतें नाज़िल की हैं, और काफ़िरों के लिए जिल्लत का अ़ज़ाब है। (5) जिस दिन (जिला) उठाएगा अल्लाह उन सब को, तो जो कुछ उन्हों ने किया वह उन्हें आगाह करेगा, उसे अल्लाह ने गिन (महफ़ूज़) रखा था और वह उसे भूल गए थे, और अल्लाह हर शै पर निगरान है। (6)

क्या आप (स) ने नहीं देखा कि अल्लाह जानता है जो आस्मानों में है और जो ज़मीन में है। तीन लोगों में कोई सरगोशी नहीं होती मगर वह उन में चौथा होता है और न पाँच (की सरगोशी) मगर वह उन में छटा होता है, और ख़ाह उस से कम हों या ज़ियादा मगर जहां कहीं वह हों वह (अल्लाह) उन के साथ होता है, फिर वह उन्हें बतला देगा क़ियामत के दिन जो कुछ उन्हों ने किया, बेशक अल्लाह हर शै का जानने वाला है। (7)
क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें सरगोशी से मना किया गया (मगर) वह फिर वही करते हैं जिस से उन्हें मना किया गया और वह गुनाह और सरकशी की और रसूल (स) की नाफ़रमानी (के बारे में) बाहम सरगोशी करते हैं, और जब वह आप (स) के पास आते हैं तो आप (स) को सलाम दुआ देते हैं उस लफ़्ज़ से जिस से अल्लाह ने आप को दुआ नहीं दी, और वह अपने दिलों में कहते हैं कि अल्लाह हमें उस की क्यों सज़ा नहीं देता जो हम कहते हैं। उन के लिए काफ़ी है जहन्नम, वह उस में डाले जाएंगे, सो (यह कैसा) बुरा ठिकाना है! (8)
ऐ ईमान वालो! जब तुम बाहम सरगोशी करो तो गुनाह और सरकशी की और रसूल (स) की नाफ़रमानी (के बारे में) सरगोशी न करो, और (बल्कि) नेकी और परहेज़गारी की सरगोशी करो, और अल्लाह से डरो जिस के पास तुम जमा किए जाओगे। (9)
इस के सिवा नहीं कि सरगोशी शैतान (की तरफ़) से है, ताकि वह उन लोगों को ग़मगीन कर दे जो ईमान लाए, और वह अल्लाह के हुक्म के बग़ैर उन का कुछ नहीं बिगाड़ सकता, और मोमिनों को अल्लाह पर (ही) भरोसा करना चाहिए। (10)
ऐ मोमिनो! जब तुम्हें कहा जाए कि तुम मजलिसों में खुल कर बैठो तो तुम खुल कर बैठ जाया करो, अल्लाह तुम्हें कुशादगी बख़्शेगा, और जब कहा जाए कि तुम उठ खड़े हो तो उठ जाया करो, तुम में से जो लोग ईमान लाए और जिन लोगों को इल्म अ़ता किया गया अल्लाह बुलन्द कर देगा उन के दरजे, और तुम जो करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (11)

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ مَا يَكُوْنُ مِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई | नही होती | ज़मीन में | और जो | आस्मानों में | जो | वह जानता है | कि अल्लाह | क्या आप ने नही देखा |

نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَاۤ اَدْنٰى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न (ख़ाह) कम | उन में छटा | मगर वह | पाँच की | और न | उन में चौथा | मगर वह | तीन लोगों में | सरगोशी |

مِنْ ذٰلِكَ وَلَاۤ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो कुछ उन्हों ने किया | वह उन्हें बतला देगा | फिर | वह हों | जहां कही | उन के साथ | मगर वह | और न ज़ियादा | उस | से |

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٧﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जिन्हें मना किया गया | तरफ़- को | क्या तुम ने नहीं देखा | 7 | जानने वाला | तमाम-हर शै का | बेशक अल्लाह | क़ियामत के दिन |

عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और सरकशी | गुनाह से- की | वह बाहम सरगोशी करते है | उस से | जिस से मना किया गया उन्हें | वह (वही) करते है | फिर | सरगोशी से |

وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ ۫ وَاِذَا جَآءُوْكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस (लफ़्ज़) से अल्लाह ने | आप को दुआ नही दी | जिस से | आप को सलाम दुआ देते है | वह आते है आप (स) के पास | और जब | रसूल | और नाफ़रमानी |

وَيَقُوْلُوْنَ فِىْۤ اَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ ؕ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जहन्नम | उन के लिए काफ़ी है | उस की जो हम कहते हैं | हमें अज़ाब देता अल्लाह | क्यों नही | अपने दिलों में | वह कहते है |

يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٨﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम बाहम सरगोशी करो | जब | ईमान वालो | ऐ | 8 | ठिकाना | सो बुरा | वह डाले जाएंगे उस में |

فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ وَتَنَاجَوْا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और सरगोशी करो | रसूल (स) | और नाफ़रमानी | और सरकशी | गुनाह की | तो सरगोशी न करो |

بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِىْۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٩﴾ اِنَّمَا النَّجْوٰى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सरगोशी | इस के सिवा नही | 9 | तुम जमा किए जाओगे | उस की तरफ़-पास | वह जो | और अल्लाह से डरो | और परहेज़गारी | नेकी की |

مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيْسَ بِضَآرِّهِمْ شَيْـًٔا اِلَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बग़ैर | कुछ | वह उन का बिगाड़ सकता | और नही | ईमान लाए | उन लोगों को जो | ताकि वह ग़मगीन करे | शैतान से |

بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मोमिनो! | ऐ | 10 | मोमिन (जमा) | तो भरोसा करना चाहिए | और अल्लाह पर | अल्लाह के हुक्म के |

اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِى الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ اللّٰهُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कुशादगी बख़्शेगा अल्लाह | तो तुम खुल कर बैठ जाया करो | मजलिसों में | तुम खुल कर बैठो | तुम्हें | जब कहा जाए |

لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जो लोग ईमान लाए | बुलन्द कर देगा अल्लाह | तो उठ जाया करो | तुम उठ खड़े हो | और जब कहा जाए | तुम्हें |

مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | बाख़बर | तुम करते हो | उस से | और अल्लाह | दरजे | इल्म अ़ता किया गया | और जिन लोगों को | तुम में से |

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पहले | तो तुम दे दो | रसूल (स) | तुम कान में बात करो | जब | मोमिनो | ऐ |

نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ۗ ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ۗ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो बेशक अल्लाह | तुम न पाओ | फिर अगर | और ज़ियादा पाकीज़ा | बेहतर तुम्हारे लिए | यह | कुछ सदक़ा | अपनी सरगोशी |

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾ ءَاَشْفَقْتُمْ اَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी सरगोशी | पहले | कि तुम दे दो | क्या तुम डर गए | 12 | रहम करने वाला | बख़्शने वाला |

صَدَقٰتٍ ۗ فَاِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا وَتَابَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नमाज़ | तो क़ाइम करो तुम | तुम पर | और दरगुज़र फ़रमाया अल्लाह ने | तुम न कर सके | सो जब | सदक़ात |

وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۗ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٣﴾ ع

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 13 | उस से जो तुम करते हो | बाख़बर | और अल्लाह | अल्लाह और उसका रसूल (स) | और तुम इताअत करो | और अदा करो ज़कात |

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۗ مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और न | तुम में से | न वह | उन पर | अल्लाह ने ग़ज़ब किया | उन लोगों से | जो लोग दोस्ती करते हैं | तरफ़-को | क्या तुम ने नहीं देखा |

مِنْهُمْ ۙ وَيَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٤﴾ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अज़ाब | उनके लिए | तैयार किया अल्लाह ने | 14 | जानते हैं | हालांकि वह | झूट पर | और वह क़सम खा जाते हैं | उन में से |

شَدِيْدًا ۗ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾ اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ढाल | अपनी क़समें | उन्हों ने बना लिया | 15 | वह करते थे | जो कुछ | बुरा | बेशक वह | सख़्त |

فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٦﴾ لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन से को | हरगिज न बचा सकेंगे | 16 | ज़िल्लत का | अज़ाब | तो उन के लिए | अल्लाह का रास्ता | से | पस उन्हों ने रोक दिया |

اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ۗ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दोज़ख़ वाले - जहन्नमी | यही लोग | कुछ-ज़रा | अल्लाह से | उन की औलाद | और न | उन के माल |

هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١٧﴾ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के लिए | तो वह क़सम खाएंगे | सब | उन्हें उठाएगा अल्लाह | जिस दिन | 17 | हमेशा रहेंगे | उस में | वह |

كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ عَلٰى شَيْءٍ ۗ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वही | बेशक वह | याद रखो | किसी शै पर | कि वह | और वह गुमान करते हैं | तुम्हारे लिए- सामने | वह क़समें खाते हैं | जैसे |

الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٨﴾ اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰىهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ۗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की याद | तो उस ने उन्हें भुलादी | शैतान | उन पर | ग़ालिब आ गया | 18 | झूटे |

اُولٰٓئِكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ۗ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 19 | घाटा पाने वाले | वही | शैतान का गिरोह | बेशक | याद रखो | शैतान का गिरोह | यही लोग |

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اُولٰٓئِكَ فِي الْاَذَلِّيْنَ ﴿٢٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | ज़लील तरीन लोग | में | यही लोग | और उस के रसूल की | मुख़ालिफ़त करते हैं अल्लाह की | जो लोग | बेशक |

ऐ मोमिनो! जब तुम रसूल (स) से कान में (निजी) बात करो तो तुम अपनी सरगोशी से पहले कुछ सदक़ा दो, यह तुम्हारे लिए बेहतर और ज़ियादा पाकीज़ा है, फिर अगर तुम (मक़्दूर) न पाओ तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (12)
क्या तुम उस से डर गए कि अपनी सरगोशी से पहले सदक़ा दो, सो जब तुम न कर सके और अल्लाह ने तुम पर दरगुज़र फ़रमाया तो तुम नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात अदा करो और अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअत करो, और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (13)
क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा? जो उन लोगों से दोस्ती करते हैं जिन पर अल्लाह ने ग़ज़ब किया, वह न तुम में से हैं और न उन में से हैं, और वह जान बूझ कर झूट पर क़सम खा जाते हैं। (14)
अल्लाह ने उन के लिए सख़्त अज़ाब तैयार किया है, बेशक वह बुरे काम करते थे। (15)
उन्हों ने अपनी क़समों को ढाल बना लिया, पस उन्हों ने (लोगों को) अल्लाह के रास्ते से रोका तो उन के लिए ज़िल्लत का अज़ाब है। (16)
उन्हें उन के माल और न उन की औलाद अल्लाह से हरगिज ज़रा भी न बचा सकेंगे। यही लोग जहन्नमी हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (17)
जिस दिन अल्लाह उन सब को (दोबारा) उठाएगा तो उस के लिए (उस के हुज़ूर) क़समें खाएंगे जैसे वह तुम्हारे सामने क़समें खाते हैं, और वह गुमान करते हैं कि वह किसी शै (भली राह) पर हैं, याद रखो! बेशक वही झूटे हैं। (18)
ग़ालिब आगया है उन पर शैतान, तो उस ने उन्हें अल्लाह की याद भुला दी, यही लोग शैतान की गिरोह हैं, ख़ूब याद रखो, बेशक शैतान के गिरोह ही घाटा पाने वाले हैं। (19)
बेशक जो लोग अल्लाह और उस के रसूल (स) की मुख़ालिफ़त करते हैं, यही लोग ज़लील तरीन लोगों में से हैं। (20)

फ़ैसला कर दिया अल्लाह ने कि मैं और मेरे रसूल (स) ज़रूर ग़ालिब आएंगे, बेशक अल्लाह क़वी (तवाना) ग़ालिब है। (21)
तुम न पाओगे उन लोगों को जो ईमान रखते हैं अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर कि वह उन से दोस्ती रखते हों जिन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल (स) की मुख़ालिफ़त की, खाह वह उन के बाप दादा हों या उन के बेटे हों, या उन के भाई हों या उन के कुंबे वाले हों, यही लोग हैं जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान सबत कर दिया और उन की मदद की अपने ग़ैबी फ़ैज़ से, और वह उन्हें (उन) बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, राज़ी हुआ अल्लाह उन से, और वह उस से राजी, यही लोग है अल्लाह का गिरोह, खूब याद रखो। अल्लाह के गिरोह वाले ही (दो जहान में) कामयाब होने वाले हैं। (22)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
अल्लाह की पाकीजगी बयान करता है जो भी आस्मानों में और जो भी ज़मीन में है, और वह गालिब हिक्मत वाला है। (1)
वही है जिस ने निकाला अहले किताब के काफ़िरों को उन के घरों से पहले ही इज्तिमाए लशकर पर, तुम्हें गुमान (भी) न था कि वह निकलेंगे और वह ख़याल करते थे कि उन के क़िले उन्हें अल्लाह से बचा लेंगे, तो उन पर अल्लाह का ग़जब (ऐसी जगह से आया) जिस का उन्हें गुमान (भी) न था, और अल्लाह ने उन के दिलों में रोब डाला, और वह अपने हाथों से और मोमिनों के हाथों से अपने घर बरबाद करने लगे, तो ऐ (बसीरत की) आँखों वालो इब्रत पकड़ो। (2)
और अगर अल्लाह ने उन पर जिला वतन होना लिख रखा न होता तो वह उन्हें दुनिया में अजाब देता, और उन के लिए आख़िरत में जहन्नम का अज़ाब है। (3)

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٢١﴾ لَا تَجِدُ قَوْمًا
लिख दिया (फ़ैसला कर दिया) अल्लाह | मैं ज़रूर ग़ालिब आऊँगा | मैं | और मेरे रसूल | बेशक अल्लाह | क़वी | ग़ालिब | 21 | तुम न पाओगे | क़ौम (लोग)

يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
वह ईमान रखते हैं | अल्लाह पर | और आख़िरत का दिन | और दोस्ती रखते हों | जो-जिस | मुख़ालिफ़त की अल्लाह की | और उस के रसूल की

وَلَوْ كَانُوْٓا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ
ख़ाह | वह हों | उन के बाप दादा | या | उन के बेटे | या | उन के भाई | या | उन का घराना | यही लोग

كَتَبَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ؕ وَيُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ
लिख दिया (सबत कर दिया) उन के दिलों में | ईमान | और उन की मदद की | रूह (अपने ग़ैबी फ़ैज से) | अपने से | और वह दाख़िल करेगा उन्हें | बाग़ात

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا
बहती है | उन के नीचे | नहरें | हमेशा रहेंगे | उन में | राज़ी हुआ अल्लाह | उन से | और वह राज़ी

عَنْهُ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٢٢﴾ ع ٣ ٣
उस से | यही लोग | अल्लाह का गिरोह | ख़ूब याद रखो कि बेशक | अल्लाह का गिरोह | वही | कामयाब होने वाले | 22

آيَاتُهَا ٢٤ ۞ (٥٩) سُوْرَةُ الْحَشْرِ ۞ رُكُوْعَاتُهَا ٣

आयात 24 | (59) सूरतुल हश्र<br>जमा करना या होना | रुकुआत 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١﴾
पाकीजगी बयान करता है अल्लाह की | जो | आस्मानों में | और जो | ज़मीन में | और वह | ग़ालिब | हिक्मत वाला | 1

هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ
वही है जिस ने | निकाला | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | से-के | अहले किताब | से | उन के घरों

لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ؔ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ وقف النبي ﷺ
पहले इज्तिमाए (लशकर) पर | तुम्हें गुमान न था | कि वह निकलेंगे | और वह ख़याल करते थे | कि वह | उन्हें बचा लेंगे | उन के क़िले

مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا وَقَذَفَ
अल्लाह से | तो उन पर आया अल्लाह | जहां से | उन्हें गुमान न था | और उस ने डाला

فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ
उन के दिलों में | रोब | वह बरबाद करने लगे | अपने घर | अपने हाथों से | और हाथों | मोमिनों

فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿٢﴾ وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ
तो तुम इब्रत पकड़ो | ऐ आँखों वालो | 2 | और अगर न | यह कि | अल्लाह ने लिख रखा होता | उन पर

الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ؕ وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ﴿٣﴾
जिला वतन होना | तो वह उन्हें अज़ाब देता | दुनिया में | और उन के लिए | आख़िरत में | जहन्नम का अज़ाब | 3

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो बेशक अल्लाह | मुख़ालिफ़त करे अल्लाह की | और जो | और उस का रसूल (स) | उन्हों ने मुख़ालिफ़त की अल्लाह की | इस लिए कि वह | यह |

شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٤﴾ مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| खड़ा | तुम ने उस को छोड़ दिया | या | दरख़्त के तने | से | जो तुम ने काट डाले | 4 | सज़ा देने वाला | सख़्त |

عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٥﴾ وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दिलवाया अल्लाह ने | और जो | 5 | नाफ़रमानों | और ताकि वह रुस्वा करे | तो अल्लाह के हुक्म से | उस की जड़ों पर |

عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और लेकिन (बल्कि) अल्लाह | ऊंट | और न | घोड़े | उन पर | तुम ने दौड़ाए थे | तो न | उन से | अपने रसूल (स) को |

يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | कुदरत रखता है | हर शै | पर | और अल्लाह | जिस पर वह चाहता है | पर | अपने रसूलों | मुसल्लत फ़रमा देता है |

مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तो अल्लाह के लिए और रसूल (स) के लिए | बस्तियों वाले | से | अपने रसूल (स) को | जो दिलवादे अल्लाह |

وَلِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَيْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ताकि | और मुसाफ़िरों | और मिस्कीनों | और यतीमों | और क़राबतदारों के लिए |

لَا يَكُوْنَ دُوْلَةًۢ بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ۚ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो वह ले लो | रसूल (स) | तुम्हें अता फ़रमाए | और जो | तुम में से तुम्हारे | मालदारों | दरमियान | हाथों हाथ लेना (गर्दिश) | न रहे |

وقف لازم

وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | सख़्त सज़ा देने वाला | बेशक अल्लाह | और तुम डरो अल्लाह से | तो तुम बाज़ रहो | उस से | तुम्हें मना करे | और जिस |

لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और अपने मालों | अपने घरों से | वह जो निकाले गए | मुहाजिरों | मोहताजों के लिए |

يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और उस का रसूल | और वह मदद करते हैं अल्लाह की | और रज़ा | अल्लाह का-से | फ़ज़्ल | वह चाहते हैं |

اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿٨﴾ وَالَّذِيْنَ تَبَوَّءُو الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और ईमान | इस घर | मुक़ीम रहे | और जो लोग | 8 | सच्चे | वह | और यही लोग |

مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने सीनों (दिलों) | में | और वह नहीं पाते | उन की तरफ़ | हिज्रत की | जिस | वह मुहब्बत करते हैं | उन से क़ब्ल |

حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हें | और ख़ाह हो | अपनी जानों | पर | और वह तरजीह देते हैं | दिया गया उन्हें | उस की | कोई हाजत |

خَصَاصَةٌ ۗ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | फ़लाह पाने वाले | वह | तो यही लोग | अपनी ज़ात | बुख़्ल | बचाया | और जो-जिस | तंगी |

यह इस लिए कि उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल (स) की मुख़ालिफ़त की, और जो अल्लाह की मुख़ालिफ़त करे तो बेशक अल्लाह (उस को) सख़्त सजा देने वाला है। (4)

जो तुम ने दरख़्तों के तने काट डाले या उन्हें उन की जड़ों पर खड़ा छोड़ दिया तो (यह) अल्लाह के हुक्म से था और ताकि वह नाफ़रमानों को रुस्वा कर दे। (5)

और अल्लाह ने अपने रसूल (स) को उन (बनू नज़ीर) से जो (माल) दिलवाया तो न तुम ने उन पर घोड़े दौड़ाए थे और न ऊंट, बल्कि अल्लाह अपने रसूलों को जिस पर चाहता है मुसल्लत फ़रमा देता है, और अल्लाह हर शै पर कुदरत रखता है। (6)

अल्लाह ने बस्तियों वालों से जो (माल) अपने रसूल (स) को दिलवाए तो वह अल्लाह के लिए है और रसूल (स) के लिए और (रसूल स के) क़राबतदारों के लिए, और यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों के लिए ताकि (दौलत) न रहे तुम्हारे मालदारों के दरमियान (ही) गर्दिश करती, और तुम्हें रसूल (स) जो अता फ़रमाएं वह ले लो, और वह तुम्हें जिस से मना करें उस से तुम बाज रहो, और तुम अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है। (7)

मोहताज मुहाजिरों के लिए (ख़ास तौर पर) जो निकाले गए अपने घरों से और अपने मालों से (महरूम किए गए) वह अल्लाह का फ़ज़्ल और (उस की) रज़ा चाहते है और वह मदद करते है अल्लाह और उस के रसूल (स) की, यही लोग सच्चे हैं। (8)

और जो लोग (अन्सार) ईमान ला कर इस घर (दारुलहिज्रत मदीना) में उन से क़ब्ल मुक़ीम हैं वह (उन से) मुहब्बत करते हैं जिन्हों ने उनकी तरफ़ हिज्रत की, और जो उन्हें (मुहाजिरीन को) दिया गया अपने दिलों में उस की कोई हाजत नहीं पाते। और वह उन्हें तरजीह देते हैं अपनी जानों पर ख़ाह (ख़ुद) उन्हें तंगी (ज़रूरत) हो, और जिस ने अपनी ज़ात को बुख़्ल से बचाया तो यही लोग फ़लाह पाने वाले हैं। (9)

और जो लोग उन के बाद आए, वह कहते हैं: ऐ हमारे रब! हमें और हमारे भाइयों को बख़्श दे वह जिन्हों ने ईमान लाने में हम से सबक़त की और हमारे दिलों में कोई कीना न होने दे उन लोगों के लिए जो ईमान लाए, ऐ हमारे रब! बेशक तू शफ़क़त करने वाला, रह्म करने वाला। (10)
क्या आप (स) ने मुनाफ़िक़ों को नहीं देखा? वह अपने भाइयों को कहते हैं जो काफ़िर हुए अहले किताब में से: अलबत्ता अगर तुम निकाले (जिला वतन किए) गए तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ निकल जाएंगे और तुम्हारे बारे में कभी हम किसी का कहा नहीं मानेंगे और अगर तुम से लड़ाई हुई तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे, और अल्लाह गवाही देता है कि बेशक वह झूटे हैं। (11)
और अगर वह जिला वतन किए गए तो यह न निक्लेंगे उन के साथ, और अगर उन से लड़ाई हुई तो यह उन की मदद न करेंगे और अगर मदद करेंगे (भी) तो वह यक़ीनन पीठ फेरेंगे (भाग जाएंगे), फिर (कहीं भी) वह मदद न किए जाएंगे। (12)
यक़ीनन उन के दिलों में अल्लाह से बढ़ कर तुम्हारा डर है, यह इस लिए कि वह ऐसे लोग हैं जो समझते नहीं। (13)
वह इकट्ठे हो कर तुम से न लड़ेंगे मगर बस्तियों में क़िला बन्द हो कर या दीवारों (फ़सील) के पीछे से, आपस में उन की लड़ाई बहुत सख़्त है, तुम उन्हें इकट्ठे गुमान करते हो हालांकि उन के दिल अलग अलग हैं, यह इस लिए है कि वह ऐसे लोग हैं जो अक्ल नहीं रखते। (14)
इन का हाल उन लोगों जैसा है जो क़रीबी ज़माने में इन से क़ब्ल हुए, उन्हों ने अपने काम का वबाल चख लिया और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (15)
शैतान के हाल जैसा, जब उस ने इन्सान से कहा कि तू कुफ़्र इख़्तियार कर, फिर जब उस ने कुफ़्र किया तो उस ने कहा: बेशक मैं तुझ से लातअल्लुक़ हूँ, तहक़ीक़ मैं तमाम जहानों के रब अल्लाह से डरता हूँ। (16)

وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और हमारे भाइयों को | हमें बख़्शदे | ऐ हमारे रब | वह कहते हैं | उन के बाद | वह आए | और जो लोग |

الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन लोगों के लिए जो | कोई कीना | हमारे दिलों में | और न होने दे | ईमान में | हम से सबक़त की | वह जिन्हों ने |

اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٠﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ع

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह लोग जिन्हों ने निफ़ाक़ किया (मुनाफ़िक़) | तरफ़-को | क्या आप ने नहीं देखा | 10 | रह्म करने वाला | शफ़क़त करने वाला | बेशक तू | ऐ हमारे रब | वह ईमान लाए |

يَقُوْلُوْنَ لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَئِنْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता अगर | अहले किताब | से | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) | अपने भाइयों को | वह कहते हैं |

اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ اَحَدًا اَبَدًا ۙ وَّاِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अगर | कभी | किसी का | तुम्हारे बारे में | और हम न मानेंगे | तुम्हारे साथ | तो हम ज़रूर निकल जाएंगे | तुम निकाले गए |

قُوْتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١١﴾ لَئِنْ اُخْرِجُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जिला वतन किए गए | अगर | 11 | अलबत्ता झूटे हैं | बेशक वह | गवाही देता है | और अल्लाह | तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे | तुम से लड़ाई हुई |

لَا يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ ۚ وَلَئِنْ قُوْتِلُوْا لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ ۚ وَلَئِنْ نَّصَرُوْهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह उन की मदद करेंगे | और अगर | वह उन की मदद न करेंगे | उन से लड़ाई हुई | और अगर | उन के साथ | वह न निक्लेंगे |

لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ۣ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١٢﴾ لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| डर | बहुत जियादा | यक़ीनन तुम तुम्हारा | 12 | वह मदद न किए जाएंगे | फिर | पीठ (जमा) | तो वह यक़ीनन फेरेंगे |

فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنَ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿١٣﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 13 | कि वह समझते नही | ऐसे लोग | इस लिए कि वह | यह | अल्लाह से | उन के सीनों (दिलों) में |

لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِيْ قُرًى مُّحَصَّنَةٍ اَوْ مِنْ وَّرَآءِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पीछे से | या | क़िला बन्द | बस्तियों में | मगर | इकटठे सब मिल कर | वह तुम से न लड़ेंगे |

جُدُرٍ ۭ بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ ۭ تَحْسَبُهُمْ جَمِيْعًا وَّقُلُوْبُهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हालांकि उन के दिल | तुम गुमान करते हो उन्हें इकटठे | बहुत सख़्त | उन के आपस में | उन की लड़ाई | दीवारें |

شَتّٰى ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٤﴾ كَمَثَلِ الَّذِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो लोग | हाल जैसा | 14 | वह अक़्ल नही रखते | ऐसे लोग | इस लिए कि वह | यह | अलग अलग |

مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अज़ाब | और उन के लिए | अपने काम | वबाल | उन्हों ने चख लिया | क़रीबी ज़माना | इन से क़ब्ल |

اَلِيْمٌ ﴿١٥﴾ كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो जब उस ने कुफ़्र किया | तू कुफ़्र इख़्तियार कर | इन्सान से | उस ने कहा | जब | शैतान | हाल जैसा | 15 | दर्दनाक |

قَالَ اِنِّيْ بَرِيْۗءٌ مِّنْكَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 16 | तमाम जहानों | रब | अल्लाह | तहक़ीक़ मैं डरता हूँ | तुझ से | लातअल्लुक़ | बेशक मैं | उस ने कहा |

فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا فِى النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيْهَا ۗ وَذٰلِكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और यह | उस में | वह हमेशा रहेंगे | आग में | बेशक वह दोनों | उन दोनों का अन्जाम | पस हुआ |

ع ٢ ٥ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और चाहिए कि देखे | तुम अल्लाह से डरो | ईमान वालो | ऐ | 17 | ज़ालिमों | जज़ा-सज़ा |

نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बाख़बर | बेशक अल्लाह | और तुम डरो अल्लाह से | कल के लिए | क्या उस ने आगे भेजा | हर शख़्स |

بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰىهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तो (अल्लाह ने) भुला दिया उन्हें | जिन्हों ने अल्लाह को भुला दिया | उन लोगों की तरह | और न हो जाओ तुम | 18 | उस से जो तुम करते हो |

اَنْفُسَهُمْ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿١٩﴾ لَا يَسْتَوِيْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दोज़ख़ वाले | बराबर नहीं | 19 | नाफ़रमान (जमा) | वह | यही लोग | ख़ुद उन्हें |

وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۭ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَاۗىِٕزُوْنَ ﴿٢٠﴾

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 20 | मुराद को पहुँचने वाले | वही हैं | जन्नत वाले | और जन्नत वाले |

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰي جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दबा हुआ | तो तुम देखते उस को | पहाड़ पर | क़ुरआन | यह | अगर हम नाज़िल करते |

مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۭ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हम बयान करते हैं | मिसालें | और यह | अल्लाह का ख़ौफ़ | से | टुकड़े टुकड़े हुआ |

لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं कोई माबूद | वह जिस | वह अल्लाह | 21 | ग़ौर ओ फ़िक्र करें | ताकि वह | लोगों के लिए |

اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿٢٢﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 22 | रहम करने वाला | वह बड़ा मेहरबान | और आशकारा | जानने वाला पोशीदा का | उस के सिवा |

هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सलामती वाला | निहायत पाक | बादशाह | उस के सिवा | नहीं कोई माबूद | वह जिस | वह अल्लाह |

الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۭ سُبْحٰنَ اللّٰهِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पाक है अल्लाह | बड़ाई वाला | जब्बार | ग़ालिब | निगहबान | अम्न देने वाला |

عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٢٣﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ईजाद करने वाला | ख़ालिक़ | वह अल्लाह | 23 | वह शरीक करते हैं | उस से जो |

الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَاۗءُ الْحُسْنٰى ۭ يُسَبِّحُ لَهٗ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उस की | पाकीज़गी बयान करता है | अच्छे | नाम (जमा) | उस के लिए | सूरतें बनाने वाला |

ع ٣ ٦ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 24 | हिकमत वाला | ज़बरदस्त | और वह | और ज़मीन | आस्मानों में | जो |

पस दोनों का अन्जाम (यह है) कि वह दोनों आग में होंगे, वह हमेशा उस में रहेंगे, और यह सज़ा है ज़ालिमों की। (17) ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह से डरो और चाहिए कि देखे (सोचे) हर शख़्स कि उस ने कल के लिए क्या आगे भेजा है? और तुम अल्लाह से डरो, बेशक जो तुम करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (18) और तुम न हो जाओ उन लोगों की तरह जिन्हों ने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने (ऐसा कर दिया) कि उन्हों ने ख़ुद अपने आप को भुला दिया, यही नाफ़रमान लोग हैं। (19) बराबर नहीं दोज़ख़ वाले और जन्नत वाले, जन्नत वाले ही मुराद को पहुँचने वाले हैं। (20) अगर हम नाज़िल करते यह क़ुरआन किसी पहाड़ पर तो तुम उस को अल्लाह के ख़ौफ़ से दबा (झुका) फटा पड़ता देखते, और यह मिसालें हम लोगों के लिए बयान करते हैं ताकि वह ग़ौर ओ फ़िक्र करें। (21) वह अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, जानने वाला पोशीदा का और आशकारा का, वह बड़ा मेहरबान, रहम करने वाला है। (22) वह अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं (वह हक़ीक़ी) बादशाह है, (हर ऐब से) निहायत पाक है। सलामती, अम्न देने वाला, निगहबान, ग़ालिब, ज़बरदस्त, बड़ाई वाला, अल्लाह पाक है उस से जो वह शरीक करते हैं। (23) वह अल्लाह है - ख़ालिक़, ईजाद करने वाला, सूरतें बनाने वाला, उस के लिए अच्छे नाम हैं, उस की पाकीज़गी बयान करता है जो आस्मानों और ज़मीन में है, और वह ज़बरदस्त हिकमत वाला है। (24)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ऐ ईमान वालो! तुम मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ, तुम उन की तरफ़ दोस्ती का पैग़ाम भेजते हो जब कि तुम्हारे पास जो हक़ आया है वह उस के मुन्किर हो चुके हैं, वह रसूल (स) को और तुम्हें भी जिला वतन करते हैं (महज़ इस लिए) कि तुम अल्लाह अपने रब पर ईमान लाते हो, अगर तुम निकलते हो मेरे रास्ते में जिहाद के लिए और मेरी रज़ा चाहने के लिए (तो ऐसा मत करो), तुम उन की तरफ़ छुपा कर भेजते हो दोस्ती (का पैग़ाम), और मैं खूब जानता हूँ वह जो तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो, और तुम में से जो कोई यह करेगा तो (जान लो) कि तहक़ीक़ वह सीधे रास्ते से भटक गया। (1)

अगर वह तुम्हें पाएं (तुम पर दस्तरस पा लें) तो वह तुम्हारे दुश्मन हो जाएं और तुम पर खोलें बुराई के साथ अपने हाथ और अपनी ज़बानें (दस्तदराज़ी और ज़बान दराज़ी करें) और वह चाहते हैं कि काश तुम काफ़िर हो जाओ। (2)

तुम्हें हरगिज़ नफ़ा न देंगे तुम्हारे रिश्ते और न तुम्हारी औलाद क़ियामत के दिन, अल्लाह तुम्हारे दरमियान फ़ैसला कर देगा, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह देखता है। (3)

बेशक तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना इब्राहीम (अ) और उन लोगों में है जो उन के साथ थे, जब उन्हों ने अपनी क़ौम को कहा: बेशक हम तुम से बेज़ार हैं और उन से जिन की तुम अल्लाह के सिवा बन्दगी करते हो, हम तुम्हें नहीं मानते, और ज़ाहिर हो गई हमारे और तुम्हारे दरमियान अदावत और दुश्मनी हमेशा के लिए, यहां तक कि तुम अल्लाह वाहिद पर ईमान ले आओ सिवाए इब्राहीम (अ) का अपने बाप से यह कहना कि मैं ज़रूर मग़फ़िरत मांगूँगा तुम्हारे लिए, और अल्लाह के आगे मैं तुम्हारे लिए कुछ भी इख़्तियार नहीं रखता, ऐ हमारे रब! हम ने तुझ पर भरोसा किया और तेरी तरफ़ हम ने रुजूअ किया और तेरी तरफ़ वापसी है। (4)

## آيَاتُهَا ١٣ ❀ (٦٠) سُوْرَةُ الْمُمْتَحِنَةِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

आयात 13 — (60) सूरतुल मुमतहिना — रुकूआत 2

जिस (औरत) की जाँच करनी है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّيْ وَعَدُوَّكُمْ اَوْلِيَآءَ تُلْقُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ | ईमान वालो | तुम न बनाओ | मेरा दुश्मन | और अपने दुश्मन | दोस्त | तुम पैग़ाम भेजते हो |

اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَآءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन की तरफ़ | दोस्ती से-का | और वह मुन्किर हो चुके हैं | उस के जो तुम्हारे पास आया | हक़ से | वह निकालते (जिला वतन करते) हैं रसूल (स) को |

وَاِيَّاكُمْ اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ؕ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِيْ سَبِيْلِيْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम्हें भी | कि तुम ईमान लाते हो | अल्लाह पर | तुम्हारा रब | अगर | तुम निकलते हो | जिहाद के लिए | मेरे रास्ते में |

وَابْتِغَآءَ مَرْضَاتِيْ ۖ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖ وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَاۤ اَخْفَيْتُمْ وَمَاۤ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और चाहने के लिए | मेरी रज़ा | तुम छुपा कर (भेजते हो) | उन की तरफ़ | दोस्ती का पैग़ाम | और मैं खूब जानता हूँ | वह जो | तुम छुपाते हो | और जो |

اَعْلَنْتُمْ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ① اِنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम ज़ाहिर करते हो | और जो | यह करेगा | तुम में से | तो तहक़ीक़ | वह भटक गया | सीधा | रास्ता | 1 | अगर |

يَّثْقَفُوْكُمْ يَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَآءً وَّيَبْسُطُوْۤا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ وَاَلْسِنَتَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह तुम्हें पाएं | वह हो जाएं | तुम्हारे | दुश्मन | और वह खोलें | तुम पर | अपने हाथ | और अपनी ज़बानें |

بِالسُّوْٓءِ وَوَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ ② لَنْ تَنْفَعَكُمْ اَرْحَامُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बुराई के साथ | और वह चाहते हैं | काश तुम काफ़िर हो जाओ | 2 | तुम्हें हरगिज़ नफ़ा न देंगे | तुम्हारे रिश्ते | और न | तुम्हारी औलाद |

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ③ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क़ियामत के दिन | वह (अल्लाह) फ़ैसला कर देगा तुम्हारे दरमियान | और अल्लाह | जो तुम करते हो | देखता है | 3 | बेशक है | तुम्हारे लिए |

اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ ۚ اِذْ قَالُوْا لِقَوْمِهِمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| चाल (नमूना) बेहतरीन | में | इब्राहीम (अ) | और जो | उस के साथ | जब उन्हों ने कहा | अपनी क़ौम को |

اِنَّا بُرَءٰٓؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؗ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक हम लातअल्लुक़ | तुम से | और उन से जिन की | तुम बन्दगी करते हो | अल्लाह के सिवा | हम मुन्किर हैं | तुम्हारे | और ज़ाहिर हो गई | हमारे दरमियान |

وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَآءُ اَبَدًا حَتّٰى تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗۤ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम्हारे दरमियान | अदावत | और बुग़्ज़ (दुश्मनी) | हमेशा के लिए | यहां तक कि | तुम ईमान ले आओ | अल्लाह पर | वाहिद |

اِلَّا قَوْلَ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ لَاَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَاۤ اَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर कहना | इब्राहीम (अ) | अपने बाप से | अलबत्ता मैं ज़रूर मग़फ़िरत मांगूँगा | तुम्हारे लिए | और नहीं | मैं इख़्तियार रखता | तुम्हारे लिए | अल्लाह से-के आगे |

مِنْ شَيْءٍ ؕ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَاِلَيْكَ اَنَبْنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ④

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुछ भी | ऐ हमारे रब | तुझ पर | हम ने भरोसा किया | और तेरी तरफ़ | हम ने रुजूअ किया | और तेरी तरफ़ | वापसी | 4 |

معانقة ١٦ عند المتأخرين ١٢ السماع الوقف على القيمة ١٢

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तू ही | बेशक तू | ऐ हमारे रब | हमें | और बख़्श दे | कुफ़्र किया (काफ़िर) | उन के लिए जिन्हों ने | आज़माइश (तख़्तए मश्क़) | हमें न बना | ऐ हमारे रब |

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٥﴾ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْهِمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उम्मीद रखना है | उस के लिए जो | बेहतरीन | चाल (नमूना) | उन में | तुम्हारे लिए | तहक़ीक़ (यक़ीनन) है | 5 | हिक्मत वाला | ग़ालिब |

ع ١ ٦ اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | सतौदा सिफ़ात | वह बेनियाज़ | तो बेशक अल्लाह | रूगर्दानी करेगा | और जो जिस | और आख़िरत का दिन | अल्लाह |

عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ۚ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दोस्ती | उन से | तुम अ़दावत रखते हो | उन लोगों के | और दरमियान | तुम्हारे दरमियान | वह कर दे | कि | क़रीब है कि अल्लाह |

وَاللّٰهُ قَدِيْرٌ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧﴾ لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो लोग | से | तहक़ीक़ मना नहीं करता अल्लाह | 7 | रहम करने वाला | बख़्शने वाला | और अल्लाह | क़ुदरत रखने वाला | और अल्लाह |

لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِى الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कि तुम दोस्ती करो उन से | तुम्हारे घर (जमा) | से | और उन्हों ने तुम्हें नहीं निकाला | दीन में | तुम से नहीं लड़ते |

وَتُقْسِطُوْٓا اِلَيْهِمْ ۚ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ﴿٨﴾ اِنَّمَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | तुम्हें मना करता है अल्लाह | इस के सिवा नहीं | 8 | इंसाफ़ करने वाले | महबूब रखता है | बेशक अल्लाह | उन से | और तुम इंसाफ़ करो |

الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِى الدِّيْنِ وَاَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ وَظٰهَرُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने मदद की | तुम्हारे घर | से | और उन्हों ने तुम्हें निकाला | दीन में | तुम से लड़ें | जो लोग |

عَلٰٓى اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | ज़ालिम (जमा) | वह | तो वही लोग | और जो उन से दोस्ती रखेगा | कि तुम दोस्ती करो उन से | तुम्हारे निकालने पर |

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ۚ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तो उन का इम्तिहान कर लिया करो | मुहाजिर औरतें | मोमिन औरतें | जब तुम्हारे पास आएं | ईमान वालो | ऐ |

اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तो तुम उन्हें वापस न करो | मोमिन औरतें | तुम उन्हें जान लो | पस अगर | उन के ईमान को | अल्लाह ख़ूब जानता है |

اِلَى الْكُفَّارِ ۚ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ۚ وَاٰتُوْهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम उन को देदो | उन औरतों के लिए | वह हलाल है | और न वह मर्द | उन के लिए | हलाल | वह औरतें नहीं | काफ़िरों | तरफ़ |

مَّآ اَنْفَقُوْا ۚ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के मेहर | तुम उन्हें देदो | जब | कि तुम उन औरतों से निकाह कर लो | तुम पर | और कोई गुनाह नहीं | जो उन्हों ने ख़र्च किया |

وَلَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسْئَلُوْا مَآ اَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْئَلُوْا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और चाहिए कि वह मांग लें | जो तुम ने ख़र्च किया | और तुम मांग लो | काफ़िर औरतें | शादी की रिश्ता | और तुम न क़ब्ज़ा रखो |

مَآ اَنْفَقُوْا ۚ ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ ۚ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | हिक्मत वाला | जानने वाला | और अल्लाह | तुम्हारे दरमियान | वह फ़ैसला करता है | अल्लाह का हुक्म | यह | जो उन्हों ने ख़र्च किया |

ऐ हमारे रब! हमें न बना फ़ित्ना काफ़िरों के लिए और हमें बख़्श दे ऐ हमारे रब! बेशक तू ही ग़ालिब हिक्मत वाला है। (5)

यक़ीनन तुम्हारे लिए उन में बेहतरीन नमूना है (यानि) उस के लिए जो उम्मीद रखता है अल्लाह (से मुलाक़ात) की और आख़िरत के दिन की, और जिस ने रूगर्दानी की तो बेशक अल्लाह बेनियाज़ सतौदा सिफ़ात है। (6)

क़रीब है कि अल्लाह तुम्हारे दरमियान और उन लोगों के दरमियान दोस्ती कर दे जिन से तुम अ़दावत रखते हो, और अल्लाह क़ुदरत रखने वाला है, और अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (7)

अल्लाह तुम्हें मना नहीं करता उन लोगों से जो तुम से दीन (के बारे में) नहीं लड़े और उन्हों ने तुम्हें नहीं निकाला तुम्हारे घरों से, कि तुम उन से दोस्ती करो और उन से इंसाफ़ करो, बेशक अल्लाह इंसाफ़ करने वालों को महबूब रखता है। (8)

इस के सिवा नहीं कि अल्लाह तुम्हें मना करता है कि जो लोग तुम से (दीन के बारे) में लड़े और उन्हों ने तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला और तुम्हारे निकालने में (निकालने वालों की) मदद की, तुम उन से दोस्ती करो, और जो उन से दोस्ती रखेगा तो वही लोग ज़ालिम हैं। (9)

ऐ ईमान वालो! तुम्हारे पास मोमिन मुहाजिर औरतें आएं तो उन का इम्तिहान कर लिया करो, अल्लाह ख़ूब जानता है उन के ईमान को, पस अगर तुम उन्हें जान लो कि मोमिन हैं तो तुम उन्हें काफ़िरों की तरफ़ वापस न करो, वह (मोमिन मुहाजिरात) हलाल नहीं हैं उन (काफ़िरों) के लिए और वह (काफ़िर) उन औरतों के लिए हलाल नहीं, और तुम उन (काफिर शोहरों) को देदो जो उन्हों ने खर्च किया हो और तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम उन मुहाजिर औरतों से निकाह कर लो जब तुम उन्हें उन के मेहर देदो, और तुम काफ़िर औरतों को अपने निकाह में न रोके रहो और तुम (कुफ़्फ़ार से) मांग लो जो तुम ने खर्च किया हो, और चाहिए कि वह (काफ़िर) तुम से मांग लें जो उन्हों ने ख़र्च किया हो, यह अल्लाह का हुक्म है, वह तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करता है, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (10)

और अगर कुफ़्फ़ार की तरफ़ (रह जाने से) तुम्हारी बीवियों में से कोई तुम्हारे हाथ से निकल जाए तो कुफ़्फ़ार को (इस तरह से) सज़ा दो (कि जो औरतें मदीना आगईं उन के मेह्र वापस देने के बजाए अपने पास रख कर) उन को दो जिन की औरतें जाती रहीं, जिस क़द्र उन्हों ने ख़र्च किया हो, और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान रखते हो। (11)

ऐ नबी (स)! जब आप (स) के पास आएं मोमिन औरतें इस पर बैअत करने के लिए कि वह अल्लाह के साथ किसी शै को शरीक न करेंगी और न चोरी करेंगी, और न ज़िना करेंगी, और न वह क़त्ल करेंगी अपनी औलाद को, और न बुहतान लाएंगी जो उन्हों ने अपने हाथों और अपने पाऊँ के दरमियान गढ़ा हो, और न वह आप (स) की नाफ़रमानी करेंगी नेक कामों में तो आप (स) उन से बैअत ले लें, और उन के लिए अल्लाह से मग़्फ़िरत मांगें, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रह्म करने वाला है। (12)

ऐ ईमान वालो! तुम उन लोगों से दोस्ती न रखो जिन पर अल्लाह ने गज़ब किया, वह आख़िरत से ना उम्मीद हो चुके हैं जैसे क़ब्रों में पड़े हुए काफ़िर मायूस हैं। (13)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है, और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (1)

ऐ ईमान वालो! तुम क्यों कहते हो वह जो तुम करते नहीं? (2)

अल्लाह के नज़्दीक बड़ी नापसंदीदा बात है कि तुम वह कहो जो तुम करते नहीं (3)

बेशक अल्लाह उन लोगों को दोस्त रखता है जो उस के रास्ते में सफ़ बस्ता हो कर लड़ते हैं गोया कि वह एक इमारत हैं सीसा पिलाई हुई। (4)

وَاِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ اِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَاٰتُوا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस दो | तो उन (कुफ़्फ़ार) को सज़ा दो | कुफ़्फ़ार की तरफ़ | तुम्हारी बीवियां | से | कोई | तुम्हारे हाथ से निकल जाए | और अगर |

الَّذِيْنَ ذَهَبَتْ اَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَآ اَنْفَقُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जिस | और डरो अल्लाह से | जो उन्हों ने ख़र्च किया | उस क़द्र | उन की औरतें | जाती रहीं | उन को जिन की |

اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿١١﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ يُبَايِعْنَكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप से बैअत करने के लिए | मोमिन औरतें | आप के पास आएं | जब | ऐ नबी (स) | 11 | ईमान रखते हो | उस पर | तुम |

عَلٰٓى اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِيْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और न ज़िना करेंगी | और न चोरी करेंगी | किसी शै को | अल्लाह के साथ | वह शरीक न करेंगी | इस पर कि |

وَلَا يَقْتُلْنَ اَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَاْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| जो उन्हों ने गढ़ा हो | बुहतान से | और न लाएंगी | अपनी औलाद | और न वह क़त्ल करेंगी |

بَيْنَ اَيْدِيْهِنَّ وَاَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तो आप (स) उन से बैअत ले लें | नेक कामों में | और न आप (स) की नाफ़रमानी करेंगी | और अपने पाऊँ | अपने हाथों के दरमियान |

وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान वालो | ऐ | 12 | रह्म करने वाला | बख़्शने वाला | बेशक अल्लाह | उन के लिए अल्लाह से | और मग़्फ़िरत मांगें |

لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوْا مِنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| से | वह ना उम्मीद हो चुके | उन पर | अल्लाह ने ग़ज़ब किया | वह लोग | तुम दोस्ती न रखो |

الْاٰخِرَةِ كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ اَصْحٰبِ الْقُبُوْرِ ﴿١٣﴾ ع ٢ ٨

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 13 | क़ब्रों वाले (मुर्दे) | से | काफ़िर (जमा) | मायूस हैं | जैसे | आख़िरत |

## آيَاتُهَا ١٤ ❀ (٦١) سُوْرَةُ الصَّفِّ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 — (61) सूरतुस सफ़ — सफ़ (मोरचा बंदी) — आयात 14

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | और वह | ज़मीन में | और जो | आस्मानों में | जो | पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की |

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٢﴾ كَبُرَ مَقْتًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नापसंदीदा | बड़ी | 2 | तुम करते नही | जो | तुम कहते हो | क्यों | ईमान वालो | ऐ |

عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दोस्त रखता है | बेशक अल्लाह | 3 | तुम करते नही | जो | तुम कहो | कि | अल्लाह के नज़्दीक |

الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ﴿٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | सीसा पिलाई हुई | एक इमारत | गोया कि वह | सफ़ बस्ता हो कर | उस के रास्ते में | जो लोग लड़ते हैं |

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِىْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّىْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि मैं | और यक़ीनन तुम जान चुके हो | तुम मुझे ईज़ा पहुँचाते हो | क्यों | ऐ मेरी कौम | अपनी कौम से | मूसा (अ) | कहा | और जब |

رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ۗ فَلَمَّا زَاغُوْٓا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हिदायत नहीं देता | और अल्लाह | उन के दिल | अल्लाह ने कज कर दिए | उन्हों ने कज रवी की | पस जब | तुम्हारी तरफ़ | अल्लाह का रसूल |

الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٥ وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّىْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक मैं | ऐ बनी इस्राईल | मरयम (अ) का बेटा | ईसा (अ) | कहा | और जब | 5 | नाफ़रमान (जमा) | लोग |

رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَىَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًۢا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और ख़ुशख़बरी देने वाला | तौरत | से | मुझ से पहले | उस की जो | तस्दीक़ करने वाला | तुम्हारी तरफ़ | अल्लाह का रसूल |

بِرَسُوْلٍ يَّاْتِىْ مِنْۢ بَعْدِى اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ ۗ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने कहा | वाज़ेह दलाइल के साथ | वह आए उन के पास | फिर जब | अहमद | उस का नाम | मेरे बाद | वह आएगा | एक रसूल की |

هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٦ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह | झूट | अल्लाह पर | वह बुहतान बान्धे | उस से जो | बड़ा ज़ालिम | और कौन | 6 | खुला जादू | यह |

يُدْعٰٓى اِلَى الْاِسْلَامِ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٧ يُرِيْدُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह चाहते हैं | 7 | ज़ालिम लोगों | हिदायत नहीं देता | और अल्लाह | इस्लाम की तरफ़ | बुलाया जाता है |

لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ ۗ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝٨

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | काफ़िर नाख़ुश हों | और ख़ाह | अपना नूर | पूरा करने वाला | और अल्लाह | अपने फूंकों से | अल्लाह का नूर | कि बुझादें |

هُوَ الَّذِىْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दीन पर | ताकि वह उसे ग़ालिब करदे | और दीने हक़ | हिदायत के साथ | अपना रसूल (स) | वही जिस ने भेजा |

كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝٩ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ ع

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तिजारत पर | मैं तुम्हें बतलाऊँ | क्या | ईमान वालो | ऐ | 9 | मुश्रिक (जमा) | और ख़ाह नाख़ुश हों | तमाम |

تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝١٠ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम जिहाद करो | और उसका रसूल (स) | अल्लाह पर | तुम ईमान लाओ | 10 | दर्दनाक अज़ाब | से | तुम्हें नजात दे |

فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۗ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर | तुम्हारे लिए बेहतर | यह | और अपनी जानों | अपने मालों से | अल्लाह का रास्ता | में |

كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝١١ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के नीचे से | जारी हैं | बाग़ात | और वह तुम्हें दाख़िल करेगा | तुम्हारे गुनाह | तुम्हें | वह बख़्श देगा | 11 | तुम जानते हो |

الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِىْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ۗ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝١٢

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12 | बड़ी | कामयाबी | यह | हमेशा | बाग़ात | में | पाकीज़ा | और मकानात | नहरें |

وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ۗ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٣

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 13 | और मोमिनों को ख़ुशख़बरी दें | क़रीब | और फ़तह | अल्लाह से | मदद | तुम उसे बहुत चाहते हो | और एक और |

और (याद करो) जब मूसा (अ) ने अपनी क़ौम से कहाः ऐ मेरी क़ौम! तुम मुझे क्यों ईज़ा पहुँचाते हो? और यक़ीनन तुम जान चुके हो कि मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ, पस जब उन्हों ने कज रवी की तो अल्लाह ने उन के दिलों को कज कर दिया, और अल्लाह हिदायत नहीं देता नाफ़रमान लोगों को। (5)

और (याद करो) जब मरयम (अ) के बेटे ईसा (अ) ने कहाः ऐ बनी इस्राईल! बेशक मैं अल्लाह का रसूल हूँ तुम्हारी तरफ़, उस की तस्दीक़ करने वाला जो मुझ से पहले तौरेत (आई) और एक रसूल (स) की ख़ुशख़बरी देने वाला जो मेरे बाद आएगा जिस का नाम अहमद (स) होगा, फिर जब वह उन के पास वाज़ेह दलाइल के साथ आए तो उन्हों ने कहा यह तो खुला जादू है। (6)

और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन है जो अल्लाह पर झूट बुहतान बान्धे जबकि वह इस्लाम की तरफ़ बुलाया जाता है, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (7)

वह चाहते हैं कि अल्लाह का नूर अपने फूंकों से बुझादें, और अल्लाह अपना नूर पूरा करने वाला है ख़ाह काफ़िर नाख़ुश हों। (8)

वही है जिस ने अपने रसूल (स) को हिदायत और दीने हक़ के साथ भेजा ताकि उसे तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे और ख़ाह मुश्रिक नाख़ुश हों। (9)

ऐ ईमान वालो! क्या मैं तुम्हें ऐसी तिजारत बतलाऊँ? जो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से नजात दे। (10)

तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के रसूल (स) पर और तुम अल्लाह के रास्ते में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। (11)

वह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे से नहरें बहती हैं। और हमेशा के बाग़ात में पाकीज़ा मकानात हैं, यह बड़ी कामयाबी है। (12)

और वह दूसरी जिसे तुम बहुत चाहते हो (यानि) अल्लाह से मदद और क़रीबी फ़तह, और आप (स) मोमिनों को ख़ुशख़बरी दीजिए। (13)

ऐ ईमान वालो! तुम हो जाओ अल्लाह के मददगार जैसे मरयम (अ) के बेटे ईसा (अ) ने हवारियों को कहा कि कौन है अल्लाह की तरफ़ मेरा मददगार? तो कहा हवारियों ने कि हम अल्लाह के मददगार हैं, पस बनी इस्राईल का एक गिरोह ईमान ले आया और कुफ़्र किया एक गिरोह ने, तो हम ने उन के दुश्मनों पर ईमान वालों की मदद की, सो वह ग़ालिब हो गए। (14)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता है, जो बादशाह हक़ीक़ी, कमाल दरजा पाक, ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (1)

वही है जिस ने अनपढ़ों में एक रसूल (स) उन ही में से भेजा, वह उन्हें उस की आयतें पढ़ कर सुनाता है और उन्हें (बुराइयों से) पाक करता है और उन्हें सिखाता है किताब और दानिश्मन्दी की बातें, और बेशक वह लोग उस से पहले खुली गुमराही में थे। (2)

और उन के अ़लावा (उन को भी) जो अभी उन से नहीं मिले, वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (3)

यह अल्लाह का फ़ज़्ल है, वह जिस को चाहता है उसे देता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (4)

उन लोगों की मिसाल जिन पर तौरेत लादी (उतारी) गई, फिर उन्हों ने उसे उठाया गधे की तरह जो किताबें लादे हुए है (उस पर कारबन्द न हुए), उन लोगों की हालत बुरी है जिन्हों ने अल्लाह की आयतों को झुटलाया, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (5)

आप (स) फ़रमा दें: ऐ यहूदियो! अगर तुम्हें घमंड है कि तुम दूसरे लोगों के अ़लावा (सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम) अल्लाह के दोस्त हो तो मौत की तमन्ना करो अगर तुम सच्चे हो। (6)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मरयम (अ) का बेटा | ईसा (अ) | कहा | जैसे | अल्लाह के मददगार | तुम हो जाओ | ईमान वालो | ऐ |

لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के मददगार | हम | हवारियों | कहा | अल्लाह की तरफ़ | मेरा मददगार | कौन | हवारियों को |

فَاٰمَنَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَكَفَرَتْ طَّآئِفَةٌ ۚ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एक गिरोह | और कुफ़्र किया | बनी इस्राईल | से - का | एक गिरोह | तो ईमान लाया |

فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰى عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ﴿١٤﴾ ع ٥ ٢ ١٠

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 14 | ग़ालिब | सो वह हो गए | उन के दुश्मनों पर | ईमान वाले | तो हम ने मदद की |

## آيَاتُهَا ١١ ❀ (٦٢) سُوْرَةُ الْجُمُعَةِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआ़त 2 | (62) सूरतुल जुमुअ़ह जुमा | आयात 11

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग़ालिब | कमाल पाक | बादशाह हक़ीक़ी | ज़मीन में | और जो | आस्मानों में | जो कुछ | पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की |

الْحَكِيْمِ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की आयतें | उन्हें | पढ़ कर सुनाता है | उन में से | एक रसूल (स) | अनपढ़ों में | उठाया (भेजा) | वही जिस ने | 1 | हिक्मत वाला |

وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۗ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता गुमराही में | इस से क़ब्ल | और तहक़ीक़ वह थे | हिक्मत (दानिश्मन्दी की बातें) | किताब | और उन्हें सिखाता है | और वह उन्हें पाक करता है |

مُّبِيْنٍ ﴿٢﴾ وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ۗ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٣﴾ ذٰلِكَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह | 3 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | और वह | उन से | कि वह अभी नहीं मिले | उन के | और अ़लावा | 2 | खुली |

فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٤﴾ مَثَلُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मिसाल | 4 | बड़े | फ़ज़्ल वाला | और अल्लाह | वह चाहता है | जिस को | वह देता है उसे | अल्लाह का फ़ज़्ल |

الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا ۗ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किताबें | वह लादे हुए है | गधा | मिसाल की तरह | उन्हों ने न उठाया उसे | फिर | तौरात | उन पर लादी गई | जिन लोगों पर |

بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हिदायत नहीं देता | और अल्लाह | अल्लाह की आयतों को | उन्हों ने झुटलाया | जिन्हों ने | वह लोग | मिसाल (हालत) | बुरी |

الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥﴾ قُلْ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْٓا اِنْ زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि तुम | तुम्हें ज़ओ़म (घमंड) है | अगर | यहूदियो | ऐ | आप (स) फ़रमा दें | 5 | ज़ालिम लोगों |

اَوْلِيَآءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٦﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | सच्चे | तुम हो | अगर | मौत | तो तुम तमन्ना करो | दूसरे लोगों के अ़लावा | से | अल्लाह के लिए | दोस्त |

وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗٓ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | ज़ालिमों को | खूब जानता है | और अल्लाह | उन के हाथों ने | भेजा आगे | उसके सबब जो | कभी भी | और वह उस की तमन्ना न करेंगे |

قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِیْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम लौटाए जाओगे | फिर | तुम्हें मिलने वाली | तो बेशक वह | उस से | तुम भागते हो | जिस से | बेशक मौत | आप (स) फ़रमादें |

١ ع٨ ١١ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٨﴾ يٰٓاَيُّهَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ | 8 | तुम करते थे | उस से जो | फिर वह तुम्हें आगाह कर देगा | और ज़ाहिर | तरफ़ (सामने) जानने वाला पोशीदा |

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِیَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ | तो तुम लपको | जुमा का दिन | से-की | नमाज़ के लिए | पुकारा जाए | जब | ईमान वालो |

ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۗ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٩﴾ فَاِذَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर जब | 9 | तुम जानते हो | अगर | तुम्हारे लिए | बेहतर | यह | खरीद ओ फ़रोख़्त | और तुम छोड़ दो | अल्लाह की याद |

قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِی الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह का फ़ज़्ल | से | और तुम तलाश करो | ज़मीन में | तो तुम फैल जाओ | नमाज़ | पूरी हो चुके |

وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٠﴾ وَاِذَا رَاَوْا تِجَارَةً

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तिजारत | वह देखते हैं | और जब | 10 | फ़लाह पाओ | ताकि तुम | बकसरत | और तुम याद करो अल्लाह को |

اَوْ لَهْوًا انْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قَآئِمًا ۗ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के पास | जो | फ़रमा दें | खड़ा | और आप (स) को छोड़ जाते है | उस की तरफ़ | वह दौड़ जाते है | खेल तमाशा | या |

٢ ع٢ ١٢ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ۗ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿١١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | रिज़्क़ देने वाला | बेहतर | और अल्लाह | तिजारत | और से | खेल तमाशा | से | बेहतर |

آيَاتُهَا ١١ ❀ (٦٣) سُوْرَةُ الْمُنٰفِقُوْنَ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

आयात 11 — (63) सूरतुल मुनाफ़िक़ून — रुकूआत 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وقف لازم اِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जानता है | और अल्लाह | अलबत्ता अल्लाह के रसूल | बेशक आप (स) | हम गवाही देते हैं | वह कहते हैं | मुनाफ़िक़ | जब आप (स) के पास आते हैं |

اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ۗ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١﴾ اِتَّخَذُوْٓا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने पकड़ा (बना लिया) | 1 | अलबत्ता झूटे | मुनाफ़िक़ (जमा) | बेशक | गवाही देता है | और अल्लाह | अलबत्ता उसके रसूल (स) | यक़ीनन आप (स) |

اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | वह करते हैं | बुरा जो | बेशक वह | अल्लाह का रास्ता | से | पस वह रोकते हैं | ढाल | अपनी क़समों को |

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٣﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | नहीं समझते | पस वह | उन के दिल | पर | तो मुह्‌र लगादी गई | फिर उन्हों ने कुफ़्र किया | ईमान लाए | इस लिए कि वह | यह |

और उस के सबब जो उन के हाथों ने आगे भेजा है वह कभी भी मौत की तमन्ना न करेंगे, और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानता है। (7) आप (स) फ़रमा दें: बेशक जिस मौत से तुम भागते हो वह यक़ीनन तुम्हें मिलने वाली है (आ पकड़ेगी) फिर तुम उस के सामने लौटाए जाओगे जो जानने वाला है पोशीदा और ज़ाहिर का, फिर वह तुम्हें उस से आगाह कर देगा जो तुम करते थे। (8) ऐ ईमान वालो! जब पुकारा जाए (अज़ान दी जाए) जुमा के दिन नमाज़े (जुमा) के लिए तो तुम (फ़ौरन) अल्लाह की याद के लिए लपको और खरीद ओ फ़रोख़्त छोड़ दो, यह बेहतर है तुम्हारे लिए अगर तुम जानते हो। (9) फिर जब नमाज़ पूरी हो चुके तो तुम ज़मीन में फैल जाओ और तलाश करो अल्लाह का फ़ज़्ल (रोज़ी) और तुम अल्लाह को बकस्रत याद करो ताकि तुम फ़लाह पाओ। (10) और जब वह देखते हैं तिजारत या खेल तमाशा तो वह उस की तरफ़ दौड़ जाते हैं और आप (स) को खड़ा छोड़ जाते हैं, आप (स) फ़रमा दें कि जो अल्लाह के पास है वह बेहतर है खेल तमाशे से और तिजारत से, और अल्लाह सब से बेहतर रिज़्क़ देने वाला। (11)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्‌रबान, रह्‌म करने वाला है

जब मुनाफ़िक़ आप (स) के पास आते हैं तो कहते हैं: हम गवाही देते हैं कि बेशक आप अल्लाह के रसूल (स) हैं और अल्लाह जानता है कि यक़ीनन आप (स) उस के रसूल हैं, और अल्लाह गवाही देता है कि बेशक मुनाफ़िक़ झूटे हैं। (1) उन्हों ने अपनी क़समों को ढाल बना लिया है, पस वह (दूसरों को भी) रोकते हैं अल्लाह के रास्ते से, बेशक बुरा है जो वह करते हैं। (2) यह इस लिए है कि वह ईमान लाए, फिर उन्हों ने कुफ़्र किया तो मुह्‌र लगा दी गई उन के दिलों पर, पस वह नहीं समझते। (3)

और जब आप (स) उन्हें देखें तो उन के जिस्म आप (स) को ख़ुशनुमा मालूम हों, और अगर वह बात करें तो आप (स) उन की बातों को (ग़ौर से) सुनें, गोया कि वह लकड़ियां हैं दीवार (के सहारे) लगाई हुई, वह हर बुलन्द आवाज़ को अपने ऊपर गुमान करते हैं, वह दुश्मन हैं, पस आप (स) उन से बचें, अल्लाह उन्हें ग़ारत करे, वह कहां फिरे जाते हैं। (4)
और जब उन से कहा जाए कि आओ, बख़्शिश की दुआ करें अल्लाह के रसूल (स) तुम्हारे लिए तो वह अपने सरों को फेर लेते हैं और आप (स) उन्हें देखें तो वह मुँह फेर लेते हैं और वह बड़ा ही तकब्बुर करने वाले हैं। (5)
उन पर (उन के हक़ में) बराबर है कि आप (स) उन के लिए बख़्शीश मांगें या न मांगें, अल्लाह उन्हें हरगिज न बख़्शेगा, बेशक अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (6)
वही लोग हैं जो कहते हैं कि तुम उन लोगों पर ख़र्च न करो जो अल्लाह के रसूल (स) के पास हैं यहां तक कि वह मुन्तशिर हो जाएं, और आस्मानों और जमीन के ख़ज़ाने अल्लाह के लिए हैं और लेकिन मुनाफ़िक़ समझते नहीं। (7)
वह कहते हैं: अगर हम मदीने की तरफ़ लौट कर गए तो इज़्ज़तदार (मुनाफ़िक़) निहायत ज़लील को वहां से निकाल देगा, और इज़्ज़त तो अल्लाह और उस के रसूल (स) और मोमिनों के लिए है और लेकिन मुनाफ़िक़ नहीं जानते। (8)
ऐ ईमान वालो! तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न कर दें, और जो यह करेंगे तो वही लोग ख़सारे में पड़ने वाले हैं। (9)
और हम ने तुम्हें जो दिया है उस में से खर्च करो उस से क़ब्ल कि आजाए तुम में से किसी को मौत तो वह कहे कि ऐ मेरे रब! तू ने मुझे क्यों एक करीबी मुद्दत तक मोहलत न दी? तो मैं सदक़ा करता और मैं नेकोकारों में से होता। (10)
और जब उस की अजल आगई तो अल्लाह हरगिज किसी को ढील न देगा, और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (11)

وَاِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ اَجْسَامُهُمْ ۭ وَاِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ۭ كَاَنَّهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गोया कि वह | उन की बातें | आप सुनें | और अगर वह बात करें | उन के जिस्म | तो आप को ख़ुशनुमा मालूम हों | आप (स) उन्हें देखें | और जब |

خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ۭ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۭ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस आप (स) उन से बचें | दुश्मन | वह | अपने ऊपर | हर बुलन्द आवाज़ | वह गुमान करते हैं | दीवार से लगाई हुई | लकड़ियां |

قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۡ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٤﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे लिए | बख़्शिश की दुआ करें | तुम आओ | कहा जाए उन से | और जब | 4 | वह फिरे जाते हैं | कहां | उन्हें मारे (ग़ारत करे) अल्लाह |

رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ وَرَاَيْتَهُمْ يَصُدُّوْنَ وَهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | बड़ा ही तकब्बुर करने वाले हैं | और वह | वह रुकते हैं | और आप (स) उन्हें देखें | अपने सरों को | वह फेर लेते हैं | अल्लाह के रसूल |

سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ۭ لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ۭ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन को | हरगिज़ नही बख़्शेगा अल्लाह | उन के लिए | आप (स) न बख़्शिश मांगें | या | उन के लिए | आप (स) बख़्शिश मांगें | उन पर | बराबर |

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٦﴾ هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| न खर्च करो तुम | वह कहते हैं | वह लोग जो | वही | 6 | नाफ़रमान लोग | हिदायत नही देता | बेशक अल्लाह |

عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ۭ وَلِلّٰهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्मानों | और अल्लाह के लिए ख़ज़ाने | वह मुन्तशिर हो जाएं | यहां तक कि | अल्लाह के रसूल | पास | जो | पर |

وَالْاَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٧﴾ يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَآ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर हम लौट कर गए | वह कहते हैं | 7 | वह नही समझते | मुनाफ़िक़ (जमा) | और लेकिन | और ज़मीन |

اِلَى الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ۭ وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उसके रसूल (स) के लिए | और अल्लाह के लिए इज़्ज़त | निहायत ज़लील | वहां से | इज़्ज़तदार | ज़रूर निकाल देगा | मदीने की तरफ़ |

وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٨﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ع ١ ٨ ١٣

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमान वालो | ऐ | 8 | नहीं जानते | मुनाफ़िक़ (जमा) | और लेकिन | और मोमिनों के लिए |

لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह | करगा | और जो | अल्लाह की याद | से | और न तुम्हारी औलाद | तुम्हारे माल | तुम्हें ग़ाफ़िल न कर दें |

فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩﴾ وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस से क़ब्ल | जो हम ने तुम्हें दिया | से | और तुम ख़र्च करो | 9 | ख़सारा पाने वाले | वह | तो वही लोग |

اَنْ يَّاْتِىَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَآ اَخَّرْتَنِىْٓ اِلٰٓى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तक | तू ने मुझे मोहलत दी | क्यों न | ऐ मेरे रब | तो वह कहे | मौत | तुम में से किसी को | कि आजाए |

اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠﴾ وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और हरगिज़ ढील न देगा अल्लाह | 10 | नेकोकारों | से | और मैं होता | तो मैं सदक़ा करता | एक क़रीब की मुद्दत |

نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١١﴾ ع ٢ ١٣

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | तुम करते हो | उस से जो | बाख़बर | और अल्लाह | उस की अजल | जब आगई | किसी को |

## آيَاتُهَا ١٨ ۞ (٦٤) سُوْرَةُ التَّغَابُنِ ۞ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 | (64) सूरतुत तग़ाबुन हार जीत | आयात 18

### بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उसी के लिए | बादशाही | उसी के लिए | ज़मीन में | और जो | आस्मानों में | जो | पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की |

الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हें पैदा किया | वही जिस ने | 1 | कुदरत रखने वाला | हर शै | पर | और वह | तमाम तारीफ़ें |

فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | देखने वाला | तुम करते हो | उस को जो | और अल्लाह | कोई मोमिन | और तुम में से | कोई काफ़िर | तो तुम में से |

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हें सूरतें दीं | तो बहुत अच्छी | और तुम्हें सूरतें दीं | हक़ के साथ | और ज़मीन | आस्मानों | उस ने पैदा किया |

وَإِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿٣﴾ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जानता है | और ज़मीन | आस्मानों में | जो | वह जानता है | 3 | वापसी | और उसी की तरफ़ |

مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٤﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 4 | दिलों के भेद | जानने वाला | और अल्लाह | और जो तुम ज़ाहिर करते हो | जो तुम छुपाते हो |

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ فَذَاقُوْا وَبَالَ أَمْرِهِمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने काम | वबाल | तो उन्हों ने चख लिया | इस से क़ब्ल | जिन लोगों ने कुफ़्र किया | ख़बर | क्या नहीं आई तुम्हारे पास |

وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ ﴿٥﴾ ذٰلِكَ بِأَنَّهُ كَانَتْ تَّأْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के रसूल | आते थे उनके पास | इस लिए कि वह | यह | 5 | अज़ाब दर्दनाक | और उन के लिए |

بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْا أَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और बेनियाज़ी फ़रमाई | और वह फिर गए | तो उन्हों ने कुफ़्र किया | वह हिदायत देते हैं हमें | क्या बशर | तो वह कहते | वाज़ेह निशानियों के साथ |

اللّٰهُ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿٦﴾ زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا أَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह हरगिज़ न उठाए जाएंगे | कि | वह काफ़िर हुए | उन लोगों ने जो | दावा किया | 6 | सतौदा सिफ़ात | बेनियाज़ | और अल्लाह | अल्लाह |

قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जो तुम करते थे | फिर अलबत्ता तुम्हें ज़रूर जतलाया जाएगा | अलबत्ता तुम ज़रूर उठाए जाओगे | मेरे रब की क़सम | हाँ | फ़रमा दें |

وَذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿٧﴾ فَآمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उस के रसूल (स) | अल्लाह पर | पस तुम ईमान लाओ | 7 | आसान | अल्लाह पर | और यह |

وَالنُّوْرِ الَّذِيْ أَنْزَلْنَا وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | बाख़बर | जो तुम करते हो उस से | और अल्लाह | हम ने नाज़िल किया | वह जो | और नूर |

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता है जो भी आस्मानों में और जो भी ज़मीन में है, उसी के लिए है बादशाही और उसी के लिए हैं तमाम तारीफ़ें, और वह हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (1) वही है जिस ने तुम्हें पैदा किया, सो तुम में से कोई काफ़िर है और तुम में से कोई मोमिन है, और अल्लाह जो तुम करते हो उस का है देखने वाला। (2) उस ने आस्मानों और ज़मीन को हक़ (दुरुस्त तदबीर) के साथ पैदा किया और तुम्हें सूरतें दीं तो तुम्हें बहुत ही अच्छी सूरतें दीं, और उसी की तरफ़ वापसी है। (3) वह जानता है जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है और वह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो, और अल्लाह दिलों के भेद जानने वाला है। (4) क्या तुम्हारे पास उन लोगों की ख़बर नहीं आई जिन्हों ने इस से पहले कुफ़्र किया, तो उन्हों ने वबाल चख लिया अपने काम का, और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (5) यह इस लिए हुआ कि उन के पास रसूल वाज़ेह निशानियों के साथ आते थे तो वह कहते थेः क्या बशर हिदायत देते हैं हमें? तो उन्हों ने कुफ़्र किया और फिर गए, और अल्लाह ने बेनियाज़ी फ़रमाई और अल्लाह बेनियाज़ सतौदा सिफ़ात (सज़ावारे हम्द) है। (6) उन लोगों ने दावा किया जो काफ़िर हुए कि वह हरगिज़ (दोबारा) नहीं उठाए जाएंगे। आप (स) फ़रमा दें, हाँ! क्यों नहीं! मेरे रब की क़सम! तुम ज़रूर उठाए जाओगे, फिर तुम्हें जतला दिया जाएगा जो तुम करते थे, और यह अल्लाह पर आसान है। (7) पस तुम अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान ले आओ और उस नूर पर जो हम ने नाज़िल किया है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (8)

जिस दिन वह तुम्हें जमा करेगा (यानि) क़ियामत के दिन, यह हार जीत का दिन है, और जो अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छे काम करे तो वह (अल्लाह) उस से उस की बुराइयां दूर कर देगा और उसे (उन) बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें जारी हैं, वह उन में हमेशा हमेशा रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। (9)
और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, उस में हमेशा रहेंगे और यह है बुरी पलटने की जगह। (10)
कोई मुसीबत नहीं पहुँचती मगर अल्लाह के इज्न से, और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाता है वह उस के दिल को हिदायत देता है, और अल्लाह हर शै को जानने वाला है। (11)
और तुम अल्लाह की इताअत करो और रसूल (स) की इताअत करो, फिर अगर तुम फिर गए तो इस के सिवा नहीं कि हमारे रसूल (स) के ज़िम्मे साफ़ साफ़ पहुँचा देना है। (12)
अल्लाह - उस के सिवा कोई माबूद नहीं, पस मोमिनों को अल्लाह पर भरोसा करना चाहिए। (13)
ऐ ईमान वालो! बेशक तुम्हारी बाज़ बीवियां और तुम्हारी बाज़ औलाद तुम्हारे (दीन के) दुश्मन हैं, पस तुम उन से बचो, और अगर तुम माफ़ कर दो और दरगुज़र करो और तुम बख़्श दो तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेह्रबान है। (14)
इस के सिवा नहीं कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद आज़माइश हैं, और अल्लाह के पास बड़ा अजर है। (15)
पस जहां तक हो सके तुम अल्लाह से डरो और सुनो और इताअत करो और ख़र्च करो (यह) तुम्हारे हक़ में बेहतर है, और जो अपने नफ़्स की बख़ीली से बचा लिया गया तो यही लोग फ़लाह (दो जहान में कामयाबी) पाने वाले हैं। (16)
अगर तुम अल्लाह को क़र्ज़े हस्ना दोगे तो वह तुम्हारे लिए उसे दो चन्द कर देगा और तुम्हें बख़्शदेगा, और अल्लाह क़द्र शनास, बुर्दबार है। (17)
(वह) जानने वाला है पोशीदा और ज़ाहिर का, ग़ालिब, हिक्मत वाला। (18)

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۗ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह पर | वह ईमान लाए | और जो | खोने या पाने (हार जीत) का दिन | यह | जमा होने (क़ियामत) के दिन | वह जमा करेगा तुम्हें | जिस दिन |

وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जारी हैं | बाग़ात | और वह उसे दाख़िल करेगा | उस की बुराइयां | उस से | वह दूर कर देगा | अच्छे | और वह काम करे |

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۗ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | बड़ी कामयाबी | यह | हमेशा | उन में | हमेशा रहेंगे | नहरें | उन के नीचे |

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | हमेशा रहेंगे | दोज़ख़ वाले | यही लोग | हमारी आयतों को | और उन्हों ने झुटलाया | और जिन लोगों ने कुफ़्र किया |

وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٠﴾ مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ وَمَنْ ع ١ ١٠ ١٥

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | अल्लाह के इज्न से | मगर | कोई मुसीबत | नहीं पहुँची | 10 | पलटने की जगह (ठिकाना) | और बुरी |

يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ ۗ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١١﴾ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम इताअ़त करो अल्लाह की | 11 | जानने वाला | हर शै को | और अल्लाह | उस का दिल | हिदायत देता है | अल्लाह पर | वह ईमान लाता है |

وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٢﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 12 | साफ़ साफ़ पहुँचा देना | हमारे रसूल (स) पर ज़िम्मे | तो इस के सिवा नहीं | फिर गए तुम | फिर अगर | और इताअ़त करो रसूल (स) की |

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۗ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٣﴾ يٰٓاَيُّهَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ | 13 | ईमान वाले | पस भरोसा करना चाहिए | और अल्लाह पर | उस के सिवा | नहीं कोई माबूद | अल्लाह |

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस तुम उन से बचो | तुम्हारे लिए | दुश्मन | और तुम्हारी औलाद | तुम्हारी बीवियां | से | बेशक | ईमान वालो |

وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَتَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤﴾ اِنَّمَآ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस के सिवा नहीं | 14 | मेह्रबान | बख़्शने वाला | तो बेशक अल्लाह | और तुम बख़्श दो | और तुम दरगुज़र करो | तुम माफ़ कर दो | और अगर |

اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۗ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٥﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस तुम डरो अल्लाह से | 15 | बड़ा अजर | उस के पास | और अल्लाह | आज़माइश | और तुम्हारी औलाद | तुम्हारे माल |

مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ۗ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे हक़ में | बेहतर | और तुम ख़र्च करो | और तुम इताअ़त करो | और तुम सुनो | जहां तक तुम से हो सके |

وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٦﴾ اِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर | 16 | फ़लाह पाने वाले | वह | तो यही लोग | अपनी जान | बख़ीली | बचा लिया गया | और जो |

تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और अल्लाह | और वह तुम्हें बख़्श देगा | तुम्हारे लिए | वह उस दो चन्द करदेगा | क़र्ज़ हस्ना | तुम क़र्ज़ दोगे अल्लाह को |

شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٧﴾ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾ ع ٢ ٨ ١٦

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | हिक्मत वाला | ग़ालिब | और ज़ाहिर | ग़ैब का जानने वाला | 17 | बुर्दबार | क़द्र शनास |

## آيَاتُهَا ١٢ ❀ (٦٥) سُوْرَةُ الطَّلَاقِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकुआत 2 (65) सूरतुत तलाक़ आयात 12

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम शुमार रखो | उन की इद्दत के लिए | तो उन्हें तलाक़ दो | औरतों | तुम तलाक़ दो | जब | ऐ नबी (स) |

الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और न वह (ख़ुद) निकलें | उन के घरों | से | तुम न निकालो उन्हें | तुम्हारा रब | और तुम डरो अल्लाह से | इद्दत |

اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۗ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۗ وَمَنْ يَّتَعَدَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आगे निकलेगा | और जो | अल्लाह की हुदूद | और यह | खुली | बेहयाई | यह कि वह करें | मगर |

حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ۗ لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के बाद | वह पैदा कर दे | मुमकिन है कि अल्लाह | तुम्हें खबर नहीं | अपनी जान | तो तहक़ीक़ उस ने ज़ुल्म किया | अल्लाह की हुदूद |

اَمْـرًا ﴿١﴾ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْهُنَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम उन्हें जुदा कर दो | या | अच्छे तरीक़े से | तो उन को रोक लो | अपनी मीआद | वह पहुँच जाएं | फिर जब | 1 | कोई और बात |

بِمَعْرُوْفٍ وَّاَشْهِدُوْا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَاَقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ۗ ذٰلِكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| यही है | गवाही अल्लाह के लिए | और तुम क़ाइम करो | अपने में से | दो (2) इंसाफ़ पसंद | और तुम गवाह कर लो | अच्छे तरीक़े से |

يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۗ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह अल्लाह से डरता है | और जो | और आख़िरत का दिन | अल्लाह पर | जो ईमान रखता है | जिस की नसीहत की जाती है |

يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ﴿٢﴾ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۗ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह भरोसा करता है | और जो | उसे गुमान नहीं होता | जहां से | और वह उसे रिज़्क़ देता है | 2 | नजात की राह | वह उस के लिए निकाल देता है |

عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ۗ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ۗ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ﴿٣﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | अन्दाज़ा | हर शान के लिए | बेशक कर रखा है अल्लाह | अपना काम | पहुँचने (पूरा करने) वाला | बेशक अल्लाह | उस के लिए काफ़ी है | तो वह | अल्लाह पर |

وَالّٰٓئِيْ يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآئِكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तो उन की इद्दत | अगर तुम्हें शुबाह हो | तुम्हारी बीवियां | से | हैज़ | से | ना उम्मीद हो गई हों | और जो औरतें |

ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ وَّالّٰٓئِيْ لَمْ يَحِضْنَ ۗ وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कि वज़अ हो जाएं | उन की इद्दत | और हम्ल वालियां | उन्हें हैज़ नहीं आया | और जो | महीने | तीन |

حَمْلَهُنَّ ۗ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ﴿٤﴾ ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के हुक्म | यह | 4 | आसानी | उस के काम में | उस के लिए | वह कर देगा | अल्लाह से डरेगा | और जो | उन के हम्ल |

اَنْزَلَهٗٓ اِلَيْكُمْ ۗ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗٓ اَجْرًا ﴿٥﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | अजर | उस को | और बड़ा देगा | उस की बुराइयां | उस से | वह दूर कर देगा | अल्लाह से डरेगा | और जो | तुम्हारी तरफ़ | उस ने यह उतारा है |

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ऐ नबी (स)! जब तुम औरतों को तलाक़ दो तो उन्हें उन की इद्दत के लिए तलाक़ दो और तुम इद्दत का शुमार रखो, और तुम डरो अल्लाह से जो तुम्हारा रब है, तुम उन्हें उन के घरों से न निकालो और न वह ख़ुद निकलें, मगर यह कि वह खुली बेहयाई की मुरतकिब हों, और यह अल्लाह की हुदूद हैं, और जो अल्लाह की हदों से आगे निकलेगा (तजावुज़ करेगा) तो तहक़ीक़ उस ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया, तुम्हें खबर नहीं कि शायद अल्लाह उस के बाद (रुजूअ की) कोई और बात (सबील) पैदा कर दे। (1) फिर जब वह पहुँच जाएं अपनी मीआद तो उन्हें अच्छे तरीक़े से रोक लो या उन्हें अच्छे तरीक़े से जुदा (रुख़्सत) कर दो, और अपने में से दो (2) इंसाफ़ पसंद गवाह कर लो और तुम (सिर्फ़) अल्लाह के लिए गवाही दो, यही है जिस की (हर उस शख़्स को) नसीहत की जाती है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है, और जो अल्लाह से डरता है तो वह उस के लिए नजात (मुख़्लिसी) की राह निकाल देता है। (2) और वह उसे रिज़्क़ देता है जहां से उसे गुमान (भी) नहीं होता, और जो अल्लाह पर भरोसा करता है तो वह उस के लिए काफ़ी है, बेशक अल्लाह अपने काम पूरे करने वाला है, बेशक अल्लाह ने हर बात के लिए अन्दाज़ा मुक़र्रर किया है। (3) और जो हैज़ से ना उम्मीद हो गई हों तुम्हारी बीवियों में से, अगर तुम्हें शुब्हा हो तो उन की इद्दत तीन महीने है और (यही हुक्म कमसिन के लिए भी है) जिन्हें हैज़ नहीं आया। और हम्ल वालियों की इद्दत उन के वज़अ हम्ल (बच्चा जनने) तक है और जो अल्लाह से डरेगा तो वह उस के लिए उस के काम में आसानी कर देगा। (4) यह अल्लाह के हुक्म हैं, उस ने तुम्हारी तरफ़ उतारे हैं और जो अल्लाह से डरेगा वह उस की बुराइयां उस से दूर फ़रमा देगा और उस को बड़ा अजर देगा। (5)

اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ وَلَا تُضَآرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कि तुम तंग करो | और तुम उन्हें ज़रर न पहुँचाओ | अपनी इस्तिताअ़त के मुताबिक़ | तुम रहते हो | जहां | तुम उन्हें रखो |

عَلَيْهِنَّ ۗ وَاِنْ كُنَّ اُولَاتِ حَمْلٍ فَاَنْفِقُوْا عَلَيْهِنَّ حَتّٰى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के हम्ल | यहां तक कि वज़अ़ हो जाएं | उन पर | तो ख़र्च करो तुम | हम्ल वालियां (हम्ल से) | वह हों | और अगर | उन्हें |

فَاِنْ اَرْضَعْنَ لَكُمْ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ۚ وَاْتَمِرُوْا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوْفٍ ۚ وَاِنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अगर | माक़ूल तरीक़े से | और तुम बाहम मश्वरा कर लिया करो आपस में | उन की उजरत | तो तुम उन्हें दो | तुम्हारे लिए | वह दूध पिलाएं | फिर अगर |

تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهٗٓ اُخْرٰى ﴿٦﴾ لِيُنْفِقْ ذُوْ سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهٖ ۖ وَمَنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | अपनी वस्अ़त | से मुताबिक़ | वस्अ़त वाला | चाहिए कि ख़र्च करे | 6 | कोई दूसरी | उस को | तो दूध पिलादेगी | तुम बाहम कश्मकश करोगे |

قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهٗ فَلْيُنْفِقْ مِمَّآ اٰتٰىهُ اللّٰهُ ۚ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا مَآ اٰتٰىهَا ۚ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिस क़द्र उस ने उसे दिया | मगर | किसी को | तक्लीफ़ नहीं देता अल्लाह | उसे अल्लाह ने दिया | उस में से जो | तो उसे ख़र्च करना चाहिए | उस का रिज़्क़ | उस पर | तंग कर दिया गया |

سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا ﴿٧﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ ع ١٧

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | उन्हों ने सरकशी की | बस्तियां | और कई | 7 | आसानी | तंगी के बदले | जल्द कर देगा अल्लाह |

اَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا شَدِيْدًا وَّعَذَّبْنٰهَا عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | बहुत बड़ी | अ़ज़ाब | और हम ने उन्हें अ़जाब दिया | सख़्ती से | हिसाब | तो हम ने उन का हिसाब लिया | और उस के रसूलों | अपने रब के हुक्म |

فَذَاقَتْ وَبَالَ اَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ اَمْرِهَا خُسْرًا ﴿٩﴾ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | अल्लाह ने तैयार किया है | 9 | ख़सारा | उन का काम | अन्जाम | और हुआ | अपना काम | वबाल | फिर उन्हों ने चखा |

عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ ۛ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۛ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ईमान वालो | ऐ अ़क़्ल वालो | पस तुम डरो अल्लाह से | सख़्त | अ़ज़ाब |

قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ﴿١٠﴾ رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रोशन | अल्लाह की आयतें | तुम पर | वह पढ़ता है | रसूल | 10 | नसीहत (किताब) | तुम्हारी तरफ़ | तहक़ीक़ नाज़िल की अल्लाह ने |

لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۗ وَمَنْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और जो | नूर की तरफ़ | तारीकियों से | और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए | जो ईमान लाए | ताकि वह निकाले |

يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नहरें | उन के नीचे से | बहती हैं | बाग़ात | वह उसे दाख़िल करेगा | अच्छे | और वह अ़मल करेगा | अल्लाह पर | ईमान लाएगा |

خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۗ قَدْ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ﴿١١﴾ اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पैदा किए | अल्लाह वह जिस ने | 11 | रोज़ी | उस के लिए | बेशक बहुत अच्छी रखी अल्लाह ने | हमेशा हमेशा | उन में | वह हमेशा रहेंगे |

سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ۗ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْٓا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि वह जान लें | उन के दरमियान | हुक्म | उतरता है | उन की तरह | और ज़मीन से (भी) | सात आस्मान |

اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَىْءٍ عِلْمًا ﴿١٢﴾ ع ٢ ١٨

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12 | इल्म से | हर शै | अहाता किया हुआ है | और यह कि अल्लाह | कुदरत रखता है | हर शै पर | कि अल्लाह |

तुम जहां रहते हो उन्हें तुम अपनी इस्तिताअ़त के मुताबिक़ (वहां) रखो, और तुम उन्हें तंग करने के लिए जरर (तक्लीफ़) न पहुँचाओ, और अगर वह हम्ल से हों तो उन पर ख़र्च करो यहां तक कि वज़अ़ हम्ल हो जाए (बच्चा पैदा हो जाए), फिर अगर वह तुम्हारे लिए (तुम्हारी ख़ातिर) दूध पिलाएं तो उन्हें उन की उज्रत दो, और तुम आपस में माकूल तरीक़े से मश्वरा कर लिया करो। और अगर तुम बाहम कश्मकश करोगे तो उस को कोई दूसरी दूध पिला देगी। (6)

चाहिए कि वस्अ़त वाला अपनी वस्अ़त के मुताबिक़ ख़र्च करे और जिस पर तंग कर दिया गया हो उस का रिज़्क़ (आमदनी) तो अल्लाह ने जो उसे दिया है उस में से ख़र्च करना चाहिए, अल्लाह किसी को तक्लीफ़ नहीं देता (मुकल्लफ़ नहीं ठहराता) मगर (उसी क़द्र) जितना उस ने उसे दिया है, जल्द कर देगा अल्लाह तंगी के बाद आसानी। (7)

और कित्नी ही बस्तियां हैं जिन्हों ने अपने रब के हुक्म से और उस के रसूलों से सरकशी की और हम ने सख़्ती से उन का हिसाब लिया और हम ने उन्हें बहुत बड़ा अ़जाब दिया। (8)

फिर उन्हों ने अपने काम का वबाल चखा और उन के काम का अन्जाम ख़सारा (घाटा) हुआ। (9)

अल्लाह ने उन के लिए सख़्त अ़ज़ाब तैयार किया है, पस तुम अल्लाह से डरो ऐ अक्ल वालो - ईमान वालो! तहक़ीक़ अल्लाह ने तुम्हारी तरफ़ किताब नाज़िल की है। (10)

और रसूल (स) (भेजा) जो तुम पर पढ़ता है अल्लाह की रोशन आयतें ताकि जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अमल किए वह उन्हें निकाले तारीकियों से नूर की तरफ़, और जो अल्लाह पर ईमान लाएगा और अच्छे अ़मल करेगा तो वह उसे उन बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह रहेंगे उन में हमेशा हमेशा, बेशक अल्लाह ने उस के लिए बहुत अच्छी रोज़ी रखी है। (11)

अल्लाह वह है जिस ने सात (7) आस्मान पैदा किए और ज़मीन भी उन की तरह, उन के दरमियान हुक्म उतरता है ताकि वह जान लें कि अल्लाह हर शै पर क़ुदरत रखता है और यह कि अल्लाह ने हर शै का इल्म से अहाता किया हुआ है। (12)

آيَاتُهَا ١٢ ۞ (٦٦) سُوْرَةُ التَّحْرِيْمِ ۞ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 — (66) सूरतुन तहरीम — हराम करना — आयात 12

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآ أَحَلَّ ٱللَّهُ لَكَ ۖ تَبْتَغِي مَرْضَاتَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| खुशनूदी | चाहते हुए | तुम्हार लिए | जो अल्लाह ने हलाल किया | तुम क्यों हराम ठहराते हो? | ऐ नबी (स) |

أَزْوَٰجِكَ ۚ وَٱللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١﴾ قَدْ فَرَضَ ٱللَّهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| खालना (कफ्फ़ारा) | तुम्हारे लिए | तहक़ीक़ मुक़र्रर कर दिया अल्लाह ने | 1 | मेहरबान | बख़्शने वाला | और अल्लाह | अपनी बीवियाँ |

أَيْمَٰنِكُمْ ۚ وَٱللَّهُ مَوْلَىٰكُمْ ۖ وَهُوَ ٱلْعَلِيمُ ٱلْحَكِيمُ ﴿٢﴾ وَإِذْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जब | 2 | हिक्मत वाला | जानने वाला | और वह | तुम्हारा कारसाज़ | और अल्लाह | तुम्हारी क़समें |

أَسَرَّ ٱلنَّبِيُّ إِلَىٰ بَعْضِ أَزْوَٰجِهِۦ حَدِيثًا ۖ فَلَمَّا نَبَّأَتْ بِهِۦ وَأَظْهَرَهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उस को ज़ाहिर कर दिया | उस ने ख़बर कर दी उस बात की | फिर जब | एक बात | अपनी बीवी | बाज (एक) | तक-से | नबी (स) ने राज़ की बात कही |

ٱللَّهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهُۥ وَأَعْرَضَ عَنۢ بَعْضٍ ۖ فَلَمَّا نَبَّأَهَا بِهِۦ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह बात | उस (बीवी) को जतलाई | फिर जब | बाज़ से | और एराज़ किया | उस का कुछ | उस (नबी) ने ख़बर दी | उस पर | अल्लाह |

قَالَتْ مَنْ أَنۢبَأَكَ هَٰذَا ۖ قَالَ نَبَّأَنِيَ ٱلْعَلِيمُ ٱلْخَبِيرُ ﴿٣﴾ إِن تَتُوبَآ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर तुम दोनों तौबा करो | 3 | ख़बर रखने वाला | इल्म वाला | मुझे ख़बर दी | फ़रमाया | इस | किस ने आप (स) को ख़बर दी | वह बोली |

إِلَى ٱللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا ۖ وَإِن تَظَٰهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ ٱللَّهَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो बेशक अल्लाह | उस पर | तुम एक दूसरी की मदद करोगी | और अगर | तुम्हारे दिल | तो यक़ीनन कज हो गए | अल्लाह के सामने |

هُوَ مَوْلَىٰهُ وَجِبْرِيلُ وَصَٰلِحُ ٱلْمُؤْمِنِينَ ۖ وَٱلْمَلَٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذَٰلِكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के बाद (उन के अलावा) | और फ़रिश्ते | मोमिन (जमा) | और नेक | और जिब्राईल (अ) | उस का रफ़ीक़ | वह |

ظَهِيرٌ ﴿٤﴾ عَسَىٰ رَبُّهُۥٓ إِن طَلَّقَكُنَّ أَن يُبْدِلَهُۥٓ أَزْوَٰجًا خَيْرًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेहतर | बीवियाँ | कि उन के लिए बदल दे | अगर वह तुम्हें तलाक़ देदें | उन का रब | क़रीब है | 4 | मददगार |

مِّنكُنَّ مُسْلِمَٰتٍ مُّؤْمِنَٰتٍ قَٰنِتَٰتٍ تَٰٓئِبَٰتٍ عَٰبِدَٰتٍ سَٰٓئِحَٰتٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रोज़ेदार | इबादत गुज़ार | तौबा करने वालियां | फ़रमांबरदारी करने वालियां | ईमान वालियां | इताअत गुज़ार | तुम से |

ثَيِّبَٰتٍ وَأَبْكَارًا ﴿٥﴾ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ قُوٓا۟ أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अपने घर वालों को | अपने आप को | तुम बचाओ | ईमान वालो | ऐ | 5 | और कुंवारियां | शौहर दीदा |

نَارًا وَقُودُهَا ٱلنَّاسُ وَٱلْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلَٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़ोर आवर | दुरुश्त ख़ू | फ़रिश्ते | उस पर | और पत्थर | आदमी | उस का ईंधन | आग |

لَّا يَعْصُونَ ٱللَّهَ مَآ أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ﴿٦﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | उन्हें हुक्म दिया जाता है | जो | और वह करते हैं | वह हुक्म देता है उन्हें | जो | वह नाफ़रमानी नहीं करते अल्लाह की |

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
ऐ नबी (स)! जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल किया है तुम उसे क्यों हराम ठहराते हो? अपनी बीवियों की ख़ुशनूदी चाहते हुए, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। **(1)**
तहक़ीक़ अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हारी क़समों का कफ़्फ़ारा मुक़र्रर कर दिया है, और अल्लाह तुम्हारा कारसाज़ है, और वह जानने वाला हिक्मत वाला है। **(2)**
और जब नबी (स) ने अपनी एक बीवी से एक राज़ की बात कही, फिर जब उस (बीवी) ने उस बात की (किसी और को) ख़बर कर दी और अल्लाह ने ज़ाहिर कर दिया उस (नबी) पर, उस ने उस का कुछ (हिस्सा बीवी को) बताया और बाज़ से एराज़ किया, फिर उस बीवी को वह बात जतलाई तो वह पूछी कि आप (स) को किस ने ख़बर दी इस (बात) की? आप (स) ने फ़रमायाः मुझे इल्म वाले, ख़बर रखने वाले ने ख़बर दी। **(3)**
(ऐ बीवियों!) अगर तुम दोनों अल्लाह के सामने तौबा करो (तो बेहतर है क्योंकि) तुम्हारे दिल यक़ीनन कज हो गए, अगर उस (नबी स) पर (ईज़ा रसानी) पर तुम एक दूसरी की मदद करोगी तो बेशक अल्लाह उस का रफ़ीक़ है और जिब्राईल (अ) और नेक मोमिनीन, और फ़रिश्ते (भी) उन के अलावा मददगार हैं। **(4)**
अगर वह तुम्हें तलाक़ देदें तो क़रीब है कि उस का रब उस के लिए बीवियाँ बदल दे तुम से बेहतर इताअत गुज़ार, ईमान वालियां, फ़रमांबरदारी करने वालियां, तौबा करने वालियां, इबादत गुज़ार, रोज़ेदार, शौहर दीदा और कुंवारियां। **(5)**
ऐ ईमान वालो! तुम अपने आप को और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस का ईंधन आदमी और पत्थर हैं, उस पर दुरुश्त ख़ू, ज़ोर आवर फ़रिश्ते (मुअय्यन) हैं, अल्लाह जो उन्हें हुक्म देता है उस की नाफ़रमानी नहीं करते और वह करते हैं जो उन्हें हुक्म दिया जाता है। **(6)**

ऐ काफ़िरो! आज तुम उज्र न करो (बहाने न बनाओ) इस के सिवा नहीं कि तुम्हें उस का बदला दिया जाएगा जो तुम करते थे। (7)
ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह के आगे तौबा करो खालिस (सच्ची) तौबा, उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम से दूर कर देगा तुम्हारे गुनाह और वह तुम्हें उन बाग़ात में दाखिल करेगा जिन के नीचे नहरें जारी हैं, उस दिन अल्लाह रुस्वा न करेगा नबी (स) को और उन लोगों को जो उस के साथ ईमान लाए, उन का नूर उन के सामने और उन के दाएं दौड़ता होगा, और वह दुआ करते होंगेः ऐ हमारे रब! हमारे लिए हमारा नूर पूरा कर दे और हमारी मग़्फ़िरत फ़रमा दे, बेशक तू हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (8)
ऐ नबी (स) जिहाद कीजिए काफिरों और मुनाफ़िक़ों से और उन पर सख्ती कीजिए, और उन का ठिकाना जहन्नम है, और वह (बहुत) बुरी जगह है। (9)
बयान की अल्लाह ने काफ़िरों के लिए नूह (अ) की बीवी और लूत (अ) की बीवी की मिसाल, वह दोनों दो बन्दों के मातहत थीं हमारे सालेह बन्दों में से, सो उन्हों ने अपने शौहरों से खियानत की तो अल्लाह के आगे उन दोनों के कुछ काम न आ सके, और कहा गया तुम दोनों जहन्नम में दाख़िल हो जाओ दाखिल होने वालों के साथ। (10)
और अल्लाह ने मोमिनों के लिए फ़िरऔन की बीवी की मिसाल पेश की, जब उस (बीवी) ने कहाः ऐ मेरे रब! मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बनादे और मुझे फ़िरऔन और उस के अ़मल से बचा ले और मुझे ज़ालिमों की क़ौम से बचा ले (11)
और (दूसरी मिसाल) इमरान (अ) की बेटी मरयम (अ), जिस ने हिफाजत की अपनी शर्मगाह की, सो हम ने उस में अपनी रुह फूंकी, और उस ने तस्दीक की अपने रब की बातों की और उस की किताबों की और वह फ़रमांबरदारी करने वालियों में से थी। (12)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ ؕ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| इस के सिवा नहीं कि तुम्हें बदला दिया जाएगा जो | आज | तुम उज्र न करो | जिन लोगों ने कुफ़्र किया | ऐ |

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا ؕ ع ١ ١٩

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़ालिस | तौबा | अल्लाह के आगे | तुम तौबा करो | ईमान वालो | ऐ | 7 | तुम करते थे |

عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जारी हैं | बाग़ात | और वह दाखिल करेगा तुम्हें | तुम्हारी बुराइयां (गुनाह) | तुम से | कि वह दूर कर देगा | तुम्हारा रब | उम्मीद है |

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ يَوْمَ لَا يُخْزِى اللّٰهُ النَّبِىَّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के साथ | और जो लोग ईमान लाए | नबी (स) | रुस्वा न करेगा अल्लाह | उस दिन | नहरें | उन के नीचे |

نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पूरा कर दे हमारे लिए | ऐ हमारे रब | वह कहते (दुआ करते) होंगे | और उन के दाहिने | उन के सामने | दौड़ता होगा | उन का नूर |

نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٨﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّبِىُّ جَاهِدِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिहाद कीजिए | ऐ नबी (स) | 8 | कुदरत रखने वाला | हर शै | पर | बेशक तू | और हमारी मग़्फ़िरत फ़रमादे | हमारा नूर |

الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और बुरी | जहन्नम | और उन का ठिकाना | उन पर | और सख़्ती कीजिए | और मुनाफ़िक़ों | काफ़िरों |

الْمَصِيْرُ ﴿٩﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नूह (अ) की बीवी | काफ़िरों के लिए | मिसाल | बयान की अल्लाह ने | 9 | जगह |

وَّامْرَاَتَ لُوْطٍ ؕ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दो सालेह | हमारे बन्दे | से | दो बन्दे | मातहत | दोनों थें | और लूत (अ) की बीवी |

فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम दोनों दाख़िल हो जाओ जहन्नम | और कहा गया | कुछ | अल्लाह से-आगे | उन के | तो उन दोनों के काम न आया | सो उन्हों ने उन दानों से ख़ियानत की |

مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ﴿١٠﴾ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ وقف لازم

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़िरऔन की बीवी | मोमिनों के लिए | मिसाल | और बयान की अल्लाह ने | 10 | दाखिल होने वाले | साथ |

اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِىْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِى الْجَنَّةِ وَنَجِّنِىْ مِنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | और मुझे बचा ले | जन्नत में | एक घर | अपने पास | मेरे लिए बना दे | ए मेरे रब | उस ने कहा | जब |

فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِىْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١١﴾ وَمَرْيَمَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और मरयम | 11 | ज़ालिमों की क़ौम | से | मुझे बचा ले | और उस का अ़मल | फ़िरऔन |

ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِىْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी रूह से | उस में | सो हम ने फूंकी | अपनी शर्मगाह | हिफ़ाज़त की | वह जिस ने | इमरान की बेटी |

وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ﴿١٢﴾ ع ٢ ٢٠

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 12 | फ़रमांबरदारी करने वालियां | से | और वह थी | और उस की किताबों | अपना रब | बातों की | और उस ने तसदीक़ की |

## آيَاتُهَا ٣٠ ❁ (٦٧) سُوْرَةُ الْمُلْكِ ❁ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 | (67) सूरतुल मुल्क बादशाही | आयात 30

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

تَبٰرَكَ الَّذِىْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हर शै | पर | और वह | बादशाही | उस के हाथ में | वह जिस | बड़ी बरकत वाला |

قَدِيْرُ ۝١ الَّذِىْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सब से बेहतर | तुम में से कौन | ताकि वह आज़माए तुम्हें | और ज़िन्दगी | मौत | पैदा किया | वह जिस | 1 | कुदरत रखने वाला |

عَمَلًا ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۝٢ الَّذِىْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۚ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक के ऊपर एक | सात आस्मान | जिस ने बनाए | 2 | बख़्शने वाला | ग़ालिब | और वह | अ़मल में |

مَا تَرٰى فِىْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ۚ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| निगाह | फिर लौटा | कोई फ़र्क़ | रहमान (अल्लाह) | बनाना (तख़लीक़) | में | तू न देखेगा |

هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ۝٣ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरी तरफ़ | वह लौट आएगी | दोबारा | निगाह | तू दोबारा लौटा | फिर | 3 | कोई शिगाफ़ | क्या तू देखता है? |

الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ۝٤ وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्माने दुनिया | और यक़ीनन हम ने आरास्ता किया | 4 | थकी मान्दा | और वह | ख़ार हो कर | निगाह |

بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन के लिए | और हम ने तैयार किया | शैतानों के लिए | मारने का औज़ार | और हम ने उसे बनाया | चिराग़ों से |

عَذَابَ السَّعِيْرِ ۝٥ وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ۚ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जहन्नम का अज़ाब | उन के रब की तरफ़ से | जिन्हों ने कुफ़्र किया | और उन लोगों के लिए | 5 | दहकती आग (जहन्नम) का अ़ज़ाब |

وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٦ اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِىَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह | चीख़ना चिल्लाना | उस का | वह सुनेंगे | उस में | जब वह डाले जाएंगे | 6 | लौटने की जगह | और बुरी |

تَفُوْرُ ۝٧ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ۚ كُلَّمَآ اُلْقِىَ فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह उन से पूछेंगे | कोई गिरोह | डाला जाएगा उस में | जब भी | ग़ज़ब से | क़रीब है कि फट पड़े | 7 | जोश मार रही होगी |

خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَذِيْرٌ ۝٨ قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَآءَنَا نَذِيْرٌ ۙ فَكَذَّبْنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सो हम ने झुटलाया | डराने वाला | ज़रूर आया हमारे पास | हां | वह कहेंगे | 8 | कोई डराने वाला | क्या नहीं आया तुम्हारे पास | उस के दारोग़ा |

وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَىْءٍ ۚ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِىْ ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ ۝٩

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | बड़ी | गुमराही में | मगर (सिर्फ़) | नहीं तुम | कुछ | नहीं नाज़िल की अल्लाह ने | और हम ने कहा |

وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِىْٓ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۝١٠

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | दोज़ख़ियों | में | हम न होते | या हम समझते | हम सुनते | अगर | और वह कहेंगे |

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

बड़ी बरकत वाला है वह जिस के हाथों में है बादशाही, और वह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला। (1)

वह जिस ने पैदा किया मौत और ज़िन्दगी को, ताकि वह तुम्हें आज़माए कि तुम में से कौन है अ़मल में सब से बेहतर, और वह ग़ालिब बख़्शने वाला है। (2)

जिस ने सात आस्मान बनाए एक के ऊपर एक, तू अल्लाह की तख़्लीक़ में कोई फ़र्क़ न देखेगा, फिर निगाह लौटा कर (देख) क्या तू कोई शिगाफ़ (दराड़) देखता है। (3)

फिर दोबारा निगाह लौटा कर (देख) वह तेरी तरफ़ ख़ार हो कर थकी मान्दी लौट आएगी। (4)

और यक़ीनन हम ने आरास्ता किया आस्माने दुनिया को चिराग़ों से और हम ने उसे शैतानों के लिए मारने का औज़ार बनाया और हम ने उन के लिए जहन्नम का अ़ज़ाब तैयार किया है। (5)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के लिए उन के रब की तरफ़ से जहन्नम का अ़ज़ाब है, और (यह) बुरी लौटने की जगह है। (6)

जब वह उस में डाले जाएंगे तो वह सुनेंगे उस का चीख़ना चिल्लाना और वह जोश मार रही होगी। (7)

क़रीब है कि ग़ज़ब से फट पड़े, जब भी उस में कोई गिरोह डाला जाएगा, उन से उन के दारोग़ा पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था? (8)

वह कहेंगेः हां (क्यों नहीं) हमारे पास ज़रूर डराने वाला आया, सो हम ने झुटलाया और हम ने कहा कि अल्लाह ने कुछ नाज़िल नहीं किया, तुम सिर्फ़ बड़ी गुमराही में हो। (9)

और वह कहेंगेः अगर हम सुनते या हम समझते तो हम दोज़ख़ियों में न होते। (10)

सो उन्हों ने अपने गुनाहों का एतिराफ़ कर लिया, पस लानत है दोज़ख़ियों के लिए। (11)
बेशक जो लोग बिन देखे अपने रब से डरते हैं उन के लिए बख़्शिश और बड़ा अजर है। (12)
और तुम अपनी बात छुपाओ या उस को बुलन्द आवाज़ से कहो, वह बेशक जानने वाला है दिलों के भेद को। (13)
क्या जिस ने पैदा किया वही न जानेगा? और वह बारीक बीन बड़ा बाख़बर है। (14)
वही है जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को किया मुसख़्ख़र ताकि तुम उस के रास्तों में चलो और उस के रिज़्क़ में से खाओ, और उसी की तरफ़ जी उठ कर जाना है। (15)
क्या तुम (उस से) बेख़ौफ़ हो? जो आस्मान में है कि वह तुम्हें ज़मीन में धंसा दे तो नागहां वह हिलने लगे। (16)
क्या तुम (उस से) बेख़ौफ़ हो जो आस्मानों में है कि वह तुम पर पत्थरों की बारिश भेज दे? सो तुम जल्द जान लोगे कि मेरा डराना कैसा है? (17)
और अलबत्ता उन लोगों ने झुटलाया जो इन से पहले थे तो (याद करो) कैसा हुआ मेरा अज़ाब! (18)
क्या उन्हों ने अपने ऊपर परिन्दों को पर फैलाते और सुकेड़ते नहीं देखा, उन्हें (कोई) नहीं थाम सकता अल्लाह के सिवा, बेशक वह हर चीज़ का देखने वाला। (19)
भला तुम्हारा वह कौन सा लशकर है जो तुम्हारी मदद करे अल्लाह के सिवा, काफ़िर नहीं मगर (महज़) धोके में हैं। (20)
भला कौन है वह जो तुम्हें रिज़्क़ दे अगर वह अपना रिज़्क़ रोकले? बल्कि वह सरकशी और फ़रार में ढीट बने हुए हैं। (21)
पस जो शख़्स अपने मुँह के बल गिरता हुआ (औन्धा) चलता है ज़ियादा हिदायत याफ़्ता है या वह जो सीधे रास्ते पर सीधा चलता है? (22)

فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿١١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो लोग | बेशक | 11 | दोज़ख़ियों के लिए | तो दूरी (लानत) | अपने गुनाहों का | सो उन्हों ने एतिराफ़ कर लिया |

يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿١٢﴾ وَاَسِرُّوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम छुपाओ | 12 | बड़ा | और अजर | बख़्शिश | उन के लिए | बिन देखे | अपना रब | डरते हैं |

قَوْلَكُمْ اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ۗ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١٣﴾ اَلَا يَعْلَمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या नही जानेगा | 13 | सीनों (दिलों) के भेद | जानने वाला | बेशक वह | उस को | या बुलन्द आवाज से कहो | अपनी बात |

مَنْ خَلَقَ ۗ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿١٤﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ ع

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे लिए | वह जिस ने किया | वही | 14 | बड़ा बाख़बर | बारीक बीन | और वह | जिस ने पैदा किया |

الْاَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِيْ مَنَاكِبِهَا وَكُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ ۗ وَاِلَيْهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उसी की तरफ़ | उस के रिज़्क़ से | सो तुम खाओ | उस के रास्तों में | ताकि तुम चलो | मुसख़्ख़र | ज़मीन |

النُّشُوْرُ ﴿١٥﴾ ءَاَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَآءِ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हें | कि वह धंसा दे | आस्मान में | जो | क्या तुम बेख़ौफ़ हो | 15 | जी उठ कर जाना |

الْاَرْضَ فَاِذَا هِيَ تَمُوْرُ ﴿١٦﴾ اَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَآءِ اَنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | आस्मान में | जो | क्या तुम बेख़ौफ़ हो | 16 | वह जुम्बिश करे | तो नागहां | ज़मीन |

يُّرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ۗ فَسَتَعْلَمُوْنَ كَيْفَ نَذِيْرِ ﴿١٧﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और पक्का झुटलाया | 17 | मेरा डराना | कैसा | सो तुम जल्द जान लोगे | पत्थरों की बारिश | तुम पर | वह भेजे |

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿١٨﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या नही देखा उन्हों ने | 18 | मेरा अज़ाब | हुआ | तो कैसा | इन से क़ब्ल | से | वह लोग जो |

اِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّيَقْبِضْنَ ۚ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا الرَّحْمٰنُ ۗ وقف لازم

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रहमान (अल्लाह) | सिवा | नही थाम सकता उन्हें | और सुकेड़ते | पर फैलाते | अपने ऊपर | परिन्दों को |

اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍۢ بَصِيْرٌ ﴿١٩﴾ اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारा | लशकर | वह | जो | भला कौन है वह? | 19 | देखने वाला | हर शै को | बेशक वह |

يَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ ۗ اِنِ الْكٰفِرُوْنَ اِلَّا فِيْ غُرُوْرٍ ﴿٢٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | धोके में | मगर | काफ़िर (जमा) | नहीं | अल्लाह के सिवा | से | वह मदद करे तुम्हारी |

اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ يَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ رِزْقَهٗ ۚ بَلْ لَّجُّوْا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बल्कि जमे हुए | अपना रिज़्क़ | वह रोक ले | अगर | वह जो रिज़्क़ दे तुम्हें | भला कौन है |

فِيْ عُتُوٍّ وَّنُفُوْرٍ ﴿٢١﴾ اَفَمَنْ يَّمْشِيْ مُكِبًّا عَلٰى وَجْهِهٖٓ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने मुँह के बल | गिरता हुआ | वह चलता है | पस क्या जो | 21 | और भागते हैं | सरकशी |

اَهْدٰٓى اَمَّنْ يَّمْشِيْ سَوِيًّا عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٢﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 22 | सीधा रास्ता | पर | बराबर (सीधा) | चलता है | या वह जो | ज़ियादा हिदायत याफ़्ता |

قُلْ هُوَ الَّذِیْٓ اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और आँखें | कान | तुम्हारे लिए | और उस ने बनाए | वह जिस ने पैदा किया तुम्हें | फ़रमा दें वही |

وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِیْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٣﴾ قُلْ هُوَ الَّذِیْ ذَرَاَكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जिस ने फैलाया तुम्हें | वही | फ़रमा दें | 23 | जो तुम शुक्र करते हो | बहुत कम | और दिल (जमा) |

فِی الْاَرْضِ وَاِلَیْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَیَقُوْلُوْنَ مَتٰی هٰذَا الْوَعْدُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| यह वादा | कब | और वह कहते हैं | 24 | तुम उठाए जाओगे | और उसी की तरफ़ | ज़मीन में |

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿٢٥﴾ قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۠ وَاِنَّمَآ اَنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मैं | और इस के सिवा नहीं | अल्लाह के पास | इस के सिवा नहीं कि इल्म | फ़रमा दें | 25 | सच्चे | तुम हो | अगर |

نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿٢٦﴾ فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِیْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिन्हों ने कुफ़्र किया | बुरे (सियाह) हो जाएंगे चेहरे | नज़्दीक आता | वह उसे देखेंगे | फिर जब | 26 | साफ़ साफ़ | डराने वाला |

وَقِیْلَ هٰذَا الَّذِیْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ﴿٢٧﴾ قُلْ اَرَءَیْتُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किया तुम ने देखा | फ़रमा दें | 27 | तुम मांगते | उस को | तुम थे | वह जो | यह | और कहा जाएगा |

اِنْ اَهْلَكَنِیَ اللّٰهُ وَمَنْ مَّعِیَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ یُّجِیْرُ الْكٰفِرِیْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| काफ़िरों | पनाह देगा | तो कौन | या वह रहम फ़रमाए हम पर | मेरे साथ | और जो | मुझे हलाक कर दे अल्लाह | अगर |

مِنْ عَذَابٍ اَلِیْمٍ ﴿٢٨﴾ قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَیْهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उसी पर | उस पर | हम ईमान लाए | वही रहमान | फ़रमा दें | 28 | दर्दनाक अज़ाब | से |

تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿٢٩﴾ قُلْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़रमा दें | 29 | खुली गुमराही | में | कौन वह | सो तुम जल्द जान लोगे | हम ने भरोसा किया |

ع ١٦ ٢ ٢ اَرَءَیْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ یَّاْتِیْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِیْنٍ ﴿٣٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | रवां पानी | ले आएगा तुम्हारे पास | तो कौन | नीचे उतरा हुआ | तुम्हारा पानी | अगर हो जाए | क्या तुम ने देखा (भला देखो) |

## آیَاتُهَا ٥٢ ❀ (٦٨) سُوْرَةُ الْقَلَمِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

आयात 52 (68) सूरतुल क़लम रुकूआत 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا یَسْطُرُوْنَ ﴿١﴾ مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना रब | नेमत (फ़ज़्ल) से | नहीं आप (स) | 1 | वह लिखते हैं | और जो | नून क़सम है क़लम की |

بِمَجْنُوْنٍ ﴿٢﴾ وَاِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَیْرَ مَمْنُوْنٍ ﴿٣﴾ وَاِنَّكَ لَعَلٰی

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यक़ीनन-पर | और बेशक आप (स) | 3 | ख़तम न होने वाला | अलबत्ता अजर | और बेशक आप के लिए | 2 | मजनून |

خُلُقٍ عَظِیْمٍ ﴿٤﴾ فَسَتُبْصِرُ وَیُبْصِرُوْنَ ﴿٥﴾ بِاَیِّكُمُ الْمَفْتُوْنُ ﴿٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | दीवाना | तुम में से कौन? | 5 | और वह भी देख लेंगे | आप (स) जल्द देख लेंगे | 4 | अख़्लाक़ का ऊंचा मुक़ाम |

आप (स) फ़रमा दें: वही है जिस ने तुम्हें पैदा किया और उस ने बनाए तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल, तुम बहुत कम शुक्र करते हो। (23)

आप (स) फ़रमा दें: वही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में फैलाया और उसी की तरफ़ तुम उठाए जाओगे। (24)

और वह कहते हैं कि यह वादा कब (पूरा होगा)? अगर तुम सच्चे हो। (25)

आप (स) फ़रमा दें: इस के सिवा नहीं कि इल्म अल्लाह के पास है, और इस के सिवा नहीं कि मैं साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ। (26)

फिर जब वह उसे नज़्दीक आता देखेंगे तो उन लोगों के चेहरे सियाह हो जाएंगे जिन्हों ने कुफ़्र किया और कहा जाएगा कि यह है वह जो तुम मांगते थे (27)

आप (स) फ़रमा दें: भला देखो तो अगर अल्लाह हलाक कर दे मुझे और (उन्हें) जो मेरे साथ हैं या हम पर रहम फ़रमाए तो काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब से कौन बचाएगा? (28)

आप (स) फ़रमा दें: वही रहमान है, हम ईमान लाए उस पर और उसी पर हम ने भरोसा किया, सो तुम जल्द जान लोगे कि कौन खुली गुमराही में है? (29)

आप (स) फ़रमा दें: भला देखो तो अगर हो जाए तुम्हारा पानी नीचे को उतरा हुआ (ख़ुश्क) तो कौन ले आएगा तुम्हारे पास (सूत का) रवां पानी? (30)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

नून। क़सम है क़लम की और जो वह लिखते हैं। (1)

आप (स) अपने रब के फ़ज़्ल से मजनून नहीं हैं। (2)

और बेशक आप (स) के लिए अजर है ख़तम न होने वाला। (3)

और बेशक आप (स) अख़्लाक़ के ऊंचे मुक़ाम पर हैं। (4)

पस आप (स) जल्द देख लेंगे और वह भी देख लेंगे (5)

(कि) तुम में से कौन दीवाना है? (6)

बेशक आप (स) का रब उस को खूब जानता है जो गुमराह हुआ उस की राह से और वह खूब जानता है हिदायत याफ़्ता लोगों को। (7)
पस आप (स) झुटलाने वालों का कहा न मानें। (8)
वह चाहते हैं कि काश आप (स) नर्मी करें तो वह (भी) नर्मी करें। (9)
और आप (स) बेवक़अ़त बात बात पर क़समें खाने वाले का कहा न मानें। (10)
ऐब निकालने वाला चुग़लियां लगाते फिरने वाला। (11)
माल में बुख़्ल करने वाला, हद से बढ़ने वाला गुनाहगार। (12)
सख़्त ख़ू, उस के बाद बद असल। (13)
इस लिए कि वह माल वाला और औलाद वाला है। (14)
जब उसे हमारी आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो वह कहता है: यह अगले लोगों की कहानियां है। (15)
हम जल्द दाग़ देंगे उस की नाक पर। (16)
बेशक हम ने उन्हें आजमाया जैसे हम ने आजमाया था बाग़ वालों को, जब उन्हों ने कसम खाई कि हम सुब्ह होते उस का फल ज़रूर तोड़ लेंगे। (17)
और उन्हों ने "इन्शा अल्लाह" न कहा। (18)
पस उस (बाग़) पर तेरे रब की तरफ़ से एक अज़ाब फिर गया और वह सोए हुए थे। (19)
तो वह (बाग़) सुब्ह को रह गया जैसे एक कटा हुआ खेत। (20)
तो वह सुब्ह होते एक दूसरे को पुकारने लगे। (21)
कि सुब्ह सवेरे अपने खेत पर चलो अगर तुम काटने वाले हो (अगर तुम्हें खेती काटनी है)। (22)
फिर वह चले और वह आपस में चुपके चुपके कहते थे। (23)
कि आज वहां तुम पर कोई मिस्कीन दाख़िल न होने पाए (24)
और वह सुब्ह सवेरे चले (इस जअम के साथ) कि वह बख़ीली पर क़ादिर हैं। (25)
फिर जब उन्हों ने उसे देखा तो वह बोले कि बेशक हम राह भूल गए हैं। (26)
बल्कि हम महरूम (बद नसीब) हो गए हैं। (27)
कहा उन के बेहतरीन आदमी ने: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि तुम तस्बीह क्यों नहीं करते? (28)
वह बोले: पाक है हमारा रब, बेशक हम जालिम थे। (29)
पस एक दूसरे को अपनाया बाज़ पर बाज मलामत करते हुऐ (30)
वह बोले हाए हमारी ख़राबी! बेशक हम (ही) सरकश थे। (31)

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۠ وَهُوَ اَعْلَمُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और वह खूब जानता है | उस की राह से | वह गुमराह हुआ | उस को जो | वह खूब जानता है | बेशक आप (स) का रब |

بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿٧﴾ فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٨﴾ وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| काश आप नर्मी करें | वह चाहते हैं | 8 | झुटलाने वालों | पस आप (स) कहा न मानें | 7 | हिदायत याफ़्ता लोगों को |

فَيُدْهِنُوْنَ ﴿٩﴾ وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ﴿١٠﴾ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फिरने वाला | ऐब निकालने वाला | 10 | बे वक़अ़त | बात बात पर क़समें खाने वाला | और आप (स) कहा न मानें | 9 | तो वह भी नर्मी करें |

بِنَمِيْمٍ ﴿١١﴾ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ﴿١٢﴾ عُتُلٍّ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ ﴿١٣﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 13 | उस के बाद बद असल | सख़्त ख़ू | 12 | गुनाहगार | हद से बढ़ने वाला | माल में | रोकने (बुख़्ल करने) वाला | 11 | चुग़ली लिए |

اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّبَنِيْنَ ﴿١٤﴾ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह कहता है | हमारी आयतें | पढ़ कर सुनाई जाती है उसे | जब | 14 | और औलाद वाला | माल वाला | इस लिए कि वह है |

اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٥﴾ سَنَسِمُهٗ عَلَى الْخُرْطُوْمِ ﴿١٦﴾ اِنَّا بَلَوْنٰهُمْ كَمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जैसे | बेशक हम ने आज़माया उन्हें | 16 | सून्ड (नाक) पर | हम जल्द दाग़ देंगे उस को | 15 | अगले लोग | कहानियां |

بَلَوْنَآ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ ۚ اِذْ اَقْسَمُوْا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِيْنَ ﴿١٧﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 17 | सुबह होते | हम ज़रूर तोड़ लेंगे उस का फल | जब उन्हों ने क़सम खाई | बाग़ वालों को | हम ने आज़माया |

وَلَا يَسْتَثْنُوْنَ ﴿١٨﴾ فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّنْ رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُوْنَ ﴿١٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 19 | सोए हुए थे | और वह | तेरे रब की तरफ़ से | एक फिरने वाला (अ़ज़ाब) | उस पर | पस फिर गया | 18 | और उन्हों ने इन्शा अल्लाह न कहा |

فَاَصْبَحَتْ كَالصَّرِيْمِ ﴿٢٠﴾ فَتَنَادَوْا مُصْبِحِيْنَ ﴿٢١﴾ اَنِ اغْدُوْا عَلٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | सुबह सवेरे चलो | 21 | सुबह होते | तो एक दूसरे को पुकारने लगे | 20 | जैसे कटा हुआ खेत | तो वह सुबह को रह गया |

حَرْثِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰرِمِيْنَ ﴿٢٢﴾ فَانْطَلَقُوْا وَهُمْ يَتَخَافَتُوْنَ ﴿٢٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 23 | आपस में चुपके चुपके कहते थे | और वह | फिर वह चले | 22 | काटने वाले | अगर तुम हो | अपने खेत |

اَنْ لَّا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مِّسْكِيْنٌ ﴿٢٤﴾ وَّغَدَوْا عَلٰى حَرْدٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बख़ीली पर | और वह सुबह सवेरे चले | 24 | कोई मिस्कीन | तुम पर | आज | वहां दाख़िल न होने पाए | कि |

قٰدِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ فَلَمَّا رَاَوْهَا قَالُوْٓا اِنَّا لَضَآلُّوْنَ ﴿٢٦﴾ بَلْ نَحْنُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बल्कि हम | 26 | बेशक हम राह भूल गए हैं | वह बोले | उन्हों ने उसे देखा | फिर जब | 25 | वह क़ादिर हैं |

مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٢٧﴾ قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُوْنَ ﴿٢٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 28 | तुम तस्बीह क्यों नही करते | तुम से | क्या मैं ने नहीं कहा था | उन का सब से अच्छा | कहा | 27 | महरूम हो गए हैं |

قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾ فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन का बाज (एक) | पस अपनाया | 29 | ज़ालिम (जमा) | बेशक हम थे | हमारा रब | पाक है | वह बोले |

عَلٰى بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ ﴿٣٠﴾ قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ ﴿٣١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 31 | सरकश (जमा) | बेशक हम थे | हाए हमारी ख़राबी | वह बोले | 30 | एक दूसरे को मलामत करते हुए | बाज़ (दूसरे) पर |

عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ﴿٣٢﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उम्मीद है | हमारा रब | कि | हमें बदले में दे | बेहतर | इस में | बेशक हम | अपने रब की तरफ़ | राग़िब (रुजूअ़ करने वाले) | 32 |

وقف لازم

كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| यूँ होता है | अ़ज़ाब | अलबत्ता आख़िरत का अ़ज़ाब | सब से बड़ा | काश! |

كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٣٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह जानते होते | 33 | बेशक | परहेज़गारों के लिए | उन के रब के पास | नेमतों के बाग़ात | 34 |

اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٥﴾ مَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٦﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो क्या हम करदेंगे | मुसलमानों | मुज्रिमों की तरह | 35 | क्या हुआ तुम्हें | कैसा | तुम फ़ैसला करते हो | 36 |

اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ تَدْرُسُوْنَ ﴿٣٧﴾ اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ ﴿٣٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या तुम्हारे पास | कोई किताब | उस में | तुम पढ़ते हो | 37 | बेशक | तुम्हारे लिए | उस में | अलबत्ता जो तुम पसंद करते हो | 38 |

اَمْ لَكُمْ اَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ اِنَّ لَكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या तुम्हारे लिए | कोई पुख़्ता अ़हद | हम पर (हमारे ज़िम्मे) | पहुँचने वाला | तक | क़ियामत के दिन | बेशक | तुम्हारे लिए |

لَمَا تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٩﴾ سَلْهُمْ اَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيْمٌ ﴿٤٠﴾ اَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता जो | तुम फ़ैसला करते हो | 39 | तू उन से पूछ | उन में से कौन | इस का | ज़ामिन (ज़िम्मेदार) | 40 | या उन के | शरीक (जमा) |

فَلْيَاْتُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ﴿٤١﴾ يَوْمَ يُكْشَفُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो चाहिए कि वह लाएं | अपने शरीकों | अगर | वह हैं | सच्चे | 41 | जिस दिन | खोल दिया जाएगा |

عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٤٢﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| से | पिंडली | और वह बुलाए जाएंगे | सिज्दों के लिए | तो वह न कर सकेंगे | 42 |

خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ وَقَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| झुकी हुई | उन की आँखें | उन पर छाई हुई | ज़िल्लत | और तहक़ीक़ | बुलाए जाते थे |

اِلَى السُّجُوْدِ وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ فَذَرْنِيْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सिज्दे के लिए | जब कि वह | सही सालिम (जमा) | 43 | पस मुझे छोड़ दो तुम | और वह जो झुटलाता है |

بِهٰذَا الْحَدِيْثِ ؕ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَاُمْلِيْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इस बात को | जल्द हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता खींचेंगे | इस तरह | वह जानते न होंगे | 44 | और मैं ढील देता हूँ |

لَهُمْ ؕ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿٤٥﴾ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन को | बेशक | मेरी ख़ुफ़िया तदबीर | बड़ी क़वी | 45 | क्या आप (स) मांगते हैं उन से | कोई अजर | कि वह | से | तावान |

مُّثْقَلُوْنَ ﴿٤٦﴾ اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿٤٧﴾ فَاصْبِرْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बोझल (दबे जाते) हैं | 46 | या | उन के पास | इल्मे ग़ैब | कि वह | लिख लेते हैं | 47 | पस आप (स) सब्र करें |

وقف لازم

لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوْتِ ۘ اِذْ نَادٰى وَهُوَ مَكْظُوْمٌ ﴿٤٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हुक्म के लिए | अपना रब | और न हों आप (स) | मछली वाले (यूनुस अ) की तरह | जब उस ने पुकारा | और वह | ग़म से भरा हुआ | 48 |

उम्मीद है कि हमारा रब हमें इस से बेहतर बदले में दे, बेशक हम अपने रब की तरफ़ रुजूअ़ करने वाले हैं। (32)

यूँ होता है अ़ज़ाब! और आख़िरत का अ़ज़ाब अलबत्ता सब से बड़ा है। काश! वह जानते होते। (33)

बेशक परहेज़गारों के लिए उन के रब के हां नेमतों के बाग़ात हैं। (34)

तो क्या हम कर देंगे मुसलमानों को मुज्रिमों की तरह (महरूम)? (35)

तुम्हें क्या हुआ? तुम कैसा फ़ैसला करते हो? (36)

क्या तुम्हारे पास कोई (आस्मानी) किताब है कि उस में से तुम पढ़ते हो। (37)

कि बेशक उस में तुम्हारे लिए (होगा) जो तुम पसंद करते हो। (38)

क्या तुम्हारे लिए हमारे ज़िम्मे कोई पुख़्ता अहद है क़ियामत के दिन तक कि बेशक तुम्हारे लिए (होगा) जो तुम फ़ैसला करो। (39)

तू उन से पूछ कि उन में से कौन इस का ज़ामिन है? (40)

या उन के शरीक हैं (जिन्हों ने इस का जिम्मा लिया है)? तो चाहिए कि वह अपने शरीकों को लाएं अगर वह सच्चे हैं। (41)

जिस दिन पिंडली से खोल दिया जाएगा और वह सिज्दों के लिए बुलाए जाएंगे तो वह न कर सकेंगे। (42)

उन की आँखें झुकी हुई (होंगी) और उन पर ज़िल्लत छाई हुई होगी, और इस से क़ब्ल वह सिज्दों के लिए बुलाए जाते थे जब कि (सही) सालम थे (और वह इन्कार करते थे)। (43)

पस जो इस बात को झुटलाता है तुम उस को मुझ पर छोड़ दो। हम जल्द उन्हें इस तरह आहिस्ता आहिस्ता खींचेंगे कि वह जानते न होंगे। (44)

और मैं उन्हें ढील देता हूँ, बेशक मेरी ख़ुफ़िया तदबीर बड़ी क़वी है। (45)

क्या आप (स) उन से कोई अजर मांगते हैं? कि वह (उस) तावान (के बोझ) से दबे जाते हैं। (46)

या उन के पास इल्मे ग़ैब है? कि वह लिख लेते हैं। (47)

पस आप (स) अपने रब के हुक्म के लिए सब्र करें और आप (स) यूनुस (अ) की तरह न हो जाएं, जब उस ने (अल्लाह तआला को) पुकारा और वह ग़म से भरा हुआ था। (48)

अगर उस के रब की नेमत ने उस को न संभाला होता तो अलबत्ता वह चटियल मैदान में बदहाल डाला जाता और उस का हाल अब्तर रहता। (49)
पस उस के रब ने उसे बरगुज़ीदा किया तो उसे नेकोकारों में से कर लिया। (50)
और तहक़ीक़ क़रीब है (ऐसा लगता है) के काफ़िर आप (स) को फुसला देंगे अपनी निगाहों से जब वह किताबे नसीहत को सुनते हैं और वह कहते हैं कि बेशक यह दीवाना है। (51)
हालांकि यह नहीं, मगर तमाम जहानों के लिए (सिर्फ़ और सिर्फ़) नसीहत। (52)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
सचमुच होने वाली क़ियामत। (1)
क्या है क़ियामत? (2)
और तुम क्या समझे कि क्या है क़ियामत? (3)
समूद और आद ने खड़खड़ाने वाली (क़ियामत) को झुटलाया। (4)
पस जो समूद (थे) वह बड़ी ज़ोर दार आवाज़ से हलाक किए गए। (5)
और जो आद (थे) तो वह हलाक किए गए हवा से तुन्द ओ तेज़ हद से ज़ियादा बढ़ी हुई। (6)
उस (अल्लाह) ने उस (आन्धी) को उन पर लगातार सात रात और आठ दिन मुसल्लत कर दिया। पस तू उस क़ौम को उस में (यूँ) गिरी हुई देखता गोया कि वह खजूर के खोखले तने हैं। (7)
तो क्या तू उन का कोई बक़िया देखता है? (8)
और फ़िरऔन आया और उस से पहले के लोग और उलटी हुई बस्तियों वाले ख़ताओं के साथ। (9)
सो उन्हों ने अपने रब के रसूल (अ) की नाफ़रमानी की तो उन्हें सख़्त गिरिफ़्त ने आ पकड़ा। (10)
बेशक जब पानी तुग़्यानी पर आया हम ने तुम्हें कश्ती में सवार किया, (11)
ताकि हम उसे तुम्हारे लिए यादगार बनाएं और याद रखने वाला कान उसे याद रखे। (12)

لَوْلَآ اَنْ تَدٰرَكَهٗ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ مَذْمُوْمٌ ﴿٤٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 49 | मलामत ज़दा (अब्तर हाल) | और वह | अलबत्ता वह डाला जाता चटियल मैदान में | उस के रब का | नेमत | अगर न उस का पाया (संभाला) होता |

فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٥٠﴾ وَاِنْ يَّكَادُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और तहक़ीक़ क़रीब है | 50 | नेकोकारों से | पस उस को कर लिया | उस का रब | पस उस को बरगुज़ीदा किया |

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह कहते हैं | (किताब) नसीहत | वह सुनते हैं | जब | अपनी निगाहों से | कि वह आप (स) को फुसला देंगे | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) |

اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٥١﴾ وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٥٢﴾ ع ٢ وقف لازم

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 52 | तमाम जहानों के लिए | नसीहत | मगर | हालांकि यह नहीं | 51 | दीवाना अलबत्ता | बेशक यह |

## آيَاتُهَا ٥٢ ❀ (٦٩) سُوْرَةُ الْحَآقَّةِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 — (69) सूरतुल हाक़्क़ा — जरूर होने वाली (क़ियामत) — आयात 52

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلْحَآقَّةُ ﴿١﴾ مَا الْحَآقَّةُ ﴿٢﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحَآقَّةُ ﴿٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | क्या है क़ियामत? | तुम समझे | और क्या | 2 | क्या है क़ियामत? | 1 | सचमुच होने वाली (क़ियामत) |

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَعَادٌۢ بِالْقَارِعَةِ ﴿٤﴾ فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاُهْلِكُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वह हलाक किए गए | समूद | पस जो | 4 | खड़खड़ाने वाली को | और आद | समूद | झुटलाया |

بِالطَّاغِيَةِ ﴿٥﴾ وَاَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ﴿٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | हद से ज़ियादा बढ़ी हुई | तुन्द ओ तेज़ | हवा से | तो वह हलाक किए गए | आद | और जो | 5 | बड़ी ज़ोर की आवाज़ से |

سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ حُسُوْمًا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| लगातार | दिन | और आठ | सात रात | उन पर | उस ने उस को मुसख़्ख़र किया |

فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ﴿٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | खोखले | खजूर | तने | गोया वह | उस में गिरी हुई | फिर तू देखता उस क़ौम को |

فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْۢ بَاقِيَةٍ ﴿٨﴾ وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उस के पहले लोग | फ़िरऔन | और आया | 8 | कोई बक़िया | उन का | तो क्या तू देखता है |

وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ﴿٩﴾ فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अपने रब के रसूल की | सो उन्हों ने नाफ़रमानी की | 9 | ख़ताओं के साथ | और उलटी हुई बस्तियों वाले |

فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً رَّابِيَةً ﴿١٠﴾ اِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने तुम्हें सवार किया | पानी | तुग़्यानी पर आया | बेशक जब | 10 | सख़्त | गिरिफ़्त | तो उन्हें पकड़ा |

فِى الْجَارِيَةِ ﴿١١﴾ لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ﴿١٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12 | याद रखने वाला | कान | और उसे याद रखे | यादगार | तुम्हारे लिए | ताकि हम उस को बनाएं | 11 | कश्ती में |

فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ ﴿١٣﴾ وَّحُمِلَتِ الْاَرْضُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन | और उठाई जाएगी | 13 | यकबारगी | फूंक | सूर में | पस जब फूंकी जाएगी |

وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ﴿١٤﴾ فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15 | वह होने वाली | हो पड़ेगी | पस उस दिन | 14 | यकबारगी | रेज़ा रेज़ा | पस रेज़ा रेज़ा कर दिए जाएंगे | और पहाड़ |

وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِىَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ ﴿١٦﴾ وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا ؕ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के किनारों | पर | और फ़रिश्ते | 16 | बिलकुल कमज़ोर | उस दिन | पस वह | आस्मान | और फट जाएगा |

وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ﴿١٧﴾ يَوْمَئِذٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जिस दिन | 17 | आठ | उस दिन | अपने ऊपर | तुम्हारे रब का अर्श | और वह उठाएंगे |

تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ﴿١٨﴾ فَاَمَّا مَنْ اُوْتِىَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दिया गया | पस जिस को | 18 | (कोई चीज़) पोशीदा | तुम से (तुम्हारी) | न पोशीदा रहेगी | तुम पेश किए जाओगे |

كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ﴿١٩﴾ اِنِّىْ ظَنَنْتُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मैं बेशक समझता था | 19 | मेरा आमाल नामा | लो पढ़ो | तो वह कहेगा | उस के दाएं हाथ में | उस की किताब (आमाल नामा) |

اَنِّىْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ﴿٢٠﴾ فَهُوَ فِىْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿٢١﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 21 | पसंदीदा ज़िन्दगी | में | पस वह | 20 | अपने हिसाब से | कि मैं मिलूँगा |

فِىْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿٢٢﴾ قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ﴿٢٣﴾ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम पियो | तुम खाओ | 23 | क़रीब | जिस के मेवे | 22 | बहिश्ते बरीं | में |

هَنِيْٓـئًا بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِى الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ ﴿٢٤﴾ وَاَمَّا مَنْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो- जिस | और रहा | 24 | गुज़रे हुए अय्याम | में | उस के बदले जो तुम ने भेजा | मज़े से |

اُوْتِىَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِىْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ ﴿٢٥﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 25 | मेरा आमाल नामा | मुझे न दिया जाता | ऐ काश | तो वह कहेगा | उस के बाएं हाथ में | उस का आमाल नामा दिया गया |

وَلَمْ اَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ﴿٢٦﴾ يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ﴿٢٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 27 | क़िस्सा चुका देने वाली | (मौत) होती | ऐ काश | 26 | क्या है मेरा हिसाब | और मैं न जानता |

مَآ اَغْنٰى عَنِّىْ مَالِيَهْ ﴿٢٨﴾ هَلَكَ عَنِّىْ سُلْطٰنِيَهْ ﴿٢٩﴾ خُذُوْهُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम उस को पकड़ो | 29 | मेरी बादशाही | मुझ से | जाती रही | 28 | मेरा माल | मेरे | काम न आया |

فَغُلُّوْهُ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ﴿٣١﴾ ثُمَّ فِىْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिस की पैमाइश | एक ज़न्जीर में | फिर | 31 | उसे डाल दो | जहन्नम | फिर | 30 | पस उसे तौक़ पहनाओ |

سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ﴿٣٢﴾ اِنَّهٗ كَانَ لَا يُؤْمِنُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ईमान नहीं लाता था | बेशक वह | 32 | पस तुम उस को जकड़ दो | हाथ | सत्तर (70) |

بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ ﴿٣٣﴾ وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ﴿٣٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 34 | मोहताज | खिलाना | पर | और वह रग़बत न दिलाता था | 33 | बुज़ुर्ग ओ बरतर | अल्लाह पर |

पस जब फूंकी जाएगी सूर में यकबारगी फूंक। (13)
और उठाए जाएंगे ज़मीन और पहाड़, पस वह यकबारगी रेज़ा रेज़ा कर दिए जाएंगे। (14)
पस उस दिन वह होने वाली हो पड़ेगी, (15)
और आस्मान फट जाएगा, पस वह उस दिन बिलकुल कमज़ोर होगा। (16)
और फ़रिश्ते (होंगे) उस के किनारों पर, और आठ फ़रिश्ते तुम्हारे रब का अर्श उठाए हुए होंगे। (17)
जिस दिन तुम पेश किए जाओगे तुम्हारी कोई चीज़ पोशीदा न रहेगी। (18)
पस जिस को उस का आमाल नामा उस के दाएं हाथ में दिया जाएगा वह (दूसरों को) कहेगाः लो पढ़ो मेरा आमाल नामा। (19)
बेशक मैं यक़ीन रखता था कि मैं अपने हिसाब से मिलूँगा। (20)
पस वह पसंदीदा ज़िन्दगी में होगा, (21)
आली मुक़ाम जन्नत में, (22)
जिस के मेवे क़रीब (झुके हुए) हैं। (23)
तुम मज़े से खाओ पियो उस के बदले जो तुम ने (दुनिया के) गुज़रे हुए दिनों में भेजा है। (24)
और रहा वह जिस को उस का आमाल नामा उस के बाएं हाथ में दिया गया तो वह कहेगा ऐ काश! मुझे न दिया जाता मेरा आमाल नामा, (25)
और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है? (26)
ऐ काश! मौत ही क़िस्सा चुका देने वाली होती। (27)
मेरा माल मेरे काम न आया। (28)
मेरी बादशाही मुझ से जाती रही। (29)
(फ़रिश्तों को हुक्म होगा) तुम उस को पकड़ो, उसे तौक़ पहनाओ, (30)
फिर उसे जहन्नम में डाल दो। (31)
फिर एक ज़न्जीर में जिस की पैमाइश सत्तर (70) हाथ है, पस तुम उस को जकड़ दो। (32)
बेशक वह अल्लाह बुज़ुर्ग ओ बरतर पर ईमान नहीं लाता था। (33)
और वह (दूसरों को भी) रग़बत न दिलाता था मिस्कीन को खिलाने की। (34)

فَلَيۡسَ لَهُ الۡيَوۡمَ هٰهُنَا حَمِيۡمٌ ﴿۳۵﴾ وَّلَا طَعَامٌ اِلَّا مِنۡ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| से | मगर-सिवा | और न खाना | 35 | कोई दोस्त | यहां | आज | पस नहीं उस का |

غِسۡلِيۡنٍ ﴿۳۶﴾ لَّا يَاۡكُلُهٗۤ اِلَّا الۡخٰطِئُوۡنَ ﴿۳۷﴾ فَلَاۤ اُقۡسِمُ ع ۲۷ ۵

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पस मैं क़सम खाता हूँ | 37 | ख़ताकारों | सिवा | उसे न खाएगा | 36 | पीप |

بِمَا تُبۡصِرُوۡنَ ﴿۳۸﴾ وَمَا لَا تُبۡصِرُوۡنَ ﴿۳۹﴾ اِنَّهٗ لَقَوۡلُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता कलाम | बेशक यह | 39 | तुम नहीं देखते | और जो | 38 | उस की जो तुम देखते हो |

رَسُوۡلٍ كَرِيۡمٍ ﴿۴۰﴾ وَّمَا هُوَ بِقَوۡلِ شَاعِرٍ ؕ قَلِيۡلًا مَّا تُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۴۱﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 41 | तुम ईमान लाते हो | बहुत कम | किसी शायर का कलाम | और यह नहीं | 40 | रसूले करीम |

وَلَا بِقَوۡلِ كَاهِنٍ ؕ قَلِيۡلًا مَّا تَذَكَّرُوۡنَ ﴿۴۲﴾ تَنۡزِيۡلٌ مِّنۡ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| से | उतारा हुआ | 42 | तुम नसीहत पकड़ते हो | बहुत कम | किसी काहिन का | और न क़ौल है |

رَّبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۴۳﴾ وَلَوۡ تَقَوَّلَ عَلَيۡنَا بَعۡضَ الۡاَقَاوِيۡلِ ﴿۴۴﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 44 | बातें (अक़्वाल) | कुछ | हम पर | बना कर लाता | और अगर | 43 | तमाम जहानों का रब |

لَاَخَذۡنَا مِنۡهُ بِالۡيَمِيۡنِ ﴿۴۵﴾ ثُمَّ لَقَطَعۡنَا مِنۡهُ الۡوَتِيۡنَ ﴿۴۶﴾ فَمَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सो नहीं | 46 | रगे (गर्दन) | उस की | हम अलबत्ता काट देते | फिर | 45 | दायां हाथ | उस का | तो यक़ीनन हम पकड़ लेते |

مِنۡكُمۡ مِّنۡ اَحَدٍ عَنۡهُ حٰجِزِيۡنَ ﴿۴۷﴾ وَاِنَّهٗ لَتَذۡكِرَةٌ لِّلۡمُتَّقِيۡنَ ﴿۴۸﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 48 | परहेज़गारों के लिए | अलबत्ता एक नसीहत | और बेशक यह | 47 | रोकने वाला | उस से | कोई भी | तुम में से |

وَاِنَّا لَنَعۡلَمُ اَنَّ مِنۡكُمۡ مُّكَذِّبِيۡنَ ﴿۴۹﴾ وَاِنَّهٗ لَحَسۡرَةٌ عَلَى الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿۵۰﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 50 | काफ़िरों पर | हस्रत | और बेशक यह | 49 | झुटलाने वाले | तुम में से | कि | अलबत्ता जानते हैं | और बेशक हम |

وَاِنَّهٗ لَحَقُّ الۡيَقِيۡنِ ﴿۵۱﴾ فَسَبِّحۡ بِاسۡمِ رَبِّكَ الۡعَظِيۡمِ ﴿۵۲﴾ ع ۱۵ ۶ ۲

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 52 | अ़ज़मत वाला | अपना रब | नाम के साथ | पस पाकीज़गी बयान करो | 51 | यक़ीनी हक़ | और बेशक यह |

آيَاتُهَا ۴۴ ❀ (۷۰) سُوۡرَةُ الۡمَعَارِجِ ❀ رُكُوۡعَاتُهَا ۲

रुकुआत 2 — (70) सूरतुल मआ़रिज — ऊपर चढ़ने की सीढ़ियां — आयात 44

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ﴿۱﴾ لِّلۡكٰفِرِيۡنَ لَيۡسَ لَهٗ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नहीं उसे | काफ़िरों के लिए | 1 | अ़ज़ाब वाक़े होने वाला | एक मांगने वाला | मांगा |

دَافِعٌ ﴿۲﴾ مِّنَ اللّٰهِ ذِى الۡمَعَارِجِ ﴿۳﴾ تَعۡرُجُ الۡمَلٰٓئِكَةُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़रिश्ते | चढ़ते हैं | 3 | सीढ़ियां (दरजात) का मालिक | अल्लाह की तरफ़ से | 2 | कोई दफ़्आ करने वाला |

وَالرُّوۡحُ اِلَيۡهِ فِىۡ يَوۡمٍ كَانَ مِقۡدَارُهٗ خَمۡسِيۡنَ اَلۡفَ سَنَةٍ ﴿۴﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | साल | पचास हज़ार (50000) | जिस की मिक़्दार | एक दिन में | उस की तरफ़ | और रूहुल अमीन |

पस आज यहां उस का कोई दोस्त नहीं। (35) और पीप के सिवा (उस के लिए) कोई खाना नहीं। (36) उसे ख़ताकारों के सिवा कोई न खाएगा। (37) पस मैं उस की क़सम खाता हूँ जो तुम देखते हो। (38) और जो तुम नहीं देखते। (39) बेशक यह रसूले करीम का कलाम है। (40) और यह किसी शायर का कलाम नहीं, तुम बहुत कम ईमान लाते हो। (41) और न क़ौल है किसी काहिन का, बहुत कम तुम नसीहत पकड़ते हो। (42) तमाम जहानों के रब (की तरफ़) से उतारा हुआ। (43) और अगर वह हम पर बना कर लाता कुछ बातें। (44) तो यक़ीनन हम उस का दायां हाथ पकड़ लेते। (45) फिर अलबत्ता हम उस की रगे गर्दन काट देते। (46) सो तुम में से नहीं कोई भी उस से रोकने वाला। (47) और बेशक यह (कुरआन) परहेज़गारों के लिए अलबत्ता नसीहत है। (48) और बेशक हम ज़रूर जानते हैं कि तुम में कुछ झुटलाने वाले हैं। (49) और बेशक यह हस्रत है काफ़िरों पर। (50) और बेशक यह यक़ीनी हक़ है। (51) पस पाकीज़गी बयान करो अपने अ़ज़मत वाले रब के नाम की। (52)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

एक मांगने वाले (मुन्किरे अ़ज़ाब ने) अ़ज़ाब मांगा (जो) वाक़े होने वाला है। (1) काफ़िरों के लिए, उसे कोई दफ़्आ करने वाला नहीं, (2) दरजात के मालिक अल्लाह की तरफ़ से। (3) उस की तरफ़ रूहुल अमीन (जिब्राईल अ) और फ़रिश्ते एक दिन में चढ़ते हैं जिस की तादाद पचास हज़ार बरस की है। (4)

فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا (٥) اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا (٦) وَّنَرٰىهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम उसे देखते हैं | 6 | दूर | उसे देख रहे हैं | बेशक वह | 5 | सब्रे जमील | पस आप (स) सब्र करें |

قَرِيْبًا (٧) يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ (٨) وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पहाड़ | और होंगे | 8 | पिघले हुए तांबे की तरह | आस्मान | जिस दिन होगा | 7 | क़रीब |

كَالْعِهْنِ (٩) وَلَا يَسْئَلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا (١٠) يُّبَصَّرُوْنَهُمْ يَوَدُّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़ाहिश करेगा | वह देख रह होंगे उन्हें | 10 | किसी दोस्त | कोई दोस्त | और न पूछेगा | 9 | जैसे रंगीन ऊन |

الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِيْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍ بِبَنِيْهِ (١١)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 11 | अपने बेटों को | उस दिन | अज़ाब से | काश वह फ़िदये में देदे | मुज्रिम |

وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِيْهِ (١٢) وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِيْ تُـْٔوِيْهِ (١٣) وَمَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | 13 | उस को जगह देता था | वह जो | और अपने कुंबे को | 12 | और अपने भाई को | और अपनी बीवी को |

فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ثُمَّ يُنْجِيْهِ (١٤) كَلَّا اِنَّهَا لَظٰى (١٥) نَزَّاعَةً

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उधेड़ने वाली | 15 | भड़कती हुई आग | बेशक यह | हरगिज़ नही | 14 | यह उसे बचाले | फिर | सब को | ज़मीन में |

لِّلشَّوٰى (١٦) تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ وَتَوَلّٰى (١٧) وَجَمَعَ فَاَوْعٰى (١٨)

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | फिर उसे बन्द रखा | और (माल) जमा किया | 17 | और मुँह फेर लिया | पीठ फेरी | जिस ने | वह बुलाती है | 16 | खाल को |

اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوْعًا (١٩) اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوْعًا (٢٠) وَّاِذَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जब | 20 | घबरा उठने वाला | उसे बुराई पहुँचे | जब | 19 | पैदा किया गया बड़ा बेसब्रा | बेशक इन्सान |

مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوْعًا (٢١) اِلَّا الْمُصَلِّيْنَ (٢٢) الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी नमाज़ | पर | वह | वह जो | 22 | नमाज़ियों | सिवाए | 21 | बुख़्ल करने वाला | उसे आसाइश पहुँचे |

دَآئِمُوْنَ (٢٣) وَالَّذِيْنَ فِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُوْمٌ (٢٤)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 24 | मालूम (मुक़र्रर) | हक़ | उन के मालों में | और वह जो | 23 | हमेशा (पाबन्दी) करते हैं |

لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ (٢٥) وَالَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ (٢٦)

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 26 | रोज़े जज़ा को | सच मानते हैं | और वह जो | 25 | और महरूम (न मांगने वाले) | मांगने वाला के लिए |

وَالَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ (٢٧) اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के रब का अज़ाब | बेशक | 27 | डरने वाले | अपने रब के अज़ाब से | वह | और वह जो |

غَيْرُ مَاْمُوْنٍ (٢٨) وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ (٢٩)

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 29 | हिफ़ाज़त करने वाले | अपनी शर्मगाहों की | वह | और वह जो | 28 | बे ख़ौफ़ होने की बात नही |

اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ (٣٠)

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | कोई मलामत नही | पस वह बेशक | उन के दाएं हाथ की मिल्क (बान्दीयां) | जो | या | अपनी बीवीयों से | सिवाए |

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ (٣١)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 31 | हद से बढ़ने वाले | वह | तो वही लोग | उस के सिवा | फिर जो चाहे |

पस आप (स) (उन बातों पर) सब्र करें सब्रे जमील। (5)
बेशक वह उसे दूर देख (समझ) रहे हैं। (6)
और हम उसे क़रीब देखते हैं। (7)
जिस दिन आस्मान पिघले हुए तांबे की तरह होगा। (8)
और पहाड़ (धुन्की हुई) रंगीन ऊन की तरह होंगे। (9)
और कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा। (10)
हालांकि वह उन्हें देख रहे होंगे, मुज्रिम (गुनाहगार) ख़ाहिश करेगा कि काश वह फ़िदये में देदे उस दिन के अज़ाब (से छूटने के लिए) अपने बेटों को, (11)
अपनी बीवी को, और अपने भाई को। (12)
और अपने कुंबे को जो उस को जगह देता था। (13)
और जो ज़मीन में हैं सब (तमाम अहले ज़मीन) को, फिर यह उसे बचाले। (14)
हरगिज़ नहीं, बेशक यह भड़कती हुई आग है। (15)
खाल उधेड़ने वाली। (16)
वह (उसे) बुलाती है जिस ने पीठ फेरी और मुँह फेर लिया, (17)
और माल जमा किया फिर उसे बन्द रखा। (18)
बेशक इन्सान बड़ा बेसब्र (कम हिम्मत) पैदा किया गया है। (19)
जब उसे कोई बुराई पहुँचे तो घबरा उठने वाला है। (20)
और उसे आसाइश पहुँचे तो बुख़्ल करने वाला है। (21)
उन नमाज़ियों के सिवा। (22)
जो अपनी नमाज़ पर पाबन्दी करते हैं। (23)
और जिन के मालों में एक हिस्सा (हक़) मुक़र्रर है। (24)
मांगने वालों और महरूम के लिए। (25)
और वह जो रोज़े जज़ा औ सज़ा को सच मानते हैं। (26)
और वह जो अपने रब के अज़ाब से डरने वाले हैं। (27)
बेशक उन के रब का अज़ाब बेख़ौफ़ होने की चीज़ नहीं। (28)
और वह जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं, (29)
सिवाए अपनी बीवीयों से या अपनी बान्दीयों से, पस बेशक उन के (पास जाने) पर कोई मलामत नहीं। (30)
फिर जो उस के सिवा चाहे तो वही लोग हैं हद से बढ़ने वाले। (31)

और वह जो अपनी अमानतों और अपने अ़हद की हिफ़ाज़त करने वाले हैं। **(32)** और वह जो अपनी गवाहियों पर क़ाइम रहने वाले हैं। **(33)** और वह जो अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं। **(34)** यही लोग (बहिश्त के) बाग़ात में मुकर्रम ओ मुअ़ज़्ज़ हौंगे। **(35)** तो काफ़िरों को क्या हुआ कि वह आप (स) की तरफ़ दौड़ते आ रहे हैं। **(36)** दाएं से और बाएं से गिरोह दर गिरोह। **(37)** क्या उन में से हर कोई लालच रखता है कि वह (बहिश्त की) नेमतों वाले बाग़ात में दाख़िल किया जाएगा। **(38)** हरगिज़ नहीं, बेशक हम ने पैदा किया उन्हें उस चीज़ से जिसे वह ख़ुद जानते हैं। **(39)** पस नहीं, मैं मशरिक़ों और मग़रिबों के रब की क़सम खाता हूँ। बेशक हम अलबत्ता क़ादिर हैं। **(40)** इस पर कि हम बदल दें उन से बेहतर और नहीं हम आजिज़ किए जाने वाले। **(41)** पस उन्हें छोड़ दें कि बेहूदगियों में पड़े रहें और वह खेलें कूदें यहां तक कि वह अपने उस दिन से मिलें जिस का उन से वादा किया जाता है। **(42)** जिस दिन वह क़ब्रों से जल्दी जल्दी (इस तरह) निकलेंगे गोया के वह निशाने की तरफ़ लपक रहे हैं। **(43)** झुकी हौंगी उन की आँखें, उन पर ज़िल्लत छा रही होगी, यह है वह दिन जिस का उन से वादा किया जा रहा है। **(44)**

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

बेशक हम ने नूह (अ) को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा कि डराओ अपनी क़ौम को उस से क़ब्ल कि उन पर दर्दनाक अ़ज़ाब आजाए। **(1)** उस ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! बेशक मैं तुम्हारे लिए साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ। **(2)**

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَالَّذِيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह जो | 32 | रिआयत (हिफ़ाज़त) करने वाले | और अपने अहद | अपनी अमानतों | वह | और वह जो |

هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَآئِمُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपनी नमाज़ों की | वह | और वह जो | 33 | क़ाइम रहने वाले | वह अपनी गवाहियों पर |

يُحَافِظُوْنَ ﴿٣٤﴾ اُولٰٓئِكَ فِىْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٣٥﴾ فَمَالِ ع ١ ٣٥ ٧

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो क्या हुआ | 35 | मुकर्रम ओ मुअ़ज़्ज़ | बाग़ात में | यही लोग | 34 | हिफ़ाज़त करने वाले |

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ ﴿٣٦﴾ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और बाएं से | दाएं से | 36 | दौड़ते आरहे है | आप (स) की तरफ़ | जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) |

عِزِيْنَ ﴿٣٧﴾ اَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّدْخَلَ جَنَّةَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बाग़ | कि वह दाख़िल किया जाएगा | उन में से | हर कोई | क्या तमअ़ (लालच) रखता है | 37 | गिरोह दर गिरोह |

نَعِيْمٍ ﴿٣٨﴾ كَلَّا ۗ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٩﴾ فَلَآ اُقْسِمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस नहीं, मैं क़सम खाता हूँ | 39 | वह जानते है | उस से जो | बेशक हम ने पैदा किया उन्हें | हरगिज़ नही | 38 | नेमतों वाला |

بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ اِنَّا لَقٰدِرُوْنَ ﴿٤٠﴾ عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कि हम बदल दें | पर | 40 | अलबत्ता क़ादिर है | बेशक हम | और मग़रिबों | मशरिक़ों के रब की |

خَيْرًا مِّنْهُمْ ۙ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿٤١﴾ فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेहूदगियों में पड़े रहें | पस उन्हें छोड़ दें | 41 | आजिज़ किए जाने वाले | और नही हम | उन से | बेहतर |

وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِىْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٤٢﴾ يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जिस दिन वह निकलेंगे | 42 | उन से वादा किया जाता है | वह जिस का | अपने दिन से | यहां तक कि वह मिलें | और वह खेलें |

مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا كَاَنَّهُمْ اِلٰى نُصُبٍ يُّوْفِضُوْنَ ﴿٤٣﴾ خَاشِعَةً

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| झुकी हुई | 43 | लपक रहे हों | निशाने की तरफ़ | गोया कि वह | जल्दी जल्दी | क़ब्रों से |

اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۗ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِىْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿٤٤﴾ ع ٢ ٩ ٨

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 44 | उन से वादा किया जा रहा है | वह जिस का | यह है वह दिन | ज़िल्लत | उन पर छा रही होगी | उन की आँखें |

## آيَاتُهَا ٢٨ ❀ (٧١) سُوْرَةُ نُوْحٍ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकुआत 2 — (71) सूरह नूह — आयात 28

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِنَّآ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ اَنْ اَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उस से क़ब्ल | अपनी क़ौम को | कि डराओ | उस की क़ौम की तरफ़ | नूह (अ) | बेशक हम ने भेजा |

اَنْ يَّاْتِيَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّىْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | साफ़ साफ़ डराने वाला | तुम्हारे लिए | बेशक मैं | ऐ मेरी क़ौम | उस ने कहा | 1 | दर्दनाक अ़ज़ाब | कि उन पर आए |

اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿٣﴾ يَغْفِرْ لَكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हें | वह बख़्शदेगा | 3 | और मेरी इताअत करो | और उस से डरो | तुम अल्लाह की इबादत करो | कि |

مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ اِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह का मुक़र्रर कर्दा वक्त | बेशक | वक़्ते मुक़र्ररा | तक | और तुम्हें माहलत देगा | तुम्हारे गुनाह |

وقف لازم

اِذَا جَاۗءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤﴾ قَالَ رَبِّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐ मेरे रब | उस ने कहा | 4 | तुम जानते | काश | वह टलेगा नही | जब आजाएगा |

اِنِّىْ دَعَوْتُ قَوْمِىْ لَيْلًا وَّنَهَارًا ﴿٥﴾ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَاۗءِيْٓ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरा बुलाना | तो उन में जियादा न किया | 5 | और दिन | रात | अपनी कौम को | बेशक मैं ने बुलाया |

اِلَّا فِرَارًا ﴿٦﴾ وَاِنِّىْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوْٓا اَصَابِعَهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी उंगलियां | उन्हों ने दे ली | उन्हें | ताकि तू बख़्शदे | मैं ने उन को बुलाया | जब भी | और बेशक मैं | 6 | भागने के सिवा |

فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَاَصَرُّوْا وَاسْتَكْبَرُوا

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| और उन्हों ने तकब्बुर किया | और अड़ गए वह | उपने कपड़े | और उन्हों ने लपेट लिए | अपने कानों में |

اسْتِكْبَارًا ﴿٧﴾ ثُمَّ اِنِّىْ دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ﴿٨﴾ ثُمَّ اِنِّىْٓ اَعْلَنْتُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक मैं ने अलानिया समझाया | फिर | 8 | बाआवाज़े बुलन्द | बेशक मैं ने बुलाया उन्हें | फिर | 7 | बड़ा तकब्बुर |

لَهُمْ وَاَسْرَرْتُ لَهُمْ اِسْرَارًا ﴿٩﴾ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ۭ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपना रब | तुम बख़्शिश मांगो | पस मैं ने कहा | 9 | छुपा कर | उन्हें | और मैं ने पोशीदा समझाया | उन्हें |

اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ﴿١٠﴾ يُّرْسِلِ السَّمَاۗءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ﴿١١﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | मुसलसल बारिश | तुम पर | आस्मान | वह भेजेगा | 10 | है बड़ा बख़्शने वाला | बेशक वह |

وَّيُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बाग़ात | तुम्हारे लिए | और वह बनाएगा | और बेटों | मालों के साथ | और मदद देगा तुम्हें |

وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ﴿١٢﴾ مَا لَكُمْ لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ﴿١٣﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 13 | वक़ार | तुम एतिक़ाद नही रखते अल्लाह के लिए | क्या हुआ तुम्हें | 12 | नहरें | तुम्हारे लिए | और वह बनाएगा |

وَقَدْ خَلَقَكُمْ اَطْوَارًا ﴿١٤﴾ اَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह ने पैदा किए | कैसे | क्या तुम नहीं देखते | 14 | तरह तरह | उस ने पैदा किया तुम्हें |

سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ﴿١٥﴾ وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एक नूर | उन में | चाँद | और उस ने बनाया | 15 | एक के ऊपर एक | सात आस्मान |

وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿١٦﴾ وَاللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन से | उस ने उगाया तुम्हें | और अल्लाह | 16 | चिराग़ | सूरज | और उस ने बनाया |

نَبَاتًا ﴿١٧﴾ ثُمَّ يُعِيْدُكُمْ فِيْهَا وَيُخْرِجُكُمْ اِخْرَاجًا ﴿١٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | निकालना (दोबारा) | और फिर तुम्हें निकालेगा | उस में | वह लौटाएगा तुम्हें | फिर | 17 | सब्ज़े की तरह |

कि तुम अल्लाह की इबादत करो और उस से डरो और मेरी इताअत करो, (3)
वह बख़्शदेगा तुम्हें तुम्हारे गुनाह और (मौत के) वक़्ते मुक़र्ररा तक तुम्हें मोहलत देगा। बेशक अल्लाह का मुक़र्रर कर्दा वक़्त जब आजाएगा तो वह टलेगा नहीं, काश तुम जानते। (4)
उस ने कहा कि ऐ मेरे रब! बेशक मैं ने बुलाया अपनी क़ौम को रात और दिन। (5)
तो उन में ज़ियादा न किया मेरा बुलाना सिवाए भागने के। (6)
और बेशक जब भी मैं ने उन्हें बुलाया ताकि तू उन्हें बख़्शदे, उन्हों ने अपनी उंगलियां अपने कानों में दे लीं और उन्हों ने अपने ऊपर कपड़े लपेट लिए और वह अड़ गए और उन्हों ने बड़ा तकब्बुर किया। (7)
फिर बेशक मैं ने उन्हें बा आवाज़े बुलन्द बुलाया। (8)
फिर बेशक मैं ने उन्हें अलानिया (भी) समझाया और उन्हें छुपा कर पोशीदा (भी) समझाया। (9)
पस मैं ने कहा कि तुम अपने रब से बख़्शिश मांगो, बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला है। (10)
वह आस्मान से तुम पर मुसलसल बारिश भेजेगा। (11)
और तुम्हें मालों और बेटों से मदद देगा और बनाएगा तुम्हारे लिए बाग़ात और वह बनाएगा तुम्हारे लिए नहरें। (12)
तुम्हें क्या हुआ है कि तुम अल्लाह के लिए वक़ार (अज़मत) का एतिक़ाद नहीं रखते? (13)
और यक़ीनन उस ने पैदा किया तुम्हें तरह तरह से। (14)
क्या तुम नहीं देखते कि कैसे अल्लाह ने सात आस्मान ऊपर तले बनाए? (15)
और उस ने उन में चाँद को एक नूर बनाया और उस ने सूरज को चिराग़ (के मानिंद रोशन) बनाया। (16)
और अल्लाह ने तुम्हें ज़मीन से सब्ज़े की तरह उगाया (पैदा किया)। (17)
फिर वह तुम्हें उस में लौटाएगा और तुम्हें दोबारा (उस से) निकालेगा। (18)

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया। (19) ताकि तुम चलो फिरो उस के कुशादा रास्तों में। (20) नूह (अ) ने कहा कि ऐ मेरे रब! बेशक उन्हों ने मेरी नाफ़रमानी की और (उस की) पैरवी की जिस को उस के माल ने ज़ियादा नहीं किया और न उस की औलाद ने खसारे के सिवा। (21) और उन्हों ने बड़ी बड़ी चालें चलीं। (22) और उन्हों ने कहा कि तुम हरगिज़ न छोड़ना अपने माबूदाने (बातिल) को और हरगिज़ न छोड़ना वद्द और न सुवाअ़ और न यग़ूस और यऊक़ और नस्र (बुतों) को। (23) और उन्हों ने गुमराह किया बहुतों को, और ज़ालिमों को न ज़ियादा कर गुमराही के सिवा। (24) अपनी ख़ताओं के सबब वह ग़र्क़ किए गए, फिर वह आग में दाखि़ल किए गए तो उन्हों ने अपने लिए अल्लाह के सिवा न पाया कोई मददगार। (25) और नूह (अ) ने कहा कि ऐ मेरे रब! तू न छोड़ ज़मीन पर काफ़िरों में से कोई बसने वाला। (26) बेशक अगर तू ने उन्हें छोड़ दिया तो वह तेरे बन्दों को गुमराह करेंगे और न जनेंगे बदकार नाशुक्र (औलाद) के सिवा। (27) ऐ मेरे रब! मुझे बख़्शदे और मेरे माँ बाप को और उसे जो दाखिल हुआ मेरे घर में ईमान ला कर, और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को, और ज़ालिमों को हलाकत के सिवा न बढ़ा। (28)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

आप (स) फ़रमा दें: मुझे वहि की गई है कि जिन्नात की एक जमाअ़त ने उसे (क़ुरआन को) सुना तो उन्हों ने कहा कि बेशक हम ने एक अजीब क़ुरआन सुना है। (1)

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ بِسَاطًا ﴿١٩﴾ لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रास्ते | उस के | ताकि तुम चलो | 19 | फ़र्श | ज़मीन | तुम्हारे लिए | उस ने बनाया | और अल्लाह |

فِجَاجًا ﴿٢٠﴾ قَالَ نُوْحٌ رَّبِّ اِنَّهُمْ عَصَوْنِيْ وَاتَّبَعُوْا مَنْ ع ١

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो जिस | और उन्हों ने पैरवी की | मेरी नाफ़रमानी की | बेशक उन्हों ने | ऐ मेरे रब | नूह (अ) | कहा | 20 | कुशादा |

لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهٗ وَوَلَدُهٗٓ اِلَّا خَسَارًا ﴿٢١﴾ وَمَكَرُوْا مَكْرًا كُبَّارًا ﴿٢٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 22 | बड़ी बड़ी | चालें | और उन्हों ने चालें चलीं | 21 | सिवा खसारा | और उस की औलाद | उस का माल | नहीं ज़ियादा किया |

وَقَالُوْا لَا تَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَّلَا سُوَاعًا ۙ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और न सुवाअ़ | वद | और हरगिज़ न छोड़ना | अपने माबूद | तुम हरगिज़ न छोड़ना | और उन्हों ने कहा |

وَّلَا يَغُوْثَ وَيَعُوْقَ وَنَسْرًا ﴿٢٣﴾ وَقَدْ اَضَلُّوْا كَثِيْرًا ۚ وَلَا تَزِدِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और न ज़ियादा कर | बहुत | और तहक़ीक़ उन्हों ने गुमराह किया | 23 | और नस्र | और यऊक़ | और न यग़ूस |

الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا ضَلٰلًا ﴿٢٤﴾ مِمَّا خَطِيْٓـٰٔتِهِمْ اُغْرِقُوْا فَاُدْخِلُوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर वह दाखि़ल किए गए | वह ग़र्क़ किए गए | अपनी ख़ताएं | ब सबब | 24 | गुमराही के सिवा | ज़ालिमों |

نَارًا ۙ فَلَمْ يَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْصَارًا ﴿٢٥﴾ وَقَالَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और कहा | 25 | कोई मददगार | अल्लाह के सिवा | अपने लिए | उन्हों ने पाया | तो न | आग |

نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ﴿٢٦﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 26 | कोई बसने वाला | काफ़िरों में से | ज़मीन पर | तू न छोड़ | ऐ मेरे रब | नूह (अ) |

اِنَّكَ اِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوْٓا اِلَّا فَاجِرًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बदकार | सिवाए | और न जनेंगे | तेरे बन्दे | वह गुमराह करेंगे | उन्हें छोड़ दिया | अगर | बेशक तू |

كَفَّارًا ﴿٢٧﴾ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दाखि़ल हुआ | और उसे जो | और मेरे माँ बाप को | मुझे बख़्शदे | ऐ मेरे रब | 27 | नाशुक्रे |

بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۗ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ज़ालिमों | और न बढ़ा | और मोमिन औरतों | और मोमिन मर्दों को | ईमान ला कर | मेरे घर |

اِلَّا تَبَارًا ﴿٢٨﴾ ع ٢ النصف ١٠

| | |
|---|---|
| 28 | हलाकत के सिवा |

## اٰيَاتُهَا ٢٨ (٧٢) سُوْرَةُ الْجِنِّ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 | (72) सूरतुल जिन्न | आयात 28

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ﴿١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | एक अजीब | कुरआन | बेशक हम ने सुना | तो उन्हों ने कहा | एक जमाअ़त जिन्नात की | कि इसे सुना | मेरी तरफ़ | आप कह दें कि मुझे वहि की गई |

يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ۝٢

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | किसी को | और हम हरगिज़ शरीक न ठहराएंगे अपने रब के साथ | उस पर | तो हम ईमान लाए | हिदायत की तरफ़ | वह रहनुमाई करता है |

وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۝٣

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | और न औलाद | बीवी | उस ने नहीं बनाया | हमारा रब | शान | बड़ी बुलंद | और यह कि |

وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۝٤ وَّاَنَّا ظَنَنَّآ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और यह कि हम ने गुमान किया | 4 | ख़िलाफ़े हक़ बातें | अल्लाह पर | हम में से बेवकूफ़ | कहते थे | और यह कि |

اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۝٥ وَّاَنَّهٗ كَانَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| थे | और यह कि | 5 | झूट | अल्लाह पर | और जिन्न | इन्सान | हरगिज़ न कहेंगे | कि |

رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ يَعُوْذُوْنَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तो उन्हों ने (जिन्नात का) बढ़ा दिया | जिन्नात से | लोगों से | पनाह लेते (थे) | इन्सानों में से | कुछ आदमी |

رَهَقًا ۝٦ وَّاَنَّهُمْ ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ۝٧

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | किसी को | रसूल बना कर भेजेगा अल्लाह | कि हरगिज़ न | जैसे तुम ने गुमान किया था | उन्हों ने गुमान किया | और यह कि वह | 6 | तकब्बुर |

وَّاَنَّا لَمَسْنَا السَّمَآءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सख़्त | पहरेदार | भरा हुआ | तो हम ने उसे पाया | आस्मान | और यह कि हम ने छुआ (टटोला) |

وَّشُهُبًا ۝٨ وَّاَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ؕ فَمَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस जो | सुनने के लिए | ठिकाने | उस के | हम बैठा करते थे | और यह कि | 8 | और शोले |

يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ۝٩ وَّاَنَّا لَا نَدْرِيْٓ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं जानते | और यह कि हम | 9 | घात लगाया हुआ | शोला | वह पाता है अपने लिए | अब | सुनता है |

اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ فِي الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन का रब | उन से | या इरादा फ़रमाया है | जो ज़मीन में | उन के साथ | इरादा किया गया | आया बुराई |

رَشَدًا ۝١٠ وَّاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ ؕ كُنَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम थे | उस के अ़लावा | और हम में से | नेकोकार (जमा) | हम में से | और यह कि | 10 | हिदायत |

طَرَآئِقَ قِدَدًا ۝١١ وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِي الْاَرْضِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन में | हरा सकेंगे अल्लाह को | कि हम हरगिज़ न | हम समझते थे | और यह कि | 11 | मुख़्तलिफ़ | राहें |

وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ۝١٢ وَّاَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰٓى اٰمَنَّا بِهٖ ؕ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हम ईमान ले आए उस पर | हिदायत | जब हम ने सुनी | और यह कि | 12 | भाग कर | और हम उस को हरगिज़ न हरा सकेंगे |

فَمَنْ يُّؤْمِنْ بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ۝١٣ وَّاَنَّا مِنَّا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम में से | और यह कि | 13 | और न किसी ज़ुल्म | किसी नुक़्सान | तो उसे ख़ौफ़ न होगा | अपने रब पर ईमान लाए | सो जो |

الْمُسْلِمُوْنَ وَمِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ؕ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰٓئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ۝١٤

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 14 | भलाई | उन्हों ने क़स्द किया | तो वही हैं | पस जो इसलाम लाया | गुनाहगार | और हम में से | मुसलमान (जमा) |

वह रहनुमाई करता है हिदायत की तरफ़, तो हम उस पर ईमान ले आए, और हम अपने रब के साथ हरगिज़ किसी को शरीक न ठहराएंगे। (2)
और यह कि हमारे रब की शान बड़ी बुलंद है। उस ने नहीं बनाया किसी को अपनी बीवी और न औलाद। (3)
और यह कि हम में से बेवकूफ़ कहते थे अल्लाह पर ख़िलाफ़े हक़ बातें। (4)
और यह कि हम ने गुमान किया कि हरगिज़ इन्सान और जिन्न अल्लाह पर (अल्लाह की शान में) झूट न कहेंगे। (5)
और यह कि इन्सानों में से कुछ आदमी जिन्नात के लोगों से पनाह लेते थे और उन्हों ने जिन्नात का तकब्बुर और बढ़ा दिया। (6)
और उन्हों ने गुमान किया जैसे तुम ने गुमान किया था कि हरगिज़ अल्लाह किसी को रसूल बना कर न भेजेगा। (7)
और यह कि हम ने टटोला आस्मानों को तो हम ने उसे सख़्त पहरेदारों और शोलों से भरा हुआ पाया। (8)
और यह कि हम उस के ठिकानों में सुनने के लिए बैठा करते थे। पस अब जो सुनता है (सुनना चाहता है) वह (वहां) अपने लिए घात लगाया हुआ शोला पाता है। (9)
और यह कि हम नहीं जानते कि जो जमीन में हैं आया उन के साथ बुराई का इरादा किया गया है या उन से (अल्लाह ने) हिदायत का इरादा फ़रमाया है। (10)
और यह कि हम में से (कुछ) नेकोकार हैं और हम में से (कुछ) उस के अ़लावा हैं, हम मुख़्तलिफ़ राहों पर हैं। (11)
और यह कि हम समझते हैं कि हम अल्लाह को हरगिज़ न हरा सकेंगे जमीन में और न हरगिज हम उस को भाग कर हरा सकेंगे। (12)
और यह कि हम ने हिदायत सुनी तो हम उस पर ईमान ले आए, सो जो अपने रब पर ईमान लाए तो उसे न किसी नुक़्सान का ख़ौफ़ होगा और न किसी जुल्म का। (13)
और यह कि हम में से (कुछ) मुसलमान (फ़रमांबरदार) हैं और हम में से (कुछ) गुनाहगार हैं। पस जो इसलाम लाया तो वही हैं जिन्हों ने भलाई का क़स्द किया। (14)

और रहे गुनाहगार तो वह जहन्नम का ईंधन हुए। **(15)**
और (मुझे वहि की गई है) कि अगर वह क़ाइम रहते हैं सीधे रास्ते पर तो हम उन्हें वाफ़िर पानी पिलाते। **(16)**
ताकि हम उन्हें उस में आज़माएं, और जो अपने रब की याद से मुंह मोड़ेगा वह उसे सख़्त अज़ाब में दाख़िल करेगा। **(17)**
और यह कि मस्जिदें अल्लाह के लिए हैं तो तुम अल्लाह के साथ किसी की बन्दगी न करो। **(18)**
और यह कि जब खड़ा हुआ अल्लाह का बन्दा कि वह उस (अल्लाह) की इबादत करे तो क़रीब था कि वह उस पर हल्क़ा दर हल्क़ा हो जाएं। **(19)**
आप (स) फ़रमा दें कि मैं सिर्फ़ अपने रब की इबादत करता हूँ और मैं शरीक नहीं करता किसी को उस के साथ। **(20)**
आप (स) फ़रमा दें कि बेशक मैं तुम्हारे लिए इख़्तियार नहीं रखता किसी ज़र्र का और न किसी भलाई का। **(21)**
आप (स) फ़रमा दें कि बेशक मुझे हरगिज पनाह न देगा अल्लाह से कोई भी, और मैं उस के सिवा कोई जाए पनाह न पाऊँगा। **(22)**
मगर (मेरा काम है) अल्लाह की तरफ़ से उस का कहा और पैग़ाम पहुँचाना और जो नाफ़रमानी करेगा अल्लाह की और उस के रसूल (स) की तो बेशक उस के लिए जहन्नम की आग है, ऐसे लोग उस में हमेशा हमेशा रहेंगे। **(23)**
यहां तक कि जब वह देखेंगे जो उन्हें वादा दिया जाता है तो वह जान लेंगे कि किस का मददगार कमज़ोर तरीन है और तादाद में कम तर है। **(24)**
आप (स) फ़रमा दें: मैं नहीं जानता कि आया क़रीब है जो तुम्हें वादा दिया जाता है या कर देगा उस के लिए मेरा रब कोई मुद्दते (दराज़) मुक़र्रर कर देगा। **(25)**
(वह) ग़ैब का जानने वाला है, अपने ग़ैब पर किसी को मुत्तला नहीं करता, **(26)**
सिवाए (उस के) जिसे वह पसंद करता है रसूलों में से, फिर बेशक उस के आगे से और उस के पीछे मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते चलाता है, **(27)**

وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ﴿١٥﴾ وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह क़ाइम रहते | और यह कि अगर | 15 | ईंधन | जहन्नम का | तो वह हुए | गुनाहगार (जमा) | और रहे |

عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّاۤءً غَدَقًا ﴿١٦﴾ لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | ताकि हम उन्हें आज़माएं | 16 | वाफ़िर | पानी | तो अलबत्ता हम उन्हें पिलाते | (सीधे) रास्ते पर |

وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ﴿١٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 17 | सख़्त | अज़ाब | वह उसे दाख़िल करेगा | अपने रब की याद | से | रूगर्दानी करेगा | और जो |

وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ﴿١٨﴾ وَّاَنَّهٗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और यह कि | 18 | किसी की | अल्लाह के साथ | तो तुम न पुकारो (बन्दगी न करो) | मस्जिदें अल्लाह के लिए | और यह कि |

لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ﴿١٩﴾ ع ۹ ۱۱

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 19 | हल्क़ा दर हल्क़ा | उस पर | वह हो जाएं | क़रीब था | कि वह उस की इबादत करे | अल्लाह का बन्दा | जब खड़ा हुआ |

قُلْ اِنَّمَاۤ اَدْعُوْا رَبِّيْ وَلَاۤ اُشْرِكُ بِهٖۤ اَحَدًا ﴿٢٠﴾ قُلْ اِنِّيْ لَاۤ اَمْلِكُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इख़्तियार नहीं रखता | बेशक मैं | फ़रमा दें | 20 | उस के साथ किसी को | और मैं शरीक नहीं करता | सिर्फ़ मैं अपने रब की इबादत करता हूँ | फ़रमा दें इस के सिवा नहीं |

لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا رَشَدًا ﴿٢١﴾ قُلْ اِنِّيْ لَنْ يُّجِيْرَنِيْ مِنَ اللّٰهِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह से | मुझे हरगिज़ पनाह न देगा | बेशक मुझे | फ़रमा दें | 21 | और न किसी भलाई | किसी ज़र्र | तुम्हारे लिए |

اَحَدٌ ۙ وَّلَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٢﴾ اِلَّا بَلٰغًا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मगर (पैग़ाम) पहुँचाना | 22 | कोई जाए पनाह | उस के सिवा | और मैं हरगिज़ न पाऊँगा | कोई |

مِّنَ اللّٰهِ وَرِسٰلٰتِهٖ ۗ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तो बेशक उस के लिए | और उस के रसूल की | नाफ़रमानी करे अल्लाह की | और जो | और उस के पैग़ामात | अल्लाह की तरफ़ से |

نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ﴿٢٣﴾ حَتّٰۤى اِذَا رَاَوْا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जब वह देखेंगे | यहां तक कि | 23 | हमेशा हमेशा | उस में | हमेशा रहेंगे | जहन्नम की आग |

مَا يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّاَقَلُّ عَدَدًا ﴿٢٤﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 24 | तादाद में | और कम तर | मददगार | कमज़ोर तरीन | किस | तो वह अनक़रीब जान लेंगे | जो उन्हें वादा दिया जाता है |

قُلْ اِنْ اَدْرِيْۤ اَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ يَجْعَلُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| या कर देगा | जो तुम्हें वादा दिया जाता है | आया क़रीब है | मैं जानता | नहीं | फ़रमा दें |

لَهٗ رَبِّيْۤ اَمَدًا ﴿٢٥﴾ عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖۤ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने ग़ैब पर | वह ज़ाहिर नहीं करता | ग़ैब का जानने वाला | 25 | मुद्दत | मेरा रब | उस के लिए |

اَحَدًا ﴿٢٦﴾ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो बेशक वह | रसूलों में से | वह पसंद करता है | जिस को | सिवाए | 26 | किसी को |

يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ﴿٢٧﴾

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 27 | मुहाफ़िज़ (फ़रिश्ते) | और उस के पीछे से | उस के आगे से | चलाता है |

لِيَعْلَمَ أَنْ قَدْ أَبْلَغُوا رِسَالَاتِ رَبِّهِمْ وَأَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो उन के पास | और उस ने अहाता किया हुआ है | अपने रब के | पैग़ामात | उन्हों ने तहक़ीक़ पहुँचा दिए | कि | ता कि वह मालूम कर ले |

٢ ع ٩ ١٢ وَأَحْصَىٰ كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ﴿٢٨﴾

| | | | |
|---|---|---|---|
| 28 | गिनती में | हर शै | और उस ने शुमार कर रखी है |

آيَاتُهَا ٢٠ ﴿٧٣﴾ سُورَةُ الْمُزَّمِّلِ رُكُوعَاتُهَا ٢

| | | |
|---|---|---|
| रुकूआत 2 | (73) सूरतुल मुज़म्मिल<br>कपड़ों में लिपटने वाले | आयात 20 |

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يَا أَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ﴿١﴾ قُمِ اللَّيْلَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٢﴾ نِصْفَهُ أَوِ انْقُصْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कम कर लें | या | उस का निस्फ़ | 2 | थोड़ा | मगर | रात में क़ियाम करें | 1 | ऐ कपड़ों में लिपटने वाले (मुहम्मद स) |

مِنْهُ قَلِيلًا ﴿٣﴾ أَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلًا ﴿٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | तरतील के साथ | क़ुरआन | और ठहर ठहर कर पढ़ें | उस पर-से | या ज़ियादा कर लें | 3 | थोड़ा | उस में से |

إِنَّا سَنُلْقِي عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيلًا ﴿٥﴾ إِنَّ نَاشِئَةَ اللَّيْلِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रात | उठना | बेशक | 5 | एक भारी कलाम | आप (स) | बेशक हम अनक़रीब डाल देंगे |

هِيَ أَشَدُّ وَطْئًا وَأَقْوَمُ قِيلًا ﴿٦﴾ إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शुग़्ल | दिन में | बेशक आप (स) के लिए | 6 | बात/ तिलावत | और ज़ियादा दुरुस्त | यह सख़्त (नफ़्स को) रौन्दने वाला |

طَوِيلًا ﴿٧﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا ﴿٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | (सब से) छूट कर | उस की तरफ़ | और छूट जाएं | अपने रब का नाम | और आप (स) याद करें | 7 | तवील |

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ﴿٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | कारसाज़ | पस पकड़ लो (बना लो) उस को | उस के सिवा | नहीं कोई माबूद | और मग़रिब | रब मशरिक़ का |

وَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيلًا ﴿١٠﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | अच्छी तरह | किनारा कश हो कर | और उन्हें छोड़ दें | जो वह कहते हैं | पर | और आप (स) सब्र करें |

وَذَرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ أُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيلًا ﴿١١﴾ إِنَّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | 11 | थोड़ी | और उन को मोहलत दें | ख़ुशहाल लोगों | और झुटलाने वालों | और मुझे छोड़ दो |

لَدَيْنَا أَنْكَالًا وَجَحِيمًا ﴿١٢﴾ وَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٣﴾ يَوْمَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिस दिन | 13 | दर्दनाक | और अज़ाब | गले में अटक जाने वाला | और खाना | 12 | और दहकती आग | अज़ाब | हमारे हां |

تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَهِيلًا ﴿١٤﴾ إِنَّا أَرْسَلْنَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक हम ने भेजा | 14 | रेज़ा रेज़ा | रेत के तोदे | पहाड़ | और हो जाएंगे | और पहाड़ | ज़मीन | कांपेगी |

إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا ﴿١٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15 | एक रसूल | फ़िरऔन की तरफ़ | जैसे हम ने भेजा | तुम पर | गवाही देने वाला | एक रसूल | तुम्हारी तरफ़ |

ता कि वह मालूम कर ले कि उन्हों ने पहुँचा दिए हैं अपने रब के पैग़ामात और उस ने अहाता किया हुआ है जो कुछ उन के पास है और हर चीज की गिनती में शुमार कर रखा है। (28)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ऐ मुज़म्मिल (कपड़ों में लिपटने वाले मुहम्मद (स))! (1) रात में क़ियाम करें मगर थोड़ा। (2) उस (रात) का निस्फ़ हिस्सा या उस में से थोड़ा कम कर लें। (3) या (कुछ) ज़ियादा कर लें उस से, और क़ुरआन तरतील के साथ ठहर ठहर कर पढ़ें। (4) बेशक हम आप (स) पर अनक़रीब एक भारी कलाम (क़ुरआने करीम) डालेंगे (नाज़िल करेंगे)। (5) बेशक रात का उठना नफ़्स को रौन्दने वाला है और (क़ुरआन) पढ़ने के लिए ज़ियादा दुरुस्त है। (6) बेशक आप (स) के लिए दिन में बहुत काम हैं। (7) और आप (स) अपने रब के नाम का ज़िक्र करें और सब से कट कर (अलग हो कर) उस के हो जाएं। (8) (वह) मशरिक़ ओ मग़रिब का रब है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं, पस आप (स) उस को कारसाज़ बनालें। (9) और आप (स) सब्र करें उस पर जो वह कहते हैं और अच्छी तरह किनारा कश हो कर आप (स) उन्हें छोड़ दें। (10) और मुझे और झुटलाने वाले ख़ुशहाल लोगों को छोड़ दें (समझ लेने दें) और उन को थोड़ी मोहलत दे दें (11) बेशक हमारे हां अजाब है और दहकती आग। (12) और खाना है गले में अटक जाने वाला और अज़ाब है दर्दनाक। (13) जिस दिन ज़मीन और पहाड़ कांपेंगे और पहाड़ रेज़ा रेज़ा (हो कर) रेत के तोदे हो जाएंगे। (14) बेशक हम ने भेजा तुम्हारी तरफ़ एक रसूल (मुहम्मद स) गवाही देने वाला तुम पर जैसे हम ने भेजा था फ़िरऔन की तरफ़ एक रसूल (मूसा अ)। (15)

पस फ़िरऔन ने रसूल का कहा न माना तो हम ने उसे (फ़िरऔन को) बड़े बवाल की पकड़ में पकड़ लिया। (16) अगर तुम ने कुफ़्र किया तो उस दिन कैसे बचोगे? जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा। (17) उस से आस्मान फट जाएगा, उस का वादा पूरा हो कर रहने वाला है। (18) बेशक यह (कुरआन) नसीहत है, जो कोई चाहे इख़्तियार कर ले (इस के ज़रीए) अपने रब की तरफ़ राह। (19) बेशक आप (स) का रब जानता है कि आप (स) (कभी) दो तिहाई रात के क़रीब क़ियाम करते हैं और (कभी) आधी रात और (कभी) उस का तिहाई हिस्सा और जो आप (स) के साथी हैं उन में से एक जमाअत (भी), और अल्लाह रात और दिन का अन्दाज़ा फ़रमाता है, उस ने जाना कि तुम हरगिज़ निबाह न कर सकोगे तो उस ने तुम पर इनायत फ़रमाई, पस तुम कुरआन में जिस क़द्र आसानी से हो सके पढ़ लिया करो, उस ने जाना कि अलबत्ता तुम में से कोई बीमार होंगे और दूसरे रोज़ी तलाश करते हुए ज़मीन में सफ़र करेंगे और कई दूसरे अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे, पस उस में से जिस क़द्र आसानी से हो सके तुम पढ़ लिया करो और तुम नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात अदा करते रहो और अल्लाह को इख़्लास से क़र्ज़े हस्ना दो, और कोई नेकी जो तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह के हां बेहतर और अजर में अज़ीम तर पाओगे, और तुम अल्लाह से बख़्शिश मांगो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत रह्म करने वाला है। (20)

فَعَصٰى فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا وَّبِيْلًا ﴿١٦﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 16 | बड़े बवाल | पकड़ | तो हम ने उसे पकड़ लिया | रसूल | फ़िरऔन | पस कहा न माना |

فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बच्चों को | कर देगा | उस दिन | अगर तुम ने कुफ़्र किया | तुम बचोगे | तो कैसे |

شِيْبَا ﴿١٧﴾ اِلسَّمَآءُ مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ ؕ كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا ﴿١٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | पूरा हो कर रहने वाला | उस का वादा | है | उस से | फट जाएगा | आस्मान | 17 | बूढ़ा |

اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿١٩﴾ ع ١٩ ١٣

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 19 | राह | अपने रब की तरफ़ | इख़्तियार कर ले | चाहे | तो जो | नसीहत | बेशक यह |

اِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ اَنَّكَ تَقُوْمُ اَدْنٰى مِنْ ثُلُثَيِ الَّيْلِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दो तिहाई (2/3) रात के | क़रीब | क़ियाम करते हैं | कि आप (स) | वह जानता है | बेशक आप (स) का रब |

وَنِصْفَهٗ وَثُلُثَهٗ وَطَآئِفَةٌ مِّنَ الَّذِيْنَ مَعَكَ ؕ وَاللّٰهُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और अल्लाह | जो आप (स) के साथ | से | और एक जमाअत | और उस का तिहाई (1/3) | और आधी (1/2) रात |

يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ؕ عَلِمَ اَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तो उस ने तुम पर इनायत की | कि तुम हरगिज़ (वक़्त का) शुमार न कर सकोगे | उस ने जाना | रात और दिन | अन्दाज़ा फ़रमाता है |

فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ ؕ عَلِمَ اَنْ سَيَكُوْنُ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| कि अलबत्ता होंगे | उस ने जाना | क़ुरआन से | जिस क़द्र आसानी से हो सके | तो तुम पढ़ा करो |

مِنْكُمْ مَّرْضٰى ۙ وَاٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِى الْاَرْضِ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ज़मीन में | वह सफ़र करेंगे | और दूसरे | बीमार | तुम में से कोई |

يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ ۙ وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की राह में | वह जिहाद करेंगे | और कई दूसरे | अल्लाह का फ़ज़्ल (रोज़ी) | से | तलाश करते हुए |

فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| नमाज़ | और क़ाइम करो | उस से | जिस क़द्र आसानी से हो सके | पस पढ़ लिया करो |

وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ؕ وَمَا تُقَدِّمُوْا

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तुम आगे भेजोगे | और जो | क़र्ज़े हस्ना (इख़्लास से) | और अल्लाह का कर्ज दो | और अदा करते रहो ज़कात |

لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वह बेहतर | अल्लाह के हां | तुम उसे पाओगे | कोई नेकी | अपने लिए |

وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ؕ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बख़्शने वाला | बेशक अल्लाह | और तुम बख़्शिश मांगो अल्लाह से | अजर में | और अज़ीम तर |

رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾ ع ٢ ١ ١٣

| | | | |
|---|---|---|---|
| | 20 | निहायत रह्म करने वाला | |

## آيَاتُهَا ٥٦ ❀ (٧٤) سُوْرَةُ الْمُدَّثِّرِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

| | | |
|---|---|---|
| रुकुआत 2 | (74) सूरतुल मुद्दस्सिर<br>कपड़े में लिपटे हुए | आयात 56 |

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ⟨١⟩ قُمْ فَاَنْذِرْ ⟨٢⟩ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ⟨٣⟩ وَثِيَابَكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अपने कपड़े | 3 | और अपने रब की बड़ाई बयान करो | 2 | फिर डराओ | खड़े हो जाओ | 1 | ऐ कपड़े में लिपटे हुए (मुहम्मद (स) |

فَطَهِّرْ ⟨٤⟩ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ⟨٥⟩ وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ⟨٦⟩

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | ज़ियादा लेने (की ग़रज से) | और एहसान न रखो | 5 | सो दूर रहो | और पलीदी | 4 | सो पाक करो |

وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ⟨٧⟩ فَاِذَا نُقِرَ فِى النَّاقُوْرِ ⟨٨⟩ فَذٰلِكَ يَوْمَئِذٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस दिन | तो वह | 8 | सूर में | फिर जब फूंका जाएगा | 7 | सब्र करो | और अपने रब के लिए |

يَّوْمٌ عَسِيْرٌ ⟨٩⟩ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ يَسِيْرٍ ⟨١٠⟩ ذَرْنِىْ وَمَنْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जिसे | मुझे छोड़ दो | 10 | न आसान | काफ़िरों पर | 9 | बड़ा दुश्वार | दिन |

خَلَقْتُ وَحِيْدًا ⟨١١⟩ وَّجَعَلْتُ لَهٗ مَالًا مَّمْدُوْدًا ⟨١٢⟩ وَّبَنِيْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बेटे | 12 | बहुत सारा माल | उसे | और मैं ने दिया | 11 | अकेला | मैं ने पैदा किया |

شُهُوْدًا ⟨١٣⟩ وَّمَهَّدْتُّ لَهٗ تَمْهِيْدًا ⟨١٤⟩ ثُمَّ يَطْمَعُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह तमअ करता है | फिर | 14 | खूब हमवार | उस के लिए | और हमवार किया | 13 | सामने हाज़िर रहने वाले |

اَنْ اَزِيْدَ ⟨١٥⟩ كَلَّا ؕ اِنَّهٗ كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا ⟨١٦⟩ سَاُرْهِقُهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अब उस से चढ़वाऊंगा | 16 | इनाद रखने वाला (मुख़ालिफ़) | हमारी आयात का | बेशक वह है | हरगिज़ नही | 15 | कि (और) ज़ियादा दूँ |

صَعُوْدًا ⟨١٧⟩ اِنَّهٗ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ⟨١٨⟩ فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ⟨١٩⟩

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 19 | उस ने अन्दाज़ा किया | कैसा | सो वह मारा जाए | 18 | और उस ने अन्दाज़ा किया | बेशक उस ने सोचा | 17 | बड़ी चढ़ाई |

ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ⟨٢٠⟩ ثُمَّ نَظَرَ ⟨٢١⟩ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ⟨٢٢⟩

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 22 | और मुँह बिगाड़ लिया | फिर उस ने तेवरी चढ़ाई | 21 | फिर उस ने देखा | 20 | कैसा उस ने अन्दाज़ा किया | फिर वह मारा जाए |

ثُمَّ اَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ⟨٢٣⟩ فَقَالَ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मगर (सिर्फ़) जादू | नहीं यह | तो उस ने कहा | 23 | और उस ने तकब्बुर किया | फिर उस ने पीठ फेर ली |

يُّؤْثَرُ ⟨٢٤⟩ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ⟨٢٥⟩ سَاُصْلِيْهِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अनक़रीब उसे डाल दूंगा | 25 | आदमी का कलाम | मगर (सिर्फ़) | नही यह | 24 | अगलों से नक्ल किया जाता है |

سَقَرَ ⟨٢٦⟩ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا سَقَرُ ⟨٢٧⟩ لَا تُبْقِىْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह न बाक़ी रखेगी | 27 | सक़र क्या है | और तुम क्या समझे? | 26 | सक़र (जहन्नम) |

وَلَا تَذَرُ ⟨٢٨⟩ لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ ⟨٢٩⟩ عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ⟨٣٠⟩

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | उस पर हैं उन्नीस (19) दारोग़ा | 29 | आदमी को | झुलस देने वाली | 28 | और न छोड़ेगी |

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
ऐ कपड़ों में लिपटे हुए (मुहम्मद (स))! (1)
खड़े हो जाओ, फिर डराओ, (2)
और अपने रब की बड़ाई बयान करो, (3)
और अपने कपड़े पाक रखो, (4)
और पलीदी से दूर रहो। (5)
और ज़ियादा लेने की ग़र्ज़ से एहसान न रखो, (6)
और अपने रब की (रज़ा जूई) के लिए सब्र करो। (7)
फिर जब सूर फूंका जाएगा। (8)
तो वह दिन बड़ा दुश्वार दिन होगा। (9)
काफ़िरों पर आसान न होगा। (10)
मुझे और उसे छोड़ दो जिसे मैं ने अकेला पैदा किया। (11)
और मैं ने उसे दिया बहुत सारा माल, (12)
और सामने हाज़िर रहने वाले बेटे, (13)
और हमवार किया उस के लिए (सरदार बनने का रास्ता) खूब हमवार, (14)
फिर वह लालच करता है कि और ज़ियादा दूँ। (15)
हरगिज नहीं, बेशक वह हमारी आयात का मुख़ालिफ़ है। (16)
अब उसे कठिन चढ़ाई चढ़वाऊंगा। (17)
बेशक उस ने सोचा और कुछ बात बनाने की कोशिश की, (18)
सो वह मारा जाए कि कैसी बात बनाने की कोशिश की, (19)
फिर वह मारा जाए कि कैसी बात बनाने की कोशिश की। (20)
फिर उस ने देखा, (21)
फिर उस ने तेवरी चढ़ाई और मुंह बिगाड़ लिया, (22)
फिर उस ने पीठ फेर ली और उस ने तकब्बुर किया। (23)
पस उस ने कहा: यह तो सिर्फ़ एक जादू है (जो) अगलों से चला आता है, (24)
यह तो सिर्फ़ एक आदमी का कलाम है। (25)
अनक़रीब मैं उसे सक़र में डाल दूंगा। (26)
और तुम क्या जानो कि सक़र क्या है? (27)
(वह है आग) न बाक़ी रखेगी और न छोड़ेगी, (28)
आदमी को झुलस देने वाली है, (29)
उस पर उन्नीस (19) दारोग़ा (मुक़र्रर) हैं। (30)

और हम ने दोज़ख़ के दारोग़े सिर्फ़ फ़रिश्ते बनाए हैं, और हम ने उन की तादाद सिर्फ़ एक फ़ित्ना बनाया उन लोगों के लिए जो काफ़िर हुए ताकि अहले किताब यक़ीन कर लें और ईमान ज़ियादा हो उन का जो ईमान लाए और वह लोग शक न करें जिन्हें किताब दी गई (अहले किताब) और मोमिन, और ताकि वह लोग जिन के दिलों में रोग है और काफ़िर कहें कि क्या इरादा किया है अल्लाह ने इस मिसाल (बात) से? इसी तरह अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह करता है और वह जिसे चाहता है हिदायत देता है, (कोई) नहीं जानता तेरे रब के लशकरों को ख़ुद उस के सिवा, और यह नहीं मगर आदमी के लिए नसीहत। **(31)**
नहीं नहीं! क़सम है चाँद की, **(32)**
और रात की जब वह पीठ फेरे। **(33)**
और सुबह की जब वह रोशन हो। **(34)**
बेशक वह (दोज़ख़) बड़ी चीज़ों में एक है, **(35)**
लोगों को डराने वाली। **(36)**
तुम में से जो कोई चाहे आगे बढ़े या वह पीछे रहे। **(37)**
हर शख़्स अपने आमाल के बदले गिरवी है। **(38)**
मगर दाहिनी हाथ वाले (नेक लोग)। **(39)**
बाग़ात में (होंगे), वह पूछेंगे। **(40)**
गुनाहगारों से, **(41)**
तुम्हें जहन्नम में क्या चीज़ ले गई? **(42)**
वह कहेंगे कि हम नमाज़ पढ़ने वालों में से न थे। **(43)**
और हम मोहताजों को खाना न खिलाते थे। **(44)**
और हम बेहूदा बातों में लगे रहने वालों के साथ बेहूदा बातों में धंसे रहते थे, **(45)**
और हम रोज़े जज़ा ओ सज़ा को झुटलाते थे। **(46)**
यहां तक कि हमें मौत आ गई। **(47)**
सो उन्हें सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश ने नफ़ा न दिया। **(48)**
तो उन्हें क्या हुआ कि वह नसीहत से मुँह फेरते हैं? **(49)**

وَمَا جَعَلْنَآ اَصْحٰبَ النَّارِ اِلَّا مَلٰٓئِكَةً ۙ وَّمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उन की तादाद | और हम ने नहीं रखी | फ़रिश्ते | मगर (सिर्फ़) | दोज़ख़ के दारोग़े | और हम ने नहीं बनाए |

اِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۙ لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| किताब दी गई (अहले किताब) | वह लोग जिन्हें | ताकि वह यक़ीन कर लें | काफ़िर हुए | उन लोगों के लिए जो | मगर (सिर्फ़) आज़माइश |

وَيَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ الَّذِيْنَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वह लोग जिन्हें | और शक न करें | ईमान | जो लोग ईमान लाए | और ज़ियादा हो |

اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۙ وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रोग | जिन के दिलों में | वह लोग | और ताकि वह कहें | और मोमिन (जमा) | किताब दी गई |

وَّالْكٰفِرُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۚ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह गुमराह करता है | इसी तरह | मिसाल | इस | इरादा किया अल्लाह ने | क्या | और काफ़िर (जमा) |

مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लशकरों | और नहीं जानता | जिसे वह चाहता है | और हिदायत देता है | जिसे वह चाहता है |

رَبِّكَ اِلَّا هُوَ ۚ وَمَا هِيَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْبَشَرِ ﴿٣١﴾ كَلَّا وَالْقَمَرِ ﴿٣٢﴾ ع ٢١ / ١٥

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 32 | क़सम है चाँद की | नहीं नहीं | 31 | आदमी के लिए | मगर नसीहत | और नहीं यह | सिवाए वह (ख़ुद) | तेरे रब के |

وَالَّيْلِ اِذْ اَدْبَرَ ﴿٣٣﴾ وَالصُّبْحِ اِذَآ اَسْفَرَ ﴿٣٤﴾ اِنَّهَا لَاِحْدَى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक है | बेशक यह | 34 | जब वह रोशन हो | और सुबह | 33 | जब वह पीठ फेरे | और रात |

الْكُبَرِ ﴿٣٥﴾ نَذِيْرًا لِّلْبَشَرِ ﴿٣٦﴾ لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّتَقَدَّمَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि वह आगे बढ़े | तुम में से | और जो कोई चाहे | 36 | लोगों को | डराने वाली | 35 | बड़ी (आफ़त) |

اَوْ يَتَاَخَّرَ ﴿٣٧﴾ كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ ﴿٣٨﴾ اِلَّآ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर | 38 | गिरवी | उस ने कमाया (आमाल) | उस के बदले जो | हर शख़्स | 37 | या पीछे रहे |

اَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ ﴿٣٩﴾ فِيْ جَنّٰتٍ ۛ يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿٤٠﴾ عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٤١﴾ منزل ١٦ / ١٢

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 41 | गुनाहगारों | से | 40 | वह पूछेंगे | बाग़ात में | 39 | दाहिनी तरफ़ वाले |

مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ ﴿٤٢﴾ قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ﴿٤٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 43 | नमाज़ पढ़ने वाले | से | हम न थे | वह कहेंगे | 42 | जहन्नम में | क्या (चीज़) तुम्हें ले गई |

وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ ﴿٤٥﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 45 | बेहूदा बातों के साथ लगे रहने वाले | और हम धंसे रहते थे (बेहूदा बातों में) | 44 | मोहताजों | हम खाना खिलाते | और न थे हम |

وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٤٦﴾ حَتّٰٓى اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ﴿٤٧﴾ فَمَا تَنْفَعُهُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और उन्हें नफ़ा न दिया | 47 | मौत | हमें आ गई | यहां तक कि | 46 | रोज़े जज़ा ओ सज़ा को | और हम झुटलाते थे |

شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ﴿٤٨﴾ فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ﴿٤٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 49 | मुंह फेरते हैं | नसीहत | से | तो उन्हें क्या हुआ | 48 | सिफ़ारिश करने वाले | सिफ़ारिश |

كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ﴿٥٠﴾ فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ﴿٥١﴾ بَلْ يُرِيْدُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चाहता है | बल्कि | 51 | शेर से | भागे जाते हैं | 50 | भागे हुए | गधे | गोया कि वह |

كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ﴿٥٢﴾ كَلَّا ؕ بَلْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बल्कि | हरगिज़ नहीं | 52 | खुले हुए | सहीफ़े | कि वह दिए जाएं | उन में से | हर आदमी |

لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ﴿٥٣﴾ كَلَّاۤ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ﴿٥٤﴾ فَمَنْ شَآءَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सो जो चाहे | 54 | नसीहत | बेशक यह | हरगिज़ नहीं | 53 | आख़िरत | वह नहीं डरते |

ذَكَرَهٗ ﴿٥٥﴾ وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ هُوَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वही | अल्लाह चाहे | मगर यह कि | और वह याद न रखेंगे | 55 | इसे याद रखे |

ع ٢٥ ١٦

اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ﴿٥٦﴾

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | 56 | और मग़्फ़िरत करने के लाइक़ | डरने के लाइक़ | |

## آيَاتُهَا ٤٠ ❀ (٧٥) سُوْرَةُ الْقِيٰمَةِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 — (75) सूरतुल क़ियामह क़ियामत — आयात 40

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

لَاۤ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ﴿١﴾ وَلَاۤ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ﴿٢﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | मलामत करने वाला (ज़मीर) | नफ़्स की | और नहीं, मैं क़सम खाता हूं | 1 | क़ियामत के दिन की | नहीं, मैं क़सम खाता हूं |

اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ﴿٣﴾ بَلٰى قٰدِرِيْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्यों नहीं, हम क़ादिर हैं | 3 | उस की हड्डियां | कि हम जमा न कर सकेंगे | इन्सान | क्या गुमान करता है |

عَلٰۤى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ ﴿٤﴾ بَلْ يُرِيْدُ الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कि गुनाह करता रहे | इन्सान | बल्कि चाहता है | 4 | उस के पोर पोर | कि हम दुरुस्त करें | पर |

اَمَامَهٗ ﴿٥﴾ يَسْـَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ﴿٦﴾ فَاِذَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पस जब | 6 | रोज़े क़ियामत | कब? | और पूछता है | 5 | अपने आगे को भी |

بَرِقَ الْبَصَرُ ﴿٧﴾ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ﴿٨﴾ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ﴿٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | सूरज और चाँद | और जमा कर दिए जाएंगे | 8 | चाँद | और गरहन लग जाएगा | 7 | चुंधिया जाएंगी आँखें |

يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ ﴿١٠﴾ كَلَّا لَا وَزَرَ ﴿١١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | नहीं कोई बचाओ | हरगिज़ नहीं | 10 | कहां भागने की जगह | आज के दिन | इन्सान | कहेगा |

اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ الْمُسْتَقَرُّ ﴿١٢﴾ يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍۭ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आज के दिन | इन्सान | वह जतला दिया जाएगा | 12 | ठिकाना | आज के दिन | तेरे रब की तरफ़ |

بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ ﴿١٣﴾ بَلِ الْاِنْسَانُ عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ﴿١٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 14 | बाख़बर | अपनी जान (हालत) पर | बल्कि इन्सान | 13 | और उस ने पीछे छोड़ा | वह जो उस ने आगे भेजा |

गोया कि वह जंगली गधे हैं, (50)
भागे जाते हैं शेर से। (51)
बल्कि उन में से हर आदमी चाहता है कि उसे दिए जाएं सहीफ़े खुले हुए। (52)
हरगिज़ नहीं, बल्कि वह आखिरत से नहीं डरते। (53)
हरगिज नहीं, बेशक यह नसीहत है। (54)
सो जो चाहे इसे याद रखे। (55)
और वह याद न रखेंगे मगर यह कि अल्लाह चाहे, वही है डरने के लाइक़ और मग़्फ़िरत करने के लाइक़। (56)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

मैं क़ियामत के दिन की क़सम खाता हूँ। (1)
और अपने ऊपर मलामत करने वाले नफ़्स की क़सम खाता हूँ। (2)
क्या इन्सान गुमान करता है कि हम हरगिज जमा न कर सकेंगे उस की हड्डियां। (3)
क्यों नहीं? कि हम इस पर क़ादिर हैं कि उस के पोर पोर दुरुस्त कर दें। (4)
बल्कि इन्सान चाहता है कि आगे भी गुनाह करता रहे। (5)
वह पूछता है कि रोज़े क़ियामत कब होगा? (6)
पस जब आँखें चुंधिया जाएंगी, (7)
और चाँद को गरहन लग जाएगा, (8)
और सूरज और चाँद जमा कर दिए जाएंगे। (9)
इन्सान कहेगा कि कहां है आज के दिन भागने की जगह? (10)
हरगिज़ नहीं, कोई बचाओ की जगह नहीं। (11)
आज के दिन तेरे रब की तरफ़ ठिकाना है। (12)
जतला दिया जाएगा इन्सान आज के दिन जो उस ने आगे भेजा और जो उस ने पीछे छोड़ा (13)
बल्कि इन्सान अपनी जान पर बाख़बर है। (14)

अगरचे अपने उज़्र (हीले) ला डाले (पेश करे)। (15)
आप (स) क़ुरआन के साथ अपनी जबान को हरकत न दें कि उस को जल्द याद कर लें। (16)
बेशक उस का जमा करना और उस का पढ़ाना हमारे ज़िम्मे है। (17)
पस जब हम उसे (फ़रिश्ते की जबानी) पढ़ें तो आप (स) ध्यान से सुनें उस के पढ़ने को। (18)
फिर बेशक उस का बयान करना हमारे जिम्मे है। (19)
हरगिज़ नहीं, बल्कि (ऐ काफ़िरो!) तुम दुनिया से मुहब्बत रखते हो, (20)
और आख़िरत को छोड़ देते हो। (21)
उस दिन बहुत से चेहरे बारौनक़ होंगे, (22)
अपने रब की तरफ़ देखते होंगे। (23)
और बहुत से चेहरे उस दिन बिगड़े हुए होंगे, (24)
वह ख़याल करते होंगे कि उन से कमर तोड़ने वाला (मामला) किया जाएगा। (25)
हाँ हाँ, जब (जान) हंसुली तक पहुँच जाए। (26)
और कहा जाए कि कौन है झाड़ फूंक करने वाला? (27)
और वह गुमान करे कि यह जुदाई की घड़ी है। (28)
और एक पिंडली दूसरी पिंडली से लिपट जाए (पाऊँ में हरकत न रहे)। (29)
उस दिन (तुझे) अपने रब की तरफ़ चलना है। (30)
न उस ने (अल्लाह-रसूल की) तस्दीक़ की और न उस ने नमाज पढ़ी। (31)
बल्कि उस ने झुटलाया और मुंह मोड़ा। (32)
फिर वह अपने घर वालों की तरफ़ अकड़ता हुआ चला गया। (33)
अफ़्सोस है तुझ पर अफ़्सोस। (34)
फिर अफ़्सोस है तुझ पर फिर अफ़्सोस। (35)
क्या इन्सान गुमान करता है कि वह यूंही छोड़ दिया जाएगा। (36)
क्या वह मनी का एक नुत्फ़ा (क़तरा) न था जो (रहमे मादर में) टपकाया गया, (37)
फिर वह जमा हुआ ख़ून हुआ, फिर उस ने उसे पैदा किया, फिर उसे दुरुस्त (अनदाम) किया, (38)
फिर उस से मर्द और औरत की दो क़िस्में बनाईं। (39)
क्या वह इस पर क़ादिर नहीं कि मुर्दों को ज़िन्दा करे? (40)

وَّلَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ﴿١٥﴾ لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ﴿١٦﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 16 | कि जल्द (याद कर लें) उस को | अपनी जबान को | आप (स) हरकत न दें इस (क़ुरआन) के साथ | 15 | अपने उज़्र | अगरचे ला डाले |

اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ ﴿١٧﴾ فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तो आप (स) पैरवी करें | पस जब हम उसे पढ़ें | 17 | और उस का पढ़ाना | उस का जमा करना | बेशक हम पर (हमारे ज़िम्मे) |

قُرْاٰنَهٗ ﴿١٨﴾ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ﴿١٩﴾ كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम मुहब्बत रखते हो | हरगिज़ नहीं बल्कि | 19 | उस का बयान | फिर बेशक हम पर (हमारे जिम्मे) | 18 | उस के पढ़ने को |

الْعَاجِلَةَ ﴿٢٠﴾ وَتَذَرُوْنَ الْاٰخِرَةَ ﴿٢١﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ﴿٢٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 22 | ताज़ा (बारौनक़) | उस दिन | बहुत से चेहरे | 21 | आख़िरत | और तुम छोड़ देते हो | 20 | जल्दी हासिल होने वाली चीज |

اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿٢٣﴾ وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍۭ بَاسِرَةٌ ﴿٢٤﴾ تَظُنُّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़याल करते होंगे | 24 | बिगड़े हुए | उस दिन | और बहुत से चेहरे | 23 | देखते | अपने रब की तरफ़ |

اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ﴿٢٥﴾ كَلَّآ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ﴿٢٦﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 26 | हंसुली तक | पहुँच जाए | हाँ हाँ जब | 25 | कमर तोड़ने वाला | उन से किया जाएगा | कि |

وَقِيْلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ﴿٢٧﴾ وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ﴿٢٨﴾ وَالْتَفَّتِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और लिपट जाए | 28 | जुदाई | और वह गुमान करे कि यह | 27 | कौन झाड़ फूंक करने वाला | और कहा जाए |

السَّاقُ بِالسَّاقِ ﴿٢٩﴾ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ ِۨ الْمَسَاقُ ﴿٣٠﴾ ع ١ ١٧

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | चलना | उस दिन | अपने रब की तरफ़ | 29 | दूसरी पिंडली से | एक पिंडली |

فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ﴿٣١﴾ وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿٣٢﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 32 | और मुंह मोड़ा | झुटलाया | और लेकिन (बल्कि) | 31 | और न उस ने नमाज पढ़ी | न उस ने तस्दीक़ की |

ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ﴿٣٣﴾ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿٣٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 34 | पस अफ़्सोस | अफ़्सोस तुझ पर | 33 | अकड़ता | अपने घर वालों की तरफ़ | फिर चला गया वह |

ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿٣٥﴾ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कि वह छोड़ दिया जाएगा | इन्सान | क्या वह गुमान करता है? | 35 | फिर अफ़्सोस | अफ़्सोस तुझ पर | फिर |

سُدًى ﴿٣٦﴾ اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ﴿٣٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 37 | टपकाया गया | मनी | से-का | नुत्फ़ा | क्या न था? | 36 | मुहमिल (यूं ही) |

ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى ﴿٣٨﴾ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दो जोड़े (क़िस्में) | उस से | फिर बनाए | 38 | फिर उसे दुरुस्त कर दिया | फिर उस ने पैदा किया | जमा हुआ ख़ून | फिर वह हुआ |

الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ﴿٣٩﴾ اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पर | क़ादिर | वह | क्या नहीं | 39 | मर्द और औरत |

اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ﴿٤٠﴾ ع ٢ ١٨

| | | |
|---|---|---|
| 40 | मुर्दे (जमा) | कि वह ज़िन्दा करे |

## آيَاتُهَا ٣١ ❀ (٧٦) سُوْرَةُ الدَّهْرِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 — (76) सूरतुद दहर ज़माना — आयात 31

### بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ﴿١﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | क़ाबिले ज़िक्र | न था कुछ | ज़माना से (में) | एक वक्त | इन्सान पर | यक़ीनन आया (गुज़रा) |

اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तो हम ने उसे बनाया | हम उसे आज़माएं | मख़लूत | नुत्फ़े से | इन्सान | बेशक हम ने पैदा किया |

سَمِيْعًا ۢ بَصِيْرًا ﴿٢﴾ اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और ख़ाह | ख़ाह शुक्र करने वाला | राह | बेशक हम ने उसे दिखाई | 2 | सुनता देखता |

كَفُوْرًا ﴿٣﴾ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَا۠ وَاَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا ﴿٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | और दहकती आग | और तौक़ | ज़न्जीरें | काफ़िरों के लिए | बेशक हम ने तैयार किया | 3 | नाशुक्रा |

اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ﴿٥﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | काफ़ूर की | उस में मिलावट होगी | प्याले से | पिएंगे | नेक बन्दे | बेशक |

عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ﴿٦﴾ يُوْفُوْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वह पूरी करते हैं | 6 | नालियां | उस से जारी करते हैं | अल्लाह के बन्दे | उस से पीते हैं | एक चश्मा |

بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ﴿٧﴾ وَيُطْعِمُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह खिलाते हैं | 7 | फैली हुई | उस की बुराई | होगी | उस दिन से | और वह डरते हैं | अपनी (नज़्रें) |

الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ﴿٨﴾ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम तुम्हें खिलाते हैं | इस के सिवा नहीं | 8 | और क़ैदी | और यतीम | मिस्कीन | उस की मुहब्बत पर | खाना |

لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ﴿٩﴾ اِنَّا نَخَافُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक हम डरते हैं | 9 | और न शुक्रिया | कोई जज़ा | तुम से | हम नहीं चाहते | रज़ाए इलाही के लिए |

مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ﴿١٠﴾ فَوَقٰهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस दिन | बुराई | पस उन्हें बचा लिया अल्लाह ने | 10 | निहायत सख़्त | मुंह बिगाड़ने वाला | दिन | अपने रब से |

وَلَقّٰهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا ﴿١١﴾ وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ﴿١٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12 | और रेशमी लिबास | जन्नत | उन के सब्र पर | और उन्हें बदला दिया | 11 | और ख़ुश दिली | ताज़गी | और उन्हें अ़ता की |

مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ﴿١٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 13 | और न सर्दी | धूप | उस में | वह न देखेंगे | तख़्तों पर | उस में | तकिया लगाए होंगे |

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ﴿١٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 14 | झुका कर | उस के गुच्छे | और नज़्दीक कर दिए गए होंगे | उन के साए | उन पर | और नज़्दीक हो रहे होंगे |

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

यक़ीनन इन्सान पर ज़माने में एक ऐसा वक़्त गुज़रा है कि वह कुछ (भी) क़ाबिले ज़िक्र न था। (1)

बेशक हम ने इन्सान को पैदा किया मख़लूत नुत्फ़े से (कि) हम उसे आज़माएं तो हम ने उसे सुनता देखता बनाया। (2)

बेशक हम ने उसे राह दिखाई (अब वह) ख़ाह शुक्र करने वाला बने ख़ाह नाशुक्रा। (3)

बेशक हम ने काफ़िरों (नाशुक्रों) के लिए ज़न्जीरें और तौक़ और दहकती आग तैयार कर रखी है। (4)

बेशक पिएंगे नेक बन्दे प्याले से (वह मशरूब) जिस में काफ़ूर की मिलावट होगी। (5)

एक चश्मा जिस से अल्लाह के बन्दे पीते हैं, उस से नालियां जारी करते हैं। (6)

वह पूरी करते हैं अपनी नज़्रें और वह उस दिन से डरते हैं जिस की बुराई फैली (आ़म) होगी। (7)

और वह उस की मुहब्बत पर खाना खिलाते हैं मोहताज को, और यतीम और क़ैदी को। (8)

(और कहते हैं) इस के सिवा नहीं कि हम तुम्हें रज़ाए इलाही के लिए खिलाते हैं हम तुम से न जज़ा चाहते हैं और न शुक्रिया। (9)

बेशक हम डरते हैं अपने रब की तरफ़ से एक दिन जो मुंह बिगाड़ने वाला निहायत सख़्त है। (10)

पस अल्लाह ने उन्हें उस दिन की बुराई से बचा लिया और उन्हें ताज़गी अ़ता की और ख़ुश दिली (11)

और उन्हें बदला दिया उन के सब्र पर जन्नत और रेशमी लिबास। (12)

उस में तख़्तों पर तकिया लगाए हुए होंगे, वह न देखेंगे उस में धूप (की तेज़ी) न सर्दी (की शिद्दत)। (13)

उन पर उस के साए नज़्दीक हो रहे होंगे और उस के गुच्छे झुका कर नज़्दीक कर दिए गए होंगे। (14)

और उन पर दौर होगा चाँदी के बरतनों का और शीशे के प्याले होंगे, (15) शीशे चाँदी के। (साक़ियों ने) उन का मुनासिब अन्दाज़ा किया होगा। (16) और उन्हें उस में ऐसा जाम पिलाया जाएगा जिस में अदरक की मिलावट होगी। (17) उस में एक चश्मा है जिस का नाम सल्सबील है। (18) और गर्दिश करेंगे उन पर हमेशा नौउम्र रहने वाले लड़के, जब तू उन्हें देखे तो उन्हें बिखरे हुए मोती समझे। (19) और जब तू देखेगा तो वहां (जन्नत में) बड़ी नेमत और बड़ी सल्तनत देखेगा। (20) उन के ऊपर की पोशाक सब्ज़ बारीक रेशम और अतलस की होगी और उन्हें कंगन पहनाए जाएंगे चाँदी के और उन का रब उन्हें निहायत पाक एक मशरूब पिलाएगा। (21) बेशक यह तुम्हारी जज़ा है, और तुम्हारी कोशिश मक़्बूल हुई। (22) बेशक हम ने आप (स) पर कुरआन थोड़ा थोड़ा करके नाज़िल किया। (23) पस आप (स) अपने रब के हुक्म के लिए सब्र करें, और आप (स) कहा न मानें उन में से किसी गुनाहगार या नाशुक्रे का। (24) और आप (स) अपने रब का नाम सुबह ओ शाम याद करते रहें। (25) और रात के किसी हिस्से में आप (स) उस को सिज्दा करें और उस की पाकीज़गी बयान करें रात के बड़े हिस्से में। (26) बेशक यह मुन्किर दुनिया से मुहब्बत रखते हैं और एक भारी दिन (रोज़े क़ियामत को) अपने पीछे (पसे पुश्त) छोड़ देते हैं। (27) हम ने उन्हें पैदा किया और हम ने उन के जोड़ मज़बूत किए, और हम जब चाहें (उन की जगह) उन जैसे और लोग बदल कर ले आएं। (28) बेशक यह नसीहत है, पस जो चाहे अपने रब की तरफ़ राह इख़्तियार कर ले। (29) और तुम नहीं चाहोगे सिवाए जो अल्लाह चाहे, बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (30)

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا۠ ﴿١٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15 | शीशे के | होंगे | और प्याले | चाँदी के | बरतनों का | उन पर | और दौर होगा |

قَوَارِيْرَا۠ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا ﴿١٦﴾ وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऐसा जाम | उस में | और उन्हें पिलाया जाएगा | 16 | मुनासिब अन्दाज़ा | उन्हों ने उन का अन्दाजा किया होगा | चाँदी के | शीशे |

كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ﴿١٧﴾ عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ﴿١٨﴾ وَيَطُوْفُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और गर्दिश करेंगे | 18 | सल्सबील | नाम होगा जिस का | एक चश्मा उस में | 17 | अदरक | उस की मिलावट | होगी |

عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मोती | तू उन्हें समझे | जब तू उन्हें देखे | हमेशा (नौ उम्र) रहने वाले | लड़के | उन पर |

مَّنْثُوْرًا ﴿١٩﴾ وَاِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ نَعِيْمًا وَّمُلْكًا كَبِيْرًا ﴿٢٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | और बड़ी सल्तनत | बड़ी नेमत | तू देखेगा | वहां | और जब तू देखेगा | 19 | बिखरे हुए |

عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ ۡ وَّحُلُّوْٓا اَسَاوِرَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कंगन | और उन्हें पहनाए जाएंगे | और दबीज़ रेशम (अतलस) | सब्ज़ | बारीक रेशम | उन के ऊपर की पोशाक |

مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَسَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ﴿٢١﴾ اِنَّ هٰذَا كَانَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| है | बेशक यह | 21 | निहायत पाक | एक शराब (मशरूब) | उन का रब | और उन्हें पिलाएगा | चाँदी के |

لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿٢٢﴾ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप (स) पर | हम ने नाज़िल किया | बेशक हम | 22 | मशकूर (मक़्बूल) | तुम्हारी कोशिश | और हुई | जज़ा | तुम्हारे लिए |

الْقُرْاٰنَ تَنْزِيْلًا ﴿٢٣﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ اٰثِمًا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किसी गुनाहगार | उन में से | और आप (स) कहा न मानें | अपने रब के हुक्म के लिए | पस सब्र करें | 23 | बतदरीज | कुरआन |

اَوْ كَفُوْرًا ﴿٢٤﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٢٥﴾ وَمِنَ الَّيْلِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और रात के (किसी हिस्से में) | 25 | और शाम | सुबह | अपने रब का नाम | और आप (स) ज़िक्र करें | 24 | या नाशुक्रे का |

فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيْلًا ﴿٢٦﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मुहब्बत रखते हैं | बेशक यह (मुन्किर) लोग | 26 | और उस की पाकीज़गी बयान करें रात का बड़ा हिस्सा | उस को | पस आप (स) सिज्दा करें |

الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُوْنَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا ﴿٢٧﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ने उन्हें पैदा किया | 27 | भारी | एक दिन | अपने पीछे | और छोड़ देते हैं | दुनिया |

وَشَدَدْنَآ اَسْرَهُمْ ۚ وَاِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ اَمْثَالَهُمْ تَبْدِيْلًا ﴿٢٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 28 | बदल कर | उन जैसे लोग | हम बदल दें | और जब हम चाहें | उन के जोड़ | और हम ने मज़बूत किए |

اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٢٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 29 | राह | अपने रब की तरफ़ | इख़्तियार करे | पस जो चाहे | नसीहत | बेशक यह |

وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٣٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | हिक्मत वाला | जानने वाला | है | बेशक अल्लाह | अल्लाह चाहे | जो | सिवाए | और तुम नहीं चाहोगे |

قرأ حفص بغير الالف في الوصل فيهما - ووقف على الاول بالالف وعلى الثاني بغير الالف ١٢

ع ٢٢ ١٩

٢ ع ٩ ٢٠

يُدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ وَالظّٰلِمِيْنَ اَعَدَّ لَهُمْ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| उस ने तैयार किया है उन के लिए | और (रहे) ज़ालिम | अपनी रहमत में | वह जिसे चाहे | वह दाख़िल करता है |

عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣١﴾

| | | |
|---|---|---|
| 31 | दर्दनाक अज़ाब | |

آيَاتُهَا ٥٠ ❀ (٧٧) سُوْرَةُ الْمُرْسَلٰتِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 | (77) सूरतुल मुर्सलात – भेजी जाने वालियाँ | आयात 50

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ﴿١﴾ فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ﴿٢﴾ وَّالنّٰشِرٰتِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बादल उठा कर लाने वाली हवाओं की क़सम | 2 | शिद्दत से | फिर तुन्द ओ तेज़ चलने वाली हवाओं की क़सम | 1 | दिल खुश करने वाली | हवाओं की क़सम |

نَشْرًا ﴿٣﴾ فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ﴿٤﴾ فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ﴿٥﴾ عُذْرًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हुज्जत तमाम करने को | 5 | ज़िक्र (दिलों में अल्लाह की याद) | फिर डालने वाली हवाओं की क़सम | 4 | बांट कर | फिर फाड़ने वाली हवाओं की क़सम | 3 | फैलाने वाली |

اَوْ نُذْرًا ﴿٦﴾ اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ﴿٧﴾ فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ﴿٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | सितारे मिटाए जाएं (बेनूर हो जाएं) | पस जब | 7 | ज़रूर होने वाला | तुम्हें वादा दिया जाता है | बेशक जो | 6 | या डराने को |

وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ﴿٩﴾ وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ﴿١٠﴾ وَاِذَا الرُّسُلُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जब रसूल (जमा) | 10 | उड़ते फिरें | और जब पहाड़ | 9 | फट जाए | और जब आस्मान |

اُقِّتَتْ ﴿١١﴾ لِاَيِّ يَوْمٍ اُجِّلَتْ ﴿١٢﴾ لِيَوْمِ الْفَصْلِ ﴿١٣﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम क्या समझे? | 13 | फ़ैसले का दिन | 12 | मुल्तवी रखा गया है | किस दिन के लिए | 11 | वक़्त पर जमा किए जाएंगे |

مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ﴿١٤﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٥﴾ اَلَمْ نُهْلِكِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या हम ने हलाक नहीं किया? | 15 | झुटलाने वालों के लिए | उस दिन | ख़राबी | 14 | क्या है फ़ैसले का दिन? |

الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٦﴾ ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٧﴾ كَذٰلِكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| इसी तरह | 17 | पिछलों को | हम उन के पीछे चलाते हैं | फिर | 16 | पहले लोगों को? |

نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٨﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 19 | झुटलाने वालों के लिए | उस दिन | ख़राबी | 18 | मुजरिमों के साथ | हम करते हैं |

اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ﴿٢٠﴾ فَجَعَلْنٰهُ فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ﴿٢١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 21 | एक महफ़ूज़ जगह | में | फिर हम ने उसे रखा | 20 | हक़ीर | पानी से | क्या हम ने नहीं पैदा किया तुम्हें |

اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٢٢﴾ فَقَدَرْنَا ۖ فَنِعْمَ الْقٰدِرُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَيْلٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़राबी | 23 | अन्दाज़ा करने वाले | तो कैसा अच्छा | फिर हम ने अन्दाज़ा किया | 22 | उस क़दर जो मालूम है | तक |

يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٤﴾ اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا ﴿٢٥﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 25 | समेटने वाली | ज़मीन | क्या हम ने नही बनाया | 24 | झुटलाने वालों के लिए | उस दिन |

वह जिसे चाहे अपनी रहमत में दाख़िल करता है, और रहे ज़ालिम तो उन के लिए उस ने दर्दनाक अज़ाब तैयार किया है। (31)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

दिल खुश करने वाली हवाओं की क़सम, (1) फिर शिद्दत से तुन्द ओ तेज़ चलने वाली हवाओं की क़सम, (2) बादलों को उठा कर लाने वाली फैलाने वाली हवाओं की क़सम, (3) फिर बांट कर फाड़ने वाली हवाओं की क़सम, (4) फिर (दिलों में अल्लाह की) याद डालने वाली हवाओं की क़सम। (5) हुज्जत तमाम करने को या डराने को। (6) बेशक जो तुम्हें वादा दिया जाता है वह ज़रूर वाक़े होने वाला है। (7) फिर जब सितारे बेनूर हो जाएं। (8) और जब आस्मान फट जाए। (9) और जब पहाड़ उड़ते फिरें (पारा पारा हो कर) (10) और जब सारे रसूल वक़्ते (मुअय्यन) पर जमा किए जाएं। (11) (उन का मामला) किस दिन के लिए मुल्तवी रखा गया है? (12) फ़ैसले के दिन के लिए। (13) और तुम क्या समझे कि फ़ैसले का दिन क्या है? (14) उस दिन ख़राबी है झुटलाने वालों के लिए। (15) क्या हम ने हलाक नहीं किया पहले लोगों को? (16) फिर पिछलों को उन के पीछे चलाते हैं। (17) इसी तरह हम मुजरिमों के साथ करते हैं। (18) उस दिन ख़राबी है झुटलाने वालों के लिए। (19) क्या हम ने तुम्हें हक़ीर पानी से नहीं पैदा किया? (20) फिर हम ने उसे एक महफ़ूज़ जगह में रखा, (21) एक वक़्ते मुअय्यन तक। (22) फिर हम ने अन्दाज़ा किया तो (हम) कैसा अच्छा अन्दाज़ा करने वाले हैं। (23) उस दिन ख़राबी है झुटलाने वालों के लिए। (24) क्या हम ने ज़मीन को समेटने वाली नहीं बनाया? (25)

ज़िन्दों को और मुर्दों को। (26) और हम ने उस में ऊँचे ऊँचे पहाड़ रखे और हम ने तुम्हें मीठा पानी पिलाया। (27) ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। (28) (हुक्म होगा) तुम चलो उस की तरफ़ जिस को तुम झुठलाते थे। (29) तुम चलो तीन शाख़ों वाले साए की तरफ़। (30) न गहरा साया और न वह तपिश से बचाए। (31) बेशक वह महल जैसे (ऊँचे) शोले फेंकती है, (32) गोया कि वह ऊँट हैं ज़र्द। (33) ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। (34) उस दिन न वह बोल सकेंगे, (35) और न उन्हें इजाज़त दी जाएगी कि वह उज़्र ख़्वाही करें। (36) ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। (37) यह फ़ैसले का दिन है, हम ने तुम्हें जमा किया और पहले लोगों को। (38) फिर अगर तुम्हारे पास कोई दाओ है तो मुझ पर दाओ करो। (39) ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। (40) बेशक परहेज़गार सायों और चश्मों में होंगे। (41) और मेवों में जो वह चाहेंगे (42) (हम फ़रमाएंगे) तुम खाओ और पियो मज़े से (बाफ़राग़त) उस के बदले जो तुम करते थे। (43) बेशक हम इसी तरह नेकोकारों को जज़ा देते हैं (44) ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। (45) तुम खाओ और फ़ाइदा उठा लो थोड़ा (किसी क़द्र) बेशक तुम मुजरिम हो। (46) ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। (47) और जब उन से कहा जाता है कि तुम रुकूअ करो तो वह रुकूअ नहीं करते। (48) ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। (49) तो इस के बाद वह कौन सी बात पर ईमान लाएंगे? (50)

أَحْيَآءً وَّأَمْوَاتًا ﴿٢٦﴾ وَّجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شٰمِخٰتٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ऊँचे ऊँचे | पहाड़ (जमा) | उस में | और हम ने रखे | 26 | और मुर्दों को | ज़िन्दों को |

وَّأَسْقَيْنٰكُم مَّآءً فُرَاتًا ﴿٢٧﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 28 | झुठलाने वालों के लिए | उस दिन | ख़राबी | 27 | पानी मीठा | और हम ने पिलाया तुम्हें |

انطَلِقُوٓا إِلَىٰ مَا كُنتُم بِهِۦ تُكَذِّبُونَ ﴿٢٩﴾ انطَلِقُوٓا إِلَىٰ ظِلٍّ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| साए की तरफ़ | तुम चलो | 29 | तुम झुठलाते | जिस को तुम थे | तरफ़ | तो तुम चलो |

ذِى ثَلٰثِ شُعَبٍ ﴿٣٠﴾ لَّا ظَلِيلٍ وَّلَا يُغْنِى مِنَ اللَّهَبِ ﴿٣١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 31 | शोला (तपिश) | से | और न वह बचाए | न गहरा साया | 30 | शाख़ें | तीन | वाला |

إِنَّهَا تَرْمِى بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ﴿٣٢﴾ كَأَنَّهُۥ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ﴿٣٣﴾ وَيْلٌ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़राबी | 33 | ज़र्द | ऊँट (जमा) | गोया कि | 32 | महल जैसे | शोले | फेंकती | बेशक वह |

يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٤﴾ هٰذَا يَوْمُ لَا يَنطِقُونَ ﴿٣٥﴾ وَلَا يُؤْذَنُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और न इजाज़त दी जाएगी | 35 | वह न बोल सकेंगे | उस दिन | 34 | झुठलाने वालों के लिए | उस दिन |

لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ﴿٣٦﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 37 | झुठलाने वालों के लिए | उस दिन | ख़राबी | 36 | कि वह उज़्र ख़्वाही करें | उन्हें |

هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ جَمَعْنٰكُمْ وَالْأَوَّلِينَ ﴿٣٨﴾ فَإِن كَانَ لَكُمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| है तुम्हारे पास | फिर अगर | 38 | और पहले लोगों को | हम ने जमा किया तुम्हें | फ़ैसले का दिन | यह |

كَيْدٌ فَكِيدُونِ ﴿٣٩﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٠﴾ ع ٢١

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 40 | झुठलाने वालों के लिए | उस दिन | ख़राबी | 39 | तो तुम मुझ पर दाओ कर लो | कोई दाओ |

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِى ظِلٰلٍ وَّعُيُونٍ ﴿٤١﴾ وَّفَوٰكِهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٤٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 42 | वह चाहेंगे | जो | और मेवे | 41 | और चश्मों | सायों | में | बेशक परहेज़गार (जमा) |

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيٓـًٔا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾ إِنَّا كَذٰلِكَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक हम इसी तरह | 43 | करते थे | उस के बदले जो तुम | मज़े से | और तुम पियो | तुम खाओ |

نَجْزِى الْمُحْسِنِينَ ﴿٤٤﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٥﴾ كُلُوا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम खाओ | 45 | झुठलाने वालों के लिए | उस दिन | ख़राबी | 44 | नेकोकारों को | जज़ा देते हैं |

وَتَمَتَّعُوا قَلِيلًا إِنَّكُم مُّجْرِمُونَ ﴿٤٦﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस दिन | ख़राबी | 46 | मुजरिम (जमा) | बेशक तुम | थोड़ा | और तुम फ़ाइदा उठाओ |

لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٧﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ ﴿٤٨﴾ وَيْلٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़राबी | 48 | वह रुकूअ नहीं करते | तुम रुकूअ करो | उन से | कहा जाए | और जब | 47 | झुठलाने वालों के लिए |

يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٩﴾ فَبِأَىِّ حَدِيثٍۭ بَعْدَهُۥ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٠﴾ ع ٢٢

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 50 | वह ईमान लाएंगे | इस के बाद | बात | तो कौन सी | 49 | झुठलाने वालों के लिए | उस दिन |

آيَاتُهَا ٤٠ ❀ (٧٨) سُوْرَةُ النَّبَإِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

| रुकूआत 2 | (78) सूरतुन नबा<br>खबर | आयात 40 |
|---|---|---|

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿١﴾ عَنِ النَّبَإِ الْعَظِيْمِ ﴿٢﴾ الَّذِىْ هُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह | जो-जिस | 2 | बड़ी ख़बर (क़ियामत) | से (बाबत) | 1 | आपस में पूछते हैं | क्या-किस |

فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ ﴿٣﴾ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ﴿٤﴾ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ﴿٥﴾ اَلَمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या नहीं | 5 | अनक़रीब जान लेंगे | फिर हरगिज़ नहीं | 4 | अनक़रीब जान लेंगे | हरगिज नहीं | 3 | इख़्तिलाफ़ करते हैं | उस में |

نَجْعَلِ الْاَرْضَ مِهٰدًا ﴿٦﴾ وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا ﴿٧﴾ وَّخَلَقْنٰكُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम ने तुम्हें पैदा किया | 7 | कीलें | और पहाड़ | 6 | बिछोना | ज़मीन | हम ने बनाया |

اَزْوَاجًا ﴿٨﴾ وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ﴿٩﴾ وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ﴿١٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | ओढ़ना (पर्दा) | रात | और हम ने बनाया | 9 | आराम (राहत) | तुम्हारी नींद | और हम ने बनाया | 8 | जोड़े जोड़े |

وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ﴿١١﴾ وَّبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ﴿١٢﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12 | मज़बूत (आस्मान) | सात | तुम्हारे ऊपर | और हम ने बनाए | 11 | कमाने का वक़्त | दिन | और हम ने बनाया |

وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ﴿١٣﴾ وَّاَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पानी भरी बदलियां | से | और हम ने उतारी | 13 | चमकता हुआ | चिराग़ | और हम ने बनाया |

مَآءً ثَجَّاجًا ﴿١٤﴾ لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ﴿١٥﴾ وَّجَنّٰتٍ اَلْفَافًا ﴿١٦﴾ اِنَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | 16 | और बाग़ पत्तों में लिपटे हुए | 15 | और सब्ज़ी | दाना (अनाज) | उस से | ताकि हम निकालें | 14 | बारिश मूसलाधार |

يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ﴿١٧﴾ يَّوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर में | फूंका जाएगा | दिन | 17 | मुक़र्रर वक़्त | है | फ़ैसले का दिन |

فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ﴿١٨﴾ وَّفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ﴿١٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 19 | दरवाज़े | तो हो जाएंगे | आस्मान | और खोला जाएगा | 18 | गिरोह दर गिरोह | फिर तुम चले आओगे |

وَّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ﴿٢٠﴾ اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| है | दोज़ख | बेशक | 20 | सराब | तो हो जाएंगे | पहाड़ | और चलाए जाएंगे |

مِرْصَادًا ﴿٢١﴾ لِّلطّٰغِيْنَ مَاٰبًا ﴿٢٢﴾ لّٰبِثِيْنَ فِيْهَآ اَحْقَابًا ﴿٢٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 23 | मुद्दतों | उस में | वह रहेंगे | 22 | ठिकाना | सरकशों के लिए | 21 | घात |

لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ﴿٢٤﴾ اِلَّا حَمِيْمًا وَّغَسَّاقًا ﴿٢٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 25 | और बहती पीप | गर्म पानी | मगर | 24 | पीने की चीज | और न | ठन्डक | उस में | न चखेंगे |

جَزَآءً وِّفَاقًا ﴿٢٦﴾ اِنَّهُمْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ حِسَابًا ﴿٢٧﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 27 | हिसाब | तवक़्क़ो नहीं रखते थे | बेशक वह | 26 | पूरा | बदला |

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है
लोग आपस में किस के बारे में पूछते हैं? (1)
बड़ी ख़बर (क़ियामत) के बारे में, (2)
जिस में वह इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं। (3)
हरगिज नहीं, अ़नक़रीब वह जान लेंगे, (4)
फिर हरगिज़ नहीं, अ़नक़रीब वह जान लेंगे। (5)
क्या हम ने जमीन को नहीं बनाया बिछोना (फ़र्श)? (6)
और पहाड़ों को कीलें, (7)
और हम ने तुम्हें जोड़े जोड़े पैदा किया, (8)
और तुम्हारे लिए नींद को बनाया आराम (राहत), (9)
और हम ने रात को ओढ़ना (पर्दा) बनाया, (10)
और हम ने दिन को कमाने का वक़्त बनाया। (11)
और हम ने बनाए तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत (आस्मान), (12)
और हम ने चमकता हुआ चिराग़ (आफ़्ताब) बनाया, (13)
और हम ने पानी भरी बदलियों से उतारी मूसलाधार बारिश, (14)
ताकि हम उस से अनाज और सब्ज़ी निकालें, (15)
और पत्तों में लिपटे हुए (घने) बाग। (16)
बेशक फ़ैसले का दिन एक मुक़र्रर वक़्त है, (17)
जिस दिन सूर फूंका जाएगा, फिर तुम गिरोह दर गिरोह चले आओगे, (18)
और आस्मान खोला जाएगा तो (उस में) दरवाज़े हो जाएंगे, (19)
और पहाड़ चलाए जाएंगे तो सराब हो जाएंगे। (20)
बेशक दोज़ख़ घात है। (21)
सरकशों का ठिकाना, (22)
और उस में रहेंगे मुद्दतों, (23)
न उस में ठन्डक (का मज़ा) चखेंगे न पीने की चीज़, (24)
मगर गर्म पानी और बहती पीप, (25)
(यह) पूरा पूरा बदला होगा। (26)
बेशक वह हिसाब की तवक़्क़ो न रखते थे, (27)

और हमारी आयतों को झुटलाते थे झूट जान कर। (28)
और हम ने हर चीज गिन कर लिख रखी है, (29)
अब मज़ा चखो, पस हम तुम पर हरगिज न बढ़ाते जाएंगे मगर अ़जाब। (30)
बेशक परहेज़गारों के लिए कामयाबी है, (31)
बाग़ात और अंगूर, (32)
और नौजवान औरतें हम उम्र, (33)
और छलकते हुए प्याले। (34)
वह उस में न सुनेंगे कोई बेहूदा बात और न झूट (खुराफ़ात)। (35)
यह बदला है तुम्हारे रब का इन्आम हिसाब से (काफ़ी), (36)
रब आस्मानों का और ज़मीन का और जो कुछ उन के दरमियान है, बहुत मेह्रबान, वह उस से बात करने की कुदरत नहीं रखते। (37)
जिस दिन रूह (जिब्रील (अ) और फ़रिश्ते सफ बान्धे खड़े होंगे, न बोल सकेंगे मगर जिस को रहमान ने इजाजत दी और बोलेगा ठीक बात। (38)
यह दिन बरहक़ है, पस जो कोई चाहे अपने रब के पास ठिकाना बनाए। (39)
बेशक हम ने तुम्हें क़रीब आने वाले अ़जाब से डरा दिया है, जिस दिन आदमी देख लेगा जो उस के हाथों ने आगे भेजा, और काफ़िर कहेगा कि काश मैं मिट्टी होता। (40)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है
क़सम है डूब कर खींचने वाले (फ़रिश्तों) की, (1)
और खोल कर छुड़ाने वालों की, (2)
और तेज़ी से तैरने वालों की, (3)
फिर दौड़ कर आगे बढ़ने वालों की, (4)
फिर हुक्म के मुताबिक़ तदबीर करने वालों की। (5)
जिस दिन कांपने वाली कांपे, (6)
और उस के पीछे आए पीछे आने वाली। (7)
कितने दिल उस दिन धड़कते होंगे, (8)

وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا (٢٨) وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ كِتٰبًا (٢٩)

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 29 | लिख कर | हम ने गिन रखी है | और हर चीज | 28 | झूट जान कर | हमारी आयतें | और झुटलाते थे |

فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا (٣٠) اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ مَفَازًا (٣١)

ع ٣

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 31 | कामयाबी | परहेज़गारों के लिए | बेशक | 30 | अजाब | मगर | बढ़ाते जाएंगे | हरगिज नहीं | अब मज़ा चखो |

حَدَآئِقَ وَاَعْنَابًا (٣٢) وَّكَوَاعِبَ اَتْرَابًا (٣٣) وَّكَاْسًا دِهَاقًا (٣٤)

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 34 | छलकते हुए | और प्याले | 33 | हम उम्र | और नौजवान औरतें | 32 | और अंगूर | बाग़ात |

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا كِذّٰبًا (٣٥) جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ عَطَآءً

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इन्आम | तुम्हारा रब | से | यह बदला | 35 | और न झूट (खुराफ़ात) | बेहूदा | उस में | न सुनेंगे |

حِسَابًا (٣٦) رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बहुत मेह्रबान | और जो उन के दरमियान | और ज़मीन | आस्मानों | रब | 36 | हिसाब से (काफ़ी) |

لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ خِطَابًا (٣٧) يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और फ़रिश्ते | खड़े होंगे रूह | दिन | 37 | बात करना | उस से | वह कुदरत नही रखते |

صَفًّا ۟ۙ لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا (٣٨)

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 38 | ठीक बात | और बोलेगा | रहमान | उस को | इजाजत दी | जो जिस | मगर | न बोल सकेंगे | सफ़ बान्धे |

ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا (٣٩)

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 39 | ठिकाना | अपने रब के पास | बनाए | चाहे | पस जो | बरहक़ | दिन | यह |

اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا ۚ يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | आदमी | देख लेगा | जिस दिन | क़रीब के | अ़ज़ाब | बेशक हम ने डरा दिया तुम्हें |

قَدَّمَتْ يَدٰهُ وَيَقُوْلُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ تُرٰبًا (٤٠)

ع ٢

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 40 | मिट्टी | होता | काश मैं | काफ़िर | और कहेगा | आगे भेजा उस के हाथ |

آيَاتُهَا ٤٦ ❀ (٧٩) سُوْرَةُ النّٰزِعٰتِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकुआत 2 — (79) सूरतुन नाज़िआत खींचने वाले — आयात 46

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا (١) وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا (٢) وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا (٣)

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | तेज़ी से | और तैरने वाले | 2 | खोल कर | और छुड़ाने वाले | 1 | डूब कर | क़सम है खींचने वाले |

فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا (٤) فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا (٥) يَوْمَ تَرْجُفُ

وقف لازم

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कांपे | दिन | 5 | हुक्म के मुताबिक़ | फिर तदबीर करने वाले | 4 | दौड़ कर | फिर आगे बढ़ने वाले |

الرَّاجِفَةُ (٦) تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ (٧) قُلُوْبٌ يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ (٨)

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | धड़कने वाले | उस दिन | कितने दिल | 7 | पीछे आने वाली | उस के पीछे आए | 6 | कांपने वाली |

أَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ﴿٩﴾ يَقُولُونَ أَإِنَّا لَمَرْدُودُونَ فِي الْحَافِرَةِ ﴿١٠﴾ وقف لازم

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | पहली हालत | में | लौटाए जाएंगे | क्या हम | वह कहते हैं | 9 | झुकी हुई | उन की निगाहें |

أَإِذَا كُنَّا عِظَامًا نَخِرَةً ﴿١١﴾ قَالُوا تِلْكَ إِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ﴿١٢﴾ وقف لازم

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12 | ख़सारे वाली | वापसी | फिर | यह | वह बोले | 11 | खोखली | हड्डियां | हम होंगे | क्या जब |

فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ ﴿١٣﴾ فَإِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ﴿١٤﴾ هَلْ أَتَاكَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पहुँची तेरे पास | क्या | 14 | मैदान में | वह | फिर उस वक़्त | 13 | एक | डांट | वह | फिर तो सिर्फ़ |

حَدِيثُ مُوسَىٰ ﴿١٥﴾ إِذْ نَادَاهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٦﴾ وقف لازم

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 16 | तुवा | मुक़द्दस | वादी | उस का रब | जब पुकारा उसे | 15 | मूसा (अ) | बात |

اذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ﴿١٧﴾ فَقُلْ هَلْ لَكَ إِلَىٰ أَنْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि | तरफ़ | तुझ को | क्या | पस कहो | 17 | बेशक उस ने सरकशी की | फ़िरऔन | तरफ़, पास | जाओ |

تَزَكَّىٰ ﴿١٨﴾ وَأَهْدِيَكَ إِلَىٰ رَبِّكَ فَتَخْشَىٰ ﴿١٩﴾ فَأَرَاهُ الْآيَةَ الْكُبْرَىٰ ﴿٢٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | बड़ी निशानी | उस को दिखाई | 19 | कि तू डरे | तेरा रब | तरफ़ | और तुझे राह दिखाऊँ | 18 | तू संवर जाए |

فَكَذَّبَ وَعَصَىٰ ﴿٢١﴾ ثُمَّ أَدْبَرَ يَسْعَىٰ ﴿٢٢﴾ فَحَشَرَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर जमा किया | 22 | जी तोड़ कोशिश किया | फिर पीठ फेर लिया | 21 | और नाफ़रमानी की | उस ने झुटलाया |

فَنَادَىٰ ﴿٢٣﴾ فَقَالَ أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَىٰ ﴿٢٤﴾ فَأَخَذَهُ اللَّهُ نَكَالَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मज़ा | तो उस को पकड़ा अल्लाह ने | 24 | तुम्हारा रब सब से बड़ा | मैं | फिर उस ने कहा | 23 | फिर पुकारा |

ع ٣ الْآخِرَةِ وَالْأُولَىٰ ﴿٢٥﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِمَنْ يَخْشَىٰ ﴿٢٦﴾ أَأَنْتُمْ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या तुम | 26 | डरे | उस के लिए जो | इब्रत | इस | में | बेशक | 25 | और दुनिया | आख़िरत |

أَشَدُّ خَلْقًا أَمِ السَّمَاءُ ۚ بَنَاهَا ﴿٢٧﴾ رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوَّاهَا ﴿٢٨﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 28 | फिर उस को दुरुस्त किया | उस की छत | बुलन्द किया | 27 | उस ने बनाया | आस्मान | या | बनाना | ज़ियादा मुश्किल |

وَأَغْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُحَاهَا ﴿٢٩﴾ وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَٰلِكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस | बाद | और ज़मीन | 29 | दिन की रोशनी | और निकाली | उस की रात | तारीक कर दिया |

دَحَاهَا ﴿٣٠﴾ أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعَاهَا ﴿٣١﴾ وَالْجِبَالَ أَرْسَاهَا ﴿٣٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 32 | क़ाइम किया उस को | और पहाड़ | 31 | और उस का चारा | उस का पानी | उस से | निकाला | 30 | उस को बिछाया |

مَتَاعًا لَكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ﴿٣٣﴾ فَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَّةُ الْكُبْرَىٰ ﴿٣٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 34 | बड़ा | हंगामा | वह आए | फिर जब | 33 | और तुम्हारे चौपायों के लिए | तुम्हारे लिए | फ़ाइदा |

يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ مَا سَعَىٰ ﴿٣٥﴾ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जहन्नम | ज़ाहिर कर दी जाएगी | 35 | उस ने कमाया | जो | इन्सान | याद करेगा | दिन |

لِمَنْ يَرَىٰ ﴿٣٦﴾ فَأَمَّا مَنْ طَغَىٰ ﴿٣٧﴾ وَآثَرَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ﴿٣٨﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 38 | दुनिया | ज़िन्दगी | तरजीह दी | 37 | सरकशी की | जो-जिस | पस | 36 | देखे | उस के लिए जो |

उन की निगाहें झुकी हुई। (9) वह कहते हैं: क्या हम पहली हालत में लौटाए जाएंगे? (10) क्या जब हम खोखली हड्डियां हो चुके होंगे? (11) वह बोले यह फिर ख़सारे वाली वापसी है। (12) फिर वह तो सिर्फ़ एक डांट है। (13) फिर वह उस वक़्त मैदान में (मौजूद होंगे)। (14) क्या तुम्हारे पास मूसा (अ) की बात पहुँची? (15) जब उस को उस के रब ने पुकारा तुवा के मुक़द्दस वादी में। (16) के फ़िरऔन के पास जाओ, बेशक उस ने सरकशी की है, (17) पस कहोः क्या तुझ को (ख़्वाहिश है) कि तू संवर जाए, (18) और मैं तुझे तेरे रब की तरफ़ राह दिखाऊँ कि तू डरे। (19) (मूसा अ ने) उस को दिखाई बड़ी निशानी। (20) उस ने झुटलाया और नाफ़रमानी की, (21) फिर पीठ फेर कर (हक़ के ख़िलाफ़) जी तोड़ कोशिश किया। (22) फिर (लोगों को) जमा किया, फिर पुकारा। (23) फिर कहा कि मैं तुम्हारा सब से बड़ा रब हूँ। (24) तो अल्लाह ने उस को दुनिया और आख़िरत की सज़ा में पकड़ा। (25) बेशक इस में उस के लिए इब्रत है जो डरे। (26) क्या तुम्हारा बनाना ज़ियादा मुश्किल है या आस्मान का, उस ने उस को बनाया। (27) उस की छत को बुलन्द किया फिर उस को दुरुस्त किया, (28) और उस की रात को तारीक कर दिया और निकाली दिन की रोशनी, (29) और उस के बाद ज़मीन को बिछाया। (30) उस से उस का पानी निकाला और उस का चारा। (31) और पहाड़ों को क़ाइम किया। (32) तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के फ़ाइदे के लिए। (33) फिर जब बड़ा हंगामा आएगा (क़ियामत), (34) उस दिन इन्सान याद करेगा जो उस ने कमाया (अपने आमाल)। (35) और जहन्नम हर उस के लिए ज़ाहिर कर दी जाएगी जो देखे। (36) पस जिन ने सरकशी की। (37) और दुनिया की ज़िन्दगी को तरजीह दी। (38)

तो यक़ीनन उस का ठिकाना जहन्नम है। (39)
और जो अपने रब (के सामने) खड़ा होने से डरा और उस ने रोका अपने दिल को ख़ाहिश से, (40)
तो यक़ीनन उस का ठिकाना जन्नत है। (41)
वह आप (स) से पूछते हैं क़ियामत के बाबत कि कब (होगा) उस का क़ियाम? (42)
तुम्हें क्या काम उस के ज़िक्र से? (43)
तुम्हारे रब की तरफ़ है उस की इन्तिहा। (44)
आप (स) सिर्फ़ डराने वाले हैं उस को जो उस से डरे। (45)
गोया वह जिस दिन उस को देखेंगे (ऐसा लगेगा कि) वह नहीं ठहरे मगर एक शाम या उस की एक सुब्ह। (46)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है
तेवरी चढ़ाई और मुँह मोड़ लिया, (1)
कि उस के पास एक अंधा आया। (2)
और आप (स) को क्या ख़बर कि शायद वह संवर जाता, (3)
या नसीहत मान जाता कि नसीहत करना उसे नफ़ा पहुँचाता। (4)
और जिस ने बेपरवाई की। (5)
आप (स) उस के लिए फ़िक्र करते हैं। (6)
और आप (स) पर (कोई इल्ज़ाम) नहीं अगर वह न संवरे। (7)
और जो आप (स) के पास दौड़ता हुआ आया, (8)
और वह डरता है, (9)
तो आप (स) उस से तग़ाफ़ुल करते हैं। (10)
हरगिज नहीं, यह तो (किताबे) नसीहत है। (11)
सो जो चाहे इस से नसीहत कुबूल करे। (12)
बाइज़्ज़त औराक़ में, (13)
बुलन्द मरतबा, इन्तिहाई पाकीज़ा, (14)
लिखने वाले हाथों में, (15)
बुज़ुर्ग नेकोकार। (16)
इन्सान मारा जाए कि कैसा नाशुक्रा है। (17)
उस (अल्लाह) ने उसे किस चीज़ से पैदा किया? (18)
एक नुत्फ़े से उस को पैदा किया, फिर उस की तक़दीर मुक़र्रर की, (19)
फिर उस की राह आसान कर दी, (20)

فَاِنَّ الْجَحِيْمَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿٣٩﴾ وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने रब | खड़ा होना | डरा | जो | और जो | 39 | ठिकाना | वह | जहन्नम | तो यक़ीनन |

وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ﴿٤٠﴾ فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿٤١﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 41 | ठिकाना | वह | जन्नत | यक़ीनन | 40 | ख़ाहिश | से | जी, दिल | और रोका |

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰهَا ﴿٤٢﴾ فِيْمَ اَنْتَ مِنْ ذِكْرٰىهَا ﴿٤٣﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 43 | उस का ज़िक्र | से | तू | क्या | 42 | उस का ठहरना (क़ियाम) | कब | क़ियामत | से (बाबत) | वह आप (स) से पूछते हैं |

اِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰىهَا ﴿٤٤﴾ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَّخْشٰىهَا ﴿٤٥﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 45 | उस से डरे | जो | डराने वाले | आप (स) | सिर्फ़ | 44 | उस की इन्तिहा | तुम्हारा रब | तरफ़ |

كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا عَشِيَّةً اَوْ ضُحٰىهَا ﴿٤٦﴾ ع ٢ ٢٠

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 46 | उस की सुबह | या | एक शाम | मगर | ठहरे वह | नहीं | देखेंगे उस को | दिन | गोया वह |

آيَاتُهَا ٤٢ ❀ (٨٠) سُوْرَةُ عَبَسَ ❀ رُكُوْعُهَا ١

आयात 42 — (80) सूरह अ़बासा — तेवरी चढ़ाई — रुकूअ 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

عَبَسَ وَتَوَلّٰٓى ﴿١﴾ اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ﴿٢﴾ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शायद वह | ख़बर आप (स) को | और क्या | 2 | एक अंधा | आया उस के पास | कि | 1 | और मुँह मोड़ लिया | तेवरी चढ़ाई |

يَزَّكّٰٓى ﴿٣﴾ اَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ﴿٤﴾ اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ﴿٥﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | बेपरवाई की | जिस | जो | 4 | नसीहत करना | उसे नफ़ा पहुँचाता | नसीहत मानता | या | 3 | संवर जाता |

فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى ﴿٦﴾ وَمَا عَلَيْكَ اَلَّا يَزَّكّٰى ﴿٧﴾ وَاَمَّا مَنْ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | और जो | 7 | वह संवरे | अगर न | आप (स) पर | और नहीं | 6 | फ़िक्र करते हैं | उस के लिए | तो आप (स) |

جَآءَكَ يَسْعٰى ﴿٨﴾ وَهُوَ يَخْشٰى ﴿٩﴾ فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى ﴿١٠﴾ كَلَّآ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हरगिज नहीं | 10 | तग़ाफ़ुल करते हैं | उस से | तो आप | 9 | डरता है | और वह | 8 | दौड़ता | आया आप के पास |

اِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ﴿١١﴾ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ﴿١٢﴾ فِيْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ﴿١٣﴾ وقف لازم

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 13 | बाइज़्ज़त | सहीफ़ (औराक़) | में | 12 | इस से नसीहत कुबूल करे | चाहे | सो जो | 11 | नसीहत | यह तो |

مَّرْفُوْعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ﴿١٤﴾ بِاَيْدِيْ سَفَرَةٍ ﴿١٥﴾ كِرَامٍ بَرَرَةٍ ﴿١٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 16 | नेकोकार | बुज़ुर्ग | 15 | लिखने वाले | हाथों में | 14 | इन्तिहाई पाकीज़ा | बुलन्द मरतबा |

قُتِلَ الْاِنْسَانُ مَآ اَكْفَرَهٗ ﴿١٧﴾ مِنْ اَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ ﴿١٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | उसे पैदा किया | चीज़ | किस | से | 17 | कैसा नाशुक्रा | इन्सान | मारा जाए |

مِنْ نُّطْفَةٍ خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ ﴿١٩﴾ ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَهٗ ﴿٢٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | उस को आसान कर दिया | राह | फिर | 19 | फिर उसकी तक़दीर मुक़र्रर की | उसको पैदा किया | नुत्फ़ा | से |

ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗ ﴿٢١﴾ ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَهٗ ﴿٢٢﴾ كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَآ

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | पूरा किया | अभी तक | हरगिज नहीं | 22 | उसे निकाला | चाहा | जब | फिर | 21 | फिर उसे क़ब्र में पहुँचाया | उसे मुर्दा किया | फिर |

اَمَرَهٗ ﴿٢٣﴾ فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖٓ ﴿٢٤﴾ اَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पानी | ऊपर से डाला | कि हम | 24 | अपना खाना | तरफ़ (को) | इन्सान | पस चाहिए कि देखे | 23 | उस को हुक्म दिया |

صَبًّا ﴿٢٥﴾ ثُمَّ شَقَقْنَا الْاَرْضَ شَقًّا ﴿٢٦﴾ فَاَنْبَتْنَا فِيْهَا حَبًّا ﴿٢٧﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 27 | ग़ल्ला | उस में | फिर हम ने उगाया | 26 | फाड़ कर | ज़मीन | फाड़ा (चीरा) | फिर | 25 | गिरता हुआ |

وَّعِنَبًا وَّقَضْبًا ﴿٢٨﴾ وَّزَيْتُوْنًا وَّنَخْلًا ﴿٢٩﴾ وَّحَدَآئِقَ غُلْبًا ﴿٣٠﴾ وَّفَاكِهَةً

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेवा | 30 | घने | और बाग़ात | 29 | और खजूर | और ज़ैतून | 28 | और तरकारी | और अंगूर |

وَّاَبًّا ﴿٣١﴾ مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ﴿٣٢﴾ فَاِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ ﴿٣٣﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 33 | कान फोड़ने वाली | आए | फिर जब | 32 | और तुम्हारे चौपायों के लिए | तुम्हारे लिए | सामान (खाना) | 31 | और चारा |

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ ﴿٣٤﴾ وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ ﴿٣٥﴾ وَصَاحِبَتِهٖ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अपनी बीवी | 35 | और अपना बाप | और अपनी माँ | 34 | अपना भाई | से | आदमी | भागेगा | जिस दिन |

وَبَنِيْهِ ﴿٣٦﴾ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَاْنٌ يُّغْنِيْهِ ﴿٣٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 37 | उसे काफ़ी होगी | हालत (फ़िक्र) | उस दिन | उन से | आदमी | वास्ते हर एक | 36 | और अपने बेटे |

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ﴿٣٨﴾ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿٣٩﴾ وَوُجُوْهٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बहुत चेहरे | 39 | ख़ुशियाँ मनाते | हँसते | 38 | चमकते | उस दिन | बहुत चेहरे |

يَّوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ﴿٤٠﴾ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ﴿٤١﴾ اُولٰٓئِكَ هُمُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह | यही लोग | 41 | सियाही | छाई हुई | 40 | ग़ुबार | उन पर | उस दिन |

ع ٤٢ ٥

الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ﴿٤٢﴾

| | | |
|---|---|---|
| 42 | गुनाहगार | काफ़िर |

آيَاتُهَا ٢٩ ❀ (٨١) سُوْرَةُ التَّكْوِيْرِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1 — (81) सूरतुत तकवीर — लपेटना — आयात 29

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ﴿١﴾ وَاِذَا النُّجُوْمُ انْكَدَرَتْ ﴿٢﴾ وَاِذَا الْجِبَالُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पहाड़ | और जब | 2 | मांद पड़ जाएंगे | सितारे | और जब | 1 | लपेट दिया जाएगा | सूरज | जब |

سُيِّرَتْ ﴿٣﴾ وَاِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ﴿٤﴾ وَاِذَا الْوُحُوْشُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वहशी जानवर | और जब | 4 | छुटी फिरेंगी | दस माह की गाभन ऊँटनियां | और जब | 3 | चलाए जाएंगे |

حُشِرَتْ ﴿٥﴾ وَاِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ﴿٦﴾ وَاِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ ﴿٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | जोड़दी जाएंगी | जानें | और जब | 6 | भड़काए जाएंगे | दर्या | और जब | 5 | इकटठे किए जाएंगे |

फिर उस को मुर्दा किया, फिर उसे क़ब्र में पहुँचाया। (21)
फिर जब चाहा उसे दोबारा उठा खड़ा करे, (22)
उस ने हरगिज़ पूरा न किया जो (अल्लाह ने) उस को हुक्म दिया। (23)
पस चाहिए कि इन्सान देख ले अपने खाने को, (24)
हम ने ऊपर से गिरता हुआ पानी डाला, (25)
फिर ज़मीन को फाड़ कर चीरा, (26)
फिर हम ने उस में उगाया गल्ला, (27)
और अंगूर और तरकारी। (28)
और ज़ैतून और खजूर। (29)
और बाग़ात घने, (30)
और मेवा और चारा, (31)
ख़ोराक तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के लिए। (32)
फिर जब आए कान फोड़ने वाली। (33)
उस दिन भागेगा आदमी अपने भाई से, (34)
और अपनी माँ और अपने बाप, (35)
और अपनी बीवी और अपने बेटे से। (36)
उस दिन उन में से हर एक आदमी को (अपनी) फ़िक्र दूसरों से बेपरवा कर देगी। (37)
उस दिन बहुत से चेहरे चमकते होंगे, (38)
हँसते और ख़ुशियाँ मनाते। (39)
और उस दिन बहुत से चेहरों पर ग़ुबार होगा। (40)
सियाही छाई हुई (होगी)। (41)
यही लोग हैं काफ़िर गुनाहगार। (42)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
जब सूरज लपेट दिया जाएगा, (1)
और जब सितारे मांद पड़ जाएंगे, (2)
और जब पहाड़ चलाए जाएंगे, (3)
और जब दस माह की गाभन ऊँटनियां छुटी फिरेंगी, (4)
और जब वहशी जानवर इकटठे किए जाएंगे, (5)
और जब दर्या भड़काए जाएंगे, (6)
और जब जानें (जिस्मों से) जोड़दी जाएंगी, (7)

और जब ज़िन्दा गाड़ी हुई (ज़िन्दा दरगोर) लड़की से पूछा जाएगा। (8)
वह किस गुनाह में मारी गई? (9)
और जब आमाल नामे खोले जाएंगे, (10)
और जब आस्मान की खाल खींच ली जाएगी, (11)
और जब जहन्नम भड़काई जाएगी, (12)
और जब जन्नत करीब लाई जाएगी, (13)
हर शख़्स जान लेगा जो कुछ वह लाया है। (14)
सो मैं क़सम खाता हूँ (सितारे की) पीछे हट जाने वाले, (15)
सीधे चलने वाले,
छुप जाने वाले, (16)
और रात की जब वह फैल जाए, (17)
और सुबह् की जब वह दम भरे (नमूदार हो), (18)
बेशक यह (कुरआन) कलाम है इज़्ज़त वाले क़ासिद (फ़रिश्ते) का, (19)
क़ुव्वत वाला, अ़र्श के मालिक के नज़्दीक बुलन्द मरतबा। (20)
सब उस की इताअत करते हैं, फिर अमानतदार है। (21)
और तुम्हारे रफ़ीक़ (मुहम्मद स) कुछ दीवाने नहीं, (22)
और उस (मुहम्मद स) ने उस (फ़रिश्ते) को खुले (आस्मान) के किनारे पर देखा। (23)
और वह (स) ग़ैब पर बुख़्ल करने वाले नहीं। (24)
और यह (कुरआन) शैतान मर्दूद का कहा हुआ नहीं, (25)
फिर तुम किधर जा रहे हो? (26)
यह नहीं है मगर (किताबे) नसीहत तमाम जहानों के लिए, (27)
तुम में से जो भी चाहे कि सीधा रास्ता चले। (28)
और तुम न चाहोगे मगर यह कि अल्लाह चाहे तमाम जहानों का रब। (29)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है
जब आस्मान फट जाएगा, (1)
और जब सितारे झड़ पड़ेंगे, (2)
और जब दर्या उबल पड़ेंगे, (3)
और जब क़ब्रें कुरेदी जाएंगी, (4)
हर शख़्स जान लेगा कि उस ने आगे क्या भेजा और पीछे (क्या) छोड़ा? (5)

وَاِذَا الْمَوْءٗدَةُ سُئِلَتْ ﴿٨﴾ بِاَيِّ ذَنْۢبٍ قُتِلَتْ ﴿٩﴾ وَاِذَا الصُّحُفُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आमाल नामे | और जब | 9 | मारी गई | गुनाह | किस | 8 | पूछा जाएगा | जिन्दा गाड़ी हुई लड़की | और जब |

نُشِرَتْ ﴿١٠﴾ وَاِذَا السَّمَآءُ كُشِطَتْ ﴿١١﴾ وَاِذَا الْجَحِيْمُ سُعِّرَتْ ﴿١٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12 | भड़काई जाएगी | जहन्नम | और जब | 11 | खाल खींच ली जाएगी | आस्मान | और जब | 10 | खोले जाएंगे |

وَاِذَا الْجَنَّةُ اُزْلِفَتْ ﴿١٣﴾ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّآ اَحْضَرَتْ ﴿١٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 14 | वह लाया | जो कुछ | हर शख़्स | जान लेगा | 13 | करीब लाई जाएगी | जन्नत | और जब |

فَلَآ اُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ﴿١٥﴾ الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ﴿١٦﴾ وَالَّيْلِ اِذَا عَسْعَسَ ﴿١٧﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 17 | फैल जाए | जब | और रात | 16 | छुप जाने वाले | सीधे चलने वाले | 15 | पीछे हट जाने वाले | सो मैं कसम खाता हूँ |

وَالصُّبْحِ اِذَا تَنَفَّسَ ﴿١٨﴾ اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ﴿١٩﴾ ذِىْ قُوَّةٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुव्वत वाला | 19 | इज़्ज़त वाला | क़ासिद | कलाम | बेशक यह | 18 | दम भरे | जब | और सुबह |

عِنْدَ ذِى الْعَرْشِ مَكِيْنٍ ﴿٢٠﴾ مُّطَاعٍ ثَمَّ اَمِيْنٍ ﴿٢١﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 21 | वहां का अमानतदार | सब का माना हुआ | 20 | बुलन्द मरतबा | अ़र्श के मालिक | नज़्दीक |

وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُوْنٍ ﴿٢٢﴾ وَلَقَدْ رَاٰهُ بِالْاُفُقِ الْمُبِيْنِ ﴿٢٣﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 23 | खुला | उफुक़ (किनारे) पर | और उस ने उस को देखा है | 22 | दीवाना | तुम्हारा रफ़ीक़ | और नहीं |

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ﴿٢٤﴾ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطٰنٍ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| शैतान | कहा हुआ | और नहीं | 24 | बुख़्ल करने वाला | ग़ैब पर | और नहीं वह |

رَّجِيْمٍ ﴿٢٥﴾ فَاَيْنَ تَذْهَبُوْنَ ﴿٢٦﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 27 | तमाम जहानों के लिए | नसीहत | मगर | नहीं यह | 26 | तुम जा रहे हो | फिर किधर | 25 | मर्दूद |

لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّسْتَقِيْمَ ﴿٢٨﴾ وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर | और तुम न चाहोगे | 28 | सीधा चले | कि | तुम से | चाहे | लिए जो |

اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٩﴾ ع ١/٢٩/٦

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 29 | तमाम जहान | रब | अल्लाह | चाहे | यह कि |

آيَاتُهَا ١٩ ۞ (٨٢) سُوْرَةُ الْاِنْفِطَارِ ۞ رُكُوْعُهَا ١

आयात 19 — (82) सूरतुल इंफ़ितार फट जाना — रुकूअ 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ ﴿١﴾ وَاِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ﴿٢﴾ وَاِذَا الْبِحَارُ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दर्या | और जब | 2 | झड़ पड़ेंगे | सितारे | और जब | 1 | फट जाएगा | आस्मान | जब |

فُجِّرَتْ ﴿٣﴾ وَاِذَا الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ ﴿٤﴾ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَاَخَّرَتْ ﴿٥﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | और पीछे छोड़ा | उस ने आगे भेजा | क्या | हर शख़्स | जान लेगा | 4 | कुरेदी जाएंगी | क़ब्रें | और जब | 3 | उबल पड़ेंगे (वह निकलेंगे) |

يٰٓاَيُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ ﴿٦﴾ الَّذِيْ خَلَقَكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुझे पैदा किया | जिस ने | 6 | करीम | अपने रब से | किस चीज़ ने तुझे धोका दिया | इन्सान | ऐ |

فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَ ﴿٧﴾ فِيْٓ اَيِّ صُوْرَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ ﴿٨﴾ كَلَّا بَلْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हरगिज़ नहीं बल्कि | 8 | तुझे जोड़ दिया | चाहा | जिस सूरत | में | 7 | फिर बराबर किया | फिर तुझ ठीक किया |

تُكَذِّبُوْنَ بِالدِّيْنِ ﴿٩﴾ وَاِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ ﴿١٠﴾ كِرَامًا كٰتِبِيْنَ ﴿١١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | लिखने वाले | इज़्ज़त वाले | 10 | निगहबान | तुम पर | और बेशक | 9 | जज़ा ओ सज़ा का दिन | तुम झुटलाते हो |

يَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿١٢﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ﴿١٣﴾ وَّاِنَّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बेशक | 13 | जन्नत | में | नेक लोग | बेशक | 12 | जो तुम करते हो | वह जानते हैं |

الْفُجَّارَ لَفِيْ جَحِيْمٍ ﴿١٤﴾ يَّصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿١٥﴾ وَمَا هُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वह नही | 15 | रोज़े जजा ओ सजा (क़ियामत) | डाले जाएंगे उस में | 14 | जहन्नम | में | गुनाहगार |

عَنْهَا بِغَآئِبِيْنَ ﴿١٦﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿١٧﴾ ثُمَّ مَآ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या | फिर | 17 | रोज़े जज़ा ओ सज़ा | क्या | और तुम्हें क्या ख़बर | 16 | ग़ाइब होने वाले | उस से |

اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿١٨﴾ يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| किसी शख़्स के लिए | कोई शख़्स | मालिक न होगा | जिस दिन | 18 | रोज़े जज़ा ओ सज़ा | क्या | तुम्हें ख़बर |

ع ١٩ / ٧

شَيْـًٔا ۭ وَالْاَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ﴿١٩﴾

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 19 | अल्लाह के लिए | उस दिन | और हुक्म | कुछ |

## آيَاتُهَا ٣٦ ❀ (٨٣) سُوْرَةُ الْمُطَفِّفِيْنَ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकुअ 1 — (83) सूरतुल मुतफ़्फ़िफ़ीन — आयात 36

नाप तोल में कमी करने वाले

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ﴿١﴾ الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ﴿٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | पूरा भरलें | लोग | पर (से) | जब माप कर लें | वह जो कि | 1 | कमी करने वालों के लिए | ख़राबी |

وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ﴿٣﴾ اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कि वह | यह लोग | ख़याल करते | क्या नहीं | 3 | घटा कर दें | तोल कर दें | या | माप कर दें वह | और जब |

مَّبْعُوْثُوْنَ ﴿٤﴾ لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٥﴾ يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रब के सामने | लोग | खड़े होंगे | दिन | 5 | बड़ा | एक दिन | 4 | उठाए जाने वाले हैं |

الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦﴾ كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ﴿٧﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ख़बर है तुझे | और क्या | 7 | सिज्जीन | अलबत्ता में | बदकार | आमाल नामा | हरगिज़ नहीं, बेशक | 6 | तमाम जहान |

مَا سِجِّيْنٌ ﴿٨﴾ كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ﴿٩﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | झुटलाने वालों के लिए | उस दिन | ख़राबी | 9 | लिखी हुई | एक किताब | 8 | क्या है सिज्जीन |

ऐ इन्सान तुझे अपने रब्बे करीम के बारे में किस चीज़ ने धोका दिया। (6)
जिस ने तुझे पैदा किया, फिर ठीक किया, फिर बराबर किया, (7)
सिज सूरत में चाहा तुझे जोड़ दिया। (8)
हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम जजा ओ सज़ा के दिन (क़ियामत) को झुटलाते हो, (9)
और बेशक तुम पर निगहबान (मुक़र्रर) हैं, (10)
इज़्ज़त वाले, (आमाल) लिखने वाले। (11)
जो तुम करते हो वह जानते हैं। (12)
बेशक नेक लोग जन्नत में होंगे। (13)
और बेशक गुनाहगार जहन्नम में होंगे। (14)
उस में जज़ा ओ सजा (क़ियामत) के दिन डाले जाएंगे। (15)
और वह उस से ग़ाइब न हो सकेंगे। (16)
और तुम्हें क्या ख़बर कि रोज़े जज़ा ओ सज़ा क्या है? (17)
फिर तुम्हें क्या खबर कि रोज़े जज़ा ओ सजा क्या है? (18)
जिस दिन कुछ नहीं कर सकेगा कोई शख़्स किसी शख़्स के लिए, उस दिन हुक्म अल्लाह ही का होगा। (19)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

खराबी है कमी करने वालों के लिए, (1)
जो (लोगों से) माप कर लें तो पूरा भर कर लें, (2)
और जब (दूसरों को) माप कर या तोल कर दें तो घटा कर दें। (3)
क्या यह लोग ख़याल नहीं करते कि वह उठाए जाने वाले हैं। (4)
एक बड़े दिन, (5)
जिस दिन लोग खड़े होंगे तमाम जहानों के रब के सामने। (6)
हरगिज़ नहीं, बेशक बदकारों का आमाल नामा सिज्जीन में है। (7)
और तुझे क्या ख़बर कि सिज्जीन क्या है? (8)
एक लिखी हुई किताब। (9)
उस दिन ख़राबी है झुटलाने वालों के लिए. (10)

जो लोग झुटलाते हैं
रोज़े जज़ा ओ सज़ा को। (11)
और उसे नहीं झुटलाता मगर हद
से बढ़ जाने वाला गुनाहगार, (12)
जब पढ़ी जाती हैं उस पर हमारी
आयतें तो कहेः यह पहलों की
कहानियाँ हैं। (13)
हरगिज़ नहीं, बल्कि ज़ंग पकड़ गया
है उन के दिलों पर (उस के सबब)
जो वह कमाते थे। (14)
हरगिज़ नहीं, वह उस दिन
अपने रब की दीद से रोक दिए
जाएंगे। (15)
फिर बेशक वह जहन्नम में दाखिल
होने वाले हैं। (16)
फिर कहा जाएगा कि यह वही है
जिस को तुम झुटलाते थे। (17)
हरगिज़ नहीं, बेशक नेक लोगों
का आमाल नामा "इल्लियीन" में
है। (18)
और तुझे क्या खबर कि इल्लियीन
क्या है? (19)
एक किताब है लिखी हुई। (20)
(उसे) देखते हैं (अल्लाह के) मुक़र्रब
(नज़दीक वाले)। (21)
बेशक नेक बन्दे नेमतों में होंगे। (22)
तख़्तों (मुस्नदों) पर (बैठे) देखते
होंगे, (23)
तू उन के चेहरों पर नेमत की
तरोताज़गी पाएगा। (24)
उन्हें पिलाई जाती है ख़ालिस शराब
मुहर बन्द, (25)
उस की मुहर मुश्क पर जमी हुई
(से लगी हुई), और चाहिए कि
बाज़ी ले जाने की तमन्ना रखने
वाले इस में बाज़ी ले जाने की
कोशिश करें। (26)
और उस में मिलावट है तस्नीम
की, (27)
यह एक चश्मा है जिस से मुक़र्रब
पीते हैं (28)
बेशक जिन लोगों ने जुर्म किया
(गुनाहगार) वह मोमिनों पर हँसते
थे। (29)
और जब उन से हो कर गुज़रते तो
आँख मारते। (30)
और जब अपने घर वालों की
तरफ़ लौटते तो हँसते (बातें बनाते)
लौटते। (31)
और जब उन्हें देखते तो कहतेः
बेशक यह लोग गुमराह हैं, (32)
और वह उन पर निगहबान
बना कर नहीं भेजे गए। (33)

الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿١١﴾ وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖٓ اِلَّا كُلُّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हर | मगर | उस को | और नहीं झुटलाता | 11 | रोज़े जज़ा ओ सज़ा को | झुटलाते हैं | जो लोग |

مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ﴿١٢﴾ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कहानियाँ | कहे | हमारी आयतें | उस पर | पढ़ी जाती | जब | 12 | गुनाहगार | हद से बढ़ जाने वाला |

الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣﴾ كَلَّا بَلْ ٚ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٤﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 14 | वह कमाते थे | जो | ज़ंग पकड़ गया है उन के दिल पर | बल्कि | हरगिज़ नहीं | 13 | पहलों |

كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ ﴿١٥﴾ ثُمَّ اِنَّهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक वह | फिर | 15 | देखने से महरूम रखे जाएंगे | उस दिन | अपना रब | से | बेशक वह | हरगिज़ नही |

لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ﴿١٦﴾ ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٧﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 17 | झुटलाते | उस को | तुम थे | वह जो कि | यह | कहा जाएगा | फिर | 16 | जहन्नम | दाखिल होने वाले |

كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ﴿١٨﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ﴿١٩﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 19 | क्या इल्लियीन | तुझे ख़बर | और क्या | 18 | इल्लियीन | अलबत्ता में | नेक लोग | आमाल नामा | हरगिज़ नहीं बेशक |

كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ﴿٢٠﴾ يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢١﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ﴿٢٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 22 | अल्बत्ता नेमत (आराम) में | नेक बन्दे | बेशक | 21 | नज़्दीक वाले | देखते हैं | 20 | लिखी हुई | एक किताब |

عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٢٣﴾ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन के चेहरे | में | तू पहचान लेगा | 23 | देखते होंगे | तख़्त (जमा) | पर |

نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ﴿٢٤﴾ يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ﴿٢٥﴾ خِتٰمُهٗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस की मुहर | 25 | मुहर लगी हुई | ख़ालिस शराब | से | उन्हें पिलाई जाती है | 24 | तर ओ ताज़गी नेमत की |

مِسْكٌ ؕ وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ ﴿٢٦﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 26 | रग़बत करने वाले | चाहिए कि रग़बत (काविश) करें | उस | और में | मुश्क |

وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ﴿٢٧﴾ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 28 | मुक़र्रब | उस से | पीते हैं | एक चश्मा | 27 | तस्नीम | से | उस की आमेज़िश |

اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ﴿٢٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 29 | हँसते | जो ईमान लाए (मोमिन) | से (पर) | थे | जुर्म किया उन्हों ने | वह लोग जो | बेशक |

وَاِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَاِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ | वह लौटते | और जब | 30 | आँख मारते | उन से | गुज़रते | और जब |

اَهْلِهِمُ انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ ﴿٣١﴾ وَاِذَا رَاَوْهُمْ قَالُوْٓا اِنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | कहते | उन्हें देखते | और जब | 31 | हँसने (बातें बनाते) | लौटते | अपने घर वाले |

هٰٓؤُلَآءِ لَضَآلُّوْنَ ﴿٣٢﴾ وَمَآ اُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٣٣﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 33 | निगहबान | उन पर | और नहीं भेजे गए | 32 | गुमराह (जमा) | यह लोग |

فَالْيَوْمَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ ﴿٣٤﴾ عَلَى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | 34 | हँसते हैं | काफ़िर (जमा) | से (पर) | ईमान वाले | पस आज |

ع ۱۰ / ۸

الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 36 | जो वह करते थे | काफ़िर (जमा) | सवाब मिल गया | क्या | 35 | देखते हैं | तख़्त |

آيَاتُهَا ٢٥ ❀ (٨٤) سُوْرَةُ الْاِنْشِقَاقِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1 — (84) सूरतुल इंशिक़ाक़ / फट जाना — आयात 25

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ﴿١﴾ وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٢﴾ وَاِذَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जब | 2 | और इसी लाइक़ है | अपने रब का | और सुन लेगा | 1 | फट जाएगा | आस्मान | जब |

الْاَرْضُ مُدَّتْ ﴿٣﴾ وَاَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّتْ ﴿٤﴾ وَاَذِنَتْ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और सुन लेगा | 4 | और ख़ाली हो जाएगी | जो उस में | और निकाल डालेगी | 3 | फैलादी जाएगी | ज़मीन |

لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٥﴾ يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने रब की तरफ़ | आगे बढ़ने वाला | बेशक तू | इन्सान | ऐ | 5 | और इसी लाइक़ है | अपने रब का |

كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ﴿٦﴾ فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ﴿٧﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | उस के दाएँ हाथ में | उस का आमाल नामा | दिया गया | जो | पस | 6 | फिर उस को मिलना है | मशक़्क़त |

فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا ﴿٨﴾ وَّيَنْقَلِبُ اِلٰۤى اَهْلِهٖ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने लोग | तरफ़ | और लौटेगा | 8 | आसान | हिसाब | हिसाब लिया जाएगा | पस अ़नक़रीब |

مَسْرُوْرًا ﴿٩﴾ وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ وَرَآءَ ظَهْرِهٖ ﴿١٠﴾ فَسَوْفَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस अनक़रीब | 10 | उस की पुश्त | पीछे | उस का आमाल नामा | दिया गया | जो | और वह | 9 | ख़ुश ख़ुश |

يَدْعُوْا ثُبُوْرًا ﴿١١﴾ وَّيَصْلٰى سَعِيْرًا ﴿١٢﴾ اِنَّهٗ كَانَ فِيْۤ اَهْلِهٖ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने लोग | में | था | बेशक वह | 12 | आग | और दाख़िल होगा | 11 | मौत | मांगेगा |

مُعانقة ١٤ / عند المتأخرين ١٢

مَسْرُوْرًا ﴿١٣﴾ اِنَّهٗ ظَنَّ اَنْ لَّنْ يَّحُوْرَ ﴿١٤﴾ بَلٰۤى اِنَّ رَبَّهٗ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक उस का रब | क्यों नहीं | 14 | हरगिज़ न लौटेगा | कि | गुमान किया | बेशक वह | 13 | ख़ुश ओ ख़ुर्रम |

كَانَ بِهٖ بَصِيْرًا ﴿١٥﴾ فَلَاۤ اُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ﴿١٦﴾ وَالَّيْلِ وَمَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | और रात | 16 | शाम की सुर्ख़ी | सो मैं क़सम खाता हूँ | 15 | देखने वाला | उस को | था |

وَسَقَ ﴿١٧﴾ وَالْقَمَرِ اِذَا اتَّسَقَ ﴿١٨﴾ لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ﴿١٩﴾ فَمَا

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सो क्या | 19 | दर्जा | से | एक दर्जा | तुम को ज़रूर चढ़ना है | 18 | वह मुकम्मल हो जाए | जब | और चाँद | 17 | सिमट आती है |

السجدة ١٣

لَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَاِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْاٰنُ لَا يَسْجُدُوْنَ ﴿٢١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 21 | वह सिज्दा नहीं करते | क़ुरआन | उन पर | पढ़ा जाता है | और जब | 20 | वह ईमान नहीं लाते | उन्हें |

पस आज ईमान वाले काफ़िरों पर हँसते हैं। (34) तख़्तों (मसहरियों) पर बैठे देखते हैं। (35) क्या मिल गया काफ़िरों को बदला उस का जो वह करते थे। (36)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

जब आस्मान फट जाएगा, (1) और अपने रब का (हुक्म) सुन लेगा और वह इसी लाइक़ है, (2) और जब ज़मीन फैला दी जाएगी, (3) और जो कुछ उस में है उसे निकाल डालेगी और ख़ाली हो जाएगी, (4) और अपने रब का (हुक्म) सुन लेगी और वह इसी लाइक़ है। (5) ऐ इन्सान, बेशक तू चले जा रहा है अपने रब की तरफ़ मशक़्क़त उठाते, फिर उस को मिलना है। (6) पस जिस को उस का आमाल नामा दाएँ हाथ में दिया गया, (7) पस उस से अनक़रीब आसान हिसाब लिया जाएगा, (8) और वह अपने लोगों की तरफ़ ख़ुश ख़ुश लौटेगा। (9) और वह जिस को उस का आमाल नामा उस की पीठ पीछे दिया गया, (10) वह अनक़रीब मौत मांगेगा, (11) और जहन्नम में जा पड़ेगा। (12) बेशक वह अपने लोगों में ख़ुश ओ ख़ुर्रम था। (13) उस ने गुमान किया था कि वह हरगिज़ न लौटेगा। (14) क्यों नहीं? उस का रब बेशक उसे देखता था। (15) सो मैं क़सम खाता हूँ शाम की सुर्ख़ी की, (16) और रात की और जो सिमट आती है। (17) और चाँद की जब मुकम्मल हो जाए, (18) तुम को दर्जा ब दर्जा ज़रूर चढ़ना है। (19) सो उन्हें क्या हो गया है कि वह ईमान नहीं लाते? (20) और जब उन पर क़ुरआन पढ़ा जाता है तो वह सिज्दा नहीं करते। (21)

बल्कि जिन लोगों ने कुफ़ किया
(मुन्किर) वह झुटलाते हैं, (22)
और अल्लाह ख़ूब जानता है जो वह
(दिलों में) भर रखते हैं, (23)
सो उन्हें दर्दनाक अज़ाब की
ख़ुशख़बरी सुना। (24)
सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए
और उन्हों ने अच्छे काम किए,
उन के लिए ख़तम न होने वाला
अजर है। (25)
अल्लाह के नाम से जो बहुत
मेहरबान, रहम करने वाला है
बुर्जों वाले आस्मान की क़सम, (1)
और वादा किए हुए दिन की, (2)
और देखने वाले की और देखी जाने
वाली चीज़ की। (3)
हलाक कर दिए गए ख़न्दक़ों
वाले, (4)
(उन ख़न्दक़ों वाले) जिन में ईंधन
की आग थी, (5)
जब वह उस पर बैठे थे, (6)
और जो मोमिनों के साथ करते थे
(अपनी आँखों से) देखते थे। (7)
और उन्हों ने (मोमिनों से) बदला
नहीं लिया मगर इस बात का कि
वह ईमान लाए अल्लाह पर जो
ग़ालिब है तारीफ़ों वाला, (8)
जिस की बादशाहत है आस्मानों
और ज़मीन में, और अल्लाह हर
चीज़ पर बाख़बर है। (9)
बेशक जिन लोगों ने मोमिन मर्दों
और मोमिन औरतों को तक्लीफ़ें
दीं, फिर उन्हों ने तौबा न की तो
उन के लिए जहन्नम का अज़ाब है
और उन के लिए जलने का अज़ाब
है, (10)
बेशक जो लोग ईमान लाए और
उन्हों ने अच्छे अमल किए, उन
के लिए बाग़ात हैं जिन के नीचे
जारी हैं नहरें, यह बड़ी कामयाबी
है। (11)
बेशक तुम्हारे रब की पकड़ बड़ी
सख़्त है। (12)
बेशक वही पहली बार पैदा करता
है और (वही) लौटाता है। (13)

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُوْعُوْنَ ﴿٢٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 23 | भर रखते हैं | जो | ख़ूब जानता है | और अल्लाह | 22 | झुटलाते हैं | जिन लोगों ने कुफ़ किया (मुन्किर) | बल्कि |

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٤﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हों ने काम किए | जो लोग ईमान लाए | सिवाए | 24 | दर्दनाक | अज़ाब की | सो उन्हें ख़ुशख़बरी सुनाओ |

الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ﴿٢٥﴾ ع ۱ ۲۵

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 25 | न ख़तम होने वाला | अजर | उन के लिए | अच्छे |

آيَاتُهَا ٢٢ ❀ (٨٥) سُوْرَةُ الْبُرُوْجِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1 — (85) सूरतुल बुरूज — तारे और सय्यारे — आयात 22

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ﴿١﴾ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ﴿٢﴾ وَشَاهِدٍ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और देखने वाले | 2 | वादा किए हुए | और दिन की | 1 | बुर्जों वाला | क़सम आस्मान की |

وَّمَشْهُوْدٍ ﴿٣﴾ قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ﴿٤﴾ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ﴿٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | ईंधन वाली | आग | 4 | गढ़े वाले | हलाक कर दिए गए | 3 | और देखी जाने वाली |

اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ ﴿٦﴾ وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह करते थे | जो | पर | और वह | 6 | बैठे थे | उस पर | जब वह |

بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ﴿٧﴾ وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّآ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह पर | वह ईमान लाए | कि | मगर | उन से | और नहीं बदला लिया | 7 | देखते | मोमिनों के साथ |

الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ﴿٨﴾ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और ज़मीन | आस्मान (जमा) | बादशाहत | उस के लिए | वह जो कि | 8 | तारीफ़ों वाला | ग़ालिब |

وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मोमिन मर्द (जमा) | तक्लीफ़ें दीं | वह जो | बेशक | 9 | सामने (बाख़बर) | चीज़ | हर | पर | और अल्लाह |

وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अज़ाब | और उन के लिए | जहन्नम | अज़ाब | तो उन के लिए | उन्हों ने तौबा न की | फिर | और मोमिन औरतें |

الْحَرِيْقِ ﴿١٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتٌ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बाग़ात | उन के लिए | अच्छे | और उन्हों ने अमल किए | जो लोग ईमान लाए | बेशक | 10 | जलना |

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ ﴿١١﴾ اِنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | 11 | बड़ी | कामयाबी | यह | नहरें | उन के नीचे | से | जारी है |

بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ ﴿١٢﴾ اِنَّهٗ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيْدُ ﴿١٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 13 | और लौटाता है | पहली बार पैदा करता है | वही | बेशक वह | 12 | बड़ी सख़्त | तुम्हारा रब | पकड़ |

وَهُوَ الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ ﴿١٤﴾ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ ﴿١٥﴾ فَعَّالٌ لِّمَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | कर डालने वाला | 15 | बड़ी बुज़ुर्गी वाला | अर्श वाला (मालिक) | 14 | मुहब्बत वाला | बख़्शने वाला | और वह |

يُرِيْدُ ﴿١٦﴾ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْجُنُوْدِ ﴿١٧﴾ فِرْعَوْنَ وَثَمُوْدَ ﴿١٨﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | और समूद | फ़िरऔन | 17 | लशकर (जमा) | बात | तुझ को आई (पहुँची) | क्या | 16 | वह चाहे |

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ تَكْذِيْبٍ ﴿١٩﴾ وَّاللّٰهُ مِنْ وَّرَآئِهِمْ مُّحِيْطٌ ﴿٢٠﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | घेरे हुए | उन को हर तरफ़ | से | और अल्लाह | 19 | झुटलाना | में | उन्हो ने कुफ़्र किया | वह जो कि | बल्कि |

ع ٢٢ ١٠ بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ﴿٢١﴾ فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ﴿٢٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 22 | महफ़ूज | लौहे | में | 21 | बड़ी बुज़ुर्गी वाला | कुरआन | यह | बल्कि |

## آيَاتُهَا ١٧ ❀ (٨٦) سُوْرَةُ الطَّارِقِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1 — (86) सूरतुत तारिक़ — चमकता हुआ सितारा — आयात 17

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ﴿١﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ﴿٢﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 2 | क्या है तारिक़ | और तुम ने क्या समझा | 1 | और रात को आने वाली की | क़सम है आस्मान की |

النَّجْمُ الثَّاقِبُ ﴿٣﴾ اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ﴿٤﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | निगहबान | उस पर | मगर | जान | कोई | नहीं | 3 | चमकता हुआ | सितारा |

فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ﴿٥﴾ خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ﴿٦﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | उछलता हुआ | पानी | से | पैदा किया गया | 5 | पैदा किया गया है | किस चीज़ से | इन्सान | चाहिए कि देखे |

يَّخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ﴿٧﴾ اِنَّهٗ عَلٰى رَجْعِهٖ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस को दोबारा लौटाना | पर | बेशक वह | 7 | और सीना | पीठ | दरमियान | से | निकलता है |

لَقَادِرٌ ﴿٨﴾ يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ ﴿٩﴾ فَمَا لَهٗ مِنْ قُوَّةٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुव्वत | से | तो न उस के लिए | 9 | राज़ | जांचे जाएंगे | दिन | 8 | क़ादिर |

وَّلَا نَاصِرٍ ﴿١٠﴾ وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ﴿١١﴾ وَالْاَرْضِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| और ज़मीन की | 11 | बारिश वाला | क़सम आस्मान की | 10 | मददगार | और न |

ذَاتِ الصَّدْعِ ﴿١٢﴾ اِنَّهٗ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ﴿١٣﴾ وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ﴿١٤﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 14 | बेहूदा बात | यह | और नहीं | 13 | फ़ैसला कर देने वाला | कलाम | बेशक यह | 12 | फट जाने वाली |

اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا ﴿١٥﴾ وَّاَكِيْدُ كَيْدًا ﴿١٦﴾ فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| काफ़िर (जमा) | पस ढील दो | 16 | एक तदबीर | और मैं तदबीर करता हूँ | 15 | तदबीर | तदबीर करते हैं | बेशक वह |

ع ١٧ ١١ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ﴿١٧﴾

| | | |
|---|---|---|
| 17 | थोड़ी | ढील दो उन्हें |

और वही बख़्शने वाला मुहब्बत करने वाला है, (14)
अर्श का मालिक बड़ी बुज़ुर्गी वाला, (15)
जो चाहे कर डालने वाला। (16)
क्या तुम्हारे पास लशकरों की बात (ख़बर) पहुँची, (17)
फ़िरऔन और समूद की। (18)
बल्कि जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) झुटलाने में (लगे हुए हैं), (19)
और अल्लाह उन्हें हर तरफ़ से घेरे हुए है। (20)
बल्कि यह कुरआन बड़ी बुज़ुर्गी वाला है, (21)
लौहे महफ़ूज़ में (लिखा हुआ)। (22)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
क़सम है आस्मान की और "तारिक़" (रात को आने वाले) की। (1)
और तुम ने क्या समझा कि "तारिक़" क्या है? (2)
चमकता हुआ सितारा। (3)
कोई जान नहीं जिस पर (कोई) निगहबान न हो। (4)
और इन्सान को चाहिए कि देखे वह किस चीज़ से पैदा किया गया है? (5)
वह पैदा किया गया उछलते हुए पानी से, (6)
जो निकलता है पीठ और सीने के दरमियान से। (7)
बेशक वह (अल्लाह) उस को दोबारा लौटाने पर क़ादिर है। (8)
जिस दिन (लोगों के) राज जांचे जाएंगे। (9)
तो न उसे (इन्सान को) कोई कुव्वत होगी और न मददगार। (10)
क़सम आस्मान की, बारिश वाला। (11)
और ज़मीन की, फट जाने वाली। (12)
बेशक यह कलाम है फ़ैसला कर देने वाला, (13)
और यह हंसी मज़ाक नहीं। (14)
बेशक वह (उल्टी उल्टी) तदबीरें करते हैं, (15)
और मैं (भी) एक तदबीर करता हूँ। (16)
पस ढील दो काफ़िरों को थोड़ी ढील। (17)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है
पाकीज़गी बयान कर अपने सब से बुलन्द रब के नाम की, (1)
जिस ने पैदा क्या फिर ठीक किया, (2)
और जिस ने अन्दाज़ा ठहराया फिर राह दिखाई, (3)
और जिस ने चारा उगाया, (4)
फिर उसे ख़ुश्क सियाह कर दिया। (5)
हम जल्द आप (स) को पढ़ाएंगे, फिर आप (स) न भूलेंगे, (6)
मगर जो अल्लाह चाहे, बेशक वह जानता है ज़ाहिर भी और पोशीदा भी। (7)
और हम आप (स) को आसान तरीक़े की सहूलत देंगे। (8)
पस आप (स) समझा दें अगर समझाना नफ़ा दे। (9)
जो डरता है वह जल्द समझ जाएगा, (10)
और उस से बदबख़्त पहलू तही करेगा, (11)
जो बहुत बड़ी आग में दाख़िल होगा। (12)
फिर न मरेगा वह उस में और न जिएगा। (13)
यक़ीनन उस ने फ़लाह पाई जो पाक हुआ, (14)
और उस ने अपने रब का नाम याद किया, फिर नमाज़ पढ़ी। (15)
बल्कि तुम दुन्यवी ज़िन्दगी को तरजीह देते हो। (16)
और (जबकि) आख़िरत बेहतर और बाक़ी रहने वाली है। (17)
बेशक यह पहले सहीफ़ों में (भी कही गई थी), (18)
इब्राहीम (अ) और मूसा (अ) के सहीफ़ों में। (19)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है
क्या तुम्हारे पास ढांपने वाली (क़ियामत) की बात पहुँची। (1)
कितने ही मुँह उस दिन ज़लील ओ आजिज़ होंगे, (2)
अ़मल करने वाले, मुशक़्क़त उठाने वाले। (3)
दहकती हुई आग में दाख़िल होंगे, (4)
खौलते हुए चश्मे से (पानी) पिलाए जाएंगे, (5)
न उन के लिए खाना होगा मगर ख़ार दार घास से, (6)
जो न मोटा करेगी और न भूक से बेनियाज़ करेगी। (7)

آيَاتُهَا ١٩ ❀ (٨٧) سُوْرَةُ الْاَعْلٰى ❀ رُكُوْعُهَا ١

आयात 19 | (87) सूरतुल आला — सब से बुलन्द | रुकूअ़ 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ﴿١﴾ الَّذِىْ خَلَقَ فَسَوّٰى ﴿٢﴾ وَالَّذِىْ قَدَّرَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जिस ने अन्दाज़ा ठहराया | 2 | फिर ठीक किया | पैदा क्या | जिस ने | 1 | सब से बुलन्द | अपना रब | नाम | पाकीज़गी बयान कर |

فَهَدٰى ﴿٣﴾ وَالَّذِىْٓ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ﴿٤﴾ فَجَعَلَهٗ غُثَآءً اَحْوٰى ﴿٥﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | सियाह | ख़ुश्क | फिर उसे कर दिया | 4 | चारा | निकाला (उगाया) | और जिस ने | 3 | फिर राह दिखाई |

سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى ﴿٦﴾ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ۗ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | ज़ाहिर | जानता है | बेशक वह | अल्लाह चाहे | जो | मगर | 6 | फिर न भूलेंगे आप | हम जल्द पढ़ाएंगे आप (स) को |

يَخْفٰى ﴿٧﴾ وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ﴿٨﴾ فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ﴿٩﴾ سَيَذَّكَّرُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जल्द समझ जाएगा | 9 | समझाना | नफ़ा दे | अगर | पस समझा दें | 8 | आसान तरीक़ा | और हम आप (स) को सहूलत देंगे | 7 | पोशीदा |

مَنْ يَّخْشٰى ﴿١٠﴾ وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى ﴿١١﴾ الَّذِىْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ﴿١٢﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12 | बहुत बड़ी | आग | दाख़िल होगा | जा | 11 | बद बख़्त | और पहलू नही करेगा उस से | 10 | डरता है | जो |

ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ﴿١٣﴾ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ﴿١٤﴾ وَذَكَرَ اسْمَ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नाम | और याद किया | 14 | पाक हुआ | जो | यक़ीनन उस ने फ़लाह पाई | 13 | और न जिएगा | उस में | न मरेगा वह | फिर |

رَبِّهٖ فَصَلّٰى ﴿١٥﴾ بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿١٦﴾ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेहतर | और आख़िरत | 16 | दुनिया | ज़िन्दगी | बढ़ाते हो (तरजीह) | बल्कि | 15 | फिर नमाज़ पढ़ी | अपना रब |

وَّاَبْقٰى ﴿١٧﴾ اِنَّ هٰذَا لَفِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿١٨﴾ صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ﴿١٩﴾ ع ١٩ ١٢

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 19 | और मूसा (अ) | इब्राहीम (अ) | सहीफ़े | 18 | पहले सहीफ़े | में | बेशक यह | 17 | और बाक़ी रहने वाली |

آيَاتُهَا ٢٦ ❀ (٨٨) سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

आयात 26 | (88) सूरतुल ग़ाशिया — छा जाने वाली | रुकूअ़ 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ﴿١﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ﴿٢﴾ عَامِلَةٌ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ़मल करने वाले | 2 | ज़लील ओ आजिज़ | उस दिन | कितने मुँह | 1 | ढांपने वाली | बात | क्या तुम्हारे पास आई |

نَّاصِبَةٌ ﴿٣﴾ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ﴿٤﴾ تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ﴿٥﴾ لَيْسَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं | 5 | खौलता हुआ | चश्मा | से | पिलाए जाएंगे | 4 | दहकती हुई | आग | दाख़िल होंगे | 3 | मुशक़्क़त उठाने वाले |

لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ﴿٦﴾ لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِىْ مِنْ جُوْعٍ ﴿٧﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | भूक | से | न बेनियाज़ करेगी | न मोटा करेगी | 6 | ख़ारदार घास | से | मगर | खाना | उन के लिए |

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ﴿٨﴾ لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ﴿٩﴾ فِيْ جَنَّةٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बाग़ | में | 9 | ख़ुश ख़ुश | अपनी कोशिश में | 8 | तर ओ ताज़ा | उस दिन | कितने मुँह |

وقف لازم

عَالِيَةٍ ﴿١٠﴾ لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً ﴿١١﴾ فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ﴿١٢﴾ فِيْهَا

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | 12 | बहता हुआ | चश्मा | उस में | 11 | बेहूदा बकवास | उस में | वह न सुनेंगे | 10 | बुलन्द |

سُرُرٌ مَّرْفُوْعَةٌ ﴿١٣﴾ وَّاَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ ﴿١٤﴾ وَّنَمَارِقُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और गद्दे | 14 | चुने हुए | और कटोरे | 13 | ऊँचे ऊँचे | तख़्त |

مَصْفُوْفَةٌ ﴿١٥﴾ وَّزَرَابِيُّ مَبْثُوْثَةٌ ﴿١٦﴾ اَفَلَا يَنْظُرُوْنَ اِلَى الْاِبِلِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऊँट | तरफ़ | क्या वह नहीं देखते? | 16 | बिखरे हुए | और क़ालीन | 15 | तरतीब से लगे हुए |

كَيْفَ خُلِقَتْ ﴿١٧﴾ وَاِلَى السَّمَآءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ﴿١٨﴾ وَاِلَى الْجِبَالِ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पहाड़ (जमा) | और तरफ़ | 18 | बुलन्द किया गया | कैसे | आस्मान | और तरफ़ | 17 | वह पैदा किया गया | कैसे |

كَيْفَ نُصِبَتْ ﴿١٩﴾ وَاِلَى الْاَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ﴿٢٠﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | बिछाई गई | कैसे | ज़मीन | और तरफ़ | 19 | खड़े किए गए | कैसे |

فَذَكِّرْ اِنَّمَآ اَنْتَ مُذَكِّرٌ ﴿٢١﴾ لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ﴿٢٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 22 | दारोग़ा | उन पर | नहीं आप | 21 | समझाने वाले | आप | सिर्फ़ | पस समझाते रहें |

اِلَّا مَنْ تَوَلّٰى وَكَفَرَ ﴿٢٣﴾ فَيُعَذِّبُهُ اللّٰهُ الْعَذَابَ الْاَكْبَرَ ﴿٢٤﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 24 | बड़ा | अज़ाब | पस उसे अज़ाब देगा अल्लाह | 23 | और कुफ़्र किया | मुँह मोड़ा | जो जिस | मगर |

ع ١٦ النصف ١٣

اِنَّ اِلَيْنَآ اِيَابَهُمْ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ﴿٢٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 26 | उन का हिसाब | हम पर | बेशक | फिर | 25 | उन का लौटना | हमारी तरफ़ | बेशक |

## آيَاتُهَا ٣٠ ❀ (٨٩) سُوْرَةُ الْفَجْرِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1 — (89) सूरतुल फ़ज्र सुबह सवेरा — आयात 30

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالْفَجْرِ ﴿١﴾ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ﴿٢﴾ وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ﴿٣﴾ وَالَّيْلِ اِذَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब | और रात की | 3 | और ताक़ की | और जुफ़्त की | 2 | दस | और रातों की | 1 | क़सम फ़ज्र की |

يَسْرِ ﴿٤﴾ هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ﴿٥﴾ اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मामला किया | कैसा | क्या तुम ने नहीं देखा | 5 | हर अक़्लमन्द के नज़्दीक | क़सम | इस | में | क्या | 4 | चले |

رَبُّكَ بِعَادٍ ﴿٦﴾ اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ﴿٧﴾ الَّتِيْ لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस जैसा | नहीं पैदा किया गया | वह जो | 7 | सुतूनों वाले | इरम | 6 | आद के साथ | तुम्हारा रब |

فِي الْبِلَادِ ﴿٨﴾ وَثَمُوْدَ الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ﴿٩﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | वादी में | काटे (तराशे) सख़्त पत्थर | जिन्हों ने | और समूद | 8 | शहरों में |

कितने ही मुँह उस दिन तर ओ ताज़ा होंगे। (8) अपनी कोशिश (कमाई) से ख़ुश ख़ुश, (9) बुलन्द बाग़ में, (10) उस में वह न सुनेंगे बेहूदा बकवास, (11) उस में एक बहता हुआ चश्मा है। (12) उस में ऊँचे ऊँचे तख़्त हैं, (13) और आबख़ोरे चुने हुए, (14) और गद्दे तरतीब से लगे हुए, (15) और क़ालीन बिखरे हुए (फैले हुए)। (16) क्या वह नहीं देखते? ऊँट की तरफ़ कि वह कैसे पैदा किए गए? (17) और आस्मान की तरफ़ कि कैसे बुलन्द किया गया? (18) और पहाड़ों की तरफ़ कि कैसे खड़े किए गए? (19) और ज़मीन की तरफ़ कि कैसे बिछाई गई? (20) पस आप समझाते रहें, आप (स) सिर्फ़ समझाने वाले हैं। (21) आप (स) उन पर दारोग़ा नहीं, (22) मगर जिस ने मुँह मोड़ा और कुफ़्र किया (मुन्किर हो गया), (23) पस अल्लाह उसे अज़ाब देगा बहुत बड़ा अज़ाब। (24) बेशक उन्हें हमारी तरफ़ लौटना है, (25) फिर बेशक हम पर (हमारा काम) है उन का हिसाब लेना। (26)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क़सम फ़ज्र की, (1) और दस रातों की, (2) और जुफ़्त और ताक़ की, (3) और रात की जब वह चले। (4) क्या इस में (इन चीज़ों की) क़सम हर अक़्लमन्द के नज़्दीक मोतबर है? (5) क्या तुम ने नहीं देखा कि तुम्हारे रब ने क्या मामला किया आद के साथ, (6) इरम के सुतूनों वाले, (7) उस जैसी क़ौम दुनिया के मुल्कों में पैदा नहीं की गई, (8) और समूद के साथ जिन्हों ने वादी में सख़्त पत्थर तराशे, (9)

और कीलों वाले फ़िरऔन के साथ, **(10)** जिन्हों ने शहरों में सरकशी की, **(11)** फिर उन शहरों में बहुत फ़साद किया। **(12)** पस उन पर तुम्हारे रब ने अ़ज़ाब का कोड़ा बरसा दिया। **(13)** बेशक तुम्हारा रब घात में है। **(14)** पस इन्सान को जब उस का रब आज़माए, फिर उस को इज़्ज़त दे और नेमत दे, तो वह कहे कि मेरे रब ने मुझे इज़्ज़त दी। **(15)** और जब उसे आज़माए और उसे रोज़ी अन्दाज़े से (तंग कर के) दे तो वह कहे कि मेरे रब ने मुझे ज़लील किया। **(16)** हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम यतीम की इज़्ज़त नहीं करते, **(17)** और रग़बत नहीं देते मिस्कीन को खाना खिलाने की, **(18)** और तुम माले मीरास समेट समेट कर खाते हो, **(19)** और माल से मुहब्बत करते हो बहुत ज़ियादा मुहब्बत। **(20)** हरगिज़ नहीं, जब ज़मीन कूट कूट कर पस्त कर दी जाए, **(21)** और आए तुम्हारा रब और (आएं) फ़रिश्ते क़तार दर क़तार। **(22)** और उस दिन जहन्नम लाई जाए, उस दिन इन्सान सोचेगा और उसे कहां सोचना (नफ़ा) देगा? **(23)** कहेगा ऐ काश! मैं ने अपनी इस ज़िन्दगी के लिए पहले (नेक अ़मल) भेजा होता। **(24)** पस उस दिन उस जैसा अ़ज़ाब कोई न देगा, **(25)** न उस जैसा बान्धना कोई बान्ध कर रखेगा। **(26)** ऐ रूहे मुतमइन (इत्मीनान वाली)। **(27)** लौट चल अपने रब की तरफ़, वह तुझ से राज़ी, तू उस से राज़ी, **(28)** पस दाख़िल हो जा मेरे बन्दों में। **(29)** और दाख़िल हो जा मेरी जन्नत में। **(30)**

وَفِــرْعَــوْنَ ذِى الْأَوْتَــادِ ﴿١٠﴾ الَّــذِيْــنَ طَغَــوْا فِــى الْــبِــلَادِ ﴿١١﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | शहरों में | सरकशी की | वह जिन्हों ने | 10 | कीलों वाला | और फ़िरऔन |

فَـأَكْـثَـرُوْا فِيْـهَـا الْـفَـسَـادَ ﴿١٢﴾ فَـصَبَّ عَـلَـيْـهِـمْ رَبُّـكَ سَـوْطَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कोड़ा | तुम्हारा रब | उन पर | पस बरसा दिया | 12 | फ़साद | उस में | बहुत किया |

عَـذَابٍ ﴿١٣﴾ اِنَّ رَبَّـكَ لَـبِـالْـمِرْصَادِ ﴿١٤﴾ فَـاَمَّـا الْاِنْـسَـانُ اِذَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब | इन्सान | पस जो | 14 | घात में | तुम्हारा रब | बेशक | 13 | अ़ज़ाब |

مَـا ابْـتَـلٰـىهُ رَبُّـهٗ فَـاَكْـرَمَـهٗ وَنَـعَّـمَـهٗ ۙ فَـيَـقُـوْلُ رَبِّـىْٓ اَكْـرَمَـنِ ﴿١٥﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15 | मुझे इज़्ज़त दी | मेरा रब | तो वह कहे | और उसे नेमत दे | उस को इज़्ज़त दे | उस का रब | उस को आज़माए |

وَاَمَّـآ اِذَا مَـا ابْـتَـلٰـىهُ فَـقَـدَرَ عَـلَـيْـهِ رِزْقَــهٗ ۙ فَـيَـقُـوْلُ رَبِّـىْٓ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरा रब | तो वह कहे | उस का रिज़्क़ | उस पर | अन्दाज़े से देता है | उसे आज़माए | और जब |

اَهَـانَـنِ ﴿١٦﴾ كَلَّا بَـلْ لَّا تُـكْـرِمُـوْنَ الْـيَـتِـيْـمَ ﴿١٧﴾ وَلَا تَحٰٓـضُّـوْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और रग़बत नहीं देते | 17 | यतीम | इज़्ज़त नहीं करते | हरगिज़ नहीं, बल्कि | 16 | मुझे ज़लील किया |

عَـلٰى طَـعَامِ الْـمِـسْـكِـيْـنِ ﴿١٨﴾ وَتَـاْكُـلُـوْنَ الـتُّـرَاثَ اَكْلًا لَّـمًّا ﴿١٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 19 | खाना समेट कर | माले मीरास | और तुम खाते हो | 18 | मिस्कीन | खाना | पर |

وَّتُـحِـبُّـوْنَ الْـمَـالَ حُـبًّا جَـمًّا ﴿٢٠﴾ كَلَّآ اِذَا دُكَّـتِ الْاَرْضُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन | पस्त कर दी जाएगी | हरगिज़ नहीं जब | 20 | बहुत | मुहब्बत | माल | और मुहब्बत करते हो |

دَكًّا دَكًّا ﴿٢١﴾ وَّجَـآءَ رَبُّـكَ وَالْـمَـلَـكُ صَـفًّا صَـفًّا ﴿٢٢﴾ وَجِـاىْٓءَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और लाई जाए | 22 | क़तार दर क़तार | और (आएं) फ़रिश्ते | तुम्हारा रब | और आएगा | 21 | कूट कूट कर |

يَـوْمَـئِـذٍۢ بِـجَـهَـنَّـمَ ۙ يَـوْمَـئِـذٍ يَّـتَـذَكَّـرُ الْاِنْـسَـانُ وَاَنّٰى لَـهُ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उस के लिए | और कहां | इन्सान | सोचेगा | उस दिन | जहन्नम में | उस दिन |

الـذِّكْـرٰى ﴿٢٣﴾ يَـقُـوْلُ يٰـلَـيْـتَـنِـىْ قَـدَّمْـتُ لِـحَـيَـاتِـىْ ﴿٢٤﴾ فَـيَـوْمَـئِـذٍ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पस उस दिन | 24 | अपनी ज़िन्दगी के लिए | मैं ने पहले भेजा होता | ऐ काश | वह कहेगा | 23 | सोचना |

لَّا يُـعَـذِّبُ عَـذَابَـهٗٓ اَحَـدٌ ﴿٢٥﴾ وَّلَا يُـوْثِـقُ وَثَـاقَـهٗٓ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उस का बान्धना | और न बान्ध कर रखे | 25 | कोई | उस का अ़ज़ाब | अ़ज़ाब न देगा |

اَحَـدٌ ﴿٢٦﴾ يٰٓـاَيَّـتُـهَـا الـنَّـفْـسُ الْـمُـطْـمَـئِـنَّـةُ ﴿٢٧﴾ ارْجِـعِـىْٓ اِلٰى

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ | लौट चल | 27 | मुतमइन | नफ़्स | ऐ | 26 | कोई |

رَبِّـكِ رَاضِـيَـةً مَّـرْضِـيَّـةً ﴿٢٨﴾ فَـادْخُـلِـىْ فِـىْ عِـبٰـدِىْ ﴿٢٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 29 | मेरे बन्दे | में | पस दाख़िल हो | 28 | वह तुझ से राज़ी | राज़ी | अपने रब |

وَادْخُـلِـىْ جَـنَّـتِـىْ ﴿٣٠﴾ ع ١٢

| | | |
|---|---|---|
| 30 | मेरी जन्नत | और दाख़िल हो |

## آيَاتُهَا ٢٠ ❀ (٩٠) سُوْرَةُ الْبَلَدِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (90) सूरतुल बलद — शहर — आयात 20

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ﴿١﴾ وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ﴿٢﴾ وَوَالِدٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वालिद की | 2 | शहर | इस | हलाल कर लिया गया | और आप (स) | 1 | शहर | इस | नहीं मैं क़सम खाता हूँ |

وَّمَا وَلَدَ ﴿٣﴾ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ﴿٤﴾ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हरगिज़ बस नहीं चलेगा | कि | क्या वह गुमान करता है | 4 | मुशक़्क़त में | इन्सान | तहक़ीक़ हम ने पैदा किया | 3 | और औलाद |

وقف لازم
عَلَيْهِ اَحَدٌ ﴿٥﴾ يَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ﴿٦﴾ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّمْ يَرَهٗٓ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस को नहीं देखा | कि | क्या वह गुमान करता है | 6 | ढेरों | माल | उड़ा दिया | वह कहता है | 5 | किसी | उस पर |

اَحَدٌ ﴿٧﴾ اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ عَيْنَيْنِ ﴿٨﴾ وَلِسَانًا وَّشَفَتَيْنِ ﴿٩﴾ وَهَدَيْنٰهُ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और हम ने उसे दिखाए | 9 | और दो होंट | और ज़बान | 8 | दो आँखें | उस के लिए | हम ने बनाया | क्या नहीं | 7 | किसी |

النَّجْدَيْنِ ﴿١٠﴾ فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ﴿١١﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ﴿١٢﴾ فَكُّ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| छुड़ाना | 12 | अक़्बा | क्या | तुम समझे | और क्या | 11 | घाटी | पस न दाख़िल हुआ वह | 10 | दो रास्ते |

رَقَبَةٍ ﴿١٣﴾ اَوْ اِطْعٰمٌ فِيْ يَوْمٍ ذِيْ مَسْغَبَةٍ ﴿١٤﴾ يَّتِيْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ﴿١٥﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15 | क़राबतदार | यतीम | 14 | भूक वाले | दिन | में | खाना खिलाना | या | 13 | गर्दन (असीर) |

اَوْ مِسْكِيْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ﴿١٦﴾ ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَوَاصَوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बाहम वसीयत की | जो ईमान लाए | से | हो | फिर | 16 | ख़ाक नशीन | मिस्कीन | या |

بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ﴿١٧﴾ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ﴿١٨﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | सीधे हाथ वाले (ख़ुश नसीब) | वह (यही) लोग | 17 | रह्म खाने की | और बाहम नसीहत की | सब्र की |

ع ٢٠ ١٥
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا هُمْ اَصْحٰبُ الْمَشْــَٔمَةِ ﴿١٩﴾ عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ﴿٢٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 20 | मूंदी (बन्द) की हुई | आग | उन पर | 19 | बाएं हाथ वाले (बद बख़्त) | वह | हमारी आयात | और जिन लोगों ने इन्कार किया |

## آيَاتُهَا ١٥ ❀ (٩١) سُوْرَةُ الشَّمْسِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (91) सूरतुश शम्स — सूरज — आयात 15

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا ﴿١﴾ وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰىهَا ﴿٢﴾ وَالنَّهَارِ اِذَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब | और दिन की | 2 | उस के पीछे निकले | जब | और चाँद की | 1 | और उस की रोशनी | सूरज की क़सम |

جَلّٰىهَا ﴿٣﴾ وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰىهَا ﴿٤﴾ وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰىهَا ﴿٥﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | उसे बनाया | और जिस | और आस्मान की | 4 | उसे ढांप दे | जब | और रात की | 3 | वह रोशन करदे |

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है
नहीं, मैं इस शहर की क़सम खाता हूँ, (1)
और आप (स) को इस शहर में हलाल कर लिया गया है, (2)
और (क़सम खाता हूँ) वालिद की और औलाद की, (3)
तहक़ीक़ हम ने इन्सान को मुशक़्क़त में (गिरफ़्तार) पैदा किया। (4)
क्या वह गुमान करता है कि उस पर हरगिज किसी का बस नहीं चलेगा? (5)
वह कहता है कि मैं ने ढेरों माल उड़ा दिया। (6)
क्या वह गुमान करता है कि उस को किसी ने नहीं देखा? (7)
क्या हम ने नहीं बनाईं? उस की दो आँखें, (8)
और ज़बान और दो होंट, (9)
और हम ने उसे दो रास्ते दिखाए। (10)
पस वह दाख़िल न हुआ "अक़्बा" (घाटी) में। (11)
और तुम क्या मझे कि "अक़्बा" क्या है? (12)
गर्दन छुड़ाना (असीर का आज़ाद कराना)। (13)
या खाना खिलाना भूक वाले दिन में, (14)
क़राबतदार (रिश्तेदार) यतीम को, (15)
या ख़ाक नशीन मिस्कीन को। (16)
फिर हो उन लोगों में से जो ईमान लाए और उन्हों ने बाहम वसीयत की सब्र की और बाहम रह्म खाने की। (17)
यही लोग हैं ख़ुश नसीब। (18)
और जिन लोगों ने हमारी आयतों का इन्कार किया वह बदबख़्त लोग है। (19)
उन पर आग मूंदी हुई है (उन्हें आग में बन्द कर दिया गया है)। (20)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है
क़सम है सूरज की और उस की रोशनी की, (1)
और चाँद की जब उस के पीछे से निकले। (2)
और दिन की जब वह उसे रोशन कर दे, (3)
और रात की जब वह उसे ढांप ले, (4)
और क़सम है आस्मान की और जिस ने उसे बनाया, (5)

وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰىهَا ﴿٦﴾ وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا ﴿٧﴾ فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस का गुनाह | उस के दिल में डाली | 7 | उसे दुरुस्त किया | और जिस | और नफ़्स (इन्सान) की | 6 | उसे फैलाया | और जिस | और ज़मीन की |

وَتَقْوٰىهَا ﴿٨﴾ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ﴿٩﴾ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ﴿١٠﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | उसे ख़ाक में मिलाया | जो | और तहक़ीक़ नामुराद हुआ | 9 | उस को पाक किया | जो | कामयाब हुआ | 8 | और उस की परहेज़गारी |

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰىهَآ ﴿١١﴾ اِذِ انْۢبَعَثَ اَشْقٰىهَا ﴿١٢﴾ فَقَالَ لَهُمْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन से | तो कहा | 12 | उस का बद बख़्त | उठ खड़ा हुआ | जब | 11 | अपनी सरकशी | समूद | झुटलाया |

رَسُوْلُ اللّٰهِ نَاقَةَ اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ﴿١٣﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا ۙ۬ فَدَمْدَمَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर हलाकत डाली | फिर उस की कूंचे काट डालीं | फिर उस को झुटलाया | 13 | और उस की पानी की बारी | अल्लाह की ऊँटनी | अल्लाह का रसूल |

عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ﴿١٤﴾ وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ﴿١٥﴾ ع ١٥ ١٦

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15 | उस का अन्जाम | और वह नहीं डरता | 14 | फिर उन्हें बराबर कर दिया | उन के गुनाह के सबब | उन का रब | उन पर |

آيَاتُهَا ٢١ ❀ (٩٢) سُوْرَةُ الَّيْلِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकुअ 1 — (92) सूरतुल लैल — रात — आयात 21

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ﴿١﴾ وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ﴿٢﴾ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नर | और जो उस ने पैदा किया | 2 | जब वह रोशन हो | और दिन की | 1 | वह ढांप ले | जब | रात की क़सम |

وَالْاُنْثٰٓى ﴿٣﴾ اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ﴿٤﴾ فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ﴿٥﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | और परहेज़गारी इख़्तियार की | दिया | जिस | सो जो | 4 | मुख़्तलिफ़ | तुम्हारी कोशिश | बेशक | 3 | और मादा |

وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ﴿٦﴾ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ﴿٧﴾ وَاَمَّا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | 7 | आसानी | पस अनक़रीब उसे आसान कर देंगे | 6 | अच्छी बात को | और सच जाना |

مَنْۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ﴿٨﴾ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ﴿٩﴾ فَسَنُيَسِّرُهٗ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पस अनक़रीब उसे आसान कर देंगे | 9 | अच्छी बात का | और झुटलाया | 8 | और बेपरवाह रहा | जिस ने बुख़्ल किया |

لِلْعُسْرٰى ﴿١٠﴾ وَمَا يُغْنِيْ عَنْهُ مَالُهٗٓ اِذَا تَرَدّٰى ﴿١١﴾ اِنَّ عَلَيْنَا

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक हम पर (हमारा जिम्मा) | 11 | जब नीचे गिरेगा वह | उस का माल | उस को | और न फ़ाइदा देगा | 10 | दुश्वारी-सख़्ती |

لَلْهُدٰى ﴿١٢﴾ وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى ﴿١٣﴾ فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आग | पस मैं तुम्हें डराता हूँ | 13 | और दुनिया | आख़िरत | हमारे लिए | और बेशक | 12 | अलबत्ता राह दिखाना |

تَلَظّٰى ﴿١٤﴾ لَا يَصْلٰىهَآ اِلَّا الْاَشْقَى ﴿١٥﴾ الَّذِيْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿١٦﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 16 | और मुँह मोड़ा | जिस ने झुटलाया | 15 | इन्तिहाई बद बख़्त | मगर | न दाख़िल होगा उस में | 14 | भड़कती हुई |

وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ﴿١٧﴾ الَّذِيْ يُؤْتِيْ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ﴿١٨﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 18 | पाक करने को | अपना माल | देता है | जो | 17 | बड़ा परहेज़गार | और अनक़रीब उस से बचा लिया जाएगा |

और ज़मीन की और जिस ने उसे फैलाया, (6)
और इन्सान की और जिस ने उसे दरुस्त किया, (7)
फिर डाली उस के दिल में उस के गुनाह और परहेज़गारी (की समझ)। (8)
तहक़ीक़ कामयाब हुआ जिस ने उस को पाक किया, (9)
और तहक़ीक़ नामुराद हुआ जिस ने उसे ख़ाक में मिलाया। (10)
समूद ने अपनी सरकशी (कि वजह) से झुटलाया, (11)
जब उन का बदबख़्त उठ खड़ा हुआ। (12)
तो उन से अल्लाह के रसूल ने कहाः (ख़बरदार हो) अल्लाह की ऊँटनी और उस के पानी पीने की बारी से। (13)
फिर उन्हों ने उस को झुटलाया और उस की कूंचे काट डालीं, फिर उन के रब ने उन पर उन के गुनाह के सबब हलाकत डाली, फिर उन्हें बराबर कर दिया, (14)
और वह उस के अन्जाम से नहीं डरता। (15)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

रात की क़सम जब वह ढांप ले, (1)
और दिन की जब वह रोशन हो, (2)
और उस की जो उस ने नर ओ मादा पैदा किए। (3)
बेशक तुम्हारी कोशिशें मुख़्तलिफ़ हैं। (4)
सो जिस ने दिया और परहेज़गारी इख़्तियार की, (5)
और अच्छी बात को सच जाना, (6)
पस हम अनक़रीब उस के लिए आसानी (की तौफ़ीक़) कर देंगे। (7)
और जिस ने बुख़्ल किया और बेपरवाह रहा। (8)
और झुटलाया अच्छी बात को, (9)
पस हम अनक़रीब उस के लिए दुश्वारी (ग़लत रास्ता) आसान कर देंगे (10)
और उस का माल उस को फ़ाइदा न देगा जब वह नीचे गिरेगा। (11)
बेशक हमारा ज़िम्मा है राह दिखाना। (12)
और बेशक दुनिया ओ आख़िरत हमारे हाथ में है। (13)
पस मैं तुम्हें डराता हूँ भड़कती हुई आग से। (14)
उस में सिर्फ़ बदबख़्त दाख़िल होगा, (15)
जिस ने झुटलाया और मुँह मोड़ा। (16)
और अनक़रीब उस से परहेज़गार बचा लिया जाएगा। (17)
जो अपना माल देता है (अपना दिल) पाक साफ़ करने को। (18)

وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰٓى ﴿١٩﴾ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रजा | चाहता है | सिर्फ़ | 19 | बदला दी जाए | नेमत | से | उस पर | और नहीं किसी के लिए |

ع ١ ٣١ ١٧ رَبِّهِ الْاَعْلٰى ﴿٢٠﴾ وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ﴿٢١﴾

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 21 | राजी होगा | और अनक़रीब | 20 | बुलन्द ओ बरतर | अपना रब | |

آيَاتُهَا ١١ ❀ (٩٣) سُوْرَةُ الضُّحٰى ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकुअ़ 1 | (93) सूरतुध धुहा रोज़े रोशन | आयात 11

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

وَالضُّحٰى ﴿١﴾ وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ﴿٢﴾ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ﴿٣﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | बेज़ार हुआ | और न | आप का रब | आप (स) को नहीं छोड़ा | 2 | छाजाए | जब | और रात की | 1 | क़सम है धूप चढ़ने की (आफ़्ताब) |

وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ﴿٤﴾ وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आप का रब | आप (स) को अ़ता करेगा | और अनक़रीब | 4 | पहली | से | आप (स) के लिए | बेहतर | और आख़िरत |

فَتَرْضٰى ﴿٥﴾ اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ﴿٦﴾ وَوَجَدَكَ ضَآلًّا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेख़बर | और आप (स) को पाया | 6 | पस ठिकाना दिया | यतीम | आप (स) को पाया | क्या नहीं | 5 | आप राज़ी हो जाएंगे |

فَهَدٰى ﴿٧﴾ وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ﴿٨﴾ فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ﴿٩﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | तो क़ह्र न करें | यतीम | पस जो | 8 | तो ग़नी कर दिया | मुफ़लिस | और आप (स) को पाया | 7 | तो हिदायत दी |

ع ١ ١١ ١٨ وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ﴿١٠﴾ وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿١١﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | सो इज़हार करें | अपना रब | नेमत | और जो | 10 | तो न झिड़कें | सवाल करने वाला | और जो |

آيَاتُهَا ٨ ❀ (٩٤) سُوْرَةُ الشَّرْحِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकुअ़ 1 | (94) सूरतुश शर्ह खोलना | आयात 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ﴿١﴾ وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ﴿٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | आप (स) का बोझ | आप (स) से | और हम ने उतार दिया | 1 | आप (स) का सीना | आप (स) के लिए | खोल दिया | क्या नहीं |

الَّذِيْٓ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ﴿٣﴾ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ﴿٤﴾ فَاِنَّ مَعَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| साथ | पस बेशक | 4 | आप (स) का ज़िक्र | आप (स) के लिए | और हम ने बुलन्द किया | 3 | आप (स) की पुश्त | तोड़ दी | जो-जिस |

الْعُسْرِ يُسْرًا ﴿٥﴾ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ﴿٦﴾ فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ﴿٧﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | मेहनत करें | आप (स) फ़ारिग हों | पस जब | 6 | आसानी | साथ दुश्वारी | बेशक | 5 | आसानी | दुश्वारी |

ع ١ ٨ ١٩ وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ﴿٨﴾

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | 8 | रग़बत करें | अपना रब | और तरफ़ |

और किसी का उस पर एहसान नहीं कि जिस का बदला दे, (19) सिर्फ़ अपने बुज़ुर्ग ओ बरतर रब की रज़ा चाहता है। (20) और अनक़रीब राज़ी होगा। (21)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

क़सम है आफ़्ताब की रोशनी की, (1) और रात की जब वह छा जाए, (2) आप (स) के रब ने आप (स) को नहीं छोड़ा और न बेज़ार हुआ। (3) और आख़िरत आप (स) के लिए पहली (हालत) से बेहतर है। (4) और अनक़रीब आप (स) को आप का रब अ़ता करेगा, पस आप (स) राज़ी हो जाएंगे। (5) क्या आप (स) को यतीम नहीं पाया? पस ठिकाना दिया, (6) और आप (स) को बेख़बर पाया तो हिदायत दी, (7) और आप (स) को मुफ़लिस पाया तो ग़नी कर दिया (8) पस जो यतीम हो उस पर क़ह्र न करें, (9) और जो सवाल करने वाला हो उसे न झिड़कें (10) और जो आप (स) के रब की नेमत है उसे इज़हार करें। (11)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

क्या हम ने आप (स) का सीना नहीं खोल दिया? (1) और आप (स) से आप का बोझ उतार दिया। (2) जिस ने तोड़ दी (झुका दी) आप (स) की पुश्त, (3) और हम ने आप (स) का ज़िक्र बुलन्द किया। (4) पस बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है। (5) बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है। (6) पस जब आप (स) फ़ारिग हों तो (इबादत में) मेहनत करें। (7) और अपने रब की तरफ़ रग़बत करें (दिल लगाएं)। (8)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है
क़सम है अंजीर की और ज़ैतून की, (1)
और तूरे सीना की, (2)
और इस अम्न वाले शह्र की, (3)
अलबत्ता हम ने इन्सान को बेहतरीन साख़्त में पैदा किया। (4)
फिर उसे सब से नीची (पस्त तरीन) हालत में लौटा दिया, (5)
सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अमल किए तो उन के लिए ख़तम न होने वाला अजर है। (6)
पस कौन झुटलाएगा आप (स) को इस के बाद रोज़े जजा ओ सज़ा के मामले में? (7)
क्या अल्लाह सब हाकिमों से बड़ा हाकिम नहीं है? (8)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है
पढ़िए अपने रब के नाम से जिस ने (सब को) पैदा किया, (1)
इन्सान को जमे हुए ख़ून से पैदा किया, (2)
पढ़िए और आप (स) का रब सब से बड़ा करीम है, (3)
जिस ने क़लम से सिखाया, (4)
इन्सान को सिखाया जो वह न जानता था। (5)
हरगिज़ नहीं, इन्सान सरकशी करता है। (6)
इस वजह से कि वह अपने आप को बे नियाज़ देखता है। (7)
बेशक अपने रब की तरफ़ लौटना है। (8)
क्या तुम ने उसे देखा जो रोकता है। (9)
एक बन्दे को जब वह नमाज पढ़े। (10)
भला देखो, अगर (वह बन्दा) हिदायत पर हो, (11)
या परहेज़गारी का हुक्म देता हो। (12)
भला देखो, अगर (यह रोकने वाला) झुटलाता और मुँह मोड़ता हो। (13)
क्या उस ने न जाना कि अल्लाह देख रहा है? (14)
हरगिज नहीं, अगर बाज़ न आया तो पेशानी के बालों से (पकड़ कर) हम ज़रूर घसीटेंगे। (15)
झूटी गुनाहगार पेशानी। (16)
तो बुला ले अपनी मज्लिस (जत्थे) को, (17)

آيَاتُهَا ٨ ❀ (٩٥) سُوْرَةُ التِّيْنِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकुअ़ 1 — (95) सूरतुत तीन / अंजीर — आयात 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ۝١ وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ۝٢ وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ۝٣

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | अम्न वाला | शह्र | और इस | 2 | और तूरे सीना की | 1 | और ज़ैतून की | क़सम है अंजीर की |

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ۝٤ ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सब से नीचा | हम ने उसे लौटा दिया | फिर | 4 | सांचा (साख़्त) | बेहतरीन | में | इन्सान | अलबत्ता हम ने पैदा किया |

سٰفِلِيْنَ ۝٥ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝٦

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | ख़तम होने वाला | न | अजर | तो उन के लिए | नेक | और अ़मल किए | ईमान लाए | सिवाए जो लोग | 5 | नीचों वाला |

فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ ۝٧ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ۝٨ ع ١/٨/٢٠

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | तमाम हाकिम | सब से बड़ा हाकिम | क्या नहीं अल्लाह | 7 | दीन के मामले में | इस के बाद | पस कौन आप (स) को झुटलाएगा |

آيَاتُهَا ١٩ ❀ (٩٦) سُوْرَةُ الْعَلَقِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकुअ़ 1 — (96) सूरतुल अ़लक़ / जमा हुआ ख़ून — आयात 19

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ۝١ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۝٢

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | जमा हुआ ख़ून | से | इन्सान | पैदा किया | 1 | पैदा किया | जिस ने | अपना रब | नाम से | पढ़िए |

اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۝٣ الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۝٤ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इन्सान | सिखाया | 4 | क़लम से | सिखाया | वह जिस ने | 3 | बड़ा करीम | और आप का रब | पढ़िए |

مَا لَمْ يَعْلَمْ ۝٥ كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰٓى ۝٦ اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ۝٧ اِنَّ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक | 7 | बे नियाज | कि अपने तईं देखे | 6 | सरकशी करता है | इन्सान | हरगिज़ नहीं बेशक | 5 | वह जानता था | जो न |

اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ۝٨ اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يَنْهٰى ۝٩ عَبْدًا اِذَا صَلّٰى ۝١٠

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | वह नमाज पढ़े | जब | एक बन्दा | 9 | रोकता है | वह जो | क्या आप ने देखा | 8 | लौटना है | अपना रब | तरफ़ |

اَرَءَيْتَ اِنْ كَانَ عَلَى الْهُدٰٓى ۝١١ اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰى ۝١٢ اَرَءَيْتَ اِنْ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अगर | भला देखो | 12 | परहेज़गारी का | या हुक्म देता | 11 | हिदायत | पर | हो | अगर | भला देखो |

كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝١٣ اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ۝١٤ كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ ۙ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| न बाज आया | अगर | हरगिज नहीं | 14 | देख रहा है | कि अल्लाह | क्या न जाना | 13 | और मुँह मोड़ता | झुटलाता |

لَنَسْفَعًاۢ بِالنَّاصِيَةِ ۝١٥ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۝١٦ فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ ۝١٧

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 17 | अपनी मज्लिस | तो वह बुला ले | 16 | गुनाहगार | झूटी | पेशानी | 15 | पेशानी के बालों से | हम ज़रूर घसीटेंगे |

السجدة ١٤ — ع ١٩ / ٢١

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ﴿١٨﴾ كَلَّا ۚ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ﴿١٩﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 19 | और नज़दीक हो | और सिज्दा कर तू | उस की बात न मान | नहीं नहीं | 18 | प्यादे | हम बुलाते हैं |

## آيَاتُهَا ٥ ❀ (٩٧) سُوْرَةُ الْقَدَرِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (97) सूरतुल क़द्र ताक़त, बा इज़्ज़त — आयात 5

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

إِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ﴿١﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ﴿٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | लैलतुलक़द्र | क्या | आप ने समझा | और क्या | 1 | लैलतुलक़द्र (इज़्ज़त वाली रात) | में | हम ने यह उतारा | बेशक |

وقف النبي ﷺ

لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۙ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ﴿٣﴾ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उस में | और रूह | फ़रिश्ते | उतरते हैं | 3 | हज़ार महीने | से | बेहतर | लैलतुलक़द्र |

ع ٥ / ٢٢ — القدر — معانقة ١٨ عند المتأخرين ١٢

بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ مِّنْ كُلِّ اَمْرٍ ﴿٤﴾ سَلٰمٌ ۛ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ﴿٥﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | फ़ज्र (सुबह) | तुलूअ़ होना | जब तक | वह | सलामती | 4 | काम | हर | से | उन का रब | हुक्म से |

## آيَاتُهَا ٨ ❀ (٩٨) سُوْرَةُ الْبَيِّنَةِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (98) सूरतुल बैयि्यना खुली दलील — आयात 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बाज़ आने वाले | और मुश्‍रिकीन | अहले किताब | से | कुफ़्र किया | वह जो | न थे |

حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ﴿١﴾ رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ﴿٢﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | पाक | सहीफ़े | पढ़ता हुआ | अल्लाह (की तरफ़) से | रसूल | 1 | खुली दलील | आए उन के पास | यहां तक कि |

فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ﴿٣﴾ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर | वह जो कि किताब दिए गए (अहले किताब) | फ़िर्क़ा फ़िर्क़ा हुए | और न | 3 | लिखे हुए मज़बूत (तहरीर) | उस में |

مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ﴿٤﴾ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यह कि इबादत करें अल्लाह की | मगर | हुक्म दिया गया | और न | 4 | खुली दलील | जब उन के पास आगई | उस के बाद |

مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़कात | और अदा करें | नमाज़ | और क़ाइम करें | यक रुख़ | दीन | उस के लिए | ख़ालिस करते हुए |

وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ﴿٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अहले किताब | से | जिन लोगों ने कुफ़्र किया | बेशक | 5 | निहायत मज़बूत | दीन | और यह |

وَالْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ﴿٦﴾

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | मख़्लूक़ | बदतरीन | वह | यही लोग | उस में | हमेशा रहेंगे | जहन्नम | आग | में | और मुश्‍रिकीन |

हम बुलाते हैं प्यादों को। (18) नहीं नहीं, उस की बात न मानें और आप (स) सिज्दा करें और (अपने रब की) नज़्दीकी हासिल करें। (19)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

बेशक हम ने यह (क़ुरआन) उतारा लैलतुलक़द्र में। (1) और आप क्या जानें कि "लैलतुलक़द्र" क्या है? (2) लैलतुलक़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है. (3) इस में उतरते हैं फ़रिश्ते और रूह (रूहुल अमीन) अपने रब के हुक्म से हर काम (के इन्तिज़ाम के लिए)। (4) तुलूअ़ फ़ज्र तक, यह रात सलामती (ही सलामती) है। (5)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

जिन लोगों ने कुफ़्र किया अहले किताब और मुश्‍रिकों में से, बाज आने वाले न थे यहां तक कि उन के पास खुली दलील आए, (1) अल्लाह का रसूल पाक सहीफ़े पढ़ता हुआ, (2) जिस में रास्त और दुरुस्त तहरीरें लिखी हुई हों। (3) और अहले किताब फ़िर्क़ा फ़िर्क़ा न हुए मगर उस के बाद कि उन के पास आगई खुली दलील। (4) और उन्हें सिर्फ़ यह हुक्म दिया गया था कि वह अल्लाह की इबादत करें उस के लिए ख़ालिस करते हुए दीन (बन्दगी) यक रुख़ हो कर, और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात अदा करें, और यही मज़बूत दीन है। (5) बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया अहले किताब और मुश्‍रिकों में से, वह जहन्नम की आग में हमेशा रहेंगे, यही लोग बदतरीन मख़्लूक़ हैं। (6)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अ़मल किए नेक, यही लोग बेहतरीन मख़्लूक़ हैं। (7)
उन की जजा उन के रब के पास हमेशा रहने वाले बागात हैं, उन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा हमेशा रहेंगे, अल्लाह उन से राज़ी हुआ, और वह अल्लाह से राज़ी हुए, यह उस के लिए है जो अपने रब से डरे। (8)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

जब ज़मीन ज़ल्ज़ले से हिला दी जाएगी, (1)
और अपने बोझ बाहर निकाल डालेगी, (2)
और कहेगा इन्सान कि इस को क्या हो गया? (3)
उस दिन वह अपने हालात बयान करेगी, (4)
क्योंकि तेरे रब ने उसे हुक्म भेजा होगा। (5)
उस दिन लोग मुख़्तलिफ़ गिरोहों में बाहर निकलेंगे ताकि उन के आ़माल उन्हें दिखाए जाएं। (6)
पस जिस ने की होगी
एक जर्रा बराबर नेकी
वह उसे देख लेगा। (7)
और जिस ने की होगी
एक ज़र्रा बराबर बुराई
वह उसे देख लेगा। (8)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

क़सम है दौड़ने वाले, हांपते हुए घोड़ों की, (1)
(सुम) झाड़ कर चिंगारियां उड़ाने वालों की, (2)
सुब्ह के वक़्त (शब खून मार कर) ग़ारतगिरी करने वालों की, (3)
फिर उस (दौड़ने) से गर्द उड़ाने वालों की, (4)
फिर उस (गर्द की आड़) से मज्मा में घुस जाने वालों की, (5)
बेशक इन्सान अपने रब का नाशुक्रा है। (6)
और बेशक वह उस पर गवाह है। (7)
और बेशक वह माल की मुहब्बत में सख़्त है। (8)

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۝٧

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | मख़्लूक़ | बेहतरीन | वह | यही लोग | और उन्हों ने अ़मल किए नेक | जो लोग ईमान लाए | बेशक |

جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हमेशा रहेंगे | नहरें | उन के नीचे से | बहती हैं | हमेशा रहने वाले | बाग़ात | उन का रब | पास | उन की जजा |

فِيْهَآ اَبَدًا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ۝٨ ع ١ ٨ ٢٢

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | अपना रब | डरे | उस के लिए जो | यह | उस से | और वह राज़ी | उन से | राज़ी हुआ अल्लाह | हमेशा हमेशा | उस में |

آيَاتُهَا ٨ ❀ (٩٩) سُوْرَةُ الزِّلْزَالِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (99) सूरतुज़ ज़िलज़ाल — भौंचाल, ज़ल्ज़ला — आयात 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝١ وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ۝٢

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | अपने बोझ | ज़मीन | और बाहर निकाल डाले | 1 | उस का ज़ल्ज़ला | ज़मीन | हिला डाली जाए | जब |

وَقَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ۝٣ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا ۝٤ بِاَنَّ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्यों कि | 4 | अपनी ख़बरें (हालात) | बयान करेगी | उस दिन | 3 | इसे क्या हो गया? | इन्सान | और कहेगा |

رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ۝٥ يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۙ لِّيُرَوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ताकि दिखाए | मुख़्तलिफ़ गिरोहों | लोग | बाहर निकलेंगे | उस दिन | 5 | उस को | हुक्म भेजा | तेरा रब |

اَعْمَالَهُمْ ۝٦ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝٧

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | उस का देखेगा | नेकी | एक जर्रा | बराबर | की होगी | पस जिस ने | 6 | उन के आ़माल |

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝٨ ع ١ ٨ ٢٢

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | उस को देखेगा | बुराई | एक ज़र्रा | बराबर | की होगी | और जिस ने |

آيَاتُهَا ١١ ❀ (١٠٠) سُوْرَةُ الْعٰدِيٰتِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (100) सूरतुल आदियात — दौड़ने वाले घोड़े — आयात 11

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۝١ فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۝٢ فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ۝٣

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | सुब्ह को | ग़ारतगिरी करने वाले | 2 | (सुम) झाड़ कर | चिंगारियां उड़ाने वाले | 1 | हांपने वाले | क़सम है दौड़ने वाले घोड़ों की |

فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۝٤ فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۝٥ اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने रब का | इन्सान | बेशक | 5 | मज्मा | उस से | फिर जा घुसें | 4 | गर्द | उस से | फिर उड़ाएं |

لَكَنُوْدٌ ۝٦ وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۝٧ وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ۝٨

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | अलबत्ता सख़्त | माल ओ दौलत | मुहब्बत में | और बेशक वह | 7 | गवाह | और बेशक वह उस पर | 6 | नाशुक्रा |

اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِى الْقُبُوْرِ ﴿٩﴾ وَحُصِّلَ مَا فِى الصُّدُوْرِ ﴿١٠﴾

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | सीने (दिल) | में | जो | और सामने आजाएगा | 9 | क़ब्रों | में | जो | उठाए जाएंगे | जब | वह जानता | पस क्या नहीं |

ع ١ ١١ ٢٥ اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَىِٕذٍ لَّخَبِيْرٌ ﴿١١﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 11 | ख़ूब बाख़बर | उस दिन | उन से | उन का रब | बेशक |

آيَاتُهَا ١١ ❀ (١٠١) سُوْرَةُ الْقَارِعَةِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (101) सूरतुल क़ारिआ़ खड़खड़ाने वाली — आयात 11

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

اَلْقَارِعَةُ ﴿١﴾ مَا الْقَارِعَةُ ﴿٢﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ﴿٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | क्या है खड़खड़ाने वाली | तुम समझे | और क्या | 2 | क्या है खड़खड़ाने वाली | 1 | खड़खड़ाने वाली |

يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ﴿٤﴾ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पहाड़ | और होंगे | 4 | बिखरे हुए | परवानों की तरह | लोग | होंगे | जिस दिन |

كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ﴿٥﴾ فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ﴿٦﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | उस के वज़न | भारी हुए | जो | पस जो | 5 | धुन्की हुई | रंगीन ऊन की मानिंद |

فَهُوَ فِىْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿٧﴾ وَاَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ ﴿٨﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | उस के वज़न | हल्के हुए | जो | और जो | 7 | पसंदीदा | ऐश ओ आराम | में | सो वह |

ع ١ ١١ ٢٦ فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ﴿٩﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا هِيَهْ ﴿١٠﴾ نَارٌ حَامِيَةٌ ﴿١١﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | दहकती हुई | आग | 10 | क्या है वह? | और तुम क्या समझे | 9 | हाविया | तो उस का ठिकाना |

آيَاتُهَا ٨ ❀ (١٠٢) سُوْرَةُ التَّكَاثُرِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (102) सूरतुत तकासुर कस्रत की ख़ाहिश — आयात 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

اَلْهٰىكُمُ التَّكَاثُرُ ﴿١﴾ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ﴿٢﴾ كَلَّا سَوْفَ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अनक़रीब | हरगिज़ नहीं | 2 | क़ब्रें | तुम ने ज़ियारत की | यहां तक कि | 1 | कस्रत की ख़ाहिश | तुम्हें ग़फ़्लत में रखा |

تَعْلَمُوْنَ ﴿٣﴾ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤﴾ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| काश तुम जानते | हरगिज़ नहीं | 4 | तुम जान लोगे | जल्द | हरगिज़ नहीं | फिर | 3 | तुम जान लोगे |

عِلْمَ الْيَقِيْنِ ﴿٥﴾ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ﴿٦﴾ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ﴿٧﴾

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | यक़ीन की आँख | ज़रूर उसे देखोगे | फिर | 6 | जहन्नम | तुम ज़रूर देखोगे | 5 | इल्मे यक़ीन |

ع ١ ٨ ٢٧ ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَىِٕذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ﴿٨﴾

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 8 | नेमतें | से (बाबत) | उस दिन | तुम ज़रूर पूछे जाओगे | फिर |

क्या वह नहीं जानता कि जब उठाए जाएंगे मुर्दे जो क़ब्रों में हैं? (9) और हासिल कर लिया जाएगा जो सीनों में है। (10) बेशक उन का रब उस दिन उन से ख़ूब बाख़बर होगा। (11)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

खड़खड़ाने वाली, (1) क्या है खड़खड़ाने वाली? (2) और तुम क्या समझे कि क्या है खड़खड़ाने वाली? (3) जिस दिन होंगे लोग परवानों की तरह बिखरे हुए, (4) और पहाड़ होंगे धुन्की हुई रंगीन ऊन की तरह। (5) पस जिस के (नेक) वज़न भारी हुए, (6) सो वह पसंदीदा आराम में होगा। (7) और जिस के वज़न हल्के हुए, (8) तो उस का ठिकाना "हाविया" होगा। (9) और तुम क्या समझे कि वह क्या है? (10) वह आग है दहकती हुई। (11)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

तुम्हें हुसूले कस्रत की ख़ाहिश ने ग़फ़्लत में रखा, (1) यहां तक कि तुम क़ब्रों तक पहुंच जाते हो। (2) हरगिज़ नहीं, तुम जल्द जान लोगे, (3) फिर हरगिज़ नहीं, तुम जल्द जान लोगे। (4) हरगिज़ नहीं, काश तुम इल्मे यक़ीन से जानते होते। (5) तुम ज़रूर देखोगे जहन्नम को। (6) फिर तुम उसे ज़रूर यक़ीन की आँख से देखोगे। (7) फिर तुम उस दिन ज़रूर पूछे जाओगे (सवाल जवाब होगा) नेमतों की बाबत। (8)

## آيَاتُهَا ٣ ❀ (١٠٣) سُوْرَةُ الْعَصْرِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (103) सूरतुल अ़स्र — ज़माना — आयात 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالْعَصْرِ ﴿١﴾ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِیْ خُسْرٍ ﴿٢﴾ اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो लोग ईमान लाए | सिवाए | 2 | ख़सारा | में | इन्सान | बेशक | 1 | ज़माने की क़सम |

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ﴿٣﴾ ع ١/٣ ٢٨

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 3 | सब्र की | और वसीयत की | हक़ की | और एक दूसरे को वसीयत की | और उन्हों ने अ़मल किए नेक |

## آيَاتُهَا ٩ ❀ (١٠٤) سُوْرَةُ الْهُمَزَةِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (104) सूरतुल हुमाज़ा — ताना ज़न — आयात 9

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ﴿١﴾ الَّذِیْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ﴿٢﴾

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | उसे गिन गिन कर रखा | माल | जमा किया | जिस | 1 | ऐब जू | ताना ज़न | वास्ते - हर | ख़राबी |

يَحْسَبُ اَنَّ مَالَهٗۤ اَخْلَدَهٗ ﴿٣﴾ كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِی الْحُطَمَةِ ﴿٤﴾ وَمَاۤ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और क्या | 4 | "हुत्मा" | में | ज़रूर डाला जाएगा | हरगिज़ नहीं | 3 | उसे हमेशा रखेगा | उस का माल | कि | वह गुमान करता है |

اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ﴿٥﴾ نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ﴿٦﴾ الَّتِیْ تَطَّلِعُ عَلَى

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर | जा पहुँचे वह | जो कि | 6 | भड़काई हुई | अल्लाह की आग | 5 | "हुत्मा" क्या है? | तुम समझे |

الْاَفْـِٕدَةِ ﴿٧﴾ اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ﴿٨﴾ فِیْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ﴿٩﴾ ع ١/٩ ٢٩

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | लम्बे लम्बे | सुतून | में | 8 | बन्द की हुई | उन पर | बेशक वह | 7 | दिल (जमा) |

## آيَاتُهَا ٥ ❀ (١٠٥) سُوْرَةُ الْفِيْلِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (105) सूरतुल फ़ील — हाथी — आयात 5

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ﴿١﴾ اَلَمْ يَجْعَلْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कर दिया उस ने | क्या नहीं | 1 | हाथी वालों के साथ | तुम्हारा रब | किया | कैसा | क्या तुम ने नहीं देखा |

كَيْدَهُمْ فِیْ تَضْلِيْلٍ ﴿٢﴾ وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ﴿٣﴾

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | झुंड के झुंड | परिन्दे | उन पर | और भेजे | 2 | गुमराही में (बेकार) | उन का दाओ |

تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ﴿٤﴾ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ﴿٥﴾ ع ١/٥ ٣٠

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | खाए हुए | भूसे की तरह | पस उन को कर दिया | 4 | संगे गिल | से | कंकरियां | फेंकते थे |

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
ज़माने की क़सम, (1)
बेशक इन्सान ख़सारे में है, (2)
सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए और एक दूसरे को हक़ की वसीयत की और सब्र की वसीयत (तलक़ीन) की। (3)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
ख़राबी है हर ताना ज़न ऐब लगाने वाले के लिए, (1)
जिस ने माल जमा किया और उसे गिन गिन कर रखा, (2)
वह गुमान करता है कि उस का माल उसे हमेशा रखेगा, (3)
हरगिज़ नहीं, वह ज़रूर "हुत्मा" में डाला जाएगा। (4)
और तुम क्या समझे कि "हुत्मा" क्या है? (5)
अल्लाह की आग भड़काई हुई, (6)
जो दिलों तक जा पहुँचेगी। (7)
बेशक वह उन पर ढांक कर बन्द करदी जाएगी। (8)
लम्बे लम्बे सुतूनों में। (9)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
क्या आप (स) ने नहीं देखा कि आप के रब ने क्या सुलूक किया हाथी वालों से? (1)
क्या उन का दाओ नहीं कर दिया बेकार? (2)
और उन पर झुंड के झुंड परिन्दे भेजे (3)
वह उन पर कंकरियाँ फेंकते थे पकी हुई मिट्टी की। (4)
पस उन को खाए हुए भूसे के मानिंद कर दिया। (5)

آيَاتُهَا ٤ ❀ (١٠٦) سُوْرَةُ قُرَيْشٍ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1 | (106) सूरह कुरैश — कुरैश का कबीला | आयात 4

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۝١ اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۝٢

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | और गर्मी | सर्दी | सफ़र | उन का मानूस करना | 1 | कुरैश | मानूस करने के सबब |

فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۝٣ الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भूक | से-में | उन्हें खाना दिया | जो-जिस | 3 | घर | इस | रब | पस चाहिए कि वह इबादत करें |

ع ١ ٣١ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝٤

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 4 | ख़ौफ़ | से-में | और उन्हें अम्न दिया | |

आयत translation: अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है कुरैश को मानूस करने के सबब, (1) उन्हें सर्दी गर्मी के सफ़र से मानूस करने के सबब। (2) पस चाहिए कि वह इबादत करें इस घर के रब की, (3) जिस ने उन्हें खाना दिया भूक में, और अम्न दिया ख़ौफ़ में। (4)

آيَاتُهَا ٧ ❀ (١٠٧) سُوْرَةُ الْمَاعُوْنَ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1 | (107) सूरतुल माऊन — रोज़ाना इस्तेमाल की छोटी चीज़ें | आयात 7

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ۝١ فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ۝٢

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | यतीम | धक्के देता है | जो कि | यही है वह | 1 | रोज़े जज़ा ओ सज़ा | झुटलाता है | वह जो कि | क्या तुम ने देखा |

وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝٣ فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۝٤

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | नमाज़ियों के लिए | पस ख़राबी | 3 | मिस्कीन | खाना | पर | रग़बत दिलाता | और नहीं |

الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۝٥ الَّذِيْنَ هُمْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वह | जो कि | 5 | ग़ाफ़िल (जमा) | अपनी नमाज़ | से | वह | जो कि |

ع ١ ٣٢ يُرَآءُوْنَ ۝٦ وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۝٧

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | 7 | आ़म ज़रूरत की चीज़ | रोकते हैं (नहीं देते) | 6 | दिखावा करते हैं |

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है क्या तुम ने उस शख़्स को देखा जो रोज़े जज़ा ओ सज़ा को झुटलाता है? (1) वही है जो यतीम को धक्के देता है, (2) और नहीं उकसाता मिस्कीन को खाना खिलाने पर। (3) पस ख़राबी है उन नमाज़ियों के लिए, (4) जो अपनी नमाज़ों से लापरवाह हैं, (5) जो दिखावा करते हैं, (6) और आ़म ज़रूरत की चीज़ (भी मांगी) नहीं देते। (7)

آيَاتُهَا ٣ ❀ (١٠٨) سُوْرَةُ الْكَوْثَرِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1 | (108) सूरतुल कौसर — बे शुमार भलाइयाँ | आयात 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۝١ فَصَلِّ لِرَبِّكَ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपने रब के लिए | पस नमाज़ पढ़ें | 1 | कौसर | हम ने आप (स) को अ़ता किया | बेशक हम |

ع ١ ٣٣ وَانْحَرْ ۝٢ اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ۝٣

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | दुम कटा-नामुराद-बे नस्ल | वह | आप (स) का दुश्मन | बेशक | 2 | और कुरबानी दें |

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है बेशक हम ने आप (स) को "कौसर" अ़ता किया। (1) पस अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ें और कुरबानी दें। (2) बेशक आप (स) का दुश्मन ही नामुराद है। (3)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
कह दीजिए: ऐ काफ़िरो! (1)
मैं इबादत नहीं करता जिन की तुम इबादत करते हो, (2)
और न तुम इबादत करने वाले हो उस की जिस की मैं इबादत करता हूँ। (3)
और न मैं इबादत करने वाला हूँ जिन की तुम ने इबादत की, (4)
और न तुम इबादत करने वाले हो उस की जिस की मैं इबादत करता हूँ। (5)
तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन और मेरे लिए मेरा दीन। (6)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
जब अल्लाह की मदद आजाए और फ़तह (हो जाए)। (1)
और आप (स) देखें कि लोग दाख़िल हो रहे हैं अल्लाह के दीन में फ़ौज दर फ़ौज। (2)
पस अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकी बयान करें और उस से बख़्शिश तलब करें, बेशक वह बड़ा तौबा कुबूल करने वाला है। (3)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
अबू लहब के दोनों हाथ टूट गए और वह हलाक हुआ। (1)
उस के काम न आया उस का माल और जो उस ने कमाया। (2)
अनक़रीब दाख़िल होगा शोले मारती हुई आग में। (3)
और उस की बीवी लादने वाली ईंधन, (4)
उस की गर्दन में खजूर की छाल की रस्सी होगी। (5)

## آيَاتُهَا ٦ ❀ (١٠٩) سُوْرَةُ الْكٰفِرُوْنَ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1 — (109) सूरतुन काफ़िरून — कुफ़्र करने वाले — आयात 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۝١ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝٢

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | जिस की तुम इबादत करते हो | मैं इबादत नहीं करता | 1 | काफ़िरो | ऐ | कह दीजिए |

وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۝٣ وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۝٤

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | जिस की तुम ने इबादत की | मैं इबादत करने वाला | और न | 3 | जिस की मैं इबादत करता हूँ | इबादत करने वाले | तुम | और न |

وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۝٥ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِىَ دِيْنِ ۝٦ ع ١ ٣٢

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | मेरा दीन | और मेरे लिए | तुम्हारा दीन | तुम्हारे लिए | 5 | जिस की मैं इबादत करता हूँ | इबादत करने वाले | और न तुम |

## آيَاتُهَا ٣ ❀ (١١٠) سُوْرَةُ النَّصْرِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1 — (110) सूरतुन नस्र — मदद — आयात 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۝١ وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِىْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | दाख़िल हो रहे हैं | लोग | और आप (स) देखें | 1 | और फ़तह | अल्लाह की मदद | आजाए | जब |

دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۝٢ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ وقف النبی ﷺ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और बख़्शिश तलब कीजिए उस से | अपना रब | तारीफ़ के साथ | पस पाकी बयान करें | 2 | फ़ौज दर फ़ौज | अल्लाह का दीन |

اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ۝٣ ع ٣ ٣٥

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | 3 | बड़ा तौबा कुबूल करने वाला | है | बेशक वह |

## آيَاتُهَا ٥ ❀ (١١١) سُوْرَةُ تَبَّتْ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1 — (111) सूरह तब्बत — आग की लपट, शोला — आयात 5

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

تَبَّتْ يَدَاۤ اَبِىْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ۝١ مَاۤ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो | उस का माल | उस के | काम आया | न | 1 | और वह हलाक हुआ | अबू लहब | दोनों हाथ | टूट गए |

كَسَبَ ۝٢ سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝٣ وَّامْرَاَتُهٗ ؕ حَمَّالَةَ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लादने वाली | और उस की बीवी | 3 | शोले मारती | आग | अनक़रीब दाख़िल होगा | 2 | उस ने कमाया |

الْحَطَبِ ۝٤ فِىْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۝٥ ع ٥ ٣٦

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | खजूर | से | रस्सी | उस की गर्दन | में | 4 | लकड़ी (ईंधन) |

آيَاتُهَا ٤ ❀ (١١٢) سُوْرَةُ الْإِخْلَاصِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1 | (112) सूरतुल इख़्लास ख़ालिस | आयात 4

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝١ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝٢ لَمْ يَلِدْ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| न उस ने जना | 2 | बेनियाज़ | अल्लाह | 1 | एक | अल्लाह | वह | कह दीजिए |

ع ١ ٤ ٣٧ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝٣ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝٤

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | कोई | हमसर | उस का | है | और नहीं | 3 | और न वह जना गया |

आयाअल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है कह दीजिएः वह अल्लाह एक है, (1) अल्लाह बेनियाज़ है, (2) न उस ने (किसी को) जना और न (किसी ने) उस को जना, (3) और उस का कोई हमसर नहीं। (4)

آيَاتُهَا ٥ ❀ (١١٣) سُوْرَةُ الْفَلَقِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1 | (113) सूरतुल फ़लक़ सुबह | आयात 5

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝١ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝٢

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | जो उस ने पैदा किया | शर | से | 1 | सुबह | रब की | मैं पनाह में आता हूँ | कह दीजिए |

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝٣ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फूंके मारने वालियां | शर | और से | 3 | छा जाए | जब | अन्धेरा | शर | और से |

ع ١ ٥ ٣٨ فِي الْعُقَدِ ۝٤ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝٥

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | वह हसद करे | जब | हसद करने वाले | और शर से | 4 | गिरहें | में |

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है कह दीजिएः मैं पनाह में आता हूँ सुबह के रब की, (1) उस के शर से जो उस ने पैदा किया, (2) और अन्धेरे के शर से जब कि वह छा जाए, (3) और गिरोहों में फूंके मारने वालियों के शर से, (4) और शर से हसद करने वाले के जब वह हसद करे। (5)

آيَاتُهَا ٦ ❀ (١١٤) سُوْرَةُ النَّاسِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1 | (114) सूरतुन नास लोग | आयात 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝١ مَلِكِ النَّاسِ ۝٢ اِلٰهِ النَّاسِ ۝٣

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | लोग | माबूद | 2 | लोग | बादशाह | 1 | लोग | रब की | मैं पनाह में आता हूँ | कह दीजिए |

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۝٤ الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| में | वस्वसा डालता है | जो | 4 | छुप कर हमला करने वाले | वस्वसा डालने वाले | शर | से |

ع ١ ٦ ٣٩ صُدُوْرِ النَّاسِ ۝٥ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝٦

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 6 | और इन्सान | जिन्न (जमा) | से | 5 | लोग | सीने (दिल) |

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है कह दीजिएः मैं पनाह में आता हूँ लोगों के रब की, (1) लोगों के बादशाह की, (2) लोगों के माबूद की, (3) वस्वसा डालने वाले, पलट पलट कर हमला करने वाले के शर से, (4) जो वस्वसा डालता है लोगों के दिलों में, (5) जिन्नों में से और इन्सानों में से। (6)